परिज्ञान कराने के लिये एक ही ग्रंथ है, वैसे अलंकारादिकों के उदाहरणों का हिंदीभाषा में यह भी एक ही ग्रंथ है, सो जिन्होंने जसवंतजसोभू देखा है उनको यह ग्रंथ अवश्य देखना चाहिये.

इस ग्रंथ में अनेक भाषाओं के अनेक शब्दों का प्रयोग कियागय जैसे कि माघ काव्य के विषय में लोकों का यह कथन है कि

"नवसर्गे गते माघे नवशब्दो न विद्यते ॥"

अर्थ– "माघ काव्य के नौ ९ सर्ग जाने पर फिर कोई नया श शेष नहीं रहता ॥" वैसे इस ग्रंथ को पढने से संस्कृत, प्राकृत, व्रज पा आदि का कोई शब्द अवशेष नहीं रहता, इसलिये इस ग्रंथ का हन होना संभव है, परंतु श्रीमान् चारणकुलभूषण कृष्णसिंहजी ने का रचकर इसको सरल बनादिया है, जिससे हरएक मनुष्य इस के आशय को भलीभांति समझ सकता है.

वास्तव में ग्रंथ उत्तम है परंतु इसका मुद्रित होना कठिन सा दिख देने लगा; क्योंकि ग्रंथ बहुत बड़ा है सो द्रव्य भी उतना ही चाहि और शोधन का श्रम भी ; परंतु जब परमदयालु परमेश्वर कृपा क हैं तब सब सुलभ होजाता है. छापने के लिये यंत्रालय की आज्ञा तो रुधराधीशों की ओर से, और छापने के व्यय के द्रव्य का प्रबंध मजि दर्जे अव्वल व जोधपुर दरबार की कौंसिल के मख्य मेम्बर कविराज श्री मुरारिदानजी साहिब की ओर से होगया ; इसके अतिरिक्त इस ग्रं प्राकृत और संस्कृत के कठिन स्थलों में श्रीबुन्दीशाश्रित साहित्य क रगामि कौंसिल के मेम्बर विद्वद्वर श्री गंगासहायजी ने, राज्य का श्रीमद्भागवत की टीका निर्माण करना आदि शास्त्र संबंधी बहुत सा रहने पर भी पूर्ण सहायता दी .

अब हम परमेश्वर से वारंवार यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे स्व मरुधराधीश राजराजेश्वर धीर वीर श्रीसरदारसिंहजी बहादुर, विद्या टरदान मुसाहिबआला जी.सी. एस्. आई., एल्. एल्. डी., सी. बी. दि पद विभूषित महाराजाधिराज कर्नल सर श्रीप्रतापसिंहजी साहिब णग्राहक कविराजाजी श्री मुरारिदानजी, विद्वद्वर पंडितजी श्रीगंगास जी और चारणकुलभूषण श्रीकृष्णसिंहजी सदा प्रसन्न और चिरजीव

जिन श्रीमानों ने प्रथम रुपये भेज कर वंशभास्कर के छापने सहायता दी है, और जिन्होंने प्रथम ग्राहकश्रेणी में अपना ना- लेखकर उत्साह बढाया है उनके नाम नीचे लिख कर कोटि धन्यवाद देतेहुए ईश्वर से उनका सदा मंगल चाहते हैं.

पहले रुपये भेजनेवालों के नाम

ा नामावली

श्रीमान् कोटा नरेश्वर
श्रीमान् महारावळजी जैसलमेर
ठाकुर साहिब मनोहरसिंहजी सरदारगढ [उदैपुर]
ठाकुर सा० अमरसिंहजी गढी
ठाकुर साहिब अमरसिंहजी(उदैपुर)
ारहठ फतहसिंहजी (उदैपुर)
ुधवाड़िया कँवरजी करणीदानजी
ुधवाड़िया जगमालजी (उदैपुर)
जमादार भानुजी गांव दांतो गुजरात
ावबहादुर श्यामसुन्दरलालजी (कृष्णगढ)
ठाकुरसा० लालसिंहजी (बीकानेर)
ठाकुरसा० बहादुरसिंहजी(बीदासर)
ठाकुरसा० रणजीतसिंहजी (ततारपुर)
ठाकुरसा० प्रल्हादसिंहजी (रुनीजा-मालवा)
ठाकुरसा० बिड़दसिंहजी चौहाण (अलवर)
ठाकुर सा० गंगासिंहजी सेनाध्यक्ष (अलवर)

संख्या नामावली

१ बारठ शिवबगसजी
१ बारठ गंगाबगसजी
१ अचरोल ठाकुरसा० केसरीसिंहजी (जैपुर)
१ रामसली ठाकुरसा० भूरसिंघजी
१ करणसर ठा० सा० बहादुरसिंघजी
१ सादूलपुरा का खिड़िया परभुदानजी
१ नीपलास ठा० सा० रूपसिंघजी चांपावत
१ कँवर साहिब अमरसिंहजी चांपावत
२ धुवाळे ठा. सा० भोपालसिंहजी
१ प्रोहित अमेदजी [जैपुर]
१ बारठ रामलालजी (खेतड़ी)
१ ठाकुरसा० रणजीतसिंहजी राठोड़ (सैंसड़ा मारवाड़)
१ साह रंगराजजी (जोधपुर)
१ मुहता गणेशचंदजी (जोधपुर)
१ साह भभूतचंदजी (जोधपुर)
१ रावराजा रूपसिंहजी (जोधपुर)
१ कविराजा मुरारिदानजी (जोधपुर)
१ ऊजळ बैणीदानजी [जोधपुर]

प्रथम ग्राहकश्रेणी में नाम लिखानेवालों के नाम

श्रीमान् बुन्दी नरेश्वर
श्रीमान् झालावाड़ नरेश्वर
ाकुरसा० बगरू सावंतसिंहजी जैपुर
ागरू कँवरजी प्रतापसिंहजी
ूड़ी ठाकुरसा० उदैसिंहजी

१ मनोहरपुर के रावजी साहिब प्रतापसिंहजी
२ स्वामी मोतीरामजी भंडारी
१ खंडेला का पांना छोटा का राजाजी सजनसिंहजी
१ गांव खेड़ी का पनजी गडण

१ ठाकुर सा० सवाईसिंहजी जोदका
१ बलदेवजी कविया
१ बारठ रामप्रतापजी
१ ठिकाना मरवै
१ ,, दांनै
१ ,, मंडावै अजीतसिंहजी
१ ,, मलसीसर
१ ,, दूधू
१ ,, खाचरीवास
१ ,, सीवाड़
१ ,, लवाण
१ ,, डांगरथल
१ ,, डिग्गी
१ ,, दूणी
१ ,, पाहाड़े
१ ,, पाडली
१ ,, जोबनेर
१ ,, नींदड
१ ,, नोलगढ स्योसिंघजी
१ ,, बागावास
१ ,, वणपांणे
१ ,, खेतड़ी
१ ,, खंडेला
१ ,, मेंदवास
१ ,, हरसोली
१ ,, मोचतपुरै
१ बारठ स्योदानजी
१ बारठ हिंगलाजदानजी
१ बारठ संभूदानजी
१ बारठ स्योबगसजी
१ बारठ रोडजी
१ बालाबगसजी पालावत
१ धानसिंघजी पतरोटा
१ ठाकुरसा० केसरीसिंहजी
१ ठाकुरसा० महादसिंहजी रागावत
१ ठाकुरसा० बनूण बलवंतसिंहजी
१ साकर देवीसिंघजी

१(रावबहादुर ठा० सा० मंगल
(छ
१ ठा० सा० दुर्जनसिंहजी जाव
१ ठा० सा० कृष्णसिंहजी बीजवा
१ चारण अमरूदानजी (बीकाने
१ रियासत सावर सिभुसिंघजी
१ ठा० सा० अमरसिंहजी बोरखे
केभाई [नरसिं
१ ठा० सा० गोरधनसिंहजी
गूगाहेडाझाला
१ कॅवर सा० सत्रुसालजी लसूरड
१ ठा० सा० विनैसिंघजी रौसड़ीके
१ ठा० सा० अजीतसिंहजी मंडल
१ रतनू रामनाथजी
१ सीकर रावराजाजी साहिब
२ बारहठ रामनाथजी (उदैपुर)
१ बारठ किशोरदानजी सोजत मार
१ बगतावरसिंहजी बेड़ा ठाकुर सा
के भाई (जोध
१ महादानजी वणसूर [जोधपुर
१ ठिकाणा घाणेराव [मारवाड़]
१ ठिकाणा पोकरण
१ रावराजा अमरसिंहजी [जोधपु
१ खिड़िया चेलदानजी
१ लाळस नवलदांनजी
२ सिंघीजी बछराजजी
१ वणसूर कृपारामजी
१ शाह हणवंतचंदजी
१ पंडितजी लालचंद्रजी महाराज
१ भंडारी किसनमलजी
१ भंडारी फोजचंदजी
२ ताल ओंकारसिंघजी
२ शाह गुराका दवचाडिया ना[illegible]
१ गांव देवरिया [illegible]
१ सकलशास्त्रनिष्णात स्वामी[illegible]
बालारामजी [illegible]

॥ श्रीः ॥

मुद्रणाकर्तृनामधामादिकथनम्

श्रीमान् विद्यावितरणपटुर्दीर्घदर्शी विनीत
उद्यद्भास्वद्रुचिरसुमहाः शिक्षिनो वाजिवर्गे ॥
कार्याकार्येक्षणनिरतधीः स्फूर्तिमांस्तत्त्ववेत्ता
सर्दाराख्यो जयतु सुचिरं श्रीमरुक्ष्मापतीन्द्रः॥ १ ॥

धीरो वीरः प्रतापी विपुलतरमतिर्दिक्षु विख्यातकीर्ति
र्विद्विड्वर्गस्य जेता प्रबलतरजने दीनलोके समानः ॥
दुष्टानां दर्पहन्ता तरणिकुलभवः प्राप्तपूर्णप्रतिष्ठो
जीयादानन्दहेतुर्मरुधरणिनृणां भागधेयं प्रतापः ॥ १ ॥

चारणकुलावतंसः कविराजश्रीमुरारिदानाख्यः ॥
शरदः शतं स जीयान्मुद्रणकार्यं यदाश्रयात्सिद्धम् ॥१॥

परोपकारैकपरायणो यः सरस्वतीजानिरभूद्बधीचिः ॥
तदन्वयेऽभावि महोत्तमेन ज्योतिर्विदा श्रीरघुनाथनाम्ना ॥ १ ॥
तदात्मजः श्रीबलदेवनामा विद्वान्महान् भागवतैकनिष्ठः ॥
स्वधर्मपालोऽतिपरोपकारी विराजते योधपुरेऽतिरम्ये ॥ २ ॥
पतिव्रतामूर्धमणिर्वदान्या धर्मे रता दीनदयार्द्रचेताः ॥
शृङ्गाररूपा सदनस्य साक्षात्तद्धर्मपत्नी सिणगारनाम्नी ॥ ३ ॥
तयोः सुताः सन्ति पञ्च प्राणा इव सुसंमताः ॥
रामकर्णाभिधस्तेषां ज्येष्ठो हरिपदे रतः ॥ ४ ॥
श्रीमद्भारतभास्करेतिपदभाग्वेदान्तभट्टाञ्चिता
नानाकाव्यकलाकलापकुशलाः सद्धर्मसंस्थापकाः ॥
विद्यासिन्धुसुधांशवोऽतिकरुणाः श्रीगट्टुलालाभिधा-
स्तत्पादाम्बुरुहेषु यस्य सततं चेतो मिलिन्दायते ॥५॥
तेनायं खलु मुद्रयते सविवृतिः श्रीवंशसूर्याभिधः
साहाय्येन यवीयसोऽतिविदुषः श्यामस्य भव्यात्मनः ॥

शिष्टाग्रे सरसं समर्प्यत इतश्चाशास्यते सादरं
सानन्दं कवितासुधैकरसिकाः पश्यन्तु चेतोहरम् ॥६॥
रसशरनवचन्द्रेब्दे मार्गे मासेऽसिते दलेष्टम्याम् ॥
पूर्णः प्रथमो भागो योधपुरे स्वप्रतापसुप्रेसे ॥७॥

सटीक वंशभास्कर के मूल्य का नियम

(१)प्रथम रुपये भेजनेवालों को रु० २५) कलदार में समग्र ग्रंथ खंडशः ज्यों छपता जायगा त्यों त्यों भेजा जायगा.

(२)केवल प्रथम ग्राहकश्रेणी में नाम लिखानेवालों को रु० ३०)कलदार समग्र ग्रंथ संपूर्ण छपजाने पर भेजाजायगा.

(३)ग्रंथ संपूर्ण छपजाने पर रु० ४०) कलदार में मिलेगा.

डाकव्यय अलग देना होगा.

विशेष सूचना

जिन श्रीमानों ने मूल्य के रुपये भेजदिये हैं उनको ज्यों ज्यों वंशभास्क
र के खंड छपतेजांयगे त्यों त्यों जिल्द बंधा कर अलग२भेज दिये जांयगे. इ
सलिये अब भी जो रसिकजन हालके (संवत् १९५६) के फाल्गुन सुदी पूर्णिमा
तक रुपये२५) कविराजाजी श्रीमुरारिदानजी साहिब के पास जमा करादे
उनको रु० २५) में भेजदिया जायगा. और खंड भी ज्यों ज्यों छपते रहेंगे
त्यों जिल्द बंधा कर अलग अलग भेज दिये जांयगे. इसलिये प्रथम ग्राहक
श्रेणी में नाम लिखाने वालों से निवेदन है कि उपरोक्त अवधि तक रुपये भे
ज कर इस कार्यसिद्धि में सहायता प्रदान करें. इस ग्रंथ के छपने का निर्भर
गुणग्राहकता से प्रथमग्राहक बन प्रथम रुपये भेजनेवाले और सब प्रकार
पूर्ण सहायता देनेवाले विद्या के कदरदान श्रीकविराजाजी साहिब पर है.

जो महाशय उपरोक्त समय तक रुपये जमा न करा देंगे उन
ग्रंथ की प्राप्ति विलम्ब से होगी. अर्थात् ग्रंथ छपजाने तक इस ग्रंथ के न
तामृत से वंचित रहना पड़ेगा और मूल्य भी अधिक लगेगा. इसलिये फाल्गु
सुदी पूर्णिमा तक की अवधि देकर सूचित किया जाता है सो इस अवसर को न चू

यद्यपि हमने विज्ञापन में लिखा था कि समग्र ग्रंथ की जिल्दें ४ बंधाई जा
यगीं परंतु कार्य का आरंभ ही था इसलिये पहली जिल्द छपने में विल
विलम्ब हुआ और ग्राहकों के ग्रंथ देखने की अति त्वरा आई. जिससे प्रथ
म भाग अर्थात् १-२-३ राशि को दो जिल्दों में बांधना विचार हो गया है
सभी आप की सेवा में भेजी हैं और तृतीय राशि अलग बंधा कर पीछे से
भेजी जायगी.

ॐ

परमात्मने नमः

अथ वंशभास्करटीकाकारस्य संक्षेपतो वंशवर्णनम् ॥



तत्रादौ टीकासमाप्त्यर्थसाधकं मङ्गलाचरणं प्रारभ्यते ॥

दोहा

मिहिर असंख्य असंख्य महि, धरे विनुहि आधार ।
सुकवि कृष्ण आधार सुहि, अजर अमर अविकार ॥ १ ॥

मनोहरम्

सर्वशक्तिमान है दयालु न्यायकारी दृढ,
एक अविनाशी अविकारी पदपाचेकौं ।
धराधर-युक्त धरा असंख्यन सूर्यधारी,
व्यापक चराचरमें व्योमरीति राचेकौं ।
कहैं कविकृष्ण जो अजन्मा रू अखंड ईश,

रात्री में जितने तारे दीखते हैं वे सब स्वयं प्रकाशमान सूर्य हैं और जिस प्र र यह अपना सूर्य अपनी इस पृथ्वी को प्रकाशित करता है इसी प्रकार सूर्य भी अपनी अपनी पृथ्वियों को प्रकाशित करते हैं इसी कारण से मं- गाचरण में कहागया है कि जिस परमेश्वर ने असंख्यात सूर्य और असंख्य थ्वियों को बिना किसी आधार के धरे हैं वही जरारहित अमर और अवि- री परमेश्वर मेरा आधार है. जाति वाचक शब्द के साथ बहुवचन का ोग करना अनावश्यक है इस कारण से मिहिर और महि शब्द एक वचन कहे गये हैं परंतु "असंख्य" इस शब्द के योग से बहुवचन जानना चाहिये ॥१॥ र्वशक्तिमान् होने पर भी दृढ दया करनेवाला और न्याय करनेवाला र नाश रहित है, वह एक ही है उसके समान दूसरा ई नहीं है और जो कभी विकार को प्राप्त नहीं होता अर्थात् जिस प- ात्मा का कभी अवतार आदि नहीं होता, ऐसे पद में पचा हुआ और पर्व- सहित असंख्य पृथ्वियों को और असंख्य सूर्यों को बिना ही किसी आ- र के धारण करनेवाला चर और अचर (जड़ और चेतन) में आकाश के ान राचा हुआ (व्यापक) है, टीकाकार बारहट कृष्णसिंह कहता है कि

अमित अगोचर अरूप वेद-जाचेकौं ।
भैरव भवानी आदि और भ्रमजाल ऐसे
काचेकौं न मानौं मानौं एक वह साचेकौं ॥ २

दोहा

निपुण पितू अवनाड़के, धारि चरण हियधाम ।
तिम गुरु सीतारामकौं, पूरणं करत प्रणाम ॥ ३ ।
देवबानिमैं आदिकवि, जिम हुव बल्मकजात ।
सूर्यमल्ल भाषा सुकवि, मममतें तिमहिं मनात ॥ ४
चन्द आदि कवि चन्दसम, रहे सबहि हतरोचि ।
सूर्य सूर्य उद्गम समय, पिक्खेजावत पोचि ॥ ५ ॥
रीति लक्ख गुन व्यङ्ग्य अरु, शब्द छन्द रचि शुद्ध ।
नाहिन कोऊ निब्बहे, बनि यहँरीति प्रबुद्ध ॥ ६ ॥
केशव आदिक कविनके, पिक्खे बहुत प्रबन्ध ।
सूर्यमल्ल रचना सदृश, सो न मिले दृढसन्ध ॥ ७ ॥

जो परमेश्वर जन्म करके रहित (जिसका कभी जन्म नहीं होता) कभी खंडित नहीं होता और सबका स्वामी है, जिसका कभी प्रम प या तोल) नहीं हो सकता, किसी के देखने में नहीं आसकता, हित, और वेदों ने जिसका निश्चय किया है एक उस सच्चे परब्र मानता हूं ; भैरव और भवानी आदि भ्रमजाल के समान कच्चे देव नहीं मानता ॥ २ ॥ १टीकाकार के पिता का नाम 'औनाड़सिंह' (अन २प्रणामके आठअंग(उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां जानुभ्यां प्रणामोष्टांग उच्यते)हैं उन सहित किया जावे उसको पूर्ण प्रण हैं३ संस्कृतके आदिकवि ४ वाल्मीकि मुनि हुए इसीप्रकार ५मेरे विचार के आदिकवि [आचार्य] सूर्यमल्ल हैं क्योंकि भाषा में अद्यावधि ऐसा सीने नहीं रचा ॥ ४ ॥ ६ चन्दभाट आदि जो भाषाकवि हुए वे सूर्य सूर्य के ८ उदय होने से दिवस के चन्द्रमा के समान ७ कान्ति रहित हो काव्यप्रकाशादि साहित्य ग्रन्थों में रीति, गुण, लक्षण, व्यङ्ग्य आदि अङ्ग कहेगये हैं उनको आदि लेकर शुद्धशब्दों का प्रयोग और शुद्धछन्द सूर्यमल्ल के समान १० विशेष विद्वान् बनकर कोई ९ निर्वाह नहीं ॥ ६ ॥ ११ बहुत ग्रन्थ देखे १२ दृढप्रतिज्ञावाले नहीं मिले

मात कबिहि गुन काव्यके, पुनि बहु विद्या पूर ।
नय[1]रत इतिहासिक भयो, सूर उदै यहसूर ॥ ८ ॥
शाण चढे विनु सुमनि[2] सुहु, पावत कहुँन प्रकाश ।
त्यौं टीका विनु ग्रन्थको, बनत न कबहु विकाश ॥ ९ ॥
तिनमैं हू यह[3] अति कठिन, बहुभाषाजुत बादं[4] ।
बिनु टीका कबहु न बनैं, समझनको सबै[5] स्वाद ॥ १० ॥
थाके समझनके अरथ, बहु जन बिकल बिचार ।
रची सुमित्रन प्रेरना, टीका करन तयार ॥ ११ ॥
करत सु यातैं याहिकी, उत्तम टीका अर्थं[6] ।
जाके बल बाल[7] हु जगत, समझन होंहिं समर्थं[8] ॥ १२ ॥
कृष्ण सुकवि के वंशको, समझहु कथन समासं[9] ।
राजथान विच जो रहत, बिधि बिधि करत बिलास ॥ १३॥
जवंन[10] मुहम्मद तुगलक जु, भो दिल्लिय भरतार ।
तानैं अतिशय रचि तुमुल[11], महि बेढियं[12] मेवार[13] ॥ १४ ॥
राणा गढलक्ष्मण[14] रहे, खल सम्मुह खिरि खेत ।
सुत तिनके अरिसिंह सुहु, निवसे नाकनिकेत[15] ॥ १५ ॥
अजय[16] अनुज अरिसिंहके, भये भूमिभरतार ।
सोहु गये दिवं[17] कालवश, भुज हमीर[18] धरिभार ॥ १६ ॥
लै हमीर प्रभुता[19] लगे, महि जित्तन मेवार ।
पैं बल यवननको प्रचुरं[20], जित्त न सके जुझारं[21] ॥ १७ ॥

---

१ यह वंशभास्कर भारतवर्ष सम्बन्धी इतिहास का सूर्य उदय हुआ है ॥ ८ ॥ २ श्रेष्ठ मणि भी ३ वंशभास्कर ग्रंथ ४ वक्ता (ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल) के वचन ५ सबको समझने का आनंद विना टीका के कभी नहीं आ सक्ता ६ उत्तम अर्थ के साथ टीका की जाती है ७ बालक अथवा मूर्ख भी ८ समर्थ ९ संक्षेपसे १० यवन ११ घोर युद्ध १२ घेरी १३ मेवाड़ (देश का नाम है) अर्थात् मेवाड़ की भूमि को १४ चितौड़ के महाराणा का नाम (गढ़लक्ष्मणसिंह) १५ स्वर्गस्थान १६ अरिसिंह का छोटा भाई अजयसिंह राजा हुआ १७ स्वर्ग १८ हमीरसिंह के १९ स्वामिपन २० बहुत २१ युद्ध करनेवाले वीर ।

तब निराशह्वै निधन[1] तकि, द्वारकेश प्रभु द्वार ।
क्रिय प्रयान मग द्वारिका, हियधरि लज्जा हार ॥ १८ ॥
मग जावत गुर्जर[2] मुलक, सुनि चारण जश सोर ।
ग्राम खोड[3] नामक गये, मिलन पितामह मोर[4] ॥ १९ ॥
विक्रमाब्दे[5] ख ख वेद विधु१४००, आयें[6] कठिन अनेह[7] ।
मेदपाट[8] तजि भूपमनि, गमने बारू[9] गेह ॥ २० ॥
कवि बारू आतित्थ करि, रक्खे रान हमीर ॥
पलटाये संबोधि[10] पंहु[11], भयछुराय ह्वै भीर[12] ॥ २१ ॥

पट्पदी

बारूमात विशद[12], कित्ति[13] धारक हित कारक ।
नाम बरवडी निपुन, आदि शक्ति सु अवतारक[14] ।
नृप नवघन कहँ न्योंति, कुलू[15] ओदन इक चाढिय ।
पृतना[16] सह दिय तृप्ति, बहुत अचिरज जग बाढिय ।
अभिधान[17] अन्नपूर्णा उचित, पाय तदिनै[18] हुव जग प्रथितै[19] ।
हम्मीर भूप वृत्तान्तयह, सुनि पहुँचे तिन्ह दरश हित ॥२२॥
पाय दरस पय परसि, नृपति निजदुःख निवेदिय ।
अम्बा[20] अक्खिय होहु, भूप शत्रुन बल भेदिय ।
मुरि जावहु निज मुलक, जुद्ध करि शत्रुन जित्तहु ।
रविकुल की तजि राह, विरचि निज घात न वित्तहु ॥
करजोरि नृपति विनती करिय, किंह बल[21] जीतौं शत्रु कहँ ।
न भिरन तुरंग[22] इक न रहिय, जुज्झन हित भट हू न जहँ ॥२३॥

मरण २ गुजरात ३ खोड नामी गाम मे ४ मेरे (टीकाकार के पितामह से) ५
नाम के सम्वत् ६ समय ७ मेवाड़देश ८ बारू नामक चारण के घर पर
समझाकर १० राजा को ११ सहायक होकर १२ उज्वल १३ कीर्ति
देवी का अवतार थी १५ एक कुलड़ी [छोटे से पात्र] में पानी भर चा
त चढा कर राजा नवघण को संपूर्ण १६ सेनासहित तृप्त करदिया इसका-
से १७ अन्नपूर्णा नाम १८ उसी दिन से १९ प्रसिद्ध हुआ २० माता ने
त २१ किस सेना से शत्रुओं को विजय करूं २२ एक भी घोड़ा नहीं रहा

मात कहिय मम पुत्त, नाम बारू अति निर्भय ।
नयपटु[१] धर्मनिधान[२], जाय करिहैं तावक[३] जय ॥
तरल[४] पंचशत५००तुरग, नृपति[५] विनु-मूल्य निवेदहि[६] ।
जिम[७] बाहुज गन जोरि, दिर्घशत्रुन बल भेदहि[८] ।
तुम जाहु भूप पच्छे[९] तुरत, आवहिं यह कछुदिनन उत ।
लै विजय लहहु प्रभुता ललित[१०], निखिलनतैं[११] बनिहो प्रनुत[१२] ॥२४॥

दोहा

उत जो भूपति जालउर, कथ संबंध कहाय ।
सोनगरे चहुवान सन, जोरहु सगपन जाय ॥ २५ ॥

षट्पदी

दिय माता बरदान, सु लहि नृप हम्म[१३] सिधायउ ।
मेदपाट धर मांहि, प्रविसि प्रत्यय[१४] यह पायउ ॥
मालदेव मंत्री सु, आय इम अरज उचारिय ।
विरचन हित संबंध, राव मुहि अत्त प्रचारिय ॥
करि स्वी[१५] रु चलहु जालोर कँहँ, सोनगरे अनुचर समुझि ।
कछु देश देंहि दायज करि रु, भूप रहहु दुहुँ प्रीति भजि ॥ २६ ॥
इहिं अन्तर उत उमगि, सप्ति[१६] शतपंच५००सत्थ साजि ।
बारू आयउ बेगि, भिन्टि[१७] नृप हिन्तु[१८] नेह भजि ।
जाय हम्म जालोर, पाणिपीडन[१९] करि पच्छे ।
मुरि पत्ते[२०] मेवार, गढ सु चित्तोर हि गच्छे[२१] ।
करि विजय करिय दुष्टन कदन[२२], सदन[२३] अप्प[२४] अपनाय सुहि ।

१ नीति में चतुर २ धर्म ही है धन जिस के (धार्म्मिक) ३ तुम्हारा विजय करेगा ४ चपल ५ हे राजा बिना मूल्य ही ६ तुम्हारे भेट करेगा ७ इसी प्रकार क्षत्रियों का समूह जोड़कर ८ शत्रुओं की बड़ी सेना को भेद न करेगा ९ पीछे १० सुन्दर ११ सब से १२ विशेष स्तुति योग्य बनोगे १३ हम्मीरसिंह १४ विश्वास (सबूत) पाया कि १५ स्वीकार करके १६ घोड़े १७ मिला १८ से (महाराणा हमीरसिंह से) १९ विवाह करते ही पीछे मुड़कर २० पहुंचे २१ चित्तोड़गढ़ में गये २२ नाश २४ अपने २३ घर को अपना करके

दिल्लीस भञ्जि दुस्सह दमिय[१], जमिय राज्य सीसोद जुहि[२] ।२७।

दोहा

बुल्लि खोड़[३]तैं बरवड़ी, मन्नि[४] इष्ट वह मात ।
चित्रकोट[५] रक्खी चतुर, बलि हमीर बिख्यात ॥ २८ ॥
जब बिग्रह[६] छोर्‌यो जननि, तब अतिही हित तान ।
अन्नपूर्णाके[७] अरथ, रचिय शिवाऽऽलय[८] रान ॥ २९ ॥
ममकुलके इहिं मन्निहैं, इष्टदेव अनुसार ।
कहि[९] सेवा सामग्रिकौं, दिय इक ग्राम उदार ॥ ३० ॥
वह मन्दिर अबहू उदित, सुखद चित्तगढ़[१०] शीस ।
पुनि त्यौंही इक उदयपुर, है किहिं[११] रचित महीस ॥ ३१ ॥
दरशनहित तिहिंठाँ[१२] सदा, आश्विन शुक्ल अनेह[१३] ।
अबहू जावत वँहँ नृपति, नूतन[१४] हिय धरि नेह ॥ ३२ ॥
दलि शत्रुनको दिग्घ[१५] दल, चढि पब्बय चित्तोर ।
रविबंशिन पुनि राज्य रचि, जार्‌यो जवनन जोर ॥ ३३ ॥
कारन लखि इहिं विजयको, बारू चारन बुल्लि[१६] ।
कोटि दान दीनो स्वकर[१७], तुलना वासव[१८] तुल्लि ॥ ३४ ॥
तिहि बिच निवसथ[१९] आँतरी, पुनि रवि१२ग्राम उपेत[२०] ।

दण्ड दिया २ जो सीसोदियों का राज्य पहिले था वही पीछा जम गय
खोड नामक ग्राम से बरवड़ी को बुलाकर ४ उस माता को इष्टदेव मानकर
चीतोड़ पर रक्खी ६ जब माताने शरीर छोडा तब ७ अन्नपूर्णा (बरवडी का दूसरा
म अन्नपूर्णा था) के लिये महाराणा हम्मीरसिंहने ८ देवीका मन्दिर बनवाया ९ मेरे
ज वाले अन्नपूर्णाको इष्टदेव के सदृश (महाराणा के इष्टदेव तो एकलिंगेश्वर महा
ने हैं उन्हींके अनुसार) मानेंगे यह कहकर पूजा की सामग्री के व्यय के अ
हम्मीरसिंह ने एक ग्राम भेट किया १० वह मंदिर अब भी चित्तोड़गढ के
रर है ११ किसी राजा (महाराणा) का बनाया हुआ अन्नपूर्णा (बरवडी)
एक मंदिर उदयपुर में भी है १२ वहां पर १३ आश्विन सुदी पक्ष के समय
हृदय में १४ नवीन नेह धारण करके दर्शन करने को अब भी महाराणा जाते हैं
, बडा १६ बुलाकर १७ अपने हाथ से १८ इन्द्र की १९ ग्राम (आंतरी नामक गाम)
सहित बारह गामों के साथ

सहसपचीसन२५००[1]आय सह, हित रचि बारू हेत ॥ ३५॥
बखसि रान मेवाड़ बिच, काविको बास कराय ।
पैय[2] मुत्तिन[3] पूजे प्रथित[4], भुव बिच सुयस भराय ॥ ३६ ॥
पोल[5]पात्र किय अप्पने, नृप हमीर शिर नांय[6] ।
कवि हु मुदित निज स्वान्त[7] किय, पीले अक्खत[8] पाय ।३७।
ग्राम खोड नामक सु गृह, जनपद[9] तजि गुजरात ।
बसि तबतैं मेवाड़ बिच, रान स्वामि ठहरात ॥ ३८ ॥
बारूको सनमान बहु, रान बढायो रीझि ।
उमरावन सम अँदरयो[10], पूरन नेह पसीजि ॥ ३९ ॥
बारू सन बुल्ले विदित, भूप हमीर[11] सुभाय[12] ॥
हमरी संतति[13] हृदयतैं, यह उपकार न जाय ॥ ४० ॥
ऐसो कोउक पद उचित, स्मारक[14]चिन्ह सदाहि ॥
सो तुम धारहु मोद[15] सन, यह मेरो मत[16] आहि[17] ॥ ४१ ॥
हय[18]सोदाके हेतु[19] हुव, यह उपकार अनूप[20] ॥
सोही सोदापद सदा, भजहु[21] कह्यो इम भूप ॥ ४२ ॥
तबतैं देथा[22]शाख तजि, धरि सोदा अभिधान[23] ।
अन्ववाय[24] बारू अबहु, मन्नत अपनो मान ॥ ४३ ॥

१आमदनी पचीस हजार रुपयों की वार्षिक आमद सहित २पग ३मोतियों से ४ प्रसिद्ध ५ अपने द्वार पर नेग लेनेवालों में पात्र ६ झुकाकर ७ मन ८ आखा ९ देश १०आदर किया ११महाराणा हमीरसिंह ने १२श्रेष्ठभाव से बारू से कहा कि हमारी १३सन्तान के हृदय से तुम्हारा यह उपकार नहीं जावै ॥ ४० ॥ ऐसा कोई उचित पद जो सदैव तुम्हारे कियेहुए इस उपकार को १४स्मरण करानेवाला चिन्ह होवै वह तुम १५हर्ष के साथ सदैव के लिये धारण करो यह मेरी १६सम्मति १७है ॥ ४१ ॥ १८तुम पहिले से घोड़ों की सोदागरी (व्यापार) करते थे इसी १९ कारण से हमको पाँचसौ घोड़े इकट्ठे दे सके थे इसी से यह २० उपमा रहित उपकार हुआ है सो उसी सोदा (व्यापार) पद को तुम २१ सेवन करो ॥ ४२ ॥ बारू की पहिले २२ देथा नामक शाखा थी जिसको छोडकर बारू ने महाराणा हम्मीरसिंह की आज्ञानुसार २३ सौदानामक शाखा को धारण किया उसी नाम की शाखा को धारण करके २४ बारू का वंश अब भी अपना मान समझता है॥४३॥

द्वारनेगतैं[1] द्वारहठ, शब्द जुरयो तिहिँ सत्थ ॥
इम सोदाबार्हठ उचित, शाखा भई समत्थ[2] ॥ ४४ ॥
शीसोदिन[3] के नेग सब, पावत सुहि मुद पाय ॥
शाखा इकशतवीश१२० के, भये मौलिमनि[4] भाय ॥ ४५ ॥
रान दियो बारू अरथ, कोटि द्रव्य यश काज ॥
तिम बारू निज यश तनन[5], किय उदार यह काज ॥ ४६ ॥
करि एकत्रित[6] याचकन, मुद्रा लक्ख प्रमान ॥
चित्रकूट[9] चढिकैं चतुर, दिय वदान्य[10] बनि दान ॥ ४७ ॥
तादिनतैं याचक संतत[11], सो आशय धरि शीस ॥
बारू संततिकौं[12] अबहु, बोलत लक्खबरीस[13] ॥ ४८ ॥
बीर वदान्य रु नय[14] विदित, बारू भये विशेष ॥
तिनको यश जग वित्थरयो, दृढतर[15] देश विदेश ॥ ४९ ॥
बारू१ के बाजूड़२ हुव, तिनके बेला३ तेम ॥
पालम४ अरु हरिदास५ पुनि, जमणा६ वीर सु जेम ॥ ५० ॥
राजवीर७ अमरा८ नरू९ , उपजे क्रमसह एस[16] ॥
मह[17] विलसे मेवाड़महँ; निवहत रान निदेस[18] ॥ ५१ ॥
पाये बहु शाँसण[19] प्रथित, महत बढाये मान ॥
परत भार निज स्वामि पर, रचे निछावर प्रान ॥ ५२ ॥

मनोहरम्

महाराणा आदे शीसोदिया क्षत्रियों के १द्वार(दरवाजे)पर हठ पूर्वक नेग लेने से
द्वारहठ (बारहठ) कहलाये यह शब्द सोदा शब्द के साथ जुड़कर "सोदा बार
हठ" नाम की उचित और २ समर्थ जुदी शाखा हुई ॥ ४४ ॥ वे ही सोदा बा
रहठ ३शीसोदिया वंश के "राणावत" सब क्षत्रियों से आनन्द के साथ नेग (दस्तू
र)पाकर चारणों की एक सौ वीश साखा प्रसिद्ध हैं उनके ४मुकुटमणि की भांति
हुए ॥ ४५ ॥ ५ अपने यश को फैलाने के लिये ७ चारणों को याचना करनेवा
ले लोगों को, ६ इकट्ठे करके, ८ लाख रुपये, ९ चित्तौड़गढ पर चढके १० दाना
र (उदार) बनकर दिये ११ निरंतर १२ बारू के वंशवालों को १३ लाखबरीस
(लाख रुपये देनेवाले) कहते हैं १४ नीति में प्रसिद्ध १५ अत्यंत दृढ होकर फै
ला १६ ये १७ उत्सव १८ आज्ञा १९ इदक ग्राम

द्वीप ताप ऋषि इन्दु१७३७विक्रम समों[1] के बीच,
दिल्लीईश ओरँग चलायकैं छंज्यो[2] नहीँ ।
छोरि उदैद्रंग[3] रान राजसिंह अद्रिनमैं,
जुरनौं चह्यो जो भीत[4] भंजिकैं[5] भज्यो नहीँ ।
लेत रह्यो नेग जिंहिँ द्वार[6]कौं न छोरौं कहि,
बारहठ नरू लरि भिरवे लज्यो नहीँ ।
म्लेच्छनकौं मारि स्वामि लोन[7]कौं उजारि अहो[9],
तंन[10]कौं तज्यो पैं निज पंन[11]कौं तज्यो नहीँ ॥ ५३ ॥

दोहा

उदयभाण१० हुव नरु सुवन[12], बंगाहेड़ै[13] रचि बास ।
राणा सेवन तजि रहे, उर धरि भाव उदास ॥ ५४ ॥
उनके भये किशोर११सुव[14], दृढ तिनके सुत देव१२ ।
बने बहुतही बीरबर, शाहपुरंप[15] गहि सेव ॥ ५५ ॥
शाहपुरातैं पुब्ब[16]दिश, गव्यूती[17] इक ग्राम ।
देवपुरा अभिधान[18] दृढ, पुनि खेड़ा उपनाम ॥ ५६ ॥
सम्वत तेरा धृति समय, छिति[19] वितान[20] यश छान ।

---

१ सवंत् में २ औरंगजेब महाराणा राजसिंह का विजय करने की शोभा लेने आया था वह शोभा प्राप्त नहीं हुई (शोभित नहीं हुआ) ३ उदयपुर, महाराणा राजसिंह ने बादशाह की फौज से घिरजाने के भय से उदयपुर को शून्य करादिया और पर्वतों में जाकर युद्ध करना चाहा ४ भय का ५ सेवन करके भगे नहीं थे, परंतु बारहठ नरू ने कहा कि जिस ६ द्वार (दरवाजा) पर हठपूर्वक मैंने नेग लिये हैं उस द्वार को ऐसे कठिन समय में नहीं छोड़ूंगा यह कहकर उदयपुर का शहर शून्य हो जानेपर भी औरंगजेब की सेना से लड़कर नेग पानेवाले उस द्वार से भी आगे बढ़के जगदीश के मंदिर पर काम आये [मारे गये] ७ अपने स्वामी का लवण खाया था उसको ८ उज्वल दिखाकर ९ आश्चर्य करनेवाला कार्य करके १० शरीर को छोड दिया परंतु अपने ११ प्रण को नहीं छोड़ा १२ पुत्र १३ मेवाड़ के उमराओं में एक ठिकाना है १४ पुत्र १५ शाहपुरा के पति की सेवा ग्रहण करके १६ पूर्वदिशा में १७ दोकोश (गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगमित्यमरः) १८ नाम १९ भूमिपर २० डेरा [तंबू] छाने के लिये

शाहपुरप उम्मेद[1] सुंहि[2], देव कविहि दिय दान ॥ ५७ ॥
अभ्युत्थानादिक[3] अरपि, बहु सनमान बढाय।
पूजनीय किय अप्पने, चावल पीत[4] चढाय ॥ ५८ ॥
पोलपात्र इम किय प्रथित[5], नृप उमेद धरि नेह।
कवि शिविका[6] आरूढ करि, गमन करायउ गेह ॥ ५९ ॥
देव१२कवीके सुत सदय[7], भये चमन१३ अभिधान।
तिनके कीरतिसिंह१४तिम, बीर धीर दृढवान ॥ ६० ॥
कित्तिसिंहके सुत कुशल, उपजे भाग्य उदोत।
जिन्ह अभिधा अवनाड१५जे, हितुन गुणाकर[10] होत ॥६१॥
गुन वसु धृति१८८३वत्सर गिनहु, श्रावन शुक्ला दोज।
भये प्रगट अवनाड़ भुव, आलय[11] अति मति ओज ॥ ६२ ॥
तिनके कृष्ण१६ सुं[12] मंदमति, रखैं कछुक कविराह।
तिँहँ कीन्हो साहस अतुल[13], अर्णव[14] मथन उछाह ॥ ६३ ॥

पद्धतिका

ऋतु व्योम नन्द विधु१९०६मित समा[15] रु,
फग्गुन शुचि[16] प्रतिपद१बुध सु चारु ॥
घटिका त्रयोदश१३ पल चउवीस२४,
सतभिषा ऋच्छ[17] घटि अष्ठतीस३८ ॥ ६४ ॥
पल बाण अग्नि३५जानहु अवंच, शिवनामयोग घटि तीन पञ्च५३॥
सर तीन३५पलहु तापैं सुभाय, अरु कौलव नामक करन आय॥६५॥

१ उम्मेदसिंह ने, २ उपरोक्त ग्राम, ३ ताजीम आदि देकर ४ पीले ५ प्रसिद्ध ६ पालखी [नरयान] पर चढाकर ७ दयावान ८ चमनसिंह ९ नामवाले १० गुणों की खान ११ अत्यन्त सामर्थ्य और बुद्धि के घर १२सो (तिनके कृष्णसिंह नामक मन्दमतिवाला जो थोड़ा सा कवियों का मार्ग रखता है) १३ बहुत १४ समुद्र के मथने का १५विक्रमी संवत् उन्नीस सौ छः १९०६ शालिवाहन शक१७७१ फाल्गुन(१६)सुदी एकम १ बुधवार घड़ी १३ पल २४ शतभिषा (१७)नक्षत्र घड़ी ३८पल३५ शिवनाम योग घड़ी५३ पल ३५ कौलव करण सूर्योदय से इष्ट घड़ी ५३ पल ५५ लग्न स्पष्ट ८। २२। ५४। ५३। सूर्य १०। ३

जन्मकुण्डलिका

८ १० चं के ११ शु सू बु ७ ९ ६ १२ श रा ५ ३ ४ २ १ मं

सूर्योदयात घटि इष्ट एहु, त्रेपन५३ पल पचपन५५जानि लेहु ।
अरु लग्नस्पष्ट अष्ठ८रुदुबीह२२, चौवन५४पुनित्रेपन५३हूसुहीह।६६
इहिं समय कृष्णकवि जन्म आस, कायर अरु कृपनन दियन त्रास
सर५अब्दं रह्यो लालन अधीन, पुनि बर्णबोध निज मातु दीन ॥६७।
जब दश हायनं वय जानलीन, पितु कियउ मोहि गुरुपद अधीन।
श्रीसीतारामाचार्य शुद्ध, परिडतन शिरोमणि अरु अलुब्द ॥६८॥
तिन्ह कृपा प्राप्त व्याकरण कोश, वयपाय कृष्ण कछु लहिय होश
अठतीस३८बरस वय करि उदार, इंहिं गिनि असार धरि स्वर्ग प्यार
महि बाहु नन्द शशि१९२१अब्द मान,अवनाड़ तात किय देह हान
पितु देह तजनको दुक्ख पाय, गृह कार्य लग्यो पाठं सु विहाय॥७०
शाहपुर भूप लक्ष्मणं सुजान, तिन मोहि लडायो सुत समान ।
पैं[12] शास्त्र बाहु निधि इन्दु१९२६पाय, नृप तेहु गये देवनंनिकाय७१
तिन पट्ट लह्यो नाहर सुरीति, ते करत सदा गुनतैंहिं प्रीति ।
भाग्यहितैं पाये हम भुंवाल, जे नित्य विडारक दुष्टजाल ॥ ७२॥

कुंभार्क गतांशाः ३। २७ (१) हुआ २ पांच वर्ष की अवस्था होने पर्यन्त ३ दश वर्ष की अवस्था होने पर ४ निर्लोभी ५ इस संसार को असार जानकर ६ वर्ष ७प्रमाण ८पिता अवनाड़ासिंह ने ९शरीर छोंडा १०उस पढ़ने को छोडकर घर के कार्य में लगा ११ लक्ष्मणसिंह नामक १२ परंतु उन्नीससौ छब्बीस के सम्वत् मे १३ स्वर्ग में गये १४ हमने नाहरसिंह नामक राजा भाग्यसे ही पाया १५ विखेरनेवाल

नृप नाहर मोपँहँ प्रीति ठानि, पुनि पोलपात्र[१] अपनो[२] पिछानि ।
पुनि पठन करायउ देवबानि[३], पाठक[४] इक अतिबुधकौं[५] सु ठानि ७३
पुनि राज्यभार मोहि सौंपि भूप, अति दान दये हित धरि अनूप[६] ।
बलि[७] लखिय उदैपुर भूप रुष्ट[८], तिनपैं मुहि पठयो करन तुष्ट[९] ॥७४॥
तँहँ मिले मोहि ऋषि दयानन्द, जे विद्यावारिधि[१०] अरु स्वछन्द[११] ।
तिन ज्ञानदै रु किय अमल[१२] चित्त, पुनि दियउ सुविद्या रूप वित्त[१३]।७५
सज्जन[१४] नृप सेयो मैं सुभाय[१५], लिन्हों जिन्ह सुतसम मुहि लुभाय ।
करि वेतन[१६] बहुविधि मान कीन, अरु राज्यकाज किय बहु अधीन
तिनके पदाब्ज[१७] रहि स्वर्ग तुल्य, भोगे अनेक सुख जे असूल्य ।
पैं[१८] हा[१९] हमैंहिं हतभाग्य कैंन[२०], नृप कियउ गोन सुरराज ऐन[२१] ।
वह अब्द भूमि युग नव रु चन्द१९४१, मनु प्रलयरूप निकस्यो जु मन्द
सो भूप शत्रु-अटवी[२२] कृशानु[२३], भो अस्त सर्वदा[२४] सजन भानु ॥७८॥
तब भये भूमिपति फतह[२५] तत्र, जे सदा बीरगुनके अमत्र[२६] ।
तिनहू मुहि रक्ख्यो हित तनाय, बहु दान मान संजुत बनाय ॥७९॥
पैं इत सु जोधपुर भूप आप[२७], यशवन्त[२८] सु यशलोभी अमाप ।
करिकैं निमंत्रण रु मोहि बुल्लि, तुलना सुरराजहि तुल्य तुल्लि ८०
पदभूषण[२९] काञ्चन दै प्रसिद्ध, इत आनि कियो सबभांति इद्ध[३०] ।

---

२ अपना १ पोळपोत्र [अपने द्वार पर नेग लेनेवालों में पात्र] जानकर ३ संस्कृत पढाया ४ पढानेवाला ५ रामनिवास नामक पण्डित को ६ उपमा रहित ७ पुनि, राजाधिराज नाहरसिंह ने अपने पर उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह को ८ अप्रसन्न जानकर उनको ९ प्रसन्न करने के लिये मुझे उदयपुर भेजा१०विद्या के समुद्र११स्वतंत्र१२निर्मल१३ उत्तम विद्या रूपी धन दिया१४महाराणा सज्जनसिंह की मैंने १५ श्रेष्ठ रीति से सेवा की१६तनखा करके१७उनके चरण कमलों में रहकर१८परंतु १९ खेद का विषय है कि २० करने को २१ स्वर्ग गये २२ शत्रुओं रूपी वन का २३ अग्नि २४ सदैव के लिये सज्जनसिंह रूपी सूर्य अस्त हो गया २५ फतहसिंह नामक २६ वीरगुण के पात्र २७ समर्थ २८ महाराजा यशवंतसिंह २९ पगों में सोने का भूषण देकर३०वर्धित किया (बढाया)

मानसे बढाव अतिमोद मानि, तब रचन लगो टीका प्रतानि ८१

दोहा

केसरिसिंह किशोर कहि, जोरावर लघु जानि ॥
त्रयसुत ए नत्ती[३] तिमहिँ, नाम प्रताप प्रमानि ॥ ८२ ॥
तीन पुत्र सुपठित तिमहिँ, पौत्र एक शुभपाय ॥
काव्य रु शास्त्र विनोद करि, रहतकृष्ण मुद छाय ॥ ८३ ॥
सुकवि कृष्णकों इहिँ समय, पालत त्रय भूपाल ॥
मान दानतैं किय महत, सुहि कृपनन हिय साल ॥ ८४
निरखहु नाहरसिंह नृप, प्रथम शाहपुर भूप ॥
भुगवत शाँसण[४] ग्राम भुव, रक्खत निज अनुरूप ॥ ८५ ॥
फतहसिंह मेवाड़पति, रविकुलमनि श्रीरान ।
वेतन[५]दै बहुविधि विपुल, मुहि रक्खत सनमान ॥ ८६ ॥
बहु आदर त्योंहीं बिरचि, रक्खत जोधपुरेश[६] ॥
पँग[७]भूषण हाटक[८] समपि, सद्धत रीति सुरेश[९] ॥ ८७ ॥
प्रतिमासिक वेतन प्रथितं[१०], द्वैसत २००रुप्पय देत ।
पटुता[११] सेन[१२] यशवन्त पहुँ[१३], लाह सुयश भरिलेत ॥ ८८ ॥
पालक[१४] मेरे त्रय नृपति, तीननके सुततेम ॥
मित्र बन्धु[१५] सबजन मुदित, रहहु सदा जुत छेम ॥ ८९ ॥
मुहि टीका निर्माण[१६] मैं, दृढउछाह जिन दीन ॥
सुहृद[१७] शिरोमनि ते सदा, पुष्ट रहहु मतिपीन[१८]॥ ९० ॥
मातु पिता गुरु चरन नमि हियधारि इष्ट सनेह ॥

१मन २ विस्तार करके ३ नाती (पोता) ४ उदक ग्राम और भूमि भुगावते हुए अपने समान मुझे रखते हैं ५ तनखा देकर बहुत रीति से मेरा बहुत आदर रखते हैं ६ इसीप्रकार बहुत सन्मान करके जोधपुर के ईश रखते हैं ७ और पगों में ८स्वर्ण (सोना) का आभूषण देकर९इन्द्र की रीति साधते हैं१०प्रसिद्ध ११चतुराई१२से१३प्रभु (स्वामी)१४पालना करनेवाले तीनों राज और तीनों के पुत्र अर्थात् राजाधिराज नाहरसिंह के पुत्र उमेदसिंह और सरदारसिंह, महाराणा फतहसिंह के पुत्र भोपालसिंह, राजराजेश्वर यशवंतसिंह के पुत्र सरदारसिंह १५ सम्बन्धी(लागतीके)१६टीका बनाने में १७ मित्रशिरोमणि१८तीव्र बुद्धिवाले

जन्मेलियेको फल समझि, अब आरम्भत एहैं[2] ॥ ९१ ॥
"उदधिमंथनी" नाम यह, पिक्खहु सुगम उपाय ॥
रचत कृष्ण टीका रुचिर, शब्द अर्थ दरसाय ॥ ९२ ॥

मनोहरम्

अमृतसो व्यंग्यार्थ सु गूढ[3] प्रकटायदैहौं,
इन्दिरासी उक्ति दान कल्पद्रु जनाय कैं ।
चंदमुखी नायकान वर्णनको चन्द कैं रु,
बीररस मद्य हाला मिच्चुहि गनायकैं ।
अभ्रगज कैसो गजवर्णन विधाय बलि ।
सप्तिनके वर्णनको सप्ताश्व मनाय कैं ।
काढिदैहौं याविधि तैं रत्ननको सोध करि,
वंशभास्कर[11]राब्धि को ह्यौं मंथन बनाय कैं ॥ ९३ ॥

दोहा

युग्म बाण वृहती इला१९५२, समौ[12] भाद्रपद मास ।
प्रेरित बहु मित्रन प्रकट, हुव इहिं[13] रचन हुलास ॥ ९४ ॥
चारणकुल धारण करत, उपपद विबुध[14] उदोत ॥
सोदाबारहठ शाख सुहि[15], हेतु[16] सुटीका होत ॥ ९५ ॥

१ इस संसार में जन्मलेने का यही फल है कि कोई परोपकारी कार्य करें इसी वार्ता को समझकर २इस टीका का प्रारंभ करता हूं ३अमृत के समान छिपेहुए व्यंग्यार्थ को प्रकट करदूंगा. और ४लक्ष्मी के सदृश उक्तियों को और राजाओं के दान वर्णन रूपी कल्पवृक्ष को जनाकर, चन्द्रमुखी नायकाओं के वर्णन को चन्द्रमा ५ करके ६ और मद्यरूपी वीररस, ७ विषरूपी ८ मृत्यु गिनाऊंगा अर्थात् इस ग्रन्थ में युद्ध के वर्णन में जहां तहां मृत्यु के होने का कथन है वही विषरूपी रत्न है क्योंकि समुद्र मंथन में जो विष निकलाथा उसकी गणना रत्नों में है; गजों के वर्णन रूपी९ऐरावत करके पुनि १०घोड़ों के वर्णन रूपी सप्ताश्व मनाकर, वंशभास्कर रूपी ११समुद्र का मथन करके इसप्रकार से रत्नों का शोधन करके निकालदूंगा यह टीकाकार की प्रतिज्ञा रूप रूपकालंकार है १२ सम्वत् १३ इस टीका के रचने का १४ देवता (महाभारतादि आर्ष ग्रन्थों में चारणों को देवता लिखा है) १५ वही (बारहठ कृष्णसिंह) १६ इस श्रेष्ट टीका का कारण है

प्रथमहिं ग्रन्थ [1]अथोर पुनि, बढ़ैं जु टीका [2]व्यास ॥
[3]प्रवृति होन संदेहपर, समझहु रीति [4]समास ॥ ९६ ॥
कठिनशब्द अरु विषयकौं [5]ठाँ ठाँ [6]स्फुट करि ठीक ॥
ताजि देहौं अति सुगम तिहँ, कहहु न जिहैं अनीक ॥ ९७ ॥
[7]मानस को इहिं जगतमैं, वि[8]स्मृति धर्म विचारि ॥
मिलैं कहू जो चूक मुहि, [9]धीधन लेहु सुधारि ॥ ९८ ॥
कुशल नाहिन [10]कविकर्म मैं, भयो न पण्डित [11]भूरि ॥
तऊ करत यह चपलता, करहु क्षमा कवि [12]सूरि ॥ ९९ ॥
सुकवि [13]कृष्टि सज्जन सुहृद, जुत [14]अञ्जलि [15]नति जानि ॥
करहु छमा कवि कृष्णकौं, पूरन दास पिछानि ॥ १०० ॥
हैं सु लोक उपकार हित, यह मेरो श्रम अत्थ ॥
तातैं भूलहु होय तउ, [16]सज्जन छमहु समत्थ ॥ १०१ ॥

---

१ बहुत २ विस्तार ३ लोकमें प्रचार होने के संदेह से ४ संक्षेप से टीका बनाई है ५ जगह जगह ६ स्पष्ट ७ मन का ८ भूलने का ९ बुद्धि ही है धन जिनके [बुद्धिमान्] १० कविता में ११ बहुत १२ पण्डित १३ पण्डित १४ हाथ जोड़े १५ नम्रता १६ श्रेष्ठ हृदयवाले [परोपकारी]

॥ श्री ॥

सूचीपत्र

श्रीगणेशायनमः॥

वंशभास्कर।

प्रथमराशौ प्रथमोमयूखः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीबादरायणायनमः ॥

अथ श्रीमन्नानानृपनिचयनुतनलिनचलनबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटाङ्किमहारावराजेन्द्रराम-सिंहात्तवंशवर्णननीतनियोगकविकुलकोटीरचारणचक्रचण्डांशुच-ण्डीदानात्मजसुकविसूर्य्यमल्लविहित-वंशभास्कराऽभिधविविधबा-हुजवंशविभक्तिविशिष्टवेदनीयवराविद्याविषयकप्राकृतादिपाण्डित्य-पूर्वप्रस्तुतपुरुषार्थ (४) प्रयोजनकसंविधातृसंविधेयसम्बन्धकवि-विधवैषयिककाव्यकलनकामाधिकारिप्रबन्धः पुस्तीक्रियते ॥

अथ श्रीमान् अनेक राजाओं के समूह से स्तुति कियेगये हैं कमल रूपी चरण जिनके, बुन्दी नगरी रूपी स्त्री के विलास करनेवाले, चहुवांणों के शिरोमणि, सरस्वती है भाग्य में जिनके अथवा सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् विद्वान्, हाडा पदवीवाले, ऐसे राव-राजाओं के इन्द्र रामसिंह से वंशवर्णन के अर्थ मिली है आज्ञा जिसको और कवि-कुल के मुकुट, चारणगण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र ऐसे श्रेष्ठकवि सूर्य-मल्ल से रचाहुआ वंशभास्कर नामक * अनेक क्षत्रियों के वंशविभाग के साथ जानने योग्य श्रेष्ठ विद्याओं के विषयवाला, प्राकृतभाषा आदि की पण्डिताई

---

* प्रत्येक ग्रन्थ मे विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध और अधिकारी ये चार अनुबन्ध ग्रन्थ के आदि मे होतेहै सो ही ग्रन्थकर्ता ने यहा पर दिखाये हैं, कि अनेक क्षत्रियो के वश विभाग के साथ जानने योग्य श्रेष्ठ विद्या तो इस ग्रन्थ का विषय है और प्राकृत भाषा आदि की पण्डिताई पूर्वक विशेष स्तुति युक्त पुरुषार्थ प्रयोजन है। ग्रन्थ बनानेवाले के ग्रन्थ के साथ संविधातृ संविधेय भाव अर्थात् बनाना व बनना ही सम्बन्ध है। और अनेक प्रकार के विषयों से भरे हुए काव्यो की गणना करने की कामनावाले अधिकारी है ॥

तत्र पूर्वं नित्यसच्चिदानन्दत्वादखिलाधिष्ठानत्वाच्च
स्वरूपं ब्रह्म प्रस्तूयते॥ १ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ आर्या ॥
आम्नाया यन्नित्यं तत्त्वं शक्ता नगोचरीकर्तुम् ॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं तदाश्रयेऽहं स्वयं धाम ॥ १ ॥
शुद्धं बुद्धं मुक्तं जयतितरामन्तरिन्द्रियाविषयम् ॥
आमहतोऽखिलखेलां प्रकृतिनटीं नर्त्तयंस्तत्सत् ॥ २ ॥

अथ प्रकृतिमात्रप्रकृतित्वाद्ब्रह्माण्डवृन्तरूपिणी
भगवती मूलशक्तिः प्रस्तूयते२॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

कल्पान्ते महदादिसृष्टिजननी विश्वं चरीकर्त्ति या-
ऽनुक्रोश्यं सलिलान्धऔषधपदं गत्वा बरीभर्त्यदः ॥
भूयः क्रूरकटाक्षपातनपटुः सर्वं जरीहर्त्ति या
चिच्चाक्चक्यजुगुप्सुकां जवनिकां शक्तिं भजे तामजाम्॥ ३ ॥

श्री१लज्जा२स्मृति३कान्ति४पुष्टि५धृति६गी७र्मेधा८तितिक्षा९दया१०

पूर्वक विशेष स्तुति युक्त पुरुषार्थ ही है प्रयोजन जिसमें, संविधातृ संविधेय अर्थात् वाच्यवाचकभाव सवन्धवाला, अनेक प्रकार के विषयवाले काव्यों की गणना की कामनावाले ही हैंअधिकारी जिसके ऐसा ग्रंथ पुस्तकाकार कियाजाता है ॥ तहां पर पहिले नित्य, सत् चित् आनन्द रूप और सब का आधारभूत होने के कारण ब्रह्म स्वरूप की स्तुति कीजाती है ॥

जो सत्य,ज्ञान, अनन्त, स्वयंज्योति, जिसको वेद भी प्रत्यक्ष करने को समर्थ नहीं है उस तत्त्व का मैं आश्रय करता हूं ॥ १ ॥ जो सम्पूर्ण खेल खलेनवाली प्रकृति (जगत् का कारण) नटी को महत्तत्व पर्यन्त नचाता हुआ अन्त कर ण और इन्द्रियों से नहीं जानाजावे वह शुद्ध बुद्ध मुक्त सत् स्वरूप सर्वोत्कर्षमें वर्तता है ॥ २ ॥ अब प्रकृतिमात्र की प्रकृति होनेके कारण और ब्रह्माण्डरूपी गर्भ के रहने का स्थानरूप ऐश्वर्यवाली प्रधानशक्ति की स्तुति की जाती है ॥ जो महदादि सृष्टि को रचनेवाली महाप्रलय के अन्त में संसार को रचती है और दया करके अन्न जल रूप जीवन पदार्थों को प्राप्त होके इस जगत् का पोषण करती है, फिर घोर कटाक्ष पटकने में चतुर सब जगत् का संहार करती है और चैतन्य का चकाचौंध देनेवाले तेज की घृणा करने (ढकने) वाली जवनिका (पड़दा) है उस अनादि शक्ति का स्मरण करता हूं ॥ ३॥ जिस मूल शक्ति की श्रीआदि अनन्त शक्तियां हैं वह न विश्वास्वरूप महामोक्ष की देनेवाली

विद्या११प्राप्ति१२कला१३रति१४प्रभृतयोयस्याःपराःशक्तयः ॥
मज्जिह्वाग्रमुपेत्य मातरनिशं विद्ये महामोत्तदे
त्वं सेमं ज्वलनान्ववायमनघं विश्वेश्वरे वृंहय ॥ ४ ॥
अथ मायाशबलचिदंशस्वरूपो भगवानीश्वरः प्रस्तूयते३ ॥ आर्या ॥
क्लेशादिदोषरहितं महितं ज्ञानादिषड्६भगाऽवहितम् ॥
परमीडे दुरपाया यत्सङ्कल्पात्मिका माया ॥५॥
लोमाऽवटेप्यगणित इव ब्रह्माण्डान्यगणितानि निवसन्ति ॥
यस्य तमीश्वरमीडे सद्गाथाग्रथितया सुगिरा ॥ ६ ॥
अथ च वेदेषु प्रथमप्रतिपाद्यत्वात्प्राप्तप्रशंसावसरं कर्म्मापि प्रस्तूयते४
यद्ब्रह्माण्डकटाहान्व्यावर्त्तयतेऽरघट्टघटिकावत् ॥
प्रभु तज्जैमिनिगेयं कर्म्मापि नमामि धीध्येयम् ॥ ७॥
अन्तःकरणोपेतं स्थातुं शक्यं न यद्विना किमपि ॥
तस्मै विश्वनियन्त्रे नमः पुरुषकारसंज्ञाय ॥ ८ ॥
अथ श्रीविष्णुस्तुतिः५ ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥
यः क्रौडीं तनुमाश्रितो दितिसुतं पातालरन्ध्राश्रितं
हत्वा द्रागवरोप्य गामुदहरद्बालेन्दुदंष्ट्राङ्कुरे ॥

हे माता विश्वेश्वरी मेरी जिह्वा के अग्रभाग में प्राप्त होके पाप रहित अग्निवंश को बढ़ा ॥ ४ ॥ जिस परमेश्वर की सङ्कल्प रूप माया दुरपाया (कठिनाई से छूटै ऐसी) है उसको क्लेश, कर्म, विपाक, आशय, इन दोषों से रहित और ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छः ६ ऐश्वर्यों सहित पूज्य परमेश्वरकी स्तुति करताहूं।५।जिसके रोमकूप में अगणित ब्रह्माण्ड परमाणुके समान स्थित हैं उस परमेश्वरकी उत्तम कथा में गुथीहुई श्रेष्ठ वाणीसे स्तुति करता हूं ॥६॥ अब फिर वेदों में प्रथम ही प्रतिपादन होनेके कारण प्राप्तहुआ है स्तुति करने का समय जिस का ऐसे कर्म की भी स्तुति की जाती है. जो ब्रह्माण्डकटाहों को रहँट की घड़ियों के समान फेरता है उस व्यापक जैमिनि ऋषि से कहागया और बुद्धि से ध्यान करने के योग्य कर्म को भी नमस्कार करता हूं ॥ ७ ॥ जो अन्त करण के साथ रहनेवाला है और जिसके बिना कोई वस्तु ठहर नहीं सकती उस संसारके चलानेवालेपुरुषार्थ को नमस्कार है ॥ ८ ॥ जो सूवर के शरीर को धारण

भित्त्वोरः करजैर्हिरण्यकशिपोः प्रह्लादमाश्वासय-
त्पश्चाद्रावणचेदिपादिकमहंस्तस्मै नमो विष्णवे ॥ ९ ॥
कौमोदक्यरिशङ्खपङ्कजलसच्छ्रीभिश्चतुर्भिः करै-
र्धर्मार्थादिचतुष्टयं निजकृते ददाति भक्त्यार्द्दहृत् ॥
विद्युद्गौरसिगातसेयसुमनःश्यामोर्ककोटिच्छवि-
र्लक्ष्मीकौस्तुभवैजयन्त्यधिलसद्वक्षा हरी राजते ॥ १० ॥

अथ श्रीशिवस्तुतिः ॥ ६ ॥ स्रग्धरा ॥

वामेऽङ्कार्धे दधानं हिमगिरितनुजां भव्यभूत्युज्वलाङ्गं
रम्ये न्यग्रोधमूले स्थितमुपकृतये साङ्ख्यशुश्रूषुजुष्टम् ॥
चित्तत्त्वं वल्गुवाचा सनकमुखमुनीनाविराज्ञापयन्तं
स्मेरार्द्रौष्ठप्रवालं गरलशितिगलं चन्द्रमौलिं तमीडे ॥ ११ ॥
नालम्बीवादनोत्थस्वरगमकरणत्कृच्छ्रुतिग्रामभिन्नां
जातिं शोश्रूयमाणो विविधविनिमयां दोधवीत्युत्तमाङ्गम् ॥

करके पाताल के छेद में स्थित दितिसुत (हिरण्याक्ष) को मारके दूजके चन्द्रमा समान दंतुलि के अग्र भाग पर रखकर पृथ्वी को शीघ्र निकाललाया और हिरण्यकशिपु के उर को नखों से विदारण कर प्रल्हाद का आश्वासन किया फिर रावण शिशुपाल आदि को मारा उस विष्णु को नमस्कार है ॥ ६ ॥ कोमलहृदयवाला, कौमोदकी गदा, सुदर्शन चक्र, पाञ्चजन्यशङ्ख, कमल (पद्म) से शोभित चारों हाथों से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को भक्ति से अपने ही अर्थ देता है और विजुली के समान चमकीला, सचिक्कण, और अतसीपुष्प के समान श्याम कोटिसूर्यों की शोभावाला लक्ष्मी, कौस्तुभमणि और जयन्ती माला से सुशोभित वक्षःस्थलवाला हरि सर्वोत्कर्ष से वर्तता है ॥ १० ॥ जो वाम अर्ध अङ्ग में पार्वती को धारण कियेहुए सुन्दरविभूति से भूपित अङ्ग रमणीय वटवृक्ष नीचे बैठे हुए साङ्ख्य शास्त्र के श्रवण करनेवालों से युक्त परोपकारार्थ सनकादि मुनियों को परब्रह्म के प्रकाश का उपदेश करता है और मूँगे के समान मन्द हास्य युक्त स्निग्ध ओष्ठ, विष से नीला कण्ठ और चन्द्रमा है मस्तक पर जिस के उन महादेव की स्तुति करता हूं ॥ ११ ॥ नालम्बी (शिवकीवीणा) के बजने से उठेहुए स्वरों की गमक के रणत्कार शब्द से किया है श्रुति और ग्राम भेद और अनेक प्रकार की उलटापलटी जिस में ऐसे जातिछन्द विशेष को सुननाहुआ मस्तक को घुमाता है. जहां आलिंगन से पार्वती के हाथ रूपी लता प्रत्यक्ष विजुली

भूतेशं भर्गमीशं तमहमिह शरन्मेघशुभ्रं प्रणौमि
स्वाश्लेषे यत्र साक्षात्तडिदिव गिरिजापाणिवल्ली विभाति ॥ १२ ॥

अथ श्रीविरञ्चिस्तुतिः ७॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

लक्ष्मीं नाभिविसप्रसूनविलसत्किञ्जल्ककोशासनः
सिद्धीः प्राप्य ततोऽतिघोरतपसः सङ्कल्पसर्गोत्सुकः ॥
सृष्ट्वाथात्रिमरीचिनारदमनुस्वायम्भुवादीन्प्रभु-
र्यो निर्माति कुलालवज्जगदिदं तं स्तौम्यजं हंसगम् ॥ १३ ॥
यद्वस्रे मनवश्चतुर्दश१४ तथैतावन्त १४ आखण्डला-
ऽऽदिष्टेन प्रभविष्णुना बत वियुज्यन्ते प्रियेणायुषा ॥
नैवास्त्युच्चतरं यदालयमृते किञ्चित्कटाहान्तरे
तं त्रैलोक्यतरुप्ररोहरचनाबीजं विरिञ्चिं भजे ॥ १४ ॥

अथ सूर्यस्तुतिः ८ ॥

आत्रुट्याः प्रलयावसानसमयं स्वैः सङ्क्रमैः सूचय-
न्स्फीतो माठरदण्डपिङ्गलमुखैर्युक्तास्त्रिषट् १८ पार्श्विकैः ॥
अप्येकारिशताङ्गयानातिमहाध्वान्तौघमुन्मूलय-
न्यो बम्भ्रन्ति सदा परोपकृतये भास्वान्स बाभ्राज्यताम्॥१५॥

के समान शोभित है उस शरद् ऋतु के मेघ समान धवल, भूतनाथ, संसार का संहार करनेवाले ईश्वर को यहां पर नमस्कार करता हूं ॥ १२ ॥ लक्ष्मीपति के नाभि कमल की केसर बीच डब्बा पर स्थित हुआ फिर घोरतपस्या से सिद्धियों को प्राप्त होकर मानसिक रचना में उत्कण्ठित हुआ फिर अत्रि, मरीचि, नारद, मनु, स्वायम्भुव आदि की रचना करके जो प्रभु कुम्हारके समान इस जगत् का निर्माण करता है उस अजन्मा हंसवाहन की स्तुति करता हूं ॥ १३॥ जिस के एक ही दिन में चौदह मनु और चौदह ही इन्द्र स्वयंप्रभु काल के आधीन हो प्यारी आयु से छूटते हैं और अण्डकटाह में जिस के स्थान को छोड़ कर दूसरा कोई ऊंचा नहीं है उस तीन लोक रूपी वृक्ष के लगाने की रचना के वीज रूप ब्रह्मा को भजता हूं ॥ १४ ॥ जो क्षण से लेकर महाप्रलय के अन्त तक के समय को अपनी गति से जनाता हुआ वृद्धि को पहुँचा है और माठर, दण्ड पिङ्गल आदि अठारह पार्षदों से युक्त एकही चक्र युक्त रथवाला अति तेजस्वी अन्धकार का नाश करता हुआ परोपकार के अर्थ सदा भ्रमण किया ही करना

अग्रे व्यत्ययगामिभिः षडयुतैर्यो बालखिल्यर्षिभिः
स्तुत्या मञ्जुकलाप्सरोभिरनिशं तौर्येण संस्तूयते ॥
गन्धर्वोरगगुह्यकैश्च परितो विद्याधरैर्वन्दितः
साक्षी त्र्यध्वयत्यलं स जयताद्ब्रह्माण्डदीपो विभुः ॥ १६ ॥

अथ श्रीगणपतिस्तुतिः ९ ॥

शुण्डादण्डविमण्डनप्रविलसत्सिन्दूरसान्द्रश्रिया
दानासेकसुगन्धमत्तमधुपैर्यत्रारुणीभूयते ॥
यो द्रूणातिविसङ्ख्यविघ्नविततिं दादाति धुर्यां धियं
तं वृन्दारकवृन्दवन्द्यवपुषं नौम्याखुपत्रं परम् ॥ १७॥
प्राक्काले यदपूजने हरिहरोपेताखिलद्योषदां
दैत्यानां च मितद्रुमन्थनधियां विघ्नो महानुत्थितः ॥
उद्धर्तुं यमुपेक्ष्य मन्दरमगं शेकुर्नशक्ता अपि
स्तौमीड्यं मतिदं धियां तमनिशं लम्बोदरं लब्धये॥१८॥

आर्य्या ॥

जयतु स सिन्धुरवदनो विघ्नविनाशार्थमात्तदेहो यः ॥

वह सूर्य अतिशय करके प्रकाशमान है ॥१५॥ जो अपने सम्मुख उलटे चलनेवाले बालखिल्यादि साठहजार ऋषियों की स्तुति से और मञ्जुकला आदि अप्सराओं के वादित्रसे सदैव स्तुति किया जाता है और गन्धर्व, नाग, गुह्यक और विद्याधरों से चारों ओर से वन्दित, भूत, भविष्यत्, वर्तमान का साक्षी है वह व्यापक ब्रह्माण्ड का दीपक बहुत ही सर्वोत्कर्ष सेवर्तता है॥१६॥ शुण्डादण्ड के चित्राम में शोभित सिन्दूर की सुन्दर शोभा से मदनिर्झर की सुगन्ध में प्रमत्त हुए भ्रमर जहां पर लाल होजाते हैं, जो असङ्ख्य विघ्नावली का नाश करता है और शुद्ध बुद्धि को देता है उस देवताओं के समूह से वन्दित शरीर, मूषकवाहन उत्कृष्ट को नमस्कार करता हूं ॥ १७ ॥ पूर्व समय में जिस का पूजन न होने से समुद्र मथन करनेवाले हरिहर सहित सम्पूर्ण देवता और दैत्यों के बड़ाभारी विघ्न खड़ा हुआ था, जिस के विना बड़े बड़े समर्थ भी मन्दराचल को उठाने में समर्थ न हुए उस बुद्धि को देनेवाले स्तुति के योग्य गणेश की बुद्धि प्राप्ति के अर्थ निरन्तर स्तुति करता हूं ॥१८॥ जिसने विघ्नों का विनाश करने के अर्थ ही देह को धारण किया है, जिस के चरणारविन्द के ध्यान से अग्निवंश को मैं कहूंगा वह

यच्चरणाब्जध्यानाद्धानञ्जयमन्वयं वक्ष्ये ॥ १९ ॥

अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

योऽलिखल्लक्षषष्टिं श्रीभारतं व्यासवाक्यतः ॥
स ददातु मतिं तीव्रां कृशानुकुलवर्णने ॥ २० ॥

अथ श्रीभारतीस्तुतिः १० ॥ वसन्ततिलका ॥

श्वेताम्बरा विकचकञ्जविभूषिताङ्गी चक्राङ्गराजवरवाजविराजमाना
जिह्वायथैवसफलाकविपण्डितानांवागीश्वरीजयतुसाच्छधियामुपास्या
कच्छप्युदाहृतकलक्वणनक्रियाभिर्माधुर्यमूर्छनमहामदमोदमाना ॥
वर्षात्ययेन्दुविशदच्छविरार्द्रचित्तावाणीजयत्वमरमौलिधुताङ्घ्रिपीठा

या नीयते न रिपुभिर्न च तस्कराद्यै-
र्नो बान्धवैर्नृपतिभिः प्रसभप्रयासैः ॥
वावृध्यते सततमप्युत दीयमाना
विश्वेश्वरी जयतु सा बुधवन्द्यवाणी ॥ २३ ॥

गीतासुरैरजमुखैरसुरैर्भुजङ्गैर्गन्धर्वयक्षमयुभिर्मुनिभिर्महद्भिः ॥
यद्यप्यहोकविपरार्धपरार्धपूगैःसाहश्येत नवनवोक्तिविलासवामा।२४।

गणेश सर्वोत्कर्षसे वर्तता है॥१९॥जिस वेदव्यासके कथनाऽनुसार साठलाख श्री महाभारत को लिखा वह अग्नि वंश के वर्णन में तीव्र बुद्धि देवै ॥ २० ॥ शुक्ल वस्त्र धारण किये विकसित कमल के समान सुन्दर शरीरवाली श्रेष्ठ वेगवान् हंस पर आरूढ, कवि और पण्डितों की जिह्वा जिसी से सफल है वह निर्मल मतिमानों की इष्ट देवता सरस्वती सर्वोत्कर्ष करके वर्त्तमान है ॥ २१ ॥ वीणा से निकलेहुए सुन्दर शब्दों की क्रिया करके मनोहर मूर्छना से अत्यन्त हर्ष युक्त आनन्द रूपा, शरद काल के चन्द्रमा समान सुन्दर शोभावाली देवताओं के मस्तकों से कंपित है चरण पीठ जिस का ऐसी कोमल चित्तवाली सरस्वती सर्वोत्कर्ष करके वर्तमान है ॥ २२ ॥ जिस को शत्रु, चोर, बान्धव और राजा लोग हठ और परिश्रम से नहीं छीनसक्के किन्तु देने से निरन्तर अत्यन्त बढ़ती है वह विश्वेश्वरी पण्डितों से पूज्य सरस्वती सर्वोत्कर्षसे वर्तमान है।२३। यद्यपि ब्रह्मा को आदि ले सम्पूर्ण देवता, दैत्य, नाग, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, मुनि महात्मा और अनन्तानन्त कवियों के समूहों से गाईगई है तो भी

अथाऽर्थस्तुतिः ११॥ उपजातिः ॥

रसोध्वनिर्व्यङ्ग्य इतीरितव्यः काव्यादि यज्जीवितमामनन्ति ।
नान्यद्यदास्वादपरोऽभिनन्देदर्थं तमीडेऽमृतमक्षराणाम्॥२५॥

अथ श्रीरामचन्द्रस्तुतिः १२॥ शिखरिणी ॥

य आदेशं पित्रोर्निजशिरसि संन्यस्य निरगा-
त्ससीतासौमित्रिर्विपदधिगृहं दण्डकवनम् ॥
नियम्याकूपारं धनुरिषुसहायोऽहिनदरिं
दशास्यं दुःशास्यं नमत तमुपास्यं रघुरविम् ॥ २६ ॥

अथ श्रीकृष्णस्तुतिः ॥ १३ ॥ स्रग्धरा ॥

कस्तूर्या पत्रभङ्गप्रविरचनपटुं राधिकोरोजकूटे
लेखां सारल्यसिद्धामपि न हि सुभगेत्यञ्जसोत्सारयन्तम् ॥
अङ्गुल्या मार्जयन्तं लिखनमसुलभं सात्त्विकैरित्युदन्तं
वृन्दाटव्यां ब्रुवाणं शुचिजलधिझषं तं स्तुवेऽतृष्णकृष्णम्॥२७॥

अथ श्रीव्यासस्तुतिः १४ ॥ मालिनी ॥

अघतिमिरदिनेशं द्वैतवृत्रामरेशं त्रिजगदमृतहेतुं सर्वसद्धर्मसेतुम् ॥

आश्चर्य है कि वह उक्तियों के विलास से सुन्दर नई नई ही दीखती है ॥२४॥ रस, ध्वनि, और व्यङ्ग्य इनसे प्रेरित काव्यादि में जो जीव मानाजाता है जिस का स्वाद जाननेवाला दूसरे की प्रशंसा नहीं करता उस अक्षरों के अमृतरूप अर्थ की स्तुति करता हूं ॥ २५ ॥ जो पिता की आज्ञा को अपने शिर चढाकर सीता और लक्ष्मण के साथ,विपत्ति के घर दण्डक वन में गये और समुद्र को बांधकर केवल धनुश बाण की ही सहायता से बडी कठिनाई से शासन में आनेवाले शत्रु रावण को मारा उस उपासना के योग्य रघुकुल के सूर्य रामचन्द्र को नमस्कार करता हूं ॥ २६ ॥ जो श्रीकृष्णभगवान राधिका जी के ऊंचेस्तन पर कस्तूरी से पत्रलेखा के लिखने में चतुर हैं तथा उस पत्रलेखा में सुन्दर सरल रेखा को भी बार बार स्तन स्पर्श लोभ से टेढी कहके शीघ्र उठाकर दूसरी सीधी रेखालिखरहे हैं तथा पत्रलेखा लिखने के समय में स्तंभ कम्प स्वेदादि सात्विक भाव का उदय होने से उत्तम पत्रलेखा नहीं मान कर स्तनस्पर्श लोभ से उसको अङ्गुली से पोंछरहे हैं और इस पत्रलेखा के वृत्तान्त को वृन्दा वन में अपने रहस्यवेदी नर्म सचिव को कहरहे है और उस तरह शृङ्गार रस में मग्न हैं तौभी तृष्णारहित हैं ऐसे श्रीकृष्ण को मैं स्तुति करता हूं ॥ २७ ॥

श्रुतिविषयविलासं सूरिहृच्चिन्निवासं
भ्रमविदलनबीजं नौमि तं वासवीजम् ॥ २८ ॥

अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

पराशराऽब्धिसम्भूतं ज्ञानामृतविवर्षिणम् ॥
कृतभक्तोत्पलानन्दं वन्दे व्यासकलानिधिम् ॥ २९ ॥

अथ ज्ञानिनां वीतरागयोगिनां च स्तुतिः १५ ॥ आर्या ।

ऋषभ१कपिल२पृथु३दत्तात्रेय४भरत५याज्ञवल्क्य६शुकदेवान् ७॥
श्रीबादरायणा८ऽष्टावक्रो९द्दालक१० वशिष्ठमुनीन्११। ३०।
गोनर्दीयं१२ सुमतिं१३ जनकविदेहा१४ स्तथैव राजर्षीन् ॥
विक्रान्त१५सुबाहु१६रिमर्द्दनकं१७मादालसात्रितयम्³॥३१॥
सवनं१८ च महावीरं१९ सनत्सुजातं२० प्रचेतसं३०श्च दश१० ।
गय३१मवनिपतिं प्राचीनबर्हिषं३२मार्ष्टिसेनं३३ च ॥ ३२ ॥
कवि३४हरि३५चमसा३६विर्होत्र३७पिप्पलायन३८प्रबुद्ध३९करपात्रान्
द्रुमिलं४१ तथान्तरिक्षं४२गोरक्षं४३ शंकरं४४ शिवदम्॥३३॥
गौडपदं४५गोविन्दं४६विद्यारण्यं४७मदालसां४८रैक्कम्४९।
पञ्चशिखे५०न्द्रप्रमदौ५१जैगीषव्या५२ऽकृतव्रणाकौ५३॥३४॥
उत्कृष्टसाङ्ख्ययोगानित्यादीनीड आत्मतत्त्वरतान् ॥

५,१ रूपी अन्धकार का सूर्य, द्वैत मत रूपी वृत्रासुर का इन्द्र, तीन लोकों में अ... का हेतु, सम्पूर्ण सद्धर्म की सीमा, वेद के विषयों का खिलाड़ी, पण्डितों ... हृदयों में चैतन्य समान बसनेवाला और भ्रम को नाश करने का बीज उस वासवी (वेदव्यास की माता का नाम है) से उत्पन्न वेदव्यास को नमस्कार करता हूं ॥ २८ ॥ पराशर रूपी समुद्र से उत्पन्न हुए, ज्ञान रूपी अमृत को बरसानेवाले उपकारमाननेवाले भक्त जन रूप कुवलयों (रात्रिविकाशी कमल)को आनन्द देनेवाले व्यासरूपी चन्द्रमा को नमस्कार करता हूं ॥ २९ ॥

अब ज्ञानियों में विरक्तों की स्तुति है

१ वेदव्यास २ इसीप्रकार राजर्षिजनक विदेहों को ३ अरिमर्द्दन ४ जो मदालसा नामक गन्धर्वकन्या का तीसरा पुत्र था ५ दशप्रचेता ६ भूपति गय ७ आविर्होत्र ८कल्याणदेनेवाला९इन्द्रप्रमद१०इनको आदि लेकर ब्रह्मज्ञान में लीन रहनेवाले, श्रेष्ठ , सांख्य योग जाननेवालों की स्तुति करताहूं॥ इन सब के पूर्वापर (पहिले

पूर्वापरतामखिलां ज्ञातुमशक्तौ सधर्मोक्तिः ॥ ३५ ॥

अथ परमभक्तिभाजां भागवतानां स्तुतिः १६॥आर्यागीतिः॥

शङ्कर१विरञ्चि२शेषा३न्सनकादी४-७न्नारदं८बलिं९हनुमन्तम्१०

प्रह्लादं११स्वायम्भुव१२मुत्तानपदं१३प्रियव्रतं१४ध्रुव१५मक्रूरम्१६॥

वृत्र१७जटायु१८सुतीक्ष्णा१९-

न्भूसुर२०सौभर२१र्युद्धवा२२ऽर्जुना२३ऽसित२४भीष्मान् २५ ॥

शिबि२६देवल२७सारस्वत२८

शुका२९ऽनुक३०व्यास३१धर्म३२गाधि३३दिलीपान्३४॥३७॥

मुचुकुन्द३५विदेहे३६क्ष्वाकु३७

रघु ३८सगर३९गय४०ययाति४१विदुरा४२लर्कान्४३ ॥

विष्वक्सेन४४विभीषण४५

शौनक४६शतधनु४७रमूर्त्तरय४८मान्धातॄन्४९॥३८॥

ऐला५०म्बरीष५१मुत्त-

ङ्क५२पराशर५३भीष्मका५४ङ्गिरः५५श्रुतदेवान्५६॥

भरता५७ऽऽर्ष्टिषेण५८रुक्मा-

ङ्गद५९क्षुप६०सुपर्ण६१रन्तिदेव६२वशिष्ठान्६३॥३९॥

...प्राचीनबर्हि६४रज६५पुण्डरीक६६मैत्रेय६७पिप्पलाद६८सुनाम्नः६९

वाल्मीकि७० भूरिषेणौ७१

...षेण७२पृथु७३याज्ञवल्क्य७४सुरथ७५र्चीकान्॥७६॥४० ॥

नील७७परीक्षित७८पुलहौ७९

...त्रि८०च्यवन८१पुलस्त्य८२ कपिल८३गर्गा८४ऽगस्त्यान्८५ ।

जाबालि८६ जामदग्न्यौ८७

...को जानने की शक्ति न होने के कारण सबक... हुआ और पीछे कौन हुआ इस)को जानने की शक्ति न होने के कारण सबक... पहिले पीछेका क्रम... कथन है, अर्थात् सब का शामिल कथन करदिया है; पहिले पीछेका क्रम ... भगवत् भक्तों की स्तुति है ॥ ... रक्खा है॥ ३५ ॥ अब परम भक्ति के पात्र भगवत् भक्तों की स्तुति है ॥ उत्तानपद २ अक्रूर ३ असित ४ अनुक ५ इक्ष्वाकु ६ अलर्क ७ अमूर्तरय ८ अम्ब... ९ उत्तङ्क १० अङ्गिरा ११ आर्ष्टिषेण १२ ऋचीक १३ अत्रि १४ अगस्त्य ॥

पर्वत८८मार्कण्डेय८९शृङ्गि९०कश्यप९१दक्षान्९२॥४१॥
भृगु९३ लोमश९४दुर्वासो९५-
गोतम९६शरभङ्ग९७दालभ्य९८कर्दम९९नाम्नः ॥
भारद्वाज१००मयूर-
ध्वजौ१०१नहुष१०२पुरु१०३यदु१०४सुधन्व१०५कुरूँ१०६श्च४२॥
वैवस्वत१०७निमि१०८संजय१०९-
गुह११०सत्यव्रत१११भगीरथ११२हरिश्चन्द्रान्११३।
सरहूगण११४ताम्रध्वज११५
सबालि११६सुग्रीव११७चन्द्रहासा११८ऽक्रूरान्११९ ॥४३॥
चण्ड१२०प्रचण्ड१२१कुमुद१२२
प्रबल१२३बल१२४विनीत१२५पुण्यशील१२६सुशीलान्१२७॥
कुमुदाक्ष१२८पुनीता१२९रन्यौ
जय१३०विजय१३१सुनन्द१३२नन्द१३३भद्र१३४सुभद्रान्१३५।४४
श्रीसूतरोमहर्षण१३६मुग्रश्रवसं१३७तथैव तत्तनुजातम्॥
विष्णुस्वामि१३८समेता-
न्रामानुज१३९निम्बसूर्य१४०वल्लभ१४१माध्वान्१४२ ।४५।
स्वामिश्रीधर१४३जयदे-
व१४४बिल्वमङ्गल१४५गजेन्द्र१४६जाम्बँव१४७दादीन्॥
कमला१४८वाणी१४९धरणी१५०
सती१५१द्रुपदजा१५२मदालसा१५३शतरूपाः१५४॥४६॥
कुन्ती१५५सुनीति१५६विन्ध्या-
वलि १५७शबरी१५८याज्ञिकद्विजातिपत्न्यं१५९श्च॥
इत्यादीन्प्रह्वशिरा वन्दे श्रीवैष्णवे महस्युपरक्तान् ॥ ४७ ॥

१अक्रूर २नामवाले ३सूतवंशीय चारणों के पुरुषा रोमहर्षण नामक ४उग्रश्रवा ५तैसेही रोमहर्षण के पुत्र (उग्रश्रवा) को ६ रामानुज७ जाम्बवान् आदि को ८अ-ग्निहोत्रि ब्राह्मणों की स्त्रियों को ९ इन को आदि लेकर तेजोरूप विष्णु भ-गवान् के स्वरूप में तत्परों को सिर झुकाकर नमस्कार करता हूं ॥ ४७ ॥

पौर्वापर्यज्ञाने दुर्निर्णेये स[illegible]द्देशः ॥
अन्यानपि भक्तजनानाधुनिकान्पञ्चमे५मयूखे नंस्ये॥४८॥
उपगीतिः ॥

द्रुहिण१दधीचि२कलानिधि३कूष्माण्डक४तण्डु५भृङ्गिरिटीन्६।
गाधेय७पुष्पदन्तौ८लङ्केश्वर९बाण१०माल्यवतः११॥४९॥
मनु१२दात्तेय१३पतञ्जलि१४कात्यायन१५भागुरि१६वाशिष्ठान्१७
श्रीदुर्गा१८भौमासुर१९नागोत्तमकम्बला२०ऽश्वतरान्२१॥५०॥
पञ्येक२२कालिदास२३भवभूति२४धारेशभोजा२५द्यान्॥
प्रणमामि परमपुण्याञ्छैवे तत्त्वे नियतनिष्ठान्॥५१॥

अथ प्राणकृच्छ्रेऽप्यचलधर्म्मवृत्तीनां स्तुतिः१७॥ उद्गीतिः॥

स्वायम्भुव१प्रियव्रत२शिबि३नल४पृथु५गय६हरिश्चन्द्रान्७॥
अङ्ग८युधिष्ठिर९सगर१०–
र्त्तध्वज११यम१२रन्तिदेव१३रघु१४भीष्मान् १५ ॥ ५२ ॥
श्रीरामचन्द्र१६रुक्माङ्गदा१७ऽम्बरीषा१८ऽर्ज्जुनाँ१९द्याँश्च॥
अत्र्यौ२०ऽङ्गिरो२१वशिष्ठान्२२
विष्णवा२३पस्तम्ब२४दक्ष२५संवर्त्तान्२६ ॥ ५३ ॥
शङ्ख२७लिखित२८हारीतान्२९कात्यायन३०याज्ञवल्क्यौ३१र्वान्३२
व्यास ३३ पराशर ३४ गोतम ३५
शातातप ३६ धिषण ३७ शुक्र ३८ बलि ३९ सुकुशान्४० ॥ ५४॥

पहिले कौन हुए और पीछे कौन हुए इसके जानने का निर्णय नहीं होसकता इससे सब बराबर कहेगये हैं अर्थात् इसमें पूर्वापर का विचार नहीं है॥ और भी जो इस समय के भक्त जन हैं उनको पंचम मयूख में नमस्कार करूंगा॥४८॥

१ विभीषण २ पाणिनिमुनि ३ नागों में उत्तम कम्बल और अश्वतर ४धारा नगरी के पति भोज को आदि लेकर ५ परमपुण्यात्मा शिवस्वरूप (शैवमत) में नियम पूर्वक सेवा में तत्पर रहनेवालों को नमस्कार करता हूं ॥५१ ॥

अब प्राणकष्ट में भी अचल धर्म ही है वृत्ति जिन्हों की अर्थात् प्राणान्त क्लेश में भी धर्म को नहीं छोड़नेवालों की स्तुति है ॥ १७ ॥

६ अम्बरीष७ अर्जुन आदि ८ अत्रि, अङ्गिरा ९ और्व

एकत ४१गालव४२ मेधातिथ्या४३ऽऽरुणि४४वेद४५ भर्तृहरीन्४६
शूद्रक४७विक्रम४८भोजा४९ नीडे तानद्रिराडचलधर्मान् ॥५५॥

अथर्षिस्तवनोद्देशः १८ ॥ गीतिः॥

भृग्वं१ङ्गिरो२मरीचि३क्रतु४पुलह५पुलस्त्य६नारद७वशिष्ठान् ८॥
पाणिनि ९ कपिल १० कणादान् ११
गोतम १२ जैमिनि १३ पतञ्जलि १४ व्यासान् १५ ॥ ५६ ॥
गर्गो १६ शनो १७ वृहस्पति १८
दुर्वासो १९ ऽत्रिं २० जमदग्नि २१ शुक २२ दत्तान् २३ ॥
कात्यायन २४ वात्स्यायन २५
कामन्दक २६ याज्ञवल्क्य २७ वाल्मीकीन्२८ ॥ ५७ ॥
आपिशलि २९ शाकटायन ३०
भागुरि ३१ वामन ३२ शिलूष ३३ धृति ३४ भरतान् ३५ ॥
चतुरो४ऽप्यथ सनकादीन्३६
कश्यप४०लोमश४१पराशर४२र्चीकान् ४३ ॥५८॥
च्यवना४४ऽगस्त्यो४५तथ्यै४६–
र्कत४७विश्वामित्र४८कण्व४९परशुधरान्५०
पञ्चशिखा५१सुरि५२गालव५३
कवषो५४द्दालक५५मतङ्ग५६ जाबालीन्५७ ॥ ५९ ॥
वत्सै५८लं५९शालिहोत्रा६०नकृतव्रण६१पालकाप्य६२कौण्डिन्यान्६३
मेधातिथी६४ध्मवाहा६५पन्वद६६थर्वारुणा६७सुहोत्र६८मुनीन॥६०
देवल६९पर्वत७०मुद्गल७१पैला७२ष्टावक्र७३गृत्समद७४प्रभृतीन् ॥

---

१ आरुणि२इत्यादि पर्वतराज (सुमेरु)के समान अचल धर्मवालों की स्तुति करता हूं
अब ऋषियों की स्तुति का कीर्तन है ॥ १८ ॥
३ भृगु,अङ्गिरा,४ अत्रि,५ और चारों सनकादिकों को भी६ अगस्त्य७ उतथ्य८ ऋचीक
९ आसुरि१०उद्दालक११ऐल१२इध्मवाह१३ आपन्वान्१४ अथर्वा१५ अष्टावक्र
१६इनको आदि लेकर अनेक प्रकार की विद्याओं को उत्पन्न करनेवाले वेद रूपी

नानाविद्याधातॄन् वन्दे प्रयतांस्त्रयीतरुस्तम्भान् ॥ ६१ ॥

अथ ससुरेन्द्रस्तुतिः १९ ॥

विश्वा१दित्य२मरुद्गणा३साध्या४भास्वर५तुषित६गणसमेतम् ॥
अन्यैः सुरैरपि युजं सलोकपालं भजे तुरासाहम् ॥ ६२

अथश्रीगुरुस्तुतिः२० ॥ वसन्ततिलका ॥

अन्धावहं मतिमये पतितो बलाद्यै-
र्निष्कासितोस्मि सुखसंविदमाशु दत्वा
स्वामिस्वरूपचरणैरनुकम्पयाढ्यै
स्तेषां पदाब्जयुगलं हृदि मे चिरं स्तात् ॥ ६३ ॥

गीतिः ॥

षट्शास्त्रकुसुमभृङ्गावादपणस्त्रीविभूषितभुजङ्गाः ॥
वेदान्तविषयमूर्त्तय ईड्यन्ते श्रीस्वरूपगुरुचरणाः ॥ ६४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

संक्षिप्तं नृपभोजवृत्तिसहितं पातञ्जलं १ माम्मटीं
दुस्तर्क्यां कविपद्धतिं २ लघुतराशयद्वैततन्त्राणि ३ च ॥
तन्त्रं न्यायकणादतत्त्वमिलितं ४ चैतान्यहं पाठितो

वृक्ष के स्तंभ एसे शुद्धात्माओं को नमस्कार करता हूं ॥ ६१ ॥ अब देवताओं के साथ इन्द्र की स्तुति है ॥ १९ ॥ विश्व, आदित्य, मरुद्गण, साध्य, आभास्वर, तुषित इनगणदेवताओं से और दूसरे भी देवताओंसे युक्त, लोकपालों सहित इन्द्र को भजता हूं ॥ ६२ ॥ अब ग्रन्थकार के गुरु की स्तुति है ॥ बुद्धिरूपी कूप में पड़ेहुए मुझको, दया से भरेहुए जिन गुरु स्वरूप चरणों ने सुख पूर्वक सद् ज्ञान देकर शीघ्र ही बलात्कार से निकाला है उनके दोनों चरण कमल मेरे हृदय में चिरस्थायी रहैं ॥ ६३ ॥ षट् शास्त्ररूपी पुष्पों के भमरे, विवादरूपी गणिकाओं (वेश्याओं) के शोभायमान पति "भुजङ्गो गणिकापतिरिति हैमः" ॥ वेदान्त के विषयों की मूर्त्ति, ऐसे सरस्वती स्वरूप गुरु चरण स्तुति किये जाते हैं ॥ ६४ ॥ जिनसे राजा भोज की बनाईहुई वृत्ति सहित संक्षेप से योग शास्त्र, मम्मट कृत महाकठिन कविपद्धति (काव्यप्रकाश), छोटे छोटे अद्वैत वेदान्तशास्त्र के ग्रन्थ और न्यायतथा वैशेषिक के तत्वों से मिलाहुआ ग्रन्थ यह सब मैंने पढ़ा उन परमानन्द स्वरूप उदारचित्तवाले गुरु को रक्षा में

यैस्तान्बाढमुदारचेतनगुरून्वन्दे स्वरूपालयान् ॥ ६५ ॥

उपजातिः ॥

रामानुजोक्तीड्यधुरप्रचाराः साहित्यरत्नाकरकर्णधाराः ॥
मुमुक्षुसद्बोधपटुप्रकारा जयन्तु तेऽद्वैतमहोपहाराः ॥ ६६ ॥

मालिनी ॥

शिशुचरितरतः प्राग्यैर्द्विषड्ढायनो१२ ऽपि
प्रतिपदधिकृतोऽहं शाब्दबोधे१ प्रवीणः ॥
तदनुगणित२कोश३ज्यौतिषं ४ पाठितस्ते
परमगुरव आशानन्दपादा जयन्तु ॥ ६७ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

पश्चाद्वैदिक१लौकिको२भयविधे संपाठितश्छन्दसि६
काव्यान्यप्यनु तत्ततो हयहितं शास्त्रं मितं नाकुलम् ८ ॥
चाणक्योक्तरहस्यमात्मजनुषः९शास्त्रं परं शाकुनं१०
तानाशापदपूर्वनन्दचरणानीडे गुरून्संततम् ॥ ६८ ॥

अनुष्टुप् ॥

सन्तोषादिगुणैः पूर्णं पूजिताल्लाहपद्द्वयम् ॥
ईडे मुहम्मदाभिख्यं यावन्यध्यापकं मम ॥

नमस्कार करता हूं ॥ ६५ ॥ वैष्णव संप्रदाय के आचार्य रामानुज की उक्ति (उद्देश्य) का स्तुतियोग्य मुख्य प्रचार करनेवाले, साहित्य रूपी समुद्र के खेवटिये (नाव चलानेवाले) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छावालों को सत्य ज्ञान कराने में चतुर, अद्वैत मत ही है बड़ी भेट जिनकी ऐसे वे सर्वोत्कर्ष से वर्त्तते हैं ॥ ६६ ॥ जिनसे लड़कपन के खेलों में लगाहुआ बारह वर्ष का ही मैं व्याकरण में पदज्ञान का प्रवीण अधिकारी हुआ. जिस पीछे गणित, कोश और ज्योतिष पढ़ा. वे परमगुरु आशानन्द के चरण सर्वोत्कर्ष से वर्त्तमान हैं ॥ ६७॥ जिस पीछे वैदिक और लौकिक दोनों ही रीति से छन्द शास्त्र, काव्य, घोड़ों के हितकारी घोड़ों का शालिहोत्र, चाणक्य के कहेहुए तत्त्व (नीति) और ब्रह्मा का रचाहुआ शकुन शास्त्र पढ़ा, उन गुरु आशानन्द के चरणों की निरन्तर स्तुति करता हूं ॥ ६८ ॥

संतोषादि गुणों से पूर्ण और अल्लाह के चरणद्वय के पूजनेवाले मुहम्मद नाम

वीणावादनसत्तत्वं रागतालविवेचनम् ॥
शिक्षितं गायकाद्यस्माद्यवनः सोपि मोदताम् ॥७० ॥
येभ्यः क्षुद्रकला आत्ता मोदन्तां तेपि केचन ॥
नह्यायासमृते शिक्षा तत्स्मृतौ स्यां कुतोऽलसः ॥ ७१ ॥
अथपितृस्तुतिः २१ ॥ गीतिः ॥
अथ वावन्द्मि भवाना१चण्डीदानौ२ प्रसूजनयितारौ ॥
यच्छिक्षानुष्ठानान्मया मनुष्याय्यते जडेनापि ॥ ७२ ॥
गुरुजनपरिजनलालनमवेक्ष्य मेऽध्यापने नियतविघ्नम् ॥
अब्दात्संधिविबोधो निजसख्येऽहं निवेदितो गुरवे ॥ ७३ ॥
ये चित्संविदगाधा आत्रेय इवाप्तलाभसंतुष्टाः ॥
तानीड्य तातचरणान्भीष्ममनस्विन उपास आत्मलयान् ।७४।
ये रामसिंहचरणौर्दुर्गतशरणौः सुकृतसमुद्धरणौः ॥
बुन्दीपूराभरणौर्गुरुपदपूज्या जयन्तु विजितरणौः॥७५॥

जो मुझको पारसी पढ़ानेवाले हैं उनकी मैं स्तुति करता हूं॥ (यद्यपि अल्लाह को यवन लोक मूर्तिमान् नहीं मानते इसमें पदद्वय होना उनके मत में नहीं होता तथापि काव्य में अमूर्त वस्तु को मूर्तिमान् मानकर बहुत वर्णन होना प्रसिद्ध है)॥ ६९ ॥ जिस गायक (कलावंत) से वीणा बजाने के तत्व और राग ताल के विवेचन शिक्षा पाई वह यवन भी प्रसन्न रहै ॥ ७० ॥ जिनसे छोटी छोटी कलायें ग्रहण की हैं वे भी कितने ही प्रसन्न रहैं; क्योंकि बिना श्रम के शिक्षा होती तो उनके स्मरण में मैं कैसे आलसी होऊं ॥७१॥ अब माता पिता वाना (भवानबाई)और चण्डीदान को अत्यन्त वारम्वार नमस्कार करता हूं कि जिनकी शिक्षा से मैं जड़ भी मनुष्यवत् हुआ ॥ ७२ ॥ कुटुंब गुरु लोग और सेवक लोगों के लालन (लाड)को मेरे पढ़ने में निरन्तर विघ्न समझ एक वर्ष में संधि ज्ञान होने पर अपने मित्र और मेरे गुरु के आधीन कियागया ॥ ७३ ॥ जो ब्रह्मज्ञान में अथवा और आत्रेय (दत्तात्रेय) की भाईं आप्तलाभ से संतुष्ट, भीष्म के समान विद्वान् उन आत्मज्ञानी स्तुति योग्य पितृ चरण की उपासना करता हूं ॥ ७३ जो अशरणशरण, सत्कर्मों का उद्धार करनेवाले, संग्राम जीतनेवाले, बुन्दी पुर के भूषण ऐसे रामसिंह के चरणों से गुरु पद करके पूजे गये वे सर्वोत्कर्ष से वर्त्तमान हैं ॥७४॥

अथ पण्डितस्तुतिः २२ ॥

उव्वट१कैयट२मम्मट३वेदान्ताचार्य४वामनाचार्यान् ५ ।
अभिनवगुप्ताचार्यं६ वाचस्पतिमिश्र७शङ्कराचार्यौ८ ॥ ७५ ॥
भट्टकुमारिल९वर्षोपाध्याय१०गुरु११प्रभाकरा१२न्विदितान्[1] ॥
लोल्लट१३नायक१४भट्टौ तिमिङ्गिलाचार्य१५वज्रटङ्का१६ख्यौ[2]।७६।
हरि[3]१७विक्रमार्क१८भोजान्१९परमारान्वयदिवाकरान्नृपतीन्॥
हरदत्त२०मण्डना२१ख्यौ[5] मिश्रावुदयनसमाख्य[6]२२माचार्यम् ॥७७॥
हम्मीर२३वैजला२४ख्यौ[7] जयधन्वानं२५ च चाहुवाणनृपान् ।
हरिराम२६शार्ङ्गधर२७जग
दीश२८गदाधर२९शिरोमणि३०समाख्यान् ॥ ७८ ॥
चिन्तामणिं३१ तथैतान्[9] भट्टाचार्योपटङ्किनः षट् च ॥
श्रीशङ्कु[10]३२प्प्यदीक्षित३३नारायणशास्त्रि३४नीलकण्ठाँ३५श्च।७९।
चालुक्यान्वय[11]वारिधिचन्द्रं सोमेश्वरं३६ धराधीशम् ॥
मिश्रोपाख्या[12]ञ्छिवना३७ऽचल३८सचला३९ञ्छास्त्रि[13]णं गोपालम् ।
रामा४१होबल४२लल्लू४३मन्नु४४जगन्नाथ४५शास्त्रिणश्च तथा ॥
भट्टोजि४६महिम४७बापू४८नागोजी४९नुपसं[14]माख्यया भट्टान् ॥८१॥
गोकुलनाथाचार्यं५० हरिरामं५१ कालियो[15]पटङ्कञ्च ॥
नाम्नाऽथ जगन्नाथं५२पण्डितराजं त्रिशूल्यु[16]पाभिख्यम्।८२।
नानापाठक५३दुर्वल्याचार्यौ५४वालमं५५तथा भट्टम् ॥
चन्द्रादिं[17] नारायणभट्टाचार्यं५६तथैव सूर्यादिम्५७ ॥ ८३ ॥
भवदेव५८भैरवा५९ख्यौ[18] मिश्रौ जनका[19]त्मजौ महामेधौ ॥

---

१ प्रसिद्धों को २ वज्रटङ्कनामक ३भर्तृहरि ४पँवारवंश के सूर्य्यरूपीराजाओंको ५ मंडननामक ६ उदयनाचार्यनामक ७ वैजलनामक ८ नामवालोंको ९ तैसेहीइ-नऊपरकहेहुएभट्टाचार्यपदवीवालेछ ओंको १०श्रीशङ्कु, अप्पयदीक्षित ११सोलङ्कीवंशरूपीसमुद्रकेचन्द्रमाराजासोमेश्वरको १२ मिश्रहैउपनामजिनकाऐसेशिवन, अचलऔरसचलनामवालोंको १३ औरगोपालशास्त्रिको १४भट्टउपनामवालों को १५ कालियापदवीवालेको १६ त्रिशूली उपनामक को १७ चन्द्रनारायण भट्टाचार्य को १८ नामक १९ जनक के पुत्र बड़े बुद्धिमान्

शङ्कर६०शास्त्रित्र्यम्बक६१शास्त्र्यभि[1]धौ प्राणनाथ६२[2]साचार्यम् ।८४।
बालस्वामि६३समाख्यं[3] शंकरपूर्वं च तर्कवागीशम्६४ ॥
शास्त्र्युपटङ्कख्यातान्दामोदर६५कृष्ण६६काशिनाथाँ६७श्च ।८५।
भट्टसदाशिव६८संज्ञं[6] रसिकवरं शास्त्रिणं गणेशं६९च ॥
जैनाँश्च हेमचन्द्रा७०[9]मरचन्द्रक७१चन्द्रकीर्त्ति७२जिनचन्द्रान्७३ ८६
पाण्डित्याकूपाराञ्विशेषदुस्तर्क्यकोटिविस्तारान् ॥
बुधपरिषच्छृङ्गारान्वन्देवाग्वादिनीमनोहारान् ॥ ८७ ॥

अथ गीर्वाणवाक्कविस्तुतिः २३ ॥

श्रीहर्ष१माघ२भारवि३मयूर४धावक५गुणाढ्य६जयदेवान्७ ॥
भूपतिविक्रम८भोजौ९गोवर्द्धन१०कालिदास११धनदेवान्१२।८८।
अरसीठक्कुर१३दीपक१४
सुबन्धु१५भवभूति१६हनुम१७दि[11]न्द्र१८कवीन्॥
छिन्तम१९लक्ष्मण२०खण्ड
प्रशस्तिकृ२१द्बिल्ह[12]णो२२द्भ[13]वं२३मुरारीन्२४ ॥ ८९ ॥
नृप[14]हरि२५नरपतिशूद्रक२६
बाण२७ कुमुद२८राजदेव२९शार्ङ्गधरान्३०
गोविन्दराज३१हरिगण३२
जयमाधव३३सूरवर्म३४शङ्खधरान्३५ ॥ ९० ॥
तरल३६स्कन्ध३७दिवाकर३८
चट३९गणपति४०कान्त४१धावक४२द्रोणान्४३
नर्ह्ड४४सुदर्शन४५ वैट

---

१ नामक २ प्राणनाथ आचार्य ३ नामक ४ शंकरतर्क वागीश ५ शास्त्रि पदवी में प्रसिद्ध ६ नामक ७ रसिकों में श्रेष्ठ ८ जैनी ९ अमरचन्द्र १० पण्डिताई के समुद्र, बहुत ही कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी कोटियों के विस्तार करनेवाले विद्वानों की सभा के शृङ्गार ऐसे सरस्वती के मन को हरण करनेवालों को नमस्कार करता हूं ॥

अब संस्कृत भाषा के कवियों की स्तुति है ॥

११ हनुमत्, इन्द्र १२ खंडप्रशास्तिकृत, बिल्हण १३ उद्भव १४ राजाभर्तृहरि

ङ्क४६बिल्वमङ्गल४७कलाकरा४८ग्निशिखान्४९ ।९१।
दण्डि५०क्रीडाचन्द्र५१क्षेमेन्द्र५२ दरिद्र५३शङ्कु५४रविगुप्तान् ५५।
देवेश्वर५६त्रिविक्रम५७भेरीभाङ्कार५८राजशेखरकान् ५९।९२
चन्द्रामर६०घटखर्पर६१धनञ्जया६२नन्तदेव६३धनपालान् ६४
हरिहरदेव६५विलोचन६६
राघवचैतन्य६७मदन६८कर्पूरान्६९ ॥ ९३ ॥
गोग७०निशानारायणा७१वररुचि ७२शङ्कर७३सुकराठ७४हरिवंशान्
कृष्णौ७६च भट्ट१मिश्रौ२रुद्रट७८जयवर्धना७९ऽभिनवगुप्तान्॥९४॥
श्रीशङ्कु८०भट्टनायक८१
लोल्लट८२वामन८३गुणाकर८४दिनकरान्८५ ॥
विश्वेश्वर८६नारायण८७पुरुषोत्तम८८चन्द्रशेखर८९सुबुद्धीन्९० ९५
चण्डीदास९१विनायक९२लोचनकार९३ त्रिलोचना९४ ऽमरुकान्९५
गणदेव९६वाक्यराज९७प्रभाकरा९८ऽऽनन्ददेव९९शुकदेवान्१००।
मल्लट१०१वल्लभदेव१०२प्रह्लादन१०३रामदेव१०४विरलान्१०५ ॥
गौडा१०६भिनन्दना१०७ऽच्युत१०८
शक्तिकुमारे१०९न्दुराज११०विष्णुकवीन् १११ ॥ ९६ ॥
विद्याविनोद११२शङ्कर
लिङ्ग११३ऽचल११४मल्लिनाथ११५चौहित्थान् ११६
शाम्भवदेव११७महेश्वर११८
भास्कर११९गोपालदेव१२०हारीतान्१२१ ॥ ९८ ॥
विद्वत्कुटुम्ब१२२तत्सुत १२३
दामोदर१२४सोमनाथ१२५मुचुकुन्दान्१२६ ॥
हरिवर्म१२७कामदेवो१२८
मापतिधर१२९सिंहदत्त१३०शाकल्यान्१३१ ॥ ९९ ॥

---

१ अग्निशिख २ अनन्तदेव ३ यह भी कवि का नाम है *४ अमरु ५आनन्ददेव
६ अच्युत७ अचल ८ उपमापति

इसका पूरा नाम अभिनवपादाचार्य है

वल्गु१३२वसुन्धर१३३वशठान्१३४
चौलुक्याधीशसोमनाथ१३५नृपम् ॥
कोकिल१३६सीमन्त१३७कवि
प्रकाशवर्षौ१३८पमन्यु१३९देवगणान्१४० ॥ १०० ॥
शकवर्म१४१सोमनाथ१४२
प्रदीप१४३नरसिंह१४४राघवानन्दान्१४५
भट्टस्वामि१४६नमय्या१४७
ऽभिरामपशुपति१४८कुमारदास१४९हरीन् १५० ॥ १०१ ॥
रामेश्वर१५१विद्यापति१५२
रत्नाकर१५३भीमसिंह१५४कुक्कोक्कान्१५५
तण्डुलदेवन१५६तोशल१५७
शिवदासा१५८ऽवन्तिवर्म१५९नग्नजितः१६० ॥ १०२ ॥
रानक१६१रीमुक१६२परिमल१६३
पुष्पाकर१६४धर्मदास१६५राहुलकान्१६६ ॥
हेतुक१६७दितिरकिशोरा१६८
ऽसृतवर्द्धन१६९वस्तुपाल१७०भानु१७१कवीन् ॥ १०३ ॥
वीजक१७२वल्लासेना१७३
ऽकालजलद१७४लक्ष्मसेन१७५जयगुप्तान्१७६ ॥
उत्पलराज१७७कवीश्वर१७८
लक्ष्मीधर१७९वृद्धि१८०गणडगोपालान्१८१ ॥ १०४ ॥
हम्मीरं१८२च नरेन्द्रं चहुवाणोच्चकुलचक्रचण्डांशुम् ॥
आनन्दवर्द्धन१८३श्री
पाल१८४कपिल१८५रुद्र१८६धनिक१८७शकवृद्धीन्१८८॥१०५॥
नाथकुमार१८९श्रुतधर१९०

॥ १ सोलङ्की क्षत्रियों का पति राजा सोमनाथ २ उपमन्यु ३ आभिराम पशुपति ४ अवन्ति वर्म ५ असृतवर्द्धन ६ अकालजलद ७ उच्च कुलवाले चहुवाण गण का सूर्य्य राजा हम्मीर

कमलायुध१९१कृष्णपिल्ल१९२हर्ष१९३कवीन् ॥
बाण१९४मयूर२वपुर्जो१९५
सिङ्गापिदि१९६सार्वभौम१९७वटु१९८रुद्रान्१९९ ॥१०६॥
धोयी२००न्द्रसिंह२०१लोणित२०२
सत्कन्या२०३काशपोलि२०४भोह्रकान्२०५
धाराकदम्ब२०६गोपा
दित्य२०७शिवस्वामि२०८दुर्गमनसो२०९ऽपि ॥१०७॥
नृपसातवाहसचिवं कालापनिमित्तशर्ववर्माणम्२१० ॥
यत्प्राकृतनृगिराढ्या त्यक्ता गीर्वाणगीर्गुणाढ्येन ॥
रुदतीपण्डित२११चम्पक२१२
भिक्षाटन२१३दग्धमरण२१४मेदाऽऽख्यान२१५ ॥
कर्णोत्पल२१६शशिवर्द्धन२१७
मालवरुद्रा२१८ऽभिनन्दनो२१९ड्डयनान्२२०॥१०९॥
सर्वज्ञवासुदेवा२२१ऽद्भुतपुण्य२२२भनन्दवर्म२२३कलश२२४कवीन्
मुक्तापीड२२५कलाकर२२६राघवदेवा२२७ऽहंवत्सराजाँ२२८श्च।११०

१ इन्द्रसिंह २ राजा सातवाहन का मंत्री कालापव्याकरण का कारण शर्ववर्मा जिसको नमस्कारकरता हूं॥ जिस शर्ववर्मा के कारण गुणाढ्य कवि ने प्राकृत और देश भाषा युक्त संस्कृतभाषा का बोलना छोड़ दिया, यह कथा इस प्रकार हैकिराजासातवाहनने व्याकरणपढना चाहा जिसके लियेगुणाढ्यने कहा कि छःवर्ष में पढ सकोगे;जिस पर शर्ववर्मा ने छःमास मेंही पढादेने की प्रतिज्ञाकी तब गुणाढ्य ने कहा कि यदि तू राजा को छ मास में व्याकरण पढ़ादेवे तो प्राकृत और देश भाषा युक्त संस्कृत का बोलना ही छोड़दूं. इस पर शर्ववर्मा ने अपने इष्ट स्वामिकार्तिक का आराधन करके उनसे "कालापव्याकरण" प्राप्त किया और उसने राजाको पढ़ाकर छः मास में ही अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की तब गुणाढ्य ने उक्त तीनों भाषाओं का बोलना छोड़कर पैशाची भाषामें सात लाख श्लोकों का "बृहत्कथा" नामक ग्रंथ बनाया. जिसमें से छ· लाख श्लोक तो सातवाहन पर अप्रसन्न होकर गुणाढ्य ने अग्नि में पत्रे होम दिये. और एक लाख श्लोक बाकी रहे जिन पर "कथासरित्सागर" नामक ग्रंथ संस्कृत में बना है।१०८।३ मेदनामक ४ अभिनन्द ५ उड्डयन ६ अद्भुतपुण्य ७ राघवदेवनामक

श्रुतदेव२२९धर्मकीर्त्ति२३०श्वेताम्बरचन्द्र२३१देवदासा२३२[1]न्यान्
कविकमनं च मही[2]पतिपदंपूर्वकमण्डलीक२३३नामानम् ॥१११॥
जितकोटि२३४जीवनागत२३५
महामनुष्या२३६[3]ह्वैद्यभानू २३७[4]ग्रान्२३८ ॥
वाग्वज्र२३९ धर्मवर्द्धन२४०
तर्कु२४१यथावर्म२४२शर्वदासाँ२४३श्च ॥ ११२ ॥
कुशकोटि२४४जीवनायक२४५
भासा२४६[5]भिधंचारुमूर्त्ति२४७हरिचक्रान्२४८ ॥
नेत्रत्रिभाग२४९निद्रादरिद्र२५०जघनस्थलीघटक२५१नाम्नः।११३।
कविवैद्यनाथ२५२कविदे
वबोधि२५३कविनागवैद्य२५४कविशम्भून्२५५ ॥
श्रीमातङ्गदिवाकर२५६सूलाम२५७जलम्भरादिवसुदेवान्२५८।११४।
मार्त्तण्ड२५९प्राकारप्रशस्ति१यूपप्रशस्ति२कर्तॄ२६१श्च
नवमालि२६२महादेव२६३
ज्ञाना[6]दिकवर्म२६४वीर२६५धरणीधरान्२६६ ॥११५॥
सूँ[7]तकुलान्तर्म्मिश्रणाकुलपरपुरुषं च चण्डकोट्या[8]ह्वम्२६७
अन्याँश्चविन्ध्य२६८वेहड२६९
वलि२७०कनक२७१हराँ२७२श्च सूतवंशीयान् ॥ ११६ ॥
ब्रह्माण्डबालभारतविधिं[10] त्तपणाकं सुकव्यमरचन्द्रम्२७३ ॥
मागधकुलमार्त्तण्डं माधव२७४नामानसुत्कटोक्तिवहम् ॥ ११७
रामिल२७५सोमिल२७६संज्ञौ[11] कावपि[12] भोजाश्रयावितरवर्णौ ॥

१ देवदासनामक २ महीपतिमण्डलीक नामक श्रेष्ठ कवि को ३ महामनु-
ष्य नामक ४ उग्र ५ भासानामक ६ ज्ञानवर्म ७ सूत (चारण) कुल के भीतर
मीशाण कुल के पुरुषा (वडेरे) चण्डकोटि नामक को ८ और भी ९ चारणकुल
के कवियों को १० ब्रह्माण्ड सदृश विचित्र रचनावाले बालभारत नाम काव्य
के ब्रह्मा (रचनेवाले) जैन सत्कवि अमरचन्द्र और प्रबल चमत्कारवाली उ-
क्ति के कहनेवाले मागधकुल के सूर्य माधव कवि को नमस्कार करना ।
११नामवाले १२ कोई राजा भोज के आश्रित अन्यवर्णवाले

चोरमराल२७७शकुन्तौ२७८ह्लादितधारेश्वरौ कवी कौचित् ॥११८॥
राजचन्द्रमितिकृतेः कविं कुलालं२७९प्रसन्नभोजहृदम् ॥
कीर्तिप्रतान२८०वैतालिकमपिविक्रम१वडाह२कीर्त्तिकरम् ॥११९॥
भानुमती२८१लीलावत्य२८२ऽभिरूपा२८३ भोजभूमिपतिमहिषीः॥
नृपविष्णुशक्तितनयां राज्ञीं २८४ श्रीसातवाहननृपस्य ॥ १२० ॥
कौलीं च रथस्यैकं चक्रमिति गिरा कुटुम्बविबुधवधूम्२८५ ॥
कर्वयित्रीं च विपक्षश्रीकराठ इति स्नुषां२८६बुधां तस्याः ॥१२१॥
तस्या एव तनूजा२८७मलङ्कृतिव्यङ्ग्यविस्फुरद्वर्णाम् ॥
भोजप्रतापगाथां ग्रथयित्रीं कांचन द्विजां२८८वृद्धाम् ॥ १२२ ॥
मराडनमिश्रप्रमदां२८९षरामास्यां स्वामिशंकरेण जिताम् ॥
कविमणिमाघकलत्रं२९०धाराधवपूज्यपाटवप्रतिभाम्२९१॥१२३॥

(१)प्रसन्न किया है धार के राजा भोज को जिन्हों ने ऐसे चोरमराल और शकुन्त नामक कोई दो कवि(२)"राजचन्द्रम्"* इस काव्य से राजा भोज के हृदय को प्रसन्न करनेवाला कुम्हार जाति का कवि; विक्रम और वडाह नामक राजाओं की कीर्ति करनेवाला (३) कीर्तिप्रतान नामक भाट ॥ ११६ ॥

(४) अभिरूपा (५) राजा भोज की रानियां (६) राजा विष्णुशक्ति की पुत्री जो श्रीसातवाहन नामक राजा की रानी थी ॥१२०॥ "रथस्यैकं** चक्रम्" इस पद से राजा भोज की समस्या की पूर्ति (७) करनेवाली कुटुम्ब नामक पण्डित की स्त्री और "विपक्षश्रीकराठः"**इस काव्य(८) से समस्यापूर्ति करनेवाली उसी के बेटे की बहू पंडितानी ॥ १२१ ॥ अलंकार और व्यङ्ग्य से भरे हुए अक्षरों से बोलनेवाली (९) उसी की बेटी, और भोज के प्रताप की कथा को रचनेवाली कोई वृद्ध ब्राह्मणी ॥ १२२ ॥ (१०) मण्डनमिश्रकी स्त्री जिसको छः महीनों के शास्त्रार्थ से श्रीशंकराचार्यने जीता था, और(११)धारा

*राजचन्द्र समालोक्य त्वा तु भूतलमागतम् । रत्नश्रेणिमिपान्मन्ये नक्षत्राण्यभ्युपागमन् ॥

** भोज ने यह समस्या दी थी" क्रियासिद्धि सत्त्वे भवति महता नोपकरणे" जिस को उस पण्डित की स्त्री ने तो-

" रथस्यैक चक्र भुजगयामेता. सप्त तुरगा निरालम्बो मार्गश्चरणरहित. सारथिरपि ।
रविर्यात्यवान्त प्रतिदिनमपारस्य नभस क्रियासिद्धि सत्त्वे भवति महता नोपकरणे ॥"

और उसके पुत्र की स्त्री ने —

विपक्षश्रीकण्ठो जडतनुरमात्य. शशधरो वसन्त सामन्त. कुसुममिषव: सैन्यमवला ।
तथापि त्रैलोक्य जयति मदनो देहरहित क्रियासिद्धि सत्त्वे भवति महता नोपकरणे ॥

इस प्रकार इन दोनो ने समस्या पूर्ति की थी. इस प्रकरण को विशेष देखना हो तो भोजप्रबन्ध मे देखो.

।२१२सीतां२९३विज्जां२९४विकटनितम्बां चमोरिकां२९५विजयाम्
कमलां२९७सुगन्धदीपां२९८
विरोचनां२९९ फल्गुहस्तिनीं३००ह्लदिनीम्३०१ ॥ १२४ ॥
एतां द्विजवरजातीर्निर्मात्रीः काव्यमुत्तमोत्तमकम् ॥
जैनीं कवयच्छीलां शीलां ३०२भट्टारिकां च वाक्श्रीलाम् ।२२५।
कृषिकसुतां३०३कवयन्तीं गायद्भिर्भोजकीर्त्तिमिति कांचित् ॥
कामपि मालाकारीं३०४ समुन्नतघनेत्यतर्क्यकाव्यकरीम्॥२२६॥
कां त्वं पुत्रीत्युक्ते नरेन्द्रलुब्धकवधूरदः काव्यम् ॥
श्लोकेन सपदि दधतीं तोषितभोजां महामृगयुदयिताम्३०५।२२७।
धाराधववितितीर्षां पुष्णन्तीं शिल्पिसुन्दरीं३०६ कांचित् ॥
कामपि कुलालजायां३०७सूक्तिसहायां पटुस्मृतप्रायाम् ।१२८॥
वेश्यां च विलासवतीं३०८कविकामुककालिदासकमनीयाम् ॥
प्रियदुस्थचारुदत्तां गुणानुरागां वसन्तसेनां३०९च ॥ १२९ ॥

नगरी के पति से पूजी गई है सुन्दर बुद्धि जिसकी ऐसी कविशिरोमणि माघ की स्त्री ॥ १२३ ॥ (१) ये सब ब्राह्मण जाति की उत्तमोत्तम काव्य करनेवाली और सरस्वती ही है लक्ष्मी जिसके ऐसी भट्टारिका पदवीवाली, और कविता करनेवाली शीला नाम की जैन मत की स्त्री ॥ १२५ ॥ भोज की कीर्ति गानेवालों से कवि पद को पायीहुई करषे (२)की कोई पुत्री. "समुन्नतघन*" इस अतर्क्य काव्य को करनेवाली कोई मालिन ॥ १२६ ॥ ३हे बेटी तू कौन है,**ऐसा पूछने पर,हे राजा मैं शिकारी की स्त्री हूं इस काव्य को शीघ्र श्लोक से रचकर भोज को प्रसन्न करनेवाली बड़े शिकारी की स्त्री ॥ १२७ ॥४ धारापति की काव्यतृष्णा को मिटानेवाली कोई कारीगर की स्त्री और कोई सुन्दर उक्ति ही हैं सहायक जिसके ऐसी सुन्दर याद रखनेवाली कुम्हारी ॥१२८॥ कवियों में कामी कालिदास की रमणी (५)विलासवती नाम की वेश्या; और गुणों से प्रीति रखनेवाली प्रियदुस्थचारुदत्ता (दुर्गतिवाला

---

*" समुन्नतघनस्तनस्तबकचुम्बितुम्बीफलक्वणन्मधुरवीणया विबुधलोकवामभ्रुवा ।
त्वदीयमुपगीयते हरकिरीटकोटिस्फुरत्तुषारकरकन्दलीकिरणपूरगौरं यशः ॥
**" का त्वं पुत्रि नरेन्द्र लुब्धकवधूर्हस्ते किमेतत्पलं क्षामं किं सहजं ब्रवीमि नृपते यद्यस्ति ते कौतुकम् ।
गायन्ति त्वदरिप्रियास्तु तटिनीतीरेषु सिद्धाङ्गना गीतान्धा न तृणं चरन्ति हरिणास्तेनामिषं दुर्बलम् ॥
इस प्रकरण को सविस्तर देखना हो तो भोजप्रबंध में देखो.

इतिमुखकविजनवारान्स्फूर्त्तिस्फारान्गिरामलंकारान् ॥
कृतिविजितामृतधारान्नमाम्युदारान्सहन्मनोहारान् ॥१३० ॥
के न बभूवुर्भूपा वितरणशीला बुधा विजेतारः ॥
ये कविसूक्तिनिबद्धास्ते ह्याकल्पं स्थिता यशोवपुषः ॥१३१ ॥
पुष्करपरिमलगुणिगणा आशुगकविकलनविहितविस्तारः ॥
रागिरसिकरोलम्बान्प्रीणात्यलमनिलाश्रयो नारात्॥ १३२ ॥
येषां गुणा जनानां कविभिः सौभाग्यशालिनो न कृताः॥
ते बाल्याद्विधवाया वक्षोजाविव मुधोद्गतास्तेषाम् ॥ १३३ ॥
शण्ढवधूशृङ्गारः कुहरान्तःशून्य इद्धकासारः ॥
कुब्जाया इव हारः कविकलनबहिष्कृतो गुणाऽऽगारः ॥१३४॥
प्राणोनानपि पुंसो ये प्रत्युज्जीवयन्ति वरवाचा ॥
लोकोत्तरपरमेष्ठिन ईडे तान्भारतीभटान्सुकवीन् ॥ १३५ ॥

॥ दोधकम् ॥

चारुदत्त है प्रिय जिसका*) वसन्तसेना नामवाली ॥ १२९ ॥ इत्यादि विशाल स्फुरणावाले वाणी के भूषण, काव्य से जीती है अमृत की धारा जिन्हों ने ऐसे सज्जनों का मन हरण करनेवाले उदार कविजनों के समूहों को नमस्कार करता हूं ॥ १३० ॥ बड़े दानी, पण्डित, युद्ध जीतनेवाले भूपति कितने न हुए अर्थात् बहुत हुए, परंतु जो कवियों की सुन्दर उक्ति में भलीभांति बंधे हैं वे ही प्रलय काल तक यश रूपी शरीर से स्थित हैं ॥ ११३ ॥ पवन रूपी कविरचना (काव्य) से विस्तार को पाये हुए कमल के सुगन्ध रूपी गुणी लोग भ्रमररूपी अनुरागवाले रसिकों को पूर्णरीति से प्रसन्न करते हैं. कमल का गंध पवन के आश्रय विना भ्रमरों को शीघ्र प्रसन्न नहीं करसकता ॥१३२॥ जिन मनुष्यों के गुण कवियों से शोभित नहीं किये गये उनके वे गुण बालविधवा के स्तन के समान व्यर्थ ही उत्पन्न हुए हैं ॥ १३३ ॥ जो गुणों से भरा भी है परंतु कवियों के शब्दों से बाहर है वह नंपुसक की स्त्री के शृंगार, किसी गहन स्थान में भरा हुआ शून्य निर्मल तालाव और कुबरी के हार के समान है ॥ १३४ ॥ प्राणों से छूटे हुए पुरुषों को भी जो श्रेष्ठ वाणी से संजीवन करते हैं उन भारतीभट श्रेष्ठ कवि रूप अलौकिक ब्रह्माओं की स्तुति करता हूं।

---

* शकार नामक एक राजपुरुष को छोड़कर वसन्तसेना नामक वेश्या चारुदत्त नामक एक दुर्गत ब्राह्मण के गुणों पर आसक्त थी, जिसकी सविस्तर कथा मृच्छकटिक नाटक में है.

यो न कवीरितसंगतनामा नार्थिजनाय य इष्टसुदामा ॥
योऽमरवाचिनपण्डित आस्ते तुन्दमृडुद्यमवद्विफलास्ते॥ १३६ ॥
अथ सामान्यतः सन्तोषिस्तुतिः २४ ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥
सिद्धीरष्ट८निधीन्नवा९ऽमरगिरिं१कामद्रु१तम्या२मणी३-
न्मन्यन्तेऽपि तृणं पुराणगपदं१सर्वाऽवनीशासनम्२ ॥
ये चाऽश्नन्तिदिनत्रये३ऽपि परुषं शाकं तु नो याचितुं
द्रव्याऽन्धा दधते मनो मयि कृपां तन्वन्तु ते तोषिणः ॥१३७॥
अथ सामान्यत उदारस्तुतिः २५ ॥
दारिद्र्याऽभिहता१ हि पात्रपरमा२ यच्छेतिसम्भाषिणो१
विद्यावन्त२ इतस्ततः स्वभवनात्प्राप्तं१ हि देयं२ परम् ॥
येषामप्यसवः परोपकृतये सद्यो भवन्त्युज्झिता
न्हीतान्यऽन्त्यजनोद्यतान्विनतितान्मान्यान्वदान्यान्भजे॥ १३८ ॥
अथ सामान्यतो धीरस्तुतिः २६ ॥
यद्यप्याप१दसुप्रणाशनपरा वा संप२दार्भुक्तिकी
स्याद्येषां न तदप्यशोभिवदना२ ये नाऽप्यधिश्रीमुखाः २ ॥
ये सत्कर्मणि वज्रनिष्ठुरशिलालेखानिसर्गा नरा-
स्ते नन्दन्तु शितक्षुराग्रपथिका धैर्याध्वरे दीक्षिताः ॥ १३९ ॥

जिन के नाम कवियों की उक्ति में संगत न हुए, जिन्हों ने याचकों को वांछितदान नहीं दिया और जो संस्कृत में विद्वान् नहीं हैं वे आलसी के उद्यम समान विफल हैं ॥१३६॥ आठों सिद्धि, नवनिधि, सुमेरु, कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि, ब्रह्मपद और संपूर्ण पृथिवी के आधिपत्य को तृण समान माननेवाले और तीसरे दिन सूखा शाक खाकर रहने पर भी धन करके अन्ध हुए मनुष्यों से मांगने को मन भी नहीं करते ऐसे संतोषी मेरे ऊपर कृपा करें॥१३७॥ जिनके "देओ" ऐसा कहनेवाले दारिद्री और विद्यावान् ही परम पात्र हैं, घर में इधर उधर जो कुछ मिलजावे वही देने योग्य है, और परोपकार के अर्थ तुरंत प्राण देनेवाले, लज्जित हुए हैं अन्य त्यागी लोग जिनसे ऐसे उदारों को नम्रता से भजता हूं॥ १३८॥ यदि प्राणोंका हरण करनेवाली आपदा आपड़े, अथवा इन्द्र की संपदा आजाय, परन्तु जिनका मुख आपदा में शोभाहीन न होवे और संपदा में अधिक शोभावाले न होवें, जिनका स्वभाव सत्कर्म में बज्र के कठोर शिलालेख

अथ सामान्यतो गम्भीरस्तुतिः २७ ॥

कुक्षौ कद्वदवा१ग्विषं२क्व च खलोक्त्यौ१र्व्वः२परिस्रु१त्क्वचि-
द्वैधेयाऽपकृति२स्तिमिङ्गिलगिलः१ क्वाऽरुन्तुदाऽवद्यगीः२ ॥
द्रुह्य१न्मन्दर२मन्थतोऽप्यमथितस्थैर्य्या इमान्यान्धवी-
छायावद्दधतो जयन्तु गहनाऽऽकूताऽभिभूताऽऽपदः ॥ १४० ॥

अथ सामान्यतः शूरस्तुतिः २८ ॥

दात्ताय्या१ऽऽतपवारणाः२ परिचलच्चिल्लो१च्छलच्चामरै२-
श्चण्डद्वीपि१भटै२र्विभीषणावृक१द्वाःस्थै२रुमा१धीसखैः२ ॥
प्राणां१हत्य२सृगा१ऽऽभिषेक२सुभगैर्युद्धक्ष्मि१भद्राऽऽसने२
वन्द्यास्ते भुजभङ्गिभुक्तभुवना यैः सार्व्वभौमाय्यते ॥ १४१ ॥

अथ सामान्यतः कारुणिकस्तुतिः २९ ॥

ये दारिद्र्यजिता१न्खलैरपकृता२न्भूमीभृता दण्डितां३-
स्तैनैराकुलिता४न्रुजाऽप्यधिगता५न्कर्णेजपैः कुन्थितान् ६॥
इत्याऽऽध्यान्नवनीतनम्रहृदया वीक्ष्यैव तेभ्योऽमिता-
मार्त्तिं स्वान्तरनिङ्गितं विदधतेऽलं तान्समन्तान्नुमः ॥ १४२ ॥

के समान (अविचल हैं) वे तीक्ष्ण छुरा (पाछने) के अग्र पर चलनेवाले धीरज यज्ञ में दीक्षा लिए हुए धीर पुरुष आनन्द को प्राप्त हों। १३९। समुद्र के मध्य स्थान रूपी उदर में कुत्सित वचन रूपी विष, कहीं खलों के वचन रूपी वड़वानल, कहीं वेधन करनेवाले अपकार रूपी मदिरा, मर्मवेधी निंद्य वाणी रूप बड़े मगरमच्छ, इन सब को कुए की छाया समान भीतर ही धारण करनेवाले शत्रु रूपी मंदराचल मंथन दंड से भी नहीं मथागया स्थैर्य जिनका ऐसे गंभीर अभिप्राय से आपदा को दबानेवाले सर्वोत्कर्ष से वर्तमान हैं। १४०। गिद्ध ही हैं छत्र जिनके, ऊपर उडनेवाली चीलें ही हैं चमर जिनके, उन्मत्त हाथी ही हैं भट उमराव जिनके, भयानक भेड़िये ही हैं द्वारपाल जिनके, कीर्ति ही है मंत्री जिनके, प्राणों का दान देकर रुधिर का अभिषेक ही है ऐश्वर्य जिनके ऐसे जो युद्धभूमि रूप सिंहासन पर चक्रवर्ती की भांति आचरण करते हैं वे भुजाओं से कुटिलता का नाश कर भुवनों को भोगनेवाले वन्दनीय हैं। १४१। दारिद्र्य से जीतेगये, दुष्टों ने जिनका अपकार किया, राजा ने दण्ड दिया, चौरों से घबराये, रोग से ग्रसित और चुगलखोरों से डरे ऐसों को देखते ही जो माखन समान कोमल हृदयवाले उनके अत्यन्त दुःख को अपने अन्तःकरण

अथ सामान्यतः सत्यवाक्स्तुतिः ३० ॥

प्राणात्राणाहरं१ वसुक्षयकरं२वंशव्यथाविस्तरं३
भृत्याऽवाप्यपटच्चरं४ दृढदरं५दाहाऽऽपदग्रेसरम् ६ ॥
बाधादुर्वहवासरं७भ्रमिभरं८क्षुत्क्षाम्यजीर्णज्वरं९
बाढं बिभ्रति सत्यमीदृगपि ये तेभ्योऽग्रणीभ्यो नमः ॥ १४३ ॥

अथ सामान्यतो मनस्विस्तुतिः ३१ ॥

यत्पारीन्द्रदृदाकुव१न्निरनिलस्नेहाशव२त्सुप्तव३
न्नौव४त्कङ्कमुखाऽऽत्तशस्त्रव५दलं संतृप्तव६त्स्वश्ववत्७ ॥
नस्योतोक्षव८दान्धवाम्बुव९दृजुस्त्रीव१०द्भजद्भक्तव११
च्छन्दं ये दधते मनोऽनवरतं तेभ्योपि मे वन्दना ॥ १४४ ॥
इत्यादीश्वर१वेद२धर्म३सुमुनि४प्रोक्तैः सदा सत्पथै-
र्ये गच्छन्ति विशेषवाञ्छितविदः सौशील्यसंस्कारिताः ॥
पीडापावकपूतचित्तपुरटाः पुण्याः प्रसन्नाः परा-
स्तानीडे शुभशास्त्रशाणनिशितान्प्रह्वोऽखिलान्पावनान् ॥ १४५ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ स्वरूपा-

में निर्विकार भरपूर भरलेते हैं उन सब को नमस्कार करता हूं। १४२। प्राणोंकी रक्षा का हरण करनेवाला, धन नाश करनेवाला, वंश में पीड़ा फैलानेवाला, वेतन (तनखा) में फटे वस्त्र दिलानेवाला, वडा भयानक दाह रूप आपत्ति का अगुवा कि जिस पीड़ा से दिन निकलना कठिन है, सदा भ्रमण करानेवाला और क्षुधा से दुर्बल होना ही है जीर्णज्वर जिसमें ऐसे कठिन सत्य को भी जो दृढ़ता से धारण करते हैं उन अग्रणियों को नमस्कार है। १४३। जो अजगर सर्प के समान, बिना वायु के दीपक समान शयन कियेहुए की भांति नाव की नांईं, संडासी में पकड़ेहुए शस्त्र की भांति, परिपूर्ण तृप्त हुए की भांति, सरल स्त्री के समान, भजन करनेवाले भक्त के समान ऐसे चरित्र के करनेवाले मन को निरन्तर धारण करते हैं उनके अर्थ भी मेरा नमस्कार है। । १४४। इत्यादि ईश्वर, वेद, धर्म और मुनियों से कहे हुए मार्गों से जो सदा चलते हैं और विशेष वांछित (ब्रह्म) को जानने वाले सुन्दर शील से संस्कार हुआ है जिनका, पीड़ा रूप अग्नि से पवित्र हुए हैं चित्त रूप सुवर्ण जिनके ऐसे पवित्र प्रसन्न जो हैं उन सुन्दर शास्त्र रूपी शाण से घिसे हुए संपूर्ण पवित्रों की नम्रता पूर्वक स्तुति करता हूं॥

दिस्तवमङ्गलाचरणं नाम प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

अथ केचित्कवित्वे प्राप्तावसरा अज्ञातशब्दशुद्धयोऽनधीतच्छन्दःशास्त्राः प्रायोगुणदोषलक्षणलक्ष्यविरोधिनो बहुशोविप्लुतविपर्य्यस्तलक्ष्यव्यङ्ग्याः क्वापि विरुद्धवाच्याश्च्यावितान्त्याऽनुप्रासाः पिङ्गलभाषोपाभिख्यदिल्लीग्वालेरान्तर्देशीयलोकभाषाकवयश्चापि कवित्वकर्त्तृत्वेन प्रस्तूयन्ते ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

केसव१ कवि सुचिरसिक सहित बलिभद्र२ सहोदर ।
बिप्र बिहारी३ बहुरि काव्य सुचि सत्तसईकर ॥
काव्य रसायन काव्यकार देव४हु द्विजकुल जांनि ।
कुलपति५ माथुर रसरहस्य१ संग्रामसार२ खानि ॥ १ ॥

षट्पदी ॥

कविबल्लभ१ रु सभाप्रकास२ कविता लच्छंनजुत ।
किन्नैं वह कविमुख्य निपुन हरिचरनदास६ नुत ॥
कवि भूखन७ मतिराम८ त्यौंहि सोदर चिंतामनि९ ।
नरउरपति नृपरामसिंह १०कूरम सुचिरसखनि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू (" गद्यपद्यमयी वाणी चम्पूरित्यभिधीयते । " अर्थात् जिस ग्रन्थ में गद्य और पद्य रूप वाणी होवे उस का नाम चम्पू है) के पूर्वायण के प्रथम राशि में परब्रह्म आदि की स्तुति रूप मंगलाचरण का पहला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ अब कितनेक, कविता करने का मिलगया है समय जिनको, शब्दों की शुद्धि को न जाननेवाले, नहीं पढ़ा है छंद शास्त्र जिन्हों ने, प्रायः काव्य के गुण दोष और लक्षण लक्ष्यों के शत्रु, बहुत ही खंडबंड और उलट पलट करादिये हैं लक्ष्य और व्यङ्ग्यों को जिन्हों ने, कहीं विरुद्ध प्रतिपादन करनेवाले और छोड़ दिये हैं अन्त्यानुप्रास जिन्हों ने, ऐसे दिल्ली और गवालियर के बीच के देशों की पिंगलभाषा नामक लोकभाषा के कवि भी कविता मात्र करने के कारण स्तुति कियेजाते हैं ॥

१ शृङ्गार रस का २ सगा भाई ३ उत्पत्ति ४ रसरहस्य और ५ संग्रामसार नामक दोनों ग्रंथों की ६ खान ७ लक्षण ८ स्तुतियोग्य ९ छोटा भाई १० शृंगार रस को खान

कवि नृपकिसोर११सोपुरपुर पै छत्र गोरकुल उद्धरन ।
सामंतासिंह१२ अरु विरुदं दुव२१३ नगर कृष्णगढ धरनिधँन॥२॥
उदयनाथ१४ कवि कान्यकुब्ज कौसिकमुनि बंसिय ।
जिहिँ कवीन्द्रउपटंक भूपबुंदीस बुद्धं दिय ॥
द्विज कविदेवीदास१५ नाथ१६ ठक्कुर१७ किसोर१८ जिम
दुल्लह१९ घनआँनंद२० इन्द्रजित२१ बुंदेलहु तिम ॥
आलम२२ निवाज२३ पुष्कर२४ मधुप२५,
पुखी२६ ईस२७ सुकदेव२८ पुनि ।
वृंद२९ रु अतीत३० सूरति३१ बदन३२
चटुल३३ चतुर्भुज३४ चिमन३५ चुनि ॥ ३ ॥
भूपति कवि भगवंतसिंह३६ जसवंतसिंह३७ दुव २
कालिदास३८ अरु नीलकंठ३९ धनपति४० गरीब४१ धुव॥
कासीराम४२ कपूर४३ हून४४ रघुराय४५ हरीहर४६
श्रीपति४७ कासीनाथ४८ सिंह४९ सुन्दर५० बंसीधर५१ ॥
कविराम५२ मुबारख५३ गोप५४ कवि उद्धवराम५५ जमाल५६ अथ
मण्डन५७ मुकुन्द५८ मीरन५९ मदन६०
कृष्ण६१ नाम दंगडीसुकथ ॥ ४ ॥
गनिका श्लेषविगुंर्फ धनी सेनापति६२ तद्धव ।
रसपटु दलपतिराय६३ बनिकं श्रीमालबंसभंव
देवीराम६४ गुलाबराय६५ कविराय६६ रु रसखनि६७
बेनीराम६८ रु बासुदेव६९ नेही७० रु सिरोमनि७१
सिवरत्न७२ सिवाईराम७३ पुनि माथुर राधाकृष्ण७४ अरु
निर्मल७५ निहाल७६ रसराज७७ कवि

१ पति २ गौड़ कुल के चत्रियों का उद्धार करनेवाला ३ विड़दासिंह ४ राजा भूमि ही है धन जिसके)५ पदवी ६ बुध सिंह ने (७आनन्दधन ८ गणिका के मिलाप में गु ा हुआ९ उस गणिका का पति१० वैश्य (बनिया)११ श्रीमालियों के वंश में उत्पन्न २ रसखान

दयाराय७८ देवक७९ अगरु८० ॥ ५ ॥
स्नोंवर हृदयानंद८१ त्यौंहि विद्यारामा८२ऽऽहृयं ।
रामकृष्णा८३ रसपुंज८४ धीर८५ हरिराय८६ धनंजय८७
महाकवि८८ रु कल्ल्यानपाल८९ धनसुख९० पुरान९१ पुनि
नल९२ कलंक९३ हरनाथ९४ गुजदेव९५ रु गनेस९६ गुनि
सिवपाल९७ धराधर९८ संभु९९ कवि जगन्नाथ१०० जदुबंसजंनि
कवि दयालाल१०१ पद्माकर१०२ रु
मुरलीधर१०३ पुनि देवमनि१०४ ॥६॥

॥ सोरठा ॥

सुकवि बिप्र कमलेस१०५ गुनपटु दीनदयालुगिरि१०६ ॥
माथुरमिश्रगनेस१०७ बालकृष्णा१०८ माथुर बहुरि ॥७ ॥
चारन नरहरिदास१ कुंभकरन२ पूरन३ सुकवि॥
ईश्वरदास४ रु आस५बदरिदास६ हुकेमेस७ बलि ॥८॥

॥ षट्पदी ॥

मेघराज८ माहव९ मुरारि१० करनेस११ काव्यकर ।
बदन१२ पितामह मर्ब्भ त्यौंहि रसबीर समुद्धर ॥
बहुरि बंक१३ जिहिं मरुप मान कविराज बजारिउ ।
दान१४ जु बुंदियनृप उमेद कविराज पजारिउ ॥
श्रीचारिडदान१५ मम जनक बुध संस्कृत१ पिंगल२ डिंगल३न
पीर१६ रु कृनाल१७ भैरव१८ प्रमुख कविजन चारनबंसगन ।९।

॥ सोरठा ॥

दासस्वरूप१९ दयाल२० प्रथित उदय२१ चामुंड२२ पैंदु।

---

१ रसिक २ विद्याराम नामक ३ पैदा हुआ ४ आशा नामक ५ हुकमाचन्द्र ६ पुनि ७ करनीदांन ८ मेरे (इसीप्रकार मेरे पितामह)अर्थात ग्रन्थकर्ता सूर्य-मल्ल के दादा ९ वीर रस का उद्धार करनेवाला१० बांकीदास ११ मारवाड़ के पति मानसिंह ने १२ बजाया (कविराज प्रसिद्ध किया) १३ पद जड़ा (कविराज पद से युक्त किया) १४ पिता (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पिता) १५ पण्डित १६ ब्रजभाषा १७ मरुभाषाओं में १८ आदि १९ स्वरूपदास २० प्रसिद्ध २१ चतुर

सोदर[1] मम जयलाल२३ पौरानिके इत्यादि पुनि । १० ।
मोतीसर[3] भरतेस१ चिमन२ नरायन३ पुनि चतुर४ ॥
गिनि उम्मेद५ गनेस६ बहुरि नंद७ इत्यादि कवि । ११ ।

॥ षट्पदी ॥

भँट्ट[4] चंद१ रसबीरमूर्त्ति[5] छंदनको अरितम[6]
सद्दनको नटसाँल[7] कुसल कछुकछु प्राकृतक्रम ।
साह अक्कब्बर स१य[8] गंग२ भट्टहु गुनआगर
महापात्र नरहरि३ रु तनय हरनाथ४ तास बर ।
खुम्मान५ चतुर्भुज६ भंगड़७ रु संकर८ त्यौंहि प्रताप दुव२।१०
गिरिधर११गनेस१२इत्यादि सब जे कवि भट्टन बंस हुव॥१२॥
कवि अन्वय[9] कायस्थ मान१ संकर२ हरि३ मधुकर४
गजानन५ रु गोपाल६ धर्म७ ब्रजनाथ८ चक्रधर९ ।
माली मदन१ मलूक२ रासिक ल्योकार[10] सु भैरव१
रत्न१नाम रथकार[11] भागु१ घटकार[12]जातिभव
सुख१ चित्रकार[13] धूसर सुजन१ कम१ नापित[14] मुष्टिके कुलवि१
कुसल१ रु किसोर१ पट[15]१ चमरकार[16]
रच्छपाल१ कुल डोंब[18] कवि ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

रामकृष्णाकवि बिप्र हम जु लिख्यो रसपुंज[19] ढिग ।
सरस अलंकृत[19] छिप्र[20] काव्यकरी ताकी वधू१ ॥ १४ ॥
अजिता१ वांगाग्रिंस[22] सुंदरिका२ करनी३ सिरा४

१ सगाभाई (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का सगा भाई) इनको आदि लेकर २ चारण कुल के कवि जानो ३ चारणों के याचकों में एक जाति है ४ भाट ५ मूर्ति ६ अत्यन्त शत्रु ७ नहीं निकले ऐसा साल ८ सभासद ९ वंश १० लोहकार (लुहार) ११ सुथार (बढ़ई) १२ कुम्हार १३ चितेरा १४ नाई १५ सुनार १६ जुलाहा १७ चमार १८ ढोली १९ रसयुक्त और अलंकार सहित २० शीघ्र काव्य करनेवाली २१ स्त्री रामकृष्ण नामक ब्राह्मण की स्त्री २२ सरस्वती का अंश

बरजू५ चारनबंसका६पकरी इत्यादि तिय ॥१५॥
बोरी१ ओठबिहीनकं काली२ पुनि कंजुली३ ॥
प्रमदा काव्यप्रबीन भट्टनंकुल इत्यादि हुव ॥ १६ ॥
इंद्रजित जु बुंदेल भाख्यो घनआनंद ढिग ॥
पातुरि तस रसखेल रायप्रबीन१ कवित्व निधि ॥ १७ ॥
घनानंद अभिधान लिख्यो इंद्रजितके निकट ॥
पातुरि ताहि सुजान२दिल्लीपति दिन्नी कवि सु ॥ १८ ॥
आलमकवि जिहिं अर्थ जवनभयो ब्रह्मत्व तजि ॥
सेख१ सु काव्य समर्थ सतीरंग रंजक सुता ॥ १९ ॥
नाजर कमलानाथ१सहजराम२हरिसुख३ सु कवि ॥
इत्यादिन सुभसाथ बंदौं नरबानी कविन ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ लोकभाषाकविस्तवनं नाम द्वितीयो मयूखः ॥ २

अथ मन्मित्रप्रशंसोद्देशः ॥

दोहा

अक्षचरन कनभक्ष मत कल्पक कोटि नवीन ॥
श्रीनिवास१ आचार्य द्विजपण्डित सुहृद प्रबीन ॥ १ ॥
व्याकरनोदाधिपोत बलि मैथिल बाबूनाथ२ ॥
दूजो२ केवलकृष्ण३द्विज हद्द कोटि इन्ह हाथ ॥ २ ॥
सरजूपारी द्विज कुसल गयादत्त४ गुनगोर ॥

---

१ काव्य करनेवाली २ बिना ओठ (ओष्ठ) वाली
३ स्त्रियां ४ भाटों (मागधों) के ५ प्रवीनराय ६ नामवाला ७ देश भाषा के कवियों को श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में लोकभाषा के कवियों की स्तुति का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ अब मेरे मित्रों की प्रशंसा का कीर्तन है ८ गौतम का मत न्याय और ९ कणाद का मत वैशेषिक १० नवीन कोटि * की कल्पना करनेवाले ११ मित्र १२ व्याकरण रूपी समुद्र की १३ नाव १४ पुनि १५ सीमा (कोटि की सीमा है इनके हाथ में)

---

* शुष्क तर्कनावाले शास्त्र के निर्णय को कोटि कहते हैं.

तो[१]मेध गोविंद५तिम मैथिल शा[२]ब्दिकमोर ॥ ३ ॥
स[३]फर सिंधु साहित्यको बढि पटैत ध्व[४]निबीच ॥
सुहृद भवानीसंकर६ सु व्यास विबुध[५] दाधीच ॥ ४ ॥
मम्मट[६]१ न्याय२ कणाद३ मत पाणिनिमत४ बुध बीर ॥
अंबालाल७ दधीचकुल फतैलाल८ दुवरधीर ॥ ५ ॥
काव्य१कोस२बोलि व्याकरन३ ज्योतिष४पट मतिजोर ॥
विप्र नन्हसर्मा९ वि[१०]बुध मित्र सुसीलन मोर ॥ ६ ॥
अध्यापक बलदेव१० बुध भूपगिराभण्डार ॥
किन्नौं जिहिं काला[११]पको ध्वस्तजानि उद्धार ॥ ७॥
मंत्री रानानरेसको नागर जीवनलाल ११ ॥
अमृत१२ अनुज तस या[१२]वनी मंल नियुद्ध कमाल ॥ ८ ॥
सुधापानि बुध बैद्य द्विजकान्यकुब्ज केदार १३ ॥
बालकृष्ण१४ द्विज माथुरहु कवि न[१३]गिरा[१४]ऽकूपार ॥ ९ ॥
कुल गौड़ रु दाधीचकुल नंद१६ हुंड १७क्रम नाम ॥
गुनी सु[१५]हृद या ग्रंथके ये२ लिपि[१६]कर अभि[१७]राम ॥ १० ॥
राजसिंह रठ्ठौरनृप मालव सीतां[१८]दंग ॥
कुमर तास रतनेस१८ कवि सु ममसुहृद हितसंग ॥ ११ ॥
प[१९]हु बलवंत१९ भनायन्नृप बंस क[२०]बंधदुबा[२१]ह ॥
बीर धीर सिवनाथ२० बलिनगर मसूदा [२२]नाह ॥ १२ ॥

---

१ बुद्धिवाला २ वैयाकरणोंके मुकुट ३ साहित्य रूपी समुद्र का मच्छ ४ व्यंजना वृत्ति में
पटाबाज (व्यंग्य से अर्थ प्रकट होवे उसका नाम व्यंजना है, कितनेक के मत से इसी
को ध्वनि कहते हैं और कितनेक के मत से ध्वनि और व्यंजना दोनों साहित्य के जु
दे जुदे अङ्ग हैं ५ पण्डित ६ साहित्य ७ वैशेषिक ८ व्याकरण ९ पुनि १० पण्डित ११
कलाप व्याकरण (कातन्त्र) का १२ यवन सम्बन्धी (फारसी भाषामें) सलाह में
और मल्लयुद्ध में कमाल (परमावधि करनेवाला) १३ नागरी भाषा का १४ समु
द्र १५ मित्र १६ लेखक १७ मनोहर १८ मालवा देश में सीतामऊ नामक नगर
१९ राजा बलवंतसिंह २० राठोड़ २१ दोनों हाथों से वाह करनेवाला
२२ पति

पुनि प[1]त्तन कढेडप[2]ति विष्णुसिंह२१ रट्ठोर ॥
धौंकल२२ संग[3]रिया धनी जु रन१दैन२बरजोर ॥ १३ ॥
पट्टु पिप्पलिया ग्राम पति फूलसिंह २३ कछवाह ॥
पुनि भारत २४ सेवासुपट्टु बित[4]रन उदधि अथाह ॥ १४ ॥
महासिंहहर जैतगड पुर पति बुंदिय ढल्ल ॥
मेरो मित्र महीप[5]को सुभ[6]ट ह दुर्ज्जन सल्ल २५ ॥ १५ ॥
माध[8]व साहिपुरेसके भ्रात इक्क रनजीत २६ ॥
भट दूजो २ भूपाल २७ पुनि ए दुव मित्र अभीत ॥ १६ ॥
नाथाउत चालुक्क निडर नगरपगारौं नाह ॥
दुर्ज्जनसल्ल २८ हु ममसुहृद प्रभु[10]को मुख्य सिपाह ॥ १७ ॥
महासिंहहर दच्छ[11]मति गोकुल २९ स[12]हज पवित्र ॥
बीर मुख्य बुंदीसको थानाँपति ममभित्र ॥ १८ ॥
गोवर्द्धन ३० ताको अनुज बहुरि हहु कल्यान३१ ॥
हरदाउत्त रु जदुज[13]नन माधव सीलनिधान३२ ॥ १९ ॥
च्यारि४सुभट नृपरामके बितरन हि[14]तरन बीर ॥
भिणाडरपति गज[15]केतुगति सगताउत हम्मीर१ । ३३ ॥ २० ॥
सगताउत ज्योंही सुघर पिप्पलियापुर नाह ॥
हमतसिंह२।३४ कु[16]स ति[17]ग्म मति[18]समर अजेय सिपाह ॥ २१ ॥
दुव२ क[19]बंध इक्कैलवा पति माधव अनुजा[20]त ॥
पदमसिंह३ । ३५ बीरम४ । ३६ बहुरि निम्महडापति ख्यात ॥ २२ ॥
पुररतलाम नरेसके सुभट तीन३ मतिमान ॥
बखतावर१ । ३७ अभि[21]धान इक्क सोनगिरा चहुवान ॥ २३ ॥

१ पुर२ काधेड़ा नामक ग्राम का ३ सांगस्या नामक ग्राम का ४ दानका ५ बुन्दी के राजाका ६ उमराव ७ माधोसिंहका ८ सोलखी ९ मित्र १० स्वामि (बुन्दीपति) का ११ चतुर १२ स्वभाव से १३ यदुवंशी दानके और १४ युद्ध के लिये वीर १५ भीष्मको १६ डाभके समान १७ तीक्ष्ण बुद्धिवाला १८ युद्धमें १९ राठोड़ २० छोटा भाई २१ नाम

दुव२ कबंध इक्क श्रवन पति जोरावर२।३८ अरिकाल ॥
सिवगढपति त्यौंही सुजस गाहक मन गोपाल२।३९॥२४॥
पुनि जोताईग्राम[1] तिम बुध[2] कबंध[3] बलवंत४०।
बदनमल्ल४१ त्यौंही बनिक[4] सचिव भनाय सुमंत ॥ २५ ॥
चारन सप्तक७ मतिचतुर विदित कोटिरसबीर[5]।
रामकरन१।४१ महडू[6] रसिक पुनि आढा[7] कवि पीर२।४२।२६।
बुध[8] भवान३।४३ महियार[9] बलि[10] बखतावर४।४४ बरबच्छ[11] ॥
रोहड[12] दुर्गादत्त५।४५ अरु लछमन६।४६ चतुर७।४७ सुलच्छ[13]।२७।
तीन३ भट्ट[14] हनुमंत१।४८ पुनि रामनाथ२।४९ मति इद्ध ।
सिरोहियारनजीत३।५० कवि सुचि[15]रस[16] पुंज प्रसिद्ध ॥२८॥
पहिले नृपके सचिवपट्ट हुव मोहन धात्रेय[17]।
तासभ्रात सुहृद[18] सु रतन५१ मनरन लरन अभेय[19]॥२९॥
नरपति धात्रेई धनी प्रभु नियोग[20] प्रतिपाल ।
किल्लादार सु दुर्गको निपुन नंदजुतलाल[21] ५२ ॥ ३० ॥
इंगरेजमत बैद्य[22] इन हदमति बखसहुसैन[23]५३।
इत्यादिक मम मित्र गन रहहु सुखी दिनरैन ॥३१॥
सत्रुजन हु होवहु सुखी मैं जिम गुननगरीय[24]।
सहिसहि जिनके वज्रबैन[25] भयो सर्वदेसीय ॥३२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ मित्रादीष्टशंसनं नाम तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

१ग्राम का नाम है २ पण्डित ३ राठोड़ ४ बनिया ५ वीर रस की कोटि में ६ चारणों में एक शाखा है ७ चारणोंकी जाति में आढा नामक एक शाखा है ८ पण्डित ९ चारणों में एक शाखा है १० पुनि ११ श्रेष्ठ छातीवाला १२ रोहड़िया कुल का चारण १३ श्रेष्ठ लक्षण युक्त १४ भाट (मागध) १५ निर्मल १६ शृंगाररस का समूह १७ धाय का पति (धाऊ) १८ मित्र १९ अपरिच्छेद (अटूट) २० आज्ञा का २१ नन्दलाल २२ वैद्यराज २३ हुसेनबख्स जिनके वज्र रूपी २५ वचन सह सहके मैं सर्वदेशी और गुणों से २४ बड़ा हुआ तैसे ही शत्रु लोग भी सुखी होवें ।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में मित्रों को आदि

अथ च मया ग्रन्थाऽवसाने स्वोत्पत्तिविस्तरं विवर्णयिषुणा तावत्संक्षिप्य कविवंशो वर्ण्यते ॥

दोहा

पृथुनृपके बिधिसत्र[1]तें प्रगटे मागध१ सूत[2]२ ।
देस मगध३ आनर्त्त[3]४ दिय पृथु इन्हअर्थ प्रभूत[4] ॥१॥
बंस[5]वृत्ति दिय मागधहिं१ सूतहिं२ पुण्य[6] पुरान[7] ।
काव्यवृत्ति सामान्य किय पूजन दुहुन२ प्रमान ॥२॥
संतति जानहु सूतकी रुचिर[8] कल्पतर[9] रूप ।
वृखं[10]चारन चारनबजत ईस[11] निदेसैं[12] अनूप ॥ ३ ॥
जो भूरुह[13] चारन जनन पाटव[14] बिद्यापत्र ।
आलवाल[15] नृपजन इहाँ आदर सलिल अमत्र[16] ॥४॥
भाखाखट६ किसलय[17] सुभग मति आमोद[18] अमंद ।
काव्य बिरुद[19] बिहंसित[20] कुसुम[21] रसनव९ मधुर मरंद[22] ॥५॥
पठित बीररस पुलककर उदित पराग[23] अछेह ।

लेकर इष्टजनों के वर्णन का तीजा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

अब ग्रंथ के अंत में अपनी उत्पत्ति का विस्तार पूर्वक वर्णन करने की इच्छावाला मैं पहले संक्षेप से कविवंश वर्णन करता हूं. महाराज पृथु के (१) विधियज्ञ से मागध और (२) सूत ये दो उत्पन्न हुए, जिन में से पृथु ने मागध को मगध और सूत को आनर्त [(३) द्वारका प्रांत] देश (४) बहुत धन के साथ दिये ॥ १ ॥ मागध को (५) बंशावली लिखने की और सूत को (६) पवित्र (७) पुराण बनाने व सुनाने की वृत्ति दी, और दोनों सत्यवक्ताओं का पूजन करके काव्य वृत्ति दोनों को बराबर दी ॥ २ ॥ सूत के वंश को (८) सुन्दर (९) कल्पवृक्ष के समान जानो जो ११ महादेव की अनुपम (१२) आज्ञा से (१०) नन्दिकेश्वर को चराने के कारण से चारण कहलाते हैं । ३ । उस चारण कुल रूपी (१३) वृक्ष के (१४) चतुराई और विद्या तो पत्र, राज लोग ही आलवाल [(१५) वृक्ष की जड़ में जल ठहरने का गोल कूंडा] आदर ही जल सींचने का (१६) पात्र ॥ ४ ॥ छहों भाषा ही (१७) कौंपलें, सुन्दर बुद्धि ही [१८] सुगन्ध का आनंद, काव्य और [१९] उत्साहवर्धिनी स्तुति ही (२०) फूले हुए [२१] पुष्प, शृंगारादि नव रस ही मीठा [२२] पुष्परस ॥ ५ ॥

पिंगल२डिंगल३पटु भये धुरधर चराडीदान ९ ॥ २६ ॥
रवि साहित्य सरोजके[1] रनसुमके[2] रोलंब[3] ॥
तत्वबोध वैराग्यनिधि अरु स्वधर्म[4]पिक[5] अंब ॥ २७ ॥
जियतमुक्त[6] हुव रामनृप जिनकी संगतिपाय ॥
दिन्नौं गुरुपद१मित्रपद२ है पंडित हित लाय ॥२८॥
तिनको सुत रविमल्ल[7]१०कवि कवि१ बुध२ भक्त३न दास।
बंदि चरन जुग२जनकके करत प्रबंध[8] प्रकास ॥२९ ॥
दोला१ सुरजा२ विजायिका३ जसा४ रु पुष्पा५ नाम।
पुनि गोबिंदा६ षट६ प्रिया अर्कमल्लकवि[9] बाम[10] ॥ ३० ॥
भ्राता कविरविमल्लको[11] लघु सोदर[12] जयलाल।
पाणिनीय[13]१ बुध[14] धर्म२ पटु[15] विद्या३बिनय४ बिसाल ॥ ३१॥
अग्रज तस रविमल्ल यँहँ नृपके मुख्यनिदेस[16]।
समुझावन प्राकृतसहित बरनत बंस बिसेस ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ संक्षिप्य कविवंशवर्णनं नाम चतुर्थो मयूखः॥ ४ ॥

अथ प्रबन्धप्रारम्भः ॥

दोहा

होहु सदय[17] हेरंब[18]१कौं बंदन बारंबार ॥
देहु सुमति निजदासकौं बहुविध विघन विदार ॥१॥
विधितनया[19]१कौं नमत विधि पूजों अंजलिपानि[20] ।

---

१ कमल (साहित्य रूपी कमल) के २ पुष्प ३ भ्रमर अपने धर्म रूपी ४ आंब मे ५ कोयल ६ जीवन्मुक्त ७ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ८ ग्रन्थ ९सूर्यमल्ल की १०स्त्रियां ११सूर्यमल्ल का१२ छोटा सगा भाई १३व्याकरण में १४ पण्डित १५ चतुर १६ आज्ञा से

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में संक्षेप से कवि वंश वर्णन का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥

अथ ग्रंथ प्रारंभ होता है ॥

१७ दया से युक्त ऐसे १८ गणेश को १९ सरस्वती को २० हाथ जोड़कर

सरदइन्दु[1] छबि सारदा[2] उकति देहु नव[3] आनि॥ २ ॥
बंदौं स्फोट[4] विसेस करि मति१ कृति२ संगति३ मूल।
सबदब्रह्म[5] किंकर समुझि करहु दया अनुकूल ॥ ३ ॥

मनोहरम्

प्रथम अकार१ है उकार २पुनि है मकार३
प्रनव[6] भयो जो मानि रचन जिहानकों ।
अँच दसच्यारि१४ हल तीसतीन३३ है कैं भयो
ब्रह्मंड[9] सकल प्रकासत प्रमानकौं ॥
प्रानीकौं प्रचारैं च्यारि४बानीकौं निमित्तकरि
सूचैंक[10] समस्तको लखावैं निज थानकौं।
गूढ़[11] औ अगूढ बिना जाके जगमूढ यातैं
ह्वैकैं सावधान बंदौं साचे सावधानकौं ॥ ४ ॥

१शरद के चंद्रमा जैसी है छवि जिसकी ऐसी २हे सरस्वति ३ नवीन।२। विशेष कर केशब्द को नमस्कार करता हूं जो बुद्धि रचना और संगति [संबन्ध अर्थात्४ शब्दार्थ का संबन्ध]का मूल है वह ५ हे शब्दरूपी ब्रह्म मुझको दास जानकर अनुकूल हो कर दया करो।३। जो शब्दरूपी ब्रह्म पहले अकार उकार और मकार रूप होकर तीनों से ६ओं्म् ऐसा प्रणव [ब्रह्म स्वरूप हुआ जो संसार को ग्रंथ स्वरूप मान कर चौदह७ स्वर और तेतीस ८ व्यंजन रूप हुआ ९ और ब्रह्माण्ड स्वरूप होके संपूर्ण प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अभाव) को अर्थात् चारों वेद, छहों वेदांग, छहों शास्त्र, अठारहों पुराण और इतिहास आदि सब का१० प्रकाश करता है और चारों वाणी अर्थात् परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी, इनमें से जो मूलाधार चक्र से पहले पहल उठती है वह तो परा है, और वही हृदय स्थान को प्राप्त होवे तब पश्यन्ती, वही बुद्धि में आवे तब मध्यमा और वही मुख और नासिका द्वारा निकल कर प्रत्यक्ष होती है तब वैखरी है। इन चारों में से प्रथम की परा और पश्यन्ती को तो योगी ही प्रत्यक्ष कर सकते हैं और मध्यमा व वैखरी मनुष्यों के प्रत्यक्ष होती हैं इन दोनों में भी जो मुख द्वारा शब्दात्मक वा वर्णात्मक निकलकर बोलने में और सुनने में आती है वह वैखरी है। इन चारों वाणियों को निमित्त अर्थात् उत्पत्ति मात्र का कारण बनाकर प्राणी मात्र को व्यवहार में लगाताहै और संपूर्ण वस्तु मात्र को जनाकर अपने स्थान को दिखाता है अर्थात् ब्रह्मपद को प्राप्त करता है।और जिस११ गुप्त नाद रूपी और प्रत्यक्ष शब्द रूपी ब्रह्म के विना संसार मूर्ख

दोहा ॥

हरि[१]१ कमला[२]२ ईश्वर[३]३ उमा[४]४ गोतम५ कपिल६ कणाद७ ॥
व्यास८ पतंजलि९ जैमिनि१० रु पाणिनि११ करहु प्रसाद ॥५॥
मूलसक्ति१२ जगद्दग[५]मिहिर१३ बलि[६] इत्यादिन बंदि ॥
कछुक आधुनिक भक्तकुल अब प्रनमत आनंदि ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

उत्तर अवंती[९]तैं जमालय[१०]त्यौं जैपुरतैं
आखंडल[११]आसा अद्रि अर्बुद[१२]तैं आनिये ।
सोपुरतैं अस्त[१३]घाँ उदैपुरतैं ईस[१४]ओर
ज्यौंही आगरेतैं जातुधान[१५]नघाँ जानिये ॥
पुष्करतैं बह्लि[१६]घाँ सिहोरतैं अनिल[१७]ओर
पारिजात[१८]पब्बयके कटक[१९] प्रमानिये ।
पाटवप्रजापतिको नाक[२०] नाकहूको छिति
मण्डलको छोगा बुंदीनगर बखानिये ॥ ७ ॥

दोहा ॥

जाके जनपद[२१] पुण्यथल पत्तन[२२] पट्टनि नाम ॥
खटपुर पुनि चम्मलिसरित[२३] जंबुमार्ग[२४] बनधाम ॥ ८ ॥
हड्डनकरि विख्यात हुव हड्डवती यह देस ॥
चाहुवान कुल[२५]चक्रको रवि जह रामनरेस ॥ ९ ॥

हैं उस सांचे सावधान (शब्द रूपी ब्रह्म) को मैं सावधान होकर नमस्कार करता हूं ॥ ४ ॥ १ विष्णु २ लक्ष्मी ३ शिव ४ पार्वती ५ संसार के नेत्र रूपी सूर्य ६ पुनि ७ इस समय के ८ नमस्कार करता हूं ९ उज्जैण से १० दक्षिण में ११ पूर्वदिशा में १२ आबू पर्वत से १३ पश्चिम की तर्फ १४ ईशान कोण में १५ नैऋत्य कोण में १६ अग्निकोण में १७ वायुकोण में १८ आडावळा पर्वत के १९ घेरे में २० स्वर्ग का भी नाक(नासिका) २१ देश में २२ पुर २३ नदी २४ तीर्थविशेष २५ गण

*"माला अच्छर माधुरी अव गुम्फत आनन्दि ॥६॥" बुन्दी में इस ग्रथ की असल प्रति है उसमे इस दोहे के उत्तरार्ध के ये दो चरण लिखेहुए हैं और इस उत्तरार्धके ऊपर महीन अक्षरो मे उत्तरार्ध मूल मे लिखाहुआ है. आगे 'आधुनिक भक्त कुल का वर्णन' इससे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्ता की इच्छा आधुनिक भक्त कुल के वर्णन करने की थी परंतु किसी कारण से नहीं होसका इससे यह त्रुटि पाईजाती है.

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ पुन
र्मङ्गलपूर्वकनृपदेशराजधानीलक्षणसूचनं नाम पञ्चमो मयूखः॥५॥

पट्पदी

बानीको[1] सरवस्व पुरीबुंदिय प्रसिद्ध जँहँ ॥
रामसिंह नरनाह हड्ड चहुवान हेलि[2] तँहँ ॥
धर्म नीति धुरधरन सरन संगत[3] जयपंजर[4] ॥
वेदरीति सिर वहन दहन अघ[5]तिमिर दिवाकर[6] ॥
सेना समाज सो दय धरत करत प्रजापालन सुमत ॥
धनुबान खग्ग साधन सहित क्षात्रधर्म अभ्यासरत ॥ १ ॥
प्रीतिकरत पण्डितन कविन सादर सनमानत ॥
बिद्याबाद विदग्ध[7] स्वाद कविताऽमृत जानत ॥
षट६नास्तिक परिखण्डि मण्डि मत निगम चउद्दिस४ ॥
अरि अदण्ड बहु दण्डि छण्डि पुनि दिय निवारि रिस ॥
चउ४वरन च्यारि४आश्रम चलन सोधि करिय निज निज सरनि॥
उदयाऽद्रि बिंदुमति[9] दुग्गपर तपत अनल[10]अन्वय तरनि[11] ॥२॥
जँहँ केतन[12]बिच कंप चक्रबाक[13]हि बियोगबस ॥
बंधन सर[14] बापीन[15] रहत कैतव[16] मृगयारस ॥
नीचगामि जँहँ नीर चलन भाँवन[17] व्यभिचारी ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पहले राशि में फिर मंगला चरण के साथ राजा के देश और राजधानी के लक्षण जनाने का पंचम मयूख समाप्त हुआ।

१ सरस्वती का २ सूर्य (चहुवाणों का सूर्य) ३ मित्र (शरणागतों के मित्र) ४ पींजरा ५ पाप रूपी अंधेरे का ६ सूर्य ७ पंडित ८ मार्ग में ९ बुन्दी नगर १० अग्निवंश के ११सूर्य

अब यहां पर ग्रंथ कर्ता, विरोधाभास से अपने स्वामी रामसिंह के राज्य का वर्णन करते हैं।

जहां कंप केवल १२ ध्वजा में ही है और वियोग के वश १३ चकवा चकवी हैं। बांधना १४ तालाब और १५ बावड़ियों में और १६ ठगने का व्यवहार केवल शिकार में ही होता है. नीच गामी जहां पर केवल पानी ही है। १७ व्यभिचारिपन

स्वानजात परसंद्म बातें स्वच्छंदविहारी ॥
सरमात्रें रहत उल्लंघि श्रुति छिदत पटहि लहि सूलछत ॥
इक तेयकर्म चित्तहिं हरत राज्य रामनृप आचरत ॥ ३ ॥
चापल नारिन चच्छु बचन नन सुरत समागम ॥
धर्म सुनैंबिनु बधिर धमनि धुक्षित नाडिधंम ॥
दुर्बल जुवतिन उदर थाप आघात मृदंगन ॥
दोषांकर कुमुदेस मत्तभाव सु मातंगन ॥
लूतांहि छिपावत द्रव्य निज कुच कठोरभावहिं धरत ॥
इक लूट पुण्यलूटन उचित राज्य रामनृप आचरत ॥ ४ ॥
महत्तं प्रकृति मिटवाय करत ज्ञानहि गुन कर्त्तन ॥
इक अरघट्ट घटीन उच्चनीचन परिवर्त्तन ॥

नव रसों के संचारी भावों में ही है अन्य जगह कहीं नहीं। पराये १ घर पर केवल कुत्ता ही जाता है ३ स्वतंत्र चलनेवाला एक २ पवन ही है, और ५ श्रुति (वेद) पक्षे कर्णों का उल्लंघन करके केवल ४ बाण ही रहता है छिदने में शूल कांटा का ७ घावलेकर केवल ६ वस्त्र ही छिदते हैं और ८ चोरी का कर्म केवल पराया मन हरण करने में ही होता है अर्थात् उपरोक्त कर्म उपरोक्त वस्तुओं में ही होते हैं इन को छोड़कर अन्य स्थानों में कहीं नहीं होते इस प्रकार का राज्य महारावराजा रामसिंह करते हैं अथवा रामसिंह के राज्य में उक्त व्यवहारों का आचरण उक्त पदार्थ ही करते हैं अन्य नहीं ॥३॥ स्त्रियों के ९ नेत्र ही चपल हैं१० नहीं नहीं यह वचन केवल स्त्री पुरुषों के ११ संगम में ही होता है बिना धर्म सुने १२ बहिरे मनुष्य ही रहते हैं १३ धमण (धोंकनी) पक्षे शरीरवर्ती जीवसाक्षिणी नाड़ी को १४ सुनार ही धमता है दुर्बलता स्त्रियों के उदर में ही है थपड़ की चोट मृदंग पर ही पड़ती है १५ दोषाकर चन्द्रमा का नाम है पक्षे दोषोंकी खानकेवल १६ चन्द्रमा ही है, उन्मत्तता हस्तियों में ही है, अपने द्रव्य (जाला बनाने के तन्तु) को केवल १७ मकड़ी ही छिपाती है और कठोरता को स्त्रियों के कुच ही धारण करते हैं लूट करने में पुण्य की लूट करना ही उचित समझते हैं रामसिंह ऐसा राज्य करते हैं ॥ ४ ॥ जगत् के कारण (१८ माया जाल जिससे बारंबार जन्म मरण होता है) को मिटाकर केवल ज्ञान ही गुण (सत्व, रज, तम) को १९ काटता है और नीच से ऊंच और ऊंच से नीच होने का पलटा केवल रेंहट की घड़ियों में ही होता है, जड़ (जल) पक्ष में सूर्य्य का संग

सफ[1]रादिन जडसंग जीह जाचक इक चातक ॥
अखि[2]लादनकर अ[3]ग्गि घोर सु[4]हि आश्रयघातक ॥
बिपरीत चित्रकाव्यन बिहित स[5]रहि छोरि गुन निस्सरत ॥
वृष सिंह वैर रासिन रहत राज्य रामनृप आचरत ॥ ५ ॥
उदर बिदारित अव[6]नि स्यामआनन गुंजाफ[7]ल ॥
कलाघटन ससिकर्म्म कटन बिघ[8]टन बिधि कस्मल[9] ॥
सहत लोहसंताप ब्रह्मचारी तियबर्जित ॥
निह[10]किंचन संन्यस्त न[11]र्म्म होरिन[12] अह अर्जित[13] ॥
कृपनत्व भूमि अरि बसकरन सर्प बक्रगति अनुसरत ॥
गोपय निचोर बच्छहि करत राज्य रामनृप आचरत ॥६॥
पद्मादिक[14] परकोस आत लुट्टन इंदिंदिर[15] ॥
तउ न बराटक[16] मिलत सोहु बंधन पावत चिर ॥
पायवृद्धि पुनि दूर सोम[17] इक रहत मित्रसन ॥
ऊपर बढि पुनि अधर गिरन ग्रहगन तारागन[18] ॥

---

१ मछली ही करती है और याचकपन केवल पपीहा (पक्षी विशेष) की जीभ में ही है, २ सर्वभक्षी एक ३ अग्नि ही है और जिसके आश्रय से रहे उसी का नाश करनेवाला भी एक ४ अग्नि ही है, विपरीतपन चित्रकाव्यों में ही होता है, गुण (प्रत्यंचा) को छोड़कर केवल ५ बाण ही जाता है और वैर भाव वृष सिंह आदि राशियों में ही रहता है ॥ ५ ॥ उदर ६ भूमि का ही विदाराजाता है, कालामुख ७ चिरमी का ही है, कला चन्द्रमा की ही घटती है अन्य किसी की नहीं, कटने और ८ घिसने की रीति ९ मूर्छा में ही होती है, ताप लोहा ही सहता है और बिना स्त्री के ब्रह्मचारी ही रहते हैं, १० इच्छा रहित केवल संन्यासी ११ ही हैं परिहास १२ होली के दिनों में ही १३ संचय किया जाता है, कृपनपन शत्रुओं की भूमि लेने में ही किया जाता है और टेढ़ी चाल से केवल सर्प ही चलते हैं, गौओं के दूध का निचोड़ बच्छे ही करते हैं ॥ ६ ॥ पराया खजाना लूटने को १४ पद्मकोश (कमल कोश) पर भ्रमर आते हैं तौभी १५ कमलगट्टा पच्चे १६ कोड़ी नहीं पाते और बहुत समय तक वेही बंधन पाते हैं, वृद्धि पाकर मित्र से दूर रहनेवाला एक १७ चन्द्रमा ही है, १८ ऊपर बढ़कर नीचे गिरनेवाले तारागण ही हैं

भुवनाढय[1] घनन रिक्तीभवन कूट[2] कनक रजतन परत ॥
लंघत सुमार्ग्ग पाउससलिल[3] राज्य रामनृप आचरत ॥७॥
नीचउच्च समहोत तुलत गुंजा सूचीमुखं[4] ॥
कीलन दुख दल[5] लहत सहत इच्छुहि[6] पीलुन दुख ॥
नीचहि भेदक सेतु[7] छमा[8] छेदक इक सीरहि[9] ॥
बढत मित्र अति घटत सत्रु सुचिकोहि[10] समीरहि[11] ॥
मधुछीवं[12] छपद गणिका छुवत सुहि सरजा[13] सेवनकरत ॥
पालक बिपच्छ[14] इक होत पिक राज्य रामनृप आचरत॥ ८ ॥
पठनपाय लहिपच्छ सहत बंधन सुक सारी[15] ॥
कपट समाधि बकोट[16] नाग रसना द्वयधारी ॥
हीनपच्छ आहार्य[17] मानसेवत महिलाजन[18] ॥
नेह[19] दसाको[20] नास करत इक कज्जलकेतन[21] ॥
बिलपन निवास कुररिनं[22] बदन रुदननीर केकिनढरत[23]॥

---

१ भुवनाढ्य जलपाति और पक्षे जगत् पति होकर केवल मेघ ही रीते होते हैं २ मार पीट सोना चांदी पर ही पड़ती है, श्रेष्ठ मार्गों को ३ वर्षाकाल का पानी ही लांघता है ॥७॥ चिरमियों से ४ हीरे तोले जावें तभी नीच ऊंच बराबर होते हैं पत्रावली बनाने में कीलने का दुःख ५ पत्ते ही लेते हैं और पीलने का दुःख सांठा (६ गन्ना) ही सहता है, ७ मर्यादा पक्षे पाल कर तोड़नेवाला जल ही है. (" नीचगामी होने के कारण यहां पर पानी नीच कहा गया है " ८ क्षमा पक्षे भूमि का छेदनेवाला केवल ९ हल ही है। बढ़ते समय में मित्र और घटते समय में शत्रु होनेवाला १० अग्नि के लिये एक ११ पवन ही है, १२ मधुमत्त पक्षे मद मत्त केवल भ्रमर ही रहता है, वही भ्रमर १३ सरजा (रज युक्त कमलनी, पक्षे रजस्वला) का सेवन करता है, एक कोयल ही १४ शत्रु का पालन करती है (कोयल का काक के बच्चों को पालना प्रसिद्ध है) ॥ ८ ॥ पढ़ कर और पक्षयुक्त होकर केवल तोता और १५ मैंना ही बंधन सहते हैं, कपट की समाधि रखनेवाला एक १६ बगुला पक्षी ही है. दो जीभ पक्षे कह कर उदल जानेवाले सर्प ही हैं. हीनपक्ष होकर ऊपर से १७ आरोपण कियेहुए मान का सेवन करनेवाली १८ स्त्रियां ही हैं. नेह १९ तेल पक्षे स्नेह और २० दशा बत्ती पक्षे चैतन्य तथा अवस्था का नाश करनेवाला एक २१ दीपक ही है विलाप करना २२ कुरदांतली पक्षिविशेषके मुखमें ही है. रोनेका पानी (अश्रु) २३ मयूरोंके ही पड़ताहै

करटीहि[1] हस्तमुद्राकरत राज्य रामनृप आचरत ॥ ९ ॥
गणकनमुख[2] इक्कार्गों[3] फटितमुख त्यौंहि करकँ[4]फल ॥
रागहि मूर्च्छित[5] रहत जसहि सेवत बिदेसथल ॥
बर्ग[6]मूल बिच्छेद गनित सागर अवगाहत ॥
न[7]ष्टभाव निजरीति छत्तबंधन निर्बाहत ॥
भयकारभाव सेवत रसहि[8]अयनबास रवि अनुसरत ॥
कन्[9]याप्रसूत सीतहिं करत राज्य रामनृप आचरत ॥ १० ॥
बामन दिगिभन[10] बीच रूक्षरागी तरु सैंवर ॥
भ्रमसेवी मृगजात[11] सुरत संग्राम दुरोदर[12] ।
स्वरहि बिकृत[13] संगीत ग्राम[14]सन जात निकारे ।
धैवत[15] इक्क निखाद स्वान[16] अंत्यज ढिगधारे ।
संपाहि[17] अचिर रोचन[18] सहित करकबीज[19] दंक[20] उत्तरत ।

केवल१हस्ती ही अपने हाथ को समेटते हैं ॥९॥ केवल२ज्योतिषियों के मुखमें ही३ लग्नविभाग होता है. फटेहुए मुखका एक ४ अनार फल ही है.५ मूर्छायुक्त केवल राग ही रहते हैं(राग के ग्राम के सप्तम भाग को मूर्छना) कहते हैं विदेश में केवल यश ही रहता है. ६मूल को काटनेवाला केवल वर्ग (ग्रंथों में मूल पाठ को छेदन करनेवाले वर्ग, अध्याय, सर्ग परिच्छेद) ही है. समुद्र का थाह लेनेवाला केवल गणित ही है और ७ नष्ट छंदों के प्रस्तारादि षोड़श प्रत्ययों में ही होता है. भयंकरपन को ८ रस ही सेवन करते हैं अर्थात् नव रसों में एक भय रस भी है उसके उपरांत और किसी में भयंकरता नहीं है. वामदिशा [उत्तरायण] पके उलटे भाग में केवल सूर्य ही जाता है और ९ कन्या [कुमारी स्त्री] संतान जनती है इसमें केवल कन्या संक्रान्ति ही शीत [ठंढ] को जनती है ॥१०॥वामनपन आदि १०गजों में ही है [दक्षिण दिशा के गज का नाम वामन है] शुष्क रंगवाला एक सैमल का वृक्ष ही होता है. भ्रम का सेवन करनेवाला केवल ११मृगतृष्णा ही है.१२ हार जीत केवल सुरत संग्राम में ही होती है. स्वरों की१३विकृति [विकार को प्राप्त होना] केवल संगीत में ही है और वेही १४ ग्राम (संगीत में षड्ज, मध्यम और गान्धार ये तीन)निकालेजातेहैं. बुद्धिमान् होकर अन्त्यज भीलों के शब्द धारण करने में केवल संगीत का छठा स्वर १५ 'धैवत' ही अंत में उत्पन्न होनेवाले सातवें स्वर 'निषाद' के १६शब्दको अपने समीप धारण करता है, थोड़े समयके १८प्रकाश को धारण करनेवाली एक १७बिजुली ही है, पानी उतरने(पराक्रम का नाशहोने)में केवल १९अनार के बीज का ही२० पानी

सात्विकहि जाड्य पावत सदन राज्य रामनृप आचरत ॥ ११ ॥

धूर्त्तभाव कंनकद्रु भंगपद लहरि सम्हारत ।
कर्णोंजप कलिकाहि जाय तुपकन उरजारत ।
बहत दोसमति बैद्य गोधि सेवत अलीक जँहँ ।
पुष्पँवंत उपरक्त तुलसि सिरकंठ चढत तँहँ ।
कोटिनै उपेत तउलक्ष्यकँहँ इक्क चाप नैति आदरत ।
पावत कलंक कुमुदेस पँहँ राज्य रामनृप आचरत ॥ १२ ॥

धनाक्षरी

हाहा रहैं वाकैं यह हाहा देसमैं न राखैं,
वह सर्तसत्र यह अगनित सत्रधाम ।
प्राचीपति वह यह सकल दिसाको वह,
गोत्र बल बैरी यह पूरैं बल गोत्र काम ॥

उतरता है। केवल सात्विक भाव में ही १ जड़ता को स्थान मिलता है ॥ ११ ॥ धूर्तपन केवल ५ धतूरे के वृक्ष में ही है और पदभंग होना केवल समास करने में ही होता है २ चुगल (पिशुन-पन केवल तोड़ादार बंदूक की कला (जामकी) ही करती है, जो बंदूक के कान लग कर उर को जलाती है, दोषमति को वैद्य ही प्राप्त होते हैं, (४ वात, पित्त, कफ इन को दोष कहते हैं) एक ५ ललाट ही ६ अप्रियता को धारण करता है, अर्थात् ललाट में ब्रह्मा के बुरे लेख लिखेहुए होवें उनको वह धारण करता है ग्रहण होने में ७ सूर्य चन्द्रमा का ही ८ ग्रहण होता है, शिर-और कंठ पर तुलसी ही चढ़ती है; कोटियों (९ धनुष के अग्रभाग का नाम है पक्षे करोड़ों रुपयों के) सहित है तौ भी १० लक्ष्य (निशाना, पक्षे लाखों के धन के) अर्थ एक धनुष ही ११ नमता है, कलंक केवल २१ चन्द्रमा पर ही पाता है, इसप्रकार का आचरण रावराजा रामसिंह के राज्य में होता है ॥ १२ ॥ वाकैं [इंद्रकै] १३ हाहा नामक गंधर्व रहता है और यह [रावराजा रामसिंह) हाहा खेद की वाणी अपने देश में नहीं रहने देता, इंद्र १४सौ १०० यज्ञ करनेवाला है और यह अगणित यज्ञों का स्थान है, वह केवल १५ पूर्वदिशा का ही पति है और यह सब दिशाओं का पति है वह अर्थात् इंद्र तौ १६ पर्वत और बलि राजा का वैरी है और यह रावराजा रामसिंह सेना और अपने गोत्रवालों की कामना पूर्ण करता है.

पावैं सत[1]कोटि जो लुटावैं यह वाके लेख[2] ।
है कवि बिरोधी याके लेख[3] दैं कविन ग्राम ॥
लाजको जिहाज सुभकाजको इलाज सुर ।
राजको सिरोमनि बिराजें रावराजाराम ॥ १३ ॥
रनजिम सूरनकौं मुदिर[4] मयूरनकौं ।
बिधु[5] बिख[6]सूचनकौं कंजकौं कठोरघाम[7] ॥
बर्हिकौं बर्यारि बिटपावलिकौं बारि सहं-
कार ज्यौं सफल पथिकनके पृथुलकाम ॥
रोगीकौं सुधा ज्यौं कौल[10]भोगीकौं रुचिरराग ।
रति रमनीनकौं धनीनकौं कलाके[11] ग्राम ॥
सुभट[12]कौं साधुकौं सुकविकौं सभाकौं ऐसैं ।
पंडितकौं पटुकौं प्रजाकौं रावराजा राम ॥ १४ ॥
लघुन बढावैं अतिउच्चन नमायलावैं ।
फूलफल ललित लुनायकैं लगावैंकाम ॥
बक्रनकौं सरल बनावैं चलमूलनकौं ।
दैजल दृढावैं कंटकनको छुरावैंधाम ॥
भलदल[13] भावैं औ अपक्कन पकावैं त्यौं ।
ब दीमन[14] बिहावैं फटैं तिनको न राखैं नाम ॥

वह तो शतकोटि (१बज्र) पानेवाला है और यह सौ करोड़ लुटानेवाला है, उस इंद्रके लेख(२देवता)तो कवि(शुक्राचार्य)के विरोधी हैं और इस रामसिंह के ३लेख (लिखावट)कवियों[काव्यकरनेवालों] को ग्राम देते हैं, ऐसा लज्जा का जहाज, शुभ कार्यों का उपाय और इंद्रका शिरोमणि रावराजा रामसिंह विशेष शोभायमान है॥१३॥४मेघ५चन्द्रमा६चकोरों को७सूर्य८पवन९आमका वृक्ष१० काले सर्प को ११ व्याज(सूद)का समूह१२अब यहां यथा संख्या करके बतलाते हैं कि रावराजा रामसिंह उमरावों रूपी वीरों के लिये युद्ध रूप,श्रेष्ठ पुरुषों रूपी मयूरों के लिये मेघ,सुकवि रूपी चकोरों के लिये चन्द्रमा, सभा रूपी कमलके लिये सूर्य इसी प्रकार पंडित रूपी अग्नि के लिये पवन, चतुर पुरुष रूपी वृक्ष के लिये पानी प्रजा रूपी मार्ग चलनेवालों की बड़ी कामना सिद्ध करनेवाला फला हुआ आम का वृक्ष है॥ १४ ॥ १३ श्रेष्ठ पत्रोंवाला १४ दीमक [उदेही] को मिटावे

बुंदी सुधासींचीसी बगींचीसी बनायराखी ।
मा[1]लिक मनी[2]सी यौं बिराजैं रावराजा राम ॥ १५ ॥
हा[3]टकमैं हीर जिम हीरमाँहिं नीरजिम ।
इंदुमैं अमृत अं[4]बलामैं लाज ज्यौं ललाम ॥
रोहिनी[5]स रां[6]कामैं पताकामैं विजय बर्णां ।
सोहैं सत्यमैं ज्यौं प्रियबचन बिसेस बा[8]म ॥
संगरमैं सूर पयमाँहिं ज्यौं सिं[9]ताको पूर ।
कविरसनामैं रस बिद्यामैं बिनयधाम ॥
साधु मान गान तान पात्र दानपिंड प्रान ।
नीतिमैं यौं धर्मकौं निहारैं रावराजा राम ॥ १६ ॥
सोहैं सावधान प्रभुं[10]तादि तीन३ सक्तिनमैं ।
सज्जित सदाही सात७ प्रं[11]कृति बनावैं काम ॥
चतुर चं[12]मूके अंग च्यारि४हु सुधारिराखे ।
च्यारि४ पुरुं[13]सारथमैं बढिकैं निकास्यो नाम ॥
च्यारि४हु उपा[14]य अनपा[15]य रचिबेमैं दं[16]च्छ ।
छैं[17]६ गुन प्रपंचको* विरं[18]चै एक आठौं८ जाम ॥

---

१ माली २बुद्धिमान् ३सोने में हीरा होवे जैसा और हीरे में पानी[आबी]होवे ऐसा चन्द्रमा में अमृत ४ स्त्री में ५ लज्जा ६ शरद पूर्णिमा की रात्रि में चंद्रमा ध्वजा में विजय के ७ अक्षर होवे जैसा सत्य में प्रिय बचन अधिक ८सुन्दर होवे ऐसा, युद्ध में वीर, दूध में ९ सक्कर, कवि की जीभ में नव रस और विद्या में नम्रता होवे ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों में संमान और गान में तान, पात्र में दान और शरीर में प्राण हैं इसी प्रकार रावराजा रामसिंह नीति में धर्म को देखते हैं॥ १५॥ १०प्रभुशक्ति उत्साहशक्ति और नीतिशक्ति इन तीनों शक्तियों में सावधान और सज्जित होकर राज्यकी सातों ११प्रकृति[स्वामी, आमात्य, मित्र,खजाना, राज्य, गढ, सेना]योंके कार्यों को बनाते हैं इस चतुर रामसिंहने १२सेनाके चारों अंगों(हाथी, घोड़ा,रथ पैदल) को सुधार रक्खा है और १३धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में बढकर अपना नाम प्रसिद्ध किया है इसी प्रकार १४साम, दान, भेद, दंड इन चारों उपायों को १५ निश्चल रचिये मे १६ चतुर १७ संधि,विग्रह, यान, संस्था, आसन, द्वैधीभाव इन छहों गुणों के १८ रचने का ही है आठों प्रहर *संचय जिसका ऐसा

नायक निपुन नीति नोखीली नवोढा[1] सहे[2]-
धर्मिणीकौं धव[3] यौं बिराजैं रावराजा राम ॥ १७ ॥

मनोहरम् ॥

अस्त्रे अभिषेक सींचे पूजे गजमुत्तिनकैं।
कोस निधि इद्ध[5] छाये स्वामिकर छाजाके ॥
बन्दीजन घंटिका बिसेस बिरुदाये अंग।
रागअंग सघन सुहाये मेद[6] ताजाके ॥
सिद्धिपाय पूरि पर पिंडनमैं पैठत।
रसीले रिझवार त्यौं प्रहारनके बाजाके ॥
सिंहासन झूठे ब्रथा बैठैं और राजा सांचे।
सिंहासनबैठैं सेल[7] राम रावराजाके ॥ १८ ॥
आप भद्रआसनपैं बानी रसना[9]ऽऽसनपैं।
लच्छी[10] नयना[11]ऽऽसनपैं बास निबहतुहैं ॥
सिबिका सुखासनपैं सुकवि[12] सुमेधा सूर।
कर कमलासनपैं असि[13] उमहतुहैं ॥
हरि हृदयाऽऽसनपैं जय बिसिखा[14]सनपैं।
द्वीपसप्ता[15]ऽऽसनपैं कीरति कहतुहैं ॥

१.नीतिरूपी नखरा करनेवाली नवोढा (नवीनस्त्री) २स्त्रीका निपुण ३पति रावराजा रामसिंह शोभायमान है॥ १७॥ ४लोहीके अभिषेकसे सींचेहुएहाथियोंके मस्तकके मोतियों से पूजेहुए ५दीप्तिमान् अथवा बढ़ानेवाला, अपने स्वामी के हस्त रूपी छत्र से छायेहुए बंदीजन रूपी घंटिकासे बिरुदायेहुए ताज़े ६ मांस रूपी लेप से शोभायमानअंग, पूर्णसिद्धि पाकर शत्रुओं के अंग में घुसनेवाले इसीप्रकार प्रहार रूपी बाजा के रसीले रिझवार ऐसे रामसिंह रावराजा के सेल [७ भाले] सच्चे सिंहासन पर बैठे हैं. बाकी के राजा लोग झूठे सिंहासनों पर वृथा ही बैठे हैं ॥ १८ ॥ आप [रावराजा रामसिंह] तो सिंहासन पर हैं और ८ सरस्वती जिनकी ९ जिह्वा के आसन पर १० लक्ष्मी जिनके ११ नेत्रों के आसन पर वास करती है १२श्रेष्ठकवि, श्रेष्ठ बुद्धिमान् और शूरवीर पालकी और सुख के आसनों पर, १३तरवार हस्त रूपी आसन पर उत्साह करती है, परमेश्वर जिनके हृदय रूपी आसन पर, विजय १४बाण के आसन पर, १५ सातों ही द्वीपों के

धर्मधुरधोरी धन्य रामरावराजा जाको ।
सत्रुमुकुटासनपैं सासन रहतुहैं ॥ १९ ॥
मंत्रमैं महीप चन्द्रगुप्तसौं सिवाय सोहैं ।
अम्बरीस ज्यौं पय उपासैं रमाधवके ॥
पारथप्रवीन खुरलीके पुरुसारथमैं ।
नलज्यौंबिनीतैं बाहैं बाजी बेडजवके ॥
राजराजरामकी सपूती रजपूती आज ।
कैसैं और पूजैं तुल्य याके कलौलवके ॥
धर्ममैं जुधिष्ठिरको बामधुरधारैं कवि ।
कर्ममैं निकारैं मर्म बानीके बिभवके ॥ २० ॥
घुम्मत घंटा कैं चतुरनमैं घटाके घाट ।
फाँदैं मन्दुरानमैं तुरंग तुलातुलमैं ॥
भागधेयं धाँधातैं भँडारनमैं भेटआवैं ।
सेनाके समाज सज्ज पाँनिप पृथुलमैं ॥
चरनकी चोकी चुवैं मुकुट महीपनके ।
बुंदी अधिराज असे बानिक बिपुलमैं ॥
श्रीनैं भूति भारदै नमायराख्यो भूलौं भूप ।
ऊँचो तऊ व्हैरह्यो छतीस३६ छत्रकुलमैं ॥ २१ ॥
दिस दिस देखि दीठि चपल चलावैं मानि ।

आसन पर कीर्ति को कहते हैं ऐसा धर्म की धुर को खींचनेवाला रावराजा रामसिंह धन्य है जिनकी १ आज्ञा शत्रुओं के मुकुट रूपी आसन पर रहती है ॥ १९ ॥ २ लक्ष्मीपति (परमेश्वर) के ३ बाणविद्या में अर्जुन जैसा निपुण और पराक्रम में भी अर्जुन के समान ४ घोड़ों को शिक्षादेने में राजा नल के जैसा ५ क्षणमात्र भी जिनकी कला के बराबर कौन पूगसक्ता है ॥ २० ॥ ६ कितने ही ७ हस्तियों के समूह ८ हस्तिशालाओं में घटा के समान घूमरहे हैं ९ हयशालाओं में १० कर[हासिल, ग्विराज]११ठामठाम से १३ बड़े १२ पराक्रम में सभेहुए १४ लक्ष्मी ने संपदा का भार देकर राजा को १५ पृथ्वी तक झुकादिया है तौ भी क्षत्रियों के छत्तीस कुलों में ऊंचा होरहा है ॥ २१ ॥ सब दिशाओं में देख देख कर चपल दृष्टि को चलानी है और बड़े वैभव के

भूखन दिखावैं मंजु बिभव बिसालाज्यौं ॥
सुवरनसेवी अभिरूपजन आवैं तिन्हैं
आसु अपनावैं मिलि लावैं गरैं माला ज्यौं ॥
कोटिनपैं कोटिन कुमावैं अर्थ कामिनतैं
सदननसूनौंराखैं राग इकै१ताला ज्यौं ॥
निलज निसर्ग नृपरामकी समृद्धि साँची
बित्ताकरैं वृद्धन बुलावैं बाँरबालाज्यौं ॥ २२ ॥
रामरावराजाके निकेतनमैं रारिमांडि
कित्ति अरु लच्छी बाद बाढैं बराजोरीपै ॥
कित्तिकहैं मेरेकाज तोहि तिनुकालौं गिनैं
लच्छीकहैं मैंही तू बढाई भई भोरीपै ॥
कित्तिकहैं भोगैं तोहि सकल समाजी लोक
लच्छीकहैं मोकौं चारु मुकुट चहोरीपै ॥
फैलीफैलि फोरीधायधाय भई धोरी तऊ
काहूनाँ निहोरी तू दिगंतनलौं दोरीपै ॥ २३ ॥

समान बुद्धि रूपी सुन्दर भूषण दिखाती है। और १श्रेष्ठ अक्षरों के सेवन करनेवाले २पण्डित लोग आवें उनको ३शीघ्रही अपना बनाकर माला के समान गले से लगालेती है और अर्थ की कामनावालों से करोड़ों पर करोड़ों कमाती है दूसरे पक्ष में शास्त्रों के निर्णय का नाम कोटि है जिसका अभिप्राय है कि शास्त्रों के निर्णय पर निर्णय कराती है और जिस प्रकार ४ इकताला राग में कभी स्थान खाली नहीं रहता. इसीप्रकार यह भी स्थान खाली नहीं रखती ऐसी सच्ची निर्लज्ज ५ स्वभाववाली राजा रामसिंह की समृद्धि [संपदा] है सो ६ धन से बुढ्ढे पुरुषों७को वेश्या के समान बुलाती है, यहां पर शंका होती है कि वेश्या तो धन लेकर अपनी वृत्ति चलाने को बुलाती है और यह उलटा धन देकर बुलाती है तौ वेश्यापन कहां रहा जिसका उत्तर यह है कि वेश्या धन लेकर अपनी वृत्ति चलाती है इसीसे उसको कोई निर्लज्ज नहीं कहते और यह उलटा धन देकर बुलाती है इसीसे ग्रन्थकर्ता ने निर्लज्ज यह विशेषण दिया है ॥ २२ ॥ ८ घर में लड़ाई मांड कर ९ कीर्ति और १० लक्ष्मी जबरदस्ती से बाद बढ़ाती है ११ परंतु फैल फैलकर इतनी हलकी होगई है कि सुनने में आती है परंतु दीखने में नहीं आती और दौड़ दौड़ कर श्वेत पड़गई है इसप्रकार दिगंत तक दौड़ीं

बुंदी छत्रपाल छितिपाल रामसिंह रोखैं ।
नामनिज कीरति त्रिलोकमैं तननकौं ॥
बलकरि राजनकौं छल [1]मृगराजनकौं ।
चराड दराड दुस्सह दुरद्ध गजननकौं ॥
[2]नोदन निसंकनकौं रंकन कौं [3]ओदन ।
प्रजाकौं परिपोख मन [4]तत्वकें [5]मननकौं ॥
तन [6]खुरलीकौं रन अहित अजेयन कौं ।
पन पुरुसारथकौं धन [7]धीधननकौं ॥ २४ ॥
साहनको साल [8]विद्या विटपिको [9]आलबाल ।
हिंदुनकीढाल काल [10]अहितं अनन्तपैं ॥
बीरताको [11]बारिधि गभीरताको घनघन ।
धीरताको धाम [12]मल्लिनाग नयमंतपैं ॥
[13]याजिको [14]बिदंकं बाजिकौसलको आडोअंक ।
औजिको निसंक [16]टंकं [17]दुरितके दंतपैं ॥
छबिको छपेसं [18]छत्रमहलके [19]छाजा सीस ।
राजैं रामराजा ज्यौं [20]बिडोजा [21]बैजेंयंतपैं ॥ २५ ॥

तौ भी किसीने आग्र . करके नहीं रक्खी अर्थात् इस समय में कीर्ति को रखनेवाला रामसिंह ही मिला ॥ २३ ॥ बुंदी के छत्र को पालन करनेवाला राजा रामसिंह तीनों लोक पर कीर्ति को छादेने में अपना नाम, बल से राजाओं को, छल से १ सिंहों को, नहीं सहनेवाला भयंकर दंड कुमार्ग जाने के वास्ते हाथियों को, निःशंक लोगों के लिये २ प्रेरणा, प्रजापालन के अर्थ ३ अन्न ४ तत्वमसि [ब्रह्मज्ञान] के ५ विचार के अर्थ मन ६ शस्त्रविद्या के लिये शरीर, नहीं जीतने में आवे ऐसे शत्रुओं के लिये युद्ध, पुरुषार्थ के लिये प्रतिज्ञा और बुद्धि ही है धन जिनके ऐसे ७ विद्वानों के अर्थ धन रखते हैं ॥२४॥ विद्या रूपी ८ वृक्ष का ९ थामला [वृक्ष की जड़ में जल ठहरने का स्थान] १० शत्रुओं का ११ समुद्र १२ नीति और सलाह में चाणक्य*, १३ यज्ञ का १४ पण्डित १५ युद्ध का १६ टांकी [पाषाणदारण] १७ पाप के दन्त तोड़ने को १८ चन्द्रमा, १९ बुन्दी के राजभवन में एक महल का नाम है २१ वैजयन्त नामक इन्द्रभवन में २० इन्द्र शोभायमान होवे जिसप्रकार ॥ २५ ॥

---

* चाणक्य का नाम मल्लिनाग भी है। "वात्स्यायने मल्लिनाग कौटिल्यश्चणकात्मज ॥" इति हेमचन्द्र ॥

अचल[1]उदैगिरिलौंतुंगि[2]तैंतखतसीसश्रीमैंपूरसूरनकोसंघ[3]कुं[4]सेसयभो॥
घूक अरिलोक थोक पैठे ओकें[5] ओक दुरि ।
कोक[6] कविलोकनको रोकसोक खयभो ॥
कीरति किरन लोकालोकें[7]सौं भिरनलागे ।
नास्तिक गिरनलागे दीपालोक[8] लयभो ॥
नलिनी[9] धराको धवं[10] राजैं रावराजा राम ।
भानु चहुवाननको भानुसो उदयभो ॥ २६ ॥
लच्छी[11]के उसीसा बंधकील जयकुञ्जरके ।
कञ्जकुश्च भृंगके पताकादण्ड रनके ॥
दान जलदानके मतंगज महितें[12] मत्त ।
बैरिनके प्रानके पृदाकुं[13] पश्च५ फनके ॥
नौकानिधि कूपं[14]के बिपत्ति महावारिधिके ।
पारिजात पल्लव प्रबुद्धकाविजैं[15]नके ॥
राम रनलाडाके अधीस गिरि[16]आडाके सु ।
हाडाकेरहे व्है हाथ छत्र छितिपनके ॥ २७ ॥

उदयगिरि केसमान१अचल और२ऊंचा है सिंहासंन जिनका, लक्ष्मी से पूर्ण शूरवीरोंका३समूह है ४कमल जहां पर शत्रुओं केसमूह रूपी घूघू [उलूक] अपनेअपने ५ घरों में छिपकर बैठगये हैं और कविलोग रूपी७ चकवों के शोक का नाश हुआ है जिसके, रोक (प्रकाश) से और कीर्ति रूपी किरणें ७ लोकालोक नामक पर्वत से [पुराणों के मत से लोकालोक उस पर्वत का नाम है जो संपूर्णपृथ्वी को घेरेहुआ है] भिड़नेलगे हैं, नास्तिक रूपी दीपक के प्रकाश का नाश होकर गिरनेलगे, पृथ्वी रूपी ९ कमलनी का १० पति चहुवाणों का सूर्य रावराजा रामसिंह सूर्य के समान उदय होकर शोभायमान है ॥ २५ ॥ रन के लाडा [दूलह) और १६ आडावळा नामक पर्वत के स्वामी हाडा कुल के क्षत्रिय रामसिंह के हाथ ११ लक्ष्मी के तकिये विजय रूपी हाथी के बांधने का खंभा स्त्रियों के कुच रूपी भ्रमरों के कमल, युद्ध की ध्वजा के दंड, दान रूपी जल [दान देते समय हाथ में जल लेकर संकल्प कियाजाता है उस जल रूपी मद जल के देनेवाले] को देनवाले १२ पूजित मस्तहाथी, शत्रुओं के प्राण लेनेवाले पांच फणों के १३ सर्प, विपत्ति रूपी समुद्र के पार लंघाने को निधि रूपी नाव के १४ बरदवान(मस्तूल)१५ पण्डित और कविलोकों के लिये कल्प वृक्ष के पत्ते और

सूरिजन[1] मूरति छंद[2] तर्कनकी जानैं जाहि ॥
सूरजन जानैं खुरली[3]मैं बहुतैं बढ्यो ।
कवि मनमानैं मीन सु ध्वनि[4] महोदधिको ।
सचिव बखानैं मरजीमैं मन्त्रहीचढ्यो ॥
सादीलोक[5] जानैं नल नकुल न ऐसे भये ।
जानैं रिपु दण्डही उपाय मतिमैं मढ्यो ॥
रानीजन जानैं रतिराज[6] राजराजराम ।
जोगसिद्धि ऐसी कलि कालमैं कहाँपढयो ॥ २८ ॥
धर्मकुल चिर[7]तैं अधर्मके उदधि बूड्यो ।
रामनृप राख्यो मोति संकट सहतसो ॥
भ्रमन भयंकरमैं भ्रमत निकास्यो दान ।
सूरपन काढ्यो तृनतन्तुन गहतसो ॥
अध्ययन भक्ति त्यौं दया तपअचेत ऐंचे ।
तत्वबोध ऐंच्यो हेरि कीकस[8] रहतसो ॥
स्वाससेस काढे श्राद्ध[9] अध्वर सउच सत्य ।
वैश्वदेव काढ्यो कुंबभा[10]रत बहतसो ॥ २९ ॥
संगरके साज सब सज्जित सतत[11] होत ।
दिन दिन दुनौंदान कीरतिके कामतैं ॥

राजाओं के छत्र होरहे हैं ॥ २७ ॥
१ पंडित लोग २ मीमांसादि छः शास्त्र (पूर्वमीमांसा १ उत्तर मीमांसा २ सांख्य ३ योग ४ न्याय ५ वैशेषिक ६) ३ शस्त्रविद्या में ४ श्रेष्ठध्वनि रूपी समुद्र का मच्छ ५ घोड़ों पर चढ़नेवाले ६ कामदेव ॥ २८ ॥ राजा रामसिंह ने धर्म के कुल को ७बहुत समय से अधर्म के समुद्र में डूबे मृत्यु का दुःख पाते हुए को रक्खा, भयंकर भँवरों (पानी के चक्करों) में भमते हुए दान को, तिनकों के तंतुओं को पकड़ते हुए शूरापन को निकाला, पढ़ना भक्ति और दया इन अचेत हुओं को खींचा, ज्ञान की केवल ८ हाड्डियां मात्र रह गई थीं जिस को खींचा, श्राद्ध९ यज्ञ और शौच के कुछ ही स्वास बाकी थे उस समय में निकासे और वैश्वदेव (होम बलिदान अतिथिभोजनादि गृहस्थी के नित्यकर्म) १०कूकता हुआ बहाजाता था जिसको निकाला ॥ २९ ॥ निरन्तर

सीसधरि सासन सरस्वती सभामैं रहै ।
नाम धाम छोरैं अरि जाकेनैंक नामतैं ॥
ईरखा असूया दंभ मूढता मलिनकर्म ।
बिप्रलाप[1] व्यसन[2] पलानैं[3] धामधामतैं ॥
बिरच्यो बसिष्ठनैं भलैंही चहुवानभूप ।
राजमान[4] जाको कुल राजराजरामतैं ॥ ३० ॥
खेतमैं[5] कहौंतो उपमान बनैं अर्ज्जुनको ।
हेतमैं[6] कहौंतो हिय हरैं हितूजनके ॥
ओजमैं[7] कहौंतो आठौं[8]जामही उदितरहैं ।
फौजमैं कहौंतो भट अंतक अरनके ॥
बुधनकों[9] दाबैं कोटि[10] बानीमैं कहौंतो साव-
धानीमैं कहौंतो न्याय पूगत पैरनके[11] ॥
घरमैं कहौंतो अलकाकी[12] आँखि राजाराम ।
करमैं कहौंतो तुल्य कर न करनके ॥ ३१ ॥
स्वाहासह हाजरि हिरण्यरेतौ[13] होमनमैं ।
सत्र[14] पसुसूना[15] ह्यौं पलादपुरी[16] तांवती[17] ॥
बातको[18] त्यौं बिभव बन्यो ब्यजनं[19] जंत्रनमैं ।
ईसथिति[20] ओपैं आडअद्रि[21] अपनावती ॥
बरुन बिभूति नाना निकट निपाननमैं[22] ।

१ विरोधोक्ति(छल के वचन) २ मनुस्मृति में कहे हुए मृगया आदि दश व्य सन काम से और पिशुनता आदि आठ व्यसन क्रोध से उपजे हुए अठारह व्यसन घर घर से३ भागे ४ शोभायमान ॥ ३० ॥
५रणखेत में६स्नेह७प्रताप८यमराज९पंडितों को१०शास्त्र परीक्षा में ११शत्रुओं को भी न्याय मिलता है१२कुबेर की पुरी ॥ ३१ ॥ होम के स्थानों में स्वाहा सहित१३अग्नि है वही अग्निकोण के पतिका पुर है, १४ यज्ञ में १५ पशुहिं- सा होती है वही नैर्ऋत्य दिशा के पति १६ राक्षसों की पुरी को १७ धारण करती है, १८ वायुदिशा के पति पवन का वैभव १९ पंखों में बन रहा है वही वायव्यकोण का पुर है, २१ आड़ावळा नामक पर्वत ही ईशान कोण के पति २० शिव का स्थान है नाना प्रकार के २२ जलाशयों में जल भरा है वह

संजमनी[१] सुनय[२] अदालति[३] सुहावती ॥
बसे आनि बुंदीमें दिगीसनके आठौं ८ दुर्ग ।
अलकाबजारमैं[६] किलेमैं अमरावती ॥ ३२ ॥
सत्यबलसासन सुलेखसाली[८] उग्रधन्वा[९] ।
त्यौं पर[११] धनंजय[११] बिरोचैन[१२] अपारहै ॥
[१३]जैम समबर्ती[१४] धर्मराज प्रिय पुण्यजन[१५] ।
सुप्रचेता[१६] मेघनाद[१७] पानिप अगारहै ॥
बुंदीपति बिदित महाबल जगतप्रान[१८] ।
श्रीदै[१९] राजराज[२०] ईसै[२१] संकर उदारहै ॥
आठौंही दिसाके पुर बुंदीमैं बखानैं त्यौंही ।
आठौं लोकपालनको राम अवतारहै ॥ ३३ ॥
एकबेर समुझि बिचारैं तत्व आगमके[२२] ।
एक१बेर चित्रपुंखैं[२३] चिल्लैपैं चढावैंजो ॥

पश्चिम दिशा के पति वरुण का स्थान है, ३न्यायालयों में श्रेष्ठ २न्याय होते हैं सो ह। दक्षिण दिशा के पति यमराज की १ संयमनी नामक पुरी है, बाजार है व-हीं उत्तर दिशाके पति कुबेर की ६अलका नाम पुरी है और किला में पूर्वदिशा के पति इंद्र की ७ अमरावती नामक पुरी है, इस प्रकार बुन्दी में आठों ही ४दिशापतियों के ५ पुर आकर बसे हैं. यहां पर ग्रंथकर्ता ने दिशाओं को दि-खाने में कोई क्रम नहीं रक्खा सो कर्ता की इच्छा पर निर्भर है ॥ ३२ ॥ स-त्य और बल के साथ हुक्म चलाने में व ८श्रेष्ठ लेखों (लिखावटों) में कुशल होने में ९ इन्द्र का अंश है, क्योंकि इंद्र बलि दैत्यराज के साथ सत्य हुक्म चलाने वाला और लेखशाली (देवताओं में कुशल) है, इसी प्रकार १० शत्रुओं का २१ धन जीतने में अपार १२ अग्नि का अंश है क्योंकि अग्नि का नाम ही धनंजय है, इन्द्रियों के १३ जीतने और सब को समान देखने में १४ यमराज का १५ पुण्यजनों (धर्मात्माओं) का प्यारा होने में नैर्ऋत्य दिशा के पति पु-ण्यजन (राक्षस) का १६ विशद चेतवाला होने से १७ मेघ के समान गर्जना करनेवाला पराक्रम का घर प्रचेता (वरुण) का बुन्दीपति महाबलवान् होने और संसार का १८ प्राणरूप होने में जगत्प्राण (पवन) का १९ लक्ष्मी देने में २० कुबेर का उदार और स्वामीपन में २१ महादेव का, जैसे आठों दिशाओं के पुर बुंदी में कहे तैसे ही रावराजा रामसिंह आठों लोकपालों का अवतार है ॥ ३३ ॥ २२शास्त्र के तत्व को २३बाण एक बेर ही प्रत्यंचा पर चढाने से शत्रु वशमें हो

एक१ बेर रंक असरनकों सरनराखैं ।
एक१बेर बोलैं अरु तर्कउपजावैंजो ॥
एक१बेर कवि बुध बीरन बढावैं मान ।
अरि[2]अवनीकौं एक१बेर अपनावैंजो ॥
रामरावराजाकी अपूरब बडाई यहै ।
एक१बेर दैकैं[3] फेर हाथ न उठावैंजो ॥ ३४ ॥
ऐसी भूँति हूमैं ए अदेय नृपरामकैं ।
प्रजाकौं पीर आदर अवद्य[6] अभिमानकौं ॥
[7]अघनकौं आश्रय नकार कविलोकनकौं ।
थैलीकौं थिरत्व सभा आवन अजानकौं ॥
बिद्याकौं बिरह मिंत देसबास कीरतिकौं ।
आयु आततताइनकौं[9] देर घमंसानकौं[10] ॥
क्रोधकौं कृपा त्यौं तत्वबोधकौं[11] सिथिलभाव ।
परनकौं पीठि दीठि परबनितानकौं ॥ ३५ ॥
लैकैं बिसराम द्विजराज[12] के[13] अघायजात ।
दोरिदोरि टौरैं सीतछाया श्रमदाहके ॥

जाते हैं१पंडितों का २ शत्रुओं की भूमि को ३ एक बेर दिये पीछे फिर हाथ नहीं उठाते अर्थात् एक समय में ही इतना देदेते हैं कि फिर देने का काम ही नहीं रहता अथवा एक बेर देकर कुसूर होने पर भी पीछा लेने को हाथ नहीं उठाते यह राजा रामसिंह कीअपूर्व बड़ाइ है॥३४॥ऐसी४संपदा होने पर भी प्रजा को पीड़ा ६अधर्मों(पापियों) को आदर, अभिमान पाप अथवा ७ व्यसन वा अपराधियों को आश्रय, कवियों को नकार (नहीं यह कहना) रुपयों की थैली को थिरता सभा में मूर्खों का आना, विद्या को ८थोड़ा सा भी वियोग, कीर्ति को अपने देश में वास अर्थात् कीर्ति सदैव विदेशों में ही रहती है९आततायी (अग्निलगानेवाला, विषदेनेवाला ,हाथमें शस्त्र लेकर मारने को आनेवाला, धन हरण करनेवाला, भूमि हरनेवाला, स्त्री हरनेवाला) को आयु१०युद्ध को देरी क्रोध को कृपा११ ज्ञान को शिथिलता, शत्रुओं को पीठ और पर स्त्री को दृष्टि इतनी बातें राजारामसिंह के५ अदेय (नहीं देने योग्य)हैं अर्थात् नहीं देते हैं॥ ३५ ॥ १२ ब्राह्मण और आंबे के पक्ष में पक्षी १३कितने ही

सेवैं कोटरीन[1] घनैं अध्वग[2] अधीन हैय[3] ।
पीन होयबेकौं रहि लेत फललाहके ॥
केते पंच्छ[4] चाहके उछाहके उम्हाहे रहैं ।
मंजु मधुभोजी[5] करैं मधु अवगाहके ॥
वाहके[6] मैं वचन सिराहके कहाँलौं कहौं ।
राहके[8] रसाल कोस[7] रामनरनाहके ॥ ३६ ॥
अलिकपैं[9] कलम चलैबो चतुरानन[10]को ।
पैत्थ[11]पनलैबो इभदंतें[12] कढिबैबोसो ॥
रामरघुराजकैसो अंगीकृत[13] कैबो बलि ।
वज्रको बनैबो पार प्रकृति[15]के जैबोसो ॥
भ्रूं[16]को खमखैबो बोरदैबो नीली रंगको ।
हली[17]को हल पाय हस्तिनापुरको नैबोसो ॥
मंत्र[18]को सुनैबो तत्वबोधकैसो पैबो व्हैबो ।
हाडाको हुकम लेख हीरापैं[19] लिखैबोसो ॥ ३७ ॥

षट्पदी ॥

मनु[20]आगम अनुसार चलत व्यवहार सकल जँहँ ॥
वसुधाके कविविबुध[21] आनि आलंब[22] लहत तँहँ ॥

१रहने के घर पक्षे वृक्ष के भीतर पक्षियों के रहने के कोटर(कोचरे)२मार्ग चलनेवाले ३मार्ग चलनेको छोडकर४पक्ष और पंख५मधुर रस में पक्षे वसन्त ऋतु के, आनन्द में गोते लगाना(थाहलेना)६प्रशंसा के७राजा रामसिंह के भंडार८मार्ग ऊपर के आम्रवृक्ष के समान है॥३६॥९ललाट पर१०ब्रह्मा का लेख एकवार हो जाना है वह फिर मिटता नहीं११ऐसे ही अर्जुन की प्रतिज्ञा१२हस्ती के दंतों का बाहिर निकलआना१३रामचन्द्र का अंगीकार करना१४पुनि वज्र का बनना१५मोक्ष होजाना१६भोंह का टेढाहोना१७बलदेव के हल से कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर का नमजाना(महाभारत में यह कथा है कि कृष्ण के पौत्र को कैद करदेने के अपराध पर बलदेव ने कौरवों पर क्रोध करके दिल्ली को अपने हल से खींचकर यमुना नदी में बहादेना चाहा था जब से दिल्ली टेढी हो गई है)१८मन्त्रविशेष१९हाडाकुल के चोहाण क्षत्रिय रामसिंह का हुक्म हीरे के ऊपर लेखखोद देनेके समान अमिट है, जैसे कि उपरोक्त सब पदार्थ अमिट हैं॥३७॥२० मनुस्मृति के२१ पंडित २२ आश्रय

सुधर्मा[1]हिँ करि सुगम बनत परिखद[2] प्रासादन ।
बाद[3]जल्प गति बिबिध ऊँह[4] बिथुरत आल्हादन ॥
खुरली[5] बिनोद सक्कल अखिल धनुरबेद सब मर्मधर ।
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत पुरबुंदिय निजधर्मपर ॥ ३८ ॥
सप्त[6]ईति करि रहित राज्य जाके अमोघसुख ।
सुरभि[7] दुग्ध बहु स्रवत फूलि तरु फलत समय रुख ॥
रोगहिँ जानत नाँहिँ प्रजा जनपद आनंदित ॥
निस्व[9] आढ्य[10] समन्याय बत्त प्रसरत जगबंदित ॥
बिनुधर्म[11] नीति केवल न बिधि बिभव सकल उद्योत बर ।
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत पुरबुंदिय इकछत्रधर ॥ ३९ ॥
सिच्छा[12]दिक खट६अंग सहित श्रुति[13] च्यारि४ श्रवनकरि ।
धृति[14]१८मित पुराय पुरान समुझि एकाग्रचित्त धरि ॥
मीमांसा स्मृति तर्कएसु विद्या संकरि[15]१४ मित ।
दंडनीति[16] हय[17] सस्त्र[18] तंत्र[19] पढिहुव प्रयासजित[20] ॥
गीतादि कला चउसट्टि६४ गहि काव्य छंद भाखा बादकर ॥
नृपरामसिंह इहिँबिधि तपत बुंदियपुर इकछत्रधर ॥ ४० ॥
कपिल[21] सेस[22] कनभच्छ[23] तंत्र[24] सुनि तर्कबितर्कन ।

१देवसभा को २ महलों में सभा बनती है ३ वितंडा वाद को छो- र स्पष्ट बोलने में आनंद के साथ ४ तर्कना फैलती है ५ शस्त्र विद्या की क्री ॥३८॥ ६ "अतिवृष्टिरनावृष्टि शलभा मूषकाः शुकाः । स्वचक्रं परचक्रं च ता ईतयः स्मृताः॥" इन सात ईतियों करके जिनका राज्य रहित है ७गौवों श में ९ धनहीनका और१०धनवान् का न्याय बराबर होता है, अथवा य में ये दोनों बराबर समझे जाते हैं ११धर्मके साथ नीति को बरतते हैं वि धर्म केवल नीति का बरताव नहीं करते ॥३९॥१२शिक्षा को आदि लेकर छ वेदांग१३चारोंवेद१४अठारहों पुराण१५चौदह विद्या१६अर्थविद्या व नीतिशा १७हयविद्या(शालिहोत्र)१८शस्त्रविद्या (धनुर्वेद]१९तंत्र शास्त्र२०परिश्रम को तनेवाला [अनालसी] ॥ ४० ॥२१कपिल का सांख्य शास्त्र२२शेष का मीमां व छंद शास्त्र२३कणादका वैशेषिक शास्त्र२४ये शास्त्र तर्कवितर्कों के साथ सुने

करामलक सब किन मंन्नि बेदांत श्रेयमन ॥
भारतादि इतिहास सकल सुनि बहुविचार जुत ।
गीता श्रीभागवत नित्य श्रद्धेय जपत नुत ॥
श्रीरंगनाथ सेवक परम अष्टि१६अंग अर्चन सुघर ॥
नृपरामसिंह इहिं बिधि तपत बुंदियपुर इकछत्रधर ॥ ४१ ॥
पञ्चरात्रमुख तंत्र समुझि धृति१८ उपपुरान सुनि ।
आयुर्ब्बेद रु सिल्प पुराय रामायनादि पुनि ॥
मल्लिनाग कृत मदनतन्त्र गजतन्त्र मर्मगहि ।
सामुद्रिक सकुनादि उचित आगम अनेकलहि ॥
नररत्न परख कोबिद निपट काल देस समुचित करत ।
नृप अस्थिपाल कुल पाल इम रामसिंह छत्रहिंधरत ॥४२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायरो प्रथम१राशौ राजधानीराजगुणवर्णनं नाम षष्ठो६ मयूखः ॥ ६ ॥

दोहा

बुंदीपुर इहिंविधि विदित राज्यकरत नृपराम ॥
कांमबिटप बुंध विप्रकुल कविकुल पूरन काम ॥ १ ॥
वलाविंध्यपति रामरवि विलसत विभव वहार ॥
अंजमित्र लासक अहित घूक दुरावन हार ॥ २ ॥
सुभग चित्रसाला सदन इक दिवस अवनीस ॥
राजत रचि परिखेद रुचिर सुरुचि छत्र धरिसीस ॥ ३ ॥

---

१ हस्तामलक (हाथ के आवळा के समान) २ जिनमें वेदांत को मन में श्रेष्ठमानकर ३ श्रद्धा पूर्वक ४ स्तुतियोग्य ५ षोडशोपचार पूजा करने में चतुर ॥ ४१ ॥ ६ पंचरात्र आदि भक्ति शास्त्र को समझकर ७ शास्त्र ८ पण्डित ९ राजा आस्थिपाल के कुल का पालन करनेवाला ॥ ४२ ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में राजधानी और राजा के गुण वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ ॥

१० कल्पवृक्ष ११ पंडित १२ विन्ध्याचल रूपी आडावळा पर्वत के पति १३ कमल रूपी मित्रों को प्रफुल्लित करनेवाले १४ घूघू रूपी शत्रुओं को १५ सभा १६ श्रेष्ठकांतिवाला

कवि बुध भट हाजरि सकल, विथुरत बचन बिनोद ॥
उडुमण्डल[1] बिच इंदु[2] जिम, संभर[3] लसत समोद ॥ ४ ॥
तँहँ द्विज आसानन्द प्रति, अक्खिय नृप सँस्मेर[4] ॥
श्रीभारत आवृत्ति वॅलि, वरनहु चोथी[5]वेर ॥ ५ ॥

पज्झटिका ॥

सुनि नृप नियोग[6] हरखिय प्रबुद्ध[7], प्रारंभ रचिय लखि समय सुद्ध ॥
तँहँ नीलकंठ टीकानुसार, द्विज करनलग्यो भारत उचार ॥ ६ ॥
तँहँ प्रथम पौर्ष्य आख्यान आय, उत्तंक चरित तिहिँ मध्य पाय ॥
नृप अवट[10] खनन सुनतहि सचेत, कवि पंति लखी स्मित[11] हित समेत ७
किय हुकम मधुर चहि इष्ट काज, ममहार्द सुनहु सब सुकविराज ॥
चण्डा[12]सि वंस वर्णन सुसंध[13], है त्रिदस[14]गिरा गुंफित प्रबंध[15] ॥ ८ ॥
अवटादि चरित यह तिनहु माँहि, संस्कृत दुरूह[16] सब सुगमनाँहि ॥
अब होनलगे नर बुद्धिमन्द, समुझै न अमरबानी[17] अनन्द ॥ ९ ॥
है जो नरभाखा ग्रथित ग्रंथ, पहुंचें तो सब लहि सुगमपंथ ।
श्रुति[18] करि पवित्र कवि सुनि निदेस[19], करजोरि लगे अक्खन[20] असेस १०
कवि पंडित जे दुल्लभ सुगाथ[21], ते सबहि लेत तव अन्न नाथ ।
अब एक देन आयस बिलंब, जिहिँ है सुरचैं कुलगुन कदंब[22] ॥११॥
सुनि कहिय भूप सब गुन समर्थ, रसबीरमूर्त्ति उद्दंड अर्थ ।
रविमल्ल[23] सुकवि छंदगिरानिधान, ए करहु उक्त[24] आयस प्रमान ।१२।

---

१ तारामण्डल २ चन्द्रमा ३ चहुवान (सांभर नगर में राज्य करने के कारण चहुवाणों को " संभर, संभरो, संभरीक और संभरवार " कहते हैं ४ मन्दहास पूर्वक ५ चौथी ६ आज्ञा ७ पंडित ८ महाभारत के आदिपर्व में एक कथा है ९ गौतम ऋषि के शिष्य उत्तंक की कथा भी उसी पौष्य के आख्यान में है १० राजा रामसिंह ने उस उत्तंक के खड्डा खोदने की कथा सुनते ही ११ हसते हुए १२ चौहाण (चहुवाणों का मूलपुरुष) का १३ अच्छी प्रतिज्ञा के साथ अथवा संधान कियाहुआ १४ देववाणी (संस्कृत) में गुथाहुआ १५ ग्रंथ में १६ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १७ संस्कृत भाषा १८ कानों को १९ आज्ञा २० कहने २१ अच्छी कविता करनेवाले २२ समूह २३ सूर्यमल्ल २४ कही

इम होत बन्यों कछुदिन बिलास, तिथि तीज३ लहीसित राधमास ।
जगि ब्राह्मयमुहूरत नृप सुभाय, किय मंगल दरसन इष्टछाय ॥१३॥
विप्रनदै ओदन भूमि भर्म, करि मंजनादि सब नित्यकर्म ।
किय रंगनाथ मंदिर प्रवेस, द्विजरामजन्म उच्छव विसेस ॥१४॥
मंदिर वह हाटक रजतजात, मनिजटित लसत जनु रविप्रभात ।
जँहँ रत्नपीठ थित रंगराज, समयोचित सज्जित सकलसाज ॥१५॥
मंदिर मुख आयत अजिर एक, बिच सलिलजंत्र छुट्टत अनेक ।
कुंकुम गुलाबजल लिप्त धाम, जँहँ माघसीत नहीं राधघाम ॥१६॥
कवि बुध छबि उत्तर ओर पात, भटपंति दिसा दक्खिन सुहात ।
हरि सम्मुख पूर्बदिस गानकार, पातुरिगन तांडव पटु प्रकार ॥१७॥
होवत मधु मद्दल मुरंज नाद, मंजीर ताल बर बीनबाद ।
स्वर उठत सुद्ध बिकृतन अलाप, चउ४ताल जाति श्रुति सहित जाप १८
सुख सीत मंद जँहँ गंधबाह, अवतार परसुधर तिथि उछाह
नृपकरिय जाय दरसन बिनीत, पूजनकिय सोलह १६ अंगप्रीत ।१९।
सविधान रचिय हरिबपु सिंगार मल्ली सरोज सुम तुलसिहार ।
कर्पूर दीप आरति उतारि, दिस सबन संखसीकर बयारि ॥२०॥
पुनिकरि प्रनाम नमि अष्ट८ अंग निजनिलय आय सहसभ्य संग ।
तँहँ रचिबिनोद परिखद बिधान बैठो सिंहासन चाहुवान ॥२१॥

हुई आज्ञा को १ वैशाख सुदी तीज २ चार घड़ी रात बाकी रहते ३ अन्न ४ स्वर्ण ५ परशुराम का ६ सोना चांदी से रचाहुआ ७ रत्नो से जड़ेहुए सिंहासन पर ८ बुन्दीवालों के इष्टदेव रङ्गनाथ नामक विष्णु की मूर्ति ९ आगे १० चौड़ा ११ चौक १२ फुहारे १३ जहां पर माघ महीना की सी ठंढ़ है १४ वैशाख मास की सी गरमी नहीं १५ उमरावों की पंक्ति १६ नाचने की रीति में चतुर १७मधुर ध्वनिवाला मृदंग के सदृश वाद्यविशेष १८ मृदंग (वाद्यविशेष) १९ताल मंजीरे (वाद्यविशेष) २०वाद्य २१शुद्ध और विकृत भेद से दो प्रकार के स्वर*होते हैं २२ पवन २३ मोगरा २४ कमल २५ जलकण (आरती होती है तब शंख में लेकर जल छींटते हैं) २६ प्रणाम के [उर शिर दृष्टि मन बचन पग हाथ घुटने] ये आठ अंग हैं २७अपने महल में २८ सभासदों के साथ

* "तत शुद्धा स्वरा सम विकृता द्वादशाप्यमी ॥" इति संगीतदर्पणे ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथमराशौ वंशप्रबन्धप्रारम्भविचारो नाम सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥

दोहा

निज निकाय[1] परिखद रचिय, राज मुकुटमनि राम[2]॥
कवि पंडित सुभटन सहित, बनत बिनोद ललाम ॥ १ ॥

मुक्तादाम

रचीसुखधाम सभा नृपराम, लसैं भट पंकति दक्खिन बाम॥
रंजैं[3] कवि पंडित सम्मुख सर्व, तजैं गुरु[4] काव्य[5] जिन्हैं लखि गर्व ।२।
लसैं हरिआसन[6] उप्पर भूप, ढुरैं ब्यजनावलि[7] सीत स्वरूप।
ढुरैं सिर चौंर दुग्घा[8] अवदात[9], मनों सिवसेखर[10] गंग प्रपात[11] ॥ ३ ॥
छुटैं जलजन्त्र[12] गुलाबज नीर, मिले बहु बर्ग[13] कपूर पटीर[14]॥
मनों दुख आतपको[15] लहि सीत, बस्यो इहिँ आलय[16] होय अभीत।४।
महीपति जानि प्रबुद्ध[17] प्रबीन, तहाँ रविमल्लहिँ[18] आयस[19] दीन ॥
रचो नृगिराकरि[20] बंसप्रबन्ध[21], धरो सबही मत मध्य सुसंध[22] ॥ ५ ॥
महादिन आज ससीजुत[23] मंजु[24] रु[25], रोहिनि[26] तैतिल[27] ओ अतिगंजु[28] ॥
करो अबही तसमात[29] बिचार, बनैं जिम ग्रन्थ अबिघ्न प्रकार॥६॥
सुन्यौं कवि यौं असुनाथ[30] निदेस, कह्यो करजोरि तथाऽस्तु[31] नरेस॥
तहाँ बहुद्रव्य मँगाय महीस, सकंकन[32] कुंडलकी[33] बख्सीस ॥७॥
दयो फल पूर्ण अमत्र[34] बहोरि, कहे मृदुबैन कृपादृग जोरि ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में वंशभास्कर ग्रंथ के प्रारंभ के विचार का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥

१ अपने महल में २ बूंदी का राजा रामसिंह ३ शोभायमान ४ बृहस्पति [सुरगुरु] ५ शुक्राचार्य ६ सिंहासन ७ पंखों की पंक्तिदोनों तर्फ ८ श्वेत १० शीसपर ११ पड़ना १२ फुहारे

१३ विलेपन अथवा प्रकार १४ चंदन १५ ताप १६ घर में १७ पंडित [ऊहापोहकुशल] १८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल को १९ आज्ञा २० प्राकृतादि देशभाषा २१ वंशवर्णन का ग्रंथ २२ श्रेष्ठ प्रतिज्ञा के साथ २३ चन्द्रवार के सहित २४ मनोहर २५ अरु २६ रोहिणी नक्षत्र २७ तैतिल करण २८ अतिगंज नाम योग २९ इस कारण से ३० प्राणनाथ ३१ हे राजा ऐसा ही हो ३२ कड़ों के सहित ३३ कानों में पहरने के मोती ३४ पात्र

लये कवि अर्पित[1] सीसचढाय, दयो सुभआसिख त्यौं बिरुदाय[2] ।८।
तुही नृप काव्यनको रिझवार, तुही समुझैं श्रम बुद्धिबिचार ॥
तुही सब भूपनको सिरमोर, तुही कृतकृत्य नँ[3] तोसम और ॥ ९॥
तुही कुल पंकजको नृप भानु, तुही कविपावकको पवमानु[4] ॥
तुही अघ[5] अंण्डजके सिर बाज, तुही अरिदंतिनकौं मृगराज[6]॥१०॥
तुही मन रावनसो मजबूत, तुही रन राघव ज्यौं रजपूत ।
तुही काँलि[7]भूपनकौं सिखदैन, तुही लरि साहनसौं भुवलैन ॥११॥
तुही श्रुति[8]मारगको रखवार, तुही नृप धर्म भयो अवतार ॥
तुही नमनीय[9] करैं निजबंस, तुही छलकाँनन[10] आनलअंस[11] ॥ १२ ॥
तुही रमनी[12] छितिको रसलेतु, तुही रतिकीरतिको झषकेतु[13] ॥
तुही दुखपब्बय पच्छ[14]छति सक्र, तुही इक सत्यब्रती[15] भुव[16]चक्र ॥१३॥
तुही बुध[17] बारिद उत्तरबात, तुही नृप चोरनको परभात ॥
तुही परतत्व बिबेचन दच्छ[18], तुही रससिंधु[19] निमज्जन[20] मच्छ ॥ १४ ॥

दोहा॥

बिरुदावलि इम अक्खि कवि, दै आसिख मुदपाय ॥
ग्रन्थरचन निजगेहकौं, आयो नृपहिं रिझाय ॥ १५ ॥
करिमज्जन[21] धरि इष्टमन, दै श्रद्धाजुत दान ॥
द्विज भोजन बहु दच्छिना, दिय पुनि बिहित[22] बिधान ॥ १६ ॥
अनल वंस आरंभ के, आदि सकल अब इष्ट ।
बंदौं कवि रविमल्ल बलि[23], टारहु अखिल[24] अरिष्ट[25] ॥ १७ ॥

---

१ अर्पण किये हुए २ उत्साहवर्धिनी स्तुति करके ३ नहीं ४ पवन ५ पाप रूपी पक्षियों के ६ सिंह ७कालि युग के ८ वेद ९ नमस्कार करने के योग्य १०छल रूपी वन के ऊपर ११अग्नि का अंश, पक्षे हे अग्निवंशी १२ भूमि रूपी स्त्री का १३कीर्ति रूपी रति का कामदेव १४ पर्व रूपी पर्वतों के पक्ष मूल के अर्ध इंद्र १५ सत्यव्रत का धारण करनेवाला १६भूमंडलमें १७पंडित रूपी मेघ का बढ़ानेवाला १८चतुर १९ शृंगारादि नव रसों के समुद्रका २० थाह लेनेवाला २१ स्नान २२ उचित २३ पुनि २४ संपूर्ण २५ विघ्न

बंदौं गनपति इभवदनं[1], दयानिधान दुरूह[2] ॥
दलहु दंतकरि दासके, पाप कुमति प्रत्यूह[3] ॥ १८ ॥
कुंद[4] बिसद रुचि[5] कच्छपी[6], बाँदन[7] तत्व प्रबीन ॥
थप्पहु बानी[8] भक्तिथिर, अप्पहु युक्ति नवीन ॥ १९ ॥

मनोहरम् ॥

हरि[9] हर[10] इंदिरा[11] उमाके[12] अंघ्रि[13] सीसआनौं ।
ठानौं नंति[14] तपनसहस्रकरावलिकौं[15] ॥
धर्मको घरानौं सब पूजिपहिचानों नृप ।
राम जो खजानों पाय थानोंदै न कलिकों[16] ॥
कपिल कनादको बिसेसतासों बानों बंदि ।
मानों मुनि पाणिनि सरोज[17] सब्दआलिकों ॥
जैमिनिकों जानों त्यों गंदानों[18] मुनिगोतमकों ।
व्यासकों बखानों मैं प्रमानों पतंजलिकों ॥ २० ॥

दोहा

कमलचरन इत्यादिकन, नतिपूरब[19] उर आनि ॥
कृपाबिघन गन कंदनकों[20], मंगि भक्ति प्रियमानि ॥ २१ ॥
हरि हेरंब[21] रमा[22] गिरा[23], गुरुन पूजि हितसंग
बिरचन बंस प्रबंधकौं[24] अबकवि धरिय उमंग ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ वंश प्रबन्धप्रारम्भनियोगपूर्वकपुनर्मङ्गलशंसनमष्टमो ८ मयूखः । ८ ।

---

१ हाथी के मुखवाला २कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा३विघ्न४मोगरा के पुष्प समान श्वेत कान्तिवाला५कांतिवाली६ वीणा का नाम है ७ बजाने के तत्व में ८हे सरस्वती ९ विष्णु १० शिव ११ लक्ष्मी १२ पार्वती१३ चरण १४ नम्रता१५ हजारहाथों की पंक्तिवाले सूर्य को१६ हे रावराजा रामसिंह जो पुरुष खजाना अर्थात् संपत्ति को पाकर कलियुग को स्थान नहीं देते हैं ऐसे सब धर्मके घरानों को मैं पूज्य पहिचानता हूं१७शब्द रूपी कमल का भ्रमर१८कहाँ१९नम्रता पूर्वक २०नाशकरने को२१ गणेश २२ लक्ष्मी २३ सरस्वती २४ वंशवर्णन का ग्रन्थ.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में वंशवर्णन का प्रारंभ रूपी कार्य पूर्वक फिर मंगलाचरण करने का आठवां मयूख समाप्त हुआ

अथ ग्रंथप्रारम्भकाले गतकल्पकाललग्नग्रहादिनिश्चयनम् ।

दोहा

दस१० गुरुअक्खर उच्चरन, काल प्रानअभिधानं[१] ।
खट६ प्राननको इक१पल, घटी१ सट्ठि६०पलमान ॥ १ ॥
घटी सट्ठिको इक१दिन, रजनीजुत यह सब्द ॥
तीस३०दिननको मास इक१; एं[२] बारह१२ इक१अब्दं[३] ॥ २ ॥
मेस१रासि[४] मुख परासि रवि, आनि छुवैं पुनि जोहि ॥
सौरबरसं[५]१ सो नरनको, देबनको दिन१सोहि ॥ ३ ॥
देवनको यह दिवस१हू, निसा१सहित पहिचानि ।
दिवस तत्थ उत्तरअयन, रजनी दक्खिन जानि ॥ ४ ॥
राति सु दिन दिन राति ए, दैत्यनकैं बिपरीत ।
चांद्रमास अब भाखियत, लखि सिद्धांतं[६] बिनीत ॥ ५ ॥
अँमिकातिथिके[७] अंतमैं, इक्कत रवि ससि आय ॥
आवैंपुनि तत्थहि उभय२, चांद्रमास१ सु कहाय ॥ ६ ॥
पितरनदिन१ यह रात्रिजुत, असितपक्ख[८] दिन१तत्थ ।
बिसदपक्खं[९] जानहु निसा१, सावनमिति अब अत्थ ॥ ७ ॥

अबग्रंथके प्रारंभसमयमें बीतेहुए कल्प,समय,लग्न,ग्रह आदिका निश्चयकरनाहै

दश गुरु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगे उसका १ नाम प्राण (एक श्वास) है, इन छः प्राणों का एक पल होता है, साठ पलों की एक घड़ी होती है ॥ १ ॥ साठ घड़ियों का एक दिन रात होता है, ऐसे तीस दिनों का एक महीना और बारह २ महीनों का एक ३ वर्ष ॥ २ ॥ मेष राशि के ४ आदि को स्पर्श करके फिर सूर्य पीछा उसी स्थान पर आजावे उस को मनुष्यों का ५ सौर वर्ष कहते हैं और वही देवताओं का एक दिन है ॥ ३ ॥ यह देवताओं का दिन भी रात्रि सहित जानो । जहां पर उत्तरायण तो दिन और दक्षिणायन रात्रि है ॥ ४ ॥ जो देवताओं का दिन है वह तो दैत्यों की रात्रि और देवताओं की रात्रि है वह दैत्यों का दिन है । इन को विपरीत जानलेना चाहिये ॥ अब इसके आगे ६ सिद्धांत की रीति से चान्द्र मास कहते हैं ॥ ५ ॥ ७ अमावास्या के अन्त में सूर्य चद्रमा एक राशि पर आकर फिर उसी स्थान पर पीछे दोनों आजावे उसको चांद्र मास कहते हैं ॥ ६ ॥ यह पित्रीश्वरों का एक दिनरात है । जिस में ८ कृष्ण पक्ष तो दिन और ९ शुक्ल

ग्रहं उदयद्वय२ अंतर सु, सावनदिन१ पहिचानि ।
सोहि कुदिन अरु भभूमनं,काल सुभदिवस जानि ॥ ८ ॥
ख ख ख नेत्र गुन बेद४३२०००ए, च्यारिगुनैं कृतंमाँहिं ।
त्रेतामैं त्रि३गुनैं बरस, दु२गुनैं द्वापर आँहिं ॥ ९ ॥
कलियुगके ए ४३२०००इक१गुनैं,जानहु बरस सुजान ।
एक१ महाजुगके चरन, च्यारि कहे इहिं मान ॥ १० ॥
निज रवि१२ लवं संध्या बरस, आदि चरनके उक्तं ।
तिते अंतसंध्यांसके, जे सब इनबिच जुक्तं ॥ ११ ॥
च्यारि४ चरनके सब बरस, जुरैं महाजुग१ जानि ।
ख ख नभ नभ रद बेद ४३२००००ए, वाके अब्द प्रमानि ॥ १२ ॥
कुर्भुनि महाजुग एक१ मनु, तें चउदह जब होय ।
इक१ बिधिदिन तितनी निसा, १नरनकल्प ते दोय२ ॥ १३ ॥
मनुनकेहु संध्याबरस, कृतहायंन १७२८०००मित आँहिं ।

पत्त रात्रि है। अब यहां पर सावन दिन कहते हैं ॥ ७ ॥ दो१सूर्यों के उदय के अंतर को (सूर्य उदय होकर अस्त होने पश्चात् फिर उदय होवे जिस के बीच के समय को) सावन दिन कहते हैं, वही कुदिन (भूमि का दिन) है; और अश्विनी आदि नक्षत्र प्रतिदिन उदय होकर फिर उसी स्थान पर उदय होवे सो २ भ (नक्षत्र) दिन जानो ॥ ८ ॥ चार लाख बत्तीस हजार को चौगुना करने से १७२८००० वर्ष ३ सत्ययुग के होते हैं और त्रेतायुग में चार लाख बत्तीस हज़ार को तिगुना करने से १२९६००० वर्ष होते हैं इसी प्रकार उक्त संख्या को दुगुनी करने से द्वापर में ८६४००० वर्ष होते हैं और यही एक गुने अर्थात् ४३२००० वर्ष कलियुग के होते हैं. इसी प्रमाण से एक ४ महायुग के चार चरण होते हैं जिस के ४३२०००० वर्ष हुए ॥ ९ ॥ १० ॥ अपने अपने (युगों के) वर्षों का बारहवां ५ अंश जो आदि चरण में चार लाख बत्तीस हजार ६ कहे उतने ही वर्ष संध्या और सध्यांश के सब इन में ७ जुड़े हुए हैं ॥ ११ ॥ इस प्रकार चार चरण के सब वर्ष जोड़ने से महायुग जानो. जिस का तयालीस लाख बीस हजार वर्षों का प्रमाण है ॥ १२ ॥ एक मनुमें ऐसे इकहत्तर ८ युग होते हैं और ९ ऐसे चौदह मनु का ब्रह्मा का एक दिन और इतनी ही रात्रि होती है वे ही मनुष्यों के दो कल्प हैं ॥ १३ ॥

मनुओं के संध्या के वर्ष भी १० सत्ययुग के बराबर होते हैं, इन संधियों

आदि रु मध्यनमैं रु ए, अंतहु गिनहुउमाँहिं ॥ १४ ॥
मनुसंध्या हायन जुरत, यौं ए पंद्रह१५बेर ॥
है तब दिव्यहजार१००० जुग, सोहि दिवस१ बिधिकेर ॥ १५ ॥
बिधिके बरसपचास५० गत, यह बहुमत उद्योत ।
हायन अष्टक अर्द्धजुत ८१२, कतिकन मत गतहोत ॥ १६ ॥
वर्त्तमान बिधिदिवसमैं, छ६मनु गये तजि प्रान ॥
स्वायंभुव१ इक१ दूसरो, स्वारोचिस अभिधान ॥ १७ ॥
उत्तम३ तामस४ रैवत५ रु, चाक्षुष६ ए गत जानि ।
बैवस्वत७ सप्तम७ मनु सु, बिद्यमान अब मानि ॥ १८ ॥
गये महाजुग मुनि नयन२७, या मन्वंतर माँहिं ।
अग्रगँ जुगके त्रि३पद गत, अब चोथो कलि आँहिं ॥ १९ ॥
भूमि बेद नव बेद ४९४१मित, किय कलि अब्द प्रयान ।
मास इक१ दिन दुव२ घटी, सोलह१६ पलहु समान१६ ॥ २० ॥
बिधिके इक१दिनमाँहिं रवि१, कवि२ बुध३ स्वगति अभेद ॥

को मनुओं के आदि में बीच में और अंत में प्रसन्न होकर गिनो ॥१४॥ इस प्रकार मनुओं की संध्या के वर्ष पन्द्रह बेर जुड़ते हैं तब दिव्य हजार युग होते हैं, सो ही १ ब्रह्मा का दिन है ॥ सिद्धांत में नौ प्रकार का काल है अर्थात् ब्राह्मय, दैव, आसुर, पैत्र्य, सौर, सावन, चान्द्र, नाक्षत्र और बार्हस्पत्य. इसी बार्हस्पत्य से प्रभवादि ६० संवत्सरों का प्रारंभ होता है ॥१५॥ बहुत लोकों के १मत से ब्रह्मा के पचास वर्ष२बीते हैं और कितनेक लोकों के मत से ब्रह्मा के साढा आठ वर्ष बीते हैं ॥ १६ ॥ ब्रह्मा के इस वर्तमान दिन में छः मनु ५ बीत गये जिनके ४ नाम मूल में स्पष्ट हैं और अब सातवाँ वैवस्वत मनु ६ वर्तमान है ॥ १७ ॥ १८ ॥ इस मनु से सत्ताईस महायुग बीत गये, और ७ आगे चलनेवाले (अट्ठाईसवें) युग के तीन चरण (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) बीत कर अब चौथा ८ कलियुग वर्तमान है ॥ १९ ॥ चार हजार नवसौ इकतालीस वर्ष, एकमास दो दिन, सोलह घड़ी और सोलह पल कलियुग के गये ॥२०॥ ब्रह्मा के एक दिन में सूर्य ९ शुक्र और बुध ये तीनों ग्रह अपनी अभेद (इन तीनों ग्रहों की स्पष्ट गति तो भिन्न भिन्न है परंतु मध्यम) गति एक ही है सो उस मध्यम गति से ४३२०००००० बार बारह

भोगत ए तीन३हि भगनं
कोटि१००००००० गुनित रद बेद४३२००००००० ॥ २१ ॥
सासि सुर सर मुनि हय बिसिख
लक्ख१००००० गुनित ५७७५३३०००००० अरु आर ।
आकृति सर बसु कर भुजग
रस नव आकृति२२९६८२८५२२बार ॥ २२ ॥
गुरु सर सर चउ रस नयन, कर चोसठिगुन३६४२२६४५५ बेर ।
बसु नव दृग मुनि तर्क सर, रस सक्करि १४६५६७२९८सानि केर।२३।
बसु नृप सिव गुन रद नयन २३२३१११६८
आहिक१ राहु२भ भोग ।
है रविदिन अर्बुद१०००००००० गुनित
दुव सर सर तिथि १५५५२००००००००० जोग ॥ २४ ॥
अंक नंद नव दुव ख नृप१६०२९९९ ।
प्रयुत१०००००० गुनित१६०२९९९०००००० सासि केर ॥
कह ख ख ख ख सर कृत नृपति
नव मुनि हय तिथि१५७७९१९४५००००बेर ॥ २५ ॥
सर कृत खट गुन दुव नयन, पन्नग पन्द्रह१५८२२३६४५ठानि ॥
अयुत१०००० गुनितए१५८२२३६४५००००भ भ्रमनपच्छिमगामीजानि॥
पादाकुलकम् ॥

१राशियों को भोगते हैं॥२१॥और इसीप्रकार ब्रह्माके एक दिनमें चन्द्रमा५७७५३३०००००बेर बारह राशियोंको भोगता है और २२९६८२८५२२बेर बारह राशियों पर मंगल भ्रमण करता है ॥ २२ ॥ ३६४२२६४५५ बार बृहस्पति भोगता है और १४६५६७२९८ बार शनैश्चर घूमता है ॥ २३ ॥ २३२३१११६८ बार राहु फिरता है । ब्रह्मा के एक दिन में एक अर्ब्ब से पन्द्रह हजार पांच सौ बावन को गुणा ने से १५५५२००००००००० सूर्य के दिन हुए ॥ २४ ॥ इसी प्रकार ब्रह्मा के एक दिन में सोलह लाख दो हजार नव सौ निन्नानवें को दश लाख से गुणाये तौ १६०२९९९०००००० दिन चन्द्रमा के हुए. और ब्रह्मा के एक दिन में पृथिवी के दिन १५७७९१९४५०००० हुए ॥ २५ ॥ १५८२२३६४५ को दश हजार से गुणा किया तो१५८२२३६४५००००दिन नक्षत्र भ्रमण के पश्चिमगामी जानो।२६।

रवि१कवि२बुध३के भगन कहेजे ।
कुज१गुरु२सनि३चलतुंग भगन जे ४३२००००००० ॥
बुधके कृत बसु नव बसु नव नव ।
खट गुन नव सत्रह१७९३६९९८९८४चलोच्च भव ॥ २७ ॥
दुव नव बेद अंक बसु गुन दुव ।
द्वि ख मुनि७०२२३८९४९२ भृगु चलतुंग भगन धुव ॥
अहि सर बसु सर दस गज अहि कृत ।
४८८१०५८५८ ससि मंदोच्च भगन भूसीभृत ॥ २८ ॥

दोहा

ख नभ गगन बसु दृग यह कु१७२८०००,हुव इहिं क्रम कृत१वर्ष॥
खछ नव जगती १२९६० सत१०० गुनित,
१२९६००० त्रेता३ वर्ष प्रकर्ष ॥ २९ ॥
सहँस१००० गुनित कृत तर्क गज ८६४०००, द्वापर३अब्दसमूह॥
प्रथम कह्यो कलिको प्रकट, जानहु हायन जूह४३२००० ॥३०॥
जोरि च्यारि४ये जुग कह्यो,इक्क महाजुग मान४३२००००॥
इकहत्तरि७१ करि जो गुन्यौं, मनुहायन मिति थान ।३१।

षट्पदी ॥

सूर्य शुक्र और बुध के राशियों का भोग ब्रह्मा के एक दिन में कहा सो ही मंगल, बृहस्पति और शनि चल (शीघ्र) तुंग (उच्च) का भगण(राशियों का भोग) जानो. वे ४३२००००००० होते हैं और १७९३६९९८९८४ भगण बुध के चलोच्च (शीघ्रोच्च) के होते हैं ॥ २७ ॥ ७०२२३८९४४९२ शीघ्रोच्च के शुक्र के भगण होते है ४८८१०५८५८ हे राजा रामसिंह चन्द्रमा के मन्दोच्च के भगण (राशियों के भोग) होते हैं ॥ २८ ॥ अब आगे अहर्गण लाने के लिये सत्ययुगादि के वर्षों की गणना फिर लिखते हैं,१७२८०००सत्ययुग के वर्ष और १२९६००० त्रेतायुग के श्रेष्ठ वर्ष हुए॥२९॥८६४००० वर्षों का समूह द्वापर का और ४३२००० कलियुग के वर्षों का समूह जानो ॥ ३० ॥ इन चारों युगों को जोड़कर ४३२०००० वर्षों का एक महायुग का प्रमाण कहा इनको इकहत्तर से गुणाया तो एक मनु के वर्षों का प्रमाण ३०६७२०००० होता है ॥ ३१ ॥ इनको ६ से गुणाया तो हे षट्बाण १८४०३२००००प्रमाण छ. मनुओं

व्योम गगन नभ बीस तुरग खट नभ गुन३०६७२००००बच्छर ।
इक१ मनुके ए छ६ करि गुनित छ६मनुन हुव संभर ॥
ख ख ख खरद नभ बेद अष्ठ भू १८४०३२०००० मित ते आये
कृत मिति१७२८०००मित मनुसंधि,
बरस छ६गुनित १०३६८००० मिलवाये ॥
तबव्योमगगननभबसुभुजगखटपचासधृति१८५०६८८०००मितभये
नृपरामसिंह इहिँ मान सब छमनुनके हायन गये ॥ ३२ ॥

दोहा॥

सप्तम७मनुकीसंधिके,हायन १७२८००० अत्थ १८५०६८८००० उपेत ।
ख ख ख अष्टि जिन बान धृति१८५२४१६०००,ए हुव तत्थ समेत।३३।

षट्पदी ॥

भ २७ मित महाजुग बहुरि गये सप्तम७ मनुके अब ।
अयुत१०००० गुनित चउसट्ठि,
छ सिव११६६४००००तिनके हायन सब ॥
ए ११६६४०००० अरु वे १८५२४१६००० दिय जोरि,
तबहि ख ख सट्ठि सर ख नव ।
रस अतिधृति १९६९०५६०००परिमान भये सब अब्द धरनिधव ॥
इन अग्ग महाजुग जो लग्यो तीन३गये ताके चरन ।
तिन्ह अब्द ख ख ख बसु गज भुजग,

के वर्षों का हुआ, सत्ययुग के वर्षों के समान ही एक मनु की संधि के वर्ष होते हैं जिनको छः गुणा किया तो१०३६८०००वर्ष हुए जिनको छः मनु के वर्षों में मिलायातब १८५०६८८०००वर्ष हुए,इस प्रमाण से हे राजा रामसिंह छः मनुओं के वर्ष गये॥३२॥ सातवें मनु की संधि के१७२८०००वर्षों सहित अर्थात् ऊपर की संख्या में मिलाये तो १८५२४१६००० वर्ष हुए ॥ ३३ ॥
इस सातवें मनु के अब सत्ताईस महायुग गये सो ग्यारह हजार छः सौ चौसठ को दस हजार से गुणाया तो११६६४००००वर्ष हुए सो ऊपर की संख्या में जोड़ने से हे भूपति १९६९०५६००० वर्ष हुए और इनसे आगे अट्ठाईसवां महा युग लगा जिसके तीन चरण बीते जिन के हे कीर्तिधन(कीर्ति ही है धन जिसके)

राम ३८८८०००प्रमित हुव कित्तिधन ॥ ३४ ॥

दोहा

जोरे ए३८८८००० पहिले१९६९०५६०००न बिच,ते कलि पूरब बर्ष।
ख ख ख बेद कृत नव नयन,मुनि नव इन्दु१९७२९४०००प्रकर्ष ॥३५॥
इन पिच्छैं कलिके गये, भू कृत नव कृत ४९४१अब्द ॥
इन समेत सब गतबरस, सुनहु समयमय सब्द ॥ ३६ ॥
भू कृत नव बसु बेद नव, नयन तुरग नव चन्द१९७२९४८९४१ ॥
ग्रन्थ पूर्व याकल्पको, यह गत हायन कन्द ॥ ३७ ॥

हरिगीतम् ॥

गतअब्द द्वादस१२ तैं गुनैं तहँ मास आत्मक जे ठये ।
दुवअंकदुवमुनिअठगुनसरबाजिछबिकृति२३६७५३८७२९२एभये ॥
इक१मास मधु गत जोरि २३६७५३८७२९३ तिथिकिय ।
तीस३० सौं गुनिके अबै ॥
नभ अंक मुनि धृति भूप उत्कृति
खेंदु मुनि७१०२६१६१८७९०हुव ए सबै ॥ ३८ ॥
इक१मास उप्पर द्वै२ गई
तिथि ते जुरी इन ७१०२६१६१८७९०मैं जहाँ ॥
दुव अङ्क मुनि धृति भूप उत्कृति
व्योम कु मुनि ७१०२६१६१८७९२ भई तहाँ ॥

रामसिंह ३८८८००० वर्ष हुए ॥ ३४ ॥ इनको ऊपर की संख्या में मिलाया तौ कलियुग के पहिले १९७२९४००० वर्ष विशेष करके हुए ॥ ३५ ॥ इनके पीछे कलियुग के ४९४१ वर्ष गये. जिन के साथ सब गयेहुए वर्षों को समयमयी शब्द के साथ सुनो ॥ ३६ ॥ इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के बनने से पहिले ब्रह्मा के इस कल्प (श्वेतवाराह कल्प) के १९७२९४८९४१ वर्षों का समूह बीता है। ३७। गयेहुए वर्षों को बारह से गुणाया तौ २३६७५३८७२९२ मास हुए, जिनमें ग्रंथ प्रारंभ से पहिले गयाहुआ एक चैत्र मास फिर मिलाने से २३६७५३८७२९३ सौर मास हुए, इनको ३० से गुणाया तौ ७१०२६१६१८७९० तिथियां हुईं, ॥ ३८ ॥ एक महीने के ऊपर दो तिथियां गईं वे इनमें जोड़ने से ७१०२६१६१८७९२

दुवरठाम ए लिखि सौरातिथि ७१०२६१६१८७९२।
अधिमास ह्याँ अब आनिये।
तँहँ जो क्रिया नृपराम पाटवपुंज सोहु प्रमानिये ॥ ३९ ॥

षट्पदी ॥

कल्प बरस रविकेर ४३२००००००० मास किन्नैं बारह१२गुनि।
कोटि१००००००० गुनित कृत अष्ठ
एक सर५१८४०००००००हुव ति लेहु सुनि ॥
तीस३०गुनित करि इनहिं किये मासनके बासर।
तँहँ हुव अर्बुद१००००००००० गुनित
नयन सर सर तिथि१५५५२००००००००० नृप बर ॥
इन सौरदिनन सन लक्ख१००००० गुनि
सुर नव तिथि१५९३३००००० अधिमास जँहँ ॥
गत दिनन७१०२६१६१८७९२गये अधिमास कति
त्रैरासिक बिधिं किन्न तँहँ ॥ ४० ॥

दोहा ॥

किय प्रमान दिन कल्पके१५५५२०००००००००,
अरु फल किय अधिमास १५९३३००००० ॥
ग्रन्थपूर्व रवि द्यौंस गत७१०२६१६१८७९२, इच्छा फल यँहँ आस४१

तिथियां हुई, इन सौर तिथियोंको दो जगह लिख कर अब यहां पर अधिक मास आनते हैं, उस क्रिया को हे राजा रामसिंह! चतुराई की पुंज जानो। ३९। एक कल्प के ४३२००००००० सौर वर्ष हुए जिनको १२ से गुणाकर मास किये तौ पांच हजार एक सौ चौरासी को एक करोड़ से गुणाने से ५१८४०००००००० हुए सो सुनो, इनको तीस से गुणाकर महीनों के दिन किये तौ हे श्रेष्ठराजा! पन्द्रह हजार पांचसौ बावन को एक अर्बुद से गुणायेहुए १५५५२००००००००० कल्प के सौर दिन हुए और पन्द्रह हजार नौ सौ तेतीस को एक लाख से गुणाया तौ १५९३३००००० एक कल्प के अधिक मास हुए, गयेहुए दिनों में कितने अधिक मास हुए सो सौर दिनों से त्रैराशिक रीति से किये हैं। ४०। सौर दिन तौ प्रमाण, और इस ग्रंथ (वंशभास्कर) के पहिले कल्पादि गत दिन इच्छा, और कल्प के अधिक मास फल हैं ॥ त्रैराशिक में प्रमाण, इच्छा

रुचिरा ॥

इच्छाकरि फल एह गुनित हुव ख ख ख ख ख छ गुन नव जगती ।
दस्र नयन मुनि गुन बसु नव सर
भूपति पावक प्रमथपती११३१६५९८३७२२१२९३६००००००
भाजक प्रथम१५५५२०००००००० भजत रद अतिधृति
खट खट मुनि हग तुरग७२७६६१९३२भये
नृपमनिराम प्रबंध प्रथम सब इहिँ परिमिति अधिमास गये ॥४२॥
तीस३० गुनित इन्ह करि दिनकिय तँहँ
नभ रस नव मुनि बिसिख फनी ।
नंद नयन धृति हुव२१८२९८५७९६०परिमित गत
अधिक दिनन यह बितति बनी ।
रवि गतदिन७१०२६१६१८७९२ इन२१८२९८५७९६०जुत हुव सर यह
छ मुनि कृत कु नव ख रद मुनी७३२०९१४७६७५२
यह हिमकर दिन बिसरन परिमिति सुनहु नृपतिमनि चतुरचुनी॥४३॥
कल्प अवमदिन ख ख ख ख सर सर
दुव बसु ख सर नयन२५०८२५५००००मितहै
सासि गतदिवस निकर७३२०९१४७६७५२करि अवमन
गुनित करिय तँहँ समुचितहै ।
ख ख ख ख ख ख तुरग मुनि बसु सर नभ दुव ख मुनि गगन प्रकृती

और फल ये तीन होते हैं सो ही ऊपर बताया है ॥ ४१ ॥ इस इच्छा से फल को गुणाने से जो संख्या हुई वह ११३१६५९८३७२२१२९३६००००० है इन में कल्प के सौर दिनों का भाग देने से हे राजाओं के मणि रामसिंह इस ग्रंथ के प्रारंभ होने से पहिले ७२७६६१९३२ अधिक मास गये ॥ ४२ ॥ इन को तीस से गुणा करके अधिक मासो के दिन किये तो २१८२९८५७९६० गये हुए अधिक दिनों की पंक्ति वनी, इन को गत सौर दिनों मे मिलाया तो ७३२०९१४७६७५२ हुए सो चन्द्रमा के दिन हैं, सो हे राजाओं के मणि रामसिंह चतुर की चुनी हुई संख्या सुनो ॥ ४३ ॥ एक कल्प में २५०८२५५०००० तिथि टूटती हैं जिनको चंद्रमा के गये हुए दिनों के समूह से गुणाना चाहिये उस

तुरग नयन रस अनल भुजग ससि ॥
१८३६२७२१०७०२०५८७७६०००००इम समुदयहुवगुनन कृती*
ससिदिन गन१६०२९९९००००००करि इनहिं भजिय तँहँ
फल सु अवम हुव सुनहु जथा ॥
गुनमुनिकरनवनयननयनसरसरकृतहर११४५५२२९२७३गतअवमतथा
ससिदिन गन७३२०९१४७६७५२इन११४५५२२९२७३करि बिरहितकिय
तँहँ खिल जुहि दिननिचय रह्यो
नव हय कृत मुनि जिन रस गुन खट
गगन नयन मुनि७२०६३६२४७४७९मित सु लह्यो ॥ ४५ ॥
पादाकुलकम् ॥
यह मध्यम सावन रविदिन गन, लहिय बार भजि याहि सप्त७सन ॥
तँहँ कृत सर गुन सर गुन नभ अहि,
कृत नव दुव दस१०२९४८०३५३५४अवधि गई लहि ॥४६॥
इक१खिलतैं ससि बार भानु सन,
अब रविभगन४३२००००००० न गुनित अहर्गन ७२०६२४७४७९ ॥
बसु कर नव दस नव बसु सर फनि,
कृतससिगुनहर अनलकोटिहनि३११३१४८५८९१०९२८००००००
दोहा॥
कुदिन१५७७९१६४५००००नकरिइन३११३१४८५८९१०९२८००००००

गुणाने से १८३६२७२१०७०२०५८७७६०००००हुए ॥४४॥ इस संख्या में कल्प के चान्द्र दिनों का भाग देने से जो फल हुआ वे तूटी तिथियां ११४५५२२९२७३ हुईं सो चांद्र दिनों में से इनको निकाला तो७२०६३६२४७४७९बाकी रहे सो अहर्गण हुआ ॥ ४५ ॥ यह मध्यम रवि दिनों का जो गण है वह सावन दिन जानो, जिन में सात का भाग देकर वार निकाला जिस में१०२९४८०३५३५४ अवधि गई ॥४६॥ बाकी एक रहा सो गत रविवार और वर्तमान चन्द्र (सोम)वार हुआ॥ अब रविभगण से अहर्गण को गुणाया तो ३११३१४८५८९१०९२८००००००हुए॥४७॥ भूमि के दिनों से इन में भाग दिया तो जो फल आया वह सूर्य के बीते हुए भगण हैं, जो१९७२९४८९४१हुआ, ये ही कल्प के सौर गत

*प्रकृती १ नकृती २ अन्त्यानुप्रास. ॥

कौं भजे, फल रवि गगन अतीत ॥
विधु कृत नव बसु बेद नव, कर हय नव इक१९७२९४८९४१नीत।४८।
खिल सर सर ख ख त्रि सर नव९५३००५५,द्वादस१२आहत कीन॥
कुदिन १५७७९१६५४००००भजतफल नभ लहिय,
तिहिँ अवि१ रासि अधीन ॥ ४९ ॥
तीस३० गुनित करि पुनि खिलहिँ, कुदिनन भजिय महीस ॥
तँहँ फल आयउ तेहि गत, अवि१के लव इकबीस२१ ।५०।
सट्ठि६०गुनित सेसहिँ बिरचि, कुदिनन भजिय समत्थ ॥
कलालहिय फल बेद कृत४४,एडक१की गत अत्थ ॥५१॥
पुनिसेसहिँकरिखरस६०हतभूमिदिनन१५७७९१६४५००००दियभाग
फल बिकला तेतीस३३गत, इक्खहु जुत अनुराग॥ ५२ ॥
रोला ॥
यह १९७२९४८९४१ । ० । २१ । ४४ । ३३ । भगनादिक अर्क
भयउ मध्यम धरनीधन ॥
अब ससि भगन५७७५३३००००००न गुनिय
अहर्गन७२०६३६२४७४७७९मध्यम सावन ॥
लक्ख१०००००गुनित तँहँ तुरग व्योम गुन अंक भुजग दुव
सर ससि नव गुन इक्क
अर्कअतिधृति नृप कृत४१६१९१२१३९१५२८९३०७००००० [illegible] ५३

वर्ष हुए ॥४८॥ बाकी ९५३००५५रहे जिनको बारह से गुणाया और भूमि [illegible] दि-नों से भाग दिया तो फल शून्य मिला सो मेष राशि हुई ॥ ४९ ॥
फिर जो बाकी रहे जिनको तीस से गुणा करके हे राजा उस में भूमि के दिनों का भाग दिया तहां फल २१ आये सो मेष राशि के गत अंश हुए ॥ ५० ॥ बाकी रहेहुए अंकों को साठसे गुणाया और भूमि के दिनों का भाग दिया तौ फल ४४ आये सो यहां पर मेष राशि की ४४ कला गई॥५१॥फिर बाकी रहे जिनको ६० से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो लब्धि फल ३३ विकला गत हुई सो प्रीति सहित देखो ॥ ५२ ॥
यह भगणादिक (भगण राशि,अंश,कला,विकला)हे भूपति! मध्यम सूर्य हुआ अब चन्द्रमा के भगणों (बारह राशियों के भोगने को भगण कहते हैं) से

कुदिनन करि इन्ह भाजिय लब्ध फल चंद्रभगन गत ।
रस नृप बसु नव अंक बानहय गुन उत्कृति२६३७५९९८१६६मत॥
खिल करि बारह१२गुनित भाग दिय तँहँ इक१आयउ ।
यातैं वृखर अब तीस३०गुनित खिल बहुरि भजायउ॥५४॥
तँहँ फल लव इकबीस२१ सष्ठि६० आहत सेसहिं करि ।
कलिका छप्पन५६लहिय भूमि दिवसन ताकौं हरि ॥
ख रस६०गुनित करि खिलहिं भजिय हर रविदिन सावन ।
वृखरविकला गत तत्थ लब्ध फल हुव अट्ठावन५८ ॥५५॥

दोहा॥

यह १।२१।५६।५८। ससिमध्यम अब द्युगन,
७२०६३६२४७४७९मध्यम सावन लाय ॥
हिमकर तुङ्ग भचक्र ४८८१०५८५८गन, करि तिहिं दिन्न गुनाय५६
भूदिन१५७७९१६४५००००करिभाजितकियउ,तँहँससितुंगभभोग
गुन नभ सायक अट्ठ इक, नव दुव आकृति२२२९१८५०३जोग ॥५७॥
पूरबक्रम खिलकौं बिरचि,दैदै भूदिन१५७७९१६४५००००भाग ।
मुनि७तिथि१५रद३२आकृति२२लिय सु,रासि प्रमुख जुतराग ।५८।

मध्यम सावन के अहर्गण को गुनाया तो४१६१९१२१३६१५२८६३०७००००० हुआ ॥ ५३ ॥ इस में भूमि के दिनों का भाग देने से लब्धिफल२६३७५६६८१६६ चन्द्रमा के भगण गये, बाक़ी के अंकों को १२ से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो १ आया, इस से मेष राशिगत और वर्तमान वृष राशि के बाकी के अंकों को तीस से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया ॥ ५४॥ वहां फल २१ अंश गये, और बाकी के अंकों को ६० से गुणाकर फिर भूमि के दिनों का भाग दिया तो ५६ कला लब्धि हुई, फिर बाकी रहे जिनको ६०से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो वृष राशि की ५८ कला गई ॥ ५५॥ यह राश्यादिक अर्थात् राशि १ अंश २१ कला ५६ विकला ५८ मध्यम चन्द्रमा हुआ ॥ अब द्युगण (अहर्गण) मध्यम सावन को चन्द्रमा के भगण से गुणाया ॥ ५६ ॥ और उस में भूमि के दिनों का भाग दिया तो चन्द्रोच्च के भगण का भोग २२२९१८५०३ गया ॥ ५७ ॥ बाकी के अंकों को पहिली रीति से अर्थात् १२, ३०, ६० और फिर ६० से गुणा गुणा कर भूमि के दिनों से आ

इमरवि०।२१।४४।३३ससि१।२१।५६।५८।ससिउच्च ७।१५।३२।२२। ए
हुव मध्यम नरनाह ॥

अब रवि१ससि२फुटतर बिरचि,चतुरन रंजनचाह ॥५९॥
इक१रु चतुर्दस१४बहुरि खट६,अंसादिक ऋन रूप ॥
भानु बीजसंस्कार फल, निकस्यो अत्थ अनूप ॥ ६० ॥
ऋन ससिको लव मुख दुव२रु,पावक३पुनि इकतीस३१ ॥
तान४९ रु जिन२४ससितुंगको,ऋन कलादि अवनीस।६१।
उदयान्तर विकला कढी,उत्कृति२६ऋन रवि देय ॥
ऋन ससिमैं सायक५कला,विकला तान४९प्रमेय ॥६२॥
इन बिनु रवि गगन०रु कृति२०रु, तीस३०रु ब्रह्म१बिधान।
ससि भूमि१रु अतिधृति१९रु मुनि,कृत४७रु तुरग गुन३७ मान ॥
मुनि७रु बेद भूमि१४रु नयन, कृत४२ बहोरि बसु बान ५८॥
अब्दबीज संस्कृत यहै चंद्र तुंग चहुवान ॥ ६४ ॥

षट्पात्

ग दे दे कर राशि ७ अंश १५ कला ३२ विकला २२ प्रीति पूर्वक लिये सो राश्यादिक चन्द्रोच्च हुआ ॥५८॥ इस प्रकार सूर्य, चन्द्र और चन्द्रमा का उच्च राशि आदिक हे नरपति रामसिंह ! ये मध्यम हुए जिनके अंक मूल में स्पष्ट लिखे हुए हैं॥ अब सूर्य चन्द्रमा स्पष्टतर चतुरों को प्रसन्न करने की चाहना से रचते हैं ॥ ५९ ॥ अंश १ कला १४ विकला ६ सूर्य के वीज संस्कार का फल ऋण रूप (घटाना) है इस लिये मध्यम सूर्य में से बाकी निकाला ॥ ६० ॥ चन्द्रमा के अंश २ कला ३ विकला ३१ ऋण (बाकी) है और हे भूपति, चन्द्रमा के उच्च में कला ४९ विकला २४ ऋण है॥६१॥सूर्य के उदयान्तर२६ विकला बाकी देनी, और चन्द्रमा में कला५विकला४९ऋण दी ॥६२॥ ये दोनों (वीज और उदयान्तर) मध्यम सूर्य में से निकाले तो वीज उदयान्तर से संस्कार दिया हुआ मध्यम सूर्य राशि० अंश २० कला ३० विकला १ विधि पूर्वक हुए। इसी प्रकार चन्द्रमा में वीज और उदयान्तर दोनों संस्कार दिये तो बाकी राशि १ अंश १९ कला ४७ विकला ३७ इस प्रमाण से चन्द्रमा हुआ ॥ ६३ ॥ और हे चहुवाण रामसिंह, यही अब्दवीज संस्कार चन्द्रमा के उच्च में ऋण बाकी दिया तो बाकी राशि ७ अंश १४ कला ४२ विकला ५८ चन्द्रमा का उच्च हुआ

भूमि१रु भ२७रु सर पच्छ२५बहुरि नव सर५९परिमित अब,
आयउ रवि मृदुकेंद्र१।२७।२५।५९तास भुजकरि किय ज्या तब।
अंगुल व्यंगुल आदि एक नभ भू १०१रु नभ० रु नभ० ॥
तिहिंकरि मृदुफल लियउ भू १रु ख सर५०रु दस१०सुप्रभ ॥
मेषादि भानु यातैं यहैं१।५०।१०,
लवमुख फल रवि०।२०।३०।१जुत०।२२।२०।११।कर्‍यो ॥
अयनांस प्रकृति२१पुनि गज पवन ५८
इहिं कलादि जुत अनुसर्‍यो ॥ ६५ ॥

दोहा ॥

ब्रह्म१रु कृत भूमि१४रु भुजग,चंद्र१८रु सिव११यह अर्क ॥
अब लंका बुंदी उदय,अंतर चर संपर्क ॥ ६६ ॥
रस मुनि७६मित चर पल इहाँ,सायन रवि करि आय ॥
रवि१।१४।१८।११अजादितातैंदयो,मृदुफुट०।२२।२०।११तैं सु घटाय
तब गगन०रु आकृति२२बहुरि,भुजग भू१८रु सर बात५५॥
यह०।२२।१८।५५प्रबन्ध प्रारंभके,दिन फुटतर रविप्रात।६८।

॥ ६४ ॥ सूर्य का मंदोच्च राशि २ अंश १७ कला ५६ विकला० सिद्धान्त में प्रसिद्ध है जिनमें से पहिले उदयान्तर संस्कार दिया हुआ मध्यम सूर्य आया उसको घटाया तौ बाकी राशि १ अंश २७ कला २५ विकला ५९ रहा, यह सूर्य का मृदु (मन्द) केन्द्र हुआ, इसका भुज किया तौ इतना ही हुआ फिर इसकी ज्या की तौ अंगुल १०१ व्यंगुल (अंगुल के साठवें हिस्से को व्यंगुल कहते हैं) शून्य, प्रति व्यंगुल (व्यंगुल का साठवां हिस्सा) शून्य ज्या हुई इनसे मृदुफल लिया तौ अंश१कला५०विकला१०आया सो फल मेषादि[मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या] छः राशियों में मन्द केन्द्र होवै तौ मंद फल युक्त होता है इससे युक्त किया तौ राशि० अंश २२ कला २० विकला ११ यह मन्द स्पष्ट सूर्य हुआ अब इनसे चरफल लाने के लिये अयनांश २१ कला ५८ युक्त किया ॥ ६५ ॥ तब राशि १ अंश १४ कला १८ विकला ११ यह सायन सूर्य हुआ अब लंका और बुन्दी के उदय के बीच में चरों का संबन्ध कहते हैं ॥ ६६ ॥ इस सायन सूर्य के चरपल ७६ आये सो विकलात्मक हैं और मेषादि ६ राशियों में चरपल ऋण (बाकी) दियाजाता है इसलिये मन्दस्पष्ट में कला १ विकला १६ घटाया तौ ॥ ६७ ॥ बाकी राशि० अंश २२ कला १८

पहिलैं ज्या१०।१।०।०किय ताहिसौं,भोग्यखगड नृप१६लीन ॥
रवि१२सौं भजि अवनी१रु कृति२०,लिय किय भुक्तिबिहीन।६९।
मध्यमगति मार्त्तंडकी,नव पंच५९रु गज८पाय ॥
यातैं केंद्र१।२७।२५।५९मृगादियौं,दिय फल एह१।२०।घटाय ।७०।
तब रविगत फुटतर भई,हय पवन५७रु अहि च्यारि४८।
अब ससि फुटतर करनक्रम,नृपबर लेहु निहारि ॥ ७१ ॥
उदय१देस२भुज३अंतर रु अब्दबीज४चर५सुद्ध ॥
कु१रु नव कु१९रु कृत गुन३४रु जिन२४,
यह१।१९।३४।२४ससि गिनहु प्रबुद्ध ॥ ७२ ॥
संस्कृत ससि मंदोच्च७।१४।४२।५८तैं,
काढ्यो यह१।१९।३४।२४।हि निसेन्द्र ॥
सर५रुपंचनयन२५रुगज८रु,कृतगुन३४तबमृदुकेंद्र५।२५।८।३४।।७३
याको भुजकरि ज्या करी,दस१०रु रवि१२रु आकास० ॥
सर नयन२५रु कर कृत४२कला,प्रमुख मंदफल२५।४२तास ।७४।
मंदकेंद्र५।२५।८।३४यह इंदुको,एडक आदिक अत्थ ॥
यातैंयह२५।४२मृदुफल करयोसंस्कृतससि१।१९।३४।२४के सत्थ७५

विकला ५५ यह इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के प्रारंभ के दिन प्रभात में स्पष्ट सूर्य हुआ ॥ ६८ ॥ पहिले ज्या करी उसीसे गति फल के लिये भोग्य खगड सौलह का लिया जिसमे १२ का भाग दिया तौ फल कला १ विकला २० आया सो सूर्य की मध्यम गति कला ५९ विकला ८ में घटाये (क्योंकि मन्दकेंद्र मकरादि ६ राशि, मकर कुंभ मीन मेष वृष मिथुन में गतिफल ऋण होता है) तौ बाकी सूर्य की स्पष्ट गति कला ५७ विकला ४८ हुई अब हे श्रेष्ठराजा चन्द्रमा को स्पष्ट करने का क्रम देखो ॥ ७० ॥ ७१ ॥ उदयान्तर, देशान्तर, भुजान्तर, अब्दबीज और चर इन पांच संस्कारों से शुद्ध कियाहुआ चन्द्रमा हे पण्डित रामसिंह राशि १ अंश १९ कला ३४ विकला २४ जानो ॥ ७२ ॥ संस्कार कियाहुआ पहिले चन्द्रमा का मंदोच्च राशि ७ अंश १४ कला ४२ विकला ५८ में से निकाला तौ राशि ५ अंश २५ कला ८ विकला ३४ बाकी रहा सो चन्द्रमा का मन्दकेन्द्र हुआ ॥ ७३ ॥ इसका भुज करके ज्या करी तौ अंगुल १० व्यंगुल १२ प्रतिव्यंगुल ० इनसे मंदफल कला २५ विकला ४२ आया ॥ ७४ ॥ सो चन्द्रमा का मंदकेंद्र एडक (मेष) आदि छः राशियों में है इसलिये मन्दफल चन्द्रमा में युक्त किया

तब भूमि रु नख२० पुनि नभ रु, खट६फुटतर ससि१।२०।०।६आँहिं॥
भोग्य खंड आयो प्रकृति २१, मृदु फल साधन माँहिं ॥ ७६ ॥
तेरह१३सौं गुनि ताहि२७३दै, बेद४ भाग फल लिन्न ॥
मध्यम गति नभ नव मुनि ७९०रु, सर गुन ३५तँहँ जुत किन्न।७७।
गज तर्क६८रु तिथि१५भुक्ति फल, जुरि ससि गति१९०।३५हुव सुद्ध ॥
अहि सर गज८५८अरु नभ पवन५०, तिहिं दिन प्रात प्रबुद्ध ॥७८॥
फुटरवि०।२२।१८।५५।।५७।४८ससि१।२०।०।६।।८५८।५०करितिथि
लहिय, तीज ३ घटी मुनि राम ३७ ॥
पल आकृति२२अरु रोहिनी४, विश्व१३रु गज सर५८ताम ॥७९॥
तीस३०रु दस१०अतिगंज६युति, तैतिल६करन उपेत ॥
विस्तरसौं चंडासि भव, करिहैं गनित निकेत ॥ ८० ॥
पल मुखकु १रु द्विसर५२रु ख गुन३०, जँहँ देसांतर मान ॥
जिन२४अरु गज नयन२८रु ख गुन३०,अक्ष अंश तिंहिं थान ॥८१॥
ऐसे बुंदियनैर बिच, हुव यह प्रथित प्रबंध ॥

तब राशि १ अंश २० कला० विकला ६ स्पष्टतर चन्द्रमा हुआ ॥ अब गति स्पष्ट करने के लिये मन्दफल साधन में जो ज्या का भोग्य खण्ड२१ आया ॥ ॥७६॥ जिसको १३ से गुणाकर चार का भाग दिया सो चन्द्रमा की मध्यम गति कला ७९० विकला ३५ में मिलाये ॥ ७७ ॥ गतिफल कला ६८ विकला १५ मध्यमगति में जोड़ने से हे पण्डित रामसिंह कला ८५८ विकला ५० प्रभात में चन्द्रमा की गति स्पष्ट हुई ॥ ७८ ॥ सूर्य और चन्द्रमा को स्पष्ट करके तिथि निकाली तो ३७ घड़ी और२२पल सूर्योदयात् तीज आई और रोहिणी नक्षत्र तहां पर १३ घड़ी ५८ पल आया ॥ ७९ ॥ ३० घड़ी १० पल अतिगंज योग, तैतिल करण सहित आया ॥ यहां पर संक्षेप से गणित किया गया है ॥ आगे चहुवाण के जन्म स्थान पर विस्तार से गणित करेंगे ॥ ८० ॥ अब बुन्दी नगर के देशान्तर और अक्षांश बताते हैं कि १ पल ५२ अक्षर ३० व्यक्षर (घड़ी के साठवें हिस्से को पल, और पल के साठवें हिस्से को अक्षर, और अक्षर के साठवें हिस्से को व्यक्षर कहते हैं) देशान्तर का प्रमाण है, और २४ अंश २८ कला ३० विकला इस स्थान पर अक्षांश है ॥ ८१ ॥ इस प्रकार बुन्दी नगर के बीच में यह ग्रंथ (वंशभास्कर) प्रसिद्ध हुआ । प्रभवादि साठ संवत्सरों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीनों के बीस बीस वर्ष होते हैं उनमें शिव

सिवके बरस बिरोधकृत५,अंतर सर्व सुसंध ॥ ८२ ॥

षट्पात्

नृप१सित२मंत्रिय१मंद२सेननेता१हु सुक्र२जँहँ,
पूर्वधान्यपति१आर२अपर अन्नेस१अर्क२तँहँ ॥
अर्घपति१हु कविपुत्र२मेघ ईस१हु भृगु कुलबर२ ।
रसपति१गुरु२ धनईस१बुध२रु नीरसपति१हिमकर२ ॥
फलपति१हु चंद्र२कुतवाल१रवि२जिहिँ हायन इम खेट७गन ।
तिहिँमाँहिँ भूप सासन लहि रु किय प्रबंध प्रारंभपन ॥ ८३ ॥

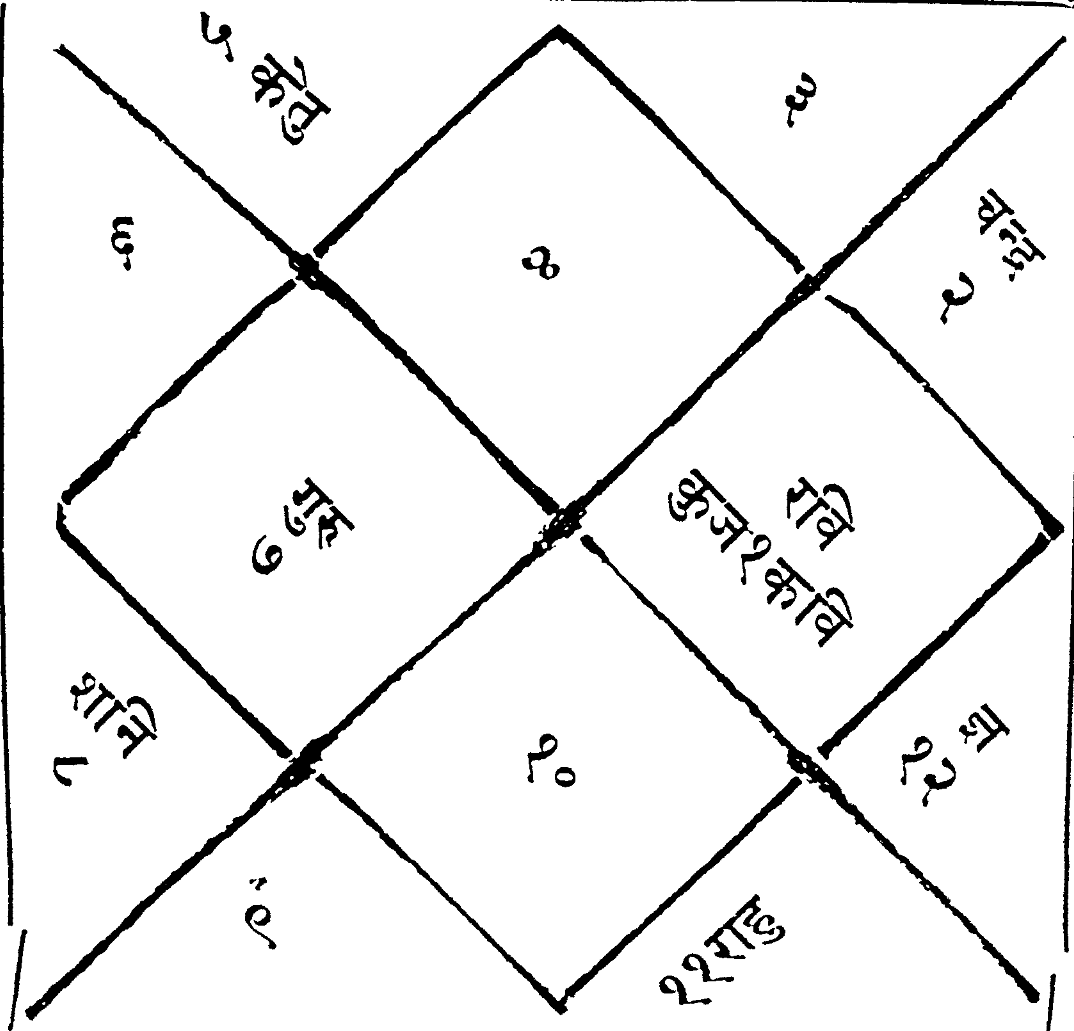
दोहा ॥

गुन३रु पचीस२५रु नभ०रु कृत४,सुद्ध लग्न अनुसार ।
सुचिकुलको किय तिहिँ समय, अर्कमल्ल उच्चार ॥ ८४ ॥

षट्पात्

विक्रम सक हय अंक अष्ठ अवनी१८९७मित आवत ।
सालिवाह सक नयन तर्क हय भूमि१७६२सुहावत ॥
चंद्रराध सित तीज३ घटी मुनि गुन३७पल्ल दुव कर२२ ।
विधिभ४त्रिकु१३रु गज पंच५८छठी६धृति तीस३०रु दस१०पर ॥
तैतिल४कृसानु ससि१३कृतबिखय५४दिन दंत३२रु रद३२मान धर
मध्यान्ह इष्ट आरंभकिय लग्न कुलीर४प्रबंध बर ॥ ८५ ॥

की बीसी के भीतर पाँचवीं संख्या का " विरोधकृत " नामक संवत्सर श्रेष्ठ प्रतिज्ञा के साथ है ॥ ८२ ॥ इस वर्ष का राजा शुक्र, मंत्री शनैश्चर, सेनापति शुक्र, पूर्वधान्यपति मंगल, पश्चिम धान्यपति सूर्य, भाव (मँहगाई सस्ताई) का पति शुक्र, मेघपति शुक्र, रसपति बृहस्पति, धनपति बुध, नीरसेश चंद्रमा, फलपति चन्द्रमा, कोतवाल सूर्य जिस वर्ष में इन ग्रहों का समुदाय है उसी वर्ष में राजा की आज्ञा लेकर इस ग्रंथ (वंशभास्कर) के प्रारम्भ का पन किया ॥ ८३ ॥ अब ग्रंथ के प्रारम्भ का लग्न स्पष्ट लिखते हैं राशि ३ अंश २५ कला ० विकला ४ इस शुद्ध लग्न के अनुसार अग्नि वंश का सूर्यमल्ल कवि ने उच्चारण किया ॥ ८४ ॥ विक्रम का सम्वत् १८९७ और शालिवाहन का शक १७६२ वैशाख सुदि ३ सोमवार घड़ी ३७ पल ५२ रोहिणी नक्षत्र घड़ी १३ पल ५८ अतिगंज योग घड़ी ३०पल १ तैतिल करण घड़ी १३ पल ५४ दिनमान



ग्रहलाघव अनुसार अभ्र सर वेद४५०अहर्गन ।
अवि१ पररवि कवि कुज रु इंदु वृखर केतु मृगादन५ ।
तुला७ जीव अलि८मंद कुंभ११ आश्रित सिंहीसुत ।
सोमनंद थित सफर१२ जत्थ निज भाग भोग जुत ।
हय पंच अर्क१२५७मित जवन सक इंग्रेजन सासि वेद धृति१८४१।

घड़ी २३पल ३२ मध्यान्ह के समय कर्क लग्न में श्रेष्ठ ग्रंथ का आरम्भ किया ॥८५॥ अथ आगे ग्रह लाघव नामक करण ग्रंथ के अनुसार अहर्गण ४५० है. और सूर्य. शुक्र. मंगल ये तीनों ग्रह मेष राशिपर हैं. चन्द्रमा वृष राशि पर. केतु सिंह राशि पर. बृहस्पति तुल राशि पर. शनैश्चर वृश्चिक राशि पर. राहु कुंभ राशि पर. बुध मीन राशि पर है. ये ग्रह अपने अपने अंशों के भाग स-हित हैं और हिजरी सन १२५७ ईसवी सन १८४१ है इस समय में श्रेष्ठ

तिहिँ काल सुकवि आरंभ किय अनलबंसउतपत्ति कृति ॥८६॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ सर्गादिलयान्तसमयसूचनपूर्वकग्रन्थप्रारम्भकाललग्नपञ्चाङ्गस्फुटीकरखेटस्थानसूचनं नाम नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

दोहा

कवि भमेड१ अनुकूल सब, लगन सकुन ग्रह लिन्न ।
तत्थ बंदि गुरु देवतन, कृति आरंभन किन्न ॥ १ ॥
जदपि न तीव्र मदीय मति, तदपि रचौँ यह ग्रंथ ।
प्रथम नृपति आदेस पुनि, कविकुल जीवन पंथ ॥ २॥

षट्पदी

जो न निरखि राकेस चमक खद्योत दिखावहिँ ।
जो न गरुड़गति देखि मसक मन उडन चलावहिँ ॥
जो न छुद्र बेसंत जानि सिंधुहिँ जलधारहिँ ।
प्लवग जो न हनुमंत मलप लखि फाल सम्हारहिँ ॥
जो रामरावराजेंद्र लखि इतरभूप राज्य न धरैँ ।

कवि (सूर्यमल्ल) ने अग्नि वंश की उत्पत्ति का ग्रंथ (रचना) आरंभ किया। ८६।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में सृष्टि रचना से लेकर प्रलय पर्यन्त समय के जनाने पूर्वक ग्रंथ के प्रारंभ समय का लग्न पञ्चाङ्ग स्पष्ट करके ग्रहों का स्थान जनाने का नवमा मयूख समाप्त हुआ ॥

कवि (सूर्यमल्ल) ने मेष राशि (मेष राशि पर सूर्य और मंगल का आना शुभ है सोही यहां पर है) लग्न, शकुन, ग्रह ये सब अनुकूल ले, गुरु और देवताओं को नमस्कार करके इस ग्रंथ [वंशभास्कर] का प्रारंभ किया ॥ १ ॥ यद्यपि मेरी बुद्धि तीव्र नहीं है तौ भी यह ग्रंथ बनाता हूं, क्योंकि एक तौ राजा की आज्ञा और दूसरा कवियों के कुल के जीवन का मार्ग ही यही है। २। यदि चन्द्रमा को देखकर जुगनू [आग्या] चमक न दिखाता हो, गरुड़ की गति को देखकर मच्छर उडने का मन नहीं करता हो, समुद्र को जानकर छोटे तालाब जल को धारण नहीं करते हों, हनुमान की फलांग को देखकर बन्दर फलांग नहीं लेते हों, और रावराजेन्द्र रामसिंह [बुंदीपति चाहुवाण] को देखकर दूसरे राजा राज्य धारण न करते हों तो सूर्यमल्ल कवि भी कुल की रीति को छोड़कर तुच्छ कविता न करै, अर्थात् ऊपर कहे हुए दृष्टांतों से यहां

कुलरीति छंडि रविमल्ल कवि तो न छुद्र कविताधरैं ॥ ३ ॥

दोहा

कोलौं निज मांदव कहौं, मैं कवि कोबिद दास ।
छमहु सुकवि अपराध यह, करहु न मम उपहास ॥ ४ ॥
जे विद्या गुन बोध बिनु, रहत दंभ धरि चित्त ।
तिनसौं बिनती ग्रन्थ यह, न पढि बिगारहु मित्त ॥ ५ ॥
प्रथम समास रु ब्यासकरि, कहौं अनलकुल भव्य ।
पुनि सब बराबिद्या बिषय, जे अवश्य पठितव्य ॥ ६ ॥
अनलअन्ववायहिं किते, बरनत सौर बखानि ।
तेजतत्व एकत्व करि, नहिं बिरोध तँहँ जानि ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियत्रय३सहितचहुवाणोत्पत्तिसमसनम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ।

पुराऽभूद्गौतमस्यर्षेश्छात्र उत्तङ्कसाभिधः ।
गुरुं प्रोवाच सोऽधीत्य प्रोच्यतां दक्षिणा त्विति ॥ ८ ॥
गोतमेनोक्तमुत्तङ्कोपाध्यायी ते यदीहते ।

को देखकर छोटे अपनी कुलरीति के अनुसार अपना अपना कार्य करते ही रहते हैं तैसे ही मैं [ग्रंथकर्ता कवि सूर्यमल्ल] भी अपने कुल की काव्य करने की रीति को नहीं छोडकर उत्तमोत्तम काव्यों के रहते भी तुच्छ कविता करता हूं ॥ ३ ॥ कहांतक मैं अपनी मृदुता कहूं मैं कवि और पंडितों का दास हूं. हे श्रेष्ठकवियो! इस तुच्छ कावता रूपी मेरे अपराध को क्षमाकरके मेरी हसी मत करना ॥ ४ ॥ जो विद्या, गुण और ज्ञान के बिना ही अपने चित्त में घमंड भरकर रहते हैं तिनसे मेरी बिनती है कि हे मित्रो! इस ग्रन्थ को पढ़कर मत बिगाड़ना ॥५॥ प्रथम तो संक्षेप से फिर विस्तार करके श्रेष्ठ अग्निवंश को कहूंगा. फिर जो अवश्य पढ़ने योग्य सब श्रेष्ठ विद्याओं के विषय है उनको कहूंगा ॥ ६ ॥ कितने ही लोग अग्निवंश को सूर्यवंश कहकर वर्णन करते हैं उसमें भी तेजतत्व एक होने से, अर्थात् तेज रूप से सूर्य और अग्नि एक ही है, कुछ विरोध नहीं जानना ॥ ७ ॥

अब तीन क्षत्रियों के साथ चहुवाण की उत्पत्ति का संक्षेप से वर्णन है

पहले गोतम ऋषि का शिष्य उत्तंक नामक हुआ, उसने पढ़कर दक्षिणा

तद्दीयतामिति श्रुत्वा सोऽप्यहल्यां व्यजिज्ञपत् ॥ ९ ॥
तयोक्तं कुण्डले राज्ञा भूभृत्सौदासवर्म्मणः ।
दक्षिणा दीयतां वत्सेति नियुक्तो ययौ नृपम् ॥ १० ॥
हार्दे निवेदिते राज्ञाज्ञप्तः शुद्धान्तमेत्य सः ।
ययाचे कुण्डले राज्ञीं तस्मै साप्यवदत्सती ॥ ११ ॥
अब्रवीदपि सोत्तङ्कं शचीष्टे कुण्डले इमे ।
रक्ष्येतां तक्षकाद्ब्रह्मन्प्रमादेनेष्यति च्छली ॥ १२ ॥
सोपि प्रतस्थ ओमुक्त्वाऽध्वन्येनं नियतेर्बलात् ।
बुभुक्षोग्रा समुत्पन्ना प्रमत्तीकृतवत्यरम् ॥ १३ ॥
श्रीफलं सफलं वीक्ष्याऽऽरुरोह तमसौ द्विजः ।
स्थापयित्वाऽवनौ बध्वा कुण्डले स्वाऽजिनाञ्चले ॥ १४ ॥
तदैव कुण्डलान्वेषी तक्षकः समुपागमत् ।
नीत्वा प्रसह्य तेऽधावत्सत्वरो दक्षिणामुखः ॥ १५ ॥
अवतीर्य द्विजो बिल्वाद्यावत्तमनुधावति ।
तावत्प्रविश्य भूमौ सोऽप्यगच्छद्वडवामुखम् ॥ १६ ॥

केलिये गुरु से कहा ॥८॥ गोतम ने कहा, हे उत्तंक तेरी गुरानी जिस वस्तुकी इच्छा करती है वह दे. यह सुनकर उस उत्तंक ने अहल्या से कहा ॥९॥ अहल्या ने कहा. हे पुत्र ! राजा सौदासवर्मा की रानी के कुण्डल दक्षिणा में दे इस रीति प्रेरित होकर राजा के पास गया ॥ १० ॥ अभिप्राय जताने पर राजा की आज्ञा से इस उत्तंक ने जनाने में जाकर रानी से कुण्डल मांगे, उस पतिव्रता रानी ने भी उसको दे दिये ॥ ११ ॥ और उसने उत्तंक से यह भी कह दिया था कि इंद्राणी के प्रिय इन कुंडलों को हे ब्राह्मण ! तक्षक नाग से बचाना. यदि तुम असावधान रहोगे तो वह छली ले जायगा ॥ १२ ॥ वह उत्तंक भी इस बात को स्वीकार कर चला, मार्ग में प्रारब्धवश इसको अत्यन्त भूख लगी सो क्षुधा ने उत्तंक को असावधान कर दिया ॥ १३ ॥ यह ब्राह्मण फलों युक्त बील के वृक्ष को देखकर कुण्डलों को अपनी मृगछाला के कोने में बांध. भूमि पर धरकर. उस वृक्ष पर चढ गया ॥ १४ ॥ उसी समय कुंडलों को खोजनेवाला तक्षक आगया और अचानक कुंडलो को लेकर दक्षिण को दौड चला ॥ १५ ॥ वह ब्राह्मण बील के वृक्ष से उतर उसके पीछे दौडा इतने

उत्तङ्कः काष्ठमादाय प्रारेभे खननं भुवः ।
नाभिन्त भूस्ततः शक्रो ह्रादिनीं प्राहिणोदरम् ॥ १७ ॥
पविराखण्डलाज्ञप्तस्तत्काष्ठं प्राविशत्तदा ।
आपातालं चखानोर्वीं चक्रेऽध्वानं द्विजोचितम् ॥ १८ ॥
तेनाऽधोभुवनं गत्वा दृष्ट्वा चित्राण्यनेकशः ।
नागानग्निबलाज्जित्वोत्तङ्कस्ते आप कुण्डले ॥ १९ ॥
ततःसस्वरुनिर्भिन्नश्वभ्रमासीन्महीतले ।
विशश्राम वशिष्ठर्षिः कदाचित्तदुपस्थले ॥ २० ॥
तत्रर्षेर्नन्दिनीधेनुर्विचरन्ती क्वचिद्दिने ।
वैदूर्य्यसुहरित्तृणया लोभमुष्टाऽवटेऽपतत् ॥ २१ ॥
याते तदागमाऽनेहस्यत्तमालोदितः प्रभुः ।
अन्वेष्टुं निर्ययावुच्चैर्नन्दिनीति समाह्वयन् ॥ २२ ॥
श्रुत्वा स्वामिस्वनं चक्रे सा हम्भारवमर्ज्जुनी ।
ततस्तामेत्य मुनिना गङ्गानावीशशेखरा ॥ २३ ॥
आविरासावटात्सापि प्रस्तुता परदेवता ।

में वह तक्षक भूमि में घुसकर अपने लोक (नागलोक) में चलागया ॥ १६ ॥ उत्तंक एक लकड़ी ले पृथिवी को खोदने लगा परन्तु पृथ्वी नहीं खुदी तब इंद्र ने शीघ्र ही वज्र दिया ॥ १७ ॥ और इंद्र की आज्ञा से वह वज्र उस लकड़ी के लग गया, तब भूमि को पाताल पर्यन्त खोद डाला और उस ब्राह्मण के जाने योग्य मार्ग कर दिया ॥ १८ ॥ उस मार्ग से पाताल में जाय, अनेक आश्चर्य देख, अग्नि के बल से सर्पों को जीत, उत्तंक ने वे कुंडल लिये ॥१९॥ तब से वह वज्र से खुदा हुआ बिल (खड्डा) पृथिवी में रहा, किसी समय वसिष्ठ ऋषि ने उस स्थल के समीप विश्राम किया ॥ २० ॥ तहां पर ऋषि की नंदिनी नामक गाय किसी दिन फिरती हुई नील मणि के समान सुंदर हरे तृणों के लोभ से उस बिल में पड़ गई ॥ २१ ॥ उस गाय के आने का समय आने पर अपनी स्त्री अक्षमाला के कहने पर प्रभु (वसिष्ठ) उच्च स्वर से नंदिनी इस नाम से पुकारते हुए गाय को ढूंढने गये ॥ २२ ॥ उस श्वेत गाय ने स्वामी का शब्द सुन, हंभार शब्द किया (रंभाई) तब उस गौ को प्राप्त हो शिव के मस्तक पर रहनेवाली गंगा की मुनि ने स्तुति की ॥ २३ ॥ उस गढ़े से स्तुति की हुई उत्कृष्ट देवता वह गंगा भी प्रकट हुई और अपने

स्वस्त्रोतोरंहसा रुद्धां सौरभेयीमतीतरत् ॥ २४ ॥
दृष्ट्वा तदाऽवटं घोरं विचारितमथर्षिणा ।
मया निष्कासिता शक्त्या गङ्गामाहूय नन्दिनी ॥२५॥
पततामवटेऽन्येषां क्व निष्कसनसंभवः ॥
तदिदं पूरणीयं मे श्वभ्रं केनचिदद्रिणा ॥ २६ ॥
इत्यालोच्य हिमप्रस्थं जगामारुन्धतीधवः ॥
पुत्रमेकं ययाचे तं गर्त्तपूर्त्यै कुलाचलम् ॥ २७ ॥
मेनेऽनेनर्षये पुत्रः पङ्गुर्नन्दी निवेदितः ॥
अर्बुदाहिमधिष्ठाप्यानयत्स तमुपाश्रमम् ॥ २८ ॥
तेनर्षिः पूरयाञ्चक्रे खातं सर्वहिते रतः ॥
निमग्नोऽद्रिरसौ खातेऽवशिष्टा तस्य नासिका ॥२९॥
ततोऽयमर्बुदो नाम्ना प्रख्यातो भुवि पर्वतः ॥
अरण्यनवके९ गण्यस्तीर्थरूपः शिवालयः ॥३०॥
वशिष्ठेन ततस्तत्रानुष्ठिताः शतशोऽध्वराः ॥
तीर्थानि देवताः सर्वाः स्थापिताश्चोत्तमे गिरौ ॥३१॥
अथो वैवस्वताऽभिख्ये संलग्ने सप्तमे७ मनौ ॥

स्रोत के वेग से रुकी हुई गाय को तिराया ॥ २४ ॥ तब बड़े भारी गढ़े को देखकर ऋषि ने विचारा कि मैंने तो शक्ति से गंगा को बुलाकर नंदिनी को निकास लिया है ॥ २५ ॥ परन्तु इस गढ़े में और गिरेंगे तिनके निकसने की क्या संभावना है इस कारण से इस खड्डे को किसी पर्वत से मुझे भर देना चाहिये ॥ २६ ॥ ऐसा विचारकर अरुंधती का पति हिमालय के पास गया और गढ़ा भरने के हेतु उस कुलाचल से एक पुत्र मांगा ॥ २७ ॥
उस पर्वत ने माना कि ऋषि के अर्थ नंदी नामक पाँगला (चरण रहित) पुत्र भेट करूं. वह ऋषि अर्बुद नामक सर्प पर चढ़ा कर नंदी पर्वत को अपने आश्रम के पास लाया ॥ २८ ॥ सब का कल्याण करनेवाले ऋषि ने उस पर्वत से उस खड्डे को भर दिया, यह पर्वत खड्डे में डूब गया जिसकी नासिका बाकी रही ॥ २९ ॥ तब से यह पर्वत पृथिवी पर अर्बुद नाम से प्रसिद्ध हुआ और नव अरण्यों (वनों) में गिना गया और तीर्थ रूप शिवालय हुआ ॥३०॥ तब वसिष्ठ ने वहां पर सैकड़ों यज्ञ किये और इस उत्तम पर्वत पर संपूर्ण देवता और तीर्थ स्थापित किये ॥ ३१ ॥ इस के आगे वैवस्वत नामक सातवाँ

तद्भुक्तानां युगानां चाऽतीतानां सप्तविंशतौ२७॥ ३२ ॥
अष्टाविंश२८युगस्यापि द्वयो२रङ्घ्र्योर्व्यतीतयोः ॥
तृतीय३स्यार्वषड्वेदाऽभ्रतर्केभा८६०४६७ब्दसंचये ॥ ३३ ॥
द्वापरस्य गते शिष्टे त्र्यग्नीषुगुणा३५३३संमिते ॥
प्रवृत्तोतिदुराचारो दैत्यहेतुर्महीतले ॥ ३४ ॥
दैत्यराड्बाणसूनू द्वौ२वशिष्ठस्य महामखे ॥
धूम्रकेतु१श्च जम्भ२श्च प्रत्यूहं ह्यन्वतिष्ठताम् ॥३५॥
तत्क्रुद्धेन वशिष्ठेन ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥
अन्ये चेन्द्रमुखा देवा आनीता अर्बुदं गिरिम् ॥ ३६ ॥
प्रार्थितेन ततो धात्रा मृत्युमुद्दिश्य दैत्ययोः ॥
उदपादि ज्वलद्वह्नेः कुण्डात्क्षत्रचतुष्टयम्४ ॥ ३७ ॥
पूर्वं प्रादुरभूत्तत्र क्षत्रियः पीनविग्रहः ।
प्रतिहार१इति ख्यातो नाम्ना सौम्यान्तरिन्द्रियः ॥ ३८ ॥
पुण्डरीकसगोत्रोसौ यजुर्वेदः सुलक्षणः ॥
ताभ्यां माध्यन्दिनीशाखश्चक्रे त्रि३प्रवरो रणम् ॥ ३९ ॥
उल्मुकच्छर्द्दिनं१ दैत्यं सूचीलोमानमुद्धतम् ॥

---

७ मनु लगने पर और उसके भोगने के सत्ताईस युग बीतने पर ॥ ३२ ॥ अ-ट्ठाईसवें युग के दो चरण व्यतीत होकर तीसरे चरण (द्वापर) युग के आठ लाख साठ हजार चार सौ सड़सठ वर्ष बीत कर ॥ ३३ ॥ तीन हजार पांच सौ तेतीस वर्ष बाकी रहते पृथिवी पर दैत्यों का किया हुआ अत्यन्त दुराचार फैला ॥ ३४ ॥ दैत्यों के राजा बाण के दो बेटे धूम्रकेतु और जंभ ने वसिष्ठ के बड़े यज्ञ में विघ्न किया ॥ ३५ ॥ उन पर क्रोध कर वासिष्ठ ने ब्रह्मा, विष्णु महेश और इंद्रादि अन्य देवताओं को अर्बुद पर्वत पर बुलाया ॥ ३६ ॥ तब प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने उन दोनों दैत्यों की मृत्यु को विचार कर जलते हुए अग्निकुंड से चार क्षत्रिय उत्पन्न किये ॥ ३७ ॥ उनमें प्रथम पुष्ट शरीरवाला, सौम्य है अंतःकरण और इंद्रियां जिस की ऐसा प्रतिहार नाम से प्रसिद्ध क्षत्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ३८ ॥ इस (प्रतिहार) पुण्डरीक गोत्र, यजुर्वेद, त्रिप्रवर, माध्यन्दिनी शाखावाले सुलक्षण पुरुष ने उन दोनों दैत्यों से संग्राम किया ॥ ३९ ॥ इस क्षत्रिय ने अंगारे उगलनेवाले सूचीलोम(सूई सरीखे केशवाले)

अन्यांश्चाजौ जघानायं दैतेयाञ्छस्त्रशालिनः ॥ ४० ॥
तथापि नाशकद्धन्तुं द्वौ२तौ दोर्दण्डदुर्मदौ ॥
यतमानोपि दुष्टाभ्यां प्रहारैः प्रापितोऽस्मृतिम् ॥ ४१ ॥
क्षत्रियास्तत्कुलोद्भूताः ख्यातिं जग्मुर्महीतले ॥
तन्नामाङ्कितया जात्या पडिहारा१ इतीरिताः ॥ ४२ ॥
उदभावि ततो धात्रा द्वितीयः२क्षत्रियोत्तमः ॥
चालुक्यश्चालुको२नाम्ना चुलुक्यश्चौलुकस्तथा ॥
भारद्वाजसगोत्रोयं यजुर्वेदो महाभुजः ॥
वीरो माध्यन्दिनीशाखश्चक्रे त्रि३प्रवरो रणम् ॥ ४४ ॥
वृष्ट्वा पार्शत्कमासारं चुलुक्यः शौर्यसागरः ॥
दानवाञ्छूककर्णादीन्मर्दकादींश्च सोऽवधीत् ॥ ४५ ॥
नाभिभूतौ ततोप्येतौ दैतेयौ समिदुत्कटौ ॥
जितवन्तौ तमप्याशु प्रहारैरतिदारुणैः ॥ ४६ ॥
तदन्ववायसम्भूता अभूवन्क्षत्रिया भुवि ॥
कथिताश्चालुका२जात्या सर्वैःसोलङ्किनस्तथा ॥ ४७ ॥
ततो रमेशरुद्राभ्यामाज्ञप्तेन विरिञ्चिना ॥

विकट दैत्य और अन्य शस्त्रकुशल दैत्यों को मारा ॥ ४० ॥ तौ भी भुजबल से मदोन्मत्त उन दोनों (धूम्रकेतु और जंभ) को मारने के लिये समर्थ नहीं हुआ और यत्न करने पर भी उन दुष्टों के प्रहार से मूर्छित हुआ ॥ ४१ ॥ उसके कुल से पैदाहुए क्षत्रिय उसीके नाम की जाति से पड़िहार कहानेवाले प्रसिद्ध हुए ॥ ४२ ॥ तब ब्रह्मा ने क्षत्रियों में उत्तम चालुक्य, चालुक, चुलुक्य और चौलुक इन नामों से दूसरा क्षत्रिय पैदा किया ।४३। भारद्वाज गोत्र, यजुर्वेद, माध्यन्दिनी शाखा और त्रिप्रवरवाले महाबाहु इस वीर ने संग्राम किया ॥ ४४ ॥ इस वीरता के समुद्र चुलुक्य ने पार्शत्क बाणों की वृष्टि वरसा कर शूककर्णादि और मर्दकादि दानवों को मारा ॥ ४५ ॥ तौ भी संग्राम में विकट रहनेवाले वे दोनों दैत्य नहीं हारे और अतिकठोर प्रहारों से इस क्षत्रिय को जीतलिया ॥ ४६ ॥ उसके कुल से पैदाहुए क्षत्रिय पृथ्वी में सब चालुक कहाये और जाति से सोलंखी हुए ॥ ४७ ॥ तब विष्णु और शिव की प्रेरणा से ब्रह्मा ने वशिष्ठ के हित की इच्छा से तीसरा क्षत्रिय

भूय आविरभाव्यन्यो वशिष्ठेष्टचिकीर्षुणा ॥ ४८ ॥
प्रमारः१परमारो२यं प्रामार३श्च समाख्यया ॥
वशिष्ठगोत्रसंपन्नो यजुर्वेदो रणोत्सुकः ॥ ४९ ॥
सोपि माध्यन्दिनीशाखो वीरस्त्रि३प्रवरो युधि ॥
कङ्कालादोष्ट्रकग्रीवकोलदंष्ट्रादिकानहन् ॥ ५० ॥
तुमुलं च महच्चक्रे तथापीन्द्रारिराट्सुतौ ॥
नाशकत्तौ खलौ जेतुं प्रत्युताऽभूत्प्रहारितः ॥ ५१ ॥
तदन्वयसमुद्भूताः क्षत्रिया ये धरातले ॥
प्रमाराः१परमारा२स्ते जात्या सर्वैः प्रकीर्त्तिताः ॥ ५२ ॥
ततोतिक्रूरयाऽऽहुत्या हव्यं प्रक्षिप्य पावके ॥
उदपादि चतुर्थो४यं वीरः क्रुद्धमना बली ॥ ५३ ॥
आजानुलम्बदोर्दण्डोऽस्यऽसिशक्तिगदायुधः ॥
तप्तकाञ्चनसङ्काशश्चण्डवीर्यश्चतुर्भुजः ॥ ५४ ॥
सामवेदस्तथापञ्चप्रवरो वत्सगोत्रभृत् ॥
संनद्धः कौथमीशाखः सङ्ग्रामोद्धतसाहसः ॥ ५५ ॥
आपन्वान्१जामदग्न्य२श्च च्यवनो३ भार्गव४स्तथा ॥
और्वः५पञ्चम५इत्येताश्चण्डासिप्रवराभिधाः ॥ ५६ ॥

फिर पैदा किया ॥ ४८ ॥ यह क्षत्रिय प्रमार, परमार और प्रामार इन नामों से वाशिष्ठ गोत्र, यजुर्वेदवाला रण में उत्साही हुआ ॥ ४६ ॥ उस माध्यन्दिनी शाखा और त्रिप्रवरवाले वीर ने संग्राम में कंकालाद, उष्ट्रग्राव और कोलदंष्ट्र आदि दैत्यों को मारा ॥ ५० ॥ बड़ा भारी संग्राम किया तौ भी वे दोनों दुष्ट दैत्यराज के पुत्र जीतने में नहीं आये उलटा यह प्रमार घायल हुआ ॥ ५१ ॥ उस के वंश के भूतल में जो क्षत्रिय हैं वे प्रमार जाति से कहाये ।५२।तब क्रूर आहुति से अग्नि में होम कर क्रोधीमनवाले,बली शूरवीर चौथे क्षत्रिय को उत्पन्न किया ॥ ५३ ॥ यह क्षत्रिय आजानुबाहु, खड्ग चक्र बरछी और गदा इन आयुधोंवाला,तपेहुए सोने के समानदीप्तिमान्,प्रचण्ड पराक्रमी, चतुर्भुज, सामवेद, कौथमी शाखा, पञ्चप्रवर और वत्स गोत्र धारण करनेवाला, शस्त्रधारी, संग्राम में बड़ा साहसी जिस चण्डासि क्षत्रिय के आपन्वान्, जामदग्न्य, च्यवन, भार्गव और और्व ये पांच प्रवरों के नाम हैं, सब लोग

चह्वाण४श्चहुवाणो४सौ चुहाण४श्च चतुर्भुजः ॥
चौहाण४श्चापि चण्डासिः४प्रोक्तः सर्वैरभिख्यया ॥ ५७ ॥
अभिषिक्तोऽखिलैर्देवैर्विधिपूर्वं नृपोत्तमः ॥
स उल्बणाभिसंपाते रेमे दुर्गासहायवान् ॥ ५८ ॥
अभेद्यं वपुरासाद्याखिलसूतेः प्रसादतः ॥
स्वशक्तिमाश्रितां स्तुत्वाऽऽशापूरां शत्रुशातिनीम् ॥ ५९ ॥
शक्त्या धूम्रध्वजं१बाणैश्चतुर्भिर्यन्त्रकेतनम्२ ॥
अयं निपातयाञ्चक्रे प्रभुः शौण्डीर्यभूषणः ॥ ६० ॥
तालहस्तं३करालास्यं४कीलजिह्वं५न्हदोदरम्६ ॥
रीतिनेत्रं७महादैत्यं शूलिकं८शैलनासिकम् ९ ॥ ६१ ॥
प्रहारपातनैरेतांश्चण्डासिरसुरानहन् ।
सुरकेशिहिडम्बाद्या अभवन्विपलायिनः ॥ ६२ ॥
तत इन्द्रादयो देवाश्चहूवाणमपूजयन् ।
ववृषुः कुसुमासारं ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ६३ ॥
तुष्टुवुश्चारणाः सिद्धा विद्याधरमयूरगाः ।
हाहादयो जगुः कीर्त्तिं गन्धर्वास्तस्य भूपतेः ॥ ६४ ॥

जिसको चन्हाण, चहुवाण, चुहाण, चतुर्भुज, चउहाण और चंडासि इन नामों से कहते हैं ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इन चार श्लोको का कुलक है ॥ सब देवताओं ने विधि पूर्वक इस उत्तम राजा का अभिषेक किया वह दुर्गा की सहायता से संग्राम में स्पष्ट क्रीड़ा करनेलगा॥५८॥संपूर्ण को पैदा करनेवाली शक्ति की कृपा से अभेद्य शरीर को प्राप्त होकर शत्रुओं का नाश और आशा पूर्ण करनेवाली अपनी सहायक शक्तिकी स्तुति करके ॥५९॥ पराक्रम ही है भूषण जिसके ऐसे प्रभु ने बरछी से धूम्रध्वज को और चार बाणों से यंत्रकेतन को मारा ॥ ६० ॥ यह दो श्लोकों का युग्म है ।, चंडासि ने हस्नताल, करालास्य, कीलजिह्व, न्हदोदर, रीतिनेत्र, महादैत्य शूली और शैलनासिक इनको शस्त्रप्रहार से मारा. और सुर, केशी, हिडंबादि भागगये ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ यह युग्म है ॥ तब इंद्रादि देवताओं ने चहुवाण का पूजन किया, पुष्पों की वृष्टि की, और अप्सराओं का समूह नाचने लगा ॥ ६३ ॥ चारण, सिद्ध, विद्याधर, किन्नर और नाग प्रसन्न हुए. हाहा आदि गंधर्व उस राजा की कीर्त्ति गाने लगे ॥ ६४ ॥

अथ विष्णवीशब्रह्माणश्चण्डासिं सुरसेवितम् ।
इन्द्रप्रस्थाधिपत्ये तं तेऽभिषिच्य तिरोदधुः ॥ ६५ ॥
हेतिर्द्वितीय एषोपि प्रभुर्जित्वा चतुर्दिशः ।
इन्द्रपूस्थे चकारोच्चै राज्यं धर्मधुरंधरः ॥ ६६ ॥
एवं युष्मत्कुलोत्पादी रामसिंह धराधव ।
आविरासाऽर्बुदे राजा चहुवाणो१ऽग्निकुण्डतः ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ क्षत्रियत्रय३सहितचहुवाणजन्मवर्णनं नाम दशमो१० मयूखः ॥ १० ॥

अथ चहुवाणवंशसमसनम् ॥
गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

नृपचहुवाणा१ज्जज्ञे पुत्रः सामन्तदेव२इति नाम्ना ।
समरप्रचण्डभावात्प्रचण्ड इत्यप्युदीरितो लोकैः ॥ १ ॥
सामन्तदेवतोऽभून्नृपो महादेव३इत्यभिख्यावान् ।
परकदनतत्परत्वात्परभञ्जन३ इत्यपीरितः सर्वैः ॥ २ ॥
उदभूच्च महादेवान्महोन्तदेवो४ महीपतिर्नाम्ना ।
आर्द्राद्यङ्घ्रिभवत्वात्कुबेर४आपेत्यपि प्रसिद्धिं सः ॥ ३ ॥

इस पीछे ब्रह्मा, विष्णु, महेश उस सुरसेवित चंडासि का इंद्रप्रस्थ के आधिपत्य (स्वामीपन) का अभिषेक करके अन्तर्धान हो गये ॥ ६५ ॥ शस्त्र ही है दूसरा सहाय जिसके ऐसा होने पर भी इस धर्म धुरंधर प्रभु ने चार दिशाओं को जीत कर इंद्रप्रस्थ पर भली भांति राज्य जमाया ॥ ६६ ॥ हे पृथिवीपति रामसिंह ! आपके कुल को उत्पन्न करनेवाला आबू पहाड़ पर अग्नि कुंड से चहुवाण राजा इस रीति पैदा हुआ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में तीन क्षत्रियों के साथ राजा चहुवाण के जन्म के वर्णन का दशवाँ१०मयूख समाप्त हुआ ॥

अब चहुवाण वंश का संक्षेप से कहना है ॥ संस्कृत भाषा ॥

चहुवाण राजा के सामन्तदेव पुत्र हुआ, जिसको युद्ध में प्रचंड रहने के कारण लोगों ने प्रचंड भी कहा ॥ १ ॥ सामंतदेव के राजा महादेव हुआ जिसको शत्रुओं का नाश करने से सबने परभंजन कहा ॥ २ ॥ महादेव के महोन्तदेव हुआ, जो आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने से कुबेर भी

जज्ञे महोन्तदेवान्महीपतिर्बिन्दुसार५ आह्वातः ।
मन्त्रजयः५ स ख्यातो मन्त्रसहायो५ऽपि मन्त्रकुशलत्वात् ॥ ४ ॥
भूपालबिन्दुसारादजायत प्रविदितो भुवि सुधन्वा६ ।
अन्यौदार्यहरत्वादुदारहारो६ऽपि कीर्त्तितः कविभिः ॥ ५ ॥
भूपसुधन्वन उदभूत्स वीरधन्वा७समाख्यया ख्यातः ।
सुजनाशोककरत्वाद्योऽशोक७ इति प्रसिद्धिमपि लेभे ॥ ६ ॥
भूपालवीरधन्वन उत्पेदे शत्रुशूलजयधन्वा९ ।
षट्दतर्ककोविदत्वात्प्रथितः शङ्काविदार८इत्यपि सः ॥ ७ ॥
जयधन्वनोऽप्युदभवन्महीपतिर्वीरसिंह९ इतिनाम्ना ।
अविरतविजयकरत्वाद्विजयो९ऽपि स कीर्त्तितो महाकविभिः ॥८॥
जज्ञेऽथ वीरसिंहधरणिधवोऽभिख्ययापि वरसिंहः१० ।
तस्याऽपरा२समाख्या मारुत१०इत्यप्यरुद्धगमनत्वात ॥ ९ ॥
वरसिंहादुत्पेदे नरेश्वरो वीरदण्ड११ आख्यातः ।
यदपरनामसुमेरु११र्बभूव विदितोऽवनीतलेप्यखिले ॥ १० ॥
जज्ञेऽथ वीरदण्डादरिमन्त्रः१२स हि जयन्त१ उदया२ख्यः ।
माणिक्यराज्य१३ उदभूदरिमन्त्राच्छूर१३ इत्यपि समाह्वः ॥ ११ ।

कहाया क्योंकि ज्योतिष के मत से आर्द्रा के चार चरणों के नाम " कु, घ, ङ, छ " इन अक्षरों पर क्रम से आते हैं ॥ ३ ॥ महोन्तदेव के राजा बिन्दुसार हुआ जो मंत्र की सहायता से और मंत्र में कुशल होने से मंत्रजय कहाया ॥ ४ राजा बिन्दुसार के पृथिवी में प्रसिद्ध सुधन्वा हुआ, जिसको दूसरों की उदारता हर लेने के हेतु कवियों ने उदारहार भी कहा ॥ ५ ॥ राजा सुधन्वा के वीरधन्वा हुआ, जो सज्जन लोगों का शोक हरलेने से अशोक प्रसिद्ध हुआ ॥ ६ ॥ राजा वीरधन्वा के शत्रुओं का शूल जयधन्वा हुआ, जो छहों शास्त्रों में पण्डित होने से शंकाविदारक भी कहाया॥ ७ ॥ जयधन्वा के वीरसिंह हुआ, जो निरन्तर विजय करने से कवियों से विजय कहाया ॥ ८ ॥ वीरसिंह के वरसिंह हुआ, जो कहीं नहीं रुकने से मारुति कहाया ॥ ९ ॥ वरसिंह के वीरदंड हुआ, जो पृथ्वी में दूसरे नाम से सुमेरु कहाया ॥ १० ॥ वीरदंड के अरिमंत्र हुआ, जो जयंत और उदय कहाया, अरिमंत्र के माणिक्य

पुष्कर१४उदभूच्छूरात्स एव वा विजयपाल१४उभयाख्यः ।
नृपपुष्करतो जज्ञेऽसमञ्जस१५ इति प्रतिष्ठितसमाख्यः ॥ १२ ॥
असमञ्जसादुदभवन्नरेश्वरः प्रेमपूर१६आख्यातः ।
भूपोथ भानुराजः१७ समाख्यया प्रेमपूरतो जज्ञे ॥ १३ ॥
उदभूच्च भानुराजान्महीपतिर्मानसिंह१८इति नाम्ना ।
हनुमां१९श्च मानसिंहाज्जज्ञे स हि धर्मपाल१९इति विदितः ॥१४॥
नृपहनुमत उत्पेदे नरेश्वरश्चित्रसेन२० इतिसाह्वः ।
जज्ञेथ चित्रसेनान्नाम्ना शम्भु२१र्धराधवःख्यातः ॥ १५ ॥
शम्भोश्च महासेनो२२ऽतिर्द्रविणात्वात्स एव ऋद्धीशः२२ ।
सुरथ२३श्च महासेनात्सुरथादथ रुद्रदत्त२४ आह्वयतः ॥ १६ ॥
स हि भूपरुद्रदत्तो२४ विदितो भुवि कर्णपाल२४नाम्नाऽपि ।
जज्ञेथ रुद्रदत्ताद्धेमरथः२५ सेनपाल२५इत्यपि सः ॥ १७ ॥
हेमरथादुत्पेदे चित्राङ्गद२६ आख्यया धराधीशः ।
चित्राङ्गदादजायत चित्ररथ२७श्चन्द्रसेन२७उभयाख्यः ॥ १८ ॥
चित्ररथाद्बाह्लीकः२८स एव भुवि वत्सराज२८इति विदितः ।
धृष्टद्युम्नो२९जज्ञे बाह्लीकाद्वरुण२९इत्यपि स नाम्ना ॥ १९ ॥
धृष्टद्युम्नादुत्तम३०उत्तमतोऽभूत्सुनीक३१ आह्वयतः ।
उदभूद्भूपसुनीकात्सुबाहु३२रिति मोहनो३२पि च स एव ॥ २० ॥

राज हुआ, जो सूर भी कहाया ॥ ११ ॥ सूर के पुष्कर हुआ, जो विजयपाल कहाया, पुष्कर के असमंजस हुआ ॥ १२ ॥ असमंजस के प्रेमपूर, प्रेमपूर के भानुराज हुआ ॥ १३ ॥ भानुराज के मानसिंह और हनुमान हुए. मानसिंह के धर्मपाल ॥ १४ ॥ और हनुमान के चित्रसेन हुआ जो धर्मपाल का उत्तराधिकारी बना, चित्रसेन के शंभु ॥ १५ ॥ शंभु के महासेन जो अधिक धनवान् होने से ऋद्धीश कहाया, महासेन के सुरथ,उस के रुद्रदत्त॥१६॥ वही रुद्रदत्त पृथ्वी में करणपाल प्रसिद्ध हुआ, रुद्रदत्त के हेमरथ हुआ जो सेनपाल कहाया ॥ १७ ॥ हेमरथ के चित्रांगद, चित्रांगद के चित्ररथ हुआ जो चन्द्रसेन कहाया ॥ १८ ॥ चित्ररथ के बाल्हीक हुआ वही वत्सराज कहाया,बाल्हीक के धृष्टद्युम्न हुआ जो वरुण कहाया ॥१९ । धृष्टद्युम्न के उत्तम, उत्तम के

सुरथो३३भवत्सुवाहोः सुरथाद्भरतः३४सएवमदसेनः३४ ॥
अथसत्यकी३५भरततः सत्यक३५इति सात्विक३५श्च सत्र्या३ख्यः
शत्रुजि३६दथसत्यकिनः स हि केसरिदेव३६इत्यपि ख्यातः॥
शत्रुजितो विक्रम३७इति महीपतिर्विक्रमाच्च सहदेवः३८ ॥२२॥
शंतनुना दिग्विजये कौरवराजेन भीष्मजनकेन ॥
ऐन्द्रप्रस्थं राज्यं नीतं सर्वं जयश्च सहदेवात् ॥ २३ ॥
सहदेवेन च पौण्ड्रं कार्णाटं चाप्तमृद्धराज्ययुगम्२ ॥
तत्रैव राजधानी रचिता चहुवाणसंततितरणिना ॥ २४ ॥
सहदेवादुत्पेदेऽथ वीरदेवः३९स भीमसेनो३९ऽपि ॥
जज्ञेऽथ वीरदेवाद्वसुदेवः४०पुण्ड्रको४०ऽभिधाद्वयरभृत् ॥ २५ ॥
वसुदेवादुत्पेदे समाख्यया वासुदेव४१इति विदितः ॥
काशीराजसहायो युध्वा कृष्णेन योऽगमन्मुक्तिम् ॥ २६ ॥
जातोथ वासुदेवाद्रणधीर४२ इति प्रतिष्ठिताभिख्यः ॥
रणधीराच्छत्रुघ्न४३श्चहुवाणकुलप्रदीपको जज्ञे ॥ २७ ॥
शत्रुघ्नाच्च सुमेरुः४४ ख्यातः स हि शालिवाहनो४४ नाम्ना ।
कृतवर्म्मा४५थ सुमेरोर्जातः कृतवर्म्मणोप्यथ सुवर्म्मा४६ ॥२८॥

सुनीक, सुनीक के सुवाहु हुआ जो मोहन कहाया ॥ २० ॥ सुवाहु के सुरथ, सुरथ के भरत हुआ वही मदनसेन कहाया,भरत के सत्यकी जिसको सत्यक, सात्विक और सत्य भी कहते हैं ॥ २१ ॥ सत्यकी के शत्रुजित् सोही केसरीदेव कहाया, शत्रुजित् के विक्रम, विक्रम के सहदेव ॥ २२ ॥ कौरवों का राजा भीष्म के पिता शंतनु ने दिग्विजय किया तब सहदेव से इंद्रप्रस्थ का राज्य जीत लिया ॥ २३ ॥ तब चहुवाण कुल के सूर्य सहदेव ने पौण्ड्र और कर्णाटक देश के समृद्धिवाले दो राज्य लेकर राजधानी बनाई ॥ २४ ॥ सहदेव के वीरदेव जिसका दूसरा नाम भीमसेन हुआ, वीरदेव के वसुदेव हुआ जिसका दूसरा नाम पुंड्रक था ॥ २५ ॥ वसुदेव के वासुदेव प्रसिद्ध हुआ जिसने काशिराजकी सहायता से युद्ध करके श्रीकृष्ण से मुक्ति पाई (मारा गया) ॥ २६ ॥ वासुदेव के रणधीर, रणधीर के चहुवाण कुलदीपक शत्रुघ्न हुआ ॥ २७ ॥ शत्रुघ्न के सुमेरु, वही शालिवाहन कहाया, सुमेरु के कृतवर्मा, कृतवर्मा के सु-

उदभूच्च दिव्यवर्म्मा४७ सुवर्मणो दानरणदयावीरः।
नाम्नाथ यौवनाश्वो४८ नरेश्वराद्दिव्यवर्म्मणो जातः ॥२९॥
नृपतेश्च यौवनाश्वाद्धर्य्यश्व४९ इति प्रसिद्धिमानुदभूत्।
हर्य्यश्वादजपालः ५० स चक्रवर्त्ती समस्तशास्ताऽभूत् ॥३०॥
पूर्वरणादवशिष्टो दैतेयो रावणो हतोऽनेन।
पुष्करतीर्थसमीपं रचितं येनाजमेरनामपुरम् ॥ ३१ ॥
कृत्वाऽखिलदिग्विजयं जिगीषु५०रित्यपि स एव नाम्नाभूत्।
अभवंस्त्रयोदश१३ सुता अजपालात्तान् क्रमेण बुध्यस्व ॥३२॥
भग्दलन५१।१महासेनौ५१।२तथामहाबाहु५१।३भीमसेनौ५१।४च।
दृढधन्वा५१।५ ऽश्वपती५१।६अथ
नृपति५१।७ जगत्पति५१।८ सुकर्म५१।९नामानः ॥ ३३ ॥
भवदत्त५१।१० इन्द्रदत्तो५१।११
धनेश्वरो५१।१२विष्णुदत्त५१।१३ इति सर्वे ॥
अनुजा एषु द्वादश१२निहता बाल्ये हि जटमुखैरसुरैः॥ ३४ ॥
सुरथो३३भवत्सुबाहोःसुरथाद्भरतः३४ स एव मद्रसेनः३४।
रावणदैत्यविरोधा१त्प्रमतेः शापा२च्च नष्टमिद्धकुलम्।
त्रय३ आत्मजा उदभवन्मुख्यादजपालसूनुभटदलनात् ॥ ३५ ॥

र्मा ॥ २८ ॥ सुवर्मा के दान रण और दया में वीर दिव्यवर्मा हुआ, उसके यौवनाश्व हुआ ॥ २९ ॥ यौवनाश्व के विख्यात हर्यश्व, उसके सबका शासन करनेवाला चक्रवर्ती अजपाल हुआ ॥ ३० ॥ जिसने पहिले के संग्राम से बचेहुए दैत्य रावण को मारा और पुष्कर तीर्थ के समीप अजमेरनामक नगर बसाया (रामचंद्र ने मारा वह राक्षस रावण था यह दैत्य रावण उसके अतिरिक्त है) ॥ ३१ ॥ वहजीतने की इच्छावाला सम्पूर्ण दिग्विजय करके उसी अजयपाल नाम से प्रसिद्ध हुआ जिस के तेरह पुत्र हुए तिनके नाम क्रम से ये जानो ॥ ३२ ॥ भटदलन १ महासेन २ महबाहु ३ भीमसेन ४ दृढधन्वा ५ अश्वपति ६ नृपति ७ जगत्पति ८ सुकर्म ९ ॥ ३३ ॥ भवदत्त १० इंद्रदत्त ११ धनेश्वर १२ विष्णुदत्त १३ इन में से बारह तो बालक अवस्था में ही जटासुर आदि दैत्यों से मारेगये ॥ ३४ ॥ रावण दैत्य के विरोध से और प्रमति के शाप से समृद्ध कुल नष्ट हुआ परंतु अजपाल के ज्येष्ठ पुत्र भटदलन के तीन पुत्र हुए

ज्यायांस्तु लोहराजो५२।१ऽथ निम्मराजो५२।२ह्यनङ्गराज५२।३श्च।
तेषु द्वौ२ पूर्वभवौ दैतेयैरप्रजौ हतौ समिति॥ ३६ ॥
यौ चाहुवाणजननं धराऽमरत्रं धरेशधर्मधरम् ।
श्रीभटदलनतनूजौ रणरसिकौ मन्यते महापितरौ ॥ ३७ ॥
अभवत्तदा महीपतिरनङ्गराजो५२ हि राज्यमासाद्य ।
अभवन्ननङ्गराजाद्भीमाद्या एकविंशति२१स्तनुजाः ॥ ३८ ॥
भीम५३।१श्च धर्मपालो५३।२धर्मरतो५३।३रत्नपाल५३।४रुक्मरथौ३५।५
रुक्मेश५३।६रुक्मकोशौ५३।७
पृथ्वीपाल५३।८श्च रुक्मसेन५३।९श्च ॥ ३९ ॥
हरिभानु ५३।१० चन्द्रभानु ५३।११
भानु५३।१२जगद्भानु५३।१३सोमदत्ताश्च ।
जयचन्द्रो५३।१५ऽन्वयचन्द्रो५३।१६ ॥
देवीचन्द्र५३।१७स्त्रिलोकचन्द्र५३।१८श्च ॥ ४० ॥
अमर५३।१९श्च दीपचन्द्रो५३।२०
ऽखिलाऽनुजो ब्रह्मदत्त५३।२१ इति वीराः ॥
एषु ज्येष्ठाद्भीमाद्गोगो५४ऽभून्नागभूभृदवतारः ॥ ४१ ॥
गोगादथ शुभकर्णः५५शुभकर्णादुदयकर्ण५६इति साह्वः ।
जसकर्ण५७उदयकर्णाद्धरिकर्णो५८ऽजायताथ जसकर्णात्॥४२॥
हरिकर्णात्कीर्त्तीशः५९कीर्त्तीशाद्बालकृष्ण६०इति भूपः ।

॥ ३५ ॥ तिन में बड़ा तौ लोहराज १ दूसरा निम्मराज २ और तीसरा अनंगराज ३ इनमें पहिले दो तौ युद्ध में दैत्यों से विना संतान हुए ही मारेगये ॥ ३६ ॥ श्रीभटदलन के जिन दोनों रणरासिक पुत्रों को, ब्राह्मणों की रक्षा करनेवाला और राजाओं के धर्म को धारण करनेवाला चहुवाण वंश महापितर मानता है ॥ ३७ ॥ तब अनंग राज राज्य पाकर राजा हुआ, इस के भीम को आदि ले इक्कीस पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से मूल में स्पष्ट हैं उन में सब से छोटा ब्रह्मदत्त हुआ ॥ इन में सब से बडे भीम के शेषावतार गोग हुआ ॥ ४१ ॥ गोग के शुभकर्ण, उसके उदयकर्ण,उसके जसकर्ण, उसके हरिकर्ण ॥ ४२ ॥ हरिकर्ण के कीर्त्तीश, उसके बालकृष्ण, उसके महाप्रतापी

जातश्च बालकृष्णाद्धरिकृष्ण६१ इति ज्वलत्प्रतापमहाः ॥४३॥
हरिकृष्णादुत्पेदे समाख्यया रामकृष्ण६२ इति नृपतिः।
अथ रामकृष्णतो बलदेवो६३ बलदेवतश्च हरदेवः६४ ॥ ४४ ॥
भूयो जज्ञे भीमो६५ हरदेवाद्भीमतश्च सहदेवः६६।
सहदेवाच्चाजायत महीपती रामदेव६७ आह्वातः ॥ ४५ ॥
रामाद्वसुदेवो६८भूद्वसुदेवाच्छ्यामदेव६९ ईड्यगुणः।
श्यामाद्धरिदासो७०भूद्धरिदासादथ महीधरो७१ जातः ॥ ४६ ॥
उदभूच्च महीधरतो नरेश्वरो वामदेव७२ उच्चमनाः ॥
अथ वामदेवतः श्रीधर७३ इति धरणीधवः समुत्पेदे ॥ ४७ ॥
श्रीधरतो गङ्गाधर७४ इत्यथ गङ्गाधरान्महादेवः।७५।
शार्ङ्गधरो७६थ महादेवाच्छार्ङ्गधराच्च मानसिंहो७७ऽभूत् ॥ ४८ ॥
जातश्च मानसिंहाच्चक्रधरः७८ शत्रुजि७९ च्चक्रधरात्।
शत्रुजितो हलधर८० इति हलधरतोभून्महाधनु८१र्भूपः ॥४९॥
भूपश्च महाधनुषोऽजायत भुवि देवदत्त८२ इति विदितः।
श्रीदेवदत्ततोऽभूद्दामोदर८३ आख्यया जगज्जेता ॥ ५० ॥
दामोदरतो जज्ञे काशीनाथः८४ प्रसिद्धिमान्भूपः।
काशीनाथाल्लीलाधर८५इति दोर्दण्डदुर्जयो द्विषताम् ॥ ५१ ॥
लीलाधरतो धरणीधर८६इति धरणीधवः समुत्पेदे।
धरणीधराच्च रमणेशो८७भगवद्दास८८आस रमणेशात् ॥ ५२ ॥

हरिकृष्ण ॥ ४३ ॥ हरिकृष्ण के रामकृष्ण, उसके बलदेव, उसके हरदेव ॥४४॥ हरदेव के फिर भीम, उसके सहदेव, उसके रामदेव ॥ ४५ ॥ रामदेव के पीछे वसुदेव, उसके स्तुति योग्य गुणवाला श्यामदेव, उसके हरिदास, उसके महीधर ॥ ४६ ॥ उसके उदारचित्त नृपति वामदेव, उसके श्रीधर ॥ ४७ ॥ उस के गंगाधर, उसके महादेव, उसके शार्ङ्गधर, उसके मानसिंह ॥ ४८ ॥ उसके चक्रधर, उसके शत्रुजित, उसके हलधर, उसके महाधनु ॥ ४९॥ फिर देवदत्त, उसके जगत् को जीतनेवाला दामोदर ॥ ५० ॥ उसके प्रसिद्ध काशिनाथ, उसके भुजदंड से शत्रुओं को जीतनेवाला लीलाधर ॥ ५१ ॥ उसके धरणीधर, उसके रमणेश, उसके भगवद्दास ॥ ५२ ॥ उसके कृष्णदास, उसके चतु-

भगवद्दासादुदभूत्समाख्यया कृष्णादास८९इति राजा ।
जातश्च कृष्णादासाच्छिवदास९०श्चहुवाणकुचन्द्रः ॥ ५३ ॥
शिवदासाद्धरिपूर्णो९१देवीदास ९२स्तथैव हरिपूर्णात् ।
देवीदासाज्जातो धराधवः कर्म्मचन्द्र९३इति नाम्ना ॥ ५४ ॥
जज्ञेथ कर्म्मचन्द्रान्महीपती रामदास९४ओजस्वी ।
अथ च महानन्द९५इति प्रभुरभवद्रामदासतः ख्यातः ।५५।
तत एव महानन्दान्नष्टं कर्णाटवैषयिकराज्यम् ।
इति तेन महानन्देनाप्तो देशो रुमामहीगर्भः ॥ ५६ ॥
नगरे संभरनाम्नि स्कन्धावारो विनिर्मितस्तेन ।
तद्वंश्याः साम्भरिकाः सम्भरवाराश्च सम्भराश्चेति ॥ ५७ ॥
उदभूच्च महानन्दाद्धर्मधनो विष्णुदास९६इति नृपतिः ।
नाम्नाथ महारामो९७भूद्विदितो विष्णुदासतो भूपात् ॥ ५८ ॥
जातश्च महारामाद्रेवादासो९८नृपो द्विषद्दलनः ।
रेवादासाज्जातोऽमरसिंहो९९भरतखण्डगीतयशाः ॥ ५९ ॥
उत्पेदेऽमरसिंहाद्गङ्गादासो१००महीपतिर्विजयी ।
गङ्गादासाज्जातो यशोधनो मानसिंह१०१इति भूपः ॥ ६० ॥
मानाद्विश्वंभर१०२इति विश्वंभरतोप्यथ मथुरादासः १०३।
मथुरादासाज्जातो महीपतिर्द्वारकादिदास१०४इति ॥ ६१ ॥

वाणों में भूमि का चन्द्रमा शिवदास ॥ ५३ ॥ उसके हरिपूर्ण, उसके देवीदास, उसके कर्मचन्द्र ॥ ५४ ॥ उसके प्रतापी भूपति रामदास, उसके महानन्द इस राजा तक कर्णाटक देश में राज्य करनेवाले क्रम से राजा हुए ॥ ५५ ॥ राजा महानन्द ने कर्णाटक देश का राज्य नष्ट हो जाने से सांभर भूमि है बीच में जिसके ऐसा देश पाकर ॥ ५६ ॥ सांभर नामक नगर में राजधानी बनाई ॥ उसके वंश के सांभरिक, संभरवार और संभर कहाये ॥ ५७ ॥ महानंद के धर्मधन जिसका दूसरा नाम विष्णुदास था राजा हुआ, उसके महाराम महाराम के पीछे शत्रुओं का दलनेवाला देवदास, उसके अमरसिंह ॥५६॥ उसके विजयी गंगादास, उसके यश ही है धन जिसके ऐसा मानसिंह ॥ ६० । उसके विश्वंभर, उसके मथुरादास, उसके द्वारकादास॥ ६१ ॥ उसके माधव

तद्वारस्कादिदासान्माधवदासो१०५नरेश उत्पेदे ।
अभवच्चाथ सुदासो१०६माधवदासात्समिज्जयी भूपः । ६२
जाताः सुदासभूपाद्दश१०तनुजा वीरभद्र१०७।१ एष्वार्यः ।
अनुजः काशीनाथो१०७।२
मधुसूदन१०७।३वामनौ१०७।४मुरारि१०७।५श्च ॥ ६३ ॥
वाराह१०७।६हृषीकेशौ१०७।७
केशव१०७।८बलभद्र१०७।९कमलनयना१०७।१० श्च ।
कशीनाथा१७७।२दिनव९सुकुलं कतीनां स्थितं कियत्कालम्॥६४॥
वानस्थितमथावध्यऽतोऽत्र तत्तु प्रवृत्तिसंदेहः ।
ज्येष्ठाच्च वीरभद्राद्गोपाल१०८इति प्रसिद्धिसमुपेतः ॥ ६५ ॥
गोविन्ददास१०९एवं जातो गोपालतो महाराजात् ।
संभरनगराधीशः कीर्त्तिधनश्चाहुवाणवशांशुः ॥ ६६ ॥
गोविन्ददासतोऽसौ जज्ञे माणिक्यराज११०इति नाम्ना।
भारतवर्षजयित्वाद्विश्वपति११०र्योऽखिलैर्जनैः कथितः । ६७ ।
अथ हनुमत्सुग्रीवौ२जातौ माणिक्यराजतः सहजौ ।
ज्यायाननयोर्हनुमां१११।१स्त्यक्त्वा सम्भरमियाय पूर्वदिशम् । ६८ ।
स धनुर्बाणसहायो जित्वा प्राचीमुवास तत्रैव ।
गङ्गातटजुषि नगरे पाटलिपुत्रे ऽदद्य पटनाख्यम् ॥ ६९ ॥

दास, उसके संग्राममें जीतनेवाला सुदास, ये क्रम से राजा हुए ॥६२॥ सुदास के वीरभद्र को आदि ले दश पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से मूल में देखो काशीनाथ को आदि ले कमलनयन पर्यन्त नवों में किनका कितने समय तक कुल रहा अथवा न रहा इस वृत्तांत का आजतक संदेह है, परंतु बड़े वीरभद्र के प्रसिद्ध गोपाल हुआ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इस रीति महाराज गोपालके, कीर्ति ही है धन जिसके ऐसा चहुवाण वंश का सूर्य सांभर नगर का पति गोविन्ददास हुआ ॥ ६६ ॥ गोविन्ददास के माणिक्यराज हुआ जो भारत वर्ष को जीत लेने से विश्वपति कहलाया ॥ ६७ ॥ माणिक्यराज के हनुमान और सुग्रीव ये दोनों जोड़ले (साथ उत्पन्न होने वाले) पुत्र हुए, इन में बड़ा हनुमान सांभर को छोड़कर पूर्वदिशा में गया ॥ ६८ ॥ वह धनुष बाण की सहायता से पूर्वदिशा को जीतकर वहीं रहा, और गंगा

तत्रत्यमाप्य राज्यं छत्रेणैकेन सोऽतपत्प्राच्याम् ।
तत्कुलपरंपरायां नाम्ना नृप आस विक्रमादित्यः ॥ ७० ॥
तस्माद्विक्रमराजाच्चन्द्रावत्यां बभूव भूपालः ।
नाम्ना वैजलदेवः पण्डितमणिरखिलशास्त्रपारगतः । ७१ ।
श्रीमद्वैजलदेवादजायत श्रीहिराधरो भूपः ।
सर्वे पूर्वभवत्वात्तत्कुलजाः पौर्विका१इति ख्याताः ॥ ७२ ॥
तेष्वार्य१।१वीर१।२मुख्या एकत्रिंश३१द्भिदोऽभवन्मुख्याः ।
एका१पि भिदाऽतः प्राग्भिन्नकुला न श्रुतोपटङ्कान्या॥ ७३ ॥
अपरोथ हनुमदनुजः सुग्रीवः१११।२सम्भरेऽभवद्भूपः ।
अथसुग्रीवादङ्गद११२इति जातः केसरी११३तथाङ्गदतः॥७४॥
केसरिणश्च जयन्तो११४नृपाज्जयन्ताद्बभूव जगदीशः११५।
जगदीशाज्जयरामो११६जयरामाद्विजयराम११७इति विदितः । ७५।
कृष्णो११८थ विजयरामात्कृष्णाज्जितयुद्ध११९इत्यभिख्यावान् ।
जितयुद्धादुत्पेदे भूपो गोवर्द्धनो१२०महेष्वासः ॥ ७६ ॥
गोवर्द्धनतो मोहन१२१इति मोहनतश्च गिरिधरो१२२जातः।
गिरिधरतउदयरामः१२३सउद्यमा१२३ख्योऽप्युपायशीलत्वात् ।७७।
जज्ञेथोदयरामाद्भरतो१२४भरतात्तथाऽर्जुनो१२५जातः ।

के किनारे से मिला हुआ पाटलीपुत्र जिसको पटना कहते हैं ॥ ६९ ॥ व- हां का राज्य पाय एक छत्र से पूर्व में तपा, उसकी वंश परंपरा में राजा वि- क्रमादित्य हुआ ॥ ७० ॥ उस विक्रमादित्य के चंद्रावती नगरी में संपूर्ण शा- स्त्रों में पारंगत पण्डित शिरोमणि वीजलदेव नामक राजा हुआ ॥ ७१ ॥ बी- जलदेव के हिराधर नाम राजा हुआ, उसके कुलवाले पूर्व देश में होने के का- रण सब पूरबिया (पूरब्या चहुवाण) कहाये ॥ ७२ ॥ उन में आर्य और बी- रता में प्रधान इकतीस मुख्य भेद हुए परंतु आज पहिले कुल को जुदा जनाने- वाली दूसरी (पूरब्या चहुवाण के सिवाय) एक भी पदवी नहीं सुनी ॥७३॥ अब दूसरा हनुमान का छोटा भाई सुग्रीव सांभर में राजा हुआ उसके अंग- द हुआ जिस पीछे केसरी, जयन्त, जगदीश, जयराम, विजयराम, ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ कृष्ण, जितयुद्ध, महापराक्रमी गोवर्धन ॥ ७६ ॥ मोहन, गिरिधर, उद- यराम, जो उपाय में कुशल होने के कारण उद्यम कहाया ॥७७॥ भरत, अर्जुन,

शत्रुजि१२६दर्जुनतोऽभूच्छत्रुजितः सोमदत्त१२७इति नृपतिः ॥७८॥
उदभूच्च सोमदत्ताद्दुःखन्तो१२८भीम१२९इति च दुःखन्तात् ।
भीमाल्लक्ष्मण१३०उदभूल्लक्ष्मणातः परशुराम१३१इति नृपतिः ॥७९॥
जातोथ परशुरामान्मद्यसखोऽभिख्ययैव रघुरामः१३२ ।
तं जित्वा प्रतिहाराः सजनपदं सम्भरं नगरमनयन् ॥ ८० ॥
उत्पेदेऽथ सुरापाद्रघुरामात्समरसिंह१३३ इति वीरः ।
अभवच्च समरसिंहाद्भूयो माणिक्यराज१३४इति साह्वः ॥ ८१ ॥
स विजित्य प्रतिहारानभजत्पुरि सम्भरे पुना राज्यम् ।
नाहरराजः१३४ कथितो द्वितीयनाम्ना स एव विजयित्वात्॥८२॥
दश१०पुत्रा उदभूवन्नृपतो माणिक्यराजतस्तस्मात् ।
ज्येष्ठस्तेषु मुहुःकर्म्मा१३५।१यो दामोदरो१३५।१प्यपरनाम्ना॥८३॥
अनुजाश्च लालसिंहो१३५।२
हरिसिंहो१३५।३प्याख्ययाथ शार्दूलः१३५।४ ।
ज्ञेयश्च पर्णराजो१३५।५
मौक्तिकराज१३५।६ स्तथैव निर्वाणः१३५।७ ॥ ८४ ॥
अपि तदनु कृष्णराजो१३५।८
ऽथलशुनराजः१३५।९ प्रवालराज१३५।१०।श्च ।
माणिक्यराजपुत्राः क्रमत इमे जज्ञिरे दश१० सगर्भ्याः ॥८५॥
एतेषु मुहुःकर्म्मा१३५स ज्येष्ठः सम्भराधिपत्यमितः ॥

शत्रुजित्, सोमदत्त ॥ ७८ ॥ दुःखन्त, भीम, लक्ष्मण, परशुराम ये क्रम से राजा हुए ॥ ७९ ॥ परशुराम के मद्यपी (बहुत मद्य पीनेवाला) रघुराम हुआ जिसको जीतकर पड़िहार क्षत्रियों ने देश सहित सांभर का राज्य लेलिया ॥ ८० ॥ सुरापी रघुराम के वीर समरसिंह, उस के माणिक्यराज हुआ ॥८१॥ जिसने पड़िहारों को जीतकर सांभर नगर में पीछा राज्य किया, वही विजय करने के कारण दूसरे नाम से नाहरराज कहाया ॥ ८२ ॥ माणिक्यराज के मुहुःकर्मा जिसका दूसरा नाम दामोदर हुआ, इस को आदि ले सहोदर दश पुत्र हुए, जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ८३ । ८४ । ८५ ॥ इन में बड़ा मुहुःकर्मा सांभर का पति हुआ, उसने माणिक्यराज के सींचे हुए धर्म वृत्तों

माणिक्यराजसिक्तं ररक्ष धर्मद्रुमं प्रभुः परितः ॥ ८६ ॥
दोर्दमितमद्रदेशे स लालसिंह१३५श्चकार निजराज्यम् ।
तत्कुलजाऽचहुवाणा माद्रेचा १।२।२ इति नृगीःस्फुटा जाताः ।८७।
हरिसिंहो१३५ जित्वाऽरीन् सिन्धुविषयराज्यमाप्तवान् वीरः ।
हरिसिंहाद्धुन्धेट१३६स्तस्माद्धौन्धेटिकाः२।२।३समुद्भूताः ॥ ८८ ॥
शार्दूलो१३५यः कथितो घन१३६।१ टङ्कौ१३६।२वौरततः प्रजज्ञाते ।
नृगिरा पञ्जाबाख्ये विषये राज्यं तयोश्चकार घनः१३६ ॥८९॥
पञ्जाबिन३।२।४ इति संज्ञा जाताः सर्वे घनान्ववायभवाः ।
टङ्कात्कनीयसो ये जाताष्टाङ्का४।२।५इति प्रसिद्धास्ते ॥ ९० ॥
माणिक्यराजजो यः पञ्चम५ उक्तोस्ति पर्णराज१३५इति ।
तेन भदावरराज्यं चक्रे तस्माद्भदोरिपा५।२।६जाताः ॥ ९१ ॥
षष्ठो६मौक्तिकराजः१३५स्वर्णगिरिं प्राप्य राज्यमनुतस्थौ ।
तस्मात्सौवर्णगिरा६।२।६जाता नृगिरा त एव सोनगिराः६।२।७॥९२॥
निर्वाणात्सप्तम७तो जाता अभवंस्तथैव निर्वाणाः७।२।८।
प्रायः प्रथिता तेषां स्थितिर्मरूदक्स्थजङ्गले देशे ॥ ९३ ॥
निर्वाणेषु महात्मा देवट१इति विश्रुतो बभूव नृप : ॥

की चौतर्फ से रक्षा की ॥ ८६ ॥ इस के छोटे भाई लालसिंह ने भुजबल से दबाकर मद्रदेश में राज्य किया, उसके कुल के लोकभाषा में माद्रेचा चहुवाण कहलाये ॥ ८७ ॥ तीसरे भाई वीर हरिसिंह ने शत्रुओं को जीतकर सिंधु देश का राज्य पाया, हरिसिंह के धुन्धेट हुआ जिसके वंश के धुन्धेटे प्रसिद्ध हुए ॥ ८८ ॥ चौथे शार्दूल के घन और टंक दो पुत्र हुए, तिनमें से घन ने लोकभाषा में पंजाब नामक देश का राज्य किया ॥ ८९ ॥ उसके वंश के सब पंजाबी कहाये और छोटे टंक के वंशवाले टंक कहलाये ॥ ९० ॥ माणिक्यराज के पांचवें पुत्र पर्णराज ने भदावर का राज किया, जिसके वंश के भदोरिया कहाये ॥ ९१ ॥ छठे मौक्तिकराज ने स्वर्णगिरि को लेकर वहां राज्य किया, जिससके वंश के सौवर्णगिरा जिनको लोकभाषा में सोनगरा कहते हैं, हुए । ९२ । सातवें निर्वाण के जो हुए वे निर्वाणा कहाये. वे विशेष विख्यात होकर मारवाड़ देश में उत्तर की ओर जंगल देश में रहे ॥ ९३ ॥ निर्वाणों में विख्यात महात्मा राजा देवराट् हुआ, जिसने अपने कुल की जन्मभूमि के दीसिमान

येन स्वकुलजनुर्भू राजन्वानर्बुदोद्रिपोऽकारि ॥ ९४ ॥
अन्वष्ठायि सुराज्यं नगरी च भुवि विदिता शिरोहीति ॥
तत्कुलजा दैवटिका८।२।९नृगिरा सिद्धास्तु देवडा८।२।९जाताः ।९५।
यश्चाष्टम८उद्दिष्टो मितवीर्य्यः कृष्णराज१३५इति वीरः ॥
स चकार पाण्ड्यराज्यं तज्जा नृगिरैव पाण्डिया९।२।१०जाताः ॥९६॥
नवमो९थलशुनराजो१३५गौर्जरजनपद्यप्राप्तवान्राज्यम् ॥
गुजरातिन१०।२।११इति नृगिरोह्वा आसंस्तदीयसंततयः ॥ ९७ ॥
दशमः प्रवालराजो१३५बगसरदेशे स लोकवाक्सिद्धे ॥
अन्वभवद्राज्यसुखं बगसरिया११।२।१२स्तस्य वंशजा जाताः ।९८।
एतेषु मुहुःकर्म्मा१३५दशसु१०ज्येष्ठः स सम्भरेशोऽभूत् ॥
तस्मात्तु रामचन्द्रो१।३६।१थखिच्चिराजो१३६।२बभूवतुः पुत्रौ ॥९९॥
सम्भरपत्तनराज्यं सन्नलुण्ठितवान् स रामचन्द्र१३६स्तु ॥
जाताश्च खिच्चिराजात्खिच्ची१।३।१३त्युपटङ्किनोऽस्य वंशीयाः॥१००॥
जाता ज्यायस एतस्य द्वादश१२नृपरामचन्द्रतः पुत्राः ॥
तेष्वग्रजस्तु सङ्ग्रामसिंह१२७।१इति सम्भरेऽकरोद्राज्यम्॥१०१॥
स्वाऽऽख्याङ्कितजननकरा बभूवुरेकादशै११तदनुजनुषः ॥
क्रमशस्तेवालेशो१३७।२बङ्कडदेव१३७।३श्चगोलपाल१३७।४श्च१०२

आबू पर्वत को राजन्वान् (राजावाला) किया अर्थात् वहां पर पहले केवल वन था जिसको राज्य बनाया ॥ ९४ ॥ और सुन्दर राज्य जमाकर पृथ्वी में प्रसिद्ध नगरी सिरोही बसाई, जिसके कुल के दैवटिक जिनको लोकभाषा में देवड़ा कहते हैं प्रसिद्ध हुए ॥ ९५ ॥ अमित पराक्रमी आठवाँ वीर कृष्णराज हुआ उसने पाण्ड्यदेश का राज्य किया जिसके कुल के लोकभाषा में पाण्डिया हुए ॥ ९६ ॥ नवमें लशुनराज ने गुजरातदेश का राज्य पाया जिसके कुल के लोकभाषा में गुजराती कहाये ॥ ९७ ॥ दशवें प्रवालराज ने बगसर देश में राज्य का सुख लिया जिसके वंश के लोकभाषा में बगसरिया कहाये ॥ ९८ ॥ इन दशों में बडा मुहुःकर्मा साँभर का पति हुआ जिसके रामचंद्र और खिचिराज दो पुत्र हुए ॥ ९९ ॥ रामचंद्र तो सांभर का राजा हुआ, और खिचिराज वंश के खीची कहाये ॥१००॥ इसके बड़े भाई रामचन्द्र के बारह पुत्र हुए जिनमें ज्येष्ठ संग्रामसिंह सांभर का राजा हुआ ॥ १०१ ॥ इसके छोटे भाई

जातोऽनु पुष्टपालो१३७५थ मलयराज१३७६श्च षष्ठ६आख्यातः ।
चाहोडदेव१३७७इत्यथ हरीणदेव१३७८३वमल्हण१३७९३च तथा
दशमो१०मोत्कलवारो१३७१०
थ चक्रडाण१३७११३च शूकट१३७१२३चेति ॥
एकादशभ्य११एभ्यो जाता एतदभिधानवद्वंश्याः ॥ १०४ ॥
वालेशेन तु नगरं वालेशा१ख्यं व्यधायि राज्यंश्च ॥
तद्वंशीयाः सर्वे वालेशा१४१४इति बभूवुरवनितले ।१०५।
क्रमशोऽन्ये बङ्गडिया२।४।१५ ।
३च गोलपाला३।४।१६३च पुठवाला।४।४।१६३च ॥
मलयेचा५।४।१८श्चाहोडा६।४।१९ ।
हरीणा७।४।२०संज्ञाश्च माल्हणा८।४।२१श्च तथा ॥ १०६ ॥
एभ्योऽनुमुकलारा९।४।२२
श्चचक्रडाणा११।४।२३३चसूवटा११।४।२४श्चेति ॥
एकादशै११वमेते चहुवाणा भिन्नसंज्ञया जाताः ॥ १०७ ॥
एतेष्वग्रजनुर्यः कथितः सङ्ग्रामसिंह१३७१इति राजा ॥
तत आस शिवादत्तः१३८स साम्बदत्तो१३८पि संज्ञयेतरया॥१०८॥
जातश्च शिवादत्ताद्भोगादित्यः१३९प्रतिष्ठितो भूपः ॥
भोगादित्यात्तनयौ२क्रमतः शिवदत्त१४०।१चित्रकौ१४०।२जातौ॥१०९
चित्ता२।५।२५इति चित्रकतो जाता भिन्ना बभूवुरनुवंश्याः ॥

ग्यारह ही अपने अपने नाम से वंशचलानेवाले हुए जिनके नाम बालेश को आदि लेकर मूल में क्रम पूर्वक स्पष्ट लिखे हैं इन ग्यारह से उत्पन्न हुओं के वंश इन्हीं के नाम से चले ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ बालेश ने बालेश नामक नगर बसाया जिसके वंश के पृथ्वी में बालेशा कहाये बाकी के बंगडिया, गोलपाला, पुठवाला, मलयेचा, चाहोड़ा, हरीण, माल्हण, मुकलारा, चक्रडाण. सूवट, ये ग्यारह ही इसरीति चोहाण वंश की जुदीशाखा करनेवाले हुए ॥१०५॥ १०६ ॥ १०७ ॥ इनमें बड़ा संग्रामसिंह राजा हुआ, जिसके शिवदत्त, जिसका दूसरा नाम साम्बदत्त हुआ ॥ १०८ ॥ शिवदत्त के प्रतिष्ठित भोगादित्य. इसके शिवदत्त और चित्रक, जिसका दूसरा नाम चीता ये दो पुत्र

तज्ज्येष्ठःशिवदत्तः१४०सम्भरराज्यं चकार धर्मेण ॥११०॥
शिवदत्तादथ जातो नरेश्वरो रुद्रदत्त१४१इति विदितः ॥
जाताश्च रुद्रदत्तात्सप्त७सुता ईश्वरो१४२।१ऽग्रजस्तेषाम् ॥ १११ ॥
भैरव१४२।२इति तदनुजनुः
क्षयरव१४२।३इति तदनुजस्तृतीयो३ऽभूत् ॥
वीरस्तथाऽभ्रवाजो१४२।४
व्याघ्रोरा१४२।५ब्रध्नदेव१४१।६शरखेलौ१४२।७ ॥ ११२ ॥
एष्वीश्वर१४२स्तु चक्रे सम्भरराज्यं महामना विधिवत् ॥
षड्भ्यो६ऽपि तदनुजेभ्यः स्वाख्योट्टङ्काः प्रजज्ञिरे वंशाः॥११३॥
पूर्वाद्भैरव१।६।२६।संज्ञाः
क्षयरव२।६।२७संज्ञास्ततस्ततोऽभ्रावाः३।६।२८ ॥
वाघोरा४।६।२९ब्रध्नेचाः ५।६।३०
शरखेलाः६।६।३१ख्यातिमेवमधिजग्मुः ॥ ११४ ॥
तज्ज्येष्ठादीश्वरतः सम्भरभूपाद्बभूवुरष्ट८सुताः ॥
ज्येष्ठस्तूमादत्तो१४३।१ऽनुजा मयूरध्वजो१४३।२ बहुलक१४३।३श्च ॥
क्रमशोथ गजलदेव१४३।४-
स्तिलवाट११४३।५श्चीबक१४३।६स्तथा वीरः ॥
सर्प्पट१४३।७इति सप्तमको
ऽखिलाऽनुजश्चित्रराज१४३।८इत्यष्टौ८ ॥ ११६ ॥
ज्यायान् स उमादत्तः सम्भरराज्यं चकार धर्मपटुः ॥

हुए. चित्रक के वंश के जुदी शाख चलानेवाले हुए, और ज्येष्ठ शिवदत्त ने धर्म से संभर का राज्य किया ॥ १०९ ॥ ११० ॥ शिवदत्त के विख्यात नरेश्वर रुद्रदत्त हुआ, जिसके सात पुत्र हुए, जिनमें महाशय ईश्वर ने विधिपूर्वक सांभर का राज्य किया और छोटे छहों भाइयों का अपने अपने नामों से वंश चला ॥१११॥ ११२ ॥ ११३॥ क्रम से भैरव, क्षयरव, अभ्रवा, व्याघ्रोरा, ब्रध्नेचा सरखेला कहाये ॥११४॥ बड़े ईश्वर के आठ पुत्र हुए जिनमें बड़ा उमादत्त, छोटे मयूरध्वज, बहुलक, गजलदेव, तिलवाट, चीबक, वीरसर्पट और सब से छोटा चित्रराज हुआ ॥ ११५ ॥११६॥ इनमें धर्मकुशल उमादत्त ने सांभर का राज्य

तेषु मयूरध्वजतो मोरेचा१।७।३२ अस्य वंशजा विदिताः ॥ ११७ ॥
बहुषु मयूरध्वज१४२।२सूनुषु जातौ द्वौ २तु भिन्नकुलजनकौ ॥
पर्वत१४३।१इत्यभिधेय-
स्तुष्टनपाल१४३।२श्च दोर्विदलितद्विट् ॥ ११८ ॥
मोरेचा१।७।३२न्तर्भूताः पर्वततः पब्बयाः१।३३समुद्भूताः ॥
संचोरदेशनृपतेस्तुष्टनपालात्तथैव संचोराः२।३४ ॥ ११९ ॥
बहुलकतश्च बहोला२।७।३५ईश्वरतनयात्तृतीय३तो जाताः ॥
गयला३।७।३६।श्च गजलदेवा
त्तिलवाडा४।७।३७एवमेव तिलवाटात् ॥ १२० ॥
चीबकतोऽप्यथ चीबाः ५।७।३८
सर्प्पटत.सर्प्पटा५।७।३९स्तथा जाताः ॥
चित्रावा७।७।४०इति वाच्यास्तु चित्रराजाऽन्ववायसंततयः ॥१२१॥
बहुचित्रराजसूनुषु चण्डालीक१४३।१श्च चाहुड१४३।२श्च तथा ॥
वटराजो१४३।३मौरिक१४३।४रै-
वत१४३।५चन्दन१४३।६वङ्कटा१४३।७स्तु भिन्नकुलाः ॥ १२२ ॥
एषां कुलानि सप्तानां७शृणुतां चित्रराजसूनूनाम् ॥
चण्डालीकाच्चण्डालीका१।४१
अथ चाहुडाच्च चाहोडाः२।४२ ॥ १२३ ॥
वटराजाच्च वडेरा३।४३मौरिकतो मौरिणाः४।४४समुद्भूताः ॥

किया और उन छहों में मयूरध्वज के वंश के मोरेचा कहाये ॥ ११७ ॥ मयूरध्वज के बहुत से बेटों में से दो तो जुदा वंश चलानेवाले हुए, जिनमें एक तो पर्वत और दूसरा भुजबल से शत्रुओं का नाश करनेवाला तुष्टनपाल ॥ ११८ ॥ मोरेचों के भीतर पर्वत के वंश के पब्बया हुए, और संचोर देश के राजा तुष्टनपाल के संचोरा कहाये ॥ ११९ ॥ ईश्वर के तीसरे बेटे बहुलक के बहोला कहाये, गजलदेव के गजयला ऐसे ही तिलवाटके तिलवाड़ा, चीबक के चीबा, सर्पट के सर्पटा और चित्रराज के चित्रावा कहाये ॥ १२० ॥ १२१ ॥ चित्रराज के बहुत से पुत्रों में से चंडालीक, चाहुड, वटराज, मौरिक, रैवत चन्दन, वंकट ये सात तो जुदे वंश चलानेवाले हुए जिनका कुल सुनो.

तेष्वभवच्चित्राङ्गो मौरीचित्तोडदुर्गनिर्म्माता ॥ १२४ ॥
अथ मौरिकाऽनुजनुषो रैवततो रेवडा ५।४५इति प्रथिताः ॥
चान्दनसंज्ञा६।४६जाताश्चन्दनतो बङ्कटा७।४७श्च बङ्कटतः ॥१२५॥
चित्रावान्तर्भूताश्चण्डालीकादिमा भिदाः सप्त७ ॥
एषां दोर्जितभूमिर्नाभजदन्यं कदापि सत्स्वेषु ॥ १२६ ॥
मुख्यादीश्वरतनयादथ चत्वारः४सुता उमादत्तात् ॥
चतुरो१४४।१वत्सलराजः१४४।२
प्रवाचको१४४।३झम्मर१४४।४स्त्विमे जाताः ॥ १२७ ॥
चतुरः१४४सम्भरपोऽभूद्वत्सलतो वच्छलाः१।८।४८समुद्भूताः॥
अथ पावचाः२।८।४९प्रवाचक-
तो झम्मरतस्तथैव झम्मरियाः३।८।५० ॥ १२८ ॥
चतुरात्सम्भरराजादथ कुलपतयस्त्रयः३सुता जाताः ॥
ज्येष्ठः सोमेश्वर१४५।१इति सम्भरभूपो बभूव पितरमनु ॥ १२९ ॥
तुलसीरत्तण१४५।५इत्यथ
शल१४५।३स्तदनुजावथोभयान्वयजाः ॥
तुलसीरच्छण१।९।५१संज्ञा-
स्तुलसीभ्रातुः शलाच्छलाउत्ताः२।९।५२ ॥ १३० ॥
अथ सम्भराधिराजात्सोमेश्वरतः सुतावभूतां द्वौ२ ॥

चंडालीक के चंडालिका, चाहुड़ के चाहोड़ा, वटराज के वडेरा, मौरिक के मौरिया, जिनमें चित्रांग मोरी ने चीतोड़गढ़ बनाया, मौरिक के छोटे भाई रैवत के रेवड़ा, चंदन के चांदना, बंकट के बंकटा कहाये ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ चित्राओं के भीतर चंडालिका आदि सात भेद हुए जिनकी भुजाओं से जीती हुई पृथ्वी उनके रहते कभी किसी अन्य के सेवन में न गई ॥ १२६ ॥ प्रधान ईश्वर के बेटे उमादत्त के चार पुत्र हुए चतुर, वत्सलराज, प्रवाचक और झम्मर ॥ १२७ ॥ इन में चतुर सांभर का राजा हुआ, वत्सल के वत्सला, प्रवाचक के पावचा, झम्मर के झम्मरिया कहाये ॥ १२८ ॥ संभर के राजा चतुर के कुलपति तीन पुत्र हुए, जिनमें से बड़ा सोमेश्वर पिता के पीछे सांभर का राजा हुआ, दूसरा तुलसीरत्तण, तीसरा सल, इन दोनों भाइयों के वंश के तुलसीरच्छण और सलाउत कहाये ॥ १२९ ॥ १३० ॥ संभर के राजा

जातो१४७भूरिन्देवकुमारसोऽनुजस्तस्याप्युदितः [illegible] उदयः१४८॥१३१॥

उदयकुलं तु नितिनं काम्येऽस्मिन् वर्णयेनैव तासाङ्कम् ॥

[illegible] बहुवाणोऽभवत् [illegible] स प्राज्ञ ॥१३२॥

[illegible]१४९[illegible] जातो [illegible] महीसिंहः १४८ ॥

सिंह१५०[illegible] महीसिंहात् [illegible] चन्द्रगुप्त१५०इति जातः ॥१३३॥

जातौ च चन्द्रगुप्तात्तौ [illegible] वीरकुलजनयितारौ ॥

[illegible]सिंहो[illegible]नुजस्तस्याऽऽरब्ध[illegible]सिंहात्[illegible] ॥१३४॥

अथ [illegible] कुलं समुल्लिख्यते मया पूर्वम् ।

[illegible]१५२[illegible]१५३[illegible] संततय उक्ताः ॥ १३५ ॥

[illegible]१५४[illegible] जयधरात्तु [illegible]१५६[illegible] ॥

[illegible] समरसिंह१५५इति वीरः ॥ १३६ ॥

[illegible] समरसिंहात् [illegible]१५६[illegible] ॥

[illegible] वीरदेव१५७आख्यातः ॥ १३७ ॥

श्री वीरदेवतोऽथ [illegible]१५८[illegible] विपुलसेनः१५९॥

[illegible]१६०[illegible] विपुलसेनात् नृसिंहतस्तु [illegible]राजः१६१॥१३८॥

[illegible]सिंहो१६२[illegible]सिंहात् [illegible]१६३[illegible] ॥

[illegible] जयदेवो१६४[illegible]देव१६५इति वीरः ॥ १३९ ॥

[illegible] विजयपाल१६६इति नाम्ना ।

[illegible]१६७[illegible]१६८जातः ॥१४०॥

[illegible] को नाश करनेवाला [illegible] ॥ १३१ ॥ इस [illegible] के कुल को [illegible] वर्णन [illegible] है [illegible] इससे [illegible] कहा जाता है ॥ १३२ ॥ [illegible] के पुत्र [illegible] उसके महीसिंह, उससे सिंह, उसके चन्द्रगुप्त हुआ ॥ १३३ ॥ चन्द्रगुप्त के [illegible] और [illegible] हुए ॥ १३४ ॥ अब मैं पहिले [illegible] का वंश कहता हूं। [illegible] के पुत्र हुए, जिनके [illegible] कहे ॥ १३५ ॥ [illegible] के [illegible] पुत्र [illegible] सिंह, [illegible] वीरदेव, [illegible] विपुलसेन, नृसिंह, वत्सराज

लक्ष्मणातः सहदेवो१६९दुःशासन१७०इति बभूव सहदेवात् ।
दुःशासनान्महावीर१७१इति महावीरतोऽभवद्रामः१७२ ॥ १४१ ॥
रामाच्च विजयराजो१७३ऽथ विजयराजाद्बभूव हरसिंहः१७४ ।
हरसिंहाद्वरसिंहो१७५ऽजायत वरसिंहतश्च गोविन्दः१७६ ॥ १४२ ॥
गोविन्दादथ जातास्त्रयः३सुतास्तेषु पूर्वजो भीमः१७७।१ ।
अनुजौमौक्तिकराज१७७।२स्तथैवमाणिक्यराज१७७।३इतिवीरौ१४३
मौक्तिकराजाज्जाता मुत्तिय१।११।५४संज्ञास्तदन्वयचुहाणाः ॥
माणिक्यराजवंश्यास्ते माणिक्को२।११।५५पटाङ्किनो जाताः ॥ १४४॥
भीमादनयोर्ज्येष्ठाद्धुरंधरो१७८भूद्धुरंधराच्चोभौ२ ।
ज्येष्ठः सहस्रमल्लो१७९।१
ऽथ देवराजो१७९।२ऽनुजो महासत्त्वः ॥ १४५ ॥
अनुजात्तु देवराजाच्छिवभक्तोभूत्स आततायी१८०ति
यः कान्यकुब्जसमरे जयचन्द्रचमूं विदार्य्य तनुमौज्झत् ॥ १४६ ॥
ज्येष्ठात्सहस्रमल्लात्संयमराजो १८०बभूव रणारमणः ।
यो हि महुब्बायुद्धे संरक्ष्य नृपाक्षिणी२ जहौ कायम् ॥ १४७ ॥
जातः संयमराजान्नाम्ना वीर्येण लङ्गरीराजः१८१ ।
योऽर्द्धाङ्गेन हि जित्वा जयचन्द्रभटाञ्जगाम शिवलोकम् ॥१४८॥

वरसिंह, विल्हण, जयदेव, वीर जहदेव, धनुर्धर विजयपाल, करण, लक्ष्मण, सहदेव, दुःशासन, महावीर, राम, विजयराज, हरसिंह, बरसिंह, गोविन्द ये राजा हुए ॥ १३६ ॥ १३७ । १३८ । १३९ । १४० । १४१ ॥ १४२ ॥ गोविन्दराज के तीन पुत्र हुए, जिनमें बड़ा भीम, दूसरा मौक्तिकराज, तीसरा माणिक्यराज, मौक्तिकराज के वंश के मोतियाचुहाण, और माणिक्यराज के वंश के माणिक कहाये ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ इन दोनों से बड़े भीम के धुरंधर और धुरंधर के दो पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ सहस्रमल्ल और छोटा महापराक्रमी देवराज हुआ ॥ १४५ ॥ छोटे देवराज के शिवभक्त आततायी नाम पुत्र हुआ, जिसने कान्यकुब्ज की लड़ाई में जयचंद्र की सेना को काटकर शरीर छोड़ा ॥ १४६ ॥ बड़े सहस्रमल्ल के युद्ध में क्रीड़ा करनेवाला संयमराज हुआ जिसने महुब्बा ग्राम की लड़ाई में राजा के नेत्रों की रक्षा कर शरीर छोड़ा ॥१४७॥ संयमराज के पराक्रमी लंगरीराज हुआ, जो आधे शरीर से ही जय-

इत्यारत्नकुलीनाः कथिता वीरा महीतले ख्याताः ॥
एतेषामनुवंशो न ज्ञायत उत समाप्तिमगमत्किम् ॥ १४९॥
अथ चारत्नाज्जयायान्प्रतापसिंहो१५१बभूव सम्भरपः ॥
जातः प्रतापसिंहान्नरेश्वरः सिंहदेव१५२इति नाम्ना ॥ १५०॥
उदभूच्च सिंहदेवात्सिंहवरः१५३सिंहवरत उत्पेदे ।
मोहन्नृपो१५४मोहन्नृपान्नृपाच्च रत्नसिंह १५५इति ॥ १५१ ॥
जज्ञेथ रत्नसिंहान्महीपतिः सेनराज१५६आख्यातः ॥
जातश्च सेनराजात्संप्रतिराजो१५७महच्छूवा भूपः ॥ १५२ ॥
सम्प्रतिराजाज्जातः समाख्यया नागहस्त१५८इति विदितः॥
उदभूच्च नागहस्तात्स्थूलानन्दो१५९ऽथ सम्भराधिपतिः॥ १५३ ॥
स्थूलानन्दाज्जातो महामना लोहधार१६०इति भूपः ।
जज्ञे च लोहधाराद्धराधवो धर्म्मसार१६१आह्वाभृत् ॥ १५४ ॥
जातश्च धर्म्मसारान्नृपोऽभिधानेन वैरिसिंह१६२इति ॥
तस्माच्च विबुधसिंहः१६३सुतोऽभवद्वैरिसिंहतो भूपात् ॥ १५५ ॥
नाम्नाऽथ योगशूरो१६४महीपतेर्विबुधसिंहतो जातः ॥
जज्ञेऽथ योगशूराच्चहुवाणश्चन्द्रराज१६५इति राजा ॥ १५६ ॥
सम्भरनगरे सचिवान्संस्थाप्य स नगरेऽवसदजमेरे ।
स्वैश्वर्य्यराजधानी रचिता तेनोषितं च तत्रैव ॥ १५७ ॥
तस्मात्तु चन्द्रराजात्संजातः कृष्णराज१६६इति भूपः ।

चन्द्र के भटों को जीत कर शिवलोक गया ॥ १४८ ॥ ये आरत्न के वंश के पृथ्वी मे प्रसिद्ध वीर कहेगये, इनके पीछे का वंश नहीं जाना जाता कि क्या समाप्त ही हो गया, अर्थात् रहा वा नहीं रहा ॥ १४९ ॥ आरत्न का वडा भाई प्रतापसिंह सांभर का राजा हुआ जिसके नरेश्वर सिंहदेव हुआ ॥ १५० ॥ इसके पीछे क्रम से सिंहवर.मोहनृप, रत्नसिंह,सेनराज,संप्रतिराज,नागहस्त,स्थूलानन्द,महाशय लोहधार. पृथ्वीपति धर्मसार, वैरिसिंह,विबुधसिंह, योगसूर चहुवाण चन्द्रराज ये राजा हुए॥१५१॥१५२।१५३।१५४।१५५।१५६॥ चन्द्रराज सांभर का राज्य कामदारों को सौंप अजमेर में नगर बसाय अपने ऐश्वर्य से राजधानी रच वहीं रहा ॥ १५७ ॥ उस चन्द्रराज के पीछे क्रम से कृष्णराज

जातश्च कृष्णराजाद्धरिहरराजः१६७समाख्यया राजा ॥ १५८ ॥
हरिहरराजाज्जातो विल्हणराजो१६८ज्वलद्यशा नृपतिः।
जातौ विल्हणराजात्पृथ्वीराज१६९।१स्तथानुराजो१६९।२द्वौ२।१५९।
अनुराजस्य तु वंशो न ज्ञातः का गतिः कथं वाऽभूत् ॥
ज्येष्ठः पृथ्वीराजो१६९ऽपरनाम्ना डिड्डुरो१६९पि सोऽभिहितः॥१६०॥
तस्माड्डिड्डुरनृपतेरभवन्सर्वेऽन्वया हि डैड्डुरिकाः।१।१२।५६।
चहुवाणवंशमुख्या विदिता भूमण्डले विजेतारः ॥१६१॥
नृपतेः पृथ्वीराजात्समजायत डिड्डुरेतराऽभिख्यात् ॥
अजमेरपुराधिपतिर्भूपो धर्म्माधिराज१७०इति नाम्ना ॥१६२॥
धर्म्माधिराजतोऽभूद्वीसलदेवो१७१नृपो महासत्त्वः ॥
बीसलदेवात्सारङ्गदेव१७२इत्यन्तदेवसारङ्गात् ॥ १६३ ॥
विग्रहराजो१७३प्यन्नो १७३प्यन्नलदेवो१७३पि सोऽभिधात्रय३भृत् ॥
अन्नलदेवाज्जातो भूपो जयसिंहदेव१७४इति विदितः ॥ १६४ ॥
जयसिंहदेवतोऽभूद्भूपतिरानन्दमेय१७५आह्वावान् ।
सोमेश्वरो१७६।१ऽथ कृष्णो१७६।२द्वौ२तावानन्दमेयतो जातौ॥१६५॥
सोमेश्वरान्नरपतेः पृथ्वीराजो१७७ऽभवद्रणव्यसनी ।
यो मातामहराज्यं प्राप्य जयी दिल्ल्यधीश्वरो भूतः ॥१६६॥
जयचन्द्रराजपुत्रीं प्रसह्य नीत्वाऽखिलानयं जितवान् ।

हरिहरराज, यशस्वी विल्हणराज ये राजा हुए. विल्हणराज के पृथ्वीराज और अनुराज ये दो पुत्र हुए, परन्तु अनुराज के वंश का पता नहीं है कि उसकी क्या गति हुई, बड़ा पृथ्वीराज जिसका दूसरा नाम डिड्डुर भी था जिसके वंश के डैड्डुरिक कहाये वे पृथ्वी में चौहाण वंश में प्रधान विजयी प्रसिद्ध हुए ॥ १५८ । १५९ । १६० । १६१ ॥ राजा पृथ्वीराज कि जिसका दूसरा नाम डिड्डुर था उसके अजमेर नगर का पति राजा धर्माधिराज हुआ जिसके पीछे क्रम से पराक्रमी वीसलदेव, सारंगदेव, विग्रहराज जिसको अन्ना और अनलदेव भी कहते हैं वह, जयसिंहदेव, आनन्दमेय ये राजा हुए, आनन्दमेय के सोमेश्वर और कृष्ण दो पुत्र हुए जिन में राजा सोमेश्वर के रण का व्यसनवाला पृथ्वीराज हुआ, जो विजय करनेवाले मातामह (नाना) का राज्य पाकर दिल्ली का स्वामी बना ॥ १६२ । १६३ । १६४ । १६५ । १६६॥

षट्कृत्वो यवनेन्द्रं बध्वा बध्वा मुमोच गोरीशम् ॥ १६७ ॥
तस्मात्पृथ्वीराजाज्जातौ वीरौ समात्तपितृचर्य्यौ ।
ज्यायांस्तु रत्नसिंहो१७८।१नुजश्च सामन्तसिंह१७८।२इत्युभयम्।
दिल्ल्यां समावृतायां चम्वा यवनाऽधिपेन तुमुलरणे ।
अनपत्यः स्वरगच्छत्स रत्नसिंहो१७७विहाय मर्त्यवपुः ॥ १६९॥
सामन्तसिंह१७८तो जय
मल्लः१७९।१ प्रल्हाद१७९।२इत्युभयरनामा ।
जयमल्लाद्गोविन्दः१८०स एव सोमेश्वरो१८०ऽप्यपरनाम्ना ॥१७०।
गोविन्दाद्वौरज्यायाञ्छूरो१८१।१वीरः१८१।१स एव वाग्भट्टः१८१।१
नारायण१८१।१इति चतु४राख्याभृत्तस्याऽनुजोऽथ जयपालः१८१।२
शूरादपि सूनू द्वौरज्यायाञ्जैत्रो१८२।१ऽनुजोस्य रणधीरः १८२।२।
कुण्डलनगरे म्लेच्छैश्छिन्ने जैत्रो १८२।१ यमापदतिदुस्थः ॥१७२॥
प्राप्य रणस्तम्भपुरं हत्वा भिल्लाँश्चकार तद्राज्यम् ।
जैत्राज्जातो हम्मीरदेव१८३।१इत्याख्यया नृपो वीरः ॥१७३॥
योऽलावुद्दीनरणे वर्ष्म जहौ स्वशरणागतनिमित्तम् ।
हम्मीरात्सूनुरभूत्स पूर्णपाल१८४।१श्च रत्न१८४।१उभयाख्यः१७४

इसने जयचन्द्र की पुत्री को बल से पकड़ कर सब को जीत लिया, और छः बार यवनों के पति गोरीशाह को पकड़ पकड़ के छोड़ा ॥ १६७ ॥ पृथ्वीराज के भली भांति पिता का आचरण करनेवाले दो पुत्र हुए, जिनमें बडा रत्नसिंह और छोटा सामन्तसिंह ॥ १६८ ॥ बादशाह की सेना से घिरीहुई दिल्ली में घोर संग्राम के बीच विना संतान ही मनुष्य शरीर को छोड रत्नसिंह स्वर्ग गया ॥ १६९ ॥ और सामन्तसिंह के जयमल्ल हुआ जिसका दूसरा नाम प्रल्हाद, इसके पीछे गोविन्द जिसका दूसरा नाम सोमेश्वर॥१७०॥गोविन्द के दो पुत्र जिन में बडा शूर, जिसको वीर, वाग्भट्ट और नारायण भी कहते हैं छोटा जैपाल हुआ १७१ शूरके भी दो पुत्र हुए, बड़ा जैत्र और छोटा रणधीर, जिनमें जैत्र ने यवनोंसे घिरे हुए कुंडल नगर में कालरूप आपत्ति में अति दुःखित होकर रणस्तम्भपुर(रणतभँवर) जाय, भीलों को मार वहां का राज्य किया, जिसके हम्मीरदेव राजा हुआ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ जिसने अपनी शरण में आयेहुए अलाउद्दीन के सेवकों को नहीं देने के कारण अलाउद्दीन के संग्राम में अपना शरीर

युध्वा च यन्निमित्तं वपुर्जहौ समिति लक्ष्मणो राणा ।
शूरा१८१।१नुजो य उक्तो जयपाल १८१।२स्तस्य द्वौ२सुतो जातौ१७५
गोरो१८२।१वाद्दल१८२।२इति तौ चक्रतुराजिं हि पद्मिनीहेतोः।
राणाभीमसहायं कृतवन्तौ विप्रलभ्य यवनेशम् ॥ १७६ ॥
हम्मीर१८३।१रत्न१८४।१जननेऽभवदेको निम्मराज इति भूपः।
तेन व्यधायि राज्ञा निवेशनं फल्गुनिम्मरानाख्यम् ॥ १७७ ॥
तत्रैव तस्य वंश्या अद्यावधि भूपभरतपरपुरुषाः ।
राणोपटङ्किनस्ते चहुवाणा डैड्डुरा १।१२।५६हि निवसन्ति॥१७८॥
सोमेश्वरानुजस्तु स कृष्णो१७५जयचन्द्ररणभटान् हत्वा ।
पुरकान्यकुब्जसमिति त्यक्त्वा प्राणानुवास दिवि वीरः ॥ १७९ ॥
कृष्णादीश्वरदासो१७६जातो धीरोऽहिचण्डदोर्दण्डः ॥
यो रत्नसिंहनिकटं हत्वा म्लेच्छाञ्छतान्यसूनौज्झत् ॥१८०॥
ईश्वरदासकुलीना नृपरामाऽद्यापि सन्ति चहुवाणाः ॥
डैड्डुरिका१।१२।५६मदनपुरीनाम्नि द्रङ्गे पुराऽऽगराप्रान्ते॥१८१॥

छोड़ा हम्मीरदेव के पूर्णपाल और रत्न इन दो नामोंवाला पुत्र हुआ ॥ १७४ ॥ जिसके निमित्त राणा लक्ष्मणसिंह ने शरीर छोड़ा, अर्थात् अलाउद्दीन के युद्ध से भाग कर पूर्णपाल ने चीतोड़ में राणा लक्ष्मणसिंह की शरण ली जिसको पीछा नहीं देने के कारण अलाउद्दीन से राणा का युद्ध होकर लक्ष्मणसिंह मारा गया । और सूर के छोटे भाई अजैपाल के भी गोरा और बादल नाम दो पुत्र हुए, जिन्होंने पद्मिनी रानी के निमित्त संग्राम किया और बादशाह को ठगकर राणा भीम की सहायता की ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ हम्मीर के बेटे रत्न सिंह (पूर्णपाल) के वंश में एक निम्मराज नामक राजा हुआ था जिसने छोटासा नीमराणाँ नामक ठिकाना बनाया ॥ १७७ ॥ जिसके वंश के, राजा भरत है पर पुरुषा जिनका ऐसे राणा पदवी को धारण करनेवाले डैड्डुर कुल के चहुवाण अब तक वहीं बसते हैं ॥ १७८ ॥ सोमेश्वर का छोटा भाई कृष्ण, जयचंद्र के वीरों को मारकर कान्यकुब्ज नगर के युद्ध में प्राणों को छोड़ स्वर्गवासी हुआ ॥ १७९ ॥ कृष्ण के सर्प के समान प्रचंड भुजवाला धीर ईश्वरदास हुआ जिसने रत्नसिंह के पास सैकड़ों यवनों को मार प्राणछोड़ा ॥ १८० ॥ हे राजा रामसिंह ! ईश्वरदास के वंश के डैड्डुरिक चुहाण मैनपुरी

इतिभूपभरत१४६।१वंशः कथितो राजेन्द्र रामसिंह मया ॥
अथ वच्म्युरथ१४६।२नृपस्याऽन्ववायमीड्यं भवच्छशिसमुद्रम्।१८२।
उरथात्पञ्च५तनूजा जाता ज्यायांस्तु चक्रपाणि१४७।१रिति ॥
अनुजाश्चाऽबरदेवो१४७।२
ऽथगोष्ठपाल१४७।३श्च जाम१४७।४बकुटौ१४७।५च॥१८३॥
तेषु ज्येष्ठो भ्राता स चक्रपाणिः१४७।१समस्थलीमजयत् ॥
तत्रैव मदनपुर्य्यां राज्यं चक्रे धनुःसहायोऽयम् ॥ १८४ ॥
जाताश्चाबरदेवाच्चहुवाणास्तेऽबरा१।१३।५७भवन्तिस्म ॥
अथ गोष्ठपालवंश्यास्तु गोठ्वाला२।१३।५८इति प्रसिद्धिमिताः।१८५।
जामा३।१३।५९श्च जामदेवाद्बकुटाद्बउडा४।१३।६०इतीतरे विदिताः।
ज्येष्ठात्तु चक्रपाणे १४७र्जातस्तनयोथ देवकीनन्दः१४८ ॥१८६॥
अथ च यशोदानन्दो१४९जज्ञे नृपतिर्हि देवकीनन्दात् ॥
तदनु यशोदानन्दादुत्पेदे नन्दनन्द१५०इति भूपः ॥ १७७ ॥
उदभूच्च नन्दनन्दात्केशवराजो१५१द्विषज्जयी राजा ॥
केशवराजान्मोहन१५२ इति मोहनतः समुद्रराजो१५३ऽभूत्।१८८।
जातः समुद्रराजाद्गोपालो१५४भूपतिः स शिवभक्तः ॥

नामक नगर में आगरा प्रांत में अब भी हैं ॥ १८१ ॥ हे राजेन्द्र रामसिंह यह मैंने राजा भरत का वंश कहा, अब आप हैं चन्द्रमा जिसमें ऐसा समुद्र रूपी स्तुतियोग्य उरथ का वंश कहता हूं ॥१८२॥ राजा उरथ के पांच पुत्र हुए जिनमें बड़ा चक्रपाणि और छोटे अबरदेव, गोष्ठपाल, जाम, बकुट ॥ १८३ ॥ इन में बड़े भाई चक्रपाणि ने धनुष की सहायता से समस्थली प्रांत को जीतकर वहीं मैनपुरी में राज्य किया ॥ १८४ ॥ अबरदेव के वंश के चहुवाण अबरा कहाये, और गोष्ठपाल के वंश के गोठवाल ॥ १८५ ॥ और जामदेव के जाम और बकुट के बउडा कहाये. उरथ के बड़े बेटे चक्रपाणि के देवकीनन्द पुत्र हुआ ॥ १८६ ॥ उसके पीछे क्रम से यशोदानन्द, नन्दनन्द, शत्रुओं को जीतनेवाला केशवराज, मोहन, समुद्रराज ॥ १८८ ॥ शिवभक्त गोपाल ये राजा हुए ॥ गंगा यमुना दोनों के स्पर्श से पवित्र (अन्तर्वेद) देश में इस गोपाल के शासन करते समय दिग्विजय करनेवाले चीन देश के पति

शासत्यस्मिन्देशे गङ्गायमुनोभयस्पृशि पवित्रे ॥ १८९ ॥
ऐशानी८दिक्सरणेः प्राप्तो म्लेच्छोऽत्र चीनदेशपतिः ॥
जित्वाऽऽप्राग्ज्योतिषतोऽर्वाग्देशान् सोऽस्य देशमप्यजयत् ।१९०।
तद्विजितान्तर्वेदीं त्यक्त्वा धरणीधवः स गोपालः ॥१५४॥
अधिगम्यदाक्षिणात्यं जित्वा दोर्भ्यामुवास तत्रैव ॥ १९१ ॥
तापीसरिदुपकण्ठे निर्म्माया ऽऽशेरनामवरदुर्ग्गम् ॥
चक्रे स तदधिरूढो गोपालो१५४राज्यमर्जितं स्वबलात् ॥ १९२ ॥
गोपालादुत्पेदे सुतोऽभिधानेन भौमचन्द्र१५५इति ॥
तस्याऽपराप्यभिख्या विदिताऽभूच्चन्द्रसेन१५५इति जगति ॥१९३॥
जातोऽथ भौमचन्द्रात्समाख्यया भानुराज१५६ ऊर्ज्जस्वी ॥
एत्य गभीरारम्भस्तमस्थिशेषं चकार शिशुमसुरः ॥ १९४ ॥
जग्ध्वा च तद्वयस्यान्बालान्सोहार्य्यकन्दरे पिदधे ।
विपिने कथमपि जीवन्निपपात स भानुराजकङ्कालः॥१९५॥
तेनाऽर्भकेन मनसाऽऽशापूराचण्डिका स्मृता तत्र ।
स्मृतमात्रार्त्ताऽभयदा हरिमारूढाऽऽविरास सा स्वप्ने ॥१९६॥
स्वकमण्डलूदकेनाऽभिषिच्य तमुवाच वत्स मा भैषीः ।

यवन ने यहां आकर ईशान दिशा की चढ़ाई में प्राग्ज्योतिष देश से ले इधर के देशों को जीतकर उसने इस (गोपाल) के देश को भी जीत लिया ॥ १८९ ॥ १९० ॥ उस यवन से जीते हुए अन्तर्वेद देश को छोड़कर वह भूपति गोपाल दक्षिण देश में जाकर भुजा के बल से उसको जीतकर वहीं रहा ॥ १९१ ॥ तापी नदी के पास आशेर नामक उत्तम गढ़ बनाय उस पर चढ़, उस गोपाल ने अपने बल से पैदा किया हुआ राज्य किया ॥ १९२ ॥ गोपाल के भौमचन्द्र नामक पुत्र हुआ, जिसका दूसरा नाम पृथ्वी में चन्द्रसेन प्रसिद्ध हुआ ॥१९३॥ भौमचन्द्र के पराक्रमी भानुराज हुआ, जिसको बाल्यावस्था में ही गभीरारंभ नामक दैत्य ने आकर ऐसा मारा कि केवल हड्डियां बाकी रहीं ॥ १९४ ॥ और उसकी ऊमरवाले बालकों को भी चाब कर पर्वत की गुफा में बंद कर दिया. उस भानुराज का कलेवर जीता हुआ किसी प्रकार वन में गिरगया ॥ १९५ ॥ वहां पर उस बालक के आशापूरा नाम की देवी स्वप्न में प्रकट हुई ॥ १९६ ॥ अपने कमंडलु के जल से उस बालक को सींच कर बोली, हे पुत्र

मद्ध्यानपरित्रातः कुरु राज्यं दाक्षिणात्यवैषयिकम् ॥१९७॥
पूर्णा हि जीवनाशा मया तवैतेन हेतुना पुत्र ।
आशापूराभिख्या ज्ञेया सफला ममेति कुलदेव्याः ॥ १९८ ॥
इषसितषष्ठीदिवसे त्वं प्रत्युज्जीवितो महावीर ।
अत एवास्मिन्नहनि त्वत्संततिभिर्विशेषतोऽर्च्याहम् ॥ १९९ ॥
जीवित इह सिक्त्वाऽस्थीन्यतस्त्वदभिधानमस्थिपाल१५६इति ।
गच्छाशेरं वत्साऽभिनन्द्य च दर्शनेन बन्धुजनान् ॥ २०० ॥
इति तमुपदिश्य शक्तिस्तिरोहितेवाऽभवन्महामाया ।
सोपि प्रबुध्य बालो धातुभिरुपचित इवाञ्जसोत्तस्थौ ॥ २०१ ॥
तत आगमदाशेरं भूतं वृत्तान्तमुक्तवान् बन्धून् ।
श्रुत्वैवैनं सर्वे मुदमेयसमुद्रमत्स्यतामापुः ॥ २०२ ॥
आशापूराप्रतिमां निरमीमपदथ हिरण्मयीं महतीम् ।
राजापि भौमचन्द्रः१५५सकुटुम्बोऽपूपुजत्स्वकुलदेवीम् ॥२०३॥
अर्थेऽस्थिन हड्ड इत्यपि पर्य्यायो लोकवाच्यपि प्राहुः ॥
अत एव सोस्थिपालो हड्डो१५६ऽप्यनुकीर्त्तितोऽभवल्लोकैः॥२०४॥

तू मत डर, मेरे ध्यान से रक्षित होकर दक्षिण देश का राज्य कर ॥ १९७ ॥ मैंने तेरी जीवन आशा पूर्ण की. इस कारण पुत्र ! मुझ कुलदेवी का आशापूरा यह नाम सफल जान ॥ १९८ ॥ हे महावीर ! तू आश्विन सुदी छठ के दिन पीछा जीवित हुआ है इस कारण तेरे वंशवाले मुझको इस दिन विशेषकर पूजें॥१९९॥तू हाड्डियोंके सींचनेसे इस संसारमें जीवित हुआ है इसकारण तेरा नाम अस्थिपाल है. हे पुत्र! तू आशेर गढ़ जा और तेरे दर्शन से कुटुम्बवालों को आनन्द दे ॥२००॥ इसप्रकार उसको उपदेश कर महामाया शक्ति अंतर्धान होगई, वह बालक भी जागृत होकर रक्तमांसादि धातुओं से परिपूर्ण हो जैसे अचानक उठखड़ा हुआ ॥ २०१ ॥ तब आशेर गढ आकर सब पिछली बात कुटुम्बियों से कही, इस बात को सुनकर सब लोग हर्ष रूपी समुद्र के मच्छ हुए॥२०२॥इसके पीछे सुवर्ण की बड़ी भारी आशापूरा देवी की मूर्ति बनवाई राजा भौमचन्द्र ने भी कुटुम्ब के साथ अपनी कुलदेवी की पूजा की ॥ २०३ ॥ देशभाषा में भी अस्थि अर्थ में हड्ड यह पर्याय शब्द स्पष्ट है, इसीकारण

तत्संतानाः सर्वेऽतो हड्डा१।१४।६१रामसिंहराजेन्द्र ।
भवदधिराजा वीरा निवसन्ति धरातलेऽतिरणरसिकाः ॥२०५॥
कुलदेव्याशापूरा भवतां हड्डाधिराडतो हेतोः ।
इषविशदपक्षषष्ठ्यां६युष्माभिः सार्च्यतेऽत्र सविशेषम् ॥२०६॥
अवनीश्वरोऽस्थिपालो१५६ऽप्यभवत्पञ्चत्वमाप्नवति पितरि ।
आगौर्ज्जरजनपदतो दोरर्ज्जितराज्यमन्वतिष्ठत्सः ॥ २०७ ॥
गोदासरिदुपकूलं व्यधायि तेनैव चास्थिपालपुरम् ।
जित्वाऽऽरातीनतपच्छत्रेणैकेन दाक्षिणात्ये सः ॥ २०८ ॥
उदभूदथास्थिपालात्पृथ्वीपालः१५७स धारपालो१५७ऽपि ।
सहि चण्डकिरणा१५७इत्यपि चतुरा४ख्यश्चन्द्रराज१५७इत्यपि सः२०९
अथ तच्चतु४रभिधानात्पृथ्वीपालाच्च सेनपालो१५८ऽभूत् ।
नाम्नापि लोकपालो१५८प्याज्ञाकीर्त्ति१५८रपि सोऽभिधात्रय३भृत्
जातोऽथ सेनपालात्त्र्य३भिधानाच्छत्रुशल्य१५९इति भूपः ।
दामोदर१६०उत्पेदे महीपतेः शत्रुशल्यतो वीरः ॥ २११ ॥
दामोदरान्नृसिंहो१६१नृसिंहतोऽभूत्तथैव हरिवंशः१६२ ।
हरिवंशाद्धरिजस१६३इति हरिजसतोप्यथ सदाशिव१६४उदभवत् २१२

वह अस्थिपाल लोक में हड्ड भी कहाया ॥ २०४ ॥ इसकारण हे राजेन्द्र रामसिंह उसकी संतान के सब हाडे, आप हो स्वामी जिनके ऐसे अतिरणरसिक वीर धरातल में वसते हैं ॥ २०५ ॥ हे हाडों का राजा! इसकारण आशापूरा आप की कुलदेवी है जिसको आश्विन सुदी छठ के दिन यहां पर आप भी विशेष कर पूजते हो ॥ २०६ ॥ अस्थिपाल भी पिता के मरजाने पर राजा हुआ, उसने गुजरात देश पर्यन्त अपने भुजबल से पैदा कियेहुए राज्य का शासन किया ॥२०७ ॥ उस अस्थिपाल ने गोदावरी नदी के तट के समीप अस्थिपाल पुर बसाया और शत्रुओं को जीत कर दक्षिण देश में एक छत्र से तपा ॥ २०८ ॥ अस्थिपाल के पृथ्वीपाल हुआ, वह धारपाल, चण्डकिरण और चन्द्रराज इन चार नामों से कहाया ॥ २०९ ॥ इस पीछे उस चार नामवाले पृथ्वीपाल के सेनपाल हुआ, वह सेनपाल भी लोकपाल और आज्ञाकीर्ति इन तीन नामों से कहाया ॥ २१० ॥ तीन नामोंवाले सेनपाल के राजा शत्रुशल्य हुआ जिस पीछे क्रम से दामोदर ॥ २११ ॥ नृसिंह, हरिवंश, हरिजस, सदाशिव,

भूमिपतेश्चाऽऽजायत सदाशिवाद्रामदास१६५इति भूपः ।
जज्ञेथ रामचन्द्रो१६६यशोधनो रामदासतो भूपात् ॥२१३॥
जातोथ रामचन्द्राद्दानसखो भागचन्द्र१६७आख्येयः ।
उदभूच्च भागचन्द्रात्समाख्यया रूपचन्द्र१६८ओजस्वी ॥२१४॥
मण्डन१६९इत्यभिधानो रणजयिनो रूपचन्द्रतो जातः ।
मण्डनतो दैववशाद्गतमखिलं दाक्षिणात्यभूराज्यम् ॥२१५॥
तदनन्तरं स मण्डन१६९आयातो मेदपाटविषयान्तः ।
तत्रैवोपरमालं देशं जित्वा चकार निजराज्यम् ॥ २१६ ॥
मण्डनगढाऽभिधानं दुर्गं स्वाख्यं विनिर्ममे तत्र ।
आधुनिकजना दुर्गं यन्माण्डिलगढमिति व्यवहरन्ति ॥२१७॥
राजा स तदधिरूढोऽनुबभूव चिराय नव्यराज्यसुखम् ।
अथ मण्डनान्नरपतेरात्मारामो१७०ऽवनीश उत्पेदे ॥ २१८ ॥
आत्मारामाज्जातौ सूनू आनन्दराज१७१।१जयराजौ१७१।२ ।
जयराजेन तु मृधे सोमेशभटेन कान्यकुब्जाजौ ॥ २१९ ॥
तत्पुत्रोऽजयराजो१७२ऽप्रजो ममार यवनेन्द्रगोरिरणे ।
आनन्दराजतो द्वौ हम्मीरो१७३।१थाऽनुजश्च गम्भीरः१७३।२॥२२०
हम्मीरेण हि नीतं दोर्दण्डबलेन नयनपुरदुर्गम् ।

रामदास, यश ही है धन जिसके ऐसा रामचन्द्र, दान का मित्र भागचन्द्र, पराक्रमी रूपचन्द्र ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ संग्राम को जीतनेवाला मण्डन ये राजा हुए. मण्डन से प्रारब्धवश दक्षिण दिशा की भूमि का सम्पूर्ण राज्य चलागया ॥ २१५ ॥ उस पीछे वह मण्डन मेवाड़ देश में आया, वहीं ऊपरमाल नामक देश को जीतकर अपना राज्य बनाया ॥ २१६ ॥ वहां पर अपने ही नाम का मण्डनगढ़ नामक गढ़ बनाया, जिसको इस समय के लोग मांडलगढ़ के नाम से कहते हैं ॥ २१७ ॥ उस राजा ने उस गढ़ पर चढ कर बहुत दिनों तक नवीन राज्य का सुख लिया. मण्डन के आत्माराम नामक भूप हुआ ॥ २१८ ॥ आत्माराम के आनन्दराज और जयराज दो पुत्र हुए जिनमें जयराज तो सोमेश भट्ट से कान्यकुब्जदेश के युद्ध में मारागया ॥ २१९ ॥ उसका बेटा अजयराज बिना संतान बादशाह गोरी के संग्राम में मारागया. आनंदराज के हम्मीर और गम्भीर दो पुत्र हुए ॥ २२० ॥ हम्मीर ने भुजबल से नयन-

पश्चाद्दिल्लीनृपतेरुभौ हि सामन्ततां गतौ वीरौ ॥ २२१ ॥
पृथ्वीराज१७७सहायौ सोदर्य्यौ तावमेयशौराडीर्य्यौ ।
वाराणसीनृपादीन्निहत्य जहतुर्महोदयरणेऽसून् ॥ २२२ ॥
हम्मीराच्च सुमेरु१७३र्नैव सुमेरोस्तु संततिर्विदिता ।
गम्भीराद्रणधवलो१७३जातो रणधवलतश्च शरदारः१७४ ॥ २२३ ॥
शरदारादथ जज्ञे महाबलो जोधराज१७५इति वीरः ।
चित्तोडदुर्गदयितं राणेशं योऽजयद्दिनकराख्यम् ॥ २२४ ॥
स हि भीमसेनसंज्ञो१७५वीरमदेवो१७५ऽपि रायचन्द्रो१७५ऽपि ।
चन्द्रः१७५कलिकर्णो१७५पीति षड्डभिधानःस जोधराजो१७५भूत्॥
जज्ञेऽथ षडभिधानाद्धि जोधराजात्तु रत्नसिंह१७६इति ॥
स हि वत्सो१७६रेणु१७६रपीति त्र्यभिधानःप्रकीर्त्तितो लोकैः॥२२६॥
तं रत्नसिंहमाजौ चित्तोडनृपेण नागपालेन ॥
जित्वा बलेन हड्डं नीतं मराडनगढं महादुर्गम् ॥ २२७ ॥
बम्बावदाख्यदुर्गं तदा रचितमाशु रत्नसिंहेन ॥
तत्प्रान्तं च विजित्यासमृद्धराज्यं चकार तत्रैव ॥ २२८ ॥
जातौचरत्नसिंहात्कोल्हण१७७।१इतिविग्रहराज१७७।२इतिचोभौ२॥

पुर (नैणवा) का गढ़ लिया, पीछे वे दोनों वीर दिल्लीपति के उमराव हुए ॥ २२१ ॥ अत्यन्त पराक्रमी उन दोनों भाइयों ने पृथ्वीराज की सहायता कर काशी आदि के राजाओं को मारकर महोदय (महुछा) की लड़ाई में प्राण छोड़े ॥ २२२ ॥ हम्मीर के सुमेरु हुआ परंतु सुमेरु का वंश जाना नहीं गया गंभीर के रणधवल उसके सरदार ॥ २२३ ॥ उसके महाबली वीर जोधराज हुआ जिसने चित्तौड़गढ़ के पति राणा दिनकर को जीता ॥ २२४ ॥ भीमसेन, वीरमदेव रामचन्द्र, चन्द्र, कालिकर्ण इन छः नामों से वह जोधराज प्रसिद्ध हुआ ॥२२५॥ इन छः नामवाले जोधराज के रत्नसिंह हुआ. वही वत्स और रेणु इन तीन नामों से लोक में प्रसिद्ध हुआ ॥२२६॥ उस हाडा रत्नसिंह को बल से जीतकर चित्तौड़ के राणा नागपाल ने उस महादुर्ग मांडलगढ़ को लिया ॥२२७॥ तब रत्नसिंह ने शीघ्र बंबावदा नाम का गढ़ बनाया. और उस प्रांत को जीत कर वहीं पर समृद्धिवाला राज्य किया ॥ २२८ ॥ रत्नसिंह के कोल्हण और विग्रहराज

वीरः स विग्भ्कराजो१७७ऽपरेण नाम्नाऽऽस हुन्नराजो१७७ऽपि॥२२९॥
विग्भ्कोल्याऽह्वयनगरं व्यधायि तेनैव नव्यमतिजीर्णम् ॥
हरमन्दिराणि चासौ निरमीमपदिहशताऽधिकसहस्रम्११००॥२३०॥
तदनन्तरमनपत्यः स हुन्नराज१७७स्तु पञ्चतामाप ॥
बम्बावदाधिराजश्चक्रे राज्यं स कोल्हण:१७७शैवः ॥ २३१ ॥
ज्येष्ठात्कोल्हणभूपादजायत कुमार आशुपाल१७८इति ॥
सत्यपि पितरि स वीरो रुजा कयाचिन्ममार दैववशात् ॥२३२॥
जातस्तदाऽऽशुपालात्कुमारको विजयपाल१७९आख्यातः ॥
स पितामहे परेते बालो बम्बावदाधिराजोऽभूत् ॥ २३३ ॥
यूनोऽथ विजयपालात्तस्मादुत्पेदिरे सुताः पञ्च५ ॥
अभिधानान्यपि तेषां श्रूयन्तां रामभूपते भवता ॥ २३४ ॥
ज्यायांस्तु बङ्गदेवः१८०।१ ।
केसरखानो१८०।२ऽथ कर्म्मसिंह१८०।३श्च ॥
कुम्भो१८०।४वीरमदेव१८०।५स्तेष्वनुजा अप्रजा मृताः सर्वे॥२३५॥
ज्येष्ठात्तु बङ्गदेवाज्जातास्तनयास्त्रयोदश१३ऽतिबलाः ॥
ज्यायांश्च देवसिंहो१८१।१
थ कर्म्मण:१८१।२सिंहणो१८१।३नयनसिंह:१८१।४ ॥ २३६ ॥

दो पुत्र हुए. वह वीर विग्भ्कराज दूसरे हुन्न नाम से भी कहाया ॥ २२९ ॥ उसी ने वीभ्कोल्या नाम अतिजीर्ण नगर का जीर्णोद्धार करके नवीन किया, और इस नगर में इसने महादेव के ग्यारह सौ मंदिर बनाये ॥ २३० ॥ जिस पीछे वह हुन्नराज विना संतान मरगया । शैवमत को धारण करनेवाले बंबावदा के राजा उस कोल्हण ने राज्य किया ॥ २३१ ॥ बड़े कोल्हण भूप के कुमार आशुपाल हुआ. यह वीर पिता के रहते ही प्रारब्धवश किसी रोग से मर गया ॥ २३२ ॥ तब आशुपाल के कुमार विजयपाल हुआ था जो अपने दादा के मरजाने पर बालक ही बंबावदा का राजा हुआ ॥ २३३ ॥ उस विजयपाल के युवा अवस्था में पांच पुत्र हुए. हे भूपति रामसिंह ! उनके भी नाम सुनो. बडा तो बंगदेव. छोटे केसरखान. कर्मसिंह. कुंभ और वीरमदेव. जिनमें छोटे तो सभी विना संतान मरे ॥२३५॥ बड़े बंगदेव के अत्यंत बली १३ पुत्र

अर्डक१८१।५इति वर्डक१८१।६इति
नत्थू१८१।७पत्थू१८१।८ इच हिङ्गुलु१८१।९इच तथा ॥
दशमस्तु खड्गखस्तो१८१।१०
ऽथमोहनः१८१।११स्वामिदास १८१।१२इति साख्यः ॥२३७॥
तदनुजनुर्योलाऽभूत्स कृष्णदासः१८१।१३समाख्यया ख्यातः॥
तेषां स देवसिंहो१८१ज्यायान्सर्वेष्वभून्महावीरः ॥ २३८ ॥
जैत्रं१विग्रहराजं२चेन्द्रद्युम्नं३निहत्य सकुटुम्बम् ।
जित्वा मेदानखिलान् सति जनके ह्ययमुपाददे बुन्दीम् ॥ २३९ ॥
करउर१षट्पुर२पट्टानि३लक्खैर्या४द्याः पुरः पुनर्जित्वा ।
तत्रापि जनकराज्यं सर्वत्राऽरीरचत्स पितृभक्तः ॥ २४० ॥
तदनुजनुष्षु तृतीया३त्सिंहणतो घुग्घुलः१८२समुद्भूतः ।
यद्घुग्घुलोत्त१।१संज्ञास्तद्वंशीया बभूवुरिह विदिताः ॥२४१॥
देवानुज एकादश११उदितो यो मोहनो१८१महावीरः ।
यन्मोहणोत्तसंज्ञा१।२स्तद्वंश्या रामभूपतेऽभूवन् ॥ २४२ ॥
श्रीबङ्गदेवतनुजा इतरे प्रेता दश१०व निर्वंशाः ।
बम्बावदाधिराजः पितरि समाप्ते स देवसिंहो१८१भूत् ॥ २४३ ॥
जाताश्च देवसिंहाद्धड्डनृपाद्द्वादश१२त्मजा वीराः ।

हुए जिनमें बड़ा देवसिंह, छोटे कर्मण, सिंहण, नयनसिंह, अरड़क, बरड़क, नत्थू, पत्थू, हिंगुलु, दसवां खड्गखस्त, मोहन और स्वामीदास ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ इन सब से छोटा कृष्णदास नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिनमें बड़ा देवसिंह सब में वीर हुआ ॥ २३८ ॥ जिसने कुटुम्ब सहित जैत्र, विग्रहराज और इन्द्रद्युम्न को मारकर, संपूर्ण मैणों को जीत, पिता के रहते ही बुन्दी को प्राप्त किया॥२३९॥ उस पिताभक्त (देवसिंह) ने करवाड़, खटकड़, पाटण, लाखैरी आदि ग्रामों को फिर जीतकर वहीं पर सब जगह पिता का राज्य किया ॥ २४० ॥ उस के छोटे भाईयों में से तीसरे सिंहण के घुग्घुल हुआ, जिसके वंश के घुग्घुलोत कहाये ॥ २४१ ॥ हे राजा रामसिंह देवसिंह के ग्यारहवें भाई मोहन के वंश के मोहणोत हुए ॥ २४२ ॥ श्रीबंगदेव के बाकी के दश ही पुत्र बिना संतान मरे और पिता के मरजाने पर देवसिंह बंबावदा का राजा हुआ ॥ २४३ ॥ हाडा राजा देवसिंह के वीर बारह पुत्र

तेष्वाद्यो नरपालो१८३।१नप्पो१८३।१ऽपि स आस संज्ञयेतरया ॥
हरपालो१८३।३ऽथ तदनुजस्तस्याऽप्यनुजोथ जैतसिंह१८३।३इति ॥
तदनुजडुङ्गरसिंह१८३।४श्चत्वारो भ्रातरोऽभवँस्त इमे ॥२६०॥
असति पितरि नरपालो१८३।१ज्यायांस्तेष्वाधिपत्यमधिगतवान् ॥
हरपालपौत्रसंज्ञाः१।३।५समजायन्त हरपालवंशीयाः ॥२६१॥
जैताउत्तोपाख्या२।३।६अभवन्नथ जैत्रसिंहसंभूताः ॥
जैताउत्तान्तर्गतखान्धिलतस्ते हि खान्धिलोत्ता२।३।६श्च ॥२६२॥
खर्ज्जूर्य्याख्यो ग्रामो डुङ्गरसिंहाय दत्त आर्य्येश ॥
तद्वासित्वात्तज्जाः खर्ज्जूरीकोपटङ्किनो३।३।७ऽभूवन् ॥२६३॥
अथ नृपतेर्नरपालाद्धम्मीरो१८४।१ऽभूत्तथा च नवरङ्गः१८४।२॥
तदनुजनुः स्थिरराजो१८४।३वीरास्त्रय इति बभूवुराजिबुधाः ।२६४।
तज्ज्यायान्हम्मीरो१८४।१बुन्दीराज्यमुपभुक्तवान्समये ॥
नवरङ्गपौत्रसंज्ञा४।४।८नवरङ्गोद्भूतसन्ततिर्जाताः ॥ २६५ ॥
स्थिरराजोद्भवंश्याः ख्याताः स्थिरराजपौत्रसंज्ञा५।४।९स्ते ॥
द्वौ हम्मीरा१८४।१ज्जातौ
वरसिंहो१८५।१लालसिंह१८५।२इति सूनू ॥ २६६ ॥
श्रुतिमतधर्म्माऽवित्रा पित्रा तज्ज्यायसेऽर्पिता बुन्दी ॥
हम्मीरेणोत्सृष्टं गैणोल्याह्वं पुरं च लालाय ॥ २६७ ॥

जिसका दूसरा नाम नप्प भी था ॥ २५९ ॥ उस का छोटा भाई हरपाल जिससे छोटा जैतसिंह, जिससे छोटा डूंगरसिंह ॥ २६० ॥ उनमें बड़ा नरपाल पिता के न रहने पर स्वामी हुआ हरपाल के वंश के हरपालपौत्र (हरपालोत) नाम हुए ॥ २६१ ॥ जैतसिंह के वंश के जैतावत नाम से कहाये, जैतावतों में खांधिला से खांधिलोत हुए ॥२६२॥ राजा ने डूंगरसिंह को खजूरी नामक ग्राम दिया वहां बसने से उसके वंश के खजूरिया इस पदवीवाले हुए ॥ २६३ ॥ इस पीछे राजा नरपाल के हम्मीर, नवरङ्ग और थिरराज ये तीन संग्राम के पण्डित पुत्र हुए ॥२६४॥ जिनमें बड़े हम्मीर ने समय पर बुन्दी का राज्य भोगा नवरङ्ग के वंश के नवरङ्गपोता कहाये ॥ २६५ ॥ थिरराज के वंश के थिरराजोत कहाये हम्मीर के वरसिंह और लालसिंह ये दो पुत्र हुए ॥ २६६ ॥ वेदमत के धर्म को पालनेवाले पिता हम्मीर ने बड़े को बुन्दी और छोटे लालसिंह को

तत्रैव तेन गत्वोषितं च राणात्मजो हतश्चाजौ ॥
हाम्मीरिणा सरभसं हाम्मीरिः चेतासिंह इति नाम्ना ।२६८।
लालाद्द्वौ२वुदभूतां ज्यायांस्तनयस्तु जैत्रसिंह१८६।१इति ।
नाम्नास्य नवब्रह्मः१८६।२ कनिष्ठ एतौ स्ववंशवृद्धिकरौ ॥ २६९ ॥
तज्जैत्रसिंहवंश्या जैताउत्तो६।५।१०पटङ्किनो हड्डाः ।
जाताश्च नवब्रह्मात्तथा नवब्रह्मको७।५।११पटङ्का१।१३।२स्ते ॥ २७० ॥
वरसिंहादथ जातास्त्रयः३सुता वैरिशल्य१८६।१इति मुख्यः ।
अपरो नाम्ना जावदु१८६।२रनुजस्ताभ्यां स निम्मदेव१८६।३इति ।
ज्यायांस्तु तेषु समये बुन्दीराजः स वैरिशल्यो१८६।१ऽभूत् ।
सारण१८७।१इति सेव१८७।२इति द्वौ सूनू जावदोः समुद्भूतौ।२७२।
सारणातः सामन्तो१८७जातः सामन्तका८।६।१२अतस्तज्जाः
सेवान्मेवो१८७मेवान्मेवाउत्तो९।६।१३पटङ्किनो जाताः ॥ २७३ ॥
निम्माउतोपटङ्का१०।६।१४बभूवुरथ निम्मराजवंशीयाः । ।
ज्येष्ठाच्च वैरिशल्याद्बुन्दीशादष्ट८सूनवो जाताः ॥ २७४ ॥
ज्यायांस्त्वक्षयराजो१८७।१
ऽनुजाश्च चुण्ड१८७।२स्तथा ह्युदयसिंहः१८७।३ ॥
तदनु च सुभाण्डदेवः१८७।४स भारमल्लो१८७।४ऽप्यभिख्ययेतरया

नैणोली नामक पुर दिया ॥ २६७ ॥ वह वहीं जाकर रहा और संग्राम में हम्मीरसिंह के पुत्र लालसिंह ने राजा हम्मीरसिंह के पुत्र चेत्रसिंह [खेता] को युद्ध में वहीं पर बेग से मारा ॥ २६८ ॥ लालसिंह के दो पुत्र हुए बड़ा पुत्र जैतसिंह, छोटा नवब्रह्म ये दोनों पुत्र अपने वंश को बढानेवाले हुए ॥ २६९ ॥ उस जैतसिंह के वंशके जैतावत पद्वीवाले हाडा हुए, और नवब्रह्म के वंश के नवब्रह्म पद्वीवाले कहाये ॥ २७० ॥ वरसिंह के तीन पुत्र हुए, बडा वैरीसाल, दूसरा जावदू इन दोनों से छोटा नीमदेव ॥ २७१ ॥ जिनमें बडा वैरीसाल तौ समय पाकर बुन्दी का राजा हुआ, और जावदू के सारण और सेव ये दो पुत्र हुए ॥ २७२ ॥ सारण के सामन्त हुआ, जिसके जाये सॉवन्तका कहाये, सेव के मेव हुआ जिसके वंश के मेवावत पद्वीवाले हुए ॥ २७३ ॥ निम्मराज के वंश के निंबावत हुए और बुन्दीपति बडे वैरीसाल के आठ पुत्र हुए ॥ २७४ ॥ बडा तौ अक्षयराज और छोटे चुंड, उदयसिंह, सुभांडदेव

नाम्नाथ शौराडदेवो१८७।५थ लोहटः१८७।६कर्म्मचन्द्र१८७।७ऊर्ज्जस्वी
श्यामो१८७।८ऽष्टमः स नाम्ना
केशवदासो१८७।८ऽपि विदित इतरेण ॥ २७६ ॥
प्रकृतिभिरग्रभवांस्त्री३न्नृपाज्ञयाऽवेक्ष्य तत्पदानर्हान् ।
विहितः सुभाराडदेवो१८७।४हि वैरिशल्ये तनुत्यजि नृपत्वे ॥ २७७॥
अक्षयराजाज्जाता अक्खाउत्तो११।७।१५पटङ्किनोऽभूवन् ।
चुराडोद्भवसन्तानाश्चुराडाउत्तो१२।७।१६पवाचकाः ख्याताः ॥ २७८॥
ऊदाउत्तो१३।७।१७पाख्या अभवन्नप्युदयसिंहवंशीयाः ।
त्रय३इतरे शौराडादय आपुरसन्ततय एव पञ्चत्वम् ॥ २७९ ॥
सर्वानुजनुः श्यामो१८७।७ष्टमो य उदितः स वैरिशल्यसुतः।
यवनेन्द्रेण गृहीत्वा मराडूपतिना कृतोऽर्भको यवनः ॥ २८० ॥
नृपतेः सुभाराडदेवादुदभूवन्नात्मजास्त्रयो३वीराः ।
तेष्वग्रजो महात्मा नारायणदास१८८।१इत्यभिख्यावान् ॥ २८१ ॥
अनुजौ तस्य सगर्भौ बभूवतुर्नरबदो१८८।२नृसिंह१८८।३श्च ।
अनुजोऽनयोर्नृसिंहो१८८।३ जगाम निर्वंश एव पञ्चत्वम् ॥ २८२॥
नरबदतोऽन्वयजनकाश्चत्वारः४सूनवः समुदभूवन् ।

जिसका दूसरा नाम भारमल भी था, सौंडदेव, लोहट, पराक्रमी कर्मचन्द्र, आठवाँ श्याम जिसका दूसरा नाम केशवदास भी था ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ वैरीसाल के मरने पर प्रथम के (अक्षयराज, चुंड और उदयसिंह) को राज्य के योग्य न जान कर राजा की आज्ञा से राज्य के अमात्यादि प्रधान पुरुषों ने चौथे सुभांडदेव को राजा बनाया ॥ २७७ ॥ अक्षयराज के वंश के अक्खावत पदवीवाले हुए चुंड के वंश के चुंडावत उपपद से कहाये ॥ २७८ ॥ उदय के वंश के ऊदावत कहाये बाकी के सौंड आदि तीन बिना संतान ही मरे । २७९। सब से छोटा आठवाँ जो श्याम कहा गया वह वैरीसाल का बेटा मांडू के मुसल्मान बादशाह से पकड़ा जाकर बालकपन में ही मुसल्मान कियागया ॥ २८० ॥ राजा सुभांडदेव के वीर तीन पुत्र हुए जिनमें बड़ा महात्मा नारायणदास नामवाला ॥ २८१ ॥ जिसके छोटे सगे भाई नरबद और नृसिंह हुए. इन दोनों में छोटा नृसिंह बिना संतान ही मरा ॥ २८२ ॥ नरबद के वंश चलानेवाले चार पुत्र हुए. अर्जुन, भीम, पूरण और छोटा मोकल ॥ २८३।

अर्ज्जुन१८९।१भीम१८९।२समाख्या
अथ पूर्ण१८९।३मोत्कल१८९।४श्च तदनुजनिः ॥ २८३ ॥
स्वस्वसमाख्याद्युत्ताश्चत्वार४स्तत्तदन्वया जाताः ॥
पूर्ण१८९।३कुलं हम्मीरा१९१।१द्विदिताद्धम्मीरको३पटङ्कं च ।२८४।
कुलमुख्यवैरिशल्याद्वैराउत्ता४स्तथैव मोत्कल१८९।४जाः ॥
अथसुर्ज्जना१९०।१दितनुजाःषड६ज्जुना१८९।१दप्रजास्त्रयोजाताः२८५
त्रय३एषु जननजनका
आव्हाभिः सुर्ज्जनो१९०।१ऽत्तयो१९०।२रामः १९०।३ ॥
एतत्सप्तक७कुलजा नरबदपौत्रो१४।८।१८पटाङ्किनः सर्वे॥ २८६॥
तदपीह सुर्ज्जनो१९१।१यं सुरताण१९०।१नन्तरं नृपो जातः ॥
इति हेतोस्तदनुजयोर्वक्ष्ये ते द्वे२पृथक्कुले२समये ॥ २८७ ॥
सोवसरे नारायणदासो१८८।१बुन्दीश्वरत्वमधिगतवान् ॥
त्रय३एवाथ तनूजा नारायणदासतः समुद्भूताः ॥ २८८ ॥
ज्यायांस्तु सूर्यमल्ल१८९।१स्तदनुजनू रायमल्ल१८९।२आजिपटुः ॥
कल्याणमल्ल१८९।३इति च त्रिषु३तेष्वग्रेभवोऽभवद्राजा ॥ २८९ ॥

उन उन वंशों में पैदाहुए चारों कुल अपने अपने नामों के अंत में "उत्त" शब्द लगानेवाले हुए अर्थात् अर्जुनोत, भीमोत, पूरणोत, मोकलोत इन नामोंवाले चारों कुल हुए, परंतु पूर्ण का कुल उस प्रसिद्ध हम्मीर के नाम से हम्मीर का इस पदवी से भी प्रसिद्ध हुआ ॥ २८४ ॥ मोकल का वंश मोकलोत भी कुल में प्रसिद्ध, वैरीसाल के नाम से वैरावत कहाया. इस पीछे अर्जुन के सुर्जन आदि छः पुत्र हुए जिनमें तीन तो विना संतानवाले ; और सुरजन, अखय, राम ये तीन वंश चलानेवाले हुए, इन सातों, (सुभांड का बड़ा पुत्र नारायण दास १ नरबद के पुत्र भीम २ पूरण ३ और मोत्कल ४ और उसी नरबद के बड़े बेटे अर्जुन के पुत्र सुर्जन५ अखय ६ और राम ७) के वंश में जो पैदा हुए वे सब नरबदपोता इस पदवी से कहाये ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ नरबदपोता होने के कारण भी यह सुर्जन आगे होनेवाले सूर्यमल्ल के पुत्र सुरताणसिंह के पीछे समय पाकर बुन्दी का राजा हुआ इसकारण इस के दोनों भाइयों (अखय और राम) के दो कुल जुदे कहे गये ॥ २८७ ॥ वह नारायणदास समय पाकरबुन्दीका पति हुआ जिसके ३ पुत्रहुए॥२२८॥बड़ा सूर्यमल्ल,छोटेरायमल्ल और संग्राममें चतुर कल्याणमल्ल इन तीनों में से बड़ा सूर्यमल्ल राजा हुआ॥२८९॥

तावनुजौ तूभार२ वपि तत्यजतुर्निष्प्रजौ रणे कायम् ॥
नृपतेश्च सूर्यमल्लात्पुत्रः सुरताणसिंह१९०इति जातः ॥ २९० ॥
प्राणैर्वियुज्य राणारविमल्ले पञ्चतामिते समिति ।
सुरताणसिंह१९०आपाधिपत्यमसमर्थ एष राज्यकृते ॥ २९१ ॥
सुभटान् मन्त्रिण आर्य्यानमात्यवर्गान्मनीषिवर्गांश्च ।
सोनादृत्य यथेच्छं प्रमत्त आरेभ इष्टमतदुचितम् ॥ २९२ ॥
समयं परिभाव्य तदा षड्भिः६प्रकृतिभिरथैनमपसार्य ।
सुमतिर्नरवदनप्ता स आर्ज्जुनिःसुर्जनः१९१कृतो नृपतिः ॥ २९३ ॥
तदनुजतोऽक्षयराजा१९०।२
त्रयोऽदयालु१९१।१रुदयो१९१।२यशोराजः१९१।३ ॥
एतेषां संततयो
ऽर्जुना१८९।१ऽक्षय१८९।२पुरोगपौत्रका१५।९।१९आसन् ॥२९४ ॥
तदनुजरामा१८९।३ज्जाताश्चत्वारः४सूनवो विजय१९०।१मुख्याः ।
तेषां कुलानि चत्वार्याददिरे रामको१६।९।२०पटङ्कं हि ॥ २९५ ॥
सुरताणपौत्रसंज्ञा१७।१०।२१अभवन्सुरताणसिंहवंशीयाः ।

वे दोनों छोटे भाई तौ संग्राम में विना संतान मरे. और राजा सूर्यमल्ल के पुत्र सुरताणसिंह हुआ ॥ २९० ॥ राणा रत्नसिंह को मारकर युद्ध में सूर्यमल्ल के मरने पर सुरताणसिंह स्वामी हुआ, परंतु यह राज्य करने में असमर्थ था ॥ २९१ ॥ उसने उमराव, मंत्रि, श्रेष्ठ लोग, कामदार लोग और बुद्धिमान् लोगों का अनादर करके उन्मत्तता से जो उसके योग्य न था ऐसा अपने अनुकूल मनचाहा करने लगा ॥ २९२ ॥ तब समय को विचार कर छ हो प्रकृति (स्वामी सहित राज्य की सात प्रकृति हैं जिनमें स्वामी को छोड कर अमात्य, मित्र, कोशाध्यक्ष, प्रजा के मुख्य पुरुष, किलादार, सेनापति) ने इसको दूर करके श्रेष्ठ मतिवाले नरवदपोता अर्जुन के बेटे सुर्जन को राजा बनाया ॥ २९३ ॥ इसके छोटे भाई अक्षयराज के दयालु, उदय और यशोराज ये तीन पुत्र हुए जिनके वंश के अर्जुन और अक्षय शब्द के आगे है पौत्र शब्द जिनके ऐसे अर्जुनपोते अक्षयपोते कहाये ॥ २९४ ॥ उसके छोटे भाई राम के प्रधान विजयी चार पुत्र हुए. उनके चारों कुलों ने रामका इस पदवी का आदर किया ॥ २९५ ॥ सुरताणसिंह के वंशवाले सुरताणपोता कहाये. वह सुर्जन

मतिधर्मनयाचरणौः सर्वोपर्यास सुर्ज्जनो१९१भूपः ॥ २९६ ॥
यवनेन्द्रादकबरतोऽनन्यत्त्रार्हमाप्तमौन्नत्यम् ।
देशाश्च द्विगिषु५२सङ्ख्या आप्ता येन चरणाद्रि१काश्य२धिकाः।२९७।
अथ सुर्ज्जनान्नरेशान्मध्यममुख्यास्त्रयः सुता जाताः ।
ज्यायान्दुर्ज्जनशल्ल्यो१९२।१
ऽनुजौ तु भोज१९२।२श्च रायमल्ल१९२।३ श्च॥ २९८ ॥
सिंहस्येव सुतस्य ज्येष्ठस्यावेक्ष्य केवलं शौर्यम् ॥
श्रीसुर्ज्जनेन यवनेन्द्राधिया राज्योचितो मतो भोजः१९२।२ ॥२९९॥
दुर्ज्जनशल्ल्याज्जाता ऊदाउत्तोपटाङ्किनो१८।११।२२ऽभूवन् ।
जाताश्चरायमल्लादुपनाम्ना ते तु रायमल्लोत्ताः१९।११।२३।३००।
हड्डेश्वराच्च भोजाच्चत्वारः४सूनवः समुदभूवन् ।
ज्यायांस्तु रत्नसिंहो१९३।१ ऽथ हृदयनारायणो१९३।२रणोत्कराठी।
केशवदास१९३।३श्च तथा मनोहरादिपददास१९३।४इति वीरः ।
एतेषामचतुर्था१९३।४ज्यायांसोऽन्वयधरास्त्रयो३जाताः ॥३०२॥
तेषां स रत्नसिंहो१९३।१ज्यायान्बुन्द्याधिपत्यमाधिगतवान् ॥
विप्रैर्यन्न्यायबलाज्ज्येष्ठोऽपि सुतो१९४।१हतो हि लाम्पट्ये॥३०३॥
हरदाउत्तो२०।१२।२४पाख्यास्तु हृदयनारायणोद्भवा अभवन् ।

राजा बुद्धि, धर्म और नीति के आचरणों से सर्वोपरि रहा ॥ २९६ ॥ जिसने अकबर बादशाह से क्षत्रियों के योग्य अद्वितीय उन्नति और चनारगढ व काशी है प्रधान जिनमें ऐसे ५२ परगने पाये ॥ २९७ ॥ इस पीछे राजा सुर्जन के मध्यपुत्र है प्रधान जिनमें ऐसे तीन पुत्र हुए जिनमें बड़ा दुर्जनशाह, छोटे भोज और रायमल्ल ॥ २९८ ॥ बड़े पुत्र का सिंह के समान केवल पराक्रम देख सुर्जन ने बादशाह की संमति से राज्य के योग्य भोज को माना ॥ २९९ ॥ दुर्जनसाल के जाये ऊदावत पदवीवाले हुए और रायमल्ल के जाये रायमलोत उपनामक हुए ॥ ३०० ॥ हाडों के ईश्वर भोज के चार पुत्र हुए बडा तौ रत्नसिंह, छोटे रण में उत्साह रखनेवाला हृदयनारायण, केशवदास और वीर मनोहरदास. इन में चौथे को छोड़ कर बाकी के तीन वंश चलानेवाले हुए ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ जिनमें बड़ा रत्नसिंह बुंदी का पति हुआ, जिसके न्याय बल से उसके लंपटी बड़े बेटे को ब्राह्मणों ने मारा ॥ ३०३ ॥ हृदयनारायण

केशवदासोद्भूता ये केशवदासभोजपौत्रा२१।१२।२५स्ते॥३०४॥

रत्नाद्गोपीनाथो१९४।१

माधवसिंहो१९४।२हरि१९४।३र्जगन्नाथः१९४।४ ॥

अक्षयसिंह१९४।५श्च तथा सुजाणसिंह१९४।६इति षड्डुदमुत्पेदे।३०५।

तेषु स गोपीनाथो१९४।१हतो द्विजैः पारदारिको व्यसनी ।

माधवसिंहाज्जाता माधाणयु२२।१३।२६पटाङ्किनोऽभवन्हड्डाः॥३०६॥

जाता हरेस्तृतीयात्तु हरीजीको२३।१३।२७पटाङ्किनः सर्वे ।

ये चापि जगन्नाथोद्भवा जगन्नाथपौत्र२४।१३।२८संज्ञास्ते ॥ ३०७ ॥

एतेभ्योऽप्यनुजनुषौ निर्वंशौ पञ्चतामगमतां द्वौ२ ॥

गोपीनाथाज्जातास्त्रयोदश१३सुताः शृणुष्व तान्नृपते ॥ ३०८ ॥

मुख्यस्तु शत्रुशल्य१९५।१स्तथेन्द्रशल्य१९५।२श्च वैरिशल्य१९५।३श्च।

अनुजोथ राजसिंहो१९५।४

मुहुकमसिंह१९५।५स्तथा महासिंहः१९५।६ ॥ ३०९ ॥

तदनुजनुरुदयसिंहः१९५।७

शूरः१९५।८श्याम१९५।९श्च केसरीसिंहः१९५।१० ॥

एवं च कनकसिंहो१९५।११

नगराजो१९५।१२रामसिंह१९५।१३इति सर्वे ॥ ३१० ॥

तेषु ज्यायान्भ्राता स शत्रुशल्यः१९५।१पितामहे प्रेते ।

के वंश के हरदाउत्त कहाये, और केशवदास के केशवदास भोजपोता कहाये ॥ ३०४ ॥ रत्नसिंह के गोपीनाथ, माधवसिंह, हरि, जगन्नाथ, अक्षयसिंह और सुरताणसिंह ये छः पुत्र हुए॥३०५॥जिनमें परस्त्री का व्यसन रखने वाला राजा गोपीनाथ ब्राह्मणों से मारा गया. माधवसिंह के वंश के माधानी पदवी वाले हाडा हुए ॥ ३०६ ॥ तीसरे हरि के वंश के तो सब " हरिजीका " इस पदवी से कहाये, और जगन्नाथ के जाये जगन्नाथपोता नाम से कहाये॥३०७॥ इन से छोटे दो विना संतान मरे. हे राजा ! गोपीनाथ के तेरह पुत्रों के नाम सुनो ॥ ३०८ ॥ बड़ा शत्रुशल्य, छोटे इंद्रशाल, वैरीसाल, राजसिंह, मुहुकमसिंह, महासिंह, उदयसिंह, शूर, श्याम, केसरीसिंह, कनकसिंह, नगराज और रामसिंह ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ जिनमें वह बड़ा भाई शत्रुसाल दादा के मरजाने

बुन्द्याधिपत्यमाप्नोच्छ्रीसुर्जनभोजरत्नविस्तीर्णाम् ॥ ३११ ॥
स दधीचिदानवीरोऽर्ज्जुनरणवीरोऽम्बरीषहरिभक्तः ।
जीमूतवाहन इवाभवद्दयावीर इन्दुकमनीयः ॥ ३१२ ॥
अनुजेन्द्रशल्ल्यवंश्याः ख्याता हि तदाह्वयेन्द्रसल्लोत्ताः२५।१४।२९ ॥
जाताश्च वैरिशल्ल्यादुपनाम्ना ते तु वैरिसल्लोत्ताः२६।१४।३० ॥३१३॥
अनुजास्तु राजसिंहाज्जाता आचिराय निधनमधिजग्मुः ।
मुहुकमासिंहोद्भूता मुहुकमासिंहोत्त२७।१४।३१ संज्ञका आसन् ।३१४।
जाताश्च महासिंहोतोपाख्यां२८।१४।३२लेभिरे महासिंहात् ।
इतरेऽनुजाः समस्ता बाल्ये दैवेन मम्रुरप्रजसः ॥ ३१५ ॥
नृपतेश्च शत्रुशल्ल्यात्सप्त७सुता जज्ञिरे महासत्त्वाः ।
ज्यायांस्तु भावसिंहो१९६।१धर्मधुरीणो युधिष्ठिरो ह्यपरः ॥ ३१६ ॥
जनयितरि वीरशय्यासुप्ते छत्रं दधार स महात्मा ।
राज्यंसुयशश्चक्रे प्रसह्य धर्मं ररक्ष यवनेन्द्रात् ॥ ३१७ ॥
अनुजास्तु भीमसिंहो१९६।२भारतसिंह१९६।३स्तृतीय३आजिसखः।
भगवत्सिंहो१९६।४भूपति-
सिंहो१९६।५भूपालसिंह१९६।६इति षष्ठः ॥३१८ ॥

पर श्रीसुर्जन, भोज और रत्नसिंह से फैलायेहुए बुन्दी के राज्य को प्राप्त हुआ ॥ ३११ ॥ वह [शत्रुसाल] दधीचि के समान दानवीर, अर्जुन के समान रणवीर, अंबरीष के समान हरिभक्त, जीमूत [मेघ] के समान दयावीर और चन्द्रमा के समान सुन्दर हुआ ॥ ३१२ ॥ छोटे भाई इंद्रसाल के वंश के उसी के नाम से इंद्रसल्लोत कहाये ॥ और वैरीसाल के वंश के वैरीसालोत इस उपनाम से कहाये ॥ ३१३ ॥ छोटे भाई राजसिंह के हुए सो तौ शीघ्र ही मर गये, मुहुकमासिंह के हुए वे मुहुकमसिंहोत कहाये ॥ ३१४ ॥ महासिंह के जाये महासिंहोत इस नाम से कहाये. वाकी के सब छोटे भाई दैववश बाल्यावस्था में ही बिना संतान मरे ॥ ३१५ ॥ राजा शत्रुसाल के महापराक्रमी सात पुत्र हुए, जिनमें बड़ा तौ धर्मधुरीण भावसिंह, जो मानों दूसरा युधिष्ठिर था ॥ ३१६ ॥ जिस महात्मा ने पिता के वीरशय्या पर सोजाने पर छत्र धारण करके राज्य को यश युक्त किया और हठ पूर्वक बादशाह से धर्म को बचाया ॥ ३१७ ॥ छोटे भाई भीमसिंह जो युद्ध का मित्र, तीसरा भारतसिंह, चौथा

सर्वेभ्योऽनूद्भूतः स ईश्वरीसिंह१९६।७इत्यभिख्यावान् ।
तेषु द्वौ२पूर्वभवौ ससुतावन्ये तु मम्रुरनपत्याः ॥ ३१९ ॥
नृपतेस्तु भावसिंहात्पृथ्वीसिंहो१९७।१बभूव सुत एकः१ ।
तेन स्तनन्धयेन हि मम्रे श्रामद्वया२ऽनुमितवयसा ॥ ३२० ॥
भीमाच्च कृष्णसिंहः१९७।१प्रयागसिंह१९७।२स्तथोदभतां द्वौ२।
लघुनाऽप्रजसा मम्रे जज्ञाते द्वौ२शृणुष्व तौ कृष्णात् ॥ ३२१ ॥
मुख्योऽनिरुद्धसिंहो१९८।१ऽथ कीर्त्तिसिंहः१९८।२स बाल्य एव मृतः।
ज्येष्ठो निजपुत्रत्वे मतो मृतसुतेन भावसिंहेन ॥ ३२२ ॥
स्वर्गत इति हड्डेन्द्रे यशोधने राज्ञि भावसिंहोऽथ ।
अधिगततदाधिपत्यो नरेश्वरः सोऽनिरुद्धसिंहो१९८ऽभूत् । ३२३ ।
अनिरुद्धान्नृपतेरुदभूवँश्चत्वार४आत्मजास्त इमे ।
बुधसिंह१९९।१योधसिंहौ१९९।२
तथा ह्यमरसिंह१९९।३विजयसिंहौ१९९।४च ॥ ३२४ ॥
अनुजास्त्रयो३ऽप्यपुत्रा युवा१शिशू२इत्यवस्थिता मम्रुः ।
ज्यायांस्तु स बुधसिंहः१९९कायत्यजि पितरि बुन्द्यधीशोऽभूत् । ३२५।
युववयसि वर्द्धितमसौ हारितवान् वार्द्धके सकलराज्यम् ।

भगवतसिंह, पांचवाँ भूपतिसिंह, छठा भूपालसिंह, सब से छोटा ईश्वरीसिंह जिन में प्रथम के दो तो पुत्रवाले हुए और बाकी के विना संतान मरे ॥३१८॥ ॥ ३१९ ॥ राजा भावसिंह के पृथ्वीसिंह एक ही पुत्र हुआ, वह स्तनपान करता ही दो वर्ष की अवस्था के लगभग मरगया ॥ ३२० ॥ भीमसिंह के कृष्णसिंह और प्रयागसिंह दो पुत्र हुए, जिनमें छोटा विना संतान मरा. कृष्णसिंह के दो पुत्र हुए तिनको सुनो ॥ ३२१ ॥ बड़ा अनिरुद्धसिंह और छोटा कीर्त्तिसिंह जो बालक ही मरगया. भावसिंह ने अपने पुत्र (पृथ्वीसिंह) के मर जाने पर बड़े (अनिरुद्धसिंह) को अपना पुत्र माना ॥ ३२२ ॥ यश ही है धन जिसके ऐसे हाडाओं के इंद्र भावसिंह के स्वर्गवासी होने पर उसके अधिकार को प्राप्त करनेवाला अनिरुद्धसिंह राजा हुआ ॥ ३२३ ॥ राजा अनिरुद्ध के चार पुत्र हुए बुधसिंह, जोधसिंह, अमरसिंह और विजयसिंह॥३२४॥ तीनों छोटे भाई तो कोई बालकपन में और कोई जवानपन में अपुत्र मर गये, और बड़ा बुधसिंह पिता के मर जाने पर बुन्दी का पति हुआ ॥ ३२५ ॥

बुधसिंहादुदभूवन्नथ षट्तनुजाः शृणुष्व तान्नृपते ॥ ३२६ ॥
ज्येष्ठस्तु देवसिंहो२००।१धोङ्कलसिंहो२००।१ऽपि स ह्यपरनाम्ना ।
तदनु च भावत्सिंहः२००।२स लालसिंहो२००।२ऽप्यभिख्ययेतरया।
अथ च भवानीसिंहः२००।३संदिग्धः केनचिन्निदानेन ।
जातश्च तदनुजन्मा चतुर्थ४उम्मेदसिंह२००।४इति वीरः ॥ ३२८॥
अनुजोऽस्य चन्द्रसिंहः२००।५स पद्मसिंहो२००।५प्यभूदपर२नाम्ना
षष्ठो६ऽथ दीपसिंह२००।६स्तेषु चतुर्था२००।४न्तिमौ२००।६धृतायुष्कौ
उम्मेद२००।४ एष नृपतिर्विजित्य कूर्म्मेश्वरेश्वरीसिंहम् ॥
तद्गस्तामुद्धृत्य स्वमहीं बुभुजे स तीर्णसिन्धुयशाः ॥ ३३० ॥
ये दीपसिंहवंश्या आसंस्ते भूपदीपसिंहोत्ताः २९।२५।३३ ॥
इतरे बुधसिंहसुताः शिशवः परलोकमध्यतिष्ठंस्ते ॥ ३३१ ॥
उम्मेदात्पञ्च५ सुतास्तेष्व२०१।१भवत्पूर्वमीडरेच्यां यः ॥
स२०१।१त्वभिधानविधानात्प्रागेवाशिशुर्जगामपरलोकम् ॥ ३३२ ॥
पश्चाच्चाऽजितसिंहो२०१।२

इसने युवाऽवस्था में बढाये हुए राज्य को वृद्धाऽवस्था में गमाया. हे राजा बुधसिंह के छः पुत्र हुए उनको सुनो ॥ ३२६ ॥ बड़ा तो देवसिंह वही दूसरे नाम से धूंकलसिंह हुआ, छोटा भावतसिंह सो ही दूसरे नाम से लालसिंह ॥३२७॥ तीसरा भवानीसिंह किसी कारण से संदिग्ध हुआ अर्थात् यह निश्चय नहीं हुआ कि वह बुधसिंह का औरस पुत्र था वा कृत्रिम; उसका छोटा भाई चौथा वीर उमेदसिंह हुआ ॥ ३२८ ॥ इसका छोटा भाई चन्द्रसिंह वही दूसरे नाम से पद्मसिंह हुआ, और छठा दीपसिंह, जिनमें चौथा (उमेदसिंह)और अंतिम (दीपसिंह) ये दोनों आयु धारण करनेवाले हुए ॥ ३२९ ॥ समुद्र पर्यंत यश फैलानेवाले इस राजा उमेदसिंह ने कछवाहों के स्वामी ईसरीसिंह को जीत कर उस की दबाईहुई अपनी पृथ्वी को पीछी निकाल कर भोगी ॥३३०॥ हे राजा ! दीपसिंह के वंश के दीपसिंहोत हुए बाकी के बुधसिंह के पुत्र बालकपन में ही परलोक गये ॥ ३३१ ॥ उम्मेदसिंह के पांच पुत्र हुए ; जिनमें जो पहला ईडरेची रानी से हुआ वह लड़का नामकरण (नाम पड़ने) से पहिले

ऽथ बहादुरसिंह२०१।३इति तृतीयोऽभूत् ॥
ारदारसिंह२०१।४एते त्रिलोकसिंहे२०१।५न पञ्चमेऽनसमम् ३३३
विधिवत्तमऽजितसिंहं महाऽऽधिपत्येऽभिषिच्य सुतमुचितम् ॥
उम्मेदसिंहनृपतिर्विरतो योगक्रियां समारेभे ॥ ३३४ ॥
ये च बहादुरसिंहादुद्भूतास्ते तदाऽह्वयाद्युत्ताः३०१।६।३४ ॥
शरदारसिंहवंश्यास्तदभिख्याद्युत्त३१।१६।३५संज्ञका अभवन् ३३५
जातौ द्वाऽवजितनृपात्प्रतापसिंह२०२।१श्च विष्णुसिंह२०२।२श्च ॥
बालेऽग्रजे च पितरि च मृते नरेशः स विष्णुसिंहो२०२।२ऽभूत् ३३६
नृपतेश्च विष्णुसिंहात्सूनव उत्पेदिरे तथा पञ्च ॥
अग्रजनिरिन्द्रसिंहो२०३।१
ऽथादत्ताख्य२०३।२ स्ततोऽनु बलदेवः २०३।३ ॥ ३३७ ॥
कविबुधचातकवारिदसंविद्रस्ताऽखिलप्रकृतिविकृते ॥
श्रीरामसिंह२०३।४नृपतेभवांश्चभवतोऽनुजश्चगोपालः२०३।५ ३३८
त्रिष्वग्रजेषु बालेष्वथ व्यसुषु पितरि चाधिरूढे स्वः ॥
राज्यं भवताऽन्वष्ठाय्यरिमौलिन्यस्तशासनेन्दुयशाः ॥३३९॥

ही मर गया ॥ ३३२ ॥ और पीछे अजीतसिंह, बहादुरसिंह, सरदारसिंह और त्रिलोकसिंह ये मिल पांच पुत्र हुए ॥ ३३३ ॥ राजा उम्मेदसिंह उस योग्य पुत्र अजीतसिंह का विधिवत् महाराज्याभिषेक करके संसार से विरक्त हो योगाभ्यास में लगा ॥ ३३४ ॥ और जो बहादुरसिंह से हुए वे बहादुरसिंहोत और सरदारसिंह के वंश के सरदारसिंहोत नामवाले हुए ॥ ३३५ ॥ राजा अजीतसिंह के प्रतापसिंह और विष्णुसिंह दो पुत्र हुए. बालक बडा भाई और अपने पिता के मरजाने पर वह विष्णुसिंह राजा हुआ ॥ ३३६ ॥ राजा विष्णुसिंह के पांच पुत्र हुए बडा इन्द्रसिंह, छोटा जिसका नाम नहीं दियागया (नामकरण के पहले ही मरगया) उससे छोटा बलदेव ॥ ३३७ ॥ कवि और पण्डित रूपी चातकों का मेघ, ज्ञान पूर्वक ग्रहण किया है संपूर्ण प्रकृति विकृति अर्थात् सांख्य शास्त्र में कहाहुआ तत्व ज्ञान जिन्होंने ऐसे, हे राजा रामसिंह ! आप, और आप से छोटा गोपाल ॥ ३३८ ॥ तीनों बडे भाइयों के गतप्राण होने और पिता के स्वर्ग जाने पर शत्रुओं के सिर पर धरी है आज्ञा जिन्हों ने ऐसे चन्द्रमा के समान उज्वल यशवाले आपने राज्य करना आरंभ किया ॥ ३३९ ॥

भवतश्च भीमसिंहो२०४११यशोधनो रङ्गनाथसिंह२०४१२श्च ॥
द्वाविति राजकुमारा उदभूतां भूभुजङ्गहड्डेन्द्र ॥ ३४० ॥
षट्दृतर्कार्णवमन्दरनास्तिकषट्दृतर्कतूलविहननभृत् ॥
श्रीरामसिंह२०३१४नरराडितिसंक्षिप्तोऽन्वयोऽभवद्भवतः ॥ ३४१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम १ राशौ संक्षिप्त चहुवाणवंशोद्देशनमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

दोहा

यह [1]समास उद्देसं किय, बरनौं अब करि [3]व्यास ॥
सुनहु [4]धराधव दै श्रवन, कुलचहुवान प्रकास ॥ १ ॥
[5]इतरन बिच अनपत्य मृत, चविहौं बिदित चुहान ॥
हड्डनको सब अक्खिहौं, बित्थर पुब्ब बखान ॥ २ ॥
गिनहु नयो या ग्रंथ मैं, नियम राम नरनाह ॥
जोहि गाँवरि कहियत जथा, रक्खि पुलक [6]कर राह ॥ ३ ॥

हे पृथ्वीपति हड्डेन्द्र आप के, यश ही धन जिसके ऐसा भीमसिंह और रंगनाथसिंह दो राजकुमार हुए. छहों शास्त्र(पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा, न्याय, वैशेषिक, सांख्य और पातञ्जल) रूपी समुद्र का मन्दराचल, और नास्तिकों के छहों शास्त्र(माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, चार्वाक और दिगम्बर) रूपी रुई की पींजण को धारण करनेवाले[पींजारा]ऐसे हे नरपति रामसिंह यह आप के वंश का संक्षेप से वर्णन हुआ ॥ ३४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में संक्षेप से चहुवाण वंश का वर्णन रूप ग्यारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥

यह तौ संक्षेप से वर्णन किया अब विस्तार पूर्वक वर्णन करता हूं सो हे चहुवाण कुल के प्रकाश करनेवाले भूपति रामसिंह! कान देकर सुनिये ॥ १ ॥ हाडों के सिवाय और चहुवाणों में तौ जो बिना संतान मर गये हैं उनमें प्रसिद्ध प्रसिद्धों को कहूंगा और हाडा शाखवाले चहुवाणों का तौ प्रसिद्ध अप्रसिद्ध सब का विस्तार पूर्वक वर्णन करूंगा ॥ २ ॥ हे नरपति रामसिंह! इस ग्रंथ में यह नवीन नियम जानो! केवल उस रोमांच करनेवाले मार्ग को अर्थात् सुंदर रीति को रख कर यथायोग्य कहता हूं तात्पर्य यह है कि इस ग्रंथ में एक पद्य में भी कई भाषाओं के शब्द आवेंगे इसकारण पाठकों के उपयोगी

प्राकृत १ संस्कृत२ पद प्रचुर, ब्रजदेसी३हु बिसेस ॥
ग्रंत्थ अपभ्रंस४हु अधिक, पैसाची५कहुँ पेस ॥ ४ ॥
ब्रंजविभाक्ति जुतहै बहुत, ए ५ पद संभरवार ॥
बहुठाँ एँ ५हि बिभाक्ति बिनु, अपभ्रंस अनुसार ॥ ५ ॥
पुर दिल्ली१ग्वालेर२पुर, बीच ब्रजादिक देस ॥
पिंगल उपनामक गिरा, तिनकी मधुर बिसेस ॥ ६ ॥
यातैं नरबानी यह हि, रक्खी तँहँ इक ओर ॥
कहुँ अर्थ१रु पद२दृढ करन, जोहु सुनहु मति जोर ॥ ७ ॥
व्यंजनगन को पंद्रहौं१५,बहुरि तीसमौं३० बर्ण ॥
तिम रक्ख्यो इकतीसमौं४१,कहुँ मितथल कलिकर्ण ॥८॥
बक्तादिक बैशिष्टयबल, फुरैं न आसय ग्रत्थ१ ।
संयोगादिक सौं हु पुनि, जानैं सद्द२न जत्थ ॥ ९ ॥

और प्राचीनों के अविरुद्ध नवीन नियम किये हैं; केवल वे ही कहेजाते है. इस दोहे में एवारि शब्द केवल अर्थ में प्राकृत का अव्यय है ॥ ३ ॥ इस ग्रंथ में प्राकृत, संस्कृत, व्रजभाषा और अपभ्रंश भाषा के पद बहुत हैं और कहीं २ पैशाची भाषा के पद भी हैं ॥ ४ ॥ हे संभरवारे (चहुवाण) इन भाषाओं के बहुत से पद तौ व्रजभाषा की विभक्तियों सहित हैं और ये ही पद बहुतमी जगह अपभ्रंशभाषा के अनुसार विना विभक्ति भी हैं ॥ ५ ॥ दिल्लीनगर और ग्वालेर नगर के बीच व्रज आदि देश हैं उन देशों की भाषा जिसका उपनाम पिंगल है बहुत ही मधुर है ॥ ६ ॥ इसीकारण से मैंने यही नरभाषा रक्खी है जिसमें अर्थ और पद को दृढ करने के लिये एक और नवीन रीति रक्खी है सो भी बुद्धि (ध्यान) लगाकर सुनिये ॥ ७ ॥ हे कलियुग के कर्ण रावराजा रामसिंह! व्यंजन गण का पन्द्रहवाँ वर्ण णकार, और तीसवां वर्ण तालव्य शकार, वैसे ही इकतीसवाँ वर्ण मूर्धन्य षकार ये तीनों वर्ण थोड़े ही स्थानों में रक्खे हैं, अर्थात् बहुत स्थानों में णकार के स्थान में नकार और तालव्य मूर्धन्य इन दोनों के स्थान में दन्त्य सकार रक्खे हैं ॥ ८ ॥ क्योंकि जहां पर वक्ता और श्रोताओं को विशेष बुद्धिबल से भी अर्थ और अभिप्राय का भान न होवे और संयोग आदि (संयोग, वियोग साहचर्य विरोधिता, प्रयोजन, प्रकरण, लिङ्ग, अन्य शब्द की संनिधि, सामर्थ्य, योग्यता, देश, काल, व्यक्ति, उदात्त आदि स्वर) साहित्य में कहेहुए इन चौदह कारणों से भी जहां पर शब्दज्ञान न होवे वहां

उदाहरन अणुमान १ अरु, वंश न चलैं लहि बात२ ॥
माषं मलिन हुव ब्याह मुख ३, इम बिरले थल आत ॥१०॥
संधि १ हु कहुँ फुट अर्थ सन, ज्यौं नायो१ मुरि जुद्ध ।
अच अच की यह हल रु अच, प्रभु जगदीस२ प्रबुद्ध ॥११॥
हल हल की मग पद्धर३ हि, रीति यहै नृप राम ।
कहुँ संस्कृत अव्यय१ क्रिया२, ज्यौं खलुं१ जुद्ध जगाम२ ॥१२॥
स्वरहु सत्तमो ७ बारहौं १२, चउद्दहौं१४ लिय चाहि ॥
ऋत१ बुल्ल्यो नृप ऐल२ रन, अति कौसल३ इम आहि ॥१३॥
कहुँक हकार१ बिसर्ग को, ज्यौं अंतहपुर२ जानि ॥

पर वे (ण श ष) तीनों वर्ण वैसे के वैसे ही रक्खे हैं ॥ ९ ॥ जिनके उदाहरण क्रम से ये हैं कि जैसे "अणुमान" यहां पर णकार के स्थानमें नकार करदिया जावे तो "अनुमान" शब्द होकर परमाणु का वाचक न रहे, और " वंश न चलैं लहि बात " यहां पर तालव्य शकार के स्थान में दंत्य सकार कर दिया जावे तौ पवन के लगने से [उन्मत्त अर्थात् बावला] किसी के वश में नहीं चलता, यह अर्थ छूटकर पवन के लगने से वस्त्र चलता है ऐसा अर्थ हो जावे, इसी प्रकार " माषं मलिन हुव ब्याह मुख " यहां पर मूर्धन्य के स्थान में दंत्य सकार कर दिया जावे तो विवाह आदि मंगलीक कार्यों में माष (उड़द) धान्यविशेष मलिन [दूषित] हुए यह अर्थ छूटकर ब्याह आदि में महीने दूषित हुए यह अर्थ हो जावे इस प्रकार थोड़े स्थलों में उपरोक्त तीनों वर्ण आवेंगे ॥ १० ॥ संधियां भी कहीं २ स्पष्ट अर्थ से रहेंगीं, जैसे न×आयो जिस का " नायो" यह स्वर के साथ स्वर की संधि हुई और जगत्×ईश जिसका "जगदीश " यह व्यंजन के साथ स्वर की संधि है ॥ ११ ॥ इसी प्रकार पद=धरै हि जिसका ' पद्धरहि ' यह व्यंजन के साथ व्यंजन की संधि है. हे राजा रामसिंह ! संधियों की यह रीति है कि कहीं २ संस्कृत के अव्यय और क्रिया पद भी आवेंगे जैसे " खलुं " यह निश्चय अर्थ में अव्यय और "जगाम" यह गमन अर्थ में क्रियापद है जिसका अर्थ यह है कि निश्चय युद्ध में गया ॥१२॥ स्वरों में भी सातवाँ "ऋ" बारहवाँ " ऐ " और चौदहवाँ "औ" ये तीनों स्वर जान बूझकर लिये हैं जिनके उदाहरण क्रम से ये हैं कि ऋतका ऋकार, ऐल का " ऐ " कार और कौशल का " औ " कार ये तीनों स्वर हैं सो इसी प्रकार लिये जावेंगे इस का अर्थ है कि " ऐल नाम राजा युद्ध में सत्य बोला" कहीं पर विसर्ग का हकार जानो. जैसे अन्त पुर का "अन्तहपुर"

कहुँक लोप१ पर द्वि२ गुन करि, निस्संह२ दुक्ख३ प्रमानि । १४ ।
अरु पदआदि वकार सब, जे बकार१ बन२ जेम ।
आ को अं१ हु पद आदि में, तहँ अकास२ कहुँ तेम॥ १५ ॥
संस्कृत सब्द हलंत सो, यामैं कहुँक अदंत१ ॥
कहुँ हल लुप्त२ सु जगत१ जग२, सब इहिँ रीति सुमंत ॥ १६ ॥
माता१ राजा२ चन्द्रमा३, आदि सब्द अनुहार ॥
संस्कृत प्रथमा१ इक बचन, सिद्धहु नाम प्रकार ॥ १७ ॥
ब्रजबिभक्ति पावैं बहुरि, ज्यों माता कौं१ जल्प ।
जुहु बिकल्प करि लुप्त जिम, कियउ बिधाता२ कल्प॥ १८ ॥
पहिली१ दूजी२ अरु छठी६, अपभ्रंसं लुपि जात ।
अंत्या७ अरु तीजी३ हुयँहँ, दूजे२ चरन दिखात ॥ १९ ॥

और कहीं पर विसर्ग का लोप करके आगे के अक्षर को द्वित्व किया है जैसे निः सह का " निस्सह " और दु ख का " दुक्ख " इस प्रकार जानो ॥ १४ ॥ और पद के आदि के जितने वकार हैं वे सब बकार जानो जैसे वन के स्थान में " वन " तैसे ही कहीं पद के आदि के आकार को " अ " कार जानो जैसे आकाश को " अकाश " ॥ १५ ॥ जो शब्द संस्कृत में हलन्त (हल् है अंत में जिसके) है वह इस ग्रथ में कहीं तौ अकारान्त रक्खा है और कहीं उसके हल् का लोप किया है जैसे जगत् इसका " जगत " और 'जग' हे श्रेष्ठ बुद्धिमान् रावराजा रामसिंह ! सब इसी रीति से जानो ॥ १६ ॥ माता, राजा और चन्द्रमा इनको आदि लेकर इनके जैसे ही और भी शब्द प्रथमा विभक्ति के एक वचन में संस्कृत के नाम (जिसके आगे स्वादि विभक्ति आवे उसको व्याकरण में नाम कहते हैं) की रीति से सिद्ध हुए आवेंगे॥१७॥ संस्कृत प्रथमा के एक वचन से सिद्ध हुए शब्द फिर व्रजभाषा की विभक्ति भी पाते हैं जैसे " माता कौं जल्प " यहां पर माता शब्द प्रथमा के एक वचन में सिद्ध है उसी ने माता का बोलना इस अर्थ में व्रजभाषा की षष्ठी विभक्ति 'कौ' पाई है ॥ वही व्रजभाषा की विभक्ति विकल्प करके लुप्त भी हो जाती है जैसे " विधाता कल्प " यहां पर विधाता ने कल्प किया इस अर्थ में व्रजभाषा की तृतीया विभक्ति " ने " का लोप है ॥ अपभ्रंश भाषा में प्रथमा' द्वितीया, तृतीया, षष्ठी और सप्तमी इन विभक्तियों का लोप हो जाता है इसी छन्द के दूसरे चरण में दीखती है अर्थात् " अपभ्रंश लुपि जात" इस चरण का अर्थ है कि अपभ्रंश में लुप्त हो जाती है यहां पर अपभ्रंश इस पद की

क्लीब लिंग१ नरकौं भजैं, बहुठाँ जिम सो२ बाँरि॥
अरु कहुँ उरभी३ अंत इम, नृपबर जो ह्वैनारि ॥ २० ॥

षट्पदी

पूज्यनाम इक१ बचन तास बहुबचन बिसेसन२,
कन्ह चले३ जिम कुपित महाब्रत समुख महामन ।
जहँ पर है बहु बचन नामअर्थक नकार१ तहँ,
बहु बचनन की ठाँहु होय परिहरि प्रथमा१ कहँ ।
क्रमतैं उदाहरन सुरनकै१ सुरन तथा सत्रहि असन,
कहुँ प्राकृतादि अव्यय१ क्रिया२न गावि१ होई२ जिम गुनन गन।२१।

दोहा

कहुँ दुव२ अर्धन अंत अरु, कहुँ दुव२चरनन अंत ।

सप्तमी विभक्ति " में " का लोप हुआ है ॥ १९ ॥ भाषा में नपुंसकलिंग नहीं होता इस कारण से जो नपुंसकलिंग शब्द हैं वे बहुत जगह तौ पुल्लिंग होते हैं जैसे 'सो वांरि' अर्थात् वह जल, यहां पर वारि शब्द नपुंसकलिंग है सो पुल्लिंग हुआ और कहीं पर हे श्रेष्ठ राजा वही नपुंसकलिंग स्त्रीलिंग हो जाता है जैसे 'उरभी अंत' इसका अर्थ है कि आंत उलभी, यहां पर आंत शब्द नपुंसकलिंग है सो स्त्रीलिंग हुआ ॥२०॥ जहां पूज्य पुरुष का नाम एकवचनांत हो उसके विशेषण में बहुवचन किया जावेगा जिसका उदाहरण है कि मनस्वी श्रीकृष्ण कुपित सदृश होकर भीष्म पर चले यहां चले इस कृदन्त क्रिया को विशेषण मान कर बहुवचन का विशेषण दिया है और जहां बहुवचन के लिये विभक्ति है वहां बहुत अर्थ के सूचन के लिये नाम के साथ नकार रक्खा है और किसी जगह बहुवचन की विभक्ति के स्थान में विभक्ति को छोड़ कर प्रथमा विभक्ति ही रहती है इन के क्रम से ये उदाहरण हैं 'सुरन कै सत्र हि असन' (देवताओं के यज्ञ ही भोजन) है बहुवचन के विषय में 'कै' यह षष्ठी विभक्ति है और बहुत्व के सूचन के लिये सुर शब्द के साथ नकार लगादिया गया है और दूसरे उदाहरण 'सुरन' यहां षष्ठी विभक्ति(कै)को छोडकर बहुवचन सूचक नकार सहित सुर शब्द ही लगा दिया है यद्यपि भाषा में प्रथमा विभक्ति के स्थान में कोई प्रत्यय नहीं है तथापि संस्कृत की रीति के अनुसार ग्रन्थकार ने प्रथमादि व्यवहार किया है संस्कृत में विभक्ति के स्वरूप से ही एक वचन, द्विवचन और बहुवचन का बोध हो जाता है परंतु भाषा में विभक्ति से एक वचन, बहुवचन का बोध नहीं होता इसकारण से

अपभ्रंस मत लहि इहाँ, अनुप्रास१ बिलसंत ॥ २२ ॥
एक१ बरन सौं अष्टि१६ लग, करी अवधि इनकेर ॥
इनमैं व्यंजन आदि१ को, बदलत दूजी२ बेर ॥ २३ ॥

षट्पदी

उदाहरन क्रमतैंहि सुनहु सो१ जो१ पुनि जस२ तस ।
समर३ अमर३ सरसाय४ बहुरि दरसाय रीति बस ॥
रनकरन५ रु मनकरन५ सदन चहत६ रु मदन चहत६ ।
त्यौंहि सहल सरवर७ रु महल सरवर७ प्रबंध मत ॥
तैसैंहि बीरबिक्कमबलिय८ बलि हमीर बिक्कमबलिय८ ।
अनुप्रास अंत्यनामक इम सुलघु बढि बढि अग्ग हु चलिय॥२४॥

पादाकुलकम्

पुनि सभंगपद अरु१ अभंगपद, द्वै प्रकार दुव२ करि याकी हद॥
उदाहरन षष्ठ६ रु अष्टम८ जँहँ, है सभंग१ खिल मैं अभंग२ तँहँ॥२५॥

बहुत्व के बोध वास्ते नकारादि अक्षर लगाये जाते हैं ये नकारादि अक्षर विभक्ति के अवयव नहीं होते। इस ग्रंथ में प्राकृतादि के अव्यय और क्रिया भी रक्खे जावेंगे जैसे गुणों का समूह विपरीत न होवे वहां "णवि" यह प्राकृत का अव्यय है और भवति के स्थान में "होई" यह प्राकृत क्रिया पद है अपभ्रंश भाषा के मत से इस ग्रंथ में अन्त्यानुप्रास कहीं पर (दोहा आदि छंदो में) तो दोनों अर्ध अर्थात पूर्वार्ध उत्तरार्ध के अंत में और कहीं पर (पादाकुलक आदि छंदों में) दो चरणों में अर्थात् चरण२ के अन्त में रहेगा ॥ २२ ॥ इस अंत्यानुप्रास का प्रमाण एक वर्ण से लेकर १६ वर्ण तक का है जिन में शब्द के आदि का व्यंजन उसी शब्द के दूसरी वार के उच्चारण में बदलता है ॥ २३ ॥ इस के उदाहरण क्रमसे ये हैं सो सुनो जैसे, "सो, जो" इस में आदि का व्यंजन सकार बदलकर जकार हुआ इसी प्रकार 'जस, तस; समर, अमर; सरसाय, दरसाय; रन करन, मन करन; सदन चहत, मदन चहत; सहल सरवर, महल सरवर; बीर विक्रम बलिय, मीर विक्रम बलिय। इस प्रकार अन्त्यानुप्रास में आदि का व्यंजन बदलकर आगे को भी लघुमात्रा बढकर सोलह वर्ण तक चले हैं ॥ २४ ॥

इस अन्त्यानुप्रास के दो प्रकार हैं, जिनमें एक तो सभंगपद और दूसरा अभंगपद अर्थात् जिसका पदच्छेद होकर श्लिष्ट अर्थ होवे उसका नाम सभंग पद, और जिसका पदच्छेद न होकर अर्थ होवे उसका नाम अभंगपद है

अनुप्रास पदमुख केवल स्वर, सोहि सव्यंजन अपर इम हु बर ।
उदाहरन पुब्बहु यँहँ ऐसैं, करहु बिलंब श्रवन बिच कैसैं ॥२६॥
वृत्त चरन के आदिबरन जो, ताही के उपअंत बहुल सो ।
इक१सौंलैरुच्यारि४लगअतिबर१,मध्यम२अधम३अधिकतरतमपर।
नाम बरन संबंध१ अलंकृति, अर्धनमैं हु करत यह अनुसृति
ग्रंथ चतुर्थ४भाग बिच नाँ यह,सेस माँहि सब ठाम नियम सह।२८।
स्वर१ रु यकार२ वकार२ सजाती, सप्तम७ तदपि रेफ संघाती ।
कहुँक त्रि३र्धा हि सकार याहि क्रम,सूचित कहुँ डं१ल२कारजातिसम
कहुँक डकार१ दकार२ साम्य लिय,कहुँक बकार१वकार२मेलकिय
कहुँ सवर्ग्य संबंध कहावैं, यह बिनु जतन सर्वथल आवैं ॥ ३० ॥
उ१दाहरन नृपराम अ२लोभित, सु१जस कियउ राकाससि सो२भित

जिनके उदाहरण ऊपर के छप्पय छंद में दिखाये गये हैं उन आठों उदाहरणों में छठा (सदन चहत मदन चहत) और आठवाँ(वीर विक्रम बलिय मीरावि-क्रम बलिय) ये दो तो सभंगपद और बाकी के छः उदाहरण अभंगपद के हैं ॥ २५ ॥ अनुप्रास के पद के आदि में केवल स्वर होवे अथवा उस स्वर में व्यंजन मिला हुआ होवे तो वह भी श्रेष्ठ है (अभिप्राय यह है कि स्वर वह का वही रहना चाहिये स्वर के बदलने से अंत्यानुप्रास विगड़ जाता है) जि-स का उदाहरण इस प्रकार है "ऐसें" यह तो केवल स्वर है और "कैसे" य-हां ऐकार में ककार व्यंजन है ॥ २६ ॥ अब आगे वर्णसंबंध [वैंणसगाई] का नियम बताते हैं कि छंद के चरण के आदि का अक्षर होवे वही अक्षर उसी चरण के अंत के बहुत समीप फिर आना चाहिये, वह अंत के वर्ण से लेकर चार तक तो उत्तम, और चार से अधिकतर अर्थात् पांचवाँ होवे तो मध्यम, औ-र परतम अर्थात् छठा होवे तो अधम है ॥ २७ ॥ यह वर्णसंबंध नामक अलं-कार आधे आधे पदों में भी होता है सो यह वर्णसंबंध इस ग्रंथ के चौथे भाग में तो नहीं है बाकी के तीन भागों में नियम पूर्वक है ॥ २८ ॥ इस वर्ण संबंध में स्वरों के साथ यकार और वकार का सजातीयपन है और सातवाँ " ऋ " स्वर है तो भी रेफ (र) का साथी (ऋ से र का वर्णसंबध मिला-या गया) है कहीं २ तालव्य मूर्धन्य और दन्त्य सकार का मेल किया गया है, और कहीं पर डंकार लकार को सजातीय माना है ॥ २९ ॥ कहीं दकार से डकार की समता ली गई है और कहीं बकार के साथ वकार का मेल कि-या है और कहीं सवर्गी (अपने अपने वर्गवाले) संबंध रखते हैं परन्तु ये

बी१रन मैं व२रधी१र धराध१न ऋ१न, पितरन को मेटि जई र२न
य१ह जस सुनत द्विजन बहु आ२दरि, आ१यउ निज पुर होत निछावरि
उदाहरन इतिमुख सब जानहु, वृत्ति३अनुप्रास हु बहु मानहु।३२।
त्योंहीं छेक४ अल्प यह तासौं, सबहि ग्रंथ विच इम संधासौं।
सब्द भजैं स्त्रीलिंग अदंत१ हु, ज्यौं हह२रु हलमल्ल३ प्रमुख पहुँ।३३।

दोहा

ब्रजभाषा के पदन बिच, लघु सिर रेखा दोय२।
तँहँ न गिनहु स्वर बारहौं१२, उच्चारन इम होय॥ ३४ ॥
लघु अदंत गुरु काल लौं, जैसैं बोल्यो जाय।
बुल्लहु तिम याकौं बिबुंध, नैन१ बैल२ जिम न्याय॥ ३५ ॥
या ब्रजभाषा मैं इहाँ, रक्खी ए सब रीति।
संधा ग्रंथ समाप्ति लौं, प्रभु जानहु करि प्रीति ॥ ३६ ॥
संस्कृतादि छ६गिरा हु के, पद बिभक्ति निजै सत्थ।
जे नभ१तारा२७ न्याय जिम, अक्खौं मिश्रित अत्थ ॥३७
सुद्दहु संस्कृत आदि सब६, भिन्न भिन्न कहुँ ठौर।

बिना ही यत्न के सब जगह आते हैं ॥ ३० ॥ इनके उदाहरण आगे स्पष्ट दिखाये गये हैं ॥ ३१ ॥ इनको आदि लेकर सब उदाहरण जानो और इस ग्रंथ में वृत्त्यनुप्रास (एक वर्ण की वा अनेक वर्णों की अनेकवार समता होने को वृत्त्यनुप्रास कहते हैं) भी बहुत हैं ॥ ३२ ॥ इस वृत्त्यनुप्रास से छेकानुप्रास (अनेक व्यंजनों की एकवार समता होने को छेकानुप्रास कहते हैं) इस ग्रंथ में कम है. इस संपूर्ण ग्रंथ में इस प्रकार की प्रतिज्ञा जानो हे स्वामी रामसिंह ! अकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं जैसे "हह" और "हलमल्ल" आदि ॥ ३३ ॥ ब्रजभाषा के पदों में लघु अक्षर के सिरपर दो रेखा (मात्रा) होवेगी जिसको बारहवाँ स्वर "ऐ" मत जानना, किंतु गुरु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उतने ही समय में लघु अकारान्त बोलाजावे ऐसे हे पंडितलोको! नेत्र को "नैन" और वृषभ को "बैल" कहकर बोलते हैं इस न्याय से बोलना ॥३४।३५॥ हे स्वामी रामसिंह! इस ब्रजभाषा में ये सब रीतियां इस ग्रंथ में रक्खी हैं सो ग्रंथ की समाप्ति तक प्रीति पूर्वक प्रतिज्ञा जानना ॥ ३६ ॥ संस्कृत आदि छहों भाषाओं के पद अपनी अपनी विभक्तियों के साथ नभतारान्याय (आकाश में अन्य ताराओं के साथ सत्ताईस नक्षत्र मिलेहुए

जे अकास१ग्रह९न्याय जिम, मन्नहु भूपति मौर ॥ ३८ ॥
जवनन को वृत्तांत जँहँ, जवनगिरा१कहुँ जानि ॥
कहुँक इंगरेजी२कथित, बक्ता तास बखानि ॥ ३९ ॥
डिंगल उपनामक कहुँक, मरुबानी१हु बिधेय ॥
अपभ्रंस जामैं अधिक, सदा बीररस श्रेय ॥ ४० ॥
शुद्ध१अशुद्ध२हु जवनपद, कहुँ प्रयुक्त किय अत्थ ॥
सो ब्रजादिदेसीय मैं, स्फुट गिनि रक्खिय सत्थ ॥ ४१ ॥
उदाहरन हंकिय अतुल, फील१ सुतर२मय फौज३ ॥
हिम्मति१किम्मति२ हंद्द अरु३, अवरँग४अकबर५ओज ॥ ४२ ॥
कहुँ वृत्तार्णव१के कहुँक, नंदिताड्य२के छंद ॥
कहुँ पुनि पिंगलसूत्र३के, यँहँ नृप गिनहु अमंद ॥ ४३ ॥
नागराज४सूचित धरे, वृत्त बहुत या माँहिं ॥
सबहि तराजू तुलित से, त्रुटिमित अंतर नाँहिं ॥ ४४ ॥
कादि बरनजुत ए१ रु ओ२, केवल इ१ उंकार२॥

दीखते हैं ऐसे) से मिलेहुए कहूंगा ॥ ३७ ॥ किसी जगह पर संस्कृत आदि छहों भाषा शुद्ध रीति से जुदी जुदी कही जांयगीं वे आकाशग्रहन्याय (आकाश में नवग्रहों की गति भिन्न होने के कारण अन्य तारागण से भिन्न दीखते हैं ऐसे) से हे राजाओं के मुकुट रामसिंह उनको भिन्न मानना ॥ ३८ ॥ कहीं कहीं यवनों के वृत्तान्त में उनकी भाषा (फारसी आदि) और इंगरेजों के वृत्तान्त में उनकी भाषा (इंगलिश) के शब्द कहेजावेंगे ॥ ३९ ॥ डिंगल है उपनाम जिसका ऐसी मरुभाषा भी कहीं कहीजावेगी, जिसमें अपभ्रंश भाषा अधिक होने से वीर रस में श्रेष्ठ है ॥ ४० ॥ इस ग्रंथ में फारसी आदि भाषा के शब्द कहीं कहीं कहेगये हैं जिनमें कितने ही शुद्ध और कितने ही अशुद्ध हैं, परंतु उनको व्रजभाषा आदि देशभाषा में स्पष्ट मानरक्खा है. जैसे फील, सुतर, फौज हिम्मत, किम्मत, हंद, अवरंग और अकबर इत्यादि ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ इस ग्रंथ में कहीं वृत्तार्णव नामक ग्रंथ के और कहीं नंदिताढ्य नामक ग्रंथ के, और कहीं पिंगल सूत्र के मतानुसार छंद धरे हैं सो हे भूपति ! सव ही आनन्द [दिव्य] जानो ॥ ४३ ॥ शेषनाग के कहेहुए बहुत जाति के छंद इस ग्रंथ में हैं सो सब ही तराजू में तुलेहुए से हैं जिनमें लेशमात्र भी अंतर नहीं है ॥४४॥ ककारादि वर्णों के साथ 'एकार' और 'ओकार' और किसी स

हं१ हिं२हुं३ लघु कहुँ इत७, अपभ्रंस अनुसार ॥ ४५ ॥
नागराजमत मैं लिखे, ए१ओ२मिलित रु सुद्ध ॥
इं१हिं२रह२संजोग के, आदि लघु हु१लघु बुद्ध ॥ ४६ ॥
दुंव२मतमैं हि इते ७।५न कै, कहिय गुरुत्व बिकल्प ॥
यहहि जनावन हित हमहु, अक्खे कहुँ अति अल्प॥ ४७॥
संस्कृत मैंहु प्रजोग सौं, पुब्बलघु१हु लघुकेर ॥
हम सुहु आदि१मयूख मैं, बिदित कियउ इक१बेर ॥ ४८ ॥
कहुँक नाम सौं स्वार्थ मैं, कहुँक इक१ बचन ठोर ॥
है हकार बुद्धह लख्यो, अनिरुद्धह सुत घोर ॥ ४९ ॥
देसी प्राकृत काव्य मैं, रीति ओर इक१ तत्थ
जु लघु१आदिसंजोग के, सु गुरु२बिभासा सत्थ ॥ ५० ॥
हम रक्खी जो छंद हद, नव्य सु सुनहु नरेस ॥
सँजातीय संजोगके, आदि सदा गुरु एस ॥ ५१ ॥
यकारांत सयोग बिनु, बिजातीय संयोग ॥

बिना मिलेहुए [केवल]'इं उं हं हिं हुं'ये सात वर्ण अपभ्रंश भाषा के मतानुसार कहीं लघु हैं ॥ ४५ ॥ शेषनाग के मत में एकार और ओकार से मिले हुए सब वर्ण, और ये दोनों शुद्ध अर्थात् केवल स्वर, और इं हिं ये दोनों वर्ण इसी प्रकार रकार हकार के संयोगी अक्षरों के आदि का लघुवर्ण, इन सब को लघु ही जानना ॥ ४६ ॥ वृत्तार्णव–नन्दितास्थ्य और नागराज इन दोनों के मत में ऊपर के ४५ वें दोहे में कहे हुए सात वर्ण और ४६ वें दोहे में कहे हुए पांच वर्ण विकल्प करके गुरु कहे हैं सो इसी बात को जतलाने के लिये हम (ग्रंथकर्त्ता सूर्यमल्ल) ने भी इस ग्रंथ में बहुत थोड़े कहे हैं ॥ ४७ ॥ संस्कृत में भी ऐसा प्रयोग है कि इनके आदि का लघुवर्ण लघु ही रहता है सो हमने भी प्रथम मयूख में एक वार प्रसिद्ध किया है ॥ ४८ ॥ कहीं तो नाम के साथ स्वार्थ में और कहीं एक वचन के स्थान में हकार किया है जैसे वुद्ध के स्थान में बुद्धह और अनिरुद्ध के स्थान में अनिरुद्धह ॥ ४९ ॥ देशी प्राकृत के काव्य में एक और रीति है कि जो संयोगी का आदि लघु है वह विकल्प करके गुरु होता है ॥५०॥हम(ग्रंथकर्त्ता सूर्यमल्ल)ने जो छंदों की नवीन मर्यादा रक्खी है सो हे नरेश सुनो जितने सजातीय अपने २ वर्ग के संयोगी हैं उन के आदि का वर्ण तो सदैव गुरु ही रहेगा ॥ ५१ ॥ और यकार है अंत में जिसके ऐसे संयोगी

आदि ल१ कोँ ग२ करैं यहै, लेहु समुझि बुधलोग ॥ ५२ ॥
सर्वनाम तद आदि के, बहुबचनन आदिष्ट ॥
नादि हांत संजोग सोँ, आदिलघु सु लघु इष्ट ॥ ५३ ॥
बहुरि हांत संजोग तँहँ, आदिमकार१ लकार२ ।
पूरब लघु कोँ लघु करैं, जेम सम्हार१ खिल्हार२ ॥ ५४ ॥
संस्कृत सम देसीय मैं, पदबिच को संजोग ।
गुरुहि करैं रु बिकल्प सोँ, पहिलो हे भूभोग ॥ ५५ ॥
जु पद अनादि समासमैं, तास आदि संजुत्त ।
ग करत लघुहिं विकल्पसोँ, मकरध्वज प्रभुपुत्त ॥ ५६ ॥
सत्त७स्वरन बिच ग्राम प्रति, स्वादु श्रुतिन के व्रात ।
जिन्ह समुझ्यो तिन्ह श्रवन हैं, इतरन बिबर दिखात ॥ ५७ ॥
सब इत्यादि निदर्सनों, बुधजन लेहु बिचारि ।

को छोड़कर बाकी के जितने विजातीय संयोगी हैं वे आदि लघु को विकल्प करके गुरु करेंगे यह पण्डित लोग समझलेवें ॥५२॥ सर्वनामों में तदादिकों को बहुवचन का आदेश होवेगा और नकार है आदि में जिसके ऐसे हकारान्त संयोगी के आदि का लघु लघु ही रहेगा ॥५३॥ फिर मकार लकार है आदि में जिनके ऐसे हकारांत संयोगी के आदि का लघु भी लघु ही रहेगा जैसे "सम्हार" और "खिल्हार" इनके आदि का वर्ण गुरु नहीं हुआ ॥५४॥ संस्कृत के समान देश भाषा की कविता में भी पद के मध्यवर्ती संयोगी के आदि का लघुवर्ण विकल्प करके गुरु होता है सो हे भूपति रामसिंह ! यह रीति इस ग्रंथ में जानो ॥ ५५ ॥ जो पद समास के आदि में नहीं होवे उस उत्तर पद के आदि का संयोगी वर्ण पूर्व लघु को विकल्प करके गुरु करता है जैसे " मकरध्वज-प्रभुपुत्त " मकरध्वज इस समास में उत्तर पद ध्वज के आदि संयोगी "ध्व" ने पूर्व रकार को गुरु किया, और मकरध्वजप्रभु इस समास में उत्तरपद प्रभु के आदि संयोगी " प्र " ने पूर्व जकार को गुरु नहीं किया ॥ ५६ ॥ संगीत के सात स्वरों में ग्रामँ (स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं जो षड्ज, मध्यम और गान्धार इन नामों से प्रसिद्ध है) की श्रुतियों के [सात स्वरों के साथ बाईस श्रुतियां हैं] समूह का स्वाद जिन्हों ने समझा उन के कान हैं और दूसरों के केवल छिद्र हैं ॥ ५७ ॥ इनको आदि लेकर सब उदाहरणों को पण्डित लोग विचार लेवें. हमारी (ग्रंथ कर्त्ता सूर्यमल्ल) की प्रतिज्ञा से बाहिर

संधा बाहिर सब्द जो, हैं अशुद्ध सुहि हारि ॥ ५८ ॥
अनुस्वार पद आदि जो, अनुनासिक कहुँ तास ।
ज्यौं अँगुष्ठ अंगुष्ठ इम, अतिहि बिरल थल आस ॥ ५९ ॥
सूरसेनि१मागधि२ कहुँक, जिम अब्दनमैं जाम१ ।
दाँव रमँदि ये लंःकशे, रावन जावँ न राम ॥ ६० ॥
डिंगल बानी वृत्त कहुँ, गीतादिक हु बिधेय ।
कहुँ कहुँ जवनन चरित बिच, उन्ह वृत्तहु आक्खेय ॥६१॥
वृत्त चरनके अंत लघु, सु यहँ कबहु गुरु नाँहिं ।
त्यौं अनुनासिक जुत्त लघु, इहिं गिराहु लघु आँहिं ॥६२॥
ब्रजभाखाके बिखयमैं, कथित प्रतिज्ञा काम ।
सुद्ध इतर निजरीतिसौं, ठाई निज निज ठाम ॥ ६३ ॥
बिहित विशेष्य१विशेसन२हु, वृत्तिमाँहिं बदलाय ॥

जो शब्द हैं वे ही हमारी हार (पराजय) है ॥ ५८ ॥ पद के आदि में जो अनुस्वार है उसको कहीं अनुनासिक कर दिया है जैसे अंगुष्ट का अँगुष्ठ. इस प्रकार बहुत ही थोड़े स्थलों पर है ॥५९॥ इस ग्रंथ में शौरसेनी और मागधी भाषा के शब्द भी आवेंगे उन की संख्या इतनी न्यून होवेगी कि जैसे वर्षों में प्रहर होवे जिसके ये उदाहरण हैं; जबँ तक रामचन्द्र नहीं है तबँ तक यह रावण राक्षस रमता है अर्थात् प्रसन्न रहता है यहां शौरसेनी के अनुसार तावत् शब्द का 'दाव' और रमते शब्द को 'रमदि' होगया है और यह के स्थान में 'ये" मागधी के अनुसार हुआ है. यावत के स्थान में ' जाव ' प्राकृत के अनुसार हुआ है ॥६०॥ गीतों को आदि लेकर डिंगल (मरु) भाषा के छंद भी कहे गये हैं और कहीं २ यवनों के चरित्र में उनके छंद [शैर, गजल, बैत आदि] कहे हैं॥६१॥ छंद के चरण के अंत का जो लघु है वह इस ग्रंथमें कभी गुरु नहीं है (पिंगल सूत्र के मत से विकल्प करके गुरु होता है वैसा इस ग्रंथ में नहीं है) तैसे ही अनुनासिक सहित लघु है, वह इस ग्रंथ की भाषा में लघु ही है" ॥६२॥ यह कहीहुई प्रतिज्ञा ब्रजभाषा में काम की है. बाकी की शुद्ध भाषायें अपने२ स्थलों पर अपनी २ रीति से रक्खी हैं ॥ ६३ ॥ कहेहुए विशेष्य विशेषण (गुण को बतानेवाला विशेषण और जिसकेगुण बतायेजावें उसको विशेष्य कहते हैं) दोनों व्याकरण की रीति से समास में बदलजाते हैं जैसे ' वीरसिंह, इस वाक्य में वीर शब्द विशेषण और सिंह शब्द विशेष्य है : इन दोनों का

अंत्यस्वर लघु दिग्धपन, अपभ्रंस मग आय ॥ ६४ ॥
पुष्ट होय बीरादि३तँहँ, लै द्वित्व२हु हल अंत ॥
क्त्वा१लौं क्त२रु इक१लोट६बच, मध्य२पुरुख इ लसंत ॥६५॥
या प्रबंध बिच अंकहू, धेर अर्थहित मानि ॥
कहुँ क्रम१ पर कहुँ व्यक्ति२ पर, कहुँक जाति३पर जानि ॥६६॥
कहुँ उद्देश्य४बिधेय५पर, जथासंख्य६पर जेम ॥
कहुँ संख्या८पर ते कहुँक, कुलपुरुखन८पर तेम ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ कृतिमर्य्यादाप्रतिज्ञानिश्चयनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ १२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

जन्मदिवस चहुवान१को, या ग्रंथ२हुको आहि ॥
गनित तँहाँ सर्गादि तैं, किय सिद्धांत निबाहि ॥ १ ॥
गनिततंत्र सिद्धांतकी, फिरि लिखिहैं कहुँ ठाम ॥

समास करने से वीरसिंह विशेष्य होगया ; और अपभ्रंश भाषा में चरण के अंत का लघु स्वर दीर्घ होजाता है सो उसकी रीति से इसमें भी आवेगा ॥ ६४ ॥ जहां वीर, भयानक और रौद्र ये तीनों रस पुष्ट होते होवें वहां अंत का हल् द्वित्व कियाजायगा और क्त्वा व त प्रत्यय और लोट् लकार के प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में ह्रस्व इकार होवे. जैसे कृत्वा, कृतम्, करोतु, और कुरु, इन संस्कृत रूपों के स्थान में 'करि' यह रूप होवेगा ॥ ६५ ॥ अर्थ का स्पष्ट बोध होने के लिये इस ग्रंथ में अंक भी धरे हैं वे कहीं तो गणना का क्रम बताने के लिये कहीं व्यक्ति (समुदाय का नाम जाति और एक एक के जुदे नाम को व्यक्ति कहते हैं) कहीं जाति, कहीं प्रयोजन, कहीं योजना (एक के साथ दूसरे का संबंध जोड़ना] कहीं यथासंख्या, कहीं गिनती और कहीं पीढियां बतलाने के लिये अंक दिये हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में ग्रंथ की मर्यादा और नियम दृढ करने का बारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥

चहुवाण का जो जन्मदिन है वही इस ग्रंथ का जन्मदिन है तहां सर्गादि [सृष्ट्यादि अर्थात् कल्पादि] से सिद्धांत में गणित का निर्वाह कियागया है ॥ १ ॥ वह गणित तंत्र और सिद्धान्त की रीति [युगादिक गणित तंत्र में और

तो तत्थहि लिखिजायहैं, नियत जथाबिधि नाम ॥ २ ॥
और गनित सब ग्रंथमैं, गिनहु करन अनुसार ॥
सक इक बिक्रमराजको, इतर न गिनहु उदार ॥ ३ ॥
ह्वैहै बाक्यसमाप्ति कहुँ, अर्ध१सार्ध२मुख अंत ॥
गाथावृत्तहिं तत्थ गिनि, मेटहु दोस महंत ॥ ४ ॥
कहुँ बहुवृत्तन लंघिकैं, जुरत जु अन्वय जाय ॥
बडे प्रबंधनमैं सु बिधि, समुझहु बुधसमुदाय ॥ ५ ॥
समसन१ बिस्तर२सबनकै, इष्ट श्रवन हितआँहिं ॥
इहिं क्रम सिंहबिलोकिनी, मंजुकथा यामाँहिं ॥ ६ ॥
सूचीकोहु समासकरि, अब करियत उद्देस ॥
सुनन देहु अवसर सु पहु, नामित निखिल नरेस ॥ ७ ॥
प्रथम बंस चंडासि१को, बिधिक्रमजुत बिस्तार ॥

कल्पादिक गणित सिद्धात में और शकादिक करण में होती है] से फिर कहीं लिखेंगे तौ वहीं उसकी रीति और उसका नाम लिखदेंगे ॥ २ ॥ और गणित जो इस ग्रंथ में है वह ग्रहलाघव आदि करण ग्रंथों के अनुसार जानो परन्तु ज्योतिष के मत से संवत् कई प्रकार के होते हैं उन सब को छोडकर केवल विक्रम राजा का ही संवत् जानो जिसका चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है. इसके सिवाय अन्यमत जानो ॥ ३ ॥ इस ग्रंथ के छंदो में वाक्य की समाप्ति कहीं आधे छंद में कहीं डेढ छंद में और कहीं आदि अंत में होवेगी. वहां बडे लोग गाथावृत्त अर्थात् कथा के वृत्तांत को अच्छीतरह जानकर वाक्ययोजना के भ्रम को मिटालेवें कथा के संबंध से भी अन्वय योजना का बोध होता है ॥ ४ ॥ कहीं बहुत छंदों को लांघ कर [दूर पर जाकर] अन्वय जुडेगा यह बडे ग्रंथों की रीति है सो पंडित लोग समझ लेवें ॥ ५ ॥ पहले संक्षेप से और फिर विस्तार से कथा सुनना सब को लाभदायक और प्रिय है. इसीक्रम से इस ग्रंथ में सिंहावलोकिनी [सिंह आगे को चलताजाता है और पीछे को देखताजाता है इसीप्रकार एकवार कहीहुई कथा को फिर वारंवार कहना सिंहावलोकिनी कथा कहलाती है] सुंदर कथा है ॥ ६ ॥ संक्षेप से जनलाईहुई कथा का अब विस्तार से कीर्तन करते हैं सो हे संपूर्ण राजाओं को नमानेवाले श्रेष्ठ प्रभु रामसिंह! सुनने को समय देओ ॥ ७ ॥ हे राजाओं के कंधे झुकानेवाले रावराजा रामसिंह इस ग्रंथ में पहले तौ चहुवाण का वंश

इतर छत्रियन २बंसजुत, बहुर सु बीरप्रसार ॥ ८ ॥
असुर१ अमर२ मुनि३ आदिकैं, बिबिधसर्ग१गुन२बंस३ ॥
बिस्तरसौं कविबंस४ बलि, याबिच नृपउत्तंस ॥ ९ ॥
इम अग्गैं पुरुषार्थ चउ,४धर्म१अर्थ२ अरु काम३ ॥
मोक्ष४हु अंगउपांगजुत, रचिहौं कृति अभिराम ॥ १० ॥
बिद्या१४।६४।७२ सब इनमैं हि बलि, सूची१फलनुति२सत्थ॥
कहिं सअंग पूरन करहिं, अंजनमतिदृग अत्थ ॥ ११ ॥
बंसप्रकासक ग्रंथ यह, कविकुलपूरन काम ॥
जानहु याको सुकविजन, बंसभास्करहि नाम ॥ १२ ॥
एक१अयन बिच बंसबिधि, नानानृपनचरित्र ।
अपर२अयनबिच अंगजुत, चउ४पुरुषार्थ पवित्र ॥ १३ ॥
या रविके ए दुव२अयन, इनके बारह१२अंस ।
तेही बारह१२भेद हैं, दिनकरके निर्दंस ॥ १४ ॥
बंशचरितबिच अठ्ठ८रवि, पुरुषार्थनबिच च्यार४ ।

विधि पूर्वक क्रम के साथ विस्तार से और दूसरे क्षत्रियों के वंश सहित बहुत वीर रस का प्रकाश ॥ ८ ॥ दैत्य, देवता, मुनियों को आदि लेकर गुण और वंश के साथ नाना प्रकार की सृष्टिरचना, फिर विस्तार पूर्वक कवि [ग्रंथ कर्त्ता सूर्यमल्ल] का वंश ॥ ६ ॥ इसी प्रकार आगे चारों पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम और अंग उपांग सहित मोक्ष भी इस ग्रंथ में सुंदर रचूंगा ॥ १० ॥ इन्हीं चारों पुरुषार्थों में पहले कही हुई १४ विद्या ६४ कला और मतान्तर से ७२ कला भी मानी जाती हैं जिनको फिर फलस्तुति के साथ कहकर अंञ्जनमतिदृग (नेत्रों को कज्जल से शोभित करते हैं ऐसे अथवा काव्य के मत से "नेत्रांजन" एक न्याय है, जिसका भावार्थ यह है कि नेत्रों में लुकांजन लगाने से छिपी हुई वस्तुएँ दीखने लगतीं हैं, इसी प्रकार मति (बुद्धि) रूपी नेत्रों में अंजन करके सब विद्याएं दिखाऊंगा) अर्थ से पूर्ण करूंगा ॥ ११ ॥ यह ग्रंथ वंश का प्रकाश करनेवाला और कवियों की कामना को पूर्ण करनेवाला है इस कारण से श्रेष्ठ कवि लोग इस का नाम वंशभास्कर ही जानें ॥ १२ ॥ एक अयन में वंश के भेद (प्रकार) और अनेक राजाओं के चारित्र और दूसरे अयन में पवित्र चारों पुरुषार्थ हैं ॥ १३ ॥ इस सूर्य के दोनों अयन, और इन अयनों के बारह अंश (विभाग) हैं वे ही सूर्य के निर्दोष बारह भेद

याविच सहँस१०००मयूख हैं, तेहि मयूख निहारि ॥ १५ ॥

चविहैँ धर्मादिक चउर४,अक्खिख जननं चहुवान ।
प्राकृत देसी प्रक्रियां, वरनहिँ तँहँ सविधान ॥ १६ ॥
सव्दनके संस्कार सब,हैहैं तत्थहि ख्यात ।
संज्ञासव्दनिपातं जे, कछुक कहे यँहँ जात ॥ १७ ॥
सत्रुसल्ल१ कहियत सता२,दूदा१दुर्जनसल्ल२ ।
अजितासिंह१अर्ज्जुन१उभय२,उभय२अजा२अजमल्ल ॥ १८ ॥
अभयसिंह१अभमल्ल२करि, हम्माँ१करि हम्मीर ।
गोपीनाथ१हिं नाथ२करि, व्यवहारहु कविवीर ॥ १९ ॥
उदयसिंह१ऊदा२कहत,फतैसिंह१फतमल्ल२ ।
भावासिंह१भाऊ२तिमहिं, तेजसिंह१तेजल्ल२ ॥ २० ॥
त्यों प्रतापसिंह१सु पता२,पृथ्वीसिंह१सु पित्थ२ ।
पित्थल३ सुहि जसवंत१ पुनि, जसा२हय न अवहित्थ ।२१।
खंग१कहत खंगार२कों, कृष्ण१किसन२ कहुँ गेय ।
विष्णु१विसन२करि कहुँ बिहित, जैत१जयी२अभिधेय ॥२२॥
अन्न१गिन्हु अनिरुद्ध२कहुँ, बल१रु बलू१वलवंत२ ।
अरिसिंह१सु अरसी२ उदित, हेम१गँदित हेमंत२ ॥ २३ ॥
संगा१कहुँ संग्राम२हू , कल्ल१कला२ कल्ल्यान३ ।

हैं ॥ १४ ॥ इन मे से आठ सूर्य (राशि) तो वंशचरित्र [इतिहास] में और चार राशि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों मे हैं. ग्रंथकर्त्ता ने पूर्व दोहे में सामान्य नियम बता कर यहां विशेष नियम बताया है. और इस ग्रंथ में एक हजार मयूख हैं उनको ही सूर्य के सहस्र किरण जानो ॥ १५ ॥ चहुवाण के वंश को कहकर धर्मादिक चारों पुरुपार्थ कहेंगे वहां पर देशी प्राकृत की शब्दसाधनिका रीति पूर्वक वर्णन करेंगे ॥ १६ ॥ वहीं पर शब्दों के संस्कार प्रसिद्ध होवेंगे, परंतु थोड़े से नामवाची शब्द निपात [व्याकरण की एक क्रिया है] से सिद्ध हैं उन्हें यहां कहते हैं ॥ १७ ॥ जैसे शत्रुसाल को ' सता ' दुर्जनमाल को ' दूदा ' अजितसिंह को ' अजा ' अर्जुन को 'अजमल्ल' इत्यादि उदाहरण आगे स्पष्ट हैं ॥ १८ ॥ ४ व्यवहार में लाना ५ यह आकार को गुप्त करने वाला [छिपा रहनेवाला] नहीं है ६ नामवाले ७ कहा.

नरपाल१हिं नप्पा२ गिनहु, जिम सूजा१हु सुजान२ ॥२४ ॥
विजयसिंह१बिजपाल२कहुँ, हप्पा१कहुँ हरपाल२ ।
जयलाल१सु जल्ला२ जला, गुल१गुलाब२रु गुलाल ॥ २५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथमराशौ नियतशक१गणित२कथान्वय३समस्तसूची ४ ग्रन्थाभिधान५तत्तपनतादात्म्य६संज्ञानिपात७समर्थनं त्रयोदशो१३मयूखः ॥ १३ ॥

अथ यथातथसविस्तरवन्हिवंशप्रारम्भः । शुद्धप्राकृतभाषा ॥

गीई ॥

सुरमउडघट्टचलणं सङ्खगयाचक्कपोम्मसोहिअरं ॥
लच्छीकोच्छुहरञ्जिअवच्छं वन्देम्मिविणहुमहिलपहुं ॥ १ ॥
णवरि कउहपङ्गुरणं णमो वि वामङ्गचाउँडासुहअं ॥
तइअ३विलोअणभिउडीवङ्कपडणदड्ढ वम्महं हीरं ॥ २ ॥
जास किवा पिहुलसुहा कव्वं कारेइ मुद्धमइणा वि ।
सो सुरनअपावीढो मए पसाअं करेउ गणरायो ॥ ३ ॥
भसलरुअराअरसिओ सुणडाडणडेण नट्ठपच्चूहो ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में संवत् का निश्चय, गणित, कथा का अन्वय अर्थात् संबध जोड़ने का कथन, सब सूची, ग्रंथ का नाम, इस ग्रंथ की सूर्य के साथ समानता और निपात से सिद्ध हुए नामों का निश्चय करनेवाला तेरहवां मयूख समाप्त हुआ१३।अब यथार्थ विस्तार पूर्वक अग्निवंश का प्रारंभ किया जाता है.देवताओं के मुकुटों से घिसे जाते[सेवन किये जाते]चरण जिनके शंख,गदा,चक्र,पद्म इन से शोभित हैं हस्त जिनके,लक्ष्मी और कौस्तुभ से शोभित है वक्षःस्थल(हृदय)जिनका ऐसे संपूर्ण के स्वामी विष्णु भगवान् कोप्रणाम करता हूं॥१॥केवल दिशा ही है वस्त्र जिनके,वाम अंग में चामुंडा (पार्वती) से शोभित, तीसरे नेत्र की भृकुटी के टेढेपड़ने से दग्ध किया है कामदेव को जिन्हों ने ऐसे महादेव [शिव]को नमस्कार करता हूं॥२॥बहुत सुख को करनेवाली जिनकी कृपा है सो मूर्ख बुद्धिवाले पुरुष से भी काव्य करवालेती है और जो देवताओं करके प्रणाम कियागया है पादपीठ(चरणचौकी)जिनका ऐसे गणेश मुझ

गीति. ॥ सुरमुकुटघृष्टचरणं शंखगदाचक्र पद्मशोभिकरम् । लक्ष्मीकौस्तुभरञ्जितवत्स वदे. विष्णुमखिलप्रभुम् ॥१॥
केवलककुप्प्रावरणं नमामि वामागचामुण्डासुभगम् । तृतीयत्रिलोचनभृकुटीवक्रपतनदग्धमन्मथ हीरम् ॥ २ ॥
यस्य कृपापृथुलमुखी काव्य कारयति मुग्धमतिनापि । स सुरनतपादपीठो मयि प्रसादं करोतु गणराजः ॥ ३ ॥

लम्बअरो सिणिद्धो महं वियासउ मणं सुणयणेहिं ॥ ४ ॥
वीणाझुणिचलसीसा चन्दमुही सरअचन्दिमाव्व सिआ ॥
अत्ता सरस्सई सा जयउ पउमपरणलोअणमणोरणा ॥५॥
अह अ सिरिं दुग्गांवि भाणुं वासाइणो तहा मुणिणो ॥
गुरुणो पिउणो कइणो णन्तूण किसाणुवंसमम्हि भणां ॥ ६ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

संतचितघनआनंदनिज, आश्रयके आभास ॥
सत्वरजस्तम३समप्रकृति, लयो छोह सुखलास ॥ ७ ॥
ज्यौं चुंवक सामीप्य सन, चेष्टित व्है जड लोह ॥
अधिष्ठान बिच प्रकृति इम, सुवन लगी संदोह ॥ ८ ॥
चेष्टित अय मुनि चुंवकहिं, घिसि जिम जनहिं कृसानु ॥
त्यौं महान१ हुव प्रकृति सन, प्रज्ञा रूप प्रमानु ॥ ९ ॥
जिंहिं कृसानु सन होत जिम, ज्वाल१ताप२आलोक३ ॥

पर अनुग्रह करो॥३॥भ्रमरों की गुंजाहट रूपी राग के सुनने में रसिक और शुण्डारूपी दंड करके नष्ट किये हैं विघ्न जिन्होंने ऐसे भक्तों पर स्नेहवाले लंबोदर (गणेश) सुंदर नेत्रों (कृपादृष्टि) करके मेरे मन को प्रफुल्लित करो ॥ ४ ॥ वीणाध्वनि की प्रशंसा के लिये हिलाया है शिर जिन्होंने, चंद्रमा के तुल्य है मुख जिनका, शरद ऋतु की चांदनी के तुल्य श्वेतवर्ण और श्वेत कमल पत्र के तुल्य हैं नेत्र जिनके ऐसी मनोज्ञ (सुन्दर) पूज्य सरस्वती अपने उत्कर्ष को प्रकट करो ॥ ५ ॥ इस से अनंतर लक्ष्मी, दुर्गा देवी, सूर्य, व्यासादि मुनि, पिता और कवि इनको नमस्कार करके अग्निवंश को कहता हूं ॥ ६ ॥

सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण की साम्यावस्था (प्रकृति), अपने आधार सच्चिदानन्द के प्रकाश से उत्साह और सुख पूर्वक नृत्य करनेलगी ॥ ७ ॥ जैसे चुम्बक की समीपता से जड़ लोह चेष्टा युक्त होता है ऐसे ही प्रकृति जो जड़ है वह परब्रह्म में समूहों को जनने लगी । ८ । जिस प्रकार मुनि लोग चुम्बक से चेष्टित लोहे को घिसकर अग्नि पैदा करते हैं इसी प्रकार प्रकृति से बुद्धि रूप महत्तत्व पैदा हुआ ॥ ९ ॥ जिस प्रकार अग्नि से ज्वाला-

---

भ्रमरनादरसिक शुण्डादण्डखण्डितविघ्नव्यूह । लम्बोदर स्निग्धो मम विकासयतु मन सुनयनैः ॥ ४ ॥
वीणाध्वनिचलशीर्षा चन्द्रमुखी शरच्चन्द्रिकेव सिता ॥ आर्या सरस्वती सा जयतु पद्मपत्रलोचननेत्रा ॥ ५ ॥
अथ च श्रियं दुर्गामपि भानुं व्यासादींस्तथा मुनीन् ॥ गुरून् पितॄन् कवीन् नत्वा कृशानुवंशमहं भणामि ॥ ६ ॥

यौं महान सन त्रि३विध हुव, अहंकार जगओक ॥ १० ॥
वासुदेव१चुंबकतरह,संकरखन२अयसंग ॥
सुचि पज्जुरा३रु तापमुख,अनिरुद्ध४जु अहमंग ॥ ११ ॥
अहमज्वाल ।जिम सात्विक जु,वैकारिक१ अभिधान ॥
दूजो२राजस ताप जिम, तैजस२नाम प्रमान ॥ १२ ॥
जो तामस आलोक जिम, सो भूतादि३तृतीय३ ॥
तिन तीनन३सन देव१अरु, गो२पुनि भूत३गरीय ॥ १३ ॥
दिसा१पवन२रवि३बरुन४पुनि,दस्रं५अनल६देवेस७ ॥
विष्णु८रु मित्रं९प्रजेस१०ससि,११वैकृतं१भव गन एस ।१४।
श्रुति१त्वक२हक३जिब्भा४नभा५, ज्ञानकरन ए५जानि ॥
वाक१।६पानि२।७पय३।८गुद४।९सिसन५।१०,
कर्मकरन त्यौं मानि ॥ १५ ॥
ए दस१०इंद्रिय ग्यारहौं११,मन जु उभय२गांतिमान ॥
यह गन तैजस२तैं भयो, वैकारिक१भवथान ॥ १६ ॥

(झाळ), ताप और आलोक (प्रकाश) होता है इसी प्रकार महत्तत्व से संसार का घर रूपी तीन प्रकार का अहंकार हुआ ॥ १० ॥ चुम्बक की भांति श्रीकृष्ण, लोहे के संग के समान बलदेव, अग्नि समान पज्जुरण (प्रद्युम्न) और ताप आदि के समान अनिरुद्ध ये अहंकार के अंग से अंतरात्मा हैं।११। ज्वाला के समान सत्वगुण अहंकार, जिसका वैकारिक (देवताओं की उत्पत्ति का कारण) नाम है, ताप के समान दूसरा रजोगुण, जिसका तैजस (इंद्रियों की उत्पत्ति का कारण) नाम है ॥ १२ ॥ जो प्रकाश के समान तीसरा तमोगुण है वह भूतादि (सब जगत् की उत्पत्ति का कारण) नामवाला है इन सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनों अहंकारों से देवता, इंद्रिय और पंचभूत क्रम से उत्पन्न हुए ॥ १३ ॥ प्रकृति, विकृति और प्रकृतिविकृति यह तीन प्रकार की सृष्टि है जिनमें से सत्वगुण विशिष्ट अहंकार की विकृति सृष्टि से दिशा, पवन, सूर्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि, इन्द्र, विष्णु, मित्र (देवता विशेष) प्रजापति और चन्द्रमा उत्पन्न हुए ॥ १४ ॥ कान, त्वचा, नेत्र, नासिका, जिह्वा ये पांचों ज्ञानेन्द्रिय और वचन, हाथ, पग, गुदा, लिंग ये पांचों कर्मेन्द्रिय और ग्यारहवां मन जो ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनों में माना जाता है ये रजोगुण विशिष्ट तैजस अहंकार के विकार से हुए ॥ १५--१६ ॥ आकाश का

शब्द१गगन१सपरस२पवन२, रूप३तेज०रस४बारि४ ॥
गंध५मही५भूतादिभव,यहै दसक१०निरधारि ॥ १७ ॥
भये अनुक्रमतैं दस१०रु, नभगुन सब्दहि एक ।
सब्द१रु सपरस१ पवनगुन, जानहु बिहित बिबेक ॥ १८ ॥
तीन३तेज गुनरूप जुत, जलगुन रसजुत च्यारि४ ।
पंच५गंधजुत भूमिगुन, ए इम मिलित निहारि ॥ १९ ॥
जैसैं होवत ज्वालतैं, धपडाहट बिख्यात ।
तिम करनन के देवता११,वैकारिक सन जात ॥ २० ॥
जैसैं होवत तापतैं, पाकादिक फल सिद्ध ।
इम तैजस सन उप्पजिय, इंद्रिय ग्यारह११इद्ध ॥ २१ ॥
अरु होवत आलोकतैं,बस्तुन दरसन जेम ।
भूतादिकतैं पंच५गुन, पंच५भूत हुव एम॥ २२ ॥
अप्रमेय अव्यक्तसन, भयो जितोक महान ।
दस१०म अंस ताको त्रि३बिध, अहम गिनहु चहुवान॥२३॥
अहंकारको दसम१० लव, सब्दगुन सु आकास ।

गुण शब्द, पवन का गुण स्पर्श, तेज [अग्नि] का गुण रूप, जल का गुण रस. पृथ्वी का गुण गन्ध, यह दश का समुदाय तमोगुण विशिष्ट भूतादि अहंकार से हुआ जानो ॥ १७ ॥ ये दशों अनुक्रम से हुए और आकाश में गुण केवल शब्द,पवन में शब्द स्पर्श दोनों,अग्नि में शब्द स्पर्श रूप तीनों, जल में शब्द स्पर्श रूप रस चारों, और पृथ्वी में शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पांचों मिले हुए जानो ॥ १८--१९ ॥ जिस प्रकार ज्वाला से " धड़पड़ धड़पड़ " इस प्रकार का शब्द प्रसिद्ध होता है वैसे ही एकादश इन्द्रियों के देवता सत्वगुण से उत्पन्न हुए ॥ २० ॥ जिसप्रकार अग्नि से पाक आदि फल सिद्ध होते हैं तिसी प्रकार रजोगुण से निर्मल ग्यारह इन्द्रियां उत्पन्न हुई ॥ २१ ॥ और जिसप्रकार प्रकाश से वस्तुओं का दर्शन (दिखाई देना) होता है वैसे ही तमोगुण से पांच गुणवाले पंचभूत इस प्रकार हुए ॥ २२ ॥ जिसका प्रभाव नहीं जानाजावे और जो दीखने में नहीं आवे ऐसी प्रकृति से जो महत्तत्व पैदा हुआ उसके दशम अंश को हे चहुवाण रामसिंह ! तीन प्रकार का अहंकार जानो ॥ २३ ॥ उस अहंकार के दशमांश से शब्द गुणवाला आकाश हुआ. उस आकाश में

सपरसगुन पवमान पुनि, दसम१०अंस हुव तास ॥ २४ ॥
दसम१० अंस पवमानको, तेज रूपगुन जानि ।
दसम१०भाग पुनि तेजको, रसगुन बारि बखानि ॥ २५ ॥
दसम१० अंस हुव नीरको, भूगुन गंधउपेत ।
ए महदादिक आवरन, सप्त७भये सब खेत ॥ २६ ॥
अंत यहै छिति आवरन, भित्तिरूप इहिं मान ।
जोजन अर्बुद पंच५००००००००मित, सुनियत तंत्र निदान ॥ २७ ।
अरु अंतर या भित्तिके, इहिं५००००००००प्रमान अवकास ।
तिहिं बिच पंचक५ भूतभव, बहुबिध सुनहु बिलास ॥ २८ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ प्रकृतिसर्गपरम्परोद्देशनं चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

अंडकटाहकउभय२ बिच, अर्णवछीर निधान ।

दशमांश से स्पर्श गुणवाला पवन, और पवन के दशमांश से रूपगुणवाला अग्नि हुआ, अग्नि के दशमांश से रस गुणवाला जल और जल के दशमांश से गंध सहित भूमि हुई ये महदादिक सात *आवरण तो सब क्षेत्र रूप हुए ॥ २४--२५--२६ ॥ और अंत का आवरण यह भूमि भींति के आकार हैं जिस का प्रमाण पांच अर्बुद (पचास करोड़) योजन का शास्त्रों में निश्चय किया सुना है और इस भींति के बीच में इतना ही आकाश है जिसके बीच में पंचभूत हुए जिनके बहुत प्रकार के विलास सुनो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में प्रकृति और सृष्टि परंपरा के कथन का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥

पुराण का मत है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने एक अंडा बनाया फिर उसके दो टुकड़े करके एक टुकड़े से स्वर्ग और दूसरे से पृथ्वी बनाई और इन दोनों के बीच में आकाश रचा, इन दोनों अंडकटाहों के बीच में क्षीरसागर

---

*विष्णुपुराण के प्रथम अङ्क के दूसरे अध्याय मे सात आवरण इस प्रकार लिखे हैं कि अंडकटाह के पहला आवरण पृथ्वी का जिस से दशगुणा आवरण जल का, जलसे दश गुणा अग्नि का, अग्नि से दशगुणा पवन का. पवन से दशगुणा आकाश का, आकाश से दशगुणा तामसावरण और तामस से दशगुणा अहंकार का आवरण है ॥

नारायन तँहँ व्यक्तहुव, आलुक तल्पसयान ॥ १ ॥
नारायन की नाभिसन, लंबनाल हुव पद्म[2] ।
चतुरानन हुवपद्मसन, जो सब सर्गन सद्म ॥ २ ॥
गगनँ[3] गिरा उपदेसकरि, तपस बिसेस कुमाय ।
पहिलैं मानस सर्ग किय, लोकेस्वर हित लाय ॥ ३ ॥
तँहँ मरीचिँमुख सप्त७ऋषि, पुनि नारद भृगु दच्छ ।
इत्यादिक बिधिदेहसौं, उपज्यो सर्जन अच्छ ॥ ४ ॥
पुनि निजतनु द्वै२भाग करि, किय बिधि मिथुनँ२बिचारि ।
इक स्वायंभुव१आदिमनु, सतरूपा२पुनि नारि ॥ ५ ॥
सतरूपा मनुसौं जन्यौं, संतति पंचक५बाम ।
दुव२सुत इक उत्तानपद१,अपरँ प्रियव्रत२नाम ॥ ६ ॥
तनया त्रय३आकूति१अरु,देवहूति२पुनि जानि ।
त्यौं प्रसूति३इनके रमनँ, तीन३हि कहत बखानि ॥ ७ ॥
बिधि सुत रुचि१व्याही यहै, मनुदुहिता आकूति ।
बिधिसुत कर्द्दम२मध्यमाँ२,बिधिसुत दच्छँ३प्रसूति३॥ ८ ॥
रुचिसौं तिय आकूति बिच, बिष्णुजज्ञ१अवतार ।
अंस रमाको दच्छिणा २,यह हुव मिथुन२उदार॥ ९ ॥
जनँ दच्छिणा जँज्ञसौं द्वादस१२सुत तोसाँदि ।

रूपी घर में शेष शय्या पर श्रीनारायण प्रत्यक्ष हुए १ कमल २ सृष्टि रचना का घर है ३ आकाश वाणी के उपदेश से बहुत तपस्या करके उस लोकेश्वर (ब्रह्मा) ने प्रथम मनुष्यों की सृष्टि रची ४ मरीचि को आदि लेकर ॥ इनको आदि लेकर ब्रह्मा के देह से उत्तम सृष्टि उत्पन्न हुई ॥ ४ ॥ फिर अपने शरीर के दो भाग करके ब्रह्मा ने जोड़ा५बनाने का विचार किया जिसमें आदि मनु स्वयंभू और शतरूपा नामक स्त्री हुई ॥ ५ ॥ ६ दूसरा ७ इनके पतियो के नाम कहते हैं ॥ ७ ॥ मनु की पुत्री आकृति तो ब्रह्मा के पुत्र रुचि को ब्याही. इसी प्रकार ब्रह्मा के पुत्र कर्दम को देवहूति और दक्ष को प्रसूति ब्याही ॥ ८ ॥ रुचि से आकृति के गर्भ में विष्णु का अंश यज्ञावतार और लक्ष्मी का अंश दक्षिणा नाम कन्या यह जोड़ा उत्पन्न हुआ ॥ ९ ॥ उस यज्ञावतार

तुसितदेव संज्ञक भये,ते सब इंद्रभटादि ॥१०॥
देवहूति बिच दसक१० हुव, कर्द्दमतैं सुभकार ।
नव९कलादि तनया तनय, कपिल१०सु हरिअवतार ॥ ११ ॥
कला१सुता कर्द्दम दई, मुनि मरीचि१के अत्थ ।
अनसूया२श्रद्धा३उभय२,अत्रि१अंगिरा३।२सत्थ ॥ १२ ॥
त्यौँ मुनिराज पुलस्त्य४कौं, सुता हविर्भू४दीन ।
पुलह५हिं गति५क्रतु६कौं क्रिया६,भृगु७कौं ख्याति७प्रबीन। १३ ।
अरुंधती८जु बशिष्ठ८हित, सांति९अथर्वा९काज ।
जामाता बिधिसुत बरे,ए९कर्द्दम मुनिराज ॥ १४ ॥
पुनि मरीचि सन पुत्र दुव२,कला जनैं अभिराम ।
इक१कस्यप१जगको जनक, अपर पूर्णिमा२नाम ॥ १५ ॥
अनसूया बिच अत्रि सन, हरि हुव दत्तात्रेय१ ।
सिव दुर्व्वासा२द्रुहिन सासि, ३इन नामन अभिधेय ॥ १६ ॥
श्रद्धा बिच मुनि अंगिरा, संतति छक्क६उपाय ।
सुत दुव२इक्क१उतत्थ्य१पुनि, सुरगुरु जीव२सुभाय ॥ १७ ॥
सुता सिनीवाली३।१कुहू४।२,राका५।३अनुमति६।४नाम॥
दीर्घतमा१सु उतत्थ्यतैं, कच१गुरुतैं हुव ताम ॥ १८ ॥
मुनि पुलस्त्यतैं दुव२तनय, भये हविर्भूजात ।
इक अगस्ति१वातापिरिपु, अपर बिश्रवा२ख्यात ॥ १९ ॥
तनय बिश्रवातैं भयो, धनद१इडविडामाँहिं ।

से दक्षिणा ने तोष आदि बारह पुत्र प्रकट किये जो इंद्र के आदि उमराव तुषित नाम के देवता हुए ॥ १० ॥ कर्दम से देवहूति में कला आदि नव कन्यायें और एक पुत्र दश संतान हुए जिनमें कपिलदेव हरि (विष्णु) का अवतार हुए ॥ ११ ॥ २ब्रह्मा के इन नव पुत्रों को कर्दम मुनि ने जमाई (दामाद) किया. ३ मरीचि से ४कला ने सुंदर दो पुत्र प्रकट किये ५ एक कश्यप जो संपूर्ण संसार का पिता है ६ नामवाले हुए ७ बृहस्पति ८ बृहस्पति के कच नामक पुत्र हुआ ९. पुलस्त्य से हविर्भू नामक स्त्री में १०वातापि नामक असुर को मारनेवाला अगस्त्य ११इड़विड़ा के गर्भ से कुबेर हुआ १ विश्रवा के केशिनी के गर्भ में रावण कुं-

रावनादि४रक्खस भये,उदर केसिनी माँहिं ॥ २० ॥

कर्मश्रेष्ठ मुख१पुलहतैं, गति सुत तीन३उपाय ।

सट्ठि सहँस ६००००क्रतुतैं क्रिया, बालखिल्ल्य२ उपजाय ॥२१॥

अरुंधती हु वशिष्ठ सन, चित्रकेतु१निजजामैं३ ।

पुनि सुरोचि२विरजा३तथा, मित्र४रु उल्वण५नाम ॥ २२ ॥

वसुभृद्यान६द्युमान७अरु, सक्ति८तनय इत्यादि

महासती जनती भई,सुफल पतिव्रतसाँदि४ ॥ २३ ॥

सांति अथर्वा तैं जनैं,पुत्र तथा मतिपीनैं५ ।

तेहु धृतव्रत१दद्ध्यच२रु, अश्वासिरा३ए तीन३ ॥ २४ ॥

ख्याति जनैं भृगुसाँ तनय,तीन३रु तनयतीन३ रु तनयाँ६ एक१।

धाता१रु विधाता२रु कवि३,बहुरि रमा१।४सुविबेक । २५

मेरुसुता आयति जन्यौं, धाता हिंतु७ मृकंड१ ।

मार्कंडेय१मृकंडसुत, हुव मुनि योगअखंड ॥ २६ ॥

नियति विधातातैं जन्यौं, पुत्र प्रान१अभिधान ।

वेदसिरा१हुव प्रानकैं, तनय महामतिमान ॥ २७ ॥

कवि३भृगु सुत तीजो३कह्यो,सुक्र४भयो तस ख्यात१० ।

बहुरि पुलोमामैं च्यवन४,चोथो४भृगुसन जातैं११ ॥ २८ ॥

जनी प्रसूति हु दच्छतैं,घनी सुता अभिरामैं१२ ।

तिनमैं तेरह१३धर्मकौं, श्रद्धादिक१३दिय बामैं१३ ॥ २९ ॥

पितरनकौं दीनी स्वधा।१।१४,पावककौं स्वाहा रु १।१५।

पतिव्रता सिवकौं सती१।१६,दई सोलहौं१६चारु१४ ॥ ३० ॥

सासिकौं अश्विनि आदि१७दिय,तनया सत्तावीस२७ ।

भकर्ण और विभीषण हुए१कर्मश्रेष्ठ आदि पुलह से गति नामक स्त्री में तीन पुत्र हुए२क्रतु से क्रिया नामक स्त्री में साठ हजार२बालखिल्य ऋषि हुए३पुत्र४पतिव्रतसहित५तीव्र बुद्धिवाले६तीन पुत्र और एक पुत्री७से८प्राणनामवाला ९भृगु का तीसरा पुत्र जो कवि कहा गया है वह "शुक्र" इस नाम से १०प्रसिद्ध हुआ११ भृगु से हुआ १२ सुन्दर१३श्रद्धा को आदि ले तरह स्त्रि यां दीं. १४सुंदर

कश्यपकौं अदिती प्रमुख१३, अति जगती अवनीस३०।६०।३१।
भये धर्मतैं मूर्त्तिमैं, नर१नारायन२देव ।
त्यौं श्रद्धादिक१२मैं हु सुत, भये सुभादिक१२एव॥ ३२ ॥
स्वधा पितरगनतैं जनीं, द्वि२सुता उत्तमज्ञान ।
इक वयुना१पुनि धारिणी२,ए जिनके अभिधान॥ ३३ ॥
स्वाहामैं हुव अग्निसौं, पावक१सुचि२पवमानु३ ।
तिनतैं पैंतालीस४५ ए, सब गुनचास४९कृसानु ॥ ३४ ॥
सती अप्रसूता[3] जरी, जाय जनकमख माँहिं ।
हैमवती[4] ह्वै पुनि बरे, अखिलईस सिव आँहिं ॥ ३५ ॥
तामैं दुव२सुत संभुसन, उपजे पूज्य बिसेस ।
इक कुमार[5]१तारककदन[6], गजमुख अपर गनेस ॥ ३६ ॥
नारद१भृगु२सनकादिक४।६रु, अरुणि७हंस८इत्यादि ।
रहेब्रह्मचारी बहुत, ब्रह्मबोधसंबादि ॥ ३७ ॥
मृषा[7] अधर्म्म उभै२हि मिलि,मिथुन[8] उपायो एक१।
दंभ१रु माया२तिन दुहुन२,हुव अघकर्म अनेक ॥ ३८ ॥
कश्यपतैं हुव अदिति[9] बिच, इंद्रादिक सब देव ॥१॥
दितिमैं दनुमैं दैत्य२अरु, दानव३दृढ अहमेव[10] ॥ ३९ ॥
पसु४पच्छी५अहि[11]६वारिचर[12], गिरि८तरु९आदिकसर्ग ।
कश्यपतैं उपजे बहुत, थावर[13] जंगम[14] वर्ग ॥ ४० ॥

---

१ हे राजा रामसिंह ! कश्यप को अदिति आदि तेरह कन्या दीं २ नाम है ३ विना संतान ही अपने पिता दक्ष के यज्ञ में जलीं ४ फिर हिमालय की पुत्री होकर शिव को वर किया जो संपूर्ण के स्वामी हैं ५ स्वामिकार्तिक ६ तारकासुर का नाश करनेवाला और दूसरा हाथी के मुखवाला गणेश७ मृषा नामक स्त्री और अधर्म ने मिलकर८एक जोड़ा पैदा किया, एक दंभ[पाखंड] और माया; इन दोनों से अनेक पाप कर्म हुए ९ कश्यपसे अदितिके गर्भ से इंद्र आदि देवता और दितिके गर्भ से दैत्य इसीप्रकार दनु नामक स्त्री के गर्भसे दृढ१० अहंकार वाले दानव हुए ॥ ११सर्प१२जलचर १३ जड़ पदार्थ (जो आप से आप नहीं चल सक्ते) चर१४ (आप से आप चलनेवाले) ॥४०॥ मनुष्य सृष्टि का

स्वायंभुव मनुतैं भयो, मनुज सर्ग बिस्तार ।
मिथुन कर्म उतपत्तिको, हुव तबतैं हि प्रचार ॥ ४१ ॥
रचना चउदह१४लोककी, सब लोकेस बनाय ।
मानस¹ मोहन² सर्ग रचि, किय जग प्रानीप्राय³ ॥ ४२ ॥
सत्यलोक१तपलोक२जन, लोक३त्यौं महरलोक४ ।
सर्ग५भुवरलोक६रु यहै, भूमिलोक७ नरओक ॥ ४३ ॥
अतल्लप बितल९ सुतल१०रु तलातल११रु रसातल१२नाम ।
महातल१३रु पाताल१४ए, क्रम ऊरध अध धाम ॥ ४४ ॥
त्यौं तिरछे भूलोक पर, द्वीप शिलोच्चय⁴ अब्धि⁵ ।
रचि पहिलैं पुनि यौं द्रुहिन⁶, लई प्रजा सुख लब्धि ॥ ४५ ॥
सत्यलोक⁷ निज धामतैं, महरलोक लग च्यारि ।
निस्पृह सत्वनको रचे, श्रीलोकेश सुधारि ॥ ४६ ॥
चाहैं⁸ फल अति पुराय करि, नाक लोक तिन हेत ।
भुवरलोक बिच भूत मुख, रक्खे खगन⁹ समेत ॥ ४७ ॥
उल्लवजं¹⁰१अंडज¹¹२घर्म्मज¹²३रुउद्भेजं¹³४चउ४खानि ।

विस्तार स्वायंभुव मनु से हुआ तभी से उत्पत्ति करनेवाले मैथुन कर्म का प्रचार हुआ ॥ ४१ ॥ ब्रह्मा ने चौदह लोक की रचना बनाकर १ मन से २ मैथुनी सृष्टि रचकर संसार में विशेष ३ प्राणी किये ॥ ४२ ॥ सत्यलोक से लेकर भुवर्लोक तक के छः लोक ऊपर कहे और यह भूमि जो मनुष्यों का घर है ॥ ४३ ॥ अतल से लेकर पाताल तक नीचे के, ये क्रम से ऊपर और नीचे के लोक रचे ॥ ४४ ॥ इसी प्रकार इस टेढे (पुराण में इस भूमितल को भींती के आकार कहा इस से यहां पर टेढा लिखा है) भूमि लोक पर द्वीप, ४ पर्वत और ५ समुद्र पहिले रचकर ६फिर ब्रह्मा ने प्रजा के सुख की प्राप्ति ली ॥ ४५ ॥ अपने लोक ७ (सत्यलोक) से लेकर महर्लोक तक चार लोकों में इच्छा रहित जीवों को रचा ॥ ४६ ॥ जो पुराय का फल ८ चाहनेवाले जीव हैं उनको स्वर्ग में रचा और भूतों (देवयोनि विशेष, अथवा शिव के गणों) को आदि लेकर पक्षियों को ९ भुवर्लोक में रचा ॥ ४७ ॥ १० जरायुज (मनुष्य आदि) ११ अंडज (अंडा से पैदा होनेवाले सर्प आदि)१२ गरमी से पैदा होनेवाले जुवां आदि और भूमि को १ फोड़कर निकलने वाले (वृक्ष आदि)

वरसखंड भूलोक बिच,रचे कर्म्मभू ठानि ॥ ४८ ॥
इतर खंड फल भोगके, दिव्यसत्वं तँहँ रक्खि ।
नागादिक असुरादिकन, अतलादिन बिच अक्खि ॥४९॥
गिरिदिग्गज दिक्पाल करि, थिर अवनीकौं थप्पि ।
भूमिराज्य मनुकौं दयो, त्रिदिवं इंद्रहितअप्पि ॥ ५० ॥
पावकतैं१पवमानतैं२, रवितैं३बेद निकासि ।
ऋक१यजु२साम३प्रवर्त्त किय, हिय चतुरास्य हुलासि ॥५१॥
अठ प्रयुत चउ लक्ख८४०००० मित, नाना जीवन जोनि ।
रचि बिरिंचि पूरे अखिल, स्वर्ग१ अधोबिल२छोनि३ ॥५२॥
मुखतैं१करतैं२सँत्थितैं३, द्विजमुख बरन३बनाय ।
पज्जादिक४ सब पयनतैं४, सरजे जन समुदाय ॥ ५३ ॥
काल१देस२सागर३सरित४,कुलाचलादिक५ठानि ।
सीमा१आयु२समस्तके, बिरचे भिन्न बखानि ॥ ५४ ॥
पसु१पिसाच२ रक्खस३मनुज४,उल्लवज१इतिमुख सर्ग ।
आसीबिख१खग२नक्र३झख,४इतिमुख अंडज१वर्ग । ५५ ।

ये चार खान भूमिलोक जंबुद्वीप में १ ब्रह्माने रचे ॥ ४८ ॥ दूसरे द्वीपों में कर्मफल भोगनेवाले २ दिव्यजीवों को, और सर्पों व असुरों को आदिलेकर अतलादिक (नीचे के) लोकों में रक्खा ॥४९॥ पर्वत, दिशाओं के हस्ति, दिक्पाल (दिशाओं के पति) बनाकर भूमि को स्थिर [अचल, पुराणों के मत से भूमि नहीं फिरती सूर्य फिरता है और वेद व ज्योतिष के मत से भूमि सूर्य के चारों ओर फिरती है सो यहां ग्रंथकर्ता ने पुराण का मत लिया है] थापकर भूमि का राज्य मनु को और ३ स्वर्ग का राज्य इन्द्र को दिया ॥५०॥ ४ अग्नि, ५ वायु और रवि से वेद निकाल कर हृदय से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को प्रवृत्त किया ॥ ५१ ॥ नाना प्रकार के जीवों की चौरासी लाख योनि को रचकर ६ ब्रह्मा ने ७ स्वर्ग ८ पाताल और ९ भूमि को पूर्ण किया ॥ ५२ ॥ मुख से ब्राह्मण, हाथों से क्षत्रिय, १० जंघा से वैश्य ११ आदि वर्ण बनाकर और पैरों से १२शूद्रादि, इस प्रकार मनुष्यों के समुदाय को रचा ॥ ५३ ॥ काल, देश, समुद्र, नदी, कुलाचल आदि पर्वत बनाकर सीमा और आयु ये सबके जुदे जुदे बनाये ॥ ५४ ॥ पशु, पिशाच (देवयोनि विशेष)राक्षस, मनुष्य,इनको १३आदि लेकर जरायु से उत्पन्न होनेवालों की सृष्टि और सर्प प . मॅकर (.

कुमुनि७१महाजुग काल भुग्गि अधिकार तजत तनु ॥
मनु चउदह१४जब होत अधिक इक१ अंत संधि१७२८०००सह ।
तबहि महाजुग सहँस१०००होत सुहि इक१बिरिंचि अहे१ ॥
याही प्रमान वाकी निसा ते मनुजनके कल्प दुव२ ।
नृपरामसिंह लोकेसके इँहिं प्रमान दिनरत्ति हुव ॥ ७ ॥

दोहा

तीन३लोक दिनमैं रचत, निसमैं सब मिटवाय ।
सोय रहत प्रत्यूषहीं, बलि जगि देत बनाय ॥ ८ ॥
जो क्रम पहिले सग्र्ग बिच, सोही लै पुनि सग्र्ग ।
प्रतिदिन मनु इंद्रादि बिधि,बिरचत संसृति बग्र्ग ॥ ९ ॥
होत तीन सत सट्ठि३६० जब, अहोरात्र इँहिं मान ॥
ब्रह्माको इक१अब्द तब,होवत नृप चहुवान ॥ १० ॥
असे सत२००हायन जियत, बिधि करि सग्र्ग निबाह ॥
महाप्रलय होवत तदनु, बिगरत अंडकटाह ॥ ११ ॥
गंध१होय भू१नीरमैं, मिलत नीर२रस२होय ॥
तेजमैं रु वह३रूप३व्है, बात मिलत गुन खोय ॥ १२ ॥
बात४हु व्है सपरस३सु हू , मिलत गगन बिच जाय ॥

प्रकार अन्तसन्धि सहित चौदह मनु अपना अपना अधिकार भोगकर समाप्त होजाते हैं तब एक हजार महायुग होते हैं वही ब्रह्मा का एक दिन है और इतनी ही उस की रात्रि है वही मनुष्यों के दो कल्प होते हैं सो हे राजा रामसिंह! इस प्रमाण से ब्रह्मा के दिन और रात हुए ॥ ७ ॥ वह ब्रह्मा दिन में तीनों लोक रचता है और रात्रि में मिटाकर सोजाता है फिर प्रातःकाल में जगकर बना देता है ॥ ८ ॥ जो क्रम पहिले सर्ग में कहा उसी क्रम को लेकर ब्रह्मा अपने प्रत्येक दिन में इन्द्र को आदि लेकर नाना प्रकार की सृष्टि (रचना) रचता है ॥९॥ इस प्रमाण के तीन सौ साठ दिन रात होते हैं तब हे चहुवाण राजा रामसिंह! ब्रह्मा का एक वर्ष होता है ॥ १० ॥ सृष्टि का निर्वाह करके इस प्रकार के सौ वर्ष तक ब्रह्मा जीता है जिसके पीछे महाप्रलय होता है जिसमें अंडकटाह (स्वर्ग और भूमि) बिगड़ जाता है॥११॥ भूमि गंध रूप होकर जल में मिलजाती है और जल रस रूप होकर अग्नि में मिलजाता है इसी प्रकार अग्नि

अहंकार बिच शब्द५०है, जावत गगन५समाय ॥ १३ ॥
ठहै लय अहम६महान बिच, वह७प्रधान मिलि जाय ॥
वह प्रधान८अय पुनि नचत, चुंबक पुरुष९कहाय ॥ १४ ॥
लोह घिसैं ज्यौं काल लहि,यौं प्रधान परिनाम ॥
फैलत समिटतही रहत, निजाधार चिद्धाम ॥ १५ ॥
सकल जीव संस्कारजुत, लयमैं प्रकृति समात ॥
निज आसय जुत सर्ग्गमैं, सब कढि कर्म्म चलात ॥ १६ ॥
जो तुम सम नृपराम जन, दृढ स्वरूप करि लेत ॥
अधिष्ठान या जंत्रको, होवत सोहि सुचेत ॥ १७ ॥
यह अरघट्ट घट्टीन जिम, लयँ सर्ग्गादि स्वभाव ॥
नचत रहत मायानटी, इंद्रजाल उफनाव ॥ १८ ॥
तामैं यह ब्रह्मांड हुव, अबके द्रुहिन अधीन ॥
ऋतु बिच ऋतुके लिंगँ जिम, हुव सब सर्ग नवीन ॥ १९ ॥
अबके बिधिके आयुके, बीते बरस पचास५० ॥

तेज रूप होकर पवन में मिलजाता है ॥ १२ ॥ पवन भी अपने स्पर्श रूप से आकाश में मिलजाता है और आकाश शब्द रूप होकर अहंकार में मिलजाता है ॥ १३ ॥ अहंकार महत्तत्व में लय होजाता है और वह महत्तत्व प्रकृति में मिलजाता है, वह प्रकृति रूप लोहा फिर नाचता है और परमात्मा चुम्बक कहलाता है ॥ १४ ॥ समय पाकर लोहा घिसता है इसी माफिक प्रकृति का परिणाम होता है और अपने आधार परमेश्वर में फैलती सिमटती रहती है ॥ १५ ॥ संसार के संपूर्ण जीव हैं वे प्रलय होने पर प्रकृति में मिलजाते हैं और सृष्टि रचना के समय सब निकलकर अपने अपने अभिप्राय सहित कार्य चलाते हैं ॥१६॥ हे राजा रामसिंह तुम्हारे समान जो मनुष्य दृढ स्वरूप (आत्मज्ञान) करलेता है वही इस यंत्र प्रकृति के फैलने सिमटने रूप सृष्टि (रचना) का स्थान अर्थात् ब्रह्म (मोक्ष होकर ब्रह्म में मिलजाता है) होजाता है ॥ १७ ॥ रैंहट की घड़ियों के समान यह प्रलय और सृष्टि रचना का स्वभाव है सो माया रूपी नटनी इस इन्द्रजाल के उफनाव से नाचती रहती है ॥१८॥ जिस में यह ब्रह्मांड इस समय के ब्रह्मा के अधीन हुआ। जैसे प्रत्येक ऋतु में प्रत्येक ऋतु के चिन्ह उत्पन्न होते हैं इसी माफिक सब सृष्टि रचना नवीन हुई ॥१९॥ अब का जो ब्रह्मा है उसकी उम्र के पचास वर्ष बीते हैं और मनुष्यों के

सहँस अढारह१८०००नरनके, इहाँ प्रलय गत आस।२०।
किते कहत बिधिके बरस, सारध अठ८जगाम ॥
गत निकाम कोउ रहो, बर्त्तमानसौं काम ॥ २१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ पारिभाषिककालावयवोपेतसर्गलयादिप्रधानस्वभावसूचनपूर्वकवर्त्तमानब्रह्मायुर्गतकथनं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

अबको कल्प बराह यह, याके सर्ग प्रकार ॥
बैष्णव नाम पुरान बिच, कहौं तास अनुसार ॥ १ ॥
बिधिके पूर्व पैरार्ध बस, पद्मकल्प जिम सर्ग ॥
सितबराह अब यह अपर, बिरचे पुनि सब बर्ग ॥ २ ॥
लग्यो बरस एकावनम, प्रथम मास तिथि आदि ॥
सरजे धाता लोक सब, सूचित क्रम संपादि ॥ ३ ॥

षट्पदी

पुनि मरीचि मुनि आदि प्रकटि बिधि पुत्र प्रजापति,

अठारह हजार प्रलय गत हुए ॥२०॥ कितनेक कहते हैं कि ब्रह्मा के साढा आठ वर्ष गये हैं परन्तु गयेहुएँ वर्ष इस समय के गणित में उपयोगी नहीं होने के कारण निकम्मे हैं सो चाहे सो रहो हम को तो वर्तमान वर्ष से काम है।२१।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में आधुनिक (इस समय के) संकेत जतानेवाले समय के अवयवों सहित सृष्टि रचना और प्रलय आदि प्रकृति का स्वभाव जताने पूर्वक वर्तमान ब्रह्मा की गईहुई उमर के कथन का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥

अब का यह वाराहकल्प है जिसकी सृष्टि रचना का प्रकार विष्णुपुराण में है उसी के अनुसार कहता हूं ॥ १ ॥ ब्रह्मा की सौ वर्ष की आयु है जिनमें पहिले के पचास वर्ष का पूर्वपरार्ध और पिछले पचास वर्ष का उत्तर परार्ध कहाता है उस पूर्व परार्ध में पद्म कल्प की जैसी सृष्टि थी वैसी ही इस श्वेत वाराह नामक दूसरे कल्प में ब्रह्मा ने सब सृष्टियां रचीं ॥ २ ॥ इस ब्रह्मा की आयु का यह इक्कावनवां वर्ष लगा जिसका यह प्रथम महीना और प्रथम ही दिन है जिसमें ब्रह्मा ने ऊपर कहे हुए क्रम को सम्पादन

लखि बिनष्ट त्रय३लोक रचन जग धरत भये रति ।
उज्झित बपु मनु आदि बहुरि बिधि सौंहिं प्रकट हुव,
कथित सिद्ध जन कतिक जथाथित ही स्वसर्ग भुव ।
सुरलोक१भूमि२पाताल३सह क्रम पूरब सब सिद्ध किय,
समयानुसार अमरादि इम रीति सहित संसृति रचिय ४ ॥
पंकजभव जगि प्रात सून्य लखि लोक प्रनति करि,
जलनिमग्न भुव जानि होय थिर मनचिंते हरि ।
नारायन तहँ नित्य धवल सूकर बपु धारिय,
बेद जज्ञमय बिहित बहुरि जल अंत बिहारिय ।
आवत निहारि किय नुति अवनि जय दर पंकज चक्रधर,
उद्धरहु मोहि अच्युत अजनि भक्तन टारहु सोकभर ॥ ५ ॥
निखिल ईस सुनि प्रनति होय सकरुन प्रसन्न हरि ,
ऊपर थप्पिय आनि धरनि निज दड्ढ अग्ग धरि ।
द्वीप सप्त७आदिक बिभाग क्रम सिंधु कुलाचल,
त्रिदिव१भूमि२पाताल३जथापूरब थप्पिय थल ।
बिधि रचन सर्ग संकल्प किय अमति पूर्ब तहँ सर्ग हुव,

(भेला) करके सब लोक बनाये ॥ ३ ॥ १ प्रीति २ छोड़े हुए शरीर ३ कहे हुए सिद्ध लोग ४ जैसे आगे थे वैसे ही अपनी सृष्टि में हुए५ सृष्टि ॥४॥६ब्रह्मा ने प्रभात में जगकर लोकों को शून्य देखकर और भूमि को जल में ७ डूबी हुई जानकर स्थिर होकर विशेष नम्रता के साथ हरि (विष्णु) का चिन्तवन किया, उस अविनाशी नारायण ने ८ श्वेत वराह का रूप धर वेदों के साथ यज्ञ रचने को फिर जल में प्रवेश किया जिनको आते हुए देखकर पृथ्वी ने९स्तुति की कि हे १० शंख , कमल, चक्र को धारण करनेवाले अच्युत (पतन रहित) ११ अजन्मा मेरा उद्धार करके भक्तों के भार १२ को टारो ॥ ५ ॥ १३ सब के स्वामी विष्णु ने विनती सुनकर करुणा के साथ प्रसन्न होकर पृथ्वी को अपनी डाढ पर धरके ऊपर स्थापन की और क्रमपूर्वक विभाग करके सातों द्वीप आदि समुद्र, पर्वत, स्वर्ग, भूमि,पाताल जैसे पहिले थे उसी प्रकार सब स्थलों को स्थापन किया,फिर ब्रह्मा ने सृष्टि रचने का संकल्प किया तो प्रथम१४ दुष्ट तामसी सृष्टि हुई जिसके प्रबल पांच पर्व कहे जाते हैं सो हे

जिहिं पंचपर्व कहियत प्रबल सुनहु तेहु बिसनेसं[1] सुव । ६ ।

दोहा

अंधादिक तामिस्र१अरु, महामोह२तम३मोह४ ।
जिम तामिस्रक५पर्वजुत, प्रकटिय भ्रांति प्ररोह[3] ॥ ७ ॥

षट्पदी

बहुरि सृष्टि संकल्प करत बिधिहिंतें[4] प्रकट हुव,
सोहि मुख्य नग[5] सर्गभेद पंच५हि तदीय[6] धुव ।
द्रुम१रु गुल्म[7]२बीरुधं३लता४रु तृन५नाम प्रमानहु,
तैसैं[9] तिरियक स्रोत सर्ग प्रकट्यो पुनि जानहु ।
तस मुख्य भेद बसु८बीस२०मिलि२८
इक१सफ[10] दुव२सफ खट६रु नव९,
बलि पंच५नखर[11] तेरह१३प्रमित भयउ एम२८पसु सर्ग भव ।८।
हय१खर२बेसर३गउर४सरभ५चमरी६इक१सफधर[12],
कृष्ण१गवय२मह३कोल४धेनु५सल६रुरु७अबि८बर्कर९ ॥

---

१ विष्णु सिंह के पुत्र रामसिंह वे भी सुनो ॥ ६ ॥ २ अन्धतामिस्र, महामोह, तम, मोह और तामिस्र सहित ३ भ्रम को पैदा करनेवाली अविद्या की ये पांच पर्व (गांठें) उपजीं ॥ ७ ॥ फिर सृष्टि का संकल्प करते हुए ४ ब्रह्मा से वही (ऊपर कहे हुए पांच पर्वों से) मुख्य ५ नग (अचल) सर्ग प्रकट हुआ ६ जिसके पांच भेद ये हैं सामान्य वृक्ष, ७अप्रकांड (विना शाखा के ताड़, खजूर, नारियल आदि) वृक्ष, ८ फैली हुई लता (भाड़, बांठ, बोभा, इत्यादि नामों से प्रसिद्ध] लता (वेल) तृण (घास) इन नामों से जानो, इसी प्रकार इन्द्रियोंवाली ९ पशु सृष्टि प्रकट हुई जिसके मुख्य अट्ठाईस भेद हुए अर्थात् १० एकशफ (जिनका खुर फटा हुआ नहीं होवे) वाले छः और दो खुर (जिनके खुर फटे हुए होवें) वाले नव, और पंच ११ नखवाले तेरह ये सब मिलाकर पशुओं की २८ प्रकार की सृष्टि हुई ॥ ८ ॥ घोड़ा गधा, खच्चर, गौर, शरभ और चमरी "खरोश्वोऽश्वतरो गौरः शरभश्चमरी तथा । एते चैकशफाः क्षत्तः शृणु पंचनखान्पशूनिति भागवतम् ॥" ये छः तो एक १२शफ वाले और कृष्ण (पशुविशेष) रोभ, महिष, सूअर, गौ (गाय) उष्ट्र, रुरु [मृग विशेष सांभर आदि) मेष (मींढा भेड़) और बकरा (अज) इन नौ को आदि

इत्यादिक दुवै२सफ रु सिंह१वृक[2]२व्याघ्र[3]३फेरु[4]४सुनि[5]५,
गोधा[6]६सल्लक[7]७ओतु८मकर९गज१०कीस[11]११कमठ१२पुनि॥
[10]संस१३सहित त्रयोदस१३पंच५नखभेद मुख्य ए२८पसु भये ,
पुनि देवसर्ग प्रकटिय [11]प्रथित तस प्रकार [12]बहुलहि ठये ॥९॥

दोहा

बहुरि रच्यो नर सर्ग बिधि, अति [13]रज१तम२उद्रेक[14]।
क्रम सन पुनि सुनिये कथित, अधिपति सर्ग अनेक॥१०॥

षट्पदी

महत सर्ग१हुव प्रथम ब्रह्मसर्ग१हु सुहि जानहु,
पुनि हुव गो[15]चर सर्ग२भूतसर्ग२हु तिहिं मानहु।
इंद्रिय सर्ग३ बहोरि सोहि कहियत वैकारिक३,
ए प्राकृत त्रय३सर्ग रीति पूरब अनुसारिक।
नग सर्ग१तिमहि पसुसर्ग२पुनि देवसर्ग३[16]नगसर्ग४जुत,
इंद्रि[17]यँ अधीस आनुग्रहिक५पंच५एहि वैकृत [18]प्रनुत । ११ ।

दोहा

अष्ट८सर्ग ए आदिभव, समुझहु संभरवार ।

लेकर दोसफवाले हैं और सिंह, भेड़ि[2]या, वघेरा[3] (छोटासिंह) कुत्ता[4] सियाल, गोह[6](गोहिली) सेळी (सँहेळी), बिल्ली, मगर, हाथी, [11]बंदर, कछुवा (काछबा) खरगोस[10] (सूंसल्या) ये तेरह भेद पंचनखवालों के मिलाकर अट्ठाईस प्रकार के पशु हुए जिस पीछे देवताओं की प्रसिद्ध[11] सृष्टि हुई जिसके अनेक[12] प्रकार हुए ॥ ९ ॥ फिर ब्रह्मा ने अत्यन्त रजोगुण[13] तमोगुण के [14]प्रथम आरंभ से नरसर्ग रचा सो हे स्वामी रामसिंह! क्रम से कहे हुए सुनो वे अनेक सर्ग हैं ॥ १० ॥ प्रथम महत्सर्ग हुआ उसीको ब्रह्म सर्ग जानो फिर गोचर[15] (आकाश में विचरनेवालों का) सर्ग हुआ उसीको भूतसर्ग मानो, फिर इन्द्रिय सर्ग हुआ उसीको वैकारिक कहते हैं येतीनों प्रकृतिसर्ग पहिले की रीति अनुसार हुए, फिर नग(जड़) सर्ग और इसी प्रकार पशुसर्ग और देवसर्ग, [16]नगसर्ग जिसमें पर्वतों की उत्पत्ति है इसीके साथ इन्द्रियों के देवता[17], अनुग्रहसृष्टि, जिसमें देवता और मनुष्य दोनों की उत्पत्ति है ये पाँच प्रकार की स्तुतियोग्य[18] विकृतिसृष्टि है ॥ ११ ॥ हे

प्रकृति१विकृति२ मिश्रित भयउ, नवम९सर्ग कौमार९ ।१२।
हुव चतुरानन जघन सन, सर्ग असुर१अभिधान।
तनु निज छोरिय विधि तब सु, हुव रजनी१चहुवान ॥१३॥
धाता बपु अपरहि धरयो, तासौं हुव सुरसर्ग२ ॥
सोहु तज्यो बपु दिन२भयो, बहुरि सुनहु बहुबर्ग ॥ १४ ॥
काय अपर विधि ग्रहन किय,तासौं पितर३प्रकास ॥
संध्या३हुव सो तनु तजत, निसादिन बिच जिहिं बास॥१५॥
अज पुनि बपु धारिय इतर, मनुजसर्ग४तिहिं जात ॥
जुन्हा४हुव जो बपु तजत, अमलकांति अवदात ॥ १६ ॥
इम तामस तनुतैं असुर१,बने रजनि१बलवान ॥
सात्विक बपुतैं सुर२पितर३,अहं२सायं३अतिप्रान ॥१७॥
राजस बपु सन मनुज४हुव, प्रबल चंदिमा४काल ॥
पुनि विधि बपु राजस धरिय,तासौं भूख बिहाल ॥१८॥

चहुवाण रामसिंह ये आदि में होनेवाले आठ प्रकार के सर्ग प्रकृति और विकृति से हुए जानो और प्रकृति विकृति (दोनों मिलकर) से नवमा कौमारसर्ग जिसमें सनकादि ऋषि और महादेव की उत्पत्ति है ॥ १२ ॥ तमोमयी ब्रह्मा की जंघा से असुर नामवाली सृष्टि हुई उस शरीर को ब्रह्मा ने छोड़ दियाँ तब हे चहुवाने ! ब्रह्मा की रात्रि होगई ॥ १३ ॥ ब्रह्मा ने दूसरा शरीर धारण किया जिससे देवताओं की सृष्टि हुई वह शरीर भी ब्रह्मा ने छोड़ दिया तब फिर दिन हुआ जिसमें बहुत वर्ग हुए । १४ । ब्रह्मा ने फिर दूसरा शरीर धारण किया जिससे पितरलोक हुए उस शरीर को छोड़ते ही संध्या होगई. जिस संध्या का दिन और रात्रि के बीच में वास है । १५ । इस प्रकरण की टीका यहां बहुत संक्षेप से लिखीगई है सो जिनको विस्तार पूर्वक देखना होवे विष्णुपुराण के प्रथम अंश के पांचवें अध्याय में देखें. ब्रह्मा ने फिर दूसरा शरीर धारण किया जिससे मनुष्यों की सृष्टि हुई. ब्रह्मा ने यह शरीर छोड़ा तब निर्मल श्वेत कांतिवाला प्रभात होगया । १६ । इस प्रकार तमोगुण शरीर से रात्रि में होने के कारण असुरलोग रात्रि में बलवान बने. और सतोगुणी शरीर से दिन में देवता, और संध्या समय पितर हुए इससे इन दोनों समय में ये बलवान् हैं । १७ । रजोगुण शरीर से पूर्व संध्या में मनुष्य हुए इससे प्रातःकाल में मनुष्य प्रबल रहते हैं. ब्रह्मा ने फिर रजोगुणी

भये कतिक तिन माँहिं सौं, चले कतिक बिधिखान ॥
ते जक्खन[1] सन जच्छ५हुव, रक्खसे[2] रच्छक आन ॥१९॥
बिधिके सिरसौं हीन है, चिकुर[3] चढे पुनि मत्थ ॥
ते सर्पन[4] करि सर्प७हुव, हीनभाव अहि७अत्थ ॥ २० ॥
बिधिमुखतैं प्रकटे बहुरि, गान करत गंधर्व८ ॥
बिधिके बयतैं सकुन[6]९बहु, उरतैं एडकँ१०सर्ब ॥ २१ ॥

रोला

बिधि मुख सन हुव छाग११ धेनुसंघात१२ उदरसन,
चरनन करि गज १३बाजि१४ सरभ१५मृग१६उंट१७गंवय१८गन।
न्यंकु[10]१९अश्वतर२०आदि रु अब बिरचे रोमन करि,
बहु औषध२१फल२२मूल२३भूमि इम दिय सर्गन[12] भरि।२२।
त्रिवृत तोम१गायत्रछंद२ऋकवेद३रथंतर४,
अग्निष्टोम५बिरिंचि प्रथम मुखतैं सरजे बर।
त्रैष्टुभछंद१रु यजुर्बेद२पुनि तोम[13] पञ्चदस३,
बृहतसाम४अरु उँकथ[14]५भये दक्खिन मुखतैं तस ॥ २३ ॥
एकविंस तोम१रु अथर्व२बैराज३अनुष्टुभ४ ।

शरीर धारण किया जिससे क्षुधा (भूख) प्रकट हुई. उससे घबराकर कितने ही लोग ब्रह्मा को खाने चले उनमें जिन्होंने कहा कि हम ब्रह्मा को खावेंगे उनका नाम यक्ष और जिन्हों ने कहा इनकी रक्षा करो उनका नाम राक्षस हुआ। १८। १९। ब्रह्मा के शिर से बाल गिरपड़े उनमें कितनेक तो पड़े ही रहे और कितनेक आप से आप चलकर फिर शिर पर जा जमे, जिनमें पड़ेरहनेवाले बाल सर्प हुए जिनका नाम सर्पने(चलने) के कारण सर्प प्रसिद्ध हुआ। २०। फिर ब्रह्मा के मुख से गान करतेहुए गंधर्व हुए और ब्रह्मा के वय से पक्षी और उर से मींढे (भेंड़) उपजे ॥ २१ ॥ ८ सिंह ९ रोझ १० सांभर ११ खच्चर १२ सृष्टियों से। २२। फिर ब्रह्मा ने तीन बार पढजानेवाला स्तोत्र, गायत्री छंद, ऋग्वेद, रथन्तर (साम विशेष) अग्निष्टोम (यज्ञ विशेष) पूर्ववाले मुख से बनाये, और त्रिष्टुप् छंद, यजुर्वेद फिर पन्द्रह[13] वार पढाजानेवाला स्तोत्र, बृहत्साम, उँक्थ[14] (सोमसंस्थ यज्ञ) ये दक्षिणवाले मुख से बनाये। २३। "सामवेद, जगती छंद, सत्रह वार पढाजानेवाला स्तोत्र, स्तोमवै (एक

उत्तरमुख सन रचिय द्रुहिन सब रीति पूर्व सुभ ।
सुर१मुनि२मनुज३न नाम जथापूरब पुनि थप्पिय ,
अप्पअप्प अधिकार अप्प अप्पहिँ सब अप्पिय ॥ २४ ॥
बिधि मुखतैं हुव बिप्र१बाहुसन छत्र२ छत्रधर ,
ऊरुन बिसं३अरु पयन सूद्र४चउ४बर्ण भये बर ।
प्राजापत्य१रु ऐंद्र२थान मारुत३ गांधर्वक४ ,
धर्म निरत चउ४बर्ण अर्थ बिरचिय गत गर्बक ॥ २५ ॥
भृगु१पुलस्त्य२क्रतु३पुलह४ अंगिरा५ मुनि मरीचि६ जुत ।
अत्रि७बसिष्ठ८रु दत्त९ भये बिधिके मानससुत ।
इन न सृष्टि बिच बुद्धिदई बिधि क्रुद्ध भये जब,
अर्द्ध नारि नर अर्द्ध भालं सन रुद्र१० कढे तब ॥ २६ ॥
करहु रूप बहु अक्खि भये लोकेस तिरोहितं ।
सु सुनि रूप दसएक११रुद्र धारे सब सोहित ।
बिधि बपुतैं किय मिथुन प्रथम१तँहँ मनु स्वायंभुव१ ,
सतरूपा२ रानी सतीहु ताकेहि संग हुव ॥ २७ ॥

प्रकार का साम) अतिरात्र, सोमसंख्या, ये पश्चिम के मुख से निकाले,, यह वर्णन मूल में नहीं होने से त्रुटि पाईजाती है परंतु हमने विष्णुपुराण के अनुसार लिख दिया है ॥ इक्कीस वार पढाजानेवाला, अथर्व वेद, वैराज नामक सामवेद, अनुष्टुप् छंद, ये सब उत्तरवाले मुख सेपहिले की रीति पूर्वक ब्रह्मा ने रचे. और देवता, मुनि, मनुष्यों के नाम जैसेपहिलेसर्ग में थे वैसे ही फिर रखकर अपने२ अधिकार अपने अपनेको दिये॥२४॥ ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजों से छत्र धारण करनेवाले क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पगों से शूद्र. ये चार श्रेष्ठ वर्ण हुए. वे प्रजापति, इंद्र, पवन और गंधर्व इन धर्मनियुक्त चारस्थानों से चारों वर्ण गर्वरहित रचेगये ॥ २५ ॥ २ मन के संकल्प मात्र से हुए परंतु इन्होंने सृष्टि रचने में बुद्धि नहीं दी तब ब्रह्मा ने क्रोधकिया जब ब्रह्मा के ललाट से आधा शरीर स्त्री का और आधा पुरुष का ऐसे रुद्र (महादेव) निकले ॥ २६ ॥ जिनसे ब्रह्मा ने कहा कि बहुत रूप धारण करो, फिर ब्रह्मा तो अंतर्धान होगये और शिव ने अपने ग्यारह रूप धारण किये और ब्रह्मा ने अपने शरीर से एक जोड़ा बनाया जिसमें स्वायंभुव मनु और शतरूपा रानी उन्हीके साथ हुई ॥ २७ ॥

सालि१सुमन२ जव३तिल४प्रियंगु५ कोद्रव६पुनिचीनक७
अणु८उदार९मुद्ग१०रु मसूर११निष्पाव१२ कुलत्थक१३ ॥
माँस१४चनक१५सन१६ तुवरि१७आदि ग्राम्यमं औषध किय।
पुनि जर्त्तिल१ सामाक२ आदि बन अन्न बनाविय ॥ २८ ॥
इनकरि करि अध्वर प्रवृत्त बहु बिध सब जीवन।
दिय त्रय३ लोक लगाय कर्म निज निज हंसासन ॥
क्रोध१ काम२मद३लोभ४बढिग जब नरन परस्पर।
रचन लगे तब दुर्ग१ खेट२ खर्बट३पत्तन४ घर५ ॥ २९ ॥

दोहा

स्वर्ग१नरक२ रचना सकल, बनी बिबिध बिधि तत्थ।
मनुकाँ पुनि भुवराज्य दिय, सासन सबन समत्थ ॥ ३० ॥
हुव अधर्म१बिधि पिट्ठिसन, दक्खिन थन सन धर्म२।
नारदादि इतरहु बहुत, बिधिसाँ हुव सुभकर्म ॥ ३१ ॥

पज्झटिका

मनुसाँ सतरूपामाँहिं जात, दुव२पुत्त प्रियव्रत१प्रथमख्यात।
उत्तानपाद२दूजो२अभंग,कन्यादुव२सोदर इनहि संग॥३२॥

हुई ॥ २७ ॥ फिर मनुष्यों की वृत्ति के अर्थ ब्रह्मा ने चावल सुमन (गोधूम अर्थात् गेहूं) जव तिल राई, कोदूं, कांगणी चीणा उदार (धान्यविशेष) मूंग, मसूर, मोठ, कुळथ, उड़द, चना, सण, तूर इनको आदि लेकर ग्रामों में और ग्रामों के समीप होनेवाली औषधियां (अन्न) और वन के तिल, सावां आदि यज्ञ के धान्य बनाये ॥ २८ ॥ इन औषधियों करके जीवों की यज्ञ में प्रवृत्ति कराकर ब्रह्मा ने जीवोंको तीनों लोक में अपने अपने कर्मों में लगादिया. जब मनुष्यों में परस्पर क्रोध, काम, मद, लोभ बढे तब अपनी अपनी रक्षा के अर्थ गढ खेडे (छोटे ग्राम) खर्वट (पर्वतों के घेरे में व नदी किनारे के ग्राम) शहर और घर रचनेलगे। २९। स्वर्ग नरक की सब नाना प्रकार की रचना बनी तहां ब्रह्मा ने फिर सब को आज्ञा में रखने को भूमि का राज बलवान् मनु को दिया। ३०। ब्रह्मा की पीठ से अधर्म हुआ और दाहिने स्तन से धर्म हुआ, नारद को आदि लेकर ब्रह्मा से और भी बहुत पैदा हुए जो शुभ कर्म करनेवाले थे। ३१। मनु से शतरूपा नामक स्त्री में दो पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें बड़ा प्रियव्रत प्रसिद्ध है और दूसरा

तिनमैं प्रसूति१दिय दच्छहेत, आकूति२रुचिहिं दिय हितउपेत ।
रुचिकै सुत हुव यज्ञावतार१,श्रीअंसदक्खिना२जुत उदार । ३३।
तिनकै सुत बारह१२याम जेहि, पहिले मन्वंतर देव तेहि ।
हुव दच्छ सुता चउवीस२४तांम, तिनमैं हुव तेरह१३धर्मबांम ॥३४॥
श्रद्धा१धृति२लच्छी३बुद्धि४तुष्टि५मेधा६क्रिया७रुवपु८सांति९पुष्टि १०॥

लज्जा११रु ऋद्धि१२पुनि कीर्त्ति१३चाहि,
ए धम लई बिधिजुत बिबाहि ॥ ३५ ॥
पुनि ख्याति१४।१सती१५।२संभूति१६।३नाम,
स्मृति१७।४प्रीति१८।५छमा१९।६संतति२०।७ललाम॥
अनसूया२१।८रु जया२२।९गुननिधान,
स्वाहा२३।१० रु सुधा२४।११सब ही सुजान ॥ ३६ ॥

जिन जिन ए ग्यारह११लिय बिबाहि,तिन्ह नाम सुनहु अनुक्रम निबाहि
भृगु१भव२मरीचि३विज्ञान परत्त्य, पुनि अंगिरा४रु मुनिबर पुलस्त्य५

पुलह६रु क्रतु७अत्रि८बसिष्ठ९सुद्ध,
पुनि वह्नि१०पितरगन११ ए प्रबुद्ध ॥

अब सुनहु धर्मसंतान नाम, श्रद्धा बिच उपजिय कुमरकांम१ ।३८॥
धृतिपुत्र नियम २ लच्छीज दर्प ३, बुद्धिसुत बोध ४ त्रैलोक्यतर्प ।
संतोप५तुष्टि औरस कुमार, मेधासुत जानहु श्रुत६उदार ॥ ३९ ॥
नय७।१दंड७।२विनय७।३तीन हिक्रियाज,व्यवसाय८वपुजहेराजराज

उत्तानपाद अभंग हुआ. इन दोनों के साथ इनकी सहोदर दो कन्या हुई । ३२ । इनमें प्रसूति तो दच्छ को और आकूति रुचि को हित के साथ दी रुचि के यज्ञावतार नामक पुत्र, लक्ष्मी की अंश दक्षिणा नामक कन्या के साथ हुआ । ३३ । इस दक्षिणा मे यज्ञ से बारह पुत्र हुए जिनके नाम याम हुआ.वेही प्रथम (स्वायंभुव) मनु के समय में देवता हुए और दच्छ से प्रसूति में चौबीस कन्या हुई वहां उनमे से तेरह तौ धर्म की स्त्रियां हुई । ३४ । ६सुन्दर ७ विज्ञान के घर८पंडित९धर्म के पुत्रों के नाम,श्रद्धा नामक स्त्री के१० कामदेव॥३७॥३८॥धृति के नियम,लक्ष्मी के अहंकार, बुद्धि के तीनों लोकों को तृप्त करनेवाला बोध, तुष्टि के संतोष नामक औरस पुत्र, मेधा के श्रुत, क्रिया नामक स्त्री के नय, दंड और विनय तीन पुत्र हुए वपु के व्यवसाय.

सांतेय छेम९पौष्टेय लाभ१०,लाज्जेय बिनय११पुनि अतुलआभ४०
सुख१ऋद्धितनय जस१३कीर्त्ति पुत्र, यह धर्मसर्ग हैं तस तनुत्र ॥
धाता१रु विधाता२दोय२भ्रात,त्यौं श्री१सुताहु भृगु ख्याति जात।४१।
श्री करत भई हरि उर निवास ,रति दयित पुत्र प्रद्युम्न१जास ॥
भृगु सुतन मेरुतनया ललाम,परनी दुव२आयति१नियति२नाम।४२।
धातासन आयति जनिय प्रान१, द्युतिमान२भयो ताकै सुजान ॥
तस पुत्र प्रजावान३सु नरेस, तासौं हिं बढ्यो भृगुकुल बिसेस।४३।
भृगुसुत कनिष्ट सन नियति जात,हुव मुनि मृकण्ड१सबगुन सुहात॥
ताकै सुत मार्कंडेय२सिद्ध,तस बेदसिरा३तपबोधइद्ध ॥ ४४ ॥
मुनिबर मरीचि सुत पूर्णमास१,कस्यप२द्वितीय२जगसर्ग जास ॥
दुव२पूर्णमास सुत हुव उदार,बिरजा१अरु सर्बग२बोध सार ॥४५॥
स्मृतिमाँहिं अंगिरासौं कुमारि, प्रकटी नृप संभर सुनहु च्यारि४।
इक नाम सिनीवाली१ अनूप, दूजी सु कुहू२हुव राम भूप ॥ ४६ ॥
पुनि राका३अरु अनुमति४प्रमानि, पुनि अत्रिसर्ग अब लेहु जानि।
अनसूयामैं हुव अत्रि जात, सोम१रु दुर्बासा२दत्त३ख्यात ॥ ४७ ॥

शांति के क्षेम, पुष्टि के लोभ, लज्जा के विनय, जो अतुल कांतिवाला हुआ. ऋद्धि के सुख, कीर्ति के यश, हे राजाओं के राजा रामसिंह यह धर्म की सृष्टि और उस (धर्म) के कवच हैं ॥ भृगु से ख्याति नामक स्त्री में धाता विधाता नाम के दो भाई और श्री (लक्ष्मी) नाम की कन्या हुई ।३९॥४०।४१। लक्ष्मी ने विष्णु के उर में निवास किया जिसके प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ जो रति का पति है. भृगु के पुत्र धाता और विधाता ने मेरु की कन्या आयति और नियति से विवाह किया । ४२ । धाता से आयति ने प्राण नामक पुत्र जना. उसके बुद्धिमान् द्युतिमान् हुआ. हे राजा रामसिंह ! उसके प्रजावान् नामक पुत्र हुआ. उसीसे भृगु का विशेष वंश बढा । ४३ । भृगु के छोटे पुत्र विधाता से नियति नामक स्त्री में मृकंड नामक पुत्र हुआ, उस के मार्कंडेय, उसके तप और बुद्धि में निर्मल वेदशिरा हुआ । ४४ । श्रेष्ठमुनि मरीचि के पूर्णमास और कश्यप दो पुत्र हुए. इसी कश्यप की संतान सब जगत् है. पूर्णमास के दो पुत्र विरजा और सर्वग तत्वज्ञानी हुए । ४५ । हे चहुवाण रामसिंह ! अंगिरा से स्मृति नाम स्त्री में सिनीवाली १ कुहू २ राका ३ अनुमति ४ नाम की चार कन्या उत्पन्न हुई. अब अत्रि की संतान जानो.

किय प्रीतिमाँहिं सुत मुनि पुलस्त्य, दत्तात्ति१पूर्वभव जो अगस्त्य॥
मैत्रेय२तास अब पुलह पुत्त, हुव तीन३छमा बिच जोगजुत्त॥४८॥
कर्दम १रु अर्वरीवान २नाम, तीजो ३सहिष्णु ३ गुनधर्म धाम ॥
क्रतुसंततिसुत छअयुत६००००सुजान,सब बालखिल्य अंगुष्ठमान।४६।
अरुखी जया१सु ऊर्जा२द्वि२नाम,सुत हुव वसिष्ट सन सप्त७ताम ॥
ते रज१रु गात्र२पुनि ऊर्द्धबाहु३,बलि बसव४अनघ५त्यौंहि सुतपाहु६
अरु सुक्र७सप्त७ऋषि एहि श्रेय,मन्वंतर उत्तम३मैं प्रमेय ॥
स्वाहा बिच सुत किय वन्हि तीन३,पावक१पवमान२रु सुचि३प्रबीन
तिनकै हुव पैंतालीस४५पुत्त,इम बन्हि ताम४९सित सबन जुत्त ॥
पतनी स्वधाहु जुत गर्भ होय,पितरन सन कन्या जनिय दोय२।५२।
मेना१रु धारिनी२न पति मानि,हुव ब्रह्मवादिनी जोग जानि ॥
श्रद्धा बिच धर्मज हुव जु काम, नंदी बिच तस सुत हर्ष१नाम।५३
हिंसा अधर्मतिय हुव बिचारि,तस मिथुन२अनृत१पति निकृति२नारि

अत्रि से अनसूया नामक स्त्री में सोम, दुर्वासा और दत्त ये तीन प्रसिद्ध, पुत्र हुए। ४६। ४७। पुलस्त्य मुनि ने प्रीति नामक स्त्री में दत्तात्ति (दम्भोलि) नामक पुत्र उत्पन्न किया. इन्हीं का पूर्वजन्म में अगस्त्य नाम था. दूसरा मैत्रेय जिसके पुलह हुआ. इस पुलह से छमा नामक स्त्री में योग सहित गुण और धर्म के धाम कर्दम, अर्वरीवान् और सहिष्णु तीन पुत्र हुए. क्रतु की संतान में अंगूठे के आकार साठ हजार बालखिल्य नामक ऋषि हुए।४८।४९। वशिष्ठ से जया और ऊर्जा इन दो नामवाली स्त्री में सात पुत्र हुए रज १ गात्र २ ऊर्ध्ववाहु ३ सवन ४ अनघ ५ सुतपा ६ और शुक्र ७. ये सातों उत्तम नामके तीसरे मनु के समय में श्रेष्ठ और ज्ञानवान् सप्तऋषि थे. ब्रह्मा के पुत्र अग्नि ने स्वाहा नामक स्त्री में पावक १ पवमान २ और शुचि ३ नामक निपुण तीन पुत्र पैदा किये इन प्रत्येक के पन्द्रह पन्द्रह पुत्र होकर पैंतालीस हुए जो अपने बाप दादा को मिलाकर तमोगुणी उनपचास ४९ अग्नि हुए. और पितरों से गर्भ धारण करके स्वधा नामक स्त्री ने दो कन्या उत्पन्न करीं।५०।५१।५२। जिनके नाम मेना और धारिणी थे. जो किसी को पति नहीं मान योग को जान ब्रह्मवादिनी हुईं. धर्म के श्रद्धा नामक स्त्री में काम नाम पुत्र हुआ. उस काम के नन्दी नामक स्त्री में हर्ष नामक पुत्र हुआ। ५३। अपने योग्य पति विचार कर हिंसा अधर्म की स्त्री हुई. उससे एक जोड़ा पैदा हुआ. जिसमें अनृत

दुव२मिथुन२अनृत सन निकृति जात,
पति भय १तिय माया२जगबिघात॥५४॥
धर्वे नरक१वेदना२तिय तथाहि, भय सन माया सुत मृत्यु१आहि॥
लय१०व्याधि२सोक३तृष्णा४रु क्रोध५, इत्यादि मृत्यु सुत हे सुबोध५५
अरु अपर मिथुन सुत दुख१अखर्ब, ए नित्यप्रलय के हेतु सर्ब ॥
चउ४प्रलय भये मरजाद रूप, सुनिये अभिधानहुं भूपभूप ॥५६॥
नैमित्तिक१प्राकृत२नित्य३नाम, चोथो आत्यंतिक४दुलभ धाम ॥
बिधि सयन निमित्तक प्रथम१तत्थ, सब प्रकृतिलयन दूजो२समत्थ॥
लै जन्म मरन संतत सु तृतीय३, गुन भिन्न बोधं तुरिय४सु गरीय॥
इम प्रलय च्यारि४सर्ग सु त्रिधा३हि, दैनंदिन१प्राकृत२नित्य३आहि
बिधि अंकं प्रकट जब रुद्र जात, बरज्यो हु रुवत हुव बेर सात७॥
इम अष्ट८नाम बिधि ताहि दीन, तँहँ प्रथम रुद्र१सुनिये प्रबीन।५९।
भव२सर्ब३महेसान४ हु बखानि, पसुपति५रु भीम६तिम उग्र७जानि॥

नामक पति और निकृति नामक स्त्री हुई. अनृत से इस निकृति में दो जोड़े उपजे. जिनमें जगत् का नाश करनेवाला भय नामक पति और माया नाम की स्त्री। ५४। और इसी प्रकार नरक नामक पति और वेदना नामक स्त्री हुई. भय से माया का पुत्र मृत्यु हुआ. उस मृत्यु के हे श्रेष्ठ ज्ञानवाले रामसिंह! लय व्याधि शोक तृष्णा और क्रोध आदि पुत्र हुए। ५५। और दूसरे जोड़े (नरक और वेदना) से बड़ा पुत्र दुःख हुआ. ये सब नित्यप्रलय के कारण हैं. मार्यादा रूप चार प्रलय हुए. जिनके नाम हे राजाओं के राजा सुनो। ५६। नैमित्तिक, प्राकृत, नित्य और चौथा दुर्लभ स्थानवाला आत्यन्तिक है जो ब्रह्मा के शयन करने पर होता है उसका नाम नैमित्तिक प्रलय, और जो सब पदार्थों को प्रकृति में लय करने को समर्थ है उसका नाम प्राकृतिक प्रलय है॥५७॥ और प्राणिमात्र जन्म लेकर निरंतर मरते हैं सो तीसरा नित्य प्रलय है और ज्ञान करके सतोगुण रजोगुण तमोगुण से भिन्न (ब्रह्म में लय) कर देता है वह चौथा "आत्यन्तिक" बड़ा प्रलय है. इस प्रकार चार प्रलय और दैनन्दिन, प्राकृत और नित्य यह तीन प्रकार की सृष्टि है ॥ ५८ ॥ यह ब्रह्मा की तामसी सृष्टि कही गई. अब रुद्र की सृष्टि कहते हैं. जब ब्रह्मा की गोदं से रुद्र प्रकट हुआ वह होते ही रोने लगा तब ब्रह्मा ने कहा कि क्यों रोते हो? तो रुद्र ने कहा कि मेरा नामकरण करो. इस समय ब्रह्मा के मना करने पर

पुनि गिनहु महादेव८सु प्रसिद्ध,इम नाम८थप्पि दिय थान इद्ध।६०।
रवि१जल२भू३पावक४पवन५व्योम६,
दीक्षित द्विज७अष्टम८त्योंहि सोम८ ॥
ए जानहु अठ८हि ईस काय, तिन्ह तियन सुनहु चहुवानराय ॥६१॥
पहिली सुवर्चला१पुनि उषा२रु, बलि नाम बिकेसी३चतुर चारु ॥
स्वाहा४रु सिवा५काष्टा६समेत,दीक्षा७रु रोहिनी८क्रमउपेत ॥६२॥
सनि१सुक्र२कुज३रु गुह४नामधेय,तैसैं हि मनोजव५स्वर्ग६श्रेय ।
क्रम सन संतान ७रु बुध८कुमार, ए अठ८अठतनुंभव उदार ॥ ६३ ॥
अैसे प्रकार हुव भूतनाथ, दाक्षी सती सु परनैं सुगाँथ ।
जिंहिं जनक सत्र बिच छंदं जाय, किय पतिनिंदा सुनि भस्म काय ६४
हिमवान सुता ह्वै तिहिं बहोरि परनैं सिव अंचलबंध जोरि ।
इम सर्ग कतिक बरनैं सुमंतैं, कहियैं कति मानैंव बंस अंत ।६५।
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम १ राशौ विद्यमानवराहकल्पसर्गसूचनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥
प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

सात बार रोया इस कारण से रुद्र के सिवाय भव, शर्व, ईशान (महेशान) पशुपति, भीम, उग्र, और महादेव ये सात नाम ब्रह्मा ने दिये. इस प्रकार आठ नाम देकर निर्मल स्थान दिये ॥ ५९ । ६० ॥ सूर्य, जल, पृथ्वी, अग्नि, पवन, आकाश, यज्ञ की दीक्षा लिया हुआ द्विज, तैसे ही आठवां चन्द्रमा ये आठों ही महादेव के स्थान और इन में निवास करने से ये ही महादेव के आठ शरीर हुए. हे चहुवाण राजा ! अब उनकी स्त्रियों को सुनो ॥ ६१ ॥ पहिले तौ सुवर्चला, फिर उषा और फिर चतुर और सुन्दर विकेसी नामवाली, स्वाहा, शिवा, काष्टा, दीक्षा और रोहिणी ये क्रम सहित हैं ॥ ६२ ॥ इसी प्रकार महादेव के आठ शरीरों से क्रम से आठ पुत्र हुए. जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं. ४ आठ शरीरों को धारण करनेवाले (महादेव) के पुत्र ५ महादेव ६ दक्ष प्रजापति की पुत्री ७ श्रेष्ट कथावाले ८ पिता के यज्ञ के बीच में ९ अपनी इच्छा से. १० वस्त्र की गांठ (गंठजोड़ा) जोड़कर ११ सृष्टिरचना १२ बुद्धिमान् १३ मनु के ।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वराहकल्प की सृष्टि के जनाने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥

पज्झटिका

बडवा[1]मुखसौं लग अप्प ओक[2], रचि द्रुहिन[3] चतुर्द्दस१४रम्य लोक।
बँलि[4] सीम कुलाचल[5] भुव बनाय, सब ठाम सत्व[6] अधिकृत[7] बसाय। १।
स्वायंभुव को भुव[8] राज्य अप्पि, दीनौं नर[9]सासन करन थप्पि।
मनुकै जु तनय[10] उत्तानपाद २, अवनीस[11] भयो वह अप्रमाद[12] ॥२॥
दुव२रानी तस सुरुचि१रु सुनीति२, तिनमाँहिं सुरुचि[13] सन पिहुल[14] प्रीति।
हुव तास उदर उत्तम३।१कुमार, अपर[15] सु सुनीति उर ध्रुव३।२उदार।३।
उत्तम[16]हिं लयो नृप कबहु अंक[17], तँहँ ध्रुवहु लग्यो बैठन निसंक ॥
तब सुरुचि कहे ध्रुवसौं कुबैन, आयो वह रोवत जननि ऐन[18]। ४।
सिसुसौं सुनीति सुनि यह उदंत[19], अक्खिय वह[20] उत्तम पुण्यवंत[21]॥
जो सकत पुत्र पुण्यहिं कुमाय, तो करहु तुष्ट[22] हरि बिपिन[23] जाय। ५।
यह सुनत पौंछि दृग निकासि बाल, आयो पुर परिसर[24] बनबिसाल।
मुनि सप्त७लखे तँहँ बोध[25] धाम, बुल्ल्यो कुमार तिन्ह करि प्रनाम। ६।
सुनि मैं सपत्न[26]जननी कुबैन, आयो प्रभु तुम ढिग सिक्ख[27] लैन ॥
जँहँ गो न कोउ ध्रुव[28] थान जोहि, कैसे उपाय करि मिलहिं मोहि ।७।
सब मुनिन कहिय ह्वै हरि प्रसन्न, ह्वै तबहि थान वह तव प्रसन्न।
ध्रुव सु सुनि आय मधुबन सटेक, तप किय जमुना तट बिधि बिबेक ८
मधुपुत्र असुर जँहँ लवन[29] मारि, सत्रुघ्न रची मथुरा सुधारि।
रहि तत्थ[30] खरो इंद्रिय समेटि, तप करन लग्यो हरि हृदय भेटि॥९॥
जिहिं चरन छुवैं ध्रुव तप जमात, जितकौंहि कंपि भुव लचकि जात ॥

---

१ पाताल लोक २ अपना स्थान ३ ब्रह्मा ने ४ पुनि ५ पुराणों के मत से भूमि के चौतर्फ कुलाचल नामक पर्वत का घेरा है ६ जीव ७ अध्यक्ष (अधिकारी) ८ भूमि का राज्य दिया ९ मनुष्यों पर आज्ञा चलाना १० पुत्र ११ राजा १२ प्रमाद रहित १३ सुरुची से १४ बहुत १५ दूसरी(सुनीति) १६ उत्तमकुमर को १७ गोदी में १८ माता के घर १९ वृत्तान्त२० वत्तमकुमर २१पुण्यात्मा (पुण्यवान्) २२प्रसन्न २३वन में जाकर २४नगर के समीप २५ज्ञान का घर २६माता की सोक (मांई मा) २७ शिक्षा २८ निश्चल २९ लवणासुर को ३० तहां

जब रहिय टेकि अंगुष्ठ अग्र, चलबिचल भई भू तब समग्र ॥ १० ॥
सुरराज सहित सुर याम नाम, हरि रचत भये माया प्रकाम ।
छलमय तसँ माता करि सुनीति, आनी गहि क्रंदत भनत भीति ।११।
ध्रुव तउ न तज्यो तप इष्टध्यान, हरिसरन गये सुर मनमिलानं ।
दृढ भक्तभक्ति लखि तब दयाल, आये गरुडध्वज तँहँ उताल ।१२।
अक्खिय जिंहिं चिंतत हृदय ऐनं, सो मैं बर मंगहु खुल्लि नैन ।
तब,तजि समाधि,ध्रुव लखिय विष्णु, दर१चक्र२गदा३पंकज४धरिष्णु
सुकिरीट चतुर्भुज सघनस्याम, लावण्य१दया२भँग३निधि ललाम ।
ध्रुव कहिय बाल मैं जाड्य धार, यह देहु करौं तव नुति उदार ।१४।
निज संख छुवायउ जब मुरारि, ध्रुव तब नुति कीनी प्रनति धारि ।
हरि कहिय अपरं बर बहुरि लेहु, अक्खिय ध्रुव जानत अप्पँ एहु ।१५।
अच्युत मम जननी सुरुचि छोहि, नृप आसनं अनुचित कहिय मोहि ।
थिर यातैं सब जग दुलभ थान, निज मोहि देहु करुनानिधान ॥ १६ ॥
हरि कहिय पूर्वभवँ तू कुमार, हो बिप्रभैक्न मम कलुखहार ।
इक राजपुत्र किय मित्र तोहि, लखि तस समृद्धि तैं चहिय सोहि ।१७।
इहिं कारन तू किय राजपुत्तं, मनुबंस रत्न जय धर्मजुत्तं ।
अब सबन दुलभ ध्रुवथान पाय, जोइग्गनं ऊपर रहहु जाय । १८ ।
सुर कतिक आयु इक१मनु लहंत, जुग एक१कतिक जीवत रहंत ।
तू कल्प अवधि ध्रुव रहहु तत्थ, उडुवपु सुनीति निज जननि सत्थ ।१९।

१ अंगूठा २ सब ३ इंद्र ४ देवता ५ यामनाम के ६ अपनी इच्छानुसार ७ उस ध्रुव की ८ रोती हुई ९ देवता १० मन मलीन करके ११ विष्णु १२ हृदय रूपी घर में १३ शंख १४ पद्म १५ धारण करनेवाला १६ सुन्दर १७ ऐश्वर्य १८ बुद्धिविहीन जड़ता को धारण करनेवाला मैं बालक हूं सो मुझे बुद्धि दो १९ स्तुति २० दूसरा बर २१ आप २२ हे परमेश्वर २३ क्रोध करके २४ राजा के सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है ऐसा मुझे कहा २५ पहले जन्म में २६ ब्राह्मण था २७ पाप को मिटानेवाला २८ उस की संपदा (लक्ष्मी) को २९ राजा का पुत्र ३० युक्त (सहित) ३१ ज्योतिर्गण (नक्षत्रमंडल) के ऊपर ३२ कितने ही देवता एक मन्वन्तर तक और कितनेक एक युग तक की आयु लेते हैं और जीते हैं हे ध्रुव तू कल्प पर्यंत वहां रह, और तारों का शरीर धारण करके तुमारी माता सुनीति भी साथ रहेगी ॥ १९ ॥

कछुकाल करहु भुवराज्य बच्छ,[1]उच्छिष्ट[2] लहहु पुनि थान अच्छ ॥
हरि पिहित[3] भये बर अप्पि एस, ध्रुव आय समय पर हुव नरेस ।२०।
ध्रुवकै पटरानी संभु नाम, उपजे सुत सुष्टि ४।१रु भव्य४।२ताँम ॥
रानी सुच्छाया उदर आय, सुत पंच ५सुष्टिके हुव सुभाय ॥२१॥

रिपु५।१बहुरि रिपुंजय५।२बिप्र५।३नाम,
वृकण५।४रु वृकतेजा५।५धामधाम ॥

वृहती बिच चक्षुष६रिपु तनूंज, मनु षष्ठ६जनक जो प्राप्तपूज ॥२२॥
पतनी पुष्करिनी नाम तास, अनरण्य प्रजापति पुत्रि जास ॥
चक्षुषसुत ताबिच हुव महंत, चाक्षुष७जिहिं छट्ठो ६ मनु कहंत ।२३।
बैराज प्रजापति पुत्रि व्याहि, दिय मनुहिं नड्वला नाम चाहि ॥
चाक्षुष सन ताबिच धर्मधीर, बलवान भये दस१०पुत्र बीर ॥२४॥
उरु८।१बहुरि भये पुरु८।२नामधेय, ऐसैंहि सतद्युम्न८।३हु अजेय॥

बलि सुनहु तपस्वी ८।४सत्यवाक८।५,
सुचि८।६अग्निष्टोम८।७हु कलिकजाक ॥ २५ ॥
अतिरात्र८।८तथाप्रद्युम्न८।९सूर,
अतिमन्यु ८।१०अनुज पानिप प्रपूर ।

उरुसौं आग्नेयी नारि पुत्त, खट६जनतभई जय धर्मजुत्त॥२६॥
ते अंग९।१ रु सुमनस९।२ बहुरि स्वाति ९।३,
क्रतु९।४ अंगिरस९।५ रु सुत ९।६ जितअराति ॥

१हे पुत्र २ कहा हुआ ३ अन्तर्धान ॥ २० ॥ ध्रुव के शंभु नामक पटरानी में तहां सुष्टि और भव्य नामक दो पुत्र हुए सुष्टि के सुच्छाया नामक स्त्री में रिपु, पुरंजय, विप्र, वृकण और वृकतेजा पांच पुत्र किरणों के घर (सूर्य समान) हुए रिपु से बृहती नाम स्त्री में चाक्षुष नाम पुत्र हुआ. जो छठे मनु का पिता पूजनेवालों से स्थापित (पूजनीय) हुआ. ॥ २१ ॥ २२ ॥ जिसकी स्त्री वरुणवंशी अनरण्य नामक पूजापति की पुत्री पुष्करणी में चाक्षुष का पुत्र महंतचाक्षुष हुआ. जिसको छठा मनु कहते हैं ॥ २३ ॥ वैराज नामक प्रजापति की पुत्री नड्वला मनु को व्याही. जिसमें चाक्षुष मनु से धर्मधीर बलवान् और वीर दश पुत्र हुए. जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ २४ ॥ उरु

नृप अंग९ सुनीथा नाम तत्थ, परन्यौं सु मृत्युतनया समत्थ ।२७।
तामाँहिं अंग सुत भयउ बेन१०, इहिं लाय दर्प किय अतुल एनं॥
मातामहकी गति पकरि कूर, दै क्रूर हुकम किय धर्म दूर ॥२८॥
मैंम अर्थ करहु सब हवन सत्त२,को विष्णु१भर्ग२ विधि ३अघ अमत्र।
तव मुनिन कहिय नृप करहु यौंन,तव हित हम भाखत जदपि मौंन२९
हरिकेहि अर्थ मख्ख करन देहु, तामैं बिभाग अब तुमहु लेहु ॥
यह सुनत कुप्पि आक्खिय नरेस,आम्नांय पुकारत न्यायएस॥३०॥
हरि१हर२अजे३इंद्र४रु गंधवाह५,जम६अनल७बरुन८रवि निधिनाह
ससि११भूमि१२अमर इत्यादिसर्ब,अवनीसदेह निबसत अखर्ब ।३१।
मैंही गति सेवहु अखिल मोहि, यह सुनत कुपित मुनि छिंप्रछोहि॥
हनि राख्यो पुंब्बहि पाप जाहि, ते हनत भये कुस मारि ताहि।३२॥
बिनु भूप मचे भुवधाटिपात, सब मुनिन करनें तब सब नसात ॥
नृप ऊरु मथी तँहँ हुव निषादं, दवदग्ध दंडछबि आमिषाद*॥३३॥
बिंध्याचल निबसत तास बंस, यह कहिय बेन कृत पाप अंस ॥

आग्नेयी नामक स्त्री ने छः पुत्र पैदा किये. राजा अंग ने मृत्यु की पुत्री सुनीथा से विवाह किया ॥ २७ ॥ उस सुनीथा में अंग का पुत्र बेन हुआ जिसने घमंड लाकर बहुत पाप किये. और उस मूर्ख ने कठिन आज्ञा देके अपने नाना "मृत्यु" की रीति पकड़ कर धर्म को दूर किया ॥ २८ ॥ और कहने लगा कि होमें और यज्ञ मेरे लिये करो विष्णु, शिव और ब्रह्मा पाप के पात्र कौन हैं. तब मुनियों ने कहा कि हे राजा ! हम मौन रखनेवाले हैं तौ भी तुमारे कल्याण के लिये बोलते हैं कि ऐसा मत कर ॥२९॥ वेदं भी यह न्याय कहता है ।३०। विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, पवन, यमराज, अग्नि, वरुण, सूर्य, कुबेर, चंद्रमा और भूमि आदि देवता सब राजा के शरीर में बसते हैं ॥ ३१ ॥ तुमारी गति करनेवाला मैं ही हूं, सब मुझ को ही सेवो, यह सुनते ही मुनियों ने शीघ्र क्रोध करके जिसको पाप ने पहले ही मार रक्खा है उसको कुश (डाभ) का प्रहार करके मारडाला ॥ ३२ ॥ विना राजा के पृथ्वी पर धाड़े पड़नेलगे और मुनियों की सब कार्यसिद्धि का नाश होने लगा तब राजा को पैदा करने के लिये मुनियों ने राजा वेन की जंघा का मथन किया जिसमें से भील हुआ जो दावाग्नि (ताप) में जले हुए दंडे की छवि के समान काले रंगवाला मांसभोजी हुआ ॥ ३३ ॥ यह निषाद वेन के कियेहुए पाप अंश से निकला जि-

*निषाद निषाद मन्त्यजग्राम.

हुव तदनु मथत अपसै[2]व्य हत्थ, श्रीहरिवतार नृप पृथु११ समत्थ॥३४॥
तिंहिं समय आजगव नाम चाप१, दंसै[3]न२ रु तूनं[4]३सु त्रिसिख दुरा[5]प।
इत्यादिक नं[6]भ सन सस्त्र आय,सव मिलत भये जगसुख सहाय।३५।
वेनहु ततकालहि नाकपत्त, छितिपाल भयो पृथु धारि छत्त ॥
सुर आये तस अभिषेककाल, जलधि रु नदी हु लै रत्नजाल।३६।
लखि चक्र चिन्ह पृथु भूप हस्त, श्रीहरि गिनि मोदित हुव समस्त॥
ताबिच प्रजा हु किय तीब्ररांग, भो इँहिं निदानै राजा सुभाग।३७।
नी[12]रंधि जिंहिं चालत थंभि नीर, सबहोतभये पत्थर शरीर ॥
अंद्रिहु जिम केतन[14]भंग ह्वै न,इम देत भये तिंहिं उचित अैन ॥३८॥
अैसो हुव जो नृप पृथु उदार, सवै[15] रचत भयो विधिहित सुढार ॥
सुतिमाँहिं सोम अभि[16]षव अनेहैं[17],हुव सूत१ रु मागध२ दिव्यदेह ।३९।
मुनि जनन कहिय तिन प्रति सुबैन, उभय२हितुम पंडित सुमति अैर्न[18]॥
अरु उभय२ सत्यवादी उदार, पृथु की स्तुति बरनहु पटु[19] प्रकार।४०।
तब दुहुन २कह्यो धरि सत्यधर्म,कछु नाँहि करिय पृथु अबहि कर्म॥

सका वंश विन्ध्याचल में वसता है. जिसे पीछे दाहिने हाथ को मथने से उसमें से श्रीविष्णु का अवतार समर्थ राजा पृथु हुआ ॥३४॥ इस समय महादेव का अजगव नामक धनुष,कवच,भाथा और दुर्लभ बाण इनको आदि देकर शस्त्र आकाश से आकर संसार के हित के लिये सहाय के अर्थ राजा को मिले ॥ ३५ ॥ वेन भी तुरंत ही स्वर्ग में पहुंचा और छत्र धारण करके पृथु राजा हुआ उसके अभिषेक के समय देवता, और रत्नों का जाल लेकर समुद्र और नदी आये ॥ ३६ ॥ १० प्रीति ११ इस कारण से सौभाग्यवान् ॥ ३७ ॥ जिस राजा के चलते समय मार्ग देने को समुद्र अपने जल को थांभ कर पत्थर रूप कर लेते थे और पर्वत भी जिस प्रकार राजा की ध्वजा टूट न जावे इस प्रकार उचित मार्ग देनेलगे ॥ ३८ ॥ ऐसा उदार राजा पृथु हुआ उसने ब्रह्मा के निमित्त श्रेष्ठ रीति से यज्ञ रचा उसमें से अवभृथ (यज्ञ के अंत में स्नान कियाजावे उसको अवभृथस्नान कहते हैं) स्नान के समय दिव्य देह को धारण करनेवाले सूत और मागध नाम के दो पुरुष उत्पन्न हुए ॥ ३९ ॥ उनसे मुनि लोगों ने कहा कि तुम दोनों पंडित सुबुद्धि के घर और दोनों उदार सत्य बोलनेवाले हो सो चतुरंता से पृथु की स्तुति करो ॥ ४० ॥ तब दोनों ने सत्य बोलने के धर्म को धारण करके कहा कि अभी पृथु ने कोई कार्य नहीं किया और इस

याको न जसहु भुव विदित आँहिं, नुति होवत आश्रयहीन नाँहिं ।४१।
बुल्लिय पृथु११ तुम दुव सत्य बर्म, कहिहो तथाहि करिहौं सुकर्म ।
जुग२ पूज्य बतैहो बर्जनीय, मन्नौं न कबहु कज्ज सु मदीय ॥४२॥
इन्ह दुहुन२करिय नुति सुनत एह, तू सत्यवाक१ दाता२ सुनेह ॥
ह्रीमान३ सत्यसंध४ रु धनेस५, बिक्रांत६मै७यज्वा८जनेस ।४३।
ब्रह्मण्य९साधुमत्त१० धर्मगेह११, प्रियबादी१२दुष्टन दंडदैन१३ ॥
सुसहन१४कृतज्ञ१५करुनानिधान१६,समदिट्ठि१७मान्यमानद१८सुजान
इम कहिय सूत१ मागध२ प्रकार, असोहि बेन सुत हुव उदार ॥
आनर्त्तदेस दिय सूत१ अर्थ, मागध२हिं मगध अप्पिय समर्थ ।४५॥
अर्ची निजरानी सहित सूर, बहु करत भयो मख बित्त पूर ॥
पहिलैं जु अराजक होत देस, भुव गिलिय अन्न औषध असेस ।४६।
तबतैंहि प्रजा लहि भूखभार, क्रंदत्त अब आय रु किय पुकार ॥
पृथु सुनत आजगव धनु चढाय,टंकारि लग्यो भुव पिट्ठि आय४७
गौ रूप धरनि लग सत्यलोक, भजि भजि पृथु देख्यो अखिल ओक

का यश भी भूमि पर प्रसिद्ध नहीं है इस कारण से विना आधार के स्तुति नहीं होती ॥ ४१ ॥ पृथु ने कहा तुम दोनों सत्य के कवच (रक्षक) हो सो जैसा कहोगे वैसा ही श्रेष्ठ कार्य करूंगा और तुम दोनों पूज्य जो नहीं करने योग्य कार्य बताओगे उन कार्यों को मैं कभी मेरे नहीं समझूंगा अर्थात् कभी नहीं करूंगा ॥ ४२ ॥ उन सूत और मागध ने यह सुनते ही यह स्तुति की कि हे राजा ! तुम सत्यवादी, उदार (देनेवाले) श्रेष्ठ प्रीति और लज्जा को धारण करनेवाला, सच्ची प्रतिज्ञा रखनेवाला, कुबेर के समान धनपति, वीर, स य का मित्र, यज्ञ करनेवाला, मनुष्यों का ईश, विष्णु श्रेष्ठ बुद्धिवाला, धर्म का घर, प्यारा बोलनेवाला, दुष्टों को दंड देनेवाला, सहनशील, उपकार को माननेवाला, करुणा का घर अथवा करुणा ही है धन जिसके सब में समदृष्टि रखनेवाला, विद्वानों को मान देनेवाला है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इस प्रकार सूत और मागध ने कहा वैसा ही वेन का पुत्र पृथु उदार हुआ उस समर्थ राजा ने सूत (जो चारणों का मूलपुरुष है उस) को आनर्तदेश (द्वारकाप्रान्त) और मागध (भाटों का मूलपुरुष था उस) को मगध देश दिया ॥ ४५ ॥ १८ पृथु ने अपनी रानी अर्चि के साथ १९ विना राजा का २० संपूर्ण ॥ ४६ ॥ २१ रोती हुई॥४७॥भूमि गौ का रूप धरकर भूमि से लेकर ब्रह्मलोक तक सब स्थानों

अवनी प्रकंपि तब कहिय एस, नारी हनि न करहु अघ नरेस ।४८।
अरु कत्थे प्रजा रहिहै अखर्ब, पृथु कहिय मरत इक१ जियत सर्ब ॥
आधार जोगबल मैं बनाय, करिहौं जगपालन तिहिं निकाय ।४९।
पुनि कहिय भुम्मि करि प्रभु प्रनाम, करिये उपाय यह उक्त काम॥
औषध मैं जारे जठर भूप, दोहहु मुहिं दैहौं छीररूप ॥ ५० ॥
बच्छा मम ऐसो देहु लाय, जासौं थन प्रस्रव प्रकटिजाय ।
पुनि करहु मोहि सम हे प्रबुद्ध, ज्यौं प्रसरिसकैं सब ठाम दुद्ध ॥५१॥
तब चाँप अग्र करि बिसम टारि, समभूमि करी पृथु सब सम्हारि ।
बहु गिरि डिगाय किय दूर दूर, किन्नैं बहुगिरि बन दुर्ग चूर ॥ ५२॥
पुर ग्राम आदि बिधिजुत बसाय, दिय सबन सुलभ बार्त्ता चलाय॥
स्वायंभुव मनुकौं बिरचि बच्छ, अरु पात्र करिय निज हत्थ अच्छ।५३।
कह्यिय सब औषध भुवहिं दोहि, पृथ्वी पृथुनिर्मित बजिय सोहि।
देवन मिलि इंद्र१ हिं बच्छ२ठानि, पुनि मित्र१ तत्थ दोग्धा२प्रमानि।५४।
करि कनक१पात्र२बल१छीर२दोहि, लीनौं निजइच्छित सबन सोहि॥
ससि१बच्छ२मुनिन श्रुति१पात्र२कीन,
गुरु१दोग्धा२पय१तप२ब्रह्म३लीन ॥ ५५ ॥

में भाग भाग कर गई वहां पृथु को साथ ही देखा तब भूमि ने धूजकर कहा कि हे राजा ! स्त्री को मार कर पाप मत कर ॥ ४८ ॥ और मेरे बिना यह बडी प्रजा कहाँ रहेगी ? तब पृथु ने कहा कि एक के मरने से सब जीवित रहते हैं और मैं योगबल से आधार (सब के ठहरने का स्थान) बना कर उस स्थान में सब का पालन करूंगा ॥४९॥ ६ कहा हुआ कार्य ७ पेट में ८ दुग्धरूप से ॥ ५० ॥ ९ थनों में दूध का प्रवाह आजावे १० बराबर, ११ हे बुद्धिमान् राजा ! १२ दुग्ध ॥ ५१ ॥ तब धनुष के अग्रभाग से ऊंचानीचापन मिटाकर भूमि को बराबर करदिया ॥ ५२ ॥ १५ बछड़ा ॥ ५३ ॥ तभी से पृथु के बनाने के कारण भूमि का नाम पृथ्वी हुआ. देवताओं ने इंद्र को बछड़ा बना कर सूर्य को दोहनेवाला बनाया और सोने के पात्र में बल (पराक्रम) रूपी दुग्ध दोहकर अपनी २ इच्छानुसार सब ने लिया और मुनियों ने चंद्रमा को बछड़ा, वेद को पात्र और बृहस्पति को दोहनेवाला करके तप

असुरनहु विरोचन१विरचि वच्छ२, दनुजात द्विमूर्द्धा१दुहन२दच्छ॥
करि लोह१पात्र२माया१सुदुद्ध२,लीनों सव है निजहित प्रबुद्ध॥५६॥
रक्खसन सुमाली१वच्छ२रक्खि,जतुनाभ१हि दोग्धा२उचित अक्खि।
रु कपाल१पात्र२पय१रुधिर२रूप,इन निज अभीष्ट दोह्यो अनूप॥५७॥
इहिँ क्रम सैल अद्रिन मेनकेस१,अरु मेरु२सिला३औषध४असेस॥
गंधर्वन चित्ररथाख्य१ज्यौंहि,तँहँ सुवसु२पंकज३रु गंध४त्यौंहि।५८।
नागन तच्छक१धृतराष्ट्र२नाम,तुंबी३रु गरल४क्रम सहित ताम॥
धनद१रु सुकर्ण२तिम आमगारि३,अंतरधान४सु जच्छन विचारि।५९
पितरन जम१अंतक२जातरूप३,अपनी स्वधा४सु दोही अनूप।
विटपिन पलक्ख१तिम साल२पत्र३,करि छिन्न प्ररोहन४लहिय तत्र
औषध१लिय अद्रिन इक्क सेस, तँहँ अपर२रत्न२जानहु नरेस।
इम हुव महीप पृथु हरिवतार,धर द्वीपसप्त७इकछत्रधार॥६१।

और ब्रह्मरूपी दूध लिया॥ ५४॥ ५५॥ असुरों ने भी प्रल्हाद के पुत्र विरोचन को वछड़ा और दनु के पुत्र चतुर द्विमूर्धा को दोहनेवाला बना कर लोहे के पात्र में माया रूप दूध अपने हित में पण्डित होकर सब ने लिया।५६। राक्षसों ने सुमाली को वच्छा रख कर जतुनाभ राक्षस को दोहनेवाला उचित कहकर कपाल के पात्र में अपना प्रिय रुधिर रूपी दूध दुहा॥ ५७॥ इसी क्रम से पर्वतों ने मेनकेश को वच्छा,मेरु को दोहनेवाला और शिला का पात्र करके सम्पूर्ण औषधी रूप दूध दुहा। गंधर्वों ने चित्ररथ को वछड़ा सुवसु को दोहनेवाला कमल का पात्र बना कर गंध रूपी दूध लिया॥ ५८॥ सर्पों ने तक्षक को बच्छा, धृतराष्ट्र नामक सर्प को दोहनेवाला और तूंबी (तुम्बा) का पात्र रच कर दोषवाला जहर रूपी दूध निकाला। यक्षों ने कुबेर को वच्छा, सुकर्ण नामक यक्ष को दोहनेवाला और कच्चेमांस का पात्र बना कर अन्तर्धान (छिपजाना) रूप दूध दुहा॥ ५९॥ ॥पितरों ने कौकपक्षों को वच्छा यमराज को दोहनेवाला और सोने का पात्र बना कर उपमारहित अपनी स्वधा (पितरों के अर्थ अन्न वा जल दिया जावे उसको स्वधा कहते हैं) दुहा वृक्षों ने प्लक्ष (वृक्ष विशेष) को वच्छा, साल वृक्ष को दोहनेवाला और पत्ते का पात्र करके कटे हुए में फिर अंकुरे पैदा होजाने रूप दूध लिया॥ ६०॥ हे राजा रामसिंह! पर्वतों ने औषधी ली वहां बाकी का दूसरा रत्न भी जानो अर्थात् पर्वतों ने औषधी और रत्न ये दोनों पदार्थ लिये॥ ६१॥

यह चरित सुनैं एकाग्रचित्त, अघ तिहिं लिपैं न बलिं बढहि बित्तं ॥
पृथुकै सुत अंतर्द्धान१२।१नाम अर्द्धित१२।२द्वितीय२ए हुव ललाम६२।
अग्रज सिखंडिनी नाम नारि, परन्यौं सुरूप१कुल२बय३निहारि ॥
सुत तास हविर्द्धानाभिधान१३,आग्नेयी धिषणा दारवान॥ ६३ ॥

प्राचीनबर्हि१४।१मुख छ६सुत तास,

सुक्र१४।२रु गय१४।३कृष्णा१४।४रु प्रज१४।५सुभास ॥

पुनि अजित१४।६अब सुइनमाँहिं ज्येष्ठ,प्राचीनबर्हि१४हुव पुहवि प्रेष्ठं
प्रागग्र जास मख कुस विसेस, छिति सर्व छये इम नाम एस ॥
रानी समुद्रतनया तदीयँ,सुत तास प्रचेतस१५।१०दस१०बलीय६५।
ते सर्गरचन सुनि पितुनिदेस, मातामह जल प्रविसे असेस ॥
तप घोर अयुत१००००हायेन समर्थ,जलमैं हि करिय तिन विष्णुअर्थ
पिछैं सन नारद संग पाय,प्राचीनबर्हि बन रहिय जाय ।
तब अवनि अराज कृपि बिहीन,बिटपिन सब बढि बढि दुर्गकीन।६७
इत करि प्रचेतसन विष्णुतुष्टं, लिय सर्गरचन हित बर अदुष्ट ॥
दस१०ही जल बाहिर बहुरि आय,कृषिहीन लखी भुव तरु निकाय६८
तब सुचि१रु पवन२मुखतैं निकारि,द्रुम बहु प्रचेतसन दिय उजारि॥

१पाप२ पुनि ३ धन ४ सुन्दर॥६२॥वडे भाई अन्तर्द्धान ने शिखंडिनी नाम स्त्री से विवाह किया जिसके हविर्द्धान नामक पुत्र हुआ उस हविर्द्धान से अग्नि कुल की धिषणा नामक स्त्री में।६३।प्राचीन बर्हि को आदि लेकर छ ६पुत्र हुए, इनमें बडा प्राचीनबर्हि पृथ्वी का प्रियतम(पति)हुआ।६४।पहिले जिसके अधिक यज्ञों में डाभ के अग्र भागों से सब भूमि छागई थी इस कारण से इस का नाम प्रसिद्ध है। समुद्र की पुत्री सवर्णा नामक ईस की राणी में बलवान् दश पुत्र हुए जिन दशों का नाम प्रचेतस हुआ ॥ ६५ ॥ उन प्रचेतस को पिता (प्राचीनबर्हि) ने आज्ञा दी कि तप करके विष्णु की आराधना से सृष्टि बढाओ तब इन्होंने अपने नानां (समुद्र) के जलमें प्रवेश करके दश हजार वर्ष तक विष्णु के अर्थ घोर तप किया ॥ ६६ ॥१२भूमि१३बिनाराजा के १४ खेती विना १५वृक्षां ने १६ कठिनाई से जाने योग्य स्थान ॥ ६७ ॥ १७ प्रसन्न १८ सृष्टि रचना के अर्थ १९ श्रेष्ट २० वृक्षों का घर।६८।तबप्रचेतसों ने अपने मुखों से अग्नि और पवन निकाल

निज बिभव जरत लखि आय सोम, बुल्लिय तुम न करहु तरुन होम।६९।
तनया इक१ इनकी सब बिबाहि, तिय करहु मारिषा भजहु ताहि।
यह होनहार गति प्रथम जानि, पोखी सु मैं हि तुम हित प्रमानि ॥७०॥
अद्धो मिलि तुमरो तेज अंस, अरु अर्द्ध मम हु मिलि नृप वतंस ॥
तुमरै सुत याबिच अग्गिधाम, ह्वैहै सु प्रजापति दच्छ नाम ॥ ७१ ॥
इक १ समय कंडु मति रचिय अग्ग, तपघोर रोकि इंद्रिय समग्ग॥
जिहिं ठगन गोमती तीर जत्थ, प्रम्लोचा पठई सुरन तत्थ ॥ ७२ ॥
कल सुन तदीय डिगि कंडु चेत, सु भजी स्मर सूदित हित समेत॥
मंदर गिरि कंदर बहुत वर्ष, रहि कंडु रम्यौं ताजुत सहर्ष॥ ७३ ॥
जब जानलगी तब तिहिं निवारि, रक्खी हठ करि करि वेर च्यार।७४।
इक समय कहिय मुनि दिन अतीत, करिहौं अब संध्या पुराय प्रीति॥
तिय कहिय बरस नव सत रु सत्त९०७बित्ते छ६ मास अह तीन३ अत्त॥
मैं गर्भ धरिय मुनि अप्प संग, यह बज्र सुनत तजि रति उमंग॥७५॥

कर बहुत वृक्षों को जला दिया इस प्रकार अपने वैभव को जलता हुआ देखकर वृक्षों के राजा चंद्रमा ने आकर कहा कि तुम वृक्षों को मत जलाओ ।६९। मारिषा नामक इनकी एक कन्या है उसको तुम सब विवाह कर सेवन करो, इस होनेवाली गति को जानकर तुमारे लिये मैंने ही उसका पोषण किया है।७०।आधा तुमारे तेज का अंश और आधा हमारा मिल कर तुमारा पुत्र राजाओं का मुकुट अग्नि का धाम श्रेष्ठ प्रजापति दक्ष नामवाला होवेगा ॥ ७१ ॥ अब वृक्षों की कन्या मारिषा की उत्पत्ति का इतिहास कहते हैं. एक समय कंडू मुनि ने बुद्धि रचकर सब इंद्रियों को रोककर आगे घोर तप किया था जिसको ठगने के लिये गोमती की तीर पर देवताओं ने प्रम्लोचा नाम अप्सरा को भेजी थी ॥ ७२ ॥ उस का कोकिल समान शब्द सुनकर कंडु का चित्त डुल गया और कामदेव के हने हुए [पकाये हुए] मुनि ने उसका हित के सहित सेवन किया और मंदराचल की कंदरा में बहुत वर्षों तक हर्ष के साथ कंडु उसके साथ रमण करता रहा ॥ ७३ ॥ जब वह पीछी स्वर्ग को जाने लगी तब हठ के साथ चार बार मना करके रक्खी, एक समय मुनि ने कहा कि दिन वीत गया अब संध्या समय है सो पुण्य से प्रीति करके अब संध्या करूंगा ॥७४ ॥ तब अप्सरा ने कहा कि आपको मेरे साथ रमण करते नौ सौ सात वर्ष छः महीने और तीन दिन वीत गये जिनमें तो कभी सन्ध्या नहीं की आज ही क्या अधिकता

दिन्नी[1] बिडारि तिय पाय खेद,सु गई तरु पत्रन पोंछि स्वेद[2] ॥
तस गर्भ कढ्यो वह होय घर्म[3],तरुदलन[4] लग्यो सुनिये सुधर्म॥७६॥
घर्म सु समेटि किय इक्क बात, हुव कन्या तामय छवि सुहात ॥
पोखी हम रक्खी तरुन जाहि, तजि कोप प्रचेतस लेहु ताहि॥७७॥
कंडू१तरु२मैं[3] ३अरुपवन४ च्यारि४,तुमस्वसुर करहु सु बिबाहि नारि
ही अग्ग यहै भूपतिकलत्र, बैधव्य पाय तप तपिय तत्र ॥ ७८ ॥
हरि सों जिहिं जच्चिय[9] इष्ट[10] एहु, भव भव धव[11] उत्तम मोहि देहु ॥
पुनि देहु प्रजापति तुल्ल्य पुत्र, जो होय बीर जगको तनुत्र[12] ॥७९॥
हरि कहिय इक्क१भव[13]मैं हिआनि,पति दसक१०तोहि मिलिहैं प्रमानि
अरुसुतहु प्रजापति नाम दच्छ,ह्वैहै त्वदीय[14] जग जनक[15] अच्छ । ८० ।
सो यहहि मारिषा है उदार, बिधिजुत बिबाहि तुम करहु दार[16]*
संसिबच[17] प्रचेतसन सुनि बिबाहि,आनी सु मारिषा सर्ग[18] चाहि ।८१।
तामाँहिं दच्छ[19]१९तिनि[20] सन तनूज[21],प्रकट्यो सु प्रजापति प्रकट पूज।

है और मैंने आप से गर्भ भी धारण किया है, इस वज्र रूपी बचन को सुनके अपनी तपस्या का भंग समझकर मुनि ने रति की उमंग छोडदी ॥ ७५ ॥ और खेद पाकर स्त्री को निकाल दी सो वृक्षों के पत्तों से पसीना[2] पोंछकर चली गई उसका गर्भ पसीना[3] होकर निकला सो वृक्षों के पत्तों[4] में लग गया सो हे श्रेष्ठ धर्म को धारण करनेवाले(प्रचेतस) सुनो ॥ ७६॥ उस पसीने को पवन ने समेट कर एकत्र (इकट्ठा) करदिया उस पसीना सहित सुहावनी छबि की कन्या हुई जिसको हम(चंद्रमा[6])ने पोषण किया और वृक्षों ने रक्खी ॥ ७७ ॥ तुम इस श्रेष्ठ स्त्री का विवाह करके कंडु[7] मुनि, वृक्ष, मुझ (चंद्रमा) और पवन को श्वसुर (सुसरा) करो यह आगे राजा की स्त्री थी जिसने विधवापन पाकर तप किया ॥ ७८ ॥ जिसने विष्णु से वर[10] मांगा[9] कि जन्म जन्म में मुझे उत्तम पति[11] दीजिये और प्रजापति समान पुत्र दीजिये जो वीर संसार की रक्षा करनेवाला[12] होवे ॥७९॥ विष्णु ने कहा कि एक ही जन्म[13] में तुझे दश पति मिलेंगे और पुत्र भी तेरे[14] दक्ष नाम का प्रजापति संसार का पिता[15] होवेगा ॥ ८० ॥ १६ स्त्री १७ चन्द्रमा के १८ सृष्टि की चाहना करके ॥ ८१ ॥ १९ दक्ष प्रजापति २० तिन प्रचेतसों से २१ पुत्र. जो पहले ब्रह्मा के अंगुष्ठ (अंगूठे)

* उदार हुदार अन्त्यानुप्रासः

जो पूर्ब द्रुहिन अंगुष्ट जात,सुहि दच्छ दच्छ यह अपर ख्यात। ८२।
बीरण प्रजेस तनया ललाम, बिबह्यो सु असिक्नी नाम बाम॥
हुव पंचसहँस५०००तामाँहिं पुत्त,सब बीर नाम्म हर्यश्व१७जुत्त ॥८३॥
तप करत तिन्हैं नारद सिखाय,भुवं अंत लैन दिन्हैं पठाय।
ते समुझि गये दिस दिसन दोरि, है ब्रह्मरूप नाँये बहोरि ॥८४॥
पुनि दच्छतनय सरजे हजार१०००,मुनिराज योँहिं पठये उदार।
सुनि सोहु दच्छ दिय कुपित साप,अबिरत्त मुनि नारद भ्रमहु आप।
मंजुल तदनंतर सठ्ठि६०मान, सुभ दच्छ सुता सरजी सुजान॥

तिनमैं दस१०दिन्नी धर्मअत्थ,
सँसि स्वसुरहिं बीस२०रु सत्त७।२७सत्थ ॥ ८६ ॥

कस्यप हित तेरह१३दिय प्रवीन,रु अरिष्टनेमि हित च्यारि४दीन॥
बहु पुत्र१अंगिरा२उभय२काज,दुव२दुव२दिय कन्या दच्छराज८७
दीनी कृसाश्व हित दुव२नरेस, इन की ही संतति जग असेस॥
उत्तानपाद नृप कुल चरित्र, पापहु नर होवत सुनि पवित्र॥ ८८॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमान-

से दक्ष उत्पन्न हुआ था वही यह दूसरे दक्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥ ८२॥ वीरण नामक प्रजापति की सुन्दर असिक्नी नामक पुत्री के साथ विवाह करके दक्ष ने अपनी स्त्री बनाई जिसमें हर्यश्व नामक पांच हजार पुत्र हुए ॥८३॥ उन तप करते हुओं को नारद ने सिखाकर पृथ्वी का अन्त लेने को भेजदिया सो दशो दिशा को दौड़ गये और ब्रह्म रूप होकर पीछे नहीं आये ॥ ८४॥ दक्ष ने फिर एक हजार पुत्र उत्पन्न किये जिनको भी नारद ने उसी प्रकार भेजदिये सो सुनकर दक्षने नारद को श्राप दिया कि हे मुनि तुम भी निरंतर (विना विश्राम लिये) फिरते रहो ८५ जिसपीछे यह सोचा कि पुत्रोंको तो नारद रहने नहीं देवेगा, सुन्दर साठ है प्रमाण जिनका ऐसी श्रेष्ठ कन्या उत्पन्न कीं जिनमें से दश तो धर्म को दीं और सत्ताईस अपने सुसरे चन्द्रमा को ॥ ८६ ॥ तेरह कश्यप को चार अरिष्टनेमि को, दो बहुपुत्र को, दो अंगिरा को, और दो कृशाश्व को, राजा दक्ष ने दीं ॥ ८७ ॥ इन ही की सन्तान में सारा संसार है, राजा उत्तानपाद के कुल के इस चरित्र को सुनकर पापी मनुष्य भी पवित्र होजाता है ॥ ८८॥
श्री वंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वाराह

वाराहकल्पप्रथमसर्गसूचनान्तर्गतस्वायम्भुवसूनूत्तानपादवंशवर्णन मष्टादशो१८मयूखः ॥ १८ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥ पज्झटिका

सुनिए ऽब दच्छ दुहितान नाम, जिनसौंहि पपूरन धाम धाम ॥
पहिली अरुंधती१गुनन गोरि,वसु२जामी३लंबा४त्यौं बहोरि ॥ १ ॥
भानु५रु मरुत्वती६सर्ग थान, संकल्पा७रु मुहूर्त्ता८सुजान ॥
साध्या९अरु बिश्वा१०धर्मगेह, सुनिए ऽब तास संतति सनेह ॥२॥
भूविषय१अरुंधति उदरजात,वसु पुत्र अष्ट८बसुदेव ख्यात॥
आप १ ध्रुव २ सोम ३ धर ४ अनिल ५ जानि,
अनल ६ रु प्रत्यूप ७ प्रभास ८ मानि ॥ ३ ॥
ए अष्ट८रु अग्रज आप पुत्त, वैतंड्य१श्रम२रु ध्वनि३श्रांत४जुत्त ॥
ध्रुव पुत्र काल१सब खानहार,इम सोम तनय बर्चा उदार ॥ ४ ॥
धर तिय मनोहराजनिय ताह, सुत पंच५द्रविण१हुतहव्यवाह२॥
जिम सिसिर३प्रान४पुनि रमन५ज्यौंहि,
अनिलोत्त सिवा बिच उभय२त्यौंहि ॥ ५ ॥
तिन माँहि पुरोजव१भो गरीय,रु अविज्ञातगति२यह द्वितीय२ ॥
चउ४अग्नितनय इक गुह१अजेय,पुनि साख२विसाख३रु नैगमेय ॥

के प्रथमसर्ग की सूचना के भीतर स्वायम्भुवमनु के पुत्र उत्तानपाद के वंशवर्णन का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १८ ॥

अरुंधती के उदर से संसार के सब विषय उपजे, और बसु के पेट से आठ पुत्र हुए जो वसु के नाम से आठों देवता प्रसिद्ध हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ३ ॥ इन आठों में बड़े आप नामक वसु के वैतंड्य, श्रम, ध्वनि और श्रान्त ये चार पुत्र हुए ध्रुव के सब को खानेवाला काल नामक पुत्र हुआ, इसी प्रकार सोम के वर्चस नामक उदार पुत्र हुआ ॥ ४ ॥ धर नामक वसु से मनोहरा नामक स्त्री मे द्रविण, हुतहव्यवाह, शिशिर, प्राण और रमण नाम के पांच पुत्र जने, इसी प्रकार शिवा नामक स्त्री में अनिल के दो पुत्र हुए ॥ ५ ॥ जिन में बडा पुरोजव और दूसरा अविज्ञातगति हुआ । अग्नि के गुह, शाख, विशाख और नैगमेय नाम के किसी से नहीं जीते जावें ऐसे चार पुत्र हुए ॥ ६ ॥

कार्त्तिक सरजन्मा ते कहात,मुनि देवल१अथ प्रत्यूष जात ॥
मुनिकै हु छमावान१रु मनीसि२,हुव दोहु२सिद्ध दिय पाप पीसि॥७॥
सुरगुरु भगिनी परनी प्रभास,त्रैलोक्य पूज्य सुत पंच५तास ॥
जेठो सु बिस्वकर्मा१प्रजेस, कर्त्ता सब सिल्पन उदित एस ॥८॥
रु अजैपाद२दूजो२सुजान, तीजो३सु अहिर्बुध्न्याऽभिधान३ ॥
त्वष्टा४रु रुद्र५ए भ्रात पंच५,जिन्ह चिंति रहैं नहिं दुरित रंच ॥९॥
अग्रजकै संज्ञा१गुन उदर्क, तनया भई सु परनी जु अर्क ॥
चोथे४त्वष्टाकै विश्वरूप१,त्रिसिरा जो मार्‌यो त्रिदिवभूप ॥ १० ॥
सब अनुज रुद्र जो कहिय अत्थ,एकादस११आत्मज सो समत्थ ।
तस भेद हर१रु बहुरूप२जानि,त्र्यंबक३अपराजित४बालि बखानि ११
तैसैंहि वृषाकपि५संभु६नाम,रु कपर्दी७रैवत८अखिलधाम ।
श्रुत नवम९मृग१०व्याध६हु प्रसस्त,पुनि सर्व१०कपाली११ए समस्त १२
यह धर्मबधू बसु सर्ग आहि,जामिभव नागबीथी१सु ताहि ।
लंबाकै घोस१रु भानु पुत्त,हुव सबहि भानु अभिधान जुत्त ॥१३॥
प्रकटे मरुत्वती सुत जितेक,अभिधान मरुत्वानहि तितेक ।

ये चारों कृत्तिका के उदर से उत्पन्न होने के कारण कार्तिकेय और षड्जन्मा कहाते हैं, प्रत्यूष से देवल मुनि जन्मा इस देवल मुनि के भी क्षमावान् और मनीषि नाम के दो पुत्र हुए जिन सिद्धों ने पाप को पीस डाला ॥ ७ ॥ प्रभास नामक वसु ने कामवैरिणी नामक वृहस्पति की बहिन के साथ विवाह किया इस के तीन लोक के पूज्य बडा विश्वकर्मा नामक प्रजापति सब शिल्प विद्या को उत्पन्न करनेवाला हुआ ॥ ८ ॥ दूसरा अजैपाद तीसरा अहिर्बुध्न्य नामवाला त्वष्टा और रुद्र ये पांच पुत्र हुए जिन का स्मरण करने से लेशमात्र भी पाप नहीं रहता ॥९॥ विश्वकर्मा के गुणों के साथ मुधे की स्तुति करनेवाली संज्ञा नामक पुत्री हुई जिस को सूर्य ने परनी, चौथे त्वष्टा के विश्वरूप, (त्रिशिरा) हुआ जिस को इन्द्र ने मारा ॥ १० ॥ इहां पर सब से छोटा जो रुद्र कहा उस के बलवान् ग्यारह पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ११ ॥ २ सब का घर ३ प्रसिद्ध ॥ १२ ॥ यह धर्म की वसु नामक स्त्री की संतान है, धर्म से जामि नामक स्त्री में नागवीथी, लम्बा नामक स्त्री में घोष हुआ और भानु नामक स्त्री के पुत्र हुए सो सभी भानु नाम कहाये ॥ १३ ॥ मरुत्वती नामक स्त्री के जितने पुत्र हुए उन सब का नाम मरुत्वान

संकल्पाकै संकल्प सर्ग, रु मुहूर्त्त मुहूर्त्ताकै सुबर्ग ॥ १४ ॥
विश्वाकै तैरह१३विश्व एव,साध्याकै द्वादस१२साध्यदेव ।
तेरह१३सुनौऽब कस्यप कलत्र,अदिती१दिती२रु दनु३नाम तत्र १५
रु अरिष्टा४सुरसा५सुरभि६जानि,बिनता७ताम्रा८रु इडा९बखानि ।
क्रोधबसा१०कद्रू११मुनि१२जथाहि,प्राधा१३त्रयोदसी१३तिय तथाहि
जे चाक्षुस मनु छत तुषित देव,इहिँ७मनु हुव अदिती तनय एव ।
ते बिष्णु१सुक्र२धाता३गणोय,त्वष्टा रु अर्यमा५नामधेय ॥१७॥
पूषा६सबिता७भग८बरुन९मित्र,१०पुनि अंस११बिबस्वान१२हु पवित्र
दितिसुत कनककसिपु१कनकनैन, २ अरु सिंही३तनया दुरित अैन
जिहिँ बिप्रचित्ति दानव बिबाहि,सुत राहु जन्यौं ग्रह कहत जाहि ।
हुव कनककसिपु सुत च्यारि४धीर,प्रल्हाद१ल्हाद२संल्हाद३बीर॥
अनुल्हाद४चुत्थ इनमैं बिरक्त, प्रल्हाद१भयो हरिमुख्यभक्त ।
खल जनक दयो जो ज्वलन जारि,दिय पासबद्ध पुनि उदधि डारि।२०।
प्रहराविय सस्त्रन असुर प्रेरि, पन्नगन डसाविय हित न हेरि ।
भृगुसौं गिराय दिग्गजहु हुल्लि,मर्दाविय बालक खीज खुल्लि ॥२१॥
अर्भक मर्यो न कसमहु उपाय,थक्क्यो सब करि करि दैत्यराय ॥

हुआ, संकल्पा नामक स्त्री की संतान संकल्प और मुहूर्ता के श्रेष्ठ समुदाय वाले मुहूर्त्त नामक पुत्र हुए ॥ १४ ॥ विश्वा नामक स्त्री के तेरह विश्वेदेवा और साध्या के बारह साध्यदेव हुए, अब कश्यप की तेरह स्त्रियों के नाम सुनो जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥ ये चाक्षुषमनु के समय में तुषितदेव थे वेही इस वर्त्तमान (वैवस्वत) मनु में अदिति के पुत्र बारह आदित्य हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं और दिति के हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष नाम के दो पुत्र और सिंही नामक एक पुत्री पापों की घर पैदा हुई ॥ १७ ॥ १८ ॥ जिस सिंही ने विप्रचित्ति नामक दैत्य से विवाह करके राहु नाम क पुत्र जना जिस को ग्रह कहते हैं ॥ १९ ॥ ४ हिरण्यकश्यप के चार पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं इन में चौथा अनुल्हाद तो विरक्त हुआ और प्रल्हाद मुख्य हरि भक्त हुआ जिस को दुष्ट पिता ने ५ अग्नि में ॥ २० ॥ ६ सर्पों से ७ पर्वत से (जिस पर्वत से गिरनेवाले को बीच में कोई आधार नहीं मिलै उस को भृगु कहते हैं और लौकिक में उस का नाम किराय प्रसिद्ध है) ॥ २१ ॥ ८ बालक ९ किसी उपाय से नहीं मरा

भो अनल जल रु जल ग्राव अंग,हुव सस्त्र विफलअहि दंतभंग॥ २२॥
भृगुसौं गिरंत बढि भूमि उर्द्ध, झेलि रु अधओन्यौं सु सिसुसुद्ध ।
मकुनँ हुव दिग्गज रदतुराय,कृत्याहु बिफल हुवभयनिकाय ॥२३॥
संसोखन बात रु गरल दत्त,संबर माया जुत हुव असत्त ।
जनकहि इम लग्गो हनन याहि,हरि तबहि प्रकट हुव भक्त चाहि।२४
बर दिय तँहँ मंगिय भक्ति तासँ,अरु स्वीय जनकँ कृत पापनास॥
दै दुवहि२पिहितैं हुव जगनिकाय,प्रल्हाद लग्यो पितु चरन आय।२५।
पुनि व्है नृसिंह जब हनिय दुष्ट, प्रल्हाद लयो तब राज्य पुष्ट ॥
यह चरित सुनैं मिटि तास ताप,व्है नष्ट अहोनिस रचित पाप ॥२६॥
प्रल्हाद बिरोचन २ पुत्र पाय, दै ताहि राज्य गो हरिनिकाय ॥
याकै सुत दानी बलि३नरेस,जिहिं लहि हरि जाचक दिय असेस॥२७॥
बिंध्यावलिमैं बलिसौं प्रबीर, सत१००हुव बाणादिक समरधीर ॥
बानासुरके सुत बहु बलिष्ठ, चंडांसि हनैं दुव२पापनिष्ठ ॥ २८ ॥
प्रल्हादकेहि कुलमाँहिं धुत्त, प्रकटे निवातकवच हु बहुत्त ॥
संल्हाद पुत्र सुनिये प्रबीन, सिबि१बाष्कल२आयुष्मान३तीन ॥२९॥
अनुल्हाद १ ल्हाद २ के कुल अनेक, असैंहि बढे बहु बीर टेक ॥

अग्नि जल रूप हो गया और जल पत्थर समान होगया ॥ २२ ॥ २ पर्वत से ३ ऊपर को ४ नीचे ५ सो (उस) ६ शुद्ध बालक को ७ हाथी दांत तुड़ाकर मुकना होगया और दैत्यराज के पुरोहितों ने प्रल्हाद को मारने के अर्थ भय का घर ऐसी कृत्या उत्पन्न की थी सो भी विफल होगई ॥ २३ ॥ सम्बरासुर की बनाई हुई अनेक भांति की माया के साथ प्राण शोषण करनेवाला पवन चलाया, जहेर दिलाया, सो सभी मिथ्या होगये और जब पिता (हिरण्यकश्यप) ही प्रल्हाद को मारनेलगा तब विष्णु प्रकट हुए ॥ २४ ॥ ११ उस (प्रल्हाद) ने १२ अपने पिता के किये हुए १३ अन्तर्धान १४ संसार के घर ॥ २५ ॥ १५ दिन रात्रि के ॥२६॥ १६गया १७विष्णु के स्थान में १८प्रल्हाद के पुत्र इस विरोचन के दानी पुत्र राजा बलि हुआ जिस ने विष्णु जैसे याचना करनेवाले पाकर संम्पूर्ण (तीनों लोक) देदिये ॥२७॥२० विन्ध्यावलि नामक स्त्री मेंहुवा ने मारे पाप की निष्ठावाले धूम्रकेतु और जम्भासुर इन दोनोंको ॥२८॥ धूर्त॥२९॥

प्रकटे हिरँगयदृगकै छ६पुत्त, झर्भरि१रु भूतसंतापर२धुत्त ॥३०॥
सकुनि३महाबाहु४रु कालनाभ५,त्यौं अपर महानाभ६हु दुराभ ॥
दनुके अब आत्मज बिप्रचित्ति१,जिहिं लिय अनेक रन सुरनं जित्ति३१
संकुर २ रु द्विमूर्द्धा३कपिल४रुष्ट,रु अयोमुख५संकुसिरा६हु दुष्ट ॥
तारक७संवर८सुर हृदयपक्कै,स्वर्भानु९पुलोमा१०एकबक्त्र११॥३२॥
तैसैं वृषपर्वा १२ देवद्रोहि, हुव नृप ययातिको स्वसुर सोहि ॥
इत्यादि असुर दनुसुत बहुत्त, अब बिप्रचित्ति सिंहीज पुत्त ॥ ३३ ॥
वातापि१जंभ२इल्वरा३रु सल्य४,व्यंस५रु मृग६नमुचि७हु इंद्रसल्य।
खल अजक८नरक९पुनि कालनाभ१०, अरु राहु११वक्रयोधी१२अगाभ
गंधर्व अरिष्टाकै अदर्प, सुरसाकै खेचर सहँस १०० सर्प ॥
सुरभीकै गोगन१महिख२व्रात,बिनतासन अरुण१रु गरुड२भ्रात३५
ताम्राकै तनया छ६हुव भूप, स्येनी १ सुकी २ रु भासी ३ अनूप ॥
सुग्रीवी४गिद्धी५सुचि६समेत,इनके हु सर्ग हुव क्रम उपेत ॥ ३६ ॥

दिय त्रितय ३ सेन १ सुक २ भास ३ खोलि,
सुग्रीवी ४ कै हय १ खर २ रु भोलि ३ ॥

गिद्धी५कैगिद्ध१रु सुचि६ज सर्ग,बारिचर बिहग१अरु घूक बर्ग।३७
रु इडा तृन१बीरुध२बल्लि३रुक्ख४,जनि एहितज्यो अनपत्य दुक्ख॥

१हिरण्याक्ष के२खोटी कांतिवाला३अब दनु के पुत्रों को कहते हैं४देवताओं को५देवताओं के हृदय को पकानेवाला॥३२॥अब बिप्रचित्ति से सिंही नामक स्त्री में पुत्र हुए जिन को कहते हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं॥३३॥६पर्वत के समान छविवाले॥३४॥ कश्यप से अरिष्टा नामक स्त्री में घमंड रहित गन्धर्व उत्पन्न हुए और सुरसा नामक स्त्री में आकाश में विचरनेवाले हजारों सर्प हुए। सुरभी नामक स्त्री में गौओं भैंसियों के समूह, और विनता नामक स्त्री में अरुण और गरुड ये दो भाई उत्पन्न हुए ॥३५॥ हे राजा रामसिंह! कश्यप से ताम्रा नामक स्त्री में छः कन्या हुईं जिन के नीचे लिखे क्रम के अनुसार सृष्टि हुई ॥३६॥ सेनी के सैनपच्छी, सुकी के सुक (सूवे) और भासी नामक स्त्री के भास (पक्षि विशेष) हुए, सुग्रीवी नामक स्त्री के घोड़े, गधे और ऊंट हुए इसी प्रकार गिद्धी के गीध, और शुचि नामक स्त्री के जलचर पच्छी और घूक (उलूक) ॥ ३७ ॥ कश्यप से इडा नामक स्त्री ने तृण, घोभा, (पसरी हुई बेलि) लता और वृक्ष,

हुव क्रोधवसाकै बिबिध बार,जलथलके सब पल खानहार॥३८॥
कद्रू अनंत१मुख जनिय नाग,मुनिकै अच्छरिगन रमन राग ॥
गंधर्व बहुरि याकै हु पुत्त,गोपति१सुपर्ण२धृतराष्ट्र३जुत्त ॥ ३९ ॥
कलि४वरुन५चित्ररथ६भीमसेन ७,नारद८सुनेत्र९तिम उग्रसेन *॥
सालिसिरा११प्रयुत१२रु अर्कपर्ण१३,पर्जन्य१४सूर्यबर्चा१५सुबर्ण॥४०
जु कह्यो सुनेत्र९सुहि सत्यबाक९,अरु भीम१६जु गायननिपुन नाक॥
प्राधाकै तीन३प्रकार सर्ग,देवी१अच्छरि२गंधर्व३बर्ग ॥ ४१ ॥
क्रमतैं अनवद्या१अनुवसा२रु,असुरा३प्रिया४रु भासी५हु चारु ।
सुभगा६रु अनूपा७मार्गणा८हु,यह प्रथम१सर्ग प्राधेय साहु ॥ ४२॥
अच्छरि अलंबुसा१मिश्रकेसि२,बिद्युत्पर्णा३अरुणा४सुबेसि ॥
रंभा५तिलोत्तमा६रक्षिता७हु,सुरजा८सुरता९केसिनि१०सुबाहु ।४३।
तैसैंहि सुप्रिया१२इम बहुत्त,हुव अच्छर सागुनरूपजुत ।
बिश्वावसु१हाहा२भानु३पूर्ण४,हूहू५तिम तुंबुरु६गानघूर्ण ॥ ४४॥
पूर्णायु७ब्रह्मचारी८रु सिद्ध९,बर्हि१०सुपर्ण११रतिगुण१२हु इद्ध ।
अतिबाहु१३सुचन्द्रा१४ऽऽदिक अनेक,गंधर्व भये हे बरबिबेक॥४५॥
रु अरिष्टनेमि सन चउन४माँहिं,सुत अष्टि१६दच्छ दौहित्र आँहिं ।
दुव२दच्छसुता बहुपुत्र नारि,तिन्हमाँहिं भई तडिता हि च्यारि४ ।४६।

जन कर सन्तान न होने [बांझपन] का दुःख तजा, क्रोधवशा नामक स्त्री के मांस खानेवाले जलचर और थलचर नाना प्रकार के बालक हुए ॥ ३८ ॥ कद्रू ने शेष को आदि लेकर सर्प जने और मुनि नामक स्त्री से रमण में प्रीति रखनेवाली अप्सरायें हुईं और फिर इसी के गन्धर्व पुत्र हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं नवमे स्थान पर जो सुनेत्र कहा उसीका दूसरा नाम सत्यवाक् है, ये सौलह गन्धर्व स्वर्ग की गानविद्या में निपुण हुए । प्राधा नामक स्त्री के तीन प्रकार की सन्तान हुई जिनमें प्रथम देवियों में अनवद्या को आदि लेकर आठ और अप्सराओंमें अलम्बुषा को आदि लेकर रूप और गुण के साथ बहुत हुईं और गन्धर्वों में विश्वावसु को आदि लेकर हे श्रेष्ठज्ञानवाले रामसिंह अनेक गन्धर्व हुए ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ दक्षप्रजापति ने अपनी चार पुत्रियां अरिष्टनेमि को दी थीं जिनमें अरिष्टनेमि से दक्ष के सौलह दौहित्र हुए और दो पुत्रियां बहुपुत्र को दी थीं जिनमें चार विद्युत् (बिजुलियां] हुईं । ४६ ।

* मनेन प्रसेन अन्यानुप्राम

इक कपिल१चंडमारुत निदान,अरु अरुन१करैं आतप उफान॥
दुरभिच्छ करैं तीजी सु स्याम३,पीता४सु चतुर्थी वृष्टिकाम॥४७॥
दुव२अंगिराहिं दीनी जु दच्छ,उनमाँहिं ऋचा हुव पूज्य अच्छ ॥
दुव२पुत्रि कृसाश्वहिं दच्छ दीन,सुर सस्त्र जने तिन हे प्रबीन ।४८।
कस्यपकै इतरहु बहुत नारि,दिय बिबिध सर्ग तिन हू बिथारि ॥
बैश्वानरतनया दुव२तथाहि,काली१रु पुलोमा२लिन्न व्याहि ॥४९ ॥
तहँ कालखंज१ पौलोम२बार,कस्यप सुत आसुर खछ६०हजार ६०००
दिति गर्भ कट्टि इक१मरुतवान,किय देव मरुतगन तान४९मान५०।
इक१सिंहिका १हु कस्यप कलत्र,तम आदि असुर हुव च्यारि४तत्र॥
तम१चंद्रप्रमर्दन२अरु सुचंद्र३,रु चउत्थ४चन्द्रहंता४अतंद्र॥ ५१ ॥
यौंही दनायु२तँहँ च्यारि४बीर, बिक्षर१लव२वृत्र३रु बीर४धीर ॥
काला३कै चउ४कालेय पुत्त,जे असुर बिनासन१क्रोध२जुत्त ॥५२॥
तैसैंहि क्रोधहंता३तृतीय, पुनि क्रोधसत्रु४घन कपट हीय ॥
कपिला४बिच ब्राह्मण१अमृत२गाय३,गंधर्ब४कतिकअच्छरि५सुभाय
जाये मृगी५हु मृगसर्ग केक, बलि सुनहु इतरं अबिरत बिबेक ॥

जिनमें एक तो नीले, पीले मिश्रित रंगवाली हैं जो प्रचंड पवन पैदा करती है, और दूसरी लाल है सो ताप करती है, तीसरी काले रंगवाली दुर्भिक्ष करती है और चौथी पीले रंगवाली वर्षा करती है ॥ ४७ ॥ दक्ष ने अपनी दो पुत्रियां अंगिरा को दीं उनमें वेद के पचीस २५ ऋचाओं की अधिष्ठात्री उत्तम और पूज्य देवता हुईं। दक्ष ने दो पुत्रियां कृशाश्व को दीं जिनने हे प्रवीण राजा रामसिंह! सुरशस्त्र (देवप्रहरण नामक पुत्र) जने ॥ ४८ ॥ और भी नाना प्रकार की सृष्टि इसी प्रकार वैश्वानर की काली और पुलोमा नाम की दो कन्या कश्यप ने बिवाही ॥ ४९ ॥ जिन काली और पुलोमा के बालक कश्यप के पुत्र कालखंज और पौलोम नामवाले साठहजार असुर हुए और दिति ने मरुत्वान् नामक अपने एक गर्भ को काट कर मरुत्गण नाम के उनपचास देवता उत्पन्न किये ॥ ५० ॥ १ स्त्री २ आलस्यरहित ॥ ५१ ॥ ३ दनायु नामक स्त्री ने ४ काला नामक स्त्री के ॥ ५२ ॥ ५ हृदय में घने कपटवाले चार पुत्र हुए ६ कपिल नामक स्त्री में ॥ ५३ ॥ ७ मृगी नामक स्त्री ने ८ मृगों की सृष्टि ९ पुनि १० और ११ निरन्तर १२ विवेकवाली छठी मृगमन्दा नामक स्त्री

मृगमंदा६रिच्छ१रु चमर२जाय,हुव मुदितहरि७हु हय१पुत्र पाय।५४।
बानर२गोपुछ३हु त्यौंहिं तास, भद्रमना८त्यौं तस इक्क१आस ॥
सु इरावानक१अभिधान जुत्त,ऐरावत२बारन जास उत्त ॥ ५५ ॥
सार्दूली९के उर सिंह१जात, बलि ताकै द्वीपी२व्यांघ्र३व्रात ॥
मातंगी१०उर गज और जूह,श्वेता११संतति दिग्गज समूह ॥ ५६ ॥
दूजीर हु इक्क१सुरसा१२हि ताम,हुव पंच५सुता सुनिये ऽब नाम॥
रोहिनिका१भद्रा२बिमलिका३रु,गंधर्बिका४रु अनला५हु चारु।५७।
रोहिनिकै गोगन प्राप्तपूज,त्यौं हय गंधर्वीकै तनूज ॥
तरुँजाति पिंडफल नाम तत्थ,अनलाकै उपजे सप्त७सत्थ ॥ ५८ ॥
इतरहु दानव दनुके अपत्य,सुनिये जे उद्धत इष्ट हत्य ॥
असिलोमा१केसी२नामधेय,दुर्जय३अयस्सिरा४पापप्रेय ॥ ५९॥
अस्वपति५गगनमूर्द्धा६ रुअस्व७,कपट८कुपट९अश्वासिरा१०अघस्व।
सरभ११अयस्संकु१२रु बेगवान१३,सुच्छम१४तुहुंड१५पुनिकेतुमान॥
अश्वग्रीव१७रुइषुपात१८जानि,पुनि सलभ१९बिरूपाक्ष२०हु प्रमानि।
रु निकुंभ२१महोदर२२तिमहि चन्द्र२३,
मृतपा२४सठ२५सूर्य२६तथाहि चन्द्र*२७ ॥ ६१ ॥

रीछ और चमरी (सुरागाय) जनकर आनन्दित हुई और हरि नामक स्त्री ने घोड़ा जना॥५४॥ इसी प्रकार उसी हरिनामक स्त्री के वानर और गोपुच्छ (लंगूर) हुए भद्रमना के इरावान्‌नामवाला एक पुत्र हुआ जिसके ऐरावत नाम हाथी हुआ सार्दूली के उर से सिंह, चीता और व्यांघ्र के समूह हुए, मातंगी के उर से हाथी और जूह,श्वेता के उर से दिशाओं के हाथियों का समूह हुआ ॥ ५६ ॥ तहां एक अन्य सुरसा नामवाली बारहवीं स्त्री थी जिस के पांच पुत्रियां हुई जिन के नाम अब सुनो ॥ ५७ ॥ इन में रोहिणी के पूज्य गौवों का गण प्राप्त हुआ और चौथी गन्धर्वी के घोड़े हुए और ७ वृक्ष (पिंड अर्थात् दाब टहनी से लगनेवाले और फल अर्थात् वीज से लगनेवाले सात प्रकार के वृक्ष अनला के हुए) ॥ ५८ ॥ और भी दनु के पुत्र दानव बड़े उद्धत और इष्ट को नाश करनेवाले हुए जिन के नाम सुनो, १२ नामवाला १३ पाप ही है प्यारा जिस के ॥ ५९ ॥ १४ पाप ही है अपना जिस के ॥ ६० ॥ १५ अरु

---

* निचन्द्र हिचंद्र अन्त्यानुप्रास.

एकात्त२८प्रलंब२९हु पापनिष्ट, रुदनायु३०दीर्घजिह्म३०रु गरिष्ठ३१
विनताकैं अपर हु च्यारि४बाल,ते तार्क्ष्य१अरुणि२वारुणि३विसाल
चौथो अरिष्टनेमि४हु कहंत,ए सब सुपर्णसंज्ञा लहंत ।
काकी१हु इक कस्यप कलत्र,हुव काक१रु घूक२हु सँगे तत्र॥६३॥
धृतराष्ट्री२मैं कलहंस१हंस२,भद्रा३हु माँहि सुक१कोक२वंस ॥
कुंभ१रु निकुंभ२प्रल्हादकैहु,सिबि१बाष्कल२अनुल्हादक तनैहु ॥
गरुडाग्रजकै स्येनी कलत्र,संपाति१जटायुव२तनय तत्र ॥
इहिं किरनमाँहिं तार्तीय३अंस,वरन्यौ श्रीभारत उक्तवंस ॥ ६४ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमानकल्पसर्जनान्तराऽवसर्यप्राचेतसदत्तदौहित्रसुराऽसुरादिसूचनमेकोनविंशो१९ मयूखः ॥ १६ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

स्वायंभुव१मनुकै कह्यो, तनय प्रियव्रत२नाम ।

---

१ पाप की निष्ठावाला २ विनता नामक स्त्री के और भी चार बालक हुए ये सब पक्षियों की संज्ञा (नाम) वाले हैं और कश्यप के एक काकी नामक स्त्री भी थी जिस के काकों (कागलों) घूकों (उलूकों) की सृष्टि हुई ॥ ६३ ॥ धृतराष्ट्री नामक स्त्री के कलहंस और हंस हुए और भद्रा नामक स्त्री के सूवे और चकवे हुए। प्रल्हाद के भी कुंभ और निकुंभ नामक पुत्र और अनुल्हाद के शिबि और बाष्कल हुए ॥ ६४ ॥ गरुड़ के बड़े भाई (अरुण) के सेनी नाम की स्त्री में सम्पाति और जटायु नामक पुत्र हुये। इस मयूख में तीसरा अंश महाभारत की कथा से वर्णन कियागया है अर्थात् इस सृष्टि के क्रम में दो तृतीयांश तो विष्णुपुराण के मत से और अन्तिम एकतृतीयांश महाभारत के मत से वर्णन कियागया है इसी से कहीं कहीं पुनरुक्ति और विरुद्ध दीखता है सो इस में उक्त ग्रन्थों का मत भेद जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमानकल्प की रचना के समय में दक्षप्रजापति के दोहिते प्रचेतस, देवता असुर आदि के जताने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥

स्वायंभुव मनु के दो पुत्रों में उत्तानपाद का वंश तो ऊपर कहागया

तास बंस भूभागपति,सुनिये संभरराम ॥ १ ॥

पादाकुलकम्

कर्द्दमनाम प्रजापति कन्या,धीर विवाहिलही तिय धन्या ।
समयपाय तिहिँ राज्य सम्हारयो,निजभुव प्रति निसँ कुहँर निहारयो।
रचि प्रतिदिन चढि द्विगुँन चक्ररथ,रजनि तप्यो रु चल्यो रविके पथ॥
याको रथ इक१ चक्रफिरतभुव,प्रँधिसौँ खुदि खुदि सिंधु सप्त ७हुव॥३॥
समुझि काँल१ अरु कर्म मिटत सब,बरज्यो जब गुरुजनन रुक्यो तब

दस १० मित भये प्रियव्रतके सुत,
तँहँ आग्नीध्र ३।१ रु अग्निबाहु ३।२ नुत ॥ ४ ॥
वपुष्मान ३।३ द्युतिमान ३।४ प्रमानहु,
जिम मेधा ३।५ मेधातिथि ३।६ जानहु ॥
भव्य ३।७ सवन३।८पुनि पुत्र ३।९ नाम हुव,
सुनिये ज्योतिष्मान ३।१० दसम१०सुव ॥ ५ ॥

अग्निबाहु१मेधा२रु पुत्र३त्रय३,राज्यहिँ छोरि भये समाधि लयँ ॥

प्रियव्रत का; वंश, और भूमि का विभाग (बंट) और इन भूमि के बंटों के स्वामिपन का वर्णन हे चहुवान रामसिंह अब सुनो ॥ १ ॥ कर्दम नामक प्रजापति की पुत्री जिस का कन्या नाम था उस को वीर (प्रियव्रत) ने विवाह ली और समय पाकर अपना राज्य सम्हाला उस समय अपनी भूमि पर रात्रि और कुहर (धोंहर) छाया हुआ देखा ॥ २ ॥ तब प्रतिदिन रथ पर चढकर सूर्य से द्विगुण चक्र रचकर अर्थात् सूर्य एक दिन रात्रि में एक चक्कर लगाता है उस के स्थान में प्रियव्रत ने दो चक्कर लगाये इस से रात्रि में भी तपा और सूर्य के मार्ग चला. इस का रथ एक पहिये से भूमि पर फिरा जिस की पूंठी से खुद खुद कर सात समुद्र होगये ॥ ३ ॥ इस से समय को और सब कर्मों को मिटते हुए जान (समय की गणना सूर्य के उदय अस्त से होती है और प्रियव्रत ने प्रतिदिन पृथ्वी के दो चक्कर लगाकर अपने तेज से रात्रि को मिटाकर सदैव प्रकाश करदिया तो काल (समय) की गणना मिटगई) गुरु लोगों ने मना किया तब रुका, इस प्रियव्रत के दश पुत्र हुए ८ स्तुति योग्य ॥४॥ दशवां पुत्र ॥५॥ इन में से अग्निबाहु, मेधा और पुत्र नाम के तीन पुत्र तो राज्य को छोडकर समाधि में लीन होगये. बाकी के सातों को प्रियव्रत

द्वीप सप्त७दिय खिलन प्रियव्रत,सुत जनु अंजु अबंटि महामत ॥६॥
आग्नीध्र१हिं जंबू १यह अप्प्यो,प्लक्ष२राज्य मेधातिथि२थप्प्यो ॥
बपुष्मान३कँहँ सम्मलि३दिन्नौं,कुस४नृप ज्योतिष्मान४हिं किन्नौं ॥७॥
क्रौंच द्वीप५दयो मतिमान५हिं,साकद्वीप६भ०य६अभिधानहिं ॥
सवन७सुताहि पुष्कर७पति ठान्यौं,इम उपरामैं प्रियव्रत आन्यौं ॥८॥
जंबूपति आग्नीध्र तनय नव९,भये बीर कलिमल अटवीदव ॥
जे नव९खंड अधीस्वर जानहु,पज्झटिका करि नाम प्रमानहु ॥९॥

पज्झटिका

जहँ नाभि४।१बहुरि किंपुरुष४।२जानि,
हरिबर्ष ४।३ इलावृत ४।४ पुनि प्रमानि ॥
रम्यक ४।५ रु हिरगमान ४।६ हु नृपाल,
कुरु४।७पुनि भद्राश्व४।८रु केतुमाल४।९ ॥ १० ॥

इनकौं जंबूके नव९हि भाग,दै भूप गयो बन लहि बिराग ॥
लवणोद हिमालय मध्यदेस१,अप्प्यो नृप नाभि१हिं यह असेस ॥११॥
अपनौं सुनि भारतखगड१ख्यात,जिहिं नाम नाभिखगड१हु कहात ॥
हिमवान हेमकूटांतराल२,अप्प्यो किंपुरुष२हिं पुहविपाल ॥१२॥
गिरि हेमकूट सन निषध अंत३, सौंप्यो हरिबर्ष३हिं यह२सुमंत ॥
गिरिनिषधनील बिच जो प्रदेस४,जहँ मेरु सुरन आलय बिसेस॥१३॥

ने सात द्वीप बांट दिये ॥ ६ ॥ १ यह जंबूद्वीप दिया २ शाल्मलि द्वीप ॥ ७ ॥ ३ नाम वालों को ४ विरक्तपन ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप के पति आग्नीध्र के पाप रूपी वन को जलानेवाले अग्नि रूप नौ वीर पुत्र हुए उन्हींको जंबूद्वीप के नव खंडों के स्वामि जानो. जिनके नाम आगे के पज्झटिका नामक छन्द में हैं ॥ ९ ॥ १० ॥ इन नव ही पुत्रों को जंबूद्वीप के नौ ही खंड देकर राजा (आग्नीध्र) वैराग्य लेकर बन में गया. क्षार समुद्र और हिमालय पर्वत के बीच का सम्पूर्ण देश राजा नाभि को दिया ॥ ११ ॥ वही यह अपना भरतखंड प्रसिद्ध है इसी को नाभि खंड भी कहते हैं । हिमवान् और हेमकूट नामक पर्वतों के बीच का देश राजा ने किंपुरुष को दिया ॥ १२ ॥ हेमकूट नामक पर्वत से निषध नामक पर्वत के बीच का देश उस श्रेष्ठ बुद्धिवाले ने हरिवर्ष को दिया । निषध गिरि और नीलगिरि के बीच का देश जहां पर देवताओं का

घउ४कोनखण्ड यह पुण्यपत्त, आग्नीध्र इलावृत ४कौं संदत्त ॥
थिर नील श्वेतगिरि मध्य थान५,सो दिन्नौं रम्यक५हित सुजान॥१४॥
गिरि श्वेतशृंगधर मध्यभाग६,सु हिरण्मान६हि दिन्नौं सराग ॥
शृंगी गिरिसौं लवणोद मेयँ, सो७खण्ड दयो कुरु७अर्थ श्रेय॥१५॥
ए दक्खिन उत्तर खण्ड सत्त७,जेठे सुत सत्त७न लहिय तत्त ॥
इक पूर्व इलावृतसौं प्रदेस८,भद्राश्व८किय तांको धरेसं ॥ १६ ॥
प्रातीच्य इलावृतसौं जु भाग९,सो केतुमाल९हित दिय सुभाग*॥
ए खण्ड सुभगफल भोग इद्ध,पति नाम्न बजे नव९ही प्रसिद्ध॥१७॥
इहिँ नाभिखण्ड१बिनु अष्ट८देस,सब भौमस्वर्ग जानहु नरेस ॥
जँहँ सिद्धि निसर्गहिसौं अनेक,न जरा१न मृत्यु२जँहँ बहु विवेक॥१८॥
न अधर्म३धर्म४चउ४जुगबिधान५,नहिँ, वर्णभेद६सब जँहँ समान॥
हिमगिरिसौं दक्खिनखण्ड ऐस,यामैं हि जरा भय सुख असेस॥१९॥
आग्नीध्र भूप सुत नाभि४१नाम,धरनीस भयो यँहँ धर्मधाम ॥

घर सुमेरु पर्वत है वह पुण्य प्राप्त होनेवाला चौकोण देश राजा आग्नीध्र ने इलावृत को दिया. और नीलगिरि व श्वेतगिरि के बीच का स्थिर स्थान है वह रम्यक को दिया ॥ १३॥ १४ ॥ श्वेतगिरि और शृंगधर पर्वत के बीच का भाग हिरण्मान को प्रीति सहित दिया । और शृंगीपर्वत से उत्तर चार समुद्र तक है प्रमाण जिस का ऐसा श्रेष्ठ खंड कुरु को दिया ॥ १५ ॥ ये दक्षिण और उत्तर दिशा के सात खंड तो बड़े सात पुत्रों को दिये और इलावृत से पूर्व दिशा का एक देश है उस का राजा भद्राश्व को किया ॥ १६ ॥ इलावृत से पश्चिम दिशा का जो खंड है सो केतुमाल को दिया ये श्रेष्ठ निर्मल फल भोगने वाले खंड नव ही पतियों के नाम से प्रसिद्ध हुए ॥ २७ ॥ इस नाभि (भरतखंड) के विना बाकी के आठों देश हैं जिन को हे राजा रामसिंह भूमि के स्वर्ग जानो जहां पर स्वभाव से ही अनेक सिद्धियां हैं वहां न तो वृद्धावस्था होती है न मृत्यु होती है और बहुत ज्ञान है ॥ १८ ॥ वहां धर्म, अधर्म भी और सत्ययुग आदि चार युग की रचना भी नहीं है और वर्ण भेद भी नहीं सब बराबर हैं, हिमालय पर्वत के दक्षिण दिशा में यह (भारत वर्ष) है जिसी में बुढापे आदि का सब भय है ॥१९॥ राजा आग्नीध्र के बड़ा पुत्र नाभि नामक राजा हुआ जिस धर्म धाम के मरु देवी

*कुभाग सुभाग अन्त्यानुप्रास

रानी मरुदेवी नाभि दार, इनकै तनूज ऋषभावतार५ ॥ २० ॥
सत१००पुत्र ऋषभ नृपकै सधीर,[1]बड्डयर भयो तँहँ भरत६बीर ॥
इनमैं असी रु इक८१बिप्र [2]इद्ध, सुत नव९हुव कवि[3]मुख जोगसिद्ध॥२१॥
दस१०सैं[4]सरहे तिन्ह बंटि देस,करि अस्वमेधमुख मख असेस ॥
पट्टाभिसेकै रचि भरतसीस, गो तपन पुलह आश्रम महीस॥२२॥
तप घोर सह्हि करि खीनकाय,बिनु बस्त्र बदन[6] बीटाँ बनाय ॥
दुख सुख प्रसन्न श्रीऋषभदेव५,अवधूत लह्यो निज रूप एव॥२३॥
भरत६हु हुव भूपति अद्वितीय,सुत सुमति७भयो ताकै बलीय ॥
दै याहि राज्य बन भरत जाय,किय तप कृस[8] सालग्राम काय ।२४।
इक दिवसगयो नदितीर न्हान, तँहँ फंद फस्यो बिधिकै[10] बिधान॥
अग्गैं इक ऐंनी[11] पिवत तोयैं[12], गज्ज्यो मृगेसैं[13] तँहँ ढिगाहि होय ।२५।
हरिनी सु भजी सुनि मलपि फालैं[14],गिरि गर्भ गयो तस ताहिकाल ॥
आन्यौं दयालु मुनिबर उठाय,दै उचित भोग पोख्यो लडाय ।२६।
कुलराज्य जदपि छोरे नरेस,मृगपोतैं[15] तदपि मन्न्यौं बिसेस ॥
तामाँहिं प्रीति रचि निर्बिबाद[16],स्वसमाधि संग कियलहि प्रमाद[17] ।२७।
तनु[18] तजतहु मृगबिच चित्त लाय, ऐंनी[19] उर प्रबिस्यो भरत आय ॥
चर्म्मलि[21] तट पट्टनि[22] प्रांत सेस,अघहर बनजंबूमार्ग एस ॥ २८ ॥
सीमा सु रावरी तीर्थसत्थ,[23]जातिस्मर मृग हुव भरत जत्थ ॥

नाभि की राणी हुई जिस स्त्री से ऋषभ अवतार पुत्र हुए ॥ २० ॥ १ बड़ा २ निर्मल ३ कवि को आदि देकर ॥ २१ ॥ ४बाकी ५भरत के शिर पर पाट का अभिषेक करके राजा ऋषभ तप करने को पुलह ऋषि के आश्रम में गये ॥ ॥२२॥६ मुख में ७बीटा (डाट)॥२३॥८ शालिग्राम में जाकर तप से शरीर को ९चीण किया ॥२४॥ वह भरत तपस्वी एक दिन स्नान करने को नदी के तीर पर गया वहां पर [10]ब्रह्मा की रचना के फन्दे में पड़ा अर्थात् आगे एक [11]हरिणी [12]पानी पी रही थी १३सिंह ॥२५॥ १४छलांग मारकर ॥२६॥ १५मृग के बच्चे को १६ विवाद रहित १७चित्तविक्षेप (मोह भूल)।२७। शरीर[18] छोड़ते समय भी हिरं-णी के पेट[20] में प्रवेश किया चामैल[21] नदी के किनारे पाटण[22] नामक नगर के पास के देश में पाप के हरने वाले इस जम्बू मार्ग नामक वन में ॥२८॥ हे महाराव राजा रामसिंह तीर्थ के साथ आपकी सीमा में भरत अपनी पूर्व [23]जन्म

तजि पूर्वमोह धरि चित्त ध्यान, पुनि सालग्रामहि गो सयान।२९।
सूके तृन पत्तन तत्थ खाय, मृगदेह तज्यो मन सुद्धि पाय ॥
जोगी द्विजकै तब जन्म लीन, पुनि आत्मबोधं पकरयो प्रबीन।३०।
पठनादि सकल द्विजधर्म छोरि,भो बीर त्रि३गुन बाहिर बहोरि ॥
संध्यादिकर्म न करत निहारि,बंधुन कुपात्र कहि दिय बिडारि।३१।
जंडलौं सु अटत द्विज अप्रमत्त,पट्टु बीरराजके देस पत्त ॥
वह बीरराज मुनि कपिलपास, सुश्रूषु जातहो सांख्य आस।३२।
जडभरत हु छत्ता पुष्ट जानि,नृपके नृजानं जोस्यो सु आनि ॥
तेरज्यो नृप मंथरं चलत ताहि,अध्यात्म दयो द्विज तत्थ याहि ॥ ३३ ॥
ऋभु१अरु निदाघ२गुरु१छात्र२रूप,अजसुत१पुलस्त्यसुत२जे अनूप॥
अग्गैं हुव तिनको कहि उदंत,समुझायो नृप भरतहि महंत ॥३४॥
पहुँच्यो न इंच्छुमति सरित तीर,बीचहि इम मोस्यो भरत बीर ॥
नृप ऋषभपुत्त इम आत्मनेह,उद्भव दुवरलै हुव मुक्त एह ॥ ३५॥
तस नाम अंस इतको प्रदेस,यह भरतखंड कहियत नरेस॥
नृप भरत पुत्र हुव सुमति७ख्यात,जाके सुत इंद्रद्युम्न८जात ॥ ३६ ॥

की जाति को याद रखनेवाला मृग हुआ सो पहिले के मोह को छोड़ कर चित्त में ध्यान धर कर वह बुद्धिमान् फिर शालिग्राम में ही गया ॥२९॥ १तत्वज्ञान ॥ ३० ॥ त्रिगुणों बाहिर (गुणातीत अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी हो गया) ३निकाल दिया ॥ ३१ ॥ जंड (मूर्ख) के समान फिरता हुआ सावधान वह द्विज, बीरराज नामक चतुर राजा के देश में गया. ५ यह बीर कपिल मुनि के पास सांख्य शास्त्र सुनने को जाता था ॥ ३२ ॥ जडभरत को मोटा ताजा जानकर द्वारपाल (छड़ीदार) ने राजा की पालखी में लगा दिया जिसको धीरे चलने के कारण राजा ने धमकाया तहां उस जडभरत ने उस बीरराज को आत्मज्ञान दिया ॥ ३३ ॥ ब्रह्मा के पुत्र ऋभु ने गुरु होकर पुलस्त्य के पुत्र निदाघ को शिष्य बनाकर ब्रह्मज्ञान दिया था जिसकी कथा विष्णुपुराण के द्वितीय अंश के पन्द्रहवें और सोलहवें अध्याय मे सविस्तर है।॥३४॥इक्षुमती नदी के तीर पर कपिल मुनि के पास नहीं पहुंचा और उस बीर भरत ने उस राजा को बीच से ही पीछा मोड़ दिया, इस प्रकार राजा ऋषभदेव का पुत्र(भरत)आत्मा के स्नेह से दो जन्म लेकर मुक्त हुआ।३५।१५प्रसिद्ध१६हुआ

परमेष्ठी९तसु प्रतिहार१०तास,तस पुत्र११तास उद्गीथ१२आसे॥
ताकै प्रस्ताव१३रु पृथु१४तदीय,तस नक्त१५तास सुत गय१६गैरीय
नर१७तास बिरोहित१८तास जानि,पुनि तास महाबीर्य१९सु प्रमानि
धीमान२०तास ताकै महांत२१,तस गोमन२२त्वष्टा२३तास कांतें३८
त्वष्टाकै बिरज२४रु रज२५तदीय,ताकै सुत सतजित२६हुव बलीय
सतजितकै आत्मजं सत१००सयान,विष्वग्ज्योति२७सु तिनमें प्रधान
पहिले मन्वंतर यहहि बंस, अवनीस रह्यो इतरनवतंसँ ॥
स्वारोचिष आदिक मनुन काल,उत्तानपाद कुल भूमिपाल ॥४०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमानविशदवराहकल्पसर्गान्तर्भूतपूर्वमनुस्वायम्भुवप्रियव्रतवंशवर्णनं विंशो२०मयूखः ॥ २० ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

पज्झटिका

इम द्रुहिनं रचिय नैरसर्ग एस,अरु रचिय नष्टलोकहु असेस ॥
नैमित्तिकं लयमैं च्यारि४लोक,आये न सत्यलोकादि ओकें ॥ १ ॥

हरिगीतम्

इक१कोटि सरबसु८५लक्ख१८५०००००जोजन हेट्ठ अंडकटाहसौं,
तहँ सत्यलोक१सु कोटि बारह१२००००००मेयँ जोजन राहसौं॥

१हुआ२उसके३भारी॥३७॥ ४प्यारा॥३८॥५पुत्र ६ बडा ॥३९॥ पहिले (चाक्षुष) मन्वन्तर में यही वंश और राजाओं का मुकुट होकर रहा और स्वारोचिष आदिक मन्वन्तरों के समय में उत्तानपाद का कुल भूमि को पालनेवाला रहा॥४०॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के प्रथमराशि में वर्त्तमान श्वेत वाराह कल्प की सृष्टि रचना के भीतर प्रथम मनु स्वायंभुव में प्रियव्रत के वंश वर्णन का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २० ॥

इस प्रकार ब्रह्मा ने यह मनुष्य सृष्टि रची और दृष्टि में नहीं आनेवाले सम्पूर्ण लोक भी रचे तिन में सत्यलोक को आदि लेकर चार लोकों के स्थानें नैमित्तिकं (ब्रह्मा के शयन करने पर होने वाले) प्रलय में नहीं आये॥ १॥
१२ नीचे का अंडकटाह १३ प्रमाण का

रत आत्मबोधं बहोरि जन्म न लैनहार जहाँ रहैं,
मद१काम२क्रोध३न दर्प४मोह५न लोभ६ठाम जहाँ लहैं ॥ २ ॥
ताकै तरैं तपलोक२जोजन अट्ठकोटि८००००००००सु जानिये,
बैराज नामक देव आदिन तत्थ बास बखानिये ॥
ताकै तरैं जनलोक३जो दुव कोटि२००००००००जोजन माने है,
सु सनंदनादिक ब्रह्मपुत्रन बासकौं थिर थान है ॥ ३ ॥
महराख्य लोक ४सु ताहुसौं तर कोटि१००००००००जोजन धारिये
भृगु आदि जे मुनिराज तत्थ निवास निद्धि बिचारिये ॥
तर स्वर्गलोक५रच्यो चउद्दह लक्ख१४००००००जोजन मानसौं,
ध्रुव उच्च ह्वाँ ऋषि सप्त७२ए कछु हेट्ठ है तैस थानमौं ॥ ४ ॥
इनके तरैं इक लक्ख १०००००जोजन सौरि३मंडल थप्पयो,
सनिके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन थान गीर्पति४को ठयो॥
सुरके पुरोहितके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन आर५है,
अरु आरसौं दुव लक्ख२०००००जोजन हेट्ठ सुक्र६उदार है ॥५॥
दुव लक्ख२०००००जोजन सुक्रसौं तर चन्द्रको सुत९ह्वाँ वसैं,
दुव लक्ख२०००००जोजनपैं भपंजर१०चन्द्रके सुतसौं लसैं ।
नच्छत्र मंडलके तरैं दुव लक्ख२०००००जोजन है ससी११,
इक लक्ख१०००००जोजन तातैं उडिमाउ१०मंडलकी लसी ।६।
यह यौं चउद्दह लक्ख१४००००००जोजन स्वर्गलोक५बनायकैं,
सुर१अच्छरी२पुनि देवगायन३तत्थ तप्पिय चायकैं ।
मयु४सिद्ध५चारन६जच्छ१२७गुह्यक८आदि तत्थहि१३ ए रहैं,
करि अप्प अप्पन उच्च नीच निवास भोगनकौं लहैं ॥ ७ ॥

१ तत्वज्ञान में रत २ प्रमाणवाला ३ धर्म में श्रद्धा रखनेवाले ४ प्रमाण से ५ उस स्थान से ध्रुव तो ऊपर है और सप्त ऋषि कुछ नीचे हैं॥४॥ ६ शनैश्चर का मण्डल ७ वृहस्पति का स्थान रक्खा ८ मंगल ॥५॥ ९ बुध १० नक्षत्र चक्र ११ चन्द्रमा ॥ ६ ॥ इस प्रकार चौदह लाख जोजन का स्वर्गलोक बनाकर देवता, अप्सरा और गन्धर्व वहां रक्खे और किन्नर १२ यक्ष १३ उसी स्वर्गमें ॥ ७ ॥

रविसौं तैं भुवलौं रच्यो भुवराख्य[1] लोक६निहारिये,
इक लक्ख००००० जोजन उछ्रैयी[2] यह धाम धीधन[3] धारिये।
खग[4]१भूत[5]२डाकिनि[6]३साकिनी[7]४रु पिसाच[8]५आसिर[9]६खेचरी[10]७,
बेताल[11]८भैरव[12]९जोगिनी[13]१०इनकी इहाँ अवली[14] भरी ॥ ८ ॥
अज[15] द्वीप सप्त७उपेत[16] त्यौं यह भूमिलोक७हु निर्मयो,[17]
गिरि मेरु जोजन लक्ख१०००००लंब सु रोपि अंतरमैं दयो ।
भुवमाँहि सोलह लक्ख१६००००जोजन सेस उप्पर जो रयो,
यह भर्म[18] पर्वत भूत्रिविष्टप[19] भोन देवनको कयो ॥ ९ ॥
प्रभु[20] व्यास[21] तास हजार सोलह १६०००मूल मान प्रमानिये,
जिमही बतीस हजार३२०००जोजन मत्थ आयत[22] जानिये ।
बिच मेरु मस्तकपैं बिरंचि[23]नैं रची अपनी पुरी,
परिणाह[24] इंद्र१४हजार १४०००जोजन जूह[25] जास मिती जुरी।१०।
तँहँ लोकपालनकेहु यासन अष्ठ८घाँ[26] पुर निर्मये,
भव इंद्र आदिक तत्थहू इक रूपसौं बसते भये ॥

---

१ भुवर् है नाम जिसका (भुवर्लोक) २ ऊंचा ३ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा पंडित हे रामसिंह! ४ देव (मार्गण) ५ देव योनि विशेष ६ कालीगण (देवी विशेष) ७ देवी की दासी विशेष ८ देवयोनि विशेष ९ राक्षस १० विद्याधरों की स्त्रियां और विद्याधर ११ शिवगण विशेष (शिव के द्वारपाल) १२ रुद्र विशेष १३ देवी विशेष जो संख्या में ६४ हैं. १४ इनकी वहां पर पंक्तियां भरी हुई हैं ॥ ८ ॥ ब्रह्मा[15] ने सात द्वीपों सहित[16] इस सातवें भूमि लोक को बनाया[17] जिसके बीच में सुमेरु पर्वत लाख जोजन (चार लाख कोस) लम्बा रक्खा जिस में सौलह हजार जोजन तो भूमि के भीतर और बाकी ऊपर को रहा. इहां पर मूल में सौलह लाख योजन भूमि में लिखा सो पाठान्तर से अशुद्ध मालूम होता है इस कारण से हमने यहां विष्णुपुराण के दूसरे अंश के दूसरे अध्याय के अनुसार लिख दिया है. यह सोने[18] का पर्वत जो भूमि का स्वर्ग[19] है देवताओं का घर हुआ ॥ ९ ॥ हे स्वामि[20] रामसिंह उस सुमेरु के मूल का विस्तार सौलह[21] हजार योजन प्रमाण; और इसी प्रकार बत्तीस हजार जोजन चौड़ा[22] मस्तक जानो. उस मेरु के मस्तक के बीच में ब्रह्मा[23] ने अपनी पुरी रची जिसका विस्तार[24] चौदह हजार जोजन का है इसमें इस प्रमाण से समूह[25] जुड़ा ॥ १० ॥ इस पुरी से आठों ही ओर[26]

अंगुष्ठसौं किय बिष्णु बामन बिद्ध अण्डकटाहकौं,
तँहँ होय बाहिरको धर्‍यो छल दाहिबे भवदाहकौं ॥११॥
कहिये अमर्त्यन आपगा करि लोकपावन उद्ध जो,
बिधि द्रंगँ चत्वरमैं परैं सुरसैलकै सिर सुद्ध जो ॥
करि मेरुसौं चउ४रूप जो दिस च्यारि४मैं चलती लसैं,
जलजंत्रलौं झिलि बर्ष अद्रिनपैं रु अर्णावमैं धसैं॥१२॥
झिलि गंधमादन पूर्व१घाँ भद्राश्वमैं सीता२बहैं,
निषधादि त्रय३झिलि अलकनंदा२दोख दक्खिन२के दहैं॥
इत३माल्यवानहिं लंघि चच्छु३सु केतुमालहिं उद्धरैं,
भद्रा४सु उत्तर५नील१श्वेतहिं लंघि शृंगियतैं ढरैं ॥ १३ ॥
भुव मध्यमैं यह भर्म भूधर यौं बिरंचेननैं घर्‍यो,
लगि मेरुकै चउ४कोद ठंभ चतुष्क अद्रिनको धर्‍यो॥
तँहँ पुब्ब१मंदर२नाम पब्बय छीरसागर मंथै जो,
गिरि दूसरो इक गंधमादन२थंभदक्खिन२पंथ जो ॥ १४ ॥
बिपुलाख्य३पच्छिम३भाग ओट सु मेरुके नग निर्मयो,

को लोकपालों के पुर बनाये जहां शिव इन्द्र आदिक सभी एक रूप से बसे जब विष्णु के अवतार वामन ने अपने अंगूठे से अंड कटाह को फोड़ा वहां होकर संसार के पापों को जलाने के लिये जल बाहर को घुसा उसको देवनदी कहते हैं जिस ने लोक को पवित्र किया जो ब्रह्मा के पुर के चौंक में होकर देवताओं के पर्वत (सुमेरु) के मस्तक पर पड़ती है । वह देवनदी सुमेरु से चारों धारा करके फुहारे के समान चलती हुई शोभायमान भारतवर्ष के पर्वतों पर भि लकर समुद्र में घुसती है ॥ १२ ॥ इन में से सीता नामक नदी गन्धमादन पर्वत पर झिलकर भद्राश्व (इलावृत) खंड में पूर्वदिशा को बहती है और निषध आदि तीन पर्वतों पर झिलकर अलकनन्दा नदी दक्षिण देश के पापों को जला ती है । इधर चक्षु नाम नदी माल्यवान् पर्वत को लांघकर केतुमाल नामक पश्चिम खंड का उद्धार करती है और भद्रा नामक नदी उत्तर दिशा के नील और श्वेतागिरि को लाँघकर ढलती (बहती) है ॥ १३ ॥ भूमि के बीच में यह सोने का पर्वत ब्रह्मा ने इस प्रकार घड़ा, मेरु के चारों दिशा में ठाँमने के लिये चार पर्वतों को धरे, वहां पूर्व मे मंदराचल जिस से क्षीर सागर मैथागया और दूसरा गन्धमादन पर्वत दक्षिण की ओर का थंभा हुआ ॥ १४ ॥ विपुल नाम

अरु उत्तर४दिस आद्रिराज सुपार्श्व४ओटकनाँ दयो ॥
समतुंग³पंक्ति१०हजार१००००जोजन मेरु थंभन च्यारि४जे,
क्रमतैं कदंब१रु जंबु२पिप्पल३त्यों रहे बट४धारि जे ॥ १५॥
चउ४रुक्ख लंब हजार जोजन इकसे जुत११००जे रचे,
जिनतैं इलावृत खण्डमैं सुख स्वर्गतैं मँहँगे मचे ॥
इनके बडे फल पक्किकैं झरि छ्वैकैं सुभगा छिती,
सत अष्ठ८००ओ इकसठ्ठि६१ह्वै जिनकी अरत्निनसों मिती ॥ १६ ॥
दिस पुब्ब१मैं मधु धार पंच५कदंब१कोटरतैं चलैं,
अरु जंबु२के रसकी नदी फल फुट्टि दक्खिन त्यों हलैं ॥
जांबूनदाख्य सुबर्ण जो रस मृत्तिका छुवतैं बनैं,
यह द्वीप जंबुव१नामहू जिहिँ अंकसों जगमैं भनैं ॥ १७ ॥
सुरनारि हाटक सोहि लै बहुभांति भूखन ह्वाँ रचैं,
रस पानसों हु जरा१कुगंध२हृषीक हानिन३तैं बचैं ॥
इम बोधि३सौं बट४सौं हु पच्छिम३और उत्तर४ओरलौं,

पर्वत पश्चिम के भाग की आड बनाया गया और उत्तर दिशा में पर्वतराज (सुमेरु) के सुपार्श्व नामक पर्वत का ओटकना (रोकनेवाला पदार्थ) दिया. मेरु के ये चारों खंभे ऊंचाई में बराबर और पंक्ति में दश हजार जोजन हैं ये पर्वत क्रम से कदम्ब, जम्बू, पीपल और बड़ के वृक्षों को धारण करते हैं॥१५॥ ये चारों वृक्ष ग्यारह सौ योजन लंबे रचे जिस से इलावृत खंड में स्वर्ग से भी मँहँगे सुख मचे। इन के बडे फल पककर झरते हैं जो भूमि को स्पर्श करके सौभाग्यवाली करते हैं उन फलों का प्रमाण आठ सौ इकसठ अरत्नि का है (चिटी कानिष्ठिका अंगुली के मस्तक से लेकर कोनी तक के हाथ को अरत्नि कहते हैं) अर्थात् विना मोड़ दिये सीधे हाथों से आठ सौ इकसठ हाथ का फल का प्रमाण है॥ १६॥ पूर्वदिशा में कदम्ब के कोटर से सहत की पांच धारा चलती हैं और जम्बू के वृक्ष के फल फूटकर दक्षिण में उसके रस की नदी बहती है उस रस से मिट्टी का स्पर्श होते ही जाम्बूनद नामक सोना होजाता है उसी के अंक (चिन्ह)से इस देश को जम्बूद्वीप कहते हैं॥ १७॥ वहां पर उसी सोने को लेकर देवताओं की स्त्रियां भूषण बनाती हैं और उसी रस के पीने से, वृद्धपनें दुर्गन्ध और इंद्रियों की हानि से बचते हैं। इसी प्रकार पीपल और बड़ के वृक्ष से भी पश्चिम और उत्तर की ओर कामना पूर्ण करनेवाली दो

कढि कामपूरक धार द्वै २प्रसरैं इलावृत दोरि लौं ॥ १८ ॥
इन च्यारि४अद्रिनपैं रचे आराम१ओ सर२जे सुनौं,
क्रम हिंतु चैत्ररथाख्य१ओ अरुणोद१सुंदर सो गनौं ॥
तिम गंधमादन२बाग ताल महादिभद्र३ललाम है,
वैभ्राज ३अरु सीतोद३नंदन४ओ सुमानस४नाम है ॥ १९ ॥
करि थंभ ए चउ४केसराचल बीस२०हू लगते रचे,
वेकंक१कुरर२रु माल्यवान३कुसुंभ४सीत५इनैं१खचे ॥
सिसिर६रु रुचक७निषध८रु पतंग९त्रिकूट१०दक्खिन२घां सुधी,
सिखिबास११इत३वैदूर्य१२कपिल१३रु गंधमादन१४जारुधी ॥२०॥
ऋषभाख्य१६हंस१७रु नाग१८संख१९रु कालजंघ२०उदीच४ए,
क्रमपूर्वसौं गिरि पंच५पंच५हि मेरु थंभन बीच ए ॥
बिधि मेरु यौं रचि अद्रि ओरहु खंडकी अवधी धरे,
क्रम तीन३दक्खिन तीन३उत्तर इक१इक१दुँ२घाँ करे ॥ २१ ॥
चोरे रु उच्च समान दोय हजार२०००जोजन जानिये,
खट६पुब्ब पच्छिम लंब जे लवणोद लौं पहिचानिये ॥
तहँ नाम निषध१रु हेमकूट२तथा हिमाद्रि३यहै त्रई३,
क्रमसौं प्रजापति मेरु दक्खिन खंडभाजेक निर्मई ॥ २२ ॥
हरिवर्ष१किंपुरुषाख्य२भारतखंड३ए३तिनसौं बनैं,
चोरे ति जोजन नोहजार९०००रु लंब सागर लौं भनैं ॥
तिम नील१श्वेत२रु सृंगवान३सुमेरु उत्तरघाँ दये,
तिनमों त्रि३खंडातिरम्स्यकाख्य१हिरण्मयाख्य३कुरु४भये॥२३॥
हरिवर्ष आदिक तुल्य है इनको प्रमानहु उच्चर्यो,

धारा इलावृत खंड के फैलाव तक फैलती है ॥ १८ ॥ २ पर्वतों पर ३ बाग ४ तालाव ५ से ६ महाभद्र ७ सुन्दर ॥ १९ ॥ ये चार थम्भ करके कंधे के ऊपर बीस पर्वत उस सुमेरु से लगे हुए रचे जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ९ ब्रह्मा ने १० पर्वत ११ दोनों ओर को ॥ २१ ॥ ये छहों पर्वत पूर्व और पश्चिम को चार समुद्रं तक लम्बे हैं १४ ब्रह्मा ने १५ विभाग करनेवाले ॥ २२ ॥ १६ ने (ये) १७ और १८ (तरफ) ॥ २३ ॥

अरु गंधमादन१पुब्ब पच्छिम माल्यवान१गिरी घरयो ॥
निषधाख्यसौं अरु नीलसौं इनके भिरे दुव२प्रांत है,
इनसौं बनैं भद्राश्व१खंड रु केतुमाल१हु कांत[1] है ॥ २४ ॥
दुव२एकतीस हजार३१०००जोजन खंड ए लवणोद लौं,
चउतीस सहस३४०००प्रमानि निषध१रु नील२पुब्बय कोद[2] लौं॥
निषधाख्य१नील२रु गंधमादन३माल्यवान२बिचैं रह्यो,
सम बेद बन्हि३४हजार३४०००जोजनसौं इलावृत१जो कह्यो॥२५॥
तहँ मेरुके चउ४कोद[3] अद्रि[4] उभैं२उभै२बहुरयौं रचे,
तहँ पुब्ब जठर१रु देवकूट२ति नील नैषध लौं खचे॥
कैलास१ओ करबीर२दक्खिन ओर अर्णव[5] लौं बनैं,
जिम पुब्ब निषध१रु पारियात्र२उभै२हि पच्छिममैं तनैं ॥ २६ ॥
जिम अद्रि दक्खिनके तथाहि[6] त्रिशृंग१जारुधि२उत्तरा,
गिरि अष्ट८उच्च असीति८०जोजन मान एहु धरैं धरा[7] ॥
नव९खंड यौं इनमैं इलावृत मुख्य देवन भोग है,
जँहँ मृत्यु१व्याधि२कुरूप३आधि[8]४जरा५दिको नहिं जोग है॥२७॥
अरु खंड भारत१ओ[9] इलावृत२हीन सप्तक७खंड है,
दसं[10]१०वा दु२अग्ग१२हजार१००००॥१२०००हायन[11]आयु तत्थ अखंड है*॥
त्रेता सदाहि रहैं तहाँ कुरु खंड१मैं हरि मच्छ[12]२है,
भद्राश्वमैं हयसिर[13]२बराह१सु केतुमाल२हि अच्छ है ॥ २८ ॥
अरु कूर्म१भारतबर्ष२मैं यह खंड दक्खिन सर्वसौं,
जँहँ कृत्यँ[14] लार लगैं सु अप्पन ओक भाग्य अखर्वसौं ॥

१प्रिय॥२४॥ २पूर्व दिशा तक ३चारों दिशा में४पर्वत५समुद्र पर्यन्त ॥२६॥६इसी प्रकार त्रिशृंग और जारुधि नामक उत्तर के मर्यादा पर्वत७पृथ्वी ८मन की पीड़ा ।२७।९भारतखंड और इलावृत खंड के विना बाकी के सात खंड हैं१० दश व बारह हजार वर्ष[11] की अखंड आयु है और इन खंडों में सदैव त्रेतायुग ही रहता है और कुरुखंड में मत्स्य[12] भगवान, भद्राश्व खंड में हयग्रीव[13] भगवान, केतुमाल खंड में बराह भगवान, ॥ २८ ॥ और भारत वर्ष में कूर्म भगवान की मूर्तियां रहती हैं,यह भरत खंड सब से दक्षिण में है जहां पर मनुष्य के किये हुए कर्म[14]

---

*कखण्ड है अखण्ड है वृत्त्यानुप्रास

नव९खंड ए इनमैं हु कुलगिरि सप्त७सप्त७रचे जथा,
यामैं महेंद्र१रु पारियात्र२रु विंध्य३ सह्य४घरे तथा ॥ २९ ॥
मलयाद्रि५ऋक्ष६रु सुक्तिमान७कुलाद्रि भारतमैं इते,
नाना नदीजनि भूमि औरहु निर्मये सिखरी किते ॥
नव९भेद भारतके भये तँहँ इंद्रद्वीप १कसेरु२ज्यौं,
पुनि ताम्रपर्ण३गभस्तिमान४रु नागद्वीप५रु सौम्य६त्यौं ॥३०॥
गांधर्व७वारुन८औ यहै नवमौ९जहाँ थिति अप्पनी,
सब ए परस्परमाँहिं सागरसौं अगम्य गिनौं धनी ।
इहिं खंडमध्य द्विजादि४वर्ण रु पुव्व प्रांत किरात है,
बहुजाति१संभव२भिन्न पच्छिम प्रांत जवनन व्रात है ॥ ३१ ॥
सरजू१सतद्रु२रु चन्द्रभागा३आदि हिमगिरिजा धुनी,
ऋषिकुल्यिका१रु त्रिसामिका२आदि महेंद्र१तैं निकसी सुनी॥
वेदश्रुती१मुखपारियात्र२नितंबतैं तटिनी कढी,
बलि नर्मदा १सुरसा२दि पावन विंध्य३पव्वयतैं बढी ॥ ३२ ॥
गिरि सह्य४तैं गोदावरी१न्हदिनी रु भीमरथी२गई,
कृष्णा३तथा वेणा रु ४औरहु याहि भूधरतैं भई ॥
मलयाद्रि५तैं कृतमालिका१तिम ताम्रपर्णि२मुखा चली,
तापी१पयोष्णि२त्यौंहि निर्विंध्या३दि ऋक्ष६भवा भली ॥३३॥

नाथ रहते हैं सो बडे भाग्य का घर है. ये नव खंड हैं इन प्रत्येक खंडों में सात सात कुल (मर्यादा) पर्वत रचे ॥ २९ ॥ ये सातों मर्यादा पर्वत भारत में बनाये, इस भूमि में अनेक नदियां उत्पन्न कीं और कितने ही पर्वत भी बनाये। इस भारतवर्ष के नव भेद (खंड) हुए जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं. इन में नवमा यह खंड जिस में अपनी स्थिति है हिमालय पर्वत से लेकर सगर पुत्रों के खोदे हुए दक्षिण समुद्र के बीच में है, हे स्वामि रामसिंह उप रोक्त नव ही देश आपस में समुद्रों के कारण अगम्य हैं अर्थात् एक खंड से दूसरे खंड में जा नहीं सक्ते हैं। अपने इस खंड के बीच में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि वर्ण बसते हैं और पूर्व में भील व पश्चिम में अनेक जातियों से पैदा हुए जुदे जुदे यवनों के समूह हैं ॥३०॥ ३१ ॥ १० हिमालय पर्वत से पैदा हुई ११ नदियां १२ आदि १३ महेन्द्र पर्वत से १४ आदि १५ शिखर से १६ नदी १७ पुनि १८ विन्ध्याचल ॥ ३२ ॥ १९ पर्वत से ॥ ३३ ॥

ऋषिकुल्ल्यका१रु कुमारिका२दिक सुक्ति[1]मान७प्रवाहिनी,
इत्यादि भारतखंडमैं तटिनी[2] भई अघदाहिनी[3] ॥
बिधि[4] जंबु१नामक द्वीप भूविच लक्ख१०००००जोजन व्यासमैं,
यह यौं रच्यो घटकार[5]चक्र समान प्रेरक पासमैं[6] ॥ ३४ ॥
पुनि[7] व्है प्रियब्रत द्वार सागर सप्त७बेष्टित[8] भू[9] करी,
इनमांहिं द्वीप पलक्ख२आदि तहांहु पुराय प्रजा भरी ॥
राकेस[10]के परिबेस[11]लौं लवणोद[12]१जंबुव[13]२कै अरयो,
इक लक्ख१०००००जोजन मान[14] आयत[15] त्यौंहि आगम[16] उच्चरयो।३५।
लवणोदसौं परैं[17] जो पलक्ख२दुलक्ख२०००००जोजन द्वीप है,
मेधातिथी सुत सत्त७नामन खंड७तत्थ महीप है ॥
ते सांतभय१सिसिर२रु सुखोदय३लै अनुक्रम जानिये,
आनंद४सिव५छेमक६तथा ध्रुव७प्लक्ष८खंड प्रमानिये ॥ ३६ ॥
कुल[18]आदि तहँ गोमेद१चंद्र२तथाहि नारद३नाम है,
इंदुभि४रु सोमक५रु सुमना६बैभ्राज७सप्त ललाम है ॥
क्रमतैंहि अनुतप्ता१सिखी२रु बिपापिका ३नंदि[19] तत्त है,
त्रिदिवा४क्रमू५अमृता६तथा सुकृता७बडी इम सत्त७है ॥ ३७ ॥
जहँ छुद्र[20] पव्वय आपगाहु[21] अनेक रंजनकौं रहैं,
नर आयु पंच हजार५०००हायन[22] रोगवार्जित व्हाँ लहैं ॥
त्रेता सदा बरतैं रु वर्ण चतुष्क[23]४आर्यक[24]१ओ कुरु[25],

१ शुक्तिमान पर्वत से बहनेवाली २ नदियां ३ पापों को जलानेवाली ४ ब्रह्मा ने ५ विस्तार में ६ कुम्हार के चाक के समान ॥ ३४ ॥ ७ फिर राजा प्रियव्रत के द्वारा ८ घिरीहुई ९ भूमि को १० चन्द्रमा के ११ चारों ओर की कुंडली के समान १२ क्षार समुद्र १३ जम्बूद्वीप के १४ प्रमाण १५ चौड़ा १६ विष्णु पुराण नामक शास्त्र ने कहा है ॥ ३५ ॥ १७ परैं (आगे) उस द्वीप का राजा मेधातिथि था जिस के सात पुत्रों के नाम से सात खंड हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ३६ ॥ और वहां पर सात ही मर्यादा [सीमा] के पर्वत हैं १९ और क्रम से ही सात नदियां हैं ॥ ३७ ॥ जहां पर छोटे पर्वत और नदियां मन प्रसन्न करने को २२ वर्ष की. वहां पर सदैव त्रेतायुग रहता है और चार वर्ण हैं जिन में ब्राह्मणों को आर्य क्षत्रियों को कुरु, वैश्यों को विविंस और शूद्रों को भावि कहते हैं.

क्रमतैं बिबिंस३रु भावि४ए चउ जाति व्यास कही गुरू ॥ ३८ ॥
यँहँ जंबु१त्यौं बिटपी पलक्ख२उहाँ इतेहि बिथार है,
तस्समात हे नृप द्वीप नाम पलक्ख२यौं व्यवहार है ॥
जँहँ सोमरूप हरी जजैं तस अग्ग इच्छुरसोद२है,
दुव लक्ख२००००० जोजन जो हु आयत कुंडलीचउ४कोद है ।३६।
तस अग्ग साल्मलि३रुक्ख अंकित द्वीप साल्मलि३नाम जो,
सुत सप्त७ही जिहिंठाँ बपुष्मतके भये तिन्ह धाम जो ॥
चउलक्ख४००००० जोजन मान औ गिरि सप्त ७तत्थहु रम्य है,
क्रमतैं कुमुद१उन्नत२बलाहक३द्रोन४कपिपति गम्य है ॥४०॥
पुनि कंक५औ महिषाख्य६त्यौंहि ककुद्मदाख्य७बिचारिये,
हुव खंड तिन करि सप्त७निज निज स्वामि नामक धारिये ॥
स्वेत१रु हरित२जीमूत३रोहित४बर्पवैद्युत५नामतैं,
पुनि मानसाख्य६बहोरि सुप्रभ७पूर्वाभोगन ग्रामतैं ॥ ४१ ॥
हरि बायुरूपहिं जे जजैं हृदिनीहु सप्त७बडी जहाँ,
योनी१तथा तोया२बितृष्णा३त्यौं धुनी चंद्रा४तहाँ ॥
सुक्रा५नदी रु बिमोहिनी६निवृती७रु बर्णहु च्यारि४ये,
क्रमतैंहि कपिल१रु अरुन२पीत३रु कृष्ण४नाम निहारिये ॥ ४२ ॥

ये चारों बडी जातियां वेदव्यास ने विष्णुपुराण में कही हैं ॥ ३८ ॥ इस जंबू द्वीप में जैसा जम्बू का वृक्ष है वैसा ही प्लक्षद्वीप में इतने ही विस्तार का पीपल का वृक्ष है इसी पीपल वृक्ष के कारण से उसे प्लक्ष द्वीप के नाम से व्यवहार में लाते हैं वहां चन्द्रमा रूपी विष्णु की पूजा करते हैं उस के इक्षुरसोद नामक समुद्र चारों दिशा में घेरा लगाये है ॥ ३९ ॥ उस के आगे शाल्मलि वृक्ष से पहचाना जानेवाला शाल्मलि नामक द्वीप है । जिस के अधिपति का नाम वपुष्मान था जिस के सात पुत्र हुए. उन के नाम से सात खंड हुए, वह शाल्मलि द्वीप चार लाख जोजन का है जिस में कुमुदादिक सात पर्वत हैं, वपुष्मान के सात पुत्रों के नाम से सात द्वीप हुए जिन के नाम स्वेत आदि मूल में स्पष्ट हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ वहां पवन रूपी विष्णु को पूजते हैं जहां पर सात नदियां बडी हैं और ब्राह्मण को कपिल, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीत और शूद्र को श्याम कहते हैं. ये ही चार वर्ण जानो ॥ ४२ ॥

खिल तत्त तत्त पलक्खलौं सुरभोग्य हू दुव२देस है,
इहिं४०००००मांन सम्मलि३अग्गसिंधु सुरोद३को परिबेस है॥
कुसद्वीप४जोजन अट्ठलक्ख८०००००सुरोद अग्ग प्रमानसौं,
कुस४तंबकरि फुटं सप्त७ही सुत तत्थ ज्योतिष्मानसौं ॥४३॥
तिन्ह नाम उद्भिद१बेणु मान२तथाहि द्वैरथ३ए कहे,
लंबन४धृती५तिमही प्रभाकर६ओ कापिल७नृपते रहे ॥
गंधर्व१किन्नर२जच्छ३आसुर४देव५नर६निवसैं जहाँ,
रु दमी१रु शुष्मी२स्नेह३अरु मंदह४वर्ण चऊ४तहाँ ॥४४॥
हरिब्रह्म रूप जजैं रु अद्रि हु तत्त सत्त७हि जानिये,
तिन्ह नाम बिद्रुम१हेम२ओ द्युतिमान३पुराय प्रमानिये ॥
पुनि पुष्पवान४कुशेशय५रु हरि६मंदराचल७नाम ते,
तिन्ह सीम सप्त७हि खराड निज निज स्वामि नाम सुधाम ते॥४५॥
रु बडीहु सप्त७हि धूतपापा१त्यौं सिवा२सरिता कही,
तीजी३पवित्रा४अग्ग सम्मति४बिद्युदंभा५ओ रही६ ॥
पुनि सर्व पापहरा७रु सेस उदंत तत्थहु पुव्वलौं,
तस अग्ग सिंधु घृतोद४जोजन अट्ठलक्ख८०००००प्रमानसौं।४६।
तस अग्ग सोलह लक्ख१६०००००जोजन क्रौंच५नामक द्वीप है,

बाकी की सम्पूर्ण बातें तहां पर प्लक्ष द्वीप के समान है, ये दोनों देश देवता ओं के भोग करने के हैं। इतने ही प्रमाण का [चार लाख जोजन का] सुरोद नामक समुद्र का इसके घेरा है. सुरोद के आगे कुश द्वीप है वहां कुश [डाभ]के स्तम्ब[विना शाखा के वृक्ष]होने के कारण स्पष्ट नाम कुश द्वीप हुआ जहां का राजा ज्योतिष्मान् था ॥ ४३ ॥ उस ज्योतिष्मान् के सात पुत्र हुए जिन के नामों से सात खंड हुए उन के नाम मूल में स्पष्ट हैं, वहां पर गंधर्वा दिक रहते हैं और वहां पर चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र है जिन को क्रम से दमी, शुष्मी, स्नेह और मंद कहते हैं ॥४४॥ वहां ब्रह्म रूप विष्णु की पूजा करते हैं और पर्वत भी वहां पर सात हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं ॥ ४५ ॥ और सात ही बडी नदियां हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं और बाकी का वृत्तांत वहां भी पहिले कथन के अनुसार ही है उस के चौतर्फ घृतोद नामक समुद्र है ॥ ४६ ॥

द्युतिमानके सुत सप्त७कहियत तत्थ आदि महीप है ॥
ते कुसल१मनुज२रु उष्ण३पीवर४अंतकारक५धारिये,
मनु६द्नुति७निज निज नाम खंडनके अधीस विचारिये ॥४७॥
सीमाद्रि सप्त७हि क्रौंच१जिहिं करि नाम द्वीपहुको बजैं,
त्यों सैल वामन२अंधकारक३अो दिवाव्रत ४हाँ रजैं ॥
पुनि पुंडरीकवदाख्य५दुंदुभि६अो महादिक सैल हैं,
पुष्कर१रु पुष्कल२धन्य३तिष्य४हि नाम वर्णन गैल है॥४८॥
गौरी१कुमुद्वतिका२नदी संध्या३रु रात्रि४मनोजवा५,
तिम मुख्य ख्याति६रु पुंडरीका७क्रौंच द्वीप५समुद्भवा ॥
हरि रुद्ररूप जजैं रु दधिमंडोद५अग्ग इतो१६०००००हि है,
रद लक्ख३२००००००जोजन द्वीप अग्गहु साक६नामक सोहि है॥४९॥
अति दिग्घ है जँहँ साक६पादप तास नाम यहै ठयो,
तँहँ त्यों प्रियव्रत पुत्र भव्य तनूज सप्तक ७ही भयो ॥
पहिलो१जलद१दूजो२कुमार२तृतीय३त्यों सुकुमार भो,
चोथो४मरीचक४पंचमो५कुसुमोद५नाम उदार भो ॥ ५० ॥
छट्टो सु६काकि६महाद्रुमाभिध७सप्तमों७पहिचानिये,
तिन्ह नामसों तँहँ सप्त७खंड रु वर्षगिरि अब जानिये ॥
उदयाद्रि१अो जलधार२रैवत३स्याम४अंभगिरी५जथा,
तिम अंबिकेय६रु केसरी७सरिताहु सप्त७बडी तथा ॥५१॥

उस के आगे क्रौंच द्वीप है. जिस का पति द्युतिमान था जिस के सात पुत्र अपने अपने नाम के सातों द्वीपों के स्वामी हुए ॥४७॥ क्रौंच नामक सीमा का पर्वत है इसी से उसका नाम क्रौंच द्वीप हुआ जिस में मूल में लिखे सात पर्वत हैं और ब्राह्मणादिक वर्णों को क्रम से पुष्कर पुष्कल धन्य और तिष्य कहते हैं ॥४८॥ गौरी आदि सात नदियां हैं और रुद्र स्वरूप विष्णु की पूजा करते हैं और दधिमंडोद नामक समुद्र का इस के घेरा है जिस के आगे शाक द्वीप है ॥ ४९ ॥ जहां पर शाक नामक वृक्ष बहुत लम्बा है उसी के नाम से इस का शाक द्वीप नाम रक्खा, प्रियव्रत का पुत्र भव्य नामक वहां का राजा था उस के भी सात पुत्र ही हुए " यहां पर सातों का समुदाय बताने के कारण एक वचन का प्रयोग किया है ,, जिन के नाम मूल

सुकुमारिका१रु कुमारिका२नलिनी३रु बेणु४महाधुनी,
इच्छी५तथा नदिरेणुका६रु गभस्तिका७सुभद्रा सुनी ॥
हरि सूर्यरूप जजैं रु बर्ण चतुष्क४हू सुनिये जहाँ,
मग१मागधाख्य२रु मानसाह्वय३मंदगाभिध४ए तहाँ ॥ ५२ ॥
खिल पुब्बलौं अरु छीरसागर६अग्ग या३२०००००हि प्रमानसौं,
तसअग्ग पुष्कर द्वीप७पुष्कर७उच्चके अभिधानसौं ॥
चउसट्ठि लक्ख६४०००००प्रमान जोजन घेरि छीरधिकौं रह्यो,
सवनाख्य भूपतिकै तहाँ सुत जुग्ग२कृष्ण मुनी कह्यो ॥ ५३ ॥
पहिलो१महाँदिकबीर१धातकि२दूसरो२भुवपाल भो,
बलयाकृती गिरि मानसोत्तर१बीच तत्थ विसाल भो ॥
सौपै पचास हजार५००००जोजन उच्च आयत तुल्ल्यही,
जिहिं उंढ सप्त तुरंगके रथचक्रकी थिरता कही* ॥ ५४ ॥
जिहिं अद्रिपैं हु रची जथा दिसलोकपालन८की पुरी,
जिहिं अद्रिकी छबितैं घनैं सिखरीनकी सुखमा दुरी ॥
जिहिं अद्रितैं बलयानुकार उभै रहि पुष्करखंड जे,

में स्पष्ट हैं उन के नामों से वहां भी सात खंड हुए, उस शाक द्वीप के पर्वतों के और नदियों के नाम मूल में स्पष्ट हैं। वहां सूर्य रूपी विष्णु को पूजते हैं अर्थात् सूर्य के निमित्त यज्ञ करते हैं और ब्राह्मणादि चारों वर्णों को मग, मागध, मानस और मन्दग नामवाले कहते हैं ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ बाकी सब व्यवहार पहिले कहा उसी प्रकार का है जिस के आगे इस द्वीप के प्रमाण के समान ही चीर सागर का घेरा है, जिस समुद्र के आगे पुष्कर नामक द्वीप है जिस में बहुत ऊंचा कमल का पेड है इसी से इस का नाम पुष्कर है जिस के भी चीर सागर का घेरा है जहां के राजा सवनाख्य के दो पुत्र विष्णुपुराण में वेदव्यास मुनि ने कहे हैं ॥ ५३ ॥ पहला महावीर (महा शब्द है आदि में जिस के ऐसा बीर) और दूसरा धातकी नामक राजा हुए. इस द्वीप के कंकण [गोला कार) की आकृतिवाला मानसोत्तर नामक पर्वत है सो भी ऊंचा और चौड़ा बराबर है उस पर्वत के ऊपर सात घोड़ोंवाले [सूर्य के] रथ के पहिये की स्थिरता है अर्थात् उस पर सूर्य का रथ है ॥ ५४ ॥ उसी पर्वत पर लोकपालों की पुरियां अपनी अपनी दिशा में रची हैं उस पर्वत की शोभा से अन्य पर्वतों की शोभा छिपगई. उस पर्वत से कंकण के आकार दोनों पुष्कर खंड हैं वे अपने

---

* ल्यही कही अन्त्यानुप्रास.

निजनाम अंक महादिवीर१तथाहि धातकि२ते भजे ॥ ७७ ॥
जिनमाँहिं अब्द हजारदस१००००नर आयु रोग बिना लहैं,
जँहँ सर्व वर्ण समान उत्तम१मध्यमा२धमं३ता न हैं* ॥
न नदी१न पव्वय२और तन्थ न वर्ण१आश्रम२धर्म हैं,
दुव२वर्ष स्वर्ग समान वे न विधेय१हेय२हु कर्म्म हैं ॥ ७६ ॥
जँहँ दिग्घकंज७कह्यो तहाँहु सदा विरंचनकी थिती,
सुद्धोद७नामक सिंधु है तस अग्ग पुष्करकी मिती ६४०००००॥
इक१चक्रके अनुकारि ओ वलयानुकार छह्द्वीप यों,
वलयानुकारि कही रचे विधि सप्त७ए तटिनीप यों ॥ ७७ ॥
जलहू समस्तनमैं सदाहि समान सिंधुनमैं रहैं,
जल अग्गितैं उफनात ज्यौं ससिवृद्धितैं बढिबो गहैं ॥
दस१०अग्ग अंगुल पंचसै७१०जल सिंधु पुरिणामलौं बढैं,
रु घटैं अमा लग जो इतो७१०हि पुरान वष्णव यौं पढैं॥७८॥
दलमेरुतैं इम भूमि सप्तमअसिंधुलौं वरनीगई,
दुव२कोटि त्रेपन५३ लक्ख रु अयुत पंच२५३५०००० जोजन जो भई
तसअग्गभू दस१०कोटिसक्करि१४लक्ख१०१४०००००० जोजन कांचनी

पनि महावीर और धातकी के नामों से नाम धारण करते हैं ॥ ७७ ॥ २ वर्ष ३ अधम ४ नहीं है ५ वहां न तो नदी है न पर्वत है ६ वे दोनों वर्ष (खंड) स्वर्ग के समान हैं जहां न तो वेदोक्त कर्म है और न त्यागने के योग्य कर्म है ॥ ७६ ॥ जिस पर बड़ा कमल पहिले कहा उसी पर ब्रह्मा रहते हैं, पुष्कर द्वीप के समान प्रमाण वाला ही उसके आगे शुद्धोद नामक समुद्र है। ए-क द्वीप तो चक्र के समान और छः द्वीप कंकण (कड़े) के सदृश और सातों समुद्र ब्रह्मा ने कंकण के समान गोलाकार ही रचे ॥७७॥ इन समुद्रों का जल बढ़ना घटता नहीं सदा बराबर ही रहता है.परन्तु जिस प्रकार अग्नि से जल उफणता है तिसी प्रकार चंद्रमा की वृद्धि के साथ जल बढ़ता रहता है अमा-वस्या से लेकर पूर्णिमा तक समुद्र का पानी पांचसौदश अंगुल बढ़ता है और इतना ही पूर्णिमा से अमावस्या तक घटता है यह विष्णुपुराण में कहा है ॥ ७८ ॥ मेरुखंड से सात समुद्र पर्यन्त यह भूमि कहीगई है इस के आगे

* इनमें नहीं उत्तमादिक

सब सत्वहीन रु चौ४गुनी प्रथमोक्त भूमि तितैं भनी ॥ ५९ ॥
गिरि अयुत१००००आयतं कोटि१०००००००उच्च तदग्रं लोकालोक है,
तस अग्ग भानु प्रकास नाँहिं कटाहलौं तम ओक है ॥
रवि१२कोटिलक्खबतीस३२रु अयुत च्यारि४जोजन१२३२४००००ध्वांतं यौं
दलमेरुतैं इक ओर कोटि पचीस२५००००००० भूतिमिरांत यौं ।६०।
दूजोरदिसाहु इती२५०००००००समेत पचास कोटि५००००००००यहै भई,
भूलोक७नामक लोककी रचनाहु बिधि इम निर्मई ॥
इहिं भूमि उच्छ्रयं मान इक हजार१०००जोजन त्यौं रच्यो*,
तस हेट्ठ उच्छ्रितं अतल८लोक हजार नव९०००मितिलौं रच्यो ।६१।
पुटदै बहोरि हजार१०००जोजनको तरैं बितलाख्य९हू,
क्रमसौंहि यौं सुतल१०रु तलातल११ओ रसातल१२हू पहू* * ॥
तिमही महातल१३अंतमैं पाताल१४लोक बिधानसौं,
विरच्यो बिरंचन सबै ए पुट लोकसूचितं१०००।९०००मानसौं॥६२॥

चौदह करोड़ योजन भूमि सुवर्णमयी है वह सब जीवों करके रहित है २ पहिले की कहीहुई ॥ ५९ ॥ इस के आगे दश हजार जोजन चौड़ा और करोड़ योजन ऊँचा लोकालोक नामक पर्वत है जिस के आगे सूर्य का प्रकाश नहीं है अंडकटाह तक अन्धेरे का ही समूह है ७ अन्धेरा है ८ इस प्रकार ९ मेरु खंड से १० अन्धेरे के अन्त तक भूमि है ॥ ६० ॥ दूसरी दिशा में भी इतनी ही है जिस सहित यह पचास करोड़ भूमि हुई इस प्रकार भूलोक नामक लोक की रचना ब्रह्मा ने रची इस भूमि की ऊँचाई का प्रमाण एक हजार योजन का रचा (मोटापन में एक हजार योजन है) इस के नीचे नव हजार योजन का ऊँचा अतल नामक लोक रचा ॥ ६१ ॥ इस ग्रन्थ में जहां तहां " अन्त्यानुप्रास ,, ऐसा लिखा हुआ है वहां जानना चाहिये कि अन्त्यानुप्रास तो प्रत्येक छन्द में सम्पूर्ण ग्रन्थ में है परन्तु जहां तहां सभङ्ग पद से अन्त्यानुप्रास मिला है वहां वहां पर ही " अन्त्यानुप्रास,, ऐसा लिखागया है सो सर्वत्र ऐसा ही जानना, और अभंग पद, सभंग पद के लक्षण हम ऊपर लिख आये हैं ॥ १४ हे स्वामी रामसिंह १५ विधि पूर्वक १६ ब्रह्मा ने १७ ये सब पुट (आवरण) और लोक कहेहुए प्रमाणे अर्थात् एक हजार योजन का प्रत्येक आवरण और नव हजार योजन के प्रत्येक लोक रचे ॥ ६२ ॥

त्यो रच्यो त्यों रच्यो अन्त्यानुप्रास *ख्यहू पहू अन्त्यानुप्रास.

सित१कृष्ण[1]२लोहित[2]३पीत[3] ४सर्कर[4]५सैल[5]६कांचन[6]७भू जथा,
क्रमसौँहि सप्त७हि रम्य[8] सप्त७हि स्वर्गसौँ हु घनैं जथा ॥
जिनमाँहिँ दानव१दैत्य[9]२जच्छ३रु नाग४आदि सुखी बसैं,
रवि१तापकौँ२ससि सीतकौँ२जिनमैं[10] न ल्हादहि[11]कौँ लसैं॥६३॥
जिनमैं नदी१बन२ताल[12]३पुष्कर[13]४रम्य[14] कोकिललाप[15]५व्है,
जिन[16]माँहिँ भोगनतैं अहो निस कालके खिन माप व्है ॥
जिनमैं सदा मुरँजादि[17]बाद्य१रु नृत्य२गान३बनैं रहैं,
दितिजात[18] दानव गान आदि सुता बिलासनकौँ बहैं[19] ॥६४॥
बहुभक्ष्य[20]१भोज्य[21]२रु लेह्य[22]३चोष्य[23]४रु पेय[24]५व्हाँ सुखगम्य[25] है,
गहनैं[26] अनेक प्रकार मानिमय बस्त्र बांछित रम्य[27] है ॥
पातालके[28] पुट हेठ सोहु हजार१०००जोजन जानिये,
पाताललौँहि समस्त नीरधि[29] निम्न[30] मान प्रमानिये ॥६५॥
पातालतैं तस सेस तीस हजार३००००जोजनपैं रहैं,
सुहि तामसी तनु बिष्णुकी गुन तास धीधर[31] को कहैं ॥
इहिं हेतु[32] नाम अनंत जे प्रभु व्हाँ हजार१०००फटा धरैं[33],

इन सातों लोकों में क्रम से श्वेत काली[1], लाल[2], पीली[3], रेतीली[4], पर्वतोंवाली और सोने[6] की भूमि है जो सातों ही स्वर्ग से भी बहुत रमणीक[8] हैं. ९ यक्ष १० जिन लोकों में सूर्य ताप नहीं करता और चन्द्रमा शीतलता नहीं करता अर्थात् केवल प्रकाशमात्र ही करते हैं और वहां केवल आनन्द[11] ही शोभायमान है ॥ ६३ ॥ १२ तालाब १३ कमल १४ सुन्दर कोकिलों का बोलना १६ जिन लोकों के भोग भोगने में दिन रात्रि क्षण के समान जाते हैं १७ मृदंग आदि बाजे १८ दैत्य उन विलासों को १९ प्राप्त होते हैं ॥ ६४ ॥ जहां पर भक्ष्य (दांतों से चबाकर खाया जावे वह मांस आदि) भोज्य[21] (जिसको विशेष चबाना नहीं पड़े वह हलवा आदि) लेह्य[22] (जो अंगुली से चाटा जावे वह मधु (सहत) आदि] चोष्य[23] (जो चूसा जावे वह आम्र आदि) और पेय[24] (जो पिया जावे वह दूध आदि) पांचों प्रकार के भोजन सुख से मिलते हैं २६ भूषण २७ मनोहर २८ पाताल के नीचे का आवरण पाताल से हजार जोजन गहरे समुद्र[29] का जानो ॥ ६५ ॥ उस पाताल से तीस हजार जोजन पर शेषनाग रहते हैं जो विष्णु की तामसी मूर्ति है जिसके गुण कौन विद्वान्[31] कह सकता है अर्थात् कोई नहीं कह सकता इसी कारण[32] से उनका नाम अनन्त है जो हजार फण

ते सर्व स्वस्तिक अंक अंकित दीप्यमान दिसाकरैं ।६६।
मनि मंजु फन फनपैं प्रकासित एक१कुण्डल कानसौं,
हतओज असुरनकौं करैं मदघूर्णी दिट्ठिप्रदानसौं ॥
पट१नील२हार१वदांत२हत्थ अयोग्र१लांगल२उल्लसैं,
सु किरीट माल्य सगंग ज्यौं कइलास यौं सुखमा हसैं ॥ ६७ ॥
विभु बारुनीकरि सेव्यमान रु पुष्पलौं सिर भू बहै,
लयँ काल कढि जिहिं बक्रतैं ज्वलनात्म रुद्र सबै दहै ॥
जिन्ह पुज्जिकैं मुनि गर्ग ज्योतिष१ ओ निमित्त२ पटू भये
पातालके तल वे प्रभू बनिकैं धराधर यौं ठये ॥ ६८ ॥
जब होत जृंभन सेसकै तब कंपकौं अवनी भजैं,
जिन्ह अंग मंडन हरित चंदनसौं सुगंधि दिसा रजैं ॥
तिनके तरैं बहुभेदसौं नरकाख्य१ पापिन धाम है,
तिन माँहिं रौरव१ कूटसाक्खि१ असत्य२ बादिन काम है ॥ ६९॥
पुनि भ्रूण१ गो२ गुरु३मारि स्वाँसनिरोध२ नामकमैं परैं,
थिति हेम तस्कर१ ब्रह्महा२ रु सुराप३सूकर३ मैं करैं ॥

धारण करते हैं वे सब फण नील रेखा के चिन्ह से चिन्हित हैं जो सब दिशाओं को प्रकाशित करते हैं ॥ ६६ ॥ मनोहर मणियां फण फण पर प्रकाशित हैं और कान में एक ही कुंडल है और मद से घूमती हुई दृष्टि देने से असुरों के प्रताप (पराक्रम) को हरते हैं । इनके नीले बस्त्र, स्वेतहार हाथ में लोहे का उग्र हल शोभायमान है । श्रेष्ट मुकुट और माला से ऐसी शोभा धारण करते हैं जैसे गंगा से कैलाश पर्वत ॥ ६७ ॥ वह व्यापक अगस्ति मुनि करके सेये जाते हैं और पुष्प के समान भूमि को शिर पर धारण करते हैं जिनके मुख से प्रलय के समय अग्नि निकलती है जिससे रुद्र स्वरूप विष्णु सब को भस्म करते हैं जिन (शेष) को पूजकर गर्ग मुनि ज्योतिष और शकुन शास्त्र में चतुर हुए वह प्रभु भूमि का आधार होकर रहे ॥ ६८ ॥ शेष को जब जंभाई (उबासी) आती है तभी पृथ्वी धूजती है जिनका अंग हरे चंदन से लेप किया हुआ सब दिशाओं को सुगन्धित करता है २४ नरक नामक २५ रौरव नाम नरक २६ खोटी साक्षी देनेवालों के और झूठ बोलने वालों के लिये है ॥ ६९ ॥ फिर बालक गौ और गुरु को मारकर २८ स्वास रुक जानेवाले नरक में २९ वास ३० सोना चोरनेवाला ३१ ब्राह्मण को मारनेवाला ३२ सूकर नामक नरक में यज्ञ करनेवाले क्षत्रिय वा वैश्य को मारनेवाला ।७०।

मखनिष्ठ छत्रिय४वैश्य५मारि रु भुग्गि गुरु तिय ६तत्थ३ही,
हित१ संग २ पापिनकौं करैं तिनकी हु सोहि गती कही ॥७०॥
नर जामिकामुक १ राजभीमद २ तप्तकुंभ ४ डरे रहैं,
तजि भक्त ३ बेचि ४ सती २ जरी ३ सिसु४तप्तलोह५०यथा लहैं॥
भजि पुत्रि१ पुत्रबधू २रु निंदि गुरु ३ महादिक ज्वाल६ मैं,
अरु बेचि१ वा करि दुष्ट२वेदहिं जात लोन७ करालमैं।७१
क्रोष्टा१अगम्यग२ रीतिलोपक३ चौर४ जात विमोह८ मैं ॥
द्विज१ रत्न२पितृ३सुर४ दुष्ट करि कृमिभक्ष ९ नामक कोह मैं॥
नर१ देव२पितर३न पुब्ब खाय अनिष्ट४ आचरि पाप जे,
लालादिभक्ष१० हिं रु सर टंक११हिं पाय पावत ताप जे ॥७२॥
जे सस्त्र चोरनकौं रचैं१ति कुबुद्धि विससनं ११ मैं फसैं,
अरु दान अनुचितको लहैं१ति गिरे अधोमुख१२ मैं त्रसैं॥
नक्षत्रसूचक१ या१२हिमाँहिं अयाज्ययाजक ३ जानिये,
अरु जात पूयवहाख्य१३ एक १हि मिष्टखादक१ मानिये ॥७३॥
अरु नीलिकौं २ रस ३लोन ४तिल५जंतु६ आदि बिक्रय जे करैं,

जो पुरुष बहिन के साथ भोग करते हैं, जो राज्य को भय देते हैं वे तप्तकुंभ नामक नरक में पड़े रहते हैं और शरणागतों को, पतिव्रता स्त्री को, वृद्ध को और बालक को छोडदेनेवाले व पतिव्रता स्त्री को बेचदेनेवाले तप्त लोहे की पीड़ा लेते हैं। पुत्री से और पुत्र की स्त्री से संभोग करनेवाले, गुरु की निन्दा करनेवाले महाज्वाल में पड़ते हैं और वेद को वेचने अथवा उसको विगाड़नेवाले छेदन होने को कराल नामक नरक में जाते हैं ॥ ७१ ॥ क्रोष्टा (कोसनेवाला) अगम्य में गमन करनेवाला, उत्तम आचार की रीति को लोपनेवाला, चोरी करनेवाला, विमोह नामक नरक में जाते हैं ११ माता पिता १२देवना १३ दोपल गानेवाला १४ नरक१५ अतिथि आदि मनुष्यों से १६ पहिले १७ मारण मोहनादि का अनिष्ट आचरण करैं वे लालाभक्ष नामक नरक में पड़ते हैं और बाण बनानेवाले २० मणि आदि के भेदने को टांकी वनानेवाले भी यही नरक पाकर ताप पाते हैं ॥ ७२ ॥ चोरों के लिये शस्त्र वनानेवाले २१ विशसन नामक नरक में २२ त्रास पावैं २३नक्षत्रों के फलाफल दिखानेवाले ज्योतिषी २४नहीं यज्ञ करने योग्य को यज्ञ करानेवाले इसी विशसन में पड़ते हैं और २५ अकेला मीठा खानेवाला पूयवह नामक नरक में जाता है ॥७३॥ २६नील २७विष२८लाक्ष२९बेचते हैं

मार्ज्जार७कुक्कुट८छाग९सूकर१० श्वान११पच्छि१२न जे भरैं ॥
तैं या१३हि मैं अरु माहिषिक१रंगोपजीवक२ ए जथा ॥
कैवर्त्त३सूचक४कुंडभोजक५ पर्बकामुक६ हू तथा ॥ ७४ ॥
आगारदाहक७गरलदायक८मित्रघातक९दुर्मती,
रुधिरांध१४सकुनि१० रु ग्रामजाचक११ सोमक्रीयक१२लै गती ॥
सरघाबिघातक१ ग्रामघातक२ आदि बैतरनी१५ लहैं,
बिनु अर्थ बनछेदी१ डरे असिपत्र बन १६ बिधुरा बहैं ॥ ७५ ॥
धनमत्त १ जुब्बनमत्त२ ओ मरजाद भेदक३ ए जिते,
अपवित्र४ ओ खल छद्म जीवक ५कृष्णा१७के निरई तिते ॥
औरभ्र१ओ मृगव्याध २ बन्हिद ३ बन्हिज्वालक १८ मैं तचैं,
ब्रतभंग आश्रमभंग२कर संदंस१९पीडन मैं पचैं ॥ ७६ ॥
अरु पुत्र पाठित१आदिके जन स्वानभोजन२० मैं दहैं,
इत्यादि नारक थान तत्थ रचे हजारन को कहैं ॥
निरई अमर्त्यनकों लखैं निरईनकों सुर सर्बदा,

१बिल्ली२मुरगा३बकरी४सूवर५कुत्ता६पक्षियों को पालते हैं७वे भी इसीमें पड़ते हैं ८और भैंसे से अपनी बृत्ति चलानेवाले,९रंगरेज धीवर (नाव खेनेवाले) चुगली करनेवाले, यज्ञ कुंड की बाकी रही वस्तु को खानेवाले१३ अमावस्या पूर्णमासी आदि पर्वों में स्त्री संग करनेवाले १४ घर जलानेवाले विष देनेवाले, मित्र को मारनेवाले शकुन से जीविका करनेवाले, ग्राम के सब लोकों को माँगनेवाले सोमलता आदि यज्ञ की औषधी बेचनेवाले रुधिरांध नामक नरक में जाते हैं, मधुमक्खी को और ग्राम को मारनेवाले आदि बैतरणी में पड़ते हैं विना प्रयोजन बन काटनेवाले असिपत्र नामक बन में विकलपन को प्राप्त होते हैं ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ छल से जीनेवाले२५ कृष्णा नामक नरक में जाते हैं और भेड़ पालनेवाले, शिकारी और अग्नि लगानेवाले वन्हिज्वालक नामक नरक में क्षीण होते हैं। ब्रतभंग करनेवाले और आश्रम भंग करनेवाले संदंश नामक नरक की पीड़ा में पचते हैं ॥७६॥ अपने पुत्र से ही पढ़नेवाले आदि कितने ही मनुष्य३३श्वानभोजन नामक नरक में दुःख पाते हैं, इन को आदि लेकर नरक के हजारों स्थान तहां पर रचे उन को कौन कह सकते हैं। नरकगामी सदैव देवताओं को देखते हैं कि हम ने उत्तम कर्म किये होते तो इन की भांति

मन१ बचन२ कर्म३गती त्रि३धा इम स्वर्ग १नरक १ अखर्बदा॥७७॥
इक लक्ख १०००००जोजन माँहिं या नरकांत ए२०अधलोक है,
नृप राम इम अबके प्रजेस रचे चउद्दह १४ ओक है ॥
सुनिये ऽब नारक जीव छुट्टि रु ज्योनि ज्यौं क्रमतैं लहैं,
हरि नामको महिमा तथा ग्रह आदि ज्यौं फिरते रहैं ॥ ७८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ विद्यमानकिरिराजकल्पसर्गाऽधिष्ठानचतुर्दश १४ लोकसंस्थानप्रमाणविभागवर्णनमेकविंशोऽ२१मयूखः ॥ २१ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

नरक१जीव यह भुग्गि दुख, पावत थावर१जोनि* ॥
पुनि कृमि२जलचर३पच्छि४पन,ज्यौं पसुपन५नरजोनि६ ॥ १ ॥
धार्मिकपन ७ सुरपन ८ धरि रु,मुक्ति ९ हु लहत कितेक ॥
उत्तर उत्तर ए अल्प, सहँस १००० गुनैं सुबिबेक ॥ २ ॥

रहते इसी प्रकार देवता लोग नरक बासियों को देखते हैं कि हमारे पुण्य क्षीण होजायँगे तब हम को भी वहां बास करना पड़ेगा । मन से, बचन से और कर्म से तीन प्रकार के पुण्य पाप होते है वेही अत्यन्त स्वर्ग, नरक को देनेवाले हैं । ७७ । नरक के अन्त के ३ नीचे के ४ हे राजा रामसिंह ५ प्रजापति ने ॥ अथ यहां पर नरकों की यातना और उन का स्वरूप आदि विशेष जानना चाहैं वे विष्णुपुराण के द्वितिय अंश के छठे अध्याय में देखलेवैं विस्तार के भय से हम ने यहां पर ऊपर की वार्ता छोडकर अक्षरार्थ ही करदिया है ।७८।

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वार्ध के प्रथमराशि में वर्त्तमान वाराह कल्प की सृष्टि क्रम में चौदह लोकों की आकृति (कौन कैसा है) प्रमाण (कौन कितना है) और विभाग (वंटहोने) के वर्णन का इक्कीसवां मयूख समाप्त हुआ.

नरक के जीव यह दुःख भुगत कर वृक्षादिक स्थावर योनि पाते हैं फिर कीडे, जलचर, पक्षी, पशु और मनुष्य की योनि पाते हैं ॥ १ ॥ इस मनुष्य योनि से धार्मिकपन के कारण देवयोनि धारण करते हैं और कितनेक मुक्ति भी पाते हैं । इन योनियों में उत्तरोत्तर जन्म कर्म होतेजाते हैं और ज्ञान

* थरजोनि नरजोनि अन्त्यानुप्रास.

लेत किते बिधिलौं हु बढि, बहुरि नरक बिच बास ॥
उतरत चढत समस्त इम, बिनु निज बोध बिलास ॥ ३ ॥
बिरचत प्रायश्चित्त बिधि, पापहु करि पछिताय ॥
मन्नि श्रुति १ स्मृति २ मग्गकौं, जे नर नरक न जाय ॥ ४ ॥
प्रायश्चित्तनमैं प्रथित, हरि सुमिरन सम है न ॥
कहा अनलको लघुहु कन, दुर्गम बिपिन दहै न ॥ ५ ॥
चित्तहि अकपट चाहिये, वह अनुपम रिझवार ॥
व्है प्रमादिक वा न व्है, पुनि अघ तो इम पार ॥ ६ ॥
स्वर्ग १ नरक २ दुहुँ २ ठौर सम, अबिरत इक आनंद ॥
बडो बिखय सुखतैं सु बिभु, मुक्ति इतर पद मंद ॥ ७ ॥
कर्म १ भक्ति २ अरु ज्ञान ३ क्रम ४, पंथ त्रि३बिध प्रकटाय ॥
अप्प अप्प अधिकारमैं, दिय सब द्रुहिन लगाय ॥ ८ ॥
ग्रह १ तारा २ नच्छत्र ३ गन, थप्पि कथित निजथान ॥
काल बरस १ मासा२दि क्रम, सब किय प्रकट सयान ॥ ९

॥ पज्झटिका ॥

रबिकै रथ जोजन नव हजार ९००,

हजार गुना बढताजाता है ॥ २ ॥ कितने ही बढते बढते ब्रह्मा तक पहुंचजाते हैं और घटते घटते फिर नरक में बास करते हैं इसी प्रकार अपने में ज्ञान होने और नहीं होने के कारण सभी उतरते चढते रहते हैं ॥३॥ पापकरके पछतावे के साथ वेद और धर्म शास्त्र के मार्ग से प्रायश्चित्त करते हैं वे मनुष्य नरक में नहीं जाते ॥४॥ ४प्रसिद्ध ५ अग्नि का ६ वन को ७ नहीं जलाता अर्थात् जलाही देता है ॥ ५ ॥ ८ निष्कपट ९ परमात्मा १० उपमा रहित ११ज्ञान आदि होवे अथवा न होवे परन्तु चित्त के निष्कपट होने से पाप के तो पार होजाता है ॥ ६ ॥ जिस के हृदय में ब्रह्म ज्ञान का निरन्तर आनन्द है उस के स्वर्ग और नरक दोनों ठौर समान है, क्योंकि सुख से उस व्यापक मुक्ति का विषय बडा है और उस (मुक्ति) के विना दूसरे पद मन्द हैं ॥ ७ ॥ कर्म भक्ति और ज्ञान ये तीन प्रकार के मार्ग क्रम से प्रकट करके १५ ब्रह्मा ने सब को अपने अपने अधिकार में लगादिया ॥ ८ ॥ १६ कहेहुए १७ समय का १८ उस बुद्धिमान् ब्रह्मा ने ॥ ९ ॥ रथ का ओदण जिस में घोडे या बैल जोतेजाते

ईसादंड सु द्विगुनित१८०० उदार ॥
ख ख ख नभ व्योम हय तिथि १५७०००० प्रमान,
जिहिं अक्ष कील इक १ हे सुजान ॥ १० ॥
इक १ चक्र तत्थ पचौं ५ ऽऽर एस, नृप फिरत मानसोत्तर नगेस।
तस नाभि तीन ३ पूर्बान्हँ १ ज्यौंहि, मध्याह्न २ तथा अपरान्ह ३ त्यौंहि ।११
संबत्सर १ परिबत्सर २ ललाम, इद्वत्सर ३ अनुबत्सर ४ सनाम ॥
अरु बत्सर ५ ए तस पंच ५ आर, ऋतु खट ७ प्रधि जानहु क्रम प्रकार ।१२
अब्दात्म कालमय चक्र एह, आबर्त्त अटत बिभु सब अनेह ॥
ख ख सर सर कृत ४५५०० मित अपर २ अक्ष,
देवाद्रि सिर सु थिर रहत दक्ष ॥ १३ ॥
जुग अक्ष उभय २ मित बितत जास, ईसाग्र बद्ध बिचसौं सु आस ॥
जुग अर्द्ध जुग २ हि यातैं समान, दक्खिन न बढन उत्तर न हान ।१४
[ति]नमाँहिं जु दक्खिन अर्द्ध उक्त, जहँ छंद रूप हय सप्त ७ जुक्त ॥
[ग]ायत्री १ वृहती २ नाम जानि, उष्णिक ३ जगती ४ त्रिष्टुप ५ प्रमानि ।१५
ज्यौं छंद अनुष्टुप ६ पंक्ति ७ जत्थ, स्यंदन रबि ऐंचत फिरत सत्थ ॥
उत्तर जुगार्द्ध १ अरु अक्ष २ बांधि, ध्रुव थंभि रह्यो गुन पवन संधि ।१६।

है लाहर (रथ की नाभि मे रहने की लोहे की कील) एक ही है ॥ १० ॥ रथ के एक पहिया है जिस के पांच अरे हैं ये रथ हे राजा रामसिंह मानसोत्तर पर्वत पर फिरता है उस के तीनों संध्या रूपी तीन नाभि (नाही) हैं ॥ ११ ॥ संवत्सरादि सुन्दर पांच अरे और छः ऋतु हैं येही इस रथ के पहिये की क्रम से पूठियाँ जानो ॥ १२ ॥ यह सम्वत् रूपी समय का चक्र व्यापक होकर सब समय में गोलाकार फिरता है और हे चतुर रामसिंह इसी रथ का दूसरा भाग जिस में पहिया लगायाजाता है और वह विना पहिये का है पैंतालीस हजार पांच सौ योजन का है सो सुमेरु पर स्थिर रहता है ॥ १३ ॥ दोनो अंशों प्रमाणों जितना जूड़े का विस्तार है उस जूड़े के वीच में रथ के ओढण का अर्द्ध भाग बंधा हुआ है इस कारण से जूड़े के दोनों अर्धभाग बराबर के हैं न दक्षिण में अधिक है और न उत्तर में कम है ॥ १४ ॥ इन में जो दक्षिण दिशा का आधा भाग कहागया उस में छन्द रूपी सात घोड़े जुते हुए हैं जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं वे सूर्य के रथ को खैंचते फिरते हैं और उत्तर की ओर का आधा भाग अन्त है उन को पवन रूपी रस्सी बांधकर ध्रुव थांभे हुआ है ॥ १५ ॥ १६

भुवसौं जोजन इक लक्ख१०००००भानु,
मेरु सु चउरासी सहँस८४००० मानु ॥
ध्रुव धाम पंचदस लक्ख१५०००००ग्रास,
गिरि मानसोत्तर सहँस पचास५०००० ॥ १७ ॥
सोलह हजार१६०००तँहँ मेरुसीस,
दल लक्ख५००००मानसोत्तर गिरीस ॥
इंहिं मान पवन परिबद्ध थान,जिनपैं थिर रबिरथ है सुजान ।१८।
पुहवीसौं उप्पर क्रम प्रबंध,
किय द्रुहिन सप्त७मित पवन कंध ॥ १९ ॥
ग्राबह१रु प्रवह२उद्वह३गणेय,संवह४तथा सुबह५नामधेयं ॥
परिबह६रु पराबह७सत्त७पोन,ग्रह तारा इनबिच करत गोन॥२०॥
ग्रह७चलत बाम मेरुहिं बिधाय, लैजात ग्रनिल दाहिन उडाय ॥
घटकार चक्र पर बामचाल,चलि कीट जात पच्छो उताल॥२१॥
पूरब मुख ग्रह७इम पिठ्ठि जात,इढ सोहि राजि तजि लहि दिखात ॥
गिरि कहिय मानसोत्तर सनाम,तिहिं सीस च्यारि४दिस च्यारि४धाम
दिस पुब्ब१पुरी बासव१निवास,बस्वौकसारिका१नाम तास ॥
संजमिनी२दक्खिन२समन थान,पच्छिम३सुखा३सु ग्रप्पति३प्रधान
उत्तर४बिभावनी४सोमगेह,इम पुर चतुष्क४तहँ गिनह एह ॥

१सूर्य२प्रमाण३ है ॥१७॥४आधालाख५इस प्रमाण के स्थान पर पवन संबंधा हुआ है सुजान रामसिंह सूर्य का रथ है॥१८॥इस पृथ्वी के ऊपर ब्रह्माने क्रम से मेघ के समान सात पवन बनाये जिनके नाम मूल में स्पष्ट हैं इन्हींमें ग्रह और तारे फिरते हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ग्रह मेरु को बांया रखकर जाते हैं जिन को पवन उडाकर दाहिनी ओर लेजाता है जैसे कुम्हार के फिरते हुए चाक पर बांई [चक्र की गति के विरुद्ध] ओर जाता हुआ कीड़ा शीघ्रता से पीछा जाता हुआ दीखता है ॥ २१ ॥ और इसी तरह पूरब की ओर जानेवाले ग्रह अपनी वीथी (गली) को छोडकर पीछे (पश्चिम) को जाते हुए दीखते हैं मानसोत्तर पर्वत जो पहिले कहा उसके ऊपर चारों दिशा में चार धाम हैं ॥ २२ ॥ जिनमे पूर्वदिशा में बस्वौकसारिका नामक इन्द्र की, दक्षिण में संजमिनी नामक यमराज की पुरी है जो नाश का स्थान है, पश्चिम में सुखा नामक वरुण की, और उत्तर मे विभावनी नामक चन्द्रमा की पुरी है,

तिनसौंहि प्रात१मध्याह्न२काल, सायं३निसीथ४प्रकटत नृपाल॥
इंद्र१पुर जबहि रबि छुवत आय, दिन मध्य१काल तब तहँ दिखाय॥
अरु अग्नि२कोन थल प्रथम१जाम२,
जिम उदय३काल जमराज३धाम ॥ २५ ॥
निस जाम१ सेस४कव्यादि४कोन, भासत निसीथ५तहँ बरुन५भोन॥
इक१पहर जात निस६पवन६थान, सोम७पुरनिसामुख७करत भान॥
ईसान८दिसा दिन जाम१सेस८, इम सबन समय बदलत दिनेस॥
भूवलय अर्द्ध१परदिन१दिखात, ज्यों अपर२अर्द्ध निस२फिरत जात।
होहै जब रबि आतपकेर हानि, जगदंगहिं लेहु तब दूर जानि॥
दिस तीन३रु बिचके दुव२हि कोन, रबि परसत अबिरत करत गोन।
नहि उदय१अस्त२है तस नरेस दरसन१रु अदरसन२उभय२एस॥
इम भानु उदय सुहि पूर्व आहि, सबसौं सुमेरु उत्तर सदाहि।२९।
रवि ब्रह्मसभा बिनु मेरु मत्थ, सब ठाम तपत तानि किरन सत्थ॥

इन्हीं से प्रभात, मध्यान्ह, सायंकाल और आधीरात होती है ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ पहर ॥ २५ ॥ ३ नैर्ऋत्यकोण में ४ आधीरात ५ पश्चिम में ६ वायु कोणमें ७ सायंकाल उत्तर मे करता है और यह दिन बाकी रहते सूर्य ईशान कोण में जाता है अर्थात् सायंकाल को उत्तर से चलकर प्रत्येक दिशा में प्रत्येक पहर होता हुआ प्रभात को दक्षिण में पहुंचता है और फिर सायंकाल को उत्तर में पंहुचजाता है इस प्रकार आधे भूगोल पर दिन दीखता जाता है और आधे पर रात्रि फिरती जाती है ॥ २६ ॥ २७ ॥ जब सूर्य की गरमी की हानि होती है तब सूर्य को दूर जानना चाहिये, उपरोक्त चारों पुरियों में से जिस पुरी में सूर्य जाता है उसको और उसके आगे की दो पुरियों को प्रकाशित करता है और उन आगेवाली दो पुरियों के बीच की दो कोणों को भी प्रकाशित करता है इस प्रकार तीन दिशा और दो कोणों को स्पर्श करता हुआ सूर्य निरंतर फिरता है ॥ २८ ॥ हे राजा रामसिंह इस सूर्य का न तो उदय है और न अस्त है किन्तु जहां इसके दर्शन होते हैं वही उदय और जहां दर्शन नहीं होते वह अस्त है इस प्रकार जहां से जिनको सूर्य का उदय दीखता है वही उनका पूर्व है १४ और सुमेरु तो सदैव सबके उत्तर दिशा में ही है ॥ २९ ॥ मेरु के मस्तकपर १३ ब्रह्मा की सभा है उसके बिना सब स्थानों

जब किरन कातिक बिधि पुरहु जाय, तस तेज देत तब इन्ह मिटाय ३०
उत्तर१पर काष्टा निस१अजस्र, दक्खिन२पर काष्टा संतत घस्र२॥
अष्टमि-ससिदल जिम दुव२दु१भास,
इम मिलित रहत तिमिर१रु प्रकास२ ॥ ३१ ॥
अस्त समय रबि छबि पावँ ४ अंस, पावक्क बिच प्रबिसत सुप्रसंस॥
पावक चतुर्थ ४ लवं उदय काल, पूषा बिच प्रबिसत हे नृपाल।३२।
यातैं अतिभासत निस १ कृसानु २, भासत अतीव द्युति दिवस भानु॥
इम अग्नि १ ज्योति अरु ज्योति सुज्ज२, आहुति स्वाहांत प्रदोस१पुज्ज॥
रबि१ज्योति ज्योति पावक २ कहात, स्वाहा जुत आहुति यह प्रभात२
रजनीमुख१जलबिचदिन२रहंत, लहिप्रात२निस२हु जलगृह लहंत॥
यातैंहिबिसद१जलनिस२अनेह, अरुमलिन१दिवस२बिचलसतएह
खखखख पचास कृतअंक ९४५०००० मान,
जो एक १ अहर्निस रवि प्रयान ॥ ३५ ॥
तसअंस सट्ठितम ६० सुनहु राय,

में सूर्य अपनी किरणों को फैलाकर तपता है जब कितनीक किरण ब्रह्मा के पुर में चली जाती हैं उनको ब्रह्मा का तेज मिटा देता है ॥ ३० ॥ सूर्य जब उत्तर दिशा में रहता है तब निरंतर रात्रि; और दक्षिण दिशा में रहता है तब निरंतर दिन रहता है और जिस प्रकार अष्टमी का आधा चन्द्रमा उजाले में और आधा अंधेरे में दीखता है इसी प्रकार अन्धेरा और प्रकाश मिलारहता है ।३१।अस्त समय (रात्रि) में सूर्य का चतुर्थांश तेज अग्नि में प्रवेश होजाता है और हे राजा रामसिंह उदय समय (दिन में) अग्नि का चतुर्थांश तेज सूर्य में प्रवेश होजाता है ॥ ३२ ॥ इसी कारण से रात्रि में अग्नि का और दिन में सूर्य का तेज अधिक दीखता है और इसी कारण से अग्नि और सूर्य की ज्योति, आहुति और स्वाहा अंत, प्रदोष काल में पूजनीय है ॥ ३३ ॥ सूर्य की ज्योति स्वाहा और अग्नि की ज्योति आहुति कहलाती है सो प्रभात में स्वाहा के साथ आहुति होती है । जब रात्रि होजाती है तो दिन जल में प्रवेश करजाता है और प्रभात होता है तब रात्रि जल में प्रवेश करजाती है ॥ ३४ ॥ इसी कारण से जल रात्रि को उज्वल और दिन को मलीन (काला) दीखता है, एक दिन रात्रि में सूर्य नौ करोड़ पैंतालीस लाख योजन चलता है ॥ ३५ ॥ हे राजा रामसिंह इस का साठवां भाग पन्द्रह लाख पचहत्तर हजार

खखखसरतुरग तिथि १५७५००० प्रमित आय ॥
जोजन इतेक इक १ घटिय माँहिं, अवनी रवि छेकत अटत आहिं ॥
जब रासि मकर १० दिनकर प्रवेस, तब लगत अयन उत्तर १ नरेस ॥

तिहिं भुग्गि भुग्गि पुन कुंभ ११ मीन १२,
अवि १ रासि छुवत जब जवै अधीन ॥ ३७ ॥

तादिनविषुवतगति पाय अर्क, दिन १ रत्ति २ करत सम मितिउदर्क ॥
मृग १० सौं दिनबाढतमिथुन ३ ताम, कर्कट सौं धनु लग अयन याम २
रत्ती सु बढत इहिं अंतराल, अयनन करि रबि मंथर उताल ॥

दिन १ मंथर २ तँहँ निस २ लघु २ दिनेस,
अह १ सीघ्र २ तबहि निस १ मंद २ एस ॥ ३९ ॥

परकाष्टाउत्तर १ अयनपाय, धृति १८ मित मुहूर्त्त दिन बिच बिताय ॥
लहिसार्द्धत्रयोदस १३ । ॰ ऋत्त भोग, जिहिं अग्ग लहत पुनिअस्तजोग ॥
नचत्र इते १३ । ॰ पुनि रजनि पाय, जगती २२ मुहूर्त्तकरिभुग्गिजाय ॥
व्यत्यय करि दक्खिन २ अयन एस, निस १ दिवस २ चलत जानहुनरेस

योजन पृथ्वी को सूर्य एक घड़ी में छेकता (लांघता) फिरता है ॥ ३६ ॥ सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तब उत्तर अयन लगता है और वेगं के अधीन हुआ जब मेष राशि को स्पर्श करता है उस दिन सूर्य विषुवत गति (मेष राशि में सूर्य प्रवेश करता है उस को विषुवत कहते हैं और इसी विषुवत को मध्य रेखा मानते हैं) को पाकर दिनरात्रि को बराबर करता है मकर राशि से लेकर मिथुन राशि तक दिन बढता है और कर्क राशि से लेकर धन राशि तक दक्षिण अयन है ॥ ३८ ॥ इस दक्षिण अयन में रात्रि बढती है ये अयन सूर्य के धीरे और शीघ्र चलने से होते हैं, जब सूर्य दिन में धीरे चलता है तब दिन बडे और रात्रि छोटी होती है और दिन में शीघ्र चलता है तब दिन छोटे और रात्रि बड़ी होती है ॥ ३९ ॥ उत्तर दिशा में उत्तर अयन पाकर दिन भर में अठारह मुहूर्त्त (छत्तीस घड़ी) बिताकर साढे तेरह नक्षत्र भोगकर अस्त होता है ॥ ४० ॥ इतने ही (साढे तेरह) नक्षत्र पाकर बारह मुहूर्त (चौबीस घड़ी) रात्रि भोगकर जाता है हे राजा रामसिंह दक्षिण अयन में रात्रि का इस प्रकार व्यत्यय (उलटा पलटी

लघु झख[१]१२अबि[२]१घट[३]११वृख२कछु बिसाल,
मृग[४]१०मिथुन३इमहुसौं पृथु नृपाल ॥
धनु९कर्क४दीर्घतर जुगल२एह, अलि[५]८सिंह५दीर्घतम दुहुन२देह ॥
सम उभय२तुला७कन्न्या६प्रबीन,इनसौंहि निसा१दिन२वृद्ध२हीन२
रत्ति१सु उषा[६]२रु दिन१व्युष्टि[७]१नाम,संध्या इन्ह अंतर सुपहु राम ॥
इहिं समय लरत क्रव्याद[९] आय,रबिसौं द्रुत[१०] दारुन रन रचाय ॥
मंदेह नाम रक्खसन अग्ग,दिय साप प्रजापति रिस उदग्ग ।४४॥
तुम नित्य मरहु जीवहु समस्त, इहिं साप तेहु लहि उदय अस्त॥
रबि समुख आत खावन बिचारि,रवि रक्खस मंडत तुमुल[११] रारि४५
द्विजबर तँहँ अंजलि अर्घ[१२]भूत, जुत ब्रह्म प्रणव[१३] गायत्रि पूत[१४] ॥
अर्पत[१५] निबाहि बिधि सब उदार,तिनकरि जरि रक्खस होत छार ॥
प्रथमाहुति जो सुचिहोत्र[१६] देय,रबि बहुरि दिपत तिहिं करि अमेय ॥

करके सूर्य को चलताहुआ जानो ॥ ४१ ॥ मीन[१] संक्रांति की रात्रि और मेष[२] के दिन बराबर होते हैं और थोड़ी सी वृद्धि होती है, कुंभ[३] की रात्रि और वृष के दिन समान होते हैं और कुछ अधिक वृद्धि पाते हैं मकर[४] की रात्रि और मिथुन के दिन बराबर के होकर अधिक बड़े होते हैं, धन संक्रांति की रात्रि और कर्क संक्रान्ति के दिन समान, और बहुत बड़ी वृद्धि करनेवाले होते हैं. वृश्चिक की रात्रि और सिंह के दिन अत्यन्त वृद्धि करनेवाले और समान होते हैं ॥ ४२ ॥ तुला संक्रान्ति की रात्रि और कन्या संक्रांति के दिन बराबर होते हैं और इसी तुला और कन्या संक्रांति से रात्रि की वृद्धि और दिन की हानि होती है, रात्रि का नाम उषा[६] और दिन का नाम व्युष्टि[७] है, हे राजा रामसिंह इन दोनों के बीच में सन्ध्या है ॥ ४३ ॥ इसी (सन्ध्या) समय में राक्षस शीघ्र आकर सूर्य से भयंकर युद्ध करके लड़ते हैं इन मन्देह नामक राक्षसों को आगे ब्रह्मा ने भयंकर शाप दिया था ॥ ४४ ॥ कि तुम सब नित्य मरो और नित्य ही जीवो उसी शाप को लेकर सूर्य के उदय और अस्त समय में सूर्य को खाने को आते हैं और सूर्य व राक्षस घोर युद्ध करते हैं ॥ ४५ ॥ उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ब्रह्मस्वरूप ओंकार[३] मंत्र और पवित्र[४] गायत्री सहित अर्घ युक्त[२] विधि पूर्वक अञ्जली देते हैं जिस से वे राक्षस भस्म होजाते हैं ॥ ४६ ॥ अग्निहोत्र[६] में प्रथम आहुति देते हैं उस से अपार महिमावाला सूर्य फिर प्रकाशमान होता है फिर मन्देह नामक

पुनि लहि रक्खस मदेह देह, संध्या प्रति जुज्झत इम अछेह ॥४७॥
रवि विष्णु प्रणाव बाचक तदीय, यातैं संध्या बिधि यह गरीय ॥
सावित्री१बाचक१उभय२सत्थ, लहि अर्घ भानु होवत समत्थ ॥४८॥
यातैंहि चलत जे बेद अैनं, ते संध्योपासन क्रम तजैं न ॥
रवि घातक व्है करि नहिं सुकर्म, धरनीस मुख्य इम यहहु धर्म ॥४९॥
इक१इक१मुहूर्त्त संध्या प्रमान, खिल अष्टाबिंशति२८द्यु१निस२थान ॥
पंद्रह१५निमेष काष्टाख्य१काल, जे तीस३०कला कहियत नृपाल ॥
जे तीस३०मुहूर्ताभिध१अनेहं, जे तीस३०अहोनिस इक१एह ।
रबि अर्द्ध उदय सन प्रात१काल, सुमुहूर्त तीन३परिमित नृपाल ॥५१॥
तिहिं अग्ग काल संगव२तितोहि, जिहिं तुल्य अग्गमध्यान्ह३जोहि
तस अग्ग कहत अपराह्न४ताहि, इहिं अग्ग काल सायान्ह५आहि ॥५२
दिन पंच५भाग ए सब समान, घटि बढि हु होत दु२अयन निदान
पंद्रह१५मुहूर्त विषुवत अनेहँ, सरद१रु बसंत२उभयत्र एह ॥ ५३ ॥

राक्षस देह धारण करके सायंकाल को अपार युद्ध करते हैं ॥ ४७ ॥ सूर्य विष्णु का तेज और प्रणव विष्णु का वाचक है इस से सन्ध्या विधि से सूर्य बढता है. और गायत्री इन दोनों (सूर्य और विष्णु) का वाचक है इस कारण गायत्री का अर्घ लेकर सूर्य समर्थ होता है ॥ ४८ ॥ इसी कारण से जो वेद मार्ग में चलते हैं वे सन्ध्योपासन का कर्म नहीं छोडते, और जो ये कर्म नहीं करते हैं वे सूर्य को मारनेवाले होते हैं इस कारण से हे राजा राम सिंह यह धर्म मुख्य है ॥ ४९ ॥ दिन रात्रि के तीस मुहूर्त (दो घडी का एक मुहूर्त होता है) होते हैं जिन में दो मुहूर्त तो दोनों सन्ध्या के और बाकी अठाईस मुहूर्त का दिन रात होता है पन्द्रह बार नेत्र के पल मारने में जितना समय लगै उस को एक काष्टा कहते हैं. और तीस काष्टा को हे राजा एक कला कहते हैं ॥५०॥ इसी तीस कला के समय का नाम मुहूर्त कहते हैं इन तीस मुहूर्तों का एक दिन रात होता है आधा सूर्य उदय होने से लेकर तीन मुहूर्त तक प्रात काल माना जाता है ॥ ५१ ॥ इस के आगे तीन मुहूर्त का संगव नाम क काल (समय) है इस के आगे तीन मुहूर्त का मध्यान्ह काल है मध्यान्ह के आगे अपरान्ह और अपरान्ह के आगे सायंकाल है ॥५२॥ दिन के ये पांचों भाग बराबर हैं परन्तु दोनों अयनों के कारण घटा बढी भी होजाती है मेष और तुला के सूर्य को विषुवत कहते हैं उस वसंत और शरद के समय में पन्द्रह

संबत्सरादि पंचक५बिवेक,जो कहिय सोहु जुग१बजत एक१ ॥
उत्तरकुरु सीमा सृंगवान,तस तीन३सिखर सुनियत सुजान ।५४
दक्खिन दिस दक्खिन१नाम जत्थ,उत्तरदिस उत्तर२नाम तत्थ
बिच दुहुन२सृंग जो बिषुव३नाम,सु सरद१बसंत२रबिभुक्ति धाम५५
जब उतरि अमा३०पड़िवा१लगंत,इक१क्रांति लहैं जो पुष्पवंत२ ॥
तबतैंहि लगत चउ४भेद मास,ते सौर१रु सावन२बिधि बिलास ।५६॥
पुनि चांद्र३तथा नाक्षत्र४च्यारि४,इकसत्थ प्रबतत संग धारि ॥
तबसौं इकहायन१अवधि पाय,ससिदिनसौं रबिदिन छ६घटि जाय ॥
इम निज निजमिति सन पंच५अब्द,जुग इक्क१यहहु संकेत सब्द ॥
जुगमाँहिं सट्ठि६०रबि मास जत्थ,सावन्न इकसठि६१मास तत्थ५८।
दुव२सट्ठि६२चांद्र पावत प्रकास,अरु सत्तसट्ठि६७नाच्छत्र मास ॥
बहुला३पूरब१पद जब दिनेस,राधा१६चतुर्थ४पद जो छपेस ॥५९॥
राधा१६चतुर्थ४पद दिवसराय,जो चंद्रकृत्तिका३प्रथम१पाय ॥

मुहूर्त का दिन होता है ॥ ५३ ॥ संवत्सर १ परिवत्सर २ इडावत्सर ३ अनुवत्सर ४ वत्सर ५ इन पांच वर्षों का जो विवेक कहा वही एक जुग कहलाता है. उत्तर की सीमा पर शृंगवान् नामक पर्वत है उस के तीन शृंग (शिखर) सुनते हैं ॥ ५४ ॥ उन में दक्षिण उत्तर के शृंग तो दक्षिण उत्तर के नामों से प्रसिद्ध हैं और बीच के शिखर का नाम "विषुव,, है सो शरद ऋतु और वसन्त ऋतु में सूर्य के भोगने का स्थान है ॥ ५५ ॥ जब अमावास्या उतर कर एकम लगती है और सूर्य चन्द्रमा एक ही क्रांति लेते (सूर्य चन्द्रमा का संगम होता) है तब से ही चार प्रकार के मास लगते हैं वे सौर१सावन २ चांद्र ३ नाक्षत्र ४ इन नामों से एक साथ ही लगते हैं जब से लेकर एक वर्ष पर्यंत चांद्र मास की गणना से सौर मास की गणना के छः दिन घटजाते हैं ॥ ५६ ॥ ।५७। इस प्रकार अपने अपने प्रमाणों से पांचों वर्षों का एक जुग होता है यह सांकेतिक शब्द है इस एक जुग में सौर मास के साठ महीने होते हैं वहां सावन मास के इकसठ मास होते हैं ।५८। इसी प्रकार चान्द्र मास के बासठ६२ महीने और नाक्षत्र मास से सड़सठ ६७महीने होते हैं। जब सूर्य कृत्तिका नक्षत्र के प्रथम चरण पर जाता है तब चंद्रमा विशाखा नक्षत्र के चौथे चरण पर जाता है ॥ ५९ ॥ और जब सूर्य विशाखा के चौथे चरण पर जाता है तब चन्द्रमा कृतिका के प्रथम पाये [चरण] पर जाता है यह दोनों " विषुव ,, नामक समय है

तो दुव२हि महाविषुवाख्य काल,जँहँ दत्त होत अक्षय नृपाल ॥६०॥
माघ१रु तपस्य२मधु३राध४ज्येष्ठ,५अरु सुचि६ए उत्तर१अयन श्रेष्ठ
सावन१रु भद्द२इस३उज्ज४मग्ग५,रु सहस्य६इते दक्खिन२उदग्ग ॥
बरन्यौं गिरि लोकालोक नाम,सो लोकपाल चउ४केर धाम ॥
जँहँ उभय२सुदामा१साख्यवान२कर्दम प्रजेसके सुत सुजान ।६२
अपर सु हिरण्यरोमा३तृतीय३,तिम केतुमान४जानहु तुरीय४॥
या गिरिको उत्तरसृंग जोहि,मुनिबर अगस्तिको थान सोहि ।६३
तासौं अजबीथी अवधि प्रांत,कहियत पितृयान१सु अवनिकांत ॥
अरु नागबीथिकासौं प्रमान,इत सप्त७ऋषिन लग देवयान२ ।६४।
तीन३हि भचक्रके रहन थान,उत्तर ऐरावत१सौंभिधान ॥
मझ्झ सु जारद्गव२नामधेय,बैश्वानर३दक्खिन दिस गणेय ॥६५॥
इक१इक१प्रतिबीथी तीन३तीन३,बीथी प्रति तारा त्रय३प्रबीन॥
तँहँ अश्विनी१रु भरनी२तथाहि,बहुला३यह बीथीनाग१आहि ।६६।
ब्राह्मी४मुख तारा त्रितय३पाय,गजबीथी२नामक पथ कहाय ॥
उडु तीन३पुनर्बसु७सो नरेस,ऐरावती३सु बीथी बिसेस ॥ ६७ ॥
ऐरावत१मैं त्रय३बीथिकाहि,सोहत उत्तर१दिस ए३सदाहि ॥
नच्छत्र मघा१०सन तीन३तीन,ज्येष्ठा१८लग जारद्गव२अधीन॥६८॥

जिसमें दियाहुआ हे राजारामसिंह! अक्षय होता है ॥६०॥ १ फागन २ चैत ३ वैशाख ४ आषाढ ५ आश्विन ६ कार्ती ७ मृगशिर ८ पौष ॥ ६१ ॥ ९ नीचेलिखे चारों लोकपालों का धाम है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ हे राजा अगस्त्य के स्थान से लेकर अजवीथी तक जो प्रदेश है उसको पित्रीश्वरों का मार्ग कहते हैं और नागवीथी से लेकर सप्तऋषियों तक देवताओं का मार्ग है ॥ ६४ ॥ सत्ताईस नक्षत्रों के रहने के तीन स्थान हैं, उत्तर में ऐरावत नामक, मध्य में जरद्गव नामक और दक्षिण में वैश्वानर नामक जानो ॥ ६५ ॥ इनप्रत्येक में तीन तीन वीथी (गली) हैं और प्रत्येक वीथी में तीन तीन नक्षत्र हैं जिन में अश्विनी भरणी और कृत्तिका ये नागवीथी में हैं ॥ ६६ ॥ रोहिणी आदि तीन नक्षत्रों को पाकर गजवीथी कहाती है और हे राजा पुनर्वसु को आदि ले कर तीन नक्षत्रों की ऐरावत वीथी है ॥ ६७ ॥ उत्तरदिशा में ऐरावत में यही तीन वीथी सदा शोभित हैं और मघासे लेकर ज्येष्टा तक तीन तीन नक्षत्रों की

तिनमाँहिं आर्षभी१बीथिका रु,क्रमतैं गोबीथी२अपर२चारु ॥
जारद्गवी३सु तीजी३प्रमानि,जारद्गव२मैं ए३लेहु जानि ॥ ६९ ॥
मूल१९हिसौं त्रय३त्रय३पौष्णा२७अंत,बैश्वानर३ बीथी त्रय३बसंत ॥
अजबीथी१मृगबीथी२ललाम,बैश्वानरी३हु इम तिन्ह त्रि३नाम ।७०।
त्रय३उत्तर१दक्खिन२बिषुव३चाल,इन बीथिन करि जानहु किंवाल॥
ऋषि सप्तक७सौं ध्रुव लग प्रदेस,अतिमुख्य विष्णुपद१नाम एस।७१।
जामैं ध्रुव२सबको मेढिरूप,ध्रुवमैं भचक्र ३सब गिनहु भूप॥
६मुदिर४भचक्र अंतर रहंत,मुदिरनँ बिच वृष्टि५सु थिति लहंत ॥७२॥
सब अन्न६वृष्टि बिच रहत पुष्ट,अरु अन्नमाँहिं मख७त्रि३जुगं जुष्ट॥
मखमैं सबदेवन८पुष्टि आँहिं,निबसत सुभिक्ष९सुर पुष्टिमाँहिं ॥७३॥
गंगाहु गिरत ध्रुवकौं न्हवाय,पुनि सप्त७ऋषिनसिर परस पाय॥
ससिमंडल ह्वै परि मेरु सीस,इत आत अलकनंदा महीस ॥७४॥
सत१००अब्द अग्ग कछु अधिक साथ,रक्खी जु जटा बिच भूतनाथ॥
पुनि निकसि तहाँसन धोयपाप,दियसगरसुतन६००००गति अति दुराप
जाको जल पितरन देत जोहि,करिदेत त्रि३हायन तृप्ति सोहि॥
अति दूरहु नर गंगा उचारि,त्रि३जनम समुत्थ अघ देत जारि॥६७॥

बीथी जरद्गव के अधीन है जो मध्य में है ॥ ६८ ॥ इसजारद्गव में क्रम से आर्षभीवीथी गोवीथी और जारद्गवी वीथी सुन्दर जानो ॥ ६९ ॥ मूल नक्षत्र से लेकर रेवती नक्षत्र के अन्त तक दक्षिण में वैश्वानरमें तीनबीथी बासकरती हैं जिनके अजवीथी मृगवीथी और वैश्वानरीवीथी ये सुन्दर तीन नाम हैं ।७०॥ उत्तरदक्षिण और मध्य की जो तीनों चाल हैं वो हे कृपाले रामसिंह इन्हीं बीथियों से जानो और सप्तऋषियों से लेकर ध्रुव तक का जो प्रदेश है इसका नाम विष्णुपद है ॥ ७१ ॥ आप अपनी कीलि पर फिरैं और अन्य उसके चारों ओर फिरैं उस कीलिवालेको मेढि कहते हैं, ६नक्षत्रगण ६ मेघनक्षत्रों में रहते हैं और मेघों में वृष्टि रहती है॥७२॥८ यज्ञ९तीन जुगोंमें सेवन योग्य१०है॥देवताओं की पुष्टि में सुभिक्ष [सुकाल श्रेष्ठ सम्वत्) रहता है ॥७३॥ हे राजा यह गंगा यहां आकर अलकनन्दा के नाम से प्रसिद्ध हुई ॥ ७४॥ १३ वर्ष १४ दुर्लभ ॥ ७५ ॥१५ तीन वर्ष तक ॥३ जो मनुष्य बहुत दूर से भी गंगा का उच्चारण करता है उसके तीन जन्म के इकट्ठे हुए पापों को जलादेती है ॥७५॥

यह तारापुंजहु विष्णुरूप, सिसुमार समाकृति सुनहु भूप ॥
ताकोहु कुंडलाकार काय, है नमित दच्छिणावर्त्त लाय ॥ ७७ ॥
मुख ढिगहि पुच्छ ध्रुव तास अग्ग, सु फिरावत जोइग्गन समग्ग॥
अरु ध्रुवहु फिरत सिसुमार छंद, तस अनुगत तारागनन कंद ॥७८॥
ध्रुवकेहि ग्रह१ भ२ नच्छत्र३ सर्व, बंधे समीर रज्जुन सुपर्व ॥
आवह मुख मारुत जे अकास, सुनिये प्रभु सप्त७हि थान तास ।७९।
भू१ मेघ२ मध्य आवह१ कहात, बारिद २ रबि३ अंतर प्रवह२ बात ॥
रबि३ चन्द्र४ बीच चउदह१४ रहंत. बिधु४ भगन५ बीच संवह४ बहंत ।८०

भगन५ रु खिल ग्रह६ बिच निवह५ थाव,
रु परावह६ ग्रह६ ऋषिसप्त७।७ जाव ॥

ऋषिसप्त७।७ रु ध्रुव८ परिवह७ प्रमान, ए सप्त७ पवन इम चाहुवान।
सिसुमारकोहु है हृदय जत्थ, ताराकृति श्रीहरि१ रहत तत्थ ॥
तिनके आधारहि सु सिसुमार२, याके आधार सु ध्रुव३ उदार ।८२।
ध्रुवके आधार दिनेस४ आहि, रबि धारि रह्यो जग५ बिधि निबाहि।
जगको जल लै बसु८ मास काल, पुनि देत मास चउ४ बिच नृपाल

हे राजा रामसिंह यह तारों का समूह शिशुमार चक्र की आकृति में विष्णु का स्वरूप है जिसका शरीर कुंडल के आकार दच्छिणावर्त है ॥७७॥ उस गोलाकार शिशुमार के मुख के पास ही पूंछ के अग्रभाग पर ध्रुव है जो सब तारों को फिराता है और शिशुमार के वंस में ध्रुव भी फिरता है जिसके साथ चलनेवाले तारागन और मेघ हैं ॥ ७८ ॥ ग्रह तारा और नच्छत्र पवन की रस्सियों से उत्तम गांठों के साथ ध्रुव के बन्धे हैं और आवह नामक पवन को आदि लेकर जो पवन आकाश में हैं उनके सातों ही स्थान हे स्वामी रामसिंह सुनो ॥ ७९ ॥ भूमि और मेघ के बीच में आवह नामक पवन है मेघ और सूर्य के बीच में प्रवह नामक पवन है सूर्य और चन्द्रमा के बीच में उद्वह नामक पवन, चंद्रमा और नक्षत्रों के बीच में सम्वह नामक पवन चलता है ॥ ८० ॥ नक्षत्र और बाकी के ग्रहों के बीच में निवह नामक पवन और ग्रह और जहांतक सप्तऋषि हैं उनके बीच में परावह नामक पवन है. इसी प्रकार सप्तऋषि और ध्रुव के बीच में परिवह नामक पवन है. हे चहुवाण रामसिंह इस प्रकार ये सात पवन हैं ॥ ८१ ॥ १४ तारा की आकृति १५ विष्णु १६ इस शिशुमार के आधार ॥८२॥ १७ सूर्य १८ है १९ जगत् को २० आठ मास तक

रबिसौं सुनीर ससिमाँहिं जात, अभ्रनं बिच ससिं सन एह आत॥
पवमान१हव्यबह२धूम३रूप, भाखे त्रि३धाहि जीमूत भूप ॥ ८४॥
ते मारुत प्रेरित तजत तोय, जिनकरि जगजीवन जुष्ट होय ॥
बिनु घन जो रबि छत बुंद पात, सुहि रबि नभगंगा जल गिरात
जो मानव सपरस करत जास, नरक सु न जाय यह बंदत व्यास
बहुलादि बिसम उडु रबि फिरंत, बिनु घन दिन जलकन जे परंत
ओहू नभगंगा जल असेस, दिग्गज तिहिं डारत अवनि देस ॥
ए दिव्य न्हान दुव२पुराय पूर, पहिलो यहँ सम उडु रहत सूर ॥८७॥
उत्तर पर काष्टा१तैं बिधान, दक्खिन पर काष्टा२लग प्रमान ॥
है मंडल इक सत अरु असीति१८०, रबि परम मार्ग यहअटनरीति ।
ध्रुव ऐंचत जब जुग१अक्ष२दाम, उत्तर१तब चढत कठोरधाम ॥
दुव२गुन जब ढीले देत दूर, उतरत तब दक्खिन२अयन सूर ॥८६॥

जगत् का पानी लेकर ॥८३॥ वह पानी सूर्य से चंद्रमा में और चंद्रमा से मेघों में आता है, हे राजा वह मेघ पवन अग्नि और धुऐं से बनते हैं और इन्हीं के रूप से हैं ॥ ८४ ॥ वे मेघ पवन की प्रेरणा से पानी छोड़ते हैं जिस से जगत् जीवों को सेवन (धारण) करनेवाला होता है । सूर्य के होतेहुए विना बादल बुन्दें पड़ें तो जानना चाहिये कि सूर्य आकाश गंगा से लेकर जल गिराता है ॥ ८५ ॥ उस आकाश गंगा के जल को जो मनुष्य स्पर्श करता है वह नरक में नहीं जाता यह बात "विष्णुपुराण" में वेदव्यास कहता है । कृत्तिका को आदि लेकर विषम (एकीकी) गणनावाले नक्षत्रों पर सूर्य होवे तब बिना बादल दिन में पानी की बून्दें गिरैं ॥ ८६ ॥ वह भी सब नभगंगा का जल है जिस को भूमि पर दिशा के हाथी डालते हैं ये पुण्य के समूहवाले दोनों दिव्य स्नान हैं अर्थात् ऐसी वर्षा में न्हाना उत्तम है । इन में प्रथम कहा हुआ रोहिणी आर्द्रा आदि सम (दोकीकी) गणनावाले नक्षत्रों पर सूर्य होवे तब विना बादल बूंदें पड़ैं जिस को सूर्य का गिराया हुआ आकाश गंगा का पानी जानो ॥ ८७ ॥ उत्तर दिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक एक सो अस्सी मंडल हैं वे ही सूर्य के फिरने की रीति के परम मार्ग हैं ॥ ८८ ॥ ध्रुव जब सूर्य के रथ के जूंडे और अक्ष (पहिया रहने के काष्ट) की रस्सियों को खींचते हैं तब सूर्य उत्तर को चढता है और जब उपरोक्त दोनों रस्सियों को ढीली देता है तब सूर्य दक्षिण अयन में उतरता है ॥ ८६ ॥ सूर्य के घूमने

दिन१प्रति इक१मंडलगति दिखात, त्रय३मास जात त्रय३बहुरि आत॥
अभ्यंतर उत्तर१मग्ग आहि, जो दक्खिन२बाहिर करत जाहि ।९०।
प्रतिमास१सूर्य१ढिग ऋषि१रु नाग२, जच्छे३रु गंधर्ब४हु क्रम बिभाग
अच्छरि५अरु रक्खस६जे रहंत, सुनिये तिन्ह नामहु कवि कहंत॥
मधुं१मैं रवि धाता१मुनि जु श्रेय३, सुपुलस्त्य१रु बासुकि२कादवेय॥
रथकृत३तुंबुरु४भूतस्थला५हि, अरु हेति६तत्थ क्रव्याद आहि ।९२।
बैशाख२अर्य्यमा३गिनहु बीर, ऋषि पुलह१नाग तँहँ कत्थ नीर२॥
रज्यौजा३नारद४नाम एति, पुनि पुंजिकस्थला५तिम प्रहेति६ ।९३।
अरु ज्येष्ठ३मित्र३पुनि अत्रि१ज्यौंहि, तक्षक२रु रथस्वन३जच्छ त्यौंहि
हाहा५रु मेनका६नामधेय, सुनिये तँहँ रक्खस पौरुषेय६ ॥ ९४ ॥
आषाढ४गिनहु बरुन४रु बशिष्ठ१, रथचित्र२।३नाम अग्गैं द्रिशनिष्ठ॥
हूहू४सहजन्या५रंभ६नाम, सावन५अब सुनिये सुपहु राम ॥ ९५ ॥
रबि इंद्र५अंगिरा१मुनिहु जत्थ, तिम एलापत्र२रु स्रोत३तत्थ ॥
विश्वाबसु४प्रम्लोचा५बखानि, सरपाख्य६रात्रिचर लेहु जानि ॥
रविभद्द६बिबस्वान६हि महीस, भृगु१मुनि रु संखपाल२सुअहीस।९६।
क्रम सन आपूरन३उग्रसेन४उम्लोचा५व्याघ्र६तथा धरेन[१२] ॥ ९७ ॥

के १८० मंडल ऊपर बताये जिन में प्रतिदिन एक एक मंडल में जाता है एक अयन में तीन महीने जाता है और तीन महीनों में पीछा आता है इस प्रकार एक अयन के छः मास में १८० मंडल पूरे होते हैं और ये ही छः मास दूसरे अयन में लगते हैं तब १८० के दुगने ३६० दिन होते हैं। और भीतर का मार्ग उत्तर का और बाहिर का दक्षिण का है ॥ ९० ॥ एक एक महीना प्रति सूर्य के पास ऋषि, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा और राक्षस रहते हैं उन के बंटने का क्रम सुनो, इन ऊपर बताये हुए सूर्य १ ऋषि २ सर्प ३ यक्ष ४ गन्धर्व ५ अप्सरा ६ और राक्षस ७ सातों के नाम प्रत्येक मास में यथाक्रम से जानना चाहिये ॥ ९१ ॥ ४ चैत्र मास में ५ धाता नामक सूर्य ॥ ९२ ॥ ६ अर्यमा नामक सूर्य ॥ ९३ ॥ ७ज्येष्ठ मास में मित्र नामक सूर्य॥९४॥ ८ वरुण नामक सूर्य ९ हे श्रेष्ठ स्वामी रामसिंह ॥ ९५ ॥ १० श्रावण मास में इन्द्र नामक सूर्य ॥ ९६ ॥ ११भादवे में विवस्वान् नामक सूर्य १२ हे भूपति ॥९७॥

इसं७पूषा[1]७गोतम१बहुरि आहि,जो नाग धनंजय२कहत जाहि ॥
रु सुसेन३सुरुचि४गंधर्व जच्छ,अच्छरि पुनि जो तँहँ नटन अच्छ॥९८॥
सु घृताची५रक्खस नाम बात६,सुनिये अब कत्तिय८जे सुहात ॥
पर्ज्जन्य[4]८ओ भरद्वाज१नाम,ऐरावत२सेनजिताख्य३नाम ॥ ९९ ॥
बिश्वाबसु४बिश्वाची५बहोरि,रक्खस हु सेनजित६लेहु जोरि ॥
मार्गसिर९अंसु[5]९कास्यप१सुदच्छ,नाग महापद्म२रु तार्क्ष्य३जच्छ १००
पुनि चित्रसेन४उर्बसि५प्रसिद्ध,अरु विद्युत६राक्षस एहि इद्ध ॥
तिम पोस१०भग[6]१०रु क्रतु१अह पढेमि,कर्कोटक२त्यौं रु अरिष्टनेमि
ऊर्णायु४पूर्बचित्ती५सु गान,ज्यौं स्फुर्ज६नाम तहँ जातुधान ॥
माँघ[7]११सु त्वष्टा[8]११जमदग्नि१जानि,कंबल२तस जित३धृतराष्ट्र४मानि
अच्छरि तिलोत्तमा५नचत जत्थ,निकषासुत ब्रह्मापेत६तत्थ ॥
फग्गुन१२मैं दिनकर बिष्णु[9]१२नाम,मुनि बिश्वामित्र१हु अतुलधाम
अश्वतर२सत्यजित३क्रम बिधान,गंधर्व सूर्यवर्चा४भिधान* ॥
रंभा५अरु यज्ञापेत६एहि,प्रतिमास तर्पन तोषक[10] कहेहि ॥ १०४ ॥
रबिकी नुति[11] निज निज ऋषि१रचात,बलि नद्ध[12] करत रथ नाग२ब्रात
जच्छ[13]३सु अभीषु[14] संग्रह बनात,गंधर्व४रिझावन अग्ग गात ॥१०५॥
अग्गैंहि नटत अच्छरि५असेस,क्रव्याद[15]६चलत रथ पिट्ठि देस ॥
पुनि बालखिल्य छ६अयुत६००००प्रमान,ए करत सदा नुति सावधान
अधिकार यहै बिधि रबि१हिं दिन्न,तिम चंद्र२हिं ताराधीस[16] किन्न

---

१ आश्विन में २ पूषा नामक सूर्य ॥९८॥ ३ कार्तिक में ४ पर्ज्यन्य नामक सूर्य ५ अंसु नामक सूर्य ॥ १०० ॥ ६ भग नामक सूर्य ॥ १०१ ॥ ७ माघ मास में ८ त्वष्टा नामक सूर्य ॥ १०२ ॥ ९ विष्णु नामक सूर्य ॥ १०३ ॥ १० सूर्य को प्रसन्न करनेवाले ॥ १०४ ॥ ऋषि लोग तो अपने अपने सूर्य की स्तुति करते हैं सर्पों के समूह रथ को बांधते हैं यक्ष घोड़ों की रस्सी (रास अथवा बाग) बनाते हैं गन्धर्व लोग प्रसन्न करने को आगे गाते हैं ॥ १०५ ॥ सब अप्सरायें आगे नाचती हैं और राक्षस रथ के पीछे चलते हैं इसो प्रकार ब्रह्मा के पौत्र साठ हजार बालखिल्य नामक ऋषि सावधान होकर स्तुति किया करते हैं १६ तारापति

*विधान भिधान अन्यानुप्रास:

अरुपक्ख[1] असित लगतहि उमाँहि, चउदसि१४लग पीवत[3] अमर[4] याँहि
पुनि करत अमा[5] दिन पितर पान, याँके[6] त्रि३चक्र रथ बर बिधान॥
कुँदाभ बहत दश१०हय ललाम, दुहुँ[8] ओर रहे दक्खिन रु बाम।१०८।
रबि हयन जिमहि बिधुरा बहंत, इक१बेर जुतेही कल्प अंत॥
जलसौं इन तुरगन जन्म आँहि, बिचरंत[10] उडुबीथी क्रमनिबाहि१०९
राकाँ[11] लग लै पख आवदाते[12], बिधुंकौं[13] रबि इक१करसौं[14] बढात॥
तेतीस सहँस३३०००सुर सत तिते३३००हि,
तेतीस३३बहुरि ससि[15] पिबत ए३६३३३हि॥ ११०॥
ससि जबहि कलाद्वय२खिल[16] रहंत, जलबास प्रथम तद्दिन रहंत॥
प्रबिसत पुनि बीरुध[17] ब्रातमाँहिं[18], बर्जित तब बीरुध छेद[19] आहिं।१११।
जु[20] अमादिन बीरुध छेदकार, सुहि लहत ब्रह्महत्या अपार॥
रबि किरन[21] अमा अभिधान[22] जोहि, बीरुध ताजि ससि पुनि लहत सोहि
इम दिन सु अमावास्याऽभिधान, तब करत कला इक१पितर पान
सुर तृप्ति लहत इक१पख अनेह, इक१मात पितर गन लहत एह॥

॥ १०६ ॥ १ कृष्ण पक्ष २ प्रसन्न होकर ३देवता ४च
न्द्रमा को ॥ १०७ ॥ ५ अमावास्या के दिन ६ इस चन्द्रमा के रथ के श्रेष्ठ
रचना से बनाये हुए तीन पहिये हैं. और मोगरा के पुष्प की क्रांति जैसे सु
न्दर दश घोड़े दहिने और बांये दोनों ओर बहते हैं ॥ १०८ ॥ ८ दोनों ओर
में बहते हुए सूर्य के घोड़ों के समान एक बेर के जुते हुए कल्प के अन्त तक
जुते ही रहते हैं ९ है१० क्रम का निर्वाह करके उडुबीथी में फिरते हैं-॥१०९॥
शुक्ल पक्ष[12] के प्रारंभ से लेकर पूर्णमासी[11] तक चन्द्रमा[13] को सूर्य एक किरण
से बढाता है जिस को छत्तीस हजार तीन सौ तेतीस देवता पान करते हैं
॥ ११० ॥ चन्द्रमा की जब दो कला बाकी[16] रहती हैं उस दिन जल में बास
करता है फिर वृक्षों[17] के समूह[18] में रहता है उस दिन वृक्षों का काटना[19] मना है
॥ १११ ॥ जो अमावास्या के दिन वृक्षों को काटता है वह ब्रह्महत्या को पा
ता है फिर वृक्षों को छोड़कर चन्द्रमा सूर्य की अमा नामक किरण को
है ॥ ११२ ॥ इस कारण से उस दिन का नाम[22] अमावास्या है, उस दिन च
मा की एक कला पितीश्वर पीते हैं देवता लोग पन्द्रह दिन और
एक महीना तक तृप्ति लेते हैं ॥ ११३ ॥

ते सौम्य१बर्हिषद२पितर [1]ज्ञात,पुनि अग्निष्वात्त३हु मोदपात ।
ससिकेर कला इक१खिल[2] रहैंसु, बलि[3]रवि बढात सित[4]पक्खमैं सु॥
सिसुमारमाँहिं इम [5]ससि२हु थप्पि,[6]बुध३हू बिधि थप्पिय थान अप्पि[7]
बुध रथकै [8]मारुत१[9]बह्नि२[10]जात,हय [11]कपिल रंग अष्टक८सुहात ।११५।
कवि४कै रथ बर [12]केतन१[13]बरूथ२,जुतअष्ठ८[14]भूमिभव तुरग जूथ ॥
[15]कुज५कै कांचन रथ अष्ठ८बाजि,भूजात [16]पद्मरागाभ राजि ॥११६॥
[17]गुरु६कै हु कनक रथ अष्ठ८बीति, [18]राजत छवि [19]पांडुर रुचिर रीति ।
सनि७कै सुभ [20]स्यंदन अरु तुरंग,आकास जात छबि [21]सबल अंग ।११७।
[22]सिंहीसुत८कै रथ धूसराभ,अष्ठ८हि तस घोटक भृंग आभ ॥
अष्ठ८हि हय आदिक९रथ रहंत,[23]धुंस धूम१लाख रस२रुचि बहंत॥
सबही ग्रह तारा भिन्नभास,बंधे ध्रुवकै गुन पवन पास ॥
सब उडुन रचिय सिसुमार थान,सन्न्[24]यास तास सुनिये सुजान ।११९।
उत्तानपाद सुत ध्रुव१सनाम,उत्तर हनु२याको नृपति राम ॥
अरु यज्ञ२अधर [25]हनु२धर्म३सीस३,नारायन४हिय४बिच अखिल ईस
[26]आश्विन५।६दुव२पूरबपयन५।६माँहिं,

१समूह २बाकी ३फिर ४शुक्ल पक्ष में ॥११४॥ ५चंद्रमा को ६बुध को भी ७देकर. बुध का रथ पवन और अग्नि से उत्पन्न हुआ है जिस में पीले [11]रंग के आठ घोड़े जुते हैं॥ ११५॥ शुक्र का रथ श्रेष्ठ [12]ध्वजा और [13]बरूथ (रथ कवच, पराये शस्त्रों से बचने के लिये लोहे का पड़दा) के सहित भूमि से [14]उत्पन्न आठ घोड़े जुते हैं और [15]मंगल के सोने के रथ में भूमि से उपजे हुए [16]माणक के रंग के आठ घोड़े हैं ॥ ११६ ॥ [17]वृहस्पति के भी सोने के रथ में [19]स्वेत रंग के सुन्दर आठ घोड़े शोभित हैं और शनैश्चर के शुभ [20]रथ में आकाश से उत्पन्न [21]अपने रंग के समान अर्थात् काले रंग के घोड़े हैं ॥ ११७ ॥ [22]राहु का रथ धूसर रंग का है जिस में भ्रमरों के रंग जैसे आठ घोड़े जुते हैं [23]केतु के रथ में भी धुएं की और लाख के रस की शोभा को धारण करनेवाले आठ घोड़े हैं ॥ ११८ ॥ सभी ग्रह और नक्षत्र भिन्न दीखते हैं जो पवन की रस्सी से ध्रुव में बंधे हैं सब तारों को शिशुमार में रचे हैं उन के [24]रहने के स्थान हे सुजान रामसिंह सुनो ।११९। हे राजा रामसिंह इस शिशुमार की उत्तर ठोडी [25] तो उत्तानपाद का पुत्र ध्रुव है और दूसरी ठोडी (डाढी) यज्ञ है धर्म इस का मस्तक और हृदय में सम्पूर्ण के स्वामी विष्णु हैं ॥ १२० ॥ [26]अश्विनिकुमार

दुव२सक्थि७।८अर्यमा७वरुन८आँहिं
संबत्सर९मेहन९लहत थान, अरु मित्र१०तथा आश्रित अपानै ।१२१।
बालधि११महेंद्र११अरु अग्नि१२धारि,
कस्यप१३ध्रुव१४अस्त न होय च्यारि ४॥
इम ताराग्रहमय चक्र एह, बिरच्यो बिधि जगसर्जन अनेह ॥१२२॥
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ ग्रह१
तारा२नक्षत्र३गतिस्थानविभागादिवर्णनं द्वाविंशो२२मयूखः॥२२॥
प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥
पज्झटिका
स्वायंभुव१हुव मनु पूर्व नाम, तिम इंद्र बिस्वभुक२नाम ताम ॥
सुर१याम नाम बारह१२सुभाय, रु मरीचि आदि ऋषि१सप्त७राय ।१।
मनुपुत्र१प्रियव्रत१नामधेय, उत्तानपाद२ए उभय श्रेय ॥
दूजो२मनु स्वारोचिष२उदार, सुरराज बिपश्चित२त्रिदिवसार॥ २॥
सुर२तुषित१पारावत२है२समाज, ऋषि२सप्त७सुनहु राजाऽधिराज॥
दत्तात्रि१ऊर्ज२त्यों स्तंब३प्रान४, निश्चर५रु ऋषभ६जगभद्र भौन ।३।
सप्तम७सु अर्वरीवान७श्रेष्ठ, मनुपुत्र२चैत्र१किंपुरुष२ज्येष्ठ ॥
मनु उत्तम३पुनि सुरपति सुसांति३, सुर३भेदपंच५तँहँ कमनकांति ॥

स्थान, अर्यमा और वरुण दोनों जंघा हैं संवत्सर लिङ्ग और गुदा के स्था नमें है ॥ १२१ ॥ पूंछ के स्थान पर इन्द्र, अग्नि, कश्यप और ध्रुव हैं. ये चारों कभी अस्त नहीं होते हैं. इस प्रकार ग्रह और तारोंमयी यह शिशुमार चक्र सृष्टि रचना के समय में ब्रह्मा ने रचा है ॥ १२२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके प्रथमराशि में ग्रह, तारा और नक्षत्रों की गति, स्थान और विभाग आदि के वर्णन का बाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २२ ॥

प्रथम स्वायंभुव नाम मनु, ऐसे ही विश्वभुक् नाम इन्द्र, याम नामक देवता मरीचि आदि सप्त ऋषि और प्रियव्रत व उत्तानपाद नामक श्रेष्ठ दो पुत्र हुए । आगे इसी प्रकार मनु, इन्द्र, देवता, सप्त ऋषि और मनु पुत्रों के नाम हैं सो यथाक्रम से जान लेना चाहिये ॥ १ ।२ ॥ ८ हे राजाओं के स्वा मी रामसिंह, संसार के भवन का कल्याण करनेवाले ॥३॥ १०सुन्दर कांति वाले

सिव१सत्य२प्रतर्दन३औ सुधाम४,संबर्त्ती५ए दुव२छ६।१२संख्यग्राम
रु कहे वसिष्ठ सुत सप्त७जेहि,अधिकारी ऋषिपन केर एहि ॥५॥
अज१परसु दिव्य२मुख[1] मनु तनूज[2]३,चोथो४मनु तामस४पुण्यपूज।
सिबि४इंद्रदेव४गन चउ[3]४सुजान,गन गन प्रति सत्ताबीस२७मान ।६।
ते सत्य१सुधी२हरि३अरु सुराप४,अब जानहु ऋषि४गन मति अमाप
ज्योतिर्धामा१पृथु२काव्य३चैत्र४,अग्नि ५बरकु६पीवर७ए सुमैत्र ।७।
नर१ख्याति२सांतभय३जानुजंघ४,इत्यादिक मनुके सुतन संघ[4]४॥
पंचम५मनु रैवत५बिभु५सुरेस,बिबुध[5]५नके चउ४गन तँहँ बिसेस ॥८॥
अमिताभ१भूतरय२नामधेय[6],बैकुंठ३सुमेधस४ए गणेय ॥
प्रतिगनँचउदह१४संख्याप्रमान,ऋषि५सप्त७सुनहु नय बलनिधान९
पर२ऊर्ध्वबाहु२पर्जन्य३ज्योँहि,तँहँ देवश्री४रु सुमेध५त्योँहि ॥
छट्ठो६हिरण्यरोमा६मुनीस,सप्तम७सुबाहु७ए गिनहु ईस ॥ १० ॥
वलबंधु१सत्य२संभाव्य३नाम,या मनुके आत्मज धर्मधाम ॥
स्वारोचिषसौं मुनि एहु च्यारि४,हिय लेहु प्रियव्रत पुत्र धारि।११।
मनु चाक्षुस६रु मनोजव६सुरेस, बिबुध[10]६नके पंच५हि गन सुबेस॥
भाव्य१रु पृथग्ज२साध्य३रुप्रभूत४,रु महानुभाव५पुनि पुण्यपूत।१२।
गन गन प्रति ए सुर सत्त७सत्त७,मुनि सत्त७सुनहु अब अप्रमत्त[11] ॥
बिरजा१रु सुमेधा२मधु३सुहिष्णु४,उत्तम५अतिनामा६चित्त जिष्णु॥
सप्तम७सु हविष्मानाख्य[12]७जत्थ,पुरु१ऊरु२ आदि मनुसुत६समत्थ ॥
लग्गो अब सप्तम७विद्यमान[13],सो श्राद्धदेव७रबिसुत सुजान ॥१४॥
आदित्य१तुषित२वसु३विश्व४रुद्र५,इत्यादि देव७हे गुनसमुद्र[14] ॥
इन्ह ईस[15] पुरंदर७इंद्र नाम,जो अब ऋषि७सप्तक७सुनहु राम[16] ॥१५॥

[1]आदि २ पुत्र ३ देवताओं के चार गण हैं इन में प्रत्येक गण के साथ सत्ताईस सत्ताईस देवता हैं ॥ ६ ॥ ४ समूह ५ देवताओं के ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ नामों वाले ७ इन एक एक गण में चौदह चौदह की गिनती है ॥९॥८हे स्वामी रामसिंह! ९पुत्र १०देवताओं के । ११ । सावधान होकर १२हविष्मान नामवाला १३ वर्तमान॥१४॥१४ रामसिंह का विशेषण है१५ इन का स्वामी१६हे रामसिंह॥१५॥

जमदग्नि१अत्रि२कस्यप३बसिष्ठ४,गोतम५रु भरद्वाज६हु सुनिष्ट१॥
अरु सप्तम७बिश्वामित्र७आँहिं,मनुके सुत७तीजे३राशिमाँहिं।१६।
पहिले१मनु हरि यज्ञावतार१,दूजैं २ तुषिता सुत अजित२फार३॥
सत्या सुत तीजैं३सत्य३नाम,हर्यासुत चोथैं४हरि४ललाम ॥ १७॥
पंचम५मन्वंतरमैं प्रमेयँ,संभूति भूतँ संभूत५श्रेय ॥
छट्ठे६मनु हरि बैकुंठ६देव,औरस बैकुंठा पुत्र एव ॥ १८ ॥
सप्तम७मनु अंतर अदितिजात,बामन७वतार हुव बिष्णु ख्यात।
कपिलादि१रूपँकृत१मैं करंत,रामादि२रूप त्रेता२धरंत ॥ १९ ॥
व्यासादि३रूप द्वापर३बहोरि, कल्की४कलि४उतरत लेहु जोरि॥
सप्तम७मनु अंतर यह लहंत,हुव वेद बिभार्जक तिन्ह कहंत ।२०।
पहिले१द्वापर बिच बिधि१हि व्यास,दूजे२हु माँहिं द्रुहिन२हि सुभास
कवि३तीजैं३चोथैं४गुरु४कहाय,पंचम५सबिता५व्यासत्व पाय।२१॥
छट्ठैं६सु मृत्यु६सप्तम७सुरेस,अष्टम८बसिष्ठ८मुनि व्यास एस ॥
सारस्वत९द्वापर नवन९मांहिं,अरु दसम१०त्रिधामा१०व्यास आँहिं॥
एकादस११कृत्तिसिरा११सुजान,द्वादस१२भारद्वाजाऽभिधान ॥

१श्रेष्ठनिष्ठावाले २ हैं।१६। ऊपर कहे हुए प्रत्येक मनु में एक एक अवतार विष्णु का हुआ बताते हैं पहिले मनु में यज्ञावतार,दूसरे मनुमें तुषिता के पुत्र नहीं जीतने में आवे ऐसे तुषित नामक देवताओं का समूह,तीसरे मनु में सत्या के पुत्र सत्यनारायण चौथे मनु में हर्या के सुंदर पुत्र हरि ॥ १७ ॥ पांचवें मनु में प्रमाण रूप संभूति से उत्पन्न हुए हिरण्यगर्भ, छठे मनु में वैकुंठा के औरस पुत्र वैकुंठ।१८ सातवें मनु मे अदिति से उत्पन्न वामन अवतार विष्णु प्रसिद्ध हुए सत्ययुग में कपिलदेव आदि, त्रेतायुग में रामचन्द्र आदि रूप धारण करते हैं ॥ १९ ॥ द्वापर में वेदव्यास आदि और कलियुग के अंत में कल्कि अवतार होवेगा सो भी इन में जोड़ (मिला) लो. सातवें मनु के समय में जो वेद का विभाग करनेवाले हुए उनको कहते हैं ॥ २० ॥ इस वर्तमान (वैवस्वत) मनु के समय में सत्ताईस चौकड़ी (चार युग की एक चौकड़ी के हिसाब से) बीत चुकी और यह अट्ठाईसवीं चौकड़ी है जिस के द्वापर युगों में जो जो वेदव्यास हुए उनके नाम क्रमशः मूलमें स्पष्ट हैं।९ब्रह्मा१०ब्रह्मा११शुक्राचार्य१२बृहस्पति१३सूर्यने१४व्यासपन पाया १५यमराज१६इन्द्र१७शिव१८भारद्वाजनामक

यौं अंतरिक्ष१३बर्चस्व१४व्यास, अग्गैं त्र्य्यारुणि१५नाम आसं[1] २३
रु[2] धनंजय१६रु कृतंजय१७तथाहि, अष्टादस१८व्यास ऋताक्ष१८आहि
रु भरद्वाज१९रु गोतम२०मुनीस, उत्तम२१रु बेन२२क्रम सन अधीस[3]
तृनबिंदु२३बहुरि बल्मीकि२४नाम,
मुनि सक्ति२५परासर२६पुनि ललाम[4] ॥
इन्ह अग्गैं जातूकर्ण्य२७व्यास, बेदन बिभाग किय मति[5] विलास ।२५।
अठ्ठावीसम२८द्वापर२८उतार, द्वैपायन२८हुव व्यासत्व धार ॥
इक बेदकेर करि पंच५भाग, छात्रन पढाय दिय रक्खि राग ॥२६॥
ऋक१बेद पढायउ पैल[6]१अत्थ, यजु२बैसंपायन२कौं समत्थ ॥
मुनि जैमिनि३कै हित साम३सर्ब,
अरु मुनि सुमंतु४हित दिय अथर्ब४ ॥ २७ ॥
पंचम५इतिहास पुरान५नाम, सो पढिय लोमहरखन५ललाम ॥
जिहिं सूत५महामुनि बाढ बुद्धि, श्रुति[9] पंचम५पढि किय सबन सुद्धि
दुव२छात्रन हित ऋक१पैल[10]२दीन, ते इंद्रप्रमति१बाष्कल२प्रबीन ॥
मुनि इंद्रप्रमति १कै सुत मुनीस, मंडूक२नाम हुव अवनिईसं[11] ॥२९॥
ऋकसंहिता सु दिय जनक[12] ताहि, शाकल्य३पढ्यो यासौं उमाहि ॥
शाकल्य पढाये पुनि छ६छात्र[13],
मुद्गल४।१।रु बात्स्य।५।२गोमुख६।३सुपात्र ॥ ३० ॥
शालीय७।४रु शैशिर ८।५पठन सार, अरु शाकरूणि९।६एखट६उदार
किय शाकरूणि९६त्रयसंहिता३रु, चोथो४निरुक्त४४तिंहिं रचिय चारु

१ हुए २ अरु ३ हे स्वामी रामसिंह ४सुन्दर ५बुद्धि बल से इस अठाईसवें युग में द्वैपायन मुनि व्यासपन को धारण करनेवाले हुए जिन्हों ने एक वेद के पांच भाग करके प्रीति सहित अपने शिष्यों को पढा दिये ॥ २६ ॥ ६ पैल नामक शिष्य को ७ लोमहर्षण नामक सूत ने ८ मनोहर ९ पांचवां वेद ॥ २८ ॥ १०पैल ने दो शिष्यों को ऋग्वेद पढाया ११ हे भूपति रामसिंह ॥२९॥ उस मंडूक को उस के पिता[12] इन्द्रप्रमति ने ऋग्वेद की संहिता दी, उस मंडूक से शाकल्य पढा और शाकल्य ने छः शिष्यों[13] को पढाया जिन के नाम मूल में स्पष्ट हैं इन में शाकरूणि ने तीन संहिता और चौथा सुन्दर निरुक्त रचा ।३०-३१॥

कालायन१०।१गार्ग्य११।२कथाजवारव्य१२।३,
संहितिका[1]३इन३करि त्रय३हि सारव्य ॥
ए१२इंद्रप्रमति१साखाबिभेद,है मुरव्य[2] बिहित ऋक१नाम बेद।३२।
तिमशाकरूणि९।६जो किय निरुक्त,
जिहिँ च्यारि४छात्र[3] पटु[4] पढिय जुक्त ॥
क्रौंच१रु बैतालिक२त्यौं बलाक३,चौथो४सु महामति४सत्यबाक ३३
बाष्कल१हु रचे ऋक१भेद च्यारि४,सिखये ति च्यारि४छात्रन सुधारि
हुव अष्ठ८भेद इनसौं हु फेरि. तिनमाँहिँ मुरव्य कहियत निबेरि[5]।३४।
जँहँ याज्ञवल्क्य१अरु बौध्य२जानि,माठर३रु पराशर४मुरव्य मानि
बाष्कलि२साखा ऋक[6]१नाम बेद,इत्यादिक तँहँद्वादस१२प्रभेद।३५।
साखा तेईस२३रु मूल दोय२,रु निरुक्त च्यारि४ऋक१मुरव्य होय
बैसंपायन२यजु२पढि मुनीस,बिस्तारिय साखा सप्तवीस२७॥३६॥
हुव याज्ञवल्क्य१तस मुरव्य छात्र,सततहि गुरु सासन रत सुपात्र।
मिलि मुनिन कबहु किय समस बात, जुन मेरु[7] चलहु सुहि ब्रह्मघात।
तँहँ सर्ब जुरे मत एक१धारि बैसंपायन न सके पधारि ॥
तदनंतर जावत कछुक काल,पयतलै[11] दबि जामिजँ[12] मरिय बाल।३८।
तब सोचि कहिय सिस्यन समच्छ[13],अत सब हत्यापँह[14] करहु बच्छ[15]॥
तँहँ याज्ञवल्क्य कहि मृदु उचारि,इक मैंहु सकौं हत्या निवारि ॥३९॥

---

१ संहिता २ मुख्य रचना ॥ ३२ ॥ ३ शिष्यों ने ४ चतुराई से ॥ ३३ ॥ ५ निबेड़ा (निर्धार करके) ॥ ३४ ॥ ६ ऋग्वेद में ॥ इन को आदि लेकर बाष्कलि की शाखा के बारह भेद हुए ॥ ३५ ॥ इस प्रकार ऋग्वेद में तेईस शाखा दो मूल और चार निरुक्त ये मुख्य भेद हुए और वैशम्पायन ने यजुर्वेद पढ कर सत्ताईस शाखा फैलाई ॥ ३६ ॥ वैशंपायन के मुख्य शिष्य याज्ञवल्क्य हुआ जो सुपात्र निरन्तर गुरु की आज्ञा में रहा ७. जो सुमेरु पर्वत पर (ऋषि समाज में) नहीं चलै वह ब्रह्मघाती होवेगा ॥ ३७ ॥ १० जिस पीछे ११ पग नीचे दब कर १२ बहिन का बेटा (भाणेज) ॥ ३८ ॥ १३ समक्ष (रूबरू) १४ हत्या मेटने का १५ हे बच्चाओ ॥ ३९ ॥

[illegible] पधरि छन्दानुप्रास.

क्यौं देहु सबन श्रम व्रत कराय, यह सुनत कह्यो गुरु कोप लाय ॥
खल उगालि देहु मद[1]धीत सर्व, अपमानत बिप्रन गाढ[2] गर्व ॥ ४० ॥
यह सुनत याज्ञबल्क्यहु प्रवीन, यजु निज अधीतैं[3] सब छड्डिदीनैं[4] ॥
तैं[5] रुधिरलिप्त छर्दित उम्हायं[6], खरकोन होय गय इतर खाय ।४१।
ते तैत्तिरीय१साखा प्रपन्न, अरु याज्ञबल्क्य किय रबि प्रसन्न ॥
हत्यार्पह व्रत जिन्ह चरिय ताम, ते सब हुव चरकाध्वर्यु२नाम ।४२।
यजु याज्ञबल्क्य रबिसौं अधीत,हैं बाँजि पढायउ रबि सुप्रीत ॥
पढि यौं यजु२सुद्ध अयातयाम[11], बहुछात्र पढाये आय धाम ॥ ४३॥
ते दस१०रु पंच५।१५वाजी३कहात, यजु२साखा हुव इत्यादि ख्यात
जैमिनि३हु साम३किय दुव२प्रकार,इक१सुत सुमंतु१हित दिय उदार
सुन्वान२नाम नाँती[12] द्वितीय२,दिय ताहि भाग दूजो२गरीयं[13] ॥
सुन्वानकै हु सुत हुव सुकर्म३,पितु ताहि पढाविय धन्य धर्म। ४५।
रु सुकर्म[14]३संहिता किय हजार,दुव२छात्र पढाये दुरितहार[15] ॥
तहँइक१कौशल्य हिरण्यनाभ४१पौष्यंजि५२अपर२तिम अतुलआभ
इनके हु छात्र सत पंच५००पंच५००,बिख्यात भये पढि ते अबंच[16]॥

१मुझसे पढा हुआ२बड़े गर्व से ब्राह्मणों का अपमान करता है ।४०। ३अपना पढा हुआ यजुर्वेद था जिस को ४ वान्त कर (उगल) दिया ५ उन रुधिर से लिपे हुए उगले मंत्रों को ६ उत्साह के साथ दूसरे मुनि लोग तीतर (पक्षि विशेष) होकर खागये ॥ ४१ ॥ इसी कारण से वे मंत्र तैत्तिरीय शाखा युक्त (तैत्तिरीय शाखा के नामवाले) हुए और उधर याज्ञवल्क्य ने सूर्य को प्रसन्न किया और गुरु की हत्या मिटाने के व्रत का जिन शिष्यों ने आचरण किया उन का नाम चरकाध्वर्यु हुआ ।४२। याज्ञवल्क्य ने सूर्य की तपस्या की तब सूर्य ने घोड़े का स्वरूप धारण करके याज्ञवल्क्य से वर मांगने को कहा तब उसने मांगा कि यजुर्वेद के जो मंत्र मेरे गुरु नहीं जानते हैं वे मुझे पढाइये इस पर सूर्य ने घोड़े[10] के स्वरूप से ही 'अयातयाम, नामक यजुर्वेद पढाया फिर याज्ञवल्क्य ने अपने घर पर आकर बहुत शिष्यों को पढाया ॥ ४३ ॥ यजुर्वेद की वे पन्द्रह शाखा वाजि (घोड़े) के नाम से प्रसिद्ध हैं,जैमिनि ने भी साम वेद के दो भेद किये ॥ ४४ ॥ १२ पोते को१३भारी ।४५ ।१४ सुकर्म ने हजार संहिता बनाई १५ पाप मिटानेवाली ॥ ४६ ॥ १६ नहीं ठगनेवाले

पहिले१उदीच्य सामग५००कहात,
अरु प्राच्य[1] सामग५००सु अपर२बात[2] ॥ ४७ ॥
पौष्यंजि छात्रगनमैं प्रधान,सोमाक्षि१बहुरि कुप्रिमि२सुजान
रु कुसीदी३लांगलि४नामधेय,ए बिदित भये मुनि हे अजेय॥४८॥
[3]रुहिरण्यनाभके इक्क१छात्र[4],चउबीस२४संहिता किय सुपात्र ॥
अब मुनि सुमंतु[5]४सिख्यो अथर्ब,४सु कबंध१पढ्यो तस छात्र सर्ब।
तासौं द्वि२भेद दुव२छात्र तास,पढि दर्श२।१पथ्य३।२आचार्य आस[6]॥
किय दर्श संहिता चउ४बिनीत, मोदादि मुनिन ते किय अधीत[7] ॥५० ॥
ते मोद३।१ब्रह्मबल४।२पिप्पलाद५।३।
सौल्कायनि६।४ए चउ४अप्रमाद[8] ॥
तिमपथ्य२संहिता रचिय तीन,३पढि लिय ति[9] तीन३छात्रन प्रबीन[10]
जाजलि३।१सौनक४।२कुमुदादि५।३जानि,
सोनक४।२हु करे दुव२भेद तानि ॥
बभ्रु५।१ हिं इक दीनी पुरय प्रीति,अरु [11]अपर२सैंधवायन५।२[12]अधीति॥
किय सैंधवायनहु खट६बिभेद,बिथरयो अथर्ब ४तिन्ह नाम बेद॥
नक्षत्रकल्प१[13]बलि बेदकल्प२,अरु संहितादि कल्प३हु अनल्प[14] ॥५३॥
आंगिरस४सांतिकल्प५हु उदार,आथर्वन[15]४कहियत ए प्रकार ॥
है प्रथमकल्प१[16]उडुपूजनादि१,दूजो२बैतानिक[17] ब्रह्मबादि२ ॥ ५४ ॥
तीजो३सुमंत्रबिनियोग रूप३,अभिचारकर्म४चोथो४अनूप ॥
पंचम५गजादि धृति१८सांतिकर्म,सामान्य६षष्ठ६तँहँ हे सुधर्म॥५५

१पहिलेकेपांचसौ शिष्य उत्तर साम वेद को गानेवाले और दूसरे पांचसौ शिष्यों का समूह२पूर्व साम वेद गानेवाले कहाते हैं॥४७॥पौष्यंजि नामक शिष्य के गण में हे अजेय रामसिंह, सोमाक्षि, कुप्रिमि, कुसीदी और लांगलि नामोंवाले प्रसिद्ध हुए ॥ ४८ ॥ ३ अरु ४ एक शिष्य ने ५ सुमन्तु ने अथर्ववेद को सीखा उस से उस का कबन्ध नामक शिष्य पढा ॥ ४९ ॥६ आचार्य हुए ७पढे ॥५०॥ ८प्रमाद रहित ९ ते (वे) १० निपुण तीन शिष्यों ने॥५१॥११दूसरा १२ पढा ५२ ॥१३पुनि१४घटा ॥ ५३ ॥ १५ अथर्ववेद के१६नक्षत्र १७मंत्रों की योजना

पंचम५सु लोमहरखन५मुनीस,इतिहास पुरानक५पढिय ईस ॥
आख्यान१उपाख्यान२न उपेत, सो कल्पसुद्धि३गाथो४ससेत ।५६।
तँहँ प्रथम ब्राह्म१नामक पुरान,ब्रह्मा मरीचि संबादवान ॥
सब पुव्व रच्यो जो व्यासदेव,दस सहँस१००००अनुष्टुप प्रमित एव ॥
पुनि पाद्म२सु पंचावन हजार५५०००,जँहँ कथित पुरट पंकजप्रकार
तेवीस सहँस३०००वैष्णव३तृतीय,अबकेहि कल्प पर गुन गरीय॥
पुनि शैर्व४वायवीय४हु कहात,बरनिय शिव महिमा जत्थ बात ॥
सुहि श्वेतकल्प वृत्तांत जुक्त,इहिं मान सहँस चउवीस२४०००उक्त॥
सारस्वत कल्प उदंत सार,पंचम५सु भागवत धृति१८हजार१८०००
अतिकृति२५हजार२५०००पुनि नारदीय६,
जँहँ कहिय वृहत्कल्पहि महीय ॥ ६० ॥
बरनिय चउ४पच्छिन जँहँ विधान,मार्कंडेय७ सु नवसहँस९०००मान ।
ईसानकल्पको लै उदंत, बरन्यौं बसिष्टसौं अग्निमंत ॥ ६१ ॥
नृपति सु पुरान आग्नेय८नाम,सोलह हजार१६०००मितधर्म धाम॥
रु अघोरकल्पकी बत्त आनि,रबिमाहिमा१भावी२जुत बखानि ।६२।
हंसासन मनुसौं कहिय जाहि,सुभविष्य९चउदहसहँस१४०००आहि
अरु रीतिरथांतरकल्प लाय,सावर्णिहिं नारद दिय सुनाय ॥६३॥
माहिमा वराह१बिधि२कृष्ण३कोहि,धृति१८सहँस१८०००ब्रह्मवैवर्त्त१०सोहि
जँहँ ईस अग्निमय लिंगधारि, आग्नेयकल्प बार्त्ता विचारि ।६४।
चउ४वर्ग विविध वरने ललाम,ग्यारह११सहँस११०००सु लैंग्यनाम ।
महिमा वराहको लै महंत,अवनीप्रति आक्खिय हरि उदंत ।६५।
वाराह१२नाम पुराय सु पुरान,चउवीससहँस२४०००नृप चाहुवान
तत्पुरुषकल्प अधिकार सत्थ,उत्तममाहेश्वर धर्म जत्थ ॥ ६६ ॥

१ सहित २ कथा ३ प्रमाण ४ पद्मपुराण ५ स्वर्ण कमल ६ विष्णुपुराण ७ गुणों में बड़ा ८ शिवपुराण जिस को वायुपुराण भी कहते हैं ९ प्रमाण १० वृत्तान्त का ११ भागवत १२ चार पक्षियों ने १३ प्रमाण १४ अग्निमंथ ने १५ अग्नि पुराण १६ ब्रह्मा १७ भविष्यपुराण १८ लिंगपुराण.

सो स्कांद१३कह्यो स्वामी कुमार,
इत सत१००जुत एकासी हजार८११००॥
सिवकल्प रक्खि अधिकृत अभंग, श्रीबामन महिमामय प्रसंग ।६७।
बरन्यौं बिरंचि[1] जो सुभ बिचार, बामन१४पुरान सो दसहजार१००००
रहि लोक रसातल कूर्मराज, श्रोता लहि इंद्र रु पुनि समाज ॥६८॥
बरनिय जँहँ लक्ष्मीकल्प बेर, प्रस्तावहु इंद्रद्युम्नकेर ॥
चउ४वर्ग बिहित महिमा बिचार,
सु पुरान कौर्म१५सत्रहहजार१७००० ॥ ६९ ॥
अरु सात७कल्प बार्त्ता उपेत, श्रीनारसिंह[2] महिमा समेत ॥
मनुसौं कह्यो जु मत्स्यावतार,
सो मात्स्य१६नाम सकरि१४हजार१४००० ॥ ७० ॥
जँहँ गरुडकल्प वृत्तांत जुक्त, अच्युत[3] खगेस[4] प्रतिबिहित उक्त ॥
मंजु सुपुरान गारुड१७महीस, अभिमित[5] सहस्स एगोणाईस१९००० ॥
अरु जँहँ भविष्यकल्पन उदंत, सुभ ब्रह्म अंड महिमा लसंत ॥
बरन्यौं बिधि सो ब्रह्मांड१८नाम,
बारह हजार दुव२सत१२२००ललाम ॥ ७२ ॥
अट्ठारह१८ए अघ[6]हर पुरान, श्रीव्यास कहे क्रम सन सुजान ॥
इनमाँहिं सर्ग१प्रतिसर्ग२आँहि, बंस३रु मन्वंतर४बलि निबाहि ।७३।
बंसानुबंस चरितन५उपेत[7], हुव पुराय प्रकट जग भद्र[8]हेत ॥
इतिहास महाभारत१९दहोरि, जो व्यास रच्यो पुनि प्रीति जोरि ।७४।
हरिबंस सहित इक लक्ख१०००००मेय[10],
सब ए१९मिलि पंचम५वेद श्रेय ॥
यनको प्रमान नृप लक्ख३तीन,
पुनि नवति९०सहँस सतत्रय३९०३००प्रबीन[11] ॥ ७५ ॥
श्रीव्यास छात्र[12] मुनिराज सूत, यह पढिय लोमहर्षण१५प्रभूत[13]॥

---

[1] ब्रह्माने [2] नृसिंह की [3] विष्णु ने [4] गरुड से [5] प्रमाण [6] पापों का नाश करनेवाले [7] हैं. [8] सहित [9] संसार के कल्याण के लिये [10] प्रमाण [11] हे प्रवीण रामसिंह [12] शिष्य [13] ज्ञान और ऐश्वर्य से सम्पन्न (यह मुनिराज लोमहर्षण नामक सूतका विशेषण है

खट छात्र सूत सन पढिय याहि,तिन्ह मुनिन नाम सुनिये उमाहि ७६
इक१सुमति१रु दूजो२अग्गिबर्च२,मित्रयु३रु सांसपायन४सहर्ष ॥
अकृतव्रण५पुनि सावर्णि६नाम,इन्ह दिय छ६संहिता करि ललाम७७
पुनि सूत बिरचि इनको समास,किय अपर संहिता त्रय३प्रकास॥
गत द्वापरके उतरत अनेह,इम हुव साखा गन भिन्न एह ॥ ७८ ॥

इतिश्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ वर्त्तमानबाराहकल्पाऽतीतेन्द्र१मन्वन्तराऽऽद्युद्देशनबिद्यमानबैबस्वत७यातमहायुगादिमानप्रतिद्वापरबेदबिभाजकव्यासबिबेचनसन्निहितगतद्वापराऽवसानाऽऽविर्भूतश्रीद्वैपायनावतारपञ्चधा५बेदबिभजनशिष्यप्रशिष्यस्वाध्यायसंज्ञाऽनुसारशाखा१प्रतिशाखा२ऽऽदिप्रसारणंत्रयोविंशो२३मयूखः ॥ २३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा॥

दोहा

इम रवि सुत सप्तम७लग्यो, मनु बैवस्वत७नाम ॥
इंद्र पुरंदर७ तेहि अब, बिद्यमान नृप राम ॥ १ ॥
गये महाजुग इनहुकों,बरतत सत्तावीस२७ ॥
तिन ऊपर इक१कृत१गयो,इक१त्रेता२अवनीस ॥ २ ॥

---

१ सुन्दर २ फिर लोमहर्षण नामक सूत ने ३ संक्षेप से ४ दूजी तीन संहिता ५ समय में ६ वेद और पुराणों की जुदी जुदी शाखा हुई ॥ ७८ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वाराहकल्प में व्यतीत इन्द्र मन्वन्तर आदि का कथन और वर्तमान बैवस्वत मनु के गयेहुए महायुगादिका प्रमाण और प्रत्येक द्वापर युग में वेद के विभाग करनेवाले व्यास का विवेचन और समीप में गये हुए द्वापर युग के अंत में उत्पन्न श्री द्वैपायन अवतार का पांच प्रकार से वेद का बिभाग करके शिष्य प्रशिष्यों को वेद पढाना और उन के नामों के साथ शाखा प्रतिशाखा आदि के फैलने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥

७ वर्तमान ८ हे राजा रामसिंह ९ सतयुग १० हे राजा।

तीजे१द्वापर[1] चरनके,उतरत संध्या अंस ॥
दैत्य दोय२बहुतहि बढे३बलि[2] अधीसके बंस ॥ ३ ॥
लोहित[3] पुरपति बानके[4],उभय२हि आत्मज[5]घोर ।
बिधिसौं[6] पाय अभीष्ट[7] बर,जिन्ह पकरयो अति जोर ॥४॥
धूम्रकेतु१भाई बडो,जंत्रकेतु२अनुजात[8] ॥ ५ ॥
तास नाम जंभासुर२हु,भयो भूमि बिख्यात ॥

नाराचम् ॥

बडो तनूज[9] धूम्रकेतु१दैत्यबाणके भयो,
कनिष्ठ[10] जंत्रकेतु२तास नाम जंभ२हू दयो॥
बडे बलिष्ठ दोय२ए अभंग जंग[11] रंगमैं,प्रचंडबाहु दंड त्यौं अखर्ब[12] उग्र[13] अंगमैं
बिडाल[14]नैंन घोरबैन लंबमान नासिका,
रू[15] जीह[16] तालु मध्य सांद्र[17] नीलता[18] प्रकासिका ॥
कठोर उत्तमांग[19] रोम सल्लकी[20] सूल से,
प्रबाल[21] लाल गोधि देस[22] भौंह केस थूलसे ॥ ७ ॥
कुदाल दंत जालकी कराल नील राजिका[23],
बपा[24] बिलास चिक्कनी महाकुगंध भाजिका[25] ॥
बराहतुंड[26] कूट[27] मुंड ओ करोटि[28] संबसी[29],
कृपान[30] ज्यौं भयान भेस भ्रूलता प्रलंबसी ॥ ८ ॥
कपोल[31]नैंन लोल[32] ए पिसंग[33] रंगमैं खसैं,
प्रचंड बात पातसे निसर्ग सास निक्खसैं ॥

१द्वापर के तीसरे चरण का सन्ध्यांश उतरते समय२बलि राजा के वंश में ३ शोणितपुरके पति४बाणासुर के ५ पुत्र ६ ब्रह्मा ने ७ इच्छानुसार८छोटा भाई ९ पुत्र १० छोटा ११ रणभूमि१२बहुत१३दारुण कर्म करनेवाले१४बिल्ली जैसे नेत्र १५ और १६ जीभ और तालुवे मे१७अत्यन्त१८नीलेपन को प्रकाश करनेवाले १९ मस्तक२०सेली (सेह) के सूलियों जैसे २१ मूंगे के समान लाल २२ ललाट २३ पंक्ति २४ मेद (मींजी) अथवा रोमकूप (बालों के छिद्र) २५ पात्र २६ सूवर जैसा मुख २७ घण (ऐरण) के समान मस्तक २८ कपाल २९ वज्र जैसी ३० खड्ग जैसी भयानक ३१ गंडस्थल (गाल) ३२ चपल ३३ पीले

पलासे[1] कास दंतवासे[2] धूम्र रूप सृक्कगी[3],
बहंत बिस्त्र[4] स्वास संग भेद भेद चिक्कणी ॥ ९ ॥
रु[5] संकु[6] कान लंबमान छिद्र अद्रिखोहसे[7],
चकोर एंत[8] अंसे[9] जे छुयें कठोर लोहसे ॥
बिसाल[10] लाल कंधरा कणीरमालकों[11] धरें,
रु मुच्छभाग सुल्व[12] राग आकपोल[13] उब्भरें ॥ १० ॥
रु मेचकाभ[14] जीह मध्य लीह[15] लाल लग्गई,
अमर्ष[16] खानि दिठ्ठि ठानि ज्वाल जानि जग्गई ॥
अकुंठ[17]भाव बढ्ढिकी[18] जु दढ्ढिका[19] कटारसी,
पिशंगपानि[20] थाप जानि वज्रके प्रहारसी ॥ ११ ॥
सुतिक्ख पानि रूकहू[21] कडार राग अद्दरें,
रु सेतबाहु मूल जे गढूल कांतिकों धरें ॥
अतीव लंब रीढकाख्य[22] अस्थि पिठ्ठि उप्पयो,
मनों द्विसैल[23] संधि मध्य तालदंड[24] रुप्पयो ॥ १२ ॥
बडे पिचंड[25] बच्छ ओ गंभीर[26] तुंदकूपिका[27],
उदुंबराभ[28] रोमपंति तोर घोर रूपिका ॥
कटिप्प्रदेस[29] थूलमें बतीस३२चाप[30] सप्तकी[31],
महाभयान जास शिंजितेन[32] भूमि तप्तकी ॥ १३ ॥

---

१ ढाक के पत्तों जैसे २ होठ ३ होठों का किनारा ४ आमगन्धी (कच्चे मांस की गन्ध) ५ और ६ काले और लम्बे कान ७ पर्वत की गुफा जैसे ८ चकोर पक्षी के समान चित्र विचित्र ९ कंधे १० लंबी और लाल गरदन ११ कणीर वृक्ष के फूलों की माला को धारे हुए १२ तांबे के रंग के समान १३ कपोलों पर्यन्त उठे हुए १४ काले रंग की जीभ में लाल १५ लकीर लगी हुई १६ क्रोध की खान १७ तीक्ष्ण १८ बढी हुई १९ दाढ २० उन पीले हाथवालों की २१ तीखे नख भी पीले रंग को धारण करते हैं २२ रीढक नामवाला हाड (पीठ में बांसे की हड्डी) २३ दो पर्वतों की संधि में २४ ताड वृक्ष का दंड २५ पेट और छाती २६ गहरी २७ नाभी २८ तांबे की क्रांति जैसी २९ मोटी कमर में ३० धनुष की ३१ मेखला ३२ जिसके शब्द से.

बिसालसत्थि[1] थंभ लाल मेघनील पिंडुरी[2],
सपीतबेस जाँनुदेस[3] अंघ्रि[4] नोह ज्यों छुरी ॥
प्रचंड[5] पाद स्याम रंग लंबमान अंगुली,
बडे बिरूप भ्रात द्वै२करैं त्रि३लोक व्याकुली॥१४॥
समस्तधर्म बेदकर्म जग्य जाप उत्थपैं,
रचैं अनेक बिघ्न तेन[6] भारक्रांत भू तपैं ॥
त्रिसूल सक्ति[7] चाप[8] रोप[9] खग्ग[10] हेति[11] संग्रहैं ।
कुठार[12] दंड भिंदिपाल[13] प्रास[14] चर्म[15] निब्बहैं ॥ १५ ॥
रहैं अजस्त्र[16] रातिदीह सीधुपान[17] मत्त जे,
मनुष्य मेदलालसी[18] अधर्म अध्व[19] रत्त जे ॥
जितैं जिनैं चलैं तितैं त्रि३लोक हंतकार[20] है,
सुरेंद्र[21] आदि दै[22] ऋभून बेदना[23] अपार है ॥ १६ ॥
उभै२बलिष्ट दैत्य जे हिमाद्रि[24] प्रांतमैं[25] गये,
बिरिंचि[26] हेत साहसी तपोविधानमैं ठये ॥
पचीस२५बर्ष बैठिकैं अहारकंदको लयो,
रु बीष२०बर्ष तिष्ठमान[27] साकपत्र भक्खयो[28] ॥ १७ ॥
बिधाय[29] फेरि देह कष्ट इक्क१पादसौं रहे,
कबंधपान[30] जीवयौंन[31] बर्ष च्यारि४निब्बहे ॥
अँगुष्ठ अग्र इक्क१सौं रहे बहोरि तिष्ट जे,
अहारहीन अब्द[32] इक्क१उग्रकष्टनिष्ठ[33] जे ॥ १८ ॥

१लालथंभा के समान लंबी जंघा२नीले मेघ के समान पिंडुलिये३विशेष पीले पन के साथ घुटने ४ पगों के नख मानों छुरी जैसे ५ भयंकर पग ६ उस भार से पीडित होकर भूमि तपने लगी ७ बरछी ८ धनुष ९ बाण १० खड्ग ११ ये शस्त्र १२ कुल्हाडा १३ गोफण १४ भाला १५ ढाल धारण करते हैं १६ निरंतर १७ मद्य पान मे १८ मनुष्य के मांस की चाहना करनेवाले १९ अधर्म के मार्ग में रत २० नाश करनेवाले २१ इन्द्र आदि २२ देवताओं को २३ पीडा २४हिमालय पर्वत के२५देश में २६ ब्रह्मा के२७खड़े रहकर२८खाया २९ करके ३० जल पान से ३१ जीनेवाले ३२ वर्ष ३३ उग्रकष्ट में है निष्ठा जिन की

दुहून२यौं तपोबिधानकैं हृषीक[1] जित्तये,
सह्यो निदाघ[2] सीत ओ पचास५०अब्द बित्तये ॥
भये द्वि२बंधु अस्थि[3]सेस प्रानमात्र ही रह्यो,
यहैं बिरिंचि[4] जानि बैंन भक्तपाल निब्बह्यो ॥ १९ ॥
गये बिरिंचि दुक्ख देखि धूम्रकेतु जंभको,
कियो सु सेक[5] आस्य[6]पैं कमंडलुस्थ[7] अंभको[8] ॥
समाधि जग्गि नेत्र नीर सीत पर्स[9]तैं खुले,
समीप जानि अष्ट८कर्ण[10] स्वांत[11] मोद संकुले[12] ॥ २० ॥
दुहून२अंध्रिकंज[13]मैं किरीट अप्पनैं दये,
प्रणाम्य दंडलौं परे रु बिश्वबीज[14] बिन्नये[15] ॥
मिले हिरण्यगर्भ[16] सो भलोहि भागधेय[17] है,
दयालु दिट्ठि देखिकैं हमैं समस्त श्रेय[18] है ॥ २१ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

नमोऽस्तु सर्वरेतसे नमोऽस्तु हंसगामिने,
नमस्तथाऽष्ट८कर्ण ते बिरिञ्च सर्गकामिने ॥
नमोऽस्तु बेदगर्भ ते नमोऽस्तु शुद्धचेतसे,
नमोऽस्तु सात्त्विकाय ते नमोऽस्तु बिश्वरेतसे॥२२॥
नमोऽस्तु ते चतुर्मुखाय साक्षिणे स्वयंभुवे,
नमोऽस्तु लोकपाल सर्वबीज ते जगत्सुवे ॥
नमो नमो नमः पुराणगाय कञ्जजाय ते,

१इन्द्रियों को २ गरमी३ हड्डियां ही हैं बाकी जिन के४ब्रह्मा ने५ सिंचन ६ मुख पर ७ कमंडल में भरे हुए ८ जल से ९ ठंढे पानी का स्पर्श होने से १० ब्रह्मा को ११मन में१२भर गया१३चरण कमल में१४ब्रह्मा को१५विनय किया१६ ब्रह्मा१७ भाग्य१८कल्याणकारी॥ हे सब के कारण रूप, हंसबाहन, आठ कानवाले, सरजनहार, सृष्टि की कामनावाले, वेद है गर्भ जिस के, शुद्ध चित्तवाले सतोगुणवाले, संसार के उत्पादक ॥२२॥ चार मुखवाले, सब के साक्षी, अपने आप उत्पन्न होनेवाले, लोकपाल, सब के बीज, जगत् का पिता, पुराण से गाया हुआ

नमो नमो नमो नमो नमो बिराडजाय ते ॥ २३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा॥

तुही अखंडज्योतिरूप ब्रह्मनामतैं लसैं[1],
तुही समस्तलोकमाँहिं पंचभूत ह्वै बसैं ॥
तुही मृगांक[2] चंडभानु[3] बीतिहोत्र[4] ह्वै रहैं,
तुही कृतांत[5] अंप्पती[6] सुरेस[7] गुह्यकेस[8] हैं* ॥ २४ ॥
तुही त्रिकालजाल[9] जो अजंस्त्र[10] घस्त्र[11] रैन हैं,
तुही कृपाल लोकपाल लोककाल[12] ऐन हैं ॥
सुनी बिरंचि[13] यामकार दोय २बंधु बिन्नती,
कह्यो प्रसन्न होय पुत्र लेहु इष्ट[14] जो मती[15] ॥ २५ ॥
सुनैं इतीक धूम्रकेतु१जंत्रकेतु यौं कह्यो,
दुरांप[16] देखिबो तुम्हैं हमैं जु इष्टतैं लह्यो ॥
चवैं[17]ऽब[18] इष्ट[19] आपसौं सुनौं सु चित्त धारिकैं,
अपत्यमार्ग[20] जात जे हमैं सकैं न मारिकैं ॥ २६ ॥
द्वि२बाहुसौं[21] मरैं न ज्यौं लरैं न कोउ गज्जिकैं,
मरैं न जंग बिष्णुसौं जुरैं न इंद्र सज्जिकैं ॥
अहो यहै दयालु पुत्रपाल इष्ट दीजिये,
सुनी बिरंचि[22] हू कह्यो तथास्तु सर्ब कीजिये ॥ २७ ॥
सरोजभू[23] अदेय[24] दै गये निकाय[25] अप्पनैं,
रु[26] धूम्रकेतु१जंत्रकेतु२इष्ट[27] लै बढे घनैं ॥

कमल से उत्पन्न, विराट् रूप, अजन्मा तेरे अर्थ नमस्कार होवे ॥ २३ ॥
१ शोभायमान २ चन्द्रमा ३ सूर्य ४ अग्नि ५ यमराज ६ वरुण ७ इन्द्र ८ कुबेर ९ भूत, वर्तमान, भविष्यत्काल की जाल है सो १० निरन्तर ११ दिन रात बनी रहती है १२ संसार के काल का घर भी तुही है १३ ब्रह्मा ने १४ वरदान १५ तुम्हारी मति होवे सो १६ दुर्लभ १७ कहते हैं १८ अब १९ वांछित २० योनि से उत्पन्न होनेवाले २१ दो हाथों वालों से २२ ब्रह्मा ने भी २३ ब्रह्मा २४ नहीं देने योग्य देकर २५ स्थान २६ अरु २७ वरदान

*रहे सहे अन्त्यानुप्रास

रहैं प्रमत्त जे अदेव[1] बंधिकैं[2] चमू अनी,
फिरैं पताल स्वर्गलौं करैंहि चाह अप्पनी ॥ २८ ॥
जुरे बकारि इंद्रसौं वहै तऊ न अंकुर्‌यो[3],
रहे सिटाय आदितेय[4] कोपि जंग नाँ जुर्‌यो ॥
बसैं समस्त लोकपाल भागधेय[5] भेट दै,
लख्यो कहो न एरिसो[6] जु फोजबंधि फेट दै ॥ २९ ॥
भये अजेय[7] बाणके तनूज[8] दोहु२दुर्मती,
दई थकाय भक्ति धर्म जज्ञ जापकी गती ॥
न बिष्णुपैं मृदंगताल झल्लरी झनंक ठहै,
न साधुभक्तके सरीर संख चक्र अंक[9] ठहै ॥ ३० ॥
न शैव बैष्णवी कथा न बिप्र बेद उच्चरैं,
न अग्निहोत्र अध्वरादि[10] कर्म गुप्त हू करैं ॥
समाधिनिष्ठ[11] जो मुनीस दिट्ठि दोहुकी परैं,
उठाय ताहि देत दुष्ट अर्द्धचंद्र[12] दै गरैं ॥ ३१ ॥
फुरैं जु नैक सप्ततंतु[13] धूम हू निगाहमैं,
बिगारि देत ताहिपैं चलैं न मूढ राहमैं ॥
गिनैं न उच्चनीच जे जथेच्छ[14] मत्तसे[15] रहैं,
करैं अनीति यों अनेक सर्बभूतकों[16] दहैं ॥ ३२ ॥
करैं प्रछन्न भूमिभोन[17] बेद पाठ बिप्रके,
भखैं तिन्हैं निकासि ज्यों बराह[18] कंद छिप्रके ॥
तथापि बान रुद्दये[19] करो न तात[20] एरिसी[21],

१दैत्य २सेना की अणी बांधकर ३नहीं उठा ४आदिति का पुत्र(इन्द्र) ५कर(खिराज) ६ ईदृश ऐसा ७ नहीं जीतने योग्य ८ बाणासुर के पुत्र ९ चिन्ह १० यज्ञादि ११ समाधि में निष्ठा रखनेवाले १२ गले में अर्धचन्द्र [गलहूपा. अंगूठा और तर्जनी अंगुली को फैलाने से अर्ध चन्द्र की आकृति बनजाती है सो] देकर १३ यज्ञका धुआं भी १४ अपनी इच्छानुसार १५ उन्मत्त के समान १६प्राणियों को १७ भुवारों [तहखानों] में १८ भूमिकन्द को सूवर निकाल लेवे जैसे १९बाणासुर ने रो रो के २० हे पुत्रो २१ ऐसी ॥

सु पै गिनी न सिक्ख होत दुष्ट देय केरिसी ॥३३॥
बशिष्ठ नंदिसौं कह्यो पवित्र थान होनकौं,
कर्यो करैं सु चिंति जज्ञ देस दोस धोनकौं ॥
रहैं सुगुप्त दोनिमैं प्रचंड दुष्ट जानिकैं,
तऊ तिन्हैं दयो बिगारि अर्बुदादि आनिकैं ॥ ३४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ वर्त्तमानवैवस्वतमनुगतकथनपूर्वकाष्टाविंशतितमद्वापरान्तसमयबाणदैत्यतनूजधूम्रकेतु१जम्भा२तङ्कपतनवशिष्ठमखविध्वंसनं चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा

दोहा

समये कुहवि पुरायणे,उत्तंको वइरेण ॥
काही गड्डं दीहरं, णाआ विइआ णेण ॥१॥
हयावाणपज्जाउलं,रसायलं काऊण ॥
पत्तो गोअमतणकुडिं,कुंडलाइँ घेत्तूण ॥ २ ॥

वशिष्ठ ने नन्दी नामक पर्वत को आबू स्थान के पवित्र करने को कहा था उस को याद करके उस देशके पाप धोने को मुनि यज्ञ किया करता था परन्तु उन दुष्टों को प्रचंड जान कर पर्वत की गुफा (खादरी, खोलों) में रहता था तो भी उन असुरों ने अर्बुद पर्वत पर आकर यज्ञ को विगाड़ दिया ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में वर्तमान वैवस्वत मनु के गयेहुए कथन पूर्वक अठाईसवें द्वापर के अन्त समय बाण दैत्य के पुत्र धूम्रकेतु और जम्भ के भय पटकने और वशिष्ठ के यज्ञ का नाश करने का चौबीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २४ ॥

किसी पहिले समय में उत्तंक ने तक्षक से कुंडल पीछे लेने के कारण बज्र से पृथ्वी खोद कर बड़ा भारी गढ़ा करवाया था उस मार्ग से तक्षक का वासस्थान पाताल में जान लिया ॥१॥ महाभारत के आदि पर्व की कथानुसार इन्द्र के घोड़े की गुदा से उत्पन्न हुए अग्नि और धुएँ से रसातल अर्थात

समये कापि पुरातने उत्तङ्को वज्रेण ॥ अकारयत् गर्त्तं दीर्घं नागा विदितास्तेन ॥ १ ॥ हयापानपर्याकुलं रसातलं कृत्वा ॥ प्राप्तो गोतमस्तृणकुटीं कुण्डले गृहीत्वा॥२॥

॥ गीई ॥

उत्तंकखणिअगड्डे तत्थ वसिट्ठस्स णन्दिणी सुरही ॥
वेरुलिअहरिअदुव्वं गहिरे पडिआ कहंपि ढुण्ढन्ती ॥ ३ ॥
मोत्तुं किर णिअगाविं मिच्चुमुहत्तो अयाहविअरत्तो ॥
भवणीरहितरिआए सुरसरिआए थुई कया इसिणा ॥४॥
हे सयरउत्ततारिणि उच्छारिणि पावपव्वयाणवले॥
भत्तविवइसंघारिणि सुहकारिणि णामिमं पसिअ गङ्गे॥५॥
इअझाणणवरिवरयातालाच्चहुबीअपायडं अम्बा ॥
तारेहीअविलत्तोवसिट्ठहेणुंपवाहपूरेहिं ॥ ६ ॥
जीबपडणदुहभीरूमन्तूणसगड्डपूरणंगिरिणा ॥
तुहिणायलंवसिट्ठोएक्क१सुअंमागहीअसेलवइं ॥ ७ ॥
णेणातयाअणचलणोदिणणोइसिणोसुवोसुओणन्दी ॥

तक्षक आदि सर्पों को व्याकुल करके कुंडल लेकर गोतम की तृणकुटी को आया ॥ २ ॥ उत्तंक के खोदे हुए उस खड्डे में वशिष्ठ मुनि की धेनु नंदिनी वैदूर्य मणि सदृश हरी दूब को ढूंढती हुई किसी प्रकार गिरपड़ी ॥ ३ ॥ तब अपनी गौ को उस मृत्यु रूप अगाध गढ़े में से छुड़ाने के लिये वशिष्ठ ऋषि ने संसार रूप समुद्र को पार करने में नाव रूपी गंगा की स्तुति करी ॥ ४ ॥ हे सगर के पुत्रों को उद्धार करनेवाली, पाप के पहाड़ों को दूर भगानेवाली, भक्तों की विपत्ति को दूर करनेवाली और सुख करनेवाली गंगे मुझ पर प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ इस प्रकार ध्यान मात्र से बर देनेवाली गंगा ने प्रकट होकर उस गढ़े को अपने प्रवाह से भरकर उस नन्दिनी धेनु को तिराकर बाहर निकाल दी ॥ ६ ॥ अपनी धेनु के निकल आने पीछे फिर भी इस में कोई जीव पड़कर दुःख पावेंगे इस भय से कायर वशिष्ठ ने विचारा कि किसी पर्वत से यह गढ़ा पूरण हो सकता है इस कारण पर्वतराज हिमाचल से उस का एक पुत्र मांगा ॥ ७ ॥ वशिष्ठ के मांगने से हिमाचल ने चरण रहित नन्दी

गीतिः॥उत्तंकखातगर्ते तत्र वसिष्ठस्य नन्दिनी सुरभि ॥वैदूर्यहरितदूर्वागभीरे पतिता कथमपि ढुण्ढन्ती ॥३॥ मोक्तु किल निजगवी मृत्युमुखादगाधविवरात्॥भवनीरधितर्या सुरसरितः स्तुति कृता ऋषिणा ॥४॥ हे सगरपुत्रतारिणि उत्सारिणि पापपर्वताना ननु ॥ भक्तविपत्तिसहारिणि सुखकारिणि ननु मयि प्रसीद गंगे॥५॥इति ध्यानमात्रवरदा तदा भूत्वा प्रकटमम्बा ॥ तारयामास विलात् वशिष्ठधेनु प्रवाहपूरैः ॥ ६ ॥ जीवपतनदु खभीरुर्मत्वा स गर्तपूरणं गिरिणा ॥ तुहिनाऽचल वशिष्ठ एक सुत मार्गयामास शैलपतिम् ॥ ॥ तेन तदा

अब्बुअणाआरूढो विप्पेण स आणिओ अवडनिअडं ॥ ८ ॥
णांपाडिऊण सेलं सयललोगहिरो विपूरिओ गड्डो ॥
तम्मिगिरिस्सणिमग्गं सयलङ्गं णवर नक्कमवसिट्ठं ॥ ९ ॥
अद्दीअब्बुअणामो स हुवीअतहिंमुणी महंकाही ॥
वाणादइच्चतणूआ विद्धंसंतस्सकरइरेदोण्णि ॥१० ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

पज्झटिका

अब सुनहु बंस उद्भव[1] उदंत[2],मुनि अग्गभये गोतम महंत ॥
बहुछात्रनं[3] दिय बिद्याबिसेस, बेदादि रु निजकृत[4]न्यायबेस ॥११॥
उत्तंक नाम इक दयित[5]छात्र, सु रह्यो बिसेस सेवत सुपात्र ॥
इकदिवस जटानिज पलित[6] जानि,अबगुरु सनमंगिय सिक्खआनि॥
गुरु कहिय जाहु तबकहिय एहु,लखि उचितदाच्छिनाकछुकलेहु ॥
गुरुकहिय जाहु हैं हम प्रसन्न, हुव शिष्य तदपि साहस[7] प्रसन्न[8] ॥ १३ ॥
गोतम तब आक्खिय ध्रुवहि[9] देय,तो देहु अहल्या[10] कथित प्रेय ॥
गुरुनारि निकट तब छात्र[11]जाय, बुल्ल्यो अभीष्ट[12] कछुलेहु माय[13] ॥१४॥

नामक अपना पुत्र दिया उस पर्वत को वशिष्ठ अर्बुद नाम नाग पर रख कर उस खड्डे के पास ले आया ॥ ८ ॥ उस पर्वत को उस गढ़े में डालकर वह सारा गढ़ा पूर दिया और वह पर्वत भी सारा डूबगया केवल नासिका मात्र बाहर रही ॥ ९ ॥ वह पर्वत अर्बुद नाम से प्रसिद्ध हुआ. उसी पर्वत पर वशिष्ठ ने यज्ञ किया उस को बाण दैत्य के पुत्रों ने विध्वंस कर दिया ॥१०॥ हे राजा रामसिंह अब तुम्हारे वंश १ उत्पन्न होने का २ वृत्तान्त सुनो ३ बहुत शिष्यों को ४ अपना बनाया हुआ न्याय ५ प्यारे शिष्य उस उत्तंक ने एक दिन अपनी जटा को ६ श्वेत हुई जानकर गुरु से सीख मांगी ७ हठ प्रास ८ निश्चय ही ९ देना है तो १० अहल्या (गोतम की स्त्री का नाम है) के कहने अनुसार जो उस को प्रिय होवे ११ शिष्य १२ जो तुमको वांछित होवे १३ हे माता

गतचरणो दत्त आत्मये स्वीय सुतो नन्दी ॥ अर्बुदनागाऽऽरूढो विप्रेण आनीतोऽअवटनिकटम् ॥ ८ ॥ न. पातयित्वा शैलं सकलो गम्भीरोपि पूरितो गर्त ॥ तस्मिन् गिरेर्निमग्न सकलाग केवल नक्रमवशिष्टम् ॥ ९ ॥ अद्रिरर्बुदनामा स बभूव तत्र मुनिर्मखमकारयत् । बाणदैत्यतनूजो विध्वस तस्य कृतवन्तौ द्वौ ॥ १० ॥

तब कहिय अहल्या याहि[1] आहु[2],सौदास भूप पँहँ बच्छ[3] जाहु ॥
रानी मदयंती नाम तास,श्रुति[4] धरत दिव्यकुंडल सुभास[5] ॥ १५ ॥
ते देहु आनि यह सुनत बिप्र,मग्गन[6] जुग२ कुंडल चलिय छिप्र[7] ॥
पुब्बहि[8] वसिष्ठ सन[9] पाय साप,सौदास भयो रक्खस[10] सपाप ॥१६॥
सो करत दुर्ग[11] कानन[12] निवास,दिन पंच५ न रक्खत असन[13] आस ॥
दिन छट्ठ६[14] परैं निज दिट्ठि जोहि,सत्वर[15] गहि खावत सत्त्व[16] सोहि ।१७।
रानीहु तास पतिधर्म सत्थ,पतिसौं कछु दूरहि रहत तत्थ ॥
आवै न कबहु धव[17] दिट्ठि[18] एह,इक गह्वर[19] रहि कट्टै[20] अनेह ॥ १८ ॥
आयउ जब आसिर[21] असनकाल[22],उत्तंक गयउ तब तँहँ नृपाल[23] ॥
खावन वह दौरिय लखत याहि,तब कहिय प्रयोजन बिप्र ताहि ।१९।
ऐहौं दै कुंडल मैं बहोरि,तब लेहु खाय अब देहु छोरि ॥
कौणप[24] तब अक्खिय[25] सत्य कोल,मंगहु तो कुंडल है अमोल ।२०।
इहिँ ओर जाहु इक१ अद्रि[26] आँहिँ,मम नारि रहत तस बिवर[27] माँहिँ
जँचि[28] कुंडल तासन[29] जाय देहु,दुंत[30] मोहि तृप्ति पुनि आय देहु ॥२१॥
सुनि बिप्र खोजि रानी निकाय[31],सौदास निदेस[32] सु दिय सुनाय ॥
तब भूखन कुंडल जुगल२ जोहि,सौदास दिवायउ मोहि सोहि ।२२।
प्रत्यय[33] जब चाहिय नृपति नारि,बलि[34] गो द्विज[35] रक्खस[36] पँहँ बिचारि।
अक्खिय वह प्रत्यय चहत आज,सो देहु मिलै[37] तब इष्ट राज[38] ।२३।
क्रव्याद[39] कहिय यह कहहु जाय,जिन बिनु नहिँ नारी सुगति पाय

---

१ उत्तंक को २ आओ ३ हे वत्स (पुत्र) ४ कानों में ५ श्रेष्ठ कांतिवाले ६ मांगने को ७ शीघ्र ८ पहिले से ही ९ से १० राक्षस ११ दुर्गम १२ बन में १३ पांच दिन तक तो भोजन की आशा नहीं रखता १४ छठे दिन १५ शीघ्र १६ जो जीव हाथ आजावे उसी को १७ पति की १८ दृष्टि में १९ गुफा में २० समय २१ राक्षस के २२ भोजन का समय २३ हे राजा रामसिंह २४ राक्षस ने २५ कहा २६ पर्वत २७ गुफा २८ मांगकर २९ उस से ३० शीघ्र ३१ रानी के रहने का स्थान ३२ आज्ञा ३३ निश्चय (सबूत) ३४ पुनि ३५ ब्राह्मण ३६ राक्षस के पास ३७ वांछित पदार्थ ३८ हे राजा ३९ राक्षस ने

तिन कोन अतिक्रम[1] करत दच्छे[2],यह कहहु लेहु द्विज इष्ट अच्छ ॥२४॥
उत्तंक कहिय जब यहहि ताहि,बानैं[3] तब कुंडल दिय उमाहि[4] ॥
रु कहिय जो करिहो आन चुक,तो हरिहै तच्छक[6] दंदसूक[7] ॥२५॥
बिस्मित[8] द्विज गो पुनि नृपति पास,बुल्ल्यो किम रानिय किय बिसास
नृप कहिय कहांई एह तत्थ,करि बिप्र बिमुख नहिं लहत अत्थ ॥२६॥
ज्यौं मैं वसिष्ठ किय अप्रसन्न,तो जातुधान पुद्गल प्रपन्न ॥
रानी प्रति यह प्रत्यय[11] निदान[12],यातैंहि मिल्ले कुंडल अमान[13] ॥२७॥
अद्यावधि[14] हो यह साप मोहि,छुटिगो सु प्रश्न[15] समुझात तोहि ॥
यह कहत लह्यो निज रूप राय[16],उत्तंक चल्यो तब गुरु निकाय[17] ।२८।
मग माँहिं भूख करि पीड्यमान[18],इक बिल्व[19] लख्यो फल पक्वान[20] ॥
कुंडल सु बंधि निज अजिन[21] अंत,तल[22] रक्खि चढ्यो श्रीफल[23] तुरंत ॥
अवसर यह तच्छक पाय आय,लैकैं द्रुत[24] कुंडल गो पलाय[25] ॥
उत्तंक हु तस्कर[26] परत दिट्ठि[27],पकरन तिहिं उत्तरि लागिय पिट्ठि[28] ।३०।
दक्खिन दिस धावत[29] नागराज[30],बिप्रहिं ढिग आवत लखि सवाज[31] ॥
बिल लहि इक कुहरित[32] करि प्रवेस,पाताल गयो वह पन्नगेस[33] ।३१।
जो द्विजगति अनुचित बिवर[34] जानि,लग्गो तिहिं खोदन दंडपानि[35] ॥
ज्यौं भू खुदी न त्यौं सोकलीन,यह देखि इंद्र द्विज इष्ट[36] कीन ।३२॥
प्रविसाविय निज पवि[37] तास दंड,खनि[38] घोर[39] अवट[40] किय तिहिं अखंड

---

१ उल्लंघन २ चतुर ३ उस रानी ने ४ हर्ष युक्त होकर ५ इस की रक्षा में चूक करेगा तो ६ तक्षक ७ सर्प ८ आश्चर्य करता हुआ ६ राक्षस के शरीर को १० प्राप्त हुआ ११ सबूत १२ निश्चय होगया १३ जिन के समान दूसरा नहीं अर्थात् अनुपम १४ राजा ने कहा कि अबतक १५ तुम्हारे प्रश्न का उत्तर समझाने से १६ उस राजा ने १७ गुरु के घर को १८ पीडित हुआ १६ बील का वृक्ष २० पके हुए फलों का २१ चर्म वस्त्र के कोने में २२ भूमि पर २३ बील के वृक्ष पर २४ शीघ्र २५ भागा २६ चोर पर २७ दृष्टि २८ पीछे लगा २६ दौड़ता हुआ ३० सर्पों का राजा तक्षक ३१ वेग के साथ ३२ छिद्र करके ३३ नागराज ३४ उस ब्राह्मण ने छिद्र में जाना अनुचित जानकर ३५ हाथ में दंड लेकर ३७ ब्राह्मण की वांछा को सिद्ध किया ३६ उस ब्राह्मण के दंड में अपना वज्र प्रवेश करादिया ३८ खोद कर ३६ भयंकर ४० खड्डा

बडवामुख लौं[1] अतुलित बिथार,किय पद्धति[2] भूतन[3] भीतिकार[4] ।३३।
तिहिं मग्ग होय पायाल पत्त[5],उत्तंक लख्यो इक बाजि[6] तत्त ॥
बपु सित[7] बह बुल्ल्यो सुनहु बिप्र,धमि मम अपान[8] फल लहहु छिप्र[9]।
उत्तंक करत तब सुहि निदेस[10],[11]कंचमाल कढ्यो हयसौं बिसेस ॥
[12]तानैं बडवामुख व्याप्त किन्न,सब नाग[13] भये तिहिं खेद[14] खिन्न[15]।३५।
अग्गैं करि तच्छक[16]कौं समस्त[17], दै कुंडल लग्गे पयन त्रस्त[18] ॥
उत्तंक हु नागन[19] सिक्ख[20] अप्पि,मन सोच्यो काल[21]१रु देस२मप्पि ॥
तब अश्व कह्यो मैं आश्रयास[22],आरुहि[23] मुहिं पहुँचहु गुरु निवास[24] ॥
अर्चन[25] मम तैं किय बहुत अग्ग,यातैं सहाय तव किय उदग्ग[26] ॥३७॥
उत्तंक चढ्यो तब तिहिं[27] तुरंग,आयो गुरु आलय[28] धरि उमंग ॥
उत सतत[29] अहल्या लखत राह[30],जिम जिम बिलंब तिम सपनचाह[31]
इतनैं बिच पहुँच्यो बिप्र तत्थ,अप्पे[32] कुंडल गुरुनारि अत्थ[33] ॥
उत्तंक पाय तासन[34] असीस,बंदे[35] बहोरि गोतम मुनीस ॥ ३९ ॥
तिन कहि कृतार्थ[36] दिय सिक्ख ताहि,आयउ गृहस्थ होन सु उमाहि
करि हित बिबाहि बिधि जुत कलत्र[37],संपन्न[38] करे संतान१सत्र[39]॥४०॥
[40]पबिके प्रभाव इम पूर्व[41]काल, बिल भो जहँ[42] अर्बुद तहँ बिसाल
[43]नृप राम सोहि तुम कुल निमित्त, अब अर्बुद संभव धरहु चित्त ॥

१पाताल पर्यन्त २मार्ग ३प्राणियों को ४भय करनेवाला ५पाताल में पहुंच कर ६घोड़ा ७श्वेत शरीरवाला वह घोड़ा बोला कि ८मेरी गुदा में फूंक मारकर ९शीघ्र १० उतङ्क ने उसी आज्ञा का पालन किया ११ उस घोड़े में से केसों की जाली निकली १२ जिस ने पाताल को ढक लिया १३ सर्प १४ उस की खेद से १५ क्षीण १६तक्षक को १७सब १८कांपते (डरते) हुए १९सर्पों को २०सीख देकर २१उस देश काल को तोलकर अर्थात् उस समय उस देश से पीछा जाने का विचार किया २२ तब उस घोड़े ने कहा कि मैं अग्नि हूं २३मुझ पर चढ़कर २४गुरु के स्थान पर २५ पूजा २६ उच्च २७ उस घोड़े पर २८ गुरु के घर २९ निरन्तर ३० मार्ग ३१ आप देने की ३२ दिये ३३ अर्थ ३४ उस गुरु की स्त्री से ३५ नमस्कार किया ३६ तू कृतकार्य हुआ यह कहकर ३७ स्त्री ३८ सम्पत्ति सहित ३९ सन्तान और यज्ञ किये ४० वज्र के प्रभाव से ४१ पहिले ४२ जहां अब आबू पर्वत है वहां बड़ा भारी बिल हुआ ४३ हे राजा रामसिंह वही वि

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे प्रथम१राशौ बलभेदिभिदुरभेदितमहागर्त्तोद्गमनिगदनंपञ्चविंशो२५ मयूखः ॥ २५ ॥

इति श्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणाचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजेन्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञया गीर्वाणगीरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्त्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजामिश्रणसुकविसूर्य्यमल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे स्तव्यस्तवमङ्गलादिहड्डेन्द्रराजधानीसूचनप्रबन्धप्रारम्भनिदानसङ्क्षिप्तचण्डासिवंशोद्देशविद्यमानब्रह्मायुर्गतप्रकृतिपुरुषस्वभावविद्यमानवराहकल्पसर्गसमर्थनचतुर्द्दश१४लोकरचनारचनवैवस्वतमन्वन्तर७गताऽऽगतकालविवेचनपञ्चधा ५ विभक्तवेदविटपिशाखाप्रतिशाखाऽऽदिसूचनगतद्वापराऽवसानदैत्येश्वरबाणसूनुद्वय२वशिष्ठमखविध्वंसनमहीध्राऽर्बुदाऽधिष्ठानमहागर्त्तोद्गमनिगदनं पञ्चविंशति२५मयूखमयः प्रथमो१राशिस्समाप्तः१।

अस्मिन्राशौ भूर्तच्छन्दांसि अनुष्टुपूछन्दांसि २८६५

॥ श्रीगोवर्द्धनो जयति ॥

ल तुम्हारे कुल के उत्पन्न होने का कारण हुआ अब आबू के होने की कथा को चित्त में धारण करो ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के प्रथमराशि में इन्द्र के वज्र से खोदेहुए बड़े खड्डे के कथन का पचीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥

श्रीमान् समस्त राजाओं के मुकटों में रहे हुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द (पुष्प रस) रूपी मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण कमल से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओ के मस्तक जिन्हों ने, बुन्दीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दाय भाग मे जिन के अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महाराव राजेन्द्र श्रीरामसिंह देव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति "भुजङ्गो गणिकापतिः" ॥ इति हैमः काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिया) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान के

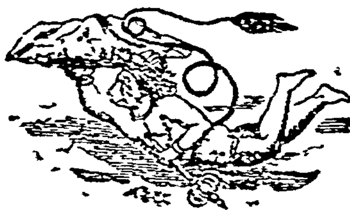
चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारणगण के सूर्य, चण्डीदान के पुत्र मिश्रण शाखा के श्रेष्ठकवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में, स्तुति करने योग्यों (देवता आदि) की स्तुति रूप मंगल आदि, हाडा क्षत्रियों के इन्द्र की राजधानी का सूचन, ग्रन्थ प्रारम्भ का कारण, संक्षेप से चहुवाणों के वंश का कथन, वर्तमान ब्रह्म की आयु के गये हुए वर्ष, प्रकृति पुरुष का स्वभाव, वर्तमान वाराहकल्प की सृष्टि का समर्थन, चौदह लोकों की रचना की रचना, सातवें वैवस्वतमनु के गत और आनेवाले समय का विवेचन, पांच प्रकार से विभाग किये हुए वेद रूपी वृक्ष की शाखा प्रशाखा आदि का जनाना, गये हुए द्वापरयुग के अन्त में दैत्यों के राजा बाण के दो पुत्रों द्वारा वसिष्ठ के यज्ञ का नाश होना आबू पर्वत की स्थापना, वड़े खड्ड की उत्पत्ति के कथन का पच्चीस मयूखों का प्रथमराशि समाप्त हुआ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर वदान्य सौदा बारहठ चारणकुलाऽवतंस शाहपुराप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृंगारनामजनन्या प्राप्तप्रतवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराज्ञाकारिभिरात्मजैः केसरीसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना कविकोविद निजमातुल कविराज श्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोऽऽषादि सद्गुण सम्पन्नविद्वच्छिरोमणि परमवैष्णव रामानुजसम्प्रदायिन श्रीमदाचार्य सीतारामाऽऽह्वयगुरोरासादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव रघुवंशीय राणोत्तशाहपुराधिप राजाधिराजोपटांकि नाहरसिंहवर्म आर्यदिवाकर रविकुलशिरोरत्न रघुवंशीय गुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीश सज्जनतादि सद्गुणसम्पन्न महाराणा सज्जनसिंहवर्म ; तथैव तदुत्तराधिकारिमहाराणा फतहसिंह वर्म ; भानुवंशभूषण राष्ट्रकूटकुलावऽवतंस मरुधराधिप जोधपुरेश राजराजेश्वर महाराज यशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धातीवदानमान स्वर्णाञ्चितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवरबारहठ कृष्णसिंहेनविरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां प्रथमो राशिः समाप्तः ॥

भाषानुवाद—श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सौदा बारहठ शाखा के चारणकुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र " गोपुरं हि प्रतोल्यां च नगरद्वारयोरपि " इति महीपः । * (शाहपुरा के राजद्वार पर नेग " दस्तूर " लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता औनाड़ (अनम्र) सिंह के पुत्र ने, पण्डिता शृंगार

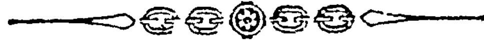
* यह प्रमाण निर्णयसागर प्रेस मुद्रित दशकुमार चरित के १४५ पेज मे टीका की प्रथम पङ्क्ति मे है

वाई नामक माता मे पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जि॰ सने श्रेष्ठ शिक्षा पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह और जोरावरसिंह करके मिटगई है आगामी समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिस की, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से समृद्धिवाले विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुजसम्प्रदायी श्रीमन् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिस ने, सूर्य वंश में पैदाहुए रघुवंशी राणावत शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवी(खिताब)वाले नाहरसिंह वर्मा और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंश के मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों से समृद्धि वाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा और उन्हीं के समान उन के उत्तराधिकारी (उन की गद्दी पर बैठनेवाले) महाराणा फतहसिंह वर्मा और सूर्य वंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान पूज्यपन (बड़प्पन) और पैरों में सुवर्ण के बनेहुए भूषण आदि सत्कार जिसने, मिलगया है पढी हुई विद्या को सफल करने का समय जिस को, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिस ने. शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में प्रथमराशि समाप्त हुआ ॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥



॥ श्रीगणेशजी ॥

अथ द्वितीयराशिप्रारम्भः ॥



तत्र पूर्वं कविर्निजजनकस्तवरूपमङ्गलमाचरति ॥

गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

वन्देऽहं निजपितरं चण्डीदानं द्वयेभकेसरिणम् ॥
तत्त्वमसीतिविवेकं संसारस्थोऽपि योऽदधान्नित्यम् ॥ १ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

स्वारण्यक बन मध्य नगर है अब सिरोहि जँहँ ।
द्विज उत्तंक खन्यौं सु रह्यो [1]अतिकाय [2]अवट तँहँ ॥
अतुल घेर आकास घोर अंधार [3]पृथुल घर ।
[4]आबडवा मुख निम्न लखत भव भूत भयंकर ॥
गिरि [5]अर उपेत भूचक्र कै मनहुँ दैव यह [6]नाभि किय ।
सकुटुंब तत्थ कोउक समय ऋषि वसिष्ठ आश्रम रचिय ॥ २ ॥

अथ द्वितीय राशि के आरम्भ में पहले कवि (ग्रन्थकर्त्ता सूर्यमल्ल) अपने पिता की स्तुतिरूप मङ्गल का आचरण करते हैं ॥ मैं द्वैतमतरूपी हाथी के लिये सिंह समान मेरे पिता चण्डीदान को नमस्कार करता हूं जिसने संसार में रहने पर भी सदा ब्रह्मज्ञान धारण किया ॥ १ ॥ स्वारण्य नामक वन जहां अब सिरोही नगर है उसमें उत्तंक नामी ब्राह्मण का खोदाहुआ बडा भारी खड्डा था वह बहुत ही आकाश को घेरेहुए घोर अन्धकार का बडा घर पाताल तक गहरा देखते ही संसार के प्राणियों को भय देनेवाला मानों परमेश्वर ने पर्वतरूपी अरों सहित पृथ्वी रूपी पहिया के यह नाभि (लोहर रहने का काष्ठ जिस को नाही कहते हैं) बनाई हो. तहां पर वसिष्ठ ऋषि ने कुटुम्ब सहित रहने के

तँहँ वसिष्ट कै धेनु नाम नंदिनि प्रसिद्ध अति ।
कामधेनु[1] तनया सु मन्नि पसुधर्म रीति मति ॥
चरन गई बन मध्य फिरत हेरत बर सांद्वल[2] ।
बज्र खनित[3] तिहिँ गर्त[4] बीच परि हुव बिहीन बल ॥
समयांत[5] धेनु पहुँची न यह जानि अक्षमाला[6] कहिय ।
हेनाथ सुनहु अद्यावधि[7] हु नाई[8] आश्रम नंदिनिय ॥ ३ ॥
जायोदित[9] सुनि बचन चले मुनिवर तिहिँ हेरन ।
ब्रह्मदण्ड[10] निज हत्थ सत्थ समुपेत[11] छात्रगन[12] ॥
उत्तरीय[13] निज अंस[14] पावरी पयन बिराजत ।
परसत जँहँ जँहँ पुहवि[15] पाप तँहँ तँहँ परिभाजत ॥
द्विजराज जाय कांतार[16] इम नंदिनीति[17] कहि टेर दिय ।
यह सुनत धेनु निज थान रव[18] अवट[19] मध्य हंभार किय ॥ ४ ॥

दोहा॥

क्रंदन[20] कातर मुनि सुनत, धेनु खात[21] गत जानि ॥
गंगा नुति[22] बिरचनलगे, बहुधा कित्ति बखानि ॥ ५ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

नमस्ते नमस्ते नमो देवि गङ्गे नमो जह्नुजे पूतपाथस्तरङ्गे ॥
नमस्ते कपर्दासने भर्गजाये, नमस्ते ज्वलत्सम्बरे मूलमाये॥६॥
नमः सर्वसूरर्च्यजङ्घालनीरे, नमो मुक्तिसोपानभूते ऽच्छतीरे ॥

लिये किसी समय आश्रम रचा था ॥ २ ॥ १ कामधेनु की बेटी २ हरा घास ३ वज्र से खोदाहुआ ४ खड्डा ५ गाय के आने का समय बीतजाने पर ६ वशिष्ट की स्त्री का नाम है ७ अबतक ८ नहीं आई ९ अपनी स्त्री का कहाहुआ १० वशिष्ठ की सिद्ध लकडी का नाम है ११ लिये १२ शिष्यगण १३ उपवस्त्र (उत्तरासण) १४ कन्धे पर १५ भूमि १६ वन में १७ नन्दिनी यह कहकर १८ शब्द १९ खड्डे में २० रोने का कायर शब्द २१ खड्डे में पड़ीहुई २२ स्तुति ॥ नमस्ते इति ॥ हे देवि! गंगा जन्हु की पुत्री, पवित्र जल की तरंगवाली जटा का आसनवाली, महादेव की स्त्री, उज्ज्वल जलवाली, महामाया ॥ ६ ॥ सबको उत्पन्न करनेवाली, पूजनीय है अतिवेगवान् जल जिसका ऐसी मोक्ष की सीढी रूप सुन्दर तटवाली तेरे अर्थ नमस्कार है. तू यहां पर रक्षा कर हे इन्द्र की शक्ति लक्ष्मी

अवेह त्वमैन्द्रीरमोमादिभूते नमस्तेऽघसंहारिके भास्वदूते ॥७॥
नमस्ते सुपर्वापगे शुद्धभावे, नमस्तेऽस्तु संसारपाथोधिनावे ॥
नमस्ते तटिन्न्युत्तमे तुङ्गकूले नमोऽस्त्वम्ब ते सागरोद्धारमूले ॥८॥
नमस्ते स्वभक्ताय कैवल्यदायै, नमो हेलयैवाऽघशैलापहायै ॥
नमस्ते सुवर्णाऽद्रिकूटस्खलन्त्यै, नमो मेनकेशादगादुच्छलन्त्यै।९।
नमो जन्मभेत्र्यै नमो विष्णुपद्यै, नमोऽनूननेत्र्यै नमो नाकनद्यै ॥
इमां नन्दिनीमुद्धराऽशु त्वमार्ये, नमस्ते नमस्तेऽस्त्वकूपारभार्ये।१०।
नमोस्तूर्मिचञ्चद्ध्रुवस्थानमीने,नमस्तारकामण्डलाऽऽस्फाललीने॥
नमस्त्र्यध्वगे भर्म्मभूभृत्पताके, नमः पीतसिक्पत्तडित्वद्बलाके।११।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ महागर्तनन्दिनीपतनवशिष्ठगङ्गास्तवनं प्रथमो१मयूखः ॥ १ ॥ आदितः षड्विंशः ॥ २६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

दोहा॥

सुनि निलिंपतटिनी सुजस, मुनि वशिष्ठसौं एम ॥

पार्वती आदि में होनेवाली पापों का संहार करनेवाली, देदीप्यमान है प्रवाह जिसका ॥ ७ ॥ ऐसी देवगंगा शुद्धभाववाली, संसाररूपी समुद्र की नाव, उत्तम नदी ऊंचे किनारोंवाली, माता, सगर वंश का उद्धार करने का मूल ॥८॥ अपने भक्तों को मुक्ति देनेवाली लीला से ही पापरूपी पहाड़ का नाश करनेवाली, सुमेरु पर्वत से वहनेवाली हिमालय पर्वत से उछलनेवाली ॥ ९ ॥ जन्म को काटनेवाली, विष्णु के पद से निकलीहुई बडी भारी नदी, स्वर्गनदी, हे आर्या तू शीघ्र इस नन्दनी को निकाल. हे समुद्र की स्त्री ॥ १० ॥ तरंगों से उज्ज्वल आकाश को नापनेवाली, आकाश मण्डल को लांघकर छिपजानेवाली, स्वर्ग भूमि पाताल तीन मार्ग को जानेवाली, सुमेरु पर्वत की ध्वजा, पीताम्बर धारण करने से बिजलीवाले मेघ में बुगले के समान शोभित है चरण जिसके ऐसी तुझ गंगा को नमस्कार है ॥ ११ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके द्वितीय राशिमें बडे खड्डे में नान्दनी के पडजाने पर वशिष्ठसे गंगा की स्तुति करना रूप पहिला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ ॥ प्रथम से छब्बीस मयूख हुए ॥

१देवनदी ने.

प्रकट अवट[1] मध्यहि भई, श्रोत[2] बिरचि सह प्रेम ॥ १ ॥
तिँहिँ प्रबाह सुरभी[3] तिरत, अतिसुख निकसी आय ॥
गंगा सागरकौँ गई, सरिता रूप सुभाय ॥ २ ॥
तबतैं बाशिष्ठी नदी, यहै अवनि तल आस[4] ॥
ताहि लोक सब आधुनिक[5], बरनत भाखि बनास ॥ ३ ॥

पट्पदी

अब वशिष्ट धेनुहिँ निकासि चिंताप्रपन्न[6] हुव ।
अतिगभीर[7] यह अवट दुक्ख भवभूत लहहिँ ध्रुव[8] ॥
जो परिहै इहिँ मध्य तास बहुरि न निष्कासन ।
यह पूरन जिम होय तिमहिँ करिये बिचार मन ॥
इम सोचि बिप्र कछु ध्यान धरि कारि बिल पूरन चिंत मन ।
जान्यौं वशिष्ठ हिमवांन[9]सौं पुत्र जचहिँ धरि अर्थिपन[10] ॥ ४ ॥
हिमगिरि अंगज[11] लाय खात[12] पूरौं यह दुर्गम ।
इम बिचारि मुनिराज गये गिरि पँहँ अति बिक्रम ॥
आवत पिक्खि[13] वसिट्ठ[14] समुह गिरि धाय समेनक[15] ।
पाद्य १ अर्घ्य २ मधुपर्क ३ आदि पूजे रहि इकटक ॥
पाँवोढ[16] ढारि बैठारि तिन्ह इम उदगद्रि[17] हु अरज किय ।
जिहिँ काज गेह मम आगमन कहहु नाथ जो इष्ट जिय ॥ ५ ॥
मुनि बसिष्ठ तब कहिय सुनहु उदगद्रि चित्त धरि ।
स्वारण्यक बन मध्य अवट उल्बण[18] अगाध परि ॥
सुरपति के आदेस जाय दंभोलि[19] खन्यौं वह ।
भुजग लोक उत्तंक गयो जँहँ होय अग्ग अहँ[20] ॥
सुहि खात पृथुल[21] भूतन भयद पाय गाय मम गिरत हुव ।

---

१ खड्डे में ही २ प्रवाह (धारा) ३ गाय ४ है ५ इस समय के ६ प्राप्त ७ गहरा ८ निश्चय ९ हिमालयपर्वत १० याचकपन ११ पुत्र १२ खड्डा १३ देखकर १४ बशिष्ठ १५ अपनी स्त्री मेनका सहित १६ पीढा (बाजोट) १७ हिमालय (उत्तर दिशा का पर्वत) १८ स्पष्ट (सीधा) १९ वज्र ने २० अगले दिनों में २१ बड़ा

हिमवान ताहि पूरन हमहिं अप्पहु इक १ आत्मीय[1] सुवं[2] ॥ ६ ॥
मैं समर्थ सब भाँति धेनु काढी गंगा बल।
अवर मध्य जो परहिं तो न निकसहिं अति बिव्हल ॥
हम दयालु अजबंस[3] देखि परदुक्ख सहैं नन।
तनुज इक्क १ तुम देहु करहिं तासौं तिहिं पूरन ॥
सुनि मुनि निदेस अंबा जनक[4] तत्थ बुल्लि निज पुत्र लिय।
सबहिन सुनाय द्विज आगमन अद्रिराज आलोच[5] किय ॥७॥
ए बसिष्ट ऋषिराज अच्छमालेस[6] तपोबल।
आये अप्पन निलयँ[7] धन्न्य अपनौं संचित फल ॥
आर्ज[8] आज कोउ काज पुत्त मोसौं इक १ मंगत।
भागधेय[9] मम भव्य इक्क १ इन संग जाहु बंत[10] ॥
सुनि पुत्र सकल हिमवानके रीति उचित कर जोरि रहि।
अष्टांग[11] सहित बंदन बिरंचि बुल्लिय मति अति प्रनति गहि ॥८॥

पज्झटिका ॥

जाचक बसिष्ठसे गेह आय, जजमान हिमालय गोत्रराय[12] ॥
हम कतिक बत्त असुहु[13] न अदेय, जनकोक्त[14] हमहिं करतव्य श्रेय ।९।
पितु बचन राम बन दुख लयोहि, पितु बचन पूरु[15] जुब्बन दयोहि ॥
आरोपि[16] जनक जननी स्वअंस, श्रवनहु गो तीर्थन सुप्रसंस ।१०।
सब तीर्थ पुत्रकै जनक[17] एव, जनकहि बिच निबसत सर्ब देव।
हम धन्न्य आज पितु हमहि देत, अरु मंगि आज[18] मुनिराज लेत।११।
हमकौं अनेहँ[19] औसो मिलै न, सुनिये परंतु इक १ उर अचैन ॥

---

१ अपना २ पुत्र ३ ब्रह्मा के वंश में ४ पार्वती के पिता ने ५ विचार ६ अक्षमाला नामक स्त्री का पति ७ घर ८ ब्रह्मा का पुत्र (अज का पुत्र) ९ भाग्य १० आमंत्रित (निमंत्रण किया हुआ) ११ आठ अङ्गों सहित प्रणाम (उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पग, हाथ और घुटनों से किया जावे उसको साष्टाङ्ग कहते हैं) १२ पर्वतों का राजा १३ प्राण भी १४ पिता का कहना १५ पिता ययाति के मांगने पर उसके छोटे पुत्र पूरु ने अपना यौवन देदियाथा १६ मातापिता को अपने कन्धे पर रखकर श्रवण भी तीर्थ गया था १७ पिता ही हैं १८ ब्रह्माका पुत्र १९ समय

स्वारण्यक वह कुत्सित[1] अरण्य, अघवान[2] थलन बिच अग्रगण्य १२
जो चहत प्रान तो लेहु नाथ, पै तत्थ नाँहिं लै चलहु साथ ॥
हम लहहिं वृजिन[3] फल तत्थ जाय, तस्मात[4] यह न करिये उपाय १३
अघसौं तुम वारन करनहार, अघमाँहिं न डारहु हेउदार ॥
वह बिपिन[5] चिंति आवत गलानि, मुनि दासन बिन्नति लेहु मानि १४
तुम पूरि सकत मनसौं हु खात[6], क्यौं तपनिधान लै हमहिं जात॥
सुनि एम हिमालय सुतन बैन बोले बसिष्ट तँहँ तुमहिं भै न ।१५।
निंदित जु देस संदेह नाँहिं, मैं पै[7] निवास किय तासमाँहिं ॥
पुनि बहि निर्लिपतटिनी[8] प्रवाह, दुरगो तिहिं थल को अघ सदाह १६
इक१बिप्र पुरा[9] तिहिं गहन[10] आस, बिगरी मति सबरन[11] संग तास ॥
अभ्यास सस्त्र धनु बिसिख[12] आदि, पथ रोकि पथिकं[13] मारत प्रमादि १७
करि लहि कुसंग इम तेयं[14] कर्म्म, पालत कुटुंब वह द्विज अधर्म्म ॥
इम[15] समय सप्त ७ ऋषि तत्र आय, तिन्ह बसन लैन दिय बिप्र दायँ[16] ।१८।
करि सज्ज्य कठिन कार्मुक[17] तयार, आयो रचि टंकृति हेउदार ॥
बुल्ल्यो सु मुनिन प्रति अति अजान, पट छोरि जाहु जो चहत प्रान ।१९।
अघ मुनिन कह्यो क्यौं करत एह, बुल्ल्यो वह पालत कुल सनेह ॥
पुनि मुनिन कह्यो रे ब्रह्मबंधु[18], यह अघ कुमाय क्यौं परत अंधु[19] ॥२०॥
याको कुटुंब हू लहहिं अंस, वा तूहि दंड सहिहै नृसंस[20] ॥
इम सुनि मुँनि[21] बुल्लियय द्विज अधर्म्म, मोहि न सुधि अघफल सहन मर्म्म
सुनि मुनिन बहुरि आक्खिय[22] सुभाइ, पूछहु कुटुंब सब गेह जाइ ॥
विप्राधम तब निजगृह जँगाम[23], पूछिय कुटुंब सब पाप काम ॥२२॥
तुम काज करत मैं अघ अपार, तुम सबन जिवावत तेयकार[24] ॥
मेरो अघ लैहो तुमहु बंटि, मैंही वा सहिहौं सुकृत संटि[25] ॥२३॥

१नीच २पापी ३पापों का ४इस कारण से ५वन को ६ खड्डा ७ परन्तु ८ देवनदी ९पहले १०वन में हुआ ११भीलों की संगति से १२बाण १३मार्ग चलने वालों को १४चोरी का कर्म १५इसी समय में १६दावदिया १७धनुष १८नीच ब्राह्मण १९ कुए में २० हे पापी २१ मुनियों से २२कहा २३गया २४चोरी के कर्म से २५धर्म के बदले.

बुल्ले तब बांधव हेमवीन, हम दैव किये तेरे अधीन ॥
करि सुकृत तथा कल्मष[१] कुमाइ, तुम देत आनि हम लेत खाइ२४
कर्त्ता हि लहत फल कर्म जोर, सुख दुक्ख पुण्य पापन झकोर।
सुनि बिप्र मुनिन ढिग बहुरि आइ,सब दिय कुटुंब आसय सुनाइ ।२५।
पुनि मुनिन कहिय हिय किय प्रसत्ति[२], करि कुकृत तूहि लहिहै बिपत्ति
तसमात[३] करत क्यों घोर कर्म्म,विष्णुहिँ सम्हारि धरि साधु धर्म्म ।२६।
यह सुनत बिप्र हिय बोध आइ, बुल्ल्यो सु देहु पद्धति[४] बताइ ॥
तब मुनिन कह्यो धरि विष्णु ध्यान,आसन रचि बैठहु जलवान ॥२७॥
बैकुंठ हरे बिष्णो उचारि, जप करहु निरंतर तत्व धारि ॥
नासाग्र दिठ्ठि संतत[५] लगाइ, पुनि लेहु हृदयपंकज[६] फुलाइ ॥ २८ ॥
तिँहिँ कंजकोस बिच भव्य भास[७], वे हरि सदैव धारत निवास ॥
मन करि तिन्ह पूजहु धेर्य[८] मानि, जे प्रभुहि मुक्तिदातार जानि ॥२९॥
दै सिक्ख गये मुनि इष्टदेस[९], इहिँ बिप्र कथित[१०] कीनौं असेस[११] ॥
बैठो[१२] अचेष्ट आसन बनाइ, लिय दिठ्ठ नक्क अग्गहि लगाइ ॥३०॥
उच्चरत विष्णु हरि हरि अजस्र[१३], घन बित्तिगये इम जपत घस्र[१४] ॥
सुधि खानपान बपु की रही न,लागि चित्त भयो हरि रूप लीन ॥ ३१॥
तनु पैं किय बाम्रिनें[१५] नाकुं[१६] तास, वह रटत मध्य रहि श्रीनिवास ॥
अतिचिर[१७] बिताइ मुनि पुनि हु आइ, रट बिप्र रह्यो हरि हरि लगाइ
सुनि निनद[१८] मुनिन चउ ४ दिस निहारि,नाकुहि बिच जान्यों भजनकारि
मिलि तिन्ह बिडारि वह बाम्लूर[१९],काढ्यो द्विज मानहु सुक्रसूर[२०] ॥ ३३॥
जे मुनि समर्थ वल्मीकजात[२१], बाल्मीकि भये यह बिदित बात ॥
जिनसौं हु भयो पावन जु देस, आश्रम हम हू किय हे अगेस[२२] ।३४।

१पाप२कृपा३इस कारणसे४मार्ग५निरंतर६हृदयकमलमें७देदीप्यमान क्रान्तिवाले८ध्यानयोग्य९अपने बाञ्छित देश को१०कहाहुआ११सम्पूर्ण१२निश्चल १३निरन्तर१४दिन१५बामले (उदेही के बिल)१६उदेही(दीमक) ने१७बहुत ही समय बिताकर १८ नाद (शब्द) १९ बामले को २० ज्येष्ठ मास के सूर्य के समान २१ बामला से पैदा होने के कारण २२ हे पर्वतराज.

त्रिस्रोता[1] पुनि बहि काढिय तत्थ, इम हुव पवित्र संसय न अत्थ ॥
अब तत्थ हैमवंत[2] चलहु एक, बहुरिहु थल सुधरहिं मम बिबेक ॥३५॥
तीरथ सब करिहैं तत्थ बास, सब देव तत्थ करिहैं निवास ॥
सुभ करहिं हमहु पुनि वह सुथान, बिरचहिं अनेक अध्वर[3] विधान ।३६।
इम करि पवित्र बिपिनं[4] सु असेस, बन अष्ट ८ तुल्ल्य करिहैं नगेसं[5]
तसमात[6] चलहु हे इक १ निसंक, पूरहु जु[7] गर्त्त[8] लिंपिहै[9] न पंकं[10]।३७।
यह सुनि गिरिपुत्रन कहिय फेरि, बन अष्ट ८कौन भाखहु निवेरि॥
अक्खिय तब मुनि बन अष्ट८ नाम, गिरिपुत्र सुनहु जे पुण्यधाम ।३८।
दंडक १ अरण्य है प्रथम सुद्ध, बन है द्वितीय सैंधव २ प्रबुद्ध ॥
ज्यौं जंबूमार्ग ३ तृतीय जानि,पुष्कर४ चतुर्थ कानन प्रमानि ।३९।
पंचम सु उत्पलावर्त्त५ गण्य, अरु गिनहु षष्ठ नैमिष६अरण्य ॥
सप्तम कुरुजांगल७ पुण्यरूप, अष्टम सु हैमवत८ यह अनूप।४०।
ह्वैहैं अब वह बन नवम श्रेय, अर्बुद९ अरण्य इति नामधेयं[11] ॥
इक१ हायनं[12] तप कासी प्रदेस, तउ तहँ इक१दिन को तप बिसेस ४१
ऐसो अब करिहैं वह अरण्य, तीरथ गणना बिच अग्रगण्य ॥
तसमात चलहु इक१ गिरि अपत्य[13],सो गर्त्त[14] भरहु यह जानि सत्य ४२

दोहा

सुनि मुनि बचन हिमाद्रिसुत, नंदीवर्द्धन नाम ॥
बोल्यो सिर आदेसं[15] धरि, करि स्वीकृत[16] मुनिकाम ॥ ४३ ॥

॥ षट्पदी ॥

नंदी कहिय मुनीस अवट[17] पूरौं नहिं संसय ।
इक परंतु अवरोधं[18] नाथ सुनिये निहारि नय[19] ॥
छेदे सुरपति पच्छ पंगु[20] पुनि मैं रु दूर पद[21] ॥
इक १ उपाय अब कथितं[22] करहु है ज्यौं अभीष्ट[23] हद ॥

१गंगा २हिमालय के पुत्र ३यज्ञ ४वन ५हे पर्वतों के राजा ६इस कारण से ७जो ८खड्डा ९नहीं लगेगा १०पाप ११नामवाला १२वर्ष १३पुत्र १४खड्डा १५आज्ञा १६अंगीकार १७खड्डा १८रुकावट १९नीति २०पाँगला २१स्थान, २२मेरा कहा हुआ, २३पूरा मनचाहा

मम मित्र नाग अर्बुद[1] रहत नाग लोक[2] अतिकाय वह ।
धर्मिष्ठ रु परउपकारकर गिनत दुक्ख भूतन असह ॥ ४४ ॥
तिहिँ बडवामुख जाइ अत्र आनहु द्विज पुङ्गव[3] ।
वह अहि मोहि उठाइ जत्थ लैचलहिँ बडे जव[4] ॥
सक्तिजनक[5] यह सुनत गये अहिलोक तपोधन ।
जाच्यो अर्बुद नाग कहिय हित बैन महामन[6] ॥
उत्तंक बिप्रबरके अरथ सक्र[7] संब[8] खातक[9] खनिय ।
तव मित्र नंदि लेजाइ तिहिँ करन पूर्ण हम चित्त किय ॥ ४५ ॥

दोहा

वह नंदी हिमसैलसुत, आजनि[10] अंघ्रि[11] बिहीन ॥
स्वच्छंद[12] न तहँ चालि सकत, पूरन गर्त्त[13] प्रबीन ॥ ४६ ॥
तासौं तुम अर्बुद उरग[14], तिहिँ निज पिट्ठि चढाइ ॥
खारराय[?]क बन लैचलहु, पूरहि बिल बल पाइ ॥ ४७ ॥

मुक्तादाम

कह्यो अहि अर्बुद हेमुनिराज, कहा तुम नाथ समर्थ न आज ॥
चलौं मम मित्रहि लै कसमात[15], तपोबलसौं तुम पूरहु खात[16] ॥ ४८ ॥
रु जो तुमकौं यह ही करतव्य[17], ततो सुनिये जिम ह्वै मम भव्य[18] ॥
चलौं मम मित्रहि लै तिहिँ देस, करौं वह पूरन गर्त्त असेस[19] ॥ ४९ ॥
अहो बिधिनंदन[20] आत्तबिबेक[21], परंतु चहैं मम मानस[22] एक ॥
धरैं मम नामहु तीर्थ सु[23] धाम, मरुअद्रिअरराय[24] बजैं मम नाम ॥ ५० ॥
वशिष्ठहु आक्खिय[25] यौँ सुनि ताहि, यहै तव इष्ट सु स्वीकृत आहि[26] ॥

---

१ अर्बुद नामक सर्प २ पाताल में ३ श्रेष्ठ ४ वेग से ५ शक्ति के पिता (वशिष्ठ ऋषि के ज्येष्ठ पुत्र का नाम शक्ति है) ६ महाशय ७ इन्द्र के ८ वज्र ने ९ खड्डा खोदा १० जन्म से ही ११ चरणों से हीन (पाँगला) है १२ स्वतंत्रता से (अपने आप) १३ खड्डे को १४ सर्प १५ किसकारण से १६ खड्डे को १७ करना है १८ कल्याण १९ संपूर्ण २० हे ब्रह्मा के पुत्र २१ विवेक को ग्रहण करनेवाले २२ मन २३ सो २४ पर्वत और वन दोनों मेरे नाम से कहावें. २५ कहा २६ है.

भयेँ परिपूरन गर्त्तजे देस, वहै बजिहै तव नाम नगेसै ॥ ५१ ॥
अरण्य रु तीर्थ तवाऽऽहय छाप, महीतलकौँ करिहै गतपाप ॥
महाबल अर्बुद व्हाँ तँसमात, चलो धरि पिट्ठि हिमालयजात ॥५२॥
इती सुनि अर्बुद भो मुनि सत्थ, गयो तु हिमालय आलयँ तत्थ ॥
मिले गिरिनंदिय औ वह नाग, रच्यो सुख पुच्छि बडो अनुराग ५३
कह्यो तब नंदिय हे अहि मित्र, मिले चिरकाल बिताइ सु चित्र ॥
करो अब जो मुनि जंपिउँ काज, चलो मुहिँ लै तँहँ पन्नगराज ५४

दोहा॥

सुनत नंदिबर्द्धनै बचन, अर्बुद हिय मुद पाइ ॥
मुनिवर संग महीध्रकौँ, चल्लिय पिट्ठि चढाइ ॥ ५५ ॥
स्वारराय‍क पत्ते सकल, नगै१पन्नग२मुनि३संग ॥
डारयो नंदिय खड्डमैँ, गो[15] समाइ सब अंग ॥ ५६ ॥
अहि अर्बुद तब सिक्खलहि, डुंगर इम बिलडारि ॥
निजनगरी भोगावती, गो बिधि[17] प्रबल बिचारि ॥ ५७ ॥

षट्पदी

सब गिरि अंग समाइ रहिय अवसेसै नैंक जब ।
पुंहप बुंठि हुव पिहुल त्वरित जय जय बानी तब ॥
अवटोदर गत अद्रि गत्तै व्याकुल डगमग्गिय ।
धरनि धुज्जि धसमसिय गाढ भूतन भय लग्गिय ॥
इम अचल चलत मुनिबर अरहि हिय चिंते नुतिपुब्बै हरै ॥
जय ईस उमाउरँआभरन सूल१ कैपर्द पिनाकै ३ धर ॥ ५८ ॥

१खड्डा पूर्ण होजाने से जो देश होवेगा वह तेरे नाम से कहावेगा२हे पर्वतों का ईश ३ तेरे नाम की छाप से ४इस कारण से५हिमालय पर्वत के बेटे को६ तब ७ घर ८ स्नेह ९ अच्छे चित्रामोंवाला १० कहाहुआ ११ आनन्द बढ़ाने वाले वचन १२ पर्वत को १३पहुंचे १४ पर्वत १५गयो १६ सर्पों की नगरी को १७ भाग्य को १८ बाकी १९नासिका २० पुष्पों (फूलों) की २१ वर्षा २२ बहुत २३ खड्डे के भीतर.२४शरीर२५पर्वत२६हिलते ही२७शीघ्र ही२८स्तुति पूर्वक२९शिवको३०हे पार्वती के उर का आभरण ३१ जटा जूट ३२ धनुष को.

॥ पद्धतिका ॥

जय जय महेस संकर जडाल, कंदर्प१ जलंधर२ त्रिपुर३काल ॥
गंगाकिरीट जय जय गिरीस, अजएक महानट अखिलईस ॥५९॥
रचनाप्ररोह जय संभु रुद्र, सिव जय अनादि करुणासमुद्र ॥
दुरितादिदलन जय बामदेव, दिवपट जय परिजितकामदेव। ६०।
जय गरलकंठ विभु गहन जोग, भव भग्ग भीम जय त्यक्तभोग ॥
लय१ सर्ग२ चरित जय ऊर्द्धलिंग, प्रभु जय मित्रीकृत एक पिंग ६१
नुत अष्ट८ मूर्त्ति जय जय त्रिनैन, अगराज स्वसुर करबीर अैन ॥
पावन एकांबक एकपाद, बृषकेतु मालदृग जय बिषाद ॥ ६२ ॥
हेरंबजनक जय अट्टहासि, बिबुधेस महाव्रत गुनबिलासि ॥
जय मृड अनंत बिध्वस्तजाग, बिस्वांतरात्म साधितबिराग ॥६३॥
मायाअतीत जय अस्थिमाल, भावक अनिच्छ जय इंदुभाल ॥

जयइति। हेमहेश, शंकर, जडाल (समाधि में जड के समान) कामदेव जलन्धर असुर औरत्रिपुरासुरकेकाल, गङ्गा है मस्तक में जिनके, कैलासपति, अजन्मा अद्वितीय महानट, सम्पूर्ण का ईश ॥५९॥ रचना उत्पन्न करनेवाले, शम्भु, रुद्र, शिव, अनादि, दयासागर, पापादि को नाश करनेवाले, वामदेव, आकाश ही है वस्त्र जिनके, जीता है कामदेव को जिन्होंने ॥ ६० ॥ जहर है कण्ठ में जिन के, व्यापक, गहरे योगी, भव, जगत् को पचानेवाले, भयानक, छोड दिये हैं भोग जिन्होंने, संहार और उत्पत्ति के करनेवाले ऊर्द्धलिंग प्रभु किया है कुबेर को मित्र जिन्हों ने ॥६१॥ स्तुति योग्य आठ [पृथिवी (सर्व) जल (भव) अग्नि (रुद्र) वायु (उग्र) आकाश (भीम) यजमान (पशुपति) चंद्रमा (महादेव) सूर्य (इशान)] मूर्त्ति है जिनकी, तीन नेत्रवाले, हिमालय है ससुर जिनके, श्मशान ही है घर जिनका पवित्र करमेवाला है एक नेत्र जिनके, एक है पग जिनके, (अर्द्धनारीनाटेश्वर स्वरूप में) बैल के चिन्ह की है ध्वजा जिनके, कपट के नेत्रवाले, विष को भक्षण करनेवाले, ॥ ६२ ॥ गणेश के पिता, अट्टाट्ट हास्य करनेवाले, देवताओं के ईश, बडे नियम के धारण करनेवाले, सतोगुणादि से विलास करनेवाले, मृड़ (सुख स्वरूप) अनन्त, दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले संसार के अन्तरात्मा, सिद्ध किया है वैराग्य को जिन्होंने ॥ ६३ ॥ मायारहित, हाडों की माला वाले, भावक (सत्तारूप) इच्छा रहित, चन्द्रमा है मस्तक पर जिनके.

सिपिविष्ट कलित बिग्रह बिसेस, कल्पान्तनटन जय व्योमकेस६४
पावक हिरण्यरेता प्रसन्न, छबि सित महान अणु प्रकट छन्न ॥
सितिकंठ कृत्तिपट नित्यशुद्ध, पशु१प्रमथ२भूत३पति जय प्रबुद्ध।६५।
धूर्जटि करोटि १ खट्वांग २ धार, हेलाजित अंधक उरगहार ॥
श्रीखंड परसु थिरचर सहाय, कृतरुक्मअचल केलीनिकाय ।६६।

षट्पदी

जय महेश जोगेस निखिल अघफंद निवारक ।
नित्य जरा१जनि २ रहित तथ्य[२] जोगी जगतारक ॥
ईस फटिक अवदात[३] भक्त भय भूरि बिभंजक ।
जय सरनागत जगर[४] बिबिध प्राकृत गुन व्यंजक ॥
ईसान नीललोहित अभय चंद्रचूड नन करहु चिर।
ह्वै विकल अद्रि बिल बिच हलत स्वस्थ करहु रहि तास सिर ।६७।

दोहा

इम वासिष्ठ वंदित अरहि, आये अच्युत[६] ईस ॥

शिपिविष्ट(पशुपाते)धारण किया है विशेष शरीर जिन्होंने, कल्पान्त में नाचनेवाले, गङ्गा को धारण करने के लिये फैलाये हैं आकाश में केश जिनने ॥ ६४ ॥ विद्युनाग्नि और होमाग्नि स्वरूप, सदा प्रसन्न रहने वाले, उज्वल छबि वाले, स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप, प्रकट और छिपे हुए, नीलकण्ठ, मृगचर्म ही का है वस्त्र जिनके, सदा पवित्र, पशुपति, प्रमथ [पारिषदगण] पति, भूतपति, सदैव जागृत ॥ ६५ ॥ भार रूप है जटा जिनके, कपाल और खट्वाङ्ग(जिसके ऊपर मनुष्य का मस्तक लगा होवे ऐसा दण्डा)को धारण करने वाले, लीला से ही जीत लिया है अन्धकासुर को जिनने, सर्पों के हारवाले,शोभायुक्त खण्डन करने वाला है परशु (कुठार) जिनके, स्थावर जङ्गम के सहायक, किया है धतूरे ने अचल जिनको, क्रीडा के घर॥ ६६॥ हे योगियों के ईश, महादेव संपूर्ण पाप फन्दों को दूर करने वाले जन्म[१] और बुढापे से सदा रहित सच्चे योगियों को संसार से तारनेवाले स्वामी स्फटिक के समान उज्वल, भक्तों के भय को अत्यन्त नाश करने वाले, हे शरणागतों के कवच नाना प्रकार के सांसारिक गुणों को जानने वाले हे शिव अभय ऐसे हे चन्द्रचूड [चन्द्रमा है मस्तक में जिनके]आपकी जय हो विलम्ब मत करो विकल होकर पर्वत बिल में हिलता है जिसके सिर पर रहकर अचल करो ॥ ६७ ॥५ शीघ्र ६निर्विकार.

जान्यौं व्याकुल ताप[1]जुत, गड्डे[2] हलत गिरीस[3] ॥ ६८ ॥
बुल्ले मुनिवर पयन परि, हे हर निखिल[4] निवास॥
कंपत गिरि निश्चल करहु, बिरचि सिखर निजवास ॥ ६९ ॥

षट्पदी

भक्त भीरु[5] भूतेस पानि सिर धरि गिरि चंपियँ[6] ।
अचल अचल पुनि अचल जाप वारत्रय ३ जंपियँ[7]॥
शृंग[8] तास रचि वास नाम अचलेस कहायउ ।
बलि[9] तँहँ त्वरित बसिष्ट बिबुध[10]१मुनि २तीर्थ ३ बुलायउ ॥
जो जो करार किय सैल सन[11] सोहि उपक्रम[12] सब सजिय ।
संभर[13]नरेस धारहु श्रवन इम अर्बुद[14] गिरि उप्पजिय ॥ ७० ॥

दोहा ॥

नंदीसुत तुहिनाग[15]को, आन्यों अर्बुद[16] नाग ॥
इहिं कारन अभिधान[17] हुव, भोगी[18]को गिरि भाग ॥ ७१ ॥
नाग तीर्थ आदिक बहुत, तीर्थ भये गिरि सीस ॥
कहिहैं तीजे३राशिमैं, महिमा तास महीस[19] ॥ ७२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ पाताल गङ्गाप्रवहन-नन्दिनीसमुद्धरण-वशिष्ठहिमवद्याचन -तन्नन्दिवर्द्धननिवेदन-तदर्बुदाचलस्थापनं द्वितीयो मयूखः ।२। आदितः सप्तविंशः २७॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

१सन्ताप २ खड्डे मे३ शिव ने४सबका५भक्तो के लिये कायर६दबाया ७कहा ८शिखपर ९ पुनि १० देवताओं को ११ से १२ आरम्भ १३ हे चहुवाण राजा सुनो १४ आबू १५ हिमालय पर्वत १६ अर्बुद नामी सर्प ने १७ नाम१८ उस अर्बुद सर्प के नामसे १९ हे भूपति

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में पातालसे गङ्गा प्रवाह के साथ नन्दिनी गौ का निकलना वशिष्ठ ऋषि का हिमालय से याचना करना उससे नन्दिवर्द्धन का दिया जाना तिससे आबू पहाड का स्थापन होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ। आरम्भ से सत्ताईस मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

अवंटमध्य गिरि थप्पि इम, अर्बुद करि अभिधान ॥
अति पवित्र पुनि तिंहिं करन, किय सब कथितैं प्रमान ॥ १॥

षट्पदी ॥

इंद्र१अग्नि२जमराज३प्रथितैं निर्ऋति४ कृपीटपति५।
अनिल ६ऐलविल७ईस८थप्पि गिरितटन महामति ॥
तुषित१साध्य२बसु३विश्व४बहुलि आदित्य५मरुद्गन६।
आभास्वर७अभिधेय महाराजिक८सन्मदसन ॥
इत्यादि देव१ तीरथ२ अखिल थलपावन तँहँ थप्पि दिय ॥
पब्वयं करार मुनि चिंति पुनि करन सत्रैं आरंभ किय ॥ २ ॥
वन पावन यह होहु नाम अर्बुद प्रसिद्ध भुव ।
इम बिचारि मनधारि रचे अब्वरैं अनेक ध्रुव ॥
जब जब अवसर मिलिय आय तब तब अर्बुद गिरि ।
करन तास उपकार सत्र दीक्षाँ लिय फिरि फिरि ॥
इम होत गये जुग बित्ति वहु सप्ततंतुँ विधि अनुसरत ।
मुनिबर वसिष्ठ त्यौंहो रहे अंगीकर्त्तैं पालन करत ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

छ६मनु गये या कल्पके, बिधि के बासरमाँहिं ॥
वैवस्वत सप्तम७लग्यो, विद्यमानँ अब आँहि ॥४॥
गये महाजुग याहुकौं बरतत सत्तावीस २७॥
तिन अग्गैं इक१कृत गयो, इक२त्रेता अवनीसँ ॥५॥
तीजे३द्वापर चरनके, मूल अब्द काढि जात ॥

१खड्डा२कहने के अनुसार ३प्रसिद्ध ४ दिक्पाल (नैऋतकोण का पति ५ वरुण (जल का पति)६कुबेर(इलविला का पुत्र)७कुलाकर८नामवाले९ मोद से १० सब११पर्वत को १२यज्ञ१३यज्ञ१४यज्ञ की दीक्षा (नियम पूर्वक यज्ञ में लगना)१५यज्ञ की१६स्वीकार कियेहुए का१७दिन १८वर्तमान (मौजूद) १९ है २० वैवस्वत मनु के सत्ययुग २१ हे भूपति२२ हे भूपति २३ सन्ध्या के वर्षों को छोडकर मूल के वर्ष

रहत सेस[1] संध्यांस[2] कछु, मचे अवनि उतपात ॥ ६ ॥
ते बानासुरके तनुज[3], धूम्रकेतु १ अरु जंभ २ ॥
बिधिके बर अतिसय[4] बढे, द्विजन हनत सह दंभ[5] ॥ ७ ॥
प्रबल निगम[6] मग उत्थपत, थप्पत अघ सब थान ॥
उतरत द्वापर जे असुर, गये अवनि अकुलान[7] ॥ ८ ॥

षट्पदी ॥

तिनहु दिनन मुनिवर बसिष्ठ बहुरिहु लहि अवसर ।
रचिय सत्र आरंभ आनि अर्बुदगिरि उप्पर ॥
बर्त्तुल[8] कुंड १ बिधाय[9] यूप[10] २ मंडप ३ आच्छादित ।
आज्यादिक[11] उपकरन[12] सकल होमन किय संचित[13] ॥
सब मुनि निमंत्रि[14] बुल्ले सजवै[15] बिबिध[16] रूप १ अभिधान २ बर ।
तिन्ह नाम सुनहु चहुवानमनि रामसिंह इक्कछत्रधर ॥ ९ ॥

॥ पद्धतिका

मुनिबर मरीचि १ पुलह २ रु पुलस्त्य ३,
क्रतु ४ अत्रि ५ अंगिरा क्षमित अगस्त्य ७ ॥
आत्रेय ८ कुसाराशि[17] ९ कपिल १० आय,
सनकादि[18] चउ ४।१४ रु कश्यप १५ सुभाय ॥ १० ॥
नारद १६ ऋचीक १७ भृगु १८ च्यवन १९ नाम,
प्राचेतस[19] २० व्यास २१ रु परसुराम २२ ॥
जोगेस्वर[20] २३ पाणिनि २४ गाधिजात[21] २५,
खगम २६ रु उतत्थ्य २७ जमदग्नि २८ ख्यात ॥ ११ ॥

१ बाकी २ सन्ध्या के वर्षों का कुछ अंश (एक युग उतर कर दूसरा लगै जिनके बीच के समय को युग सन्ध्या कहते हैं) ३ पुत्र ४ अत्यन्त ५ छल (अन्तःकरण में कपट और बाहर धार्मिकता दिखानेवाले को दंभी कहते हैं) ६ वेद के मार्ग को ७ व्याकुल करने के लिये ८ गोलाकार ९ रचकर १० यज्ञ के खम्भे को ११ घृत को आदि लेकर १२ सामग्री १३ इकट्ठी १४ न्योता भेजकर १५ शीघ्र १६ नाना प्रकार के रूप और श्रेष्ठ नामों वाले १७ दुर्वासा १८ सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार १९ वाल्मीकि २० याज्ञवल्क्य २१ विश्वामित्र

एकत २९ द्वित ३० चित ३१ गालव ३२ कणाद ३३ ,
आसुरि ३४ अकृतव्रण ३५ अक्षपाद[1] ३६ ॥
उद्दालक ३७ देवल ३८ असित ३९ ऐल ४०,
पर्वत ४१ ऋभु ४२ मुद्गल ४२ गर्ग ४४ पैल ४६ ॥१२ ॥
कौंडिन्य ४६ परासर ४७ थूलकेस ४८ ,
जिम दाल्भ्य ४९कवस ५० सौभरि ५१ द्विजेस ॥
वामन ५२मेधातिथि ५३ इध्मवाह ५४ ,
उसनां[3] ५५ रु बृहस्पति ५६ अतिउछाह ॥ १३ ॥
पंचासिख५७पतंजलि५८पिप्पलाद५९मांडव्य६०चणक६१मुनि अप्रमाद
बसु६२दम६३कात्यायन६४चैत्य६५जानि,
खग६६कंबु६७सतानंद६८हु बखानि ॥ १४ ॥
नत्ति६९थूलसिरा७०सकटाक्ष७१नाम,
थूलाक्ष७२यवक्रीत७३जु,अकाम ॥
सांडिल्य७४भरत७५सरभंग७६सौम्य७७,
धृति७८जन्हु७९कराव८०रु मतंग८१धौम्य८२ ॥ १५ ॥
संवर्त्त८३साकटायन८४सुमंतु८५,
जाबालि८६कुत्स८७आपिसलि८८जंतु८९
जैमिनि९०सुभांड९१मधुछंद९२जानि,
मित्रावरुण९३रु लोमस९४पमानि ॥ १६ ॥
सातातप९५वत्स९६रु और्व९७संत,
मैत्रेय९८सुनक९९सौनक१००महंत ॥
भागुरि१०१मुनि आपन्वान१०२भव्य,
हारीत१०३अथर्वा१०४सालिहव्य१०५ ॥ १७ ॥
संख१०६लिखित१०७अरुण१०८रु बीरसेन१०९,
ज्यों पालकाव्य११०श्रीसुक१११द्विजेन ॥
द्विजसालंकायन११२चंद्रदत्त११३,

१गोतम २कालमेघ ३शुक्र ४ शालिहोत्र ५ ब्राह्मणों में सूर्य

सुचि११४कवि११५मृकंड११६आहूतसत्त ॥ १८ ॥

दोहा

भुवन११७सुधन्वा११८मित्रभू, ११९भूति१२०सुवर्चा१२१साति१२२
पार१२३मंकि१२४तुंबुरु१२५प्रमद१२६,सुकृस१२७सर्मीक१२८सुकांति
सुमेधा१२९रु ऋतवाक१३०सुभ, सुतपा१३१बिपुलस्स्वान१३२ ॥
बलि निवृत्तचेता१३३बिबुध,ब्रह्ममित्र१३४मतिमान ॥ २० ॥
सुसामा१३५रु सोमश्रवा१३६,ऋष्यसृंग१३७अभिरूप ॥
आर्ष्टिसेन१३८वृहदश्व१३९अरु,भारद्वाज१४०हु भूपं ॥ २१ ॥
मुनि कामंदक१४१गृत्समद१४२, आपस्तंब१४३उदार ॥
अष्टावक्र१४४शिलूष१४५अरु, सरद्वान१४६तपसारं ॥ २२ ॥
मुनि अरिष्टनेमि१४७हु सुमति,बैसंपायन१४८बुद्ध ॥
दीर्घतमा१४९असुहोत्र १५०द्विज,इंद्रप्रमद१५१अलुब्ध ॥ २३ ॥
कक्षीवान१५२रु प्रस्कराव१५३,आग्निवेश्य१५४बालिबर्ण्य ॥
जैगीसव्य१५५सुदर्सन१५६रु, बर्द्धन१५७जातूकर्ण्य१५८ ॥ २४ ॥
वेदसिरा१५९कच१६०प्रमति१६१बलि, सारस्वत१६२रुरु १६३सिद्ध
मल्लिनाग१६४इत्यादि मिलि, आये मुनि तपइद्ध ॥ २५ ॥
स्वागत किन्न समस्तको,मिलि बसिष्ठ सनमानि ॥
सत्र रचन लग्गे सुमति,अद्रिकूट तत आनि ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ मुनिसमाह्वयनवशिष्ठदीक्षाग्रहणसत्रप्रारम्भणं तृतीयो ३ मयूखः ॥ ३ ॥
आदितोऽष्टाविंशः २८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

१यज्ञ में बुलाये हुए२हेराजा३तप ही बल जिनके४पण्डित५निर्लोभी६मुनि ७तप से निर्मल ८ आये हुओं का आदर ९ यज्ञ १० पर्वत के शिखर पर ॥

श्री वंशभास्कर के महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में मुनियों का बुलाना वशिष्ठ ऋषि का यज्ञ दीक्षा लेना और यज्ञ का आरम्भ होने के वर्णन का तीसरा मयूख समाप्त हुआ. और प्रारंभ से अट्ठावीस मयूख हुए ॥

दोहा

उत बानासुर सुत उभय२, प्रबल बढे बर पाइ ॥
अर्बुदगिरि तट मुनिन इत, आरंभिय मख आइ ॥ १ ॥

षट्पदी

उत सोदर[1] दुव२असुर बढे दारुन बिरिंचि बर[2] ।
दीक्षित[3] सुमुनि बसिष्ठ रचन लग्गे इत अध्वर[4] ॥
बासिष्ठी[5] जल छिरकि कोस बारह१२मित[6] मण्डल ।
सीमा बन करि सुद्ध थप्पि जूपादि[7] उचित थल[8] ॥
निज निज निकाय थित रक्खि नुत[9] सुर[10]१तीरथ२दिकपाल३सब ।
अचलेस पूजि आक्खिय अरज आवन विघ्न न देहु अब ॥ २ ॥
इम अवहित[11] मुनिराज लगे बिरचन बिधान मख ।
कुण्ड मध्य बिधि[12] कलित[13] धरयो मंत्रित समीरसख[14] ॥
अद्रितुंग[15] उपहार[16] समिध[17]१आज्यादिक[18]२संजुत ।
महँघे द्रव्य मिलाइ हव्य[19] उत्तम अनेक हुत[20] ॥
भृगुनंद च्यवन१ब्रह्मा[21]२भये होता[22]१मुनि जाबालि२जँहँ ।
सामग[23]३अगस्ति३द्विजबर सुमति तिम ऋचीक४अध्वर्यु[24]४तँहँ ।३।
ऋत्विज[25] मुनिबर इतर लगे श्रुतिध्वनि उच्चारन ।
स्वाहा१फट्२बषडा३दि नाद छायो स्वर तारन ॥

१सगे भाई२ब्रह्मा के वर से३दीक्षा लेकर४यज्ञ५वशिष्ठ के पुत्र ने६प्रमाण७यज्ञ स्तंभ आदि८स्थानपर९स्तुति योग्य१०देवता॥२॥इस प्रकार११सावधान होकर वशिष्ठ मुनि यज्ञ विधान करने लगे १२ ब्रह्मा की१३आज्ञा से यज्ञ कुंड में १४अग्नि स्थापित किया१५और ऊंचे पर्वत की ओर से१६भेट की हुई१७होम की लकडियों को१८ घृत आदि के साथ महँगे अनेक उत्तम पदार्थ मिलाकर १९ होम के योग्य बनाकर२०होम किया तहां पर भृगु के पुत्र च्यवन तो२१ ब्रह्मा (सब वेदों को जानने वाला) ऋत्विज हुए. जाबाली२२होता(ऋग्वेद के मंत्रों से देवताओं का आवाहन करके होम करने वाला)हुए.अगस्त्य२३सामग (सामवेद के मंत्रों से होम करनेवाला) हुए. तैसे ही श्रेष्ठ ब्राह्मण बुद्धिमान् ऋचीक२४अध्वर्यु (यजुर्वेद के मंत्रो से होम करनेवाला) हुए ॥३॥२५बाकीके ऋत्विज (यज्ञ में१६ऋत्विज होते हैं जिनमें चार तो ऊपर बता ये बाकी१२रहे जो)

सुचि१हविष्य२संजोग अर्चि३ उठ्ठिय अंबर४ लग।
हवनगंध आघ्राइ५ आइ इन्द्रारि६ ऊर्ध्वमग॥
आज्ञेय७पलल८वल्लूर९अरु दूष्य१०मेद११कीकस१२बरासि॥
किलकारि सिंह आराव१३ करि दियउ त्रास दितिजन१४ दरसि॥४॥
कच१५ कौसिक१६पुनि गोर्द१७ बंक्रि१८ मज्जाभव१९कर्पर२०।
धमनि२१पिप्पिका२२किट्ट२३मूत्र२४बर्चस्क२५भस्म२६भर॥
सृणीका२७रु सिंहाण२८ नखर२९ पिंजूसन३० डारत।
सप्ततंतु३१ करि भ्रष्ट फिरत गर्जत किलकारत॥
बलि३२ उपल३३ मद्य३४ रज३५ बुट्ठि३६ करि मेटि हवन बिस्तारि मंत३७॥
बुझवाइ बन्हि कुंडहिं गये सर्व मुनिन करि सोक३८रत॥५॥

दोहा

धूम्रकेतु अरु जंभइम, असुरन कटक उपेत३९॥
गिरि अंध्वर४० लुट्टि रु गये, चलितभये मुनिचेत४१॥६॥
हतसंकल्प वसिष्ठ ह्वै, अखिलन करि एकत्थ४२॥
सत्रमंत४३ सोधनलगे, समय देस गुन सत्थ॥७॥

और श्रेष्ठ मुनि वेद ध्वनि उच्चारण करने लगे तब स्वाहा फट् वषट् आदि होम के इन शब्दों का नाद ऊंचे स्वर से छा गया १ अग्नि और होम की वस्तुओं का संयोग होने से २ ज्वाला ३ आकाश तक उठी उस होम की गन्ध को ४ सूंघकर ५ इन्द्र के शत्रु ६ आकाश मार्ग से आये ७ रुधिर ८ मांस ९ सूखा मांस १० रांध (पीप) मज्जा ११ और हड्डियों १२ की वर्षा करके सिंह के समान शब्द १३ कर दैत्यों १४ ने दृष्टि में आकर भय दिया॥४॥ केश १५, मज्जा १६, भेजा १७, पांसली, वीर्य १९ खोपरी २० नसें २१ दांतों का मल २२, शरीर २३ का मल, मूत्र विष्टा २५, खाक २६ भरके लाल २७ नासामल २८ (सेड़ा) नख २९, कान ३० का मल [मली] डालकर यज्ञ ३१ को भ्रष्ट करके किलकियें करके गाजते फिरने लगे, फिर ३२ पत्थर ३३, मदिरा ३४ रेत ३५ की वर्षा ३६ कर यज्ञ को मेटि अपना मंत ३७ फैलाय, अग्नि कुंड को बुझाय संपूर्ण मुनियों को शोक ३८ लीन कर गये॥५॥ धूम्रकेतु और जंभासुर इस रीति दैत्यों की सेना के सा ३९ थ आबू पर्वत के यज्ञ ४० को लूट कर गये तब मुनियों के चित्त ४१ चलायमान हुए॥६॥ अपने संकल्प का नाश होने पर वशिष्ठ सबको इकट्ठा ४२ कर देश, काल और गुण के साथ यज्ञ ४३ करने की सलाह करने लगे॥७॥

तोटकम् ॥

सबही मुनि सोचत मंत्र[1] करैं, यह अध्वर पूरन क्यों निवरैं ॥
बल पाइ अदेव[2] अजेय भये, बिधिसों बर लै पद उच्च गये ।८।
बिसतारत कर्म अधर्म फिरैं, नहिं कोउ इहां इनसों जु भिरैं ॥
नहिं गाधि१ययाति२महीपति जे,नहिं सृंजय३सैव्य४महामति जे ९
नहि नीप५भलंद६बलीक्षुप७है, न मरुत्त८महारन लोलुप है ॥
खनिनेत्र९खनित्र१०करंधम११नाँ,रु अवैत्तत१२धुंधुजई१३दम१४नाँ

नहि ऐल१५दिलीप१६रघू१७नल१८से,
नहिं संकृति१९राम२०बृहद्बल२१से ॥
नहिं नाभि२२प्रियव्रत२३आज मही,
हरिचंद२४सुसेन२५सुभूम२६नही ॥ ११ ॥
अनरण्य२७सुहोत्र२८मनु२९ध्रुव३०नाँ,
कुरु३१त्यों सिवि३२कंक३३त्रिसंकुव३४नाँ ॥
न बृहद्रथ३५श्वेत३६उसीनर३७है,
न भगीरथ३८संभु३९जदू४०पर४१है ॥ १२ ॥
बल४२अर्क४३निमी४४द्रुम४५त्यों गय४६नाँ,
ससबिंदु४७अनू४८जनमेजय४९नाँ ॥
युवनाश्व५०न पुंड्र५१बडो कुरु५२त्यों,
न सुचिव्रत५३बंधु५४बृहद्गुरु५५त्यों ॥ १३ ॥
अगुहाख्य५६न अंग५७बिजै५८परसू५९,
सगराख्य६०न सुक्रतु६१देव६२बसू६३॥
कृतवीर्य६४सुची६५तप्तांबर६६नाँ,
मदनो६७भरतो६८हयकंधर६९नाँ ॥ १४ ॥

सुरलोक बसे गुरु[3] भूप सबै,इनकों जुरि मारक कोन अबै॥
कछुही बिधि जो नहिं ए मरिहैं,भुव तो अघके भर[4]सों भरिहैं ॥ १५ ॥
नहिं आसय[5] एक हि अध्वर[6]को,उपजैं दुख देवनलौं डरको ॥

१सलाह २दैत्य ३बडे राजा ४भार ५ अभिप्राय ६ यज्ञ

इक१ अध्वर जो न असेस[1] बनैं, तब संकि द्वितीय२ रहिं कोन तनैं ॥ १६॥
इम सत्र[2]बिधान सबै बिगरैं; तब इंद्रहु उग्र[3] बिपत्ति भरैं ॥
बिधि देवन अन्न रच्यो मखही, यह रीति अनादि सदा निबही ॥ १७ ।
जब देव नहीं मखभाग लहैं, तब वृष्टि बिनाँ सब लोक दहैं ॥
अरु अप्पन लोक अनामय[4]कौं अब को बिधि दूर करैं भयकौं ॥१८॥
बिधिको बर ज्यौं नहि नष्ट परैं, तिम जो कछु भेद गली निकरैं॥
तब साध्य[5] उपाय चतुष्टय४ जो, दम१ सांत्वन२ भेद३ रु दान४ सजो ।१९॥
अथवा अब दंडहि श्रेष्ठ[6] बली, करि जो इन्ह मारहु सोहि भली॥
अरु अप्पन जो न उपाय करैं, तब संसृति[7]को हित कोन धरैं ।२०॥
नहिं[8] अर्थहि अध्वर है करनौं, सबको भय अप्पनकौं हरनौं ॥
इनके डर जो मख[9]हू न करैं, तब लोकनमैं महिमा बिगरैं ॥ २१ ॥
ताकि वास्तव[10] जो महिमा न चहैं, श्रुति[11]सासित सत्र अपूर्ण रहैं ॥
अरु एकहि अध्वर है न यहै, करने बहुतैं किम जे निबहै ॥ २२ ॥

हठि[12] अप्पन जो तिन्ह प्रान हरैं, बिधिको अपराध असह्य परैं ॥
अरु है द्विज धर्म न एह सही, कव हिंसकता इन्हँ[13] सील कही ।२३।
अब व्यर्थ कहा हठ आग्रहसौं, मिलि पूछहु मंत्र पितामह[14]सौं ॥
करिबे कछु तर्क गली कहिहैं, करि सो अरिनास क्रिया लहिहैं ॥२४॥

दोहा

इम इकंत[15] मुनिवर अखिल, सुमति मंत्र[16] संलापि[17] ॥
पुनि पत्ते[18] सप्तम[19]७ भवन, बिधि पुच्छन मत थापि ॥ २५ ॥

नाराचम्॥

---

१ संपूर्ण २ यज्ञ ३ भारी ४ रोगरहित (वर्षा नहीं होवे तो नैरोग्यता नहीं रहती इस भय को किस रीति से दूर करें) ५ होने योग्य चारउपाय-दण्ड, साम, भेद और दान हैं सो करो) ६ श्रेष्ठ (अथवा इनमें बलवान् दण्ड ही श्रेष्ठ है) ७ संसार का ८ यहीं यज्ञ नहीं करना है अर्थात् अनेक जगह करने हैं ९ यज्ञ १० परमार्थ ११ वेदोक्त (वेद में कहाहुआ) १२ हठपूर्वक १३ ब्राह्मणों को १४ ब्रह्मा से १५ इकट्ठे होकर १६ सलाह १७ कहकर १८ पहुंचे १९ सत्यलोक में

गये बिचारि यौं मुनीस सत्यलोकईसपैं,
जहाँ बिरिंचि[1] राजमान[2] सर्व सर्ग[3] सीसपैं ॥
जहाँ न लोभ क्रोध मोह ब्रह्मबाद[4] ही रहैं,
जहाँ समस्त बासना मनोबिकारकी दहैं ॥२६॥
जहाँ षडंग[5]६बेद च्यारि४देह धारिकैं बसैं,
जहाँ छ६ऊनबीह[6]१४ संक[7] दीह इक्क१ मैं नसैं ॥
तहाँ मुनीनको समूह जाय द्वारपैं ठयो,
निवेदि सावकास जानि द्वारपाल लै गयो ॥ २७ ॥
प्रणाम्य अंजली[8] उपेत जाय व्हाँ खरेरहे,
बहोरि कंजभू[9] निदेस[10] पीठ[11] सर्वनैं लहे ॥
कह्यो हिरण्यगर्भ[12] मंदहास[13]कैं मुनीनसौं,
समस्त तात[14] क्यों दिखात चित्त सोकलीनसौं ॥ २८ ॥
बिरिंचिसौं सुनैं इती कह्यो बसिष्ठ१उच्चरयो,
तनूज[15] बान दैत्यके त्रिलोक व्याकुली करयो ॥
किये स्वतंत्र आप जे बलिष्ठ इष्ट[16] दोउनदै,
न अध्वरादि[17] कर्म जे प्रसृष्ट[18] दुष्ट होनदै ॥ २९ ॥
त्रि३कालबोध[19]हू सुनौं हमैं जु सत्र[20] जो रच्यो,
अतीतकाल[21]तैं नृलोक[22] खात[23] इक्क हो खच्यो ॥
सु सक्र संब[24]के प्रभाव भिन्न भो पतालतौं,
परी मदीय[25] गाइ जाइ ताहिमैं बिहालतौं ॥३०॥

१ब्रह्मा २ शोभायमान ३ सृष्टिके ४वेदपाठ ५शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छन्द ज्योतिष ये छः वेद के अंग हैं जिन सहित चारों वेद ६ चौदह (छः हैं कम जिसमें ऐसे वीस) ७ इन्द्र ८ हाथ जोड़कर ९ब्रह्मा की १० आज्ञा से ११ आसन १२ ब्रह्मा ने १३ करके १४ हे पुत्रो १५ पुत्र १६ दोनों को वरदान देकर १७यज्ञादि १८ क्रोध युक्त (रूसे हुये) १९ हे ब्रह्मा (भूत, वर्तमान, भविष्य, तीन समय का बोध है जिनको) २० यज्ञ २१ गतसमय २२ मनुष्य लोक में एक खड्डा था २३ खुदा हुआ २४ इन्द्र के वज्र के २५ मेरी

लइ सुधेनु कह्लि मैं बिधाय गंग बिन्नती,
परैं जु भूत ओर तो कहूँ न पाइ दुर्गती ॥
सु[1] खात तात नंदि नाम अद्रि आनि पूरयो,
रु देस पै पवित्र होन नेम सत्र[2]को लयो ॥ ३१ ॥
तिन्हैं जु सत्रहू दयो बिगारि बेग आयकैं,
रुहैं अतीव मत्त आपतैं अभीष्ट[3] पायकैं ॥
ति[4] २लोकपाल थान छिन्नि ईस अप्पकौं[5] चहैं,
अहं[6]१ममत्व[7]२मूढ जेम अप्प देहकौं कहैं ॥ ३२ ॥
बर प्रदानके प्रभाव बेदधर्म यौं छुपैं,
अबोध[8] के प्रभाव ज्यौं प्रबोध[9] लीनता लुपैं ॥
कृपा अतीव रावरी सु विश्ववृत्ति[10] वे२हैं,
स्वयंप्रकास[11]१जोगसौं क्रिया प्रधान[12]२ज्यौं करैं ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

गर्ग१कह्यो तिन्ह[13] नासको, निश्चय हमहिं न आँहिं[14] ॥
गनित बिना कछु रासिगत, निश्चित ज्यौं ग्रह नाँहिं ॥ ३४ ॥
ज्यौं चलकेंद्र[15] कुजादि[16] जुत, ससि रबिके नहिं संग ॥
त्यौंहिं करत यह लोक तजि,भुवनन[17]कौं खल भंग ॥ ३५ ॥
उदय अस्त औरादि५के, याही केंद्र अधीन ॥

१सो (वह)खड्डा२यज्ञ करने का३वरदान४ते (वे)५अपने को ६ यह मैं हूं७यह मेरा है ८ अज्ञान अथवा अविद्या ९ ज्ञान में लीन होना १० संसार की जीविका को ११ योग स्वयं प्रकाश है परन्तु उससे भी क्रिया (कर्म) १२मुख्य हो जाती है ॥३३॥ गर्ग ने कहा कि कौनसा ग्रह कौनसी राशि में गया यह गणित किये विना निश्चय नहीं होता इसी प्रकार १३उन दैत्यों के नाश का हम को निश्चय नहीं है१४ ॥ ३४ ॥ जैसे भौमादि१६ के (मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर) के १५चलकेन्द्र (शीघ्रकेन्द्र) हैं और सूर्य चन्द्रमा के साथ चलकेन्द्र नहीं अर्थात् स्पष्ट गणित में सूर्य चन्द्रमा का मंदकेन्द्र से ही संबंध है, चल से नहीं, तैसे ही ये दैत्य संसार का साथ छोड़कर भूमि आदि भवनों (१७लोकों) का भङ्ग करते हैं ॥ ३५ ॥ मंगल आदि पांच ग्रहों का उदय अस्त और वक्रमार्ग इसी चलकेन्द्र के आधीन है इसी प्रकार उन

तिनके बस भवभूत त्यौं, किय बिधि सुन बिधि कीन ॥३६॥
कोन गली गहि बर दयो, कहैं परैं भ्रम थाग ॥
रवि सपातें भुजलँव बिनु न, निश्चित ससि उपराग ॥ ३७ ॥
ते लवहू मनु १४ मानसौं, ज्यौं ज्यौं पावत ह्रास ॥
त्यौं त्यौं अति उपराग अरु, लव न रहैं खग्रास ॥ ३८ ॥
त्यौंही तिन पर रावरो, ज्यौं ज्यौं अल्पप्रकोप ॥
त्यौं त्यौं वे अतिही बढत, लाज धर्म करि लोप ॥ ३९ ॥
भरत६ कह्यो बर एरिसो, दै सरजहु जिन भीति ॥
गुरु२ लघु१लघु१गुरु२ ऽ।।ऽ क्यौं करहु, ताल चाचपुट रीति ।४०।
दैत्यकुली इक स्वरन बिच, है निषाद७ सुहि तिक्ख ॥

दैत्यों के वंश में संसार के प्राणियों को किया सो हे ब्रह्मा यह विधि नहीं की ॥ ३६ ॥ आपने किस गली से वरदान दिया है सो आपके कहने से ही भ्रम की थाह पडेगी, क्योंकि राहु सहित सूर्य के भुज (गणित की एक क्रिया का नाम है) के अंशों विना चन्द्रमा के ग्रहण का निश्चय नहीं होता ॥ ३७ ॥ वे भुज के अंश चौदह के प्रमाण से जैसे जैसे न्यून होते जावेंगे त्यों त्यों चंद्रमा का विशेष ग्रहण होता जावेगा और अंश नहीं रहे केवल कला विकला मात्र ही रहे तो खग्रास हो जाता है ॥३८॥ इसी प्रकार उन दैत्यों पर आपका क्रोध न्यून होता जाता है ज्यों ज्यों वे (दैत्य) लज्जा और धर्म का लोप करके अत्यंत बढते जाते हैं ॥ ३९ ॥ भरत मुनि ने कहा कि ऐसा वरदान देकर भय उत्पन्न मत करो सङ्गीत के चाचपुट (इसका सविस्तर वर्णन भरतप्रणीत नाट्य शास्त्र के ३१वें अध्याय में देखो)नामक ताल की तरह गुरु को लघु और लघु को गुरु क्यों करते हो ॥४०॥ सातों स्वरों में दैत्य कुलवाला सातवां स्वर एक निषाद ही है सो ही तीक्ष्ण है (जिस स्वर के साथ जितनी श्रुतियां हैं वे सब उसके साथ लगा दीजाती हैं तभी वह तीक्ष्ण होता है उन सब में निषाद इस कारण से तीव्र माना गया है कि किसी स्वर के साथ तीन, किसी स्वर के साथ चार और किसी किसी के साथ पांच श्रुतियां हैं जिन सबके लगादेने से वे तीव्र होते हैं और इस निषाद के साथ केवल दो श्रुतियां हैं जिनके लगाने से ही तीव्र होता है और इसके साथ दोनों श्रुतियां लगाई जाती हैं तभी इसका उच्चारण होता है इस कारण से इसको सदैव तीव्रही माना है) ऐसे ही ये दैत्य भी आपके वरदान से पढ़कर तीक्ष्ण हुए तब श्रुति (वेद) की शिक्षा क्यों न घटे. भावा-

वे दैत्यहि वरवृद्ध तब, क्यों न घटैं श्रुतिसिक्ख ॥ ४१ ॥
उच्च२ नीच१ अरु नीच१ कों, उच्च२ करहु जिन देव ॥
भयो न्याय तिन्ह वर मिलत, च्यावितगमक स एव ॥ ४२ ॥
बर दैबोहि बुरो सदा, जानि दुष्टतम जाति ॥
ज्यों प्रातहि कपिकानडा१, अरु भैरव अधराति२॥ ४३ ॥
गानमाँहिं ज्यों अंस३ स्वर, पुनि पुनि आवत जात ॥
वे खल त्यों सब धर्मको , पुनि पुनि करत निपात ॥४४॥
आरोही४ स्वरतें अधिक, उच्च बढे लहि दाव ॥
कबलग तिनको रक्खिहो, थाँई५ लौं थिरभाव ॥ ४५ ॥
नित्यदोस६ ज्यों उर दहत, काव्यबिगारनहार ॥
योंही सब जगको अहित, दैत्यनको उपकार ॥ ४६ ॥

र्थ यह है कि दैत्यकुली होने के कारण से ही निषाद स्वर के साथ भी श्रुतियां घट गई हैं ॥ ४१ ॥ हे देव ऊंचे को नीचा और नीचे को ऊंचा मत करो उनको वर मिलने से च्यावितगमक न्याय हो गया ॥ ४२ ॥ अत्यन्त दुष्ट जाति को वर देना सदैव बुरा है जैसे हनुमान के मत का कानडा रागजिसके गाने का समय आधीरात का है उसको प्रभात में; और भैरव का समय प्रभात का है जिसको आधीरात में गाना बुरा है ॥ ४३ ॥ गाने में जैसे अंशस्वर (स्वर तीन प्रकार के होते हैं जिनमें जहां से स्वर उठे उसको गृह और जहां जाकर स्वर ठहरे उसको न्यास,और जो बार बार आता रहे उसको अंशस्वर कहते हैं) बार बार आता है तैसे ही वे दुष्ट धर्म का बार बार नाश करते हैं ॥ ४४ ॥ वे दुष्ट आरोही स्वर (प्रथम स्वर से सप्तम स्वर तक जो क्रम से चढता है उसको आरोही और सप्तम से प्रथम स्वर तक क्रम से पीछा उतरता है उसको अवरोही कहते हैं और एक स्वर में बारंबार उसी स्वर का प्रयोग हुआ करै उसको स्थाई कहते हैं) से भी अपना दाव पाकर अधिक बढ गये हैं तो अब कहां तक स्थाई स्वर के समान उनको स्थिर रक्खेंगे ॥ ४५ ॥ काव्य का बिगाडनेवाला नित्यदोष (काव्य में जो दोष हैं उनकी तीन अवस्था हैं कि,कहीं तो दोष ही गुण हो जाता है, कहीं उनका दोष मिट जाता है और कहीं दोष ही बने रहते हैं इसी तीसरी अवस्था को नित्यदोष कहते हैं) जैसे छाती जलाता है उसी प्रकार उन दैत्यों का उपकार करना सब जगत् का अहित है ॥ ४६ ॥ विभाव अनुभाव और संचारी भाव ये तीनों मिल कर रस होता है, तैसे ही

ज्यौं विभाव१ अनुभाव२ व्यभिचारी३ मिलि रस व्हैहि ॥
त्यौंही दुष्ट१ रु इष्ट२ तस, मिलैं बिना सक द्वैहि ॥ ४७ ॥
बयो कहांलग नहिं फलैं, सिंचमानं विख रुक्खं ॥
अलंकार परिवृत्त जिम, दै बर लीनो दुक्ख ॥४८॥
बिरत भयें अभिधादि ज्यौं, लखत व्यंजना३ ओर ॥
त्यौं हतउद्यम हमहु सब, चहत रावरो जोर ॥ ४९ ॥
सुचि अरि बीर१ भयानक२ रु, उग्र३ करुन४ बीभच्छ५ ॥
करुन१ भयानक२ हास्यके, ज्यौं ए उभय२ बिपंच्छ ॥ ५० ॥
करुनारसके सत्रु जिम, हास्यरस १ रु शृंगार २॥
सुचि १ दारुनं २ हसं ३ रौद्रके, ए तीन ३ हि खयकार ॥५१॥
सांत १ भयानक २बीरके,दोखी दुव २ पहिचानि ॥

दुष्ट दोनों दैत्य और उनका इष्ट (वरदान) मिलके दोनो नाश करनेवाले हुए ॥ ४७ ॥ बोकर सींचाहुआ विष का वृक्ष कहां तक नहीं फले अर्थात् अवश्य फलता है। एक बस्तु देकर उस के पलटे में दूसरी वस्तु लेने को परिवृत्ति अलंकार कहते हैं ऐसे ही आपने दैत्यों को वर देकर उनसे दुक्ख लिया ॥ ॥४८॥ अर्थ करने के तीन साधन हैं, अभिधा, लक्षणा और व्यंजना, इन में जिस किसी एक बस्तु का नाम लेने से उसी बस्तु को जान लेना जैसे घोड़ा इस नाम के कहने से घोड़े का ज्ञान होना, यह अभिधा वृत्ति है; और जहां पर मुख्य अर्थ का होना संभव न हो वहां पर किसी दूसरे संबंध से अर्थ किया जावे जैसे कि " गंगा में घर है " यह कहने से गंगा में घर होना असंभव होने के कारण गंगा के संबंध से गंगा के किनारे घर होने का अर्थबोध होता है,इसका नाम लक्षणा है,और जहां पर अभिधा और लक्षणा इन दोनों से अर्थज्ञान न हो तब व्यंग से तीसरे प्रकार से अर्थ लाया जावे उसको व्यंजना वृत्ति कहते हैं। यहां पर इसी बात का दृष्टान्त दिया है कि अभिधा और लक्षणा के नहीं रहने पर जैसे व्यंजना की तरफ देखते हैं तैसे ही हम भी सब निरुपाय होकर आपकी सहायता चाहते हैं ॥ ४९ ॥ शृंगार रस के शत्रु वीर, भयानक, रौद्र, करुण और वीभत्स हैं; और हास्य के शत्रु करुण और भयानक हैं ऐसे ही वे दोनों (दैत्य) शत्रु हैं ॥ ५० ॥ करुण रस के शत्रु हास्य और शृंगार हैं और रौद्र रस के शत्रु शृंगार भयानक और हास्य हैं ॥ ५१ ॥ वीर रस के शत्रु शान्त और भयानक ये

तीनन३म संजमं कियैं, सबरुत समुझ जाय ॥ ५८ ॥
त्यौंही तिनके प्रान१बपुर२,भिन्न भयें जग भव्य ॥
यात अति सुखकाज वे, चित्तवृत्ति हंतव्य ॥ ५९ ॥
धर्म प्रवर्त्तक दुष्ट दमि, इतर आप्प सम कोन ॥
ज्यां औषध भूलोक पर, पारद सम दूजोऽन्न ॥ ६० ॥
साधु१ भक्त२ सबही भजे, बढत खलनको दोर ॥
अमृता१ मधुर२ घन३ हरर४ तैं, ज्यौं बिसमज्वर घोर ॥ ६१ ॥
उपसंय रूप उपाय कछु, हेरि अनामय होन ॥
होहु अंत्रं कृमि खलन पर, तक्र१ राजिका२ लोन३ ॥ ६२ ॥
जोगेश्वर५ बोले जबहि, कहत पतंजलि ठीक ॥
द्विजहत्या१ तैं लोक२ जिम, तिनतैं१ सकल२ संभीक ॥६३॥
सौंच१ सत्र२ तप३ सत्य४ छत, पापहिं बढन न ठोर ॥
प्रभु तुम छत इनको इतो, बढिबो यह दुख घोर ॥ ६४ ॥

घट कहने से जो जल भरन का पात्र जानाजावे वह अर्थ है, और घट कहने से यह जानलेना कि इसीको घट कहते हैं यह ज्ञान है इसकारण से इन तीनों को जुदा करके जानना तो शब्दार्थज्ञान है, और तीनों के समुच्चय (जुदे-जुदे नहीं जानने) में केवल शब्दमात्र ही जानाजाता है, जिससे कुछ फल नहीं ॥ ५८ ॥ ऐसे ही उन दैत्यों के प्राण और शरीर जुदे होने से ही जगत् में कल्याण है इसकारण अत्यन्तसुख के अर्थ वे दोनों चित्तवृत्ति के समान नाशकरने के योग्य हैं; क्योंकि चित्तवृत्ति के निरोध से ही सुख की प्राप्ति होती है ॥ ५९ ॥ धर्म का प्रचार करनेवाला और दुष्टों का नाश करनेवाला आप जैसा और कौन है जिसप्रकार भूमि पर पारा के समान दूसरा औषध नहीं ॥ ६० ॥ दुष्टों का प्रचार वढने से साधु भक्त सब भगगये. जैसे पीपल गिलोय सहत मोथा और हरडे से घोर विषमज्वर भागता है ॥ ६१ ॥ शान्ति रूप कुछ उपाय नैरोग्य होने के लिये हेर कर आंतों के कीडे (पटार) रूप दुष्टों पर छाछि, राई और लवन समान होइये ॥ ६२ ॥ उसी समय याज्ञवल्क्य बोले कि पतञ्जलि ठीक कहते हैं; क्योंकि जिसप्रकार ब्रह्महत्या से लोग डरते हैं इसीप्रकार उनसे सब डरते हैं ॥ ६३ ॥ पवित्रता, यज्ञ, तप और सत्य इनके रहते पाप को वढने की जगह नहीं रहती परन्तु महाराज! आपके रहते इनका इतना वढना बडा भारी दुःख है ॥ ६४ ॥ अपनी

लहत पाप जिन लंघि[1] नर, निजपतनी ऋतुकाल ॥
त्यौं संध्यादिक नहिं बनत, तिनतैं बिप्र बिहाल ॥ ६५ ॥
संसकार सब मेटि खल, व्रात्य[2] करत द्विजबग्ग ॥
भयेजान भूलोकबिच, सूद्र बहुल[3] सब सग्ग[4] ॥ ६६ ॥

॥ षट्पदी ॥

मुनि पाणिनि[5] पुनि कहिय चिंति व्यवहार बुद्धिबल ।
न गुनै[6]१ वृद्धि२ के पात्र धातु दीधी[8]१ वेवी२ खल ॥
होत क्रिया[9]सुकरत्व[10] होत कर्म१ हि कर्त्ता२ जिम ।
प्रभु प्रसाद सुकरत्व[11] वे२हु कर्त्ताहि बनैं इम ॥
अव्यय१ बिभक्ति२ डिति[12]१ टि[13]२उभय२ हनहु बेग करि धर्म हित ।
जो कारकत्व[14]१ संबंधकौ२ तो उनकौं१ बैभव२ उचित ॥ ६७ ॥

स्त्री के ऋतुकाल में ऋतुदान नहीं देने से मनुष्य जिन (घोर) पापों को पाता है तैसे ही सन्ध्या आदि छः ६ कर्म नहीं बनने से ब्राह्मण, विकल हैं ॥ ६५ ॥ षोडश संस्कारों को मेट कर वे दुष्ट द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) को पतित करते हैं जिससे भूलोक पर सब सृष्टि बहुत शूद्रोंवाली हुईजाती है ॥ ६६ ॥ इस पीछे पाणिनि मुनि ने बुद्धिबल से व्यवहार को चिन्तकर कहा कि व्याकरणभर में दीधी और वेवी ये दो ही धातु गुण और वृद्धि के पात्र नहीं हैं अर्थात् इन दोनों धातुओं को गुण और वृद्धि नहीं होती ; जैसे इकार को एकार होना गुण, और इकार को ऐकार होना वृद्धि कहाता है. वे उपरोक्त दोनों धातुओं को नहीं होते इसीप्रकार ये खल भी वृद्धि के पात्र नहीं हैं. जैसे व्यापार में सुगमता होने से कर्म ही कर्त्ता होजाता है जैसे शीघ्र पकने वाले चावलों के लिये कहाजाता है कि ये चावल अपने आप ही पकजाते हैं, इस अवस्था में कर्म ही कर्ता होजाता है इसीप्रकार आपकी कृपा रूप सुगमता[11] से वे दोनों ही कर्ता बनगये हैं। और जैसे अव्यय तो विभक्ति का और डित् टि का तुरत ही नाश करदेता है तैसे ही उन दोनों को धर्म का हित करके शीघ्र मारो (व्याकरण में जहां अव्यय शब्द आजाता है उसके आगे की विभक्ति का लोप होजाता है और जहां डित् प्रत्यय होता है वहां टि का लोप होजाता है, जहां पर डकार को इत् संज्ञा होवे उसको डित् और शब्द के अन्त्य स्वर को टि[13] कहते हैं) और जो संबंध को कारकपन उचित होवे तो उन (दैत्यों) को भी वैभव देना उचित है अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध और अधिकरण, इन सातों में छः की तौ कारक[14] संज्ञा

॥ दोहा ॥

करहु अप्प नारद७ कह्यो, बीणा१ उचित प्रवाल२ ॥
कोणा१ अंगुली२ बिहित करि, लखहु अनिष्ट दयाल ॥ ६८ ॥
जथा ज्ञान१ बैराग्य१ जुग२, उचित भक्तिसुत आँहि ॥
साधु बानके खल सुतरन, नैंक उचितपन नाँहि ॥ ६९ ॥
हरिभक्तन जिम संग लहि, अधम जनन उद्धार ॥
प्रभु वर संगति पाय तिम, वे२खल बढिग अपार ॥ ७० ॥
जैमिनि८बुल्ले जोहि हो, कर्म निगम पुरुषार्थ ॥
कमलज दैत्य निबाजि किय, पद्धति वहहि अपार्थ ॥ ७१ ॥
सादीके बस सप्ति ज्यौं, सकल जास अनुसारि ॥
पुरुषकार करतार प्रभु, विधि सुहि बोर्यो वारि ॥ ७२ ॥
ज्यौं न अनीदृश कबहु जग, एह अनादि अनंत ॥
ज्यौंहि अनीदृश भाव तिन्ह, हैं न तो न सुभहंत ॥ ७३ ॥
व्यास कह्यो तुमकौं द्रुहिन, कैसैं न फुरत क्रोध ॥

होती है परन्तु छठे सम्बन्ध को कारक संज्ञा नहीं होती तो फिर कारक धर्म कहां से होवे ॥ ६७ ॥ नारद ने कहा कि आप बीणा के योग्य दंड कीजिये अर्थात् वीणा के दोनों तूंबों के ऊपर दंड रहता है इसी माफिक इन दोनों दुष्टों पर दण्ड करें और बीणा बजाने के पूर्व अंगुली में नजराफ पहन कर स्वरों की मिलावट देखीजाती है कि कौन स्वर ऊंचा चढकर स्वरों को बिगाडता है वही अनिष्ट है इसीप्रकार हे दयाल इन दुष्टों का भी अनिष्ट (नाश) देखो ।६८। जैसे भक्ति के पुत्र ज्ञान और वैराग्य दोनों ही उसके योग्य हैं ऐसे श्रेष्ट वाणासुर के सुतों में कुछ भी योग्यता नहीं है ।६९। हरिभक्तों की संगति से अधमजनों का उद्धार होना है ऐसे ही आपकेवरदान की संगति पाकर वे दोनों दुष्ट बहुत बढगये हैं ॥ ७० ॥ जैमिनि बोले कि आपने असुरों को वरदान देकर जो वैदिक कर्म रूपी पुरुषार्थ का मार्ग था उसको व्यर्थ करादिया ।७१। जैसे सवार के वश में घोडा होता है तैसे ही सब संसार पुरुषार्थ के वशीभूत है. उस करतार रूपी प्रभु पुरुषार्थ को हे ब्रह्मा आपने जल में डुबोदिया ॥ ७२ ॥ जैसे यह जगत् अनादि और अनंत होने पर भी कभी अद्वितीय नहीं अर्थात् अद्वितीय केवल ब्रह्म ही है तैसे ही उन दोनों दैत्यों को भी अद्वितीयपन नहीं होवे तो कल्याण का नाश नहीं होवे ॥ ७३ ॥ व्यास ने

जुग २ खल प्राकृत जालपैं, बनहु अबहि चिद्बोध ॥ ७४ ॥
होत वास्तविक तत्वमैं, कलित भेदको भेद ॥
त्यौं उनके उतकर्षमैं, अमर१निगम२उच्छेद ॥७५॥
नभमैं जैसैं नीलिमा२,विंब१मुकुरतल२बीच ॥
बर उपाधि तिम ते बढे, निजबल मानत नीच ॥ ७६ ॥
सुभ इच्छा१तैं सप्तमी७, भूमि तूर्यगां७भान ॥
तुम सब सुभ इच्छा तकहु, होय तबहि अघहान ॥ ७७ ॥
कौत्स१०कह्यो जिम सब सकुन, छिक्कातैं दबिजात ॥
त्रि३भुवनकों आक्रम्म्य तिम, घल्लत आसुर घात ॥ ७८ ॥

षट्पदी ॥

स्यामा१मंडल२काक३सिवा४पिंगलिका५ए जिम ।
सकुनन्के अधिराज लोक अधिराज अप्प तिम ॥
पथिक काज सिद्धिहित गज्जि गज१कर२त उद्धकर ।
दक्खिनतैं दिस बाम सुनि२हु आवत तोरन पर ॥
नखरी३चलंत अग्गैं उमगि करत इष्ट हय४बाम किल ।

कहा कि हे ब्रह्मा तुमको क्रोध कैसे नहीं होता है उन दोनों दुष्ट रूपी माया जाल पर अभी ब्रह्मज्ञान रूप बनो ॥ ७४ ॥ यथार्थ तत्वज्ञान होने में जैसे द्वैत भाव का नाश होता है तैसे ही उन (दैत्यों) की वृद्धि में देवता और वेद का नाश है ॥ ७५ ॥ आकाश में जैसे नीलापन, और कांचके भीतर का बिंब ये दोनों आकाश और काच के नहीं हैं किन्तु उपाधि से हैं तैसे ही वे दोनों नीच (दैत्य) बरदान रूपी उपाधि से बढकर अपना ही बल मानते हैं ॥७६॥ जब शुभ इच्छा होती है तभी सातवीं (अज्ञान, आवरण, भ्रांति, द्विविध, ज्ञान, शोकनाश, अतिहर्ष, वेदान्त में ये सात भूमियां मानीजाती हैं) भूमि में चौथी अवस्था में (विवेक, विराग, शम दमादि षट् सम्पत्ति, मुमुक्षुता,)ये चार भूमियां हैं) ज्ञान होता है ऐसे ही आप भी सब की शुभ इच्छा देखो तभी पाप का नाश होगा ॥ ७७ ॥ १२ छींक १३ घेरकर ॥७८॥ कोलचिड़ी, कुसौ, कौवा, श्यागस्याली, कोचरी ये जैसे शकुनों के स्वामी हैं तैसे ही आप सब लोकों के स्वामी हैं. मार्ग चलनेवाले को कार्यसिद्धि के शुभकारक हाथी का सूंड उठाकर गर्ज्जना करना और द्वार पर कुत्ते का दक्षिण दिशा से बाईं ओर आना, और नखवाले पशु का उमंग के साथ आगे चलना, इसीप्रकार

मुनि जनन इष्ट मख सिद्धिमें, अप्प पूजापति क्यों सिथिल ।७९।

दोहा ॥

प्रभु मिलाय तिन्ह मन्न्यु१पथर२,साप३सरट४अनुकार ॥
घूक१करहु खल घरनमैं, अपनी कित्ति२उदार ॥ ८० ॥
प्रभुके नैंकहि कोपतैं, दितिकुल निबल दिखात ॥
ज्यों सरितादिक अंतरितैं, सकुन निबल परिजात ॥ ८१ ॥

षट्पदी ॥

बुल्ले सुनि कनंभच्छ११द्रव्य गुनको जिम आश्रय ।
यौं सब भूतन अप्प कोन मेटैं द्वितीय भय ॥
लिंगपरामर्श जिम हेतु अनुमितिको है विधि ।
वाक्यबोधको योग्यता१रु आकांक्षा२सन्निधि३॥

घोड़े का बाईं तरफ शब्द करना शुभकारक है तो फिर मुनिजनों के प्रियम खसिद्धि में हे ब्रह्मा आप शिथिल क्यों हो ॥ ७९ ॥ हे महाराज उन सर्प के समान टेढे चलने और किरकाँटिया के समान रंग बदलनेवाले दैत्यों को क्रोध के मार्ग में मिलाकर हे उदार आपकी कीर्ति रूपी उल्लू (घूघू) को उन दु ष्टों के घरो में करो. इस का भावार्थ यह है कि जिस घर में घूघू रहता है व ह शून्य होजाता है ॥ ८० ॥ ४ नदी के ५ बीच में आजाने से ॥८१॥ कणाद मुनि बोले कि जैसे गुण का आश्रय द्रव्य है अर्थात् चौबीस गुण हैं वे न व ९ द्रव्यों में रहते हैं इसीप्रकार आप सब प्राणियो के आश्रय हैं फिर डर मेटनेवाला दूसरा कौन है. हे ब्रह्मा जैसे अनुमिति ज्ञान (जो अनुमान से जा नाजावे) में लिङ्गपरामर्श ज्ञान (जिस से अनुमिति होवे वह तो हेतु कहा ता है, और जिस की अनुमिति करै वह साध्य कहाता है इन दोनों के साहच र्य ज्ञान को व्याप्ति कहते हैं. और व्याप्ति सहित हेतु का ज्ञान होना परामर्श ज्ञान है) कारण है. और वाक्य बोध में योग्यता, आकांक्षा और संनिधि ये तीन कारण हैं (इन में किसीने भोजन समय में सैंधव मांगा तब भोजन के साथ घोडे की योग्यता न होने के कारण घोडा नहीं लाकर लवण लाना यह योग्यता है. जहां पर योग्यता नहीं हो वहां अर्थ भी नहीं होता जैसे अग्नि से सींचना यहां सींचने के साथ अग्नि की योग्यता नहीं है. इसीप्रकार भोज न के समय कहना कि लवण, यहां दूसरे पद की आकांक्षा है इस से जानलि या कि लवण मंगवाते हैं, इसीको आकांक्षा कहते हैं. यदि भोजन समय के विना खाली लवण का नाम लिया जावे तो वहां आकांक्षा नहीं होने के

तिम तुम अदेव अभ्युदयके हेतु भये सुन लोकहित ।
इन्ह प्रागभाव१जानहु असुभ अब प्रध्वंस२हि है उचित ॥८२॥
आत्माबिच१जिम बोध२सीत सपरस१जल बिच २जिम ।
संख्यादिक गुन पंच५रहत नँव९द्रव्यमाँहिँ तिम ॥
ज्यौं परत्व१अपरत्व२भूमि मुख चउ४भूतनमैं ।
अरु मनमैं५यौं सहजसिद्ध खल मति खलजनमैं ॥
चउबीस२४गुनन बिच बुद्धि१६जिम सब बिबेक साधन लसत ।
साधन समस्त सुभधर्मको दुष्टदमन सबकै सुमत ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

द्रव्यादिक छँ६पदार्थ ही, ज्यौं भासत सब ठौर ॥
यौं भयतैं भूतन भई, आसुरमय सब ओर ॥ ८४ ॥
कपिल१२कह्यो ॥

कारण कुछ अर्थ नहीं होता और पदों की समीपता को संनिधि कहते हैं जैसे किसीने किसी से कहा कि घोडा लाओ, यहां तो संनिधि होने से अर्थ समझ लियागया और इसी पद को प्रथम "घोडा" इतना कहकर कुछ समय बीच में छोडकर फिर "कहा" लाओ, तो यहां दोनों शब्दों की समीपता नहीं होने के कारण अर्थ नहीं होता) ऐसे ही आप उन दैत्यों की वृद्धि में कारण हुए हैं ॥ हे लोक के हित करनेवाले सुनो इन के प्रागभाव (होनों) को अशुभ जानो और अब इनका प्रध्वंसाभाव (नाश) ही उचित है ॥ ८२ ॥ जैसे आत्मा में ज्ञान, जल में शीतस्पर्श, और नवँद्रव्यों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन) में संख्या आदि (संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग) पांच गुण रहते हैं इसीप्रकार पृथ्वी, अप् तेज, वायु और मन में परत्व और अपरत्व गुण स्वतःसिद्ध रहते हैं तैसे ही दुष्ट जनों में दुष्ट बुद्धि स्वतःसिद्ध रहती है ॥ चौबीस गुणों (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म, शब्द) में जैसे सब ज्ञान का साधन करनेवाली बुद्धि शोभित है ऐसे ही दुष्टों को मारना सब धर्म का साधन सब के अनुमत है ॥ ८३ ॥ जैसे द्रव्य आदि छः (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय) पदार्थ ही सब जगह दीखते हैं तैसे ही प्राणियों को डरके कारण सब दिशायें असुरमय हो गई हैं ॥ ८४ ॥

॥ ८५ ॥

॥

॥ ८६ ॥

॥

॥ ८७ ॥

॥

॥ ८८ ॥

सालिहोत्र१४बुल्ले द्रुहिन, नाभि१पुच्छ२गुद३थान ॥
जा हयकै ए त्रय३भ्रमन, सो नहिं श्रेय निदान ॥ ८९ ॥
अध१ऊरध२आवर्त्त दुव२,संपुट परसैं नाँहिं ॥
सो सुभकर कबहु न सुन्यौं, क्यौं तस पोखन आँहिं ॥ ९० ॥
भये बरस छब्बीस२६ बय, हय रद करत प्रयान ॥
त्यौं तिनकी कबलौं अवधि, होत सर्ग उत्थान ॥ ९१ ॥
बढ्यो रुधिर जो नहिं कढै, घोटकको सुचिमास ॥
तो बिनास पावत तिमहि, इन्ह छत लोकाबिनास ॥ ९२ ॥
मंजामूल मिलाय पुनि, तैल२सिंवा३जुत देत ॥
एकबीस२१दिन तब हय सु, व्है नीरोग सुचेत ॥ ९३ ॥
त्यौं इन्ह मरन अनंत रहि, थप्पि बहुरि श्रुति मग्ग ॥
पीन करहु जग१सप्ति२कौं, यह१कारि रक्त२अलग्ग ॥ ९४ ॥
मल्लिनाग१५बुल्ले मिट्यो, उन२कारि जग आनन्द ॥
अस्व१बेग चिर२चंड३ज्यौं, मृगी१वेग द्रुत२मंद३ ॥ ९५ ॥

१ आषाढ मासमें२दैत्य३बकरी का४हलदी ५ वेदमार्ग ६ पुष्ट ७ संसार रूपी घोड़े को ८ दैत्य रूपी रक्त को अलग करके ।९४। मल्लिनाग बोले कि उन (दैत्यों) से संसार का आनन्द मिट गया जैसे प्रबल और अधिक ठहरनेवाले अश्व (कामसूत्र के मत से शश, मृग और अश्व से तीन प्रकारके पुरुष, और मृगी, बडवा और हस्तिनी ये तीन प्रकार की स्त्रियां होती हैं इनमें यथासंख्या अर्थात् शश को मृगी, मृग को बड़वा, और अश्व को हस्तिनी के समागम में आनंद होता है और इनके व्यतिक्रम में दुःख और अतृप्ति है) पुरुष के साथ कोमल और शीघ्र छूटनेवाले वेग को मृगी

बर पुब्बहि वे२ स्तब्ध१बलि, अघकर चपल२अछेह ॥
प्रथम सुरत ज्यौं चंडपन १,द्रुतपन२पुरुषन देह ॥ ९६ ॥
सबको सुख पकर्‌यो सँयन, मीचि नयन दृढमंत ॥
ऊर्ध्वभाग निज उदरको, कसत जुवति१जिम कंत२॥९७॥
सातन ही तिनको सुखद, मन्नत लोकनमाँहिं ॥
मंथनं ज्या अतिमोदकर, उपसॄप्तन बिच आँहिं ॥ ९८ ॥
बुल्ले मुनि पिंगल१६ बहुरि, सबन हृदय खल सूल ॥
नगन।।। करहु तिन्ह धारि नय, मँगनSSS न रक्खहु मूल ॥९९॥
कब मरिहैं आसुर कुटिल, बरहू सत्य निबाहि ॥
बंधु१रु दोधक२बृत्त बिधि, संसय रहत सदाहि ॥१००॥
प्रसरि बर्ण प्रस्तारगति, कबलौं बढहिं कराल ॥
नंष्टगनितके न्याय करि, गुमैं निकासे काल ॥ १०१ ॥

स्त्री का आनंद मिट जाता है ॥ ९५ ॥ वर मिलने से पहले ही वे अनम्र थे और फिर वर मिलने से पापी अपार चपल होगये हैं जैसे प्रथम समागम में पुरुष अनम्र और चपल होता है ॥ ९६ ॥ इन दोनों ने नेत्र मींचकर संपूर्ण का सुख हाथों से काठा पकड़ लिया है जैसे आलिङ्गन में स्त्रीपुरुष उदर के ऊपर के भाग (छाती) को भुजा से पकड़ते हैं ॥९७॥ उन (दैत्यों) का सातन (नाश) ही लोगों में सुखदायी है, उधर स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में सातन का अर्थ पतलापन है, जैसे काम शास्त्र में कहे हुए दश उपँसृप्तों में मंथनं ही अत्यन्त मोद करने वाला है. यहां स्त्री पुरुषों के संबन्ध में तो मंथन शब्द उपसृप्तवाची है और दैत्यों के संबंध में नाश का बोधक है काम शास्त्र के१०उपसृप्तों का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोड़ दिया है सो जिनको देखना होवें वे वात्स्यायन कामसूत्र के सांप्रयोगिक दूसरे अधिकरण के आंठवें अध्याय में देख लेवें ॥ ९८ ॥ फिर पिंगल मुनि बोले कि ये खल (दुष्ट) सब के हृदय में सूल हैं तिनको नीति धारण करके नगन अर्थात् सर्वलघु करो और प्रस्तार का मूल (आदि रूप) मँगन है सो मत रक्खो, अर्थात् सर्वगुरुSSSमत करो ॥ ९९ ॥ बंधु छंद और दोधकछंद इन दोनों में संदेह ही रहता है कि यह कौनसा है इसी प्रकार ॥ १०० ॥ वर्ण प्रस्तार के फैलाव के समान वे (दैत्य) विकराल कहां तक बढेंगे इसका निश्चय नहीं है और जिस प्रकार प्रस्तार के नहीं जाने हुए रूप को नंष्ट से निकाल लेते हैं इस प्रकार इनका काल निकालो ।१०१।

सब प्रस्तारन अंतसम, सरल[1]भाव भाजि सुद्ध ॥
वे२जो रहते अध्व[2]में, को होतो तब क्रुद्ध ॥ १०२ ॥
अंत्य अंक उद्दिष्ट[3]को, मत्ता प्रसर[5] प्रमान ॥
यौं प्रमान खल आयुको निश्चित कबलग वान ॥ १०३ ॥

मनोहरम् ॥

मेरुवारे कोठनलौं उच्च उच्च थोरे करि,
नीच नीच बाढे बहु सो नहि खटावती ।
मेरु अंक थान गिनती जिम पताकामाँहिं,
प्रसर[6]के अंकमाँहिं माँहिं मिटैं पावती ॥
माँहिं माँहिं यौं खल मिटैं तो जन पावैं प्रान,
पावैं प्रान तो न पावैं पुहवि[8] प्रजावती ।
मर्कटी ज्यौं छंद सरबस्व ऐंचि आनैं ऐसैं,
ऐंचि घर लैहैं अलका[10] १ रु अमरावती[11]२ ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

दोहा१ गाहा२ आदि दे, वृत्त[12] कला[13] गनबंध ॥
सुद्धरचन ज्यौं नहि सहज, यौं तिन्ह मृत्यु असंध ॥ १०५ ॥

सब प्रस्तारो के अंत में सर्वलघु का रूप होता है ऐसे ही वे दोनों (दैत्य) जो यज्ञ में सरल भाव से मार्ग में रहते तो उन पर क्रुद्ध कौन होता॥१०२॥ मात्रा प्रस्तार के उद्दिष्ट का अंतिम अंक में से गुरु सिरका अंक घटाने से प्रश्न का उत्तर होता है ऐसे ही उन दुष्टों की आयु जानने का निश्चय कब होगा ॥ १०३ ॥ मेरु के बनाने में ऊपर १ कोष्ठ करके नीचे के कोठे एक एक करके क्रम से बढते जाते हैं ऐसे उच्चों को घटाकर नीच को बढाना यह नहीं सहा जाता। और मेरु के अंकों के स्थानों की गिनती जैसे पताका के दंड में प्रस्तार (संख्या) के अंक परस्पर मिटने से मिलती है जैसे वे दुष्ट परस्पर मिटें तो लोग जीवन पावें और जो ये दुष्ट जीवन पावेंगे तो पृथ्वी प्रजावाली नहीं पावेगी। जिस प्रकार वृत्ति, भेद, मात्रा, वर्ण, गुरु, लघु इन छः कोठों में छन्दों के संपूर्ण कर्मों को खींचकर मर्कटी अपने में ले आती है ऐसे ही ये भी कुंबेर की पुरी और इन्द्र की पुरी को खींचकर अपने घर में लेलेवेंगे ॥ १०४॥ दोहा और गाहा (आर्या) आदि मात्रा गण बद्ध के छन्दों की शुद्ध रचना करना जैसे सहज नहीं है

मनोहरम्

परसुधरन१७ बोले स्वीय प्रानसौं जो चाप,
न्यून कछु होय सोही लछ्यं लैनहार है।
दिव्य चाप अर्ध ½ सह चउ ४ कर ३ मान होत,
अर्ध½ बिनु सो ½ हि ४ चाप मानुष उदार है॥
सोहु जो विसमपर्व तो सुभ बिचारयो त्यों,
कलंबहु धनुख प्रान मान सुभकार है।
आप बररूप चाप ऐंसिसो दयो जो खल,
बलसौं बिसेस तोहू बिजय बिफारे है॥ १०६॥
पट्टसूत्र१जो नै तो हरिन२गो३महिषँ४सिरा,
तिनके अभाव चर्म्म बस्त५गोकरन६के।
तेहु नाँतो पक्के बंस छल्ली७शिवमल्ली चोच८,
भाद्रमैं वा गुन इन्ह८से न अपरनके॥
सर नर१ पीछै थूल जोग्य दृढ भेदिबेके,
अग्गे थूल नारी२दूरपात बितरनके।

तैसे ही उनकी मृत्यु भी प्रतिज्ञा नहीं होने योग्य है॥१०५॥ परशुराम बोले कि अपने बल से जो धनुष कुछ कम होवे वहीं निशाना लेने वाला होता है और देवताओं के योग्य धनुष साढे चार हाथ के प्रमाण का होता है और चार हाथ का धनुष मनुष्यों के लिये श्रेष्ठ है॥ वो भी जो विषम (एक, तीन, पांच, आदि एकीवाली गणना) गांठ वाँला होवे तो शुभ है इसीप्रकार बाण भी धनुष के बल के प्रमाण से शुभ कारक होता है परन्तु आपने वरदान रूपी धनुष ऐसा दिया है कि जो उन दुष्टों के बल से अधिक है तो भी विजय की टंकार करने वाला है॥१०६॥ जिस की प्रत्यंचा रेशमें के सूत की, और वो नै हो तो हरिण, गाय, भैंसे के नस (ताँत की, यह भी नै होवे तो बकरा, खचरा, अथवा मृग विशेष के चाम की, और वे भी न हों तो पके हुए बाँस और शिवमल्ली (वृक्षविशेष) के छाल की इन दोनों (बांस और शिवमल्ली के छाल) से भादवा में बनानी और की नहीं। यहा भादवा वर्षा काल का बाची है जो बाण पीछे से मोटा होता है वह नर कहाता है सो दृढ वस्तु को भेदने योग्य है और जो बाण आगे से मोटा

क्लीब३ बान सर्बसम लछ्यके उचित असैं,
दैत्यनसे और कोन नासक नरनके ॥१०७॥

दोहा ॥

पूरक१सौं सर ऐंचि पुनि, कुंभक२सौं थिर थापि ॥
सह हुंकृति१ छोरयो जु सर, क्रमच्युत व्है न कदापि ॥ १०८ ॥

पट्पात ॥

प्रथम तैल१ बहु पाइ इष्ट सस्त्रहिं बहोरि इम ।
अर्कदुग्ध१हुंड शृंग भस्म२मूसक पुरीस३तिम ॥
पारांवतजपुरीस४लै रु इन्ह४करि करि लेपित ।
तैल१मथित२को पान बहुरि तिहिं देत अबेपित ॥
सस्त्र सु बहोरि करि सानसित पटकहु जँहँ तँहँ उपलपर ।
नन लहत भंग तिम खल हनन रचहु उपाय अमोघ अर॥१०९॥

पादाकुलकम् ॥

मथित१रु कदलीछार२मिलायैं, परिउसित सु करि सस्त्रहिं पायैं।

होवे वह स्त्री कहाता है सो दूर पटक देने के काम का है और आगे पीछे व रावर मोटा होवे वह बाण नपुंसक कहाता है सो निशाने के योग्य है इसी प्रकार दैत्यों के सिवाय मनुष्यों का नाश करनेवाला दूसरा कौन है ॥ १०७ ॥ पूरक (स्वास का खींचना) से बाण को खींचकर कुंभक (स्वासै का रोकना) से थिर रख के हुंकारों करने के साथ जो तीर छोडाजावे वह कभी अपनी गति को नहीं छोडता अर्थात् लक्ष्यतक पहुंच ही जाता है॥१०८॥ अपनी इच्छा-नुकूल शस्त्र को पहले तेल (तपाये हुए शस्त्र को तेल में डबोना) बहुत पिला कर फिर इसीप्रकार आक का दूध मींढे के सींग की भस्म ऊंदरा की मींगणी कबूतर की बीट लेकर इनका बारबार लेप करना, फिर तेल और बिना थरवा-ले दही का घोल्या [मट्ठा] की अवेपित [निरंन्तर] पाण देवे फिर उस शस्त्र को शाण से तीखा करके जहां चाहो तहां पत्थर पर पटको सो कभी नहीं टूटेगा इसीप्रकार दुष्टों को मारने का खाली नहीं जावे ऐसा शीघ्र उपाय करो॥१०९॥ दही की थर को दूर करके उसका घोल्या (मट्ठा) बनाकर उस में केले का खार मिलाकर पड़ा रक्खे जब वह सड़जावे तब उसकी पाण देवे फिर उस

रचि सित[१] उपल[२]१ लोह२ परभारहु[३],ऽहै न कुंठ[४] इम मंत्र[५] सम्हारहु ।११०।

मनोहरम् ॥

सारस्वत१८बोले जलहीन देसमैं जो खनि[६],
काढ्यो जलचाहैं तो ए लच्छन निहारिये ।
बेतसँ[७]१ककुभ[८]२जंबू३कोविदार[९]४भूतावास[१०]५,
जन्तुफल[११]६फल्गु[१२]७बिल्व८बदरी९बिचारिये ॥
सप्तपर्ण[१३]१०तिलक[१४]११मधूक[१५]१२रु करंज[१६]१३नीप[१७]१४,
नालिकेर१५दंती[१८]१६ताड१७त्रिवृता[१९]१८हु धारिये ।
बीरणा[२०]१९निवाली[२१]२०पीलुपर्णी[२२]२१वाँकु[२३]२२पास खनैं,
जानि दिगभेदँ[२४] नीर तबही निकारिये ॥ १११ ॥
मस्तक उभय२की खजूरि१जँहँ होत अथ-
वा सित[२५] प्रसून[२६] होत किंसुक[२७]१कनीर३हैं ।
पुब्ब[२८]१सौं प्रतीची[२९]२किंसुकादि२सौं उदीची[३०]२ततो,
क्रम ढिग खोदैं तीन३द्वै२पुरुष[३१] नीरहैं ॥
भूमैं घर्म[३२]१ऽहै वा धूम२तो तहाँ रु खेतमैं जो,
स्निग्ध१सित२अन्नसिरा निकट घनी रहैं ।
दुष्टनके नासमैं उपाय ऐसैं हेरि हाय,

शस्त्र को तीखाकरके पत्थर[२] और लोहे पर पटको[३] सो कभी भोटा[४] (मुड़ना) नहीं होवेगा इसीप्रकार आप भी मंत्र [सलाह) करो ॥ ११० ॥ ६खोद के ७ बेत, ८ ककुभ (वृक्षविशेष जिसको अर्जुन वृक्ष कहते हैं) जामूनि, कंचनार, बहेडा, ऊमरा, कालागूलर, बील, बोर, सप्तपर्णी,(वृक्ष विशेष जिस के प्रत्येक गांठ में सात सात पत्ते होते हैं) तालमखाना, महुआ, करंज, (किंणगच) कदंब, नालेर, बज्रदंती [बोंली] ताड, निसोत, गांडर, नेवारी [नवमालिका] पीलुपर्णी (वृक्षविशेष) उदेही [दीमक] के बासला के पास खोदै दिशा का भेद जानकर, तभी पानी निकाले ।१११। दो माथे की खजूरी होवे अथवा स्वेत फूल का ढाक और कणीर होवे, वहां पहिले कहे हुए बेत आदि खजूर पर्यन्त वृक्षों के तो पश्चिम दिशा में और पलाश [छीला] कणीर के उत्तर दिशा में क्रम से पास ही खोदे तब तो दो तीन परसे [ऊबड़ा] नीचे पानी है और भूमि में गर्मी होवे वा धुआं होवे तहां पर और जो खेत में

देर न करो तो घोर बेर[१] न बनारहैं ॥ ११२ ॥
[२]रक्तभू१मैं तोरो२स्वेत१कपिल[३]२मैं खारो३जैसैं,
स्याम१नील२भूमैं कढै मिष्ट३जल जानिये ॥
भूमि [४]खनत जो सिला टं[५]कहु गिनैं न तापैं,
[६]अनल प्रजारिकैं [७]स्वर्ण तिहिं आनिये ॥
[८]बदर१कुलत्थ[९]२कल्कैं[१०] तक्र१सुरा[११]२कांजिकैं[१२]३मैं,
सप्त७दिन राखि ताको सेकैं[१३] तँहँ ठानिये ।
सोचैं वा [१४]सुधा१को जल तो जो भंगपावैं ग्रैसैं,
दुष्टनमैं१हत्या२तिन्ह१भंग२मनमानिये ॥ ११३ ॥
कटु[१५]क१कुगंधि२खार३आविल[१६]४विरस[१७]५नीर,
कूपमैं जो व्है तो [१८]उपचार यह प्रेरिये ।
[१९]आमलक१[२०]कतक२[२१]उसीर३राजकोसातक[२२]४,
[२३]अर्जुन५पयोद[२४]६नको क्षोदैं[२५] तँहँ गेरिये ॥
तो जल प्रसन्न[२६]१लघु२सुरस३सुगंधि४होत,
यौं वाँ[२७] समुझाइ मति दुष्टनकी फेरिये ।

चिकना, तीखा अन्न होवे वहां पर पानी की सीर बहुत नजीक रहती है इसी प्रकार उन दुष्टों के नाश में भी उपाय हेर कर देरी नहीं करैं तो दुःख कारक भयंकर समय नहीं बनारहै ।११२। लाल भूमि में तोरा और स्वेत व पीली भूमि में खारा इसी प्रकार काली और नीली भूमि में मीठा पानी निकलता है और भूमि को खोदते समय ऐसा पत्थर आवे कि जो टाँकी को नहीं माने तो उस पर अग्नि जलाकर अग्नि के समान लाल करलेवै फिर झड़बेरी औ र कुलत्थ को शामिल पीस कर छांछ मद्य और कांजी [धान्य को सात दि न सड़ाकर कांजी बनाते हैं] में सात दिन तक राखे उस मद्य[१३] के पानी से उस शिला को सींचै[१४] तो वह टूटजाता है तैसे ही इन दैत्यों में हत्या का सिं चन करके इनके नाश में मन कीजिये ॥ ११३ ॥ जिस कुए में पानी कडवाँ, दु र्गंधी, खारा, गदला[१६]हुआ विना[१७] स्वाद का होवे तो यह इलाज करना कि आँ[१९]वला, निर्मली, खश, बडी तोरी, अर्जुन[२३] वृक्ष जिस को ककुभ कहते हैं औ र पयोद[२४], (नागरमोथा) इन सब का चूर्ण[२५] उस में डाले तो जल निर्मल[२६], ह लका, स्वादिष्ट और सुगंधिवाला होता है ऐसे ; अथवा समझा कर उन[२७] दुष्टों

सारस्वत[18]बैन ऐसैं सुनत बिरंचिनसौं,
पालकाप्य[19]बोले इनकौंहु हित हेरिये ॥ ११४ ॥
मधुनिभ१दंत२जाके जंघन१बराहसम२,
चापसम१बंस२मदको जल१हरित२है ।
रक्त१मुख२ओठ३तालु४नैन१मधुपिंगल२है,
वृत१कर२अंग१मृदु२लोम आवरित३है ॥
वृत्त१पीन२कंधरा३पयोदसम१बृंहित१है,
सप्त७कर१ऊंच१मद सुरभी२ झरित है ।
नखरे१ अठारह१८।२वा बीस२०।३ ऐसो जा नृपकै,
भद्र१गज होइ तासौं दुर्जन दरित है ॥ ११५ ॥
कक्षा१ उर२ सिथिल३ प्रलंब१ थूल२ कुक्षि३ गल४,
पेचक५ मृगेंद्र१ दृष्टि२ मंद२कै ए मानैं हैं ।
ह्रस्व१ रद२ सुंडा३ कंठ४ मेहन५ उदर६ लोम७,
कर्ण८ पय९ थूल१ नैन२ मृग३कै बखानैं हैं ॥
मिश्र४कै ए चिन्ह सब मिश्रित मुनिन कहे,
इन्ह करि ऐसैं च्यारि४ जाति गज जानैं हैं ।

की बुद्धि को फेरो, सारस्वत के ऐसे बचन सुनकर ब्रह्मा से पालकाप्य बोले, कि इन (नीचे कथन किये हुए) को भी अच्छे जानिये ॥ ११४ ॥ महुवा के कच्चे फूलों के समान है दन्त जिस के जाँघे सूवर जैसी धनुष के समान पीठ का हाड, मद का जल हरारंग का, मुख, ओठ, और तालु लाल होवैं, पके हुए महुवे के फूल के समान लाल और पीले नेत्र, गोलाकार सूंड, कोमल और केशों से ढकाहुआ शरीर, गोल और पुष्ट कंधा, मेघ के समान गाजनेवाला, सात हाथ ऊंचा, जिस का मद सुगन्धित झरनेवाला होवै और जिस के अठारा या बीस नख होवें उसको भद्रजाति कहते हैं ऐसे हाथी जिस राजा के पास होवें जिस से शत्रु पीडित होते हैं ॥ ११५ ॥ कांख और छाती ढीली हो, कूख, गला और पूंछ का मूल भाग लम्बा और मोटा होवे सिंह की सी दृष्टि होवे, ये लक्षण मंदजाति के हस्ती के हैं, और जिस के दांत, सूंड, गला, लिंग, उदर, केश, कान और पग छोटे होवें और कान पग नेत्र बडे होवें ये लक्षण मृगजाति के हाथी के हैं और जिस हाथी में ये ही सब लक्षण मिले हुए होवें उसको मुनि लोगों ने मिश्रित जाति का हाथी कहा है.

तैसैं दुष्टभाव करि धूम्रकेतु१ जंभ२ दोहु२,
मारिबे उचित महादुष्ट पहिचानैं हैं ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

कण्व१ कह्यो जिम कुणपजल, सब तरु पोषक सिद्ध ॥
अघ[2]पोषक तिम दुष्ट वे२, अज[3] प्रसाद बरइद्ध ॥ ११७ ॥

॥ मनोहरम् ॥

कोल[9]१ मृग२ मच्छ३ खड्गी४ छगल५ उरभ्र६नके,
मेद१ पल[10]२ मज्जा[11]३दिक जथा[12]भाग लीजिये ।
एककरि नीरमाँहिं चुल्ली[13]पैं पकाइ तामैं,
दुग्ध१ घृत२ माँक्षिक[14]३ओ सीझे मास४ दीजिये ॥
तिल खल५ चूरि डारैं जो तजैं न घन[15]भावता,
तो जल उष्ण डारि तास द्रवैं[16] कीजिये ।
भांड भरि एक१ पक्ष गोमय[17]मैं राखैं बनैं,
कुणप सो सर्वतरु पोषक पतीजिये ॥ ११८ ॥
तिल१ मधुयष्टि[18]२ मधु[19]३मिश्रित कुणप४ सींची,
बदरी[20] फलत जिन्ह फलन सिता[21] दवैं ।
बिच्छू१ अलि[22] बिद्ध[23] करि१धेनुघृत धूप दै२ रु,

इस रीति चार जानि के हाथी जानेजाते हैं तैसे ही खोटे अभिप्राय वाले धूम्रकेतु और जंभ दोनों हस्ती मारने योग्य पहिचाने हैं ॥ ११६ ॥ कण्व ने कहा कि जैसे कुणपजल, सब वृक्षों के पोषण करने में सिद्ध है तैसे ही वे दोनों दुष्ट ब्रह्मा[3] के प्रसन्नता के वरदान से बढे हुए पापों के पोषक हैं ॥ ११७ ॥ सूवर, हिरण, मच्छी, गैंडा, छाली, मेष, (मींढा) के चरबी, माँस, मींजी[11] आदि सब बराबर[12] भाग लेकर पानी में मिलाकर चूल्हे[13] पर पकावें जिस में दूध, घी, सहत[14] ये तीनों मांस के सीझने पर डाले और पीछे तिलों की खल का चूरा डाले, जो काठोपन[15] नहीं मिटै तौ गरम ज़ल डाल कर ढीला[16] करलेवे उसको भांडे में भरकर पन्द्रह दिन तक गोबर[17] में राखे उसको कुणप कहते हैं, वह सब वृक्षों को बढानेवाला है ॥११८ ॥ तिल, मुलहटी[18], और संहत[19] मिलाकर कुणप से सींचै तो बोरड़ी[20] का वृक्ष फलता है जिस के फलों से मिश्री[21] भी दबजाती है. और बीछू के डंक[22] से वेधन[23] करके गाय के

आखु१ किटि२ मेद३ सींची फलत लता सबै ॥
बालतरु जे बढैं न तास घृतधूप दै१ रु,
दुग्ध१सौं कुणप२ सौं वा जवजल३सौं जबैं।
सींचिकैं बिडंग१ तिल२ कल्कको बिलेप कियैं,
बालतरु तेते वृद्धि परम लहैं तबैं ॥ ११९ ॥

दोहा

एक१बेर फलि१फूलि२तरु, बहुरि फलैं१फूलैं२न ॥
कुणप१दुग्ध२जुग२सेकतैं, उपजैं फल१ सुम२ ऐन ॥ १२० ॥
विखतरु खल इम अतिबढे, प्रभुवर औषध पाइ ॥
अब तिनको सातन उचित, ज्यौं न प्रजा मिटिजाइ ॥ १२१ ॥

मनोहरम्

पारासर२१बोले जाके अरुन १मृदुल२ ओठ३,
जिव्हा४ तालु५ न्हस्व१ कर्ण२ सुंदर१उदर हैं ॥
पृष्ठ१ हुंड तुल्य२ जंघा३ संहत१ अरुन२ सुर३,
व्यूढ१ उर२ पुष्ट१ रु बडो२ ककुद३ बर हैं ॥
अरुन अपांग२ अति१ उच्छ्रित२ मृगेंद्र१खंध२,
सास्ना१ मृदु२ अल्प३ भूलौं१ पुच्छको प्रसर२ हैं ॥

घृत का धूप देवै और चूहा सूवर की चरबी को सींचै तो सभी वेलाड़ियां फलती हैं और जो छोटे वृक्ष नहीं बढते होवैं उनको घृत का धूप देकर दूधसे, कुणप से अथवा जव के जल से सींच के वायविडंग और तिलों को शामिल पीसँ कर उस का लेप करे तो वे सब छोटे वृक्ष पूरे बढते हैं ॥ ११९ ॥ जो वृक्ष एक वेर फल कर फिर नहीं फूले फलै तो कुणप और दूध इन दोनों के सींचने से फल और पुष्पों का घर वनता है ॥ १२० ॥ खल रूपी जेहर के वृक्ष आप के वर रूपी औषध पाकर इसीप्रकार वहुत वढे हैं जिनका अब नाश करना उचित है कि जिस से प्रजा नहीं मिटे ॥१२१॥ पराशर बोले कि जिस वृषभ (बैल) के लाल और कोमल ओठ,जीभ और तालु छोटे, कान और पेट सुन्दर, मींढों [भेड] के समान पीठ मिली हुई और लाल जंघा मोटा स्वर (जोर से टांडनेवाला) पुष्ट छाती और वडी खूंदंड पीठ के ऊपर का मांस पिंड श्रेष्ठ है, नेत्रों के कोये लाल, सिंह के समान वहुत ऊंचा

ताम्र१ लघु२ सृंग३ त्योंही स्निग्ध१ तनु२ लोम३ चर्म४,
जो वृषभ ऐसो सो सदाही सुभकर हैं ॥ १२२ ॥
बाम अंग१ बामावर्त२ दक्खिन१ बिलोमावर्त२,
नासादेस१ सबल२ बिडाल सो१ बदन२ हैं ।
मल्लि१ वालवांयज२ से बुद्बुद३ से नेत्र४ जंतु१,
उत्पल२ कमल३ रंग४ सुस्वर१ नदन२ हैं ।
अंडकोस १ ऱ्हस्व रु उरभ्रसो१ उदर२ जाकै,
सोही वृख भारसोढा१ जवको सदन२ हैं ।
ऐसैं सुभभाव वर रावरेतैं पायो तिन्ह,
करत तथापि दुष्ट जगको कदन ह ॥ १२३ ॥

दोहा

सुभ वृख लच्छन ए कहे, धेनु उचित इनमाँहिं ॥
जो जो व्है सो तास सुभ, ऊधं१ पुष्ट२ पुनि३ आँहिं ॥ १२४ ॥

मनोहरम्

मूसकसम१ रु अस्र आविल२ नयन३ जाकै,
प्रचल१ चिपिट२ श्टंग३ खरसम१ रंग व्है ।

कंधा, कोमल और छोटी सास्ना (गले के नीचे की कम्मल) भूमि तक लंबी पूंछ, तांबा के रंग के समान छोटे सींग, इसी प्रकार शरीर के केश (बाल) और चर्म (खाल) कोमल, ऐसे होवें वह सदैव शुभकारी है ॥ १२२ ॥ बांये शरीर में बांये मुख की भंवरी और दाहिने शरीर में उलटे मुख की भंवरी, नाक का स्थान बलवान् अथवा सलवट (झुर्रियां) पड़ती होवें बिल्ली के जैसा मुख वैडूर्यमणि के समान अथवा मल्ली (बेला का फल) के समान वो जलके बुद्बुदों के समान नेत्र, लाख, कुमोदनी और कमल के समान रंग, अच्छे स्वर से नाद करना छोटे अण्ड (आंड) भेड़ के जैसा पेट जिसके होवे वही बैल भार खींचने में समर्थ और बेग का घर है इसी प्रकार उन दैत्यों ने आपके वरदान से शुभभाव पाया है तो भी वे दुष्ट जगत् का नाश करते हैं ॥ १२३ ॥ ये बैल के शुभ लक्षण कहे उन में से ही गाय के भी जो जो होवें वह शुभ है इन के सिवाय उवांडा स्तनप्रदेश पुष्ट मोटा होना अच्छा है ॥ १२४ ॥ जिस गाय के चूहा के समान काले बाल और नेत्र, चौड़े और चिपटे

रदं१ चउ ४।२ सप्तम ७।३ वा तथा दस१०।४ रु लंबो१तुंड२,
ह्रस्व१ अरु थूल२ ग्रीवा ३ पिट्ठि नंत अंग२ हैं ॥
शीगों१ खुर२ स्याम१ दिग्घ२ जिव्हा३लघु१ दिग्घ२ गुल्फ३,
जवसम१ मध्य२वडी१ ककुंद२ कुबंग३ व्है ।
देह१ कृंस२ ऐसी धेनु असुभ सदा ज्यों त्योंही ,
असुभ अदेवनको अब कब भंग व्है ।। १२५ ॥
धेनु चिन्ह असुभ कहे जे वृखमैंहु ते रु,
अधिक हुए जो अंडकोस१ लंब२ थूल३ व्है ५।
नसमय१ क्रोडदेस२ नसमय१ थूल२ गंड३,
मेहन१ त्रिनस२ लंब३ अतिकृस मूल है ।
तालु १ ओठ२ स्याम३ ओतुंसे१ हग२ कॅपिल१ रंग२,
थूल१ मंगि२ थूल१संग४देह१ कारे फूल२ व्है ।
ऐसो वृख असुभ तथा वै दुव दुष्ट करैं,
असुभ प्रजाको त्यौं त्यौं सालै हिय हूल है ॥ १२६ ॥

दोहा

पय उठात जिम पंकतैं, वृख वह भार बहैं न ॥

सींग, गधा के समान रंग; चार, सात, तथा दश दांत, लंबा मुख, छोटी और जाड़ी गरदन (गला) और पीठ, अंग झुके हुए शींग (सींग) और खुर काले, लंबी जीभ, छोटे और लंबे पगों के टिकूने (गट्ट) जिसके, बराबरीवालों से मध्यमवर्ग, मोटी और बांकी कूंधड़, काला शरीर, ऐसी गाय सदैव अशुभ है इसी प्रकार दैत्य अशुभ हैं जिन का अब कब नाश होवेगा ॥ १२५ ॥ गौओं के जितने अशुभ लक्षण कहे वे ही बैलों के अशुभ हैं इनके सिवाय लंबे और मोटे अांड, नसोंवाला दोनों अगले पगों के बीच का स्थान, मोटी और नसोंवाली गुदा, तीन नसोंवाला, लांबा और मूल से पतला लिंग, तालुआ और ओंठ काले, बिल्ली के जैसे नेत्र, नीला, हरा मिला हुआ (धूसरा) रंग, लिंग का अग्रभाग मोटा, मोटा सींग, शरीर पर काले छींटे ऐसा बैल अशुभ है इसी प्रकार वे दोनों दुष्ट प्रजा का अशुभ करते हैं ज्यों ज्यों हृदय में शूल हो कर सालते हैं ॥ १२६ ॥ कीचड़ में पग उठाकर चले इस माफिक पग उठा-

कृष्णसारनिभ १भस्मनिभ२, वृख ढिग थूलं रहैं न ॥ १२७ ॥
यों वे २१ धर्मवँहैं न२अरु, प्रभु रहैं न१जगप्रान२ ॥
अरहि बिचारहु३ अप्प सब, दुष्टन नास निदान ॥ १२८ ॥

मनोहरम्

छाग सित१ होइ जाके दाहिन प्रतीकमाँहि२,
व्है असितचक्र३ तो जो सब सुभकारी है ।
ऋष्यमृगरंग१ स्यामरंग२ वा अरुनरंग३,
धारैं सितचक्र४ सोहू सुभ अनुकारी है ॥
दंत१ दस१०२ वा नव ९३तथा व्है अष्ट८४ जाकैं अरु,
कंठमनि१ एक१२ त्यौंहीं मुंडभाव१ धारी२ है ।
सर्व१ सित२ सर्व१ स्याम२ अर्ध१ सित२ अर्ध१ स्याम,
अर्ध१ वा कपिल२ सो पै मांगलिक भारी है ॥ १२९ ॥
नयन अरुन२ वहैं३ यूँथकैं१ पुरोगँ रहैं१,
जल अवगाहि१ सब पुब्ब२ चहैं बस्त जो ।
गौरवर्ण१ कृष्णपय२ कृष्णवर्ण१ गौरपय२,

कर चलने वाला बैल भार को नहीं खींचसकता ऐसा बैल समूह में कभी नहीं रहता अर्थात् जहां वह रहेगा वहां पशुओं का झुंड नहीं रहता जैसे काले हिरणों का और भस्मी का समूह एक स्थान पर नहीं रहता ॥ १२७ ॥ इसी प्रकार वे दोनो दुष्ट न तो धर्म को धारण कर सकते हैं और न उनके साथ जगत् के प्राणी रह सकते हैं इस कारण से हे प्रभु! आप उन दुष्टो के नाश को निश्चय शीघ्र ही विचारो ॥ १२८ ॥ श्वेत बँकरा के दहिने अंग में काले छिड़के होवे तो वे सब सुख करने वाले हैं रोझ के समान रंग में अथवा काले और लाल रंग मे श्वेत चक्र होवें तो भी शुभ है, जिसके दश, नव, अथवा आठ दांत होवें जिसके एक कंठमनि[गले के स्तन] होवे और मुंडभाव को धारे अर्थात् मस्तक पर बाल नहीं होवै सब श्वेत होवे, सब काला रंग होवे, अथवा आधा श्वेत और आधा काला वा आधा पीलो रंग होवे सो भी शुभकारी है ॥ १२९ ॥ लाल नेत्र होवे और समूह(एवड)के आगे चले जल मे घुसने मे जो बँकरा सब से पहिले घुसना चाहै स्वेत रंग वाले के काले पग और काले रंग वाले के स्वेत पग और इसीप्रकार स्वेत रंग वाले के काले आंड और काली पूंछ

गौरवपु१ त्योंहीं स्याम२ मुष्क३ बालहस्त४ जो ॥
एक ११ पयर२ स्याम३ वपु४ गौर५ वा चरैं१ जो मंद २,
अरु सहं सब्द३ जैसैं छगल प्रसस्तं जो ।
तैसैं दुव२ दुष्टन हनौं तो सुभभाव लोक,
निखिलं लहैं यौं अब करहु अत्रस्त जो ॥ १३० ॥
गल१ मनि२ व्है अनेक३ जाकै रद१ सप्त७१२ अरु,
खरसम१ नाद२ खोटे१ नख२ रु बरन६ व्है ।
जिव्हा१ तालु२ स्याम३ रु मतंगज सो१ सीस२भासैं,
प्रज्वलितं१ बालधि२ कटेसे१ त्यौं करन२ व्है ॥
ऐसो अजं असुभ धनीकै विधुरा करन,
त्योंहीं दुष्ट वे२ जगकै विधुरा करन व्है ।
जिततित ढूँढि ढूँढि प्रानिन बितायैं जात,
आप न सुनौं तो जग कौनके सरन व्है ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

अजलच्छन ए सुभ१ असुभ२, अजा उचित इनमाँहिं ॥
व्है जो तो सो सो तसहु, निजफल टारत नाँहिं ॥ १३२ ॥

मनोहरम् ॥

पंचनखवारे१ पयर२ तीन ३१३ व्है जा कुक्कुरकै,

होवे अथवा स्वेत रंग वाले के एक पग काला होवे मंद चरने वाला और स ब्द के साथ बोलनेवाला बकरा शुभ है ऐसे ही इन दोनों दुष्टों को मारो तो सब लोक शुभ भाव को लेवे जिन को अब इसप्रकार भय रहित करो।१३०। जिस बकरा के गले में अनेक स्तन होवें,सात दांत, और गधे के समान श ब्द, बुरे नख, और बुरा रंग होवे जिस की जीभ और तालु काला, हाथी के जैसा माथा, जली हुई होवे ऐसी पूंछ, कटे हुए से कान होवें; ऐसा बकरा अशुभ और स्वामी के वियोग कराने वाला है.त्योंही वे दुष्ट दैत्य जगत् के वियोग कराने वाले हैं जो जिधर तिधर हेर हेर कर प्राणियों को बिताये जाते हैं अब आप नहीं सुनो तो संसार किसके शरण में है ॥१३१॥ ये बक रे के शुभ अशुभ लक्षण हैं वे ही बकरी के शुभ अशुभ हैं वे जो जो उस बकरी में होवें वे अपना फल नहीं टालते ॥१३२॥ जिस कुत्ते के तीन पगों में पांच

अग्रपय१ दाहिनौं२ जो छ६ नखरवान३ व्है ।
ओठ१ नासा२ अरुन३ मृगेंद्रसो१ गमन२चलैं१,
सुंघत२ धरनि३ जाकै लंब१ मृदु२ कान३व्है ।
पुच्छ१रु सटा २ व्है जाकै लोमसं३ महामृदुल,
नयन जुगल २।१ जाकै भल्लुक समान३ व्है ।
ऐसो जहँ स्वान व्है१ तो लच्छीको निधाँन व्है२ज्यौं,
आप बरदान व्है१ तो बानसुत मान व्है२ ॥ १३३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पंच५ पंच५ नख जास चरन त्रय३, छ६नख बिराजित अग्र बाम पय॥
करन१प्रलंब२पुच्छ१मुख२पिंगल३,मल्ली१दृग२सरमा सो सुभफल॥
यो सुभभाव लोककैआनहु, महाखलन अब नास प्रमानहु॥
सुनत परासर२१बचन अबंचन, बररुचि२२बोले सुनहु बिरंचन ॥१३५॥

मनोहरम् ॥

प्राकृतगिरामैं ज्यौं इवर्ण१रु उवर्ण२दोहू२,
मिलत सवर्णहीसौं त्यौं मिले स्वकुलसौं ।
ए१ओ२कार जैसे स्वरमात्रसौं मिलैं न त्यौं,
मिलै न सुरमात्रसौं बढे बल बिपुलसौं ॥

पांच नख और अगले दाहिने पग मे छः नख होवें ओठ और नाक लाल होवे चलने में सिंह की चाल होवे, और भूमि को सूंघताहुआ चले, जिस के लंबे और कोमल कान, पूंछ और गरदन के ऊपर के बाल बहुत कोमल, और जिस के दोनों नेत्र रीछ के जैसे होवैं, ऐसा कुत्ता जिसके होवे तो उसके लक्ष्मी का आश्रय होवे इसीप्रकार आप का वरदान होने से बाण केपुत्रों का मान है ॥१३३॥ जिस के तीन पगों में पांच पांच नख, और अगले बायें पगमें छ नख होवें; लंबे कान मुख और पीले रंग की पूंछ, मोगरा की कली के जैसे नेत्र, जिस कुत्ती के होवे वह शुभ फल देनेवाली है ॥ १३४ ॥ इसप्रकार शुभ फल लोक मे जानकर अब बडे दुष्टों का नाश करो. ऐसे पराशर मुनि के नहीं ठगनेवाले (सत्य) बचन सुनकर वररुचि बोले कि हे ब्रह्मा सुनों।१३५। प्राकृतभाषा में जैसे इवर्ण और उवर्ण सवर्ण अक्षरों से ही मिलते हैं तैसे ही वे (दैत्य) अपने कुल (सवर्ण) से ही मिलते हैं और जैसे एकार और

इक्कल१अनादि२ज्यौं कगादि९।३लुपैं४अैसैं धर्म१,
इक्कल२ अनादि३ लुप्यो४ पातक पृथुलसौं ।
सर्वठाम ल१ व२ र३ लुपैं४ ज्यौं मिले व्यंजनसौं५,
वेद१ हु लुपैं२ यौं मिल्यो बाधक बहुलसौं३॥ १३६ ॥
सौरसेनीमाँहिं त१ थ२ द्वै२ के द१ ध२ द्वै२ ज्यौं होत,
मागधीमैं र१ स२ द्वै२ के ल१ श२ द्वै२ ज्यौं जानिये ।
भूतभाखामैं ज्यौं झबं१ प्रत्याहारको खपं२,
णकार१ को नकार२ श१ ष२ द्वै२ को स३हि ठानिये ॥
अपभ्रंसमाँहिं जैसैं क्त्वा१ प्रत्ययको इकार२,
तुं१ प्रत्ययको त्यौं अण२ होत पहिचानिये ।
व्रात्य१ भयेजात यौं द्विजादि चउ४ वर्णनके२,
पूर्‌यो जगत्रास खलनास मन मानिये ॥ १३७ ॥
जातूकर्ण्य२३ बोले जँहँ गोधा१ सर्प२ वृश्चिक३ ए,

ओकार स्वर मात्र से नहीं मिलते तैसे ही बहुत बल से बढे हुए वे दैत्य देव मात्र से नहीं मिलते । जैसे अनादि (किसी वर्ण के आदि में नहीं होने की अवस्था में) अकेले (किसी से नहीं मिले हुए) क, ग, च, ज, त, द, प, य, व, इन नव अक्षरों का लोप होजाता है तैसे ही अनादि अकेले (असहाय) धर्म का इन बडे पापियों से लोप हो गया है । सब ठौर जिस प्रकार ल, व, र, ये तीन अक्षर व्यंजन से मिलने पर लुप्त हो जाते हैं ऐसे ही बहुत बाधा करने वाले इन दैत्यों से वेद का लोप होता है ॥ १३६॥ शौरसेनी भाषा में जैसे तकार को दकार और थकार को धकार होता है, और जैसे मागधी भाषा में रकार को लकार और दन्त्य सकार को तालव्य शकार होता है इसी प्रकार पैशाची भाषा में झब प्रत्याहार(झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब)को खप प्रत्याहार(ख फ छ ठ थ च ट त क प)होता है और णकार को नकार, व तालव्य ' श ' और मूर्धन्य ' ष ' को दन्त्य सकार होता है तैसेही अपभ्रंश भाषा में क्त्वा प्रत्यय को इकार (पूर्वकालिक क्रिया जैसे मारयित्वा का ' मारि ') होता है और तुम् प्रत्यय को अण (जैसे कर्तु को 'करण' होता है इसी प्रकार ब्राह्मणादि चारों वर्ण वाले संस्काररहीन अर्थात् भ्रष्ट हुए जाते हैं और जगत् में त्रास भर गया है इस कारण से उन दुष्टों का नाश करने का मन में विचार कीजिये ॥ १३७ ॥

सीतकालमैं४ वा बरखामैं५ वा घनैंरहैं६।
इंधन रहित१ जँहँ पावक२ ज्वलित होइ३,
खंजरीट१ भूपैं२ जँहँ सुरत३ तनैंरहैं४॥
अप्ररोह तरु१ कै प्ररोह२ कदली१ कै कंटैं२,
नीरमैं१ अकारन२ ही भ्रमन३ बनैंरहैं४।
द्वै२ सिर१ के पंकज२ वा ताड३ जँहँ होइ ४ तँहँ,
भू१मैं निधि२ होइ३ ताहि कोबिदं खनैंरहैं ॥ १३८॥

॥ दोहा ॥

रबिकौं१ लखि२ भुव३ सुंघि४ वृखं५, नादकरैं६ जिहिं थान ॥
पुष्प१ होइ२ वा पुष्प पर३,निहचै तत्थ१ निधान२ ॥ १३९ ॥
असुरनमैं निहचै इमहिं, भासैं निर्दयभाव ॥
दया करहु जग पर द्रुहिनं, देहु खलन पर दाव ॥ १४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

हीरक१ मैं पंच५ गुन पंच५ दोस च्यारि४ छाया,
हेद्रुहिनं ते सब अनुक्रमतैं धारिये ।
अतिलघुता१ रु बसु८ कोनता२ छ६कोनता३ त्यौं,
तिच्छनता४ निर्मलता५ ए५ गुन विचारिये ॥

जातूकर्ण्य ने कहा कि जहां पर गोहिली (गोह) सर्प और वृश्चिक शीतकाल में वा वर्षा में अथवा सदैव ही बहुत रहते होवें, जहां पर विना बलीते के अग्नि जलती होवे, खंजन पक्षी भूमि पर बैठकर जहां पर रत (मैथुन) करे, वृक्ष के नहीं ऊग कर केले के कांटे ऊगे, विना ही कारण जल में भ्रमर (भँवर) पड़ते रहें, अथवा दो माथे के कमल और ताड़ वृक्ष जहां पर होवे वहां भूमि में धन होता है जिसको पंडित लोग खोदते हैं॥१३८॥ जिस स्थान पर बैल सूर्य को देखकर भूमि सूंघकर शब्द (टांडे) करे अथवा फूल के ऊपर फूल होवे, वहां पर निश्चय ही धन है ॥ १३९ ॥ इसी प्रकार असुरों में निर्दयीपन दीखता है सो हे ब्रह्मा संसार पर दया करो और दुष्टों पर दाव दो ॥ १४० ॥ हे ब्रह्मा हीरे में पांच गुण, पांच दोष और पांच छाया (जलत) हैं वे आगे क्रम से जानो. अत्यंत हलकापन, आठकोन (आठपहलू) छकोन (छपहलू) त्योंहीं तीक्ष्णता और निर्मलता

मल१ अरु बिंदु२ रेखा३ त्रास४ अरु काकपद५,
बज्रमैं ए५ उक्त दोस निहचै निवारिये ।
सित१ रु अरुन२ पीत३ स्याम४ च्यारि४ छाया ए,
अनुक्रमसौं वर्ण चयारि४ उचित विचारिये ॥ १४१ ॥
गुनजुत बज्रकौं जो बिप्र१ करैं धारन तो,
तप१ मख२ दान३ सौं मिलै जो फल सो लहैं ।
बाहुजं२ जो धारन करैं तो अरिनास१ करि,
बिक्रम२ बिजय३ आदि गुनगनकौं गहैं ॥
ऊरुज३ करैं जो ताहि धारन तो ताकै त्तेम१,
प्रज्ञा२ धन३ सुजस४ कलाकुसलता५ रहैं ।
पज्ज४ करैं धारन तो परउपकारिता१ रु,
दच्छता२ रु बाहुलता धान्य३ धन४ की बहैं ॥ १४२ ॥
भाखे पंच५ दोस तिनमैं मल१ मलिनभाव२,
जातैं व्याधि१ अग्निभय२ दंष्ट्रिभय३ जानैं हैं ।
बिंदुरूप१ बिंदु२ जातैं कुल१ धन२ आयु३ गज४,
अस्वन५ को नास भय६ रोग७ पहिचानैं हैं ॥

(जिसमें कोई जाला अथवा रंग वगैरे नहीं होवे) ये पांच गुण हैं, मल, विन्दु, रेखा, त्रास और काकपद ये पांचों ऊपर कहे हुए हीरे में दोष हैं जिसको निश्चय ही निवारण करदेना चाहिये स्वेत, लाल, पीली और काली ये चार छाया हैं सो क्रम से चारों वर्णों के उचित जानो ॥ १४१ ॥ स्वेत छाया वाले हीरे को ब्राह्मण धारण करे तो तप, यज्ञ और दान से जो फल मिले सो फल लेवे और लाल छाया वाले को त्तत्री धारण करे तो शत्रुनाश करके पराक्रम विजय आदि गुण गण को पावे, पीली छायावाले को वैश्य धारण करे तो उस के कुशल बुद्धि धन यश और कला कुशलता रहे, और काली छायावाले को शूद्र धारण करे तो परोपकारीपन चतुरता और धन धान्य की वृद्धि प्राप्त होवे ॥ १४२ ॥ ऊपर पांच दोष कहे जिनमें मैलेपन का नाम मल है, जिससे रोग, अग्नि का भय, दाढवाले पशु का भय है, जिसमें विन्दु (टीकी) के समान छिड़का होवे उसको विन्दुदोष कहते हैं. जिससे कुल, धन, आयु, हाथी घोड़ों के नाश

रेखारूप१ रेखा२ जातें सस्त्रभय१ बंधुनास२,
भिन्नभ्रम दै सो चिन्ह१ त्रास२ त्रास ठानैंहैं।
काकपद जसो चिन्ह१ काकपद२ जानौं जासौं,
नास सरबस्वको१ कै मृत्यु२ ध्रुव मानैंहैं ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

इन दोसन५ बिच बिंदु१ अरु, रेखा२ चउ४ चउ४ भेद ॥
इक इक सुभ तिनमैं इतर३।३, असुभ करत उच्छेद॥ १४४

॥ मनोहरम् ॥

मुक्ता१ इभ१ मच्छ२ किटि३ नागन४के सीस होत,
बंस१ संख२ सुक्ति३नके गर्भ उपजतुहैं।
अष्टम जनम याको बारिद८ मैं बिंदु करि,
ऐसैं अब याकी योनि अष्टधा८ रजतुहैं ॥
धात्रीफल तुल्य १गजमुक्ता२ रक्तछाया३ गुंजा,
तुल्य१ मैनि२ जाके रंग पाटला लजतुहैं३।
कंकोलके मान१ कोलमुक्ता२ कोलदढा छबि३,
ऐसे रत्न भागधेयहीन न भजतुहैं ॥ १४५ ॥

और रोग का भय है; जिस हीरे में लकीर सी खिची होवे उसको रेखा दोष कहते हैं जिससे शस्त्र का भय बन्धुनाश होता है, जिस हीरे में तूटे हुए का भ्रम दिखाई देता होवे उस दोष का नाम त्रास है सो त्रास दिखाता है, और काक (कागला) के पग के जैसा जिसमें चिन्ह होवे उस दोष का नाम काकचिन्ह है, जिससे सर्वस्व का नाश होता है, और निश्चय ही मृत्यु का भय है ॥ १४३ ॥ इन ऊपर के पांच दोषों में बिन्दु और रेखा के चार चार भेद हैं जिनमें एक एक शुभ और बाकी के तीन तीन अशुभ और नाश करने वाले हैं ॥१४४॥ मोती, हाथी, मच्छ, सूवर और सर्पों के मस्तकों में और बाँस, शंख और सीप के गर्भ में होते हैं; और इसकी आठवीं उत्पत्ति मेघ की बूंद से भी होती है इस प्रकार अब इसकी आठ योनि (उत्पत्तिस्थान) शोभित हैं, हस्ती के शिर का मोती आँवले जैसा मोटा लाल छायावाला, मछली के शिर का मोती चिरमी जैसा मोटा जिसके रंग से पाटला (पुष्पविशेष) भी लजाता है, सूवर के शिर का मोती कंकोल का सा मोटा, सूवर की दंतुली जैसी छवि होती है ऐसे रत्न भाग्यहीन नहीं पाते हैं.

वर्तुलता रम्य१ अहिमुक्ता२ नीलछायाधर३,
कोलमुक्ता मान१ बंसमुक्ता२ ससिभास३ व्है ।
पारावत अंडके प्रमान१ कंबुमुक्ताफल२,
स्वच्छ करकोपल समान छबि३ जास व्है ॥
नानामान१ सुक्तिभव मुक्ताफल२ नानाछबि३,
ताको च्यारि४ देसनमैं आकर निकास व्है ।
सिंहल१ रु आरबाट२ पारसीक३ बर्बर४ त्यौं,
जन्म इनमैं जिम परिच्छा तिम तास व्है ॥ १४६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अर्क स्वाति उडु पर जब आवत, बारि बिंदु तब घन बरसावत ॥
सुक्तिनगर्भ गिरे ते सीकर, बनत बिंदु सम सम मुक्तावर ॥१४७॥
ज्योति१ वृत्तपन२ मान३ बढै जिम,
तिन्ह मुक्तिन गुन१ रूप२ बढै तिम ॥
व्है इक सुक्ति रुक्मिनी आह्वय,
मुक्ता गुन तस सुनहु दयामय ॥ १४८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

सर्प के सिर का मोती गोलाई में मनोहर, निछाछा (झांई) को धारण करनेवाला, सूवर के मोती जैसा मोटा, बांस का मोती चन्द्रमा की कांतिवाला, और कबूतर के अंडे जैसा मोटा, शंख का मोती स्वच्छ ओलों (गड़ा) के समान छबिवाला, और सीप से उपजे हुए मोती अनेक प्रकार के प्रमाण (मोटाई) वाले अनेक प्रकार की छबिवाले जिनके निकास की चार देशों में खानि है, सिंहलद्वीप (लङ्का) अरब का समुद्र, पारस का समुद्र, बर्बर (मायापुरीं समारभ्य सप्तशृंगात्तथोत्तरे । बर्बराख्यो महादेश प्रोक्तः श्री शक्तिसङ्गमे) इन में जैसे उनके जन्म हैं वैसी ही उनकी परीक्षा है ॥१४६॥ सूर्य जब स्वाति नक्षत्र पर आता है जब मेघ जल वुन्दे बरसाता है वे जल के कण सीपों के गर्भ में पड़ते हैं वे विन्दु के समान ही श्रेष्ठ मोती बन जाते हैं ॥१४७॥ कान्ति, गोलाई और तोल बढे त्योंही उन मोतियों के गुण और रूप बढते हैं, एक रुक्मिनी नामक सीप होती है उसके मोती के गुण हे दयावान रामसिंह सुनिये ॥ १४८ ॥ रुक्मिनी नामक सीप में मोती होता है

रुक्मिनी मैं१ मुक्ताफल२ होत जो अनर्घ३ अति,
कुंकुम छबि४ रु जातीफल मित५ जानिये ।
स्निग्धता घनी६ रु अतिनिर्मलता७ जामैं सांहि,
नृपन उचित महादुर्लभ प्रमानिये ॥
आकर प्रदेश च्यारि४ प्रथम कहे जे अब,
तिन्ह करि भिन्न भिन्न मुक्ता पहिचानिये ।
थूल१ मध्य२ सुच्छम३ जथा प्रमित होइ ज्यौं ज्यौं,
पितामहँ त्यौं त्यौं तिन्ह अर्घ उर आनिये ॥ १४९ ॥
सिंहलको१ मुक्ता स्निंग्ध२ है कछु मधुरकांति३,
आरबाटको१ बिमल२ पीतकांति३ चहिये ।
पारसीकमुक्ता१ होत स्वच्छ२ रु बिसदकांति३,
बर्बरको१ रूच्छ२ कछु स्यामकांति३ लहिये ॥
कुक्कुटके अण्डमित मेघमुक्ता२ भानुछबि३,
वृत्त४ रु निबिड५ गुरु६ दुर्लभ सो कहिये ।
मुक्तायोनि अष्ट८ए कही है इनमाँहिं अब,
सुनहु बिरंचनं जे दोस दस१० रहिये ॥ १५० ॥
दोस च्यारि४ मोटे खट६ छोटे तिन्ह लच्छन१ रु,
नाम२ फल३ सुनहु जितेक मुनि गावैंहैं ।

वह बहुत मंहगा होता है और कंकू के जैसी छबि, जायफल जैसा मोटा, बहुत स चिक्कण, बहुत निर्मल, बड़ी कठिनाई से मिलनेवाला, राजाओं के योग्य जानों ऊपर जो मोतियों की चार खानि कही जिनके मोती जुदे जुदे पहिचानों इनमें बडा, मध्यम (औसत दरजे का) और छोटा प्रमाण का होवे वैसा ही हे ब्रह्मा उनका मूल्य (मोल) जानों ॥ १४९ ॥ सिंहलदेश का मोती सचिक्कण, कुछ महुवे की सी कान्तिवाला और अर्ब का मोती निर्मल और पीली छबिवाला, पारसीक देश का मोती निर्मल और स्वेत कान्तिवाला, बर्बर देश का मोती रूखा और कुछ काली झांईवाला, और मेघ से पैदा हुआ मोती कूकड़ा (मुर्गा) के अंडे के बराबर, सूर्य की सी छबि, गोल, दृढ, बोझल, होता है सो दुर्लभ है, मोतियों की ये आठयोनि कही जिनमें दश दोष हैं सो हे ब्रह्मा सो सुनों ॥ १५० ॥ चार दोष बडे और छ छोटे हैं, जिनके लक्षण, नाम और

जाके एकदेसमैं लगी व्है सुक्ति सो तो दोस,
मुक्तिलग्न२नाम कुष्टकारक३बतावैंहैं ॥
मीनदृग जैसो चिन्ह मुक्ताबिच होइ१ताको,
मीनदृग२नाम सब संतति नसावैंहैं३ ।
छाया१करि दीप्ति२करि हीन१व्है जरठ२नाम,
दोस जो दरिद्रपन अति उपजावैंहैं३ ॥ १५१ ॥

दोहा ॥

मुक्ता बिद्रुमकांति१सो, दोस नाम अतिरक्त२ ॥
करैं मृत्यु३इम च्यारि४ए, मोटे दोस प्रसक्त ॥ १५२ ॥

मनोहरम् ॥

छोटे खट६दोस अब मुक्ता जो बलीबलित१,
दोस सो त्रिवृत२नाम दुर्भगता करैंहैं३ ।
वृत्तभावहीन१व्है सो चर्पट२अकीर्त्तिकर३,
व्है प्रलंब१सो है कृसनाम२मति हरैंहैं३ ॥
व्है त्रि३कोन१सो है त्र्यस्र२नाम सुभगत्वहंता३,
सपिटंक व्है अवृत्त१खंड२नाम धरैंहैं ॥
संपति बिनासैं३सो रु एकदेसभुग्न व्है१सो,

फल जितनेक मुनियोंने कहे हैं सो सुनो, जिस मोती के एक जगह सीप लगीहुई होवे उस दोष का नाम "सुक्तिलग्न" है जिसको कोढ उत्पन्न करनेवाला बताते हैं जिस मोती के मच्छी के नेत्र जैसा चिन्ह होवे उसका 'मीनदृग' नाम और सब सन्तान को नसानेवाला फल है. छाया (झांई) और कान्ति से हीन होके उसका जरठ नाम और दारिद्र पैदा करने का दोष है ॥ १५१ ॥ जो मोती मूंगे की छबिवाला होवे उस दोषका नाम 'अतिरिक्त' और मृत्युकरना उसका फल है इसप्रकार ये चार मोटे दोष हैं ॥ १५२ ॥ अब छोटे छः दोष कहते हैं कि जिस मोती में बलपडाहुआ होवे उसका 'त्रिवृत' नाम और दुर्भाग्य करनेवाला है, बिना गोलाई के होवे वह 'चर्पट' अपयश करानेवाला, लम्बा होवे उसको 'कृश' नाम और बुद्धि हरनेवाला है, तीन कोनेवाला होवे उसको 'त्र्यस्र' नाम और शुभका हरनेवाला है, गोलाई रहित और फोड़े (छाले) वाला होवे उसको 'खंड' नाम और सम्पत्तिका नाश करनेवाला है और जिस मोती का एक हिस्सा टूटाहुआ होवे उसका नाम एकदेशभुग्न और उद्यम

नाम कृसपार्श्व२जासौं उद्यमता टरैहैं३ ॥ १५३ ॥

दोहा ॥

मुक्तामैं व्है कांति चउ४,पीत१मधुर२सित३नील४ ॥
क्रमतैं श्री१मति२जस३करन, हरन सुभगता४सील ॥१५४
है गुन चउ४मानिक्यमैं, दोस अष्ट८दुखकार ॥
पुनि छाया सोलह१६प्रतिम, समुझहु फल अनुसार ॥१५५
निर्मलता१अतिरक्तता२,स्निग्धछबित्व३गुरुत्व४ ॥
कहे च्यारि४गुन ए करैं, आलय बित्तैं उरुत्व ॥ १५६ ॥
सबगुन जुत मानिक्य सुभ, व्है सु रहै जिहिं गेह ॥
बाँजिमेध १फल धन२बिजय३,आयु४बढावत एह ॥ १५७

मनोहरम् ॥

याके च्यारि४आकरहैं सिंहल१ रु कालपुर२,
अंध्र३रु तुवर४इन माँहिं जन्म पावैहैं ।
रक्तछबि१सिंहलको२पद्मराग३पीतछबि१,
कालपुर भूत२कुरुबिंद३सो कहावैहैं ॥
पल्लव असोकछबि१अंध्रको२सौगंधिक३,

को मिटाना उसका फल ॥ १५३ ॥ मोती में चार कान्ति हैं जिनमें पीली कान्ति लक्ष्मी को देनेवाली, मधुर कान्ति बुद्धि देनेवाली, स्वेत कान्ति यश करानेवाली और नीली कान्ति सुन्दरता और शील को हरनेवाली है॥ १५४ ॥ माणिक में चार गुण और दुःख करनेवाले आठ दोष और सोलह छाया हैं जिनके फल अपने अपने सदृश जानो ॥ १५५ ॥ निर्मलपन, अत्यन्त ललाई, सचिक्कण छवि और भारीपँन ये चार गुण हैं जो घर में धन की विशालता (बहुतायत) करते हैं ॥ १५६ ॥ इन सब गुणोंवाला माणिक जिस घरमें रहता है वहां शुभ होता है और अश्वमेध का फल देकर धन विजय और आयु बढाता है ॥ १५७ ॥ माणिक पैदा होने की चार खाँनि हैं सिंहलद्वीप, कालपुर, अंध्र, (जगन्नाथाद्भूर्ध्वभागमर्वाक् श्रीभ्रमरात्मिका ॥ तावदंध्राभिधो देशः प्रोक्तः श्रीशक्तिसङ्गमे ॥ १ ॥) तुवर (देश विशेष) इन मे पैदा होते है. सिंहल देश का माणिक लाल छविवाला, कालपुर का पैदा हुआ माणिक पीली छविवाला, अंध्र देश का माणिक अशोक वृक्ष के पत्ते की छविवाला, चौथा तुवर देश का माणिक नीली छविवाला, जिसको

नीलछबि१चोथो४।२जाहि नीलगंधि३गावैंहैं ।
सिंहलको१उत्तम२रु मध्यनको२।१मध्य२तुव,
राख्यको१कनिष्ठ२मुनि बहुल बतावैंहैं ॥ १५८ ॥
छाया जहँ द्वै२।१ सो दोस द्विछबि२विनासैं बंधु३,
रूप द्वै२।१जो सो द्वै२पद२मासमैं हरावैं हैं३ ।
भिन्न१व्है जो भेद२सस्त्रघात दै३रु रेनुजुत,
कर्कर२गिनों सो पसु बंधु बिनसावैं हैं ॥
दुग्ध रंग लसुन१जहाँ सो पट२सोभा हनैं३,
रंग दीनता१सो जड२बित्तहा३कहावैं हैं ।
मॆंधुछबि१कोमल२सो आयु१जय२लच्छी३हरैं३,
धूमरंग१धूम्र२सिर बिज्जुलि गिरावैं हैं३ ॥ १५९ ॥

दोहा ॥

इंद्रनीलमैं पंच५गुन, दोस खट६रु छबि अष्ट८ ॥
सब निजफल अनुसारही, करत मंगल१रु कष्ट२॥ १६० ॥
स्निग्धछबित्व१सुरंगपन२,रंजन पास प्रदेस३ ॥
गुरुता४पुनि तृनग्राहिता५, यँहँ गुन पंचक५एस ॥ १६१ ॥

घनाक्षरी ॥

अभ्र १सो पटल२है सो अभ्रू२आयु लच्छी हरैं३,

नीलगंधि कहते हैं, इनमें सिंहल देश का उत्तम, कालपुर और अन्ध्र का मध्यम, और तुवर देश का अधम बहुत मुनि बताते हैं ॥ १५८ ॥ जिस में दो छाया होवें सो "द्विछवि" दोष बान्धवों का विनाश करता है, दो रूपवाला होवे सो 'द्विपद' एक महीने में ही हरानेवाला है, टूटाहुआ होवे सो फूट पटका कर शस्त्रघात कराता है, रेतीला होवे सो 'कर्कर' पशु और बान्धवों का नाश करता है, दूध के रंग जैसा होवे सो 'लशुन' वस्त्र की शोभा को हरनेवाला, रंग की कमीवाला 'जड' धन हरनेवाला कहाता है, महुवे की जैसी छवि होवे सो 'कोमल' आयु, जय और लक्ष्मी को हरता है, और धूएँ के रंग जैसा होवे सो 'धूम्र' शिर पर बिजुली गिराता है ॥ १५६ ॥ नीलम में पांच गुण छः दोष और आठ छाया हैं वे सब अपने अपने फल के अनुसार ही शुभ और अशुभ करते हैं ॥१६०॥ सचिक्कण कान्ति, अच्छा रंग,

रेनु व्है१सो कर्करी२दरिद्र दै छुरावैं देस३।
भिन्नभ्रम व्है१सो त्रास२दंष्ट्रिभयदाता३भिन्न,
व्है१सो भिन्न२तनय कलत्र नासकारी३एस ॥
मिट्टीगर्भ व्है१सो मृत्तिकार्गभक२कुष्ठकारी३,
ग्रावगर्भ व्है१सो अस्मागर्भ२हारिदै३बिसेस ।
छायानाम१लच्छन२कहौं तो व्है बिलंब इंद्र,
नीलकी परिच्छा अब भाखौं सो सुनौं प्रजेस ॥ १६२ ॥

दोहा ॥

छुवतमात्र जो नीलकौं, होइ नील जो दुद्ध ॥
सत्यनील सो जानिये, सनिकौ बल्लभ सुद्ध ॥ १६३ ॥
दोस६रहित सबगुन५सहित, धरैं नील जो धाम ॥
जिहिं दै धन१बल२आयु३जस४,सनि पूरैं सबकाम ॥१६४॥
मरकतमैं गुन पंच५पुनि, दूखन सप्त७दिखात ॥
अष्ट८छबि रु गुन१नाम२अब, जे बिधि बरनैं जात ॥१६५॥

मन प्रसन्न करनेवाले, बन्धेहुए सब स्थान जिसके, भारीपन, तृणों को ग्रहण करनेवाला अर्थात् जिसके पास तृण रक्खाजावे तो वो उसको चिपका लेवै, ये पांच गुण नीलमणि [पन्ना] के हैं ॥१६१॥ बादल के समान जाला होवे सो 'अभ्र' आयु और लक्ष्मी को हरता है, जिस में रेत के दानें होवे सो कर्करी, दरिद्र देकर घर छुडाता है, तूटेहुए का भ्रम होवे सो 'त्रास' सिंह आदि दाढवाले पशुओं का भय देनेवाला, तूटाहुवा होवे सो 'भिन्न' पुत्र और स्त्री का नाश करनेवाला हैं, जिस के बीच में मिट्टी होवे उस का नाम 'मृत्तिकागर्भ' है सो कोढ करनेवाला, जिसके बीचमें पत्थर होवे सो 'अश्मगर्भ' विशेष पराजय देनेवाला है. इस नीलमणि (नीलम) की छाया के नाम और लक्षण कहूं तो देरी होती है इसकारण से इस नीलमणि की परीक्षा कहता हूं सो हे ब्रह्मा सुनो ॥ १६२॥ जिस नीलम के छूते ही दूध नीला होजावे उसीको सच्चा नीलम जानिये. जो शुद्ध रत्न शनैश्चर को बहुत प्यारा है ॥ १६३ ॥ दोषों के रहित और गुणों के सहित नीलमनि को घर में रक्खै तो उसको धन, बल, आयु, यश, देकर शनैश्चर उसकी कामना पूरी करता है ॥१६४॥ पन्नों में पांच गुण और सात औगुन दीखते हैं. आठ छबि, उनके नाम और गुण

सुरंगत्व१अरजस्कता२,स्निग्धभाव३गुरुभाव४ ॥
निर्मलता५ए गुन निखिल,दुरित१भीति२तृनदाँव ॥ १६६ ॥
बलि जो मरकत त्रास बिनु१,सैवल छाय२सुरंग१ ॥
सो अनर्घ सब बिषहरन, पावत पुराय प्रसंग ॥ १६७ ॥

घनाक्षरी ॥

दोसनमैं रूक्ष भाव व्है१सो रूक्ष२व्याधि करैं३,
सपिटक व्है१सो सपिटक२सस्त्रघात देत३।
छायाहीन व्है १सो मलिनाख्य२बधिरत्वदायी३,
ग्रावगर्भ व्है१सो अस्मगर्भ२बंधुनास हेत३॥
रेनुजुत होइ१सो ससर्कर२तनूजहंता३,
दीप्तिहीन व्है१जरठ२बह्निभयको निकेत३।
कर्बुरता व्है१सो कलमास२मृत्युदायी३एते७,
मरकत दोस भाखैं मुनि जे दयाउपेतं ॥१६८॥

मनोहरम् ॥

कृत्रिम जो बज्र१सो तो बज्रहीको बेध्यो२नसैं३,
कृत्रिम जो मुक्ता१नसैं२धोयो लौंन पानीसौं३।

अब वर्णन करता हूं ॥१६५॥ श्रेष्ठ रंग, जिसमें रज (रेत) के दाने दिखाई न हीं देवें, सचिक्कणपन, भारीपन, निर्मलपन, ये गुण सब पाप और भयरूपी तृ ण पर अग्नि रूप हैं ॥१६६॥ पुनि वह पन्ना विना त्रास अर्थात् दोष रहित औ र सैवाल और छाया विना श्रेष्ठ रंगवाला होवे सो अमूल्य और सब प्रकार के विषों (जहरों) को हरनेवाला है, सो पुण्यात्मा पाते हैं ॥१६७॥ इस पन्ना के दोषों में रूखापन होवे सो'रूक्षभाव'रोग करनेवाला,फोड़ा(छाला)वाला होवे सो 'सपिटक,नामवाला शस्त्रघात कराता है,छाया (झांई) विना होवे सो ' म लिन ' नाम वाला बहिरेपन को देता है जिस के बीच में पत्थर होवे सो "अश्मगर्भ" बंधुनाश का कारण, रेणु सहित (रेतीला) होवे सो 'सशर्कर' पुत्र का नाश करता है, कान्तिहीन होवे सो ' जरठ ' अग्नि भय का स्था न है, चित्र विचित्र (नाना रंग मिलेहुए) होवे सो 'कल्माष' नाम का मृत्यु देनेवाला है. जो मुनि दया सहित हैं उनमें पन्ना के इतने दोष कहे हैं।१६८। जो हीरा बनावटी होता है वो सच्चे हीरे से बेधने पर नष्ट होजाता है.

कृत्रिम जे सेसं पद्मरागादिक१घृष्टे किये,२
कथित किये३हु नसैं४साँची सावधानीसौं ॥
घृष्ट किये१पावैं२मृदुभाव३त्रो क्वथित किये१,
पावैं२रागहीनभाव३परख प्रमानीसौं ।
आछे१बुरे२रत्न ऐसैं चिन्हन सो खोजे जात,
तैसैं दुष्ट खोजे हम दुष्टता दिवानीसौं ॥१६९॥

दोहा

कांति१कठिनता२स्वच्छता३,सबरत्नन गुन तीन३॥
वज्रहिं टारि गुरुत्व ४बालि, किल चतुर्थ४गुन कीन ॥ १७० ॥
लाघवजुत गौरवरहित,ए५हि बज्रगुन आँहिं ॥
तैसैंको गुन कहहु तुम, मारक दुष्टन माँहिं ॥१७१॥

मनोहरम् ॥

गृत्समद२४बोले नर१गज२को परमआयु,
व्योम दग भू१२०मित समा रु पंच५दिन है ।
अस्वको बतीस३२अब्द भाख्यो भोलि१रासभ२को,
अतिकृति२५मान वृख१सैरिभ२को जिन२४है ॥
वस्तन१उरभ्रन२की अष्टि१६मित अब्द संख्या,

और जो बनावटी मोती है वह निमक और पानी से धोने से नाश होजाता है बाकी के माणक आदि बनावटी रत्न होवे वे घिसने से कोमल पड जावें पानी में उँयालने से जिन का रंग विगडजावे यही उनकी परख है इसप्रकार अच्छे और बुरे रत्न उनके चिन्हों से तलाश किये जाते हैं. तैसे ही बावली दुष्टता से हमने उनको खोजे हैं ॥ १६९ ॥ सब रत्नों में कान्ति करडापन और निर्मलता ये तीन गुण हैं इसीप्रकार हीरे को छोड कर भारीपन भी निश्चय ही सब में चौथा गुण है" ॥ १७० ॥ हलके पनके सहित और भारी पन से राहित हीरे का गुन है ऐसे उन मारनेवाले दुष्टों में कौनसा गुन है सो हे ब्रह्मा तुम कहो ॥ १७१ ॥ गृत्समद नामक मुनि बोले, कि मनुष्य और हाथी की परम (अधिक से अधिक) आयु का प्रमाण एक सो बीस वर्ष और पांच दिन का है, और घोडे की आयु बत्तीस वर्ष की, ऊंठ और गंधे की पचीस वर्ष की बैल और भैंसे की चौबीस वर्ष की बकरा औ

स्वाननके आयुकी ज्यौं अब्द संख्या इन १२ है
दैत्यनके आयुकी कहाँलौं अब्द संख्या ऐसैं,
बुझहु बिरिंचि कृपा लोकपैं है कि न है ॥ १७२ ॥
कामंदक बोले दुर्ग जलमय१अद्रिमय२,
ग्रावमय३त्योंही इष्ट कामय४बखानिये ।
धन्वमय५मिट्टीमय६बनमय७पौरुषमय८,
दारुमय९एते नव९दुर्ग जग जानिये ॥
अच्छे१पहिले द्वै२इनमाँहिं और मध्यके छह६जे१,
मध्यम२औअंतिम१कनिष्ट२पहिचानिये ।
भुपनकौं दुर्ग ज्यौं बिपत्तिमैं बचावैं ऐसैं,
दुष्टबरं दुर्गतैं बचे न बर मानिये ॥ १७३ ॥
घनाक्षरी ॥
सेनाके छह६भेद तिनमाँहिं जो प्रथम मौल१,
पीढिनतैं सो तो बसवर्ती बिसवास धाम २ ।
भृत्य१है बहोरि जो अधीन कीनौं बेतन दै१,
मैत्र२पुनि मित्रतासौं आवैं जो सहायकाम२ ॥
सो है श्रेणी१समय अधीन जाकी आश्रितता२,

र मींढा की सोलह वर्ष की गिनती है इसीप्रकार कुत्ते की परम आयु की गिनती बारह वर्ष की है तैसे ही इन दैत्यों की आयु की संख्या कहांतक है सो हे ब्रह्मा बोलिये आप की कृपा संसार पर है कि नहीं है॥१७२॥ कामंदक मुनि बोले कि संसार में जलमय पर्वतमय पत्थरमय ईंटमय (ईंटों से चुनाहुआ) निर्जलभूमिमय, मिट्टीमय, (धूलकोट) बनमय, मनुष्यमय, (मनुष्यों के इकट्ठे होजाने से किला बनजाता है अथवा व्यूहरचना से) काष्ट मय, [लकडियों का] येनव प्रकारके किले हैं इन में प्रारंभ के दो जलमय और पर्वतमय तो उत्तम हैं और बीच के छ प्रकार के गढ मध्यम अरु प्रान्त का काष्टमय अधम जानो ये गढ राजाओं को आपदा से बचाते हैं ऐसे वरदान रूपी गढ से उन दुष्टों का बचना श्रेष्ठ नहीं है ॥ १७३ ॥ सेना के लोगों के छ भेद हैं जिनमें प्रथम (मौल) जो पीढियों (वंशपरम्परा) से उसीदेश में रहकर वश में रहाहोवे वह तो विश्वास का घर, दूसरा वह है तनखा देकर जिसको वश में किया होवे, तीसरा मित्र नामक है सो मित्रता से स-

आटविक१सो जो बनबासी सबरादि ग्राम२
सो अमित्र१है जँहँ दबायो अरि आश्रित व्है२,
मुख्य त्रिकं३।१मुख्य२चोथो४।१मध्य२खिल१नेष्टनामं२ ॥१७४॥

॥ दोहा ॥

उत्तम१ नृप स्वायत्त१ अरु मध्यम१ उभयायत्त२ ॥
अधम१ सु सचिवायत्त२ यह मंत्री विजित प्रमत्त ॥ १७५॥

॥ पादाकुलकम् ॥

आज्ञारूप सबनके सिरपर१ सो प्रभुसक्ति२ बतावत नयवर॥
जो पंचांग मंत्र उपजावन१ मंत्रसक्ति२तस नाम कहावत॥ १७६ ॥
व्है उच्छाहमात्र उद्यम मैं१ सोउच्छाह सक्ति२ हित श्रममैं ।
पंच५ मंत्रके अंग प्रमानहु जे विरिंचि क्रमतैं इम जानहु ।१७७।

। घनाक्षरी ।

इष्टकाज साधन उपाय१है प्रथम अंग२,
दूजो२ताहि करन सहायक समर्थ होन२

हाय के अर्थ आया होवे, चौथा „ श्रैण ” नामक वह है जो समय के कारण से अधीन हुआ होवे. पांचवा “ आटविक ” जो भील आदि के गामों में अपने देश के बन (जंगल) में रहता होवे. और छठा “ अमित्र „ जो शत्रु का दबाया हुआ भागकर आश्रित हुआ होवे इन में प्रथम के तीन तो मुख्य (उत्तम) हैं और चौथा श्रेण मध्यम, और बाकी दो अधम हैं॥ १७४ ॥ जो राजा अपने ही वश में रहता है वह उत्तम है और जो अपने और सचिव [कामदार] दोनों के वश में रहता है वह मध्यम है, और जो कामदार का जीता हुआ कामदार के ही वश में रहता है वह बावला अधम है ॥ १७५ ॥ सब शिर पर अमोघ आज्ञा रूप होकर रहे उसको श्रेष्ठ नीति के जानने वाले प्रभु शक्ति बताते हैं, जो पांच प्रकार के मंत्र [सलाह] उपजाने वाला है उसका नाम मंत्र शक्ति है ॥ १७६ ॥ केवल उद्यम में ही उत्साह होवे उस हित के परिश्रम का नाम उत्साह शक्ति है हे ब्रह्मा मंत्र के पांचे अङ्ग इस प्रकार जानो ॥ १७७ ॥ इष्ट [वांछित] कार्य के साधन का जो उपाय है वह मंत्र का प्रथम अंग है, दूसरा अंग समर्थन है जो प्रथम अंग की सहायता करने वाला है. तीसरा देश और समय

तीजो३ देस कालको विचार३ अरु चोथो४ अंग,
विघ्ननको टारिबो४भएँ जो फल देदै भोन।
पंचम५ यहै जो काजसिद्धिके भयेतें सुख५,
ओसो मंत्र दैत्यनके नासमें विचारो जो न।
तो अब त्रिलोकीकी प्रजाके परिपालनमें,
हेरि हित हंसासन हिंसकन हंतो कोन।१७८।

दोहा ॥

प्रथम१मैत्र१ संबंधज२ रु, इतरेतर उपकार३ ।
उपहारँ४ हु पुनि च्यार४ए, संधिभेद नयसार।१७९।

। घनाक्षरी ।

पैलेमें निहारि गुन आप गुनरागी व्हैकें,
लोभहीन संधि जो करें सो मैत्र नाम१ श्रेय ।
कन्यादै करें सो संधि संबंधज२ जानों माँहिं,
माँहिं उपकार व्है सो मिथ उपकार३ गेह ॥
रत्नभूमि देकें जो करें सो उपहार४ नाम,
बिग्रह विधान अब सुनहु अंहो अजेय ।
रत्न१ बल२ विक्रम३ सहाय४मंत्र५ दुर्ग६ करि,

के विचार करने का है, चौथा अङ्ग विघन के अवयवों (अंगों) को टालना, और पांचवां अंग कार्य सिद्ध होने पर सुख होना है, सो ऐसा मंत्र हे ब्रह्मा दैत्यों के नाश में आप नहीं विचारें तो तीन लोक की प्रजा के पालन में हित हेर कर इन हिंसा करनेवालों को मारनेवाला कौन है ॥१७८॥ मित्रता से, सँम्बन्ध से, परस्पर के उपकार से, भेट (नँजराना) देने से संधि होती है सो नीति के सार रूप सन्धि के ये चार भेद हैं ॥ १७९ ॥ पहिले में गुण देखकर और आप गुणों में प्रीति रखनेवाला होकर बिना लोभ के सन्धि करे उसका नाम मैत्र है, और वह सब से श्रेष्ठ है, कन्या देकर संधि करे सो सम्बन्धज नाम की संधि है, एक दूसरे का परस्पर उपकार करके सन्धि करे उसका नाम मिथ उपकार, जो परस्पर के उपकार का घर है, और रत्न भूमि देकर करै उस सन्धि का नाम उपहार है, नहीं जीतने में आवे ऐसे अ॰ अर्थ वाले हे ब्रह्मा विग्रह की विधि अब सुनो. रत्न, सेना, पराक्रम, सहाय, मंत्र

हीन ठ्है जो भूप तासौं बिग्रह सदा बिधेय ॥ १८० ॥

मनोहरम्

भेद अष्ट८बिग्रहके कामज१रु लोभज२त्यों,
भूमिभव३ मानभव४ अभय५ निहारिये ।
इष्टज६ मदज७ एकद्रव्य अभिलाषुक८ त्यों,
स्त्रीनिमित्त इनमैं जो कामज१ सो धारिये ॥
श्रीनिमित्त लोभज२कहावैं भूनिमित्त भूज३ ,
बिरुद निमित्त मानसंभव४, बिचारिये ।
जैनिमित्त विग्रह सो अभय५कहावैं सर-
नागत निमित्त ठ्है सो इष्टज६सम्हारिये ॥ १८१ ॥

॥ दोहा ॥

जुब्बन१ धन२ विद्या३ सुरा४, इनकरि जो मद आत ।
है ताके बस बिग्रह सु, क्रमगत मदज७ कहात ॥ १८२ ॥
माँहिं माँहिं बिग्रह मचैं, एक१हि अर्थ निमित्त ॥
एकद्रव्य अभिलाषुक८ सु, चिंतत नयपटुचित्त ॥ १८३ ॥

॥ मनोहरम् ॥

पीडाकरि पीडित१ वा व्यसनी२नरेस जो ठ्है,

(सलाह) और गढ से हीन जो राजा होवे उससे विग्रह करना सदैव उचित है ॥ १८० ॥ इस विग्रह (विरोध)के आठ भेद हैं, वे, काम से पैदा होनेवाला, लोभ से पैदा होनेवाला, भूमि से पैदा होनेवाला, मन से उपजनेवाला, विजय से उपजनेवाला, शरण रखने से उपजनेवाला, मद से उत्पन्न होनेवाला, एक वस्तु की चाहना से उत्पन्न होनेवाला, ये हैं. इन में स्त्री के कारण से होवे सो कामज, लक्ष्मी के निमित्त होवे सो लोभज, भूमि के कारण से होवे सो भूमिज, स्तुति के कारण से होवे सो मानसे होनेवाला, विजय करने के कारण विग्रह होवे सो विग्रह, किसी को शरण रखने के कारण होवे सो इष्टज ॥ १८१ ॥ जोबन, धन, विद्या और मदिरा इनसे जो घमंड आकर विग्रह होता है वह इसी क्रम से अर्थात् जोबनमद, धनमद, विद्यामद और मदिरामद से होनेवाला विग्रह कहाता है ॥ १८२ ॥ एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह मचता है उसको नीति में चतुर लोग एक द्रव्य अभिलाषा विग्रह कहते हैं ॥ १८३ ॥ जो राजा रोग से पीड़ित अथवा व्यसन

मित्र१ बल२ कोस३ मंत्री४ मंत्र५ करि हीन०है।
आधि अकुलायो४०है वा सत्रुको दबायो५ तापैं,
भूपति करत यात्रा जे नयप्रबीन ०है ॥
संधानजा१ पार्ष्णिरोधा२ तीजी३ मित्रबिग्रहिनी३,
द्वंद्वजा४ रु कुल्या५ संग जो अरिकुलीन ०है ॥
निर्याजा रु सीघ्रता७ ए७ यात्राके प्रकार अब,
लच्छन समस्त सुनौं जगहित लीन ०है ॥ १८४ ॥

॥ दोहा ॥

पार्ष्णिग्राहसौं संधि करि, जु इतर अरि पर जात ॥
सो यात्रा संधानजा१, कहत नीतिनिर्ष्णात ॥ १८५ ॥
पार्ष्णिग्राहके रोध पर, जु बल रक्खि पुनि जाइ ॥
नाम पार्ष्णिरोधा२ नियत, कमलंज तास कहाइ ॥ १८६ ॥
सत्रुसौं रु निज मित्रसौं, कलह तटस्थै कराइ ॥
ताही पर पुनि जाइ तब, तीजी३ नाम धराइ ॥ १८७ ॥
जापर यात्रा सोहु जब, समुख चलैं दल सज्जि ॥
जंपैत ताको द्वंद्वजा४, ऋषिजन नयरसंराज्जि ॥ १८८ ॥

वाला, मित्र से हीन, सेना से हीन, खजाना से हीन, मंत्री (सलाहकार) से रहित, मंत्र (सलाह) रहित, मानसिक पीड़ा (मन के दुःख) से घबराया हुआ होवे, वा शत्रु का दबाया हुआ होवे, उसी पर नीतिचतुर राजा यात्रा करते हैं; उस यात्रा के संधानजा, पार्ष्णिरोधा, मित्रविग्रहिनी, द्वंद्वजा, कुल्या, निर्याजा और शीघ्रता ये सात भेद हैं, जिनके सब लक्षण संसार के हित में लीन होकर अब सुनो ॥१८४॥ पीठ के शत्रु से अथवा जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो दूसरे शत्रु पर जावे उस यात्रा को नीति कुशल सन्धानजा कहते हैं ॥ १८५ ॥ जीतने की इच्छावाले शत्रु के रोकने को सेना रखकर जो दूसरे पर जाता है उसको हे ब्रह्मा निश्चय ही पार्ष्णिरोधा कहते हैं ॥ ॥ १८६ ॥ शत्रु से उस (शत्रु) के मित्र से कलह कराकर उसको तटस्थ (किनारे) करादेवे और फिर उसी शत्रु पर जावे उसका नाम मित्रविग्रहिनी है ।।१८७।। जिस शत्रु पर यात्रा करै वही सेना सजकर सामने आवे उसको नीति के रस में प्रीति रखनेवाले ऋषि लोग द्वंद्वजा कहते हैं ॥ १८८ ॥ शत्रु के कुछ बान्धवों को साथ लेकर शत्रु पर जावे उसको

सत्रु बंधु कछु संग लहि, जबहि सत्रु पर जान ॥
कुल्या५ वह यात्रा कहत, नीतिप्रबंध निधान ॥१८९॥
स्वस्थभावसौं जय समय, पर सिर होइ प्रयान ॥
निर्य्याजा६ तस नाम है, बलजुत जास बिधान ॥ १९० ॥
अरि बिनास उद्देस करि, परिहरि सकल प्रमाद ॥
सहसा जाइ सु सीघ्रगा७, बदीं मुनिन नयबाद ॥ १९१ ॥

॥घनाक्षरी॥

आसनके भेद दस१० भाखे जे समस्त सुनौं,
स्वस्थ१ औ उपेक्षासन२ मार्गअवरोध३ नाम ।
देसस्वीकरन४ रमनीय५ तैसैं दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० काम ॥
अरि सब मारि राज्य आपुनौं अकंटककैं,
स्वस्थभावसौं जो रहैं१ स्वस्थासन२ सो ललाम ।
सत्रुन निबल जानि आपुनौं महत्व मानि,
सदय रहैं जो१ सो उपेक्षासन२ कित्तिधाम ॥ १९२ ॥
नदीके प्रवाह करि दिग्घ दवदाह करि,
अर्द्ध रुकैं आसन१ सो मार्गअवरोध२ गेय ।

नीति के ग्रन्थों का आश्रय रखनेवाला अथवा नीति के ग्रन्थ ही है धन जिनके ऐसे लोग 'कुल्या' नामक यात्रा कहते हैं ॥ १८९ ॥ जय के समय में शत्रु पर स्वस्थभाव (समान बराबरी के भाव से) यात्रा करे उसका नाम निर्य्याजा है, और पराक्रम के साथ ही उसकी विधि है ॥ १९० ॥ शत्रु के नाश का कथन करके सब प्रमाद (असावधानी) को छोडकर अचानक जावे उसको नीति कहनेवाले मुनियों ने शीघ्रगा कही है ।१९१। आसन के दश भेद कहे हैं सो सब सुनो. स्वस्थ, उपेक्षासन, मार्गअवरोध, देशस्वीकरण, रमणीय, इसीप्रकार दुर्गासन, निकट, दूर, पराधीन और प्रलोभ. इनमें सब शत्रु मार कर अपने राज्य को निष्कंटक करके स्वस्थ (चिन्तारहित) होकर रहै वह सुन्दर स्वस्थासन है, शत्रुओं को निर्बल जान कर और अपना बडप्पन मान कर दया सहित होकर रहे वह उपेक्षासन है, जो कीर्ति का घर है।१९२। नदी के बहने से, बडा अग्नि लग जाने से, मार्ग रुकजाने से, ठहरना पडै उसका

पैल्ल देसमाँहि करि विजय करैं जो तत्थ१,
आसन सो जानौं देसस्वीकरन२ नामधेय ॥
मारि अरि ताको द्रंग बारि१ धन२ धान्य३ करि,
रम्य जानि जो तँहँ रहैं१ सो रमनीय२ श्रेय ।
जीति अरि दुर्ग तासौं औरनकौं त्रास दैन,
सज्ज व्है रहैं तँहँ जो१ दुर्गासन सो२अजेय॥ १९३ ॥

॥ दोहा ॥

बलजुत अरि ढिग जाय बलि, करन महर्घ क्रयार्न ॥
राज्य बिगारन तस रहै१, निकट२नाम सो स्थान ॥१९४॥
दूर जानि निजदेसकौं, पाउस निकट प्रमानि ॥
सिबिरं रचैं१दूगासन२सु, ख्यात करत नय खानि ॥१९५॥
परि अरिबस वा मित्रबस, जो न सकैं कढि जान१ ॥
पराधीन१सो स्थान प्रभु, उचित धरत अभिधान ॥१९६॥
कंटक जास बहु दैन कहि, रक्खैं अरिन डरान१॥
सो प्रलोभ२ आसन दसम१०, कमलज धारहु कान॥ १९७ ॥
बली अरिन बिच परि निबल, कढ्ढिसकै जु न काल ॥

नाम मार्ग अवरोध कहते हैं, पराये देश का विजय करके वहीं वास करैं उसका नाम देशस्वीकरण है, शत्रु को मार कर उसके नगर को जलै, धन और धान्य से सुन्दर जान कर जो वहां पर रहै सो श्रेष्ठ आसन रमणीय कहाता है, और शत्रु से किला जीत कर उस किले से दूसरों को भय देने के लिये सज्जीभूत होकर रहे सो हे अजेय ब्रह्मा उसका नाम दुर्गासन है ।१९३। सेनां सहित शत्रु के पास जाकर विक्रय (बिक्री) की वस्तु मँहगी करके पुनि उसके राज्य को बिगाडने को रहै उसका नाम निकट आसन है ॥१९४॥ अपने देश को दूर जानके और वर्षा काल नजीक जान कर सेना के रहने के लिये मकानं बनावें उसका नाम नीति की खान (नीति के जाननेवाले) दूरासन प्रसिद्ध करते हैं ॥ १९५ ॥ शत्रु के बश में पडके अथवा मित्र के बश में पडके निकल नहीं सकै उसका नाम पराधीन है सो हे स्वामी इसका नाम उचित है ॥ १९६ ॥ तुमको बहुत देवेंगे ऐसा कह कर शत्रु के डराने के लिये सेना रक्खे सो प्रलोभ नामक दशमा आसन है, सो हे ब्रह्मा सुनो ॥ १९७ ॥ बलवान् शत्रुओं के बीच में निबल पड़कर समय नहीं निकालसके और द्वैधीभाव रचकर

रहैं सु द्वैधीभाव रचि, चलैं काकदृग चाल ॥ १९८ ॥
मिथ्यामन१ मिथ्यावचन२, मिथ्याकरन३ बिरंच ॥
जुग बेतन४ जुग प्राभृतक५, द्वैध भेद प्रभु पंच५ ॥ १९९ ॥

॥ मनोहरम् ॥

बैननमैं प्रीति बहैं चित्तमैं बिरोध चहैं१,
द्वैधीभाव मिथ्यामन२ नाम सु कहावैं हैं।
बैंननसौं प्रीति कहैं कर्मसौं बिरोध बहैं१,
मिथ्याबैन२ नाम ताको नीतिपटु गावैं हैं ॥
छोटे अरि काज करैं मोटे काज मेटे चाहि१,
सो तो मिथ्याकरन२ प्रबंधनमैं पावैं हैं।
एकतैं प्रकट लेत दूजेतैं प्रछन्न लेत,
बेतन जो१ ताहि जुगबेतन२ बतावैं हैं ॥ २०० ॥

॥ दोहा ॥

बैरीहनन जु देत बसु, सु लै करत स्वीकार ॥
ताके अरिसौं लै तिमहि, व्है यापर हुसियार१ ॥ २०१ ॥
तास नाम जुगप्राभृतक२, जानहु पंकजजात ॥
आश्रय तीन३ प्रकार अब, बरनत नयबिख्यात ॥ २०२ ॥

काकपक्षी के नेत्रों की चाल (काकपक्षी एक नेत्र से आगे को देखता है और दूसरे नेत्र से पीछे को देखता है) के समान चलै ॥ १९८ ॥ मिथ्यामन, मिथ्याबचन, मिथ्याकरण, जुगबेतन, जुगप्राभृतक, हे स्वामी ब्रह्मा ये पांच प्रकार के द्वैधीभाव हैं ॥ १९९ ॥ वचन में प्रीति और मन में बिरोध रक्खे उसको मिथ्यामन कहते हैं, बचन से प्रीति कहता रहै और कार्य में बिरोध करता रहै उसका नाम मिथ्याबचन नीति में चतुरलोग कहते हैं, स्वामी के मोटे कार्य मेटना चाहकर शत्रु के छोटे कार्य करे उस द्वैधीभाव का नाम ग्रन्थों में मिथ्याकरण मिलता है, एक से प्रसिद्ध में तनखाँलेना और दूसरे से छिपकर लेना उसका नाम जुगबेतन कहते हैं ॥२००॥ शत्रु के मारने को धन दियाजावे वह लेकर मारना स्वीकार करे इसीप्रकार उसके शत्रु से लेकर पीछा उसी [प्रथम धन देनेवाले स्वामी] को मारने को सावधान होवे उसका नाम हे ब्रह्मा जुगप्राभृतक जानो, नीति में प्रसिद्ध तीन प्रकारके आश्रय अब वर्णन करता

॥ घनाक्षरी ॥

आप बलहीन निज जयको अभाव जानि,
आश्रय बलिष्टको लै दंडको दबायो जाइ ।
आश्रय कहावत सो ताके तीन३ भेद जे,
सदाश्रय१ रु अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ ते कहाइ ॥
बैरी बलवान जो दबावैं तो निबल ताकौं,
धर्मधर जानि लेत आश्रय तदीयं१ आइ ।
सो तो है सदाश्रय२ औ सत्रुको दबायो लै,
बलिष्ट औंर आश्रय१ सो अन्याश्रय२ नाम पाइ ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

बली सत्रु पीडित निबल, सेवैं दुर्गप्रदेस१॥
तस दुर्गाश्रय२ नाम तिम, लखहु बिदित लोकेस ॥ २०४ ॥
साम१ भेद२ उपदान३ दम४, इक१ उपाय चउ४ अंग ॥
उत्तम१ मध्यम२ अधम३ अरु, कष्ट४ गिनहु क्रमसंग ॥२०५॥

॥ षट्पात ॥

भेद सामके पंच५ कर्णा सुभग१ रु दैविक२ जिम ।
स्मारक३ लोभज४ सुनहु अप्प, अर्पन५ नामहु इम ॥
सुखद मंडि संलाप बिरचि, परचित्त प्रीतिबस ।

हूं ॥ २०० ॥ २०१ ॥ आप बलहीन होवे और अपनी विजय का अभाव [नाश] जान कर दंड का दबायाहुआ दूसरे बलवान् का आश्रय [सहारा] लेवै उसको आश्रय कहते हैं. उसके तीन भेद, सदाश्रय, अन्याश्रय और दुर्गाश्रय कहाते हैं. बलवान् बैरी दबावे तो निर्बल होकर उसीको धर्म का धारण करनेवाला जानकर उसीका आश्रय लेवै वह तो सदाश्रय कहाता है, शत्रु का दबायाहुआ किसी दूसरे बलवान् का आश्रय लेवे उसका अन्याश्रय नाम है ॥२०३॥ बलवान् शत्रु से पीडित होकर निर्बलता से गढ में जाकर रहै उसका हे ब्रह्मा प्रसिद्ध नाम दुर्गासन है ॥ २०४ ॥ उपायके साम, भेद, दान और दंड ये चार अंग हैं, सो क्रम से उत्तम, मध्यम और अधमाधम हैं ॥ २०५ ॥ इन में साम के पांच भेद हैं कर्णा, दैविक, स्मारक, लोभज और अर्पन इनमें सुखदाई वार्तालाप करके हित के साथ दूसरे के चित को प्रीति बश करलेने की सुन्दर

हितमय साम जु होइ१ नाम प्रभु कर्णा सुभग२ तस ॥
सिश्रंथ बिरचि सपथादि बल व्है१ सु नाम दैविक२ लहत ॥
संबंध कछुक सुमिराइकैं करिये१ सो स्मारक२कहत ॥२०६॥

॥ दोहा ॥

इष्ट परस्पर अप्पिव्है१, सांत्वन लोभज२ सोहि ॥
मो बपु तोहित अक्खि इम, होहि१ सु पंचम२ होइ ॥ २०७ ॥
सिद्धि व्है न जँहँ सामसौं, भेद बिरचि तँहँ भूप ॥
जलपय अरिन मराल जिम, रचत भिन्न अनुरूप ॥ २०८ ॥
त्रस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, उचित भेदके ग्राहि ॥
गूढ पुरुख निज सत्रुगत, तिन करि भेदत ताहि ॥ २०९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

प्रानभंग१ मानभंग२ बित्तभंग३ बंधक४ त्यौं,
दारलाभ५अंगभंग६भेदके छ ही प्रकार ।
प्रानभय दैकैं भेद व्है१सो प्रानभंग२मान,
हानिभय दैकैं व्है१सो मानभंग२नाम धार ॥
बित्तभय दैकैं भेद व्है१सो बित्तभंग२दैकैं,

'कर्ण' कहते हैं, जो शपथ [सोगन] आदि से विश्वास कराकर मिलाप करै वह 'दैविक' कहाता है. सम्बन्ध को याद दिलाकर(तुमसे हमसे अमुक सम्बन्ध है) मेल करै उसको 'स्मारक' कहते हैं ॥ २०६ ॥ परस्पर प्रिय पदार्थ देकर जो सांत्वन (सामउपाय) करै उसका नाम 'लोभज' है. और मेरा शरीर तेरेही लिये है ऐसा कहकर जो साम करे उसको 'अर्पण' कहते हैं ॥२०७॥ जहां पर साम से कार्यसिद्धि नहीं होवे तहां पर राजा लोग भेद उपाय करें जैसे पानी और दूध को हंस जुदा जुदा करदेता है तैसे ही शत्रुओं में फूट पटककर जुदे करदेवे ॥२०८॥ डरा हुआ, अनादर पायाहुआ और क्रोधी ये तीन प्रकार के पुरुष भेद करने के योग्य हैं सो अपना गुप्त पुरुष शत्रुओं में जाकर ऊपर के तीन प्रकार के पुरुषों से फूट पटकावे ।२०९। इस भेद के प्रानभंग, मानभंग, बित्तभंग, बंधक, दारलाभ, अङ्गभङ्ग, ये छः प्रकार हैं जिन में प्राण का भय देकर फूट पटकावे उसका नाम प्राणभंग है, मानहानि (बेइज्जती) का भय देकर करै सो " मानभंग " नाम का भेद है, धन छीन लेने का भय दे

कारोभय है१सो भेद बंधक२गिनौं उदार।
पैच्छ दुव२पत्नीभय दैहै१दारलाभ२अंग,
भंग भय दैह१अंगभंग२सो हे हंससंचार ॥ २१० ॥
भेदसौं बनैं न तापैं दानको प्रयोग होत,
ताके भेद सोलह१६ते सुनहु दयानिधान।
क्रमतैं अभीष्ट१देश्य२हायन३रु भागधेय४,
गज५हय६ग्राम७वस्त्र८ सासन९कनक१०दान।
कन्या११ पननारि१२खानि१३भूखन१४रु बेलाकर१५,
दान प्रतिपत्तिज१६ त्यौं सोलहौं१६धरहु कान।
नाम अनुसार जानौं लच्छन समस्तनके,
केते कथनीय तिन्हैं सुनिये सुमतिमान ॥ २११ ॥
मंगैं सोहि दैनौं ताहि कहत अभीष्ट१कबि,
देस कछु दैनौं सो कहावे देश्य२नामधेय।
जासौं है कुटुंबको निबाह एक१हायनलौं,
ऐसो द्रव्य दैबो ताहि हायन३गिनौं अजेय॥
देस तो न दैनौं कँरमात्र तास दैनौं सो है,

कर भेद करै सो "बिस्तभग". कैद करने का भय देकर करे सो हे उदार [ब्रह्मा] उसको "बंधक" जानो. दोनों पैक्षवालों को स्त्री को छीन लेने का कि तुम इसके पास रहोगे तो यह तुम्हारी स्त्री को लेलेवेगा यह भय देकर भेद करे उसको हे हंस की सवारी से चलनेवाले (ब्रह्मा) "अंगभंग,, नामक भेद जानो ॥ २१० ॥ जिनमें भेद नहीं होसके उनमें दान उपाय किया जाता है जिसके हे दयानिधान (ब्रह्मा) अभीष्ट, देश्य, हायन, भागधेय, हाथी, घोड़े, गाम, वस्त्र, शाशन, सोना देना, कन्या, वेश्या, खानि, आभूषण, वेलाकर, प्रतिपत्तिज, ये सोलह भेद जानो, इन सबके लक्षण नामों के अनुसार ही जानो, परन्तु कितनेक कहने योग्य हैं सो हे श्रेष्ठ मतिवाले (ब्रह्मा) सुनो ॥ २११ ॥ जो मांगे सो ही देना उसको कविलोग अभीष्ट कहते हैं, कुछ देश दिया जावे वह "देश्य" नामवाला कहाता है. जिस धन के देने से एक वर्ष तक सब कुटुम्ब का पालन हो जावे उसको हे अजेय (ब्रह्मा) "हायन" जानो. और देश तो नहीं देवे केवल उसका कर [हासिल]

करज ४५ ग्राम दैनौं सो हैं ग्रामदान५गेय ।
जोलौं लैनहारको सपिंड रहैं तोलौं कछु,
दीनौं जो लुपैं न सो है सासन६समाख्य देय ॥ २१२ ॥
रजत१सुवर्ण२रत्न३आदि निकसैं ए जत्थ,
ऐसो जो प्रदेस दैबो खानि दान७सो कहात ।
बहुत बहित्रजीवी सिंधुबसु लैकैं जिहिं,
घट्ट उतरैं सु देबो बेलाकर८नाम ख्यात ॥
सिंहासन१छत्र२चामरा३दिकको दैबो जाको,
मान बढिबेकौं प्रतिपत्तिज९सो भाख्यो जात ।
सप्त७जे गजादि अवसेसं तिन्ह लच्छन तो,
नाम अनुसार तासौं जानहु बिदित बात ॥ २१३ ॥
दानके प्रयोगहु सौं सिद्ध जो बनैं न काज,
तो तँहँ प्रचारैं दंड पंद्रह१५प्रकार जास ।
बेल१बन२छेदैं त्यौं निवानकौं भेदैं लूटि,
जारैं पुर१ग्रामन२कौं ताको नाम देस जास१ ॥
अंग अरि पच्छिनके छेदैं वह अंगछेद२,
सर्ब पसु छिन्नैं नाम गोग्रह३कहावैं ताम ।

दे देवे सो 'करज' (भागधेय) है, ग्राम का देना 'ग्रामदान' कहा जाता है, जब तक लेने वाले की सपिंडी (सात पीढी) रहे जहां तक के लिये दिया जावे वह 'शासन' नामक दान है ॥ २१२ ॥ जहां पर चांदी, सोना रत्न आदि निकले ऐसा प्रदेश (स्थान) देवे उसको 'खानि' दान कहते हैं नाव (नौका) से जीविका करने वाले समुद्र से धन लेकर जिस घाट पर बहुत उतरते होवें उसका देदेना 'बेला' नाम से प्रसिद्ध है. जिस का मान बढाने के लिये सिंहासन, छत्र, चमर आदि का देना है उसको 'प्रतिपत्तिज' कहते हैं, बाकी के सात हाथी, घोड़ा, ग्राम, वस्त्र, सोना, कन्या और गणिका, इनका देना है सो इनके लक्षण इन्हीं के नामों से जान लेना, यह प्रसिद्ध बात है ॥ २१३ ॥ दान देने से भी कार्य सिद्ध नहीं होवे तो वहां पर दण्ड का प्रचार करे जिस के पन्द्रह प्रकार हैं. बाग और बन को काटे, और तालाब, बावड़ी आदि निवाणों को फोड़े, शहरों और गांवों को लूटकर जला देवे, उसको 'देशनाश' कहते हैं. शत्रुओं के पक्षवालों के अंगछेदन करे वह 'अं

धान्य सब छिन्नैं खल[1]आपनं[2]कुसूलन[3]तैं,
ताकौं धान्यहरन४बखानैं नयके निवास ॥ २१४ ॥
धनिक कुटुंबी व्यवहारी जे गृहस्थ तिन्हैं,
आनि डारैं कारा नाम बंदिग्रह५जंपैं जाहि ।
अरिकी प्रजाकौं ज्यौं प्रतीति त्यौं अभय देकैं,
आपुनी करैं जो देसाहारक६बखानैं ताहि ॥
दलतैं दबाइ धन सत्रुको लिवाइ लेबो,
भाखैं धनादान७ताको नीतिमैं चतुर चाहि ।
सर्बहरैं ताकौं सर्बस्वहार८जानौं जाके,
गढन गिरावैं नाम दुर्गभंग९ताको आहि ॥ २१५ ॥
राजधानी सत्रुकी प्रजारैं सो तो स्थानदाह१०,
देसतैं निकासैं देसनिर्वासक११ सो कहात ।
जुद्ध करि मारैं सो कहावैं जुद्धघात१२ ए तो,
द्वादस१२ही दंड बलवानन बिधेय ख्यात ॥
निर्बल उचित अब तीन३दंड जानौं हनैं,
गरल दिवाइ बिषदंड१सो तो कंजजात ।

गछेद'. सब पशु छीन लेवे उसका नाम 'गोग्रह'कहाता है. खले(धान्य तय्यार करके निकालने का स्थान) हाट [दुकान] और कोठों में से धान्य सब छीन लेवै उसको 'धान्यहरण' नाम नीतिनिपुण लोग कहते हैं ॥ २१४ ॥ धनवान्, बड़े कुटुम्ब वाले, और व्यापार करने वाले जो गृहस्थी होवें उनको जेलखाने में ला डालें उसको 'बन्दिग्रह' कहते हैं. शत्रु की प्रजा को विश्वास आवे इस प्रकार अभय देकर अपनी बनालेवें उसको 'देशहार' कहते हैं सेना से दबाकर शत्रु का धन लेलेने को नीति में चतुर लोग 'धनादान' कहते हैं, सभी हरण करलेवे उसका नाम "सर्वस्वहार" जानो. और किले को गिरादेवे उसका नाम 'दुर्गभंग' है ॥२१५॥ शत्रु की राजधानी जला देवे उसको 'स्थानदाह' और देश से निकाल देवे उसको 'देशनिर्वासक' कहते हैं, युद्ध करके मारे उसको 'युद्धघात' ये बारह दंड तो बलवानों के करने के प्रसिद्ध हैं, और निर्बलों के करने के तीन दंड ये हैं; कि हे ब्रह्मा जहर

मारैं अभिचार करि सो है आभिचारिक२दगा,
सौं हनि डारैं सो कहावैं दम छद्मघात३ ॥ २१६ ॥
सेनाभेद कोबिद जो अपनैं अधीन नृप,
सक्ति तीन३ छ६ गुन बिबेकी रहैं सावधान ।
च्यारि४हु उपाय अनपाय रचि जानैं सातौं७,
प्रकृति समेत देस कालको बिचारैं ज्ञान ॥
तो जो मतिमान बसवर्त्ती सब सत्रु करैं,
दुष्टनकौं ऐसैं करि लेहो बसवर्त्तीवान ।
जो न करि लैहो तो जमालय अतिथि ह्वैकैं,
जैहैं सब लोक ताके रोधको रचो बिधान ॥ २१७ ॥

॥ दोहा ॥

मत निज निज इम सब मुनिन, न्यायनिदर्शनें बुल्लि ॥
असुरनको मिच्चुहि उचित, दृढ किन्नौं स्फुटें खुल्लि ॥ २१८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ मुनि-ब्रह्मलोकगमन-निजनिजमतविद्यानिदर्शन-न्यायदर्शितदैत्यवधप्रार्थनं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥ आदित एकोनात्रिंशः॥२९॥

दिलाकर मारै वह तो 'गरलदण्ड'; मारण, मोहन, उच्चाटन,आदि तन्त्र शास्त्र की क्रिया से मरावे सो ' आभिचारिक ' और छल करके मारे उसको 'छद्मघात ' कहते हैं ॥ २१६ ॥ जो राजा सेना के भेद (हाथी, रथ, सवार, पैदल) पर चतुर, अपने ही आधीन में रहने वाला, तीनों शक्ति छहों गुणों में विचारवान् और सावधान, चारों उपाय निश्चल रचिजाने, और सातों प्रकृति सहित देश काल को बुद्धि पूर्वक विचारे तो वह बुद्धिवान् सब शत्रुओं को वश में करलेवे, इसी प्रकार हे ब्रह्मा इन दोनों दुष्ट दैत्यों को वश में रहनेवाले कर लो. और जो नहीं कर लोगे तो सब लोक यमराज के घर के पाहुने होकर जावेंगे जिनके रोकने की विधि रचो ॥ इस प्रकार सब मुनि अपने अपने मत से उचित उदाहरणों से बोलकर स्पष्ट रीति से खोलकर दृढ कर दिया कि दैत्यों की मृत्यु ही उचित है ॥ २१८ ॥

यह श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में मुनियों का ब्रह्मलोक में जाना और अपने अपने मत से विद्या के उदाहरणों से उचित दिखाकर दैत्यों के वध की प्रार्थना करने का चौथा४मयूख समाप्त हुआ ॥४॥

पज्झटिका॥

इम सुनत सरोरुहभव[१] जहास[२], पुनि किय निदेस[३] उत्तर प्रकास ॥
तुम कहत जिमहि आसुर बलिष्ठ, मम बर निसंक[४] सुंदरिनिष्ठ॥ १ ॥
वे गिनत सबन निबल अभंग, बहिरंग[५] सूत्र जिम अंतरंग[६] ॥
पै मैंहि हनौं किम तिन्ह बढाइ, उपजैं अलीक[७] बर बिफल जाइ ।२।
इम सुनत मुनिन किय अरज एह, पापिन बिच ऐसो क्यौं सनेह ॥
तुम्हनैंहिं बनाई आदि रीति, दमि दुष्ट निबाहन धर्मनीति ॥३॥
तुम कनककसिपु पहिलैं बढाइ, मारत नृसिंह बरजे न जाइ ॥
कनकाक्ष[९] बढायो तुमहि चाहि,
किरिरांज[१०] न रोके हनन ताहि ॥ ४ ॥
बरदै पुनि रावन१ कुंभ२ अर्थ, मारत न राम बरजे समर्थ ॥
याही अनेहँ[११] क्यौं यह निदेस, हनिये न तिनहिं क्षै बरविसेस ॥ ५ ॥
ऐसी मति ऐत्थ[१२] न उचित तात, अविलंबित[१३] अक्खहु दुष्टघात ॥
करिहो न धर्मरक्षा कृपाल,
मिटिहै हि भक्ति१ मख[१४]२ निगम[१५]३ चाल ॥ ६ ॥
मख बिनु निलिंप[१६] तृप्ति न लहंत, बिनु तृप्ति बुंद्धि[१७] मुंदिर[१८] न बहंत
सब लोक नास इम होनहार, अवलंब[१९] होहु अब हेउदार ॥७॥
हम अप्प[२०] रचे संसृति[२१] हिताय[२२], जगदुक्ख सह्यो हमपैं न जाय ॥
किम होइ प्रानविनु बानपुत्र, तुम कहहु नाथ थिर१चर२तनुत्र[२३] ॥८॥
तिनप्रति तब बोले पुनि प्रजाप[२४], दुष्टन यह पायो बर दुराप[२५] ॥
हम हरि१हर२ सक्क३हुसौं मरैं न, देवी४रु देव५ हम बध करैं न ।९।

और आदि से उन्तीस मयूख हुए ॥ २९ ॥

१ब्रह्मा के२हंसकर३आज्ञा४वीरतावाले वे सबको निर्बल गिनते हैं जैसे व्याकरण में अंतरंग सूत्र बहिरंग सूत्र को निर्बल समझता है जिसकी परिभाषा यह है 'असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे' अंतरंग कार्य करना हो तौ बहिरंग कार्य असिद्ध होता है.७मिथ्यापन८हिरण्यकशिपु को९ हिरण्याक्ष को१०वराह अवतार को११समय१२यहां१३शीघ्र१४यज्ञ१५ वेद १६ देवता १७ वर्षा १८ मेघ १९ आधार२० आपने२१सृष्टिके२२हित के अर्थ२३कवच(रक्षक) २४ प्रजापति(ब्रह्मा)२५दुर्लभ

योनिज[1]रु दुकर[2]जित्तैं न रंच, हैं हम अजेय तुमरे [3]प्रपंच ॥
इम लै बर आसुर वे बिमत्त, घल्लहु कछु पद्धति[4] पाइ घत्त ॥१०॥
बरहू नहि जासौं बिफल जाय, अरु होय सिद्ध चिंतित उपाय ॥
कछु दूर कृष्ण अवतार होन, लहि इक्कगली तुम हनहु दोरन॥११॥

॥ दोहा ॥

क्षत्र अयोनिज तुम रचहु, अग्निकुंडसौं पुब्ब ॥
जो दुवर दुष्टन जारि है, ज्यौं मितद्रु[5]कौं उर्व[6] ॥ १२ ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि यह द्रुहिन[7] निदेस, मुनिन कहिय सय[8] जोरि पुनि ॥
चलहु संग लोकेस, अप्प छतैं अरं[9] साध्य यह ॥ १३ ॥

॥ पज्झटिका ॥

बुल्ले बिरंचि पुनि इम बिचारि, तुम कथितं[10] लयो करतव्य धारि ॥
वैकुंठपति१ रु रंजतादिनाथ[11]२, लै आवहु चलिहैं हमहु साथ ॥१४॥
आखंडलादि[12] सब सुरं[13] बुलाय, श्रीविष्णुगर्भ[14] लै निज सहाय ॥
सुचिकुंड[15]हिंतु[16] राजा निकारि, प्रेरहिं तिन उप्पर रचन रारि ॥१५॥
अवनीसं[17] तास अभिसेक अत्थ, तीर्थादि बुलै ह सकल तत्थ ॥
भूआधिपत्य[18] ताकौं समप्पि, थिर वह सब रच्छक दैहिं थप्पि ।१६।
सुरं[19] सक्तिधरहिं तामैं असेस, हनिहैं रन दुष्टन सुहि नरेस ॥
हुव द्विजन संग कहि या प्रकार, इंद्रादि संग लै पुनि उदार ॥१७॥
जे नुंति[20] बिधाय कैलास जाइ, गिरिजौं[21] समेत त्र्यंबकं[22] रिझाइ ॥
आसय निवेदि तिन्ह रक्खि अग्र, वैकुंठ गये सुमनसं[23] समग्र ॥१८॥
किय विष्णुदरस लहि सावकास, जंपियैं[24] प्रभु होवत निखिल नास॥

१ योनि से उत्पन्न होने वाले २ दो हाथवाले ३ सृष्टि में ४ मार्ग ५ समुद्र को ६ बड़वाग्नि ७ ब्रह्मा का ८ हाथ ९ शीघ्र १० कहा हुआ ११ कैलास के स्वामी (महादेव) १२ इन्द्र आदि १३ देवता १४ बीच में लेकर १५ अग्निकुंड १६ से १७ उस राजा के १८ स्वामीपन १९ देवताओं की शक्ति २० स्तुति करके २१ पार्वती २२ महादेव को २३ देवता २४ कहा

तुमतैं न छन्न अच्युत[१] त्रि३कास्त[२], करिये स्वसर्ग[३] रच्छा कृपाल ॥१९॥
नँ[४] धनद[५] अधीन अब स्वापतेय[६], पासी[७]बस सलिलादिक[८] न श्रेय ॥
अमरावती[९] न वासव[१०] अधीन, हुव सब निर्लिप[११] अधिकार हीन ॥ २० ॥
सिव कहिय बान मम भक्त आहि[१२],ते खल सदर्प[१३] मन्नैं न ताहि ॥
बिस्वहि संहारत दुव२अबोध,उचित न अब केसव[१४] रोस रोध[१५] ॥२१॥
हमसौं बिधि अक्खिय एक१न्याय,सु बनैं मुकुंद सुमरे सहाय ॥
सुनतहि इतीक लखि भक्त भंग, द्विज दीनबंधु हुव मुनिन संग ।२२।
अहिअरि[१६] अरोहि कमला उपेत[१७], आये उपेंद्र[१८] अध्वर[१९] निकेत[२०] ।
श्रीकेसव१ संकर २ अज[२१] ३ सुरेस४, इत्यादि आय अर्बुद अंगेस[२२] २३
निर्ऋति[२३]५रु परंजन[२४]६ गंधवाह[२५]७, अनल[२६]८रु कुबेर९जम१०लहि उछाह

दिनकर[२७]११ रजनीकर[२८]१२ एकदंत[२९]१३ ,
सिखिबाहन[३०]१४आश्विन[३१] १५दुव२सुमंत[३२] ॥ २४ ॥
आये छ६संख्य[३३] ऋतु१६ देहधारि,
दुव२अयन१७ मास१८ बारह१२ पधारि ॥
आहूत[३४] अब्द[३५]१९ दिन२० रत्ति[३६]२१आइ,
श्री[३७]२२अद्रिराजतनया[३८]२३ सुहाइ ॥ २५ ॥
बानी[३९]२४रु निगम[४०]२५बुध२६सनि२७रु आर[४१]२८,
इंद्रादिकलत्र[४२]२९हु छबिअपार ॥
दिव३०महर३१जन३२रु तप३३सत्य३४लोक,
बासी अनेक तजि तजि स्वओक[४३] ॥ २६ ॥

---

१ निर्विकार (पतन रहित) २ भूत, वर्तमान, भविष्यत् के जाननेवाले ३ अपनी सृष्टि की ४ नहीं ५ कुबेरके ६ धन ७ वरुण के ८ जल आदि ९ इन्द्र की पुरी १० इन्द्र के ११ देवता १२ है १३ घमंड सहित १४ हे विष्णु १५ क्रोध का रोकना १६ गरुड़ पर चढ़कर १७ लक्ष्मी सहित १८ विष्णु १९ यज्ञ के २० स्थान में २१ ब्रह्मा २२ पर्वतराज पर २३ नैर्ऋत्य कोण का पति २४ वरुण २५ पवन २६ अग्नि २७ सूर्य २८ चंद्रमा २९ गणेश ३० स्वामिकार्तिक ३१ अश्विनीकुमार ३२ श्रेष्ठ बुद्धिमान् ३३ छः की संख्यावाले ३४ बुलाये हुए ३५ वर्ष ३६ रात्रि ३७ लक्ष्मी ३८ पार्वती ३९ सरस्वती ४० वेद ४१ मंगल ४२ स्त्रियां ४३ घर

अ[1]णिमादि सिद्धि३५मिलि अष्ट८आइ,
प[2]द्मादिक३६नव९निधि समय पाइ ॥
अच्छरि ३७ किन्नर ३८ गंधर्व ३९ तत्र,
इत्यादि भये गायक इकत्र ॥ २७ ॥
बिद्याधर४०गुह्यक४१बिरुदका[3]रि,
बसु४२साध्य४३सिद्ध४४चारन४५पधारि ॥
आभास्वर ४६ विश्व ४७ रु तुषित ४८ जानि,
गन मरुत ४६ महाराजिक ५० प्रमानि ॥ २८ ॥
बा[4]लिनिमुख ५१ तारा सप्तवीस २७,
अरु उदक ५२ भूमि ५३ रसगंध ईस ॥
स[5]हकाय आइ दस १० ककु[6]भजूह५४,
सब योगिनी ५५ रु खेचर ५६ समूह ॥ २९ ॥
कामदु[7] ५७ काममणि[8] ५८ कामगाइ ५९,
खग ६० उरग ६१ ज[9]च्छ ६२ सब संग आइ ॥
इत्यादि देव अरु देवयोनि,एकत्थ जुरे सब सं[10]त्रछोनि ॥ ३० ॥
नृप रामसिं[11]ह हड्डाधिराज,उतरे इम अर्बुद सुरसमाज ॥
आ[12]हूत बहुरि तीरथ असेस,पुष्कर१प्रयाग२पुनि बदरिकेस३१
गंगा४रु पूर्वगंगा५बखानि,जमुना६तापी७गोदा८हु जानि ॥
कृष्णा ९ शतद्रु १० बेणा ११ बिपास १२,
करतोया १३ लंघ[13]न जास ऱ्हास ॥ ३२ ॥
विश्वा१४रु अर्धजान्हवि१५इयाय,गोमति१६बिरिंचिपुत्री१७सुभाय॥
सरजू१८रु बाहुदा१९पुण्यरूप,चर्मणवती२०रु बेणि२१अनूप॥३३॥

१ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये आठ सिद्धियां हैं २ पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नव निधि हैं ३ स्तुति करनेवाले ४ अश्विनी को आदि लेकर ५ शरीर सहित ६ दिशाओं का समूह ७ कल्पवृक्ष ८ चिन्तामणि ९ यक्ष १० यज्ञभूमि में ११ हे रामसिंह हाडों का स्वामी १२ बुलाये १३ जिसके उतरने का क्षय है अर्थात् अटक नदी उतरने से धर्म का नाश मानाजाता है.

सुरसा २२ रु चंद्रिका २३ स्वैरसुद्ध,पुनि आइ तुंगभद्रा२४प्रबुद्ध ॥
निर्विंध्या२५अवटोदा२६सु नाम,कृतमाला२७चंद्रबसा२८सुधाम॥३४॥
धुनि सिंधु२९पयोष्णी३०नामधेय,भीमरथि३१ताम्रपर्णी३२सुपेय॥
बैहायसी ३३ रु कौसिकि ३४ बखानि,
[3]ह्रदिनी ऋसिकुल्ल्या ३५ बहुरि जानि ॥ ३५ ॥

दोहा

पयस्विनी ३६ पुनि सर्करावर्त्ता ३७ पंपा३८ आइ ॥
सप्तवती३९रु दृषद्वती४०, ओघवती४१हु सुहाइ ॥ ३६ ॥
वेदस्मृति४२कूलंकषा, बहुरि त्रिसामा४३नाम ॥
सरित सु सोमा४४पुण्यमय,गल्लकी४५हु सुखधाम ॥ ३७ ॥
बितस्ता४६रु द्वैपायनी४७, असिक्नी४८हु बरतोयँ ॥
बहुरि मरुद्वृद्धा४९ नदी, अंध५० शोण५१ नद दोय२ ॥ ३८ ॥
सूर्यारक५२ पंचाप्सरस५३, फाल्गुन५४ तीर्थ हु जानि ॥
गोकर्ण५५ रु मनु तीर्थ५६ पुनि, बामनतीर्थ५७ प्रमानि ॥ ३९ ॥

हरीगीतम् ॥

बिनसन५८ सुभूमिक५९ गर्गश्रोत६० रु संखतीर्थ६१ ललामँ जो।
पुनि द्वैतबन६२ अरु नागधन्वा६३ नागबासुकिधाम जो ॥
यायाततीर्थ६४ समंतपंचक६५ थाणुतीर्थ६६ हु जानिये ।
केदारतीर्थ६७ रु हंसतीर्थ६८ सुपर्णतीर्थ६९ प्रमानिये ॥ ४० ॥
पुनि औशनस७० अरुणानदी७१अरु सोमतीर्थ७२हु ध्येय जो ।
मैत्रावरुण७३ बराहसर७४ अरु ब्रह्मकुंड७५ सुपेयँ जो ॥
सीता७६ रु भद्रा७७ अलकनंदा७८ चक्षु७९ आवर्त्ता८० नदी।
सुखतीर्थ८१ कार्त्तिकतीर्थ८२ धानदतीर्थ८३ त्यौं पुनिसारदी८४।४१।
गिनि अग्नितीर्थ८५ रु बदरपाचन८६इंद्रतीर्थ८७ हु पंकहा ।
आगस्त्यसर८८ आदित्यतीर्थँ८९ रु रामतीर्थ९०कलंकहा ॥

१नदी२नामवाली३नदी ४श्रेष्ठ मानीयाली५सुन्दर ६ध्यानयोग्य७पीने में श्रेष्ठ
८ पापनाशक ९ पापनाशक

सारस्वताख्य९१ ययातिपतन९२ रु प्लक्ष प्रस्रवण९३नाम त्यों।
कुरुक्षेत्र९४ धर्मारण्यतीर्थ९५ रु महाकाल९६ बिराम९७ त्यौं॥४२॥
पुनि कोटितीर्थ९८ रु भद्रवट९९ पिंडारकाख्य१०० प्रधान सो॥
दमितीर्थ१०१बसुसर१०२संकुकर्ण१०३ रु सतत१०४पुण्यदथानसो
बसुधारतीर्थ१०५ रु सिंधु उत्तम१०६ब्रह्मतुंग१०७ विसेस जो।
जालिक १०८रु सक्रकुमारिकाख्य१०९रु अपयनद११०तीर्थेसजो॥
श्रीकुंज१११भीमास्थान११२बिमल११३रु रुद्रपाद११४गिनौं जथा।
पुनि ब्रह्मबालुक११५कामतीर्थ११६रु देविकाभिधं११७हू तथा॥
मंडूल११८मानुष११९दीर्घसत्र१२०दशाश्वमेधिक१२१तित्थं जे।
नागोदभेद१२२सिवोदभेद१२३सु तीर्थ१२४नौं अवहित्थं जे॥४४॥
चमसोद भेद१२५कुमारकोटि१२६रु रुद्रकोटि१२७अनूप जे।
सत्रावसान१२८पारिप्लव१२९रु शशयात१३०पुण्य सुरूप जे॥
मुनिको१३१रु आश्विन१३२सर्पदर्वी१३३एकहंस१३४बखानिये।
शालूषिकी१३५कृतशौच१३६गोग्रह१३७वंशमूलक१३८मानिये॥४५॥
मित्रक१३९सम्लूक१४०मुंजबट१४१अरुकायशोधन१४२हू कहे।
श्रीतीर्थ१४३मुदित१४४अनंडक१४५रु लोकेश्वराख्य१४६हुजहांजहे
पुनि संखिनी१४७रु कपालमोचन१४८सूर्य१४९कपिला१५०नामजे।
ध्रुवतीर्थ१५१ब्रह्मावर्त्त१५२त्यौं पुनि सरक१५३पूरक कामजे॥ ४६॥
सीतावन१५४रु नखलोमअपह१५५रु पाणिखात१५६गये जहां।
कपिलेसखेत्र१५७महाप्रभाव रु पुंडरीक१५८जुरे तहां॥
मृगधूम१५९ब्रह्मोदुंबराभिधं१६०मनोजन्म१६१गिनौं जथा।
फलकांचनाख्य१६२इलापदाख्य१६३मनोजवाभिध१६४हू तथा ४७
व्यासस्थली१६५किंदत्तकूप१६६रु आपगानदि१६७जानिये।
मधुबटी१६८व्यासबनाख्य१६९अह१७०अरुशालिसूर्य१७१प्रमानिये
कनखल१७२मधुश्रव१७३कन्यका१७४श्रीकुंड१७५नैमिषकुंड१७६ज्यौं।
वामन१७७कुलंपुन१७८ब्रह्मयोनि१७९पृथूदकाभिध१८०आइत्यौं४८

१ नाम २ नाम ३ तीर्थ ४ सुख ५ नाम

गिनि पवनन्हद१८१अरु अमरन्हद१८२पुनि ब्रह्मतीर्थ१८३बिसेस जो।
सोमाख्य१८४वैश्वामित्र१८५आग्निक१८६गोप्रतार१८७सुदेस जो॥
कपिलावटाख्य१८८अरुंधतीवट१८९लडभिकाख्य१९०गिनौं जथा
कुब्जाम्रकाख्य१९१रु भद्रकर्ण१९२सुगंधिकाख्य१९३मिले तथा॥
पुरुतीर्थ१९४रुद्रावर्त१९५दर्वीसंक्रमाभिध१९६हु गये।
बीरप्रमोचन१९७अश्ववेदी१९८पर्णातीर्थ१९९हु व्हाँ ठये॥
भृगुतुंग२००यमुनाप्रभव२०१आदित्याश्रमाभिध२०२आइ जे।
सामुद्रकाख्य२०३रु सिंधुप्रभव२०४सहस्त्रिकाख्य२०५सुभाइ जे५०
पुनि कृत्तिकाज२०६मघाज२०७तीर्थ रु ब्राह्मण२०८अभिधान जो।
विद्याख्य२०९वेतसिकाख्य२१०सुंदरिकाख्य२११मुक्तिनिधान जो॥
वैणुक२१२महाश्रम२१३तीर्थसंगोद्भेद२१४बिमलासोक२१५जे।
अवकीर्ण२१६मार्कंडेयतीर्थ२१७रु धर्मप्रस्थ२१८सुग्रोक जे॥५१॥
अक्षयवटाख्य२१९रु गृध्रवट२२०पुनि तीर्थयोनिद्वार२२१जो।
अनरक२२२बिमोचन२२३शतसहस्त्रिक२२४पंचवट२२५अघहार जो॥
पुनि रैणुकाख्य२२६रु वारुणाख्य२२७रु स्वर्गद्वार२२८हु जानिये।
धारा२२९रु देवीतीर्थ२३०पावनतीर्थ२३१सुद्ध प्रमानिये॥५२॥
गंगान्हदाभिधकूप२३२जाबिच तीर्थकोटि त्रय३००००००बसैं।
पुनि इंद्रमार्ग२३३रु थाणुवट२३४जिहिं पाइ पाप सबै नसैं॥
कन्याश्रमाख्य२३५दधीचतीर्थ२३६रु सन्निहत्या२३७ज्यों कहैं।
प्रतिमास जाबिच तीर्थसंचय आनि आनि सबै रहैं॥५३॥
कारापथाख्य२३८रु धर्मतीर्थ२३९रु कोटिरूप२४०गिनौं जथा।
ज्येष्ठी२४१रु ईशानाध्युषित२४२कूपोदकाख्य२४३गये तथा॥
पुनि सप्तगंग२४४त्रिशूलखात२४५रु वैद्यतीर्थ२४६बिपाप जो।
तिम रथावर्त२४७रु अग्निधारा२४८सुवर्णाक्ष२४९दुराप जो॥५४॥
मणिनागतीर्थ२५०मतंगआश्रम२५१ब्रह्मतीर्थ२५२हु ज्यों कहे।

---

१ नाम२नहान ३ नाम ४ नाम ५ घर ६ पापनाशक७ इकट्ठे ८नाम ९ निष्पाप१० दुष्प्राप (कठिनाई से मिले ऐसा.)

उदपानतीर्थ२५३पुनःपुना२५४अरु जनककूप२५५तथा लहै ॥
माहेश्वरीधारा२५६बिशल्या२५७पुजगृह२५८पुनि जानिये ।
माहेश्वरास्पदतीर्थ२५९जाबिच तीर्थकोटि१००००००प्रमानिये ५५।
सब पापमोचनकूप२६०जाबिच सिंधु च्यारि४सदा रहैं ।
जातिस्मराख्य२६१रु बामनाख्य२६२रु देवपुष्करिणी२६३कहैं ॥
स्तनकुंड२६४भरताश्रम२६५रु निश्चीना२६६रु ताम्रारुण२६७जथा ।
कौशिकन्हदाख्य२६८रु पितामहसर[१]२६९वंशगुल्म२७०सुनौं तथा५६
उर्वशीतीर्थ२७१रु कालिका२७२गौरीशिखर२७३नामक गये ।
पुनि कुंभकर्णाश्रम२७४रु सोमाश्रम२७५हु हाजरि ह्वाँ भये ॥
नंदिनीकूप२७६जु न्हानसौं नरमेध[२]फलको हेतु है ।
कोकामुकाख्य[३]२७७जु न्हानसौं जनि पूर्व सुमिरन देतु हैं ॥ ५७॥
लोहित्यतीर्थ२७८बिराजतीर्थ२७९रु कालतीर्थ२८०बिसेस जो ।
संबर्तबापी२८१पुष्पकुल्या२८२देवन्हद२८३तीर्थेस जो ॥
बरदा२८४रु बैतरणीनदी२८५पुनि ब्रह्मसून२८६वखानिये ।
नंदिफल्गु२८७सुरपथ२८८सृंगबेरपुरी२८९रु आर्षभ२९०जानिये ५८
लग्वेडिका२९१मैत्रेयतीर्थ२९२रु तीर्थशकुनंदा२९३जथा ।
उद्दालकाभिधतीर्थ[४]२९४आयउ खेटतीर्थ२९५गिनौं तथा ॥
इत्यादि तीर्थ समस्त हेनृप अर्बुदाचलपैं गये ।
सुनिये बहोरि अरण्य१ऊखर२ग्राम३खेत्र४पुरी५ठये ॥ ५९ ॥

दोहा

नव९अरण्य ऊखर नव९रु,सप्त७पुरी त्रय३ग्राम ॥
गुप्त चतुर्दस१४खेत्रहू ,आये अध्वर[५] धाम ॥ ६० ॥

पज्झटिका

दंडकअरण्य१सैंधवअरण्य२,त्यौं जंबुमार्ग३तार्तीय[६]३गरण्य ॥

---

१ ब्रह्मसर २ जिस यज्ञ में मनुष्य होमा जावे उसको नरमेध कहते हैं ३ कामुक नामवाला (इसी माफिक बहुत पद संधियुक्त हैं जिनकी संधि काट कर अर्थ जान लेना चाहिये ४ उद्दालक नाम का ५ यज्ञ के ६ तीसरा

पुष्कर४चतुर्थ अटवी प्रमानि, पंचम सु उत्पलावर्त्त५जानि ॥ ६१ ॥
छठो अरराय नैमिष६अनूप,सप्तम कुरुजांगल७पुरायरूप ॥
अष्टम सु हैमवत८सुखद सोहि,अर्बुदअररराय९तँहँ नवम होहि ॥ ६२॥
सुनिये अब ऊखर नवन९नाम,राजाधिराज चहुवान राम ॥
रेणुक१पुनि सूकर२नामधेय,कासी३अरु काली४काल५श्रेय । ६२।
बट६ईश्वर७कालंजर८सु जानि,पुनि नवम महाकाल९हिं प्रमानि ॥
अब पुरिन नाम सुनिये उदार,हड्डनपति जें अघहरनहार ॥ ६४ ॥
गिनि प्रथम अयोध्या१पुनिय नाम, मथुरा२पुनि माया३मुक्तिधाम ॥
कासी४कांची५उज्जैनि६जानि,पुनि लेहु कुशस्थलिका७प्रमानि ६५
अब ग्राम तीन३सुनिये नरेस, सुमिरत जे दाहत अघबिसेस ॥
संभल१अरु सालग्राम२सुद्ध,जानहु तृतीय नंदी३प्रबुद्ध ॥ ६६ ॥
अब गुप्त चतुर्दश१४खेत्र नाम, संभरनरेस सुनिये ललाम ॥
कोका१बहोरि कुब्जा२बखानि,मृक३अरु चतुर्थ मणिकुंड४मानि ६७
बट५सूकर६सालग्राम७श्रेय, मथुरा८रु गया९महिमा अमेय ॥
निष्क्रमण१०रु लोहार्गल११निपाप,पुनि पोतस्वामी१२अघप्रताप ६८
पुरायद प्रभास१३गिनि भुव अलुप्त,बदरी१४ए चउदह खेत्र गुप्त ॥
इत्यादि तीर्थ जल थल प्रधान,
पहुँचे तिं खर्ब दस१०००००००००००सत्रंथान ॥ ६९ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ देवर्षि-तीर्थाद्यर्बुदागमनं पञ्चमो५मयूखः ॥ ५ ॥ आदितस्त्रिंशत्तमः ॥३०॥
प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

१वन२हे राजाधिराज चहुवाण रामसिंह(रामसिंह की पदवी,महारावराजा है परंतु यहां विशेष बडप्पन के लिये राजाधिराज का विशेषण दियाहै क्योंकि राजाओं के लिये संस्कृत में यह पद सबसे अधिक मानागया है)३नामवाला४पुरियों के नाम५हे चहुवाण वंश के राजा६अपार७पाप को तपानेवाला८ते९यज्ञ के स्थान में

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वार्ध के द्वितीयराशि में देवता ऋषि तीर्थ आदि का आबू पर आने का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से तीसवां मयूख हुआ ॥ ३० ॥

पज्झटिका ॥

अर्बुदगिरि आये जे असेस,भूभाग वहुरि सुनिये नरेस ॥
धरि देह सिंधु सप्तक७पधारि,क्रम जे द्वि२गुणोत्तर[1] मान धारि ॥ १ ॥
लवणोद[2] लक्ख१०००००जोजन बिसाल,पाताल निम्न[3] सुहि भूमिपाल
द्वि२गुनित पुनि इक्षुरसोद[4]२जानि,मद्योद[5]३बहुरि आज्योद[6]४मानि ।२।
दधिमंड[7] उदधि५छीरोद[8]६नाम,सुद्धोद[9]७गिनहु सप्तम ललाम[10] ॥
ए चाहुवान अभिसेक हेत,आये हरिसासित[11] हित उपेत[12] ॥ ३ ॥
पुनि खंड१द्वीप२सिखरी[13]३अनूप,इतरेहु[14] अरराय ४बहु बिबिध रूप ॥
औषध अनेक लेलै ति भूरि[15],आये तिन्ह नामहु कहत सूरि[16] ॥ ४ ॥
गिनि प्रथम इलावृत१खंड नाम,जिंहिं मध्य मेरु निर्जरन[17] धाम ॥
चतुरस्र[18] रूप सब दिस समान[19],चोतीस सहस्र३४०००जोजन प्रमान ।५।
तासौं उदीचि[20] त्रय३खंड बाम,रम्यक१रु हिरणमय२कुरु३त्रिनाम ॥
चोरे सब जोजन नव हजार९०००,आसिंधु[21] पूर्व पश्चिम बिथार ॥ ६ ॥
आवाच्य[22] इलावृतसौं त्रि३मान,हरिवर्ष१किंपुरुष२भरत३थान ॥
चोरे सब जोजन नव हजार९०००आसिंधु पूर्व पश्चिम बिथार ॥ ७ ॥
इक प्राच्य[23] इलावृतसौं प्रमेय[24],भद्राश्व१तास कहि नामधेय[25] ॥
चोतीस सहँस३४०००जोजन प्रलंब[26],
कटि एकतीस सहँसन३१०००कदंब[27] ॥ ८ ॥
प्रातीच्य[28] इलावृतसौं बिसाल,इक खंड नाम तस केतुमाल१ ॥
चोतीस सहँस३४०००जोजन प्रलंब,
कटि एकतीस सहँसन३१०००कदंब ॥ ९ ॥
ए जंबुद्वीप नव९खंड एवं[29],इनके अभिमानी नव९हि देव ॥

१एक एक से दुगुना प्रमाण धारण करनेवाले २ क्षारसमुद्र ३ गहरा ४ सांठे (गन्ने) के रस का ५ मद्य का ६ घृत का ७ दधि का ८ दूधका ९ शुद्ध जल का १०सुंदर ११आज्ञा से १२ सहित १३पर्वत १४और भी १५ बहुत १६ पंडित १७देवताओं का १८चोकोन १९बराबर २०उत्तरदिशा २१समुद्रपर्यंत २२दक्षिणदिशा २३पूर्वदिशा २४जिससे प्रमाणक्रिया जावे उसको प्रमेय कहतेहैं अथवा प्रसिद्ध प्रमाणवाला २५नाम २६ लम्बा २७ समूह २८ पश्चिमादिशा २९ इसप्रकार

चंडासिराजं ग्रभिसेक हेत,ग्राये प्रसन्न ग्रौषध उपेतं ॥ १० ॥
द्वीपन ग्राभिमानी बेव सत्त७,जिन्ह द्वीप कहत तँहँ तेहु पत्त[3] ॥
जंबू१पलक्ख२सम्मलि३हुजानि,कुस४कुंच५साग६पुक्खर७बखानि
　　बिच जंबु१लक्ख१०००००जोजन बिथार,
　　खट६इतर अनुक्रम द्वि२गुनकार ॥
तिनमैं हु खंड सैंतीस३७ग्राहि,ग्राये ति देव सासनँ निबाहि ॥ १२ ॥
सैलहु समस्त जे पुराय धाम,ग्राये तिन्ह सुनिये नृपति राम ॥
हेमाद्रि१प्रथम छितिनाभि रूप,मंदर२रु मेरु मंदर३ग्रनूप ॥ १३ ॥
सिखरी सुपार्श्व४ग्ररु कुमुद५जानि,भूधरं[11] कुरंग६तिम कुरर७मानि
[12]सृंगी कुसुंभ८वैकंक९नाम,पुनि गिनि त्रिकूट१०सिसिग११हु सुधाम
　　रु पतंग१२रुचक१३पुनि निषध१४ग्राइ,
　　रु सिती१५रु बास१६रु कपिल१७सुभाइ ॥
　　संख१८रु वैदूर्यक१९रुचिरराग,
　　जारुधि२०पुनि हंस२१रु ऋषभ२२नाग२३ ॥ १५ ॥
कालंजर२४नारद२५जठर२६नाम, त्यौं देवकूट२७पवन२८हु ललामं[13]
　　गिरि पारियात्र२९कैलास३०ज्यौंहिं,
　　करबीर३१त्रिशृंग३२रु मकर३३त्यौंहिं ॥ १६ ॥
　　पुनि दूजो२निषध३४रु हेमकूट३५,
　　रु हिमालय३६०है जँहँ पुराय लूट ॥
　　गिरि नील३७श्वेत३८ग्ररु शृंगवान३९,
　　त्यौं गंधमादन४०रु माल्यवान४१ ॥ १७ ॥
　　इत मलय ४२ रु मंगलप्रस्थ ४३ नाम,
　　वेंकट४४ त्रिकूट४५ कूटक४६ सुधाम ॥
　　मैनाक४७ऋषभ४८ कोल्लक४९ नगेसं[14],

चहुवाण२साहित३पहुंचे४दूसरे५क्रम से दुगुना करना६है७आज्ञा८पर्वत भी९ भूमि का नाभी रूप १०पर्वत ११ पर्वत १२ पर्वत १३ सुन्दर १४ पर्वतोंका ईश

पुनि सह्य५० देवगिरि५१ रम्य देस ॥ १८ ॥
श्रीशैल५२ ऋष्यमूक५३ हु सुढार,
त्यौं बिंध्य५४ महेंद्र५५ रु बारिधार५६ ॥
ऋक्षगिरि५७ चित्रकूट५८हु सुथान,
नग रत्नशृंग५९पुनि शुक्तिमान६० ॥ १९ ॥
द्रोण६१ रु त्यौं रैवत६२ ककुभ६३ नील६४,
गौरमुख६५ कामगिरि६६ इंद्रकील६७ ॥
ए जंबुदीपगिरिमुख्य आय, खट१अपर दीप गिरि सुनहु राय ॥ २० ॥
मणिकूट६८ बज्रकूट६९ हु नगेन[२],
नग ज्योतिष्मान७० रु इंद्रसेन७१ ॥
रु सुपर्ण७२ हिरण्यष्ठीव७३ जानि,
गिरि मेघमाल७४ अरु स्वरस७५ मानि ॥ २१ ॥
सतशृंग७६कुंद७७ अरु बामदेव७८,
पुनि कुमुद७९पुष्पवर्षाख्य८०एव ॥
पब्बय सहस्रश्रुति८१ चक्र८२ आइ,
चउशृंग८३ सिलोच्चय[३] त्यौं सुभाइ ॥ २२ ॥
गिरि कपिल८४ चित्रकूट८५ हु ललाम,
पुनि देवानीक८६ रु द्रविण८७ नाम ॥
त्यौं अद्रि ऊर्ध्वगोमा८८सुथान,
भोजन८९उपबर्हण९० बर्द्धमान९१ ॥ २३ ॥
गिरि शुक्र ९२ नंदन ९३ रु नंद ९४ जत्थ,
त्यौं अद्रि सर्वतोभद्र ९५ तत्थ ॥
पुनि ईशान ९६ रु उरुशृंग ९७ जानि,
बलभद्र ९८ रु सतकेसर९९बखानि ॥ २४ ॥
रु सहस्रश्रोत १०० रु देवपाल १०१,
पुनि अद्रि महानस १०२ अतिबिसाल ॥

---

१ दूसरे २ पर्वतों का राजा ३ पर्वत

गिरि बहुरि मानसोत्तर १०३ नगेसं,
रथचक्र धरत जिंहिं सिर दिनेसं ॥ २५ ॥
पुनि लोकालोक१०४हु सानुमंतं जिंहिं रविप्रकाससीमा कहंत ॥
इत्यादि अद्रि औषध उपेत, आहूत आइ अभिसेक हेत ॥ २६ ॥

दोहा

प्लक्षादिक जे द्वीप षट६,तिन बिच सरिता आहि ॥
करहु श्रवन तिनकौंहु नृप, बरनौं क्रम निरबाहि ॥ २७ ॥

षटूपदी

आंगिरसी१अरुणा२रु सुप्रभाता३नदि जानहु ।
ऋतंभरा४नृम्णा५तथाहि सावित्री६मानहु ॥
सत्यंभरा७धुनी रु कुहू८रजनी९राका१०जिम ।
सरस्वती११अनुमति१२रु सिनीवाली१३नंदा१४तिम ॥
रसकुल्या१५मधुकुल्या१६नदी श्रुतविंदा१७रु घृतच्युता१८॥
पुनि सरित मित्रविंदा१९गिनहु पुंगयद संबरसंजुता ॥२८॥

सौराष्ट्रीदोहा

नदी देवगर्भा२०रु, सुनहु मंत्रमाला२१तथा ॥
तर्थिवती२२अभया२३रु,अमृतौघा२४ पुनि आर्यका२५ ॥ २९ ॥

दोहा॥

रूपवती२६रु पवित्रवति२७,शुक्का२८अनघा२९आइ ॥
आयुर्दा३०अपराजिता३१,पंचपदी३२भल भाइ ॥३०॥
सरित सहस्रश्रुति३३तथा,उभयस्पृष्टि३४अनूप ॥
निजधृति३५ए खट६द्वीपनदि, आईं आत्तसुरूप ॥३१॥
उपद्वीप जे अष्ट८तँहँ, तेहु सुनहु नृप राम ॥
अरिकुल डारन भय अतुल, कबिकुल पूरनकाम ॥३२॥
स्वर्णप्रस्थ१आवर्त्तन२रु, चंद्रशुक्क३अभिधान ॥

१ पर्वतराज२ सूर्य ३ शिखरवाला ४ पर्वत ५ सहित ६ बुलाये हुए ७ नदियां ८ है ९ नदी १० पुण्य देनेवाले ११ जल सहित १२ रूप धारण करके १३नाम

रमणक४मंदर हरिण५पुनि, सिंहल६सुनहु सुजान ॥ ३३ ॥
पांचजन्य७लंका८तिमहि, उपद्वीप ए अष्ट८ ॥
निज अभिधानी देवबपु, आये लखि सुर कष्ट ॥३४॥
भरतखंडमैं नव९रहित, इतंरहु पुराय अरण्य ॥
सौगंधिक१चंपक२बिपिन, धर्मारण्य३हु गराय ॥३५॥
तुंगारण्य४पवित्र५पुनि, दशारण्य६अभिधान ॥
द्वैत७रु ब्रह्मारण्य८मुख, औषध विविध निधान ॥३६॥
इत्यादिक भूमाग जे, सीमा भिन्न प्रकास ॥
निज अभिमानी रूप सब, पहुँचे अध्वर पास ॥३७॥
अर्णव१नंद२कुल्ल्यां३प्रमुख, सेचन छित जल लाइ ॥
द्वीप१खंड२बन३अद्रि४ए, औषध लै सब आइ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशावर्णव१नद२नदी३द्वीप४खण्ड५वन६पर्वता ७ऽऽधिष्ठात्राऽऽगमनं षष्ठो६मयूखः ॥६॥ आदित एकत्रिंशः ॥ ३१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पदी ॥

मुनि बसिष्ठ इन सबन आसु मिलि उचित बास दिय ।
मधुर बानि सनमानि सहित आदर स्वागत किय ॥
हरि१हर२अज३ढिग जाइ कहिय अतिनम्र जोरि कर ।
देहु नाथ आदेस रचन चिंतित अब अध्वर ॥

१नामवाले२देवताओं का३दूसरे४पवित्र ५ वन ६ वन ७गणना योग्य ८नाम ९ आदि १० आश्रय ११ इत्यादिक भूमि के भागों के अभिमानीदेवता (यह मेरा है ऐसा अभिमान रखने वाले) १२यज्ञ के १३समुद्र १४बड़ी नदियों को नद कहते है१५छोटी नदियें अथवा नहरें१६आदि१७सींचने के अर्थ १८पर्वत

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में समुद्र, बड़ी नदियां, छोटी नदियां, द्वीप, खण्ड, वन, पर्वत, आदि के अधिष्ठाता (अभिमानी देवता) ओं के आगम का छठा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से इकतीस मयूख हुए ॥ ३१ ॥

१९शीघ्र२०आये का आदर२१विष्णु२२शिव २३ ब्रह्मा के २४ आज्ञा २५ यज्ञ

मुनि१ देव२ तीर्थ३ बन४ खंड५ गिरि६ द्वीप७ सिंधु८ हाजारि सकल ।
अवसर भलोहि न बिलंब अब सोधि बिचारहिं सत्रथल ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हरि१ हर२ अज३ सुनि दिय हुकम, अबहि करहु आरंभ ॥
प्रकटहिं खलनासक नृपति. थिर जातैं भुवथंभ ॥ २ ॥
मुनिराजन तब तत्थ[1] मिलि, पाइ सहाय गरीयं[2] ॥
वह्नि[3]सुमंत्रित कुंडबिच, आन्यौं आहवनीय[4] ॥ ३ ॥
सब उपहार[5] समीप धरि, भनि मंत्रन बिधि भव्य ॥
लखि निदेस डारन लगे, हुतभुक[6] अंतर हव्य[7] ॥ ४ ॥

षट्पदी

ब्रह्मा१हुव दाल्भ्य१साकटायन२होता२हुव ।
उद्गाता३मुनि आर्ष्टिसेन३अध्वर्यु४चणाक[8]सुव४ ॥
स्वाहा सह आहूतिकुंड अंतरछालि छोरिय ।
ज्वलन[9] हव्य[10]संजोग हेति[11] उट्ठिय जनु[12] होरिय ॥
तातैं सुतेज प्रकट्यो पुरुष पुंडरीक१निजगोत्र२धर ।
साखा तदीय[13] माध्यंदिनी२आमनाय[14] यजु३त्रि३प्रबर४ ॥ ५ ॥
नामधेयं[15] प्रतिहार१ताहि अप्पिय बिरिंचि[16] तब ।
अरु मंडिय अभिसेक सलिल औषध मिलाइ सब ॥
गंधर्बन किय गान नच्च अच्छरि गन सज्जिय ।
सुमन[17] बुट्ठि हुव सुखद देवदुंदुभि बलि[18] बज्जिय ॥
बुल्ल बसिष्ट बिरुदाइ[19] तिहिं तू सुरकारज सिद्धिहित ।
प्रतिहारराज मारहु प्रबल बानपुत्र संगर बिहित ॥ ६ ॥
सुनि नरेस प्रतिहार लरन हंकिय बिसेस बल ।

१ यज्ञ का थल २ बड़ी ३ अग्नि ४ होम के लिये संचय किया हुआ ५ सामग्री ६ अग्नि में ७ होमने योग्य पदार्थ ८ पुत्र ९ अग्नि १० होमने योग्य पदार्थ के ११ ज्वाला १२ मानों होली की झाल होवे ऐसी १३ उसकी १४ वेद १५ नाम १६ ब्रह्मा ने १७ पुष्पों की वर्षा १८ फिर १९ स्तुति करके

उततैं मख आरब्ध सुनत आयेहि असुर खल ॥
मिलत खिज्जि भमीस[1] सीस दुष्टन मुक्किय[2] सर ।
कंकपत्र[3] तस कहि उनहु छाइय धर अंबर ॥
ब्रहमंड हल्लि हुव जग बिकल उभय२ओर अमरख फुरिय ।
अमरन[4] सहाय१अरु सल्ल[5]२ इम अनल[6]१बान२सुत अंकुरिय[7] ॥ ७ ॥
बिसिखन[8] पर प्रति बिसिख त्रिसिख छुट्टत तिसिखन[9] पर ।
संगिन[10] उप्पर संगि कुंत[11] पर कुंत भयंकर ॥
गदा गदा रुख चलत खग्ग बुल्लत झरि खग्गन ।
मुक्तादिकै[12] आयुधन मचत इम वार समग्गन[13] ॥
छकछकत घाय[14] सोनित[15] छलत चलत राह रबिरथ थकिय ।
प्रतिहारराज इतउत प्रबल धूम्रध्वज जुज्झन[16] धकिय[17] ॥८॥
अवरहु असुर अनेक घोर प्रहरन[18] झुकि झारत ।
ताडहत्थ१ह्रदतुंद२शीतिलोचन३किलकारत ॥
सूचीलोमक४सूककर्ण५मर्दक६करालमुख७।
करभग्रीव८कंकालकवल९रावन१०रावनरुखं[19] ॥
बाराहदह्व११उल्मुकवमी१२पब्बयनस१३रनरस पगे
प्रतिहारराज स्यंदन[20] उपरि लैलै अंग[21] डारन लगे ॥ ९ ॥

दोहा

बच्छ१४रु धेनुक१५तीन३बक१८,केसी१९अघ२०किर्मीर२१ ॥
नरक२२पलंबर२३हिडंब२४मुर२५,कालजिह्व२६कांडीर२७ ॥ १० ॥
कीलजिह्व२८सलिक२९सकट३०,पीठ३१अलंबुस३२व्योम३३ ॥
अलायुध३४रु संबर३५असुर,तंडे[22] रन मिलि तोमं[23] ॥ ११ ॥

१भूपति के २ छोडे ३ बाण ४ देवताओं के सहायक५देवताओं के साल ६ अग्नि के पुत्र और बाणासुर के पुत्र ७ उदय हुए (खड़े हुए) ८ बाणों पर ९ त्रिशूल१०बरछी ११भाला१२मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त चार प्रकार के१३सबमें१४घाव १५रक्त १६युद्ध करने को१७चला १८शस्त्रों को १९ रावण की भांति२० रथ पर २१ पर्वत २२ नाचने लगे, अथवा गर्जना करने लगे २३ समूह

षट्पदी ॥

प्रतिहारहु बहु प्रदर[1] मारि अद्रिन[2] चूरन करि ।
जंत्रकेतु१उरजाय मल्ल बेधिय अमरख भरि ॥
सूचीलोमक२सीस[3]कांड पंचक५हनि कढिय ।
उल्मुकछर्दक ३ इमहिं मारि मर्दक४[4]द्रुत दहिय ॥
रावन६विहाल किय तोरि रथ धम्रध्वज हय८[5]सूत७हनि ॥
प्रतिहार बिंदु बुट्ठत विसिख[6] पहुँच्यो पाँउस[7] मुदिर[8]बनि॥ १२ ॥
जबहि छोरि रथ जंभ गयो आकास पिहित[9] गति ।
उल्का[10]१उपल[11]२ अलात[12]३असनि[13]४पब्बय[14]५बरस्यो अति॥
धूम्रध्वज इत अनखि[15] सूल[16] पटक्यो नृप छत्तिय[17] ।
इहिँ छत[18] होत अचेत सूत रोके रथ सत्तिय[19] ॥
प्रतिमग्ग[20] मोरि चिंकुर[21] चल्यो प्रान आक्खि प्रतिहारके ॥
द्विज१सुर२सुपिक्खि दुर्मन भये किय असुरन जयकारके ॥१३॥

दोहा

सुरन[22] सु[23] रन प्रतिहत[24] समुझि, परबल[25] परबल[26] जानि ॥
सबन[27] सबन[28] गिरि तजि भजन, मनन[29] मनन[30] लिय मानि ॥ १४ ॥
श्रीहरि[31] तब सासन दयो समय देश अनुसार ॥
सोचहु नन मुनि१संक्र[33]२सुर३,प्रतिहत लखि प्रतिहार ॥१५॥
अनल[34] कुंड सन[35] उप्पजहिँ,खत्रिय तीन३बहोरि ॥

---

१ बाण २ पर्वतों को ३ बाण ४ शीघ्र ५ स्वार्थी को ६ बाण रूपी बुन्दें बनाता हुआ ७ वर्षा काल का ८ मेघ ९ छिप कर १० आकाश में अग्नि की रेखा सी खिचजावे उसको अथवा विना धूम की झाल को उल्का कहते हैं ११ पत्थर १२ अंगारे १३ विजली १४ पर्वत १५ क्रोध करके १६ बरछी १७ छाती पर १८ घाव से १९ उलटे मार्ग (पीछा) २० चपल २१ देवताओं ने २३ उस (प्रतिहार) को युद्ध से गिरा हुआ २४ जानके २५ शत्रुओं की सेना को २६ बलवान समझ २७ सबने २८ वन सहित पर्वत को छोड भागना २९ मनों में ३० विचार लिया ॥ १४ ॥ ३१ विष्णु ने ३२ आज्ञा ३३ इन्द्र ३४ अग्नि ३५ से.

ऐसोही भावी इहाँ, समुझि देहु भ्रम छोरि ॥ १६ ॥

षट्पदी

जिते प्रकृति[1] परिणामें[2] तिते भावी[3] तुम जानहु ।
ते त्यौंही सब होत कहुँ न परिवृत्ति[4] प्रमानहु ॥
कबहु कबहु प्रतिकूल[5] मैं[6] रु१ संकर२दुव२होवत ।
तदपि सुं उचित न गिनत सीम१संधा२को खोवत ॥
ज्यों भाखि सत्यवादी अनृत[11] धरत लाज तिहिं काज ध्रुवं[12] ॥
यौं कछु मिटाई त्रि३गुनन[13] अमल[14] हम धनीहु[15] पछितात हुव ॥१७॥

दोहा

तातैं नहिं भावी[16] टरत, कैसेहू कहुँ काल ॥
हमहु समर्थहु होत हैं, तस इंगित[17] प्रतिपाल[18] ॥ १८ ॥
कछु न सोच सुर मुनि करहु, आगि[19] धरहु आहूति ॥
प्रगटहिं खत्रिय तीन३पुनि, बिचरण आहव[20]ऊति[21] ॥ १९ ॥
इम अच्युत[22] आदेस[23] सुनि, सुरन[24] लहिय बिस्वास ॥
कल्प[25] गदहु[26] हुतिहारको, नासत्यन[27] किय नास ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ प्रतिहार प्रकटनाऽऽजिकरणदैत्यसूचीलोमो१ल्मुकवमि२वधान्तरप्रतिहारमूर्छितीभवनं सप्तमो७मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो द्वात्रिंश ॥३२॥

सतोगुण रजोगुण तमोगुण की साम्यावस्था (माया) के फल को तुम लोग अवश्य होनेवाले जानो वे वैसे ही होते हैं उलट फेर नहीं होता, कभी कभी विरुद्ध में (विष्णु) और महादेव दोनों होते हैं तोभी वो (वह कार्य) उचित नहीं जानते और अपनी सीमा व प्रतिज्ञा को खोकर जिसप्रकार सत्य बोलनेवाला झूठे बोल कर निश्चय लज्जा पाता है इसी प्रकार उस प्रकृति के अधिकार को (जो जगत् का कारण है) मेटकर हम ईश्वर हैं तोभी पछताते हैं १६ होनहार १७ चेष्टा के १८ पालनेवाले १९ अग्नि २० युद्ध में २१ क्रीडा करनेवाले २२ विष्णु की २३ आज्ञा २४ देवताओं ने २५ समर्थ २६ रोग को २७ अश्विनीकुमारों ने

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में प्रतिहार का प्रकट होकर युद्धकरना और दैत्य सूचीलोम, उल्मुकवमि को मारे पीछे प्रतिहार के

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

दोहा

हरिकोलहि निर्भय हुकम, स्रुक[1] सहकारि उपहार[2] ॥
मंडिय पुनि होमन मुनिन, श्रुति[3] मंत्रन अनुसार ॥ १ ॥
मुद्गल १ मुनि ब्रह्मा १ भये, होता २धृति२मुनिराज ॥
जन्हु३भये अध्वर्य्यु३जहँ,सामग४भारद्वाज४ ॥ २ ॥
लखि बिलंब कछु द्रुहिन[4] खिजि,आज्य[5] चलुक[6] भरि आग्गि॥
डारत पुनि प्रकटिय पुरुष, ज्वलन आँचि सह जग्गि॥ ३ ॥

षट्पदी

होत अपर[8] आहूति पुरुष दूजो२प्रकटिय पुनि ।
द्रुहिन ताहि अभिधान[9] दये सब तेहु लेहु सुनि ॥
चालुक१ चौलुक२ तिम चुलुक्य३ चौलुक्य४ जथाविधि ।
अरु चालुक्य५ इतीक पाय संज्ञा[10] हुव सन्निधि[11] ॥
यजुवेद१ साख माध्यंदिनिय२ भारद्वाज३ सगोत्र यह ॥
गुन३ प्रवर४ अंसे[12] उपबीतधर[13] कढि ठढ्ढो असुरन असह ॥४॥

दोहा

चलुक१ चुलुक२ दुव२ भेद करि, भये इते इहिं नाम ॥
अभिसेचन याकोहु अंज[14], क्रिय बिधिजुत जयकाम ॥ ५॥

षट्पदी

दै बिरिंचि[15] आदेस[16] यहहु पिल्ल्यो[17] असुरन पर ।
तबहि हंकि चालुक्य बढ्यो सज्जित स्तांग[18] बर॥
संगर मंडिय जाइ बंदि बिरुदन छकें[19] धारत ।
नद्दत मृगपति[20] नाद चंड[21] चापहिं[22] टंकारत ॥

मूर्छित होने का सातवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से बत्तीस मयूख हुए ३२

१स्रुवा (होमने का पात्र विशेष२सामग्री३वेद के४ब्रह्मा ने५घृत का६चुल्लू(चुलवा) ७ज्वाल के८ दूसरी९नाम१०नाम११वाक्यार्थ के ज्ञान के हेतु को सन्निधि कहते हैं अथवा समीप१२कंधे पर१३जनेऊ१४ब्रह्मा ने ही१५ ब्रह्मा ने १६ आज्ञा१७भेजा १८रथ१९ उत्साह २० सिंह का २१ भयंकर २२ धनुष को

प्रेतन डरात रचि संख रँव[1] रारि रसिक बिथुरात मँह[2] ॥
गरदाइ[3] असुर चालुक लये दै स्यंदन[4] कावाँ[5] दुसह ॥ ६ ॥
ह्रद पिचंड १सिर हंकि तीर चालुक्य तकि दिय ।
तुरग[6] भेदि रथ तोरि फोरि हग[7] इक्क१ काणा[8] किय ॥
सूककरन२तँहँ सांगि[9] आनि डारिय चालुक उर ।
घुम्मि नृपति तिहिं घाय अनंखि[10] मारिय वह आसुर ॥
किर्मीर३केतु कट्टि रु कतल कोलजिह्व४यह हेति[11]करि ।
मुर५के विडारिपंच५हि मुकुट लिय नृपमर्दक[12] ६प्रान हरि ॥७॥
धूम्रकेतु धँकि[13] तबहि समुह पिल्ले हिडंब१बक२।
स्वामि हुकम लहि उभय२बढे डारत जग ओदँक[14] ॥
बीस२०मारि बक बिसिख[15] तोरि रथकेतु[16] तुरंगन ।
चालुक अंग निखंग[17] कियउ करि रिक्त[18] निखंगन ॥
उर इक्क१हिडंब मारिय परिघ इहिं आघात अचेत अति ॥
बपु विकल घुम्मि सोनित[19] बमंत[20]पस्यो उलटि चालुक नृपति ॥८॥

दोहा

दोरयो बक चालुक परत, गहि असि[21] कट्टन मत्थ ॥
तबही सँकति[22] उठाइ तिहिं, आन्यों मखथल[23] जत्थ ॥ ९ ॥
हरि[24] निदेस विस्वास गहि, सामग्री लहि छिप्र[25] ॥
पूरन लग्गे हव्य पुनि, वन्हिअवट[26] बिच बिप्र ॥१०॥
भागुरि१मुनि ब्रह्मा२भये, होता१एकत२जत्थ ॥
उद्गाता३सु बसिष्ठ३अरु, त्रित४अध्वर्यक४तत्थ ॥ ११ ॥

षट्पदी

---

१ शब्द (शंख के शब्द से प्रेत डरते हैं यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है २ उत्सव ३घेरकर ४ रथ का ५ गोलकुंडा ६ घोड़े ७ नेत्र ८ काणा ९ बरछी १० क्रोध करके ११शस्त्र १२मर्दक नाम दैत्य के १३क्रोध करके १४भय १५बाण १६ ध्वजा १७भाथा (चालुक के शरीर को भाथा के समान करके) १८रीते १९रक्त २०उगलता हुआ २१ खड्ग २२ शक्ति ने २३यज्ञ के स्थान में २४विष्णु के २५ शीघ्र २६ अग्नि कुंड में

अनलकुंड आहूति नवहि तीजो३पुनि लग्गत ।
प्रकट्यो पुरुष तृतीय३ज्वलन[1] कीलाँ[2] बिच जग्गत ॥
तिहिँ प्रमार १ परमार २ नाम अप्पिय चतुरानन[3] ।
अक्खिय दितिजन[4] मारि भुम्मि भुग्गहु प्रबीरपन ॥
साखा त्वदीय[5] माध्यंदिनी१ गोत्र बसिष्ट३ रु त्रि३प्रवर३ ।
यजु४श्रुति[6] इतीक बिधिसौं सुनत यहहु चल्यो अभिसिक्त[7]नर ।१२।
असुरन सन परमार जाइ मंडिय रन दुर्द्धर[8] ।
करि छादित आकास पिहुल[9] मुक्कत सर पंजर ॥
करभग्रीव१ सिरकट्टि कलह[10] कंकालकवल२ हनि ।
कोलदंष्ट्र३करि कुणप[11] अग्ग पहुँच्यो छक उप्फनि ॥
बक४ नरक५ बाजिधेनुक ६ धनुख केसी७रथचक चूर[12]करि ।
किर्मीर ८सूत[13] संहरि लियउ धूम्रध्वज निज अग्गधरि ॥ १३ ॥
बानतनय तब सकति पंच५ घंटाजुत मुक्किय ।
चंपला[14]सम वह चलिय सुलक्खि भीरुन[15] जिय मुक्किय ॥
सप्ति[16]१ केतु[17]२रथ३सूत४जाय सत्वर[18] जिहिँ कट्टिय ।
ठहे बिरथहु परमारदैत्य बानन बहु दट्टिय[19] ॥
छेदिय प्रलंब१० याको धनुख लै असि खेटक[20] तब लरिय ।
तिन कटत गदाकर चंड गहि कलह भूप संकुल[21] करिय ॥ १४ ।
वह कट्टत लिय परिघ परिघ कट्टत लिय तोमर[22] ।
तोमर कट्टत संगि संगि कट्टत लिय मुद्गर ॥
इम प्रहरन[23] जे जे उठाइ सम्मुह डग[24] दिन्नौं ।
ते ते सब तिन कट्टि नृपहिँ फग्गुन[25] तरु किन्नौं ॥

---

१ अग्नि की २ ज्वाला में ३ ब्रह्मा ने ४ दैत्यों को ५ तुमारी ६ वेद ७ अभिसेक कियाहुआ ८ दुस्तर ९ बहुत १० युद्ध में ११ मुरदा १२ चूर्ण १३ स्वार्थी को १४ बिजली १५ कायरों के १६ घोडे १७ ध्वजा १८ शीघ्र १९ दबाये २० ढाल २१ अवकाश रहित २२ भाला २३ शस्त्र २४ पैंड २५ फागुन में वृक्ष पत्रझड़ होकर नंगे होजाते हैं ऐसा.

दिय मरम तकि [1]आसुग दुसह [2]मधुपलास छबि [3]काय तब ।
[4]मखबाट आइ अक्खिय हमहिं [5]सुर आयुध पुनि देहु सब ॥ १५ ॥
तब [6]अच्युत दिय हुकम [7]वीरँबपु [8]सल्य बिहावहु ।
होइ [9]अनामय लरन [10]सुरँन [11]प्रहरँन पुनि पावहु ॥
इक्क१[12]सेसँ आहूति करहु द्विजबर वह पूरन ।
मिटत कबहु कैसैंहु उदित [13]भाँवी [14]अंकूरँन ॥
इम यह मुकुंद दृढ करि [15]नियँति [16]पुरुषँकार खंडन करिय ।
आहूति [17]अपँराबिधि सुनि मुनिन निश्चित मन मंगल धरिय ।१६।

दोहा

करे अनामय [18]अश्विनँन, नृप चालुक१परमार २ ॥
दुहुन२पुनिहु आयुध दये, [19]अमँरन जय उपकार ॥ १७ ॥
आहुति चोथी४दैन इत, बहु गहि मुनिन बिवेक ॥
निकट रक्खि [20]बिधिकौं [21]निखिल, किय [22]बिधि उचित अनेक ॥१८॥

इतिश्री वंशस्भाकरे महाचम्पूके पूर्वायणो द्वितीय२राशौ चालुक्य१प्रमार२प्रकटनयुद्धकरणदैत्यशूककर्ण१मर्द्दक१करभग्रीव१कङ्कालकवल२वराहदंष्ट्रा३ऽऽदिवधचालुक्य२मूर्च्छनप्रमार३निश्शस्त्रीभवनमष्टमो८मयूखः ॥ ८ ॥ आदितस्त्रयस्त्रिंशः ॥ ३३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ सुदन्तम् ॥

परमाररराजेऽपि परास्तपौरुषे मुनयः समाश्लाघ्य जनार्दनोदितम् ॥

१ बाण २ वैशाख महीने में ढाक के वृक्ष केसू के फूलने से लाल होजाते हैं जैसे ३ शरीर ४ यज्ञमार्ग में ५ हे देवताओ ६ विष्णु ने ७ शरीर के ८ शाल निकालो ९ नैरोग्य १० देवताओं से ११ शस्त्र १२ बाकी १३ होनहार का १४ उदय १५ भाग्य को १६ पुरुषार्थ को १७ दूजी १८ अश्विनीकुमारों ने १९ देवताओं के २० ब्रह्मा को २१ सब २२ रीति ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीयराशि में चालुक्य, प्रमार का प्रकट होकर युद्ध करना और दैत्य सूककर्ण, मर्दक, करभग्रीव, कंकालकवल, वराहदंष्ट्र आदि का मारना, चालुक्य का मूर्छित होना, परमार का बिना शस्त्र होने का अठवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ आदि से तैंतीस मयूख हुए ॥ ३३ ॥

परिपूज्य हेरम्बमनन्तपौरुषं जुहुवुः पुनर्हव्यमुषर्बुधाऽवटे ॥ १ ॥
द्रुहिणस्तदोचे शृणुत द्विजेश्वरा प्रतिहारभूपाद्यभिभूतिकारणम् ॥
नभवेद्द्विश्वाहोरपि मृत्युरावयोरिति मां पुराऽभीष्टमुभावयाचताम् ।२।
अत एव सर्वैरिह संस्तुताऽच्युतैः कथनीयमाविर्भवतु ज्वलच्छिखात्
असुराटवीधुक्षितधूमकेतनः क्षितिधर्मगोप्ता पुरुषश्चतुर्भुजः ॥ ३ ॥
इतरश्च सौम्याहिपदार्थसञ्चयो हुत एष तस्मादपि सौम्यभूमिपाः ॥
अभवन्नतोऽप्युग्रपदार्थसम्पदाहवनीययाऽऽसन्नतमं महत्फलम् ।४।
इति बोधितास्ते परमेष्ठिनर्षयोऽप्यनुमोदिता भाविविदा गदाभृता ॥
शशिशेखरेणाऽपि तथा नियोजिता जुहुवुर्यथा स्यात्सपुमांश्चतुर्भुजः ।
मुनिरास तत्र द्रुहिणत्वभाग्भृगु१श्च्यवन२श्च होतृत्वमुपाददे स्वयम् ।
अथ वत्स३आसीत्स्वरसामगायनो यमदग्निजो४ध्वर्य्युरभून्महाऽध्वरे
हवनीयमुग्रं परिणामदुस्सहं ज्वलनेऽक्षिपन्नाहवनीयसंज्ञिते ॥

परमार राजा के भी पुरुषार्थ रहित होजाने पर सब मुनियों ने विष्णु के कहने की प्रशंसा करके अनन्त पराक्रम वाले गणेश का पूजन कर फिर अग्निकुण्ड में होमने की वस्तुओं का हवन किया ॥ १ ॥ तब ब्रह्मा ने कहा कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो प्रतिहार (पड़िहार) आदि राजाओं के हार जाने का कारण सुनो कि दो हाथवाले से भी हम दोनों की मृत्यु न हो यह वरदान मुझसे पहले उन दोनों दैत्यों ने मांगा था ॥ २ ॥ इसी कारण यहां पर विष्णु की स्तुति करनेवाले तुम सब के कहने योग्य दैत्यरूपी वनको जलानेवाला अग्नि के समान, पृथ्वी में धर्म्म की रक्षा करनेवाला, चार भुजोंवाला पुरुष अग्नि से प्रकट होवे ॥ ३ ॥ और भी दूसरा कारण यह है कि यह जो हवन द्रव्य का समूह होमागया है वो सौम्यभाव का था इस कारण से भी सौम्यस्वभाव वाले भूप हुए. अब इससे भी अधिक फल देनेवाले उग्रपदार्थ आहवनीय नामक अग्नि में होमेजांय तो शीघ्रही बडाभारीफल होवे ॥ ४ ॥ यह बात ब्रह्मा ने ऋषियों से कही, और भविष्यत् को जानने वाले विष्णु ने उस को पुष्टकी, महादेव से भी उसी प्रकार प्रेरणा कियेहुए ऋषियोंने जिस प्रकार चार भुजोंवाला पुरुष उत्पन्न होवै तिस प्रकार हवन किया ॥ ५ ॥ उस महायज्ञ में भृगु मुनि तो ब्रह्मा का भाग लेनेवाला हुआ, और च्यवन ऋषि ने स्वयं होतापन को प्राप्त किया, वत्स ऋषि सामवेदपाठी हुआ और जमदग्नि ऋषि अध्वर्यु हुआ ॥ ६ ॥ जिसका फल नहीं सहाजाय ऐसा होम करने का पदार्थ आहवनीय नामक अग्नि में होमा तब लम्बे चार हाथोंवाला

उदभून्महो लम्बचतुःशयं ततश्चहुवाण एवैतदुदीरितं बुधैः ॥ ७ ॥
स्तनयित्नुगम्भीरदुरूहकोटिगीर्दितिजागआतामूमुखालिकच्छविः॥
कमनीयकोटीरककुण्डलाङ्गदः प्रकटीबभूवाऽध्वरकुण्डकूर्दनः ।८।
समिदुत्कनेत्रो वरवार्हबीजितः शितशक्तिसाधेयसुपीनदोर्ल्लतः ।९।
शरसङ्गसङ्गी शिवसौख्यमुद्वहन्नुदतिष्ठदग्नेरिव वार्हिवाहनः ॥ ९ ॥
अरणेर्यथा कीलकरालहव्यवाडुदयादगादेनमहो महो महत ॥
गिरिशाम्बकात्काक्ष इवात्मयोनिधग्ज्वलनादथोदैत्सचतुर्थ४पूरुषः

शशिवन्हिपञ्चात्रि१३३५मितेऽब्दसञ्चये
प्यखिले खिले द्वापरभाविभोक्तरि ॥

अरि१शक्ति२निस्त्रिंश३गदा४भिरायुधैरभिशोभितोराजत दोश्चतुष्टयः
तरणावुदग्गोलपथि स्थिते तदा सुरभावृतौ माधवपक्ष उज्ज्वले ॥
परमेष्ठिभे४जीवदिने५च शोभने५युतिसत्तमे प्रादुरभूच्चतुर्भजः ।१२।

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

तेज रूप उठा जिसको पण्डितों ने यह चहुवाण ही है ऐसा कहा ॥ ७ ॥ मेघ के समान गम्भीर और अतर्क्य कोटिवाला है शब्द जिस का, दैत्यों के अपराध से तांबे के समान रक्त है मुख और ललाट जिसका, सुन्दर है मुकुट कुण्डल और भुजबन्ध जिसके ऐसा यज्ञकुण्ड में क्रीड़ा करनेवाला प्रकट हुआ ॥ ८ ॥ संग्राम में उत्क (ऊंचे) हैं नेत्र जिसके, श्रेष्ठ मोरछलों से होता है पवन जिस पर, तीक्ष्ण शक्ति के साधन योग्य है भुजलता जिसकी, बाणों के समूह का साथी, महादेव के सुख को धारण करनेवाला स्वामिकार्तिक के समान देवताओं के सुख को धारण करताहुआ अग्नि से उठा ॥ ६ ॥ जैसे अरणी (जिन दो लकडियों को परस्पर रगड़ने से होमाग्नि उत्पन्न की जाती है उन दो लकड़ियों का नाम अरणी है) से भयङ्कर ज्वालावाली अग्नि, उदयाचल से बडा भारी सूर्य का तेजपुञ्ज, महादेव के नेत्र से कामदेव को जलानेवाला कटाक्ष, इसप्रकार अग्नि से वह चौथा पुरुष निकला ॥ १० ॥ सम्पूर्ण द्वापर युग में से तीन हजार पाँच सौ इगतीस ३५३१ वर्ष भोगने के बाकी रहने पर चक्र, शक्ति, खड्ग और गदा इन चार आयुधों से शोभित है चारों हाथ जिसके ऐसा सुशोभित हुआ॥ ११ ॥ जिस समय में सूर्य उत्तरायण व सन्तऋतु वैशाख शुक्लपक्ष, रोहिणी नक्षत्र, गुरु वार और शोभनयोग था उस समय में पूज्यसंग्राम के अर्थ चार भुजोंवाला प्रकट हुआ।१२। वृद्धि आदि समय की

दोहा

आहुति चोथी४ लगत इम, चोथो४ नृप चहुवान ॥
उपज्यो वह पंचांग अब, सब नृप सुनहु सयान ॥ १३ ॥
एक१ महाजुगके बरस,ख ख ख ख रद आम्नाय४३२००००।
जे भूमुनि७१ निजसंधि जुत, इक१ मनुभोग कहाय ॥ १४ ॥
ताके हायन ख ख ख नभ, हग हय छ गगन तीन३०६७२००००।
सौरमान सन मानिये, पहु बुंदीस प्रबीन ॥ १५ ॥
छ६ मनु गये या कल्पके, यातैं छ६ गुने ए३०६७२०००० हु ।
ख ख नभ ख रद ख बेद धृति ,
१८४०३२००००प्रमित अब्द गिनिलेहु ॥ १६ ॥
ख ख नभ बसु हग अद्रि भ१७२८०००, इक१ मनु संधिज बर्ष ॥
छ६ गुन तेहु ख ख ख बसु खट,
गुन दस१०३६८००० गिनहु सहर्ष ॥ १७ ॥
छ६ मनु अब्द वे१८४०३२०००० इन१०३६८००० सहित,
होवत नृप चहुवान ॥
ख ख नभ बसु बसु रस गगन,
सर अहि भूमि१८५०६८८०००० प्रमान ॥ १८ ॥
सप्तम७मनुकी संधिके,अब्द१७२८०००जुरेइन१८५०६८८००००माँहिं
तब ख ख नभ रस भूमि जिन,

गणना ग्रंथ प्रारंभ समय के अहर्गण में प्रथमराशि में कहआये हैं इसकारण से उस गणना को छोडकर यहां पर आवश्यकीय गणित ही लिखते हैं कि एक महाजुग के ४३२००००वर्ष होते हैं ऐसे इकहत्तर महाजुगों का एक मनु होता है ॥ १३ ॥ १४ ॥ उस एक मनु के हे प्रवीण बुन्दीपति ३०६७२०००० सौर वर्ष हुए मानो ॥१५॥ इस कल्प के छ मनु गये इसकारण से इन वर्षों को छै गुने किये तो १८४०३२०००० वर्ष हुये जिनका प्रमाण गिनलो ॥ १६ ॥ एक मनु की सन्धि के १७२८००० वर्ष होते हैं इनको छै गुने किये तो १०३६८००० वर्ष हर्ष सहित गिनो ॥ १७ ॥ छै मनुओं के वर्ष इन सन्धियों के वर्षों में सामिल किये तो हे चहुवान१८५०६८८०००० इस प्रमाण से हुये ॥ १८ ॥ सातवें मनु की

रस धृति१८५२४१६००० मित ‌ुव आँहिं ॥ १९ ॥
भ२७ मित महाजुग कढिगये, सप्तम७ मनुके जत्थ ॥
तिन्ह हायन ख ख ख नभ चउ,
तर्क अष्टि ससि११६६४००००० तत्थ ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

ए११६६४०००० वे१८५२४१६००० जुरत इकट्ठे सब हुव,
ख ख ख छ पंच नवति रस नव भुव१९६९०५६००० ॥
अबको जबहि महाजुग लग्गो,
तब इहिं१९६९०५६००० मान अब्दगन भग्गो ॥ २१ ॥
इक१ मनुसंधि १७२८०००तुल्य निजबच्छर,
कृतजुग इक१ बित्यो तदनंतर ॥
ख ख नभ रस नव रबि१२९६०००मित हायन,
पुनि त्रेतालगि किन्न पलायन ॥ २२ ॥
इन दोउन२अब अब्द इकट्ठ,नभ ख ख जिन नभ गुन३०२४०००मित नट्ठे
तीजो३ चरन गयो पुनि द्वापर,
नव छ बेद ख छ बसु ८६०४६९मित बच्छर॥ २३ ॥
द्वापर हायन भोग्य रहे जँहँ,भू गुन बान अग्गि३५३१सम्मित तँहँ॥
नव छ बेद चालीस अंक दुव,
मुनि अतिधृति१९७२९४०४६९ मित सब गताब्द हुव ॥ २४ ॥
अब इनतैं चहुवान जन्म दिन, आनत श्रम पिक्खहु हह्वन इन ॥

सन्धि के१७२८०००वर्ष इनमें जोड़े तो १८५२४१६००० वर्ष हुए ॥१९॥ इस सातवें मनु के सत्ताईस महाजुग निकलगये जिनके ११६६४०००० वर्ष हुए॥२०॥ इन सत्ताईस महाजुगों के और पहिले के छै मनुओं के और सन्धियों के सब वर्ष मिलकर१९६९०५६०००हुए सो इस प्रमाण से वर्षों का समूह गया॥२१॥ एक मनु की सन्धि के बराबर हैं अपने वर्ष जिसके ऐसा सत्ययुग उसके पीछे बीता फिर १२९६०००वर्ष त्रेता के गये ॥ २२ ॥ अब इन दोनों के इकट्ठे वर्ष ३०२४००० गये, फिर द्वापर के तीसरे चरण के ८६०४६९वर्ष गये ॥ २३ ॥ और द्वापर के ३५३१ वर्ष भोगने बाकी रहे उस समय १९७२९४०४६९ कुल वर्ष बीते ॥ २४ ॥ अब इन वर्षों से चहुवान के जन्म दिन को लाते हैं जिस

१९७२९४०४६९ सब लिखितकल्पगत हायन,
इस१२प्रहत करे गुणनायन ॥ २५ ॥
सु लोचन रस पंच अठ्ठ दुव,
मुनि तर्क बिकृति२३६७५२८५६२८ संमित हुव ॥
फ गत मास चैत्र सित मुखतैं,
तिन बिच जोरयो पुनि सुखतैं ॥ २६ ॥
दृग छ सर अठ दुव सर मुनि,
बेकृति२३६७५२८५६२९ए गतकल्प मास सुनि ॥
३०गुनित ए२३६७५२८५६२९यातमास करि,
तिथि दुव२ति दई इन बिचधरि॥२७॥
ुनि अठ्ठ बसु अरि गो अहि सर,
स हय७१०२५८५६८८७२मित यह गत दिन भर ॥
व२ठोर मंडि पटुतासन,इकठाँ गुन्यौं कल्प अधिमासन ।२८।

दोहा

गुनित सुर अंक तिथि१५९३३००००,इते कल्प अधिमास ॥
गतदिन चय७१०२५८५६८८७२तिनकरि गुनित,
अधिप सुनहु जिम आस ॥ २९ ॥

षट्पदी

ख ख ख ख नभ रस अचल बान हय गुन बसु गिरि मुनि ।
हय नव चउ सर अष्टि,

का परिश्रम हे हाडा क्षत्रियों के सूर्य देखो. ये ऊपर लिखे हुए कल्प के गत वर्ष हे गुणों के घर रामसिंह बारह से गुणाये ॥ २५ ॥ सो२३६७५२८५६२८हु ए इन में चैत सुदि एकम से गया हुआ एक मास सुख पूर्वक फिर जोडा।२६। तो २३६७५२८५६२९ कल्प के सौरगतमास हुए सो सुनो, इन गये हुए महीनों को तीस से गुणाकर इनमें गई हुई दो तिथि जोडदी ॥ २७ ॥ तो ७१०२५८६८८७२ गये हुए दिन हुए, इनको दो जगह लिखकर चतुराई के साथ एक जगह कल्प क अधिक मास से गुनाया ॥२८॥ एक कल्प में १५९३३००००० अधिक मास होते हैं सो हे स्वामी गये हुए दिनों के समूह को इन अधिक मासों से गुनाये जैसे हुए सो सुनो ॥२९॥ इनके गुणन फल की संख्या ११३१६५४-

राम सिव११३१६५४६७७७८३७५७६०००००मित सु भयउ पुनि॥
अर्बुद गुनित द्विपंच,विषय तिथि१५५५२००००००००ए सब रवि दिन
इनकरि यह बडरासि,भज्यो कबि गनित पंच५इन ॥
तँहँ लब्ध मुनि ख बसु गज बिषय, छ हयनेत्रगिरि७२७६५८८०७एठये
चंडासि जनम पहिलैं गिनहु.अधिकमास७२७६५८८०७इतनैं गये।
तीस३०गुनित करि इनहिं,किये मासनके बासर।
ते हुव दस दुव बेद तर्क पुनि नव हग धृति कर२१८२९७६४२१० ॥
रबिगत दिन७१०२५८५६८८७२ए भिन्न,
लखे तिन बिच२१८२९७६४२१०इन्ह जोरत ।
द्विबसुनीससुरअहिगजकृतिगुनहय७३२०८८३३३०८२ हुव सम्मत
सुहि चंद्र अहर्गन जानिये७३२०८८३३३०८२,
यह बहोरि दुव२ठाँ लिखित ।
इक१ठाँ सु जानि कल्पावमन,तिन करि गुनि किन्नौं बिहित ॥३१॥
अयुत गुनित रस पंच,नेत्र बसु व्योम विषयकर२५०८२५५०००० ।
इते अवम दिन होत, सकल बिधिके इक१बासर ॥
ससिदिन गन ७३२०८८३३३०८२ यह भिन्न,
लिखित तिहिं अवम दिनन गुनि ।
जिते बढाये अंक, तिते सब लेहु भूप सुनि ॥
ससि अतिधृति नव सर बेद नव धृति आकृति चउ तर्क दुव ॥

९७७७८३७५७६०००००हुई, इनको कल्प के सूर्य के १५५५२०००००००० दिनों से ऊपर की बडी राशि में हे राजा पांचों गणित को (व्यक्त, अव्यक्त, रेखा, ग्रह, गोल) जाननेवाले कवि (ग्रन्थकर्ता) ने भाग दिया तो ७२७६५८८०७अधिक मास गये ॥३०॥ इन अधिक मासों को तीस से गुणा करके महीनों के दिन किये सो२१८२९७६४२१०हुए सो पहिले आये हुए रवि दिनों७१०२५८५६८८७२ में जोड़ दिये तो७३२०८८३३३०८२ चान्द्र दिन हुए जिनको दो जगह लिख कर एक जगह कल्प की टूटी हुई तिथियों से उचित रीति से गुणा किया सो जानो ॥ ३१ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में २५०८२५५०००० टूटी तिथिगें होती हैं सो चन्द्रमा के गत दिनों को जुदे जुदे दो जगह लिख कर टूटी हुई तिथियों से गुणाया वहां जितने अङ्क बढाये (गुणन फल आये) १८३६२६४२२१८९४५-

छत्तीस बसु कु ए लक्ख १०००००गुन,
१८३६२६४२२१८९४५९१९१०००००,
अवम गुनित विधु द्युगन हुव ॥ ३२ ॥
प्रयुत गुनित नव अंक अंक दुव गगन अष्टि१६०२९९९००००००मित
बिधुदिनबिधिदिनमाँहिं होत सुनिये जस सोभित१६०२९९९००००००
इनकरि१८३६२६४२२१८९४५९१९१००००० ए अवमघ्न भजे तँहँ
एह लयो फल॥
अग्गि नाग ख ख अठ चंद्रसरसर चउ सितिगल ११४५५१८००८३॥
चंडासि पुब्ब ए दिन अवम बिधु दिन गन ७३२०८८३३३०८२किय
११४५५१८००८३इन रहित ।
तब अंक अंक नव नेत्र तिथि सुर सर श्रुति हय
७२०६३३१५२९९९हुव सहित ॥ ३३ ॥

दोहा

यह ७२०६३३१५२९९९सावन दिनगन भयो,जबहि कल्पको यात॥
तब चहुवान धराधिपति, भो अर्बुद गिरि ख्यात ॥ ३४ ॥
दिनगन ७२०६३३१५२९९९यह पुनि सप्त७करि,कट्योकढ्ढनबार
च्यारि४ रहे खिल याहितैं, गुरुदिन भो जयकार ॥ ३५ ॥
सर बसु रद्द नव पंच हय,चउ नव दुव नभ चंद १०२९४७५९३२८५।
भागलब्ध इतनैं भये, सुहि गत बारन कंद ॥ ३६ ॥

६१९१०००००सो हे राजन् सुनो ॥ ३२ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में चन्द्रमा के १६०२९९९००००००दिन होते हैं सो हे यश से शोभा पानेवाले रामसिंह सुनो, पहिले टूटी हुई तिथियों से गुणाये हुए चन्द्रमा के गतदिनों में इनका भाग दिया तो चहुवान के जन्म दिन से पहिले ये ११४५५१८००८३ टूटी हुई तिथियें हुई सो चन्द्रमा के गत दिनों में से इनको निकाल दिये तो ७२०६३३१५२९९९ बाकी रहे ॥ ३३ ॥ उस समय में सावन दिनों का यह समूह गया तब आबू पर्वत के ऊपर भूपति चहुवान प्रसिद्ध हुआ ॥ ३४ ॥ अब वार निकालने के लिये इस अहर्गण को सात से काटा (भाग दिया) तो बाकी ४ रहे जिससे बुधवार गत और वर्तमान बृहस्पति वार आया ॥ ३५ ॥ सात का भाग देने से१०२९४७५९३२८५लब्धि हुए सो गयेहुए वारों का समूह

रविभुक्ति ठहै कल्पबिच कोटिगुनित रद च्यारि४३२००००००००॥
इनकरि ७२०६३३१५२९९९यह दिनगनगुन्यौं
सो अब लेहु निहारि ॥ ३७ ॥

॥ षट्पदी ॥

कोटिगुनित बसु तर्क पंच सायक नव कृति दुव ॥
विषय अग्गि भू राम ईस गुन ३११३१३५२२०९५५६८००००००० यहै गुनित हुव ॥
अयुत गुनित सर बेद अष्टि नव हय गिरि तिथि
१५७७९१६४५००००मित ॥
कुदिन कल्पके होत कियउ तिनकरि ३११३१३५२२०९५५६८०
०००००० यह भाजित ॥
फल तास भयो भगनादि रबि नव रस चउ चालीस नव ॥
कर अद्रि अंक भू १९७२९४०४६९मित गये,
भगन तत्थ चंडासि भव ॥ ३८ ॥

॥ दोहा

अयुत गुनित सर तान रस, बसु नव बेद ४९८६४९५००००इतेक ॥
सेस रहे तिनकौं गुनैं, बारह१२ तैं सबिबेक ॥ ३९ ॥
वाही१५७७९१६४५००००भाजकतैं भजे, फल आयो नभ०तत्थ ॥

हुआ ॥ ३६ ॥ एक कल्प में सूर्य के भगण [बारह राशियों का भोग] ४३२०००००० होते हैं इनसे दिनों के समूह को गुणाये सो अब देखो ॥ ३७॥ इसका गुणन फल ३११३१३५२२०९५५६८००००००० हुआ और एक कल्प में पृथ्वी के १५७७९१६४५०००० दिन होते हैं जिनका भाग दिया तो फल हुआ सो १९७२९४०४६९ चहुवान के जन्म से पहिले सूर्य के भगणादि (भगण, राशि, अंश, कला, विकला) हुए ॥३८॥ ऊपर भगण बताकर अब राशि आदि बताते हैं, भूमिके दिनों का भाग देकर प्रथम फल तो भगण लाये और बाकी ४९८६४९५००००रहे जिनको विचार पूर्वक बारह से गुणा किये ॥ ३९ ॥ उन्हीं भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल शून्य आया जिससे

मेष१ रासि यातैं मिल्यो,
सुहि५९८३७९४००००००खिल रहिय समत्थ ॥ ४० ॥
तीस३० गुनित ताकौं कियउ, तब हुव सुनहु समष्टि ॥
प्रयुत गुनित दुव बसु अनल,
कु पवन नव अत्यष्टि१७९५१३८२०००००० ॥ ४१ ॥
ए१५७७९१६४५००००इहिं भाजकतैं भजे, लब्ध लहे तँहँ रुद्र११॥
ए११ ही जानहु अंस यँहँ, सुगणक गणित समुद्र ॥ ४२ ॥
खिल सर दस चालीस चउ,
नव सर५९४४०१०५ए अयुतघ्न५९४४०१०५०००० ॥
सट्ठि६०गुनित३५६६४०६३००००००ए पुनि भजे,
भाजक१५७७९१६४५००००रक्खिउ पघ्न ॥ ४३ ॥
आकृति२२ आये लब्ध तब,ते२२ रबिलिप्ता जानि ॥
लक्खगुनित सिवनवति नव,बेद अंक९४९९०११०००००खिलमानि४४
सट्ठि६०गुनित पुनि९४९९०११००००००ए किये,तब हुव गनित प्रपंच
प्रयुत गुनित खटरस गगन,चउ नव नव रस पंच५६९९४०६६००००००
वा१५७७९१६४५००००ही भाजकतैं भज्यो,
पुनि५६९९४०६६ ००००००यह अंककलाप ॥
आयो तब पैंतीस३५फल,सु३५रबिबिलिप्ता माप॥४६॥
कथित१९७२९४०४६९भगननभ०रासिसिव११,अंसकलाबाईस२२

मेष राशि हुई बाकी ५९८३७९४००००००रहे ॥४०॥ इनको तीस से गुणा किये तो १७९५१३८२००००००सब हुए सो सुनो ॥ ४१ ॥ इनमें उन्हीं भूमि के दिनों का भाग दिया तो११ लब्धि लिये सोही गणित रूपी समुद्र की श्रेष्ठ गणित करनेवाले अंश जानो ॥ ४२ ॥ बाकी५९४४०१०५००००रहे जिनको साठ से गुणाये तो ३५६६४०६३००००००हुए जिनमें फिर भूमि के दिनों को समीप रखकर भाग दिया ॥ ४३ ॥ तब २२ लब्धि हुए सो सूर्य की कलायें जानो बाकी ९४९९०११०००००रहे सो जानो ॥ ४४ ॥ इनको साठ से गुणा किया तो गणित की यह रचना हुई कि ५६९९४०६६००००००यह गुणन फल हुआ जिन अंकों के समूह को फिर वही भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल ३५ आया सो सूर्य की विकला हुई॥४५॥४६॥ऊपर कहेहुए १९७२९४०४६९

अरु बिकला पैंतीस३५।०।११।२२।३५यह,इन मध्यम अवनीस ॥४७॥
कलिका बावन५२बिकलिका,सत्तावन५७इहिं मान ॥
कढयो अब्द संस्कार सो, भो ऊन मध्यम भान ॥ ४८॥
तब आकास ० रु दस १० रु मुन-
तीस २९ तथा अठतीस ३८।०।१०।२९।३८॥
भानु अब्द संस्कृत भयो, रास्यादिक पुहवीस ॥ ४९ ॥
भास्करको मंदोच्च अब, जानहु भास्कर उक्त ॥
दुव २ सत्रह १७ छप्पन ५६ यहै २।१७।५६,
रास्यादिक क्रम जुक्त ॥ ५० ॥
काढयो२।१७।५६या मंदोच्चतैं०।१०।२६।३८।, यह संस्कृत दिवसेंद ॥
दुव २ हय ७ उत्कृति २६ आकृती२२,
आयो तब २।७।२६।२२ यह केंद्र ॥ ५१ ॥
गगनसिव११०रु भूवेद।४१।अरु, बन्हिबेद४३इहिं मान११०।४१।४३
ज्यका भई याकेंद्रकी, अब फल सुनहु सुजान ॥ ५२ ॥
द्वि२रु ख०रु पैंतालिस४५यह२।०।४५,इहाँ मंदफल आइ ॥
केंद्र अजादिक यौं दयो, यह२।०।४५अंसादि मिलाइ ॥५३॥
स्फुटरबि हुव रास्यादि तब, नभ०रु बारह१२रु तीस३०॥
रु विकृति२३यह०।१२।३०।२३चंडासिके उद्भवदिन दिनईस ॥५४॥

भगण और हे भूपति! राशि० अंश ११ कला २२ विकला ३५ यह मध्यम सूर्य हुआ ॥ ४७ ॥ अब्दबीजसंस्कार कला ५२ विकला ५७ हुआ सो मध्यम सूर्य में से निकाला सो अब्दबीज दिया हुआ मध्यम सूर्य हुआ, तब हे भूपति राशि० अंश १० कला २९ विकला ३८ हुए ॥ ४८॥ ४९ ॥ अब भास्कराचार्य का कहाहुआ सूर्य का मंदोच्च राशि२अंश १७ कला ५६ युक्त जानो॥ ५०॥ इस मंदोच्च से यह संस्कार किया हुआ सूर्य निकाला तो राशि २ अंश ७ कला २६ विकला २२ मन्दकेंद्र आया ॥ ५१ ॥ इस मन्दकेंद्र की अंगुल ११० व्यंगुल ४१ प्रतिव्यंगुल ४३ ज्या हुई जिसका हे सुजान रामसिंह फल सुनो ॥ ५२ ॥ अब यहां पर मन्दफल की अंश २कला ० विकला४५ आई सो मेषादिक छः राशि में केंद्र है इससे इनमें जोडदिये ॥५३॥ तब चहुवान के जन्म के दिन का स्पष्टसूर्य राशि ० अंश १२ कला ३० विकला २३ हुआ यह जन्म

अठ्ठावन ५८ अरु अठ८ यह ५८ । ८, तहँ कलादि रवि चाल ॥
प्रातहि के सब ग्रह गिनहु, दुपहरके न नृपाल ॥ ५५ ॥
लक्खगुनितसुरपंचमुनि, हयसर५७७५३३०००००इहिँपरिमान॥
कल्प माँहिं सासिके भगन, होवत नृप चहुवान ॥ ५६ ॥

षट्पदी

तिनकरि ७२०६३३१५२९९९यह दिन निकर
गुन्यौं तब लक्ख गुनित हय ।
रस सकरि मुनि अंक गगन पंवक गिरि रस द्वय ॥
बेद अंक धृति अष्टि बेद ४१६१८९४२६७५०९७१४६७०००००
सब अंक इते हुव ।
१५७७९१६४५००००कुदिनन करि दिय भाग
तबहि रजनीस लह्यो ध्रुव ॥
सर नवति बेद बसु अहि बिसिख,
हयगुन उत्क्रांति२६३७५८८४९०५ ए भगन ॥
इक । १ । रासि अंस तेरह । १३ । कला,
चोतीस । ३४ । रु बिकला कु । १ । धन ॥ ५७ ॥

दोहा

ससधर २६३७५८८४९०५ । १ । १३ । ३४। १ यह मध्यम भयो,
अब सु बीज संस्कार ॥
एक१रु बसुदुव२८रुतिथि१५यह१।२८।१५,घटयोलवादिसुढार।५८।

का सूर्य है ॥ ५४ ॥ यहां सूर्य की गति कला ५८ विकला ८ सो सब प्रभात के ही गिनो हे राजा ! ये दुपहर के नहीं हैं।। ५५ ॥ हे चहुवान राजा रामसिंह ! एक कल्प में चन्द्रमा के५७७५३३००००० भगण होते हैं ॥ ५६ ॥ उनसे यह दिनों का समूह गुणाया तो४१६१८९४२६७५०९७१४६७००००० हुए जिनको भूमि के दिनों का भाग दिया तो २६३७५८८४९०५ चन्द्रमा के ये भगण निश्चय हुए और राशि १ अंश १३ कला ३४ विकला १ मिलाई ॥ ५७ ॥ यह मध्यमचंद्रमा हुआ. अब अब्दबीजसंस्कार अंश१ कला २८ विकला १५ हुए सो मध्यमचंद्रमा में श्रेष्ठ रीति से घटाये ॥ ५८ ॥ तब राशि १ अंश १२

तब इक१ रासि रु रबि१२लव रु, सर५कला रु रस च्यारि४६॥
बिकला१।१२।५।४६मित यह अब्दफल, संस्कृत चंद्र निहारि ॥५९॥
गज सर गज सर गगन धृति, पन्नग बेद४८१८०५८५८प्रमान ॥
चंद्र तुंगके कल्प बिच, होत भगन चहुवान ॥ ६० ॥

पट्पदी ॥

तिन करि७२०६३३१५८९१९यह दिननिकर गनित तब हुव दुव सक्करि
अष्ट अष्टि आकृति भुजंग मुनि चउ कृत गुन अरि ॥
द्विसर बेद अत्यष्टि, पंच गुन३५१७४५२६३४४७८२२१६८१४२
यह गन अंकन।
कुदिन१५७७९१६४५०००० भक्त किय तत्थ फल सु सुनिये धरनीधन
रबिअंकअष्टिनवदस्रकर, नयन२२२९१६९१२भगनहय७रासिजँहँ ॥
बाईस२२अंस चालीस४० मित कला इंद्र१४बिकलाहु तँहँ ॥ ६१ ॥

दोहा

मध्यम७।२२।४०।१४यह ससिउच्च हुव, तास बीजसंस्कार ॥
लिप्तादिक पैंतीस३५धृति१८, ऋन हुव उच्च मझार ॥६२॥
तब सप्त७रु बाईस२२पुनि, बेद४रु छप्पन५६मान ॥
हायन संस्कृत उच्च७।२२।४।५६ हुव, अब फुटचंद्र बिधान ॥ ६३ ॥
काढ्यो७।२२।४।५६इहिं निज उच्चतैं, हायन संस्कृत१।१२।५।४६मंद्र ॥
तबरास्यादिछ६अंक९गुन-सठि५९दस१०यह६।९।५९।१०ससिकेंद्र।

कला ५ विकला४६ अब्दबीज से संस्कार दिया हुआ चंद्रमा हुआ सो देखो ॥ ५९ ॥ हे चहुवाण! एक कल्प में चंद्रोच्च के ४८१८०५८५८गिनती से भगण होते हैं ॥ ६० ॥ इन से यह दिनों का समूह गुणाया तो ३५१७४५२६३४४७८२२१६८१४२ हुए जिनको भूमि के दिनों का भाग दिया तो हे धरणीधन (भूमि ही है धन जिसके) भगण २२२९१६९१२राशि ७ अंश २२ कला ४० विकला १४ चंद्रोच्च हुआ ॥ ६१ ॥ यह मध्यमचंद्रोच्च हुआ जिसमें अब्दबीज संस्कार कला ३५ विकला१८ निकालदिया ॥६२॥ तब राशि७अंश२२कला४ विकला५६ अब्दबीजसंस्कार दियाहुआ चंद्रोच्च हुआ. अब चंद्रमा को स्पष्टक रने की रीति कहते हैं ॥६३॥ इस अब्दबीजसंस्कार दियेहुए चंद्रोच्च से अब्द बीज दियाहुआ चंद्रमा निकाला तब राशि६ अंश९कला५९विकला १० चंद्र

नभ० बावन५२बावन५२यहै०।५२। ५२,इहाँ मंदफल आइ॥
केंद्र तुलादिक जानि यह०।५२।५२,
दियससि१।१२।५। ४६ लवन घटाइ ॥ ६५ ॥
तब मही१ रु ईस११ रु रबि१२ रु,चोवन५४ इहिं परिमान॥
चाहुवानजनि दिन लगत, फुट१।११।१२।५४ यह अमृतनिधान॥६६॥
काढ्योरबि०।१२।३०।२४ससि१।११।१२।५४तैंरहिय,तबखिलयहरजनीस
गगन० रु अट्ठाईस २८ अरु,बियालीस४२ इकतीस३१॥६७॥
अर्क रहित ० । २८ । ४२ । ३१ । यह ससि भयो,
सो लवादि २८ । ४२ । ३१ । यह जानि ॥
ए२८लवबारह १२ तैं भजे, तँहँ दुव २ लब्ध प्रमानि ॥६८॥
यातैं गततिथि२ दोजि तब, तीज३ रही यँहँ पेस ॥
बेद४रु लोचन कृत४२रु भू, गुन३१यह४।४२।३१भाजित सेस।६९।
सोहि तीज३को गत गिनहु, तिहिं भाजक१२सन खोइ ॥
मुनि७सत्रह१७गुनतीस२९यह७।१७।२९,भोग्य लह्यो दृढ होइ।७०।
अब४।४२।३१सु तीज३को गत कह्यो, ताकी बिकला कीन ॥
तब भू सर नव अष्टि१६९५१ए, उपजी गनित अधीन ॥ ७१ ॥
फुट ससि गति८५८।५०तैं अर्कगति५८।८,दोनी अब सु निकारि ॥
तब ख ख अष्ट८००रु नयन कृत ४२,खिल कलिकादि विचारि

मा का मंदकेंद्र हुआ ॥६४॥ यहां मंदफल अंश ०कला५२ विकला ५५ आया सो तुलादि जानकर इसमें से निकाल दिया ॥६५॥ तब चहुवाण का जन्म दिन लगने पर राशि१ अंश११कला१२विकला५४यह स्पष्ट चंद्रमा हुआ ॥६६॥ अब स्पष्ट चंद्रमा से स्पष्ट सूर्य को निकाला तौ बाकी चंद्रमा राशि ० अंश२८ कला४२विकला३१रहा ॥६७॥ सूर्य रहित यह चंद्रमा हुआ उसके अंशों मे बारह का भाग दिया तौ लब्धि२आये ॥६८॥ इस कारण से गत तिथि दोज हुई और आगे तीज रही जिसमें अंश४कला४२विकला३१ बारह का भाग देने से बाकी रही ॥६९॥ ये अंशादिक तीज के गयेहुए गिनो. उनको भाजक में बारह से बाकी निकाला तो शेष अंश७कला१७विकला२९हुए सो निश्चय करके यह भोग्य रहा ॥७०॥ अब तीज के गयेहुए अंशादिकों की विकला की तौ गणित के आधार से१६९५१हुई ॥७१॥ स्पष्ट चंद्रमा की गति से सूर्य की स्पष्ट गति

याकी पुनि बिकला करी, कर कृत नभ बसु बेद ४८०४२ ॥
पूर्व कथित १६६५१ किय भाज्य अरु, गति अंतरमय ४८०४२ छेद।७३
गगन मिल्यो यहँ भागफल, यातैं दृढ गुरु४ बार ॥
सट्ठि ६० गुनित खिल १६९५१ किय ख सर,
ख मुनि कु ख सासि १०१७०६० सुढार ॥ ७४ ॥
या ४८०४२ ही हरसन भजत फल, प्रकृति २१ घटी गत आइ ॥
खिल बसु सत्रह अट्ठ ८१७८ यह, पुनि दिय सट्ठि ६० गुनाइ ।७५।
जब ख बसु रस ख तान ४९०६८० हुव, इहिं ४८०४२ हरसन दिय भाग
गत पल दस १० तब फल लह्यो, रक्खि गनित अनुराग ॥ ७६ ॥
अब जु ७।१७।२९ तीज ३ को भोग्य है, ताकी विकला कीन ॥
तब नव संकृति तर्क हुव २६२४९, यह हुव गनित अधीन ॥ ७७ ॥
गति अंतरमय हर ४८०४२ यहहि, ताकरि लीनौं भाग ॥
फल नभ ० यातैं बार सु ४ हि, तिथि ३ वृद्धिन प्रिय त्याग ॥ ७८ ॥
सट्ठि ६० गुनित खिल २६२४९ तब ख कृत, नव चउ मुनि तिथि १५७४९४० एह
स्व हर ४८०४२ भज्यो तब फल रद ३२ सु भोग्य घटी मित लेह ॥ ७९ ॥

५८।८ निकाल दी तौ बाकी कला ८०० विकला ४२ जानो ॥ ७२ ॥ इसकी फिर विकला करी तौ ४८०४२ हुए सो पहिले कहीहुई विकला तौ भाज्य (जिस में भाग दियाजावे) हुआ और गति के अंतरमयी विकलायें भाजक (जिससे भाग दियाजावे) हुई ॥ ७३ ॥ इसकारण से गुरु वार के दिन निश्चै शून्य फल आया, बाकी के अंकों को सुंदर रीति से ६० से गुणाया तौ १०१७०६० हुए ॥ ७४ ॥ इसी भाजक से भाग दिया तो गत घटी २१ आई बाकी ८१७८ रहे जिनको फिर ६० से गुणाये ॥ ७५ ॥ तब ४९०६८० हुए. फिर उसी भाजक का भाग दिया तो पल १० गत आये सो गणित में प्रीति रख कर फल रखलिया अर्थात् बुधवार में इक्कीस घड़ी दस पल तीज सूर्योदय समय में गई अब जो तीज का भोग्य अंश ७ कला १७ विकला २९ इन सब की विकला की तौ २६२४९ गणित के आधार से हुए ॥ ७७ ॥ इस में उसी गति के अंतर का भाग दिया तो फल ० आया इसकारण से वही बृहस्पति वार आया, क्योंकि तिथि की वृद्धि नहीं हुई इसकारण से वार भी दूसरा नहीं पलटा ॥ ७८ ॥ बाकी के अंकों को ६० से गुणाया तो १५७४९४० हुए जिनमें उसी भाजक का भाग दिया तो फल ३२ भोग्य घड़ी मिली ॥ ७९ ॥

खिल रस नव सर मुनि गुन३७५९६सु,सष्टि६०गुनित पुनि जानि
तब नभरस मुनि सर बिखय,आकृति२२५५७६०यह हुव आनि ॥८०॥
वा४८०४२ही भाजकतैं भाजिय,तँहँ फल सैंतालीस४७ ॥
तेहि तीज३के भोग्यफल, उहाँ गिनहु अवनीस ॥ ८१ ॥
भुक्त२१।१०भोग्य३२।४७घटिका रु पल, जोरि किये एकत्थ।
तँहँ सब तिथि त्रेपन५३घटी, सत्तावन५७पल सत्थ ॥ ८२ ॥

हरिगीतम् ॥

फुटचंद्र१।११।१२।५४की कलिका करी कर सप्तसंकृति२४७२तेभई,
तिनके तरैं बिकला अमिश्रित भिन्न चोवन५४ हू ठई ।
खखअष्ट८००तैं कलिका भजी त्रय३रूप लब्धि तहाँ गिनी,
नच्छत्र गत तिंहिँ कृत्तिका३हुव बर्त्तमान सु रोहिनी४ ॥८३॥
खिल नैन हय७२अरु बेद सर५४सुहि रोहिनी गत जानिये,
हर८००सुद्ध उत्कृति हय७२६रु रस६यह तास भोग्य प्रमानिये
गत७२।५४की करी बिकला४३७४दई पुनि सष्टि६०तैं तिगुनाइकैं,
नभ बेद संकृति तर्क दुव२६२४०यह गुनन फल हुव आइकैं ॥८४॥

बाकी ३७५९६ रहे जिनको फिर ६० से गुणाये सो २२५५७६० हुए ॥८०॥ फिर उसी भाजक का भाग दिया तो फल४७ मिला सो पल हुए सो हे राजा वही तीज का भोग्य फल गिनो ॥ ८१ ॥ भोगी हुई और भोगनेवाली घड़ी और पल को जोड़ कर इकट्ठा किया तब घड़ी ५३पल ५७तीज का कुल भोग आया ॥ ८२ ॥ स्पष्ट चंद्रमा राशि १ अंश ११ कला १२ विकला ५४ हुए जिनकी कला करी तो २४७२ हुई जिनके नीचे विकला ५४ जुदी रक्खी और कलाओं को ८०० का भागदिया तो ३ लब्धि हुआ जिससे कृत्तिका गत और वर्तमान रोहिणी नक्षत्र हुआ ॥ ८३ ॥ बाकी कला ७२ विकला ५४ रही सो रोहिणी का भुक्तकाल जानो उसको आठ सौ में से घटाया तो बाकी कला ७२७ विकला ६ यह रोहिणी का भोग्यकाल मानो. 'मूल में उत्कृति हय' यह पाठ है इससे कला७२६ आती है सो अशुद्ध मालूम होता है क्योंकि आठ सौ में से बहत्तर निकाले तो बाकी सात सौ अठाईस रहे जिनमें से विकला ५४ निकालने के लिये एक उधारी लिया तो ७२७ ही रहते हैं, गतकला ७२ विकला ५४ की विकला करी तो ४३७४ हुई जि

तिँहिँ भाज्य रक्खि रु चंद्रकी फुटभुक्ति८५८।५०की बिकलाकरी।
तव तीस तिथि सर५१५३०ए भई हरभाज्यकी२६२४४०इन
तैँ५१५३०हरी ॥

तव लब्ध आयउ पंच५ ते घटिका गई यँहँ जानिये,
भन अंक मुनि कृत सेस जो४७१०पुनि सट्ठि६०आहत आनिये ।८५।

पट्पदी

नभ चालीस तुरंग अठ कर२८७४००एह गुनित हुव।
निज हर५१५३०तैं पुनि भजत तर्क६मित लब्ध लह्यो धुव॥
ते उडुके पल भुक्त भोग्य७२६।६बिकला४३५६कीनी अब
सट्ठि६०गुनित तव साठि नव गुन कु रसकर२६१३९६०हुव सब॥
भाजक५१५३०स्वकीय करि ते२६१३९६०भजत फल पचास-
५०घटिका अगत॥
खिल३७४६०सट्ठि६०गुनित२२४७६००प्रहिर५१५३०भजत
त्रि कृत४३फल सु पल४३भोग्यमत ॥ ८६ ॥

दोहा

भुक्त५।६भोग्य५०।४३घटिका रु पल,जो रैं बिधि नच्छत्र॥

नको साठ से गुणाई तो २६२४४०हुई ॥ ८४ ॥ इनको भाज्य रखकर चन्द्रमा की स्पष्ट गति कला ८५८ विकला ५० है जिनकी विकला करी तब ५१५३०हुई सो उस भाज्य का हर (भाजक) हुआ जिससे भागदिया तब लब्धि ५ आये सो रोहिणी की सूर्योदय से पहिले गत घडियां जानो बाकी ४७१० रहे जिनको फिर ६० से गुणाये ॥ ८५ ॥ तो २८७४०० हुये जिनमें उसी भाजक ५१५३०का भागदिया तो लब्धि ६ पल रोहिणी नक्षत्र के भुक्त आये 'यहां मूल में तर्क शब्द छै का वाचक है सो अशुद्ध मालूम होता है' वह भोग्य की विकला करी ४३५६हुई यहां भी उपरोक्त एक कला के कमती होजाने के कारण विकला मे ६० का फरक होगया है अर्थात् कला ७ और विकला ४४१६ चाहिये इनको फिर ६०से गुणाया तब २६१३९६० हुये जिनमें उसी भाजक का भाग देने से रोहिणी नक्षत्र के भोग्यकी ५० घडी आई बाकी ३७४६० रहे जिनको साठ से गुणाये तो २२४७६०० हुए जिनमें उसी हर (भाजक) का भाग दिया तो फल ४३ पल भोग्य आया ॥ ८६ ॥ रोहिणी नक्षत्र के

पंचावन५५घटिका रु पल, तान४९सकल हुव तत्र ॥ ८७ ॥

पट्पदी

फुटरबि०।१२।३०।२३ ससि१।११।१२।५४अब जोरि,
कला कीनी गुन कर रद३२२३।१७॥
भजी अठ्ठ सय८००सौंहि बेद४तँहँ लब्ध लह्यो हद॥
तिंहिं गत युजि४सौभाग्य४वर्त्तमान सु तँहँ सोभन ।
खिल बिकृति२३रु अत्यष्टि१७सोहि सोभन गत भूधन ॥
हर८००तैं निकासि लिय भोग्यतँहँछमुनिमुनि७७६रुकृतबेद४४हुव ।
अब योगभुक्त२३।१७विकला१३।९७करिय,
सठ्ठि६० गुनित तिन्ह सुनहु धुव॥ ८८ ॥

दोहा

नख अहि गुन बसु८३८२०ए भई,
भाज्य रु रबि५८८ससि८५८।५०भुक्ति ।
जोरि धृति खसर सर५५०१८करी,बिकला भाजक जुक्ति॥८९॥
एक१मिल्यो यँहँ लब्ध सो, गत घटिका तँहँ जानि ।
सेस२९८०२सठ्ठि६०हत नख कु बसु,

भुक्त और भोग्य की घडी और पल जोडने से घडी ५५ पल४९रोहिणीका सब भोग्य हुआ ॥ ८७ ॥ अब योग के घडी पल लाते हैं, स्पष्ट सूर्य राशि० अंश १२ कला ३० विकला २३ और स्पष्ट चन्द्रमा राशि १ अंश ११ कला१२ विकला५४ है इन दोनों के राशि आदि जोड कर कलायें करीं तो कला३२२३ विकला १७ हुई इन कलाओं को आठ सौ का भाग दिया तो लब्धि ४ आया उससे सौभाग्य गत और वर्तमान शोभन योग हुआ बाकी कला२३ विकला १७ सो हे भूधन रामसिंह शोभन योग का गत काल हुआ जिनको ८०० में से निकालने से बाकी कला ७७६ विकला ४४ हुये यहां भी विकला ४३चाहिये अब योग की भुक्तकला की विकला करके६०से गुणाया सो निश्चै सुनो ॥ ८८ ॥ ८३८२० हुए सो भाज्य (जिसमें भाग दिया जावे) हुआ अब सूर्य की गति कला ५८ विकला ८ और चन्द्रमा की गति कला ८५८ विकला ५० है जिन दोनों को जोड कर विकला करी तो ५५०१८ भाजक (जिसका भाग दियाजावे) की बिकला हुई ॥ ८९ ॥ भाज्य में भाजक का भाग

कर मुनि भू१७२८१२० मित ठानि ॥ ९० ॥
वा५५०१८ही भाजक तैं भजत, लब्ध लह्यो इकतीस३१॥
ए३१सोभन के भुक्तफल, मानहु सुमति महीस ॥ ९१ ॥
यौं ही सोभन भोग्य७७६।४३की, बिकला४६६०३सट्ठि६०गुनाइ॥
ख धृति छ नव उडु२७९६१८०भाज्य किय,
निज हर५५०१८यह अध लाइ ॥ ९२ ॥
भजि लिय फल पंचास५० तँहँ, भोग्य घटी ते जानि ॥
सेस४५२८०सट्ठि६०गुनखनभवसु,अष्टिभ२७१६८००एहुवआनि९३॥
वा५५०१८हीहर के भाग सन,यँहँ फल हुव गुनचास४९ ॥
ते सोभन के भोग्य फल४९,जानहु गनित बिलास॥ ९४॥
भुक्त१।३१भोग्य५०।४९ घटिका रु पल,दोनँ सकल मिलाइ
सब सोभन बावन५२घटी, अरु २०नखपल तब आइ॥९५॥
अट्ठवीस२८लव किय प्रथम, अर्क रहित ससिकेर ॥
पुनि तिनकों खट६सौंभजे, बवादिकन की बेर ॥ ९६ ॥
लब्ध लहे तँहँ च्यारि४ते, एक१ऊन हुव तीन३॥
तातैं गत तीजो३ करन, कौलव३गिनहु प्रवीन ॥ ९७ ॥

देने से लब्धि १ हुआ सो गत घडी जानो बाकी २८८०२रहे जिनको ६० से गुणाये तो१७२८१२० हुए ॥ ९० ॥ फिर वही भाजक का भाग देने से ३१ मिले सो हे सुमति राजा शोभन योग के भुक्त पल जानो ॥९१॥ इसीप्रकार सो शोभन योग की भोग्य कला की विकला करके ६० से गुणाई सो २७९६१८० भाज्य हुआ जिसमें उसी भाजक को नीचे रख कर भाग देकर फल ५० लिया सो भोग्य घडी जानो बाकी ४५२८० रहे जिनको ६० से गुणाये तो२७१६८००हुए ॥ ९२-९३ ॥ फिर उसी हर (भाजक)का भाग देने से फल४९मिला सो शोभन योग के भोग्य पल गणित के विलास में जानो।९४ भुक्त और भोग्य की घड़ी पल को मिलाई तो शोभन योग का सब भोग्य घड़ी५२पल २० आया ॥ ९५ ॥ पहिले सूर्य रहित चन्द्रमा किया था उसके अंश २८ हुए। जिनको बव आदि करण लाने के लिये फिर ६ का भाग दिया ॥ ९६ ॥ तो लब्धि४ आये जिनमें से १ निकाल दिया तो बाकी तीन रहे उनसे हे प्रवीण रामसिंह तीसरा कौलव करण गत जानो ॥ ९७ ॥ उसी दि

वर्तमान तैतिल४रह्यो, वाही दिन के प्रात ॥
तादिन के मध्याह्न म,हुव चुहान इम ख्यात ॥ ९८ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चवडासिजननतद्दिनसूर्येन्दुपञ्चाङ्गस्फुटीकरणं नवमो९मयूखः॥ ९ ॥
आदितश्चतुस्त्रिंशः ॥ ३४॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

षट्पदी

आकृति सर बसुपच्छ नाग रस नव दुव कर२२९६८२८५२२यह
कल्पमाँहिकुजभगनगुन्योंताकरिदिनगन७२०६३३१५२९९९वह
तब बसु मुनि चउ तुरग त्रि नभ गुन नव दर्वीकर ।
रस सत्तरिनव अद्रि सप्त सत्तरि मृगांक सर ॥
सर अष्टि१६५५१७०७७९७०६८९३०३७४७८भाज्य हुव रासि यह,
भू दिन१५७७९१६४५०००००करि किय तस भजन ॥
तहबसुखसप्तनवबाननवअहिकृतदस१०४८९५९७०८गतकुजभगन

रोला

गज तुरंग कृत अचल अनल चउसाठि अंक कृत ।
खट रस दस१०६६४९६४३७४७८।यह खिल सु अर्क१२गुन-
करि वहोरि हृत ॥

के प्रभात में वर्तमान तैतिल करण रहा उस दिन के मध्यान्ह समय में इस प्रकार चहुवाण प्रसिद्ध हुआ ॥ ९८ ॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के दूसरे राशि में चहुवाण के जन्म दिन के सूर्य चन्द्रमा और पञ्चाङ्ग स्पष्ट करने का नवमा मयूख समाप्त हुआ॥९॥और आदि से चौतीस मयूख हुए ॥ ३४ ॥

अब मंगल आदि पाप ग्रहों को स्पष्ट करने के लिये प्रथम मध्यम ग्रह बनाते हैं ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में२२९६८२८५२२मंगल के भगण होते हैं जिससे अहर्गण (दिनों के समूह) को गुणाया तो१६५५१७०७७९७०६८९३०३७४७४७८ भाज्य हुआ जिसमें भूमि के दिनों का भाग दिया तो १०४८९५९७०८मंगल के गत भगण आये ॥१॥ बाकी१०६६४९६४३७४७८रहे जिनको १२ से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो फल ८ गत राशि हुई फिर बाकी

फल बसु८सुहि गत रासि खिलहिं पुनि तीस३० गुनित करि॥
लब्ध तीन३गत अंस लहे त्योंही कुदिनन हरि ॥२॥
सट्ठि६०गुनित करि सेस बहुरिलिय भाग कथित मत।
लिय फल तँहँ एकोनबीस१९आई कलाहु गत ॥
योंही बारह१२मान लहिय बिकला अतीत जँहँ।
मध्यम कुज इम बसु रु गुन रु नव भू रु तपन८३१९१२तँहँ ॥ ३ ॥
कृत बसु नव गज नंद अंक रस गुन नव सत्रह१७९३६९९८९८४।
बुध चलोच्चके भगन इते होवत बिधिके ग्रह॥
तिन करि दिनगन ७२०६३३१५२९९९ गुनित कुदिन भजि लिय भचक्र ध्रुव।
सर मुनि उडु इक अठ चंद्र अतिधृति बसु ८१९१८१२७७५ए हुव॥४॥
त्यों इक१रासि रु अर्क१२अंस भ बेद ४१कला सह
बिकला मुनि गुन३७विहित रासि मुख बुध चलोच्च १।१२।४१।३७यह
सर सर कृत रस पच्छ नयन कृत सर गुन ३६४२२६४५५ सम्मित
कल्पमाँहिं गुरु भगन होत सुनिये प्रभु अवहित ॥ ५ ॥
तिनकरि दिनगन गुनि रु लये भगनादिन १५७७९१६४५०००सन
तँहँ जिन अतिधृति बेद राम रस रस कु१६६३४१९२४एभगन

के अंकों को३०से गुणाकर भूमि के दिनों का भागदिया तो लब्धि३गत अंश लिये ॥ २ ॥ बाकीके अंकों को ६० से गुणाकर कहीहुई रीति से पृथ्वी के दिनों का भाग दिया तो फल १९ आया सो गत कला हुई बाकी के अंकों को फिर ६० से गुणाकर भूमि के दिगों का भाग दिया तो १२ आया सो बिकला गत हुई इस प्रकार मध्यम मगल राशि ८ अंश ३ कला १९ विकला १२ हुई ॥ ३ ॥ ब्रह्मा के एक दिन में बुध के चलोच्च (शीघ्रउच्च) के १७९३६९९८९८४ भगण होते हैं जिससे दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो बुध के चलोच्च के ८१९१८१२७७५ भगण बीते ॥ ४ ॥ उसी प्रकार बाकी के अंकों को १२से गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो राशि १ अंश १२ कला४१ विकला ३७ हुई सो बुध का चलोच्च हुआ ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में वृहस्पति के ३६४२२६४५५ भगण होते हैं सो हेस्वामि रामसिंह सावधान होकर सुनो ॥ ५ ॥ इस भगण से गत

त्यौं भगन ३ रासि रु अष्टि१६ अंस मुनि बेद४७कला पुनि
सर५विकला यह३।१६।४७।५जीव भयो राउयादि लेहु सुनि ॥६॥
दुव नव कृत नव अष्ठ राम आकृति सत्तरि७०२२३८९४९२ सह
कबि चलोच्चके भगन इत बित्तत विधिके अह ॥
तिनकरि गुनि दिन संघ७२०६३३१५२९९९कल्प कुदिनन१५७७
९१६४५००००बिभक्त उन ।
तँहँ भचक्र भू बेद पंच नव सिव हय नख गुन३२०७११९५४१॥७॥
रासि दोइ २लव अष्टि१६कला नव कृत४९बिकला नव९
भादिक सुक्र चलोच्च भूप यह २।१६।४९।९सिद्ध गनित भव ॥
बसु नव कर मुनि तर्क पंच रस मनु १४६५६७२९८सनि पर्यय
इते कल्पबिच होत गुन्यौं तिनकरि पुनि दिनचय ॥ ८ ॥
कुदिनन सन लिय भाग पूर्व क्रम करि समस्त तस
तँहँ भचक्र सर अष्टि अद्रि गुन अंक तर्करस ६६९३७१६५॥
दोइ २ रासि सिव११ अंस कला कृतकृत४४बिकलाकृत४
भादिक २।११।४४।४यह रबि पुत्र भयो तिँहिँ दिन क्रम उद्धृत॥९॥

दोहा

गज रस संकर चंद्र गुन नयन बिकृति२३२३११६८ परिमान ॥
भगन बिलोमग राहुके बित्तत कल्प बिधान ॥ १० ॥

दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो लब्धि भगण १६६३४१९२४और राशि ३ अंश १६ कला ४७ विकला ५ यह बृहस्पति मध्यम हुआ सो सुनलो ॥६॥ ब्रह्मा के दिन में शुक्र के चलोच्च के७२२३८०,४९२ भगण होते हैं जिससे दिनों के समूह को गुणाकर भूमि के दिनो का भाग दिया तो शुक्र के चलोच्च (शीघ्रउच्च) का३२०७११६५४१ गत भगण आया ॥ ७ ॥ और राशि २ अंश १६ कला ४६ विकला ६ हुई सो हे राजा यह शुक्र का चलोच्च गणित से सिद्ध हुआ॥ ब्रह्मा के एक कल्प में शनैश्चर के१४५६६७२६८ भगण होते हैं, जिससे फिर दिनों के समूह को गुणाया ॥ ८ ॥ जिसमें भूमि के दिनों का भाग देकर प्रथम कहीहुई रीति से फल लिया तो भगण ६६९३७१६५ राशि २ अंश ११ कला ४४ विकला ४ उस दिन मध्यम शनैश्चर हुआ सो क्रम से निकाला ॥६॥ ब्रह्मा के एक दिन में राहु के

तिनकरि गुनि दिनगन लये,कुदिनन भाग लगाइ ॥
तँहँ नख गुन रस नव ख रस,
दस१०६०९६३२०ए भवलय आइ ॥ ११ ॥
रासि तर्क६लव अष्टि१६गत, कलिका तिथि१५परिमान ॥
गुनसठि५९बिकला राहु६।१६।१५।५९।यह,तादिनको चहुवान॥१२॥
केतु इतर अवयव यहहि,दूजी२ठाँ छ६ सवाग ॥
तातैंख०रुअष्टि१६रुतिथि१५रु,नवसर५९यह०।१६।१५।५९।तसकाय
रबि ससिके ससि उच्चके, कहे भिन्न संस्कार॥
तदपि सबन सम्मलि इहाँ, अक्खौं संभरवार ॥ १४ ॥

षट्पदी

रबिमध्यम ख०रु शिव११रु पच्छ नयन२२रु सर गुन३५मित।
मध्यमगति ताकी कलादि नव सर५९रु अष्ठ८इत ॥
ससिकु१रु बिश्व१३रु वेद गुन३४रु ससधर१यह जानहु।
ख नव मुनि७९०रु पैंतीस३५भुक्ति ताकी पहिचानहु ॥
ससिउच्च हय७रु आकृति२२बहुरि नभ वेद४०रु मनु१४मानधर
गति तास तर्क६अरु भूमि कृत४१जानहु यह बसुधेसबर ॥१५॥
मंगल अष्ठ८रु गुन३रु अंक भूमि१९रु रबि१२भादिक।

२३२३११९६८ विलोम भगण होते हैं ॥ १० ॥ इनसे अहर्गण को गुणाकर भूमि के दिनों का भाग दिया तो १०६०९६३२० ये भगण आये ॥ ११ ॥ राशि ६ अंश १६ कला १५ विकला ५९ मध्यम राहु हुआ दूसरा केतु जिसके अंश, कला, विकला तो ये ही हैं और राशि में ६ जोड़े तो राशि ० अंश १६ कला १५ विकला ५९ मध्यम केतु हुआ सो उसी (राहु) का शरीर है ॥ १२ ॥ १३ ॥ सूर्य चन्द्र और चन्द्रोच्च के संस्कार जुदे कहे तो भी हे चहुवान रामसिंह यहां पर सब के सामिल कहता हूं ॥१४॥ राशि० अंश ११ कला २२ विकला ३५ मध्यम सूर्य है और इसकी मध्यम गति क ला ५९ विकला ८ है राशि १ अंश १३ कला ३४ विकला १ मध्यम चन्द्रमा है और इसकी मध्यम गति कला ७९० विकला ३५ जानो राशि ७ अंश २२ कला ४० विकला १४ चन्द्रोच्च हुआ और हे श्रेष्ठ राजा इसकी गति कला ६ विकला ४१ जानो ॥१५॥ राशि ८ अंश ३ कला १९ विकला १२ मध्यम

तस मध्यमगति एक गुन३१रु उत्कृति२६कलिकादिक ॥
बुधचलोच्च कु१रु रबि१२रु भूमि बेद४१रु मुनि गुन३७पर ।
रस धृति१८६अरु चोईस२४मुक्ति ताकी नृपसंभर ॥
गुरु गुन३रु अष्टि१६पुनि मुनि कृत४७रु पंच५रु गति बान५रु गगन०
कविकोचलोच्चपच्छ२रुरसकु१६पुनितान४९रुनव९धरनिधन ॥१६॥

दोहा

कबिचलोच्च इम मध्यगति, मुनि राम३७रु नभ०तास ॥
सनि दुव२रु शिव११रुकृतकूल४४रु,कृत४गतिदृग२आकास०॥१७॥
राहु रस६रु अष्टि१६रु तिथि १५रु,अंक बान५९मित जानि॥
ताकी राम३रु ईस११यह, मध्यमगति पहिचानि ॥ १८ ॥

चराडासिजन्मार्हमध्यमग्रहचक्रमिदम् ॥									
सूर्यः	चन्द्रः	चन्द्र मन्दोच्चम्	भौमः	ज्ञचलोच्चम्	गुरुः	कविचलोच्चम्	शनिः	राहुः	केतुः
०	१	७	८	१	३	२	२	६	०
११	१३	२२	३	१२	१६	१६	११	१६	१६
२२	३४	४०	१९	४१	४७	४९	४४	१५	१५
३५	१	१४	१२	३७	५	६	४	५९	५९
५९	१९०	६	३१	१८६	५	३७	२	३	३
८	३५	४१	२६	२४	०	०	०	११	११

मंगल हुआ इसकी गति कला ३१ विकला२६ हुई ॥ राशि १ अंश १२ कला ४१ विकला ३७ बुध का चलोच्च हुआ. और हे चहुवाण राजा कला १८६ विकला २४ इसकी गति हुई ॥ राशि ३ अंश १६ कला ४७ विकला ५ मध्यम गुरु हुआ, इसकी गति कला ५ विकला ० हुई राशि २ अंश १६ कला ४९ विकला ९ शुक्र का शीघ्रोच्च हुआ ॥ १६ ॥ इसकी गति कला ३७ विकला ० है ॥ राशि २ अंश ११ कला ४४ विकला ४ मध्यम शनि हुआ, इसकी गति कला २ विकला ० हुई ॥१७॥ राशि ६ अंश १६ कला १५ विकला ५९ राहु हुआ, इसकी गति कला ३ विकला ११ हुई, यह मध्यम गति जानो ॥ १८ ॥

रासिगगन०लवसुखइतर,आहिकतमसम०।१६।१५।५९।३।११आहि।
सबको सूचीचक्र यह,श्रोता लखहु सिराहि ॥ १९ ॥
सुनहु बीजसंस्कृत सकल,ग्रह अब पहु चहुवान ॥
नभ०रु दस१०रु नव पच्छ२९अरु, बसु गुन३८यह रबिमान॥२०॥
एक१रु जगती१२पुनि सर५रु, रस कृत४६अमृतनिधान ॥
ससिमंदोच्च सु मुनि७ रु आकृति२२ रु कृत४रु रस बान ॥२१॥
मंगल अष्ट८ रु गुन३रु छतीस३६रु भूसर५१अच्छ ॥
बुधचलोच्च भूमि१रु उडु२७रु, नवबान५९ रु सर पच्छ२५॥ २२ ॥
गुरु अग्नि३रु तिथि१५पुनि धृति१८रु,नंद राम३९पहिचानि॥
कबिचलोच्च नयन२रु रबि१२रु, बेद सर५४रु जिन२४जानि।२३।
यह२।१२।५४।४०हि भानुसुतपै अधिक,इहिं बिच बिकला अष्टि१६॥
राहु तर्क६पुनि सोलह१६रु,इंदु सर५१रु अत्यष्टि १७॥२४॥
यह०।१६।५१।१७हि केतु तहँ रासि थल,जानहु गगन० नरेस॥
कथित बीजसंस्कार लहि, इम हुव खेट असेस ॥ २५ ॥
अब सुनिये आरादिकन, आसुकेंद्र अवनीस ॥
कुजको बेद४रु बिश्व१३पुनि, पन्नगकृत४८रु पचीस२५॥२६॥

राशि ० अंश १६ कला १५ विकला ५९ गति कला ३ विकला ११ है इन सबकी राश्यादिक सूचना का चक्र श्रोतागण प्रशंसा युक्त देखो ॥ १९ ॥ हे चहुवान राजा अब इन सब अब्दबीज संस्कार दियेहुए ग्रहों को सुनो. राशि ० अंश १० कला २९ विकला ३८ यह सूर्य जानो ॥ २० ॥ राशि १ अंश १२ कला ५ विकला ४६ चन्द्रमा हुआ ॥ राशि ७ अंश २२ कला ४ विकला २१ चन्द्रोच्च हुआ ॥ २१ ॥ राशि ८ अंश ३ कला ३६ विकला ५१ यह मंगल हुआ. राशि १ अंश २७ कला ५९ विकला२५बुध का चलोच्च हुआ ॥ २२ ॥ राशि ३ अंश १५ कला १८विकला ३९ बृहस्पति जानो. राशि२ अंश१२कला ५४विकला२४ शुक्र का चलोच्च जानो ॥ २३ ॥ शुक्र के समान ही शनैश्चर है परन्तु विकला में १६अधिक है । राशि६अंश १६कला ५१ विकला १७ राहु है ॥ २४ ॥ इसीप्रमाण केतु है जिसमें हे राजा राशि के स्थान पर शून्य जाने. कहेहुए अब्दबीज संस्कार लेकर इसप्रकार सब ग्रह हुए ॥ २५ ॥ अब मंगल आदि ग्रहों का हे भूपति शीघ्रकेन्द्र सुनो । मंगल का शीघ्रकेन्द्र राशि४

इदं बीजसंस्कृतमध्यमग्रहचक्रम् ॥									
सूर्यः	शशी	इन्दुमृदूच्चम्	आरः	ज्ञचलोच्चम्	जीवः	काव्याशूच्चम्	सौरिः	तमः	शिखी
०	२	७	८	१	३	२	२	६	०
१०	१२	२२	३	१७	१५	१२	१२	१६	१६
२६	५	४	३६	५९	१८	५४	५४	५१	५१
३८	४६	५६	५१	२५	३९	२४	४०	१७	१७

बुधको एक१रु धृति१८बहुरि, बेद गुन३४रु राकेस १।
बसु८रु अतिधृति१९रु रसगुन३६रु, नव सर५९गुरुको एस ॥२७॥
कबिको नयन२रु ख०रु भुजग, बान५८रु बेद४बखानि ॥
सनिको अंक६रु उत्कृति२६रु, तिथि१५रु तारका२७ जानि॥२८॥
आरादिक चलकेंद्रको, चक्र यहै सुबिबेक ॥
तम१सिखि२कै उच्च न तबहि, ए२मध्य१रु फुट२एक ॥२९॥

इदं भौमादीनांशीघ्रकेन्द्रचक्रम्					भौमादिमंदस्फुटग्रहपञ्चकचक्रं				
कुजस्य	ज्ञस्य	गुरोः	कवेः	शनेः	वक्रः	बुधः	गुरुः	उशना	शनिः
४	१	८	२	९	७	०	३	०	२
१३	१८	१९	०	२६	२६	९	२०	११	१४
४८	३४	३६	५८	१५	४१	२५	५२	५६	१४
२५	१	५९	४	२७	१३	२४	४०	२०	११

अंश १३ कला ४८ विकला २५ हुआ ॥ २६ ॥ बुध का शीघ्रकेन्द्र राशि १ अंश १८ कला ३४ विकला १ हुआ । बृहस्पति का शीघ्रकेन्द्र राशि ८ अंश १९ कला ३६ बिकला५९हुआ ॥२७॥ शुक्र का शीघ्रकेन्द्र राशि२ अंश ० कला५८ विकला ४ कहागया । शनि का शीघ्रकेन्द्र राशि ९ अंश २६ कला १५विकला२७ जानो ॥ २८ ॥ मंगल आदि पांच ग्रहों के चलकेन्द्र का श्रेष्ठ विचार के साथ यह चक्र है ॥ राहु और केतु के उच्च और नीच स्थान उसी कक्षा (घूमने का) वृत्त (गोल) में है इसलिये ये दोनों मध्यम और स्पष्ट एक ही हैं अर्थात् मध्यम हैं वही स्पष्ट हैं ॥२९॥ इन पांचों (मंगल, बुध, गुरु

एहि पंच५ अब मंदफुट, कहियत राम दिवान ॥
आर मुनि७ रु उत्कृति२६ रु सासि, बेद्द४१ रु बिश्व१३ प्रमान ॥ ३०॥
बुध आकास० रु नंद९ पुनि, अतिकृति२५ अरु चउवीस२४ ॥
बाचस्पति अग्नि३ रु नख२० रु, बावन५२ पुनि चालीस४० ॥ ३१॥
दानवगुरु आकास० पुनि, शिव११ रु छप्पन५६ रु बीस२०॥
बडवासुत नयन२ रु मनु१४ रु, आखंडल१४ अरु ईस११ ॥ ३२॥
आरादिक जे मंदफुट, ग्रह तिनको यह चक्र ॥
तबके फुटतर खेट सब, सुनिये छोनीसक्र ॥ ३३ ॥

षट्पदी

तादिन दिनकर भ० रु रबि१२ रु तीस३० रु पावक कर२३ ॥
ताकी गति कलिकादि अठ्ठ बान५८ रु बसु ८फुटतर ॥
ससि भूमि१ रु सूली११ रु रबि१२ रु चोवन५४ यह जानहु ॥
ताकी गति बसु पंच गज८५८रु पंचास५०प्रमानहु ॥
कुज नव९रु रस६रु हय गुन३७बहुरि बावन५२तँहँ यह रासिमुख ॥
याकीहु भुक्ति अठतीस३८अरु रस कर२६जानहु गनित रुख ।३४।
बुध गगन०रु इकबीस२१रु कृत पंच५४रु नव लोचन२९ ।
गुन नभ भूमि१०३ रु दंत३२भुक्ति ताकी धरनीधन ॥

शुक्र, शनि) का हे दीवान (बुन्दी के रावराजाओं का उपपद दीवान है) रामसिंह मन्दस्पष्ट कहते हैं । मंगल राशि ७ अंश २६ कला ४१ विकला १३ मन्दस्पष्ट है ॥३०॥ बुध राशि ० अंश ९ कला २५ विकला २४ मन्दस्पष्ट है बृहस्पति राशि ३ अंश २० कला ५२ विकला ४० मन्दस्पष्ट है ॥ ३१ ॥ शुक्र राशि ० अंश ११ कला ५६विकला २० मन्दस्पष्ट है शनि राशि २ अंश १४ कला १४ विकला ११ मन्दस्पष्ट है ॥ ३२ ॥ मंगल आदि इन पांचों ग्रहों के मन्दस्पष्ट का यह चक्र है और हे भूमि के इंद्र रामसिंह उस समय के स्पष्टतर ग्रह अब सुनिये ॥ ३३ ॥ उस दिन सूर्य राशि ० अंश १२ कला३० विकला २३ और उसकी गति कला ५८ विकला ८ स्पष्टतर है ॥ चंद्रमा राशि १ अंश ११ कला १२ विकला ५४ जानो इसकी गति कला ८५८ विकला ५० प्रमानो । मंगल राशि ९ अंश ६ कला ३७ विकला ५२ इसकी गति कला३८ विकला २६ गणित की राह से जानो ॥ ३४ ॥ बुध राशि ० अंश २१ कला,

त्रि३रु दस१०रु वसु८रु आकृति२२गुरु गति सर५रु छगुन३६मित
कबि भु१रुछ६रु कृत सर५४रु ख०गति द्वि मुनि७२रु कृत कृत४४इत
सनि कर२रु नव९रु सत्रह १७रु रवि१२गति बेद४रु नव राम३९पर
छ६रु अष्टि१६रु भू पंच५१रु मुनि कु१७तम गति गुन३रु कपर्दधर११

दोहा

राहु समाहि आहिक०।१६।५१।१७।।३।११गिनहु,
तँहँ खट६रासि बिसेस ॥
ए चुहानजनि दिवस मुख, है फुट खेट नरेस ॥ ३६ ॥

इदं चग्डासिजन्माहःप्रातःस्फुटतरग्रहचक्रम्

सू०	चं०	भौ०	ज्ञ०	गुरु	शु०	श०	रा०	के
०	१	९	०	३	१	२	६	०
१२	११	६	२१	१०	६	९	१६	१६
३०	१२	३७	५४	८	५४	१७	५१	५१
२३	५४	५२	२९	२२	०	१२	१७	१७
५८	८५८	३८	१०३	५	७२	४	३	३
८	५०	२६	३२	३६	४४	३९	११	११

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चग्डा
सिजन्माऽहर्प्रातर्ग्रहस्फुटीकरणं दशमो१०मयूखः ॥ १० ॥

५४ विकला २९ और हे धरनीधन इसकी गति कला १०३ विकला३२ है ॥ बृहस्पति राशि ३ अंश १० कला ८ विकला२२इसकी गति कला ५ विकला ३६ का प्रमाण है ॥ शुक्र राशि १ अंश६ कला५४विकला ० इसकी गति कला७२विकला४४है॥ शनैश्चर राशि२अंश९कला१७विकला१२इसकी गति कला४विकला३९है॥राहु राशि६अंश१६कला५१ विकला१७इसकी गति कला ३ विकला११है ॥३५॥ राहु के समान ही केतु को जानो जिसमें राशि में६का अंतर है अर्थात् राशि० है ॥ हे राजा रामसिंह चहुवान के जन्म के दिन प्रभात समय में ये ग्रह स्पष्ट हैं ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवान के जन्म दिन प्रभात समय में ग्रहों को स्पष्ट करने का दशवां मयूख समाप्त हुआ ॥

आदितः पञ्चत्रिंशः ॥ ३५ ॥

अथ चण्डासिजन्मकालग्रहलग्नकुण्डलिकाद्याऽऽविष्करणम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा

॥ षट्पदी ॥

मनु सप्तम७ जँहँ बिद्यमान बैवस्वत७ आव्हय ।
ताके जुग कृत आदि होत नभ ससि इक११०अत्यय ॥
तीजो३ जुग तिन अग्ग नाम द्वापर तस बच्छर ।
बित्ते जँहँ नव तर्क बेद अंबर रस कुंजर८६०४६९॥
भू राम बान गुन ३५३१ सेस जँहँ रहत अर्क उत्तर अयन ।
अर्बुद अगेस चहुवान हुव जंभ१ धूम्रकेतन२ जयन ॥ १ ॥
माधव ऋतु माधवहि मास अवदात पच्छ जँहँ ।
जीव बार तिथि तीज३घटी रद३२ पल मुनि कृत४७ तँहँ ॥
चोथी४ तारा ख सर ५० घटी गुन कृत४३ पल अग्गल ।
पंचम५ योग प्रसिद्ध ख सर५० घटिका रु तान ४९ पल ॥
तैतिल४बिहाय लगि गर५करन अष्टि१६ रु गुन३यह इष्ट ध्रुव ।
अभिजित मुहूर्त कर्कट४ लगन तिहिँ अनेह चहुवान हुव ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भ२७ रु चोवन५४निसमान जँहँ, रद ३२ रु तर्क ६ दिनमान ॥

और आदि से पैंतीस मयूख हुए ॥३५॥ अब चहुवान के जन्म समय के ग्रह लग्नकुण्डलिका आदि का प्रकाश करना है ॥
जहां पर सातवां वैवस्वत नामक मनु वर्तमान है जिसके युग सत्ययुग को आदि लेकर ११० बीते जिनके आगे तीसरे (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर) द्वापर युग के ८६०४६७ वर्ष बीते और ३५३१ वर्ष बाकी रहे और सूर्य के उत्तरायण में रहते, जंभासुर और धूम्रकेतु को जीतने के लिये आबू पर्वत राज पर चहुवाण हुआ ॥ १ ॥ वसन्त ऋतु, वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, तिथि तीज गुरुवार घडी ३२ पल ४७ रोहिणी नक्षत्र घड़ी ५० पल ५३ शोभन योग घड़ी ५०पल ४९ तैतिल करण छूट कर गर करण लगा इष्ट घड़ी १६ पल ३ अभिजित् मुहूर्त, कर्क लग्न के समय में चहुवाण हुआ ॥ २ ॥ उस दिन २७ घड़ी ५४ पल की रात्रि और ३२ घड़ी ६ पल का दिनमान है ॥ इसप्रकार

अर्ध १।६।३ दिवस गत होत इम, हुव चउ४ भुज चहुवान॥३॥
रोहिनि४ के दूजे२चरन,भव यातैं बसुधेस ॥
स्वामी सुक्र ६रु रासि वृष२ फुटग्रहगन तँहँ एस ॥ ४ ॥
प्रातहि जो फुट रवि कह्यो, सो नृपजन्म अनेह ॥
तिथि१५कलारुचोतीस३४मित,बिकलाजुतफुटएह०।१२।४५।५७॥
५८।८॥ ५ ॥

त्रि३लव रु तान ४९कला रु बसु,
सर बिकला५८ जुत सोम १।१५।२।५२॥८५।८।५० ॥
दस १०कलिका अरु बिकलिका
सत्रह१७ संजुत भोम ९।६।४८।९॥३८।२६ ॥ ६ ॥
भ २७ मित कला गुन बेद ४३ मित,
बिकला जुत बुध ०।२२।२२।१२॥१०३।३२ जानि ॥
एक १ कला बिकला ख गुन३०
संजुत गुरु ३।१०।९।५२॥५।३६ पहिचानि ॥ ७ ॥
उसना तँहँ नव भूमि १९ अरु
बसु लोचन २८ संजुत्त १।७।१३।२८॥७२।४४ ॥

आधा दिन बीतने पर चार हाथवाला चहुवाण हुआ ॥ ३ ॥ रोहिणी के दूसरे चरण में हुआ इसकारण स्वामी शुक्र, राशि वृषभ, यह स्पष्टग्रहों का समूह हुआ ॥ ४ ॥ प्रभात समय का जो स्पष्टसूर्य कहा जिसमें १५ कला ३४ विकला जोड़ने से जन्म समय का स्पष्ट सूर्य राशि ० अंश १२ कला ४५ विकला५७गति कला५८विकला ८ हुई ॥ ५ ॥ प्रभात समय के चन्द्रमा में अंश ३ कला ४९विकला५८ जोडने से जन्म समय का चन्द्रमा राशि१अंश१५ कला २ विकला५२गति कला८५८विकला५०स्पष्ट हुआ । प्रभात के मंगल में कला१०विकला१७जोडने से जन्म समय का मंगल राशि९ अंश ६ कला४८ विकला९ गति कला ३८विकला २६ स्पष्ट हुआ ॥ ६ ॥ प्रभात समय के बुध में कला२७ विकला४३ जोडने से जन्म समय का बुध राशि ० अंश २२कला २२विकला१२गति कला१०३विकला३२स्पष्ट जानो । प्रातःकाल के बृहस्पति में कला१ विकला३०जोडने से जन्म समय का बृहस्पति राशि३अंश१०कला ९विकला ५२ गति कला५विकला३६स्पष्ट पहिचानो ॥ ७ ॥ प्रभात समय के

कलिकाएक१रुबिकलिका,तिथि१५उपेतरबिपुत्त।२।९।१८।२७।४।३९
उलटी गतिके अगु६।१६।५०।२६।३।११सिखी०।१६।५०।२६।३।११
बिकला कु सर५१बिहीन॥
चाहुवान जनिकालको, खेटचक्र यह कौन ॥ ९ ॥

दोहा

त्रि३रुअष्टि१६रुगजगुन३८रुबसु,सर५८यह३।१६।३८।५८लग्नकुलीर
हो फुटतर चगडासिके, जन्मकाल नृप बीर ॥ १० ॥

षट्पदी

कर्क४रासि निज उच्च सहित तनु१बिच गुरु आयउ।

इदं चगडासिजन्मकालस्फुटतरग्रहचक्रम्

सूर्यः	ग्लौः	आरः	सौम्यः	गुरुः	काव्यः	ऐनिः	अगुः	केतुः
१	१	९	०	३	१	२	६	०
१२	१५	६	२२	१०	७	९	१६	१६
४५	२	४८	२२	९	१३	१८	५०	५०
५७	५२	९	१२	५२	२८	२७	२६	२६
५८	८५८	३८	१०३	५	७२	४	३	३
८	५०	२६	३२	३६	४४	३९	११	११
उच्चस्थः	उच्चस्थः	उच्चस्थः	अस्त	उच्चस्थः	स्वगृहो	मित्रम्	०	०

बनिज७ रासि संस्थित चतुर्थ४आलय अगु पायउ ॥

शुक्र मे कला१६विकला२८जोडने से जन्म समय का शुक्र राशि १अंश१७ कला१३विकला २८गति कला७२विकला४४स्पष्ट हुआ। प्रातःकाल के शनैश्चर में कला१विकला१५जोडने से जन्म समय काशनैश्चर राशि२अंश९कला१८ विकला२७गति कला४विकला३९स्पष्ट हुआ ॥ ८ ॥ उलटी गतिवाले प्रभात समय के राहु और केतु में विकला५१बाकी देने से जन्म समय का राहु राशि६अंश१६कला५०विकला२६और केतु राशि०अंश१६कला५०विकला२६गति कला३विकला ११स्पष्ट हुए। चहुवान के जन्म समय के ग्रहों का यह चक्र किया है ॥ ९ ॥ हे वीर राजा रामसिंह! चहुवान के जन्म समय में राशि३अंश १६कला३८ विकला५८कर्क लग्न स्पष्ट हुआ ॥ १० ॥ लग्न स्थान पर उच्च का गुरु आया और चौथे स्थान में तुला राशिपर राहु मिला, सातवे स्थान में मकर राशि पर अपने उच्च का आरोही (अपने परम ऊंचे अंश तक चढने को

मृग१० निज उच्च अरोहि भवन सप्तम७रहि भूसुत ।
दसम१०भुवन दिनकर स्वकीय उन्नत एडक१जुत ॥
दसम१०हि निकेत बुध केतु दुव२अवि१अरोहि रबि ढिग रहिय।
आत्मीय उच्च सक्कर२सहित आय११भाव हिमकर लहिय॥११॥

दोहा

आय११हिमैं स्वगृही इहाँ, वृष२आश्रित कबि आँहिं ॥
मिथुन३रासि थित मित्र बनि, मंद रह्यो व्यय१२ माँहिं ॥ १२ ॥
तनु१ बिच गुरु निज उच्च४को, राजयोग कर्त्तार ॥
राज्यभाव१० पति केंद्र७बिच, याँहि उच्च१० थित आर ॥१३॥
राज्यभाव१०बिच त्यों रहिय, रबि निज उच्च१उपेत ॥
सोहु महाराजत्व को, दाता सिद्धिसमेत ॥ १४ ॥
लाभभाव११बिच उच्च२को,त्यों चंद्रहु लग्नेस ॥
सुभ कबि संजुत करत यह,भूपति योग विसेस ॥ १५ ॥
गुरु१कुज२रबि३ससि४उच्चके, यातैं फल अति पुष्ट ॥
इतरहु सुभ बुध अस्त इक१, अगु१आँहिक२कछु दुष्ट ॥ १६ ॥

आरोही और अपने परम उच्च अंश से आगे बढने को अवरोही कहते हैं औ र मंगल के परम उच्च अंश२८हैं और यहां ९अंश हैं इससे आरोही है) मंग ल रहा. दशम स्थान में मेष राशि का सूर्य अपने उच्च में युक्त रहा और द शम स्थान में ही बुध और केतु मेष राशि पर आरूढ सूर्य के समीप रहे हैं। उच्च का वृष राशि सहित ग्यारहवें स्थान में चंद्रमा है ॥ ११ ॥ ग्यारहवें ही स्थान में यहां पर अपने घर का वृष राशि पर शुक्र है. और मिथुन राशि पर अपने मित्र (बुध) के घर में बारहवें स्थान में शनैश्चर रहा ॥ १२ ॥ लग्न में उच्च का गुरु राज्ययोग का करनेवाला है वैसे ही राज्य भाव (दशवें स्थान) का पति मङ्गल केन्द्र में उच्च का बैठा है ॥ १३ ॥ इसीप्रकार राज्य भाव में सूर्य अपने उच्च के सहित है सो भी बडे राज्य का देने वाला सिद्धि सहित है ॥ १४ ॥ वैसे ही लग्न का स्वामी चन्द्रमा ग्यारहवें स्थान में उच्च का है और शुभग्रह शुक्र के साथ चन्द्रमा विशेष राज्ययोग करनेवाला है ॥ १५ ॥ बृहस्पति, मंगल सूर्य और चन्द्रमा ये चारों ग्रह उच्च के हैं इससे अत्यन्त शुभ फल दायक हैं और दूसरे भी शुभ हैं परन्तु एक बुध अस्त है सो, और राहु व केतु थोड़े से दोष करनेवाले हैं ॥ १६ ॥ यह चुहारण के जन्म

यह चुहानके जन्मकी, लग्नकुंडली आहि ॥
रासिलग्नकी कुंडली कहत, सुनहु अब ताहि ॥ १७ ॥
वृष२ के ससि१ कवि२ लग्न१ बिच, मिथुन३ मंद धन२माँहिँ॥
सुरगुरु कर्कट४ को सहज३,नवम९मकर१० कुज आँहिँ ॥१८॥
एडक१ के रवि१ बुध२ उभय, द्वादस २ आलय आइ॥
रासिलग्नकी कुंडली, यह तस सुद्ध सुहाइ ॥ १९ ॥
वादिनके ग्रह९प्रातके, जन्मकालके ज्योँहि ॥
पंच५अंग इत्यादि सब, ग्रंथसिरोमनि सौँहि ॥ २० ॥
इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चरडा-

की लग्नकुण्डली है अब चन्द्रकुण्डली कहते हैं सो सुनो ॥ १७ ॥ लग्न में वृष राशि का चन्द्रमा और शुक्र है और दूसरे भाव (घर) में मिथुन का शनैश्चर है और तीसरे स्थान में कर्क का बृहस्पति और नवम स्थान में मकर का मंगल है ॥ १८ ॥ मेष राशि के सूर्य और बुध दोनों बारहवें घर में आये हैं यह उस चोहान की राशि लग्न की कुण्डली श्रेष्ट है ॥ १९ ॥ उस दिन के प्रभात के और जन्म समय के ग्रह और पञ्चाङ्ग आदि सब सिद्धान्त शिरोमणि से लिये हैं ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवाण के जन्म

इयं चण्डासिजन्मलग्नकुण्डलिका ॥

३श
चं
शु२
५
६
४बृ
रा७
सू
बु१ मे
१०मं
८
९
११
१२

इयं चण्डासिराशिलग्नकुण्डलिका ॥

श३
बु१
सू
चं
२
शु
४बृ
१२
५
११
मं
१०
८
६
७
९

सिजन्मकालग्रहलग्नकुण्डलिकादिस्फुटीकरणमेकादशो ११ मयूखः ॥ ॥ आदितः षट्त्रिंशः ॥ ३६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

दोहा

कथित[1] समय सुचि[2] कुंडतैं, स्वाहा ध्वनि[3] अवसान[4] ॥
अं।चैत[5] गनकरि आवरित[6], निकस्यो नृप चहुवान ॥१॥

षट्पदी

घनबल्ली[7] निभ बसन[9] बालदिनकर[10] निभ बिग्रह[11] ।
जानु[12] बितत भुज च्यारि४ असह बिथुरात महामहँ[13] ॥
सकति१ गदा२ असि३ चक्र४ धीर प्रहरन[14] चउ४धारत ।
रनउत्सुक[15] हग देखि सबन संताप निवारत ॥
कोटीर[16] दिव्य कुंडल कटक[17] अंगद[18] भुज छबि उल्लसत ॥
मुनि बत्स मंत्र जनित[19] सु ज्वलित[20] हेतिनै[21] कढि आयो हसत ॥ २ ॥

दोहा

पंच५ प्रवर उपवीत[22]१ जुत, बत्सगोत्र२ यह बीर ॥
साखा कौथमिका३ सहित, साम४ श्रुतिधर[23] धीर ॥ ३ ॥

॥ षट्पदी ॥

धाता[24] तस अभिधान[25] कह्यो स्वभबल्ल[26] बसुधेस्वर१ ।
तिम आकिखय चंडासि२ पिक्खि असि[27] खंड तास कर ॥
बहुरि चतुर्भुज३ कहिय च्यारि४ हत्थन लखि धारत ।
ए३ यौगिक[28] अब रूढ कहौं मत बिबिध बिचारत ॥

का समय, ग्रह, लग्नकुंडली आदि के स्पष्ट करने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ आदि से छत्तीस मयूख हुए ॥ ३६ ॥

१ ऊपर कहेहुए २ अग्नि ३ शब्द ४ अन्तिम ५ ज्वाला के समूह से ६ घिराहुआ ७ बिजुली के ८ सदृश ९ वस्त्र १० उदय होते सूर्य के समान ११ शरीर १२ घुटनों तक फैलेहुए १३ उत्सव १४ शस्त्र १५ उत्कंठित (युद्ध की इच्छा रखनेवाले नेत्र) १६ मुकुट १७ कंकण (कड़े) १८ भुजबन्ध १९ वत्स मुनि के मंत्रों से पैदाहुआ २० अग्नि की २१ झाल से २२ जनेऊ २३ वेद २४ ब्रह्मा ने २५ नाम २६ धन(बल) और क्रान्ति ही है धन जिसके २७ खड्ग २८ ये तीन नाम यौगिक हैं

आ[1]ह्य चुहान५ चहुवान६ अरु चोहान७ रु चव्हान८ हुव।
इत्यादि सब्द अभिधेय[2] यह सो अब्बुव[3] मख होम हुव॥४॥

॥ दोहा ॥

भृगु ब्रह्मादिक[4] यँहँ भये, संतति निज लहि सत्थ ॥
भृगु कुल नामकही भये, इम गोत्रादिक अत्थ ॥ ५ ॥

॥ षट्पदी ॥

इम बाशिष्ठ मख अनल कुंड अर्बुद गिरि उप्पर ॥
चउ४ भुजदंड चुहान अधिप निकस्यो जगईश्वर ॥
सुर[6] हुव सकल प्रसन्न लगे मुनिवर जस अक्खन[7] ॥
जय[8] रक्खन यह जानि बजे दुंदुभि दिवं[9] लक्खनं[10] ॥
सौरभि[11] अनेक बरखे सुमनं[12] भुवन भुवन जय जय भयो॥
मख भाग लुब्ध[13] जनु[14] तजि उदय[15] अब अर्बुद[16] रवि उग्गयो॥६॥

शुद्धब्रजदेशीयभाषा

॥ मनोहरम् ॥

पंकजता[17] पाई बिप्र विबुध[18] बिबिधवृंद,
पाई चक्रताई[19] नीठि निगमं[20] बिचारेनँ ।
असुर[21] अँधारेनँ महादुसह मोति पाई,
जोति पाई जित तित सुजस उजारेनँ ॥
सोनपुर[22] पाई हरदाई[23] जरदाई[24] कर[25]-
दाई ज्यों लुकाई पाई त्रास जगतारेनँ ॥

१नाम २नाम ३आबू पर्वत के यज्ञ मे होम होते समय ४ब्रह्मा को आदि लेकर ऋत्विज् ५स्वामी ६देवता ७कहने ८ विजय का रखनेवाला ९स्वर्ग मे १० लाखों ११ सुगंधिवाले फूल १२देवताओं ने १३लोभी (यज्ञ में भाग पाने का लोभ करके) १४मानों १५उदयाचल को छोड कर १६आबू पर्वत पर सूर्य उदय हुआ ॥ ब्राह्मण और देवता आदि नाना प्रकार के समूहों ने कमलता पाई अर्थात् प्रफुल्लित हुए. और विचारे वेदं ने कठिनाई से चक्रवाकपन पाया, दैत्यरूपी अंधेरे ने कठिन मृत्यु पाई और यश रूपी उजाले ने सब ओर क्रांति पाई ॥ २२बाणासुर की राजधानी शोणितपुर है वह ललाई को छोडकर पीलेपन को प्राप्त हुआ जैसे वशीकृत किया हुआ पीलेपन को पाता है; और संसार के त्रा

अंसुमालि अतुल चुहानके उदय होत ,
उदयता पाई श्रीसदा[2]सिवके सारेनैं ॥ ७ ॥
भूँजेसे[3] भटित्र बलि बंसिनके भेजा भये,
नेजा[4] भये गाढे रुपि निगम[5] निसानके।
रंभादिक हल्लीसक[6] रुचिर[7] रचाये छाये ,
ता:नके बितान[8] देव गायनन[9] गानके ॥
दीन भव भूत दुख बंधनतैं छूटे बजे ,
फूटे बजे बाजे अब पापके प्रयानके[10] ॥
प्रानके निधान चहुवानके कढत फुरैं ,
दाहिनैं पुरंदर[11]के बाम अंग बानके[12] ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हरि१ हर२ अज[13]३की नुति[14] करी, निकसत ही चंडासि॥
सबन सिराह्यो[15] साधु कहि, प्रस्तुत[16] काज प्रकासि ॥ ६ ॥
आयुध१ बाजि२ रथा३दि सब दैन लगे सुर[17] ताहि ॥
कढ्यो जदपि[18] सायुध नृपति , तदपि[19] चित्त हित चाहि॥१०॥

॥ मनोहरम् ॥

भूमि१ दीनौं स्यंदन[20]२ तुरंग१ दीनैं पासपति[21]२,
काली१ दई जाली[22]२ रबि[23]लाली छबिकी छई ।

स रूपी तारे ने अदर्शनता (नहीं दिखाई देना) पाई, इसप्रकार चहुवान रूपी सूर्य के उदय होते ही श्रीमहादेव के साले (हिमालय का नंदी नामक पुत्र जो आबू पर्वत के नाम से प्रसिद्ध हुआ) ने उदयता (उदयाद्रिपन) पाई ॥ ७ ॥ बलि दैत्य के वंशवालों के भेजा (मस्तिस्क) भूंजेहुए सूले[3] के समान हुए, वेद[5] के झंडे[4] और नगारे दृढ हुए, रंभादिक अप्सराओं ने घूमर[6] का नाच किया, गन्धर्वों[9] के गाने की सुन्दर[7] तान के डेरे[8] तने गये, संसार के दीन प्राणी दुख के बंध से छूटे प्रसिद्ध हुए, और पाप के चले[10] जाने के फूटे बाजे बजे, प्राणों के आश्रय चोहान के निकलते ही इन्द्र[11] के दाहिने अंग और बाणासु[12]र के बायें अंग फरकने लगे, जो क्रम से शुभ और अशुभ के सूचक हैं ॥८॥
१३ ब्रह्मा १४ स्तुति १५ श्रेष्ठ १६ उपस्थित समय को १७ देवता १८ जो १९ तो भी २० रथ २१ वरुण ने २२ जाल २३ सूर्य ने क्रान्ति

बज्री[1]१ दयो बारनें[2]२ कुबेर१ दयो कंठमनि२,
प्रास[3]२ १पवमानं[4] २ जम१ जगर[5]२ दयो जंई[6] ॥
संकरनैं१ सूल२ देवमातानैं१ दुकूल[7]२सप्त-
कीलनैं[8] कृपान२ चंड चर्म[9]३ चपलामई[10] ॥
चंद्रमानैं१ चाप[11]२ कंकपत्रनकलाप[12]३चक्र[13]-
धारनैं१ चक्र२ दिनकरनैं[14]१ गदा२दई ॥ ११ ॥
द्रुघनैं[15]१ द्रुघन[16]२ पितरन१ दिय पत्रपाल[17]२,
भिंदिपाल[18]१ भैरौं२ सुभसकुन१ सरस्सई[19]२ ।
सिद्धन१ सिरस्क[20]२ बिश्वेदेवन१ दमनदंड[21]२,
काल१ करवाली[22]२ सित सानसौं भली भई ॥
बसुन१ संतघ्नी[23]२ प्रजापतिन१ परसु२ साध्य,
देवन१ समप्पी संगि२ रिपु रुधिरंधई[24] ।
माइगन१ मिलिकैं उतारे लौंन२ राई३ जंग,
जित्तनके उचित असीस१ इंदिरा[25]२ दई ॥ १२ ॥

दोहा ॥

भूखन१ नानारतनमय, सिंधुनैं[26]२ अप्पे ताहि ॥
द्वीपन१ अद्रिन[27]२ बहु दये, चारु[28] उपायन[29]३ चाहि ॥ १३ ॥
जयकेतन[30]१ दिय तुहिनगिरि[31]२ छाबिबर दर[32]१ छीरोद२॥
सनमान्यौं इम नृप सबन, महत रक्खि जय मोद ॥ १४ ॥
काम[33] पुरोहितको कियो, मुनि बासिष्ठ हित मानि ॥
गर्ग कियो सब गनकको[34], उचित रीति तँहँ आनि ॥ १५ ॥

१इन्द्र ने२हाथी३बरछी४पवन ने५कवच६जीतनेवाला७वस्त्र८अग्निने९ढाल१०बिजली११धनुष१२बाणों का भाथा१३विष्णु ने१४सूर्य ने१५ब्रह्मा ने१६मुद्गर१७लंबा छुरा१८गोफन१९सरस्वती२०टोप२१दंड देने का दंड२२शस्त्र विशेष(करवाली) शाण से तीखी हुई२३ तोप अथवा बंदूक२४ शत्रुओं के रुधिर पीनेवाली२५ लक्ष्मी ने२६ समुद्रों ने२७ पर्वतों ने२८ सुन्दर२९ भेट३० विजय की ध्वजा ३१हिमालय पर्वत ने३२ शंख३३ पुरोहित का कार्य वशिष्ट ने किया३४ज्योतिषी का कार्य गर्ग मुनि ने किया.

अभिसेचन[1] हित इक्कठे, हरि निदेस अब होइ ॥
करन लगे वैदिक क्रिया, खलन भीति[2] खलु खोइ १६ ॥ ॥

घनाक्षरी

भूपहिँ प्रथम तिल१ सरिसव[3]२ सौँ न्हवाइ१ राक्खि,
इतरासन[4]२ तदीय जयकौँ उचारि३ ।
आधिपत्य[5] ताकौँ इंद्रप्रस्थको सुनाइ४ निज-
जनता दिखाई५ हित हरख अपुब्ब धारि ॥
निजप्रकृतिनकौँ[6] परोक्षहि बिसास६ अरु,
नंदिनी[7] निर्लिपाको नरेस्वर हु बंध टारि७ ।
बिप्रनसौँ बोल्यो अब अखिल अभय होहु८,
सेवकछतैं तो खल[8] सँव न सकैँ बिगारि ॥ १७ ॥
सित१पट२ भूखन३ उपोसित[11] बसिष्ठ१सक्र,
सांति करि२ बेदी लिखि३ होमबिधिसौँ बनाइ४ ।
शर्म[12] वर्म१स्वस्त्ययन२ आयुष्य३अभय४ स्वाप,
राजित५ पढे ए गन पंच५ हि५ उचित पाइ ॥
आभरन आदिक धँरापहु[13] धवल धारि६,
हवनसौँ ठाढो रह्यो दक्खिन तरफ आइ ।
सूचक सुभासुभको ज्वलन[14] लख्यो८ सो जग्यो,
लंबी लंबी लपट लतासी लौँनी[15] लाइ लाइ ॥ १८ ॥
चिलित बिचित्र चारु चामीकरको[16] चतुर बिस्व-
कर्मा कलस बनायो सत१०० छिद्रवान९ ।
सो करि सुगंधतैल पूरन१० प्रथम तासौँ,
न्हानके निकेत[17] आनि नृपहिँ करायो न्हान११ ॥

१अभिषेक२निश्चै३सरसों४दूसरे आसन पर५उसकी६स्वामीपन७राज्य के सातों अंगों को८पीठ पछाडी(इंद्रप्रस्थ से दूर आबू पर से ही)९गाय१०यज्ञ को११उपवास किया हुआ१२शर्म वर्म से लेकर स्वापराजित पर्यन्त पांचों शान्ति पाठ हैं१३ भूपति१४ अग्नि को१५ भयंकर रहित (कोमल) १६ सोने का सुन्दर१७ स्नान के घर में

मृत्तिका अभक्त[1] गिरिशृंगकी मँगाइ तदं-
नंतर लगाई नृप मस्तक बडे विधान१२॥
बम्रीकूट[3] अग्रकी सुधाइ मिट्टी ताहीविधि,
मंत्रित मिलाइ कीनैं भावित उभय२ कान१३ ॥ १९ ॥
मिट्टी हरिमंदिरकी आनन[5] लगाई१४इंद्र[6]-
ध्वजकी लगाई कंठ१५विधिसौं बिहित[7] ठानि ॥
त्यौंही राज अंगनकी हृदय लगाई१६गज,
दंतकरि उद्धृत[8] लगाई दोहू२भुज पानि१७॥
पिट्ठि[9] तालकी[10] १८ओ नदीसंगमकी उदर१९नदी,
के दुव२तटकी लगाई पंसुलीन२०आनि ।
बारबधू[11] द्वारकी लगाई कटि[12] गारि२१गज-
सालाकी लगाई ऊरु[13] उभय२२२उचितजानि ॥ २० ॥

दोहा

गोसालाकी मृत्तिका, जानुनँ[14] ललित लगाइ२३ ॥
हयसालाकी मृत्तिका, उभय२पिंडुरिन लाइ२४ ॥२१॥
दुव२चरनन रथचक्र[15] करि, खुदी लगाई गारि२५ ॥
सब मिश्रित[16] पुनि अंग सब,दीनी२६बिहित बिचारि ॥ २२ ॥
पंचगव्य[17] घट करि बहुरि,नृपहिं न्हवाइ२७अखेद ॥
भद्रासन[18] बैठारि तिंहिं२८,पढन लगे द्विज बेद२९ ॥ २३ ॥

घनाक्षरी

च्यारि४बर्णाके ह्वाँ च्यारि४कलित[19] सचिव मानि,

---

१ अछूती २ जिस पीछे ३ उदेही (दीमक) के बामले की ४ शुद्ध ५ मुख पर ६ वृष्टि के लिये राज द्वार पर चोकोण और ध्वजा के समान लंबा स्थल बनायाजावे उस को इन्द्रध्वज कहते हैं, वहां की मिट्टी ७ लगाई ८ उठाईहुई (हाथी के दांत से उखाड़ीहुई) ९ पीठ पर १० तालाव की ११ वेश्या (गणिका)के दरवाजे की १२ कमर पर १३ जंघा पर १४ घुटनों पर १५ पहिये (रथ के पहियों से खुदीहुई)१६ सामिल की हुई १७ दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोबर इन पांचों को मिलाने का नाम पञ्चगव्य है १८ सिंहासन १९ प्रसिद्ध

विप्र१राख्यो पूरब२दै हेमकुंभ[1]३आज्य[2] धरि४ ।
खत्रिय१अवाची[3]२छीर[4]पूरनें३दै तारकुंभ[5]४;
बनिक[6]१प्रतीची[7]२दै दहीसौं३रक्तकुंभ[8]४भरि ॥
सूद्रकौं१उदीची[9]२मृत्तिका[10]घट३सलिल[11] पूरि४,
राख्यो इन च्यारि४न१दयो यौं अभिसेक करि२।
बन्हिरच्छा[12]१बहुरि सदस्यन[13] अढाइ२लगे,
सिंचन पुरोधा[14] मुनि३राजसूय मंत्र रीरि[15] ॥ २४ ॥

षट्पदी

वेदीमूल बसिष्ट होइ१पुनि आइ हुलासि हियर२ ।
सत१००छिद्रक संपातवान[16] घट करि नृप सिंचिय३ ॥
सब औषध१सब बीज२सुमन[17]३फल४रतन५दर्भ[18]६सब ।
द्वीप१अद्रि[19]२बन३सिंधु[20]४तरु[21]५न कीने हाजरि तब ॥
जल सुरभि[22]जुक्त इनकोहु जँहँ मुनि अभिसेचनें[23] मंडयो४ ।
कुसमार्जित[24] करि श्रुकवेदि द्विज नृपति कंठ रोचनें[25] दयो५ ॥ २५ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

च्यारि बरन जनें[26] कूप[27]१सरित[28]२सर[29]३नीर कलस भरि ।
सिंच्यो नृपहिं४बहोरि१कथित[30] चउ४सिंधु-सलिल[31] करि२
अद्रि झरन जल१इमहि पूरि गंगा१जमुना२जल२ ।
इतरहु[32] तीरथ१उक्त[33] भूप तिन करि सिंच्यो२भल ॥
कछु देवयोनि[34]१हरिके हुकम२दासभाव लग्गे करन३ ।

१ सोने का २ घृत ३ दक्षिण दिशा ४ दुग्ध ५ चांदी का घडा ६ वैश्य ७ पश्चिम में ८ तांबे का घडा ९ उत्तरदिशा में १० मिट्टी का ११ जल १२ अग्नि की रक्षा १३ सोलह ऋत्विजों के सिवाय यज्ञ में सामिल रहनेवाले अन्य सभासदों को भला कर १४ पुरोहित १५ रद्द करके १६ धारा सहित [घडे से पानी डालना प्रारम्भ किया] १७ फूल १८ डाभ (कुश) १९ पर्वत २० समुद्र २१ वृक्ष २२ सुगन्धिवाला २३ सींचा २४ डाभ से शुद्ध कर २५ गोलोचन २६ मनुष्यों ने २७ कुआ २८ नदी २९ तालाव के ३० ऊपर कहेहुए ३१ जल से ३२ और भी ३३ ऊपर कहेहुए ३४ विद्याधर आदि (विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः॥

किय तत्थ मुनिन१नृप गुनकथन२वेदध्वनि करि बज्जरन३ ॥२६॥

दोहा

बंदिन गन बुल्ले बिरुद१,बज्जे२ दर१नउबत्ति२॥
गान प्रसारिय१अच्छरिन२,घन आलापन घत्ति३॥ २७॥
गणाकराज मुनि गर्ग१पुनि, छिद्रित घट धरि हत्थ२ ॥
अक्खि मंत्र निगमन उचित३, सिंच्यो नृपहिं समत्थ । २८ ।

प्रायः संस्कृतशब्दा ब्रजदेशीयप्राकृतक्रियाविभक्तिका मिश्रितभाषा

॥ सचरणगद्यम् ॥

ताके अनंतर चंडासिकै ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ३ इन देवाधिदेवन अभिषेक कीनौं १ ।

अरु वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ४ इन च्यारि४अंतरात्मदेवन विशेषवपुर्विनिष्ठ बनि बैरोचनि बाणके वंशवर्द्धन बिरोधि-बालिशपुत्रनसौं बिजयकौं आशिष दीनौं २॥

अब इंद्र, अग्नि, अंतक, आशिरेश, अप्पति, अनिल, एकपिंग , ईशान , अब्जभव , आलुर्क १०इन अभ्रइंदु१०आशाके अधीश्वरन अभिषेककौं अंबु अप्पि अविरत अवनको आदेशउच्चर्‌यो३।
पीछैं धूर्जटी, धर्म, मनु, दक्ष, रुचि, श्राद्ध, भृगु, अत्रि,वसिष्ठ,सनक, सनंदन,सनातन, सनत्कुमार , अंगिरा , पुलह , पुलस्त्य, मरीचि, कश्यप१८ इत्यादि प्रजापतिन अभिषेक करयो४॥२९॥

पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः -) १ शंख २ अप्सराओं ने ३ घालकर (लगाकर) ४ ज्योतिषी ५ छिद्रोंवाले घडे से ६ कहकर ७ वेदों के८समर्थ॥) विशेष करके संस्कृत के शब्द और ब्रजभाषा व प्राकृत के क्रिया और विभक्तिवाले शब्दों की मिलीहुई भाषा ॥) ९ इस के पीछे१०देवताओं के देवता ११ बलदेव १२ लिङ्ग शरीर में रहनेवाले अंतरात्मा देव१३विशेष शरीर को धारण करके १४विरोचन के वंश वाले बाणासुर के१५बढानेवाले १६ मूर्ख १७ यमराज १८ राक्षसों का स्वामी (नैर्ऋत्य कोण का पति) १९ वरुण २० वायु २१ कुबेर २२ शिव २३ ब्रह्मा (ऊर्ध्वदिशा का पति) २४शेष (पाताल पति)२५इन दश ही दिशा के२६स्वामियों ने २७ जल २८निरन्तर २९रक्षा३० आज्ञा

तदनंतर प्रभाकर, बर्हिपद, अग्निष्वात्त, क्रव्याद, उपहूत, आज्यपा, सुकाली, अग्नि८ इत्यादिक पितृनके ओघन अभिषेककके अंबुसौं अवनीसके उत्तमांगकौं अलंकृतकरि आनंद आन्यौं५। तब श्री, शिवा, शची, ख्याति, अनसूया, स्मृति, संभूति, सन्नति, क्षमा, प्रीति, स्वाहा, स्वधा१२इत्यादि मातृगणहूनैं अभिषेकठान्यौं६॥ पीछैं कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, तुष्टि, सिद्धि१२इन धर्मकी कलत्रँनहू वसुधेश्वरकौं सिंचमान कीनौं ७॥

अरु अरुंधती, वसु, यामी, लंबा, भानु, मरुत्वती, संकल्पा, मुहूर्त्ता, साध्या, बिश्वा१०इत्यादि इतरनहूं धर्मपत्नीन पूर्व सपत्नीन सम सिंचिदीनौं८॥३०॥

बहोरि अदिति, दिति, दनु, काला, सुरहष्टा, वापुषा, मुनि, कद्रु, क्रोधवशा, प्राची, विनता, सुरभि१२इत्यादि कश्यपके कलत्रन अभिषेक कर्‌यो९।

अरु सपुत्रा१सयामा२इन बहुपुत्रके कलत्रन१; तथा सुप्रभा, जया, प्रदर्शना३इन कृशाश्वके कलत्रन२अपनैं पुत्रन सहित३अभिषेक करि विजयको आशिष उच्चर्‌यो१०॥

तदनंतर मनोरमा, भानुमती, बिशाला, बाहुदा४इन अरिष्टनेमिके परिग्रहन१; तथा कृत्तिका, रोहिणी, बिशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी १७इत्यादिक सोमके परिग्रहन अभिषेक कीनौं११।

अरु मृगी, मृगचर्मा, श्वेतभद्रचरा, हरि, पूता, कपिता, दंष्ट्रा, सुरभा, सुलभा ९इत्यादि पुलस्त्यके परिग्रहन१; तथा श्येनी, भासी,

१इस पीछे २समूहों ने३ जल से ४भूपति के५मस्तक को ६भूषित ७स्त्रियों ने ८और भी ९धर्म की स्त्रियों ने१०सोकों के समान११इस पीछे १२स्त्रियों ने १३चंद्रमा की१४ स्त्रियां अथवा स्त्रीपुत्रादि

क्रौंची, धृतराष्ट्री, शुकी ५ इन अरुणाके परिग्रहन २ अभिषेकको उत्तमांगपैं उचित अम्बु दीनौं १२ ॥ ३१ ॥

पीछैं आयति, नियति, रात्रि, निद्रा ४ ए जो लोकके संस्थान के कारण१; तथा उमा, सेना, शची, धूमोर्णा, निरति, गौरी, शिवा, बुद्धि, बलया, नंदिनी, आनृक्या, ज्योत्स्ना, वनस्पति १३ ए कालके अवयवभूत २ तिन अभिषिक्त कर्यो १३।

अरु आदित्य, इंदु, आर, इलारमण, आंगिरस, उशना, आर्कि, अगु, आहिक ९ इन नव ९ गृहन अभिषेक बिस्तर्यो १४॥

तदनंतर स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष वैवस्वत ७ इन सातौं ७ ही भूतमनुन सिंचमान कियउ१५।

अरु सूर्यसावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, रौच्य, भौत्य७इन भावी मनुनके नाम करि गर्ग मुनिनैं ही सिंचिदियउ १६ ॥ ३२ ॥

बहोरि बिश्वभुक्, बिश्वपा, चित्र, सुशांत, सुमुख, विभु, मनोजव, ओजस्वी, बलि, एकतम, अंतिक, वृष, कृत्तिधामा, दिविस्पृक्, शुचि १४ इन चतुर्दश देवपालन अभिषेक कीनौं १७।

अरु रैवंत, कुमार, वर्चा, बीरभद्र, नंदी, बिश्वकर्मा, पुरोजव ७इन देवमुख्यन१; तथा आत्मा, आद्य, असुमान्, दक्ष, पटु, प्राण, हविष, गविष्ठ, ऋत, सत्य१०इन दश आंगिरस देवन२; अरु क्रतु, दीक्ष, बसु, सत्य, काल, काम, मुनि, धृतिमान्, मनुज, रोचमान १० इन दश विश्वेदेवन सिंचिदीनौं १८ ॥

पीछैं मृगव्याध, सर्प, निर्ऋति, अजैकपात्, अहिर्बुध्न्य, पुष्पकेतु, बुध, भरत, मृत्यु, कापालि, किंकिणि११इन ग्यारह रुद्रन१; तथा भुवन, भावन, सुजन्य, सुजस, क्रतु, सुवर्णवर्ण, वाज, व्यसुत प्रसव, आवय, दक्ष ११ इन भृगु नामक देवन२ सेक कर्यो १९।

१मस्तक पर २जल ३मंगल ४बुध ५ बृहस्पति ६ शुक्र ७ शनैश्चर ८ राहु ९ केतु १०जिसपीछै ११ पहिले समय में हुए १२ होनेवाले १३ सिंचन

अरु मन, मरु, प्रान, नर, अपान, चिति, हय, नय, हंस, नारायण, दिविश्रेष्ठ, जगद्धित १२ इन द्वादश साध्यदेवन सहित१; धाता, मित्र, अर्यमा, पूषा, शक्र, अंश, वरुण, भग, त्वष्टा, बिवस्वान्, सविता, बिष्णु १२ इन बारह आदित्यन हू सेचन बिस्तरयो२०॥३३॥

तदनंतर३ एकज्योति, द्विज्योति, त्रिज्योति, चतुर्ज्योति, पंचज्योति, एकशक्र, द्विशक्र, त्रिशक्र, इंद्र, मित १० सम्मित, अमित, ऋतजित्, सत्याजित्, सुषेण, सेनाजित्, अतिमित्र, मित्र, पुरुजित्, अपराजित २० ऋत, ऋतवान्, धाता, वरुण, विधृत, ध्रुव, विधारण, महातेजा, ईदृश, अन्यादृश ३० एतादृश, अमिताशन, क्रीडन, शक्ति, सरभ, महायशा, धातुरूप, मुनि, भीम, अत्युक्त४० त्तिप, सहद्युति, वपु, अनाधृष्य, वास, काम, जय, विराट्, सुकृत ४९ इन एकोनपंचास मरुदभिदेवन सेचन रचायो २१।

अरु चित्रांगद, चित्ररथ, चित्रसेन, ऊर्णायु, अनघ, उग्रसेन, धृतराष्ट्र, सोम सूर्यबर्चा, दुराध १० तृष्णाप, कीर्णि, दिविश्चित्र, कलि, अंगिरा, पर्जन्य, नारद, वृषपर्वा, हंस, हाहा २० हूहू, बिश्वाबसु, नामूक, सूरुचि२४इत्यादि गंधर्वन सहित४; आहूती, शोभयंती, बेगवता, आप्नुवती, ऊर्क्, वेकुरि, बभ्रु, अमृतरुक्, भू, रुक्, भीरु शोचयंती१२इन दिव्य अप्सरनके समूह२ अभिसिक्त बनायो२२॥

त्योंही अनुत्तमा, सुरूपा, सुकेशी, मनोवती, मेनका, सहजन्या, पूर्णाशा, पुंजिकस्थला, ऋतुस्थला, घृताची१०, बिश्वाची, पर्वचित्ती, प्रम्लोचा, अनुम्लोचा, रंभा, उर्वशी, पंचचूडा; सामवती; चित्रलेखा; मिश्रकेशी २० सुगंधि; बिद्युत्पर्णा; तिलोतमा; अदृश्यलक्ष्मणा, आहेमा; अमिता, ललिता; सुवृत्ता; सुबाहु; सुबोधा ३० सुवपु; पुंडरीका; मुदारा; सुराधा; सुरसा; हेमा; सरस्वती; कमला; सूनृतालया; सुमुखाहं४०सपादी; वासोली; रतिलालसा ४३ इत्यादिक अपरहू अप्सरनके समूहनैं अभिषेक कीनौं २३।

१सिंचन (मस्तक पर जल डालना) २इस पीछे ३अभिषेक ४दूसरे.

अरु दैत्यराज प्रल्हादनैं; विरोचन, बाणादि दैत्यनके१; विप्रचिति; प्रमुख दानवनके२; तथा हत्य; प्रहत्य; सलिलेंद्र; सुकेशी; पौरुषेय; यज्ञहा; पुरुपादक; विद्युत्; सूर्य; व्यास; वध; रसन१२ इन आद्य राक्षसनके३; नाम करि सिंचिदीनौं२४ ॥ ३४ ॥

बहोरि सुसिद्ध, मणिभद्र, सुमन, नंदन, कंडूति, मणिमान, वसुमान् सर्वानुभति, शंख, पिंगाक्ष१० चतुर, यम, मंदरस, भीम, पद्मचंद्र, प्रभाकर, मेघवर्ण, भव्य, प्रद्योत, भूतिमान्२० केतुमान्, मौलिमान्, श्वेत, बिपुल, प्रद्युम्न, यज्ञपक्ष, वलाक, कुमुद, वलाहक, पद्मनाभ ३०, सुगंध, सुवीर, विजयाकृति, पौर्णमास, हिरण्याक्ष, शतजिव्ह ३६ इत्यादि राजवृद्धनके नाम करि मुनिराज वशिष्ठ अभिषेक ठान्यौं २५।

अरु शंख, पद्म, मकर, कच्छप, महापद्म, नील, खर्व, कुंद, मुकुंद९ इन नव९ निधिन सहित१; छगल, एकवक्र, सूचीमुख, दुष्पूरण, बिशाद, ज्वलनांगारक, कुंभपात्र, प्रतुंड, उपवीत, उलूखल,१० अकर्ण, चक्रखंड, पात्रपाणि, पांसु, वितुंड, विपुल, स्कंदन १७ इत्यादि पिशाचनकी जाति नैं२सेचन करि मोद मान्यौं २६॥

पीछैं ब्रह्मचर्यस्थित दांत सर्वज्ञ सर्वदर्शी नानावदन-बाहु-शिरोधर चतुष्पद पराट्टाल-शून्यालय-निकेतन अैसे गिरीशके गणन अभिषेक करयो २७।

अरु महाकाल१कौं रु नरसिंह२ कौं अग्गैं करि समस्त मातृगणन१; ग्रहस्कंद, विशाख, नैगमेय३ इत्यादि स्कंदग्रहन सहित२ सेचनके उचित सलिल चंडासिके सीस धरयो २८ ॥ ३५ ॥

बहोरि डाकिनी, योगिनी, खेचरी, भचरी, समेत१; गरुड, अरुण, आरुणि, संपात, विनत, विष्णु, गंधकुमारक७इन सुपर्णदेवन सेचन रचायो २९।

१आदि२ब्रह्मचर्य रखनेवाले, तप के क्लेश को सहन करनेवाले, सब जाननेवाले, सब के कार्याकार्य को देखनेवाले अनेक मुख भुज शिरों को धारण करनेवाले, चार पगोंवाले३ महादेव के४देवी के द्वारपाल (सेवक) ५ देवी की दासियों के नाम हैं ६ पक्षी ७ सिंचन

अरु अनंत, बासुकि, शेष, तक्षक, सुपर्णारि, कुंभ, वामन, अंजनोत्तम, ऐरावत, महापद्म१०कंबल, अश्वतर, एलापत्र, खड्ग, कर्कोटक, धनंजय, महाकर्ण, महानील, धृतराष्ट्र, बलाहक२०कुमार, पुष्पदंत, गंधर्व, सनस्विक, नहुष, खररोमा, शंखपाल, पद्म, कुलिक, पाणि, ३० इत्यादि नागराजन अभिषिक्त बनायो ३० ॥

फेरि कुमुद, ऐरावत, पद्म, पुष्पदंत, वामन, सुप्रतीक, अंजन, नील८इन आठौं दिग्गजन सहित१; पितामहके हंस, शंकरके वृषभ, इंद्रके अश्वपति उच्चैःश्रवा३; तथा धन्वंतरि, कौस्तुभमणि, पांचजन्यादि शंख३ त्योंहीं सुदर्शनादि चक्र, पिनाकिशूलादि शूल, बज्र, नंदकादि खड्ग, अस्त्र५ इत्यादिकन२ अभिषेक करि बिजयको आशिष दीनौं ३१ ।

अरु वृद्धशाख, धर्म, सत्य, दान, तप, यश, यज्ञ, आयु, ब्रह्मचर्य, दम, शम, चित्रगुप्त१२इन सहित१; तथा दंड, पिंगलक, मृत्यु, काल, अंतक, बालखिल्य६ इन समस्तन२ अभिषेक कीनौं ३२॥३६॥

तैसैंही संपूर्ण गौं सुरभि समेत च्यारि४ जे दिग्धेनु, तिन सेचन कियउ ३३।

त्योंही बेदव्यास, वाल्मीकि, शमन, पराशर, देवल, पर्बत, दुर्बासा, भार्गव, शुचि, याज्ञवल्क्य१० जाबालि, जमदग्नि, शुचिश्रवा; बिश्वामित्र; स्थूलकच्छ; वर्धन; अत्रि; विदूरथ; एकत; द्वित२०त्रित; गौतम; गालव; शांडिल्य; भरद्वाज; मौद्गल्य; वेदवाहन; वृहदश्व; कुटिमृड; जयजानु३०घटोदर; यवक्रीत; रैभ्य; आत्मधामा; जैमिनि; सारंगव; अगस्त्य; ढुंढु; मृदु४०मृष; इध्मवाह; महोदय; कात्यायन, कणव, वलाक, इभनंदन४६ इत्यादि मुनीश्वरन अभिषेक करि आशिष दियउ३४॥

बहोरि पृथु, दिलीप, भरत, दुष्यंत, शत्रुजित्, मनु, ककुत्स्थ, अ

१ सर्पराज २ महादेव की सूल ३ विष्णु का खड्ग ४ गायें ५ बछड़े ६ दिशा की हथनियां ७ फिर

सेना, युवनाश्व, जयद्रथ१०मांधाता, मुचुकुंद,पुरूरवा, इक्ष्वाकु, यदु, पूरु, भूरिश्रवा, अंबरीष, वृहदश्व, महाहनु२०प्रद्युम्न, सुद्युम्न, भूरि· द्युम्न, संजय२४इत्यादिक स्वर्गवासीनरेश्वरन आय अभिषेक पूर्ब· क बिजयको आशीर्वाद दयो ३५ ।

अरु पर्जन्यादि मेघ, द्रुमं, ओषधि, रत्न, बीज५ एहू समस्त हाजरि हे तिन सहित१ ; अप्रमेयात्मा पुरुष, पृथ्वी, वायु, आकाश,जल, तेज, मन, बुद्धि, अव्यक्तात्मा९ इन२हू अभिषेक निर्मयो३६ ॥३७॥

तदनंतर रुक्मभौम, शिलाभौम, पाताल, नीलमृत्तिक, पीत, रक्त, असित, श्वेत, भौम९ इन अधोलोकन सहित१; जंबू, शाक, कुश, क्रौंच, शाल्मली, प्लक्ष, पुष्कर७ इन सप्त७ द्वीपन२ औष· ध रत्न सलिलादि उचित सामग्री करि अभिषेक ठान्यौं ३७।

अरु उत्तरकुरु, रम्यक, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, हरिवर्ष, किंपुरुष, भारत९ इन जंबू द्वीपके नव९ खंडन सहित१; इ- क्षुद्वीप, कशेरुद्वीप, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्यद्वी· प, गंधर्वद्वीप, वरुणद्वीप, अभयद्वीप९इत्यादि उपद्वीपन हू सेचन बिधाय आनंद आन्यौं ३८ ॥

त्यौंहि हिमवान, हेमकूट, निषध, नील, श्वेत, शृंगवान, मेरु, माल्यवान, गंधमादन, महेंद्र, मलय, रैवत, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष· वान, विंध्य, पार्यात्र, इत्यादिक अद्रिराजन अभिषेक रचायो ३९ अरु ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम, अथर्वा४इन वेदन१; इतिहास, अरु ध नुर्बेद, गांधर्वबेद, आयुर्वेद, शिल्प ४ इन उपवेदन २ ; अरु शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छंद६ इन वेदके छहि अंग न ३ ; तथा च्यारि ४ वेद ४ ; बेद के छह६ अंग ६ । १० मीं· मांसा ११ न्याय १२ धर्मशास्त्र १३ पुराण१४ इन चतुर्दश१४ वि द्यानैं४ ; तथा सांख्य, योग, पंचरात्र, वेद, पाशुपत, कृतांतपंचक६ इत्यादिक अनेक शास्त्रन५हू बिजयको आशिष लगायो ४०॥३८

१वृक्ष २ थे ३ परमेश्वर४ प्रकृति ५ पाताल ६ करके ७ पर्वतराज

बहोरि गायत्री, गंगा, गांधारी, नारि४ इन१; तथा देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पन्नग, ऋषि, मनु, गो, देवमाता१० देवपत्नी, द्रुम, नाग, दैत्य, अप्सरोगण, अस्त्र, शास्त्र, राजा, बाहन, औषध२० रत्न, काल, तदवयव, स्थान, पुण्यायतनन, जीमूत, तद्विकार२७ इन२; तथा इहाँ कहे रु न कहे तिन समस्तन३ शत्रुशातनको आशिष दीनौं४१।

अरु लवणोद, क्षीरोद, घृतोद, दधिमंडोद, सुरोद, इक्षुरसोद, स्वादूद, गर्भोद८इन समुद्रन१; तथा इहाँ अधिकारी च्यारि४सागर इनहू समस्तन२ सुंदर स्वस्व सलिल करि अभिषेक कीनौं ४२॥

त्यौंही पुष्कर, प्रयाग, प्रभास, नैमिष, ब्रह्मसर, गयशीर्ष, कालोदक, नंदिकुंड, उत्तरमानस, स्वर्गमार्गप्रद१० पंचनद, भृगुतीर्थ, अमरकंटक, कलिकालाश्रम, तृणबिंद्वाश्रम, गोतीर्थ, अग्नितीर्थ, स्वर्गतीर्थ, जंबूमार्ग, तंडुलिकाश्रम२०कपिलतीर्थ, वातिक, खंडिक, महासर, आगस्त्य, कुमारीतीर्थ, अंगद्वार, कुशावर्त्त, बिल्वक३० कनखल, सुगंधा, सुधारा, धराकुंभा, शाकंभरी, भृगुतुंग, कुब्जाम्रक, कपिलाश्रम, चमसोद्भेदन, विनशन४० अग्नितुंग, मोच, अश्वगंध, कालंजर, केदार, रुद्रकोटि, महालय, बदर्याश्रम, नंदा, सोमतीर्थ ५० सूर्यतीर्थ, इंद्रतीर्थ, आश्विनतीर्थ, बारुण, बायुतीर्थ, कुबेरतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ शिवतीर्थ, यमतीर्थ, अनलतीर्थ ६० बिरूपतीर्थ धर्मतीर्थ, अप्सरस्तीर्थ, ऋषितीर्थ, वसुतीर्थ, साध्यतीर्थ, मरुतीर्थ, आदित्यतीर्थ, रुद्रतीर्थ, आंगिरस्तीर्थ ७० विश्वेदेवतीर्थ, भृगुतीर्थ, तथा प्लक्षप्रस्रवण, बसुपुत्र, शालिग्रामसर, वाराहसर, मानस, कामाश्रम, त्रिकूट, चित्रकूट ८० पूर्वक्रतुसार, विष्णुपदसर, कापिलतीर्थ, वासुकितीर्थ, सिंधुत्तम, तपोद्वार, सूर्पारक, कुंभक, पुंडरीक

१ नाश करने का २ अपने अपने ३ जल ॥

गंगासागरसंगम ९० सिंधुसागरसंगम, कुंभावसुंद मानसर, बिंदु-सर, स्वच्छोदकसर, धर्मारराय, फल्गुतीर्थ, अविमुक्त, लौहित्य, वदरीपावन १०० सप्तर्षितीर्थ, बह्नितीर्थ, पुरायवस्त्रापथ, मेष, छागलेश, पुष्पन्यास, हंससद, अश्वतीर्थ, कारणाश्व, मणिमंथ ११० बिविका, इंद्रमार्ग, स्वर्णबिंदु, आहल्यक, ऐरावत, ऐरावती, समुद्रेद, भोगयश, करवीर, नागम१२०वणिक, पापमोचनिक, ऋण मोचनिक, उद्वेजन, संपूज्यसर, देवब्रह्मसर, सर्पि, दधि,१२८इत्यादिक उक्त सम्पूर्ण, तीर्थन अभिषेक ढान्यौं ४३।

अरुगंगा, ल्हादिनी, पावनी, सीता, चक्षु, सिंधु, नर्मदा, सुप्रभा, कांचनाक्षी१०बिशाला, मानसी, ल्हदा, सरस्वती, ओघनादा, सुबेशा, बिमलोदका, शिप्रा, शोणा, तर्ष२०सरयू, गंडकी, अच्छोदा, बिभागा, चन्द्रभागा, इरावती, वितस्ता, देविका, रंभा, अकेशा ३० देवन्हदा, इक्षुमती, कौशिकी यमुना, गोमती, धूतपापा, वाहुदा, निर्बिंध्या, तृतीया, लोहित४०देवस्मृति, बेदमाता, बेदघुर्घरदा, पर्णाशा, वंदना, सदानीरा, कुमुद्वती, पीता, चर्मरावती, धूमा ५० विदर्भा; वेणुमती, अवंती, कुंती, सुरसा, पलाशिनी, मंदाकिनी, दशार्णा रेवा, तपती ६० पिप्पली, श्येनी, करतोया, पिशाचिकी, चित्रोपला, चित्रवर्णा; मंजुला; वाकुला; अमला; शक्तिमती ७० सिनीवाली, मदिरणी; तृपिका; अक्रपू; तापी;पयोष्णी असिता; निषधावती; वेणा, वैतरणी ८० भीमा; मंदरा; कुहू; तोया; महागौरी; दुर्ग्गति, मंगला; गोदावरी; भीमरथी; कृष्णावर्णा ९० तुंगभद्रा; ऋषिकुल्या; वात्या; कावेरी;कृतमाला; ताम्रपर्णी; पुष्पभद्रा; उत्पलावती; नृसमा; ऋषिकुल्या १०० इक्षुकी; त्रिदिवालया; लांगुनी; बंशधीग; जंबू; सुकुलावती ऋषिका;बरवेगा, मंदगा;मंदबाहिनी११०क्षया; दया; व्योमा, कालबाहिनी,कंपला; विशाला; करतोया; सुवाहिनी; ताम्रा;अरुणा; वेत्रवती;१२०सुभद्रा;अश्वती; अद्रिका; अद्रिमा;हिरगम

र्यी; आर्यगा, सोपला; आभासी; सन्ध्या१३०बडवा; महेंद्रबाणी;
ला; मालिका; बलयावती; नीलोद्धतकरा; वाहुदा; बनवासिनी;
दा; परनंदा;१४० सुनंदा; बसुबासिनी१४२इत्यादिक समस्त नदी
अभिषेक करि विजयार्थ बखान्यौं४४ ॥ ३९ ॥
ताके[1] अनंतर इंद्रदत्त[2] गज१वरुणदत्त[3] हय२ए नरेशके आरोहणके उ
चित उहाँ आनि इनहूकौं अभिषिक्त बनाये।
अरु बंदीजननके बिबिध छंदन बैरिनसौं बिजयके बिबर्द्धक बिरुद
लगाये ॥
ऐसी रीति राजमान रावराजेंद्ररामसिंह रावरे परपुरुष चंडासिकैं
अर्बुद अंचलपैं अभिषेक भयो ॥
अरु रथारूढ होतही चौरके[11] अनुकार असुरनके अनीकमैं[12] अगारीही
आतंक[13] गयो ॥ ४० ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ चण्डास्य
भिषेचनं द्वादशो१२मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः सप्तत्रिंशः ॥ ३७ ॥
प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा
दोहा ॥
इम ताकौं अधिराजपन, दै सुर मुनिन दुरूह[14] ॥
पिल्ल्यो[15] भूप सु खलन पर, जंपि[16] विजय जसजूहँ[17] ॥ १ ॥
जयरथ चढि चंडासि जब, अभिषेचन लहि अंक ॥
चापहिँ टंकारत चल्यो, असुरन हनन असंक ॥ २ ॥
गीतिका ॥

१तिस पीछे २ इंद्र का दियाहुआ हाथी ३ बरुण का दियाहुआ घोड़ा ४ चढने को ५ बढानेबाले ६ स्तुति ७ शोभायमान ८ हे रामसिंह ९ पर्वत पै १० हलकारे का ११ अनुकरण (नकल) करनेवाला १२ सेना में १३ भय ॥ श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चंडासि के अभिषेक होने का बारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥ आदि से सेंतीस मयूख हुए ॥ ३७ ॥ १४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १५ भेजा १६ कह कर १७ समूह

प्रभु देव बिप्रन पुजिकैं चहुवान संगरपैं[1] चढ्यो,
विजयावलोकनको[2] उछाह समस्त लोकनमैं बढ्यो ॥
उततैंहु आत्मज[3] बानके चहुवानके सिर चंक्रमे,
अतिनिम्न[5] ढाल बिसाल ज्यौं फनजाल आलुंकके[6] नमे ॥ ३ ॥
जिम तेलभाजन[7] बर्तिका रसना[9] हजार उभे२००० कढी,
बलि[10] होत दंतुलि चीर पीर बराहके सिरमैं बढी ॥
मृत[11] ज्यौं लहैं पुनि प्रान अद्रिन[12] संघ[13] जंगम[14] यौं भये,
नभसिंधु नीर उडान लै पवमान[15] लै घन ज्यौं गये ॥ ४ ॥
कमठेसको उर त्यौं भटचारनकी अधिश्रयनी[16] भयो,
प्रजराव ताव अलाव कालिक[17] पूपिका[18] जिम पक्कयो ॥
धरि कर्णिकों[19] मुखमैं भये जड दिक्करी[20] करि चिक्करी,
पलचार[21] के[22] हुव संग गिद्धनि१ कंक[23]२ फेरव[24]३ फिक्करी[25]४ ॥५॥
सलभाऽवरोधक[26] खेत लट्टत आनि कानफटा[27] लगैं,
तिम भूत१ रक्खस२ डाकिनी३ रु पिसाच४ पातरिकौं पगैं ॥
ग्लह[28] अक्षदेविनको[29] मनोरथ हारिपैं बढतो रहैं,
इम आप कौतुक काज नारदहू खरे महती[30] गहैं ॥६॥
जिम रंक कार्णकपर्दकौं[31] सिवैं[32] मुंड संचयकौं चले,

---

१ युद्धपैं २विजय के देखने का ३पुत्र ४सेना में ५बहुत गहरी और मोटी ढाल के समान ६ शेष के (यहां फनजाल के कहने से सामान्यसर्प को छोड कर शेष नाग का ग्रहण है) ७ दीपक में वत्ती होवे जैसी ९जिह्वा १० पुनि ११ मराहुआ शरीर फिर प्राण धारण करके चलने लगे ऐसे १२ पर्वतों के १३ समूह १४ चलनेवाले १५ पवन को लेकर १६ चूल्हा १७ कलेजा १८ पुआ (मालपुआ) १९ सुंड का अग्र भाग २० दिशा के हाथी (दिग्गज) २१ मांस खानेवाले २२ कितने ही २३ ढींच, पक्षी विशेष २४ स्याल २५ फेकरी २६ टीडियों को रोकनेवाला कनफँटा खेत लाटते समय अपना पात्र (खप्पर) भराने को आलगता है. इसीप्रकार भूतादिक भी पात्र भरने को प्राप्त होते हैं २८ द्यूत में (जुआ खेलने में) २९ द्यूत खेलनेवालों का ३० नारद की वीणा का नाम है ३१ फूटी कोडी को ३२ महादेव मस्तक इकट्ठे करने को

द्विज मिष्ट खावन बीर बावन५२ छिप्र[1] त्यौं पहुँचे भले ॥
जिम इंद्रजालिकके[2] कुतूहल बाल[3] जुग्गिनि यौं भजी,
ससिसूरनैं[4] तम भाविके भ्रम खेहकी चिक[5] सी सजी ॥७॥
फिर कुमित्र[6] ज्यौं ब्रह्मंड खप्परैं[7] मेलकौं तजनैं लगे,
जिम तेयको[8] लखि क्रेय[9] ऊरुज[10] भीरु[11] यौं भजने लगे ॥
भरि दंड ज्यौं खल कैदनैं ध्वजदंड अंबर[12] यौं खुले,
अधमर्ण[13] ज्यौं लखि उत्तमर्णहिं[14] चक्क[15] चक्किन जी डुले ॥८॥
नृप बार ज्यौं द्विज[16] बार यौं खँ[17] छई बिमाननकी तती[18],
नहिं सूर देइ दिखाव ज्यौं बिनु नाह आननको[19] सती ॥
चहुवानके रथचक्र ह्वाँ पवमानके[20] गुटके भये,
घमसानके[21] महिमान[22] बानन[23] बानके सुत बिंटये ॥९॥
उततैंहु सम्मुह वे अदेवहु[24] भट्टके घन ज्यौं झुके,
पय[25] देत ज्यौं नट पट्टरी धरनी अधोबिल[26] यौं धुके ॥
कुलटा निसामुख[27] गेहतैं जिम तेग[28] केकनपैं कढी,
बनसी[29] कि[30] मीननपैं[31] कितेकन मुच्छ नैंननपैं चढी ॥१०॥

---

१ शीघ्र २ इन्द्रजाली का तमाशा देखने को ३ बालक भागते हैं ऐसे ४ चन्द्रमा और सूर्य ने होनेवाले अंधेरे के भ्रम से ५ पड़दा ६ खोटे मित्रमिलाप को छोड़ देते हैं ऐसे ७ ब्रह्मांड के दोनों कटाह ८ चोरी को देख कर वस्तु मोल लेनेवाला १० बनिये भागें ऐसे ११ कायर भागने लगे, कैद भुगत कर दुष्ट पुरुष दंड से छूटते हैं ऐसे ही ध्वजा भी दंड से छूटी [यहां दंड शब्द में श्लेष है] १२ आकाश में १३ ऋण लेनेवाले (धुर) का जीव १४ ऋण देनेवाले (बोहरे) को देख कर डुलता है ऐसे ही १५ चकवा चकवियों का जी डुले १६ वशिष्ठ ऋषि के द्वार पर १७ आकाश में १८ पंक्ति १९ मुख (विमानों की पंक्ति के कारण सूर्य दिखाव नहीं देता, जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति विना अन्य को मुख नहीं दिखाती) २० पवन के २१ युद्ध के २२ पाहुने २३ बाणों से २४ दैत्य भी २५ नट के पग देने से पटड़ी झुके ऐसे २६ भूमि और पाताल २७ सायंकाल (सायंकाल के समय से ही कुलटा स्त्री अपने घर से निकसे इसप्रकार) २८ तरवार कितने ही लोगों पर कढी २९ मच्छी पकड़ने का कांटा ३० किंधूं ३१ मच्छियों पर लगे जैसे कितनों की

कुनरेस सासन[1] ज्यों सरासन[2] जीविका करखैं किते,
बुंधका[3] बिपत्ति समान प्रासन[4] पिष्ठिकैं[5] परखैं किते ॥
तिय ज्यों हिंडोरन अद्रि[6] ओरन भिंदिपालनपैं[7] चढे,
भुज जोर जोरन जंग ओर[8] कुराज्य चोरन त्यों वढे ॥ ११ ॥
वृखभ[9] अंस कूबर बंस तुल्ल्य गदा किते करपैं रही,
अहि गारुरू[10] कर ज्यों कितेकन पास[11] प्रेरनकौं गही ॥
मधुसेस[12] छात किरात[13] ज्यों खल ओठ लेहनके[14] करैं,
जिम गैनतैं[15] उल्लकां[16] कितेकन नैनत चिरगी झरैं ॥ १२ ॥
हलतैं कि फारक फाल[17] दंत कुदाल केकनके कढे,
नृप मूढतैं कि अजान[18] मान कितेन कान बडे बढे ॥
जिम बेल[19] बालन जार यों करि सिंह सब्द डरावते,
बनितानके[20] मन मंत्र[21] ज्यों अभिमान अंग न मावते ॥ १३ ॥
कुबंधू[22] बिपत्ति प्रयास[23] ज्यों जिन्ह नास सास बज्यों करैं,
छिरकों[24] दयैं तृनकूर्च[25] ज्यों जिनके तनूरुहैं[26] उब्भरैं ॥

मूछें नेत्रा मं लगीं १खोटे राजा की आज्ञा जीविका को खैंचती है ऐसे२धनुष की जीविका[प्रत्यंचा]को कितनेक खींचते हैं ३पंडित ४बरछी ५मेजकर ६पर्वत के टुकड़े (पत्थर) ७गोफनों (पत्थर फैंकने का चमड़े का बनाया हुआ यंत्र) पर ८ युद्ध की तरफ़ ६ बैल के कंधे के ऊपर की कूधड (ककुद) और बाँसे के हाड के समान१०कालबेलिया के हाथ पर सर्प रहे इस माफिक११पासी(फंदा) चलाने को१२मुशाल के म्वाली छाला को भील लोग चाटते हैं ऐसे १४ओठ चाटते हैं १५आकाश से १६ अंगीरा पडे ऐसे१७हल के फाल्या के समान कितने ही कुदालदन्तों (जिसके दंत मुख से बारह निकले हुए होवें उसको कुदालदन्ता कहते हैं) के दांत कढे १८मूर्ख राजा से अजान (निर्गुणी) मनुष्य का सम्मान बढे ऐसे उनके कान बढे १९ बाग में अपना संकेट स्थान शून्य करने के अभिप्राय से जार पुरुष जैसे सिंह का शब्द करके बालकों को डराता है ऐसे ही वे दैत्य भी सिंह शब्द करके डराते हैं. २० स्त्रियों के मन में सलाह (गुप्तवार्ता) नहीं ठहरती ऐसे उन दैत्यों के अङ्ग में अभिमान नहीं समाता २२ खोटी स्त्री २३ आपदा के परिश्रम में नकसासी होजाती है ऐसे उन दैत्यों के नाकों में श्वास बजता है २४ छींटा देने से २५ चारा का पूला फूलता है इसप्रकार २६ रोम उभरता है

पट[१] टारि चंचल नारि नैंन कि लंबजीह कढैं दुरैं,
कुच कंप पी[२] कर संगसौं रिसतैं रदच्छद[३] यौं फुरैं ॥ १४ ॥
बिकराल रीढ[४]कैंसौं लगी जिम बंक्रि[५] बक्रितैं[६] बंफैंनी[७],
इक काणा[८] अंधन ओघमें[९] इम जीत बुल्लत अप्पनी ॥
गृह छत्ति थप्पिन मारि यौं पय डारि भू धमकावते,
पयं[१०] भत्त बालक हत्त ज्यौं खल चंड चोट चलावते ॥ १५ ॥
तरु तालके दलै[११] नाल ज्यौं बिकराल यौं नखरांवली[१२],
सलभांवली[१३] सम जे छवावत दांव[१४] लीन सरावली[१५] ॥
चहुवानपैं इम दैत्य दुष्टन सस्त्रको घनैं[१६] सो रच्यो,
अति जोरसौं दुँहुर ओरतैं घमसांन[१७] घोर उहाँ मच्यो ॥ १६ ॥
मुर[१८] सज्जि चाप[१९] कलाप[२०] कीलकौं[२१]जिव्ह मुद्गरसौं लस्यो,
तरवारिसौं बकें[२२] रारिपैं धकें[२३] धारि सम्मुह उच्छरयो ॥
तँहँ धूम्रकेतन चक्र जंभें[२४] प्रलंबें[२५] तोमर[२६] पिल्लये[२७],
रहदतुंद चालुक काणा नैसृंग[२८]सौं सिलोच्चय[२९] ठिल्लये ॥ १७ ॥
गहि सूल सूलिक तालहस्त सु तालैं[३०] हस्तहि लै जुरयो,
असि ढालसौंहिं कराल आनन कालैं[३१] बानिक बिप्फुरयो ॥
इखु[३२] चापसौं बक केसि धेनुक ओ अलंबुस उज्झले,
खल कालजिव्ह रु रीतिलोचन पत्रपालैं[३३]हि लै चले ॥ १८ ॥
अर्ध[३४]अद्रि नक्र हिडंब संबर व्योमैं[३५] अद्रिनतैं लरे,
किरमीर पीठ अलायुधादिक पास पट्टिसैं[३६] लै खरे ॥

१ वस्त्र का दूरकरके २ पति के हाथ लगने से ३ ओठ ४ पीठ का हाड ५ पंस्रुली ६ बांकी ७ नेत्रों की भांपनी ८ एक कांणा पुरुष ९ अन्धों के समूह में १० दूध भात पर बालक के हाथ चलें ऐसे ११ ताड वृक्ष के पत्ते की नाली के समान १२ नखों की पंक्ति १३ टीड्डियों की पंक्ति के समान १४ दावाग्नि में लीन हुए १५ बाणों की पंक्ति छावते हैं १६ मेघ १७ युद्ध १८ दैत्य का नाम है १९ धनुष २० भाथा २१ दैत्य का नाम है २२ बकासुर २३ क्रोध २४ जंभासुर ने २५ लंबा २६ भाला २७ चलाया २८ भिंदिपाल (गोफण) से २९ पर्वत ३० ताड का वृक्ष हाथ में ले कर ३१ यमराज के वेश से ३२ बाण ३३ लंबा छुरा ३४ पाप का पहाड़ ३५ आकाश में ३६ कटारी

बक भौम बच्छ गहैं गदा सकटाख्य सक्ति गहैं सज्यो,
इतिआदि आसुर संघको[1] बहुसंघ सस्त्रनको बज्यो ॥ १९ ॥
चहुवान भूपहु चौंपसौं[2] क्रमतैं खलायुध कट्टिकैं,
सबकैं दये छत[3] सूर संतत[4] दाव उद्धत दट्टिकैं ॥
मुर चाप कट्टत संगि लै पटकी नरेश्वर सीसपैं,
जिम दंत तुट्टत केहरी करसूक[5] बाहत रीसपैं ॥२०॥
वह संगि आवत भूप लै मुर बच्छ[6]मैं उलटी दई,
न जरूरही बड दानको फल होय तो महिमा गई ॥
इति घाय मोहितें घुम्मिकैं मुर भुम्मि चुंबनकौं लग्यो,
अति छोह[10]सौं पुनि द्रोहसौं तजि मोह[11] सोवत सो जग्यो ॥ २१ ॥
नृप मग्गप जिम इल्वला[12] सर पंच५ यौं बहुरयौं दये,
तिन अर्धचंद[13]नैं पंच सेखर[14] चंद्रसेखर[15] से भये ॥
इक प्रानगाहक[16] बान लै उर फेरि हू मुरकै दयो,
तिंहिं घाय जो करि हाय स्यंदन[17] छोरि अंबर[18]मैं गयो ॥ २२ ॥
बनि कल्प[19] वारिद[20] दुष्ट जो बरख्यो सिला पवि[21] बिज्जुरी,
तब भूपके हिय मंत्रसौं पवनास्त्र प्रेरनकी फुरी ॥
पुनि मेरुकूटहिं तोरिबे जिम यो सदागति[22] निक्खर्यो,
तिंहिं जोरसौं घनघोर अंबर ओरको मुरको नस्यो ॥ २३ ॥
उडु[23] ज्यौं बहै तब दिठ्ठि आत बहोरि बानन बिंधयो,
यह मेह[24]को फल सेह[25]को खल देहको खल[26]को भयो ॥

१समूह२उत्साह से३घाव४निरंतर५सिंह६नख७बरछी८छाती में९मूर्छित१०क्रोध से११मूर्छा१२मृगशिर नक्षत्र के ऊपर छोटे पांच तारे हैं उनका नाम इल्वला है, भावार्थ यह है कि चहुवान राजा रूपी मृगशिर पर इल्वला रूपी फिर पांच बाण दिये१३वे अर्धचन्द्राकार पांचों बाण१४शिरोभूषण१५महादेव के हुए अर्थात् महादेव के मस्तक में अर्धचन्द्र भूषण रूप है ऐसे ही ये पांचों बाण चहुवान के शिरोभूषण हुए १६ प्राण लेनेवाला १७ रथ को १८ आकाश मे १९ प्रलय का २० मेघ२१वज्र२२पवन२३तारा के समान वह (मुर नामक दैत्य) २४इस मेघ रूपी बाण वृष्टि का यह फल हुआ२५सेली(सल्लक)के समान अर्थात् सहेली के शरीर पर सूलें होवें ऐसे२६शरीर की खोली(मृतक शरीर)मुर दैत्य की

मुरकी[1] अनी मुरकी[2] अनीर[3] रही अनीर[4] बिचारि कैं,
तब कीलजिव्ह हु मारि मुद्गर व्हाँ जुस्यो किलकारिकैं ॥२४॥
घन तास स्यंदन[5] वाजि संजुत प्रास[6] दै नृप कट्टये,
दितिजात[7] छत्तिय पत्रवाह[8] पचास५० पन्नग से दये ॥
नर अश्वतैं[9] तिय ज्यौं मृगी खल इक्क१बेरहिमैं छक्यो,
इम भूप अंचत मासुरी[10] लखि आसुरी[11] दल ओदक्यो[12] ॥ २५ ॥
हयबग्ग लै तब अग्ग व्है बंक[13] खग्ग झारिय आनिकैं,
तिहिं तोरि भूपहु सत्थपैं पटकी गदा पहिचानिकैं ॥
गिरिकी गुहा[14] सन गैरिकौं[15] जिम रत्त[16] झारत नक्कतैं[17],
बक रोकि दुल्लभ प्रानकौं कढिगो चलाचल[18] चक्कतैं[19] ॥२६॥
इत धूम्रकेतन चक्र मारि तुरंग भूपतिके हनैं,
रथ तोरि सूतहिं[20] मारि त्यौं उरमैं कलंब[21] दये घनैं ॥
[22]अधिको दिपैं मनि सानतैं जिम बानतैं चहुवान व्है,
रथ ओर लै रन रोर[23] मंडिय जेठ भीखन[24] भान व्है ॥ २७ ॥
परपिण्ड कट्टत ज्यौं महालय[25] यौं अरी अरि कट्टिकैं,
छंद[26] छेदि लस्तक[27] भेदि मस्तक खेदि सो१००दिय दट्टिकैं ॥

---

[1]सेना पीछी [2]मुड़ी (फिरी) [3]पराक्रम रहित होकर और बाकी रही उसको भी [4]पराक्रम रहित जान कर कीलजिव्ह नामक दैत्य युद्ध करनेलगा५ रथ (मेघ के समान उसके रथको) घोडों सहित ६ भाला ७ दैत्य की ८ बाण ९ कामशास्त्र में कहेहुए अश्वजाति के पुरुष से मृगी जाति की स्त्री एक समागम में ही छक जाती है ऐसे१०मूंछ को११असुरों की सेना १२भय भीत हुई१३बकासुर ने १४पर्वत की गुफा से१५ गैरों [लाल रंग का धातु] १६ रक्त १७ नासिका से१८चंचल१९सेना से२०सारथी को२१बाण२२शाण से घिसाहुआ मणि अधिक शोभायमान होता है ऐसे बाणों से(जातिवाचक होने के कारण यहां बाण शब्द एकवचन रक्खागया है)२३भयंकर२४भयंकर सूर्य होकर२५महालय श्राद्ध में पर अर्थात् बाये हाथ की ओर के अन्तिम (जो पड़दादे के नाम का) पिंड होता है उसको दादे और पिता इन दोनों के नाम के पिंडों में मिलाने के लिये बराबर के दो टुकड़े करते हैं इसप्रकार प्रत्येक शत्रु के बराबर टुकड़े करके२६बाण से२७धनुष का मध्यभाग.

छकि धूम्रकेतन चुक्कि चेतन दगड केतनको गह्यो,
जिय जात केतनसौं हु हेतनें छोरि प्रेत नभो रह्यो ॥ २८ ॥
जिम इभ्य ऊंदुरुज मौषकाभिध इक १ उंदुरतें बन्यौं,
खिल स्वासके लवतैं सु पै तजि मोहँ यो पुनि उप्फन्यों ॥
प्रतिकूल प्रानन मोति मूल हन्यौं त्रिसूल उठायकैं,
उर पीनमैं फन तीन ३ के अहि ज्यौं लग्यो वह आयकैं ॥ २९ ॥
जिम कट्टि अंगुरि सेल्लकी बिल दौरि दंसहिं यौं गयो,
यह घाय पाय घुमाय रायहु काय डारनकौं भयो ॥
कछु बोहतैं अति मोहँ आगम चंडिका नृप चिंतई,
ततकाल जानि सुभक्तपै पहुँची बडे रय पब्बई ॥ ३० ॥
रु कह्यो न होवहु पुत्र बिब्भल तू बिजै लहिहै बँच्यो,
रनघाय घुम्मन ही बिरंचन धर्म बीरनको रच्यो ॥
तव हत्थ दुष्टन मिच्चुहै कबहू न होहिं सु अन्यथा,
नृप कौसलेश्वरतैं हि धुंधन और देवनतैं जथा ॥ ३१ ॥
तव संग मैं रहिहौं सदा निज भक्त भावित संकरी,
इम आक्खि दिन्न मिटाय घायहु देखि दिठि सुधाभरी ॥
नृपहू कह्यो असु आसु पूरिय अंब तैं यँहँ आनिकैं,

१ध्वजा के दंड को पकड। २जीव जाता ही था परन्तु ध्वजादंड से हृत नहीं छोड
कर प्रेत नहीं हुआ(मरा नहीं) ३ धनवान् ४ बनिया ५ मूषक नामवाला (इस
की कथा कथासरित्सागर में है) ६ बाकीके लेशमात्र स्वास रहे तो भी ७
मूर्छा को छोड कर ८ प्राणों का लेनेवाला ९ मृत्यु का मूल १० पुष्ट छाती में
११सर्प १२फन्दे को १३सेली नामक पशु (सेहली) बिल में घुस जाता है ऐसे
१४विदारण करके १५कवच को १६राजा चहुवाण भी शरीर छोडने को हुआ
१७वार होने के १८मूर्छा आने से पहिले १९चहुवाण नामक राजा ने देवी
का स्मरण किया २०तुरन्त २१पार्वती (हिमालय की पुत्री) २२ और २३
बाकी रहाहुआ विजय २४ ब्रह्मा ने वीरों का धर्म युद्ध में घावों से घूमने का
ही रचा है २५ मृत्यु २६ मिथ्या २७धुंधुमार की मृत्यु जैसे अयोध्या के राजा
के हाथ से थी और देवताओं के हाथ से नहीं थी ऐसे २८ प्राणों को २९
शीघ्र पूर्ण किये ३० हे माता तेने

मम बंस तोकँहँ आसपूरिनि[1] अक्खिहै[2] यह मानिकैं ॥३२॥
तबतैं उमा[3] यह राम भूपति आसपूरिनि अँक्खिये[4],
चहुवान चंडिय चिंति यों छतहीन[5] ह्वै हुलस्यो हिये ॥
परनारिके[6] दृगतैं कटाच्छ दुर ओरतैं सर यों बहे,
जिम दुस्थके[7] घरपैं पलास[8] ति[9] छाय अंबरपैं[10] रहे ॥ ३३ ॥
इम राय[11] पाय अभेद्य[12]काय बिहाय[13] करम्मल[14] गज्जयो,
धमि संख अग्ग बढाय स्यंदन[15] तोभ[16] दुष्टन तज्जयो[17] ॥
उर धूम्रकेतनकै दयो इक्क१ रोप[18] ऐंखन तानिकैं,
खल मर्म लग्गत मूढ भो तँहँ जंभ जुज्झिय आनिकैं॥३४॥
बिरच्यो प्रलंबहु जंग संगहि सेल दोउन२ मुक्कये,
नृप वार टारि दुरओरके सर जोरके दुवर[19]घाँ दये ॥
मधुजाल[20]मैं सरघावली[21] जिम जात दंसेन[22]मैं दिपे,
हुव मूढ[23] वे दुवर२क्यों रहैं नृप तूनके[24] निकसे छिपे ॥ ३५ ॥
कछु कालमैं तजि मोह[25] जंभ प्रयोग आनलको[26] कर्‍यो,
वह ज्वाल जाल कराल भूपहु मुक्कि वारुन[27] उद्धर्‍यो ॥
खल तत्थ पार्वत[28] प्रेर्‍यो पवि[29] अस्त्रसौं तिंहिं टारिकैं,
किय श्राद्धको[30] जजमान जंभहिं बान बिंसति[31] मारिकैं।३६।
पुनि फैंकि इक्क१ भुसुंडिका[32] उर जंत्रकेतनकै दई,
वह मर्म लग्गत दुष्टनैं गति चर्म[33] चाटककी लई ॥

---

१ आशापूरण २ देवी ३ हे राजा रामसिंह ४ कहते हैं ५ घावरहित ६ गणिका स्त्री के नेत्र से ७ दरिद्री के घर पर ८ ढाक के पत्ते छाये होते हैं ऐसे ९ ते (वे दैत्य) १० आकाश में छागये ११ राजा चहुवाण १२ कटे नहीं ऐसा शरीर १३ छोड कर १४ मूर्छा को १५ रथ १६ दुष्टों के समूह को १७ तर्जना की (डराया) १८ बाण १९ दोनों तरफ २० मुवाल के छाते में २१ सहत की मक्खियों की पंक्ति जावे जैसे २२ कवचों में शोभायमान हुए २३ मूर्छित २४ चहुवाण के भाथा से कढेहुए २५ मूर्छा २६ अग्नि अस्त्र का २७ राजा ने भी वरुणास्त्र छोड कर २८ पर्वत अस्त्र २९ वज्रास्त्र से ३० श्राद्ध में जजमान को वारंवार सव्य अपसव्य कराते हैं ऐसे ३१ बीसों ३२ अग्नि यन्त्र (बंदूक) अथवा लोंहगी लकड़ी (शस्त्र विशेष) ३३ चमगीदड़ (चागल नामक पक्षी जो ऊँधे मुख लटका करते हैं)

उलट्यो अधोमुख ह्वै तहां चउ४वान दारुन दट्टिकैं,
नृपनैं सिलोच्चय शृंगसो सिर जंभको लिय कट्टिकैं ॥३७॥
लखि काल भूपहिं आसुरी दल हंत हारवकैं लज्यो.
कट्टवाय सज्जनकौं प्रलंबहु ठुंड पादप सो भज्यो ॥
भयकार भो वह रंग अंगन देखि देवहु नाँ सकैं,
कटि काय सायक पायके फटि घाय सोनित उव्वकैं॥३८॥
भट भोरमैं जँहँ वीर बावन५२ हैं खुरी करते फिरैं,
मदअंध मल्लनके समान कबंध बन्धनसौं भिरैं ॥
पँननारि जुब्बनमत्त ज्यौं चउसट्ठि६४ नच्चत रत्त ह्वै,
लहि सीधु लोटत ग्राम्य ज्यौं गज बाजि दारित गत्त ह्वै॥३९॥
अति उच्च छत्रिन अंड ज्यौं कहुँ कुंभ हत्थिन उत्तरैं,
जँहँ प्रेत लोहित पानपैं उपदंस कालिकके करैं ॥
कहुँ सूर डाकिनिकौं धपाय रु स्वीय हीय निकारिकैं,
द्विजकौं जिमाय रु लांगली सम देत धीहिंतैं धारिकैं ॥४०॥
कहुँ कढ्ढि अंत्रनैं जाल भैरव कंठ डारत माल ज्यौं
कहुँ भ्रत भ्रंमहँ भोंरि खात वनाय बानिक बालज्यौं ॥
जिम छुड्डिका वपु कड्ढि यौं गडि जात गिद्धनि गोदमैं,
मिलि कंक चिल्ल सिचान मंडल मंद चक्रवत मोदमैं॥४१॥
निकसी विसंकट अह्नजा अनुकार सोनितकी नदी,

१ पर्वत के शिखर जैसा २ यमराज के समान चहुवाण राजा को ३ दैत्यों की सेना ४ खेद का हाहा कार शब्द ५ ठूंठ ६ वृक्ष का होवे जैसा ७ युद्धभूमि ८ शरीर ९ बाणों से १० घोड़े की शीघ्र दौड़ के समान दौड़ने फिरैं ११ मस्तक रहित शरीर (धड़) १२ गणिका १३ चौसठ जोगनियां मद्य १४ (मदिरा पीकर जिसप्रकार) १५ ग्रामीण (गँवार) मनुष्य लोटजाता है ऐसे १६ कटेहुए १७ शरीरों के १८ इंडे (ऊंची छत्रियों के कलसों के समान हाथियों के कुंभस्थल उतरते हैं) १९ खारभंजने २० कलेजों के २१ अपना हृदय २२ नालेर के माफिक २३ बुद्धि से २४ आंतों की २५ वृत्ताकार फिरना जिसको बालक भाँभाभोंरी कहते हैं २६ इसीप्रकार कवच से शरीर निकाल कर २७ भेजे (मस्तिस्क) में २८ ढींच (पक्षीविशेष) २९ शिकरा ३० मज्जा ३१ त्रिशाल [चंडी] ३२ नकल

अलगर्द[1] नक्र[2] दुलीज[3] अंत्र[4] तुरंग अजफ्फल[6] अच्छरी ॥
लहि जास[7] भास[8] बनास बारिधि पास बासकतैं टरी,
रत आस[9] एम बनासकी रनरास भूपतिके हरी ॥ ४२ ॥
प्रबिसैं दरी[10] उर केसरी[11] वृक[12] त्यौं करी[13] उरके बसैं,
गिनिकैं अभीष्ट बडे बसा[14] हिय काल[15] खंजनकौं ग्रसैं ॥
करि जुद्ध यौं नृप क्रुद्ध मस्तक जंत्रकेतनको हरयो,
चहुँ पास आसुर सेनमैं अति लास ऐकलको[16] परयो ॥४३॥
तबही म्हदोदर अग्ग व्है रन भिंदिपालकतैं[17] रच्यो,
अतिकाय आकुल व्है सु पै नृप मुक्त तीरनतैं तच्यो[18] ॥
कछु काल कौतुक[19] मंडियो सर अर्द्धचंद्रक जोरिकैं,
पटक्यो महीपतिनैं महीम्हदतुंदको सिर तोरिकै ॥ ४४ ॥
तिम सूलसौं हरि सूल सूलिक[20] सीस आसु[21] उतारिकैं,
पुनि तालहस्त करालतुगड उभैरलये नृप मारिकैं ॥
बक केसि धेनुक तीर कट्टि रु पीर मर्मनमैं[22] दई,
लहिकैं गदा गति बातके[23] तुसकी[24] अलंबुसकी भई ॥४५॥
तँहँ कालजिव्ह रु रीति[25] त्र्यंबक दौरि भूपतिपैं गये,

ब्रह्मपुत्र नामक नदी का अनुकरण (नकल) करनेवाली लोही की नदी १ जलसर्प २ मगर ३ कच्छप रूपी ४ आंतें, घोड़े और ढालों से छाईहुई (यहां यथाक्रम से जानना चाहिये, अर्थात् आंतोंरूपी जलसर्प, घोड़ो रूपी मगर और ढालों रूपी कच्छपों से ढकीहुई लोही की नदी) ७ जिसकी क्रांति लेकर बनास नदी ८ समुद्र के पास वास करने से टलगई (यहां वास शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय करके वासक शब्द का प्रयोग किया है) ९ इसप्रकार बनास नदी की संभोग की आंक्षा राजा के रण रूपी रास [कुतूहल] ने हर ली, अर्थात् बनास नदी में रक्त मिलजाने के कारण वह रजस्वला होगई १० गुफा में ११ सिंह घुसैं इसप्रकार १२ भेडिये (ल्याळी) १३ हाथियों के पेट में घुसते हैं १४ मज्जा (चरबी) के लिये १५ कलेजा १६ अकेले का १७ गोफनों से १८ तचका (सुकड़) गया १९ खेल २० सूलिक नामक दैत्य को २१ शीघ्र २२ मर्म स्थानों में (जीव की जगह) २३ पवन के चलने में २४ तुसों [धान्य के छिलकों] के समान (तुस को पवन उडा देता है ऐसे

कर पत्रपालन झारिक रथ बाजि केतन कट्टये ॥
तबही गदा रन मंडिक नृप दोहु२दुष्टनसौं जुरयो,
सु मनौं [3]सुजोधनपैं रु [4]मागधपैं [5]वृकोदर अंकुरयो ॥४६॥
झरि द्वै१गदा [6]अवघट्टतैं चिनगी चलाचल्ल निक्खसैं,
असि सानभाव कि दावमैं तरकाव तिंदुनको लसैं ॥
[10]अभिघातके [11]अनुपात त्यौं पसरैं चटच्चट चो४ गुनौं,
दुव२वज्र [12]भिरंनसौं रु [13]द्वै२दरघट्टना सन सोगुनौं ॥ ४७ ॥
दुँहु ओरकी अति घोर [14]उल्मुक [15]चक्र तोरैं गदा फिरैं,
तप पूरकी छबि [16]सूरकी दबि [17]बूरकी बिजुरी किरैं ॥
सब [18]मग्ग सद्दत फाल फद्दत [19]काल [20]कल्पहिको मचैं,
[21]जनुं देह धारि पधारि रारि स्वयं पटैतपनौं रचैं ॥४८॥
[22]दुव२घाँ गदा अवघट्ट [23]मार मुहूर्त इक१भली भई,
नृप दाव सत्रुन [24]मोघकैं अब रीति [25]अंतककी लई ॥
[26]द्रुत घोटकै कर चोट दुस्सह [27]दोटैं लोटत ज्यौं [28]दरी,
यहकाल [29]लोलिकैं सीसकी गति रीसकी हतिसौं करी॥४९॥
[30]नरनाँह [31]कंडनसो किये उर त्यौंहि [32]पित्तलनैनको,
सुहि पाय दाह गयो उछाह सिपाह सत्रुन सैनको ॥
अघआदि नक्क हिडंब संबर [33]व्योममैं [34]पव्वय पेरये,

अलंबुस को उडाया २५ पीतल जैसे हैं नेत्र जिसके १ बडा छुरा २ ध्वजा ३ दुर्योधन पै ४ जरासन्ध पै ५ भीमसेन ६ दोनों गदा के भिड़ने से ७ चपल ८ शाण पर तरवार से चिनगी झड़े जैसे ९ वन में दव लगने से तींदू की लकड़ी से चिनगी उड़ैं ऐसे १० प्रहार के ११ चोट पर चोट पड़ने से १२ भिड़ने से १३ दो शंखों की टक्कर खाने से १४ अंगारों के १५ तरह १६ सूर्य की पूर्ण तप की शोभा १७ गदाओं के बूर झड़ने की १८ गदा युद्ध के सब मार्ग (रीति) छलांगें भरते हुए (फाल छलांग और फद्दत फांदते हुए) १९ यमराज २० प्रलय का २१ मानों २२ दोनों तरफ २३ दो घड़ी तक २४ व्यर्थ करके २५ यमराज की २६ शीघ्र घोटा (गैंद खेलने की लकड़ी) से २७ दोटा (चोट) से २८ दड़ी (गैंद) २९ दैत्य का नाम है ३० राजा चुहान ने ३१ ऊखली के समान ३२ दैत्य का नाम है ३३ आकाश से ३४ पर्वत

पवि अस्त्र*घाय उडाय ते पुनि तूल संचय**से दये ॥५०॥
रथ और बैठि बहोरि भूपति कल्पके[1] भवसो भयो,
दलिके अघासुर दर्प दुद्धर[2] अद्रिनासिक दब्बयो ॥
इत मोह[3]कौं तजि छोह[4]मैं पुनि धूमकेतन उप्फन्यौं,
अनुजात[5]कौं लखि गिद्ध अैंचत बेर[6] उद्धरसो बन्यौं ॥ ५१ ॥
सर च्यारि४सौं कर[7] पाय च्यारिहु अद्रिनासिकके हरे,
तउ भुम्मि लोटत दुष्टके सब अंग सम्मुह ही ढरे ॥
बिनु पुच्छ बाहस[8] सर्प सो नगनास[9] जुज्झत जानिकैं,
करवाल[10] इक१कराल झारिय धूमलध्वज[11] आनिकैं ॥ ५२ ॥
दुव२पानि[12]सौं नृप बान दै गिरिनक्क मस्तक कट्टयो,
दुव२पानिसौं इत मारि ए खल बानको सुत दट्टयो ॥
इक१संगि[13] लै खल तत्थ मुक्किय[14] बिज्जु[15]की बहिनी बडी,
पुनि भूपके रथवाह[16] भेदि सु लाह लै गिरिमैं गडी ॥ ५३ ॥
नृपहू वरच्छिय अैंचि अच्छिय जंत्रु[17]पैं खलकै दई,
करि बत्त जो गल अंस[18]सो जलमत्त मच्छिय ज्यौं गई ॥
लहिकैं अली[19] अल सिंह त्यौं तिहिं घायसौं उठ उच्छरयो,
त्रि३वली कलंकित[20] नक्कनैं कछु प्रान संसयमैं परयो ॥ ५४ ॥
यह पिक्खि कौतुक भूत डाकिनि हुंकि तालिन दै हसे,
खिजि दुष्टके रह[21]पट्ट व्हाँ इनपैंहि दीननपैं बसे ॥
खेंग[22] खेचरीन कह्यो तहाँ हमकौं हनैंहि न जित्तिहो,

*वज्रास्त्र से**रूई का पैल १प्रलय काल का महादेव २दुस्तर ३मूर्छा को ४क्रोध में ५अप ने छोटे भाई को ६शरीर का उद्धार करनेवाला ७हाथ पग चारों ८अजगर सर्प बिना पूँछ का होवे ऐसा ९ अद्रिनास नामक दैत्य को १० खड्ग ११धूम्रकेतु ने १२ हाथों से १३ बरछी १४ छोडी १५ बिजली की बड़ी बहिन १६ घोड़े १७ गले नीचे के भाग में (हसली की हड्डी के पास) १८ कंधा और गले से बात करके १९ बीछू का डंक लगने से सिंह उछलै ऐसे २०नासिका में तीन सल पटक कर (नाक सिकोड़ कर) २१ थप्पड (दुष्ट दे खिज कर भूत और डाकनियों के थप्पड मारी) २२आकाश में विचरने वाली खेचरी ने कहा

चहुवान पन्नँग प्रानको बलवान भिंटत बित्तिहो ॥५५॥
सुनिकैं इती धँकि धूम्रलोचन छोह उद्धत छायकैं,
इकसत्थ मारुत १अभ्र२वारुन३अस्त्र डारिय आयकैं ॥
उपमान भूधरका बडे झरका उहाँ करका झरे,
सतकोटि पत्थर चंचला पृथु पूर पानियके परे ।५६।
भवभूत दुस्सह बाज गाज अवाजतैं बहिरे भये,
पवमानतैं हिमवानसे हिमनाद दंतनकौं दयो ॥
इम तीन३आसुर अस्त्र इक्कत इक्खि भीलन भैं बढ्यो,
जिहिं जालतैं महिपालहू बडे वग्गि सागरतैं कढ्यो ।५७।
झँख बालपैं जिम किल्किला छकि छोहि यों खलपैं छयो,
लखि दाव नासनको दुसासन ज्यों वृकोदरनैं लयो ॥
सहजात सक्ति नरेसकी कहि सक्ति आश्रय जो करी,
धकि सोहि प्रानन पन्नगी करं अर्कके करसी धरी ॥५८॥
तिहिंकाल कॉल नृपालकौं बिकराल बिक्खतही बनैं,
अति भाल ज्वाल अराल भ्रूकुटि लाल अक्खिन उप्फनैं ॥
जिम सुंभके उर सूल सक्ति सु सक्ति यों नृप मुक्कई,
लगि दुष्टके उर पुष्ट चंदन जुष्ट जो असु लै गई ॥ ५९ ॥

---

१ प्राणों को लेनेवाले सर्प के समान चहुवान को २ भींटते ही (भिडते ही बीत जाओगे) ३ क्रोध करके ४ पवनास्त्र ५ मेघ का अस्त्र ६ वरुण का अस्त्र ७ पर्वत को जिसकी उपमा दीजाये ऐसे बडे ८ झड़वाला ९ ओले (गडे) १० वज्र ११ बिजुली १२ बडा १३ समूह से पानी पडा १४ संसार के प्राणी १५ पवन से १६ बरफ के जैसा ठंढा, दांतों का ठंढ का शब्द (गड़गड़ाहट) १७ देखकर १८ भय १९ बडवाग्नि २० छोटी मच्छी पर २१ मच्छियों को पकडनेवाला पक्षिविशेष २२ क्रोध करके २३ भीमसेन ने २४ अग्निकुंड से चहुवाण के साथ पैदा हुई, बरछी जिसको ऊपर कह आये हैं उसका ही आधार करके २५ प्राण लेनेवाली सर्पिणी के समान २७ सूर्य के किरण जैसी २६ हाथ में ली ॥ उस राजा रूपी यमराज का विकराल (भयंकर) समय देख ही बने २० टेढ़ी भ्रुकुटी ३१ जिसप्रकार शुंभ दैत्य के उर मे देवी ने बरछी दी थी उसीप्रकार राजा ने ३२ बरछी ३३ छोडी ३४ प्रीति (चंदन से प्रीति करनेवाली

पवमानतैं[1] तरु तालसन्निभ[2] धूमलध्वज[3] भू पर्यो,
महिपाल पावक[4] राळकैं इम साल देवनको हर्यो ॥
यह पिक्खि संवर [5]व्योम भोम हिडंब आदि सबै भजे,
बहु प्रेय[6] दुंदुभि मोद[7]मेयन [8]आदितेयनके बजे ॥ ६० ॥
दुख नष्ट जानि असीस बिभ्रन देव जुत्थननैं दई,
भनि तुट्ठि[9] तुट्ठि [10]अयासबानिय बुट्ठि पुप्फन[11]की भई ॥
जम इंद आदिन अप्पने अधिकार लाह भरे लहे,
[12]बहुर्यो [13]सदागति सीत मंद सुगंध सम्मलि व्है बहे ॥६१॥
सुखसौं दिवाकर[14] सप्त७दीपनसीसपैं तपनैं लग्यो,
जुत बेद मंत्रन [15]सप्ततंतुन [16]ज्वाल कुंडनमैं जग्यो ॥
लहि भद्र[17] सप्त७ [18]अवारपारन निट्ठि निश्चलता लई,
स्वर सप्त७सुंदर [19]गायकी सुर[20]गायकावलिकी भई ॥६२॥
बलि पुत्त [21]पुत्रवधूनके करकंज[22] कंकन फुट्टये,
साजिकैं सिंगार पुलोमजा[23] दृग नाँहके[24] मग त्यौं दये ॥
नृपरा[25]में कीरतिधाम यौं मन काम सर्वनके सरे,
चहुवान चो४ [26]भुज धूम्रकेतन१ जंत्रकेतन२[27]संहरे ॥६३॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२ राशौ
चहुवाणविजयनधूम्रकेतुयन्त्रकेत्वादिनव९दैत्यनिपातनं

वाली, अर्थात् सर्पिणी के समान) प्राण लेगई १ पवन से २ताड़ वृक्ष के सदृश ३ धूम्रकेतु भूमि पर पड़ा ४ राळ करके बढीहुई राजा चहुवान रूपी अग्नि ने ५ आकाश में ६ बहुत प्यारे नगारे ७ मोद (आनन्द) भई८देवताओं के९तुष्टि हो तुष्टि हो ये आशीर्वाद के वचन१०आकाशवाणी ने कहे ११ फूलों की वर्षा हुई १२ फिर १३ पवन १४ सूर्य१५होमों(यज्ञों)में १६ अग्नि १७ कल्याण १८ समुद्रों ने १९ गान विद्या २० गंधर्वों की२१बलि दैत्य के पौत्रों (पोतों) की स्त्रियों के२२कमल रूपी हाथों के२३इन्द्राणी ने शृंगार करके२४पति के मार्ग में दृष्टि दी२५हें कीर्ति के घर राजा रामसिंह२६ चार हाथवाले चहुवान ने २७मारे.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में चहुवान का विजय और धूम्रकेतु यन्त्रकेतु आदि नव दैत्यों के मारने का तेरहवां मयूख

त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥ आदितोऽष्टत्रिंशत्तमः ॥ ३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा

दोहा

धूमलकेतन[1] सक्तिकरि, डार्‍यो असुन[2] विहीन ॥
जंत्रकेतु चउ४बानकरि, पटक्यो गिद्धन पीन[3] ॥ १ ॥
ह्रादके रु प्रह्लादके, विप्रचित्तिके बंस ॥
नव९आसुर चंडासि हनि, दीनोँ दुस्सह दंस[4] ॥ २ ॥
सूचिकेश१उल्मुक वमी२ , प्रमुख[5] हनैँ प्रतिहार ॥
चालुक मारे सूकश्रुति१, मर्दका२ऽऽदि जुज्झार ॥ ३ ॥
करभ कंठ१कंकालगुड२, दह्लीदह्ल३दुर्बुद्धि ॥
खिजि प्रमार इत्यादि खल, संहरि किय छिति[6] सुद्धि ॥ ४ ॥

षट्पदी

धूमलकेतन१ जंत्रकेतु२ह्लदतुंद३महाखल ।
सूलिक४पुनि तालसँय[7]५करालानन६बिसेस बल ॥
कालरसन७पुनि क्रूर रीतिलोचन८गिरिनासक९।
चंड समर[8] चहुवान दुसह मारे इत्यादिक ॥
मुर नरक केसि रावन प्रमुख[9] गिरत बानसुत भजि गये ।
अर्बुद[10] गिरीस[11] नृपराम इम भूपति चउ४मुनि मख[12] भये ॥५॥

दोहा

बानसुतन हनि करि बिजय, आयो नृप चहुवान ॥
हरि[13] हरादि देवन हुलासि, मन्न्योँ रचि सनमान ॥ ६ ॥
दिय प्रतिहार१हिँ तँहँ द्रुहिनैं[14], मरु भुव राज्य समस्त ॥

समाप्त हुआ॥ १३ ॥ आदि से अड़तीस मयूख हुए ॥ ३८ ॥

१ धूम्रकेतु २ विना प्राण ३ गीधों को पुष्ट करने के अर्थ ४ काटना (चहुवान की बरछी को सर्पिणी की उपमा दी थी उसका यहां संबंध है अर्थात् उस सर्पिणी ने नहीं सहाजावे ऐसा बटका भरा) ५ आदि ६ पृथ्वी को ७ तालहस्त (यहां से लेकर गिरिनासिक तक दैत्यों के नाम हैं) ८युद्ध में भयंकर९.आदि१०आबू पहाड़ पर ११ हे राजा रामसिंह १२ वशिष्ट मुनि के यज्ञ से १३ विष्णु शिव को आदि लेकर१४ब्रह्मा ने मरु(निर्जल) भूमि का

सूकर[1] ऊखर मुख्य[2] थल्ल, चालुककौंहु प्रसरंत ॥ ७ ॥
मालव रट्ठ[3] प्रमारकै, कीनौं अखिल अधीन ॥
इंद्रप्रस्थको प्रांत सब, चहुवानहिं बिधि[4] दीन ॥ ८ ॥
कर्म निगममत[5] पुष्टकरि[6], बिप्रन अभय बिधाय[7] ॥
हरि हर अज सक्रादि[8] सब, पत्ते[9] पिहितं[10] निकाय[11] ॥ ९ ॥
अर्बुदसौं मिलिकैं उमा[12], बुल्ली जावतबेर ॥
तूही सोदर[13] धन्न्यतम[14], किल्विषहर[15] कलिकेर ॥ १० ॥
इतरहु[16] तीरथद्वीप अग[17], वन तरु खंड बिसेस ॥
आये जे अभिसेक हित, गये ति[18] निजनिज देस ॥ ११ ॥
हुलसि बसिष्ठहु अभयव्है, इत सब मुनिन उपेत[19] ॥
करन लगे आरब्ध[20] क्रतु[21], कारि भय असुर निकेत[22] ॥ १२ ॥
भुजभव[23]१मनुभव[24]२अर्कभव[25]३, ससिभव[26]४छत्रनबंस[27] ॥
हे[28] चउ४तिम[29] सुचिबंस५हुव, पंचम५प्रथित[30] प्रसंस ॥ १३ ॥
छत्रनके छत्तीस३६सब, इनतैं अन्वय[31] जात ॥
दूजे[32] आश्रममाँहिं जिम, आश्रम इतर समात ॥ १४ ॥
इम बानासुरसुव[33] उभय२, भूबिल[34] पुनि पौबिभित्त[35] ॥

---

१ सूकर नामक क्षेत्र (रेणुका, सूकर, काशी, काली, काल, दोनों घटेश्वर, कालिंजर, उज्जीन, इन नव क्षेत्रों को ऊसर कहते हैं) २ श्रेष्ठ ३ राष्ट्र (मालवा का राज्य) ४ ब्रह्मा ने ५ वेद मार्ग के कर्म ६ करके ७ ब्रह्मा ८ इन्द्र को आदि लेकर ९ पहुंचे १० अन्तर्धान होकर ११ अपने अपने स्थानों में १२ पार्वती १३ हे भाई १४ अत्यंत धन्य है १५ पाप (कलियुग के पाप नाशने को १६ और भी १७ पर्वत १८ ते (वे)१९सहित २० आरंभ२१यज्ञ का२२घर (दैत्यों के घरों में भय करके)२३ब्रह्मा के भुजों से पैदाहुए क्षत्री२४मनु से पैदाहुए क्षत्री२५सूर्य से पैदाहुए क्षत्री२६चंद्रमा से पैदाहुए क्षत्री२७ये चार क्षत्रियों के वंश २८ थे २९ इसीप्रकार पांचमा अग्नि वंश हुआ ३० प्रसिद्ध प्रशंसा करने योग्य ३१ इन पांच वंशों से क्षत्रियों के छत्तीस वंश पैदा हुए ३२ जैसे गृहस्थाश्रम से ब्रह्मचर्यादि दूसरे आश्रम होते हैं ३३ पुत्र ३४ भूमि का छिद्र ३५ वज्र से खोदाहुआ

माँहेयी[1] रु वसिष्ठ मुनि, नृप तव वंश निमित्त[2] ॥ १५ ॥
सहँस तीन३०००ग्ररु पंच सत५००, ग्रब्दं[3] बहुरि इकतीस३१॥
जुग द्वापर ग्रँवसेस[4] जँहँ, प्रकटे चउ४पहुमीस ॥१६॥
सुरनाहिंतु[5] पाये सवन, आयुध भूखन अच्छ ॥
लैलै विधि[6] आयँस[7] लरे, प्रहर्तकरे[8] परपच्छ[9] ॥ १७ ॥
मरु१सूकर२मालव३प्रमुखं[10] प्रतिहारादिन पाय ॥
इंद्रप्रस्थ[11]४चंडासि इम, हुव लहि धर्मसहाय ॥ १८ ॥
मुनि वसिष्ठ सद्यो सु मख, हुलसि अकंटक होय ॥
अर्बुद बन किन्नौँ अखिल, धुर[12] तीरथ अँघ[13] धोय ॥ १९ ॥
राम[14]नृपति जँहँ रावरे, अब सगोत्र बसवान ॥
द्रंगँ[15] सिरोही देवडा, थिरि अब्बुव गिरिथान ॥ २० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ हन्तृहत-विवेचन-क्षत्रियचतुष्टय४मर्वादि४देशविभजन--देवादिस्वस्वनिकेत-गमन-बाहु१मनु२रवि३चन्द्रा४ऽनल५वंशान्तर्गतसामस्त्यराजन्यषट्-त्रिंश३६द्भेदकथन-वशिष्ठनिःशङ्कसत्रकरण-अर्बुदप्रान्ताऽनघीभवनं चतुर्दशो१४मयूखः ॥१४॥ आदित एकोनचत्वारिंशत्तमः ॥३९॥
प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

१गाय (वसिष्ट की नंदिनी नामक गाय) २ हे राजा तुमारे वंश के उत्पन्न होनेके ये कारण हैं ३ वर्ष४ बाकी रहे जब ५ देवताओं से ६ ब्रह्मा की ७ आज्ञा ८ नाश किया ९ शत्रुओं को१०आदि ११ दिल्ली पर १२ मुख्य१३पाप दूर करके १४ हे राजा रामसिंह जहां अब आपके गोत्रवाले बसते हैं देवडा जाति के चहुवान १५ पुर.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में मारनेवाले और मरनेवालों का विवेचन करना, और चारों क्षत्रियों को मरु देश आदि चार देशों का बांटदेना, देवताओं का अपने अपने स्थान जाना, बाहु, मनु, सूर्य, चन्द्र और अग्नि वंश के भीतर ही सब क्षत्रियों के छत्तीस ही वंशों का कहना, वशिष्ट मुनि का निःशंक होकर यज्ञ करना, आबू प्रान्त का पाप रहित होने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और आदि से उनचालीसवां मयूख हुआ ॥ ३९ ॥

पद्धतिका

प्रतिहार १ नृपहु धर धन्वाय, पत्तन विसेस बिधि सह बसाय ॥
तंत्रावधान करि राज्य तत्थ,समयांत तज्यो बपु जोग सत्थ ॥१॥
नव४९दुर्ग देसपति तब नरेस, सुत जोध२राज़ तस हुव सुबेस ॥
सतपंच५००भये सुत जोध गेह, तिन्ह नाम सुनहु संभरसनेह ॥२॥
सुत देवराज३।१जेठो सुभाय, नरसिंघ३।२करन३।३पुनिराजराय४॥
सल्लर३।५रुलाल३।६छत्रेस.सुद्ध, परमेस.ज्ञान.सतगन१०प्रबुद्ध॥३॥
पंडाहर. पृथ्वीराज. नाम, जद्दम. समाद. कुसकर्ण. ताम ॥
व्याघ्र. रु पारादिक. रु नयपाल. गंधर्ब. चंप२० राम. सुदयाल॥४॥
जाहुर. दताल. बिश्वेस. जानि, तपलोक. रु कमलादित्य. मानि॥
ध्वजबल्गु.खुमाणराज.मंडमाल.बलिबच्छ३०बिजयधर.जसबिसाल५
नवगुन. रु धर्मधन. कर्मरिद्ध. पुनि लोकपाल. बिंबक. प्रसिद्ध ॥
गंधनरस. माधव. पद्मगंध. सुनि मंडन४०कालप. इन. सुगंध॥६॥
सिंह. रु बुध. चित्रक.मतिसुढार, केसर. रु मान. हिमरस. उदार ॥
निमि. करुन५०कोल. भगवान. नंद. चंड. रु महितापन. राजचंद्र.।७।
पृथ्वीस. समरसख. परसुराम. श्रीरुक्म६० बेणु. भैरव. सुधाम ॥
जाजल. अरु सागर. खेम. जानि, ॐकार. गोकरन. दानपानि.॥८॥
सुद्दाल. लच्छ७०अज.कूजदार. नल.लोकमनि.रु बल.बिजयकार.
पुनि अगरु.बज्र.अजधर.प्रबीर, गोतम.नरेण८०सिवकर्ण.धीर॥९॥
च्यवन. रु सुमेरु.उंबर.सिचान. पुष्पक. रु नयन. कोक. रु सुजान.॥
ललित९०माहिम.कुंदन.सँहँसमल्ल. भूपाल.बहुल.ईश्वर.सुभल्ल१०
तिम चंद्र. भानु.जितमल्ल. तत्थ, सल१००खेत्रपाल. महराज. सत्थ
बालि बरुज.कुंजमनि.स्याम.बीर, गोवर्द्धन.कृष्ण.भउम. गहीर१९१।
उदयकरन. नरधर११०भारमल्ल. भीम. रु अनादि. हरराज. भल्ल॥
थिरराज. इंद्रराज. गुनगेय, जसराज. धर्मराज. हु अजेय ॥ १२ ॥

---

१ मरु देश में २ पुर ३ राज्य को अपनी इच्छानुसार करके ४ मारवाड़ में नव गढ प्रसिद्ध थे इसीसे मारवाड़ देश को नवकोटी मारवाड़ कहते हैं ॥

अनुपमराज. रु नाहर१२० अनंत. गंगाधर. नवल. दिलीप. संत ॥
भो अनुज खेतसी. भागचंद. कुमुद. सुरत. सुभकर्ण. हु अमंद ।१३।
वृहदर्ण१३० धीर. रत्न, सिवराज. सामंत. भीष्म. कुसल. हु सुकाज।
रु रंधर. धुंधल. प्रेम. रेणु१४० तस्करदम. रु महेश्वर. सुबेणु. ॥१४॥
अमर. अदर. उदल. बालराय. मधुकर. रु कीर्तिपालक. अमाय ॥
बिष्णु१५० रु सुमना गिरिपाल. वीर. धनपाल. डुंड. उद्दाल. धीर १५
बिक्रम. प्रयाग. पद्मक. स्वरात. लोभ१६० रु परेस. कल्ल्यान. भ्रात।
सल्लहर. बहुरि गोइंदराय. सुंदर. रु लक्षजीवन. सुभाय ॥ १६ ॥
जालमहर. बलस. भोज. रु प्रदान१७०, धरण. जम. रु चिंतापर. अमान।
गोल. रु बिजयी. बिठ्ठल. धनर्ण. अल. पर्वत१८० माचल. आसकर्ण. १७
पुनि चित्ररेख. परबल. कृपाल. गोपाल. संतराज. रु सुभाल ॥
रामधन. राजनर. मेघसेन१९०, प्रह्लाद. मयूरध्वज. प्रमेन. ॥ १८ ॥
भीमरन. रु सोवन. जसिल. भ्रात, खरखग्ग. संगन. रु रमन. ख्यात ॥
बसुनेमि२०० भगुल. पारम. रु कल्प. जनमत. आमोद. हु बल अनल्प१९
चेमन. रु नयनसुख. चंद्रनंद. कामल. कस२१० भारत. रनअमंद ॥
सज्जन. रत्नाकर. नयन. जानि, व्रत. सामुक. सामकरन. बखानि२०
हयमारसेन. अरु खेमसेन. खड्गांग२२० कुंद. रघु. रजस. बेन. ॥
अर्जुन. चिद्दस. घनस्याम. आख्य, जनमुट. निर्भय. सुजनन२३० समाख्य
क्रोसन. मुकुंद. गोकुल. महंत. संगम. गज. सिवरज. थाणु. संत ॥
स्वादीन. रुचक२४० सुखराज. रूप. चित्रिम. नंद. चांबड. गल. अनूप २२
नरसुख. सुभाग्य. सत्तम. महेस२५०, संकर. पंचानन. रु धन्नसेस. ॥
सुक्र. जवन. इंदमति. खेमसार. भामह. त्रिलोकमानि. गंगहार२६०
नुन्नमना. सेरम. नागनाथ. दानिक. जोधन. लछमन. सुगाथ ॥
अंचन. सुरक्त. सुरतनु. अनेय२७०, कमलसुख. बसनदस. भल्ल. श्रेय २३
प्रभु. ईश्वरदास. किसोरसेन. तरसानु. धराजम. लुप्ततेन. ॥
बंसधर२८० कोकहर. सेनसूर. दिवसेन. धर्मधुर. प्रानपूर. ॥ २५ ॥
मतदल. अजंबु. उच्चल. दुलत्त. हिंदुष्क२९० ध्वजस्वन. गयु. सुपत्त ॥

बहुसेन. रमासू. परद. बेस, बालसासि. उग्रसेनक. बलेस ॥ २६ ॥
आनर्त. चंद्रकमलक. उदार, अभयमहा३।३००कौसल.बल अपार॥
उदयमहा. जयनम. तैजसाख्य. जीवन. पदमासिख.सल्लनदाख्य२७
महिनाभ. प्रहारक. गौर३१०जानि,हतजिन. सुबास. पुरनय. बखानि
गोपरमन. बंग. रु प्रेमसाम. खर्बम. अनेम. बडिसम.सुनाम ॥२८॥
रूपरस३२०मुक्तिमह.हरिन.भ्रात, गनपति. धनमोहक. भवन.ख्यात
अन्नदम. बगल.अंबर. जलेस.दालमह३३०भगन.बस्तुम.सुबेस।२९।
गौरध्वनि. हरमुख. लंब. नाम, हंतम.ललाम. भगरथ. सुधाम ॥
चल.सालिभानु३४०संगत.कुमार.सल्लह.सगर.चीन.बनस.उदार३०
साधुमही. हस्मक. खेमकर्ण. याजी३५०रु पर्ण. जोसम.सुबर्ण॥
सिवपाल.सिरोमनि.कनक.सूर,कीर्तिधर.मघामुक. धर्मपूर ॥३१॥
घोटन. रमेस. सुजन३६० रु सुबीर. महसर. कुनक्र. कुंजर. सुधीर
बसुराम. वेणुधर. चित्रबाह. प्रहराट्ट. भीमरय.पिसुनदाह३७०।३२।
भाजिक.उत्तान.रु बिकस.भ्रात, कुसलू परारि.विजखनक.ख्यात॥
अजराज. राजनर.मल्लराज.कुस३८०चूर्ण.सिंहबाहन.सुकाज ।३३।
देवरय. प्रलयमल्लक. उदैन. बलन. गहल. राघवदास. गैन. ॥
कुबलय३९०समकर.बलसोम.नाम,हनुक.रु गभीर.सुखरत.सुधाम
उग्ररय.गोत्रमनि.बलि बखानि,नेमरु जयमद.अनयघ्न३।४००जानि॥
अभयाकर. स्वामी. उत्तमंग. चंद्रसख. मिहिर. संतनु. अभंग॥३५॥
सारध.गोलांबक.सुगत.सुद्ध४१०रबिमल्ल.बिसद.गुरुबर. प्रबुद्ध॥
ममसाधु.समान.रु कचलबित्त.कर्णजित.बच्छधन.हंसचित्त.॥३६॥
समभंत्र४२०न्हृदयसुख.प्रह्र.त्यौंहिं,जर्त्तिल.रु लुलन्मणि.बिदितत्यौंहिं
मतराग.महास्तुत.मोहराग.गोरक्ष.हर्ष.चुंबन४३०सुभाग ॥३७॥
रुतनति. चमूप. रंजन. सुबंस. मंडक. रु महातप. पुनि प्रहंस. ॥
उग्रासि.परिच्छित.माघनंद४४०,कर्पूर.रु मखनत.बिदल.कंद. ॥३८॥
मिस. कूबर.सिवद.सुमेरु.नाम,बव्हादर.ऊर्मर. पुनि ललाम ॥३९॥
सरदायस. हरनारायनाख्य. सुरतोस. रु भास्कर. माधनाख्य.

घोररय. प्रयाग. रु गोधि. बंक. न्हदसेन४६०सगर. निर्दय. निसंक॥
हरिबंस. कल्प. सुरजन. न्हदेस. नागोजि. मलय. जदु. रु अलकेस४७०
नवरंग. रु औजस. परमसीर. डुंगर. गविट्ठु. धवकल. प्रबीर ॥
प्रतपन. पुनि घुंघन. केसवबेन. सोसक४८०सेवाजित. रु बुधसेन ॥४१॥
भर्मिल. रु भीष्म. आरराय. नाम, सरमोहन. गर्गर. बसु. ललाम॥
संग्रामपाल. ससिबर्म४९० बर्म. अमृतेस. रजतचंद्रक. ससर्म॥४२॥
संहनन. किश्र. कहर. सहाव. रामसरन. प्रानद. रंधूराव५०० ॥
ए जोधपुत्र सतपंच५००इद्ध, प्रतिहार भूप नाती[2] प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥
जेठो समस्त सैन[3] देवराज२, मरुभूप भयो लहि सुख समाज ॥
नवनवति च्यारि सत४९९अनुज[4] तास, कहुँ करनलगे मृगया[5]बिलास
जिनसौं किय न्हाँ इक१जच्छ[6] जंग, तँहँ सकल भये दीपक पतंग॥
नृप देवराज जिन्ह अग्रजात, सुत तास भये भूख्यात सात७।४५।

षट्पदी

सिंह४।१करन४।२सल्लूर४।३सल्ल४।४मिश्रक४।५छत्रासव४।६,
सप्तम७पुनि सत्रुघ्न४।७भये ए देवराज भर्व ॥
जेठो सिंह४सु भूप भयो तस तनय पडहर५,
पंडहरहु तासौं कहात प्रतिहार वंसबर ॥
पंडहर पुत्र पृथ्वीन६हुव तास जयद्रुम७सुत भयो ॥
ताकै समाधि८प्रकट्यो तनय ताकै नृप कुसकर९ठयो।४६।
पराबल१०रु गोपाल११सत्वराज१२रु भल्लकरम१३,
पुनि मखेन१४रंजन१५हु भयो जन्न्यजनक[9-10] अनुक्रम ॥
रंजनकै प्रह्लाद१६तास सुत राज महीप१७रु,
ध्वज महीप१८हुव तास छुट्यो तासौं जनपद[11] मरु ॥
बिंबथल नगर तव जाय नृपध्वज महीप१८निज राज्य किय,

१प्रकाशवाले२पोते३से(सबसे)४छोटे भाई५शिकार का६यक्ष ने७वडा८पैदा (उत्पन्न) ९-१०इनमें जन्यजनकभाव (पिता से पुत्र का होना) अनुक्रम से हुआ। अर्थात् कोई गोद नहीं आये ११ देश

त्रिसंग१९महीप हुव तस तनय सोहि त्रिसंग१९हु नाम बियं२ ॥४७॥

पादाकुलकम् ॥

ताकै सुत अक्षयमहीप२०हुव, ताकै बेणुमहीप२१भयो ध्रुव ॥
ताको राज्य बढ्यो छितिमंडल, सब सिर तप्यो सु नगर बिंबथल॥४८॥
ताके च्यारि४भये सुत भूपति, जेठो भीममहीप२२।१महामति ॥
पुनि यह बीरमहीप२२।२नाम हुव,
त्यौं मधुपालमहीपं२२।३अनुज ध्रुव ॥ ४९ ॥
गर्जेमहीप २२।४ चतुर्थ ४ प्रमानहु,
ताकँहँ मल्लमहीप २२।४ हु जानहु ॥
भीममहीप२२बडो तिन्ह भ्राता, नृपता लहि सु भयो भुवंत्राता ॥
स्वर्णमहीप२३भयो ताकै सुत, जसनमहीप२४तास हुव जसजुत॥
ताकै संगमहीप२५ महीपति, ताकै राममहीप२६ हुव सुमति॥५१॥
बिश्वमहीप२७ तास सुत जानहु, तस संग्राममहीप२८ प्रमानहु॥
तस रचमहीप२९ नगमहीप३० तस, ताकै रूपमहीप३१ महाजस५२
क्रम सन नंदमहीप३२ तस गिनहु, सेनमहीप३३रु गजमहीप३४ पंहु।
सुभगमहीप३५सुराजमहीप३६रु, महामहीप३७धनुर्महीप३८बरु५३
जयमहीप३९ संकरमहीप४०पुनि, दानमहीप४१दयामहीप४२सुनि।
अजितमहीप ४३ महीमहीप ४४ तिम,
प्रभुमहीप ४५ ईश्वरमहीप ४६ इम ॥ ५४ ॥
हरिमहीप४७रनमहीप४८जानहु, मधुमहीप४९बलमहीप५०मानहु ॥
ताकै रत्नमहीप५१नरेश्वर, मधुमहीप५२हुव तास बुद्धिबर॥ ५५ ॥

॥ रोला ॥

मधुमहीपकै तनयं पंच ५ लुट्टरमहीप ५३।१ बरु,
अचलमहीप ५३।२ रु दलमहीप ५३।३ भगवतमहीप ५३।४ अरु॥
सलमहीप५३।५ इनमाँहिं ज्येष्ट अनपत्य मर्यो रन,

१ दूसरा २ भूमि मंडल ३ रक्षा करनेवाला ४ राजा ५ पुत्ररहित बिना सन्तान

जाकौँहँ लोटर५३पित्रै मन्नि पूजत तस कुलजन ॥ ५६ ॥
तब हुव भूपति बिनयमहीप५४ अचलमहीप सुव,
ताकै सहनमहीप ५५ तास हंसकमहीप ५६ हुव ॥
याकै सुत इकतीस३१ मल्ल५७।१ खेमक२ प्रपार३ बलि,
मानव४धर्म५सुवर्ण६प्रनय७राजस८सुपाल९कलि१० ॥५७॥
कनक११सिरोमनि१२मान१३चंद्र१४बर्गल१५प्रेम१६रु गज१७,
गुनयत१८पूरन१९ मदन२०बदन२१चंदन२२तुंगध्वज२३ ॥
अंबर२४अदर२५असोक२६कुंज२७कटकित२८त्याही हरि२९,
तासौं अनुज सुहोत्र३०सबन छोटो धन्वंतरि ३१ ॥ ५८ ॥
इनके अंतमहीप सबहि नामनके जानहु,
हंसकमहीप तनय बंसबर्द्धक एइ३१मानहु ॥
इनमैं अग्रज मल्ल५७।१तास गोतममहीप५८सुत,
ताकै कीर्त्तिमहीप५९तास महमहीप६०जयजुत॥५९॥
ताकै तेजमहीप६१तास धोरनमहीप६२हुव,
रामराज६३तस पुत्र तास सुज्ञानराज६४ सुव ॥
बीरराज६५तस पुत्र तास साहस्रराज६६पुनि,
कनकराज६७तस कुंजराज६८तस बंसराज६९ सुनि ॥ ६० ॥
इहिं क्रम बेणीराज७०चित्रराज७१प्रहराज७२अरु,
भल्लराज७३सूत्तानराज७४बंगस्वराज७५बरु ॥
कनकराज७६ कुरुसालिराज७७ बिलिखराज७८ ज्यौंहीं,
अजयराज७९ राजेंद्रराज८० मल्लराज८१ त्यौंहीं ॥ ६१ ॥
कृष्णराज८२ बलि चयनराज८३ सिंहराज८४ नामा,
पल्लहराज८५ मल्लोकराज८६ मिलराज८७ सुधामा ॥
उदयराज८८ बलराज८९ गहलराज९० राघवराज९१,

---

१ जो कुमार्ग ही माराजाता है तथा मरजाता है उसे पितर (भूत विशेष) कहकर उसके कुलवाले पूजते हैं, लोटर उस मरनेवाले का नाम है २ छोटा, भाई ३ इनके नामों के अंत में महीप शब्द जानना ४ बढानेवाले ५बडा ६पुत्र,

रामराज९२कुवलयराज९३रु सक्रराज९४सुकाज ॥६२॥
ताकै पंद्रह पुत्र भये सब धर्मधुरंधर,
बलिराज९५।१ चंदराज२हनुराज३ बंसवृद्धिकर ॥
निर्भयराज४ रु उदयराज५ गोहरराज६ तथा,
त्रिलोकराज७रु उग्रराज८सुखराज९पुनि तथा ॥ ६३ ॥
राजद्राज१० रु भोजराज११ निमिराज१२ प्रमानहु,
जयमदराज१३अनेयराज१४इंद्रराज१५जानहु॥
साक्रराजि बलिराज९५सबन जेठो भूपति हुव,
ताके उत्तमराज९६तनय तस मधुरराज९७ सुव ॥ ६४ ॥
सक्तिराज९८ तस सूनु तास गिरिबरराज९९ तनय,
इहिं क्रम बेणीराज१००तास अलराज१०१ रनअभय ॥
ताकै तनय पचीस२५ सबहि राजांत नाम हुव,
हंस१०२।१बच्छ. सामंत. हृदय. हायन. मोहन. ध्रुव.॥६५॥
महासत्व. सत्रुघ्न. मदन१०मंडन. नल.संकर.
महानंद. जयदेव. भानु. कर्पूर. रु सुंदर. ॥
हर. सुमेरु२०सिवदत्त. राजबाहन. नारायन.
भास्कर. माधव१०२।२५आलराजि ए२५भये धर्मधन ॥६६॥
इनमैं जेठो बिनु अपत्य मृत जुद्ध महामति,
हंसराज१०२करि ताहि पित्र मन्नत तस संतति ॥
हंसराजको अनुज भूप तब बच्छराज१०२ हुव,
ताकै कर्ण१०३।१त्रिलोकचंद१०३।२ए हुव तनूज दुव॥६७॥
इनमैं जेठो कर्ण१०३भये पंचहि ताकै सुत,
हरि१०४।१ गिरि२संभु३समान४बिनय५राजांत बिनयंजुत॥
अग्रज हरि १०४ ताकैहु भये राजांत पंच सुत,

१बढानेवाले२पुत्र३पुत्र४जिनके नामों के अंत मे राजा पद है ऐसे नामवाले हुए५धर्म ही है धन जिनके६विना सन्तान युद्ध में मरा७उसके वंशवाले८ राजा शब्द है अंत में जिसके ऐसे नामों वाले ९ नम्रता सहित

संजम१०५।१नगर२बलिभद्र३बीर४बिक्रम५स्वधर्मजुत ॥६८॥
संजमकै सुत अमरराज१०६।१अरु राजराज१०६।२दुव२,
अमरराज१०६कै सिंहराज१०७तस महनराज१०८सुव ॥
ताकै तनय किसोरराज१०९सुत पूर्णराज११०तस,
ताकै सुजानराज१११तस कुमारराज११२अतिजस ॥ ६९ ॥
तकै सहबलराज११३राम सुरराज११४तास पुनि,
ताकै परमानंदराज११५तस नंदराज११६सुनि ॥
तस गोवर्द्धनराज११७भयो तस रामपाल११८सुत,
ताकै सुत बुधपाल११९तास धनपाल१२०धर्मजुत ॥७० ॥
चंद्रपाल१२१ तस कृष्णपाल१२२तस कर्णपाल१२३ सुव,
ताकै मोहनपाल मुख्य तेईस२३तनय हुव ॥
मोहन१२४।१सज्जन. अमर. मान. चंदन. सुख. भारत.
आनंद. रु धन. मंल१०सेन. सुंदर. भीम. अनंत. ॥ ७१ ॥
रुद्र. मेघ. ब्रज. भानु. अमद. सद्दल२०दम. गोमन.
अरु जन१२४।२३ए२३पालांत कर्णपालज कीरतिधन ॥
अग्रज मोहनपाल१२४तास नरपाल१२५नॅरननुत,
ताकै लच्छनपाल१२६तास सामंतपाल१२७सुत ॥ ७२ ॥
इहिं क्रम अनुकुल जयत्पाल१२८त्हत्पाल१२९प्रमानहु,
भैरवपाल१३०सुभागपाल१३१छलपाल१३२जानहु ॥
संगर१३३बेणी१३४पाल तास अनुपमपाल१३५भयो,
सो नभसरगुन३५०प्रमित राजपुत्री परिनयो॥ ७३॥
तदपि भयो नहिं पुत्र सिद्धसेवन कीनों जब,
तिनको पाय प्रसाद मिथुन इक१तास भयो तब ॥
चंद्रवती लहि नाम सुता हुव सुगुन सिराही,
सो मथुरापति अमरचंद्र जद्दवकँहँ व्याही ॥ ७४ ॥

१ पुत्र २ पुत्र ३ पाल शब्द है अंत में जिनके ४कीर्ति ही है धन जिसके ५ मनु ष्या में स्तुति योग्य६(३५०)के सम्वत् में७प्रमाण८तो भी९प्रसन्नता१०जोड़ा११बेटी

माता[1]मह कुल नाम पाय तस पुत्र बिदित हुव,
तबतैं जदुकुल[2]भूप पाल उ[3]पटंकि भयो ध्रुव ॥
त्यौं अनुपमपालकै भयो जयसिंहरान१३६सुत,
तबतैं हुव प्रतिहार बंस रानोपटंक जुत ॥ ७५ ॥
तास धनेश्वररान१३७तास बुधसिंहरान १३८हुव,
ताकै दीपित आदि अट्ठ८रानांत भये सुव ॥
दीपित१३९।१उदय२सुछत्र३लाल४हरमत५जगमत६पुनि,
मान७किसोर८रु सबनमाँहिं जेठो दीपित सनि ॥ ७६ ॥
दीपितकै सुत तीन३संभु१४०।१संग्राम२रु अजगर३,
संभुतनयचउ४अज१४१।१अनूप१४१।२गांगेय१४१।३गदाधर१४१।४
अजकै कमोदरान१४२तास नगपतिराज१४३भयो,
ताकै सल्लम आदि पुत्र अष्टादसक१८ठयो ॥ ७७ ॥
सल्लम१४४।१बल२हम्मीर३बंक४चंदन५कल्ल्यान६रु,
नवल७सहज८सौभाग्य९अमर१०पर्बत११रंज१२अगरु१३ ॥
लछमन१४जदुपति१५भोज१६चंद्रभानु१७रु बिल्लहन१८तिम
ए धृति१८नगपतिरान तनु[6]ज रानांत[7] भये इम ॥ ७८ ॥
जेठो सल्लमरान१४४तास सुत अभयरान१४५हुव,
भावरान१४६।१रघुनाथरान१४६।२ए तास भये दुव२ ॥
भावरान१४६अतिबिदित भई ताकै सत१००रानी,
तनय इंद्रजित आदि भये उत्कृति२६अतिमानी ॥ ७९ ॥
रानांताहि सब इंद्राजित१४७।१रु अन्नद२बुद्धिप३हर४,
कमल५प्रयाग६रु बीरभानु७सुभराज८रु संकर९॥
कोक१०चंद्र११आसाजित१२बेधक१३कुंजरराज१४पुनि,
कोपन१५कमन१६दिलीप१७भगीरथ१८गंगाधर१९ सुनि॥८०॥

१नाना के कुल के नामों के अनुसार २ जादवों के कुल में ३ खिताब (पाल की पदवी) ४ राणा की पदवी सहित ५ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ६ पुत्र ७ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ८ छब्बीस

सल२०समुद२१अक्रूर२२सूर२३संभू२४सम्मद२५तिम,
छोटो हरि१४७।२६छब्बीस२६भावरानज[1] हुव इम ॥
बडो इंद्रजित१४७बिदित भयो अतिबल जग जस चुनि,
तानैं लै मरुदेस राजधानी किन्नी पुनि ॥ ८१ ॥
भय इंद्रजित रान तनय तीन३हि अति उत्तम,
नियमराज१४८।१माधव२रु भीम१४८।३रानांत नाम क्रम ॥
नियमराज रानकै पुंडरीकादि रान१४९सुत,
गया जात बहुबेर पितर ऋन मेटि भयो नुत[3] ॥ ८२ ॥
सुत तासहु रानांत भये तीन३हि हे भूपति,
जेठो केसव१५०।१मध्यमान२ जीवन१५०।३लघु सुभमति ॥
केसवकै बुधपाल१५१तास ध्वजपाल१५२ प्रमानहु,
लोकपाल१५३तसँ तस कृपाल१५४पूरन१५५तस जानहु ॥८३॥
पूरनकै सुत अमृतपाल१५६ ताकै प्रयाग१५७ हुव,
तास समर१५८ सिवरत१५९ तदीय सेनापति१६०तस सुव ।
ताकै कासीनाथ१६१ तास कर्मन१६२ किसोर१६३ तस,
तास करन१६४तस कृष्ण१६५तास रघुराज१६६महाजस॥८४॥
सल्हरान१६७ सुत तास तास संबररान१६८ तनय,
ताकै भूपतिरान१६९ तास अजरान१७० हतअनय ॥
जाडेची जहोनि भई रानी याके घर,
तस सुत नाहरराज१७१सुता[6] पिंगला१भये बरँ ॥ ८५ ॥
पिंगला सु चित्तोडभूप तेजहिँ परिनाई,
जग जस नाहरराज१७१भयो अग्रज तस भाई ॥
नियति[9] जोग लहि तास कुष्ट निकसे सब अंगन,

१ भाव नामक राणा से पैदा २ राणा शब्द है अंत में जिनके ऐसे नामोंवाले ३स्तुति योग्य ४ उसके ५ पुत्र ६ पुत्री ७ श्रेष्ठ ८ चीतोड़के राजा तेजसिंह को ९ दैवयोग (भाग्यवश) से उसके शरीर में कोढ निकसे

भयो जहाँ यह भूप सुनहु वह काल[1] कित्तिधन[2]॥ ८६ ॥

॥ षट्पदी ॥

कणणउज्ज[3] रट्ठोर तपत जयचंद्र भूप जँहँ ॥
चित्तऊड[4] सीसोद समरसिंह सु रावल तँहँ ॥
तौंवर तपत अनंगपाल दिल्लिय पुर दुद्धर[5] ॥
सोमेस्वर अजमेर बंस चहुवान समुद्धर[6] ॥
चालुक्क[7] भीम गुजरात धर भोराराय[8] उपाख्य पति ॥
नरउर अधीस है जम नृपति कूरम[9] कुल मंडन सुमति।८७।
इत सु लक्ख परमार तपत अब्बुव[10] गिरि उप्पर॥
बंबावद आनंदराज कुल हड्ड दिवाकर[11] ॥
जद्दवपति जयसेन दुर्ग रनथंभ धराधन[12] ॥
भट्टी[13] जैसलमेर जाति जद्दव कलहकरन ॥
परमाल भूप चंदेल जब थान महुब्बापुर ठयो॥
तब प्रातिहार नाहर नृप सु मंडोवर[14] मरुपति भयो ॥८८॥

॥ दोहा ॥

नाहरराज नरेस यह, इकदिन गत अखेट[15] ॥
इक१हय इक१अप्पन उहाँ, भयो क्रोड़[16] इक१भेट ॥ ८९॥
लखि द्रुत[17] ताकी पिट्ठि लागि,चल्ल्यो अरब[18] उडाय ॥
कोस बहुत भुव लंघिकैं, पत्तो[19] पुष्कर आय ॥ ९० ॥

---

१ उस समय में २ हे कीर्तिधन (कीर्ति ही है धन जिसके) ३ कन्नौज पर ४ चीतोड़ पर रावल समरसिंह (सूर्यमल्ल ने समरसिंह का इस समय में होना पृथ्वीराजरासा के मत से लिया है सो सत्य नहीं है; क्योंकि पृथ्वीराजरासा उस समय का बनाहुआ ग्रंथ नहीं है उस समय के बहुत काल पीछे कई कपोलकल्पित कहानियों से बनाया गया है इस कारण से समरसिंह के समय में सौ वर्ष का अंतर पड़ता है जिसको प्रमाणों सहित देखना होवे तो मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद नामक ग्रंथ में देखो) ५ दुस्तर ६ उद्धार करनेवाला ७ सोलंखी ८ उपनाम (भोळारायभीम ऐसा प्रसिद्ध है) ९ कछवाहों के १० आबू पर ११ हाडा क्षत्रियों का सूर्य १२ भूमि ही है धन जिसके १३ भाटी (जादव कुल क्षत्री) १४ मंडोवर नामक पुर में १५ शिकार १६ सूअर १७ शीघ्र १८ घोड़े को १९ पहुँचा

तीरथगुरु यह तिन दिनन, हौ गतजल[1] लहि काल[2]॥
भुव कछु अल्ली[3] यौं भयो, अतिएरक[4] तिंहि ताल॥९१॥
प्रबिसि तत्थ भा किरि[5] पिहित[6], भयो पिपासू भूप॥
पायो खोजत निठ्ठि तँहँ, गोपद[7] सलिल अनूप॥ ९२॥
वहहि भूप पिन्नौं उदक[8], सीतल सुखद सुगंध॥
ताही समय अकुष्ट[9] तनु, सो हुव मुदित सुसंध॥ ९३॥
बहुरि बिहावन[10] संरनि श्रम, किन्नौं तत्थहि सैन॥
श्रीपुष्कर दिन्नौं स्वपन, इहिँ अंतर सुख अैन॥ ९४॥
मैंही सूकर[11] रूप करि, यँहँ आन्यौं नृप तोहि॥
सिकता[12] एरक बहुल करि, व्यवहित[13] जानहु मोहि॥ ९५॥
यातैं नृप करनौं उचित, मम जीरनउद्धार॥
कुष्ट गये तव कायके[14], सलिल पुण्य[15] अनुसार॥ ९६॥
तब नृप जागि तत्थहि रह्यो, निरखि अनामय[16] काय॥
मंडोवर सन[17] भट सचिव, लिन्नैं सकल बुलाय॥९७॥
रुप्पय लक्खन खरच करि, नाहरराज नृपाल॥
किय खुदाय उंडो अतुल, तीरथ पुष्कर ताल[18]॥ ९८॥
कनकादिक[19] सब धातुके, श्रद्धा[20] मित सोपान[21]॥
अपर[22] चहौं४दिस उपलमय[23], बिरचिय घट्ट[24] बिधान॥ ९९॥
तबहीतैं प्रतिहार कुल, सूकर पल[25] न खाय॥
हुव इम नाहरराज१७१नृप, मंडोवर मरुराय[26]॥१००॥
ताकै राघवराज१७२हुव, ताकै सुत धनराज१७३।१॥
राजसिंह२ सामंत१७३।३पुनि,ए तीन३हि जसभाज[27]॥१०१॥

---

१ सूखाहुआ २दुर्भिक्ष ३गीली ४एरा ५सूवर ६छिपगया ७ गाय के खुर के खड्डे में जल८पानी९बिना कोढ का शरीर१०मार्ग के परिश्रम को११सूवर का१२रेत और एरा के बहुत होने को ही मेरी ओड समझ(अर्थात् रेत और एरा में छिपा हूं)१३शरीर के १५ पवित्र पानी से१६नैराग्य१७से १८ तालाव को१९सोने को आदि लेकर२०श्रद्धा के माफिक २१सीढियें२२दूसरे२३पत्थर के२४घाट २५सूवर का मांस नहीं खाते हैं२६मारवाड का राजा२७यश के भाजन(पात्र)

गंगपाल१७४धनराजकै, ताकै हुव दुव२पुत्त ॥
जीवराज१७५।१सुंदर१७५।२सुमति,जस जय बिक्रम जुत्त।१०२।
जीवराज सुत दुव२भये, अमायिक१७६।१रु सूदार१७६।२॥
भप अमायिककै भये, सुत द्वादस मतिसार ॥ १०३ ॥
जेठो लुल्लर१७७।१सूर२ पुनि, रामट३ खीखा४ नाम ॥
सोधक५ खुक्खर६ चंद७ बलि, मालदेव८ जसधाम ॥ १०४ ॥
धार९ खीर१०डुंगर११ सुबर१७७।१२, ए कारक खलखेद ॥
प्रातिहारकुलके भये, इनतैं बारह१२ भेद ॥ १०५ ॥
जेठो लुल्लर१७७।१पट्टपति, ताकी संतति सर्ब ॥
बजे भेद करि लुल्लरा१, आहव असह अखर्ब ॥ १०६ ॥
सूर जनंनके सब बजे, सूराउत२प्रातिहार ॥
कति मागध मंडोवरा२, तिनको कहत प्रकार ॥ १०७ ॥
रामट कुलके रामटा३, खीखा सुत बुधखेल१७८ ॥
निजनामक बुधखेल जिहिं, नगर रचिय मतिमेल ॥ १०८ ॥
पूरबमैं बुधखोलिया४, ताके अन्वयजात ॥
सोधक सुत हुव इंद१७८तस, कुलके इंदा५ख्यात ॥ १०९ ॥
खुक्खरके खोखर६भये, चंद तनय हुव तीन३ ॥
किल्हन१७८।१चंद्र२चुहन्न१७८।३ए,तिनके आह्वय कीन ॥११०॥
किल्हन निबसथ निर्मयो, कीलोई अभिधान ॥
कीलोया१ प्रतिहार हुव, ताके सब संतान ॥ १११ ॥
चंद्र जनित चंद्रायनाँ२, ऐसो धारत अंकं ॥
तीजे३तनय चुहन्नके, चोहन्नाँ३उपटंक ॥ ११२ ॥
ए चंदाउत७भेद त्रय३, सप्तम७के पहिचानि ॥
मालदेव१७७।८ अष्टम भयो, जनंन तास अब जानि ॥ ११३ ॥
मालदेवकै महप १७८ हुव, ताकै सुत धोरान१७९ ॥

---

१ युद्ध में २ बडे ३ सूर के वंशवाले ४ जिनको कितने ही भाट लोग मंडोवरा कहते हैं ५ वंश के हुए ६ नाम ७ गांव बसाया ८ चिन्ह ९ पदवीवाले १० बंदा

धोरानाँ ८ सबही बजे, ताकै कुल संतान ॥ ११४ ॥
मालदेवको जो अनुज, नवम ९ धार १७७ अभिधान[1] ॥
ताकै धंधिल १७८ तास कुल, सब धंधिल ९ संतान ॥११५॥
खोरतनय सिंधू १७८ भयो, सिंधूके १० तस जात ॥
डुंगरकै डोरान १७८ तिहिं,डोरानाँ ११ हुव ख्यात ॥ ११६ ॥
सुबरानाँ १२ हुव सुबरकै, ए द्वादस १२ उपटंक[3] ॥
चले अमायिक सुतनतैं, सब भर समरं[4] निसंक ॥ ११७ ॥
लुल्लर १७७ अग्रज सबनमैं, रुद्रपाल १७८ हुव तास ॥
रुद्रपालकै च्यारि ४ सुत, प्रकटे सुमति प्रकास ॥११८॥
हुव अग्रज हरपाल१७९।१ पुनि, सेनपाल २ अभिधान ॥
तीजो मोहनपाल३ गजदेव १७९।४चतुर्थ४ सयान॥११९॥
हुव जेठे हरपालकै, सुत ठक्कुरसी १८० नाम ॥
ताकै नृप गोइंद १८१ हुव, ताकै बुध १८२ अभिराम ॥ १२० ॥
बुधकै पृथ्वीराज १८३ सुत, ताकै नृप रूपाड १८४ ॥
ताकै हुव सोलह १६ तनय, लहि अनुचित अतिलाड[6] । १२१ ।
जेठो नृप हम्मीर १८५।१ पुनि, जैसल२ मुक्कल ३जानि ।
देवीदास ४ रु कुंज ५ तिम, कल्लू ६ करन ७ बखानि ॥१२२॥
देवपाल८जसराज९जयसिंह१०पिथ्थ११अरु चंद१२ ॥
चंन१३रु उद्दल१४दीपसी१५,गुजरमल्ल१६हु मंद ॥१२३॥
सोलह१६ए रूपाड सुन, जँहँ अग्रज हम्मीर ॥
मंडोवर गद्दिय रह्यो, निजकुल खोवन नीरँ ॥ १२४ ॥
बीरमदेव कबंधसुत, हुव चौंडा रट्ठोर ॥
इंदन घर उद्वाह करि, जो जुज्झयो अति जोर ॥ १२५ ॥
हे इंदे पडिहार पै[11], प्रभु निज लखि प्रतिकूल ॥

१नाम २प्रसिद्ध ३पदवी ४युद्ध के भार में निःशंक अमायक के पुत्रों से यह पदवी चली ५नाम ६स्नेह(प्यार)से ७पराक्रम ८राठोड़ वंश के क्षत्रिय ९ईंदा जाति के क्षत्रियों के १०विवाह ११इंदे भी पड़िहार ही हैं, परंतु १२अपने स्वामी को विरुद्ध जानकर

जामाताके संग जुरि, स्वामि ह्रदय हुव सूल ॥ १२६ ॥
नृप हम्मीरहु जिन दिनन, चालतहो खलचाल ॥
बहिनि सगोत्रा बैर बनत, हे सब बंधु बिहाल ॥ १२७ ॥
द्विरागमन करि इक्क द्विज, जायौ निज लै जात ॥
पिक्खी वह हम्मीर नृप, रूप न अंग समात ॥ १२८ ॥
छिन्निलई बरजोरि करि, निलज तजहि द्विजनारि ॥
ताके पति निज देह तब, दयो अग्नि बिच डारि ॥ १२९ ॥
यहहि ब्रह्महत्या अतुल, गिनी न खल प्रतिहार ॥
बिमन भये सब बंधुगन, चाहत हनन बिचार ॥ १३० ॥

षट्पदी

तँहँ चौंडा रट्ठोर संग इंदन लहि दुव्वर ॥
अरधनिसा द्रुत आय परयो पत्तन मंडोवर ॥
खल नृपसौं तब बदलि मिल्यो परिकर चौंडासन ॥
भज्यो चकित हम्मीर पतित कैसैं मंडैं रन ॥
मित बिक्रम सक जँहँ गत भयो ॥
तिंहिंकाल नगर मंडोवर सु रट्ठोरन रन करि लयो ॥ १३१ ॥

दोहा

इत खल नृप हम्मीर१८५।१वह, बीरूटंकर नैर ॥
आनि बस्यो पापिन अधिप, बिसरि कबंधन बैर ॥ १३२ ॥
याको सोदर पंद्रहों१५, दीपसिंह१८५अभिधान ॥
तस कुलके सुंध्यों भये, मालव धर बसबान ॥ १३३ ॥
सोदर ताको सोलहों१६, गुज्जरमल्ल१८५अगूढ ॥

---

१ जमाई के साथ होकर २ दुष्टताकी ३ अपने गोत्र की बहिन का पति होजाने से (अपने गोत की बहिन से व्यभिचार करने से) ४ गोना ५ ब्राह्मण ६ अपनी स्त्री को लेजाते समय ७ जबर्दस्ती ८ मारने का ९ शीघ्र १० पुर ११ परगह के लोग १२ पुर १३ राठौड़ों के बैर को १४ सगा भाई १५ नाम १६ जिनको सिंधिया कहते हैं, और इस समय ग्वालियर का राज्य करते हैं.

बच्छौ इक[1] दंवमैं[2] जरयो, मृग जान्यौं[3] जिहिं मूढ ॥ १३४ ॥
दीपसिंह बरजत रह्यो, मन्नी तदपि[3] न एक ॥
कर[4]नकट्टि दुव बच्छके, खाये बिरह बिबेक ॥ १३५ ॥
इहिं अंतर ग्वाल[5]हु उहाँ, अतिजव[6] ढुंढत आय ॥
बुल्ल्यो लखि इहिं बच्छके, लये श्रवन किन खाय॥ १३६ ॥
इम हुव बिदित उदंत[7] यह, कही सगोत्रन आय ॥
मेटहु गुज्जरमल्ल अघ[8], प्रायश्चित्त बिधाय[9] ॥ १३७ ॥
सोहु न मन्नी टेक सँन[10], रह्यो मत्त जिम रुट्ठि ॥
जाति बहिर्गत[11] करि जबहि, आप्त[12] गये सब उट्ठि ॥ १३८ ॥
इक मैनाँ[13] की कन्यका, तदनंतर[14] यह व्याहि ॥
मैनाँ गुज्जरमल्ल हुव, चित्त दुरित[15] हित चाहि ॥ १३९ ॥
संभर[16]पति नबतैं सुनहु, हुव मैनाँ पड़िहार ॥
बसे आनि खदिराटवी[17], इम तव देस उदार ॥ १४० ॥
इत बीरूटंकर नगर, आयो वह हम्मीर १८५ ॥
ताकै सुत कुंतल भयो १८६, पटु रन करन प्रबीर ॥ १४१ ॥
रा[18]ननगर जिहिं लरि लयो, सत्रुन सीम दबाय ॥
रजधानी रक्खी तहाँ, अप्पन अमल जमाय ॥ १४२ ॥
जिहिं सावर सरवाड जुत, थिर दब्बे बहु थान ॥
ताकै दुव सुत बग्घ १८७।१, अरु निस्मदेव १८७।२ अभिधान[19] ।१४३।
चालुक ईहडदेवकी, सुता जयमती नाम ॥
बग्घ सु व्याह्यो चरमबँय[20], कुलटा अपजस काम ॥ १४४ ॥
गोठनपति गुज्जर भये, प्रबल समय वह पाय ॥

१ गाय का बचा २ वन मे लाय लगी जिसमे जलगया ३ तौभी ४ उस बछड़े के दोनों कान काट कर ५ गायों के चरानेवालों ने ६ शीघ्र ७ वृत्तांत ८ पाप ९ करके १० हठ से ११ बाहर १२ सत्यवादी लोग १३ मींणा (एक नीच जाति विशेष) १४ जिसपीछे १५ पाप १६ हे चहुवाण राजा रामसिंह १७ खैराड़ नामक देश में हे उदार आपके देश में १८ भिणाय नगर का प्राचीन नाम है, अथवा भिणाय के पास कोई दूसरा ग्राम था १९ नाम २० वृद्धावस्था (बुढापा) में

जिनकौं लद्धो अतुलधन, खरचन खान अघाय ॥ १४५ ॥
भ्राता वे संकृति[1]२४भये, मुख्य भोज[2]१ तिनमाँहिं ॥
बित्त[3] लुटावन काज जिहिं, रक्खी नाँ[4]हिं सु नाँहिं ॥ १४६ ॥
ताके घर यह बग्घकी, रानी प्रविसी जाय ॥
कारन तिहिं संगर[5] कियउ, प्रतिहारन बल पाय ॥ १४७ ॥
हनि सोदर चउबीस२४ही, किन्नैं गोठ[6] बिहाल ॥
भयो बिदित यह भुम्मितल, कलह गुज्जरनकाल ॥ १४८ ॥
बग्घ तनय हुव भुद्द१८८नृप, राननगर अधिराँज[7] ॥
इत सुत गुज्जरभोजकै, उद्दल हुव अतिलाज ॥ १४९ ॥
जनक[8] पितृव्य[9]क बैर जिहिं, लिन्नौं सुमिरि असेसं[10] ॥
प्रतिहारन सन[11] रानपुर, छुट्यो तब सह देस ॥ १५० ॥
भयेभुद्द सुत दोय२जसराज१८९।१रु साँवलदास१८९।२॥
सुत जिहिं साँवलदासकैं,इक१हुव केसवदास१९० ॥१५१॥
कुल सब केसवदासको, केसवउत्त कहात ॥
जेठो जो जसराज१८९तस, नंद१९०नाम सुत जात ॥१५२॥
नंद तनय[12] हुव भीम १९१अरु,ताके हुव दुव२पुत्त[13] ॥
कृष्णदास१९२।१जेठो अनुज[14], सोनपाल२जयजुत्त ॥१५३॥
बजे सोनपालोत्त हीं, तस संतति[15] प्रतिहार ॥
ताहीके कुलनाद हुव, जाके भीम उदार ॥ १५४ ॥
सोनपालसौं अग्रज[16] जु, कृष्णदास१९२अभिधान[17] ॥
जिहिं बंध्यो गढ उचहरा, पूरब धर निज थान ॥ १५५ ॥
कृष्णदास नृपकै भयो, स्यामस्याहि१९३ अरिसाल ॥
तास मुकुट मोहन१९४भयो, ताकै तनय कृपाल१९५।१५६।

१ चोवीस भाई २ भोजा नामक गूजर ३ धन के देने में जिसने ४ नाहीं की नाहीं रक्खी, अर्थात् एक नटने का ही निषेध था ५ युद्ध ६ गांव का नाम है ७ स्वामी ८ पिता ९ काके(चचे) १०संपूर्ण ११से १२पुत्र १३ पुत्र १४ छोटा भाई १५ वंश (संतान) १६ बडा भाई १७ नाम

गीर्वाणभाषा ॥ स्रग्विणी ॥

तत्प्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रप्रपौत्रात्मजा ॥
राम भूभृत्तृतीयाऽद्वितीया भवत्प्रेयसो याऽभवच्चन्द्रभानुः सुधीः ॥१५७॥

॥
॥ १५८ ॥
॥
॥ १५९ ॥
॥
॥ १६० ॥
॥
॥ १६१ ॥
॥
॥ १६२ ॥

सङ्क्षिप्य कीर्त्तितो राजन्प्रतिहारान्वयस्त्विति ॥
तस्य पूर्वभिदोऽज्ञाताः शृणु चाधुनिका भिदः ॥ १६३ ॥
पूर्वं पण्डहरोपाख्या१जाताः पण्डहरान्नृपात् ॥
लुल्लराल्लुल्लरोपाख्याः१।२शूराउत्ता१।२स्तु शूरतः ॥१६४॥
एतान्मण्डोवरोपाख्या १।२ न्वदन्ति कतिमागधाः ॥
रामटाद्रामटोपाख्याः १।३खैखेस्तु बुधखेलतः ॥ १६५ ॥
पूर्वस्यां बहुविस्तारा बभूवुर्बुधखेलयाः१।४ ॥

संस्कृतभाषा॥ हे राजा रामसिंह उस कृपाल के पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता. पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, पड़पोते का पड़पोता, अर्थात् इक्कीसवीं पीढी पर बलभद्र नामक की दूसरी पुत्री बुद्धिमती चन्द्रभानु नामवाली जो आपकी प्यारी तीसरी राणी हुई ॥१५७॥ हे राजा रामसिंह यह पडिहार का वंश संक्षेप से कहागया जिसके पहिले भेद नहीं जाने गये और अब के भेद सुनो ॥१६३॥ पहले पण्डहर से जो हुए सो पण्डहरा नाम से, लुल्लर के हुए जो लुल्लरा नाम से, और शूर से उत्पन्न हुए जो शूराउत्त कहाये ॥ १६४ ॥ इनको कितनेक भाट मण्डवरा नाम से कहते हैं. खिखि के बेटे बुधखेल से हुए जो बुधखेलया नाम से पूर्वदिशा

शोधकस्य सुतादिन्दादिन्दा१।५आसन्नुपाख्यया ॥ १६६ ॥
खुक्खरात्खौक्खरा १।६जाताश्चन्दस्यासंस्त्रयः३सुताः ॥
किल्हण१श्च तथा चन्द्र२श्चुहन्न३श्चेति नामतः ॥ १६७ ॥
चन्दाउत्तोपमामान १।७स्तेऽप्यस्तिस्रो भिदोऽभवन् ॥
कीलोयाः१।७१किल्हणाज्जाताश्चन्द्राच्चन्द्रायणा१।७२स्तथा।१६८।
चोहन्नादपि चोहन्ना १।७३श्चन्द्राउत्ता१।७इमे त्रयः३ ॥
माल्लदेवसुताज्जातो धोराणो महपाभिधात् ॥ १६९ ॥
धोराणा १।८ इत्युपाभिख्यास्तद्वंश्या भूतलेऽभवन् ॥
धन्धिलो धारपुत्रोभूत्तद्वंश्या धान्धिलाः १।९स्फुटाः ॥ १७० ॥
खीरपुत्रोऽभवत्सिन्धूः सिन्धूकोपाभिधा १।१०स्ततः ॥
डोराणो डुङ्गराज्जातो डोराणा १।११ स्तद्भवा भुवि ॥१७१॥
सुवराच्च तथैवासन्सुवराणा ११।२उपाख्यया ॥
दीपसिंहादयो जाताः सर्वे सुन्ध्योपटङ्किनः११३॥ १७२ ॥
पडिहारास्तथा मैणा १।१४ जाता गूर्ज्जरमल्लतः ॥
केशवोत्ता१।१५ अथाप्यन्ये जाताः केशवदासतः ॥ १७३ ॥
बभूवुः शोणपालोत्ताः१।१६शोणपालकुलोद्भवाः ॥
मूलभेदाः प्रतिहाराऽन्ववायस्येति षोडश १६ ॥१७४ ॥

में विस्तार से हुए हैं. शोधक के बेटे इन्द से हुए जो इन्दा नाम से हुए ॥ १६५ । १६६ ॥ खुक्खर से खौक्खरा और चन्द के तीन पुत्र किल्हण, चन्द्र और चुहन्न ये चान्दाउत नाम से हुए जिन की तीन शाखे हुईं; किल्ह से कीलोया, चन्द्र से चन्द्रायणा, और चुहन्न से चोहन्ना, ये तीनो चन्द्राउत हैं. मालदेव के पुत्र महप से धोराण हुआ, जिसके वंश के पृथ्वी में धोराणा हुए. धार का बेटा धन्धिल हुआ जिसके वंश के धान्धिला कहाये. खीर के पुत्र सिन्धू से जो हुए वे सिन्धूका नाम से कहाये. डुंगर के डोराण हुआ. जिसके वंश के पृथ्वी में डोराणा कहाये ॥ १६७ ॥ १६८ । १६९ । १७० । १७१ ॥ सुवर से सुवराणा नाम के हुए. दीपसिंह आदि सब सुन्ध्या पदवीवाले हुए ॥ १७२ ॥ तैसे ही गूर्जरमल्ल से पडिहार जाति के मींणा (मेर जाति का एक भेद) हुए हैं केशवदास से जो हुए वे केशवोत कहाये ॥१७३॥ सोणपाल के वंश के सोणपालोत हुए. ये सौलह पड़िहार वंश के मुख्य भेद हुए ॥१७४॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीयराशौ प्रतिहार वंशसमस्तनोद्देसनं पञ्चदशो मयूखः ॥१५॥आदितश्चत्वारिंशत्तमः॥

अथ चालुक्यवंशसमस्तनोद्देशनम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

चालुक्य१कौँ चतुर्मुखनैं नाकनदी२पुनीतसूकरोखरक्षेत्रप्रधानदेसदयो रु ताकै ऋक्ष२।१चाच. मान. बुध. बिसंख्य. भग. मरीष. सिव. समीर. देव२।१० यह पुत्रनको दसक१०भयो ॥

तिनमैं अग्रज ऋक्ष२ताकै अक्षय३।१रु राम३।२ ए दोय३तनय। अक्षयकै रूप४।१ वृष. तेजित. तेज. प्रजायक. रत्न. अन्वय. भानु८ ए अट्ठ८हि बिदित३ भये निवारि अनय४ ॥ १ ॥

तिनमैं बडो रूप४ताकै पृथु सो प्रतापी मंडलेश्वर पृथु५नाम भयो एक१तनुज ॥

ताकै पंचास पुत्र तिनमैं बडो नाथ६।१तातैं बिसंध.कर्ण.चंद्र. ब्रध्न. बिसम. जंत्र. जवन. अंधाल. स्ववस ६।१० स्यामल. अनंजि. चित्रक. चिद्बुद्धि. चिधाल. राजसील. मान्यध्वनि. छत्रसीस. पुरुषोत्तम. राघव ६।२० चरदत्त. कुंटर. महप. अनर्ण. रुचिचन्द्र. हर्यश्व. पत्रल. अर्णव. प्रतिभू. प्रघण६।३०।परतान. नरबिधान. सत्यव्रत. कुसल. हरिश्चंद्र. चित्रगुण. जाम. हरित. हितसेन. विघस६।४०चक्रसेन.सहदेव.त्रपाण. बिजय.सत्वर.भरत.उदय.शृंग. सुवर. क्षेत्रपाल ६।५० ए गुनचास४९अनुज॥

तिनमैं अग्रज जो नाथ६ताकै अस्मय७।१दिलीप. दुघण. भारत. जंबर. सुरत. दिवेस. दैवधन.नाभि. निम्म७।१० सम्म.हेमद.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के प्रथम राशि में पडिहार वंश का संक्षेप से कहने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥ आदि से चालीस मयूख हुए ॥ ४० ॥ अब चालुक्य वंश का संक्षेप से कहना है ॥ १ ब्रह्मा ने २ देवनदी (गंगा) ३ प्रसिद्ध ४ अनीति ५ पुत्र ॥

सिंहद्वीप७।१३ ए तेरह१३पुत्र भये ॥.

इनमैं जेठे अस्मयकै पंचल८ताकै लोट९ताकै न्हदराज १०

तकै अप्पति ११।१दुरत्यय. अपगा. डुंड. रुतपाल. त्वरम. मुंग.

सदासिव८ ए अष्ट८पुत्र ठये ॥ २ ॥

तिनमैं मुख्य अप्पति११ताकै सुदर्सन१२ भडंग१२।२ दोय२सुत ॥

सुदर्सनकै गौणा१३।१ असमीक. कोमल .दुस्सर. ईश्वर. बि

डंब. अडबड. बिस्वहंस. बरसूल. हंससूर. भासुद्ध. स्वराल १३।१२ ए

तेरह क्षेमधन्वा१३।१३ जुत ॥

जेठे गौणाके बिजय १४ ताकै देवन १५।१ पुण्यधीर. की

र्तिसील. रूपराज१५।४ए पुल च्यारि४ ॥

अरु मुख्य देवनकै बुधराज १६।१ कृष्णा १६।२ रक्तासव१६।३ ए

तीन३ ही बढे धर्मधारि ॥ ३ ॥

बुधराजकै मघराज १७।१ धुरराज १७।२ सीतलसील १७।३ ए

बलिष्ठ भये पुत्र तीन ३ ॥

त्यौंही मघराजकै ऋक्थसील १८।१ क्षेत्रसील. बसुसील. ज-

वनसील. सूलसील. संहननसील. अचलसील. चंचलसील. हर

नसील. कमलसील १८।१० मल्लसील. क्षिपसील. मित्रसील. सु

न्दरसील. श्रवणसील१८।१५ए पुत्र पंद्रह भये समर प्रबीन॥

इनमैं तेरह्वौं मित्रसील १८।१३ ताहीके कलहकर्णा. ब्रह्मसुख.

महासुख. ए तीन ३ हु अधिक नाम ॥

अरु इनमैं बडो ऋक्थसील १८ ताकै सुधाधर१९ ताकै ब्रह्म-

धीर २० लरिबेमैं भयो ललाम ॥४॥

ब्रह्मधीरकैबिरामसील २१ताहीको अपरनामैं बुद्धिमत्ताकैरि

सुधी २१हू प्रकट भयो ॥

अरु या बिरामसीलकै जमसील २२ ताको अपर अभिधान

१ युद्ध में चतुर २ सुंदर ३ दूसरा नाम ४ बुद्धिमानी से ५ दूसरा नाम

नागसेन २२ हू कह्योगयो ॥

ताकै जनमंत्र २३ताहीकौं सुकबिजन समरसीघ्रत्वकेरि त्वरि तक २३हू कहैं ।

ताकै देहदेव २४ ताकै देववर्मा २५ अद्यापि जाकी कीर्ति कविनकी कोटिमैं राचीरहैं ॥ ५ ॥

देववर्माकै महीचीन २६ ताकै जयमल्ल २७।१ कुजराज. मंदुक.परिचय.प्रसून.अंकुस.अमर.रतिराज.रत्नराज. महाबल २७।१० महच्छूल. सुरनायक. निरतराज. बसुसुर. बीरनाभि. नारायण. भान. देवकीर्ति. रुद्रधीर. २७।१९ ए पुत्र भये एकोनबीस ॥

तामैं जेठो जयमल्ल२७ताकै भीम२८।१सुरत. नरपाल. संबरदत्त.सिवराज.तुंगपाल.मुनिसील.जवस.बसुराज.चतुरराज २८।१०धनूराज. नरहर. रामगुण. गंगदत्त. बिजयराज. दीपराज. बलदेव. स्यामराज. सोमक. चूलक२८।२० उच्चक.चयन.सूरसिंह.बुधबीर. अचल. अंतिक. बिमर्ष. पिंड. रु तार. कीर्तिन. कूप. मदय. आहुक २७।३३ए भये तनूज[3] ततीस३३ ॥

इनमैं अग्रज भीम२८ताकै अंबर२९ताकै उज्जर३०ताकै युतार्क३१ताके बिजयार्क३२ताके बामांच३३ताकै मूर्द्धार३४ताकै काशीश्वर३५ताके सूर३६ ॥

अरु सूरकै अक्षय३७ताकै प्रभु३८ताकै हंसरत३९ताकै राघव४०ताकै रूपपूर४१॥ ६ ॥

रूपपूरकै लोध्र४२ताकै स्यामार्क ४३ भयो ॥

स्यामार्ककै मौरिक४४ताकै प्रताप४५ताकै बिरतारि४६ठयो ॥

बिरतारिकै नाम परुप४६बिक्रम४६सुभाग४६अमर४६हंता४६जितसिंह४६तेजस्वी४६नंदक४६देवप्री४६कर्ण४६ए दस अधिकहू जानैंगये ।

---

१ युद्ध में शीघ्रता करने के कारण २ अब भी ३ पुत्र ४ बड़ा

ता बिग्तारिकै गोबिंद४७ताकै इंद्रसेन४८ताकै रत्नार्क४९ताक अजालमार्क५०।१संग्रामार्क. द्रुमार्क. रोमार्क. नृसिंहार्क. बसुधरार्क. मुखार्क. अर्जुनार्क. अजितार्क. ध्यानार्क१० बिश्वनार्क. जयपाला र्क. सुकार्क. कुहरार्क. भ्रमरार्क. दुर्गार्क. भगार्क. दीपार्क. मुक्ता र्क. बिजयार्क२०युगलार्क. भीमार्क. मुदितार्क. पालार्क. व्याघ्रा र्क५०।२५ए पचीस. पुत्र भये ॥ ७ ॥

तिनमैं बडो अजालमार्क५०ताकै सदासुर५१ताके नाम इंद्रपाणि५१ पूर्णधर. सोमस्वर. पुण्यार्क. कमलाकर. सिरोमनि. प्रघात. संग्रामसूर. ओंकार५१ए नव९अधिकहू मानैं ।

वा सदासूरकै हरवाय५२ताकै पुत्र पुरुसानु५३।१सुगतार्य२यौव- नाश्व५३।३ए तीन३ही जगत जानैं ॥

बडे पुरुसानुके कर्णधीर५४।१पट्टधीर५४।२ए दोय२तनुंज ॥

तिनमैंकर्णधीरकैदोय२आस्थान५५।१बडो रुसुरलराज५५।२अनुजै८

आस्थानकै विहितातिथि५६ताकै सुरूपातिथि५७ताकै प्रीताति थि५८ताकै रणातिथि५९ताकै देवातिथि६०।१पुण्यातिथि. पूर्णातिथि. लब्धातिथि. भूतातिथि. मतातिथि. धर्मातिथि. प्रसन्नातिथि. चूडा- तिथि. पिंडातिथि१०प्रियातिथि. कृपातिथि ६०।१२ ए द्वादश पुत्र भये

इनमैं बडो देवातिथि६०ताकै राजसूर६१।१देवसूर. महासूर. मो- जसूर. मोक्षसूर. कमलसूर. रम्म्यसूर. धर्मसूर. सूरसूर. लोकसूर१० उत्तानसूर. रघुसूर. करनसूर. गोपसूर. ब्रह्मसूर. मंडलसूर. जगसूर. अच लसूर. रत्नसूर. प्रधानसूर२०मुरसूर. व्याघ्रसूर. त्रिकालसूर. नृसिं हसूर. संकरसूर. उग्रसूर. अक्षयसूर. बीरसूर. अमृतसूर. प्रद्युम्नसूर ६१।३०ए तीस तनय ठये ॥

इनमैं जेठो राजसूर६१ताको अपर नाम त्रिभुवनसूर६१हू जान्यौं ।

अरु ताकै पुत्र अक्षयमनि६२ताकै कृपालमनि६३ताकै गुणसा- रमनि६४ताकै पुत्र राजमनि६५मान्यौं ॥ ९ ॥

१ पुत्र २ छोटा भाई ३ पुत्र ४ दूसरा नाम

राजमनिकै दिवमनि ६६।१ हरिमनि. सभामनि. महामनि. बिजयमनि. सुखमनि. कन्लमनि. मित्रमनि. सुंदरमनि. सिरोमनि १० सुरूपमनि. सिंहमनि. कीर्तिमनि. सामंतमनि. उदितमनि. तेजोमनि. चंद्रमनि. बिवस्तुमनि. माधुमनि. जगन्मनि २० भानुमणि. मुकुटमणि. बुधमणि. नवमणि. सुवर्णमणि ६६।२५ इन पचीस २५ पुत्रन जन्म लीनौं।

तिनमैं जेठो दिवमणि ६६ ताकै कुलमणि ६७ ताकै पृथ्वीमनि ६८ ताकै रतिमणि ६९ ताकै रम्यमणि ७० ताकै भगवन्मणि ७१ भयो तानैं सुकविनकै सूक्तकरि[1] अपनौं सुजस सालंकार[2] कीनौं॥ भगवन्मणिकै पुत्र पृथुदेव ७२।१ बरसिंह २ पुरुषोत्तम ३ सुरराज ४ सूर ५ रंगसूर ६ महादेव ७ रैवत ८ दय ९ सत्यदेव १० इन दस १० पुत्रन जन्म लयो। तिनमैं पूर्वज[3] पृथुदेव ७२ ताकै उत्तानदेव ७३ ताकै संकरदेव ७४ ताकै सामंतदेव ७५ ताकै भीमदेव ७६ ताकै मल्लदेव ७७ ताकै संभूदेव ७८ ताकै बीरदेव ७९ ताकै भोजदेव ८० ताकै क्षेमदेव ८१ भयो॥ १०॥ क्षेमदेवकै दुश्शल ८२।१ मोत्कलभानु २ रूपभानु ३ अचलभानु ४ देवभानु ५ जगद्भानु ६ राजभानु ७ धर्मभानु ८ सुरतभानु ९ एनव भये तनय[4]। इनमैं अग्रज[5] तो अप्रजहीं[6] अवंतिराजके[7] आहवमैं[8] मरयो ताकौं चालुक्यवंश दुश्शल पित्र मान्नि[9] पूजत ताको अनुज[10] मोत्कलभानु ८२ भूप भयो ताकै तुलसीभानु ८३ ताकै सुरुचिभानु ८४ ताकै सुखभानु ८५ ताकै स्यामभानु ८६ जाके उत्तम आचारतैं अनालंब[11] रह्यो अनय[12]॥

स्यामभानुकै बिजयपाल ८७ ताकै कुमारपाल ८८।१ बीरपाल. नमनपाल. वत्सपाल. धर्मपाल. धनपाल. भैरवपाल. सुन्दरपाल. जोधपाल. चन्द्रपाल १० सोणपाल ११ इन ग्यारह ११ पुत्रननैं जन्म लह्यो।

---

१ वचन २ अलंकार सहित ३ पहले जन्म लेनेवाला (बडा) ४ पुत्र ५ बडा भाई ६ विना संतान ही ७ उज्जैण के राजा के ८ युद्ध में ९ दुश्शल नाम का पितर मानकर १० छोटाभाई ११ निराश्रय १२ अनीति, अर्थात् इस के राज्य में अनीति को कोई आधार नहीं मिला

तिनमैं जेठो कुमारपाल८८जो जैनलोकननैं परम आर्हत[1] तथा श्रौतलोकननैं[2] परम नास्तिक कहिय ताकै अजपाल८९।१गजपाल २दोय२सुत भये तिनहूकै अभीष्ट[3] जैनमतही रह्यो ॥ ११ ॥

अरु अजपालकै त्रिलोकपाल९०ताकै धीरपाल९१ताक प्रद्युम्न ९२ताकै इंद्रद्युम्न९३जान्यौं ॥

वाही इंद्रद्युम्ननैं नास्तिकमतको न्यक्कार करि उत्कलदेससौं पूर्वसमुद्रके तट पर श्रीजगदीसको मंदिर बनाय परमपुनीत महाभागवत[4]धर्म मान्यौं ॥

वाहू देसमैं अपनौं राज्य संपन्न[5] हो तासौं स्वत्व[6] तजि अखिल[7] अधीस[8] ईश्वर[9]के अंघ्रि[10] अरविंदन[11]को उभय२अपनैं आलोचन[12]मैं लयो॥

ताकै सिंहद्युम्न९४ताकै महाद्युम्न९५।१अजद्युम्न२अमरद्युम्न३ समर्थद्युम्न ४ सूरद्युम्न ५ यह पुत्रनको पंचक[13] ५ भयो ॥ १२ ॥

बडे महाद्युम्नकै उदयद्युम्न९६ताकै चित्रद्युम्न ९७ ताकै राजदमन ९८ ताकै सिंहदमन ९९बडो हरिभक्त भयो ॥

तैसोही सिंहदमनकै ९६ जमोदधि १०० ताकै गोपसद१०१ताकै बेदसद१०२ताकै क्षेमकरण१०३ताकै पुत्र कुसलायत१०४ठयो ॥

कुसलायतकै नंदभानु१०५।१ गोकुल. उदयकर्ण. चार्चिक. बेणुराज. बेणीदास. हरकर्ण. कन्नड. जगद्देव. सोमक. कीर्तिपाल. गोपाल१०५।१२ ए द्वादश १२ उद्भूत[14] जानैं ॥

इनमैं जेठे नंदभानुकै त्रिलोकचंद्र१०६।१ खेत्रलय.जनमित्र.पुस्कर.धनेस.सुमन्न्यु.कर्ण१०६।७ए सात७ही पुत्र मागध[15]लोकननैं मानैं ।१३।

इनमैं अग्रज त्रिलोकचंद्र१०६ताकै मोहन१०७ताकै महीपराज१०८भयो। ताकै महाकर्ण१०९।१बीरभानु२सुरकर्ण३ये तनुज[16]को त्रितय[17] ठयो

१जिन(जैन मत का चलानेवाला २वेद मतवालों ने ३प्रिय ४परम भगवद्भक्तों को ५संपत्ति सहित (भरापूरा) ६अधिकार(अपनापन) ७सब के ८स्वामी ९परमेश्वर के १० चरण ११ कमलों को १२ विचार १३ पांचों का समुदाय १४ उत्पन्न १५वंशावली लिखनेवाले बड़वाभाटों ने १६ पुत्र १७तीनों का समुदाय

बाही महीपराजनैं पूर्वदेसमैं पट्टनि नाम नगर बसायो ।
अरु तीनौं३ही पुत्रकौं भिन्न भिन्न बसुधा१ बांटि परमपुराय सहित
परलोक पायो ॥ १४ ॥
ताके पुत्रनमैं बडे महाकर्णनैं तो अपनी राजधानी सोरौंपुरही रा-
खि राज्य कीनौं ।
अरु छोटे बीरभानुनैं तथा सुरकर्णनैं अनुक्रमसौं पट्टनिके राज्य
को तथा किलराजपुरके राज्यको लाह लीनौं ॥
तिनमैं बीरभानुके बंसके तो भाला सोलंखी१ भये ।
अरु सुरकर्णके समस्त भुरटिया२सोलंखी कहेगये ॥ १५ ॥
इनमैं बडो महाकर्ण१०६ताकै सूरराज११०ताके अल्लहरा१११ ता
कै परसुराज११२ताकै गोकुलराज११३भयो ।
तासौं सोरौंनगरको राज्य छुट्यो तब दक्षिणमैं जाय रु बिदर्भदेस
को राज्य जित्तिलयो ॥
गोकुलराजकै बर्चोंराज ११४ ताकै सुरपाल ११५ताकै गुणपाल
११६ताकै गोवलपाल११७सुन्यौं।
जानैं अपनैं भुजनकरि बहुरि सोरौंनगरको फुल्लित फलित रा
ज्य लुन्यौं ॥ १६ ॥
वा गोवलपालकै पृथ्वीपाल११८।१किसोरपाल२बीरपाल ३संगर
पाल४बिजयपाल५चक्रादित्य६ज्ञानराज११८।७१ तनय भये सात ।
तिनमैं अग्रज पृथ्वीपाल११८ताकै वालुकाराव११९देवराज२सं
ख्यराज३बलराज११९।४ए चार४ही तनय भये ख्यात ॥
इनमैं बडे वालुकारावकै हरिनराज१२०ताकै संकर १२१।१ खुं
डन२ए दोय२पुत्र भये ॥
तिनमैं छोटे खुंडनके वंसके तो वंगदेसमैं मुरायती आदिक ग्रा
मनमैं जाय बसे ते समस्त खुंडानौं३सोलंखी कहेगये ॥ १७ ॥
अरु वडो संकर पैंट्टपति रह्यो ताकै लवणाकर्ण१२२।१सहदेव२

१ भूमि को बांट कर २ पुत्र ३ प्रसिद्ध ४पाट का स्वामी (पाटवी).

काशस्विर३भीष्मक४जयराम५रेणुक६अचल७कनक८प्राणसेन ९ सालिवाहन१०हंसराज११पञ्चक१२।१२ए बारह१२तनय।

तिनमैं बडो लवणकर्ण१२२ताकै सिवराज१२३ताक भोजराज १२४ताकै नगराज१२५ताकै चन्द्रराज१२६ताकै धीर१२७ताकै मेघराज१२८ताकै नल१२९ताकै बिरंग१३०ताकै हरराज१३१।१गोइंदराज२खेतल३राजभानु४दीपक५सुमन्न्यु६खल्ल्य७अणबीर८पत्रल ९ ए नव९ही भये सनय॥

तिनमैं बडो हरराज१३१सो तो पट्टपति रह्यो।

अरु याकै अनुज अष्ट८तिननैं उत्तरदिसामैं जाय रु अधिकार लह्यो१८

बडे हरराजकै कर्मसिंह१३२ताकै देवभानु १३३ ताकै महीपाल १३४।१अगल२फुलंग३घुसंग४मनवीर१३४।५ए पंच५पुत्र जानैं॥

तिनमैं बडे महीपालकै इंद्रपाल१३५।१दीनपाल२जसराज३राजमल्ल४भानु५राजजुष्ट६भीम७राजस्फीत८ए अष्ट आत्मज मानैं॥

तिनमैं अग्रज इंद्रपाल१३६ताकै प्रताप १३६।१बिज्जल.राजरत. भोज. बिक्रम. हम्मीर. खेम. भारमल्ल.जयसिंह.राजसिंह१० राजधीर.भैरव.प्रेमसिंह.रूपसिंह.उदयसिंह.कर्णसिंह. राजकर१३६।१७ ए सत्रह१७सूनु कहे।

तिनमैं पट्टपति प्रताप १३६ताकै सुरतान१३७।१बीकराज. इरप. सोन.तलज.अलेस. कँवरपाल. बिज्जल. राजमणि. दुर्भर१०कोकराज. बिखजय. बिमच. लोहहस्त १३७।१४ इन चतुर्दस १४ पुत्रन जन्म ले रु सुजस लहे॥ १९॥

तिनमैं बडो सुरतान १३७ताहूकै कुमारपाल१३८ताक सोमेश्वर १३९नाम महापंडितराज पुत्र भयो।

जाको बनायो मानसोल्लास नामक प्रबंध सर्वबिद्याके संग्रहमय चतुरनकै चातुरीके जुद्धमैं तनुत्र भयो॥

ता सोमेश्वरकै श्वेताश्व१४०।१मखसूर२अर्जुन३जयपाल४ यह

१ नीति सहित २ राज्य का स्वामी ३ पुत्र ४ ग्रंथ ५ कवच

पुत्रनको चतुष्क[1]४सुन्यौं ।

तामैं बडे श्वेताश्वकै दुर्जनदम१४१ताकै महराज१४२।१कृष्णा २ खेतल३अनहल्ल४नवरंग५सत्यभीम६ए छ६पुत्र भये तिनमैं बडे महराजको सुजसहू चतुरननैं चाव[2] करि चुन्यौं ॥ २० ॥

महराजके पुत्रराज १४३।१ बीज २ कर्ण ३ भीम ४ संकर ५ सुरत ६ ए पिताकी संतति समान छ ६ ही पुत्र भये ॥

तिनमैं बडे राज१४३अरु बीज१४३दोहू२सोदर भ्राता हे[3] तिनतैं अनई[4] ओर अनुज[5] बदलि गयो ॥

तब राज१४३ बीज१४३ दोहू२सोदर[6] समस्त बैभवकौं बिहाय[7] श्रीद्वारकाधीसकी यात्राकौं सिधाये ॥

अरु दर्सन भेट स्नान दान करि पच्छे मुरि दरकुंचन गुजरात जनपद[8]मैं नगर अनहलपुरपट्टनि आय मुकाम लगाये ॥ २१ ॥

तहाँ राजा सूर चावरो[9] राज्य करतहो तानैं सनमान पूर्बक इन दोउन२कौं अतीव[10] आदर दीनौं ॥

अरु बडे सोदर राजसौं अपनी सुता पद्मावती को संबंध करि राजा सूरनैं बिबाह कीनौं ॥

अपनैं मुलकमाँहिंसौं बिभाग[11] दे रु दोहू२चालुक्य तत्थाहि[12] राखे तहाँ राजा राजसौं चावरी रानीमैं पुत्र मूलराज १४४ भयो ॥

जानैं मातुल[13]बंसको संहार करि उनके देस सहित अनहलपुर पट्टनि अपनौं अमल करि लयो ॥ २२ ॥

याही मूलराजनैं तीजे३आश्रम[14]की अवस्थामैं बँहोरि[15] जैनमत धारन कीनौं ॥

वा मूलराजके चंद्रगिरि१४५।१सूर्यगिरि२ द्रोणागिरि३ इन तीन ३ पुत्रन जन्म लीनौं ॥

---

१ चारों का समुदाय (चौकड़ी) २ उत्साह ३ थे ४ नीति रहित (अन्यायी) ५ छोटेभाई ६ सगेभाई ७ छोड कर ८ देश ९ चावड़ा वंश का क्षत्रिय १० अत्यंत ११ वंट १२ वहां ही १३ मामा के १४ वृद्धावस्था में १५ फिर

राजा चंद्रगिरिकै विजयभीम१४६ ताकै बलराज १४७ ताकै घुग्घल१४८।१ निर्भयादित्य२ बलदेव३प्रेमराज४सक्तिकुमार५ए पं च५पुत्र तिनमैं बडो घुग्घल १४८असंतति गतासु भयो सोहू चालु क्य बंशकै पूजनीय पित्र मान्यों गयो ।

ताको अनुज निर्भयादित्य१४८राजा भयो ताकै बरसिंह १४९ ताकै बलभद्र१५०।१ नाहर१५०।२यह पुत्रनको जुग्म२ठयो ॥२३॥

बडे बलभद्रकै भीम१५११ताकै गहिलकर्ण१५२ कर्मण२चंद्रसेन३ श्रीरंग१५२।४ए च्यारि४ही पुत्र मागधनके प्रबंधन करि जानैं ॥

तिनमैं बडो गहिलकर्ण१५२तो भूप भयो रु मूलराजकै पीछैं स बननैं जैननकौंही नमनीय मानैं ॥

इहाँ च्यारि४भीमके पुत्र कहे तिनमैं तीजो३पुत्र चंद्रसेन१५२।३ ताकै बंसके सब कटारिया४सोलंखी कहाये ।

अरु इनको अग्रज राजा गहिलकर्ण१५२।१तासौं मुख्य रानी- मैं आधान रह्यो परंतु प्रसूतिकालकों वर्षही लगाये ॥ २४ ॥ तदनंतर नीठि नीठि आस्तिकनके कहैसौं अखिलनके अधीश्वर उमेसके आराधन करि सब वैद्यनसौं औषध सेवन करि राजा गहि लकर्णकै जयसिंह१५३नाम पुत्र भयो ॥

सो यह भावी मंडलेश्वर सस्त्र सास्त्र विद्यामैं अद्वितीय ईद्ध होतगयो॥

राजा गहिलकर्णनैं आस्तिकनके कथित करि अभीष्ट पायो यातैं पुत्र जन्मके अनंतर वानैंतो जैनमत दूर राख्यो ॥

अरु या जयसिंहदेवनैंतो पूर्वसंप्रदायके साक्षी हेमचंद्रादिक जै- ननहीके सत्कारमैं प्रीतिको पूर राख्यो॥२५॥

यह राजा परमारनरेस बिक्रमके च्यारिसे इकतालीस ४४१मितैं

१बिना संतान २ मरा ३ जोड़ा ४ बड़वाभाटों के ५ ग्रंथों से ६ नमस्कार करने योग्य ७ गर्भ ८ जन्म समय ९ जिस पीछे १० वेद धर्म को माननेवालों के कहने से ११ सब के स्वामी १२ महादेव की सेवा १३ आगे होनेवाला १४ प्रकाशमान१५वेदमतावलंबियों के१६कहने से१७इच्छानुसार फल पाया१८पीछे१९आम्नाय (गुरु परंपरा)२०समूह२१प्रमाण.

संकमैं प्राकट्य पाइ समस्त आर्यावर्त्तमैं त्वरासौं अपनौं अमल करि-
केही सिद्धि पाइ सिद्धिराज जयसिंह कहायो ॥
अरु गुजरातदेसमैं अपनैं अभिधान करि सिद्धपुरपट्टनि नाम
नगर बसायो ॥

राजा सिद्धराज जयसिंहक गोहिलराज१५४।१ हर्षल२पूर्णमल्ल३
व्याघ्रराज४तेजसिंह५मंडन६बलभीबल७नील८ए अष्ट८पुत्र भये ॥
तिनमैं व्याघ्रराजनैं तो पूर्वदेसमैं बाँधूगढ जाय अपनौं राज्य कियो
ताके बंसके तो अब बाघेले ५ सोलंखी कहेगये ॥ २६ ॥
अरु तेजसिंहनैं दक्खिन देसमैं मुंडल नगर जाय अमल कियो ताके
बंसके सब सरकिया६ सोलंखी कहाये ॥
मंडणनैं गढ गिरिनार राज्य कीनौं ताके बंसके महाधनुर्बिद्या करि
सरबहिया७ सोलंखी भये ठाये ॥
याही बंसमैं राजा बिजयमल्ल १ ताकै कर्ण २ ताकै किवाट३
ताकै जसराज ४।१ भारमल्ल ४।२ गिरिनारके अधीस सरबहिया
सोलंखी इत्यादिक अनेक महापराक्रमी राजा भये ॥
अरु सिद्धराजके बडभीबलनैं जालोर गढ राज्य कीनो ताके बंसके
कितेक मागधनके पुस्तकनमैं बघेरवाल बनिया लिखेगये ॥ २७ ॥
इतर सोदर हर्षलादिक तिनके बंस न जाँनैं ॥
अरु बडो गोहिलराज १५४ सो गुजरातको नरेस भयो रु नाँ-
स्तिकही अभीष्ट माँनैं ॥

गोहिलराजकै लिवर्णराज १५५।१कीर्तिपाल१५५।२दोय २ पुत्र
भये तिनमैं बडे लिवर्णराजकै भीमराज १५६।१ इंद्रभानु १५६।२
द्वै २ ही सुत सुनैं तिनमैं अग्रज भीमकै अजदेव१५७ताकै बीरदेव
१५८।१ज्यानराव १५८।२ ए दोय २ पुत्र भये ॥

१ संवत् २ जन्म ३ शीघ्रता से ४ अपने नाम से ५ तीर [बाण] चलानेवाले ६ प्रसिद्ध ७ बड़वाभाटों के ८ दूसरे सगे भाई ९ हर्षल को आदि लेकर १० जैनमत को ही ११ प्यारा माना

अरु बीरमदेवकै लोहकर्ण १५९ ताकै अजपाल १६० ताकै भोज-
पाल १६१।१ नमनपाल १६१।२ चमनपाल १६१।३ ए तीन ३ ही
तनुज ठये ॥ २८ ॥
बड भोजपालकै कँवरपाल१६२।१शुद्धपाल२जन्न्हड३लोकराव४भू-
रिपाल५बनसूर६लक्ष्मीधर७इन सप्त७पुत्रन जन्म लह्यो।
तिनमैं जेठो कँवरपाल१६२ ताकै भवनपाल१६३ ताकै संग्रामसिंह
१६४ ताकै महराज १६५।१ रनबीर२ शालिबाहन १६५।३ यह तनय
नको त्रि३तय भयो ।
तामैं जेठो महराज १६५ ताकै मूलराज १६६ ताकै परसुराम१६७।१
लवकर्ण २वीसलदेव १६७।३ ए तीन३ तिनमैं जेठे परसुरामकै बा-
लपसाव१६८ ताकै चंद्रपाल१६९।१ उग्रसेन२ परमेश्वरदास३ जग
न्नाथ४ साँवलदास१६९।५ ए पंच५पुत्र जानैं ।
तिनमैं बडो चंद्रपाल ताकै जमुनाभान१७० ताकै बिजयपाल१७१।१
सारंगदेव२ बरसिंह३ पृथ्वीराज४ संग्रामसेन५ अंगद६ कन्न्हड७ज
न्न्हड८लवणकर्ण९ चंडपाल१० ए दस१० ही आत्मज मागधननैं
मानैं ॥ २९ ॥
इनमैं बडो बिजयपाल ताकै पराक्रमी पुत्र भोलाराय भीम१७२भयो ।
अरु बिजयपालको सोदर सारंगदेव ताकै प्रतापसिंह१७२।१अरिसिंह२
गोकुलदास३ गोइंदराज४ हरिसिंह५ स्यामदास६ भगवद्दास१७२।७
यह सूनुनको सप्त७कँ ठयो ॥
सारंगदेवको सोदर बरसिंह ताकै बालुकाराव१७२ सुन्यों ।
अरु राजा बिजयपालको पट्ट भोलारावभीम पायो ताकोहू सुजस
कबिनकी कोटिनमैं चुन्यों ॥ ३० ॥
याके काका सारंगदेवके तो प्रतापसिंहादिक सातौं७ही पुत्र अज्ञान
रु अति अल्प अपराधपैं अजमेर नगरमैं चहुवाण कुल चूडामणि

१पुत्रों के२तीन का समुदाय३पुत्र४बड़वाभाटों ने५सगाभाई६पुत्रों का ७ सात का समुदाय८सगा भाई९थोड़े१०चहुवाण कुल का मुकुटमणि (मस्तकमणि)

राजकुमार पृथ्वीराजकी सभाके अनंतर[1] कृष्णा चहुवाननैं प्रमाद[2]
सौं मारे ।
याही बैरके ऊपर पृथ्वीराजकै दिल्ली आई ताकै अनंतर[3] गुजरातके
अधीस चालुक्य राजा भोलारायभीमनैं चहुवान नरेस सोमेस्वरके
संगर[4]मैं खंड खंड करि खग[5] बिसेसनके खायबेकौं डारे ॥
तदनंतर[6] पृथ्वीराज चहुवानके काका कृष्णसिंहनैं अपनैं स्वामीके सं-
ग होय वह राजा चालुक्य सत्तरि हजार७००००निवसथन[7] को स्वामी
संग्राममैं मारिलयो ।
ताकै द्रोह[8]करि सोलंखी सारंगदेवके सोदर बरसिंहको सूनु[9] वालुका
राव१७२हू चहुवाननतैं जंग करि टूक टूक भयो ॥ ३१ ॥
अरु भोलारायभीमकै भगदत्त१७३।१ कच्चरराय२ सक्तिकुमार१७३।३
ए तीन३भये तिनमैं सक्तिकुमारके बंसके तो गैंडा ८ सोलंखी कहाये॥
अरुबडेभगदत्तकेराजधीर१७४ताकै देवीदास१७५ताकैमुलधीर१७६
ताकै पृथ्वीसिंह१७७ताकै संग्रामसेन१७८ताकै कन्ह१७९ताकैजमुन
१८०ताकै भवानीदत्त १८१।१ केहरीराय२ दोहू२पुत्र भये ठाये[10] ॥
बडे भवानीदत्तकै राजधर१८२ ताकै देवीराज१८३ताकै मल्ल-
धर१८४ताकै धर्मधर१८५ताकै वालपराव१८६ताकै एहडदेव१८७।१
बेहडदेव१८७।२ यह पुत्रनको जुंगल[11]२भयो ।
तिनसौं राजनीतिके प्रमाद[12] करि गुजरात देसको आधिपत्य[13]
छूटिगयो ॥ ३२ ॥
तब इननैं अजमेर नगरके प्रांतमैं रामसरके समीप निज नाम
करि एहडा१बेहडा२ग्राम आनि बसाये ।
तिनमैं एहडदेवकै तो एक१कन्न्या जयमती १८८ही भई जानैं
गुज्जर पडिहारनकै संग्राम कराय रु दोऊन२कुटुंब खाये ॥

१ पीछे २ उन्मत्तता ३ पीछे ४ युद्ध ५पच्ची विशेषों के ६ जिसपीछे ७ ग्रामों का ८द्वेष (मारने की इच्छा) ९ पुत्र १० प्रसिद्ध ११ जोड़ा १२उन्मत्तता, विना सम्हाल (गफलत) १३ स्वामीपन.

अरुबेहडदेवकैमहिपाल१८८।१उदयसिंह१८८।२ दोय२पुत्रभयेतिनमैं महिपालतोअलीरोसैसनोंबिनामस्तकजंगकरिबीरनकेलोकमैंगयो।

अरु उदयसिंह मुख्य रह्यो ताकै अमानसिंह १८९।१ बाघसिंह १८९।२सुरतानसिंह१८९।३तीन३सुत भये तिनमैं अग्रज अमानसिंहकै लवणकर्ण १९०।१ देवसिंह१९०।२ दोय२पुत्र तिनमैं लवणकर्णके भगवतीदास १९१।१ दूदा २ जगमोहन३ तुलसीदास ४ यह पुत्रनको चतुष्क[२]४भयो ॥ ३३ ॥

बडे भगवतीदासके बालपराव१९२ ताकै संग्रामसिंह१९३।१ रानिंगदेव २ खोड ३ बीरभानु ४ मल्ल ५ ए पंच पुत्र भये तिनमैं रानिंगदेवनैं तो मांद्रेचे चहुवाननको मारि देवसूरीमैं अमल कियो ताके बंसके तो समस्त देवसूरीके९सोलंखीकहावैं ।

अरु खोड मालवदेशमें रह्यो ताकै वंशके समस्त खोडेरा१०सोलंखी अैसो उपटंक[३] पावैं ॥

अरुबीरभानुकेसमस्तभयैतिनकौंमागधलोकबीरपुरा११सोलंखीकहैं अरु मल्लके बंशके मल्लारा१२सोलंखी अैसो उपनाम लहैं।३४।

इनमैं अग्रज संग्रामसिंह१९३ताकै गोइंदराज१९४।१अमरसेन२बखतसिंह३सुंदरदास४सूरसिंह५ यह पुत्रनको पंचक[४]५भयो ॥

तिनमैं जेठे गोइंदराजनैं टोडाके अधीस[५] गोलवाल चहुवान सातूकौं तथा याको सोदर पातूका मारि टोडामैं राज्य करलियो ॥

गोइंदराजकैकुंभराज१९५।१कन्हड.लाहड.चूहड.भीम.स्याम. देईदास.तेजसिंह.वछराज.धीर१९५।१०जैतसिंह.खेंडराव.हल्लू.छजराज.साँईदास.रदंग.इंद्रसिंह.दूदा१९५।१८इनअष्टादस१८पुत्रनजन्मलीनौं ॥

तिनमैं बारह १२के बंस चले रु खट६तिन निर्बंसनही देह त्याग कीनौं इनमैं कुंभराजको अनुज कन्हड १९५।२ तानैं टोडरी नगर अपनौं निवास कीनौं ताकै भाणांग१९६।१ मल्हण १९६।२ दोय पुत्र भये ति

१ एक यवन का नाम है २ चारों का समुदाय ३ पदवी (खिताब) ४ पांचों का समुदाय ५ स्वामी

नमैं भागांग तो मुख्य टोडरी रह्यो ताकै बंसके तो भागांगोत्त१३
सोलंखी कहावैं ।
अरु मल्लहणाके अधीन निवसथं चंदसीन तथा घंटी[2] प्रमुख रहे रु
चंदसीनमैं सिताश नामक दुर्ग रच्यो ताके बंसके समस्त मल्लहणो-
त्त १४ सोलंखी अैसो उपटंक[3] पावैं ॥

अरु कन्हडके सोदर लाहड १९५१३ नैं रानभनाय जाय अमल
कियो ताकी संततिसौं जोधपुरके राजा रठोड मालदेवके बडे पुत्र चं-
द्रसेननैं अपनो अनुज उदयसिंह उमरावननैं जोधपुरको अधीस की-
नौं तब चालुक्यनसौं जंग करि रानभनाय प्रमुख[6] समस्त ग्राम ला-
हडनैं लयेहे ते रठोर चन्द्रसेननैं लैलये ।

अरु लाहडके वंसके पराजित चालुक्य या धामकौं छोरि मा-
लवमैं जाय उहाँ सुंध्या पडिहार अपनौं धर्म तजि ब्रात्यनमैं संबंध
करि जाति बहिर्गत[10] होय रहेहे तिनमैं संबंध करि सुंध्यानके सं-
बंधी होयगये ॥ ३६ ॥

याही कारणतैं लाहड बंसके चालुक्यनके भेदकी गिनतीमैं नाँहिं मानैं।
अरु पडिहारनके भेदकी गिनतीमैं सुंध्या लिखे तहाँलौं जाति
बहिर्गत नहीं भयेहे यातैं कथनीय[11] जानैं ॥

अरु लाहडके अनुजको अनुज[12] भीम१९५१५भयो जानैं गोलवा-
ल चहुवान भानसिंहकौं मारि खैदिराटवीमैं[13] नगर जाजपुर आय
अमल कियो ताके बंसके सब खड्राडा१५सोलंखी कहावैं ।
अरु भीमको अनुज स्याम१९५१६ताके बंसके समस्त कठवाडा
१६सोलंखी अैसो उपटंक[14] पावैं ॥ ३७ ॥

स्यामकेअनुजतेजसिंह१९५१८ताकेबंसकेसमस्ततेजाउत्त१७सोलंखीभये

१चांदसेण नामक ग्राम२घाटी नामक गाम३आदि ४संतान (वंश) से ५ छोटा भाई ६ आदि ७ हारेहुए ८ जिनको इस समय सिन्धिया कहते हैं ६ संस्कार हीनों (शूद्रों) में १० बाहर ११ कहने योग्य १२ छोटे भाई का छोटा भाई १३खैराड़ नामक प्रान्त १४ पदवी

अरु तेजसिंहको अनुज वछराज१९५।९ ताके तीन तनय वडो अमर १९६।१ वरवासि रह्यो ताके वंसके बरवासिया १८।१ सोलंखी, दूजोश्सूर१९६।२ भरसूड रह्यो ताके वंसके भरसूडा १९।२ सोलंखी, तीजो सल्लह३।१९६।३ ताके बंसके सलहाउत २०।३ सोलंखी ऐसे वछराजकी संततिके तीन३भेद कहेगये ॥

वछराजको अनुज धीर १९५।१० ताके वंसके समस्त बैंडा २१ सोलंखी कहाये ।

अरु धीरको अनुज जेत १९५।११ उनियारा रह्यो ताके बंसके समस्त उनियारसी २२ सोलंखी ऐसे उट्टंक करि भये ठाये ॥३८॥

जैतके अनुजके अनुज हल्लानैं हलावट गाम वसाय अपनी संततिकौं हल्लावट२३सोलंखी ऐसो भेद दयो ।

अरु छज्जराज१९५।१४को वंस छज्जाउत२४सोलंखी ऐसो उपपद पाय ख्यात भयो ॥

अरु सबनसौं छोटो दूदा१९५।१८ बघेरा रह्यो ताकै पुत्र बेहल १९६।१ताके वंसके समस्त बेहला२५सोलंखी मानैं गये ।

अरु गोइंदराजको बडो पुत्र इनको अग्रज कुंभराज१९५।१टोडापति भयो ताकै किल्हणदेव१९६।१कीता२कर्मसी३आभा४ ए चारि पुत्र जानैंगये ॥ ३९ ॥

तिनमैं कीताकै वंसके तो मोडाउत२६सोलंखी कहाये ।

अरु कर्मसीके वंसके समस्त कर्मावत२७सोलंखी ऐसे उट्टंक करि मागधननैं गाये ॥

कर्मसीको सोदर आभा डग्गी रह्यो ताके बंसके समस्त आभावत२८सोलंखी मानिये ।

अरु इनको अग्रज किल्ह टोडापति भयो ताकै नरपाल१९७।१रूपाल२हम्मीर३पित्थोरा४मालक५यह पुत्रनको पंचक५ जानिये ॥४०॥

१पुत्र२वंश३ पदवी४छोटे भाई से छोटा५प्रसिद्ध६बडा भाई७पदवी८१इवा भाटों ने ९ सगाभाई

तामैं हम्मीरके वंसके तो दूजे१कटारिया२९सोलंखी भये।
अरु पित्थोराके बंसके समस्त टटावत३०सोलंखी कहेगये ॥
अरु किल्हणनैं अपनैं दूजे दायाद रूपालकौं घाड नगर दीनौं।
अरु इनके अग्रज नरपालनैं१९७।१किल्हणको पट्ट पाय टोडाको
आंधिपत्य लीनौं ॥४१॥

नरपालकै पुत्र सुरतान१९८।१बीरमदेव१९८।२ ए दोय२भये।
तिनमैं बीरमदेवकै वल्लन१९९।१भील१९९।२यहसूनुनको युग्म२
तामैं बल्लनके बंसके समस्त बालनोत३१सोलंखी कहेगये॥
बीरमदेवको अग्रज सुरतान नरपालको पट्ट लहि टोडापति भयो।
ताकौं घाडसौं चढि पितृव्यक रूपालनैं मारिकैं टोडामैं अपनौं अ-
मल करिलयो ॥ ४२ ॥

रूपालकै सातल१९८।१ सुरजन१९८।२दोय२ पुत्र भये तिनमैं सु-
रजनके बंसके तो सुरजनपोता३२ सोलंखी मानौं।
अरु बडे सातलकै सेढू१९९।१ बणबीज२ राजधर३ पहप४ अमर५
गजसिंह६ अचल१९९।७ए सात७पुत्र जानौं ॥
तिनमैं बणबीर तो महदवास रह्यो ताके बंसके समस्त बणबी-
रपोता ३३ सोलंखी कहावैं।
अरु अचल कक्कोडरह्यो ताके वंसके समस्त अचलपोता ३४ सो-
लंखी अैसो उपटंक पावैं ॥ ४३ ॥

अरु इनको अग्रज सेढू१९९ टोडापति भयो ताके डुंगरसिंह२००।१
खेमराज २ भोज ३ खींवराज ४ हरराज ५ बैरीसाल ६ बाघ२००।७
ए सात ७ पुत्र भये तिनमैं खेमराजकै तो नाथ२०१।१रायमल्ल२०१।२
यह पुत्रनको जुगल२ तामैं नाथ तो रावहतो रह्यो ताके बंसके तो
समस्त नाथाउत ३५ सोलंखी, रायमल्लके बंसके समस्त राउतका३६
सोलंखी, खेमराजकी संततिके दोय२ भेद लिखेगये।

१ स्वामीपन २ गाम का नाम है ३ काका (पिता का लघुभ्राता ४ पदवी ५गा
म का नाम

अरु खेमराजको सोदर भोज २००।३ नैंनवा रह्यो ताके भोजाउत ३७, खींवराज ४ कोरमा रह्यो ताके खींवाउत ३८, हरराज५ गँवारि रह्यो ताके हरराजोत ३९, बैरिसाल ६ हैंतोनाँ रह्यो ताके बैरिसाल्लोत ४०, बाघ२००।७ तींतरिया रह्यो ताके बाघाउत ४१ ऐसैं सेढूके पंच पुत्रके बंस तो ए पंच ५ भेदके सोलंखी भये ॥

अरु इनको अग्रज डुंगरसिंह २०० टोडाको अधीस जासमयमैं लल्लनैं पठान दिल्लीसौं खप्ता करि जवनेसकी पातुरिकौं लै आयो तानैं डुंगरसिंहसौं टोडा छिन्निलयो ।

तब डुंगरसिंह स्वसुर रानाँ रायमल्लके दुर्ग्ग चित्तोड गयो ॥ ४४ ॥

तब चालुक्य डुंगरसिंहके जामाता गागरोनि दुर्गके अधीस खिची चहुवान पिप्पाजनैं तथा रानाँ रायमल्लके पट्टप राजकुमार उड्डयन पृथ्वीराजनैंचालुक्यको सहाय करि लल्लन पठानकौं मारि बहोरि टोडा लैदीनौं या डुंगरसिंहकै रत्नसिंह २०१।१ भारमल्ल २ जोगादित्य ३ बलराम ४ खेतसी ५ ए पंच ५ पुत्र तिनमैं भारमल्ल तो बीसलपुर रह्यो ताकै पुत्र गंगदेव २०२ भयो ताके बंसके समस्त गंगाउत ४२ सोलंखी कहाये ॥

अरु बलराम२०१के बंसके गुजरातमैं गये ते समस्त सोलंखी बलरामोत्त४३ऐसे प्रकार करि ठाँये ॥

अरु इनको अग्रज रत्नसिंह२०१टोडापति भयो ताकै सोरसेन२०२।१ अलखीराम २ कर्णसिंह३ए तीन३तनूज तिनमैं पट्टपति सोरसेनकै पृथ्वीराज२०३।१गोपालदास२सल्लह३सूर४ए च्यारि४पुत्र तिनमैं सल्लह सूर दोहू२सोदरे तो चित्तोड दुर्गके अधीस रानाँ रत्नसिंहके सुभट भये ।

१ग्राम का नाम है २ ग्राम का नाम है ३ ग्राम का नाम है ४ ग्राम का नाम है ५ लल्ला नामक पठान जाति का यवन ६ खप्टा (बखेड़ा) करके ७ बादशाह८गढ९ उडना पृथ्वीराज (युद्ध में शीघ्रता से पहुंचने के कारण इनका नाम 'उडना' इस पदवी के साथ 'उडनापृथ्वीराज' प्रसिद्ध होगया था) १० प्रसिद्ध ११ बडाभाई १२ सगाभाई.

तिनकों बुन्दीबिलासिनीके[1] बिलासी[2] हड्डाधिराज[3] चहुवान नरेस सूर्यमल्लनैं रानाँ रत्नसिंह सहित मारि लये ॥ ४५ ॥

इनको अग्रज पट्टपति पृथ्वीराज ताकै कमराज २०४।१रामचंद्र २ नरहरिदास ३ रुद्रसिंह ४ बिष्णुसिंह ५कृष्णसिंह६गोइंददास७ उदयसिंह८स्यामसिंह९नरायनदास१०फतेसिंह११रायसिंह २०४।१२ ए बारह१२पुत्र जानैं।

तिनमैं मुख्य कमराजकौं राज्य मिल्यो नहीं ताकै पुत्र कनकसिंह२०५।१शार्दूल२०५।२ए दोय२तिनमैं कनकसिंह तो गाँव कनवाडा बसाय तहाँ रह्यो रु सार्दूल गाँव कचनारिया बसाय तहाँ रह्यो इन दोउन२के बंसके कमाउत४४सोलंखी ही कहानैं।

अरु कमराजको अनुज रामचन्द्र२०४।२टोडापति भयो ताको अनुज नरहरिदास भंकरोड रह्यो ताके अन्ववाय[4] अखिल[5] नरहरिदासका४५,रुद्र बाढडा[6] रह्यो ताके संतान रुद्रका४६,बिष्णुसिंह सिल्लहारि रह्यो ताके कुलके बिष्णुका४७,ऐसे ए च्यारि४भेद करि सोलंखी कहावैं।

अरु टोडापति रामचन्द्र ताकै पुरुषोत्तमसिंह२०५।१लाडखान २ साँवलदास३हरिदास४नाहरखान५ए पंच५पुत्र तिनमैं पट्टपति पुरुषोत्तमसिंह ताकै कल्ल्याणसिंह२०६ताकै अंकस्थ[7] पुत्र भगवानदास २०७ताकै जगन्नाथ२०८।१माधवदास२दयालदास३जगरूप२०८।४ए च्यारि४पुत्र तिनमैं माधवदास घाडमुहा[8] रह्यो ताकै कुलके माधवदासका४८,रु दयालदास सिंखनाँसोनवाय[9] रह्यो ताकै बंसके दयालदासोत४९,रु गजरूप पैरानाँ[10] रह्यो ताकै संतान गजरूपका५० सोलंखी, ऐसे ए तीन उट्टंकै[11] पावैं ॥ ४६ ॥

अरु इनके अग्रज जगन्नाथ २०८ सौं पमारराज बिक्रमके संबत

---

१ बुन्दी रूपी स्त्री को२भोगनेवाला ३हाडा कुल के क्षत्रियों के स्वामी ४ वंश ५सब(सम्पूर्ण)६ग्राम का नाम है७दत्तक(गोद लियाहुआ)पुत्र८गाम का नाम है९सिंखना और सोनवाय ये दोनों गामो के नाम है१०गाम का नाम है११पदवी,

सोलहसै बावन १६५२ मैं टोडा पातसाह अकबरनैं छिन्निलीनौं ।
तब यानैं भलाय नगरके समीप गाँव बसी जाय बास कीनौं ॥
या जगन्नाथके बिहारिदास२०६।१नरायनदास२जयराम३गोपी-
नाथ४प्रतापसिंह५भीमराज६बक्रराज ७मुहुकमसिंह८अनोपसिंह ९ए
नव९पुत्र भये ।
तिनमैं अग्रज दोय२अनपत्य[1] मरे तब जयराम मुख्य भयो ताकै
पुरुषोत्तमसिंह२१०।१कुसलसिंह२मदरूप३दीपचंद४ए च्यारि४सुत सु
नैंगये ॥ ४७ ॥
तिनमैं पुरुषोत्तम अनपत्य मरयो तब कुसलसिंह मुख्य रह्यो ताकै
दुजनसिंह२११।१सिवराम२साहिबसिंह३सिवाईसिंह४ए च्यारि४ पुत्र
भये तिनमैं अग्रज दुर्जनसिंहकै अमानसिंह२१२।१महासिंह२उदयसिंह
३नाहरसिंह४इंद्रसिंह५ए पंच५पुत्र मानिये ।
तिनमैं जेठो अमानसिंह ताकै छातलसिंह२१३।१सोभागसिंह२ज
यसिंह३कुसालसिंह२१३।४ए च्यारि४तनय[2] तिनमैं छातलसिंहकै कृ-
ष्णसिंह१२४।१विष्णुसिंह२नवलसिंह३गुलाबसिंह४दलेलसिंह ५सू
र्यमल्ल२१४।६ए खट६पुत्र जानिये ॥
इनमैं बडो कृष्णसिंह२१४ताकै हरनाथसिंह २१५।१रघुनाथसिंह
२चमरसिंह३महतापसिंह४सिरदारसिंह५पहपसिंह६रणमल्ल७करण-
सिंह२१५।८यह पुत्रनको अष्टक[3] ८भयो ।
तामैं जेठो हरनाथसिंह अनपत्य[4] मरयो तब रघुनाथसिंह मुख्य
रह्यो ताक डुंगरसिंह२१६।१शार्दूलसिंह२लछमण३बैरीशाल४इन चा
रि४पुत्रन जन्म लयो ॥ ४८ ॥
इनमैं जेठे डुंगरसिंहकै गोपालसिंह२१७।१अर्जुनसिंह२१७।२ए दो
य२संतान है ।
ते दोहू२सोदर[5] वाही ग्राम बसीमैं विद्यमान[6] है ॥

१ विना सन्तान २ पुत्र ३ आठों का समुदाय ४ विना संतान ५ सगेभाई
६ वर्तमान (मोजूद)

भारती[1]भागधेय हड्डाधिराज रावराजेंद्र रामसिंह रावरो निदेस लह्यो।
तातैं यह एकोनपंचास४९गद्यन[2] करि चालुक्यके मुख्य बंसकी
परंपरा[3]को समास[4] कह्यो ॥ ४९ ॥

दोहा

इनके भेदनकोहु अब यह समासउद्देस[5] ॥
सुनिये संभर[6] दै श्रवन, रनपटु राम नरेस ॥५०॥

पादाकुलकम् ॥

झाला१बहुरि भुरटिया२ह जिम, खुंडानाँ३रु कटारिया४हु तिम ॥
बाघेला५सरबहिया६जानहु, सरकिया७रुगैंडा८पहिचानहु ॥५१॥
बहुरि देवसूरीका९कहिये, खोडेरा१०बीरपुरा११लहिये ॥
भल्लारा१२अरु भागंगोत१३हु, मल्लहणोत्त१४खइराडा१५पुनि पहु५२
कठवाडा१६तेजाउत१७त्यौं सुनि, बरवासिया१८रु भरसूडा१९पुनि ॥
सल्हाउत२०बैंडा२१रनराउत, उनियारसी२२तथा हल्लाउत२३ ॥५३॥
छज्जाउत२४बेहला२५प्रमानहु, मोडाउत२६कर्माउत२७जानहु ।
आभाउत२८चालुक्यहु ऐसैं, दूजे२कटारिया२९पुनि तैसैं ।५४।
टंटाउत३०बलि बल्लनोत३१बर, सुनिये सुरजनपोता३२संभर ॥
[10]रु बनबीरपोता३३इहि भिंदे[11] जुत, बहुरि अचलपोता३४नाथाउत३५ ॥
राउतका३६भोजाउत३७भेदके[12], खींवाउत ३८हु तथा खलखेदके[13] ॥
हरराजोत३९बहुरि बैरीसल४०,वाघाउत४१गंगाउत४२अतिबल ५६।
बलरामोत४३कमाउत४४कहियत,नरहरिदासका४५हु पुनि सम्मत ॥
रुद्रका४६रुविष्णुका४७कहे जिम,माधवदासका४८हु मन्नहु तिम ॥
[14]बलि दयालदासोत४९बखानैं,जगरूपका५०तदनु[15] पुनि जानैं ॥

१ हे हाडा क्षत्रियों के स्वामी रावराजेन्द्र रामसिंह सरस्वती ही है कर (हासिल) जिसके ऐसे आपकी आज्ञा २ वार्ता (वचनका) ३पीढियों का४ संक्षेप ५ संक्षेप कथन ६ चहुवान कुल के राजा (चहुवाणों ने सांभर नगर में राज्य किया इससे इनको संभर, संभरी और संभरवार कहते हैं) ७ फिर ८ श्रेष्ठ ९ हे चहुवाण१०अरु११ भेद १२ भेद १३ दुष्टों के दुक्ख देनेवाले अथवा निकालनेवाले १४ पुनि १५ जिसपीछे

इमचालुककुलके खोजंत[1] अति,भेद पचास५०लहे[2]ए५० भूपति॥५८॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे द्वितीय२राशौ चालुक्यबंशसमसनोद्देशनं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥

आदित एकचत्वारिंशित्तमः ॥ ४१ ॥ अथ प्रमारबंशसमसनोद्देशनम्

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम् ॥

दिय देस मालव अत्मभूं[3] अभिसिक्त[4] भूप प्रमार१कौं,
वह राज्य ह्वां करि जोगसौं ताजि देह गो भवपार[5]कौं ॥
तस पुत्र नाम पुरूरवा२तस राष्ट्रसेन३बखानिये,
तस धुंधुमार४तनूज[6] तासुत धूम्रराज५सु जानिये ॥ १ ॥
ताकै धुरंग६रु तास धीर७।१गभीर२भीम३रु केसरी७।४,
ए च्यारि४अग्रज धीर७भो इनमैं सुनौं नृपसंभरी ॥
ताकै सुचूड८सुचूडकै सुत कमलसेन६भयो बली,
तस प्रेम१०भो नृप मंडलेश्वर जास किंत्ति भली चली ॥ २ ॥
जमदच्छ११।१त्यौंहि जयंत२पुष्कर३प्रेमके सुत तीन३ए,
जमदच्छ११अग्रज तास भौम१२।१रु सूर१२।२दोय२प्रबीन ए ॥
सुत भौम १२ कै पुरुषोत्तमाख्य १३ रु पुत्र पार्षत १४ तास भो,
तसबुद्धभाव १५ रु तास धूहर१६।१संभु१६।२ जुग्म२सुभास भो॥ ३॥
सहदत्त १७ धूहरकै तंदीय[11] अभैपती १८ श्रुति धारिये,
तस कृष्ण १९।१धुंधिल१९।२द्वै२सुकृष्ण१९अपुत्र मृत्यु[12] निहारिये ॥
जिहिं पित्रं[13] कन्हड मन्नि पूजत अन्ववाय[14] प्रमारको,

---

१ हेरते तलाश करते) २ हे भूपति ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीयराशि में चालुक्य के वंश का संक्षेप से कहने का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से इकतालीस मयूख हुए ॥ ४१ ॥ अब प्रमार के वंश का संक्षेप से कहना॥

३ब्रह्मा ने ४ अभिषेक ५ संसार के ६ पुत्र ७ बडा ८ हे चहुवान राजा ९ कीर्ति १० उसके ११श्रवणकरो १२ विना पुत्र हुए मरा १३कन्हड नाम का पितर मानकर १४ वंश

अनुजात धुंधिलकै भयो सुत अंब २० गाहक सारको ॥४॥
तस पुत्र धीहर २१ तास तर्वर २२ धाबुरद्धि २३ तदीय भा,
सुत सूरसेन २४ तदीय तास धराविधार २५ गरीयँ भो ॥
हुव राजराष्ट्र २६ तदीय तासुत धीरसेन २७ बखानिये,
तस घूर्ण२८।१चंद२सुमेरु३कर्ण४प्रताप २८।५ पंच५हिजानिये ।५।
हुव घूर्णकै सुत थाणराज २९ तदीय ग्रंथिल्ल ३० त्यौं भयो,
तस संकुदायक३१तास माहिल्ल ३२।१ कुंत ३२।२ युग्म २ यहैं ठयो॥
दकराज ३३ माहिलकै रु तुंगबलाख्य ३४ तास निहारिये,
तस कीर्तिराज ३५ तदीय धर्षण३६।१ चंड३६।२ द्वै २ सुनि धारिये।६।
हुव पुत्र धर्षणकै सुलक्षण ३७ इंद्रसेन ३८ तदीयँ भो ॥
बसुदेव जद्दवभामँ जो जयसेन ३९ तास गरीयँ भो ॥
तस कृष्णशालक बिंद ४०।१ अो अनुबिंद ४०।२ बीर उभै २ भये,
तिम बिंदकै सुत इंद्रकेतु ४१।१ मयूरकेतु ४१।२ दुवे २ ठये ॥७॥
हुव इंद्रकेतु तनूजँ संकर ४२ तास बिद्धर ४३ भूपती,
सुत तास त्यौं अहिकेतु४४।१काटक४४।२हेलि४४।३ तीन३महामती॥
अहिकेतुकै सुत उद्रसेन४५।१ बकोटसेन२ जलारनी३,
सिसुमारसेन४ बिसारसेन५ रु नक्रसेन६ दरध्वनी४५।७ ॥ ८ ॥
हुव सात७ ए तिनमाँहिं अग्रज उग्रसेन४५ महीपती,
तस आर्यसेन४६।१कुमारसेन२ रु जोध३ तीन महामती ॥
हुव आर्यसेनज राजसेन४७ तदीय प्राग ४८जानिये,
तस भीम४९ तासुत रामसेन ५० तदीय तैजस५१ मानिये ॥ ९ ॥
तस भो रुजाजित ५२तास भौम५३ रु पुष्पसेन५४ तदीय भो,
महिपाल५५ तास महेंद्रबर्मक५६ पुत्र तास गरीय भो ॥
जयसेन ५७ तास तदीयँ आत्मजँ चंडसेन ५८ भयो जथा,

१छोटेभाई २ बडा ३ जोडा ४ तुंगबल नामवाला ५ उसके ६ बहिनोई (बहिन का पति)७भारी८शाला (स्त्री का भाई) ९ पुत्र १० उसके ११ पुत्र.

गोपाल५९।१पालक५९।२तास द्वि२धनराज६० पूर्वजक तथा ॥१०॥
श्रीपाल६१ हुव धनराजकै तस राजसिंधु६२ निहारिये,
सल्लराज६३ तास तदीय वृंहरा ६४ सूर ६५ तास बिचारिये ॥
ताकै स्वरूप ६६ तदीय चित्रक ६७ तास नंद ६८ नरेस भो,
तस नाथ६९ तासुत उदयसेन७० किसोर७१ तास सुवेस भो ॥११॥
तस पुत्र ईश्वर ७२ तास जयतनु ७३ भूपराज ७४ सु तास भो,
तस शोणहय७५ तस चंद्रजय७६ तस पर्णराज७७ सुभास भो ॥
तस चीर्णराज ७८ तदीय बिमल७९ रु तास चंद्रायण ८०भयो,
ताकै मयाधर८१ तास नृसरण८२तास हिंडन८३ उग्गयो ॥१२॥
सुत तास नरहरिसेन ८४ तासुत सूर्यराज ८५ बखानिये,
ताकै समर्थ८६।१ सुमेरु२ संकर३ संभु८६।४ ए चउ४ जानिये ॥
इन माँहिं अग्रज जो समर्थ ८६ तदीय पुत्र कृपालु ८७ भो,
भूपाल८८तास तदीय गजगुड८९।१ धीर८९।२ जुग्म३दयालु भो।१३।
उन्माद९० गजगुडकै रु तासुत ज्ञानराज ९१।१ रु केसरी ९१।२,
हुव ज्ञानराजतनूज लछमन९२।१ सक्त२ संजय ३ओ हरी ९२।४॥
इनमाँहिं लछमन ९२ अग्रजात तदीय फीतरजा ९३ बली,
व्रजराज ९४ तस तस उदयसेन ९५ भयो रु भूपकरी भली।१४।
तस देवसेन ९६ तदीय कुसल ९७ रु तास अजधर ९८ जानिये,
महराज९९ तस तस जोध१०० ओ अजबीर१०१ तास प्रमानिये ॥
तस बिष्णुराज१०२।१बलाक२अंगद३रुद्र४ कृष्ण१०२।५समिज्जयो,
तिनमाँहिं अग्रजकै अमान१०३।१बिमान२मान३यहै त्रयी३ ॥१५॥
नरसिंह१०४ ज्येष्ठज तास दुर्गर१०५ वृंदिलाचल१०६ तास भो,
पृथु१०७विख्यताभिध१०८तास तासुत सालिभानु१०९सुभास भो॥

१बडा (प्रथम जन्म लेनेवाला) २बडा (प्रथम जन्म लेनेवाला)३दो (जोडा) ४पुत्र५और ६ बडाभाई ७ उसके ८ पृथ्वी को ९ युद्ध में जय करनेवाला १० बडे भाई का पुत्र ११ उसका नाम

हुव सालिभानु तनूज सत्रह १७ ते सुनौं नृपसंभरी,
तँहँ मुख्य कुंडिन११०।१त्यौं अजेय. जयंत. सल्ल. अग्रेसरी. ॥१६॥
साकूत. संजम. संख. सोबल्ल. सुंद१० शृंखल्ल. स्याम. ज्यौं,
इनमाँहिं सुंदर११०।१०सुंद११०।१०नाम द्वितीय२एह दु२नाम ज्यौं॥
अजसेन. बंग. मुरारि. तोसल्ल. सोम११०।१७ ए१७ क्रमतैं ठये,
इनमाँहिं कुंडिन११०मुख्य तास प्रताप१११।१उद्धर२ द्वै२ भये।१७।
तिनमाँहिं अग्रजकै भये ब्रजधीर११२।१मंद२महामती,
बलदेव ११३ भो ब्रजधीरकै जयसेन११४ तासुत भूपती ॥
जयसेनकै सुत धीर११५ अो रघुनाथ११६ तास प्रमानिये,
रघुनाथकै सुत हंसराज११७ तदीय[2] धूरव११८ जानिये॥ १८ ॥
तस त्यौं[3] सदादिकबीर११९ तासुत जोध१२०तास सुलीन१२१[4]भो,
कुलसेन१२२पुत्र तदीय तासुत इंद्रसेन१२३ प्रबीर भो ॥
श्रुतसेन१२४ तासुत तास गौरिल१२५।१अंग२ माधव३ए३वली,
इनमाँहिं गौरिल१२५भो अपुत्र रु[5] अंतरारि रची भली ॥१९॥
मदसेन गोहिल भूपसौं लरिकैं लई जिहिं स्वर्गती[6],
तिहिं पित्र गौरिल[7] मन्नि पूजत पारमारन[8] संतती[9] ॥
तब तास सोदर[10] अंग१२६भूपति तास दुद्धरसेन१२६भो,
तस सोम१२७।१चत्वर२बिंदु३तीन३रु सोमकै नृप बेन१२८भो ॥२०॥
सुत बेनकै कमलाश्व१२९।१जुद्धर२जाम३जुज्झन मत्त ज्यौं,
हनुमान४अंगद५बीर६बंकट७ए सहोदर[11] सत्त ज्यौं ॥
इनमांहिं भो कमलाश्व१२९अग्रज तास मल्ल१३०।१रु मान२ए,
दुव२मल्लके सल्ल१३१।१संग२विस्मर३तीन३धर्मनिधान[12] ए ।२१।
सल्लकै जयंत१३२तदीय[13] सिंधुल१३३तास भोज१३४पराक्रमी,
तस रेणुराज१३५तदीय कुंतल१३६तास साधुक१३७संजमी ॥

१ बड़ा बुद्धिमान् २ उसके ३सदाबीर(सदा शब्द है आदि में जिसके ऐसा वीर)
४ हुआ ५ अरु ६स्वर्ग में गया ७गौरिल नाम का पितर मानकर ८ पॅवारों का
९ वंश १० सगाभाई ११ सगेभाई १२ धर्म के आश्रय १३ उसके.

जयसेन१३८साधुकक्कै रु विंद१३९बहोरि तास प्रजा भयो,
नृप विंदकै जगधीर१४०।१नीलक१४०।२पुत्रयुग्म यहै ठयो।२२।
जगधीरकै पुनि इंद्रसेन१४१सु मंडलेस कह्योगयो,
गंधर्वसेन१४२ तदीय जिहिं – – – – नाम सु पै छयो ॥
गंधर्वसेनज भर्तृहरि१४३।१अरु विक्रमार्क१४३।२उभै२बली,
इनकी बढी भुवचक्र[1] कीरति त्यौं न औरनकी चली ॥ २३ ॥
दुव२बंधु पंडित सास्त्र१सस्त्र२रु लोक३आदि समस्त मैं,
कलिकाल[2] अंकनहार त्यौं सककार[3] मग्ग प्रसस्तमैं[4] ॥
इनमांहिं अग्रज जो हरी१४३[5]जिहिं पट्टरानिय[6] पिंगला,
सतपंच५००रानिनमैं भई सरदिंदुसुंदर[7] उज्वला ॥ २४ ॥
हरिभूपधी[8] सबकी सिरोमनि सब्दसास्त्रपटू[9] भई,
इक लक्ख१०००००व्याकृतिमैं[10] बली नृप कारिका नव निर्मई ॥
धुर लै पतंजलिकी रु पाणिनिकी दुरूह[11] सु उद्धरयो,
सृंगार१नीति२ बिराग२को त्रिक३कल्प[12] है प्रकटी करयो[13]।।२५।।
निज पट्टरानिय पिंगला जिय जुष्ट जारहिं जानिकैं,
नृप ज्यौं तजी अलका[14] अवंतिय[15] मोघ[16] प्राकृत[17] मानिकैं ॥
फल इक्क१भपहिं काहुनैं अधिकी चमत्कृतिको[18] दयो,
सु[19] नरेसनैं हु रहस्यमैं[20] रचि वा[21] प्रिया हित अप्पयो ॥ २६ ॥
तब पिंगलाहु स्वजारके[22] हित भेट चीज सुही करी।
वह जारह पन्ननारि[23] आसिक तेनैं[24] जाय तहाँ धरी ॥

---

१ भूमंडल में २ कालियुग को चिन्हित करनेवाले ३ सम्वत्चलानेवाले४प्रशंसा योग्य५भर्तृहरि ६ पाटवी रानी७ सरद के चंद्रमा के समान सुन्दर और उज्वल ८ राजा भर्तृहरि की बुद्धि९व्याकरण में चतुर१०व्याकरण में नवीन कारिका बनाई११कठिन व्याकरण का उद्धार किया १२शास्त्र होवे ऐसा (प्रामाणिक)१३जार (उपपति) के साथ प्रीति करनेवाली१४कुबेर की पुरी जैसी१५उज्जीण को १६ व्यर्थ १७ संसार को १८ चमत्कारवाला१९सो [वह फल] २० एकांत में राच [लीन हो] कर २१ उस पिंगला नामक अपनी प्यारी को दिया २२ अपने उपपति के लिये २३ गणिका का २४ उसने.

गनिका सु धर्मनिधान ही तिहिँ फेरि भूपहिकौं दयो,
लखि ताहि भूप बिरत्त[1] ह्वै ततकाल दत्त[2] मुनी भयो ॥ २७ ॥
इम निष्क[3] बानव लक्ख९२०००००आमदकी अवंतिय ईश्वरी,
रु कुमारिका[4] करदा[5] इन्हैं ततकाल[6] त्यागत भे हरी ॥
यहहू कितेक कहंत गोरख सिद्ध याहि मिल्यो तहाँ,
कहुँ सोहु कानफटा वजैं सु अलीक[7] वे जन है कहाँ ॥ २८ ॥
हरि भूप यौं बनि अत्रिनंदन[8] दत्त छोरि मही दई,
पवमान[9] सीत सुगंधलौं तस किर्त्ति[10] लंघ सबै गई ॥
अबधूत ह्वै हरि भूप यौं भुव दै सहोदरकौं[11] गयो,
तब विक्रमार्क[12]१४३ अवंतिकौं[13] अपनाय भूमिपती भयो ॥ २९ ॥
अरु बिक्रमार्क महीपकै मदनावती१४३।३अनुजा[14] स्वसा[15],
सरदिंदु[16] आनन[17] पंकज[18]च्छदलोचना[19] सु मदालसा ॥
ध्रुवकौं सुनीति जथा तथा बिधु[20]पुत्रकौं यह निर्मई,
हरि[21] अंग बंग नरेसकौं बिधिसौं बिबाहि वहै दई ॥ ३० ॥
जिहिँ गर्भ गोपियचंद्र बिक्रम भागिनेय[22] भलो भयो,
हरि ज्येष्ठ मातुल[23] अंक[24] ह्वै मिलि बोध[25]माँहिँ सु पै ठयो ॥
बुध[26] ईस बिक्रम भुपहू कलिकाल अंकित[27]ही कस्यो,
धुर लै जुधिष्टिर असं[28]को सकको रु अंस[29] स्वयं धस्यो ॥ ३१ ॥
धन्वंतरी१पुनि अमरसिंह२रु संकु३बररुचि४जैन५ज्यौं,

१ विरक्त २ दत्तात्रेय [दत्तात्रेय के समान]३सौलह मासा सुवर्ण का एक निष्क (मोहर) होता है ४ कुमारिका खेत्र के ५ कर देनेवालों को ६ तुरंत ७ मिथ्या (झूठ) है ८ दत्तात्रेय ९ पवन१०उसकी कीर्ति११सगे भाई को १२ विक्रमादित्य १३ उज्जैण को१४छोटी१५बाहिन१६सरद के चंद्रमा समान १७ मुख जिसका १८ कमल के पत्र समान १९ नेत्रवाली २०ध्रुवके लिये जैसे उसकी माता सुनीतिथी तैसे ही गोपीचंद पुत्र के लिये यह बनाईगई (सुनीति ने ध्रुव को उपदेश दिया ऐसे ही मदालसा ने गोपीचंद को उपदेश दिया) २१ भर्तृहरि ने २२ विक्रम का भांणेज २३ बडे मामा भर्तृहरि के २४ गोद में होकर २५ ज्ञान २६ पंडितों का पति २७ चिन्हयुक्त २८ युधिष्टिर से कन्धे का धुर लेकर सम्वत् चलाने का २९ अपने कन्धे पर धरा.

बेताल६घटखर्पर७बराहमिहिर८रु कालियदास९त्यौं ॥
बिद्या अनेकनिधान ए नव९रत्न भूपतिकै भये,
मिहिरोपटंक[1] निधान ज्योतिष त्यौं सबै सबमैं ठये ॥ ३२ ॥
जँहँ बर्ण चयाश्नि४की[2] व्यवस्थिति भो तहाँ नृप एक१ही,
करि जेर अपनतैं बली कर[3] कन्यका सबतैं गही ॥
बसुकोटि८००००००० हाटक[4] निष्कै[5] मुत्तियअग्नि अंक९३मिला तुला[6],
पंचास५०गजहय अयुत१००००सत१००पननारि[7] सब गुनसंकुला[8]॥
इहिं मान[9] इकदिन पांड्यदेस नरेस उपकर[10] प्रेसयो,
सु अमात्य[11] अंतिधृति[12] १९ छंदमाँहिं निवेदि भूपतिकौं दयो ॥
खिलि[13] रक्खि अच्छर सप्त ७ ताबिच लैन उत्तर जो रह्यो,
"बैतालिकायाऽर्पय[14]" यहै परमार१४३उत्तर व्हाँ कह्यो ॥३४॥
नृपकौं रिझावन नाम कीर्तिप्रतान बोधक[15] गो हुतो,
सब ताहि बिक्रम १४३ यौं दयो कर[16] पांडुको पहुँच्यो सु तो ॥
जिहिं बोधकर कह भट्ट[17] मागध अर्चि[18] मन्नत अप्पनौं,
यह दान पाय प्रमारतैं वह इभ्य[19] उन्नत भो घनौं ॥ ३५ ॥
इम दान १ जुद्ध २ दया ३ प्रबीर अवंति नैर[20] नरेस भो,
भट भारती[21] रनमैंहु उद्धत अद्वितीय २ हि एस भो ॥
जँहँ देहु ए दुव २ वर्णही[22] गुनपात्र[23] आगत ही बनैं,

---

१ मिहिर की पदवी रखनेवाला(ज्योतिष में सूर्यसिद्धान्त है ऐसे) अथवा ज्योतिष में बराहमिहिर नामक विद्वान् हुआ वैसे२चारों वर्णों की व्यवस्था करने सें उस समय यह एक ही राजा हुआ ३ कर (खिराज) में कन्या ४ सोने की ५ मोहरें ६ सौलह मासों का एक तोला, और चार तोलों का एक पल, और सौ पल की एक तुला होती है ७ गनिका८भरी हुई९उस प्रमाण (माफिक) १०सामग्री११कामदार ने १२ उन्नीस अक्षर की वृत्ति के छन्द में १३ सात अक्षर बाकी रखकर उन्हीं सात अक्षरों में राजा से उत्तर लेने को रहा १४ बैतालिक को देदो १५राजाओं को बोध करानेवाले (भाट) १६पांड्यदेश के राजा का भेजा हुआ कर १७बडवा भाट १८पूजनीय१९धनवान्२०उज्जैण पुर का २१ सरस्वती (वाणी) के युद्ध में२२"देहु" ये दो अक्षर कहनेवाला ही जिसके आगे गुणवान्२३ आया हुआ ही पात्र.

निज देय एह उदारता सब भूपकी अबलौं भनैं ॥ ३६ ॥
न कुमारिका[2] बिच कोउ दुर्गत आधि[3] व्याधि[4] दुखी रह्यो,
न अनम्र कोउ नरेस एहँ प्रभाव बिक्रमनैं लह्यो ॥
जिहिं स्वीय[6] सत्रु अजातसत्रु समान कोउ न जानयो,
निज दोसत हुव कोहु सोहु नम्यौं रु प्रभु पहिचानयो ॥ ३७ ॥
संक[10] जास नूतन[11] सालिबाहन दब्बिकैं अबलौं बहैं,
नृप[12] राम यौं कबि कित्ति[13] बिक्रमराजकी कबलौं कहैं ॥
नहि और पाडवकै[14] अनंतर[15] भूप बिक्रमसो भयो,
रसना हजार १००० हुतैं न तज्जस[16] काहुसौं बरन्यौं गयो ॥ ३८ ॥
क्रमचित्र१४४।१बिक्रमाचित्र१४४।२औ भवदास१४४।३बिक्रमकै भये,
क्रमाचित्रकै सिवसत्य १४५।१ औ सिवराज १४५।२ आत्मजँ द्वै२ठये।
सिवसत्यकै बुधसेन १४६ तासुत भद्रसेन १४७ बखानिये,
तस पुत्र अजभवपाल १४८ अनुभवपाल १४८हू तिंहिं जानिये॥३९॥
तस पुत्र अर्जन१४९ तास सांडिल१५० त्यौं जगजय१५१ तासभो,
तस बिंब १५२।१ नंदक२बिंबपुत्र महेस १५३।१ त्यौं हरिदास२भो।
रु महेसकै सुत द्वै २ बिजैभूपाल १५४।१ दुर्जयसेत १५४।२ ये;
तिनमाँहिं अग्रजकै सरस्वत १५५।१ महपाल१५५।२उभै२भये।४०।
जनमैं सरस्वतकै सुहार्द १५६।१ नृसिंह. भीम. सुगंध. ज्यौं,
हररत्त. मंगल. ल्हाद. नंद. सरज्ञ. धूरथ१५६।१० अंग. ज्यौं ॥
सिव. स्याम१५६।१३तेरह१३ए भये इनमैं सुहार्द सु१५६अग्रनी,
हुव तास ईश्वर१५७।१त्यौं नृपाल१५७।२हु दायके दुव२ए धनी।४१।
जनसूर१५८।१गल्लक२गद्यगुन३अरु कृष्ण१५८।४ईश्वरकै इते४,

---

१ स्वयं अपने आपको देदेना २ कुमारिका क्षेत्र (आर्यावर्त) ३ मानसिक (मन की) पीडा ४ शारीरक (देह) पीडा ५ कोई राजा अनम्र नहीं रहा ६ जिसको अपना शत्रु ७ राजा युधिष्टिर के समान ८ अपने ही दोष से जो कोई उस राजा का शत्रु हुआ वह भी९ स्वामी ही जाना १०सम्वत् जिसका ११शालिबाहन के नवीन सम्बत् को दबाकर१२हे राजा रामसिंह १३कीर्ति १४राजा युधिष्टिर के१५ पीछे १६ उसका यश१७पुत्र.

जनसूरकै सिवराज१५९।१सिंधुल२मुंज१५९।३ए गुन३सम्मिते ॥
नृपती अवंतियमैं[1] भयो सिवराज१५९।१सिंधुल१५९।२धारमैं[2],
अरु मुंज१५९।३दसउरमैं[3] भयो सु रह्यो कुबुद्धि बिचारमैं ॥४२॥
सिवराज १५९ गो अनपत्य[4] तब सब देस सिंधुल १५९ भूप भो,
तउ तास खास अवंति तजि धाराहि बास अनूप भौं ॥
सुत निठि हायन सठ्ठि६०के[5] बयमाँहिँ सिंधुलकै भयो,
अभिधान[6] ताकँहँ भोज१६०यह आदेसि[7] लोकन अप्पयो ॥४३॥
निज मृत्युकौं ढिग जानि सिंधुल१५९चित्त निश्चल यौं कर्यो,
मम पट्ट लै सिसु[8] भोज सोदर[9] मुंजतैं निहचै मरयो ॥
तस्मात[10] आत्मजकौं[11] बचावन राज्य मुंजहिं अप्पनौं,
तस अंकमैं[12] पुनि भोजकौं जुवराजको थिर थप्पनौं ॥४४॥
यह सोधि बुद्धि दसोरतैं[13] नृप राज्य मुंजहिकौं दयो,
जुवराज राजकुमार भोजहिं अंक[14] तास समप्पयो ॥
रु[15] कही मही यह भोज सोदरके अनंतर[16] पाय है,
सुखहेत सासनपै[17] पितृव्यकको[18] सदा सिर लाय है ॥ ४५ ॥
यह बालहू मम ईसहै इम मुंज अग्रजसौं[19] कह्यो,
सुनि सो तज्यो बपु[20] भूप सिंधुल मुंज१५९भूपपनो लह्यो ॥
सुत मुंजकै हु जयंत १६० औ[21] यह भोज१६०बालक द्वै२भले,
लहि मुंज सासन पाठसाल कुमार ए२पढिबे चले ॥४६॥
हरि१[22] श्री[23]२रु सर्ब[24]३सिवा[25]४गनेस५गिरा[26]६बिधानन[27] बंदिक,
पढिबे लगे दुव२पोर्त[28] श्रीगुरु पाय पूजि अनंदिकैं ॥

---

१ उज्जैन में २ पुर का नाम है ३ मंदसोर नामक पुर ४ विना संतान मरा ५ साठ वर्ष की अवस्था में ६ नाम ७ आज्ञाकारी लोगों ने ८ भोज बालकपन में मेरे सिंहासन पर बैठ कर९निश्चय ही मेरे सगे भाई मुंज के हाथ से माराजावेगा १० इसकारण से ११ पुत्र को बचाने के लिये १२ गोद (दत्तक पुत्र बनाकर) बैठाकर१३नगर का नाम है१४गोद१५अरु१६पीछे१७आज्ञा १८ काका (पिता के भाई) को१९बडे भाई से२०शरीर२१और २२विष्णु २३ लक्ष्मी२४महादेव२५पार्वती २६सरस्वती २७ वेदों को नमस्कार करके २८बालक

अध्याय[1] उत्तम भोजको इक१अब्द[2] मुंज१५९निहारिकैं,
न जयंत मोसुत याछतैं[3] धरनीस यों धिय धारिकैं ॥४७॥
किय बुद्धिसागर नाम दूर अमात्य[4] सिंधुलको करयो,
अधिकार सो दिय बच्छराजहिं मुंज आगसं[5] अद्दरयो ॥
अरु स्वीय[6] किंकर अंतरंग[7] पठाय आसय[8] बुल्लिकैं,
बंगालपति वह बच्छराज अमात्य आतुर बुल्लिकैं ॥४८॥
रु कही बिसंसय[9] बच्छराज प्रदोस[10] कालहिं पायकैं,
भुवनेश्वरी बनमाँहिं भोज कुमार मारहु जायकैं ॥
सिर तास लै अवरोध[11]माँहिं बिबिक्तैं[12] मोकहँ अप्पनों[13],
बच[14] बज्र ए सुनि बच्छराजहु मुंजकों बरज्यो घनों ॥४९॥
न तथापि[15] दुष्ट दयालु भो तब पाठसाल वहै गयो,
समधीत[16] पुच्छन व्याज[17]कैं पहिलै जयंतहि बुल्लयो ॥
कछु पुच्छिकैं तिंहिं सिक्ख दै रु कुमार भोज बुलायकैं,
बलसौं उठाय रु अप्पनैं रथपैं लयोहि चढायकैं ॥ ५० ॥
पहिचानि भोजहु सत्रुकी साकूत[18] दिट्ठि तहाँ लई,
निज पावरी गहि बच्छराज ललाटपैं कररी दई ॥
तब बच्छराज कह्यो कुमार न नैंक दोस मदीय[19] है,
अघ[20]जुष्ट[21] दुष्ट प्ररुष्ट[22] मुंज सपत्न[23] सो भवदीय[24] है ॥ ५१ ॥
इम अक्खि भोजहिं लै वहै भुवनेश्वरी बनमैं गयो,
असि[25] कड्ढि बुल्लिय इष्ट चिंतहु आयु पूरनही भयो ॥
कछु जो कहावहु मुंजसौं सु कहो निवेद[26]हिं तायकैं,
सिसु भोज यों सुनिकैं लये वटपत्र[27] दोयरतुरायकैं ॥५२॥

१ पढना २ एक वर्ष ३ इसके होते हुए मेरा पुत्र जयंत राजा नहीं हो सक्ता, यह बुद्धि में विचार कर ४ मंत्री ५ दोष ६ अपने नौकर ७ खानगी (अमात्य) ८ अभिप्राय ९ संदेह रहित १० संध्या के समय ११ जनाने में १२ एकान्त में १३ देना १४ वचन १५ तौ भी १६ पढाहुआ १७ मिस करके १८ आशय (अभिप्राय) की दृष्टि १९ मेरा २० पाप से २१ प्रीति करनेवाला २२ क्रोधित २३ शत्रु २४ आपका २५ खड्ग २६ अर्ज करूं २७ बड़ के वृक्ष के पत्ते.

करि एक१पत्रहिं*पत्र भाजन दूसरे२दलको कस्यो,
निज जंघ**नैंक छुरी बिदारि निकारि***सोनित सौं भस्यो
बुध[1] बालहू तनसौं तहाँ[2] ततकाल[3] पद्य जु निर्मयो[4].
कृतकाल[5]भूखन[6] भूत भूपति यौवनाश्व कहाँ गयो ॥५३॥
रघुराज राम जुधिष्ठिरादिक कोउ[7] कोटिनमैं न है,
अबलौं न भू[8] गन काहु संग सु मुंजतो जुत जाय है ॥
करि लेह[9] एह दयो कह्योऽब[10] करो जु मुंज निदेस[11] भो,
तँहँ भोजको मुख[12]कंज फुल्लित पुब्बतैं[13] हु बिसेस भो ॥५४॥
लहि तत्व[14] जीवतमुक्त[15] जो सिसुहू प्रसन्न बन्या रह्यो,
लखि ताहि सानुज[16] बच्छराज प्रकंपि पातक नाँ चह्यो ॥
यह घोस[18] कोसन फैलि पत्तन[19] धार[20] बैर बढ्यो घनौं,
नृपहिंतु[21] अग्रजके[22] सिपाह मुरे प्रकुप्पि जनौं जनौं ॥ ५५ ॥
गज बाजि उंट अमात्य[23] उत्तम मुंजके हनिबे लगे,
करि नैर[24] फग्गुनरुक्ख[25] आहव[26] तोरसौं तनिबे लगे ॥
हटनारि लग्गि बजार मुंजहु जंत्र[27] द्वारनके जरे,
सावित्रिकाभिध[28] भोजमात बिलाप रोदन[29] बिस्तरे ॥ ५६ ॥
खिजि केक सूरन कोस[30] चत्वर[31] मंदुरा[32] दव[33] दैदयो,
अरु देस बासिन ब्रात[34]हू मुरि मुंजसौं भिरनौं भयो ॥

*एक पत्ते को तो पत्र (कागज) बनाया**दूसरे पत्ते को भाजन (बरतन)बनाया***अपनी जांघ को छुरी से थोडीसी चीर कर लोही से भरा १ उस बालक पंडित ने २-तुरंत ३ श्लोक ४ बनाया ५ सतयुग के भूषण रूप ७ क्रोड़ों होगये जिनमें भी कोई नहीं है ८यह पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई ९ लेख (लिखावट) १० अब ११ मुंज की आज्ञा होवे सो करो१२ कमल के समान १३ पहिले १४ ज्ञान १५ जीता हुआ ही मुक्त के समान१६ अपने छोटे भाई के साथ बछराज ने १७ पाप १८ शब्द (हल्ला) १९पुर२० धार नामक नगर में २१ राजा से २२ बडे भाई (भोज के पिता सिंधुल के सिपाही) २३ कामदार २४नगर को फागण मास के वृक्ष के समान २६ युद्ध २७ ताले २८ सावित्री नामक भोज की माता ने २९ रोना ३० खजाना ३१ चौक ३२ हयशाला में ३३ अग्नि (लाय लगागये) ३४ समूह.

इत जाम[1] जावन जामिनी[2] वह बच्छराज सभ्रातहीं[3],
भरि नैंन भोज हन्यौं नहीं बट[4]पत्र लेख बनातहीं ॥५७॥
रथ बैठि लै तिहिं छन्न आय रु भोज भू[5]गृहमैं धऱ्यो ॥
नट इंद्र[6]जालिक बुल्लि मस्तक तास तुल्ल्य[7] नयो कऱ्यो ॥
सिर सो सकुंडल कंज[8]लोचन जाय मुंजहिं अप्पयो,
लखि ताहि मुंज कह्यो कृती[9] सिसु सो कहा कहतो हयो॥५८॥
बटपत्र जो तब बच्छराज समप्पि आलय[10] आत भो ।
अरु दीप[11]सन्निधि मुंज सो दल नैन द्वै[12]नैन दिखात भो ॥
तस[13] तत्व जानत रोय बेगहि विज्ञ[14] विप्रन बुल्लिकैं,
रु कह्यो कहा गति मोर मैं खल भोज मारिय भुल्लिकैं ॥५९॥
सुनि चोल[15] पावक[16]को प्रवेस बताय बिप्रन हाँ दयो,
ततकाल ज्वाल जराय मुंजहु देह होमनकौं भयो ॥
पहिलो अमात्य[17] जु बुद्धिसागर सोहु यौं सुनिगो तहाँ,
मिलि छन्न तासन बच्छराज निवेदि तत्व[18] दयो जहाँ ॥६०॥
पुनि दोरहु सम्भालि व्है कछू बिधि भोजकौं प्रकटी[19] कऱ्यो,
हिय लाय मुंजहु रोय ताकहँ भद्र[20]आसनपैं धऱ्यो॥
निजपुत्र भोजहिं मुंज दै सकल[21]त्रही वनमैं गयो,
सिसु बेस भोज नरेसहू पढनौं सदा बढनौं लयो ॥ ६१ ॥
सचिवाधि[22]कार दयो बहोरि हु बुद्धिसागर सुद्धकौं,
पृत[23]नाधिकार सबै समप्पिय बच्छराज प्रबुद्ध[24]कौं ॥
निज आन संजुत घोस डिंडिम[25] धारपत्तन[26] बिस्तऱ्यो,

१पहर२रात्रि में३भाई सहित४बड़ वृक्ष के पान पर५तहखाना ६ इन्द्रजाल जाननेवाले ७ उसके समान ८ कमल के से नेत्रवाला ९उस बालक पंडित ने१०अपने घर आया११दीपक के पास १२दोनों नेत्रों को दिखाया अर्थात् दोनों नेत्रों से देखा १३ उस भोज का ज्ञान १४ पंडित ब्राह्मणों को१५ वस्त्रों सहित १६ अग्नि में प्रवेश करो १७ मंत्री (प्रधान) १८ सारांश (गुप्तवार्ता १९ प्रसिद्ध (थोड़े) २० सिंहासन पर२१स्त्री सहित२२कामदार का अधिकार २३ सेनापति का अधिकार २४ पंडित२५ डूंडा की शब्द २६ धारानगर में

नर नारि जो पढिहैं न सो कढिहैं इहाँ सन ज्यौं मर्यो[1] ॥ ६२ ॥
पुनि सर्व बालक बालिका[2] पढि भोग दुर्लभ पायहै,
अरु सास्त्र१ व्यांकृति[3]२ काव्य३ कोबिंद[4] मोहि मित्र बनायहै ॥
बिद्याप्रचार बढाय यौं सब सीघ्र अप्पहु[5] सिक्खयो,
पढि श्रुति जटांत[6]४ सभाष्य कैय्यट पाणिनीय५ हु पिक्खयो ६३
लगि सांख्य६ योग७ कणाद८ गोतंम९ व्यास[11]१० जैमिनि[12] ११ तंत्र[13] लै
सुभ धर्म सास्त्र१२ सअर्थ[14] आगम१३ दंड[15] नीति१४ सुमंत्र लै ॥
सिक्षा१५ रु कल्प१६ निरुक्त१७ ज्योतिष१८ छंद१९ सिक्खि सबै लये
चउसट्ठि६४ त्यौंहिं कला पढी तिन्ह नाम आप्तन[16] ए दये ॥ ६४ ॥
इक गीत१ सो स्वरगाख्य१ औ पदगाख्य२ है लयगाख्य३ त्यौं,
चेतोवधानग४ हू चतुर्थ४ कह्यो चतुर्विध गेय१ यौं ॥
पुनि वाद्य२ सो आनद्ध१ तत२ सुसिराख्य३ घन४ चउ४ भेदही,

१मुर्दा को निकालैं जैसे २लड़कियें ३व्याकरण ४पण्डित ५आपने भी सीखा ६वेद को जटान्त पढा [वेद के अर्थ करने के दश साधन हैं, जिनमें अन्तिम साधन का नाम जटा है वहां पर्यंत पढा] और पाणिनीय व्याकरण अष्टाध्यायी को भाष्य कैयँट सहित सीखा ॥ ६३ ॥ सांख्य, योग, कणाद का कियाहुआ वैशेषिक, गोतंम का कियाहुआ न्यायदर्शन, व्यास[11] का कियाहुआ वेदान्त, और जैमिनि[12] का कियाहुआ मीमांसा शास्त्र[13], धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र[14] श्रेष्ठ सलाह के साथ राजनीति और शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये भी सब सीखलिये, इसीप्रकार चौसठ कला भी पढीं; जिनके नाम बडे लोगों(सत्य वक्ताओं[16]) ने ये दिये हैं ॥६४ ॥ ग्रंथकर्ता ने ये चौसठ कला कामसूत्र से ली हैं तो हम भी कामसूत्र की टीका के अनुसार टीका करते हैं. जिसको देखना हो निर्णयसागर में छपेहुए पुस्तक के पृष्ठ ३४ से देखो. प्रथम गान कला के चार भेद हैं, जिनमें स्वरगाख्य स्वर से गाये जानेवाले वेद आदि पदगाख्य पद से गाये जानेवाले. [सुवन्त तिङंत को पद कहते हैं]. लयगाख्य "स-रि-गम" आदिलय से गायेजानेवाले. चेतोवधानग "डि. ड़.डा. ड़ा." आदि चित्त में छुपी रीति से गाये जानेवाले (इनका सविस्तर वर्णन देखना होवे हो तो "संगीतरत्नाकर" नामक ग्रंथ में देखो) दूसरी कला वाद्य बजाने की जिसके भी चार भेद हैं, अर्थात् चर्म से मढेहुए मृदङ्गादि वाद्यों को "आनद्ध", वीणा आदि तार के वाद्यों को "ततं", बंसी शंख आदि फूंक के वाद्यों को

रस१अंगहार२बिभाव३आदि छ६भेद नृत्यकला३कही ॥ ६५ ॥
गंधर्व नामक बेदमैं त्रय३कोहि बिस्तर जानिये,
चोथी४कला आलेख्य४तासहु भेद ए खट६मानिये ॥
इक रूपभेद१प्रमानि२पुनि लावण्य३आसय४लावनौं,
वर्णिकाभंग५रु साम्य६इहिं हित सिल्पबेद दिखावनौं ॥ ६६ ॥
पुनि पंचमी५हु कला कलाधर पत्रछेद्य५निहारिये,
बिधि सिल्पबेदहिमैं सु पै खट६भेद वल्गु बिचारिये ॥
अरु पुष्पतंडुलबलिबिकार६छठी६कला श्रुति लाइये,
जिहिं चित्रतंडुलपुष्पसोभित कुट्टिमादि बनाइये ॥६७॥
पुनि पुष्पआस्तरनाख्य७जिहिं सयनीय भव्य भले बनैं,
तिम दंत पट बपु राग८जो अति प्रीति नारिनकै तनैं ॥

"शुषिर" और झालर घंटा आदि कांसी के वाद्यों को "घन" कहते हैं ॥ रस, अंगहार और विभाव को आदि लेकर छै भेदवाली नाचने की तीसरी कला कही है ॥६५॥ परन्तु गान्धर्ववेद में इन ऊपर कहेहुए तीन भेदों का ही विस्तार जानो ॥ चौथी कला आलेख्य (चित्रकारी) नाम की है, जिसके ६ भेद हैं, जिनमें प्रथम रूप भेद (स्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, चित्रविचित्र [अबलख]) सात प्रकार का है; दूसरा प्रमाण [छोटा, लंबा, मोटा, पतला, चौकोर और गोल] छै प्रकारका है; तीसरा लावण्य [कान्तिवाला]; चौथा आशय लावना (भाव बताना; पांचवां वर्णिकाभङ्ग (नील आदि रंगों के भेदों का जान कर स्याही बनाना) और छठा भेद साम्य है, सो जिसका चित्र बनाया जावे उस वस्तु के समान (साक्षात) करदेना, इनकेलिये शिल्प शास्त्र देखना चाहिये ॥ ६६ ॥ हे कला को धारण करनेवाले रामसिंह! पांचवीं कला पत्रछेद्य नामक है, जो कागज वा केले आदि के पत्रों को कतरकर पशु पक्षी पुष्पादि सुन्दर चित्र बनाये जाते हैं जिस के भी छै भेद शिल्प शास्त्र में देखो.अथवा भोजपत्र आदि की भांति भांति की कतरी हुई टीकियां ललाट में लगाना छठी कला पुष्प तण्डुल बलि विकार नाम की है, जिसमें भींतें आदि के ऊपर रंगे हुए चावलों से पुष्प आदि चित्र बनाये जाते हैं ॥ सातवीं कला का नाम पुष्पास्तरण है,जिसमें पुष्पों के बिछाने से अनेक चित्रोंवाली सुन्दर शय्या बनाई जाती है ॥ आठवीं कला दन्तपटवपुराग नामक है, सो दांत रंगना (मिस्सी आदि लगाना, वस्त्र रंगना, शरीर को रंगना अर्थात् मेंहदी आदि लगाना जो स्त्रियों को

नवमी कला मणिभूमिकर्म९सु कुट्टिमादिक रंगनौं,
अरु तल्परचन१०सु न्यासकाल बिभिन्न मोद रचैं घनौं। ६८।
जलबाद्य११सो मुरजादि ज्यौं वरबादना जलमैं दुरी,
रु जलोपघात१२सु हस्त जंत्रन तोयताडन चातुरी॥
बलि चित्रयोग१३बिरूप बलि पलितादिकारक जानिये,
पुनि माल्यग्रथनविकल्प१४सो शृंगार साधक मानिये॥६९॥
आपीडसेखरयोजनाख्य१५किलंगि मुकुट बनावनौं,
नेपथ्ययोग१६सु पै सरीर सुरूप मंडन लावनौं॥
श्रोतपत्रभंग१७दरादि कर्त्तित जे बिसेस चहैं प्रिया,
पुनि गंधयुक्ति१८अठारहीं१८अतरादि अर्चनकी क्रिया॥७०॥
सुनियेऽब भूखनयोजनाख्य१९सु दोय२भेदनसौं जथा,

प्रीति कारक है॥ नवमी कला मणिभूमिकर्म नामकी है, सो भींतों पर मणियें जड़ने के चित्राम से होती है॥ दशमी कला का नाम तल्परचन है, सो देश कालके अनुसार शय्या की वस्तु स्थापन करने से होती है, वह बहुत मोद दायक है॥ ६८॥ ग्यारहवीं कला जलवाद्य है, सो मृदङ्ग आदि के वाद्य समान श्रेष्ठ बाजा जल में छिपा हुआ है, अर्थात् चीणीं या कांसी के कटोरों में जल भरकर उन कटोरों को बजाने से राग निकलती है॥ अथवा तलाव आदि के जल में हस्त के आघात से मृदंग आदि की नांई वाद्य बजाना. बारहवीं कला का नाम जलोपघात है,सो हाथ अथवा यंत्रों (पिचरकों) द्वारा जल से ताड़न करना॥ फिर तेरहवीं कला का नाम चित्रयोग है,जो विरूप(रूप को विगाड़ना) बलि (वृद्धावस्था में शरीर की चमड़ी में झुरियां पड़जाती हैं वैसी झुरियां पटकना) और स्वेत केस करदेना आदि है॥ चौदहवीं कला माल्यग्रथन नामक है, जिसमें पुष्पों की माला, गुच्छा, भूषण आदि बनाते हैं; जिसे शृंगार को साधनेवाली जानो॥ ६९॥ पंद्रहवीं कला आपीड़शेखरयोजना नाम की है, जिसमें शिर गूंथने और किलंगी, मुकुट आदि बनाने के काम होते हैं॥ सोलहवीं कला नेपथ्ययोग नामक है, सो वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने की चतुराई से शरीर मंडन की है॥ सत्रहवीं कला का नाम कर्णपत्रभंग है, जिसमें शंख, हाथी दांत आदि से कानों के भूषण बनाने की चतुराई है; जिसको स्त्रियां बहुत चाहती हैं॥ अठारहवीं कला का नाम गंधयुक्ति है, जिससे अतर आदि गंधद्रव्य खींचाजाता है॥ ७०॥ अथ भूषणयोजना नामक उन्नीसवीं कला सुनिये, जिसके दो भेद हैं. जिनमें एक

हारादिमैं मणियोजना१कटकादिकी घटना२तथा ॥
अरु इंद्रजाल२०अनेक देखनहार बिस्मयकार जो,
कुचुमारयोग२१बसाक्रिया सु भगाक्रियादि सुढार जो ॥ ७१ ॥
पुनि हस्तलाघव२२सीघ्रता सबकर्म मैं व्यय रंचकौं,
तेईसमीं२३बरनौं कला सुनियेऽब तास प्रपंचकौं ॥
रस१राग२पानक३यूष४भक्ष्य५रु साक६योग बिचित्र२३ज्यौं
तस भक्ष्य१भोज्य२रु लेह्य३पेय४रु चोष्य५पंच५प्रभेद त्यौं ।७२।
तँहँ भक्ष्य१तो करि खंड दंतन खंडि खावन सोधिये,
बहुधा सु ख्यात समस्त ठाँ अब भोज्य२बस्तु प्रबोधिये ॥
संजाव१ भत्त२ रु साक३ आदिक सर्व रंधित भोज्य है ।
तनु भेद पुब्ब प्रयुक्त तत्थहु साक है दसधा१० यहै ॥ ७३ ॥
फल१ कांड२ पुष्प३ पलास४ मूल५ करीर६ राम नृपाल हे,
त्वच७ औ प्ररूढक८ अग्र९ कंटक१० अत्थ भेद इते कहे ॥
इनके प्रपंच अनेक आयुरबेद आदिनमैं रहैं,

तौ हार आदि में मणियों का पोना और दूसरे कंकन (कड़े) आदि बनाना. बीसवीं कला इंद्रजाल नाम की है, जो अनेक देखनेवालों को अचरज करानेवाली है ॥ कुचुमारयोग नाम की सुंदर इक्कीसवीं कला है, जिससे वशीकरण और सुभगकरण आदि होता है ॥ ७१ ॥ हस्तलाघव नाम की बाईसवीं कला है, उससे सब कार्यों में हाथ की फुर्ती से थोड़े खर्च से कार्यसिद्धि होती है ॥ अब तेईसवीं कला का वर्णन करता हूं, जिसका विस्तार सुनो. रस, राग (चाटने योग्य पदार्थ), पानक, यूष (क्वाथ-काढा) भक्ष्य और शाक इन सब के अनेक प्रकार के योग हैं; जिनके भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय, चोष्य ये पांच भेद हैं ॥ ७२ ॥ इनमें भक्ष्य तौ दांतों से टुकड़े करके चबाकर खाने योग्य पदार्थ को कहते हैं, सो सब जगह बहुत प्रसिद्ध है. अब भोज्य वस्तु को जानो. हलवा (सीरा) भात (चांवल) शाक (तरकारी) इनको आदि लेकर रंधेहुए सब पदार्थों को भोज्य कहते हैं, ऊपर कहेहुओं के साथ, थोड़ेसे भेद (फरक) से दश प्रकार के शाक ये हैं. फल, कांड (शाखा) पुष्प, पत्ते, मूल (जड़) करीर (वंशांकुर), त्वच (छाल), प्ररूढक (कन्द), अग्र (कोंपल) और कांटा. यहां इतने भेद (प्रकार) कहे हैं इनके अनेक प्रभेद आयुर्वेद आदि ग्रंथों मे हैं. यहां पर राग शब्द लेह्य पदार्थ का वाचक

यहँ लेह्य३ बाचक राग३ ताकहँ पाकप्रज्ञ त्रि३धा कहैं ॥ ७४ ॥
द्रव१ लेह्य२ चूरन३ नामके अनुसार आत्मक तीन३ ए,
संधेय१ तदितर२ पेय४ के द्रुव२ भेद आदि प्रबीन ए ॥
अद्रावितारुय१ रु द्रावितारुय२ द्वि२धाहि यह संधेय है,
बहुधाहु तदितर२ एक१ लच्छन सिद्धसत्वक पेय है॥ ७५ ॥
अद्रावित१ हु संधेय१ यह संधानहीन२ समान है,
द्रावित२ सुरस१ यूषा२दि पानक३ आसवा४दि प्रमान है ॥
पुनि सूचिकासंधानकर्म२४ कला यहै चउबीसमी२४,
सीवन१ रु बिरचन२ भूनयन३ तस भेद तीन३ कहे अमी ॥७६॥
चोलादि१ सीवन१ सौं रु बिरचन२ सौं कुथादि२ बनावनौं,
भूनयन३ सौं पट फाटितादि३ नवीन पुनि करि लावनौं ॥
पचबीसमी२५ पुनि सूत्रक्रीडन२५ सोहु बिस्मयसालिनी,
जहँ छिन्न संधत दग्ध जन्मत सूत्र छिद्रित नालिनी ॥ ७७ ॥

है, जिसका पाक बनानेवाले चतुर लोक तीन प्रकार का कहते हैं ॥७४॥ अपने नाम के अनुरूप द्रव, लेह्य, चूर्ण ये तीन भेद हैं. पानक (पेय) के दो भेद हैं, जिनमें एकतो संधेय, दूसरा तदितर [असंधेय] इनमें संधेय दो प्रकार का है, और तदितर [असंधेय] बहुत प्रकार का है; जिनका एक ही लक्षण यह है कि, जिनमें पेय पदार्थ सिद्धसत्त्व है, अर्थात् बनायाहुआ नहीं है, जैसे दुग्ध आदि ॥ ७५ ॥ अब दो प्रकार का संधेय बताते हैं कि, प्रथम द्रावित और दूसरा अद्रावित; इनमें अद्रावित तो असंधेय के समान ही है. और द्रावित में रस (स्वरस), यूष (क्वाथ आदि), पानक (पणा, अमरस, गुड़ इमली [आमलवाणया] आदि) आसव (मद्य) इनको आदि लेकर जानो ॥ चौबीसवीं कला सूचिकासंधान नाम की है; जिसके सीवन, विरचन, भूनयन ये तीन भेद हैं. जिनमें चोला आदि सीने को सीवन, और हाथी की झूल आदि बनाने को विरचन, और फटेहुए अथवा छिकेहुए वस्त्रों के तरकी लगाकर वा तून कर नवीन बनादेनेको भूनयन कहते हैं. पचीसवीं कला सूत्रक्रीडन नाम की है, सो भी विस्मय करानेवाली है; क्योंकि इस कला से जादूगर लोक कपडे को सब के साम्हने फाड कार फिर जोडदेते हैं, और जला कर वस्त्र को फिर पैदा करदेते हैं. इसीप्रकार दोनों हाथों में दो नलियां लेकर उसमें छिद्र करके दो सूत्रों को, वे एक ही हैं ऐसा दिखादेते हैं, ये सब

बीणा रु डमरुक वाद्य२६ पुनि प्रथमोक्तसौं सु बिसस है,
बिनु कंठ कोसलसौं जहाँ श्रुति१ जाति२ राग३ निदेस है ॥
रु कला बहोरि प्रहेलिका२७ जँहँ गुप्त आसय पावनौं,
प्रतिमालिका२८ जँहँ अंत अक्खर पूर्वपद्य चलावनौं ॥ ७८ ॥
दुर्वाचकाभिधयोग२९ जो पदगुप्त सब्दनमैं रहैं,
अरु पुस्तबाचन३० सौं अदृष्टहिं दृष्ट ज्यौं पढिबो कहैं ॥
आख्यायिकादि उपेत नाटककर्म३१ है इकतीसमी३,
कबिता समस्यापूरनाख्य३२सु पृच्छकोदित ठाँ धमी ॥ ७९ ॥
पुनि पट्टिकाजुत बेत्रबानबिकल्प३३ नाम निहारिये,
अरु तत्तकर्म३४ सु सान१ भ्रमि२ करि व्यंग वस्तु सुधारिये ॥
बलि तच्छनाख्य३५ कला सु बर्द्धकिकर्मकौसल जानिये,
अरु सिल्पबेद प्रपंच पाटव बास्तुबेदन३६ मानिये ॥ ८० ॥

जादूगरी के खेल हैं ॥ ७७ ॥ छब्बीसवीं बीणा डमरू बजाने की कला है, सो प्रथम कहीहुई वाद्य बजाने की कला से विशेष है, जिसमें बिना कंठ ही कुशलता से श्रुति, जाति और राग का उपदेश होता है. सत्ताईसवीं कला पहेली नामक है जिसमें छिपे हुए आशय को पाते हैं. अट्ठाईसवीं कला प्रतिमालिका नाम की है, जिसमें एक पद्य के अंत्याक्षर से द्वितीय पद्य का प्रारंभ कियाजाता है ॥ ७८ ॥ उनतीसवीं कला दुर्वाचकयोग नाम की है, जिसमें शब्दों के बीच में पद गुप्त रहते हैं, अर्थात् संधि आदि के छिपाने में पद जाना नहीं जाता. तीसवीं कला पुस्तकवाचन की है, जिसमें कभी नहीं देखेहोवें उन पुस्तकों को भी देखेहुओं की भांति पढलेवै.इकतीसवीं कला नाटकाख्यायिका (आख्यायिका है आदि मे जिसके ऐसे नाटक सहित) नाम की है, जिसमें नाटक (ग्रन्थ विशेष) और आख्यायिका (प्राचीनकथा अर्थात् कहानी मिलजावै उस पर गद्यग्रन्थ) बनाते हैं. बत्तीसवीं कला कविता मे समस्यापूर्ति करना है) सो पूछनेवाले के कथन पर है ॥ ७९ ॥ पट्टिकावेत्रबाण नाम की तेतीसवीं कला है, जिसका नाम विकल्प अर्थात् बेत्रवाणपट्टिका भी कहते हैं, जिससे बेत आदि से मांचा व कुरसी आदि बुनना होता है. चौतीसवीं कला तत्तकर्म नाम की है, जिससे शाण और भ्रमि (यंत्रविशेष) से अंगहीन वस्तुओं को सुधारते हैं. फिर तच्छन नाम की पैंतीसवीं कला है, सो खाती (सुथार) के काम की कुशलता में जानो. छत्तीसवीं कला वास्तुवेदन नाम की है, सो शिल्पवेद की रचना में चतुराईवाली है, जिसको मकान

तपनीय१ तार२ जवाहरा३दिनको परीक्षा३७ त्यौं कह्यो,
अरु धातुबाद३८ सु धातु१ रस२ उपला३दि मारनमैं रह्यो ॥
मनिराग आकरज्ञान३९सो मनि रंगनौं खनि हेरनौं,
बलि वृच्छ वैद्यक४०सोहु सोमनृपादि ग्रंथनमैं घनौं ॥ ८१ ॥
तिम मेष१कुक्कुट२लाव३योधन४१सोहु चालुकनैं कही,
सुक सारिकान पढावनौं४२यहह कला गुनमैं गही ॥
उत्सा इन१रु संबाहनाभिध२केसमर्दन३चातुरी४३,
पय१हत्थ२सों बपु दब्बनौं कचसोधनौं३सु न है दुरी ॥ ८२ ॥
पुनि आहि अक्खर मुट्ठिको कहनौं४४सु द्वै२विध जानिये,
साभासिका१ऽनाभासिका२इन्ह रूप अब पहिचानिये ॥
पहिली१तँहाँ इक१आदि अक्खरसौंहिं सब्दन जाननौं,
दूजी२सु अंगुलिन्याससौंहिं प्रयुक्त सब्द प्रमाननौं ॥ ८३ ॥
म्लेच्छितविकल्प४५सु वर्णाव्यत्ययसौं कथा व्यवहारिये,

बनाने की कला जानो ॥ ८० ॥ सैंतीसवीं कला सोना, चांदी जवाहरात आदि की परीक्षा करने की है. अड़तीसवीं कला धातुवाद नाम की है, जिससे धातु, रस, मणि आदि का फूंकना जलाना आता है. मणिराग आकरज्ञान नाम की उनचालीसवीं कला है जिससे मणियों (रत्नों) पर रंग चढाना और खान हेरने का कार्य होता है. पुनि वृक्षवैद्य नाम की चालीसवीं कला है जिसमें बाग लगाने आदि कार्य होते हैं, जिसका विस्तार सोमनृपादि और वराहमिहिरादि के ग्रंथों में बहुत है ॥ ८१ ॥ इकतालीसवीं कला मींढा, मुरगा, लवा आदि पशु पक्षियों को लड़ाने की है. बयालीसवीं कला सुआ, मैंना को पढ़ाने की है. तैंतालीसवीं कला तीन प्रकार की है. उत्सादन १ संवाहन २ केशमर्दन ३. पैरों से शरीर को दबाना उत्सादन; हाथों से शरीर को दबाना संवाहन, और हाथों से केशमर्दन करना केशमर्दन है; सो छिपीहुई नहीं है ॥ ८२ ॥ अक्षरमुष्टिकाकथन नाम की ४४ वीं कला है जिसके दो भेद हैं. एक साभाषिका और दूसरी नाभाषिका. इनमें साभाषिका उसको कहते हैं कि, आदि के अक्षर को कहने से ही पूरे शब्द को जान लेते हैं. और नाभाषिका उसको कहते हैं कि, अंगुलियों के इसारों से शब्दों को जान कर आशय समझ लेते हैं ॥ ८३ ॥ म्लेच्छितविकल्प नामवाली ४५ वीं कला है. जिसमें अक्षरों की उलटापलटी से प्रसिद्ध कथा (वार्ता)

सब देस बानिय बोध४६हू यह है कला अति धारिये ॥
पुनि पुष्पसकटी४७पुष्पही जँहँ बर्णबोधक तत्वके,
रु निमित्तज्ञान४८सु साकुनादिक सास्त्रही सब सत्वके ॥८४॥
बलि यंत्रनामक मातृका४९तुपकादि जंत्र बनावनौं,
पुनि आहि धारनमातृका५०इक१बेर सुनि न गुमावनौं ॥
संपाठ्य५१ है पढनौं जु अश्रुतपद्य पाठक संगही,
दै स्वरन व्यञ्जन१व्यञ्जनन स्वर२मानसी५२सु कला कही।८५।
कबिताक्रिया५३पुनि है कला भरतादि ग्रंथन जानिकैं,
अभिधानकोसप्रबोध५४एह लई कला पुनि मानिकैं ॥
अरु छंदबोध५५हु है कला तहँ छंद लौकिक जानिये,
रु क्रिया प्रकल्पन५६काव्यभूखन आदि परखन मानिये ॥८६॥

को छिपाकर व्यवहार में लाना है. ४६ वीं कला सब देशों की भाषाओं को जानना है, सो इसको भी कला कहते हैं सो सुनो. ४७ वीं पुष्पशकटी नाम की कला है, जिसमें पुष्प के चिंतवन से अभिप्राय के अक्षरों का ज्ञान कराना है. ४८ वीं कला का नाम निमित्तज्ञान है, जिसमें शकुन, स्वरोदय (सरोदा) अंगफरकना आदि का वर्णन है. इसका वर्णन "वसन्तराज) आदि शकुन शास्त्रों में लिखा है ॥ ८४ ॥ फिर यंत्रमातृका नामक ४९ वीं कला है, जिससे बंदूक आदि यंत्र बनायेजाते हैं. ५० वीं कला का नाम धारणमातृका है, जिससे एक बेर की सुनीहुई बात को फिर नहीं भूलना; मतांतर से इसको तोलने की कला भी मानते हैं. संपाठ्य नाम की ५१ वीं कला है. जिससे पहिले कभी नहीं सुने होवें वे छंद भी एक बेर के सुनने से पढनेवाले के साथ ही पीछे पढ़ देते हैं. ५२वीं कला का नाम मानसी है, जिसमें स्वरों को व्यंजन और व्यंजनों को स्वर बनाकर कविता आदि बनाते हैं, जिसको इच्छालिपि भी कहते हैं ॥८५॥ कविता करने की ५३वीं कला है, सो भरत कारिका आदि साहित्य के ग्रंथों में जानो. ५४वीं कला अभिधान नाम की है, जिससे कोश का ज्ञान होजाता है इसको भी कला मान लिया है. छंदों का ज्ञान होने की ५५वीं कला है, जिससे वैदिक छंदों को छोड़ कर लौकिक छंदो का ज्ञान होता है ५६वीं कला क्रिया प्रकल्पन नाम की है, जिससे काव्य के अलंकारों की परीक्षा अथवा काव्य और भूषणों की परीक्षा होती है. मतांतर से बनाये हुए भोजनादि सिद्ध पदार्थों की परीक्षा में भी इस कला का प्रयोग करते हैं ॥ ८६ ॥

तिम आदि छलितकयोग५७निज बपु अन्य बेस बनावनौं,
बलि बस्त्रगोपन ५८ है त्रि३धाइक१कांतिसौं परिधावनौं१॥
दूजी फट्यो पट नव्य ज्यौं पहिरैं२बडे पटकौं तथा,
पहिरैं सु संबरनादिसौंहिं समेटि ३दीप्ति वन जथा ॥८७॥
बलि त्याहि द्यूत विसेस५९सो चतुरंग आदि बिनोदनो,
आकर्षक्रीडन६०अत्तहृदय प्रमा प्रगल्भ प्रमोदनौं ॥
बलि बालक्रीडन६१बाह कंदुक पुत्रिकादि बनावनौं,
पुनि प्रेय वैनयिकी कला६२बिनयादिसौं जस पावनौं ॥८८॥
गज१बाजि२आयुध३आदि ग्रंथ प्रबोध बैजयिकी६३कला,
चउसट्ठि६४मी व्यायामिकी६४मृगयादि सोहु महाफला ॥
पांचालिकी चउसट्ठि ६४ हू पुनि कामसास्त्र प्रपंचिका,
नृप भोज सिक्खि लई सबैहि प्रगल्भ प्यारिन वंचिका ॥ ८९ ॥

छलितादियोग नाम की५७वीं कला है, जिससे अपने शरीर को अन्य वेश में करके दूसरों को ठगते हैं. फिर ५८वीं कला वस्त्रगोपन नाम की तीन प्रकार की है. जिनमें एक तौ कांति से शुद्ध वस्त्र धारण करना; दूसरी फटे हुए वस्त्रों को ऐसी चतुराई से पहनना कि, जिसमें वे नये दीखने लगें, अथवा बडे वस्त्र को भी ऐसा अँवेर कर पहनना जो बुरा नहीं लगै; तीसरी वस्त्र को समेट कर पुट (तह) आदि लगाकर इस रीति से पहिनै कि जिससे कांति बनजावै ॥८७॥ फिर इसीप्रकार५९वीं दाव लगाकर जुआ खेलने की कला है, जिसमें सतरंज आदि का खेल खेलते हैं. ६०वीं कला आकर्षक्रीडन नाम की है जिससे अपने मन में पासों का यथार्थ ज्ञान करके बुद्धिमानी से आनंद लेते हैं अर्थात् लाग के पासे फैंके जाते हैं. मतांतर से यह कला मल्लयुद्ध में भी मानीजाती है. फिर बालक्रीडन नाम की ६१ वीं कला से गैंद फैंकना, पुतली आदि बनाना आता है. फिर वैनयिकी ६२ वीं कला है, जिसमें नम्रता से यश पाते हैं. इसका विशेष वर्णन धर्मशास्त्र में है ॥ ८८ ॥ वैजयिकी नामक ६३ वीं कला है, जो हाथी, घोड़ा, आयुध आदि के ग्रंथो का ज्ञान देनेवाली है. ६४ वीं कला व्यायामिकी नाम की है, सो शिकार आदि बडे फल की देनेवाली है. और पंजाब में वर्तीजानेवाली ६४ कलायें जुदी हैं; जिनका विस्तार वात्स्यायन प्रणीत कामशास्त्र में है; वे भी सब राजा भोज ने सिखलीं. जो बुद्धिमान् स्त्रियों को ठगनेवाली हैं ॥ ८९ ॥

इक पोत[1] बनिकहु आय भूपहिँ अर्द्धपद्यहि[2] दै कह्यो,
यह सिंधुमैं[3] मरजीवके कर मैंन[4] पट्टक मैं लह्यो ॥
सुनि भोज यों तँहँ जायकैं तस उत्तरार्द्ध[5] समुद्धरयो[6],
हनुमाँनको[7] उपकार मालवभूमिभूप १६० भलो करयो ॥ ९० ॥
।
॥

जलमैं सिला बिच पद्य ओरहु हैं[8] कपीसं[9] लिखे जिते,
पटकाय मरजीवारु इक इक वर्ण[10] जोरि चुनैं तिते ॥ ९१ ॥
पहिले समै हनुमान रामचरित्र नाटक निर्मयो[11],
सु बडी सिला बिच खोदि बल्मिकजातकौं[12] लखिबे दयो ॥
वाल्मीकि देखतही सिला वह डारि अंबुधिमैं[13] दई,
कपिराजकी कबिता सु भोजहि उद्धरी स्फुट[14] भू[15] भई ॥ ९२ ॥
इक द्यौंस[16] भोजहिँ इक्खिकैं[17] इक बिप्र लोचन मीलिये[18],
अरु पुच्छिबे सैंन[19] रोस उत्तर दोस संकुलही[20] दये ॥
बहुतैं बढ्यो नृप तू[21] तथापि कदर्यता[22] कररी लई,
इहिं हेतु प्रातहि जोहि लखि हम मुंदि अंखिनकौं दई ॥ ९३ ॥
उपदेस ताकँहँ मान्नि भोजहु दानको व्रतही[23] लयो,
जस जेस[24] उज्जल ह्वै असेसन[25] देस देसनमैं गयो ॥
कछु कोउ पद्य बनाय जो अधिकी चमत्कृतिकी[26] कहैं,
लघुंही[27] वहै कबिराज रुप्पय लक्ख १००००० भूपतिसौं लहैं ॥ ९४ ॥

१ जहाज से व्यापार करनेवाले बनिये ने २ आधा श्लोक ३ समुद्र में मरजीवों (गोता लगाकर समुद्र में से वस्तु निकालनेवालों) के हाथ में ४ मैंण की पट्टी में मैंने लिया है ५ उस श्लोक का उत्तरार्ध भी ६ निकाला ७ यह श्लोक हनुमान् का बनायाहुआ था इसकारण से ८ थे ९ हनुमान् के लिखेहुए जितने थे उतने १० एक एक अक्षर को जोड़ कर ११ बनाया था १२ वाल्मीकि को १३ समुद्र में १४ स्पष्ट (प्रसिद्ध) १५ भूमि पर १६ दिन १७ भोज को देख कर १८ एक ब्राह्मण ने नेत्र मींचलिये १९ से २० दोष से भराहुआ २१ तौ भी २२ कृपणता २३ नियम २४ जिस भोज का २५ संपूर्ण २६ चमत्कारवाला २७ शीघ्र ही.

[1]मथुरेस जद्दवकी सुता नृप व्याहि भानुमती लई,
लीलावती पुनि भीमपाल बघेलकी दुहिता[2] सई ॥
अभिरूपिका तीजी ३ सु कर्मनकी सुता प्रतिहारिका,
इत्यादि भोज अनेक व्याहिय काव्य उत्तमकारिका[3] ॥ ९५ ॥
नहिँ कोउ संस्कृत [4]मूढ मानव धार [5]पत्तनमैँ रह्यो,
नहि देसदेसनके [6]प्रबुद्धन बास निज घरमैँ लह्यो ॥
तब रामदेव १ सुबंधु२बररुचि ३ बान ४ इंद्र ५ मयूर ६ ज्योँ,
हरिबंस ७ संकरलिंग ८ कोकिल ९ कालिदास१०कपूर११त्योँ।९६।
बिद्याबिनोद १२ बिनायक १३ रु भवभूति १४ आदि सबै जहाँ,
[7]तिहिँकालके कबि भोजसेवन [8]धार आनि बसे तहाँ ॥
कवि माघहू [9]अवसान काल समीप तत्थहि आत भो,
बिनुही मिले नृप नैर[10] [11]संन्निधि तास देह [12]प्रपात भो ॥ ९७ ॥
तिय माघकी १ हु [13]प्रबुद्धकी सु अतीव भूपति अद्दरी,
पंडित कुटुंबहुकी सुता[14]२[15]पत्तनी३[16]स्नुषा४सधना करी ॥
भट्टारिका सीला५द्विजा सीता६जया७अरु अंबिका८,
[17]बलि फल्गुहस्तिनि९बिज्जिका१०कमला११रु बिकटनितंबिका१२
इत्यादि के[18] बर [19]अंगना जँहँ काव्य कल्प[20]कही भई ।
[21]रु अनेक सास्त्रन बादमैँहु बिसेस बुद्धि सबै ठई ॥
सुकदेव१बिल्हन२लाच्छिधर३दंडी४धनंजय५से घनैँ,
नृप हिंतु[22] लक्खन लैगये कबिता किरीट[23] जनैँ जनैँ ॥ ९९ ॥
कबि कालिदास१रु भोज२भानुमती३समान न और भो,
[24]पर भोज तो खट६शास्त्रमैँहु अजेय सब सिरमोर भो ॥
जिँहँ जोगपै[25] करि वृत्ति१[26]सब्दनआनुसासन२हू करयो,

१मथुरापति जादव क्षत्रिय की पुत्री २पुत्री ३उत्तम काव्य करनेवाली ४संस्कृत में मूर्ख मनुष्य ५धार नगर में ६ पंडितों ने ७ उस समय के ८ धार नगर में९ अंत समयमें१०नगर के११पास१२पतन(मृत्यु)१३पण्डिता१४पुत्री १५स्त्री १६बहिन१७पुनि१८कितनी१९स्त्रियां२०रचनेवाली२१और २२ से२३कविता के मुकुट २४परंतु२५योगसूत्र पर भोजवृत्ति नामटीका बनाई२६शब्दानुशासन भी बनाया

रचि ग्रंथ राजमृगांक३वैद्यककोहु आसय उद्धरयो ॥ १०० ॥
साहित्यपैं बहुरयौं सरस्वतिकंठभूखन४निर्मयो,
परमार पंडित अद्वितीय प्रबंधकार भलो भयो ॥
प्रतिबर्णहूं नृपतैं अनेकन लक्ख१०००००पायउ पद्यके,
अतिदानसौं नृपकेहु गेह बढे दरिद्द अवद्यके ॥ १०१ ॥
तबहूं प्रमार सु मालवेंद्र बिसेस सोभितही रह्यो,
भरि द्वीप सप्तहि७भूमिके जिम रिक्त तोयद उल्लह्यो ॥
इम राम भूपति कित्ति उत्तम भोजकी कबलौं कहैं,
बर ग्रंथ भोजप्रबंधमैं सु बिसेस बिस्तरसौं रहैं ॥ १०२ ॥
नृप भोजके सुत भीम आदिक अट्ठ८बीर बली भये,
तिनमाँहिं अग्रज भीम१६१तासहु अट्ठ८नाम सुनेंगये ॥
इक भीम.त्यों जयसेन. संकर. केसरी. बिजई. जथा,
हयसेन. अर्जुन. धीर. ए८अब नाम ओरनके तथा ॥ १०३ ॥
हुव भीमके अनुजात बल्लभ१६१।२दुर्ग३बिल्हन४नच्छु५त्यों,
हरिसेन६मान७प्रताप८ए परमार अन्वयैं ईस त्यों ॥
हरिसेनके कुल भो सु लक्ख प्रमार अर्बुवको धनीं,
चहुवान पृथ्वियराजकी पत्नी सुता तस इंच्छनीं ॥ १०४ ॥
अरु भीम१६१अग्रज भोज सुत तस रत्नपाल१६२प्रबीर भो,
तस इंद्रपाल१६३तदीयें संतति चंद्रपाल१६४सुधीर भो ॥
हुव तास उदयादित्य१६५।१मंग२तथाहि बीरस३तीन३ए,
हुव मंगकै महपाख्य१६६।१जालप१६६।२दोय२सूनु प्रवीन ए ।१०५
इकके बढे कुल सु महपाउत१जालपा२दुव२जानिये,

१ सरस्वतीकंठाभरण नामक ग्रंथ २ बनाया ३ ग्रंथकर्ता ४ एक एक अक्षर के लाख लाख रुपये ५श्लोक के ६ अधम (राजा के घर में भी अधम दरिद्र बहुत बढे) ७ तौभी८जैसे भूमि के सातों द्वीपों को भर कर रीता होने पर भी ९ मेघ १० हे राजा रामसिंह! ११ कीर्ति १२श्रेष्ठ१३छोटा भाई१४पँवार वंश के१५आबू का१६स्त्री (राणी) १७लाखा पँवार की बेटी१८इच्छनी उस स्त्री का नाम था १९ उसके २०वंश में.

अनुजात बीरस पुत्र धारव१६६।१भाम२द्वे२हि प्रमानिये ॥
इनकी जु संतति धारवा३भाभा४प्रभेद पमार है,
सुत मंग अग्रजके छ६ही जगदेव आदि उदार है ॥ १०६ ॥
जगदेव१६६।१पुनि रनधवल२अवर सु पीलधवल३भयो जथा,
बलि महपधवल४रु सिंहधवल५रु बीरधवल६छओ६तथा ॥
इनमैं बडो जगदेव१६६।१वितरनकर्ता ही प्रकटी भयो,
जिहिं कट्टि निजसिर कित्तिधन कंकालि भट्टनिकों दयो ।१०७।
जगदेव१६६।१अग्रज स्वर्ग गो रनधवल१६६।२तब वसुधेस भो,
अरु पीलधवल१६६।३तँनूज भायल१६७।१डोड२जामल२एस भो॥
हुव भायलान्वय भायला५अरु डोड६डोडहितैं भये,
तिम संखुला७पुनि महपधवल तनूज संखुल१६७तैं ठये ॥१०८॥
बलि सिंहधवल तनूज सूमर१६७।१त्योंहि ऊमर१६७।२द्वै२हवे,
बसवाय ऊमरकोट जंगलदेश सन्निधि जे रहे ॥
हुव सोढ१६८सूमरकै तदीयं प्रमार कुल सोढा८बजे,
अनुजात ऊमर संतती उपटंक उम्मट९उप्पजे ॥ १०९ ॥
हुव बीरधवल तँनूज दर्भिक१६७तास डब्भिय१०जानिये,
रनधवलकै महदेव१६७।१हूणा२हमीर३पत्तल४मानिये ॥
उपटंकहूणा११कहात तिनबिच हूणाकी सब संतती,
हम्मीरकै सामंत१६८।१बरड२सुजान३कुंत४महामती ॥ ११० ॥
सामंतकै सामंत१२बरडज बरड१३बारड१३द्वै बजे,
त्योंहीं सुजान१४सुजानके कुंता१५सु कुंतज उप्पजे ॥
रु कनिष्ट पत्तल पुत्र सर्बड१६८।१जोरवाख्य२नलाख्य३ज्यों,
पुनि मदन४पोसव५खहर६कालम७गुंग८ए हुव अट्ठ८त्यों ।१११।
बड बंस सर्बडिया१६रु जोरवके बजे सब जोरवा१७,

१ पुनि २ दान में ३ कीर्ति ही है धन जिसके ४ भाटनी का नाम है ५ विना सन्तान ६ भूमिपति हुआ ७ पुत्र ८ भायल के वंश के ९ समीप १० उसके ११ छोटे भाई १२ वंश १३ पदवी १४ पुत्र १५ कुंतज पदवीवाले १६ और १७ छोटा.

नल३मदन४के नल१८मदन१९पोसवकी प्रजा सब पोसवा २०॥
खहरके खङ्कर२१रु कालमाँ२२सब कालमोत्थ पमार है,
सु वजंत संचारा२२हु संतति गुंगकी गुंगा२३रहै ॥११२॥
महदेव१६७।१ अग्रज भूप भो तस पुत्र अठ८निहारिये,
अमरेस१६८।१कर्मन२साल३रब्बड४कब्ब५त्यौं श्रुति धारिये ॥
थलपति६ रु गहलड७ धंधु८ है सब बंस विस्तरकार जे,
हुव हुरड१६९ कर्मन पुत्र हुरड२४हि तास वंस प्रमार जे॥११३॥
सालाउताऽभिध २५ साल रब्बड भेद रब्बडिया२६ जनैं,
कुल कब्बके कब्बा रु२७थलपतिके भये थलवा२८घनैं ॥
गहलडज गहलडिया२९प्रमार रु धंधुके धंधू३०वजे,
अमरेस१६८।१नृप इनमांहिँ अग्रज तास दस१०सुत उप्पजे११४
कलदेव१६९।१ सिंघन२ कंध३सुरजन४कुरड५कंकन६नामज्यौं
उल्लंघ७ बावल८ बंसनाथ अपुत्र जल्हन९ राम१६९।१० ज्यौं॥
परमार सिंघन बंस सिंघन३१कुरड३२ कुरड कुलीरजैं,
कंकनकुल रु उल्लंगकुल कंकन३३रु उल्लंगा३४ वजैं ॥११५॥
बँलि बावलान्वय बावला३५खिल च्यारि४अप्रजहीं गये,
इनमैं वडो कलदेव१६९तासुत लल्ल१७०।१मल्ल२उभै२ठये॥
हुव लल्लकैं सुत सालिभानु १७१नृसिंह१७२।१सब्दच२तासहैं,
इनमाँहिँ जो अनुजात सब्दच१७२।२वैलसो बिनु नास है॥११६॥
पुरसिंह धनिकैं जु पद्मसी तस कन्यका चटसालमैं,
सालंगिका लहि लज्ज तजि बिगरयो जु चेतन चालमैं ॥
उपज्यो अमान१७३नृसिंहकैं सुत भूप मालव जो भयो,
रट्ठोर नृप जयचंद्रनैं उज्जैन तासन छिन्नयो ॥११७॥

१संतान२ बढानेवाले३सालावत नाम के ४पुनि ५बावला के वंश के ६ बाकी के ७ विना संतान ८ छोटा ९ विना नासिका वाला (नकटा) बैल के समान अथवा विना नाथवाले बैल के समान होकर१०नगरसेठ११ बनिया पदमसी नामक की १२ सालंग्या नामक १३ उससे.

उदयापुरी तब गो अमान तदीय च्यारि ४तनूज हे,
तिन नाम भैरव१७२।१ सुरत२ चयन३रु इन्द्र४ ए४क्रमतैंकहे ॥
दुव२सल्ह१७३।१मंडन१७३।२औरंवात्मज सल्हकै सुत इंद्र१७४ज्यौं,
हुव तास मुत्तियराज१७५ मुत्तियकै भये सुत पंच५त्यौं ॥११८॥
दलपति१७६।१गुमान२समान३सूरज४पंचमौं५जसराज१७६।५भो,
अनपत्य अग्रज गत भये तव पट्ट सूरजकाज भो ॥
फतमल्ल१७७।१लछमन२त्यौंहि नरहरि १७७।३तीन३सरजकैभये,
फतमल्लकै सुत नंद१७८तास गुलंब१७९।१ओ महतर्प२ये ॥११९॥
अनपत्य प्रेत गुलंब भो महतर्प१७९मुख्य तहाँ रह्यो,
तस चन्द्रसिंह१८०।१अमान२आमद३त्यौं चतुर्भुज१८०।४हूकह्यो ॥
तिनमाँहिं अग्रजकेर सालम१८१रामसिंह१८२तदीय भो,
भवदास१८३।१बग्घ२पहाड३यौं त्रय३ही तदीय बलीय भो ॥१२०॥
भवदास पुत्र कुसाल१८४।१लछमन२चंदनाख्य३तृतीय३ज्यौं,
हुव अग्रजात कुसाल पुत्र गरीबदास१८५गरीयँ त्यौं ॥
तस कर्ण१८६तस सुत देवदास१८७तदीय मांधाता१८८भयो,
हुव बीरभानु१८९तदीय तासुत हंसराज१९०बली ठयो ॥१२१॥
हुव तास बेनियदास१९१तस हम्मीर१९२तासुत कर्ण१९३भो,
हुव तास गोकुलदास१९४ईश्वरदास१९५तास रणाँर्ण भो ॥
तस पिथ्थ१९६तासुत समरसाहि१९७रु गंगसेन१९८तदीय त्यौं,
गोविंददास१९९तदीय तास प्रतापसिंह२००सहीय त्यौं ॥१२२॥
तस गुरुगनेस२०१तदीय सुत कल्यानराय२०२सुभाय भो,
तस चउ४असोक२०३।१दयालु२पुनिजगनाथ३रायनराय४भो,
अगराख्य पत्तन पाय रायनराय२०३।४मालवमैं रह्यो,
तस बंस रायनरायउत्त३६अजौंहु तत्थहि है कह्यो ॥ १२३ ॥

१ उसके २पुत्र ३ भैरव के पुत्र ४ विना संतान ५ बडे भाई मरे ६ विना संतान ७मरा ८ बडे भाई के ९ उसके १० बडे भाई का पुत्र ११ भारी १२युद्ध का ही है ऋण (करजा) जिसके १३ उसके १४ अगरा नामवाला १५ पुर

उदयापुरी बिनु होय अग्रज चित्रकूटहि[1] आत भो,
इक लक्ख१००००० आय[2] पटासहित बिंझोलि[3] पत्तन पात भो,
संग्रामरान नरेसको भट ह्वै असोक२०३रह्यो जहाँ,
पद्मावती पुनि रानकी तनयाहु ताहि मिली तहाँ ॥ १२४ ॥
निज भुम्मि खोय असोक यों उमराव रानहिको बन्यों,
रतनेस रान समेत सो रविमल्लभूप[6] निनैं हन्यों ॥
तस पुत्र सहज२०४।१ममारखान२सुजान३पूरनमल्ल४ज्यों,
हुव चंद्रभानु५रु खानखान६रु लाड७ताजनखान८त्यों ।१२५।
नव९बीरभानु२०४।९समेत ए तँहँ ज्येष्ट अग्रजही मर्यो,
चित्तोर[8] अकबरसों बिसीस[9] ममार खान२०४हु व्है लर्यो ॥
तस पुत्र द्वै२सुभकर्ण२०५।१डुंगरसीह२०५।२उद्धतही भये,
इनमाँहिं केसव२०६।१भोज२जोगियदास३अग्रजके ठये ।१२६।
खट६केसवात्मज[10] इंद्रभानु२०७।१रु उदयभानु२भये जथा,
जलकर्ण३अरु रघुनाथ४दीप५छठो बिजैगज६हू तथा ॥
हुव इंद्रभानु तनूंज[11] पंचक५बैरिसल्ल२०८।१बडो जहाँ,
कल्यान२रु महासिंह३रनछोड४गोबिंद२०८।५इते तहाँ ॥१२७॥
हुव बैरिसल्ल तनूज दुर्जनसल्ल२०९।१त्यों नगर२ओ हठी३,
सुत च्यारि४दुर्जनसल्लकै हुव कित्ति संचन सम्मठी[12] ॥
इक बिक्रमार्क२१०।१मुकुंद२त्यों रनधोल३ओ फतमल्ल४ये,
मांधातृक२११।१रु उम्मेद२कुसल्ल३सुजान४बिक्रमकै भये।१२८।
सुरतान२११।५आत्मज[13] पंचमाँहु सिवाय इन बिच जानिये,
इनमाँहिं अग्रजकै हु च्यारि४बिनीत[14] आत्मज[15] मानिये ॥
सुभकर्ण२१२।१अरु कल्यान१बलि[16] बखतेस३इंद्र४चउत्थ४ज्यौं,
सुभकर्णकै हु भयो उदैकरनादि[17] पंचक५जुत्थ ज्यौं ॥ १२९ ॥

१चीतोड़ २आमद का ३ वींझोल्यां नामक पुर ४उमराव ५पुत्री ६बुंदी के राव सूर्यमल्ल ने ७ विना संतान ८ चीतोड़ गढ ९विना मस्तक १०केशव पुत्र ११पुत्र १२ बहुत (सामली) १३पुत्र १४शिक्षा पायेहुए १५पुत्र १६पुनि १७ उदयकर्ण को आदि लेकर पांचों का समुदाय.

तहँ उदयकर्ण२१३।१बहोरि केसव२नन्ह३राम४पहाड५हू ,
मृत ज्येष्ट अग्रज[1] ह्वैऽब केसव२१३।२नैरै[2] बिंझउली[3] पहूँ[4] ॥
सिवसिंह२१४लाभ कुमार केसवदासनैं इक१ही लह्यो,
नृप रामसिंह[5] प्रमार अन्वयको[6] समासँ[7] यहै कह्यो ॥ १३० ॥

दोहा

किते कहत जगदेवको, बंसहु है गुजरात ॥
कुलनमुख्य रनधवलको, क्यों यहँ कीनौं ख्यात[8] ॥१३१॥
उदासीन[10] ह्वै हम इहाँ, लहि बहु व्यापक लेह[11] ॥
बहु[12] मागध मत बर्णयो, याको उत्तर एह ॥ १३२ ॥
रुप्पय व्यय दस सहँस१००००करि, चउ४दिस दूत चलाय ॥
कुल मागध बुल्ले सकल, नृप[13] तुम खोजन न्याय ॥ १३३ ॥
सबहि मागधन पुच्छि सुनि, मत बहु[14] इक्क१मिलाय ॥
कहे बिबिध[15] आगम कलित[16], अनलवंस[17] अधिकाय ॥ १३४ ॥
पीढिन विच घटि बढि पुरुख, भाँसैं[18] कहुँक बिरोध ॥
तहँ भ्रमनासक[19] असुतकै, सुत भ्रातहि यह बोध ॥ १३५ ॥
च्यारि ४ हु छत्रिय कुलनकी, इम पीढी सम[20] होत ॥
नवं[21] मागध जे ह्वैरहे, पत्थरमय ते पोत[22] ॥ १३६ ॥

पादाकुलकम् ॥

अब प्रमार कुल भेद समासहु[23], सुनिये संभर[24] बिबिध बिलासहु ॥
महपाउत१रु जालपा२जानहु, धारवा३ रु भामा४पहिचानहु ।१३७।

१बडा भाई विना संतान मरा और अब केशव विद्यमान (मोजूद) है. २वी झोल्यां नगर का ४पति ५ हे राजा रामसिंह६वंश ७ संक्षेप ८पँवारों के कुलों में पाटवी९प्रसिद्ध१०तटस्थ११लेख१२बडवाभाटों का १३ हे राजा रामसिंह ! तुमनें १४ बहुतों के मत [राय] इकट्ठे मिलाकर १५ नाना प्रकार के ग्रंथों में १६ प्रसिद्ध १७ अग्निवंश को १८ दीखें १९ वहां भ्रम मिटाने के लिये यह जानना कि याती वह बिना पुत्र मरा, अथवा छोटा भाई उसका पुत्र होगया, अर्थात् भाई गोद बैठगया २० बराबर होजाती है २१नवीन (इस समय के) बडवाभाट२२पत्थर की नाव के समान होरहे हैं अर्थात् पार लगाने में असमर्थ हैं २३संक्षेप भी२४हे चहुवाने,

तत्थ मायलाण्डोडहु जैसैं, संखुलाण्रु सोढा८पुनि तैसैं ॥
उम्मट९डभिय१०हूण११भेदवर, सामंत१२रु पुनि वर्ड१३किंतिकर
वलि सुजान१४कुंता१५श्रुति धारहु,सबडिया१६जोरवा१७बिचारहु॥
नलं १८ अरु मथन १९ पोसना २० देखहु,
खहर २१ कालमाँ २२ विदित विसेखहु ॥ १३९ ॥
संचोरा२२हु कालमाँ२२कहिये, गुंग२३हुर्ड२४लिखित ए लहिये ॥
सालाउत २५ रब्बाडिया २६ ए जिम,
कव्वा २७ थलवा २८ गहलाडिया २९ तिम ॥ १४० ॥
धंधू ३० सिंघरा ३१कुंड ३२ रु कंकन ३३,
उल्लंमा ३४ बावला ३५ हु जसधन ॥
ए पैंतीस३५प्रभेद बिदित भुव, अभुव आधुनिक अंतरगत हुव॥१४१॥
रावनरायउत ३६ सु इम अग्गहु, जे अवलौं अगरा भुवके पहु ॥
इहिँ इक१गेह रही अरु रहिये, कुबधू कुकी कहानी कहिये॥१४२॥
जे अनुजहु हुव धरनिँ धर्मधन, भिन्न लगे तिनके भिंद भासन ॥
अब तुमरो अवसर नृप आयो, प्रभु मैं रंक सु संबंधि पायो॥१४३॥

दोहा

सबनकैहि नहि होत सुत, अरु अंकस्थहु होत ॥
बरसनतैं इक कछु बढत, पीढिन पुरुख उदोत ॥ १४४ ॥
हुवँ द्दग मुनि कृत वसु ८४७२ बरस, पीढी छप्रकृति २१६ ज्योँहि ॥
मुनि प्रकृति२१७रु गुन प्रकृति२१३पुनि, त्रिनभनेत्र२०३क्रम त्योँहि

१भूमि पर२इस समय के जो बिना भूमिवाले हैं वे इनके ही भीतर आगये४अगरा नामक गाम की भूमि के पति हैं ५ भूमि (इस भूमि) के पति तो अनेक होगये, परंतु खोटी स्त्री के समान यह एक ही घर में रही, अर्थात बड़े भाई के जो पृथ्वी थी वही छोटे के रहगई इससे ६ जो छोटे भाई ७ राजा होगये उनके ८ भेद जुदे दीखने लगे ९ हे राजा रामसिंह १० धन ११ गोद लियाहुआ (दत्तक) पुत्र१२अग्निकुल को उत्पन्न हुए८४७२वर्ष हुए. जिनमें २१६ पीढी प्रतिहारों (पड़िहारों) की, २१७ चालुक्यों (सोलंखियों) की, २१३ परमार (पँवारों) की, और २०३ पीढियां चहुवाणों की हुई ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो द्वितीय२राशौ स्वमुख्यभेदसहितप्रमारवंशसमसनोद्देशन-मागधान्वेषणा-वसुव्ययरौप्यसूचन-वंशानभिज्ञभ्रमविदारणां सप्तदशो१७मयूखः ॥ १७ ॥

आदितो द्विचत्वारिंशत्तमः ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणाचिन्हिताऽरातिचूड बुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजेंद्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञया गीर्वाणगीरादिषड् ६ भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो द्वितीय२राशौ वशिष्ठहोमधेनुमहागर्तपतनगङ्गास्तवनवाशिष्ठीनदीप्रादुर्भावमुनिहिमाद्यर्चनसमारूढार्बुदनागतत्पंगुपुत्रनान्दिश्वभ्रप्रक्षेपणातदर्बुदाद्रीभवनतत्रर्षि१देव२तीर्था३ऽऽदिस्थापनदीक्षितवाशिष्ठसर्वमुनिगणाऽऽह्वयनमहासत्रारम्भणादैत्येन्द्रबाणपुत्रधूम्रकेतु१यन्त्रकेतु२तद्विध्वंसनमुनिगणासत्यलोकादिगमनहरि१हरा२जे३न्द्रा४दिसर्वदेवाद्यर्बुदानयनाभिषेकार्थतीर्थ१वन२खण्ड३सिन्धु४द्वीपागमनप्रतिहार१चालुक्य२प्रमार३यज्ञाग्निकुण्डोद्गमनप्रहतसूचीकेशो१ल्मुकवमि२सूककर्ण१मर्दक२

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में अपने मुख्य भेद सहित प्रमार वंश का संक्षेप से कहना, भाट लोगों से खोज (तलाश) करने में धन खर्च हुआ जिन रुपयों को जनाना, वंश नहीं जानने के भ्रम को मिटाने का सत्रहवां १७ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से बयालीस ४२ मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद(पुष्परस)रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृतभाषा आदि छै भाषा रूपी गणिकाओं

करभग्रीव १ कङ्कालकवल २ वराहदंष्ट्रि ३ प्रमुखदैत्य प्रतिहार १ चालुक्य २ प्रमार ३ पराजयनचतुर्थ ४ पुरुषचण्डास्यु ४ द्गमनतज्जन्मकालादिस्पष्टीकरणा १ ऽभिषेचन २ योधन ३ धूम्रकेतु १ यन्त्रकेतु २ व्हदोदर ३ शूलिक ४ तालहस्त ५ करालमुख ६ कालजिव्ह ७ भीतिनेत्र ८ गिरिणासा ९ द्यसुरनिपातनस्वाविजयन ब्रह्मैतद्भूविभागविभजनहरि १ हर २ जा ३ ऽऽदितिरोभवनप्रतिहार १ चालुक्य २ प्रमार ३ मुख्यवंशपरंपरासमसनतत्पुरुषकालभ्रमनिरसनं द्वितियो २ राशिः समाप्तः॥ २ ॥

अनुष्टुप् छन्दांसि ३०३५ ॥

श्रीगोवर्द्धनो जयति ॥

का पनि, काव्यरूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारणगण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठकवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण के द्वितीय राशि में वशिष्ठ मुनि की होमधेनु का बडे खड्डे में गिरना, गङ्गा की स्तुति, वाशिष्ठी नदी का पैदा होना, मुनि का हिमालय से याचना करना, उस हिमाद्रि के अर्बुद नाग पर चढे हुए नन्दी नाम पाँगले पुत्र का खड्डे में गिराना जिस से आबू पहाड़ का होना, वहां ऋषि देवता और तीर्थ आदि का स्थापन करना, दीक्षा लिये हुए वशिष्ठ का सब मुनिगण को बुलाना, बडे यज्ञ का आरम्भ करना, दैत्यों के राजा बाण के पुत्र धूम्रकेतु और यंत्रकेतुद्वारा उस यज्ञ का नाश होना, मुनि लोगों का सत्यलोक आदि में जाना, विष्णु महादेव ब्रह्मा और इन्द्र आदि सब देव आदि का आबू पर लाना, अभिषेक के लिये तीर्थ व्रज खण्ड समुद्र और द्वीपों का आना, प्रतिहार चालुक्य प्रमार का यज्ञ के अग्निकुण्ड से उत्पन्न होना, सूचीकेस उल्मुकवमी शूककर्ण मर्दक करभग्रीव कंकालकवल वराहदंष्ट्र आदि दैत्यों को मारना, प्रतिहार चालुक्य और प्रमार का पराजय, चौथे पुरुष चहुवाण की उत्पत्ति, उसके जन्म समय आदि को स्पष्ट करना, अभिषेक होना, युद्ध करना, धूम्रकेतु यंत्रकेतु व्हदोदर शूककर्ण तालहस्त करालमुख कालजिव्ह भीतिनेत्र और गिरिणास आदि दैत्यों को मारना, चहुवाण का विजय, ब्रह्मा का इन चारों को भूमि बाँटदेना, विष्णु महादेव और ब्रह्मा आदि का अन्तर्धान होना, प्रतिहार चालुक्य और प्रमार की मुख्य वंशावली का संक्षेप, तहाँ पीढियें और समय के भ्रम को मिटाना अर्थात् कितने समय में किन किन की कितनी कितनी पीढियें हुई जिसका सन्देह मिटाने का द्वितीय राशि समाप्त हुआ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म मूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र-सु योग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रस वपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुल-कवि राज-श्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोऽऽषादिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरो मणि-परमवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोरा ऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजा धिराजोपटाङ्कि नाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहि लोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणा सज्ज नासिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूष ण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशव न्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, त था तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदार सिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्ल ब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचि तायामुदधिमन्थनीटीकायां द्वितीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मु- कुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवा- लों में पात्र) सुयोग्य पिता औनाड़ (अनड़) सिंह के पुत्र ने, पण्डिता शृ- ङ्गारबाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जि- सने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मनसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशि- क्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है सं- स्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणाउत्त शाहपुरा के प- ति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदय- पुर के स्वामी सज्जनता आदि स णों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जन सिंह वर्मा, और उन्हीके समान उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फत- हसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवन्तसिंह वर्मा से

पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में द्वितीय राशि समाप्त हुआ॥



शुद्धिपत्र

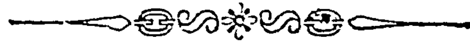
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२६	चितोड़	चीतोड़
६	१६	०	१८१३
१३	१	बढाव	बढाय
"	२६	राज	राजा
१९	६	कहू	कहूं
२	२०	खलेनवाली	खेलनेवाली
३	२९	संसारसके	संसार के
"	"	धारए	धारण
१०	३	विराञ्चि	विरिञ्चि
१२	२१	इसस	इससे
१४	१७	एसे	ऐसे
१५	४	सद्बोघ	सद्बोध
१६	६	निवदितो	निवेदितो
१९	२७	उपमापति	उमापति
२१	११	मेदाख्यान	मेदाख्यान्
२३	२४	समालाक्य	समालोक्य
२४	१८	कार्ति	कीर्ति
२५	२७	छूटेहुऐ	छूटेहुए
२७	२४	भेडिय	भेडिये
२८	१४	स्तानीड	स्तानीडे
३२	६	सद्दनको	सच्दनको
३६	१७	होवहु	होवहु
,,	२३	छातीवला	छातीवाला
३७	१६	करने की	करने की इ
४६	१८	पालकर	पाल का
४८	८	धनाच्चरी	घनाच्चरी
५२	१५	चुवैं	चुंवैं
५४	१	रौखैं	राखैं
"	१७	आग्र	आग्रह
"	२०	कुमांग	कुमार्ग
५५	१८	७	६
"	२२	होकर	होकर वे
"	२८	देनवाले	देनेवाले
५६	२३	मृत्यु का	मृत्यु को
६३	२८	कणाद	कणाद
६४	१	किन	क्लिन्न
६६	२०	रत्नो	रत्नों
७०	२९	त्थान	स्थान
७३	१९	तिन्ह	तिन
८२	२०	वयोंकि	क्योंकि
८४	२६	लगन क	लगन के
८८	४	अुद्धान्त	शुद्धान्त
९४	१२	सुरकाशि	सुरकेशि
९८	१७	सुबाहुक	सुबाहु के
"	२०	कोरवों का	कौरवों के
"	२८	सु	सुव
९९	२५	महबाहु	महाबाहु
१०३	८	कशीनाथ	काशीनाथ
१३१	१८	हम्लीर का	हम्मीरका
"	२४	अजुन	अर्जुन
१३८	१६	अजातसिंह	अजीतसिंह
१३९	२५	डों	हाडों
१४२	१७	ग्रथ	ग्रन्थ
१४८	१	इत	इते
"	१४	सयोग	संयोग
१५१	१	दिग्धपन	दिग्घपन
१५४	१३	हयन	यह न
१५५	२४	तासरे	तीसरे

१५६	२	वीणाङ्गणि	वीणाभ्रणि
१६०	२१	प्रयम	प्रथम
१६२	१०	तनयतीनरु	०
"	२७	तरहस्त्रियां	तेरहस्त्रियां
१६३	२३	ओर	और
१६४	७	अतलप	अतल
"	१५	उद्भज	उद्भेदज
१७२	२७	चनः	चत्तः
१७६	३०	हुई॥२७॥	०
१७८	७	धम	धर्म
"	१७	त्रैलाक्य	त्रैलोक्य
१८०	३०	हींसा	हिंसा
१८४	४	मिलान	मलान
१९१	६	सुगास	सुभास
१९९	१३	उपते	उपेत
२१५	१	घरयो	धरयो
२१६	२	घरे	धरे
२१९	२०	धेरा	घेरा
२३५	१३	क	के
२३९	१७	जरङ्गव	जरद्गव
"	१८	जारङ्गवी	जारद्गवी
२५१	२५	धोड़े	घोड़े
२५३	२१	आक्खिय	अक्खिय
२६४	१३	प्रसन्न	प्रपन्न
२६६	३	चुक	चूक
"	१६	हष	हर्ष
२६७	३	यह	वह
२६८	२५	स्वणराचत	स्वर्णरचित
		पादभूर्प	पादभूषण
२८२	३१	निवाकार	निर्विकार
२८३	२१	शिख पर	शिखर पर
२८६	२३	पालकाव्य	पालकाप्य
२८७	१	साति	सांति
२९०	२२	नसांवर	तपतांबर
२९२	१२	यों	क्यों
२९८	१	म	मैं
"	३	यात	यातैं
"	१४	भरन	भरने
२९९	११	संवधको	संबंध कों
"	२२	ह	हैं
३०२	१६	घरो	घरों
३०३	१६	'कहा'लाओ	कहा'लाओ'
३१०	४	खनत	खनते
३११	८	ऊंच	ऊंचो
३१२	१०	मास	मांस
३१५	१	तुड	तुंड
३२५	२	मुक्ति	सुक्ति
३२८	५	असमागर्भ	असमगर्भ
३३०	२	नस	नसै
३३१	१०	भुपन	भूपन
३३३	२८	अश्चर्य	आश्चर्य
"	२९	मत्र	मत्र
३३९	२६	दुर्गासन	दुर्गाश्रय
"	२९	कस्लेने की	करलेने को
३४६	१६	वुलैह	वुलैहैं
३४७	२७	वुलाये हु	वुलाये हुए
३५०	३	पिंडाकाख्य	पिंडारकाख्य
३५१	१७	कप	कूप
३५२	२	एजगृह	राजगृह
३५६	२७	दसरे	दूसरे
३५८	११	दाल्भ्य	दालभ्य
३६०	२	भमीस	भूमीस
३६१	६	धम्रध्वज	धूम्रध्वज
३६२	१२	आहति	आहूति
"	१४	अच्यत	अच्युत
३६६	१४	वंशस्भाकरे	वंशभास्करे
३६८	८	१२३६	३६३१
३७०	१	व	हुव
३८०	२०	निश्चै	निश्चय
३८१	२	म	स

३९१	५	तिथि	तिथी
३९४	२९	घड़ी	घड़ी
४०८	२७	सम	समय
४१०	६	भति	भूति
"	२२	भचरी	भूचरी
४१२	१०	क्रोंच	क्रौंच
४१५	२८	अनुकण	अनुकरण
४१७	१३	धुकें	धुके
"	१४	निसाम्नुख	निसामुख
"	२४	स्त्री	स्त्री
४१८	८	नैनन	नैनतैं
४१९	४	ओघम	ओघमैं
"	२४	दावग्नि	दावाग्नि
४२०	११	मग्गप	मग्गपैं
४२३	८	एर्खेन	रोपें
४२४	१६	भत	भूत
४२५	१०	मंडियो	मंडियों
"	११	तोरिक	तोरिकैं
४२६	१	भारिक	भारिकैं
"	२	मंडिक	मंडिकैं
४२८	७	दयो	दये
"	२८	टेढी	टेढी
४३०	१५	नासक	नासिक
४३३	२१	सुमल्ल	सुमल्ल
४३५	२२	त्योंहि	ज्योंहि
४४०	६	तकै	ताकै
"	१३	भीमअनंत	भीमारत
४४४	२६	नैराग्य	नैरोग्य
४४५	४	भप	भूप
४५१	८	भतले	भूतले
"	२०	किल्ह	किल्हण
४५३	३	नकै	ताकै
"	१८	प्रद्रह	पंद्रह
"	२३	सुंदर	सुंदर
४५५	१	ताक	ताकै
"	५	मुदिताकं	मुदितार्कै
४५९	३	ताक	ताकै
"	२२	ताक	ताकै
४६२	५	जयसिंहक	जयसिंह के
४७०	१४	एस	ऐसे
४७१	१०	दुजन	दुर्जन
"	२१	ताक	ताकै
४७२	२६	आर	और
४७४	२	भा	भो
४७५	१	पूर्वजक	पूर्वजकै
४७७	१७	भपहिं	भूपहिं
"	२०	जारह	जारहू
४७६	५	भपन	भूपन
"	१४	मागघ	मागध
४८०	५	दोसत	दोसतैं
"	८	पाडव	पांडव
४८१	२	सिधुल	सिंधुल
"	"	भुप	भूप
"	"	भौं	भो
"	२०	बंदिक	बंदिकैं
४८३	९	वन्या	वन्यों
४८४	२८	ढूंडाकी	ढूंडी का
४८७	६	अतिपत्र	अतिपत्र
४९०	१	बिससे	बिसेस
"	६	अदष्ठ	अदृष्ट
४९१	६	यहह	यहहू
"	१४	मोना	सोना
४९२	७	दस्वर	दैस्वर
"	११	भखन	भूखन
"	१६	वसन्तराज)	वसन्तराज"
४९७	१२	क	कहे
४९९	७	सरज	सूरज
५०४	२४	ओर	और
"	२४	मनसिक	मानसिक
"	३१	स णों	सद्गुणों



तृतीयराशिप्रारम्भः ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ तृतीय३राशिप्रारम्भस्तत्र चराडासिमधिकृत्य तन्मुख्याऽन्ववायविस्तरवर्णानम् ॥

शुद्धशौरसेनीभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

इध कइवय्यं पिअरं चराडीआणं णमं परणाणां ॥
करिदूण जास थवणं भोदि जडो परिडदो पहयराओ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डवदीसो जं गुरुं हड्डवदीवि कधेदि ॥
सो तत्तंसिपवोहिरो चारणणाधो जेदि ॥ २ ॥

॥ शुद्धमागधीभाषा ॥

गश्चिय णवरि चउब्भुये१इन्दपस्तणयलम्मि ॥
अप्पुणोव्व कयवं पहू खन्धावालं तम्मि ॥ ३ ॥

जिनकी स्तुति से मूर्ख भी उत्तम पंडित होजाय ऐसे परमज्ञानी, कवियों में श्रेष्ठ पिता चंडीदान को प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥ जिनको हाडोती के स्वामी हड्डुपति रामसिंह भी गुरु कहते हैं वे "तत्त्वमसि" इस महावाक्य के जाननेवाले, चारणों में मुख्य चंडीदान सर्वोत्कर्ष करके वर्तमान हैं ॥ २ ॥ तदनन्तर चतुर्भुज(चहुवाण)ने दिल्ली नगर में जाकर अपनी राजधानी स्थापित करी ॥३॥

इह कविवर्य पितर चण्डीदान नमामि परज्ञानम्। कृत्वा यस्य स्तवन भवति जड. पण्डित: प्रभावराज ॥१॥ हड्डवतीशो य गुरु हड्डपतिरपि कथयति ॥ स तत्त्वमसिप्रबोधशीलश्चारणनाथो जयति ॥२॥ गत्वाऽथ चतुर्भुज इन्द्रप्रस्थनगरे। स्वयमेव कृतवान् प्रभु स्कन्धावार तस्मिन् ॥३॥ एष कृतवान् निश्चित कर्कोटकनागकन्यकावरणम् ॥ नमिममपि कथयाम्यह तातपदोपान्तध्यानलेशात् ॥४॥

गीतिः ॥

एशे काही अबले कक्कोडअग्गाअकञ्ञकावलगं ॥
तमिमंवि कधेमि हगे ताहपदावंतधागालेशाह ॥ ४ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

इंद्रप्रस्थ चहुवान१राजधानी निज रक्खिय ॥
सत्तहि७प्रकृति सम्हारि प्रहत विरचन परपक्खिय ॥
साधन तप सिव अर्थ गयो मिहिका धरनीधर ॥
असन १पान२तजि अधिप होय अविचल ध्याये हर ॥
धर चरन इक्क१अंगुट्ठ धरि बरस बीस२०व्रत निव्बह्यो ॥
ध्रुव ढिग उपेंद्र जिम सूलधर ह्वै अपिहित मंगहु कह्यो ॥५॥
पलन खुल्लि परि पयन भंग बंदे तव भूपति ॥
अक्खिय इतरन इष्ट मृडहिं न तजहिं मदीयं मति१ ॥
सेवककी प्रभुशक्ति सबन दब्बहिं२करि सासन ॥
सुच्छम धरम स्वभाव सुपै जानौं३पटुता सन ॥
अर्बुद अगेस हरि१अप्प२अज३विरांचि मोहि बैठन दयो ॥
पुर इंद्रप्रस्थ रहि तहँ प्रथित भुग्गैं भुव सुप्रज भयो ॥ ६ ॥
सु सुनि अस्तु कहि संभु नृपहिं पुनि कहिय पिक्खि नत।

इसने कर्कोटक नागकन्या का वरण (विवाह) करना निश्चित किया, उसका भी पिता के चरणों के ध्यान लेश की कृपा से वर्णन करता हूं ॥४॥
१ दिल्ली नगर में २ राजा को आदि लेकर राज्य के सात अङ्गों को सात प्रकृति कहते हैं ३ नाश करने को ४ शत्रुओं का ५हिमालय ६पर्वत में ७ भोजन ८ चलायमान नहीं होकर९शिव को१०भूमि पर११अंगूठा१२निबाहा१३विष्णु १४शिव १५ प्रत्यक्ष (चौडे) होकर॥५॥१६ पलकों को खोल कर १७ महादेव को नमस्कार किया १८ कहा कि और कोई वांछा नहीं है १९ महादेव को २० मेरी बुद्धि २१ अमोघ आज्ञा को प्रभुशक्ति कहते हैं २२ आज्ञा २३सूक्ष्म (वारीक) २४चतुराई से २५पर्वतराज २६आप [शिव]२७ब्रह्मा ने२८प्रसिद्ध २९श्रेष्ठ प्रजावाला अथवा श्रेष्ठ सन्तानवाला होकर॥ ६ ॥३०सो३१ऐसा ही होओ ३२ नम्रता.

काद्रवेय[1] कर्कोट सुता सुमना मुहिँ सेवत ॥
कष्ट सहत कन्या सु इष्ट धव[2] चहत अयोनिज[3] ॥
अहैं तव ढिग अज्ज नारि ह्वैहैं पटु जोनिज१ ॥
अरु जोग[4] तोहि फुरिहै अतुल२सिद्धि३रु सेव[5]धि४नाग[7]५नव[6] ६॥
भक्तहिँ समप्पि इम बर अभय भये पिहित[8] भगवान भव[9] ॥७॥

॥ दोहा ॥

सुमनाकौं समुझाय सिव, पठई सु[10]पहु समीप ॥
कांत[11] अयोनिज यह कह्यो, मामक[12] भक्त महीप ॥ ८ ॥
जो अंगज[13] प्रिय ज्वलन[14] को, विबुधन[15] व्यसन[16] विदार ॥
वपु चतुर्थ४मम वन्हि[17] है, काको तव सुकुमार[18] ॥ ९॥

षट्पदी ॥

सु[19] मम भक्त मम[20] भक्त सुतन मारक[21] मख[22] १ श्रुतिमय,
इहिँ आसापूरनि[23] उमाहु तिहिँ हुव लखि सुतनय[24] ॥
सो नृप मोहि प्रसन्न करन आयउ तुषार[25] अंग[26] ॥
तव आश्रम सन[27] कोस तीन ३ मन्नहु पूरब मग ॥
बर बिहित रूच्य[28] जाय सु बरहु सुनि सुमना तप[29]बेस तजि ॥
धव[30] पहँ सबेग निजरूप धारि जातभई पसुनाथ[31] जजि ॥ १० ॥

दोहा

हर[32] निदेश लहि लखत हो, सुमना सरनि[33] नरेस ॥
कन्या रतनहि लखि कह्यो, कित आवत राकेस[34] ॥ ११ ॥

---

१ कर्कोटक नामक सर्प की २ पति ३ योनि से उत्पन्न नहीं हुआ होवै ऐसा ४ योगविद्या ५ धन ६ नव कुल के ७ सर्प ८ अन्तर्धान ९ महादेव १० श्रेष्ठ राजा के पास ११ पति १२ मेरा १३ अग्नि का प्यारा १४ पुत्र १५ देवताओं के १६ दुःख का विदारण करनेवाला १७ अग्नि मेरा चौथा शरीर है १८ तब वह कुमार किसका है अर्थात् मेरा ही है १९ सो २० चहुवाण राजा मेरा भक्त है २१ मेरे भक्त बाणासुर के पुत्रों को मारने वाला २२ यज्ञ २३ देवी २४ श्रेष्ठ पुत्रवाली हुई २५ हिमालय २६ पर्वत पर २७ से २८ बींद [वर] बरने योग्य २९ तपस्विनी का ३० पति के पास ३१ शिव को पूजकर ३२ शिव की आज्ञा ३३ सुमना का मार्ग ३४ चन्द्रमा.

कोन समुद्र १ पवित्र किय, कोन कुमुद[1] २ गुनगोर ॥
अरु सुभको सिसुमार अरि ३, कोन सुदिष्ट[2] चकोर ४ ॥ १२ ॥
कर्कोटक[4] १ सुमना कह्यो, उदधि १ अथाह उदार ॥
कुमुद २ इंद्रप्रस्थक प्रकृति २, भोगवती[5] ३ सिसुमार ३ ॥ १३ ॥
मम तप भक्तिप्रसन्न मृड[6], यह सूचन किय आज ॥
बनिहै तोर चकोर ४ बिधुँ[7], राज चतुर्भुजराज ४ ॥ १४ ॥
सु मम अग्नि ४ वपु[8] सुतहुहै, अयोनिज[9] हु तव इष्ट[10] ॥
सो सुनि मैं लहकी लता[11], सुरतरु[12] तव भुज सिष्ट ॥ १५ ॥
कथन हमहिं भूपहु कह्यो, ईस[13] प्रसाधित एह ॥
धर्मसहायहि होहु धरि, नागसुता मम नेह ॥ १६ ॥
मुनि लच्छन[14] नृप गोत्रके, वसत हुते जहँ वच्छ[15] ॥
व्रती[16] बिरचि पाहिलैं नृपहिं, उन पथ सह्रिय अच्छ ॥ १७ ॥

हरिगीतम्

आन्विक्षिकी[17] १ तिमही त्रयी[18] ३।२ वार्ता[19] ३ रु नीति४पढायकैं,
चंगडासिकौं[20] मुनि बत्स पुनि सुमना दई परिनायकैं ॥
सब धर्म दोउन २ कौं सुनाय वहोरि आश्रम रामके[21] ॥

१कुमोदिनी [रात्रिविकाशी कमल]॥११॥हे गुनगौरि कौनसा शुभ शिशुमा र२चक्र है कि जिसमें तेरे जैसा चन्द्रमा उदय हुआ ३ श्रेष्ठ दृष्टि रूपी कौन सा तेरा चकोर है ॥ १२ ॥ ४ सुमना नामक स्त्री ने कहा कि कर्कोटक नाम क सर्प तो मेरे उत्पन्न होने का अथाह समुद्र है और इन्द्रप्रस्थ के राज्य की प्रकृति [राजा को आदि लेकर राज्य के सात अंग] रात्रि विकाशी कमल है ५ सर्पों की पुरी मेरे उदय होने का शिशुमार चक्र है॥१३॥ मेरे तप और भक्ति से प्रसन्न होकर६शिव ने आज यह जनाया है कि हे७चन्द्रमा चार हाथोंवाला शोभायमान राजा तेरा चकोर बनेगा॥१४॥सो[चहुवान]अग्निरूपी मेरे चौथे८शरीर का पुत्र है९योनि से नहीं उपजनेवाला१०तेरा प्रिय है. यह सुन कर११वेलि रूप मैं प्रफुल्लित हुई. हे आर्य१२कल्पवृक्ष रूपी तुम्हारे भुजों में लिपटने के अर्थ॥१५॥१३महादेव के वरदान का१४राजा के गोत्र के लक्ष्मण नामक मुनि१५वत्स नामक मुनि१६व्रत धारण करने वाला बना कर १७न्यायशास्त्र१८ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद१९कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य इन तीनों को वार्ता कहते हैं. अथवा इतिहास विद्या२०चहुवान को२१परशुराम के

धनुर्वेदकों पढिबे यहै पठयो महातप धामके ॥ १८ ॥
कहि यौं दयो नृप सिक्खि सो अब जाय राज्यहिं अद्दरो ॥
सबही फुरैं तुमकों तथापि कह्यो गृहस्थनको करो ॥
धनुबेद सुनि नृप सिक्खयो जमदग्निसुत सन जायकैं ॥
आलीढ १ प्रत्यालीढ २ लघुवैसाख ३ मंडल ४ लायक ।१९।
गुरुदक्खिना करि इष्ट अर्पित वत्सकों बलि वंदिकैं ॥
सुमना सची सह इंद्र आयउ इंद्रप्रस्थ अनंदिकैं ॥
करि और्व अंगजकों पुरोहित धौम्य धीधन धर्म ज्यौं ॥
करिबे लग्यो हि सम्हारि राज्यविधेय बेदन धर्म ज्यौं ॥ २० ॥
आसाप्रपूरनि ईश्वरी कुलदेवि आलय थप्पिकैं ॥
किय अष्टि १६ अंग उपेत अर्चन पुप्फ अंजलि अप्पिकैं ॥
निज पौर १ जानपदादि आश्रम ३ बर्ण ४ मारग आनिकैं ॥
त्रय ३ लोक त्यौं अतिदान कित्तिबितान सन्निभ तानिकैं ।२१।
पुनि अंग सप्तक ७ शुद्धकैं द्रुतही दिसाजयकों चढ्यो ॥
रविबंसमंडन ज्यौं मरुत्त विरुद्ध व्यालनपैं बढ्यो ॥

१ याद है २ तोभी ३ गृहस्थियों के करने का जो धर्म कहा है सो करो ४ परशुराम से ५ युद्ध समय में वाम पग को समेट कर दाहिने पग को फैलाना ६ दाहिने पग को समेट कर बायें पग को फैलाना अर्थात् दाहिना और बांयां पैंतरा बदलना ७ एक बेंथ (बिलस्त) की छेटी से दोनों पग रख कर युद्ध करना ८ गोलाकार फिर कर युद्ध करना ये सब धनुर्विद्या के पदन्यास हैं॥१९॥ ९ इच्छानुसार देकर १० पुनि वत्स मुनि को नमस्कार करके ११ सुमना रूपी इन्द्राणी सहित १२ और्व मुनि के १३ पुत्र को १४ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसे विद्वान् धौम्य को १५ युधिष्ठिर ने किया जैसे ॥२०॥ १६ आशापूरणा नामक देवी को १७ अपने घर में स्थापन करके १८ सोलह अंग सहित १९ पूजन २० पुष्पाञ्जलि देकर अपने पुर के और २१ देश आदि के लोगों को ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ और संन्यासी इन चारों आश्रमों में चारों वर्णों को लाकर कीर्ति को डेरा के २२ सदृश (जैसा) तान कर ॥ २१ ॥ फिर राज्य के सातों अंगों को शुद्ध करके २३ शीघ्र ही २४ दिग्विजय करने को चढा. जैसे २५ सूर्य वंश का मंडन २६ मरुत्त नामक राजा २७ सर्पों पर चढा था.

दृगगोल ठाननतैं विलोल कटाच्छ घोटक निक्खसे ॥
वहु व्योम बारनतैंहु बारिद उच्च बारन उक्खसे ॥ २२ ॥
नृपहू कढ्यो यह अष्ट ८ सारथि सेव्यमान सु सज्जही ॥
दुव २ चक्कके रथ अर्क ओ यहँ हाँस भुग्गन अज्जहीं ॥
छिति तो पताकनतैं छई लखि लोक बागन बीसरैं ॥
पिक बंसि खेह पराग जो बिनु अंब भृंगन भा करैं ॥ २३ ॥
मनि मंजु भूषन पुष्प बल्लरि गुल्म आश्रय त्यौं तजैं ॥
हिंदोलके तरु थंभही नाहे भिंदिपालन जो रजैं ॥
विनु स्रोत जो जल दान के न प्रनाल अद्भुत व्है बहैं ॥
करपत्र पत्र विहीन भल्लन केतकी सुम को कहैं ॥ २४ ॥
गजकुंभ जंगम रुक्ख खंध वढैलसस्यन नो लसैं ॥
वमथू वनैं जलजंत्र चित्रविचित्र जो नचि निक्खसैं ॥
गजदंत केतकके सिरे विनु तिक्ख अग्रन जो बनैं ॥

गोल नेत्रवाले चपल घोड़े ठानों में से ऐसे निकसे कि जैसे नेत्रों में से कटाक्ष निकसता है. ऐरावत से और मेघों से भी ऊंचे बहुत से हाथी निकले ॥ २२ ॥-राजा भी आठ सारथियों से सेयाहुआ सझ कर दो पहियों के रथ पर वह सूर्य आज ही उस सूर्य की बराबरी की हाँस को भोगने के लिये चढा. तब भूमि को तौ ध्वजाओं से छा ली, जिसको देख कर लोग बागों को भूलनेलगे. अब यहां सेना और बाग का रूपक अलंकार कहते हैं. सेना में वंसी है वही तौ कोयल है; रज (धूलि) है वही पुष्परज है सो विना ही आम वृक्ष के भ्रमरों को शोभित करती है; यहां सेना पक्ष में भ्रमर वीर और बाग पक्ष में भ्रमर मधुप हैं ॥ २३ ॥ बेलें और पसरे हुए वृक्षों के आश्रम को छोड़ कर सुन्दर मणियों के भूषण ही पुष्प हैं; वृक्ष के खंभों विना के गोफण [पत्थर फैंकने का चर्मयंत्र] के हिंडोले शोभायमान हैं; बिना ही झरनों के हाथियों के दान के जल से अद्भुत परनाले बहते हैं; करवत हैं वही केतकी के पत्र हैं. बिना बाण के भाल [तीर का फल] है वही केतकी का पुष्प है ॥ २४ ॥ हाथी रूपी चलतेहुए बढल नामक वृक्ष के कंधे रूपी शाखा पर कुंभस्थलों रूपी फल शोभित हैं; हाथियों की मूंडों से जलकण निकलते हैं वेही नानाप्रकार के फुहारे नच कर निकलते हैं; हाथियों के दंत ही केतकी के से सिरे हैं; जिनका अग्रभाग तीखा नहीं है; छोटी ध्वजाओं के दंड हैं सोही सरू के वृक्ष हैं; उनके वस्त्र

लघु केतुदंडन जो सरू पटपत्त तंडवकौं तनैं ॥ २५ ॥
तनुभल्ल जो नहि मल्लिका कलिकादि सोभित स्याम व्है ॥
असि जो सुदर्सनपत्र उद्गत नीर अल्ल ललाम व्है ॥
न लताबिगुंफित जालिका नरबीर बेष्टन जो करैं॥
नारंग के फल अर्द्ध गोलक जोन घंट प्रभा करैं ॥ २६ ॥
विनु अंघ्रि चामर १ हंस २ बार्ह१मयूर २ जोन किलोलकैं ॥
वर कुंतदडन इच्छु जो अध उद्ध लास्य विलोलकैं ॥
मखतूल फुंदन मोचिकाफल्ल सप्त ७ रूप दिखाय जो ॥
सुभछत्र १ चर्मन कंजके बिनु पुष्प पत्र सुहाय जो ॥ २७ ॥
खुर खुराग पंथ प्रनालिका बहु तोय संग न जो तजैं॥
वड केतुदंड खजूरकै छद इक्क जोन छबी छजैं ॥
संदेह निर्णय गर्भ जो पृतना वखानन धी धरैं ॥
नृप राम तो दल तास उपबन सत्य गोचरही करैं ॥ २८ ॥

है वही सरू के पत्तों के समान नाच करते हैं ॥ २५ ॥ श्याम रंग को धारण करनेवाली छोटी भालें (तीरों के फल) हैं सोही बेला के वृक्ष की कलियां शोभित हैं तरवार है सोही सुदर्शन वृक्ष से उत्पन्न हुए पत्ते और उसी खड्ग में आबी (नीर) है वही सुन्दर गीलापन है; गुथीहुई जाली (शिर पर बांधनेका फतेपेच) ही नल है जिसको वीर पुरुष अपनी पाघ बनाते हैं, अथवा पाघ पर बांधते हैं. घंटा है सोही नारंगी के आधे गोले की शोभा को धारण करती है ॥ २६ ॥ चमर है सोही विना पगों के हंस और मोरछल हैं सोही मयूर किल्लोल करते हैं. श्रेष्ठ भाला के दंड हैं सोही नीचे और ऊपर के दोनों भाग सांठा (गन्ना) के समान चपलता के साथ नाच करते हैं. और रेशम के फूंदे ही केले सात रूप दिखाते हैं [केले सात प्रकार के होते हैं] छत्र और ढालें ही बिना पुष्प के कमलों के पत्ते शोभित हैं ॥ २७ ॥ खुरों से खूंदेहुए मार्ग ही पानी का संग नहीं छोडनेवाले धोरे हैं. बडे ध्वजदंड हैं सोही एकपत्र के खजूर की शोभा से शोभित हैं. गर्भ का निर्णय करने में, गर्भ में लडकी है अथवा लडका है, बुद्धि में संदेह ही रहता है इसी प्रकार इस सेना के वर्णन में भी (यह सेना है कि बाग है) यह संदेह ही है तो हे राजा रामसिंह! उस चहुवान की सेना के बाग की सत्यता दृष्टि से देखे ही होती है, जैसे गर्भ की सत्यता दृष्टि से देखे ही हुआ करती है अथवा निर्णय है बीच में जिसके ऐसे संदेह अलंकार को इस सेना के वर्णन के बीच में बुद्धि धारण करती है. जैसे—

आरामं रसिक सु भूप सरदहु माँहिं बागनमैं चल्यो ॥
यह वस्तु प्रतिनिधि आहि द्वापर तो न है हमरो छल्यो ॥
पहिं पुरी मथुरा चतुर्भुज १ आय जद्दव बुल्लये ॥
तिन हारिकैं अधिके उपायन संग व्है द्रुतही दये ॥ २९ ॥
बिजयाश्व पुष्कर भूप जद्दव आयकैं पुनि बिंटयो,
अजपालकी स्थितिकौं मनो गरदाय नागगिरी लयो ॥
विजयाश्वनैं नृपकौं स्वकीयैं सुताहि इंदुमती २ दई,
ससिबंस १ पार्टव बंस २ कै यह पुब्ब उब्बहता भई ॥ ३० ॥
आवंत्य १ अर्बुद २ जित्ति बलि सौराष्ट्र३तैं बलि लै चल्यो,
आनूप ४ सूर्पारक ५ सुमील ६ रु कालवन ७ जयकैं दल्यो ॥
मनु १भानु २ चंद्र ३ कृसानु ४ के कुल यौं प्रतीच्यिय १ के जये ॥
आटव्य १ सावर २ पांड्य ३ केरल ४ जित्ति कुंतल ५ त्यौं लये॥३१॥
मरहट्ट६केतुक ७ चोल ८ मूसिक ९ बिंध्य १० वासक ११जेर कैं
रु विदर्भ १२ जुत कर्णाट १३ द्रविड १४ हु जित्तये न अवेरकैं ॥

"गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः ।
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः ॥"

माघ काव्य में नारद के आने के वर्णन में शंका हुई कि यह सूर्य है. फिर निर्णय कियागया कि सूर्य की गति तौ तिरछी है और सारथि अनूरु है, इससे यह सूर्य नहीं है. फिर संदेह हुआ कि यह अग्नि है, तब निर्णय कियागया कि अग्नि तौ ऊर्ध्वज्वलन है और यह तो सब ओर फैलनेवाला तेज नीचे को पडता है, इससे अग्नि नहीं है ॥ इसी प्रकार यहां भी सेना और बाग के वर्णन में निर्णय है बीच में जिसके ऐसा संदेह अलंकार जानो ॥२८॥

१ इसप्रकार बाग का रसिक २ यह वस्तु प्रतिनिधि (एक वस्तु के स्थान में अन्य वस्तु को स्थापन करना) है, इसमें हे राजा रामसिंह ! हमारा छल रूपी आपका कोई३संदेह तौ नहीं है ४चहुवाण ने ५ यादवों को ६ भेट (नजराना) ७ शीघ्र ॥२९॥ ८ घेर लिया ९अजमेर को जैसे १० नाग पहाड ने११घेर रक्खा है १२ अपनी बेटी १३ चंद्रवंश और १४ अग्निवंश के यह प्रथम ही १५ विवाह हुआ ॥ ३० ॥ १६ उज्जीण का प्रांत १७ पुनि १८ कर (खिराज) १९ पश्चिम दिशा के २० मनुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और प्रमार आदि अग्निवंशियों को इस प्रकार जीता॥ ३१ ॥ २१ दबाकर २२ देरी नहीं करके

आभीर १५ अरु तैलिंग १६ देस कलिंग १७ आदिक जे सबै,
दिस यों अवाचियं[१] जित्ति प्राचिय[२]मैं मिलानं[३] दये तबै ॥३२॥
गोनर्द१ अंग२ सबंग३ आंध्र४ रु कामरूप ५ हु जित्तिकैं,
पुनि ताम्रलिप्त ६ बिदेह ७ मागध ८ मद्र ९ आदिक कित्तिकैं ॥
इम दब्बि पूरब३कौं उदीचियं[४]माँहिं भूपति आतभो,
तहाँ चीन१बाल्हिक२अर्ब३ऊर्णा४तुखार५दाव६दबातभो ॥३३॥
लंपाक७पुनि काश्मीर८तंगण९केरुप्रस्थल१०के जई,
स्तबकार११मूलिक१२जित्तिकैं भुव लै दसेरक१३लौं लई ॥
प्रत्यंत[५] जित्ति समस्त उत्तर४कौंहु यों अपनायकैं,
पुनि मध्यदेशन जित्तिकैं सबपैं तप्यो नृप आयकैं ॥ ३४ ॥
सिव[६]१आसपूरनि अंबिका[७]२कुलदेविकौं[८] नतिसौं नम्यौं,
सुमना११रु इंदुमती१२उभै२रसरत्त रानिनमैं रम्यौं ॥
करि राजसूय[९]१ रु अश्वमेध२समस्त भूपति बुल्लये,
इन आदि औरहु सत्र तास घनैं जमींतटपैं गये ॥ ३५॥

॥ दोहा ॥

कनकजप१बेदी२कलित, अद्रिन सम उपहार३ ॥
द्विज दुर्मदकरि दाक्खिना, जिहिं मख अतुल उदार ॥ ३६ ॥
कोसन लग जमुना जुगल२, पुलिन भये मखपूत ॥
कहन कित्ति उदधिन अवधि, दोरयो तस नड़ि दूत ॥ ३७ ॥

---

१ दक्षिणदिशा २ पूर्वदिशा में ३ मुकाम ॥ ३२ ॥ ४ उत्तरादिशा में ५ म्लेच्छ देश (यहां पर जितने देश गिनाये हैं उन सबका यथार्थ पता नहीं लगता कि कौन देश कहां है. और इनमें बहुधा देशों के पर्याय नाम भी नहीं मिलते कोशों में भी इन देशों के नाम येही मिलते हैं कि जो मूल में लिखे हु ए हैं, जिनका लिखना व्यर्थ है; और कितनेक देशों के पर्याय नाम और पते मिलते हैं वे इतने प्रसिद्ध हैं कि जिनका लिखना उपयोगी नहीं, इस कारण से देशों के नाम की टीका हमने छोडदी है सो पाठक लोग क्षमाकरें) ।३४। ६ महादेव को और आशापूरण नामक ७देवी को ८ नम्रता से ९ यज्ञ ॥३५॥ जिस अत्यंत उदार राजा के यज्ञ में सोना के यज्ञस्तंभ, प्रसिद्ध वेदी, पर्वतों के समान सामग्री और ब्राह्मणों को प्रमत्त बनानेवाली दक्षिणा थी ॥ ३६ ॥ यमुना नदी के किनारे दोनों यज्ञ से पवित्र होगये और समुद्र की अवधि

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

निकसी हिमालयतैं सूचक कलिंद करि,
इन्द्रप्रस्थहीसौं लाह जवतैं लयोकरी ॥
हेमजूप १ बेदी २ पात्र ३ प्रमुख पुरातन,
पदार्थ परि काली कांति कपिस भयोकरी ॥
संकलप पूरनव्है बिप्रनन लीनैं छत्र१,
चामर२व्यजन३दह्णपत्र४न छयोकरी ॥
भानुजा समुद्रनलौं भूकौं भूपतीके भूरि,
सत्रनके खबरि निरंतर दयोकरी ॥ ३८ ॥

गीर्वाणभाषा गीतिः ॥

चण्डासेरपि तनुजः सुमनसि सामन्तदेव१इति जातः॥
तनया तथेन्दुमत्यां जातैका सा समाख्यया श्यामा१ ॥३९॥
दत्ताभूत्पुरुरवसे साऽवन्तीशप्रमारतनुजनुषे ॥
या राष्ट्रसेनजननी पितामही धुन्धुमारभूभर्तुः ॥ ४० ॥
इन्दूदय इव सिन्धुर्ववृधे सामन्त१देव ऊर्जस्वी ॥
अधिगतसमस्तविद्यः स्ववीर्यसुखमन्वबीभवज्जनकम् ॥४१॥

तक उसकी कीर्ति कहने के लिये उस (चहुवाण) का नदी रूपी दूत दौड़ा ॥ ३७ ॥ सूर्य है जनानेवाला जिसका ऐसी यमुना नदी हिमालय से निकली जब से दिल्ली नगर से लाभ लेती रही, और सोने का यज्ञस्तंभ, वेदी, यज्ञ के पात्र आदि प्राचीन पदार्थों के भीतर पड़ने से काली कान्तिवाली यमुना काले पीले मिश्रित रंगवाली होतीरही. उस चहुवाण का संकल्प पूर्ण होकर ब्राह्मणों को छत्र चमर पंखे और दानपत्र दिये जिनसे छाईहुई रही, ऐसे सूर्य की पुत्री (यमुना नदी) समुद्रों तक भूमि को चहुवान राजा के बहुत यज्ञों की निरंतर खबर देती रही ॥ ३८ ॥ चंडासि (चहुवान) के भी सुमना नाम स्त्री में सामंतदेव पुत्र हुआ तैसे ही इन्दुमती मे श्यामा नाम की एक कन्या हुई ॥ ३९ ॥ वह कन्या उज्जीण के पति पँवार राजा पुरुरवा को दीगई, जो राष्ट्रसेन की तौ माता, और धुंधुमार राजा की दादी हुई ॥४०॥ चन्द्रमा के उदय होने पर समुद्र बढै इसीप्रकार पराक्रमी सामंतदेव वढा जि

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

षट्पदी

सब विद्या बुधसूर[1] कुमर सामंतदेव२हुव,
जनक[2] मग्ग अनुगामि[3] भयो अति विदित जित्ति भुव॥
जदुबर अर्जुन कुलज द्रविड नृप केतुमान जहँ,
सुता स्वयंबर रचिय गयउ चण्डासि सुतहु तहँ॥
कार्मुक[4] सहाय रनचण्ड करि जित्ति सबन कन्या जयो,
प्रभु राम[5] अपर[6] ताको प्रकट भुव प्रचण्ड२नामहु भयो।४२।

दोहा

केतुमानकी कन्यका, धन्य सुरुचि२।१अभिधान[7]॥
आनि कुमार प्रचण्ड२इम, ब्याही निगमबिधान[8]॥ ४३॥

षट्पदी

अवनिईस चहुवान१समा[9] सत१००भुग्गि अवनि सुख,
करि प्रचण्ड अभिषेक राज्य दै तिहिं दिलीप[10] रुख॥
आसापूरनि[11]१ईस[12]२अरचि[13] जाया[14] दुव२संजुत,
जोग तुहिनगिरि[15] जाय निरंत[16] सद्धो सिद्धन[17] नुत[18]॥
पथ ब्रह्मरन्ध्र[19] तजि असु[20] पवन भव[21] प्रधान विरहित[22] भयो,
पति देह संग रानिन२प्रनत[23] देह जुगल[24]२दहन[25]हिं दयो॥४४॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे तृतीय३राशौ चण्डा-

सने सम्पूर्ण विद्या पाकर पिता को अपने पराक्रम के सुख का अनुभव कराया।४१।
१ पंडित २ पिता के ३ पीछे चलनेवाला ४ धनुष के ५ हे प्रभु रामसिंह ६ दूसरा ७ नाम ८ वेद की रीति से ९ संवत् १० राजा दिलीप ने अपने पुत्र को राज्य दिया जिसप्रकार ११ आशापूरण नामक कुलदेवी और १२ शिव को १३ पूजकर १४ दोनों स्त्रियों सहित १५ हिमालय पर्वत पर १६ निरंतर १७ सिद्ध लोगों से १८ स्तुति कियाहुआ १९ शिर के मार्ग से (कपाल फूटकर) २० प्राणवायु को छोड कर २१ संसार में प्रकृति के जन्म मरण से २२ विरक्त (मुक्त) हुआ २३ विशेष नम्रता के साथ २४ दोनों ने २५ दोनों शरीर अग्नि को दिये, अर्थात् राजा के शरीर के साथ जलगई.

सीन्द्रप्रस्थस्कन्धावारस्थापन-वामदेववरवितरण-तत्काद्रवेयककोंटकसुतासुमनोमिलन-वत्साधीतविद्यतद्विवाहन-समात्तधनुर्वेदनिजभवनाऽऽगमनौर्वाङ्गजर्चीकाऽनुजपुरोधीकरण-कुलदेव्यर्चन-वर्णाश्रम्यव्यवस्थापन-दिग्विजयप्रस्थान-पुष्कराधिराजयादवावतंसविजयाश्वतनयेन्दुमतीपरिणयन-कृतदिग्जयनिजराज्यमहामखाऽनुष्टान-तत्संतितितानकसूनुसामन्तदेव२श्यामो१द्गमन-चातुर्भुजी१प्रामारिपुरूरवो२विवहन-समधिगताऽध्येतव्यचाहुवाणकुमारस्वयम्बरस्थद्रविडेन्द्रकेतुमत्कन्यासुरुचि२।१प्रसह्यपरिणयन-कृततद्विषेकपरिणामत्सपत्नीकचण्डासि१परिव्रजन-तत्समाहिततनुत्यजनं प्रथमो१ मयूखः ॥ १ ॥ आदितस्त्रिचत्वारिंशत्तमः ॥ ४३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सामंतादिक[1] देव २ हू, भयो सवन सिर भूप ॥
चवण[2] चलाय प्रचंड २ पन, किन्नो उदित अनूप ॥ १ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में चहुवाण का दिल्ली को राजधानी बनाना, महादेव के वरदान से उस कर्कोटक नामक सर्प की पुत्री सुमना का मिलना, वत्स मुनि से विद्या पढना और उसका विवाह होना, धनुर्वेद पढकर घर आना, ऊर्व के पुत्र और आर्चि के छोटे भाई को पुरोहित करना, कुलदेवी का पूजन करना, वर्ण और आश्रम धर्म का स्थापन करना, दिग्विजय पर चढाई करना, पुष्कर के स्वामी यादवकुल के मुकुट विजयाश्व की बेटी इन्दुमती से विवाह करना, दिग्विजय करके अपने राज्य में बडे यज्ञ का अनुष्ठान करना, उस (चण्डासि) की सन्तति को फैलानेवाले पुत्र सामन्तदेव और श्यामा नामक पुत्रिका का उत्पन्न होना, और चहुवाण की पुत्री श्यामा का पँवार पुरुरवा के साथ विवाह होना, पढने योग्य विद्याओं को पढकर चहुवाण के पुत्र का स्वयंवर में स्थित द्रविड़देश के अधिपति केतुमान् की कन्या सुरुचि से बलात्कार विवाह करना, उस सामन्तदेव का राज्याभिषेक करके अन्त में स्त्रियों सहित चहुवाण का वानप्रस्थ होना और उस राजा का समाधि से शरीर छोडने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तेतालीस मयूख हुए ॥ ४३ ॥

१ सामन्त है आदि में जिसके ऐसा देव अर्थात् सामन्तदेव २ चवण ( )

नृप प्रचंडकै सुत भयो, महादेव ३ अभिधान[1] ॥
वीतिहोत्र[2] नृप जामि[3] जनि[4], वीतिहोत्र[5] कुल भान ॥ २ ॥

षट्पात

महादेव ३ हुव मरुप[6] देवराज[7] हिं रन दंडक ॥
अरि गिरि खंडन असनि[8] खलन दंडन खिजि खंडक ॥
अपर[9] नाम कर अधिप प्रथित[10] सो हुव परभंजन ॥
रक्ख्यो जिहिं मरुराज[11] अटकि चालीस ४० अहर्गन[12] ॥
सामंतदेव २ तजि राज्यसुख परभंजन ३ हित अप्पि[13] भुव ॥
संजमी[14] सुरुचि२।१रानी सहित हरि धरि हृदय गतायु[15] हुव ॥ ३ ॥

दोहा

परभंजनके हत्थतैं, इकदिन रमत सिकार ॥
होमधेनु मुनि प्रमतिकी, मरी दइव अनुहार ॥ ४ ॥
इहिं निमित्त भार्गव[16] दयो, बंसनासको साप ॥
जब जान्यौं तब नृप सजव[17], आनिपस्यो पय आप ॥ ५ ॥
बिनुजानैं हुव बिन्नती, किय इम नम्र नरेस ॥
संदय[18] मुनिहु दोस न समुझि, अक्खिय[19] समुचित[20] एस ॥६॥
संतति व्हैहैं इक्क सुत, तव कुल प्रथित[21] प्रसंस ॥
पीढिन कछु अंतर परत, विस्तर[22] पैहैं बंस ॥ ७ ॥

सोरठा

रैवत गिरि अधिराज[23], निमि विदेहकुल सुंदम[24]पट्टु ॥

१नामवाला २ सूर्यवंशी राजा की अथवा वीतिहोत्र नामक राजा की ३ बहिन है ४ माता जिस की ऐसा ५ अग्नि कुल का सूर्य ॥ २ ॥ ६ मारवाड़ देश का पति ७ देवराज को रन में दण्ड देनेवाला ८ शत्रुरूपी पर्वतों को तोड़ने में वज्र ९ वह महादेव दूसरे नाम से परभंजन १० प्रसिद्ध हुआ ११ मारवाड़ के राजा को १२ दिन १३ भूमि देकर १४ संयम रखनेवाला (ध्यान धारणा और समाधि इन को संयम कहते हैं) १५ मरा ॥ ३ ॥ ४ ॥ १६ भृगु के पुत्र ने १७ शीघ्र ॥ ५ ॥ १८ दयालु १९ कहा २० यथायोग्य ॥ ६ ॥ २१ प्रसिद्ध प्रशंसा योग्य २२ विस्तार पावेगा ॥७॥ २३ स्वामी २४ इन्द्रियों को रोकने

सोरठ ऋद्ध समाज, जनपद बाहु अधीन जिहिं ॥ ८ ॥
सुता तदीय सुजान, परभंजन ३ आनी परानि ॥
रूपवती ३।१ अभिधानें, ज्यौं राघवरवि जानकी ॥ ९ ॥
रूपवती ३।१ उरजात, रुद्रभ ६ के पहिले चरन ॥
हुव कुबेर ४ विख्यात, महादेव ३ नृपकै कुमर ॥ १० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणगद्यम्

प्रचंडपुत्र राजाधिराज महादेव ३ नैं या राजकुमार कुबेर ४ कौं दिव्यतेजा लखि अपर नाम करि देवमहा ४ हू मान्यौं ॥

ताकौंही वाक्चातुरी करि कितेक कवि मागधादि लोकन काव्यवंसादिनमैं महोतदेव४नाम करि बखान्यौं ॥

या देवमहाकौं स्वजनक सासनीय प्रतिहारराज नप्ता धन्वधरेस देवराजनैं अपनैं ऊर्जा४।१अभिधानके अक्षरनकौं उदितकारिका आत्मजा विवाहि दई ॥

धर्मध्वजाकेसाहसकरिकुबेरनैं कविनकी कोटिन कलित कीर्ति लई११

राजा महादेव धर्म१नीति२को धुरंधर प्रजा१दिन१कौं मृगमुख १०राशिको रवि राजमान ॥

अरु या पुरुषकारपर सूर्यके सासन करत तहाँ अधिकमासलौं

मे चतुर १ बहुत ऋद्धिवाला सोरठ नामक २ देश जिस के भुजों के आधीन है ॥ ८ ॥ ३ उसकी बेटी ४ रूपवती नामक ५ रघुवंशियों के सूर्य (रामचन्द्र) ने सीता को आनी ऐसे ॥ ९ ॥ ६ रूपवती के पेट से पैदा हुआ ७ आर्द्रा नक्षत्र के पहिले पाये में (आर्द्रा नक्षत्र में जन्मलेनेवालों के नाम "कु-घ ङ-छ" इन अक्षरों पर होते हैं) होने के कारण कुबेर नाम प्रसिद्ध हुआ ८ दूसरा ९ वचन की चतुराई से १० बड़वा भाट आदि लोकों ने ११ काव्य और वंशावलि आदि में १२ अपने पिता के आज्ञाकारी, पड़िहार राजा के दोहिते मारवाड़ के राजा देवराज ने अपने नाम के अक्षरों का उदय करनेवाली ऊर्जा (बलवान का नाम है) नामवाली पुत्री ब्याह दी १३ कवियो की कोटि में प्रसिद्ध कीर्ति प्राप्त की . १४ धुर खींचनेवाला १५ प्रजारूपी दिन का मकर राशि का शोभायमान सूर्य इस देवमहा रूपी सूर्य के पुरुषार्थ पर २॥ समय वहां अन्य राजाओं रूपी चंद्रमा भाग्य के भरोसे पर;

अपनौं बढिबो बोयबैठे इतर नृप दैवपर कलानिधान ॥

या प्रभुके पुराय१पावक२कौं पुहवीपैं प्रसरत अखिल अघ अं-
र्क अर्पित हैहयार्जुन सर समासादित स्थावर सृष्टि जानी ॥
अरु याके बर्द्धक इंदु१औरअवनीस१नआपवमुनिकीनहौंसआनी १२

जाके हस्तनैं संकल्पनके सलिल करि सदाही मदकल महा
करीके करको बानिक लयो ॥
अरु दीक्षा करि दंपतीके मख मख प्रति महाफलकी बधाईमैं
अंचलग्रंथी कैदी बारंबार छूटत भयो ॥
तदनंतर महीस महादेवनैं देवमहा४प्रगल्भपुत्रके प्रतापसौं प्रस
न्न होय वैखानस वृत्ति३लई॥
त्यौंही रूपवतीनैं मानौं मुख दिखाईहीमैं शुद्धांत स्वामिपनकी
सुखमा३ अपनी लालित बधू५ ऊर्ज्जा४।१कौं अप्पिदई ॥ १३ ॥

अधिक मास के समान अपना बढना डुबो बैठे क्योंकि अन्य महीनों में तौ संक्रान्ति से अमावास्या सदैव आगे रहती है परंतु अधिकमास में संक्रान्ति के दिन अधिक और चंद्रमा के दिन न्यून होने से अमावास्या पर समाप्त होनेवाला चंद्रमा संक्रान्ति तक नहीं पहुंचसकता, अर्थात् अमावास्या को लोप कर संक्रान्ति आगे निकल जाती है इसीकारण से यहां पर अधिक मास के चंद्रमा की वृद्धि का डुबो बैठना लिखा है . १ हैहयार्जुन के बाणों से प्राप्त अर्थात् हैहयार्जुन बाण संधान करता था जिस समय संपूर्ण सृष्टि जड़वत् होजाती थी उसीप्रकार इस देवमहा के पुराय रूपी अग्नि के पृथ्वी पर फैलते समय संपूर्ण पाप सूर्य में अर्पित होकर जड़वत् होगये . और इस देवमहा के बढानेवाले चंद्र रूपी अन्य राजाओं ने वसिष्ट मुनि की हौंस नहीं की (ये दोनों कथा किसी पुराण की हैं परंतु हम को उपलब्ध नहीं हुई) जिस देवमहा के हस्त ने संकल्प के जल से सदैव मद टपकतेहुए बड़े गजराज के शुण्ड का अनुकरण किया (मस्त हाथी की शुण्ड सदैव टपकती रहती है इसीप्रकार देवमहा के हस्त से संकल्पका जल टपकता रहा)और यज्ञ की दीक्षा से स्त्रीभर्तार के यज्ञ यज्ञ में बडे फल की बधाई के निमित्त गठजोड़े रूपी कैदी बारंबार छूटे (जब बड़े फल की बधाई आती है तब कैदी छोडेजाते हैं यह लोकप्रथा है) उस पीछे राजा महादेव ने देवमहा जैसे प्रौढ (होश्यार) पुत्र के प्रताप से प्रसन्न होकर वानप्रस्थ आश्रम धारण किया . २ जनाने के स्वामिपन की ३ परमशोभा ४ सुन्दर ५ बहू (जनाने का मालिकपन अपनी बहू ऊर्जा

सूत्रसरणि[1] सरणीवृत्तिके[2] समान विदेहराज सुदमकीसुताहू
स्वामीके साथ सधर्मिणीभावकौं सफल कीनौं ॥
अरु समयके अंत दोउश्न उचित अगाध[3] अर्थके[4] उपमेय संपन्न[5]
लोकनको लाह लीनौं ॥
ऊर्ज्जा४।१सहित अभिषिक्त[6] राजा देवमहा४हू अद्वितीय ऊर्ज्ज[7]
स्वी भयो ॥
जाके जसनैं बिनाही तरंड[8] लोकालोकलौं[9] निवास लयो ॥ १४॥
देवमहा४सौं उर्ज्जा४।१में राजकुमार विंदुसार५नैं जन्म पायो।
सोही मत्रसंक्तिमैं[10] महाप्रभाव इतर[11] अभिख्या[12] करि मंत्रसहाय५
तथा मंत्रजय५हू कहायो ॥
या मंत्रजय५कों अनुद्रुह्यु अन्वय[13] अवतंस[14] बैरोचनि बलिवंसव-
र्द्धक[15] कलिंगराज कृतसेननैं कन्या विभावरी५।१बिवाही॥
सूरिलोकनैं[16] जाकी सुसीलता सबही सतीनसौं सिवाय सिराही१५
राजा कुबेर४तो ऊर्ज्जा ४।१ सहित अरण्यकौं[17] आवास[18] करत भयो
अरु याको अंगज[19] राजा विंदुसार ५ विभावरी५।१सहित राज्यभा
रकौं धरत भयो॥
राजा विंदुसार५सौं विभावरी५।१मैं राजकुमार सुधन्वा६नैं उद्गमैं[20] लह्यो
जासमयमैं सूकरपति[21] चालुक्य रूप४के अंगज राजा पृथु ५ नैं

को देकर रूपवती भी अपने पति के साथ गई) ॥ १३ ॥ १डोरा सूई के साथ जाता है जैसे २ मार्ग चलनेवाले की वृत्ति के समान पति के साथ रहना ही है धर्म जिस का इस (स्त्री) भाव को सफल किया ३ अथाह अर्थ (मोक्ष की ४ उपमा लगती है जिस को ऐसे ५ समृद्धिवाले (स्वर्गादि) लोकों का लाभ लिया ६ अभिषेक कियाहुआ ७पराक्रमी ८ नाव ९ पुराणों के मत से समुद्रों के पार सम्पूर्ण पृथ्वी के जिस पर्वत का घेरा है उसका नाम लोकालोक पर्वत है ॥ १४ ॥१०राजा की तीन शक्तियों में एक का नाम मंत्रशक्ति है जिसका भावार्थ है सलाह में कुशल ११ दूसरे १२नाम से १३अनुद्रुह्यु के वंश का १४मुकुट १५विरोचन के पुत्र बलि के वंश को बढानेवाला कलिंग देश के राजा कृतसेन ने विभावरी नामक अपनी कन्या विन्दुसार को विवाही १६पण्डितों ने ॥१५॥१७ वन का १८ निवास १९ पुत्र २० जन्म २१ सूकर नाम क्षेत्र का पति.

अपनौं दिग्विजय चह्यो ॥ १६ ॥

जानैं*प्रतीचीके विजयमैं पहिलैं इंद्रप्रस्थ पुरही आय घेरयो ॥
अरु चो४गुनौं पृतना[1]सौं प्रगल्भ[2] होय उपायन[3] आनिबेको आदेस[4] गेरयो
तब मंत्रजय५ नैं सद्योधारण सचिव सहित मंत्र[6]मैं आँरिका असंधि१
सील उग्रयान२आसन्न३विधेय विग्रह४दुराप[10] द्वैधीभाव[11]५जान्यौं ॥
अरु आश्रय[12]६कौं अनुचित अपनैं आश्रम[13]२कौं पुत्रफल मानि सिद्धां-
तमैं समरसज्जा सायबो ही श्रेय मान्यौं ॥ १७ ॥
सुधन्वा६के पट्ट[14]में दोय२सिखा[15] सिवाय करि सन्नद्ध होय मंत्रजय ५
महारण चलायो ॥
अरु स्यंदन[16]१सिंधुर[17]२सप्ति[18]३पत्ति[19]४संकुलित[20] अनीकिनी[21] उभय२को स
माज समुद्रसो नजरि आयो ॥
रथनकी रथ्या[22] करि बीरन[23] पहिलैं वसुमती[24] प्रधिनके[25] प्रहार सहनलगी ॥
अरु बानन के पूर्वही चक्री[26] चक्रवाक[27]कौं पार जावनकी कहनलगी ।१८।

---

* पश्चिम दिशा १ सेना २ प्रौढ (बडप्पन) पन को प्राप्त होकर ३ भेट (नजराना) ४ हुकुम दिया ५ सद्योधारण नामक कामदार के साथ ६ सलाह में ७ सन्धि (मिलाप) नहीं करनेवाला ८ चढाई करने में उग्र ९ आसन (शत्रु को दबाने के लिये पास ही पडाव डाल कर रहनेवाला) करनेवाला १० लडाई में दुर्लभ अर्थात् जिससे विजय मिलना दुर्लभ है ११ द्वैधीभाव (ऊपर से मित्र और भीतर से शत्रु होकर रहना) और १२ आश्रय (शरणागत होकर रहने) को अनुचित समझकर १३ अपने घर में पुत्र मौजूद है, वह गृहस्थाश्रम का फल मान कर ॥ १७ ॥ १४ अपने पुत्र सुधन्वा के पट्ट अर्थात् सिंहासन में १५ दो शिखा (सिंहासन के पांच शिखा [कलश] होते हैं जिनमें अपने पुत्र की अधिकता के लिये दो कलश) अधिक लगाकर १६ रथ १७ हाथी १८ घोडे १९ पैदल २० इनसे अवकाश रहित २१ सेना २२ दोनों राजाओं का समूह समुद्र सा दीखा. रथों की गलियां (मार्गों) से २३ वीरों के पहिले ही २४ पृथ्वी २५ पूठियों के प्रहार सहने लगी, अर्थात् अभी तक वीरों ने तो प्रहार सहे ही नहीं, परंतु रथों के इधर उधर फिरने से पहियों की पूठियों के प्रहार भूमि सहने लगी. इसीप्रकार बाण तो वीरों के शरीर में पार हुए ही नहीं, जिससे पहले ही २६ चकवी २७ चकवे को पार (दूर) चलने की कहनेलगी कि यहां अंधेरा होनेलगा ॥ १८ ॥

भीरु[1]नके पूर्वही दिसानके महामद[2]कल मातंग[3]नके गाढ गिरन लगे ॥

अरु फेरंड[4]नसौं प्रथमही समुद्रनके सलिल[5] फिरन लगे ॥

ऐसे समय राजा बिंदुसार ५ करंड[6] उपासंग[7]सौं नागनाराच[8] निकारे।

अरु सिंजनी[9]पैं समारोप[10]सौं सत्रुनके समूह समासम प्रसरि डारे ।१९।

सचिव सद्योधारणनैं चालुक्यराजको मंत्री सुमति मारिलयो ॥

अरु महीस मंत्रजय ५ नैं सामंतनको संघट्ट[11] तोरि सपत्न[12] पृथुपैंही दाव दयो ॥

दोऊ २ धर्म धरेस जुद्ध करि स्यंदन १ सप्ति २ सारथी ३ सस्त्र ४ बिहीन होय नियुद्ध[13]को निपुणत्व[14] दिखावत भये ॥

अरु अपनैं अपनैं सूरनकौं समरमैं साहसही उचित सिखावत भये।२०।

जहाँ पृथ्वीपति पृथु ५ को प्रकर्षण[15] प्रहार प्राबल्य[16]सौं पर्‍यो॥

जासौं चंडासि[17]कुलके चंद्र बसुधेश्वर बिंदुसार५ नैं अस्तअद्रि[18] अमरालय[19] आवास[20] कर्‍यो ॥

तदनंतर[21] मंत्री सद्योधारण स्वकीय[22] स्वामिकौं सिसु जानि उचित उपायन[23] उपहार[24] आनि अर्पित[25] करि आत्मीय[26] अरिको उत्सारण[27] करायो ॥

---

१ कायरों के गाढ तौ छूटे ही नहीं, अर्थात् युद्ध प्रारंभ हुआ ही नहीं, इससे पहले ही २ मदोन्मत्त ३ दिग्गजों (दिशा के हाथियां) के गाढ छूटने लगे. युद्धस्थल में मांस भक्षण करने को ४ शृगाल तौ फिरे ही नहीं जिनसे पहल ही (सेनाओं के चलने से) समुद्रों का ५ जल फिरनेलगा. ऐसे समय में राजा बिंदुसार ने ६ टिपारे रूपी ७ भाथों से सर्प रूपी ८ बाण निकाले ९ प्रत्यंचा पर १० बाणों के चढाने से सब शत्रुओं के समूह को असम करके फैलादिया, अथवा जो सम (अपनी बराबरी के) थे उनको असम (समता हीन) करके बिखेर दिया ॥१९॥ ११ उमरावों का समुदाय १२ शत्रु १३ बाहु युद्ध १४ कुशलता ॥ २० ॥ १५ विशेष करके १६ प्रबलता से १७ अग्नि कुल के चंद्र भूपति बिन्दुसार ने १८ अस्ताचल रूपी १९ स्वर्ग में २० निवास किया २१ जिस पीछे २२ अपने मालिक को बालक जान कर २३ भेट २४ सामग्री २५ नजर २६ अपने शत्रु का २७ कूँच कराया.

अरु सुधन्वा ६ कौ अभिसेक करि पठनीय[1] पढाय पिताहीकी पद्धति[2] पर लायो ॥ २१ ॥

दोहा

बिंदुसार ५ चालुक्यबल, खग्गन[3] बल बलँ[4] खाय ॥
खाय गिरचो कलि ज्यौं करन, करन देवनुत[5] काय ॥ २२ ॥

मनोहरम्

पृथुसे प्रतापी इंद्रप्रस्थमैं उपरि आये,
डारचो व्है निसंक भागधेयहीको भर[7] है ॥
संधि आन विग्रह दुराप[8] देखि आश्रयकौं,
उचित न देख्यो भूप ऐंची[9] असि अर है ॥
तृन गिनि भोगनकौं रोचकसे[10] रोगनकौं,
छत्र छोरि कीनैं छत्र गिद्धनके पर है ॥
संत्रजय ५ रायनीति धर्म अधिकाय बीर,
प्रान दीनो कैरपै[11] न जान दीनौं कर[12] है ॥ २३ ॥

दोहा

प्रविसी वन्हि[13] बिभावरी ५।१, स्वामि अंग लै संग ॥
सिसु हि सुधन्वा ६ भूप भो, जयकारक जुरि जंग ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ सुरुचि५।१सामन्तदेव २ रूपवती ३।१ महादेवो ३ र्जो ४।१ देवमहो ४ बिभावरी

१पढने योग्य२मार्ग.देवताओं से अपने शरीर को६स्तुतियोग्य करने के लिये पाण्डवों की सेना को खाकर५युद्ध में कर्ण गिरा था उसीप्रकार बलवान् चालु वान बिन्दुसार सोलंखी पृथु की४सेना को३तलवारों के बल से खाकर गिरा ॥२२॥७कर लेने का भार डाला८संधि, यान और विग्रह में तो उस पृथु को दुर्लभ जाना, और उसके आश्रित होने को उचित नहीं समझा९शीघ्र तरवार खींची, भोगों को तृण के समान समझा१०और रोगों को क्षुधा (भूख) के समान माना, कि अंत में तौ वे खावेंहीगे.११कर (खिराज) पर प्राण तौ दिये परंतु१२खिराज नहीं जानेदिया १३ अग्नि में॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में सुरुचि, सामन्तदेव, रूपवती, महादेव, ऊर्जा, देवमहा, विभावरी, विन्दुसार के चरित्र और

५।१ बिन्दुसार ५ चरित्रसुधन्वा ६८ भिषेकवर्णनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ आदितश्चतुश्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४४ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

राजा सुधन्वा६कुलीर[1]के रविकी रजनी जिम वृद्धि पाय सभस्त सस्त्र१सास्त्र२मैं सावधान भयो ॥

अरु सचिवसिरोमणि सद्योधारण सहित अपनैं चंडचक्रको चलाय चालुक्यराज पृथु५को पुर गरदाय लयो ॥

तहाँ राजा पृथु५दीक्षित[4]होय अग्निष्टोमको यजमान कितनोंक कर्म तो करन पायो ॥

अरु एकादस११कपालमय विष्णुको चरु१बनाय विभाकरनको चरु२बनावत सुधन्वा६के संदेसहारकन जाय आहवको आह्वान लगायो ॥ १ ॥

या[11]अध्वरको विस्तरसौं विधान तो उत्तर[12] अयनके अंतर[13] प्रथम१पुरुषार्थ[14]१के प्रपंचमैं प्रमानिये ॥

परंतु पृथु५नैं प्रारंभही कीनौं हो यातैं बन्यौं कर्म यहाँहु समास[16] करि जानिये ॥

जाके कुलमैं सोमयाग भयो होय सोहि अग्निष्टोमको अधिकार पावै अरु नहीं भयो होय तो पहिलैं इंद्र१अग्नि२के निमित्त पसुकरि पीछैं या अध्वरको आरंभ चलावैं ॥ २ ॥

सुधन्वा के राज्याभिषेक वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से चवालीस मयूख हुए ॥ ४४ ॥

१ कर्क संक्रान्ति की रात्रि बढै जिस प्रकार बढ कर २ प्रचण्ड सेना को ३ सोलंखी राजा पृथु के नगर को घेरलिया ४ यज्ञ की दीक्षा लेकर ५ यज्ञ कि शेष ६ बारह सूर्यो का ७ चरु (हविष्यान्न, होमने का अन्न) बना रहा थ उस समय ८दूतों ने ९ युद्ध करने का१०बुलावा (आवाहन) ॥१॥ ११इस यज्ञ का विस्तार तो इस ग्रन्थ के १२ उत्तरायण के १३भीतर१४धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनमें से प्रथम धर्म का वर्णन करें गे उस रचना में जानना परन्तु यहां १६संक्षेप से

दोहा ॥

यातैं उत्तर२पक्ष यह, रचि पृथु५चालुकराज ॥
करनलगो श्रुतिगेय क्रतु, लहि द्विज सूरि समाज ॥ ३ ॥
प्रथम मातृ१अर्चन१करि रु, आभ्युदयिक किय श्राद्ध२॥
तदनु बरे यजमान तिहिं, ऋत्विज३सोलह१६राद्ध ॥४ ॥
सर्ब बेद बुध च्यारि४ऋक१, वेद तत्व बुध च्यारि४॥
यजुर्बेद२बुध च्यारि४अरु, च्यारि४साम३बुध धारि ॥ ५ ॥
अथ तद्दत्विङ्नामानि ॥ गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्माविपुला ॥
ब्रह्मा१च ब्राह्मणाच्छंसी२पोता३चाग्नीध्रक४स्तथा ॥
एते४सम्पूर्णवेदज्ञा वृताऽस्मिन् पृथुना क्रतौ ॥ ६ ॥
ग्रावस्तोता१ततो होता२तथाच्छावकसा३ऽऽह्वयः ॥
मैत्रावरुण ४ इत्येते वृतास्तेनर्ग्विदो बुधाः ॥ ७ ॥
नेष्टा१चाध्वर्यु२रुन्नेता३प्रतिप्रस्थातृ४संयुताः ॥
यजुर्वेदाविदो विप्राश्चालुक्येन वृता इमे ॥ ८ ॥

इस कारण से पृथु ने १ उत्तर पक्ष का आरंभ किया, अर्थात् सोलंखी पृथु ने पहिले सोमयज्ञ नहीं किया था इस कारण से प्रथम इन्द्र और अग्नि के निमित्त पशु का बलिदान करके फिर इस अग्निष्टोम यज्ञ का आरंभ किया ३वेद में कहीहुई रीति से ४यज्ञ ५ पण्डितों का ॥३॥ पहिले मातृ (देवी) पूजन किया और फिर आभ्युदयिक (जिससे अभ्युदय अर्थात् प्रताप बढे उस श्राद्ध को आभ्युदयिक कहते हैं) श्राद्ध किया६जिस पीछे उस यजमान (सोलंखी पृथु) ने ऋत्विजों (यज्ञ करनेवालों) की वरणी की जो वहां पर मिले उन्हीको बरा ॥४॥ चार ऋत्विज तो सब वेदों को जाननेवाले और चार ऋत्विज ऋग्वेद के तत्त्व को जाननेवाले, यजुर्वेद को जाननेवाले चार, और सामवेद के जाननेवाले चार॥५॥इसप्रकार सोलह ऋत्विज होते हैं, जिनका क्रम और नाम आगे बताते हैं ॥ उस यज्ञ में चारों वेदों के जाननेवाले ब्रह्मा, ब्राह्मणाच्छंसी, पोता और आग्नीध्र नाम के इन चार ऋत्विजों की वरणी करी ॥६॥ और ऋग्वेद के जाननेवाले ग्रावस्तोता, होता, अच्छावाकस और मैत्रावरुण इन चारों की वरणी की ॥७॥ चालुक्य राजा ने यजुर्वेद के जाननेवाले नेष्टा, अध्वर्यु, उन्नेता और प्रतिप्रस्थाता नामवाले ऋत्विजों की वरणी करी ॥८॥

उद्गाता १ प्रतिहर्ता २ च प्रस्तोताऽपि तृतीय३कः ॥
सुब्रह्मण्य४श्च तत्रैते४ समात्ताः सामसूरयः ॥ ९ ॥
येन्येऽप्यस्मिन् क्रतौ योग्या वृतास्तेन महीभृता ॥
श्रोतव्या रावराट् तेऽप्येकादशै११तत्क्रतूचिताः ॥ १० ॥
एकः १ सोमप्रवाको१ ऽन्ये चमसाऽध्वर्यवो१०दश१० ॥
सभ्यत्वे मुनयः शेषा वृताश्चालुक्यभूभुजा ॥ ११ ॥

अथर्त्विग्वरणविधिः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पदी

ऋत्विज पूरब सम्मुख बैठि चालुक उत्तरमुख,
इष्ट बंधु अरु प्रथम बेर खट६ देवरीति रुख ॥
होता१सुचि२अध्वर्य्यु२होहु मम रवि२जगत्राता ॥
ससि३ब्रह्मा३पर्जन्य४होहु मामक उद्गाता४ ॥
जिम होताच्छंसी५होहु जल५चमसाध्वर्य्यु६मयूख मम ॥
इम बरि समंत्र सुर बिप्र बलि कथित२७ बेरे सो सुनहु क्रम ॥१२॥

सामवेद के पण्डित उद्गाता, प्रतिहर्ता, प्रस्तोता और सुब्रह्मण्य नाम को धारण करनेवाले इन चार ऋत्विजों की वरणी की ॥ ९ ॥ उस राजा ने इस यज्ञ में और भी जो योग्य थे उन ब्राह्मणों की वरणी की, हे रावराजा रामसिंह ! इस यज्ञ के योग्य वे भी ग्यारह सुनने योग्य हैं ॥१०॥ एक तो सोमप्रवाक और बाकी के दश चमसाध्वर्यु. चालुक्य राजा ने बाकी के मुनियों की वरणी सभासदों में की ॥११॥ ऋत्विज लोग पूर्व को मुख करके बैठे और सोलंखी राजा उत्तरदिशा को मुख करके बैठा, प्रिय बान्धवों को और प्रथम छः देवताओं को रीति पूर्वक वरे सो बताते हैं, कि अग्नि तो होता (ऋग्वेद का ऋत्विज) और संसार की रक्षा करनेवाला सूर्य मेरा अध्वर्यु (यजुर्वेद का ऋत्विज) होओ, चन्द्रमा ब्रह्मा (चारों वेदों के जाननेवाला ऋत्विज) और मेघ मेरा उद्गाता (सामवेद का ऋत्विज) होओ, जल है सो मेरा होत्राच्छंसि (चारों वेदों को जानने वाला) होओ, और अग्नि की ज्वाला है सो ही चमसाध्वर्यु होवे, इसप्रकार सब की वरणी मंत्र सहित करके ऊपर कहेहुए देवता और ब्राह्मणों को फिर वरे सो क्रम सुनो ॥१२॥

दोहा

स्फिंगहि[1] वाम करकंजलै[2], दच्छन[3] कर अपसव्य ॥
ऋत्विज दक्खिन जानु[4] छ्वै, भूप बरन किय भव्य[5] ॥ १३ ॥
ब्रह्मा १ कौं प्रथमहि बरयौ, इम कहि पृथु ५ अभिधान[6] ॥
भारद्वाज सगोत्र मैं, बरत तुम्हैं विधिथानँ[7] ॥ १४ ॥
पुरट[8] १ गज२ रु कौशेय[9] पट ३, सप्ति[10] ४ समीर जँवज्ञ[11] ॥
दीजै जिहिँ बिच दच्छिनामैं बिरचत वह यज्ञ ॥ १५ ॥
तत्थ बिरंचन[12] थान तुम, स्रष्टा[13] १ होवहु स्वामि ॥
इम सुनि चालुक अर्थना[14], भाख्यो द्विजहु भवाँमि[15] ॥ १६ ॥

षट्पदी

उद्गाता[16] २ होता[17] ३ रु तदनु[18] अध्वर्यु[19] ४ बरे मुनि ॥
तदनु ब्राह्मणाच्छंसि[20]५ तदनु प्रस्तोता[21]६ कौं पुनि ॥
बरि नृप मैत्रावरुण[22] ७ तदनु प्रतिप्रस्थाता[23] ८ करि ॥
पोता[24] ९ प्रातिहर्ता[25] १० बहोरि अच्छावाकस[26] ११ बरि ॥
नेष्टा[27]१२ आग्नीध्र[28]१३ हिं बरि तदनु सुब्रह्मण्य[29]१४ हु पृथु५ बरिय ॥
बरि ग्रावस्तोता[30]१५ मुनि बहुरि उन्नेता[31]१६ बरणी करिय ॥१७॥

---

१ स्फिग (डांडी का मूल भाग) ही २ कमल ३ दाहिने हाथ से ४ घुटने को छूकर ५ शुभ ६ नाम (राजा पृथु ने इस प्रकार नाम कह कर पहले सब वेदों को जाननेवाले प्रथम ऋत्विज ब्रह्मा को वरा) ७ ब्रह्मा की जगह. ८ सोना ९ रेशमी वस्त्र ११ पवन के वेग को जाननेवाले १० घोड़े. १२ यहां ब्रह्मा के स्थान पर हे स्वामी ! तुम १३ ब्रह्मा होओ. १४ इस प्रकार चलुक्य राजा की याचना सुन कर १५ होऊंगा. १६ ब्रह्मा को वरे पीछे सामवेद के प्रथम ऋत्विज को १७ ऋग्वेद के दूसरे ऋत्विज को १८ जिस पीछे १९ यजुर्वेद के दूसरे ऋत्विज को २० सब वेदों को जाननेवाले दूसरे ऋत्विज को २१ सामवेद के तीसरे ऋत्विज को २२ ऋग्वेद के चौथे ऋत्विज को २३ यजुर्वेद के चौथे ऋत्विज को २४ सब वेदों को जाननेवाले तीसरे ऋत्विज को २५ सामवेद के दूसरे ऋत्विज को २६ ऋग्वेद के तीसरे ऋत्विज को २७ यजुर्वेद के प्रथम ऋत्विज को २८ सब वेदों को जाननेवाले चौथे ऋत्विज को वर कर जिस पीछे २९ सामवेद के चौथे ऋत्विज को राजा पृथु ने वरा और ३० ऋग्वेद के प्रथम ऋत्विज को वर कर फिर ३१ यजुर्वेद के तीसरे ऋत्विज को

दोहा

ब्रह्मा १ को जो बरण विधि, त्यौं इन १५ सौं कहि व्यस्त ॥
सोलह १६ ही भव कहि बरे, भनैं भवामि समस्त ॥ १८ ॥
यौं वरि किय मधुपर्क करि, सवनकोटि सनमान ॥
तहँ ऋत्विज १६ पुण्याहमिति, स्वारत पढैहि सुजान ॥ १९ ॥
दच्छिणाऽर्थ संकल्प पुनि, कीनौं चालुक जत्थ ॥
पृथु ५ कौं किय इन ऋत्विज १६ न, सोम समर्पन तत्थ ॥ २० ॥

सोरठा

दै आसिख सुभवादि, दीच्छितकैं किय ऋत्विज १६ न ॥
मंगल सब तिलकादि, तदनु भयो जो सुनहु क्रम ॥ २१ ॥
दीच्छित पृथु ५ आचम्य, सुरन १ ऋत्विजन २ नरन ३ सौं ॥
प्रार्थन करिय प्रणाम्य, अमर सत्र आरंभको ॥ २२ ॥
सुचिमुख पूर्व छ ६ देव, बरे भूप तिनसौं सविधि ॥
किय मार्गण कृत सेव, प्रार्थन सुनहु सु रामं २०।१४ पहु ॥ २३ ॥
मम होता १ जु कृसानु १, देवयज्ञ सो देहु मुहि ॥
यौं सबसौं यजमानु, कहिय उपांशु परोच्छवत ॥ २४ ॥

वरणी करी ॥ १७ ॥ यहां पर ऋत्विजो की वरणी करी जिनका स्पष्ट क्रम आगे के अंकों से जानो. सब वेदों के जाननेवाले १।२।३।४. सामवेद के १।३।२।४. ऋग्वेद के २।४।३।१ यजुर्वेद के २।४।१।३.
जो ब्रह्मा के वरने की रीति बताई उसीप्रकार इन प्रत्येक (एकएक) को कहा. यजमान ने कहा 'भव' (होओ) और सब ऋत्विजों ने कहा 'भवामि' (होवेंगे) ॥ १८ ॥ ४ दही, घृत, जल, सहत और खांड इन पांचों वस्तुओं के मिलाने को मधुपर्क कहते हैं. ५ मंगलीक कार्यों में तीन वेर 'पुण्याहम्' यह कह कर फिर स्वस्तिवाचन पढते हैं सो पढा ॥ १९ ॥ ६ सोलंखी राजा ने दच्छिणा के लिये संकल्प करा, तहां पर ऋत्विजों ने पृथु को ७ सोम लता का रस दिया. ८ जिसपीछे ९आचमन करके१०देव११यज्ञ. १२ अग्नि को १३आदि लेकर पहले कहेहुए छ देवताओं से १४ याचना करी १५ सो १६हे राजा रामसिंह ॥ २३ ॥ १७अग्नि, जो मेरा होता है वह मुझको देवयज्ञ देवै१८जपविशेष (समीपवाला भी नहीं सुनै इसप्रकार धीमे जप करनेको

मम होता १ सुचि १ जोहि, देहु यज्ञ इम सबनसौं ॥
बुल्ल्यो दीच्छित सोहि, पुनि स्वर उच्च समक्षवंत ॥ २५ ॥

दोहा

अग्नि आदि सुर[1] षट्ट[2] ६ इम, जचि निजगृह जजमान ॥
सह ऋत्विज पुनि सत्रथल[3], सोधन किन्न प्रयान ॥ २६ ॥
अपनैं अंतिक[4] देश जे, तिनसौं उच्च प्रमानि ॥
सम अरु पाउस[5] सलिलसौं[6], क्लेदन[7] पावत जानि ॥ २७ ॥
पूरब वा उत्तर प्रवण[8], सबन सिराहयो जाहि ॥
ऐसो मखथल हेरिकैं, बिधि बेदोक्त[9] निबाहि ॥ २८ ॥
जथारीति करि सुद्ध जिहिं, तासौं पश्चिम ओर ॥
दस१०अंरत्नि[10] द्वादस१२तथा, कीनो थल्ल चोकोर ॥ २९ ॥
अध्वरकी[11] विमिताऽऽख्य[12] यंह, साला यौं रचि सुद्ध ॥
बिच पूर्बाऽऽयंत[13] मध्यबल[14], धर्स्यो बेणु[15] इक १ उद्ध[16] ॥ ३० ॥
रोपी थूणाँ[17] लंब जे, ते दिस पूर्ब सुधारि ॥
दुव२कर चोरे द्वार त्रय३, किय उत्तर दिस टारि ॥ ३१ ॥

सोरठा

तासौं उत्तर ओर, सम रु[18] विमितसौं[19] वद्ध मित ॥
दीच्छित गृह चोकोर, पूर्वद्वार किय परिवृत[20] सु ॥ ३२ ॥

उपांशु कहते हैं)अप्रत्यच्च[पीठपिछाड़ी]कहे जिस माफिक॥२४॥ १ रावरू कहे इस माफिक २ छः देवताओं से याचना करके ३ यज्ञ का स्थल सोधने को गये. ४ समीप के ५ वर्षा के ६ जल से ७ कीचड़ नहीं होवे ऐसा ॥ २७ ॥ ८ लम्बा चौड़ा ९ वेद में कहीहुई रीति ॥ २८ ॥ १० मुठ्ठत हाथ (मूठी बन्ध कियाहुआ खूणीं तक हाथ)॥२९॥ ११ यज्ञ की १२ विमित नामवाली शाला रची जिसके बीच १३पूर्व दिशा में१४मोटा और बीच में बलवाला १५ऊंचा १६वांस रोपा॥३०॥१७ लम्बी थूणीं रोपी उसको पूर्वदिशा में रखकर दो दो हाथ के चौड़े तीन दरवाजे उत्तरदिशा को छोड कर तीनों दिशाओं में बनाये, अर्थात् उत्तरदिशा में द्वार नहीं रक्खा ॥ ३१ ॥ १८ ऊपर कहीहुई विमित नाम की शाला से १९ विमित से बडा दीच्छित के लिये घर किया २० चौतरफ से ढकाहुआ पूर्व दिशा मे दरवाजा बनाया ॥ ३२ ॥

दीक्षित गेह प्रमान, बरुनदिसा पर बिमितसौं ॥
पुनि परिवृत अभिधान, सुभ पतनीसाला रचिय ॥ ३३ ॥

दोहा

यौं पतनी१ यजमान २ के, गृह दुव २ परिवृत नाम ।
पश्चिम उत्तर बिमितसौं, बिहित बनाय ललाम ॥ ३४ ॥
देवयजनसौं बरुनदिस, दुव २ परिवृत मित दच्छ ।
बिरचिय साला वा बिमित, अपर सोधि भुव अच्छ ॥ ३५ ॥

षट्पात्

यौं अध्वरथल बिरचि गेह चालुक्य आय करि,
यूपाहूति निमित्त अग्नि आहवनीयहि बरि ।
उद्धरि समिदाधान परिस्तरणादि जुक्त जिम,
सय दक्खिन गहि स्रुकहिं आज्यसंस्कार पूर्व इम ॥
आहूति च्यारि४यजमान पृथु५या स्रुक करि मंत्रित उचित,
सुचि आहवनीयक कुंड बिच होमिय जूपाहूति हित ॥३६॥
सोम्य आज्यकों मध्य थप्पि गुप्तहि तदनंतर,
भूमि पंच संस्कार समारोपणा हित विधिवर ।

---

१ विमितशाला के पश्चिम दिशा में २परिवृत ३नामवाली यजमान की स्त्री के लिये शुभ शाला रची ॥ ३३ ॥ इसप्रकार स्त्री और यजमान के लिये परिवृत नाम के दो घर विमित नाम की शाला से पश्चिम और उत्तर दिशा में उचित और सुन्दर बनाये ॥३४॥ ५देवपूजन के स्थान से पश्चिम दिशा में परिवृत के ६नाप समान ८अथवा विमित के समान ९दूसरी सुन्दर भूमि सोध कर ७ चतुरों ने दो घर बनाये ॥ ३५ ॥ १०यज्ञ का स्थल ११सोलंखी वंश के राजा १२ यूप की आहूति के निमित्त आहवनीय (होम के लिये संस्कार करके इकट्ठा किया हुआ अग्नि) अग्नि को वरा और अग्नि जलाने का काष्ट आदि १३इंधन स्थापन किया हुआ था उसको उठाया और १४आच्छादन युक्त किया अर्थात् मण्डप तना, फिर दाहिने १५हाथ में १६स्रुवा लेकर संस्कार (शोधन) कियेहुए १७घृत से यजमान पृथु ने चार आहूति इस स्रुवे से उचित मंत्रों के साथ आहवनीय १८अग्नि के कुण्ड में यूप (यज्ञ खंभ) के निमित्त होमी ॥ ३६ ॥ सोमलता के रस और घृत को बीच में गुप्त रख कर जिसे पीछे श्रेष्ठ रीति से आरोपण करने के लिये श्रेष्ठ रीति से भूमि को पांच वार शुद्ध की, होम का अग्नि

उद्धरि आहवनीय १ गार्हपत्य २ हिं समंत्र जहँ,
अरणी दुव आरोपि तदनु नृप सुनहु कृत्य तहँ ॥
अरणी मुख मख उपहार सब सकटनि बिच धरि मुदित मति।
सुभ सांतिपाठ मंगल सुनत पहुँचिय सत्र निकेत प्रति॥३७॥
जाय तत्थ जजमान बिरचि कर पद प्रक्षालन,
सोम १ रु अरणी २ स्वकरैं गहे करि उचित आचमन।
पूर्वद्वारसाला प्रवेसि सह सोम अरणि सँरि,
पूर्वसाल तरुथंभ परसि दक्षिणा कराग्र करि।
पढि मंत्र तदनु मखसाल बिच उच्चथान सोमहिं धरिय,
खर१गार्हपत्य१बिच पंच५छिति संस्कार५हु अंध्वर्यु किय।
गार्हपत्य १ मथि थंपि तदनु तासों आधानव,
प्रक्रमैं अष्ट ८ प्रमान देस तजि अंतराल लव।
खर २ करि आहवनीय २ तीन प्रक्रम पुनि भुव तजि,
दक्षिणाग्नि ३ खर ३ करिय भूमिसंस्कार उक्त ५ भजि।
संकल्प विहित हवनीय१अरु दक्षिणाग्नि२विहरण करिय,

और गार्हपत्य (गृहपतिर्यजमानस्तेन संयुक्त गार्हपत्यः) अग्नि विशेष को मंत्रों सहित उठा कर दो अरणी (दो लकडियों को परस्पर रगड कर होम के लिये अग्नि पैदा करते हैं उन काष्ठों का नाम अरणी है) स्थापन करी जिसँ पीछे जो काम हुआ सो हे राजा सुनो. अरणी को आदि लेकर यज्ञ की सब सामग्री प्रसन्न मन से गाडों में भर कर मङ्गलदायक शान्तिपाठ सुनते हुए यज्ञ घर में गये ॥ ३७ ॥ ९ हाथ पग धोये १०अपने हाथ में ११अरणी को १२ चलाकर १३पूर्व की शाला के वृक्ष का खंभा था जिसको हाथ के अग्रभाग से स्पर्श किया १४जिस पीछे यज्ञशाला में ऊंचे स्थल पर सोम लता को रक्खा और तेज गार्हपत्य अग्नि में अध्वर्यु (यजुर्वेद के ऋत्विज) ने भूमि को पांच बार शुद्ध की ॥ ३८ ॥ मथन कीहुई गार्हपत्य अग्नि को रख कर उसीसे अग्नि को स्थापन किया और उसके भीतर थोडी सी जगह छोड कर आठ प्रदक्षिणा की, फिर आहवनीय अग्नि को तेज करके तीन पैंड भूमि को छोड कर ऊपर कहे अनुसार भूमि को शोध कर दक्षिणाग्नि [होमाग्नि विशेष] को तेज किया फिर संकल्प करके आहवनीय और दक्षिणाग्नि का विहार कराया जिस पीछे अध्वर्यु ने सोम के अर्थ पृथु राजा को मांस के विना

पल विनु हविष्य अध्वर्यु तहँ पृथुपकों सोम निमित्त दिय ॥३९॥

दोहा

यह पूर्वान्हिक कर्म करि, अब अपरान्ह विशिष्ट ॥
दीक्षित दंपति २ किय असन, पायसादि जो इष्ट ॥ ४० ॥
ही रुचि तो माहेय विनु, करि पललहु आहार ॥
मख निमित्त धन काहु कर. दीक्षित दिन्न उदार ॥४१॥
दीक्षासौं उत्तर तरफ, परिवृत मंदिर माँहिं ॥
भरि कीलाल करीर इक, अग्गहि थापित आँहिं ॥ ४२ ॥

रोला

चंडिल तहँ चालुकहिं आय बैठाय पूर्वमुख,
उत्तरमुख रहि अप्प नखरहरनी गहि विधि रुख।
दक्खिन सय अंगुष्ट करज पहिलैं छेदन करि,
पुनि प्रदेसिनी प्रमुख चउन ४ के महाराज हरि ॥ ४३ ॥
तदनु सव्य कर नखर तदनु दाहिन पयके पुनि,
वाम चरनके विहित लये मुंडक उतारि लुनि ॥
पुनि सिर दक्खिन देस केस कंकत सँवारि सब,

हविष्य [होम ने योग्य. अथवा भोजन विशेष) दिया ॥ ३९ ॥ यह मध्यान्ह से पहिले का कर्म करके अब मध्यान्ह से पीछे के काम में युक्त हुए और दीक्षा लिये हुए पति पत्नी ने दूध आदि जो इच्छा थी वह भोजन किया ॥४०॥ और जो रुचि हुई तो भैंसे को छोड कर अन्य भक्ष्य पशु के मांस को भी भोजन किया और यज्ञ में खर्च करने के निमित्त उस उदार दीक्षित (यजमान) ने किसी के हाथ में धन दिया ॥ ४१ ॥ दीक्षा लेने के स्थान से उत्तर तरफ परिवृत नामक स्थान में पानी का घड़ा पहिले ही भराहुआ था ॥ ४२ ॥ वहां पर नाई ने सोलंखी राजा को पूर्व की ओर मुख करके बिठाया और नाई ने उत्तरमुख रहकर रीति के अनुसार नहरणी लेकर पहिले दाहिने हाथ के अंगूठे के नख काटे और फिर अंगूठे के जोड़े की अंगुली आदि चारो अंगुलियों के नख काटे ॥ ४३ ॥ इस पीछे बायें हाथ के नख. जिस पीछे दाहिने पग के और फिर बायें पग के नख छेदन करके उतारे फिर माथा के दाहिनी ओर के केसों को कंघे (काँघसिये) से सँवार कर

मंत्रसहित तिहिं कलस तोय करि करिय आर्द्र तब ॥ ४४ ॥
तदनु ईसिकाग्र जुदे कति तीर्थवाक करि ॥
तिनपर दर्भ समंत्र दै रु छेदे छुराग्र धरि ॥
मस्तक उत्तर देस केस सुविहित भिजोय पुनि ॥
बिरचि रीति पूर्वोक्त चतुर कट्टेहि तेहु चुनि ॥ ४५ ॥
कुंतल तदनु सुरीति सिखावर्जित समस्त हरि ॥
बलि भ्रू१पक्ष्म२विहीन कूर्च छेदे छुराग्र करि ॥
कक्ख१गुज्झ२तजि रोम उचित इतरन करि कर्तित ॥
तदनु करिय चालुक्य सुनहु चहुवान हेरि हित ॥ ४६॥

॥ सोरठा ॥

मसकी तरुसौं जत्थ, रदधावन जाजक विरचि ॥
त्रिदसनतटिनी तत्थ, अचवन करि न्हायो समनु ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

पूरब वा उत्तर तरफ, रह्यो निकासि तजि बारि ॥
सुद्ध१अरोमक२अल्प दस३,क्षौम४अहत५पट धारि ॥ ४८ ॥
यौं परिवृत प्रातीच्य विच, प्रतिप्रस्थाता आय ॥

मंत्रे हुए घड़े के पानी से केसों को गीला किया॥४४॥जिस पीछे बाण के फल (भाल) के अग्रभाग से कितनेक केस दूर करके उन पर मंत्रा हुआ डाभ देकर पाछणा के अग्रभाग से काटे, फिर मस्तक के बाँई ओर के केसों को भिगो कर पहिले कहीहुई रीति से उनको भी काटे ॥४५॥ इस पीछे चोटी को छोड कर सब मस्तक के केस काटे फिर भुँवारे और नेत्रों की पलकों के विना बाकी के केस पाछणा के अग्रभाग से काटे और कांख और गुह्यस्थान के केसों को छोड कर दूसरे केसों को उचित रीति से काटे, जिस पीछे सोलंखी राजा ने किया सो हे चहुवाण रामसिंह हित के साथ सुनो ॥४६॥ वह यज्ञ करनेवाला उदुम्बर (ऊमर) वृक्ष का दातन करके गंगानदी में आचमन करके न्हाया ॥४७॥ जल को छोड़ कर पूर्व अथवा उत्तर तरफ खड़ा रहा और शुद्ध बिना केस लगीहुई नवीन पीताम्बर (रेशमी वस्त्र) की छोटी धोवती (अर्धावस्त्र) धारण की ॥४८॥ इस प्रकार परिवृत और पश्चिमदिशा की शाला के बीच में आकर प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज ने यजमान की स्त्री को

दीक्षा जाजक नारिकोँ, मंत्र बिहीन लिवाय ॥ ४९ ॥
तदनु तास नख करनके, नापित सातित ठानि ॥
अंघ्रिनके नखरहु हरे, वपन बिकल्प प्रमानि ॥ ५० ॥
तानैँ मंजन साऽऽचमन, थावर जल बिच कीन ॥
पति पट तुल्यहि धारि पट, उत्तरीय जुत लीन ॥ ५१ ॥

॥ रोला ॥

तदनु आय अध्वर्यु गह्यो जाजक चालुक कर,
प्रविसि पूर्वके द्वार जाहि जान्योँ जातक धर ॥
प्रतिप्रस्थाता आय पकरि पतनी मृदु पानी,
पश्चिम द्वार प्रबेसि तास साला तिहिँ आनी ॥ ५२ ॥
दीक्षणीय पुनि इष्टि विरचि निगमोक्त मंत्र नय,
विष्णु चरुव तिहिँ बीचि कियउ ग्यारह११कपालमय ॥
हवि विकल्प करि चरु द्वितीय१२पुनि आदित्यन हित,
करत करत चहुँ कोद हाक हाहा हुव जित तित ॥ ५३ ॥

दोहा

इम बिरचत आदित्य चरु, [१]अरहि अचानक आय ॥

विना मंत्र के दीक्षा लिवाई ॥४९॥ जिस पीछे नाई ने उसके हाथों के नख काट और चरणों के नख भी लिये, मुण्डन होता भी है और नहीं भी होता इसमें विकल्प है ॥५०॥ यजमान की उस स्त्री ने आचमन के साथ ठहरे हुए जल में स्नान किया, नदी में नहीं; और पति के वस्त्र समान ही वस्त्र धारण किया परन्तु शरीर के ऊपर ओढने का वस्त्र सिवाय धारण किया ॥५१॥ इस पीछे अध्वर्यु नामक ऋत्विज ने यजमान चालुक्य का हाथ पकड़ा और पूर्व के द्वार में होकर घुसे; जिसको शुभाशुभ निर्णय करने का घर जाना और प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज यजमान की स्त्री का कोमल हाथ पकड़ कर पश्चिम द्वार में प्रवेश करा कर उस स्त्रीशाला में उसको लाया ॥ ५२ ॥ दीक्षा लीहुई उस स्त्री ने वेद के कहेहुए मंत्रो की नीति से यज्ञ किया. और ग्यारह कपालमय विष्णु का चरु (होमने का अन्न) करके होमने के पदार्थों को विकल्प करि दूसरा चरु बारह सूर्यों के लिये करते करते ही जिधर देखें उधर चारों ओर हाहाकार हुआ ॥५३॥ १ शीघ्र

चलहु लरन चहुवानके, दूतन कहिय दबाय ॥ ५४ ॥
बिंदुसार५को बैर अब, रक्ख्यो जात न रंच ॥
सुपहु[1] सुधन्वा[2]तास सुत, जग्गत प्रबल प्रपंच ॥ ५५ ॥
सुनत एह पृथु द्विजन सन, पुच्छिय कोन उपाय ॥
कहिय सुनि न जुद्धहि करहु, अब बन्यों सु विधि आय॥५६॥
मख प्रत्यूह[3]ज मेटनौं, दुहिता[4] तौ तिहिं देहु ॥
विधि[5] इहिं तव इच्छहु बनैं, आरिपन छोरैं एहु ॥ ५७ ॥
सुनि यह नय चालुक सुमति[6], सचिव सुमति सुत बुद्धि ॥
पठयो नृप चहुवान पँहँ, खलु[8] उत्तर यह खुद्धि ॥ ५८ ॥
कुंत[9]१थंभ१मण्डप२करी[10]२,सर३जव[11]३विष्टर[12]४बाजि४ ॥
आये व्याहन अप्पतो, आये न करन आजि[13] ॥ ५९ ॥
उचित रूच्य[14] मम आत्मजा[15], व्याहहु वैर विहाय ॥
प्रतीकार[16] यह धर्मपथ, सास्त्र कहत दरसाय ॥ ६० ॥
अरु जो जंगहि इच्छ तो, होन देहु मख पूर्ण ॥
हम लरैं न अवभृथ[17] अवधि, तुम भल मारहु तूर्ण ॥ ६१ ॥
सुनि मंत्री यह सुमति सुत, आयो अपर[18] अनीक[19] ॥
स्वामिकथित[20] बुल्ल्यो सुपहु, मच्चहु तजहु समीक[21] ॥ ६२ ॥
सद्योधारन तब सचिव, लहि एकांत नरेस ॥

१श्रेष्ठ राजा२ब्राह्मणों से३यज्ञ का विघ्न मेटना होवे तौ४पुत्री५नीति६श्रेष्ठ बुद्धिवाला७सुमति नामक कामदार के पुत्र को बुलाकर ८ निश्चय९भाले हैं सोही थंभ हैं, और आप के साथ में१०हाथी है वही मंडप है, बाण हैं सो ही११जवारे हैं, और घोड़े हैं सोही१२आसन (बाजोट) हैं, इस सामग्री से आप विवाह करने को आये हो१३युद्ध करने नहीं आये हो. मेरी१५बेटी के उचित आप१४वर हो सो वैर छोड कर विवाह करो; यह धर्ममार्ग का१६वैर धोना (अपकार करनेवाले का पीछा अपकार करना) है सो शास्त्र दिखा कर कहता है॥६०॥१७अवभृथ[यज्ञ समाप्त करके अंत में स्नान करैं उसको अवभृथ स्नान कहते हैं] की अवधि तक हम नहीं लड़ेंगे तुम भले ही शीघ्र मारो ।६१। १८दूसरी१९सेना में२०अपने स्वामी का कहाहुआ बोला कि हे राजा २१ युद्ध ॥ ६२ ॥ तब सद्योधारण नामक कामदार ने राजा सुधन्वा को एकान्त में

बुल्ल्यो यह हितकी बनी, देखत काल रु देस ॥ ६३ ॥
मेरे अग्गहि पति जनक[1], पठये इन परलोक ॥
न लरे मथुरा १ नागपुर २, अंग ३ अयोध्या ४ ओक[2] ॥६४॥
ऐसो चालुक पृथु ५ इहां, रचतो जो पहु[3] रारि ॥
[4]मरतो आयो चहि मरन, नृप मैं तुमहिं निवारि ॥ ६५ ॥
तुम सन होतो अनृण तब, पै[5] अब समय प्रतीप[6] ॥
मंडलेसको मारिबो, हो श्रमसाध्य[7] महीप ॥ ६६ ॥
ए अवभृथ[8] लग नहिं लरैं, जो तुम सत्त्व बिहीन ॥
मारहु तौ पातक[9] महत, यह नहि धर्म अधीन ॥ ६७ ॥
बिट्टी[10] [11]अप्पत वैरमैं, सोहि करहु स्वीकार ॥
जिय संदेहहि एह जो, साजिहै कटक प्रसार ॥ ६८ ॥
सद्योधारण सचिवको, मन्न्यों नृप यह मंत्र[12] ॥
आय सुमति सुतसौं कह्यो, सुहि हम करहिं स्वतंत्र॥६९॥
मुंडित[13] मुख पुब्बहि भयो, तुमरो नृप लखि तौर[14] ॥
कराखि मुच्छ मंडैं कलह, वहहि जेय[15] नहिं और ॥ ७० ॥
सुनि अंगीकृत[16] पृथु ५ सचिव, इत अक्खिय सब आय ॥
उनमन्नी कहि लरहिं अब, क्यों वह मुच्छ कटाय ॥ ७१ ॥

सोरठा ॥

लेकर कहा कि देश काल देखते यह अपने लाभ की बात हुई है ॥ ६३ ॥ हमारे स्वामी और १ आप के पिता को मथुरा आदि प्रसिद्ध २घर (घराने) हैं परन्तु कोई नहीं लड़े ॥ ६४ ॥ ३ हे राजा ४ मैं तो मरना चाह कर ही आया था सो तुमको लड़ाई से मना करके मरना ॥ ६५ ॥ तब तुमसे उरण होता ५ परन्तु अब समय ६ उलटा है ७ हे राजा मण्डलेश्वर पृथु का मारना परिश्रम से होनेवाला था ॥ ६६ ॥ ८ यज्ञ के अन्त के स्नान तक ९ बडा पाप है ॥ ६७ ॥ १० बेटी ११ देता है ॥ ६८ ॥ १२ सलाह ॥ ६९ ॥ हमारा १४ प्रताप देखकर तुम्हारा राजा पहिले ही १३डाढी मूंछ कटा कर मुण्डित होगया है और जो मूंछ खींच कर युद्ध करै वही १५ जीतने योग्य है दूसरा नहीं ॥ ७० ॥ पृथु के कामदार ने यह सुन कर १६ स्वीकार किया और सब बात इधर पृथु से कही उनने भी मानली कि अब मूंछ कटा कर क्यों लड़ैं॥ ७१ ॥

पृथु५को पट्टप पुत्र, कटु बच सुनि निज रिपु कथित ॥
नाथ ६ सुधारि *तनुत्र, लरन होन संमुह लग्यौ ॥ ७२ ॥
जनक[1] कह्यो तब जाहि, उनको बरसत बैर इत ॥
[2]अध्वर पुनि घर [3]आहि, बच्छ[4] बिगारहु यह विधि न ॥७३॥
जय लहतोहि जरूर, चाहुवान चालुक्यसौं ॥
को मानत यह कूर, [5]वारिधि चलनक भूमि बिच ॥ ७४ ॥
बुल्ले जे कटु बोल, ऊन[6] करत तेहू उनहिं ॥
न करत को मख नोल[7], मुंडित मुख चंडासि[8] जिम ॥ ७५ ॥
नाथ ६ हिं जनक ५ निहोरि, सूनु विसंधादि[10] ४९ न सहित।
जई[11] जदपि हित जोरि, नई तदपि[12] कीनौं नृपति ॥ ७६ ॥
बेग सुधन्वा६बुल्लि, विधि नीराजन[13] मुख[14] विरचि ॥
खूब नेह हिय खुल्लि, व्याही तिहिं स्वसुता[15] बिभा६।१॥७७॥
दै दायज बहु द्रव्य, विहित प्रेम कीनी विदा ॥
भूप परनि इम भव्य, विभु[16] आनी रानी विभा ६।१ ॥ ७८ ॥
अर्थि द्विजनके ओघ[17], इंद्रप्रस्थपति आढ्य[18] करि॥
मारि दरिद्रहिं मोघ[19], सहज सुधन्वा६करत हुव ॥ ७९॥

शत्रु के कहेहुए कड़वे वचन सुन कर नाथ नामक पृथु के पुत्र ने * कवच धारण किया और लड़ने को सम्मुख होने लगा ॥ ७२ ॥ तब १ पिता ने उससे कहा २ फिर अपने घर में यज्ञ ३ है ४ हे वत्स [पुत्र] मत बिगाड़ो यह विधि नहीं है ॥ ७३ ॥ ५ समुद्र ही है लेंहगा जिसके ऐसी भूमि में कौन कुटिल यह मानता कि सोलंखी से चहुवाण जरूर विजय पाता ॥ ७४ ॥ उन्होंने जो कड़वे वचन कहे वे उनको ही ६ हलका करते हैं, ७ नोल्या रूपी ८ चहुवान के समान यज्ञ में मुण्डित मुख कौन नहीं करता है अर्थात् सभी करते हैं ॥ ७५ ॥ १० बिसंध को आदि लेकर उनचास ९ पुत्रों सहित नाथ नामक पुत्र यद्यपि ११ विजय पानेवाला था १२ तोभी उस पिता पृथु राजा ने नाथ को समझा कर मिलाप करके यह नई बात की ॥ ७६ ॥ १३ आरती १४ आदि १५ बिभा नाम अपनी पुत्री को ॥ ७७ ॥ १६ बहुत बडप्पनवाली ॥ ७८ ॥ याचना करनेवाले ब्राह्मणों के १७ समुदाय को दिल्लीपति सुधन्वा ने सहज ही १८ धवान् कर दिये, और दारिद्रय को मारकर १९ दीन कर

किन्नैं मखं मुख काम, कामं सकल दैं जाचकन ॥
इहिं कारन इहिं नाम, हुव उदारहार४हु अपर ॥ ८० ॥
भूप सुधन्वा६गेह, कलहजई५प्रकटयो कुमर ॥
अरणि विभा६।१सुचि एह, नाम वीरधन्वा७निडर ॥ ८१ ॥
याहि तरुन लखि अप्प, द्रुतहि८ उचित निज पट्ट दै ॥
बोध असित लहि बप्प९, वपुं१० रहि वन तियजुत तजिय ॥८२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे तृतीय३राशौ वप्तृवैरोद्धरणार्थसूनुसुधन्वप्रस्थानानियतदीक्षचालुक्यपतिपृथुपुत्रीविभाविवाहनप्राप्तस्वपुरप्रवेशमहामखदक्षिणादिदानाऽनुष्ठानकुमारवीरधन्वोद्भवनविभासहितवपूर्जवितरितविभववैन्दुसारिवपुस्त्यजनं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥आदितः पंचचत्वारिंशत्तमः ॥ ४५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

भूप वीरधन्वा७हुभयो वरं, चालुकपृथु५दौहित्त धर्मधर ॥
अर्थी करे अँसोक जनक जिम, याको नाम असोक७हु हुव इम॥१॥

दिया ॥ ७९ ॥ सुधन्वा ने १ यज्ञ २ आदि कार्य किये और याचक लोगों की जो ३ कामना थी वह सब दिया, इसकारण इसका ४ दूसरा नाम उदारहार हुआ ॥ ८० ॥ ५ युद्ध जीतनेवाला ६ सुधन्वा की विभा नाम के राणी रूपी अरणि (यज्ञ की अग्नि निकालने का काष्ठ) से ७ अग्नि रूपी वीरधन्वा युद्ध जीतनेवाला निडर पैदा हुआ ॥ ८१ ॥ इस वीरधन्वा को युवा देख कर आप (सुधन्वा) ने ८ शीघ्र ही अपना पाट देकर अत्यंत ज्ञान के साथ ९ पिता ने वन में रह कर स्त्री के साथ १० शरीर छोडा ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में पिता के वैर का उद्धार करने के लिये सुधन्वा का जाना, और यज्ञ की दीक्षा में नियत सोलंखी वंश के पति पृथु की पुत्री विभा से विवाह करके अपने पुर में प्रवेश करना, और बडे यज्ञ दक्षिणा और दान का अनुष्ठान करना, कुमर वीरधन्वा का होना, और विभा सहित पुत्र को दिया है वैभव जिसने ऐसे विन्दुसार के पुत्र (सुधन्वा) के शरीर छोडने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आदि से पैंतालीस मयूख हुए ॥ ४५ ॥

११श्रेष्ठ१२याचना करनेवालों को शोक रहित किया १३पिता ने किये जिस

इक्कदिन गो मृगया दिस उत्तर,सर आघात हनैं मृग सूकर ॥
तहँ पिपासु खोजत जल उत्तम,अटत लह्यो कोउक मुनि आश्रम॥२॥
आसन पाद्य प्रमुख तब आदर,मन्त्रि उचित याको किय मुनिबर॥
जहँ सोमा अच्छरि उरजाई, सुता अनघ गंधर्ब सुहाई ॥३ ॥
पुत्री सम पाली मुनि जाकौं, दिय भद्रा७।१सु बीरधन्वा७कौं ॥
परनि असोक७मोद अति पायो, इंद्रप्रस्थ भद्रा७।१जुत आयो॥४॥
भयउ बीरधन्वा७सुत भूपति, जयधन्वा८अभिधान महामति ॥
जो पंडित बाचस्पति जैसो, एककाल अपर न हुत ऐसो ॥ ५ ॥
भ्रम कट्टत सबको याको भुवं, अपर नाम संकाबिदार८हुव ॥
नृप जदुतनय क्रोष्टु कुल दीपक,कालंजर प्रति नाम प्रतीपक॥६॥
सुता तास रुचि८।१नाम सयानी, इहिं८नृप जित्ति स्वयंबर आनी॥
बिस्तर करत आयु लघु बित्तैं, जु कवि समास रचैं सुहि जित्तैं ।७।
जयधन्वा८नृपसौं रुचि८।१मैं सुवं, बीरसिंह९अभिधान बीर हुव॥
करि करि विजय सु विजय९कहायो, प्रतिरन सुजस अपूरब पायो।८।
पाँटलिपुत्र नगर रविकुल बर, धर्मकेतु नृप हुतो धर्मधर ॥
ताससुताकमला९।१चितचाह्यो,विजय९हुजित्तिस्वयंबरब्याह्यो।९।
कमला९।१मैं हुव बीरसिंह१०सुत,जो बरसिंह१०नाम निजगुन जुत॥
अरु कन्या गौरी१०।१अभिधानी,निपुन भई सिक्खी गुन नानी।१०।
कमलसेन९प्रामार राज सुत,प्रेम१०हिं जो ब्याही बिधान जुत॥

प्रकार १ गया २ शिकार ३ बाण की चोट से ४ प्यासा ५ फिरते हुए ने ६ अर्घ पाद्य ७ आदि ८ सोमा नामक अप्सरा के पेट से जन्मी हुई ९ पाप रहित १० नामवाला ११ बृहस्पति १२ उसके समय में दूसरा ऐसा नहीं हुआ।१३ पृथ्वी पर इसका दूसरा नाम शंकाविदारण हुआ. यदु के पुत्र क्रोष्टु के कुल को प्रकाशित करनेवाला कालंजर नगर का पति, जो कालंजर से१४ उलटा नामवाला (कालंजर का नाम कालिमा सहित है, और यह शंका रूपी कालेपन को मिटानेवाला है) है ॥१६॥ इसका१५विस्तार से वर्णन करने में मेरी थोड़ी सी उमर है सो इसी में बीत जावे इसकारण१६जो कवि १७संक्षेप से वर्णन करै वही विजय पावै१८पुत्र१९नामवाला२० पटना शहर में सूर्य वंशियों में श्रेष्ठ २१ नामवाली

प्रैम१०हु मंडलेस हुव सुप्रजं,जमदच्छाँ११ऽऽदि३जास हुव अंगज॥११॥
चाहुवान वरसिंह१०नरेश्वर, हुव अतिजई रिपुन सिर जंजि हर॥
उडि उडि दूर दूर रन पायो, जंव करि मारुत१०नाम कहायो॥१२॥
प्रामारी यह पाय रमनिमानि, हुव जामिप जामिप जामि परनि॥
कमला१०।१स्नुषा१०।१कमलसेन९सुता,आई यह रानी निखिलनुता
सोमा १०।१नाम पतिव्रतसागर,मारुत१०महिषी अतिगुनआगर॥
बरसिंह१०हु याजुत मख बहु जजि,सुर१मुनि२पितर३प्रसन्न करे भजि
सोमा१०।१जठर भयो मारुत१०सन,बीरदंड११नरनाह महामन॥
सालिसिरा गंधर्बसुता यह, व्याह्यो बिरजा११।१नाम बडे मह॥१५॥
नृपबरसिंह१०तनूज विदित भुव,अपर२अभिख्या करि सुमेरु११हुव॥
बिरजा११।१बिचया११तैं अभिरामक,भो अरिमंत्र१२जयंत१२द्विनामक

षट्पदी

तच्छसिलापति सुरथ सोम सोमक कुल [illegible]न,
तनया बरुनी१२।१तास परनि अरिमंत्र१२धराधव॥
कल्पबिटपि बुध कविन द्विजन जाजक श्वेत किं हुव
या१२कै सुत मानिक्यराज१३सुहि सूर१३नाम दुव॥
कुंतलनरेस हैहय तिलक रुक्म कवच तनया [illegible]या१३।१,
मानिक्यराज१३महिषी लहि रु प्रति आश्विन परसिय गया॥१७॥

१श्रेष्ठ संतानवाला२आदि३पुत्र४महादेव को पूज कर५वेग के कारण६स्त्रियों में मणि रूपी पँवार वंश की स्त्री को पाकर और ७ बहिनोई (बहिन का पति) की ९ बहिन को परण कर पीछा उसका ८ बहिनोई हुआ. कमला की १० बहिन और कमलसेन की बेटी ११ यह रांणी १२ सब से १३ स्तुति कीहुई आई॥ १३ ॥ १४ सेवन करके १५ सोमा के पेट से १६ से १७ वीरदंड नाम्मक बडा मनस्वी राजा, सालिशिरा नामक गंधर्व की बेटी बिरजा को विवाहा१८बडे उत्सवके साथ १९पुत्र २० दूसरे २१ नाम से २२ सुन्दर तक्षशिला का पति २३ चन्द्रवंश के मंडन सोम नामक राजा की २४ पुत्री वरुणी को२५राजा अरिमंत्र परण लाया वह राजा २७पंडित और कवियों का२६कल्पवृक्ष और२९किंधूं श्वेत राजा के समान ब्राह्मणों का२८यजमान हुआ.

प्रकट्यो पुष्कर१४नाम सुनहु मानिक्यराज१३सुव ॥
बिथरिय याको बिजयपाल१४अभिधान अपर भुव ॥
सो मरु[2]पति प्रतिहार भूप मल्लकरम१३तनया ॥
पद्मावति१४।१हिं विवाहि निलय[3] आनी हतअ[4]नया ॥
या१४कैंहु भयो वसुधा विदित असमंजस१५अभिधान सुन
गोनर्दराज तनया कला१५।१व्याह्यो रविकुल जानि नु[5]त ।१८।
असमंजस१५ कैं तनय कला१५।१बिच प्रेमपूर१६हुव ॥
दूरथको दौहित्र धीर भो यहहु बीर ध्रुव ॥
निजमातुल[6] नलकेतु सुता ललिता१६।१सु बिवाह्यो ॥
या१६कैं सुत हुव भानुराज१७चतुरन मन चाह्यो ॥
सो पै स्वँकीय[7] मातुल[8] सुरथ सुता सुमध्या१७गो परनि ॥
भो मानसिंह१८ताकैं तनय चउ४भुज कुल चक्र[9]नतं[10]रनि ॥ १९॥

दोहा

ध्वज महीप प्रतिहारसौं, गयो तबहि मरुदेस ॥
बिंबस्थल अभिधा[11]न पुर, बिरचि रह्यो तहँ एस ॥ २० ॥

षट्पदी

मालवपति परमारबंस२०तनया कल्यानी१८।१ ॥
[illegible]सिंह१८महिपाल परनि आनी पटरानी ॥
मा[illegible] [illegible]मान१९धर्मपाल१९ हु सु कहायउ ॥
हुव ताकैं [illegible] [illegible]नाहि कमला१९।१बरि लायउ ॥
सो मा[12]तुल धीहर२१[illegible] [illegible] स बीरपाति सलसुता ॥
हुव चित्रसेन२०ताकैं तनय [illegible] [13][illegible]भूषन[14] संजुता ॥२१ ॥

१ दूसरा नाम भूमि पर २ मारवाड़ का पति ३ घर में ४ अनीति को अथवा आपदा को मिटानेवाली ५ स्तुति योग्य ६ अपने मामा की बेटी ७ वह भी अपने ८ मामा सुरथ की पुत्री मध्या को परण गया ९ चहुवाण के कुल के १० गणों का सूर्य बिम्बस्थल है ११ नाम जिसका १२ धीहर नामक अपने मामा की बेटी को ही १३ चंद्रकुल रूपी भूषण के १४ साथ अर्थात् चंद्रकुल ही है भूषण जिसका

भपति बेणु महीप२१विंबथलपुरप महाबल ॥
प्रातिहार कुलदीप लग्यो जित्तन भुव मंडल ॥
तानैं यह नृप चित्रसेन२०चहुवान हन्यौं लरि ॥
चित्रसेनकै तनय संभु२१नृप हुव सुपुराय करि ॥
भीमादि च्यारि४पुत्रन सहित बेणु महीप२१हु जिहिं हन्यौं ॥
ताकीहि परनि तनया प्रभा२१।१बिदित संभु२१दुल्लह बन्यौं ॥२३॥
स्वर्ण महीपक२४नाम स्वीय सालकं सतके हित ॥
अखिल बिंबथल अप्पिं अप्पं आयउ आलयं इत ॥
महासेन२२अभिधान संभु२१नृपकै तनूज हुव ॥
जाहि पद्मनिधि अप्पि सखा धनपतिहु भयो ध्रुव ॥
ऋद्धीस२२नाम नृपको अपर निधि कारन करि वित्थरिय ॥
जिहिं स्वर्ण महीपक२४की स्वसा जया२२।१परनि जग जस करिय॥
महासेन सुत सुरथ२३भयो नृप धर्मधुरंधर ॥
सो परमार धरा विधार२५तनया तारा२३।१बर ॥
सुरथ सूनु नृप रुद्रदत्त२४सुहि कर्णपाल२४हुव ॥
राष्ट्रसेन मातुलं सुता सु सत्ता२४।१व्याह्यो ध्रुव ॥
तामाँहिं तास हुव हेमरथ२५सेनपाल२५सुहि महिपमनि ॥
पुष्कर नरेस जद्दव बिघस सुता सांति२५।१यह गो परनि ॥२४॥
तत्थ हेमरथ तनय भयउ चित्रांगद२६भूपति ॥
पाटलिपुत्रपं भीम की सु व्याह्यो सुता सुमति२६।१ ॥
नाम सुमतिको अपर२सुन्यौं श्रुति२६।२हु कछु ग्रंथन ॥
कितेनाम कालिका२६।२हु जंपत तीजो३मागधजन ॥
यामाँहिं चित्ररथ२७नाम सत चित्रांगद नृपतैं भयो ॥
अभिधान याहि समुचित अपर२द्विजन चंद्रसेन२७हु दयो ॥२५॥

१पति२पुत्री३अपने४शाले के बेटे के लिये५देकर६आप७घर८नव निधियों में से पद्म नामक निधि देकर९कुबेर भी मित्र हुआ१०उस राजा का दूसरा नाम ऋद्धीश(ऋद्धियों का स्वामी)निधि के कारण से फैला११बहिन१२मामा की बेटी१३पटना१४दूसरा१५कहते हैं१६भाट लोग१७इसका दूसरा नाम१८उचित.

दोहा

जदु१हैहय२अर्जुन३जनन, द्रविड भूप दुर्योध ॥
ताकी तनया चित्ररथ२७।१, व्याही बल्गु[2]२७।१सुबोध ॥ २६ ॥
भूप चित्ररथके भयो, सुत बाल्हीक२८सुजान ॥
वत्सराज२८याको विदित, अवनि[3] अपर२अभिधान[4] ॥ २७ ॥

षट्पदी

कालंजरपति जदुकुलीन[5] रुचिसेन नरेश्वर ॥
तनया विरजा२८।१तास व्याहि बाल्हीक२८लई बर[6] ॥
धृष्टद्युम्न१९तनूज[7] भयो याकेहु महाबल ॥
अपर२तास अभिधान विदित बरुन२६हु वसुधातल[8] ॥
बिद्याधरेस वसुमान[9]की प्रिय दुहिता[10] अलका२९।१परनि ॥
बरुन२९हु नरेस सुरतरु[11] बुधन[12] धन्वी[13] हुव अनुपम धरनि ॥२८॥
बरुनतनय उत्तम३०नरेस विद्याधर दोहित ॥
विश्वाची३०।१जिहिं गेह रही अच्छरि मति मोहित ॥
उत्तम सूनु सुनीक३१हीर हुव जिहिं जठराकर[14] ॥
वितल[15] जाय इहिं बीर हनैं दानव हल१कूबर२ ॥
दानवी[16] सुता[17] हलकी दसा[18]३१।१सती परनि आनी सुपहु[19] ॥
जिहिं ब्रत करंत सब जुवतिजन[20] विलसन विभव सुहाग बहु॥२९॥

दोहा

सूनु सुबाहु३२सुनीकसौं[21], दसा उदर अभिराम[22] ॥

१वंशों में २वल्गु नामक श्रेष्ठ ज्ञानवाली ३भूमि पर ४ दूसरा नाम ५ यादव वंशी ६ श्रेष्ठ ७ पुत्र ८ भूतल पर ९ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) के स्वामी वसुमान् की प्यारी १० पुत्री ११ कल्पवृक्ष १२ पंडितों का १३ धनुषधारी १४ जिसके पेट रूपी खान से हीरा उत्पन्न हुआ १५ भूमि के नीचे के लोक में जाकर १६ हल नाम दानव की १७ बेटी १८ दशा नामवाली पतिव्रता को १९ श्रेष्ठ राजा ने २० सब स्त्रियां (दशा माता के व्रत के नाम से) विभव और सुहाग भोगने के लिये जिसका व्रत करती हैं ॥ २९ ॥ २१ राजा सुनीक से दशा के उदर में सुबाहु नामक २२ सुंदर पुत्र हुआ, जिसने अत्यंत रूप के

भयो अतुल्ल जिहिं रूप लहि, पायो मोहन[1]नाम ॥ ३० ॥
तिहिं छत सब भपन तजिय, जान स्वयम्बर जत्थ ॥
मोहन[1]तहँ पत्तो[2] कमन, सोहि लगी इहिं सत्थ ॥ ३१ ॥
कन्या इतरहु[3] बरनकी, दोखन लग्गी दिष्ट[4] ॥
कह्यो क्यों न बाहुज[5] कर, मिलितो मोहन[6]इष्ट ॥ ३२ ॥

शुद्ध ब्रजदेशीया प्राकृतभाषा ॥

मनोहरम् ॥

बारह१२विदर्भनकी बंगनकी बीस२०पांड्य,
पत्रि की पचास५०च्यारि४चेदिनकी प्रीति पगि ॥
सत्रह१७विदेहकी रु मागधकी सात७चोल,
पतिकी चतुर्दश१४मनोभँव[7]की ज्वाल आगि ॥
कोसल१कलिंग२करनाट३नकी एक१एक१३,
सोलह१६सुबीरकी रु द्रविडकी दोय२दगि[8] ॥
दोरि दोरि तोरि लाज लंगर स्वयम्बरतैं,
आई राजकन्या इती१४५मोहनकी लार लगि ॥ ३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा

दोहा

सर कृत भू १४५मित नृप सुता, इम लखताहि अकुलाय ॥
इन्द्रप्रस्थ आई उलटि, नाँह[10] सुबाहु बनाय ॥ ३४ ॥
जब मथुरापति जद्दवन, कुरुबंसिन पुनि कुप्पि ॥
मृगयारत[11] मोहन हन्यौं, रोस स्वयम्बर[12] रुप्पि ॥ ३५ ॥

कारण मोहन नाम पाया ॥ ३० ॥ जिस स्वयंवर में २ सुंदर (रूपवान्) मोहन १ पहुंचा, वही कन्या इसके साथ होलई ॥ ३१ ॥ क्षत्रियों के सिवाय ३ दूसरे वर्णों की कन्या भी अपने ४ भाग्य को दोष देने लगी कि हमको ५ क्षत्रिय क्यों नहीं किया जो मोहन ६ पति मिलता ॥ ३२ ॥ ७ कामदेव की अग्नि प्रज्वलित होने से ८ अरु ९ कामदेव की ज्वाला से जली हुई । ३३। अष्ट भुजोंवाले मोहन को १० पति बना कर ॥३४॥ ११ शिकार में तत्पर १२ स्वयंवर के रोस को आरोपण करके । ३५ ।

सब१४५नारिन किय सहगमन[1], सुनि यह मारक[2] सापि[3] ॥
बीस२०अनूढा[4] बाहुजा[5], अग्गि[6] जरी वपु[7] अप्पि ॥३६॥
कोसलराज सुसंधिकी, सुता मालिनी३२।१नाम ॥
जिहिं सुबाहु३२रानी जन्यौं, सूनु[8] सुरथ३३उद्दाम[9] ॥३७॥
जननिन जुत अपनैं जनक[10], पावत इम परलोक ॥
पट्ट[11] सुरथ३३लहि पंचसिख, अधिप भयो निज ओक[12] ॥३८॥
सतधन्वा सौवीरपति[13], राजा रविकुल दीप ॥
तनया तास प्रभावती३३।१, परन्यौं सुरथ३३महीप ॥३९॥

षट्पदी ॥

भयउ सुरथकै भरत३४सोहि मदसेन३४कहायउ ॥
कांचीपति दिनकर[14] कुलीन संखसुता पायउ ॥
रानी तिलका३४।१नाम भरत सन हुव तिहिं जाठर[15] ॥
कृतसुख राजकुमार नाम सात्विक३५बीरनबर ॥
अभिधान[16] या दुवहु२दिय इतर[17] सुकविन सत्यक३५सत्यकी३५॥
व्याह्यो यहै हु तनया विभा३५।१पुष्करराज प्रहत्य[18]की ॥४०॥
केसरिदेव३६कुमार बीर सात्विक नृपकै हुव ॥
सो लहि पट्ट सजोर भूप जित्तन लग्गो भुव ॥
मोहन ३२ के मारक महीप तिनके सुत नाती[19] ॥
सर[20] कोदंड सहाय हनैं रन अखिल[21] अराती[22] ॥
याकोहि नाम इहिं गुन अपर[23]२ विदित सत्रुजित ३६ बित्थरिय ॥

---

१ साथ जल गई २ मारनेवाले को ३ श्राप देकर ४ विना विवाही ५ क्षत्रियों की कन्या ६ अग्नि में ७ शरीर देकर ८ पुत्र ९ निरंकुश १० अपनें पिता को ११ सिंहासन (पंचशिख नाम सिंह का है सो पट्ट शब्द का अन्वय पंचशिख के साथ लगाने से "पंचशिखपट्ट" अर्थात् सिंहासन यह अर्थ होता है; अथवा पांच हैं शिखर (कलश) जिसके ऐसा सिंहासन) १२ अपने घर (राजधानी) में १३ सौवीर देश (शूरसेन से पूर्व और गंडकी नदी से पश्चिम, जिसको अधमाधम मानते हैं) का पति १४ सूर्यवंशी १५ उदर से १६ नाम १७ दूसरा १८ प्रहत्य नामक राजा की पुत्री को १९ पोते २० धनुष बाण के सहाय से २१ सब २२ शत्रु २३ इसीकारण से इसका दू-

कांबोजनाथ कपिलाश्वकी सुता जया ३६।१ जिहिँ नृप बरिय ।४१।
सुपहु सत्राजित सूनु[1] प्रथित[2] विक्रम ३७ हुव भूपति ॥
सो ससिकुल[3] आनर्त भूप सुंगसुता सम्मति ३७।१ ॥
व्याहि भयउ जग विदित कलह निजजनक तुल्य करि ॥
कौरवराज प्रतीप कटक[4] बहुबेर हन्यौं लरि ॥
सहदेव ३८ भयउ याकै सुवन जहँ संतनु भीषम जनक[5] ॥
याकँहँ निकारि जनपद[6] सहित इंद्रप्रस्थ लिय धारि धकँ[7] ॥ ४२ ॥

दोहा

नृप सुबाहु ३२ के हननतैं, बढि बढि अतुल विरोध ॥
कुरु १ जदु २ कुल १ चंडासिकुल[8] २, बैरी हुव रिस बोध ॥ ४३ ॥
इम संतनु दिगजय अनखि, इंद्रप्रस्थ लिय आय ॥
भीरु[9] मर्‍यो नहि जात भुव, सो सहदेव ३८ सिटाय ॥ ४४ ॥
लहि सहाय सहदेव ३८ तब, निज मातुल[10] अरिघाट ॥
मारि सुनाभ महीपकौं, लयो देस करनाट ॥ ४५ ॥
नृप आनर्त सहाय पुनि, पौंड्रदेस लिय जित्ति ॥
दो हू २ जनपद दाब्बि इम, किय सहदेव ३८ हु कित्ति ॥ ४६ ॥
मगधराज बसुकी सुता, चतुर ऊर्मिला ३८ चाहि ॥
कुरुकुल वारिधि[11] रतन यह, लिय सहदेव ३८ विवाहि ॥ ४७ ॥
भयो तनय सहदेवके, वीरदेव ३९ अभिधान[12] ॥
नाम अपर[13] ताको कहत, भीमसेन ३९ मतिमान ॥ ४८ ॥
कामरूप[14] नृप कर्णकी, सुता विजोहा ३९।१ शुद्ध ॥
रविकुलजा[15] व्याह्यो रसिक, वीरदेव ३९ रनबुद्ध[16] ॥ ४९ ॥
याकै सुत पौंड्रक ४० भयो, सुहि वसुदेव ४० कहाय ॥

सरा नाम १ पुत्र २ प्रसिद्ध ३ चन्द्रवंशी आनर्त देश के राजा सुंग की पुत्री संमति को परण कर. ४ सेना ५ भीष्म का पिता ६ देश सहित ७ क्रोध धारण करके दिल्ली शहर को लेलिया ८ चहुवाण कुल ९ कायर १० अपने मामा की ११ कुरु कुल रूपी समुद्र का रत्न १२ नामवाला १३ दूसरा नाम १४ कामरूप देश के राजा कर्ण की १५ सूर्य वंश में उत्पन्न १६ रण में पंडित.

वृद्धकर्म[1] कारूषकी, स्वसा[2] बिबाह्यो जाय ॥ ५० ॥
दंतवक्त्रकी पिउसिया[3], निपुन गुनवती[4] नाम ॥
श्रुतदेवाकी जो ननँद, कहियत लोक ललाम ॥ ५१ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे तृतीयराशौ बीरधन्व७भद्रा७।१जयधन्व८रुचि८।१बीरसिंह ९कमला ९।१चरित्रवर्णनबीरसिंहसुतागौरी१०कामलसेनिप्रामारराजप्रेम १०परिणयन बीरसिंहात्मजबरसिंह१०सोमा१०।१तद्वीरदण्ड११बिरजा११।१जयंत१२बरुणी१२।१माणिक्यराज१३जया१३।१पुष्कर१४पद्मावती१४।१त्यसमञ्जस१५कला१५।१प्रेमपूर१६ललिता१६।१भानुराज१७सुमध्या१७।१मानसिंह १८ कल्याणी १८।१हनुम१९कमला१९।१चित्रसेन२०चन्द्रिका२०।१सम्भु२१प्रभा २१।१महासेन२२जया।२२।१सुरथ२३तारा२३।१रुद्रदत्त२४सत्ता२४।१हेमरथ २५सान्ति२५।१चित्राङ्गद२६सुमति २६।१चित्ररथ२७बल्गु२७।१वाल्हीक२८बिरजो२८।१धृष्टद्युम्ना२९ऽलको२९।१त्तम३०विश्वाची३०।१सुनीक३१दसा३१।१सुबाहु३२मालिन्याऽऽदिपञ्चचत्वारिंशोत्तरशत १४५सुरथ३३प्रभावती३३।१भरत३४ तिलका३४।१सात्विक ३५विभा३५।१केसरिदेव३६जया३६।१बिक्रम३७सम्मति३७।१कुलकथनवैक्रमिसहदेवे ३८न्द्रप्रस्थच्यवनतन्मातुलाऽरिघाटसहायकरणाट १

१करूष देश के राजा वृद्धकर्म की २ बहिन को ३ भुआ ४ सुन्दर,

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में वीरधन्वा-भद्रा, जयधन्वा-रुचि, वीरसिंह- कमला के चरित्र का वर्णन और वीरसिंह की पुत्री गौरी को कमलसेन के पुत्र पँवारराज प्रेम को विवाहना, और वीरसिंह का पुत्र वरसिंह-सोमा, उसके पुत्र वीरदण्ड-विरजा, जयंत-वरुणी, माणिक्यराज-जया, पुष्कर-पद्मावती, असमञ्जस-कला, प्रेमपूर-ललिता, भानुराज-सुमध्या, मानसिंह-कल्याणी, हनुमान-कला, चित्रसेन-चन्द्रिका, सम्भु-प्रभा, महासेन-जया, सुरथ-तारा, रुद्रदत्त-सत्ता, हेमरथ-शांति, चित्राङ्गद-सुमति, चित्ररथ-बल्गु, वाल्हीक-विरजा, धृष्टद्युम्न-अलका, उत्तम-विश्वाची, सुनीक-दशा, सुबाहु-मालिनी आदि एक सौ पैंतालीस १४५ सुरथ-प्रभावती, भरत-तिलका, सात्विक-विभा, केसरिदेव-जया, विक्रम-सम्मति के कुल का

पौंड्रदेश२प्रापणमागधेशवसुसुतोर्मिलो३८।१द्वहनतत्सुतवीरदेव३९ बिजोहा३९।१पुण्ड्रक४०गुणावती ४०।१ पर्यन्तवंशवर्णनं चतुर्थो४ मयूखः ॥ ४ ॥ आदितः षट्चत्वारिंशत्तमः ॥ ४६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

राजन तीजे३राशिको, व्यासागम[2] अनुसार ॥
कहियत अब पंचम५[3]किरन, जत्थ कृष्ण अवतार ॥ १ ॥
सर मुनि गज गुन तर्क वसु८६३८७५,[4]अब्द इते गत अत्थ ॥
द्वापर [5]अष्टाविंस२८के,सप्तम७मनु मिति[6]६ तत्थ ॥२॥
इन [7]अग्गैं [8]बच्छर लग्यो, जो [9]ईश्वर अभिधान ॥
[10]असित भद्द तस अष्टमी८,हरि हुव जदुसंतान ॥ ३ ॥

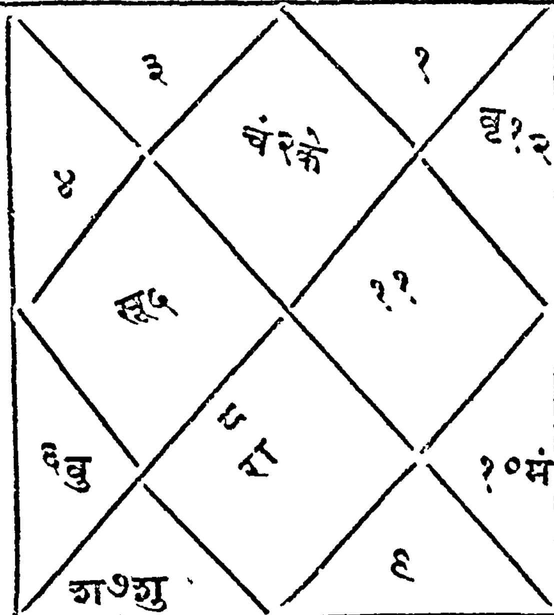
षट्पदी

पक्ख असित भाद्रपद सुभग अष्टमि८दिन [11]ससि सह,
त्रेपन५३घटिका तत्थ पलहु अग्गैं पुनि पंद्रह१५ ॥
रोहिनी [12]भैं चोवन५४घटी रु तेरह१३पल जानहु,
[13]धृति हरखन छप्पन५६घटी रु पल बीस२०प्रमानहु ॥
तिथि [14]अपर अर्द्ध कौलव करन रजनी दल जहँ खिल्ल रहत

कथन और विक्रम के पुत्र सहदेव का दिल्ली से पतन (उससे दिल्ली का छुटना) और उसके मामा अरिघाट के सहाय से कर्णाटक और पौंड्रदेश का मिलना और मगध देश के पति वसु की पुत्री ऊर्मिला से विवाह होना उसके पुत्र वीरदेव-बिजोहा, पुंड्रक-गुणवती पर्यन्त चहुवाण वंश वर्णन का चौथा४मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से छियालीस मयूख हुए ॥ ४६ ॥

१ हे राजा रामसिंह इस तीसरे राशि का पांचवां मयूख अब कहते हैं जिसमें वेदव्यास के शास्त्र (विष्णुपुराण) के अनुसार कृष्ण के अवतार की कथा है ॥ १ ॥ सातवीं गणना के (वर्तमान वैवस्वत) मनु के अठाईसवें द्वापर युग के ८६३८७५ वर्ष यहां पर गये ॥ २ ॥ ७ वर्ष ८ उस वर्ष का ईश्वर ९ नाम था. १० भादवा के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ॥ ३ ॥ भादवा बदि अष्टमी ११ सोम वार घटी(५३)पल(१५)रोहिणी१२ नक्षत्र घटी(५४)पल (१३) हर्षण १३ योग घटी[५६]पल[२०]और तिथि के १४ दूसरे भाग में कौलव करण

सर वेद४५रु गुन कृत४३इष्ट पर विजय मुहूरत वृखर२बहत॥४॥
सूर॰सूनु जदुवंस इंदु॰॰पतनी अट्ठारह१८॥
देवकी सु तिनमाँहिं मुख्य धरि उदर महामह ॥





उदित लग्न वृखर२अंस जास बारह१२बित्ते जहँ ॥
जो देवी सबजनक त्रि३गुनपति जनत भई तहँ ॥
लखि गर्ग विधिंभ४दूजे२चरन वासुदेव अभिधानं दिय ॥
अवतीर्ण असुर भूपन उपरि इम मधुपुरं हरि अवतरिय ॥५॥
सिखी७ससी८वृखर२सीस ब्रध्न९मृगराजं१०केनी६बुध४॥

(एक तिथि में दो करण होते हैं, सो यहां उत्तरार्ध में कौलव करण है) आधी रात्रि बाकी रहते पैंतालीस घड़ी और तैंतालीस पल के इष्ट में विजय नाम मुहूर्त और वृष लग्न में ॥ ४ ॥ यदु वंश में॰शूरसेन के पुत्र॰॰वसुदेव के अठारह स्त्रियां थीं जिनमें बड़ी देवकी के उदर में १बड़े तेजवान् उदित हुए, वृष लग्न के बारह अंश बीते जहां देवी (देवकी) ने सब संसार के २ पिता और ३ सत-रज-तम-तीनों गुणों के पति को जना, गर्ग मुनि ने ४ ब्रह्मा के नक्षत्र (रोहिणी) के दूजे चरण में जन्म हुआ जानकर वासुदेव ५ नाम दिया (रोहिणी के चार चरणों में जन्म लेनेवालों के नाम में आदि अक्षर क्रम से "ओ-वा-वी-वु" आते हैं अवकहोड़ाचक्र के अनुसार यह (वासुदेव) नाम दिया, असुरों के अंशों से अवतार लिये हुए राजाओं पर ६ मथुरापुर में विष्णु ने अवतार लिया ॥ ५ ॥ ७ केतु और ८ चन्द्रमा वृष राशि पर, ९ सूर्य १० सिंह राशि पर, बुध ११ कन्या राशि पर

तुला७सनि७रु कवितात६आत तम८रासि अलायुध८॥
मकर१०आर३गुरु५मीन१२उच्च ससि२बुध४सनि७मंगल३॥
इत्यादिक जगदीश जनम फल खेटै महाफल ॥
ससि१लग्न२बीच यातैं यहहि कुंडलिका ससिकी रहिय ॥
नृप रामसिंह इम मधु नगर हरि अनादि उद्भम लहिय ॥६॥

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुख, बरन्यौं जो बसुदेव४० ॥
तनय तिन दिनन ताहुकैं, दुर्मति सुनहु तसु देव ॥ ७ ॥
जननि गुनवती४०।१सी जहाँ, पितु पुंड्रक४०सुप्रसंस ॥
वासुदेव४१तिनकै भयो, असुर बली नरअंस ॥ ८ ॥
उन दिवसन बहु अवतरे, दैत्य दनुज नरदेह ॥
लिखत तेहु जिन करि लह्यो, अवनी भार अछेह ॥ ९ ॥

॥ पज्झटिका ॥

मगधेस जरासंधाख्य १भूप, हुव विप्रचित्ति१दानव स्वरूप ॥
सिसुपाल२चेदिपति बल अपार,सु हिरएयकसिपु२दितिसुतवतार१०
बलि भूप सल्य३बाल्हीक बंस,प्रल्हाद दनुज संल्हाद३अंस ॥
नृप धृष्टकेतु४अनुल्हाद४जानि,दुम५भूप भयो सिवि५दैत्य आनि११

शनि और १ शुक्र तुला राशि पर, राहु २ वृश्चिक राशि पर ३ मङ्गल मकर राशि पर, वृहस्पति मीन राशि पर है और उच्च राशि के चन्द्रमा, बुध शनि और मंगल हैं, इनको आदि लेकर जगत् के ईश [कृष्ण] के जन्म समय में बड़े फल के देनेवाले ४ ग्रह हैं, और लग्न में चंद्रमा हैं, इसकारण से यही कुंडली चंद्रमा की भी रही. (जातक शास्त्र से लग्नकुंडली और चंद्रकुंडली से फल कहाजाता है परंतु यहां चंद्रमा लग्न में आगया इसमे चंद्रमा की जुदी कुंडली नहीं की) हे राजा रामसिंह ! इस प्रकार मथुरा नगर में अनादि विष्णु ने ५ जन्म लिया ॥ ६ ॥ ६ हे स्वामी रामसिंह ! ७ दुर्मति (खोटी बुद्धिवाला) हुआ सो हे देव (राजा) उसको सुनो ॥ ७ ॥ गुनवती जैसी जिसकी माता और पौंड्रक (वसुदेव) जैसा श्रेष्ठ प्रशंसनीय पिता तिनके बलवान् नर नामक असुर के अंश से वासुदेव हुआ ॥ ८ ॥ ८ भूमि में ९ जरासंध नामक१० पुनि-

भगदत्त६भुप वाष्कल६अदेवं, इम उग्रसेन७स्वभानु७एव ॥
अमितौजा८नृपहुवकेतुमान८,रु असोक९नृप असुर अश्व९थान१२
हार्दिक्य१०अश्वपति१०जो सुरारि,दीर्घप्रज११नृषपर्वा११अनुकारि
नृपसाल्व१२सुआसुरअजक१२छीवनृपचोरमान१३खलअश्वग्रीव१३
रु वृहद्रथ१४नृप सूक्ष्म१४सु नृसंसं,नृप सेनाविन्दु १५तुहुंड१५अंस।
नृपनग्नजित१६सुइषुपा१६ऽवृंतारप्रतिविंध्य१७एकचक्र१७सुभर्यार१४
तैसैंहि चित्रवर्मा १८ नरेस, सु विरूपाक्षाऽभिध १८ असुर बेस ॥
राजासुबाहु१९दानवहराख्य१९वाल्हीकमहीपति२०सुअहरांख्य१५
नृपमुंजकेस२१असुर सु निचद्र,२१देवाधिप२२जु निकुंभ२२सुअतंद्र॥
पौरवनरेस२३हुवसरभ२३आयभूपतिसुपार्श्व२४खलकुपथ२४भाय१
वाल्हीक कुलज प्रल्हाद२५भूप,सु द्वि२तीयसरभ२५आसर स्वरूप॥

नृप पार्वतेय २६ क्रथ२६ ऋषिक २७ अर्क२७,
द्रुमसेन २८ गरिष्ट २८ सु अघउदर्क ॥ १७ ॥

कांबोज चंद्रबर्माऽभिधानं २९, सो असुर चंद्र२९अवतारवान ॥
पश्चिमअनूपपति२०जोनरेस, विभु सो यहँस्मृतपा३०असुरबेस।१८।
भूपाल बिश्व३१असुरसु मयूर३१,नृप कालकीर्ति३२सु सुपर्ण३२सूर
भूपाल सुकन३३हुव चंद्रहंस३३जानकि३४सु चंद्रहंता३४नृसंस ।१९।
कासीस३५दीर्घजिव्ह३५सुसुरारि,नृपक्राथ३६राहु३६विधुतादकारि।

वसुमित्र ३७ दनायुज विक्षराख्य ३७,
पांड्येस३८विक्षरानुज३८अनाख्य॥२०॥

क्षितिय माल्लयवान३९वपु वृत्र३९धारि,हुव चंड४०क्रोधहंता४०सुरारि
नृपपार्वत४१क्रथन४१रु दंडधार४२,हुव असुर क्रोधवर्द्धन४२वतार२१

१ दैत्य २ राहु ३ देवताओं के शत्रु (दैत्य) ४ अनुकरण (नकल) करनेवाला ५ मदोन्मत्त ६ क्रूर ७ अवतार ८ भयंकर ९ विरूपाक्ष नामवाला १० अहर नामवाला ११ जो १२ अनालसी [आलस्य रहित] १३ भविष्यत् (आनेवाले समय में) पापी १४ नामवाला १५ क्रूर १६ चंद्रमा की पीड़ा करनेवाला १७ विक्षर नामवाला १८ विक्षर का छोटा भाई विना नामवाला, अर्थात् उसका नाम मालूम नहीं हुआ

सूर्य्याक्ष४३भूप सु कुनाय४३तांम, बाल्हीक दरद४४नृप सूर्य४४नाम
कालेय जाति जे असुर अष्ट८,ते सुनहु भये भुव दैन कष्ट ॥२२॥
पहिलो४५।१सुजयत्सेन४५मगधेस,दूजो४६।२हुव अपराजित४६नरेस
तीजो४७।३निषादपति४७जयनिधान,
चोथो४८।४हुव नरपति श्रेणिमान ४८ ॥२३॥
पंचम४९।५सुमहौजा४९भूमिपाल,छट्ठो५०।६अभीरु५०नृप रनकराल
सप्तम५१।७भूपाल समुद्रसेन५१,अष्टम५२।८सुवृहन्नामा५२धरेस२४
पैंतीस ३५ क्रोधवस असुर योंहि, उतरे ति³ सुनहु उद्देससोंहिं ॥
मद्रक ५३।१ रु कर्णवेष्टक ५४।२ नरेस,
सिद्धार्थ ५५।३ बहुरि कीटक ५६।४ धरेस ॥ २५ ॥
त्योंही सुवीर ५७।५ रु सुबाहु ५८।६ जानि,
बाल्हीक ५९।७ महावीर हु बखानि ॥
क्रथ ६०।८ पुनि विचित्र ६१।९ सुरथ ६२।१० हु कुसील,
श्रीमान त्योंहि नरनाह नील६३।११ ॥२६॥
चीराद्वासा६४।१२अरु भूमिपाल६५।१३,
तिमि दंतवक्त्र६६।१४दुर्जय६७।१५कराल ॥
रुक्मी६८।१६जनमेजय६९।१७बहुरि जानि,
आषाढ७०।१८वायुवेग७१।१९हु प्रमानि ॥२७॥
भूरेस्तेजा७२।२०अरु एकलव्य७३।२१,
रु सुमित्र७४।२२वाटधानाख्य७५।२३भव्य⁷ ॥
गोमुख७६।२४रु बहुत कारूष भूप७७।२५,
त्यौं क्षेमधूर्ति७८।२६उद्धव७९।२७अनूप ॥२८॥
क्षेम८०।२८रु श्रुतायु८१।२९कुहल८२।३०हु सुजान ॥
ईश्वर८३।३१रु वृहत्सेन८४।३२मतिमान८५।३३,
त्योंही कालिंग भूपति८६।३४कितेक ॥

१ तहां अथवा भयंकर. २ भूपति३ते (वे) ४अनुसंधान (कथन क्रम) ५खोटे शीलवाला६वाटधान नामक ७ योग्य.

अरु अग्रतीर्थ८७।३५इम हुव अनेक ॥ २९ ॥

दोहा

अश्वसिरा८८।१रु अयस्सिरा८९।२, अयःसंकु९०।३अघअंच ॥
बहुरि गगनमूर्द्धा९१।४ तथा, बेगवान९२।५ए पंच५ ॥ ३० ॥
भये पंच५कैकेय९२नृप,बहुरि बलीनर९३तास ॥
पुंड्रक कै सुत हुव असुर,बासुदेव४१जिहिं नास ॥ ३१ ॥
पूर्बपुरुख जो रावरो,रामसिंह नरराय ॥
ऐसैं तिन दिवसन असुर, अंसन उतरे आय ॥ ३२ ॥

इतिश्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्बाऽयणे तृतीय ३ राशौ श्रीकृष्णजन्मपञ्चाङ्गसूचनपूर्बकपौण्ड्रकबासुदेवा ४१ द्यसुरांशाऽवतरणाकथनं पञ्चमो मयूखः॥ ५ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशत्तमः॥४७॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

इम असुरनकै अवतरन, भुम्मि लह्यो अतिभार ॥
अजं इंद्रादिक सुरनसौं,किन्नी जाय पुकार ॥ १ ॥
सुरहु मखादिक नासतैं,हे पुब्बहि बेहाल ॥
अवनि सहित संत्रस्त अब,पहुंचे जहँ गोपाल ॥ २ ॥
नारायन सुनि दुख निजन,दिन्नौं सँदय निदेस ॥
अमरहुं भूतल अवतरहु,संकट मिटन असेस ॥ ३ ॥
तुमरै हित धरिहै नृतनु,मम कच जदुकुल माँहिं ॥

---

१ पाप ही है शोभा जिसकी २ तहां अथवा भयंकर ३ हे नृपति रामसिंह ! वह वासुदेव आप का पूर्वपुरुष (बडेरा) था॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में श्रीकृष्ण के जन्म का पंचांग जनाना आदि, पौंड्रक वासुदेव आदि असुर अंशों के जन्म के कथन का पांचवां मयूख समाप्त हुआ॥ ५ ॥ आदि से सैंतालीस मयूख हुए॥ ४७ ॥

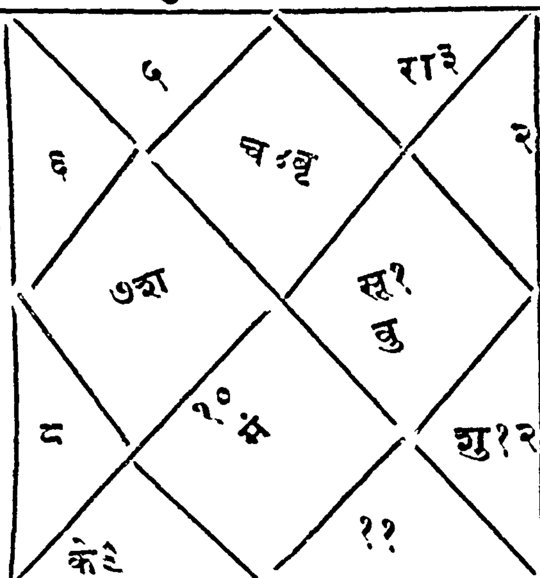
४ ब्रह्मा और इंद्र आदि देवताओं से भूमि ने पुकार की ५ यज्ञ आदि के नाश होने से देवता भी ६ भूमि सहित ७ भयभीत होकर ८ विष्णुभगवान् ९ अपने जनों का १० दया पूर्वक ११ देवता भी १२ मनुष्य शरीर १३ मेरे केश

असित१८ सित२९ तुम उभय२, लेहु बिलंबहु नाँहिं ॥ ४ ॥
अग्गैं जिम चोईस२४मे, त्रेतामैं अवतार ॥
मैं लीनौं रघुबंसमैं, कुल रक्खस खयकार ॥ ५ ॥
त्रेताके हायन गये, नव सहस्र९०००परिमान ॥
इन अग्गैंको अब्द जँहँ, सित मधु पख सुभवान ॥ ६ ॥

षट्पदी

सित मधु पख सुभवान पुनर्वसु७नवमि९चंद्र२दिन ॥
लगन कर्क४लव पंच५इष्ट दुव२जाम चढत इन ॥
इनकुलपति अवनीअधीस दसरथके आलय ॥
कौसल्याकी कुक्षि जन्म मैं लिन्न करन जय ॥







गुरु५चंद्र२लग्न४सनि७ग्रह बनिज७चाप९केतु९मृग१०भौम३जँहँ॥
झख१२सुक्र६भानु१बुध४मेस१पर मिथुन३राहु८हुव राम तँहँ ॥७॥

काला और धोला (श्वेत) बाल, ये तुम लो देरी मत करो ॥ ४ ॥ आगे जिस प्रकार सातवें (वैवस्वत) मनु के चौबीसवें त्रेता युग में राक्षसों के कुल का नाश करने के लिये रघुवंश मे मैंने अवतार लिया था ॥ ५ ॥ त्रेता युग के नव हजार वर्ष गये जिनके आगे के वर्ष के चैत्र सुदी शुभ पक्ष मे ॥ ६ ॥ चैत्र मास के शुभ शुक्ल पक्ष में पुनर्वसु नक्षत्र नवमी सोमवार कर्क लग्न के पांच अंश गये इष्ट, दो पहर सूर्य चढे सूर्यवंशियों के पति भूपति दशरथ के घर में विजय करने को मैंने जन्म लिया था वृहस्पति और चंद्रमा तो लग्न स्थान में, शनैश्चर ग्रह तुला राशि पर, केतु धनु राशि पर, मंगल

दोहा

भालु[1] बलीमुख[2] तब भये, अवनीतल तुम आय ॥
अखिल हनैं रक्खस असुर, दिय श्रुति[3]मग्ग चलाय ॥ ८ ॥
बालि१इंद्र१सुग्रीव२रबि२, नील३अनल[4]३अवतार ॥
नल४सु विश्वकर्मा४निपुन, मारुति५अनिल[5]५उदार ॥ ९ ॥
सतवली६सु पासी[6]६सुमति, हुव गवाक्ष७जमराज७॥
द्विबिद८।१मैंद९।२ए दस्र[7]२दुव२, करन भये श्रुतिकाज ॥ १० ॥
इत्यादिक सब अवतरे, तुम कपि रिच्छ स्वरूप ॥
मैं तब नर अवतार लिय, भवन कोसला भूप ॥ ११ ॥
तुम जुत कछुक निमित्त तकि, जातुधान खलजात ॥
पापनिरत असुरहु प्रबल, हनैं अखिल उमहात ॥१२॥
त्यौंही सब अब अवतरहु, अवनीतल तुम आय ॥
मैं हु कृष्ण ह्वै मारिहौं, सब खल होय सहाय ॥ १३ ॥

पज्झटिका

इम सुनत सेस[10]सायी निदेस, बसुमति[11] तल उतरे सुर[12] बिसेस ॥
देवक१ नरेस गंधर्बराय, गुरुद्रोन२बृहस्पति अंस आय ॥१४ ॥
सिव१काम२क्रोध३जम४च्यारि४अंस, इक१अश्वत्थामा३सुप्रसंस[13]
वसुअष्ट६अष्ट८संतनुकुमार[14]११, गोतम कृप१२रुद्रगणा[15]ऽवतार ॥
कृतवर्मा१३सात्यकि१४पांडु१५भूप, द्रुपद१६रु बिराट१७गन[16]मरुत रूप
सकुनी१८जुग द्वापर नाम अंस, धृतराष्ट्र१९भयो गंधर्ब हंस ॥१६॥
कलिजुग दुर्योधन२०विदुर२१काल, हुव धर्म जुधिष्ठिर२२भूमिपाल।

मकर राशि पर, शुक्र मीन राशि पर, सूर्य और बुध मेष राशि पर, राहु मिथुन राशि पर था, उस समय रामचंद्र हुए ॥ ७ ॥ १ रीछ २ वानर ३ वेदमार्ग ४ अग्नि का ५ पवन का अवतार हनुमान् हुआ ६ वरुण का ७ अश्विनी कुमारों का ८ राक्षस ९ नियुक्त १० शेष नाग पर शयन करनेवाले (विष्णु) का ११ भूमितल पर १२ देवता १३ प्रशंसा योग्य १४ भीष्म आठ वसुओं में से आठवें वसु का अवतार हुआ १५ कृपाचार्य रुद्रगण का अवतार हुआ. १६ मरुत्गण ॥ १६ ॥

पवमान भीम२३जय२४इंद्रजानि,हुव दस्त्रन कुल२५सहदेव२६आनि१७
हुव धृष्टद्युम्न२७सोमक कृसानु,नारायण२८कृष्ण२९रु कर्ण३०भानु
प्रद्युम्न१३कुमर सु सनत्कुमार, त्यौं सीरपानि३२सेसाऽवतार॥१८॥
अभिमन्यु३३सुवर्चा सोमजात, क्रव्याद सिखंडी३४द्रुपद तात ॥
प्रतिबिंध्य ३५।१ तथा श्रुतसेन ३६।२ जानि,
श्रुतकीर्ति ३७।३ सतानीक ३८।४ हु वखानि ॥ १९ ॥
श्रुतसेन ३९।५ पंच ५ ए द्रौपदेय, हुव बिश्वदेव पंचक अजेय ॥
क्रम सन जुजुच्छु सु खं१००अंधपुत्र, पौलस्त्य भये हे श्रुतितनुत्र॥२०॥
दुर्योधन अनुज जुजुच्छु१नाम, दुस्सासन२दुस्सह३दिव्यधाम ॥
दुस्सल४पुनि दुर्मुख५बिहितबर्ण,तैसैंहिं बिबिंसति६अरु बिकर्ण७॥२१
जयसंध ८ सुलोचन ९ बिंदु १० जानि,
अनुबिंदु ११ तथा दुर्धर्ष १२ मानि ॥
रु सुबाहु१३दुष्प्रदर्शन१४कुमार,दुर्मर्षण१५दुर्मख१६विजयकार ।२२।
दुष्कर्ष१७कर्ण१८अरुचित्र१९ताम,उपचित्र२०तथा चित्राक्ष२१नाम
चारु२२रु चित्रांगद२३दुर्मदाख्य२४,त्यौं दुष्प्रहर्ष२५रु विवित्सु२६साख्य
विकट२७सम२८ऊर्णनाभ २९रु सनाभ३०,
नंद ३१रु उपनंद ३२ हु अतुल आभ ॥
सेनापति३३बहुरि सुसेन३४ज्यौंहिं, कुंडोदर३५रु महोदर३६हु त्यौंहिं॥
पुनि चित्रबाहु ३७ जानहु कुमार, ऐसैंहि चित्रवर्मा ३८ उदार ॥
सुनिये सुबर्मा३९नामधेय, ऐसोहि दुर्बिमोचन४०अजेय ॥ २५ ॥
रु अयोबाहु४१महाबाहु४२जानि, तिहिं अग्ग चित्रचाप४३हु बखानि ॥
अभिधान सुकुंडल४४भीमबेग४५, भीमबल४६बलाकी४७तरलतेग॥

---

२ पवन ३ अनुज ४ अश्विनीकुमार ५ अग्नि ६ बलदेव ७ असुर ८ द्रुपद का पुत्र ९ द्रौपदी के पुत्र १० जुजुत्सु आदि धृतराष्ट्र के पुत्र ११ राक्षस १२ हे वेद की रक्षा करनेवाले रामसिंह १३ तहां १४ दुर्मद नामक १५ विवित्सु नाम के साथ १६ अत्यन्त १७कान्तिवाले १८अब १९नामवाला २० नाम २१ चपल तरवारवाला

वलवर्द्धन४८उग्रायुध४९सुधाम, पुनिभीमसर५०रुकनकायु५१नाम
तैसैंहि दृढायुध५२साभिधान[1],दृढवर्म५३दृढक्षत्र५४हु सुजान । २७।
पुनिसौम्यकीर्ति५५रुअनूदरा५६ख्य,तैसैंहिजरासंध५७इतिसाऽऽख्य
दृढसंध५८सत्यसंध५९वलवाहु,अरुमद६०सुवाक६१उग्रश्रवा६२हु ।२८
अरुउग्रसेन६३त्यौंक्षेमसूर्ति,६४अपराजित६५पंडितक६६रणसूर्ति ॥
रुबिसालाक्ष६७दुराधर६८सुतेग[2],दृढहस्त६९सुहस्त७०रुबातबेग७१२९
रु सुवर्चा७२तिम आदित्यकेतु७३, बव्हाशी७४बंधुनबैरहेतु[3] ॥
पुनि नागदंत७५धृतराष्ट्रजात[4],तस अनुज उग्रयायी७६हु ख्यात[5] ।३०
कवची७७रु निषंगी७८नामधेय[6],पासी७९रु दंडधार८०हु अजेय[7] ॥

रु धनुर्ग्रह८१उग्र८२अरि ससि राहु[8] ॥
भीमरथ८३बीर८४अरु बीरबाहु८५ ॥ ३१ ॥
रु अलोलुप८६अभय८७रु रौद्रकर्म ८८ ॥
दृढरथ८९रु अनाधृष्य९०हु सुवर्म ॥
तैसैंहिं कुंडभेदी९१कुमार, तिहिं अग्ग बिरावी९२नाम धार ॥३२॥

तस अनुज दीर्घलोचन९३बखानि, पुनि दीर्घबाहु९४तस अग्ग जानि
तैसैंहि महाबाहु९५मतिमान, व्यूढोरा९६कनकध्वज रु९७सुजान।३३
कुंडल९८अरु चित्रक९९त्यौं कुमार,इम अखिल[9] जातुधानाऽवतार[10]॥
नन्न्यानव९९ए धृतराष्ट्रजात, दुर्योधन नृप के अनुज भ्रात ॥ ३४ ॥
दुहिता[11] इन अग्गैं दुस्सला१हु, रु जुजुच्छु१सु वैश्यासुत[12] सुबाहु ॥
भीष्मकसुता[13]१सु लच्छी स्वरूप, कृष्णा२सची[14] सु हुव तत्थ भूप[15] ॥३५॥
माद्री३धृति कुंती४सिद्धिकाय, मति हुव गांधारी५अवनि आय ॥

१नाम के साथ२ श्रेष्ठ तरवारवाला ३भाइयों के वैर का कारण ४ धृतराष्ट्र से उत्पन्न ५ प्रसिद्ध ६ नामवाले ७ नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ शत्रुरूपी चन्द्रमा का राहु ॥ ३१ ॥ ९ इसप्रकार सब १० राक्षसों के अवतार ॥३२-३४॥ ११दुस्सला नामक पुत्री१२धृतराष्ट्र से वनियानी के पेट से उत्पन्न १३पुत्री१४ रुक्मिणी लक्ष्मी का स्वरूप हुई १५ द्रौपदी इन्द्राणी का अवतार हुई ॥२५॥ माद्री धृती का, कुन्ती सिद्धि का और गांधारी बुद्धि का *भूमि पर आकर हुई.

हरिनारि*इतर सोलहहजार१६०००अच्छरि सब जानहुतेउदार ३६

इतिश्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे१तृतीय३राशौ भारभीतभूमिसहितद्रुहिणाादिदेवशोपशायिप्रार्थनकथितरामजन्मकालादि नारायणसर्वाऽवतरणोपदेशनदेवाद्यंशाऽवतरणकथनंषष्ठो६मयूखः ॥ ६ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशत्तमः ॥ ४८ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

नारायनके सित१असित२केस२, जदुबंस आय इम लिय नृवेस ॥
पहिलैं हि कंस यह जानिलिन्न, बसुदेव१देवकी२कैद किन्न ॥१॥
प्रल्हाद दैत्यके छ६मित³ भ्रात, पाताल हु ते जे ⁴अवरजात ॥
क्रमसन ते देवकि उर प्रवेस, किय माया नारायन निदेस⁵ ॥ २॥
जे ⁶जातमात्र सब कंस जाग्नि, पारद्धि⁷ हने न दया प्रमानि ॥
उपजे पुनि सप्तम७गर्भ सेस, रोहिनि पिचंड⁸ तिन किय प्रबेस॥३॥
जान्यौं ⁹च्युत देवकि गर्भ एह, आचिरज खल कंस हु किय अछेह ॥
अखिलेश्वर अष्टम८गर्भ आय, सूचित¹⁰ मुहूर्त जनमैं सुभाय ॥ ४ ॥
सुभरूप चतुर्भुज सघनस्याम, श्रीवच्छ¹¹ वच्छ¹² लच्छन ललाम॥

---

*और कृष्णकी दसरी सोलह हजार राणियोंको हे उदार रामसिंह अप्सरा जानो.

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में भार से डरेहुए भूमि सहित ब्रह्मा आदि देवताओं का विष्णु की प्रार्थना करना, और कहे हुए रामचन्द्र के जन्मसमय आदि नारायण का सब को अवतार लेने का उपदेश करना, देवताओं को आदि लेकर अंशों से अवतार लेने के कथन का छठा मयूख समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ और आदि से अड़तालीस मयूख हुए ॥ ४८ ॥

१ स्वेत २ श्याम केसों ने यदुवंश में आकर मनुष्य वेस लिया ॥१॥ ३ प्रमाण ४ पीछे से पैदा होनेवाले [दैत्य] ५ विष्णु की आज्ञा से ॥२॥ ६ जन्मते ही ७ शिकारी [क्रूर कर्म करनेवाले] ने ८ पेट मे ॥३॥ ९यह जाना कि देवकी का यह गर्भ गिरगया १०ऊपर कहे हुए मुहूर्त में ॥४॥ ११विष्णु भगवान् का सुन्दर चिन्ह [दुर्वासा ने क्रोध करके भगवान् के लात मारी थी उसकी रेखा अथवा छाती पर केसों की दक्षिणावर्त भँवरी जिसको महापुरुष का लक्षण मानते हैं] है छाती पर जिनके

पट पीत कंठ कौस्तुभ प्रकास, कर दर[1] अरि[2] पद्म[3] गदा बिलास ।५।
मनिमय[4] किरीट सिर रोचमान, कांची[5] कटि कुंडल मकर[6] कान ॥
जननी रु जनक[7] लखि कृष्ण जात, नुति[8] करतभये मस्तक नमात ।६।
जामिक[9] प्रभु है यहँ जागरूक[10], बदिहैं द्रुत[11] कंसहिं बाबदूक[12] ॥
इहिं हेतु छिपावहु रूप एह, सुनि अहैं दुष्ट सु बिनुसनेह ॥७॥
करि गुप्त दिव्य बिग्रह[13] कृपाल, बिसराय[14] तिनहु हुव अप्प बाल ॥
बसुदेव तबहि लै सिसु सनाथ, हुव उठत हतकरी रहित हाथ ।८।
अंघ्रिन[15] झरि बेरी अकसमात, जामिक सोवत खुलि अरर[16] जात ॥
गिनत सु कंसाऽऽहंत[17] पूर्बगर्भ, आनंकदुंदुभि[18] लै चलिय अर्भ[19] ॥९॥
द्रुत तबहि चल्यो रहि पिट्ठिदेस, फनछाया टारत सलिल[20] सेस ॥
गोकुल इत गोपति नंदगेह, इहिं काल भयो वृत्तांत एह ॥ १०॥
हरिसासित[21] माया जगहिताय[22], अवतरिग जसोदा उदर आय ।
उतहू तब निद्रा मोहमग्न, गोकुल हुव जानत कहु न लग्न ॥११॥
वसुदेवहिं नदि बिच गोपव्रात[23], नंदादि मिलै कर दैन आत ॥
तहँ जानुदघ्न[24] नदि उतरि छन्न, बसुदेव सजव[25] गोकुल प्रपन्न[26] ।१२।
थित सुप्त[27] जसोदा तत्थ थान, सिसु धर कन्या लै किय प्रयान ॥
ज्यों पूर्ब[28] रह्यो त्यों स्वगृह आय, जामिक[29] तब माया दिय जगाय ।१३।
सिसु रुदन सुनत दोरेऽतिबेगं[30], कंसहिं कहि आन्यों तरल[31] तेग ॥

१शंख२चक्र३कमल४कान्तिवाला५कटिमेखला[करणगती]६मकर की आकृति के कानोंमें कुण्डल७पिता८स्तुति हेप्रभु यह९पहरायत१०जागता हुआ है सो ११जलदी ही१२बहुत बकनेवाले कंस से कहेगा१३शरीर१४उन बसुदेव देव को को भी भुलावा देकर आप बालक होगये१५पगों से अचानक बेड़ी झड़ पड़ी १६ किवाड़ खुल गये और पहरायत सोगये१७कंस को मारनेवाले १८ वसुदेव१९बालक को२०वर्षा के जलको शेषनाग अपने फणों से टालताहुआ २१विष्णु की आज्ञा से माया ने२२जगत् के हित के लिये यशोदा के उदर में अवतार लिया२३समूह२४घुटनों तक२५जल्दी२६प्राप्त हुए२७सोती हुई२८पहिले जिस प्रकार हथकड़ी बेड़ी थी उसीप्रकार अपने घर में आकररहे२९पहरायतों को माया ने जगादिया३०ते(वे पहरायत)३१चपल तरवार सहित

*प्रथम देवता पैदा हुए, उनके पीछे दैत्य पैदा हुए इससे ऊनको अवरजात लिखा हैं.

लै कन्या तिहिँ दिय सिल पछारि, छुटि *नभसु गई भुज अष्ट८धारि
बोली खल मारे व्यर्थ बाल, तव मारक हुव हेरहु उताल ॥
इत नंदबधू निद्रा बिहाय, देख्यो स्वअंस सिसुवर सुभाय ॥ १५ ॥
पछिताय कंस दुंदुहुँ[1] सजाय, कारा[2]सन काढ्यो हित मनाय ॥
तब दुंदु गोप नंदादि हेरि, पठये मधुपुरतैं[3] गृह निवेरि ॥ १६ ॥
घर आय नंद लखि जात[4] बाल, किय जातकर्म बिधि उचित काल ॥
इत कंस बुल्लि केसी१स्वइष्ट[5], सप्रलम्ब२बकी३धेनुक४अरिष्ट५ ।१७।
सुनियत मम मारक बाल जात, इम कहतभयो दर्प[6]हिँ दिखात ॥
जजमान१तपस्वी२गर्भ३आदि, सब हनहु सुरँन[7] अपकार सादि ।१८।
यह सुनत प्रलंबादिक असेस[9], बिरचे खल जोजन देस देस ॥
गोकुल बकी[10] हु रजनी अनेह[11], आई नंदालय[12] लखन एह ॥ १९ ॥
जिहिँ सिसुहिँ रत्ति[13] दै यह उरोज[14], सुहि होत भस्म जिम अनल[15] आज ॥
जिहिँ नंदलाल मुख स्वकुच देत, पिन्नौं सु कन्ह प्रानन समेत ।२०।
पलनाँ सन पुनि दुव२पय उछारि, हरि सकट[16] अधोमुख दियउ डारि ॥
गोपी जब बंधिय उदर दाम[17], किय इक दामोदर[18] तबहु काम ॥२१॥
निज दाम बद्ध ऊखल डिगाय, अर्जुन[19] तरु जुग२बिच अटकि जाय ॥
ऐंच्यो गुंन[20] ऊखल जबहि जोरि, तरु अर्जुन डारे उभय२तोरि ॥२२॥
प्रत्यूहन[21] तब सब भीति पाय, निबसे वृंदाबन गोप जाय ॥
बढ़ि तत्थ बच्छ[22] सुरभिन[23] चरात, बयके क्रम सिसु हुव दुव२हि ख्यात[24] ॥

*आकाश मे १ वसुदेव को २ कैद से ३ मथुरा से निवेड़ा करके घर (गोकुल) भेजे ४ जन्माहुआ बालक ५ प्रिय ६ घमंड ७ देवताओं के अपकार ८ सहित ९ सब १० बकी नामक राक्षसी ११ रात्रि समय में १२ नन्द के घर मे यह दुष्टनी आई १३ रात्रि से १४ स्तन १५ अग्नि अथवा बडवा अग्नि के प्रताप से जलें जिसप्रकार उस नन्दलाल (कृष्ण) के मुख में स्तन देते ही कृष्ण ने प्राण स- हित पीलिया १६ छकड़े (गाडे) का रूप करके राक्षस आया था जिसको १७ रस्सी से १८ कृष्ण ने अपनी रस्सी से बंधेहुए ऊखल को डिगाकर १९ अर्जुन (ककुभ) नामक दो वृक्षों के बीच में अटक जाने से २० रस्सी को २१ विघ्नों २२ से भय पाकर २३ बछड़े २४ गौओं को, बलदेव और कृष्ण दोनों

बिनु राम कन्ह इक[1] दिन बिहारि, कालिय द्रह आये दमनकारि॥
गिनि यह अगम्य थल नाग दोस,[2] बिनु दोस करन किय कन्ह रोस२४
पीवॅल[3] पट परिकर कटि लपेटि, भुजसौं भुज फोटन[4] काज भेटि ॥
सत्वर चढि आयॅत साख नीप, लिय मलपि झंप मधुकुॅल महीप२५
इहिं झंप अतुल द्रह जल उछारि, जद्दव बिदूर तरु दिय उजारि ॥
हद बिच आस्फोटन[9] करि बहोरि, दर्पित[10] अहीस बुॅल्ल्यो सु दोरि२६
सो पै प्रचंड निजकुल समेत आयउ[11] उरंग बिक्रम समेत ॥
हालाहल[12] बाडव बमनहार,[13] फन फन कराल द्रग ज्वाल फार[14]॥२७॥
हरि बेठि सु कुल जुत लेलिहान,[15] पुनि डसन लग्यो बपु अतुल प्रान॥
यह सुनि तहँ गोपी गोप आय, बिलपत अनेक अतिदुख बताय।२८।
बॅल[16] तब सुमिराई हरिहिं बात, तुम कोन दुष्ट यह कोन तात ॥
बपु निज तब सम्मित[17] हरि बढाय अहिबंध[18] तोरि सब दिय छुराय।२९।
कालिय मध्यम फन चरन चंपि,[19] झट नटन लगे आरोहि झंपि ॥
प्रभु चरनकमल पातन[20] प्रहार, फटि घाय भोग[21] चलि रुधिर फार३०
सत्वर[22] असत्व[23] हुव दंदसूक,[24] कर जोरे भुजगिन ओडि चूक ॥
अब नाथ लखे तुम अखिल ईस, सय[25] निज छमि आगस[26] धरहु सीस३१
बिभु[27] तुमहि रचे हम कीटबर्ग, सुहि वृत्ति बहत तामस निसर्ग॥

१ नहीं जाने योग्य २ सर्प के दोष से ३ पीतांबर को युद्ध करने योग्य कमर पर दृढ लपेट कर ४ ताल ठोक भिड़ने के लिये जल्दी ६ वृक्ष की ५ मोटी शाखा पर चढे ७ मधुकुल (यादवों में मधु नामी राजा प्रसिद्ध हुआ था) के राजा यादव ने ८ बहुत दूर के वृक्षों को * जलाशय (द्रह) के बीच में ९ फिर ताल ठोक कर१० घमण्ड में आयाहुआ सर्पराज बोला ॥ २६ ॥ ११ सर्प १२ वड़वाग्नि रूपी जहर को १३ उगलनेवाला १४समूह ॥ २७ ॥ कृष्ण को घेर कर, अपने कुल सहित१५सर्प, अतुल पराक्रमवाला फिर अपने शरीर को डसने लगा ॥२८॥ १६बलदेव ने१७अपने सदृश (विष्णु का शरीर होवे ऐसा) शरीर बढाकर१८सर्प के ॥ २९ ॥ पग से दबाकर१९कूदकर चढके नाचने गले२०पड़ने के प्रहार २१ फणों से रुधिर का समूह चला ॥ ३० ॥ २२ जल्दी २३पराक्रम रहित २४ सर्प २६ अपराध माफ करके २५ आप का हाथ माथे पर धरो ॥ ३१ ॥ २७ हे व्यापक तुमने ही

इम तियन रचत बिन्नति अपार, कालिय हु हरें किय नमस्कार३
हरि कहिय दीन गिनि सदय होय, तुम सिंधु रहहु यह उचित तोयं
पिक्खंत तव सिर मम पद प्रकास, न गरुड तव कुलको करहिं नास
निकस्यो तब सबके लखत नाग, सकुटुंब बस्यो सागर सुभाग।
करि जल सुचि निकसे कैटभारि, लखि बंधु जनन लिय लौंनवारि
थिर आसे वृंदाविपिन थान, निकसे पुनि प्रातहि गो चरान ॥
ते फिरत कबहु देखत प्रदेस, तृनराज बिपिनं पहुँचे असेस ॥ ३५ ।
बालेयं रूप धेनुक सुरारि, निवसत जहँ मृग पल अर्दनकारि ॥
भंगे जहँ मित्रन फल निहोरि, कहि खलहिं अनादरि देहु तोरि ।
बलभद्र१कृष्ण१दुव२सुनि सु बात, प्रभु करनलगे फल ताल पात
फल गिरत जानि चिर मेंहि बेस, आयोहि असुर कंपंत असेस ॥
इतं पच्छिम चरननकी दुलत्त, मारी सिरायुध हृदय मत्त ॥
सीरीहु पकरि फेर्यो सु दुष्ट, जबं लियउ प्रान चिरकालजुष्ट ॥

दोहा

सजातीय याके अवर, आये जे बल धारि ॥
तेहु इहाँ बल कृष्ण सब, मारे प्रबल पछारि ॥ ३९ ॥
धेनुकके मरतहि भयो, ताल बिपिन सब भोग्यं ॥
चरत भई नव तृन सुरभि, अखिलं पाय आरोग्य ॥ ४० ॥

हमको कीड़े बनाये हैं इसी कारण से तामसी वृत्ति के स्वभाव को धारण करते हैं १ काली नाग ने भी धीरे से नमस्कार किया ॥ ३२ ॥ २ दयावान् होकर ३ समुद्र में रहो यह तो उचित (छोडने योग्य अथवा नाप में आजावे इतना थोड़ा) ४ पानी है ५ देख कर ६ सर्प ७ कैटभ दैत्य के शत्रु (विष्णु) ८ वन ९ धेनुक नाम राक्षस १० गधे का रूप धर कर मृगों के मांस को ११ भक्षण करनेवाला १२ इस दुष्ट का १३ अनादर करके तोड़ दो १४ ताल वृक्ष के फलों को पटकने लगे १५ गर्दभ के वेस को धारण करनेवाला १७ सब को १६ धुजाताहुआ १८ शीघ्र १९ मस्तक ही है आयुध जिसके ऐसे धेनुक नाम असुर ने (धेनु के मस्तक ही आयुध होता है) २० बलदेव ने भी २१ शीघ्र २२ बहुत समय से २३ सेवन कियेहुए प्राण लिये २४ बलदेव और कृष्ण ने २५ वह तालवन भोगने योग्य होगया २६ गैयां २७ सब आरोग्यता को पाकर

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराऽशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यकालसमानाधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे श्रीराम१कृष्ण२महामाया३जन्माऽऽदिकथनश्रीकृष्णपूतना१शकट२यमलाऽर्जुन४निपातनवृंदाऽटवीनिवसनकालीयदमनतालाङ्कतालकान्तारधेनुकसुराऽरिसूदनं सप्तमो७मयूखः॥७॥आदित एकोनपञ्चाशत्तमः ॥४९॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

यौं विहरत भांडीर बट, इक्क समय सब पंत ॥
रमनलगे अन्योन्य रचि, आरोहैन अनुरत्त ॥१॥

षट्पात् ॥

तहँ प्रलंब तिनमाँहिं मिलिग खल गोप बेस करि ॥
श्रीदामाके सिसुन भीर जो हुव अमरख भरि ॥
जित्यो जब सुहि पच्छ कन्ह श्रीदामाकौं बहि ॥
बल प्रलंब कौं बहि रु चले भांडीर अवधि चहि ॥
बल१कन्ह२पच्छ जित्यो बहुरि तब प्रलंब बहि हलधरहिं ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आधार जिनका अर्थात् वासुदेव चहुवाण और श्रीकृष्ण का एक समय है ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में श्रीराम (बलदेव) कृष्ण महामाया के जन्म आदि का कथन, और श्रीकृष्ण का पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन को पटकना (नाश करना), और वृंदावन में वास करना, कालीनाग को दंड देना, और बलदेव का ताड़ वन में धेनुक असुर को मारने का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से उनचास मयूख हुए ॥ ४९ ॥

१ पहुंच कर २ परस्पर ३ एक दूसरे पर चढ़ने में ४ प्रीतिवाले (यह बालकों का एक खेल है, जिसको राजस्थान प्रांत में 'सीदमसीदी' कहते हैं ॥ १ ॥ प्रलम्ब नामक असुर गोपका वेस करके श्रीदामा नामक गोप के बालकों की मदत होगया, जब वही पक्ष जीता, तब श्रीकृष्ण श्रीदामा को और बलदेव प्रलंब को उठाकर भांडीर वट की सीमा तक लेगये; फिर दूसरी बेर में बलदेव और कृष्ण का पक्ष जीता, तब प्रलम्ब अपना रूप धर कर बलदेव को

लै आनलग्यो निजरूप करि, कहिय राम तब कन्हरहिं२॥
कृष्ण कृष्ण अच्युत अनादि सब असुर निसूंदन ॥
लै मोकँहँ खल जात कहा करिये वं अद्यतंम ॥
सुनि यह सिथिल स्वरूप जानि अग्रज को हरि जब,
अक्खिय तुमहिं अनंत कष्ट बिच इम पुच्छत कब ॥
सुहि सुनत तत्व अपनौं सुमिरि मुट्ठि मारिदिय असुर सिर,
जिहिं घात गयउ कढि दग जुगल२मरिग प्रलंब नकिन्न चिर३

दोहा

मटकीतैं नवनीत जिम, बल्ल प्रलंब को गोद ॥
कढ्ढि बिसे वृंदाबिपिन, माधव जुत अति मोद ॥ ४ ॥

षट्पदी

इम बिहरत इक्क समय भयउ घन मिटि सरदागम,
बाचंयम हुव बरहि सारगाहक योगी सम ॥
तान घनन बहु गनन तज्यो लहि बोध बिसदपन,
तनु पल्वल मीनादि तपिग ममता जुत जिम मन ॥
गृहरत गृहीव सुक्किय सरनि हुव थिर सागर मुनि हृदय,
ससि उडु बिकास नभ इम लसत जिम सुपुत्र करि कुल सजय ॥५॥

उठाकर लेचला, तब बलदेव ने कृष्ण से कहा ॥ २ ॥ १ मारनेवाले२ अब ३ इस समय अथवा रात्रि के आदिप्रहर (संध्या समय) में ४ हे शेषावतार ५ दे री ६ मक्खन की भांति ७ बलदेव ने ८ मस्तिष्क (भेजा) ९प्रवेश किया१० वृंदावन में ११ लक्ष्मीपति (कृष्ण) सहित ॥४॥ इसप्रकार विहार करते एक समय में घन (बादल) मिट कर शरद ऋतु का आगम हुआ, तहां सारग्राही योगी के समान मयूर मौनी हुए (बोलना बंध किया) और बहुत समूहवाले मेघों ने विस्तार को छोड कर ज्ञान रूपी उज्वलता धारण की, और ममता (यह मेरा है) के साथ जैसे मन तपायमान होता है ऐसे छोटे तलावों में म छली आदि जीव तपने लगे.. इसीप्रकार घर के कार्यों में तत्पर हुए गृहस्थी के समान मार्ग सूख गये. और मुनियों के हृदय के समान समुद्र भी चपल ता को छोड कर स्थिर हुआ. और श्रेष्ठ पुत्र से विजय के साथ कुल शोभा यमान होता है-ऐसे ही चंद्रमा और तारों से आकाश शोभित हुआ॥ ५ ॥

नभ१वारिद२भुव१पंक२सलिल१कलिमल इम छोरिय,
प्रत्याहारहिँ अक्तगोचरनतैं कि निहोरिय ॥
पूरक छवि जलपूरि रोकि रक्ख्यो कुंभक२छवि,
पुनि रेचक३छबि प्रचुर रक्खि कढ्योहि जती रवि ॥
सर१सरित२झील३पुष्कर४सुभग लगे कुमुद सुखमा धरन,
मुख सूर घाय सस्त्रन मनहुँ सरनागत रक्खत सरन ॥६॥
सकल गोप ऐसे अनेह नंदोपनंद मुख,
इंद्र इष्टि उपहार लगे अर्जन सुवृष्टि सुख ॥
कहिय कृष्ण सब करहिँ इष्टि गोवर्द्धनकी अब,
नहिँ कर्षुक नहिँ बनिक नियति गोपहि किन्नैं तब ॥
सुरभी१अरराय२पर्वत३सुभग ए परदैवत अप्पनैं,
पुनि सुनत ऋद्ध गिरि इह पिहुल स्वैररूप बिहरत बनैं॥७॥

दोहा

आकाश में बादलों ने और भूमि पर कमल और जल ने कालेपन को इसप्रकार छोडा कि जैसे योगाभ्यास (अपने अपने विषयों से इंद्रियों को खींचने) से आत्मा इंद्रियों के विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) को छोड देता है, और योगविद्या के जाननेवाले जती के समान सूर्य ने पूरक (श्वास को खींच कर भीतर भर लेने) की रीति से जल को अपनी किरणों में भर कर कुंभक (भीतर भरेहुए श्वास को निश्चल करके रोकने) की रीति से रोक रक्खा. फिर रेचक (रुकेहुए श्वास को बाहिर छोड़ने) की भांति अत्यंत रख कर निकाला और सुंदर तलाव, नदी, झील और कठिनाई से खोद कर किया जावे ऐसे जल में कुमोदिनी (रात्रिविकाशी कमल) परम शोभा को धारण करने लगे, जैसे कि वीरपुरुषों का मुख शस्त्रों के घावों से और शरण आयेहुओं को शरण रखने से शोभायमान होता है ॥ ६ ॥ ऐसे समय में नंद उपनंद आदि सब गोप अच्छी वर्षा के सुख के लिये इंद्र का यज्ञ करने की सामग्री इकट्ठी करने लगे तब कृष्ण ने कहा कि हम लोग नतो करसे हैं और न बनिये हैं भाग्य ने अपने को गोप बनाया है, इसकारण से गोवर्धन पर्वत के निमित्त यज्ञ करना चाहिये; क्योंकि अपने गैयां, वन, पर्वत येही सुंदर देवता हैं. और फिर यह भी सुनते हैं कि इस पर्वत में बहुत समृद्धि है, इसकारण से स्वतंत्रता से विहार करना बने ॥ ७ ॥

गोन रहैं बिनु बन गिरिन, इन जुत गो इम इष्ट ॥
इनहित मखबर याहितैं, देखहिं व्हैहि जु दिष्ट ॥ ८ ॥

षट्पदी

मत अखिलन यह मन्नि अद्रि हित मख आरंभिय,
पय१दहि२पललं३अपूप४विविध ओदन पकाय लिय ॥
सो सकटन सब सज्जि गये व्रजजन गोवर्द्धन,
तिहिं सिर सब उपँहार भरे नानाविध भोजन ॥
करि अन्नकूट अर्चन करिय सिसु गोपिन संजुत सबन,
इक रूप अपर हरि धरि अतुल मैं गिरि कहि किय सब असन
गउन पुज्जि गिरि एह सबन करवाय प्रदक्खिन ॥
सहँसन द्विजन जिमाय बहुरि आये सब स्वबिपिन ॥
यह गिनि दर्प अपुब्ब सक्र बुल्लिय संवर्तक,
अक्खिय सठ आभीर कछुन जे हुव मखकर्तक ॥
किय इष्ट धेनु अर्भानुमत तिन धेनुन जुत ब्रज सहित,
मैं भीर प्रचुर बरखहु मुदिर अब गोपन बोरन उचित ।९०।
संवर्तक गन जलद सुनत छाये व्रज उप्पर,
अभ्रमुप्रिय आरोहि भीर हुव संग पुरंदर ॥
पवन १ सलिल २ करका ३पखान ४संपा ५असनिन६सह,
उपडि घोर आसार लगे डारन अति आग्रह ॥

गैयां वन और पर्वत विना नहीं रहती, इसकारण से इन (वन और पर्वत) सहित गैयां अपने प्रिय हैं, इसीकारण से पर्वत के अर्थ यज्ञ करना श्रेष्ठ है, जो भाग्य होगा सो होगा, करके देखें ॥ ८ ॥१पर्वत के लिये२मांस ३आटा ४अन्न५छकड़ों में६उस पर्वत के७ सामग्री८ पूजन ९ कृष्ण अपना बड़ा भारी दूसरा रूप धारण करके 'मैं पर्वत हूं' यह कह कर सब सामग्री १० भोजन कर गये११ अपने वन(वृंदावन)में१२घमंड१३अपूर्व१४इंद्र ने१५मेघों को१६बुला कर कहा कि मूर्ख१७अहीर कुछ भी नहीं वे भी यज्ञ को१८काटनेवाले होगये और१९बालक की सलाह से गैयाओं को अपना इष्ट करलिया२०उन गैयाओं स हित२१अत्यंत२२जल२३मेघों के समूह२४बादल२५एरावतपर२६चढकर२७इंद्र २८जल२९ओला (गडा) ३० पाषाण (पत्थर) ३१बिजुली ३२ वज्र३३मेघधारा

बहु सुरभि[1] पिक्खि प्रानहु तजत जानि बइर बासव[2] करिय
साँवलै बाल सत्तम ७ बरस इक १ नख वह गिरि उद्धारिय[3]॥११॥
तरुन[4] छल्लि करकान[5] छुलत साखाभर[6] तुट्टत,
असनिन पाँत लदाव गुमट मंडप गृह फुट्टत ॥
पवन फेट गिरिकूट[8] लगत लुंबत लहरावत,
बिज्जुन[9] पात दरारि पुहवि[10] नैंक न जंक[11] पावत ॥
कहि सुनि न सकैं कहुँ कोउ किहिं कतिन[12] त्राहि मन करि करिय,
साँवलै बाल सत्तम७बरस तदिन[13] अद्रि[14] नख उद्धरिय ॥१२॥
बाँसबसे[15] बनि संग प्रबल संवर्तक प्रेरत,
वृंदावन पर बैर बिरचि बज्रन भट भेरत ॥
ब्रजके सब जन बुल्लि[16] अखिल[17] धन जुत गिरि अंतर,
रक्खि रु तिहिं करि अभय छाय लिय दूर दिगंतर[18] ॥
नहिं छुवन नीर नैंकहु दयो करि करि घन थक्के गहर,
साँवलै धरिय सत्तम ७ बरस पब्बय नख छप्पन पहर ।१३।

दोहा

यह लखि कछु बिगरयो न गिनि, परयो हरि हु[19] हरि[20] पाय
नुति[21] विधाय[22] दिन्नौं सकल, हेलन[23] माफ कराय ॥१४॥
कहिय बहुरि गोलोकके[24], गोगन[25] अक्खिय[26] मोहि ॥
यातैं मम गजघंट जल, सिंचो माधव तोहि ॥१५॥
इम कहि सित इभ घंटलै, पूरि पुण्यजल[27] ताहि ॥

---

१ बहुत गैयाओं को प्राण छोडते देख कर २ इंद्र ने वैर किया है यह जान कर ३ उठाया ४ वृत्तों पर ५ओलों ६ से भार से ७वज्र के पडने से ८शिखर ९ बिजुलियों के पडने से १० भूमि ११ चैन १२ कितनेक अपने मन में ही रक्षा करो यह कहने लगे १३ उस दिन १४ पर्वत नख पर उठाया १५ इंद्र के सदृश १६ बुला कर १७ संपूर्ण धन सहित १८ दिशाओं के अंतर तक १९ इंद्र भी २० कृष्ण के २१ स्तुति २२ करके २३अपराध २४कृष्ण के लोक मे२५ गैयाओं के समूहों ने २६ अभिषेक करने को कहा है ऐरावत की ६ट को २७ पवित्र जल से भर कर.

करि अभिसेकन कन्ह कै, सक्र[1] कहिय पुनि चाहि ॥ १६ ॥
अर्ज्जुन पांडव अंस मम, कुंती जाठर[2] जात[3] ॥
हरि ताकँहँ रक्खहु सदा, अपनौं जानहु तात ॥ १७ ॥
तव सहाय ह्वैहैं वहहु, भार उतारन माँहिँ ॥
हरिकी[4] इम सुनि कहिय हरि[5], यह सब स्वीकृत[6] आँहिँ[7] ॥१८॥
जयहिँ[8] नकोऊ जित्तिहै, मैं रहिहौं भुव जाव[9] ॥
इम कहि सक्रहिँ[10] सिक्ख दिय, श्रीपति सदय[11] स्वभाव । १९ ।
करि आलिंगन कन्हको अभ्र[12] द्विरद आरूढ ॥
प्रविस्यो त्रिदिव[13] पुरंदर[14]हु, गति प्रभुकी लखि गूढ[15] ॥ २० ॥
हरिहु गोप गोपिन सहित, आये ब्रज अखिलेस[16] ॥
इक्क समय बिहरत इमहि, बिलसत सरद बिसेस ॥ २१ ॥
कामपाल[17] जुत बेणु[18] कल, ईस[19] रांका[20] बन अंत ॥
छाँडि हरि सस्मर[21]स्वश्वर मधुर, ललित त्रिभंग[22] लसंत ॥ २२ ॥

हरिगीतम्

यह बेणु कल[23] सुनि गोपिका ब्रज छोरि सम्मुह ही चली,
अवरोध[24] बंधुन लंघिकैं न रुकी गई स्मरउज्झली[25] ॥
न दई जु[26] जान सु[27] पुण्य१अघ१दुव२भुम्मिमुक्त हि ह्वै गई ॥

१ इंद्र ने २ उदर से ३ पैदाहुआ ४ इंद्र की ५ कृष्ण ने ६ मंजूर ७ है ८ अर्जुन को ९ जब तक १० इंद्र को ११ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) ने दयालु स्वभाव से १२ ऐरावत पर चढ कर १४ इंद्र १३ स्वर्ग में गया १५ छिपीहुई १६ सब के स्वामी १७ बलदेव सहित १८ बंसी का मधुर शब्द १९ आश्विन की २० पूर्णिमा २१ काम सहित २२ शरीर में सुंदर तीन बल शोभायमान होकर २३ बंसी का मधुर स्वर २४ जनाने से २५ कामदेव से उलझी हुई २६ जिनको नहीं जाने दी २७ वे पुण्य पाप दोनों बराबर होजाने से अर्थात् कृष्ण के पास जाने की उत्कंठा मन में रहने से पुण्य, और नहीं जाने से पाप, ये दोनों बराबर होजाने से भूमि पर ही मोक्ष को प्राप्त होगई (पुण्य अधिक रहने से पुण्यफल, और पाप अधिक रहने से पापफल भोगना पड़ता है, और जब ये दोनों बराबर होजाते हैं तभी मोक्ष होना मानते हैं) और जो कृष्ण के पास गईं उनकी शिक्षा पाकर

रु गई सु कन्हहि पास सिक्खतही अहम्मतिमैं भई ॥ २३ ॥
हरि अन्य देस गये तहाँ सब कृष्ण ह्वे रमनैं लगी,
पदचिन्ह खोजत औरके पद संग देखि चली ठगी ॥
अवचाय * पुष्पनको कर्यो हरि सो लख्यो कहुँ जायकैं,
कहुँ संगकी तियको कलाप[1] गुथ्यो सु ठौरहु पायकैं ॥ २४ ॥
पुनि संगकीहु सगर्ब जानि टरे जनार्दन ताहुसौं,
इत्यादि सब लखतीभई थल चुंबि चिन्हन बाहुसौं ॥
गहनाटवी[2] पुनि अग्ग जानि मुरी सबै बनि बावरी,
रहिकैं जमी तट[3] कृष्ण चेष्टित गानकी रचना करी ॥ २५ ॥
तँहँ भक्ति कातर[4] कन्ह आय बिलासि गोपिनकौं लई,
रचि रास लास[5] प्रसन्नता सबकोहि मानस[6]कौं दई ॥
प्रतिगोपिका बनि कृष्ण हत्थन हत्थ बंधन दै नचे,
मनि मंजु भूखन[8] भूरि[7] सिंजित सोर संकुल[9] ह्वाँ[10] मचे ॥ २६ ॥
फरके अधोपट[11] घेर घुम्मि बनाय डेरन लौं भये,
सिर चीर वेग समीर[12]सौं बिथुरे वितानन[13] लौं छये ॥
कटिसूत्र[14]१नूपुर२घंटिका झननंकि झल्लरि लौं बनीं,
करफूल[15] कंकन कूजना[17] तरु चंपके पिक[18] ह्वे तनीं ॥ २७ ॥
स्वर मंद्र१मध्य२रु तार३मग्गनहार ग्रामनमैं फिरे,

ब्रह्मस्वरूप(अहंब्रह्म)होगई ।२३। दूसरे स्थल में कृष्णके चरणोंके चिन्ह खोजते समय उनके साथ दूसरे पदचिन्ह देखकर *पुष्पोंका छेदन १माथा गूंथा।२४। साथ की स्त्री को घमंड सहित जानकर श्रीकृष्ण उससे भी जुदा होगये, इत्यादिक स्थलों को देखती और चिन्हों को हाथों से चूमतीहुई आगे २ गहन वन जान कर बावली सी बन कर पीछी फिरी, और ३ भूमिक्षेत्र में कृष्ण के समान चेष्टा करके गाने लगी ॥ २५ ॥ ४ भक्ति के कायर५ नृत्य ६ मन को प्रसन्नता दी ७ बहुत ८ भूषणों के शब्द का सोर १० वहां पर ९ अवकाश रहित होगया ११ लहँगे १२ माथे के चीर पवन से फैलेहुए १३ डेरे (सामियाना) के समान छागये १४ कटिमेखला [कणगती] १५ घूघरों का झनकार १६ हथफूल और कड़ों के १७ शब्द ने चंपे के वृक्ष की १८ कोयल के समान बिस्तार किया ॥ २७ ॥ मंद, मध्य और उच्च तीनो प्रकार के स्वर याचकों के

तउ दुस्थ तीन३हिमैं थके न चतुर्थ४सौं कबहू भिरे ॥
परिवर्तके श्रम काहु कन्हर कंध बाहु लता दई,
अवलंबके हित बल्लरी तनु कलपपादपपैं गई ॥ २८ ॥
कटिनम्र अंग त्रिभंगको करकंज काहुक चुंबयो,
कुचभार लंक बिसंक तुट्टत जानि आश्रयकैं लयो ॥
इकसार भेद प्रकार बर्जित रासको फिरनौं लस्यो,
आवर्त अद्भुत जानि यह शृंगार बारिधि मैं बस्यो ॥ २९ ॥
तार्तीय१सप्तक७मूर्च्छना जमुना प्रतिध्वनि पूर्ण्ण व्है,
बढिबेलगी सु बिथारि बीचि२न ज्यौं छकी सिर घूर्ण्ण व्है ॥
बक्षोज चूंचुकतैं उडैं मनिहार हारन बल्लरी, ॥
मनु चक्रबाकन चंचुतैं हुव दूर सैवल मंजरी ॥ ३० ॥
बलि झंकु झंकुत झंकु झंकुट धुंकु धुंकुट बित्थरैं,
धित्था तथुंग तथुंग तत्ता थेइ थेइ धुने परैं ॥
बिछिया१अनोट२जराय जेवर३पाय पायल४त्यौं बजैं,

समान ग्रामों मे (संगीत में सात स्वरों के साथ षड्ज, मध्यम और पंचम ये तीन ग्राम हैं) फिरने लगे तोभी वे याचक तीन ग्रामों में ही थकगये, चौथे से कभी नहीं भिड़, अर्थात् तीनों ग्रामों को छोड़ कर स्वर बाहिर नहीं गये. फिरने के श्रम से किसीने कृष्ण के कंधे पर अपनी भुजलता दी, सो मानों सहारा लेने के लिये छोटी वेलि कल्पवृक्ष पर गई ॥ २८ ॥ नम्र कमरवाली किसी गोपी ने त्रिभंग (कृष्ण) के कमल रूपी हाथ का चुम्बन किया सो मानों कुचों के भार से कमर टूटजाने की विशेष शंका से सहारा लिया है. भेद भाव से रहित होकर अथवा नाच में त्रुटि न होने देकर एकसा रास का फिरना शोभायमान हुआ. इसप्रकार का अद्भुत गोलाकार फिरना देख, शृंगार लज्जित होकर मानों समुद्र में घुस गया. भावार्थ यह है कि समुद्र में जो आवर्त भ्रमर पडते हैं वे मानों शृंगार का कियाहुआ इसी का अनुकरण (नकल) है ॥ २९ ॥ १ तीसरी और सातवीं २ मूर्छना [सात रागों के साथ इक्कीस मूर्छना हैं] की प्रतिध्वनि से यमुना नदी पूर्ण होकर ३ लहरों को ४ मस्तक घुमाकर ५ कुचों की वींटाणियों से मणियों की मनो हर हारलता उडती है सो मानों चकवी की चोंच से शैवाल (जलनीली) की मंजरी दूर होगई है ॥ ३० ॥ पुनि झंकु से लेकर थेई थेई पर्यन्त जितने शब्द हैं वे

करडाल १ अंगद २ नोगरी ३ चटसाल दर्पककी सजैं ॥ ३१ ॥
मखतूल मेचक गुंफ पिट्ठि कलाप कुंतल उच्छरैं,
नथमोरके भय जोर कातर पन्नगी पलटाकरैं ॥
जिनके अलाप बसंतभव परपुष्ट पंचम ५ ढंकयो ॥
श्रुति १ जाति २ ताल ३ प्रबंध सम्मलि भास मन्मथको भयो। ३२ ।
मम नाथहू पर हाथ व्है जँहँ साथ सबहिको कर्यो,
कटपैं छुट्यो पट लंबमान किरीट कानन लौं ढर्यो ॥
कित कृष्ण लास्त्रजं १ केकिचंद्रक २ बांसिका ३ रु बिखानं ४ व्है,
बनमाल ५ बेत्रं ६ बिकीर्ण बिप्लुत कर्णिकार ७ न कान व्है ।३३।
जिम गोप नारिननैं चह्यो तिम व्हैरह्यो रु कर्यो कह्यो,
सबनैं गह्यो सबकी सह्यो सबठाँ लह्यो इम उम्मह्यो ॥
वृंदाऽऽटवी जिहिं रत्ति संकुल रागके भरसौं भर्यो,
लखि ताहि देवन छाकलै निज नाक नचहु बीसर्यो ॥ ३४ ॥
कबलौं करौं नृप राम बर्णन काव्य जो मम छंद व्है,

सब वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं १ हाथ की डाल (भूषण विशेष) २ भुज बंध ३ कामदेव की पाठशाला समझते हैं ॥ ३१ ॥ ५ काल ४ रेशम से ६ गुथा हुआ ८ केसों का ७ समूह (वेणी, आदी) पीठ पर उछलता है, सो मानों बेसर (नथ) में मोर बनाहुआ है, उसके भय से कायर होकर सर्पिणी पलटा करती है (मयूर का सर्प को खाजाना प्रसिद्ध है) जिन गोपियों के पंचम स्वर की आलाप ने वसंत ऋतु में होनेवाले कोयल के (कोयल काक के बचों को अपना समझ कर पाला करती है, इससे इसका नाम परपुष्ट है) शब्द को ढकदिया. राग में श्रुति जाति और ताल के प्रबंध के शामिल कामदेव काष आभास हुआ ॥ ३२ ॥ ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल] कहते हैं, कि मेरे स्वामी कृष्ण ने पराये हाथ में होकर सब का साथ किया ९ लंबा १० [ ] ११ मयूरपंख के चंद्वे जो कृष्ण के मुकुट में रहते हैं १२ सींग का धनुष १३ बेत की लकडी, ये सब विह्वल होजाने के कारण बिखर गये और कर्णभूषण कानों में नहीं रहा ॥ ३३ ॥ १४ वृंदावन उस रात्रि में अवकाश रहित राग के भार से भर गया १५ अपने स्वर्ग का ॥ ३४ ॥ हे राजा रामसिंह ! इसका कहां तक वर्णन करूं यदि काव्य मेरे स्वाधीन होवे और अन्य राजाओं की कथा अल्प [कम] होवे तभी बुद्धि के अनुसार कुछ वर्णन करना बनै परन्तु

तबही बनैं कछु बुद्धिलौं रु कथा महीप न मंद व्है ॥
पर अन्न भुञ्जत रावरो सु निदेस व्यर्थ न होन दैं,
रु बनैं यहै नय तो न पण्डित और कानहु कोन दे ॥३५॥
प्रभु सर्वको प्रभु रावरोहि निदेस पूरन ठानिहै,
अरु सुद्ध मो हिय तो यहैहि मदीय है यह मानिहै ॥
इसं मासकी निस पूर्णिमा१५इन रास माधवनैं रच्यो,
न तज्यो स्वसुक्र२ मनोर्थ पूरि समस्तके मनमैं मच्यो ॥३६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचतुर्भुजपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे भाण्डीरवटस्थलविहरद्रेवतीरमणप्रलम्बाऽसुरनिपातनवासुदेववासवेष्टिविध्वंसनप्रकुपितपुरुहूतसंवर्त्तकाऽऽसारप्रस्तारणगोपालगोवर्द्धनगोत्रोद्धरणशरणाऽऽगतशङ्कितशक्रसमाश्वासनरासविहारवर्णनमष्टमो८मयूखः ॥ ८ ॥ आदितः पञ्चाशत्तमः ॥ ५० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

आप का अन्न खाताहूं सो आप की आज्ञा को व्यर्थ नहीं होने देता, अर्थात् आप के वंश का ही विशेष वर्णन करता हूं और जो केवल आप के वंश का ही वर्णन करने की नीति बनै तो और पंडित कोई कान ही न हीं देवै कोई सुनै ही नहीं ॥३५॥ हे स्वामी रामसिंह ! जो सब का स्वामी परमेश्वर है वह आप की आज्ञा को ही पूर्ण करावेगा और मैं [ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल] जो शुद्ध हृदय से वर्णन करता हूं तो आप भी यही मानोगे कि यह [जो औरों का वर्णन कियाजाता है वह] भी मेरा ही है॥ १ आश्विन मास की २ अपना वीर्य नहीं छोडा अर्थात् व्यभिचार नहीं किया ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में भांडीर वट के स्थल में विहार करते समय बलदेव का प्रलम्बासुर को मारना, श्रीकृष्ण का इंद्र के यज्ञ को विध्वंस करना, क्रुद्ध हुए इंद्र का मेघधारा को फैलाना, कृष्ण का गोवर्धन पर्वत को उठाना, शरण आयेहुए शंकित इंद्र को आश्वास करना (विश्वास देना) और रासविहार वर्णन का आठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से पचास मयूख हुए। ५०

दोहा

ऐसैंही हरि इक समय, बिहरत अप्पन इष्ट ॥
धुतबिखानं[1] वृख रूप धर, आयो असुर अरिष्ट[2] ॥ १ ॥
स्रावत सुरभिन[3] गर्भ सठ, नीरद[4] छबि रबि नैंन ॥
खुरन बिदारत भुम्मि खल, बाढत अखिल[5] अचैन ॥ २ ॥
बिटपि[6] घात अंकित[7] बदन, बाधत[8] तापस ब्रात[9] ॥
लम्बकंठ ओठन लिहंत[10], उच्च ककुद[11] उमहात ॥ ३ ॥
देखत गोपी गोप द्रुत[12], किय हरि[13] कृष्ण पुकार ॥
सिंहनाद करि तिंहिं समुख, हुव बसुदेवकुमार ॥ ४ ॥
सिंह निनद[14] अरु प्रतल[15] स्वन[16], वहहु सुनत इत आय ॥
उदर सिंग मारन लग्यो, जोहि कह्यो जदुराय ॥ ५ ॥
जानु[17] मचक दे तिंहिं जठर[18], वहहि बिखान[19] उपारि ॥
ताहि हन्यौं हरि ताहि[20] करि, ब्रजजन अभय बिथारि ॥ ६ ॥

षट्पदी

पूतना१रु धेनुक२प्रलंब मारित अरिष्ट४अब,
गोवर्द्धन गिरि धरत दमत भुजगादि दुष्ट सब ॥
अंसहिं नारद कहिय तथ्य[21] जिम हुव उदंत[22] जिम,
दुष्ट[23] सुनत वसुदेव कुप्पि[24] तरज्यो सु रुकैं किम ॥
संसदि[25] विनिंदि[26] सब जादवन अक्खिय बुल्लि स्वफल्कसुत[27],
अक्रूर जाय आनहु अरहि[28] जु[29] अरि कृष्ण बल[30] बंधुजुत॥७॥

---

१ कंपातेहुए सींगों से २ वृषभासुर ३ गैयाओं के गर्भों को पटकता हुआ ४ मेघ की सी छबि और सूर्य सरीखे नेत्र ५ सबको ६ वृक्षों की घात से ७ चिन्हित (निशान सहित) है मुख जिसका ८ तपस्वियों के समूह को ९ पीड़ा देताहुआ १० ओठों को चाटताहुआ ११ ऊंची खूंदड़ (पीठ के ऊपर का मांस पिंड) १२ शीघ्र १३ हे हरि हे कृष्ण १४ गर्जना १५ थाप (ताल ठोकने) का १६ शब्द सुनकर १७ घुटने की १८ पेट में १९ उसीका सींग उपाड़ कर २० उसी सींग से २१ सत्य २२ वृत्तांत २३ कंस २४ क्रोध करके धमकाया २५ सभा में २६ विशेष निंदा करके २७ अक्रूर को २८ शीघ्रही २९ जो मेरा शत्रु ३० भाई बलदेव सहित

त्रिष्णु अंस बलदेव१कृष्ण२सम मारक[१] कहियत,
मन यातैं मामकहु[२] चपल तिन मारन चहियत ॥
धनु उच्छव ह्वैहैं इहाँहु तिथि कल्हि चउद्दसि१४,
मल्ल नियुद्ध[३] निमित्त बेग आनहु तिन हिय बसि ॥
चाणूर१मल्ल मुष्टिक२चतुर तोसल३मम अरि मारिहैं,
वा[४] नाग[५] कुवलयापीड४यह प्रबल निसंक पछारिहै ॥ ८ ॥
पुनि वसुदेव१रु नंदगोप२मुख[६] खल हम मारहिं,
उग्रसेन३मम जनक[७] मारि भुव आन बिथारहिं ॥
तोबिनु जादव और सत्रु हमरे हनिहैं सब,
यातैं नंद निकेत[८] जाय अर्भक[९]२आनहु अब ॥
दै सिक्ख दानपतिकों[१०] इम रु केसी प्रति पठयो हुकम,
सुत गोपबेस बसुदेव के जाय नंद ब्रज हनहु जुम[११] ॥ ९ ॥
स्वामि कथित अनुसार असुर केसी हय आकृति,
वृंदावन गय बेग सफन[१२] दारत[१३] भुव संप्रति[१४] ॥
सटा[१५] लोम संहात बारिवाहन[१६] बिखरावत,
लंघित रवि ससि गैल असह कुद्दत उफनावत ॥
निखिलन[१७] डरात हेसा[१८] निनद[१९] पहुँच्यो ब्रज कलकल[२०] करन
गोपी रु गोप कातर[२१] गये सब रक्खहु कहि रहि सरन ॥ १० ॥
बासुदेव तब बेग कह्यो केसी आवहु इत,
तोरौं दसन[२२] त्वदीय[२३] जथा[२४] पूषाके[२५] स्मरजित[२६] ॥
दै इम बचन प्रतोद[२७] हत्थ हयमुख दिन्नौं हरि,

---

१ मेरे मारनेवाले २ मेरा भी ३ मल्लों से बाहुयुद्ध के कारण ४ अथवा ५ हाथी ६ आदि ७ पिता ८ घर ९ बालकों को १० अक्रूर को ११ दोनों को ॥ ८ ॥ मालिक के कहने माफिक केशी नाम राक्षस घोड़े का स्वरूप करके १२ खुरों से १३ खोदताहुआ १४ अभी [इसी समय] १६ बादल रूपी १५ गरदन के केसों [केसवाली को बिखेरताहुआ १७ सब को १८ हींसने के १९ नाद से २० ब्रज में कोलाहल करने को २१ कायर २२ दांत २३ तेरे २४ जिस प्रकार २५ पूषा के २६ महादेव ने २७ वचन रूपी चाबक.

दरी[1] बिच किं[2] दंभोलि[3] झाट रद[4] तास गये झरि ॥
जगदीस बाहु बढ़ि तहँ सजेव[5] खंड दोय खलके करे,
सोनित सफेन बमित[6]े सकल प्रस्रँव[7] मल मोचत[8] पेरे ॥११॥

दोहा

नुति[9] किन्नी केसी हनत, अखिलन मोद अघाय ।
अंत रहित[10] नारद इहाँ, अकिखय कृष्णहि आय ॥१२॥
साधु साधु वसुदेव सुत, नर १ हय २ समर[11] बिनोद ॥
अप्प दिखायो[12] दुलभ यह, मम हिय छायो मोद ॥१३॥
केसव अप्प कहायहो, केसी बध करि कर्म ॥
कल्हि कंसबध लखनको, बलि[13] ऐहौं जगवर्म[14] ॥१४॥
रचिहो पुनि रनखेत रन, भुम्मि उतारन भार ॥
सो लखिहौं सब के सरन, अग[15] जंगम[16] आधार ॥१५॥
इम कहि इत नारद गये, आये घोस[17] अनंत ॥
आरुहि रथ अक्रूरहू , पहुँच्यो ब्रज परजंत ॥१६॥
तर्णनि[18] बिच निरखे तहाँ, गो दोहत गोपाल ॥
स्मेर[19] सुभग बलभद्र सह, कंसासुरके काल ॥१७॥
दियउ जाय तहँ दानपति, माधव चरनन मत्थ ॥
अक्रूरहिं गिनि भक्त उन, हिय लायो हढ हत्थ ॥१८॥

॥ पज्झटिका ॥

अक्रूर निजागम[20] अत्थ आय, सब दियउ कंस आसय सुनाय ॥
हरि कहिय दानपतिसौं[21] सहास[22], निश्चै खल पावहिं कल्हि नास ॥१९॥
बल[23] मैं अरु इतर[24] सब गोप ब्रात[25], पहुचैंगे मधुपुर[26] तात प्रात ॥

---

१ पर्वत की खाड़ी २ किधों ३ वज्र पड़े इसप्रकार ४ दांत ५ शीघ्र ६ उगलता हुआ ७ टपकताहुआ ८ छोडताहुआ ९ स्तुति १० मृत्यु से रहित [नारद को अमर मानते हैं) ११ मनुष्य और घोड़े के युद्ध का १२ आपने १३ पुनि १४ हे संसार के रक्षक १५ अचर [जड़] १६ चर [चैतन्य] के आधार १७ अहीरों के घरों में कृष्ण आये १८ बछड़ों के बीच में १९ मंदहास्य २० अपना आना २१ अक्रूर से २२ हास्य पूर्वक २३ बलदेव २४ दूसरे २५ समूह २६ मथुरा.

रचिस्वागत*इमकहि रक्खिरात्ति, स्पंदनजुतप्रातहि किन्नसंत्ति[3]।२०
लै गोप सकल नंदादि लार, बिरचिय प्रयान दानव बिदार ॥
रोदन भवं गोपिन सुनत रांव[3], छोरि रु चलेहि बसुदेव छाँवर[4] ॥२१॥
अक्रूर सहित इक१रथ अरोहि, माधव१बल२हंकिय सवन मोहि॥
कालिंदि पुलिंन[5] पहुँचत कृपाल, किय दानपतिहु मध्यान्हकाल।२२
जंमि[6] सँलिल[7] निमज्जत न्हात जत्थ, तक्क्यो स्वफल्कसुत[8] चित्रं[9] तत्थ॥
फन सहँस१०००कुंदं[10]अवदातं[11] फीतं[12], प्रभु सेव्यमान देवनपुनीत ।२३।
बासुकि मुंख[13] नागन बेष्टमान, पट नील श्रवन कुंडल प्रधान ॥
अंभोजं[14] नयन पत्राऽवंतंस[15], सब सत्वनं[16] सेवित सुप्रसंस ॥ २४ ॥
इहिं दिव्यरूप बलदेव एहि, अक्रूर सलिल अंतर लखेहि ॥
बलभद्र अंक श्रीवच्छं[17] बच्छं[18], अंभोजं[19] नयन घनस्याम अच्छ ॥२५॥
पंकजं[20]१गदा२रु दरं[21]३चक्र४पानि, माधव लये ति[22] अक्रूर मानि ॥
सनकादि महामुनि सेव्यमान, निरखत भयो सु विस्मय निधान।२६।
स्यंदनं[23] पर छोरे मैं सुहाय, इत कित उभै२हि जलमध्य आय॥
इम जानि निकासि चितये उदार, दीसे तब रथ पर दुव२कुमार॥२७॥
व्है जल निमग्नं[24] पुनि लखिय हाल, पहिलैं जिम दीसे तब कृपाल॥
बाहिर पुनि आवत रथ विसिष्टं[25], अक्रूर लखे अखिलेसं[26] इष्ट ॥२८॥
कर्त्तार[27] जानि किय नमसकार, बँलि[28] सबन किन्न पुरगमें[29] बिहार ॥

*आये का आदर १घोड़े[घोड़ों को रथ में जोते]२हुआ ३शब्द ४पुत्र ५यमुना के कनारे ६ यमुना के ७ जल में डुब की [गोता] लगा कर स्नान करते समय ८ अक्रूर ने ९ आश्चर्य देखा कि १० मोगरे के समान ११ स्वेत और १२ विकसे हुए हजार फणवाले प्रभु का पवित्र देवता सेवन करते हैं १३ वासुकि आदि सर्पों से घिरेहुए १४ कमलनयन १५ पत्र का है मुकुट जिनके १६ सब प्राणियों से सेवन कियेहुए श्रेष्ठ प्रशंसा युक्त ॥ २४ ॥ इस दिव्य रूप से अक्रूर ने इन्हीं बलदेव को जल में देखा और बलदेव की गोदी में १७विष्णु का चिन्ह है जिनकी १८छाती पर और १९ कमल के समान नेत्र. सुन्दर घनश्याम स्वरूप २० कमल २१ शंख २२ तिन को अक्रूर ने लक्ष्मी का पति मान लिया २३ रथ पर २४ डूबकर २५ युक्त २६ सब के इष्टदेव २७ कर्त्तार २८ पुनि २९ आगे जानेवालों ने.

*चरमाचल पहुँचत चंड[1]घाम, मधुपुर सबैहि पत्ते[2] ललाम ॥ २९ ॥
अक्रूर कह्यिय हरि१बल२हिं तत्थ, स्यंदन तजो रु न चलौ[3]ऽबसत्थ ॥
मैं अग्ग नगर प्रबिसत उदार, प्रबिसहु तुम पिच्छैं चरनचार[4]।३०।
बसुदेव गेह जाहु न बहोरि, खल कंस नतो कछु करहिं खोरि[5] ॥
इम कहि स्वफल्कसुत[6] पुर प्रविष्ट, पिच्छैं सन प्रबिसे अखिलइष्ट।३१।
बल१कृष्ण२लखत मधुपुर बिनोद, दुव२राजमार्ग पहुँचे समोद॥
तहँ कंस रँजक[7] सुहि रंगआर[8], पिक्ख्यो सु करत पटसंसकार[9]।३२।
जँच्चे[10] पट हरि बल तरजि[11] कंस, सुनि रजक कुवंच[12] बुल्ल्यो नृसंस[13] ॥
सिर प्रतल[14] तोरि तस जव[15] समेत, ले बस्त्र गये मालिक[16] निकेत[17]।३३।
हसि तत्थ पुष्प मंगे बहोरि, दिन्नैं सुमंजीवी[18] द्रुतहि[19] दोरि ॥
किय दंड[20]पतन रचि नमसकार, इहिं तुट्ठि हरिहु दिय बर उदार।३४।
न तजैं श्री[21] मालिक कबहु तोहि, कबहू न बित्त[22] बल हानि होहि॥
यहँ भुग्गि भोग बहु आयु अंत, दिवलोक[23] साधु[24] बसिहैं दिपंत[25]।३५।
मति[26] तव नहिं पावहिं धर्मभेद, कबहु न ह्वै संतति[27]कोहु छेद[28] ॥
पृथु[29] आयु होहु तव कुल सुपोस[30], लहहु न कदापि[31] उपसर्ग[32] दोस।३६।
इम लै प्रसून[33] बर अप्पि ताहि, आवंत राजपथ दुव २ उमाहि ॥
कुब्जा[34] कंसासुर चेटिका[35] सु, हुव भेट नैक वंकाभिधा[36] सु ॥ ३७ ॥

---

१ सूर्य के *अस्ताचल पहुंचते समय २ पहुंचे ३ अब ४ पैदल होकर ५ दोष ६ अक्रूर ७ कंस का धोबी और वही ८ रंगरेज भी था जिसको वस्त्र ९ सुधारते देखा १० मांगे ११ कंस को धमका कर, कि कौन तेरा कंस है, यह सुन कर धोबी १२ खोटा वचन बोला १३ क्रूर १४ थप्पड़ से उसका शिर तोड़ कर १५ वेग के साथ १६ माली के १७ घर १८ माली ने १९ शीघ्र २० दंड के समान पड़ कर. कृष्ण ने प्रसन्न होकर इसको उदार वर दिया ॥ ३४ ॥ हे माली ! तुझको २१ लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ेगी और तेरे २२ धन और बल की हानि कभी नहीं होवेगी २३ स्वर्ग लोक में २४ श्रेष्ठ पुरुष २५ शोभायमान होकर २६ बुद्धि २७ संतान की २८ त्रुटि २९ बड़ी आयुवाला ३० श्रेष्ठ पुत्र ३१ कभी ३२ रोग अथवा उत्पात ३३ पुष्प ३४ कुबड़ी (कमर से झुकीहुई) कंस असुर की ३५ दासी ३६ वक्रा (कुबड़ी) है नाम जिसका

अनुलेपन[1] भाजन[2] जास हत्थ, सो पै मुकुंद[3] मंग्यो समत्थ ॥
कुब्जा सुनि सादर करि प्रनाम, दिन्नौं अनुलेपन हित सकाम ।३८।
दुवरबीरन चर्चिय अप्प देह, यँहँ[4] कृष्ण करिय इक चित्र[5] एह ॥
कुब्जा दुवरचरमन चरन थप्पि, अंगुलि दुवरजाके चिबुक[6] अप्पि।३९।
कछु तमक दई अटतहि उदार, सो सरल भई लहि बपु सुढार॥
पट ऐंचि कांत[7] चलिये स्वगेह, बुल्ली[8] इम भावन[9] भर सनेह॥४०॥
हरि कहिय बहुरि ऐहौं सहेत, इम तिहिं छुराय किय अग्ग चेत॥
पुनि किन्न धनुखसाला प्रवेस, देख्यो समस्त फिरि रंगदेस ।४१।
कोदंड[10] लियउ कन्हर उठाय, टंकारि तोरि दिय दल[11] २ गिराय ॥
जिहिं निनंद[12] भोजपति त्रास जग्गि, लक्खन[13] खल पक्खन[14] कंप लग्गि।
धनु जामिक[15] जुज्झे सकल धाय, ते मारि दये निजपद[16] पठाय ॥
आगंत[17] स्वफल्कसुत[18] प्रथम जानि, पुनि चापभंग निस्वन[19] प्रमानि४३
चाणूर१मल्ल मुष्टिक२बुलाय, बुल्ल्यो[20] हि कंस हग लाय[21] लाय॥
बसुदेवतनय दुवरगोपबेस, आये तिन बुल्लहु रंग एस ॥ ४४ ॥
अदई[22] बनि मारहु रचि नियुद्ध[23], सुनियत मम मारक कृष्ण क्रुद्ध॥
देहौं तुम्हैंहु मम उचित[24] भोग, तुम सहित राज्य करिहौं निरोग।४५।
इम कहि करि मल्लन सावधान, बुल्ल्यो आधोरन[25] अप्पि दान[26] ॥

---

१ उबटन (शरीर पर लेपन करने का गंध द्रव्य) का २ पात्र, वह भी ३ कृष्ण ने बलवान्पन से मांगा सो कुब्जा ने कामयुक्त होकर लेप करने को दिया ॥ ३८ ॥ ५ यह ४ आश्चर्य की बात करी कि कुब्जा के दोनों पग अपने पगों से दबा कर दो अंगुली उसकी ६ ठौडी (डाढी) के नीचे देकर ॥ ३९ ॥ चलतेहुए ने ही थोड़ा सा बल (जोर) देदिया, जिस से उसका कुबड़ापन मिट कर सीधा सुंदर शरीर होगया तब ९ परमेश्वर से स्नेह भरके वस्त्र खींच कर ८ बोली कि हे ७ प्रिय (पति) अपने घर चलिये ॥ ४० ॥ १०धनुष को ११दो टुकड़े करके १२ उस शब्द से कंस के त्रास जगी और दुष्ट के १४पक्षवाले १३लाखों को कंप(धूजनी)लगी॥४२॥धनुष के १५पहरायत सब आकर लड़े १६ब्रह्मपद को भेज दिया (मुक्तिदेदी) १७आना १८अक्रूर का १९शब्द २०बोला २१नेत्रों में अग्नि लाकर [लाल नेत्र करके] २२निर्दयी २३बाहुयुद्ध २४जैसा मैं भोग भोगना हूं ऐसा २५हाथी के महावत को २६दान देकर कहा

अरु कहिय रंगके द्वारभाग, तू रक्खि कुबलयापीड़ नाग*॥४६॥
तिहिं करि मम मारक गोप बाल, आवहि दुव[2]मारहु तिन उताल[1]॥
इम कहि समाज बिच कंस आय, बैठो सु मंच परिखद[3] बनाय॥४७॥
जहँ मंच हजारन सज्जमान, बलि[4] उच्च नीच बैठन बिधान ॥
आसीन[5] भूप सब इक्क ओर, अंतेउर[6] इक दिस सुनत सोर ॥४८॥
इक ओर मनुज नागर[7] अपार, इक ओर ग्राम्यजन[8] लखनहार ॥
इकदिस पुरनारिन बिबिध ब्यूह, इक ओर बारिनारिन[9] समूह ॥४९॥
बसुदेव १ नंद २ अक्रूर ३ जेहु, बैठे टरि मंचन प्रांत[10] तेहु ॥
सुत मरत जानि मुख लखन आँहिं, देवकसुताहु पुर तियनमाँहिं॥५०॥
सहँसन बादितन बनि निघात, मच्चिग तहँ कलकल[11] अकसमात[12]॥
इहिं बिच उभै२हि इच्छा बिहार, दाऊ[13]१हरि२आये रंगद्वार ॥५१॥
पिल्ल्यो सु व्याल[14] तव हस्तिपाल[15], कोपित कृतांत[16] आयो कराल॥
हनि ताहि दोहु२गहि द्विरद हत्थ[17], मृगपति[18]२कि[19] रंग प्रबिसे समत्थ[20]५२
क्रिय प्रथम चरित जे जे दुहू२न, ते सुमिरि सबन देखे अनून ॥
बल्गुन[21] लखि मल्लन उभय२बीर, बल्गुने[22] लगे ति[23] २गति पथ गभीर॥
चाणूर१कुप्पि लिय कन्ह२खेल, मुष्टिक१लिय दाऊ[24]२दाव मेल ॥
छेपने[25]१रु संन्निपातावधूत[26]२, रचि उभय२उभय२मंडे अभूत[27] ॥५४॥
धुज्जिग दरारि भूतल धमंकि, संकर समाधि छुटि असुर संकि ॥
डगमगिय अद्रि ब्रह्माण्ड डोल, कसमसि भुजंग१कमठ२स२कोल[28]३
जगबिकल होत कल्पांत जानि, मचि त्रास काल बिकराल मानि॥
पविपात[29] मनहु पतलन[30] प्रहार, आघात मार प्रसरत अपार ॥५६॥

---

* अखाड़ा के दरवाजे पर कुवलयापीड़ नामक हाथी को १शीघ्र २ मंचों की सभा ३पुनि ४रीति ५बैठे ६जनाना ७नगरनिवासी ८ग्रामीण लोग ९वेश्याओं का १०मंचों के स्थल से टलकर ११कोलाहल १२अचानक १३बलदेव और कृष्ण १४ हाथी को १५महावत ने १६यमराज के समान १७दोनों दंत हाथों में पकड़ कर १८किधों १९बलवान् सिंह रंगभूमि में घुसे २०प्रबल २१सुंदर मल्लों को २२वे मल्ल २३बकरे (अज) के समान लगे २४बलदेव को २५मनोयोग से शरीर मिलाकर २६फैंकदेना २७पहिले नहीं हुए जिस प्रकार २८बराह २९मानों वज्र पड़े जैसे ३०थप्पड़ों

जिमजिमनियुद्ध*हुवअतिअमान, तिमतिमलगिमल्लनघटनप्रान**
यह जानि कंस मनचित्र धारि, लक्खन वादित्रन दिय निवारि।५७।
हरि पक्करि ससंकल मल्ल पाय, चिरंकाल गगन रक्ख्यो भ्रमाय ॥
पुनि दियउ रंजक पट भू पछारि, इम लियउ कन्ह चाणूर मारि।५८।
मुष्टिक उर दै बल मुष्टि रीसि, दे जानु हन्यौं पुनि पुहवि पीसि ॥
मारिय बलि तोसल कन्ह रज्जि, खिलमल्ल गये यह देखि भज्जि५९
तब कहिय उच्च करि कंस कोप, कड्ढहु समाज अरु उभय गोप॥
गहि लेहु नंद जरि निगड पाय, बसुदेव हनहु खल कुटिल भाय।६०।
लहि कन्ह जोर यह गोप दुष्ट, सरबस्व हरहु तिनको प्ररुष्ट ॥
इमकहत कंस ढिग मलपि आय, श्रीपति सिखाहि पकरी सुभाय।६१।
डारयो उछारि खल अधर देस, ऊपरहि अप्प लै जग असेस ॥
आये सु भयो आघात उग्र, उछरे समाधि इहिं पात उग्र ॥६२॥
उठि सजव कन्ह तजि तासु तुंद, सब रंग फिरे अँचत मुकुंद ॥
इम मरत कंस तस अनुज आय, रन रचिय सुबामा बल बढाय।६३।
यह मारि दयो तब भुव अनंत, अंतेउर हाहा हुव अनंत ॥
कंटक जदुकुलको मारि कस, इम सबन अभय दिय जदुवतंस।६४।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौराड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधि-

के प्रहार*बाहुयुद्ध**बल१सांकल सहित(जो सब को जीतकर दिग्विजयी हो जाता है वह अपने पगमें सांकल रखता है, अर्थात् अपने समान दूसरा नहीं होने का यह चिन्ह है)२बहुत देर तक३धोबी कपड़े को पटके जिस प्रकार४बलदेव ने५ घुटना देकर ६ भूमि पर ७ फिर कृष्ण ने तोशल नामक मल्ल को ८ मारने में प्रीति करके मारा यह देख कर बाकी के मल्ल भाग गये ९ बेड़ी पगों में जड़ कर १० विशेष क्रोध करके ११ कृष्ण ने १२ श्रेष्ठ रीति से कंस की चोटी हो पकड़ी १३ नीचे के स्थल पर पटका और आप १४ सम्पूर्ण जगत् को लियेहुए ऊपर आये (विष्णु के शरीर में सब जगत् का वास है) १५ बडाभारी शब्द हुआ १६ उसके पड़ने से १७ शिव समाधि से उछल गये १८ शीघ्र १९ पेट को २० कृष्ण ने २१ जनाने में २२ यदुकुल के मुकुट (कृष्ण) ने ॥६४॥
श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

करणकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेवाऽरिष्टनिपातन-नारदाऽवबोधितकं साक्रूर१केशि२गोकुलप्रेषण-मुकुन्दकेशिमारण-कृष्णनारददृष्टय मल्ल१किशोर२माहात्म्य१श्वाफल्किबल१कृष्ण२मथुराऽऽनयन-वासुदेवौग्रसेनिरजकनिषूदन-मालाकारबरदान-कुब्जाकराऽनुलेपनप्रतिग्रहण-तत्सरलीकरण-कोदण्डभञ्जन-कुवलयापीड१चाणूरा२ऽसुबियोजन-बलभद्रमुष्टिक१सुवाम२ध्वंसन-शौरितोशल१कंस२विमर्द्दनं नवमो९मयूखः ॥९॥ आदित एकपञ्चाशत्तमः ॥५१॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

हरि१बल२सानुज कंस हनि, परे जनकके पाय ॥
माताहू हित जुत मिली, दुव२लिय दुहु२न उठाय ॥१॥
करन लगे वसुदेव नुति, सुमिर जन्म खिन बत्त ॥
तहँ सब माया प्रेरि किय, बंधुभाव अनुरत्त ॥२॥
जननि१जनक२गुरु जदुन जुत, पूजे सब हरि१राम २॥
उग्रसेन गद्दिय धर्‍यो, टारि सुबंधन धाम ॥३॥

पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप हैं समग का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण का वृषभासुर को मारना, नारद से सब बात जान कर कंस का अक्रूर सहित केशी को गोकुल भेजना, कृष्ण का केशी को मारना, नारद के देखहुए कृष्ण और नवीन उमर का घोड़ा इन दोनों के युद्ध का माहात्म्य, अक्रूर का बलदेव कृष्ण को मथुरा लाना, कृष्ण का कंस के धोबी को मारना, माली को बरदान देना, कुब्जा के हाथ से उबटन लेकर उसके शरीर को सीधा करना, धनुष तोड़ना, कुवलयापीड़ हाथी और चाणूर के प्राणों का वियोग करना, बलदेव का मुष्टिक और सुवाम को मारना, कृष्ण का तोशल मल्ल और कंस को मारने का नवमा मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से इक्कावन मयूख हुए ॥ ५१ ॥

कृष्ण और बलदेव छोटे भाइयों सहित कंस को मारकर पिता वसुदेव के पगों में पड़े ॥१॥ जन्म समय की बात को याद करके वसुदेव स्तुति करने लगे, तब माया को प्रेरणा करके कृष्ण ने सबको बंधुभाव में प्रीतिवाले करदिये ॥२॥ माता पिता और यादवों के बड़े लोगों ने कृष्ण बलदेव की पूजा की और उग्रसेन को कैदी खाने से निकाल कर गद्दी पर बिठाया ॥३॥

कुल जजातिकै साप यह, राज्य उचित नहि जोहु ॥
हरि अक्खिय भोछत हुकम, करहु सुरन सिर तोहु ॥४॥
यह सुभाय सुमिरत पवन, आयो आतुर तत्थ ॥
हरि कहि लावहु सक्रसौं, क[illegible] रु सुधर्मा अत्थ ॥५॥
उग्रसेन नृपके तपत, यह न सभा तुम योग्य ॥
अब मथुरा भेजहु अरंहि[1], भुव पति जदुकुल भोग्य ॥६॥

हरिगीतम् ॥

यह सुनि सुधर्मा इंद्रसौं द्रुत[2] जाय मारुत[3] मंगई,
सुनि सक्रहु हरिको निदेस[4] सभा वहै द्रुतही दई ॥
पवमानहू[5] द्रुत आनि जो जदुवंस भोग्य सभा करी,
बल१कृष्ण२पुनि नरभाव लै मति अस्त्रसिक्खनकौं धरी ।७॥
सादीपिनी द्विजपैं स सिक्खन दोहु उज्जइनीं गये,
धनुबेद चोसठि ६४ द्यौसमैं सरहस्य[6] संग्रह सिक्खये ॥
लवणोद[7] माँहिं प्रभास तीरथ पुब्ब पुत्र हन्यौंगयो,
निज दक्खिना गुरु सोहि दोउ२न देखि दुर्जय मंगयो॥८॥
बल१कृष्ण२मंगिय सिंधुसौं[8] तब सिंधु अंजलि[9]कैं[10] कह्यो,
दर[11]रूप मारक[12] पंच[13]जन दिति[14]जात मो जलमैं रह्यो ॥
तब कन्ह पैठि समुद्रमैं खल संखरूप सु मारयो,

कृष्ण ने कहा कि ययाति के श्राप से यह (यादव) कुल राज्य योग्य नहीं है तौ भी मैं हूं तब तक देवताओं पर हुक्म करो ॥४॥ यह सबको सुनाकर पवन को याद किया सो जल्दी ही आया, जिसको कृष्ण ने कहा कि इंद्र से कहकर देवताओं की सभा यहां लाओ ॥५॥ १ शीघ्र, वह सभा पृथ्वीपति यादवों के भोगमे योग्य है २ शीघ्र ३ पवन ने ४ आज्ञा ५ पवन ने ६ अभिप्राय सहित ७ क्षार समुद्र में प्रभास तीर्थ में कृष्ण के गुरु सान्दीपिनी नामक ब्राह्मण का पुत्र मारागया था सो इन दोनों को दुःख से जीतने में आवे ऐसे जान कर वही अपना पुत्र दक्षिणा में मांगा ॥८॥ ८ समुद्र से ९ हाथ जोड़ कर १०कहा कि ११ शंख रूप को धारण करनेवाला १२ संन्हाद का पुत्र जो पांच जनों से पैदा हुआ है वह१४दैत्य उस ब्राह्मण के पुत्र को१२मारनेवाला मेरे जल में रहा था.

दैर[1] पांचजन्य तदीय अस्थि[2] स्वहत्थ पंकज[3] धारयो ॥ ९ ॥
ध[4]मि ताहि बीर अ[5]लब्ध द्विजसुत दारहु[6] संजमिनी[7] गये,
जम जित्ति[8] द्विजसुत[9] यातना सन कड्ढि लै गुरुपै ठये ॥
तिहिँ अप्पि आत्मज तास आसिख पाय मधुपुर[10] आयकैं,
दिय उग्रसेन नरेसकौ सब राज्यऋद्धि[11] जमायकैं ॥ १० ॥
खल कंस पूरब[12] द्वै २ सुता मगधेसकी परन्यौंहुतो,
तिन जाय अक्खिय बप्पसौं[13] हमरो जु ईस हन्यौं सु तो ॥
सुनि बैन अस्ति[14] १ रु प्राप्ति २ के मगधेस कोपित व्है चढ्यो,
अच्छोहिनी[15] तेईस २३ लै दल संग बिस्तरसौं[16] बढ्यो ॥ ११ ॥
बल १ कृष्ण २ हू यह जानि अप्पन दिव्य आयुध चिंतये,
हल १ मुसल २ चक्र ३ गदा ४ सरासन खड्ग ६ ऊपरतैं[17] गये ॥
तिन लै लरे बलभद्र १ कन्हर २ भूप मागध जित्तयो,
मधुद्रंग[18] पुनि पुनि ताहुनैं घेरा बडो बल[19] लै दयो ॥ १२ ॥
इनहू अठारह १८ बेर मागध जित्ति जित्ति बिदा कर्यो,
सबभाँति दो २ हु समत्थ[20] पै नरभाव[21] कौतुक अद्दर्यो ॥
लखिकैं असंतति[22] गार्ग्य बिप्रहिं संढ[23] सालकनैं[24] कह्यो,
सुनि वाक्य सोहि समस्त जदुकुल अट्टहास[25] घनौं गह्यो । १३ ।
करि कोप जदुकुल सीस तब तप घोर गार्ग्यहु आचर्यो,
पाखान चूरन खाय खाय प्रसन्न त्र्यंबक[26] ही कर्यो ॥
सितिकंठ[27] बारह १२ अब्द[28]मैं द्विजसौं कह्यो बर लीजिये,

उस दैत्य की २हड्डियों का १पांचजन्य शंख अपने ३हस्त कमल में धारण किया उस शंख को ४बजाकर ब्राह्मण का पुत्र ५नहीं मिला तब ६दोनों वीर ७यमराज की पुरी में गये ८पीड़ा से ९पुत्र को १०मथुरा पुरी ११समृद्धि १२पहिले १३ पिता से. जरासंध की पुत्रियां और कंस की स्त्रियों के नाम १४अस्ति और प्राप्ति था १५अक्षौहिणी १६विस्तार से १७आकाश (स्वर्ग) से १८मथुरा पुरी के १९सेना २० समर्थ २१परंतु. अब यहां पर एक प्राचीन इतिहास कहते हैं. गार्ग्य नामक ब्राह्मण को २२विना संतान देखकर उसके २४शाले ने कहा कि तू २३नपुंसक है यह वचन सुन कर सब यदुवंशियों ने २५उच्च स्वर से बहुत हँसी की २६शिव को २७शिव २८वर्ष

द्विजहू कह्यो जदुबंसकेर कृतान्त[1] आत्मज[2] दीजिये ॥ १४ ॥
कहिकैं तथास्तु[3] भये तिरोहित[4] ईस[5] विप्रहु आतभो,
जवनेस इक निजनारिसौं सुत काज ताहि[6] मिलातभो ॥
जवनी जन्यौं तब गार्ग्यसौं सुत कालजवन सु जानिये,
ति[7]हिं बीर नारदसौं कह्यो हमसौं लरैं सु वखानिये ॥ १५ ॥
तुमसौं करैं रन एरिसो[8] जदुबंस नारद हू कह्यो,
जवनेस सो सुनि इक्क संकु१०००००००००००००अनीक[9] लै
द्रुत[10] उम्मह्यो ॥
जिहिं आयकैं मथुरापुरी गरदाय[11] जादव बुल्लये,
जवनेस माधव आत पुव्वहि जानि माधवनैं[12] लये ॥ १६ ॥
दिस आय पच्छिम अर्क[13]१२जोजन भुम्मि सागरतैं जची[14],
जलदुर्ग कैं[15] तहँ द्वारका अभिधान[16] रम्यपुरी रची ॥
नृप उग्रसेन प्रमुक्ख[17] सब हरिके निदेस[18] तहाँ बसे,
मथुरापुरी हरि इक्क१आय रु ह्वै निरायुध[19] निक्खसे ॥ १७ ॥
जवनेस भज्जत जानि कन्हहिं पिट्ठि मारनकौं लग्यो,
गिरिकी गुहा[20] जदुनाथ पैठत देखि सो द्रुतही भग्यो ॥
करि अग्ग[21] देव सहाय नृप मुचुकुंद असुरन मारिकैं,
जिहिं ठाम सोवत होगये अखिलेस[22] तत्थ पधारिकैं ॥ १८ ॥
मुचुकुंद भूपातिसौं हु सोवत बेर देवन यौं कही,

१ यदुवंशियों का काल२पुत्र३ऐसा ही होओ यह कह कर ४शिव ५अंतर्धान ६ गार्ग्य को ७ कालयवन ने ८ ईदृश (ऐसा) ९ सेना १० शीघ्र ११ घेर कर कालयवन (यह यवन शब्द यूनानियों का वाचक है, मुसल्मानों का नहीं, क्योंकि उस समय मुसल्मानों के मजहब का पेशवा मुहम्मद पैदा ही नहीं हुआ था) और जरासंध के आने से पहिले ही१२कृष्ण ने उसका आना जान लिया था. इसप्रकार से मथुरा को छोड, पश्चिम दिशा में जाय समुद्र से १३ बारह योजन भूमि१४मांगी१५करके१६द्वारका नामवाली १७ आदि१८कृष्ण की आज्ञा से१९वहां कृष्ण अकेले पीछे मथुरा में आये और जब कालयवन ने मथुरा को घेरा तब विना आयुध निकले२०गुफा२१ आगे देवताओं की सहाय करके२२सब के स्वामी (कृष्ण) ॥ १८ ॥ शयन करते समय मुचुकुंद

नृप तोहि जोहि जगायहै सुहि भस्म व्है मिलिहै मही ॥
हरि यों[1] गये तिहिं कंदरा[2] बर संभुदत्त[3] बिचारयो,
वह सुप्त[4] जवनहु आतही हरि जानि पाय प्रहारयो ॥ १९ ॥
खल भस्म जग्गतही भयो मुचुकंद कन्हरसों कह्यो,
तुम कोनहो हरिहू कह्यो ससिबंस[6] उद्भव मैं लह्यो ॥
बसुदेव जादवको तनूज[7] रु कृष्ण मामक[8] नाम है,
नृपहू कह्यो तब बिष्णुहो मम बेर बेर प्रनाम है॥२०॥
हमसों जुगांतरमैं पुरा[9] मुनि वृद्धगर्ग यहै कही,
जदुबंसमैं बसुदेव गृह अवतार हरि लहिहै सही ॥
सुहि अप्प[10] यों कहि भूपनैं थुति[11] मंजु[12] माधवकी करी,
निजभक्ति जानि प्रसन्न व्है बर एह ताहि दयो हरी ॥ २१ ॥
तुम भोग भुग्गहु भूप अर्जित[13] इष्ट[14] लोकन जायकैं,
पुनि जातिसुमिरन होहु ओरन होहु सत्कुल आयकैं ॥
बलि[15] मुक्ति पावहु भूप लै हरिसौं यहै बर निक्खस्यो,
नर खर्ब[16] पिक्खि रु जानि कलिजुग कालकी गतिकों हस्यो ।२२।
मुचुकुंद पब्बय[17] गंधमादन जायकैं तप आचर्यो,
हरि आय मधुपुर[18] मिच्छको[19] सरबस्व द्वारवती धर्यो ॥
बिच्छिन्न[20] नेह बढान पुनि बलभद्र[21] गोकुलमैं गये,
सबसों मिले बनमैंहु सबजुत पुब्ब[22] ज्यों रमतेभये ॥ २३ ॥
बलदेवकी रति[23] जानि अप्पति[24] बारुनी[25] पठई जहाँ,

से देवताओं ने यह कह दिया था १इसकारण से २गुफा में ३गार्ग्य को जो महादेव ने वर दिया था उसको विचार कर ४सोतेहुए उस मुचुकुंद को ५कृष्ण से ६चंद्र वंश में मैंने जन्म लिया है ७पुत्र ८मेरा ९पहिले १०आपहो ११स्तुति १२मनोहर १३ इकट्ठा कियाहुआ १४ जिन लोकों में रहने की इच्छा होवे वहां जाकर फिर तुमको अपनी जाति का स्मरण होकर इसी श्रेष्ठ कुल में आकर पैदा होओ, अन्य जाति में मत होओ १५पुनि १६छोटे मनुष्यों को देख कर, कलियुग को जान कर १७गंधमादन नामक पर्वत पर १८मथुरा मे १९कालयवन का २०तूटेहुए स्नेह को २१बलदेव २२पहिले रमे थे इसप्रकार २३ प्रीति २४ वरुण ने २५मदिरा भेजी.

ततकाल[1] आय कदंब[2] कोटर[3] बीच व्है महकी तहाँ ॥
बल[4] गंध मोदित नीपतैं[5] छटि बारुनी[6] गिरती लखी,
जुत गोप गोपिन खूब केलि[7] प्रसून[8] पत्रन लै चखी ॥ २४ ॥
बलभद्र तिहिं मद घुम्मि बिहरत अंग उज्वल स्वेद भो,
जमुनाहि अक्खिय अत्थ आवहु न्हायहैं कछु खेद भो ॥
गिनि[9] कामपालहिं मत्त जो जमुना अनादरि नाँ मुरी,
तब राम लै हल कुप्पि[10] अँचत बेग कंपित बाहुरी ॥ २५ ॥
नहि आहु जाहु न आहु यौं बल जे कहे ति[11] सहेगये,
जुत गोप गोपिन लांगली[12] द्रुत[13] बोरि पानियमैं दये ॥
तबलौं रही हलमैं बिमोचन[14] प्रार्थना पुनि हू करी,
तजिहौं बनाय हजार १००० टूक त्वदीय[15] यौं बलउच्चरी ॥ २६
बलभद्र पायन मैं परी तब छोरि लांगलतैं[16] दई,
छुटि सोहु इक१ अवतंस[17] कंज१ रु एक१ कुंडल१ लै नई[18] ॥
इत्यादि रामहिं दै उपायन[19] भानुजा[20] दुखतैं टरी,
दुव२ मासलौं बलभद्र केलि बहोरि गोकुल यौं करी ॥ २७
पुर द्वारका पुनि आय रैवत भूपकी परनैं सुता,
सुहु रेवती अभिधान[21] सील सुरूप सद्गुण संजुता ॥
सुत रेवती उर निसठ१ उल्मुक२ द्वै२ भये हलधारसौं[22],
अब कृष्णकी सुनिये कथा पुहबी[23] सु[24] पुण्यद[25] प्यारसौं ॥ २८
बैदर्भि[26] कुंडिन नैर[27] मैं नृप नाम भीष्मक हो जहाँ,
रुक्मी तदीय[28] तनूज[29] हो अरु रुक्मिणी तनया[30] तहाँ ॥

१ तुरत २ कदंब वृक्ष के ३ कोचरे से ४ बलदेव ने गंध से प्रसन्न होकर ५ वृक्ष से ६ मदिरा ७ क्रीड़ा करते ८ फुलों की पखुड़ियों और पत्रों में लेकर चाखी ९ बलदेव को मदमत्त जान कर उनका अनादर करके जमुना नदी नहीं मुड़ी १० क्रोध कर ॥ २५ ॥ मत जा, मत आ, आ, इस प्रकार बलदेव ने कहा ११ वह सब सहन किया और १२ बलदेव को १३ जल्दी १४ छोड देने की १५ तेरे १६ हल से १७ कमल का मुकुट १८ नमस्कार किया [झुकी] १९ नजराना २० यमुना २१ रेवती नाम २२ बलदेव से २३ पृथ्वी पर २४ सो २५ पुण्य की देनेवाली प्यार से सुनो २६ विदर्भ देश में २७ नगर २८ उसका २९ पुत्र ३० पुत्री

जिहिं कन्हही मनतैं चहे अरु कन्ह जो मनतैं चही,
पर चेदि[1]राजहि दैनकी मगधेस[2] अग्रज[3]तैं कही ॥ २९ ॥
संबंध रुकमिनिको तबै सिसुपालसौं रुकमी कर्‍यो,
सिसुपालहू मगधेस[4] आदिक लै बरात बडी सर्‍यो[5] ॥
जहँ दंतबक्र १ करूप पौंड्रक बासुदेव २ महाबली ॥
मगधेस ३ साल्व ४ विदूरथाँ[6]ह्वय ५ आदि जन्य[7]र्तती[8] चली ॥ ३० ॥
कुल स्वीय संजुत राम १ कन्ह २ हु व्याह देखनकौं गये ॥
इक १ रत्ति[9] पूरब लग्नसौं हरि रुक्मिणी हरते भये ॥
तबही बिदूरथ १ बासुदेव २ करूस ३ जो सुनि नाँ कही ॥
हुव कन्ह सम्मुह रारिमैं तरवारिमैं न कुमी रही ॥ ३१ ॥
बलभद्र मुँख[10] जदुबीर मुरि तब भूप तीनहिं जित्तये ॥
छकि लोह आकुल ऐं[11] रहे बहु दो २ हु ओर हनैं गये ॥
रुकमी कह्यो तब हारि ग्वालनतैं न कुंडिन[12]मैं धसौं ॥
न बिबाहि रुक्मिनि चेदिराजहिं और ठामहिं मैं बसौं ॥ ३२ ॥
तिहिं[13] घाय दै भुव पारि तास[14] समस्त[15] सेनहिं मारिकैं ॥
तिहिं[16] व्याहि रक्खस[17]व्याहसौं गय कन्ह गेह पधारिकैं ॥
सुत रुक्मिणी उर कन्हसौं मदन[18]ावतार बली भयो ॥
प्रद्युम्न नामक होतही हरि ताहि संबर[19] लैगयो ॥ ३३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकबासुदेवजन्मकालसामीप्यसमयसमानाऽधि-

जिसने मन से कृष्ण को ही पति करना चाहा और कृष्ण ने भी जिसको मन से चाही ॥ ३० ॥ १ चन्देरी के राजा (शिशुपाल) २ जरासन्ध के ३ बडे भाई को ४ जरासन्ध ५ चला ६ विदूरथ नामक ७ जनेतियों (बरातियों) की ८ पंक्ति ॥ ३० ॥ ९ एक रात्रि पहिले १० आदि ११ रुक्मी आदि पीछा करनेवाले १२ कुण्डिनपुर में १३उस रुक्मी को १४उस रुक्मी की १५ सब सेना को १६ उस रुक्मिणी को १७ राक्षसविवाह से विवाह कर (मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच) १८कामदेव का अवतार १६ सम्बर नाम दैत्य चुराकर लेगया ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणके तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

करणकश्रीकृष्णचरित्रे वासुदेव १ संकर्षण २ पित्रभिवादननृपो-ग्रसेनगद्दिकोपवेशनसुधर्मासदःसमाऽह्वयन-धनुर्वेदोपाध्यायसान्दीपिनिशिक्षासम्प्रापणकृतपञ्चजनवध १ यमजय २ तन्मृतपुत्रप्रत्यर्पणश्रुतजामातृवधजरासंधमथुरावेष्टनतदष्टादश १८ कृत्वःपराजयनजलदुर्गद्वारकानिर्माणमाथुरस्कन्धावारतन्न्यसनसूचितजनुरुदन्तकालयवनविदाहनमुचुकुंदवरदानयावनवैभवोग्रसेनाऽर्पण-बलभद्रपुनर्द्वि २ मासगोकुलरमणपीतवरुणप्रहितवारुणीयकयमुनाहलाकर्षणगृहीतकुण्डल १ कञ्ज २ ऽऽदितदुपायनपुनर्द्वारवत्यागमनरेवतीपाणिग्रहणबालभद्रिनिषठो १ ल्मुको २ द्भवनजितवासुदेव १ दन्तवक्र २ विदूरथ ३ रुक्मि ४ साग्रजकृष्णरुक्मिणीहरणतदौरसकार्ष्णिप्रद्युम्नकुमारोद्भवनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥

आदितो द्विपञ्चाशत्तमः ॥ ५२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम् ॥

पौंड्रक वासुदेव के जन्म समय के समीप है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कृष्ण बलदेव का पिता से नमस्कार करना, राजा उग्रसेन को गद्दी पर बिठाना, सुधर्मा (देवताओं की सभा) का बुलाना, धनुर्वेद के अध्यापक सान्दीपिनी से शिक्षा पाना, शंखासुर को मारना, यमराज को जीत कर उस सान्दीपिनी को पुत्र पीछा देना, जमाई का बध सुन कर जरासंध का मथुरा को घेरना, उस जरासंध को अठारह बार पराजित (हरा) कर जलदुर्ग द्वारका बना कर मथुरा की राजधानी से निकलना, कालयवन के जन्म का वृत्तान्त जानकर उस को जलाना, मुचुकुन्द को वरदान देना, और यवन का वैभव उग्रसेन को देना, बलदेव का फिर दो मास तक गोकुल में रमण करना, वरुण की भेजीहुई मदिरा से यमुना नदी को हल से खींचना, और यमुना से कुण्डल कमल आदि भेट लेकर फिर द्वारका जाना, और रेवती से विवाह करना, बलदेव के पुत्र निषठ और उल्मुक का पैदा होना, कृष्ण का वासुदेव, दन्तवक्र, विदूरथ और रुक्मिणी के बडे भाई रुक्मी सहित जीत कर रुक्मिणी को हरना और कृष्ण के पुत्र रुक्मिणी के औरस प्रद्युम्न कुमर का जन्म होने का दशवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से बावन मयूख हुए ॥ ५२ ॥

प्रद्युम्न संबरनैं[1] छठे६दिन सूतिकागृहतैं[2] हरयो,
दिय सिंधु डारि गिल्यो सु मच्छ तहाँहु बालक नाँ मरयो॥
सुहि मच्छ धीवर[3] मारि भुंज्जन[4] जाय संबरकौं दयो ,
तस[5] गेहिनी[6] झख[7] फारि छन्न कढ्यो सुबालक लैलयो॥१॥
मायावती[8] मनमाँहिं है यह कोनको सिसु यौं चही,
तव[9] कांत कृष्ण तनूज[10] कामवतार[11] नारद व्हाँ कही ॥
मायावती तब प्रीतिसौं प्रद्युम्न पोखि बढायकैं,
माया जु संबरसौं लई सु[12] दई समस्त पढायकैं ॥ २ ॥
सिव काम दग्ध कस्यो तबै रति[13] आस[14] उद्भव[15] चाहती,
मायामई बपु[16] कैं[17] रही गृह संबरासुरकै सती॥
मायावती अभिधान[18] जो प्रद्युम्नको इम पारिकैं[19],
जब भो जुंवा[20] तबही रही करि हावभाव निहारिकैं ॥ ३ ॥
प्रद्युम्न अक्खिय[21] मातृता[22] तजि क्यौं यहै कुटिलावती[23],
बिधिपुब्ब[24] तब हरणादि[25] सर्ब उदंत[26] ताहि कह्यो रती ॥
सुनतैंहि दर्पक[27] कुप्पि जुज्झन काल संबर बुल्लयो,
माया बिथारि चमू समेत वहैहु गज्जतही गयो ॥ ४ ॥
तब सप्त७माया आसुरी प्रद्युम्न गंजि महाबली,
निज[28] अष्टमी८करि मारि संबर[29] खूब दुष्ट चमू दली ॥

---

१ प्रद्युम्न को सम्बर दैत्य ने २ जापा के घर से ३ नाव चलानेवाले[कैवर्तक] ने वही मच्छ निकाल कर ४ भोजन करने को ५ उस सम्बर की ६घरवाली (स्त्री) ने७मच्छ का पेट फाड़ कर भीतर से बालक निकाला सो छाने लेलिया ॥ १ ॥ ८कामदेव की स्त्री ने. वहां पर नारद ने कहा कि ९ तेरा पति और कृष्ण का १० पुत्र ११ कामदेव का अवतार है १२ सो. ॥ २ ॥ महादेव ने कामदेव को जलाया जब से१३रति (कामदेव की) स्त्री१४उस कामदेव का१५ जन्म होना चाहती थी१६शरीर१७करके १८ जिस का मायावती नाम है उसने१९ पालन करके २० जवान ॥ ३ ॥ २१ प्रद्युम्न ने कहा कि २२ मातापन को छोड कर २३ कुटिलपन करती है २४ विधिपूर्वक २५ सम्बरासुर हर लाया जिस आदि २६ वृत्तान्त २७ कामदेव (प्रद्युम्न) ने ॥ ४ ॥ २८ अपनी आठवीं माया २९ सम्बरासुर को

मायावती जुत कन्हको सुत यौं नभोमग* ह्वै सर्‌यो[1],
द्वारावती [2]सुद्धांत अंतर जाय मोदित उत्तर्‌यो ॥ ५ ॥
[3]सहसाहि तिहिं लखि कृष्णा नारिन लज्जि घुंघटही लयो,
पुनि कृष्णा नारदके कहै प्रद्युम्न [4]आगत जानयो ॥
[5]बलि पट्टरानिय सत्त७ब्याहिय कन्हनैं तिन्ह जानिये,
क्रम तो न[6] है पर[7] वैष्णवाऽऽख्यपुरान वत्त प्रमानिये ॥६॥

अचरणगद्यम्

निघ्नके पुत्र यादव सत्राजितनैं अंभोधि[9]की नीर [10]महास्तवन पूर्वक [11]त्रयीतनु [12]तपनको [13]उपस्थान कीनौं ॥ ७ ॥
तासौं प्रसन्न होय आदित्य एक रूपसौं [14]अवनितल उतरि आये॥८॥

तब कह्यो जैसैं उहाँ रहैं स्तुति करतहो ऐसैंहीं अब करिहौं परंतु इहाँ आयेंकी बिसेस प्रसाद[15] चहतहौं यातैं प्रभुके तेजकौं सहिकैं दासके नेत्र निजस्वरूपकौं देख्यो चाहैं ॥९॥

यह सुनि [16]मार्तंडनैं स्यमंतक नाम महामणि अपनैं कंठसौं उतारि दूर धर्‌यो तब [17]आताम्र दीप्यमान कछुक [18]पिंगलनेत्र नारायनके रूपकौं सत्राजित नीठि नीठि देखि बहोरि महास्त[19]वसौं प्रसन्न करत भयो ॥१०॥

आदित्यसौं [20]बरं ब्रूहि सुनि सोही महामणि मंगि उनको ऊर्ध्व [21]गति [22]विसर्जन करि [23]वाकौं धारन किये [24]अकूपार [25]अंकुस [26]अवनीकौं उज्वल करत द्वारका आयो ॥११॥

---

* आकाश मार्ग १ चला २ जनाना में ३ अचानक ४ आना ५ पुनि ६ विवाह नेका क्रम तो नहीं है ७ परंतु ८ विष्णुपुराण से लिखा है सो उसकी बात प्रमाण मानो ॥ ६ ॥ ९ समुद्र की १० स्तुति ११ सूर्य के १२ तप करने को १३ नमस्कार किया ॥ ७ ॥ १४ भूमितल पर ॥ ८ ॥ तब सत्राजित ने कहा कि आप ऊपर थे तब स्तुति करता था वैसे ही अब भी करूंगा परंतु आप यहां नीचे उतर आये जिसकी विशेष १५ प्रसन्नता ॥९॥ १६ सूर्य ने १७ लाल वर्ण से प्रकाशमान १८ पीले नेत्रवाले (सूर्य) १९ स्तुति से ॥ १० ॥ २० वर मांग २१ ऊपर जाने की गति से २२ छोड कर २३ स्यमंतक मणि को २४ समुद्र ही है २५ लहँगा जिसके ऐसी २६ भूमि को ॥

तहाँके जनन भूमिभारकौं नीतावतार वासुदेवसौं कह्यो आज आपके दर्शनकौं आदित्य आवतहै तिनको आतिथ्य करिये॥१२॥

तब कृष्ण कह्यो सत्राजितकौं सूर्य नैं स्यमंतक महामणि दीनोंहै ताकौं धारन किये वाहीकौं आवत जानौं ॥१३॥

ऐसैं सत्राजित मनि पाय आलय आयो जाके प्रभाव करि वा जनपदमैं उपसर्ग१वृष्टि२व्याल३अग्नि४तोय५दुर्भिक्ष आदि काहूको भय न होत भयो ॥ १४ ॥

अरु आठ८भार सुवर्णकौं प्रतिदिन स्रावित करि करि सत्राजितकौं सत्राजित करत भयो ॥१५॥

तँहाँ भार प्रमान. पंच५गुंजा५एक१मास१सोलह१६मास१६एक१कर्ष१ च्यारि४ कर्ष४ एक१ पल१ सत१०० पल१०० एक१तुला१ बीस२०तुला२०एक१भार१ऐसे आठ८भार८अष्टापद नित्य मणिसौं निकसत रह्यो ॥१६॥

तहँ सत्राजितसौं कन्हनैं कह्यो अपनैं अधिराज उग्रसेनके उचित यह महारत्नहै यातैं उनहीकौं उपहार करिये ॥ १७ ॥

तब सो तो सुनि रह्यो परंतु कबहुक कृष्ण मंगिलैहै या लोभ करि अपनैं अनुज प्रसेनको वह महामनि दैदयो ॥ १८ ॥

या रत्नकौं जो सुचि धारन करैं तो पूर्वोक्त सब गुन प्रकट करैं रु असुचि धारकको नास करैं ताकौं धारन करि अस्वारूढ प्रसेन सिकार गयो ॥ १९ ॥

याकौं मारि कोऊ सिंह मुखासक्त करि महामनि लैजात

---

१ उतारनेवाले २घर ३देश में ४रोग तथा उपद्रव ५सर्प ६जल ७तोल विशेष जिसका प्रमाण आगे मूल में स्पष्ट लिखाहुआ है ८ टपक टपट कर ९यज्ञ में जीतने में नहीं आवे ऐसा अर्थात् उस धन से सत्राजित ने इतने यज्ञ किये कि इतने दूसरे नहीं कर सके १० यहां भार का प्रमाण बताते हैं ११ चिरमी १२ मासा १३ सोना १४ स्वामी १५ भेट १६ छोटा भाई १७ पवित्र होकर १८ ऊपर कहे अनुसार १९ अरु २० धारण करनेवाले को २१ घोड़े पर चढ कर २२ मुख में पकड़ कर

देख्यो ताकौं मारि रत्नकौं महाजरठ[1] भल्लूकराज[2] जांबवान निजबिल लैजाय अपनैं सुकुमार नाम बालकको खिल्हौनाँ करत भयो।२०।

इतकौं सत्राजित कृष्णहूकी जाचना सुनि लोभतैं प्रसेनहीकौं मानि दीनौं यातैं अब वाके धरन आय पौरजन[3] जादव कप्रसेचन मारिवेको वासुदेवहीकौं अभिसाप[4] देत भये ॥ २१ ॥

ताहि टारिवेकौं दामोदर[5] जदुकुल समेत वा परासुके[6] निरसरण[7] सरणिके[8] हय[9] खोजन लगि अग्गैं सिंह हत[10] वह कुणप भल्लूक हत पंचानन देखि[11] जांबवानकी पदवी[12] लगि एक अद्रिके[13] कटक[14] कटक[15] खरो राखि ऊपर चढि कृष्ण बिलमैं प्रवेस करत सुकुमारकी धात्री[16]तैं उल्लापनमैं[17] स्यमंतककौं सुनि दौरि वाके करतैं मानि लेत धात्रीको त्राहि त्राहि सुनि जांबवान आय त्रिलोकके तपनतैं[18] एक वीस२१अहोरात्र[19] महानियुद्ध[20] करत भयो ॥ २२ ॥

बाहिर बरूथिनीके[21] आठ८अहोनिस आयबेकी राह देखि द्वारवती[22] जाय भल्लूक[23] भंग संखधरको[24] सुनावत बसुदेव मुसली[25] मुख[26] बंधुजनन प्रेतकर्म करि दयो ॥ २३ ॥

बावीसमैं२२दिन अपनी उत्तरोतर प्रानहानि[27] जानि जांबवाननें मुकुंदकौं[28] रामचंद्रही मानि[29] स्यमंतक सहित कन्या जांबवतीकौं कृष्णके अर्थ दीनी ॥ २४ ॥

ताहुकौं पट्टरानी करि दामोदर द्वारका आय अपनैं अवरोधको[30]

---

१ बूढा २ रींछों का राजा ३ पुर के लोग ४ झूठा दोष ५ कृष्ण ६ मुरदा. प्रसन के ७ निकलने के ८ मार्ग में ९ घोड़े के खोजों में लगकर १० सिंह का माराहुआ यह मुरदा और रींछ का माराहुआ ११ सिंह को देख कर १२ पगडंडी [गैली] १३ पर्वत के १४ घेरे में १५ सेना को ॥ जाम्बवान् के पुत्र सुकुमार की १६ धाय के १७ बस्ती अथवा रस्सी में १८ तीनों लोकों के सूर्य से १९ दिन रात २० बाहुयुद्ध ॥ २२ ॥ २१ सेना के लोगों ने २२ द्वारका २३ कृष्ण को २४ रींछ ने मार डाले, यह सुनाया तब २५ बलदेव २६ आदि ॥ २३ ॥ २७ बल (पराक्रम) की २८ कृष्ण को रामचन्द्र ही जाना कि जैसे वे परमेश्वर के अवतार थे वैसे ही ये हैं और जाम्बवान् रामचन्द्र का भक्त था इस कारण से ॥ २४ ॥ २९ कृष्ण ने ३० जाम्बवती को अपने जनाने का भूषण बनाय

अलंकार बनाय सत्राजितकौं स्यमंतक सौंपि अभिसाप[1] उतारत भये सत्राजितनैं हू खिसानौं होय कन्याके संबंधकी पहिलैं औरनतैं बात करीही तथापि सत्यभामा त्रिभंगललित[2]कौं बिवाही ॥ २६ ॥

तब अक्रूर कृतवर्मा दो२हू जादवन सतधन्वासौं कह्यो पहिलैं अपनी प्रार्थना[3] ही तिनहूकौं पेलि कन्या कन्हकौं दई यातैं सत्राजितकौं मारिये तो हम सहाय हैं सो सुनि सतधन्वानैं प्रसेनके अग्रजको मारिबो बिचारयो ॥ २७ ॥

याही बेला[4]के व्यतीत बासर[5]नमैं धृतराष्ट्रके धूर्त[6]नैं पांडवनकौं जतु[7] जटित[8] निकेत[9]मैं जारे सुनि जीवते जानतहू जनार्दन[10] तो दुर्जोधनके जत्ननको जोर जारिबेकौं बारणावत पधारे ॥ २८ ॥

पिछारी सतधन्वा सत्राजितकौं मारि महामनि लैलयो जाकौं जानि रोवत रथारूढ[11] सत्यभामानैं बारणावत जाय प्रार्थना करि कृष्ण द्वारका आनैं ॥ २९ ॥

तब सतधन्वा अक्रूरकौं प्रच्छन्न[12] मनि दैकै सत१००जोजन बाँहिनी[13] बडवा[14]पैं बैठि पलायित[15] भयो ॥ सो जानि बासुदेव१बलभद्र२ सैव्य[16]१ सुग्रीव२ मेघपुष्प३ बलाहक४या हयचतुष्टय[17]४संजुक्त स्यंदन[18] समारूढ[19] होय पहुँचे ॥ तिननैं मिथिलाके महाबनमैं मरी बडवा[20]कौं तजि पदाति[21] होय पलावत सतधन्वाकौं निहारयो ॥ ३० ॥

तब कृष्ण बडवा मरी देखि बल[22]सौं कह्यो यह भूमिभाग हय[23] दोसकारक है यातैं अप्प यहाँ रथारूढ रहिये मैं पदाति होय दुष्टकौं मारि मनि लावत हौं ॥ ३१ ॥

यह कहि कन्ह रथ छोरि वाकी पिठि लागि एक१गव्यूति[24] पर

---

१ झूठादोष २कृष्ण को ३ मँगनी (मांग) ४ इसी समय के बीते हुए५दिनों में ६ धृतराष्ट्र के पुत्र ठग दुर्योधन ने ७ लाख से ८ जड़े हुए ९ घर में १० कृष्ण११ रथपर चढ कर ॥ २९ ॥ १२ छाने १३ एक दिन में चार सौ कोस चलनेवाली १४घोड़ी पर१५भागा१६कृष्ण के घोड़ों के नाम है१७चौकड़ी१८रथ पर१९ अच्छी प्रकार बैठ कर २० घोड़ी को २१ पैदल ॥ ३० ॥ २२ बलदेव से २३ घोड़ों को बीमारी करनेवाली ॥ ३१ ॥ २४ दो कोस

जाय दूरस्थ[1] सतधन्वाको सिर सुदर्सनसौं सातन[2] करि वाके वस्त्रादि हेरि अलब्ध[3]मानि पीछे आय सपथ[4] सहित कामपालसौं[5] कह्यो रत्नतो यापै निकस्यो नहीं ॥ ३२ ॥

सो सुनि महामनि चक्रीनैं[6] चुराय राख्यो जानि कोप करि काँ[7]लिंदीभेदन कह्यो रे धिक्कार तोहि महालोभी भाई जानि सहौं हौं जाहु अपनी इच्छातैं न मेरें द्वारकातैं तोसे बंधुनतैं काम है क्यौं अलीक[8] सपथ करिये असी सुनाय बासुदेवके बरजत हू बलभद्र विदेहपुरीमैं प्रबिष्ट होय बरस तीन३रहत भये रु जनकनैं आदर करि निज पस्त्य[9] पधराये इन अब्दन[10]मैं धार्तराष्ट्रि[11] दुर्योधन हलीसौं[12] गदायुद्धकी सिक्षा लेत भयो ॥ ३३ ॥

अरु कन्ह द्वारका पधारे तदनंतर[13] हायन[14] त्रय३बीतैं माधवनैं मनि न लीनौं जानि उग्रसेनादि जादवन जनकपुर जाय सीरी[15]कौं समुझाय द्वारका आनैं ॥ ३४ ॥

दीक्षितैं[16] क्षत्रिय१वैश्य२कौं कोऊ हनैं सो ब्रह्महा[17] होय यह नीति आश्रय करि स्यमंतक स्रावित[18] सुवर्णके बलसौं अक्रूर हू निरंतर सत्र[19]दीक्षाहीमैं रहत भयो ॥ ३५ ॥

पीछे अक्रूरके पच्छ[20]के भोज जादवननैं सात्वनको नाती[21] सत्रुघ्न मार्यो ताकै बैरके भयसौं स्वकीयनैं[22] सहित स्वफल्कसुन[23] द्वारकाको छोरि पलाय[24] गयो तबही या देसमैं उपसर्ग[25]१व्याल[26]२मारी[27]३अनावृष्टि४प्रमुख[28] उपद्रव होनलगे जानि सबन सहित वासुदेव१बल

१दूर परठहरा हुआ २काटकर ३मणि नहीं मिला ४सोगन खाकर ५बलदेव से ॥३२॥ ६कृष्ण ने ७ बलदेव ८ झूठे सोगन ९ घर में १० वर्षों मे ११ धृतराष्ट्र का पुत्र १२बलदेव से ॥३३॥ १३जिस पीछे १४वर्ष १५बलदेव को ॥ ३४॥ १६यज्ञ की दीक्षा लिये हुए १७ ब्राह्मण को मारनेवाला १८टपकाहुआ १९यज्ञ की. भावार्थ यह है कि मैं भी यज्ञ की दीक्षा लेतारहूं तो मुझे कोई नहीं मारै ॥३५॥ २०पक्षवाले २१ पोता २२ अपने लोगों २३अक्रूर २४भागगया २५रोग, भय २६सर्प २७महामारी (मरी) की बीमारी २८ आदि

भद्र२उग्रसेन मंत्र*करत भये, तहाँ अंधक नाम एक१जदुवृद्ध बुल्ल्यो या अक्रूरको जनक**स्वफल्क जहाँ रह्यो तहाँ ए उपद्रव नहोतभये पहिलैं स्वदेसमैं अनावृष्टि जानि कासिराजनैं स्वफल्क बुलायो ताके जातही उहाँ सुभिक्ष भयो ॥ ३६ ॥

कासिराजकी रानीकै कन्या गर्भ हो सो बारह१२बरसलौं निकस्यो नहीं तब पिताके पूछैं गर्भ कह्यो द्विजनकौं देबेकौं नित्य एक१ धेनु मिलै तो निकसौं सो स्वीकृत करैं कासिराजकै कन्या गांदिनी भई सोहु स्वफल्कहीकौं बिबाही यावज्जीव***प्रतिज्ञा पालन करत भई ऐसे प्रभाव के जनक१जननी१सौं यह अक्रूर भयो ताके गयें ए उपद्रव होनलगे यातैं अपराध छमा करि वाकौं इहाँ आनिये ॥३७॥

तब केसव१कामपाल२उग्रसेन३सब बंधुन सहित जाय अक्रूरकौं लाये तबही सब उपद्रव नष्ट होतभये तब केसव विचारि स्वफल्क१गांदिनी२के जनिबेसौं ही अक्रूर को ऐसो प्रभाव नहीं निश्चै ही याके पास स्यमंतक है यह सिद्धांत करि कन्ह सबनकौं अपनैं निकाय इकठ्ठ करि अक्रूरसे बोले हे दानपति! सुधन्वानैं तुमको मनि दीनौं है सो तो तुम ही राखो याको फल तो सबके भोग्य है परंतु बलभद्रनैं मेरी संका करी सो मिटायबेकौं दिखाय दयो चहिये ॥ ३८ ॥

तब भीत होय अक्रूर सुवर्णसंपुटतैं स्यमंतक निकासि कृष्णसौं कह्यो याके राखिबेसौं मोहि अलप सुख हू को अनुभव नहीं पवित्रता ही के प्रयत्नमैं पर्‍यो हौं यातैं अब पवित्र होहु सो याकौं लेहु ऐसी सुनि अग्रजं अर्पित अभिसाप मिटाय कृष्ण कह्यो ब्रह्मचर्य पूर्वक प्रचुर पवित्रतावारेके धारिबे योग्य यह है ताकौं प्रभूतपत्नीक मैं१तथा बारुनी व्यासक्त बलभद्र२कैसैं धारिहैं

*सलाह**पिता ***जीवन पर्यन्त १ पिता २ बलदेव ३ अक्रूर की माता का नाम है ४घर में ५ सोना के डिब्बे से ६ पवित्र रहने के यत्न में ही ७बडे भाई (बलदेव) के ८ दिये हुए ९ मिथ्या दोष को १० बहुत ११बहुत स्त्रियोंवाला १२ मदिरा के १३वशीभूत.

जदपि सत्याको[1] जनकथन[2] है तथापि[3] तुमारी सुचितामैं सावधानी अपूर्व है यातैं तुमही राखो ऐसैं कहि मनि अक्रूर ही कौं देदयो तबतैं दानपतिहू प्रकटही वाकौं कंठभूखन करि धारतभयो ।३९।

यह वासुदेवके अभिसापको क्षालन कोऊ सुनैं ताको अभिसाप नष्ट होय॥ ऐसैं कृष्णनैं जांबवती२सत्यभामा३विवाहि और हू कालिंदी४मित्रविंदा५नाग्निजिती६माद्री७लक्ष्मणा८ रुक्मिणी१ प्रमुख ए आठ८पट्टरानी विवाही तिनमैं रुक्मिणीकै प्रद्युम्न१चारुदेष्णा२सुदेष्णा३चारुदेह४सुसेन५चारुगुप्त६भद्रचारु७चारुविंद८चचारु९ चारु १० ए दस १० पुत्र चारुमती १ एक १कन्या भई॥४०

जांबवतीकै सांब १ प्रमुख१०।१,सत्यभामा कै भानु१प्रमुख १०।१, मित्रबिंदाकै संग्रामजित १ प्रमुख१०।१,नाग्निजितीकै भद्रविंद१॥ प्रमुख१०।१,माद्रीकै वृक १ प्रमुख १०।१, लक्ष्मणाकै गात्रवान१ प्रमुख१०।१ ऐसैं दस दस पुत्र एक एक कन्या सबनकै होत भये

और हू एकसतोत्तर सोलह सहँस्र१६१००राजकन्या भौमासुर के बंधनतैं छुराय वासुदेवनैं विवाही तिन हू के संतान याही क्रम तैं जानिये परंतु जैसे विवाही सो हू उदंत कहियत ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचाहुवाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मसमयसामीप्यसमयसमानाऽधिकरणकंश्रीकृष्णचरित्रे कालशम्बरप्रद्युम्नहरणच्छम्बरमारणमायावतीसहितद्वारकाऽऽगमनतोषितसूर्यसत्राजितस्यमंतकप्रापणभारप्रमाणकथनश्रुतोग्रसेनार्थमुकुन्दमार्गणानैघ्निनदनर्पणाधारितमणिप्रसेनासिंहमारणातज्जाम्बवन्निपातहरिनियुद्धतत्पराभवनसमणिविवोढजाम्बवतीकगदाग्रजगेहाऽऽगमनरत्नप्रत्यर्पणसत्यभामोद्वहनपै-

---

[1] सत्यभामा का [2] पिता [3] तोभी तुम्हारी पवित्रता में [4] मिथ्या दोष [5] मिटना [6] आदि [7] आदि [8] वृत्तान्त कहते हैं

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौण्ड्रक वासुदेव के जन्म समय के नजीक है समय का आधार जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में कालसम्बर का प्रद्युम्न को हरना, और प्रद्युम्न

तृष्वस्रीयसहायशौरिवारणावतगमनकृतवर्मा १ ऽक्रूर २ सम्पाठितसुधन्वऽसत्राजितध्वंसनपरितप्तसत्याकृष्णाऽऽनयनदत्ताऽक्रूरमणिसुधन्वपलायनत्यक्तकृष्णरथचक्रतन्मारणारुष्टमिथिलागतबलदुर्योधनगदारणशिक्षाऽनुष्ठानकृष्णप्रत्यागमनशरत्त्रया ३ ऽनन्तररामाऽपराधसकुलाक्रूरऽपलायनमहोपद्रवोद्विग्नश्रुततत्पितृमाहिमसर्वयदुसैन्यश्वाफल्किप्रत्यानयनकृष्णप्रबोधिततन्मणिप्रकटीकरणवासुदेवपट्टराज्ञ्यष्टक८सूचनतत्पुत्रादिसमासोद्देशनमेकादशो मयूखः॥११॥

आदितस्त्रिपञ्चाशत्तमः ॥ ५३ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

समय इक्क १ तजि स्वर्ग इंद्र आरुहि ऐरावत ॥

का सम्बर को मारना, मायावती सहित प्रद्युम्न का द्वारका आना, सूर्य को प्रसन्न करके सत्राजित का स्यमन्तकमणि लेना, और भार के प्रमाण का कहना, उग्रसेन के अर्थ कृष्ण का मणि मांगना सुनकर नैघ्नी (निघ्नी के पुत्र सत्राजित) का उस मणि को नहीं देना, और मणि धारेहुए प्रसेन को सिंह का मारना, उस सिंह को जाम्बवान् का मारना, कृष्ण और जाम्बवान् के बाहुयुद्ध में जाम्बवान का हारना, मणि और विवाही हुई जाम्बवती सहित कृष्ण का घर आना, रत्न देकर सत्यभामा से विवाह करना, और अपने पिता की बहिन (भुवा) की सहाय के अर्थ कृष्ण का वारणावत जाना, कृतवर्मा और अक्रूर के सिखायेहुए सुधन्वा का सत्राजित का मारना, दुखी होकर सत्यभामा का कृष्ण को लाना, अक्रूर को मणि देकर सुधन्वा का भागना, रथ को छोडकर कृष्ण का चक्र से सुधन्वा को मारना, बलदेव का रूस कर मिथिला पुरी जाना, और दुर्योधन को गदायुद्ध सिखाना, कृष्ण के पीछे आने के तीन वर्ष पीछे रामा स्त्री (सत्यभामा) के अपराध से अर्थात् सत्यभामा के पिता सत्राजित को सुधन्वा के हाथ मरवाडाला था जिस अपराध से अपने कुल सहित अक्रूर का भागना, और महा उपद्रव से घबराये हुए अक्रूर के पिता की महिमा सुनके यादवों की सेना का अक्रूर को पीछालाना, और कृष्ण के समझाने से अक्रूर का मणि को प्रकट करना, कृष्ण की आठ पटरानियों की सूचना करना, और उनके पुत्रादि का संक्षेप से कथन करने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ। ११। और आदि से त्रेपन मयूख हुए॥ ५३ ॥

१ चढकर

द्वारवती हुतें आय कहिय प्रभुसौं सब संगत ॥
नरक नाम यह असुर करत अनुचित अवनीसुत ॥
श्रुतिमारग सत्रादि होन नहिं देत जोरजुत ॥
पाताल १ नाक २ नरलोक ३ की वर कन्या १ आनी पकरि॥
मंदर सहीध्र मनिशृंग २ अरु वरुन छत्र ३ लिय प्रबल हरि।१।

दोहा

उत्कुंडलक दुव २ अमृतके, लीन छीन सपत्न ॥
कुंडल माता अदितिके, अब मम राज पर जत्न ॥ २ ॥

पद्धडी ॥

अत्तारिव उठि सक्रहित सिक्खदिय त्रिदिव यह मुनि ॥
सत्यांजुत श्रीरमन चिंति गरुडहि अगेहि पुनि ॥
दुष्ट नरकके दुर्ग प्रागज्योतिस पहुँचे जहँ ॥
सत १०० जोजन हुँत अंत पास मौरव पसरे तहँ ॥
करि सुरन काटि तिन्ह चक्रकरि अग्गैं हरि पहुँचत हरखि ॥
मुर नाम असुर आयउ सम्मुख कुपित गज्जि मुच्छन करखि ।३।

दोहा

काटे केसव खेल करि, मुर के तीन ३ हि मत्थ ॥
सत्त सहँस ७००० मुर के सुतहु, समर रहे पितु सत्थ ।४।
इतरहु पंचजनादि खल, हनि पैठे तिहिं नैर ॥
मायावी नरकहु जुर्यो, सजि अनीक अतिवैर ॥

---

२ द्वारका से ३ शीघ्र ४ निष्ठता के साथ ५ पृथ्वी का पुत्र ६ वेदमार्ग ७ यज्ञ आदि ८ स्वर्ग ९ श्रेष्ठ १० मंदर नामक ११ पर्वत से मणियों का शिखर और वरुण का छत्र जबरी से लेलिये १२ अमृत के (　　　　) उस शत्रु ने छीन लिये. १३ क्रोध करके उठे १४ इंद्र को १५ स्वर्ग की सीख दी १६ सत्यभामा सहित १७ लक्ष्मी के पति (कृष्ण) १८ प्राग्ज्योतिष नाम पुर में १९ प्रत्यंचा पर चढ़ेहुए २० बाण (चार सौ कोस तक कल से रखेहुए धनुष पर चढ़ेहुए बाण ऐसे रक्खेहुए थे कि उस देश में जानेवाला अनजान मनुष्य उनसे बिंधजावे, अर्थात् वे बाण आपसे आप चल कर मार लेवें) २१ और भी २२ पंचजन को आदि ले दुष्टों को मार कर २३ उस नगर में २४ पहुँचे २५ राक्षसी माया को जाननेवाला २६ सेना

भूसुतके* सहँसन सुभट, समर असुर संहारि ॥
सस्त्र सकल[१] तस मोघ[२] करि, लीन्नौं नरक[३]हु मारि ॥६॥

षट्पदी ॥

भौम[४] जननि जब भूमि अदितिकुंडल लै आई ॥
करि बिन्नति कर जोरि दोरि नति[५] अमित[६] दिखाई ॥
किरि[७] तनु[८] जब हरि अप्प[९] लियउ उद्धरि[१०] मुहिं आनी ॥
तब तुम[११] सपरस तनय[१२] नरक मम हुव अभिमानी ॥
तुमरोहि दयो तुमही लयो ए कुंडल प्रभु लेहु अब ॥
खिल[१३] कुलहिं देहु जदुपति अभय सिर हम धरहिं निदेस[१४] सब ।७।

दोहा ॥

हरिहु तथा कहि भौमके, लिन्नैं रतन समस्त ॥
सत उत्तर सोलह सहँस१६१००, कन्या१ कमन[१५] प्रसस्त[१६] ।८।

षट्पदी ॥

बहु बारन[१७]२ चउ४ दंत तुरग३ छहजार६००० खेत[१८]भव ॥
अरु तुरंग[१९] कांबोज४ लक्ख इकबीस२१००००० महाजव[२०] ॥
मनिमय मंदर[२१]कूट५ बरुन छत्रा६ऽऽदि कछुक तति[२२] ॥
नरकहिके किंकरन संग पठई द्वारावति ॥
कछु अप्प[२३] गरुड पर थप्पि थिर स घन[२४]स्याम सत्या[२५] सहित ॥
अदितिके दैन कुंडल अरहि[२६] गये त्रिदिव[२७] आहत[२८] अहित[२९] ।९।

दोहा ॥

जाय त्रिदिव देवन जजित[३०]. दर[३१] धमि[३२] बिजय दिखात ॥

---

*भूमि के पुत्र के १सब २निष्फल ३नरकासुर को ४भौमासुर(नरकासुर)की माता ५ नम्रता ६ बहुत ७ सूवर (वराह) का ८ शरीर ९ आपने १०उठाकर ११ तब आपके स्पर्श से १२पुत्र १३बाकी के कुल को १४आज्ञा ॥७॥ १५सुन्दर १६प्रशंसा योग्य ॥८॥ १७ हाथी १८अच्छे खेत के पैदा हुए १९कम्बोज देश के घोड़े २० बड़े वेगवाले २१मन्दराचल का शिखर २२पंक्ति २३आपने २४ घनश्याम स्वरूप [कृष्ण] २५ सत्यभामा सहित २६शीघ्र २७स्वर्ग में २९ शत्रुओं को २८मारकर ॥९॥ ३०देवताओं से पूजित ३१शंख ३२बजाकर

अप्पे[1] कुंडल आदितिकौं, नुंत[2] कहि नरक निपात॥१०॥
अति थुति[3] जब किन्नी आदिति, आक्खिर्य[4] हरिहु अखर्व[5] ॥
करहु जननि अविरत[6] कृपा, संतति[7] तव हम सर्व[8] ॥११॥
आसिख तव दिन्नौं आदिति, अखिलन होहु अजय[9] ॥
सची[10] सहित सत्याहुकौं[11], पुनि दिन्नौं बर प्रेय[12] ॥१२॥
बधू[13] जरा[14] रु[15] बिरूपता[16], कबहु न व्यापैं तोहि ॥
मम प्रसाद[17] निर्भय रहहु, सुभगापन[18] घन सोहि ॥१३॥
इम कहि कहि सक्रहि[19] अदिति[20]. क्रम पूजन करवाय ॥
रक्खे अति अनुरति[21] हरिहिं, दिव[22] सब सहल दिखाय॥१४॥

षट्पदी ॥

नंदन[23] क्रीडंत[24] निरखि पारिजातहिं[25] सत्या कहि ॥
लै मम गृह इहिं चलहु नाथ जो और प्रिया[26] नाहि ॥
सुनत पारि वह पारिजात थप्पत खगपति[27] पर ॥
जहँ आक्खिय[28] जामिकन[29] करहु अनुचित न चक्रधर[30] ॥
मथि सिंधु सुरन[31] कड्डिय यह सु त्रिदिव[32] उचित नहिं भूमितल।
लैजाहु सोहु सुनि हरि चलिय लै सुरतरु निज बाहुबल।१५।

सचरणगद्यम् ॥

रच्छकनकी[33] यह सुनि सत्या कह्यो सिंधुके मंथनतैं सुरा१ चंद्र२ लच्छी[34]३हू निकसे ते जैस सर्व सामान्य भोग्य[35] है तैसैं ही पारिजात४कौं जानौं ॥

१ दिये २स्तुति के साथ ३स्तुति ४कहा ५बहुत ६निरन्तर ७सन्तान ८सबसे ९नहीं जीतने में आवे ऐसा १०इन्द्राणी ११सत्यभामा को १२प्यारा १३हे बहू १४बुढापा १५और १६कुरूपता १७प्रसन्नता से १८सुहाग १९ इंद्र से २० आदिति ने २१ प्रीति सहित २२ स्वर्ग की २३ इंद्र के नंदन नामक बाग में २४ क्रीड़ा करते सत्यभामा ने कहा २५ कल्पवृक्ष को २६ हे स्वामी! मेरे जैसी तुम्हारे और प्यारी नहीं होवे तौ (सब से विशेष प्यारी) मैं ही हूं तो) २७गरुड़ पर रखतेहुए २८ कहा २९ पहरेवालो ने ३० हे कृष्ण! ३१ देवताओं ने ३२ स्वर्ग के उचित है ३३रक्षा करनेवालो की ३४लक्ष्मी ३५सबके बराबर भोगने योग्य है

अरु सचीके सक्रसे पतिको गर्व है तो वाके[1] अधीसकौं[2] इहाँ आहवकौं[3] आनौं ॥

शक्रकौं जानतहू मर्त्यलोक[4]बसिनी[5] मैं पारिजातकौं लिवाय जातहौं ताकी लज्जा करि जो बलिष्ठ[6] होहु सोही निवारन करहु।

तैसैंही रुक्मकनकी सुनि सचीनैं सब सुरन सहित[7] सक्र संग्राम कौं पठायो। ताके हु बर्णनमैं श्रवन धरहु ॥१६॥

तहां पास[8]१परिघ[9]२प्रास[10]३कृपान[11]४पट्टिस[12]५द्रुघन[13]६दंड७भुसुंडी[14]८भिंदिपाल[15]९संतघ्नी[16]१०सूल११गदा१२खट्वांग[17]१३कुंत[18]१४कोदंड१५परसु१६प्रमुख[19] सब सस्त्र धारत सुरनके[20] सैन्यनैं बासुदेव बेढि[21] लये ॥

अरु आहवमैं उदग्र[22] होय अपने आयुधनके आघात दये ॥

तहाँ बरुनके पासकौं गरुडनैं चंचु करि खंड खंड कीनौं ॥

अरु गदाधरनैं[23] गदासौं दंडधरके[24] दंडकौं प्रहत[25] करि पुहमीपैं[26] गिराय दीनौं ॥ १७ ॥

श्रीदकी[27] सिबिकाकौं[28] चक्रसौं चूर्ण करि सरनसौं सप्त७कील[29]कौं सतधा करि डास्यो ॥

अरु सुदर्सन छिन्न सूल रुद्रगनकौं गिराय बसु१साध्य२बिश्वेदेव३मरुत४गंधर्ब५गनकौं सारंग[30] संधेये[31] सरन करि सैंवरके[32] तूलै[33] तुल्य आकासमैं उछास्यो ॥

तहाँ उरगासनसौं[34] ऐरावत बासुदेवसौं[35] बासव[36] कराल कलह करत भयो ॥

---

१ उस इंद्राणी के २ पति ३ युद्ध करने को ४ नरलोक में ५ वास करनेवाली ६ बलवान् ७ देवताओं सहित ८ पास (जाल) ९ लोहाँगी १० लोहे की बरछी (सांग) ११ तरवार १२ कटारी १३ मुद्गर १४ अग्नियंत्र [बंदूक] १५ गोफण १६ तोप १७ महादेव के रखने का [दंड के शिर पर मनुष्य का मस्तक लगाहुआ] आयुध १८ भाला १९ आदि २० देवताओं की सेना ने कृष्ण को २१ घेर लिया २२ शस्त्रो को ऊंचा कियेहुए २३ कृष्ण ने २४ यमराज के दंड को २५ तोड़ कर २६ भूमि पर २७ कुबेर की २८ पालखी को २९ अग्नि के सौ टुकड़े करदिये ३० शार्ङ्गधनुष से ३१ सांधेहुए बाणों से ३२ कमल की डंडी के भीतर की ३३ रूई की भांति ३४ गरुड़ से ३५ कृष्ण से ३६ इंद्र भयंकर युद्ध करनेलगा

अरु अपनैं सस्त्र अस्त्र सब कटे जानि कुपित करमैं कुलिस[1]-
कौं धरत भयो ॥ १८ ॥

तापर चक्रीनैं चक्र चलायो देखि त्रिलोकमैं हाहाकार होयरह्यो।
अरु बासवनें बज्र चलायो ताहि क्रीडाही करि गर्जित गोबिंदनैं गह्यो
यह देखि पुरंदर[2] पलायनपर[3] जानि सत्यानैं[4] सुनाई; पौलोमाके[5]
प्रिय पाकसासनकौं[6] कलहमैं कातरता[7] उचित नहीं ॥

अरु सदन[8] आयेंहू सचीनैं[9] स्वागतके[10] स्थान मोहि दर्प[11] दिखायो
यातैं पारिजातकौं[12] हराय मैंही तोसौं विग्रहकी[13] चही ॥ १९ ॥

सो सुनि सक्रहू कह्यो चंडी चराचरके करतातैं हारिबेसौं तो
लज्जा काहूकौं न आवैं ॥

ऐसी नम्रता जानि कृष्ण कह्यो हे देवराज मानव[14] जे हम ति-
नको कियो अपराध छमा करि बज्र पीछो लेहु यह सस्त्रसिरो-
मनि तो तुमारेही सय सोभा पावैं ॥

इंद्र कह्यो मानव बनि मोहि मोहित क्यों करहु[15] सत्याके[16] नि-
ष्कुटमैं[17] निवास करिबेकौं ईसके[18] आदेससौं[19] देवद्रुम[20] द्वारकाको अ-
लंकार[21] ह्वै हैं ॥

अरु पापके परलोक पधारैं स्वच्छंदही[22] यह अमरालय[23] आयजैहैं ॥
ऐसी सुनि वासुदेव[24] वासवकौं[25] बज्र दे द्वारका आय सत्याके
निष्कुटमैं निलिंपिनग[26] रोपिदयो ॥

जाकौं देखतही जनकै[27] पूर्वजन्मको चिंतन होय ताके गुच्छनके

---

१ वज्र को २ इंद्र को ३ भागने पर ४ सत्यभामा ने ५ इंद्राणी के प्यारे ६ इंद्र को युद्ध में ७ कायर होना ८ घर आये भी ९ इंद्राणी ने १० आयेहुए का आदर करने के स्थान में (जहां आदर करना चाहिये था वहां पर) ११ घमंड १२ कल्पवृक्ष का हरण कराकर. १३ युद्ध १४ हम मनुष्य हैं जिनके किये अपराध को क्षमा करके यह तुम्हारा वज्र पीछा लो १५ हाथ में १६ सत्यभामा के १७ बगीचे मे १८ स्वामी की १९ आज्ञा से २० कल्पवृक्ष २१ आभूषण २२ स्वतंत्र [आप से आप] २३ स्वर्ग में २४ कृष्ण ने २५ इंद्र को वज्र देकर द्वारका आके सत्यभामा के बगीचे मे २६ देवतरु को रोप दिया, जिसके देखने से २७ मनुष्य के पूर्वजन्म की बात याद आती है

गंध करि तीन तीन जोजन बसुधातल[1] बासित भयो ॥

ऐसैं अमरतरु[2]कौं आनि नरक[3]के निलय[4]तैं पठई जे सतोत्तर सोलहसहस्र१६१००कन्या तिनकौं एक१ही लग्न पर बासुदेव बिबिध[5] बपु करि बिबाहत भये ॥

अरु प्रत्येक[6] तिनहूकै पूर्वहीके क्रमतैं एक१एक कन्या दस१०दस१०पुत्रनके प्रकर[7] ठये[8] ॥ २१ ॥

ऐसैं एक लाख इकसठि हजार अस्सी१६१०८०कृष्णके पुत्र सोलह हजार एकसो आठ१६१०८कन्या सहित एक लाख सतंतरि हजार एक सत अठ्यासी१७७१८८समस्त जानिये ॥

अरु बासुदेवकै आठ रानी भई तिनमैं व्यासाऽवतार[9]नैं बैष्णव पुरानमैं एक१रोहिनीहू लिखी तहां श्रीधर[10]नैं तो यह जांबतीकोही पर्याय[11] ठहरायो परंतु यह आठन८मैं काहूकै स्थानापन्न खटावत जानी नहीं यातैं अब[12]के अवतारकै यह नवमी९पट्टरानी मानिये ॥

रोहिनीकैहू दीप्तिमान १ प्रमुख[13] दस १० पुत्र एक१कन्या भई ॥

अरु त्रिलोकेस[14]के तनयनमैं[15] बडो प्रद्युम्न भयो ताहूनैं अपनैं मातुल[16] रुक्मीकी सुता[17] स्वयंबरमैं बाहुबलसौं जित्तिकैं बिबाहि लई ॥ २२ ॥

तामैं प्रद्युम्नकै कुमार अनिरुद्ध भयो ताहूको संबंध मातामह[18] रुक्मीके तनुज[19]की तनया[20]सौं कीनौं ॥

अरु बिबाहके समय कृष्ण १ कामपाल[21] २ प्रमुख जादवन बरूथिनी[22]की बरात बनाय भोजकट पत्तन[23] जाय बलात्कार[24]सौं

१भूमितल सुगंधित होगया २ कल्पवृक्ष को ३नरकासुर के ४ घर से ५नाना प्रकार के शरीर धारण करके ६ उन हरएक के, पहिले कहेहुए क्रम के अनुसार ७ समूह ८ हुए ९ वेदव्यास ने १० टीका करनेवाले श्रीधर पंडित ने ११ दूसरा नाम १२एवजी १३ इस कल्प में जो कृष्णावतार हुए जिनके (पुराणों के मत से प्रत्येक महायुग में कृष्णावतार होता है) १४आदि १५तीन लोक के पति (कृष्ण) के १६ पुत्रों में १७ मामा रुक्मी की १८ पुत्री को १९ नाना २०पुत्र की २१ पुत्री से २२ बलदेव आदि २३ सेना की २४भोजकटपुर २५बल पूर्वक

*बैदर्भीकौं अनिरुद्ध परिनाय दीनौं ॥

बिबाहके+अनंतर कलिंगराजनैं रुक्मीसौं कह्यो बलदेव⊛दुरोदर मैं÷दच्छ नही है यातैं बडो**ग्लह लगाय जित्तिकैं याको मान मारैं सोही सिद्धांत रुक्मी हू हृदय धरयो ॥

अरु बलभद्रकौं बुलाय द्यूतमैं दोय २ बेर हजार १००० निष्क[1] लगाय लगाय जदुबरसौं जित्यो तहाँ कलिंगराजहू दंत दिखाय अट्टाट्टहास करयो ॥ २३ ॥

तदनंतर[2] अयुत १००००निष्क ग्लह[3] लगाय बलभद्र जित्ते तथापि रुक्मी १ कलिंगराज२हमही जीते ऐसैं हसित पूर्वक बदत भये॥

तबही कुपित कामपाल[4] कोटि १०००००००० निष्कको ग्लह लगाय बहोरि जई[5] भये तदपि[6] दोहू २ दुष्ट हमही जीते ऐसैं कहि अट्टाट्टहासी[7] नर्दत[8] भये ॥

तहाँ उनको अलीकत्व[9] बलको[10] विजयीपन[11] व्योमवानी[12]नैं कह्यो सो सुनि रणरसिक रुष्ट[13] रेवतीरमण[14]नैं वाही खेलके अष्टापद[15]सौं बिदर्भ बसुधेस[16] १ को बध करि कुटिल कलिंगके[17] दसन[18] तोरि सभाको एक१थंभ उपारि उनके पच्छपाती अनेक राजा मारि डारे॥

ऐसैं अनिरुद्धकौं बैदर्भी[19] बिबाहि बरातमैं बिराजमान बलदेव बासुदेव द्वारका पधारे ॥ २४ ॥

कोऊ समय दैत्यराज बाणकी दुहिता[20] उषा जगके[21] जनक पर-

---

*विदर्भ देश के राजा की पुत्री से + पीछे ⊛ जुआ खेलने में ÷ चतुर नहीं है**बडा दाव लगा कर १ मुहर (शास्त्र में लिखे हुए तोल से सौलह मासा सोना को निष्क कहते हैं) २ जिस पीछे ३ दाव ४ बलदेव ५ जीते ६ तोभी उच्च स्वर से ७ हसनेवाले ८ गर्जना करने लगे ॥ कालिंगराज और रुक्मी का ९ झूठापन और १० बलदेव का ११ विजय पाना १२ आकाशवाणी ने १३ क्रोधित होकर १४ बलदेव ने १५ शार से १६ बिदर्भ देश के भूपति १७ कालिंग देश के राजा के १८ दांत तोड़ कर १९ बिदर्भ देश के राजा की बेटी ॥ २४ ॥ २० पुत्री २१ संसार के पिता महादेव और पार्वती को

मेश्वर१ पार्वती२ कौं रमत देखि रूच्य[3] सहित रिंसा करत भई जाकौं जानि कात्यायनी कह्यो पुत्री तोकौं सीघ्रही कमनीय[4] कांत[5] मिलिहै जो बैसाख बिसद[6] बारसी १२ के बासर[7] स्वप्नमें तेरो अभिभव[8] करिहै सोही तेरो भर्ता जानि ॥

तदनंतर[9] वाहीदिन स्वप्नमैं अनिरुद्धनैं याकौं अभिभूत[10] करी ताहीमैं मनको लय करि जाग्रतहूमैं सखीसौं तू कहाँ गयो ऐसैं कहत भई उनमत्तकी अवस्था आनि ॥

तहाँ बाणके मंत्री कुभांडकी कन्या उषाकी सखी चित्रलेखा कह्यो कोनसो कहियत जाँनैं तो बनैं ऐसैं पूछैं नीठि नीठि उमा[11] आदेस[12] आदिक बिरहको वृत्तांत कह्यो ॥

तब कलाकोविद[13] चित्रलेखा हू देव१दैत्य२दानव३गंधर्व४ बिद्याधर५ पन्नग६ जच्छ[14]७ गुज्झक[15]८ सिद्ध९ चारण१०किन्नर११ नर१२ आदि अखिल[16] सर्ग[17]के पुरुपनकी प्रतिमा[18] पट्टमैं चित्रित करि दिखाई तिनकौं देखत उषाके अंबकन[19] त्रिदसादि[20] तजि चतुर नरपंतिहीको[21] चितैबो[22] चह्यो ॥ २५ ॥

तिनहूमैं जदुबंस बिलोकत अंधक वृष्णि[23] वीरवृंद[24] बेष्टित[25] बैकुंठ[26]१ बल[27]२ प्रद्युम्न३ कौं पिक्खि[28] लज्जाजड होय अनिरुद्धलौं आँखि आवतही आली[29] यहै यहै एह ऐसैं उच्चर्‍यो[30] ॥

जब जोगगामिनी[31] चित्रलेखा हू इहाँ अनिरुद्ध आनिबेकौं पुरुपोत्तमपुरीमैं[32] प्रबेस कर्‍यो ॥

अग्गैं बानासुरहू भक्तिकातर[33] भवकौं[34] अपनैं पत्तनपाल[35] बनाय

१वर (इसी प्रकार वर के सहित रमण करने की२इच्छा(चाहना)३पार्वती ने ४सुन्दर५पति६शुक्ल पक्ष की द्वादशी के७दिन८जय[तुझको जीतेगा]९जिस पीछे१०जीती११पार्वती की१२आज्ञा१३कला जानने में पण्डित१४यक्ष१५गुह्यक १६सम्पूर्ण१७सृष्टि१८मूर्तियां(चित्र)१९नेत्रों ने २० देवता आदि को छोड़कर२१ मनुष्यों की पंक्ति को ही २२ देखना २३ अन्धक वंशी और वृष्णि वंशी यादवों के२४समूह से२५घिरे हुए२६श्रीकृष्ण२७बलदेव२८देख कर लज्जा में जड हो कर२९हे सखी३०कहा३१योगविद्या से चलने वाली३२द्वारका३३भक्ति के कायर३४महादेव३५अपने पुर की रक्षा करनेवाले (कोटवाल)

बाहुबल *दर्पित **बुल्ल्यो हे नाथ दासके हजार १००० हाथ क्यों करे इनको फल ***आहव है ता बिनाँ वृथा हे याते एक बहु सफल हु दोय रहिहैं ॥

तब हँस्मित गंभीर गिरीसं कह्यो जब तेरे निकेतनके मयूरकेतनको भंग व्हेंहै तबही तू महाप्रतिभटकौं लहिहैं ॥ २६ ॥

सो अब या समय मयुरध्वजको भंग देखि बलिबंसबिभाकर बानहू महामुदित भयो ॥

इतकौं जोगबिद्याके बलसौं अच्छरी चित्रलेखा अनिरुद्धकौं उषाके आवाँसमैं आनि अन्योऽन्य आँलिंगन कराय दयो ॥

तहाँ पृष्टक १ बिद्धक २ उद्घृष्टक ३ पीडितक ४ लतावेष्टितक ५ वृक्षाऽधिरूढक ६ तिलतंडुलक ७ क्षीरनीरक ८ प्रमुख प्रकट मिहित आठ ८ ही मुख्य आलिंगनमैं उभय २ अनुरक्त भये ॥

अरु ललाट १ नयन २ कंठ ३ कपोल ४ ऊरु ५ उरोज ६ ओठ ७ अंतर्मुख ८ आठ ८ ही अंगनमैं चुंबनके लाह लये ॥ २७ ॥

आच्छुरितक १ अर्द्धचंद्र २ मंडल ३ व्याघ्रनखांक ४ मयूरपदक ५ शशप्लुतक ६ स्मारणीयक ७ उत्पलपत्रक ८ आठ ८ ही मुख्य नखचित्र चतुर चतेरेकी तूलिकाको तिरस्कार करि रचे ॥

अरु गूढक १ उच्छूनक २ प्रवालमणि ३ मणिमाल ४ बिंदु ५ बिंदुमाला ६ खंडाऽभ्रक ७ बराहचर्वितक ८ आठ ८ ही रदच्छेद

---

*भुजबल के घमंड से**बोला***युद्ध है, उस युद्ध के बिना इतने हाथ वृथा हैं इस कारण से एक ही बहुत है और जो एक हाथ भोजनादि व्यवहार के लिये और दूसरा शौचादि के लिये सफल समझे जावें तो दो रहने चाहिये॥१हसते हुए २महादेव ने कहा। कि३घर की४मयूर के चिन्हवाली ध्वजा आप से आप टूट पड़ेगी५सामना [मुकाबिला] करनेवाले वीर को पावेगा ६ बलि दैत्य के वंश का सूर्य ७ घर में ८ परस्पर९मिलाप [प्रीति पूर्वक दोनों की देह का मिल जाना] करा दिया ॥१०अब यहां पर आठ प्रकार का आलिङ्गन, आठ प्रकार का चुम्बन, आठ प्रकार का नखच्छेद, आठ प्रकार का दन्तच्छेद, आठ प्रकार का सम्वेशन, आठ प्रकार का सीत्कार और तेरह प्रकार का पुरुषायित, लि

चित्तनमैं मोद मचे ॥

उद्भग्नक१विजृंभितक२पीडितक३प्रसारितक४वेणुदारितक५शूलाचितक६कार्काटक७परावृत्तक८इत्यादि सुवर्णनाभोक्त संवेशन प्रकार अनुष्ठित करे ॥

त्यौंही हिंकार१स्तनित२कूजित३रुदित४सीत्कृत५सूत्कृत६फूत्कृत७दूत्कृत८आठ८ही सीत्कार भेदनमैं श्रवन धरे ॥२८॥

उपसृप्तक१मंथन२हुल३अवमर्द्दन४पीडितक५निर्घात६वराहघात७वृषाघात८चटकविलासित९संपुटक१०संदंश११भ्रमरक१२प्रेंखोलितक१३इत्यादि पुरुषायित प्रयोगहू चहत भये ॥

कोऊ समय सौविदल्ल[1] जन तिनकौं रमत देखि [2]द्रुतही दैत्यराज बानसौं जाय कहत भये ॥

यातैं सुनतही जे जे प्रबीर पकरिबेकौं पठाये ते सब अनिरुद्धनैं मारे सुनि कुपित होय दैत्यराजही गहिबेकौं गयो ॥

[3]तथापि रणरसिक प्रद्युम्नके पुत्रनैं पच्छे पग दिवाये तबही असुरनके इंद्रनैं माया प्रसार पन्नगास्त्र[4]सौं अनिरुद्धकौं बांधि [5]कारामैं डारि दयो ॥ २९ ॥

द्वारका अनिरुद्धको सोक करत जादुवनसौं नारदनैं निदान[6]पूर्वक अनिरुद्धको निग्रह[7] कह्यो ॥

तब बासुदेव१बल२प्रद्युम्न३[8]प्रमुख जादवन चतुरंग[9] बानके विजयकौं सोनितपुरकी सरनि बह्यो ॥

पुरीके परिसर[10]लौं पहुँचत [11]पसुपतिके प्रेरे [12]प्रमथ आय [13]बासुदेवकी

ग्ने हैं इनका विवरण [व्याख्या, अर्थ का स्पष्ट करना]करना बहुत ही अश्लाल [लज्जा उत्पन्न करनेवाला] है इसकारण से हमने यहां इस प्रकरण की टीका करना छोड दिया है सो यदि पाठकों को इनके जानने की रुचि होवे तो वात्स्यायन कृत कामसूत्र के साम्प्रयोगिक अधिकरण के दूसरे अध्याय के प्रारम्भ से देखलेवैं ॥ १नाजर लोगों ने २शीघ्र ३तोभी ४नागपास से ५कैद में ॥ २९ ॥ ६ कारण पूर्वक ७ बन्धन ८ आदि ९ हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल यह चार प्रकार की सेना शोणितपुर के मार्ग मे चली १० पुर के समीप की भूमि मे ११ शिव के भेजहुए १२ गण १३ कृष्ण को

[1]बाहिनीसौं लरत भये ॥

तिनकौं गिराय जदुबीर दैत्यराजके [2]दुंगके समीप गये ॥३०॥

तहाँ तीन३चरन तीन३मस्तक धरत [3]महेश्वरको [4]महाज्वर आय [5]केसवसौं कलह करि बलभद्रपैं अपनो भस्म सस्त्र डारत भयो॥

ताके तापतैं [6]निमीलितनयन [7]नीलांबरनैं [8]अच्युतकें अंग संग करि नीठि नीठि [9]स्वास्थ्य लयो ॥

[10]तदनंतर [11]माहेश्वरको अपनैं अंगमैं [12]आवेश जानि तापैं बासुदेवनैं वैष्णव ज्वर चलायो तानैं अच्युतके अंगतैं माहेश्वर निकासिदयो॥

अरु [13]वैष्णवके बढतही ब्रह्मादि [14]बिबुधन प्रजाके पालनकी प्रार्थना करी सो सुनि अपनौं ज्वर अपनैंही अंगमैं अच्युतनैं लीन करि लयो ॥ ३१ ॥

तदनंतर [15]जुद्धकौं जे चिंतन करिहैं ते [16]विज्वर व्हैहै ऐसैं अच्युतसौं अरज करि माहेश्वर [17]पलाय गयो ॥

तब [18]आहवनीय१[19]गार्हपत्य२[20]दक्षिणाग्नि३[21]सभ्य४[22]आवसथ्य५ए पञ्च५ही अग्नि आय लरे तिनकौं जीति प्रभुनैं [23]पलचारनकौं असुरनको [24]अनीकं चूरि दयो ॥

तबही भक्तकी भीर होय [25]सक्तिधर सहित [26]कपाली केसवसौं आय लरे ॥

अरु [27]अनंतके [28]उत्तमांगतैं [29]अवनीकौं डगात दोहू २ रसिक रन-

१ सेना से २ पुर ॥ ३० ॥ ३ महादेव का पैदा किया हुआ ४ बडा ज्वर [बुखार] ५ कृष्ण से युद्ध करके ६ मिचे हुए नेत्रों से ७ बलदेव ने ८ कृष्ण के अंग के संग से ९ नैरोग्यपन १० जिस पीछे ११ शिव के ज्वर को १२ घुसा हुआ जानकर १३ विष्णु के उत्पन्न किये हुए ज्वर के बढते ही १४ देवताओं ने १५ इस युद्ध को जो याद करैं उनको १६ ज्वर नहीं चढै; कृष्ण से यह अरज करके शिव का ज्वर १७ भाग गया १८ आहवनीय १९ गार्हपत्य २० दक्षिणाग्नि, ये तीन तो होम की अग्नि हैं और २१ सभ्य २२ आवसथ्य ये दोनों अग्नि विशेष हैं २३ मांस खानेवाले पशुपाक्षियों को २४ सेना का चूर्ण कर दिया २५ स्वामिकार्तिक सहित २६ महादेव आकर कृष्ण से लड़े २७ शेष नाग के २८ मस्तक से २९ भूमि को डिगाते हुए ॥ ३२ ॥

सरमैं झुकि परे ॥ ३२ ॥

तहाँ बासुदेवनैं *जूंभगा चलायो तासौं ÷जूंभाकरि +अभिभूत ईस लरिबेकौं समर्थ न भये ॥

अरु कन्हके हुंकार करि सक्तिकौं पटकि गरुडके घायल मयूरकौं लै [1]प्रमथन सहित [2]पार्वतीनंदहू [3]पलायगये ॥

जहाँ [4]जटाधरकौं [5]जूंभितै [6]बर्हिवाहनकौं [7]विद्रुत जानि बडी [8]बरूथिनीसौं बानासुर आय [9]तुमुल बिस्तर्यो ॥

ताके सैन्यकौं [10]सीरीनैं [11]सीरसौं [12]अँचि अयोग्रसौं [13]अवपोथित कर्यो ३३

[14]तदनंतर बाण १बासुदेव २अस्त्र [15]अंबुकौं उझलायबरखाके [16]बलाहक बनैं अरु कवचनकौं काटि काटि उभै २ ही ओरके [17]अजिम्हग जालीमैं मयूरनके माफिक गात्रनकौं छेकि [18]छोनीं छनैं ॥

तब कृष्णहू बानके बाननतैं अपनैं आयुध बाँवरीके कलस होते जानि मारिबेकोही मन करि [20]महाऽसुरपैं चक्र चलायो ॥

तहाँ मंत्रमय असुरनकी कोटवी नाम बिद्या कुलदेबी [21]दिगंबर रूपसौं बानके आगैं होय अपनौं दुर्दर्सन देह [22]देवकौं दिखायो ॥३४॥

ताकौं देखतही हरि नैंन मींचि असुरके [23]उद्देसैं पूर्वक [24]कुटिलके करनकौं [25]कबाँरी करि सुदर्सन तो प्रेरिही दयो ॥

*जिस से आलस्य होकर जभाई (उवासी) आने लगै ऐसा अस्त्र चलाया ÷जभाई (भङ्ग आदि का नशा उतर कर उबासी) आने से +व्याकुल होकर महादेव १महादेव के गणों सहित २स्वामिकार्तिक भी ३भाग गया वहां पर ४शिव को ५उबासियें लेतहुए और ६मयूरवाहन (स्वामिकार्तिक) को ७भागाहुआ जानकर ८सेना से ९भयंकर युद्ध फैलाया १० बलदेव ने ११ हल से १२ मूसल से १३ नाश किया (कूटा) ॥ ३३ ॥ १४ जिस पीछे १५ अस्त्र रूपी जल को उझला कर १६ मेघ (बादल) १७ बाण १८ भूमि पर १९ बावली स्त्री अपने मस्तक के घड़े को जहां तहां डालदेवे इसप्रकार अपने आयुधों को जहां तहां निष्फल गिरने देख कर २० बडे दैत्य पर २१ नग्न होकर २२ कृष्ण को ॥ ३४ ॥ २३ बाणासुर के कहने माफिक (बाणासुर ने पहिले महादेव से कहा था कि मेरे हजार हाथ व्यर्थ हैं सो दो ही रहने चाहिये उस कथन के अनुसार) २४ उस कुटिल बाणासुर के हाथों को २५ कबाडा (घर छाने के लिये बांस आदि) रखनेवाले के समान करके

तानैं दैत्यको दुव २ घाटि सहस्र ९९८ बाहुनको अंत बालुकी-की बिधि बाढि लयो ॥

दूजी २ बेर चक्र चलावत चंडनेत्र चेत पाय मेरे बरनैं पढ्यो है ऐसैं कहि बासुदेवकौं बानके बधतैं निवारि दये ॥

अरु दोऊ२ नके प्रीति पूर्वक परस्पर प्रसंसाके संल्लाप भये।३५।

दोहा

अंतर आवत गरुड रय, पन्नग पास पलाय ॥
उषा सहित अनिरुद्धकौं, लै हरि पत्त निकाय ॥ ३६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रबाहुबाणपौण्ड्रकवासुदेवजन्मवेलासामीप्यकालसमाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे कृष्णमुर१ नरका २ दिमारणतत्कीलितकन्याऽऽदिद्वारकाप्रेषणस्वयंस्वर्गगमनसुरसावित्रीकुण्डलप्रत्यऽर्पणसत्योक्तचिकीर्षुचक्रिपारिजातहरणशक्रादिसुरपराभवनद्वारकागतदामोदरनरकनिग्रहनिष्कासितशतोत्तरषोडशसहस्र १६१०० कन्यापरिणायनसर्वसन्ततिसमुच्चयसङ्ख्यासूचनप्राद्युम्निरुक्मिपौत्रीविवहनदुरोदराऽलीककुपितकामपालकालिङ्गदशनत्रोटनरुक्मिप्रमुख-

---

१ समूह २ बालणकाकड़ी के समान काट लिये ३महादेव ४सचेत होकर ४ वार्तालाप ५ गरुड़ के वेग मे ६सर्पों की पास भाग गई ७पहुँचे ८ घर पर

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि मे अग्निवंशी चहुवाण पौण्ड्रक वासुदेव के जन्म समय से नजीक है समय का आश्रय जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र मे कृष्ण का मुर, नरक आदि को मारना, उस नरकासुर की कैद की हुई कन्याओं को द्वारका भेजना, खुद कृष्ण का स्वर्ग जाना, देवताओं की माता (अदिति) को कुण्डल देना, सत्यभामा का कहना करने की इच्छावाले श्रीकृष्ण का कल्पवृक्ष को हरना, इन्द्र आदि देवताओं का पराजय, द्वारका जाकर कृष्ण का नरकासुर की कैद से निकाली हुई १६१०० कन्याओं से विवाह करना, इन सबकी सन्तान की इकट्ठी गिनती का कहना, प्रद्युम्न के पुत्र का रुक्मी की पोती से विवाह करना, द्यूत मे झूठेपन से क्रोधित होकर बलदेव का कलिंग देश के राजा के दांत तोड़ना और रुक्मी आदि राजाओं को मारना, विवाह किये हुए अनिरुद्ध को घर

पृथ्वीशपोथनपरिणीताऽनिरुद्धानिकायानयनबाणपुत्रीप्राद्युम्निहरणबाणातन्निग्रहणबल १ बासुदेव २ बिजयनबाणबाहुबिच्छेदनपरमेश्वरप्रार्थनात्यक्तबाणप्राणपरमेश्वरसोषाऽनिरुद्धप्रत्यानयनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ १२ ॥ आदितश्चतुःपञ्चाशत्तमः ॥ ५४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा

दोहा

[1]हरि१बल२हुव बसुदेवकै, सुहि लहि समय समीप ॥
पांडुतनय पांडव भये, पंच५भ्रात कुलदीप ॥ १ ॥
अभिजित नाम मुहूर्तमैं, [2]ज्येष्ठा१८उडुमैं जा[3]त ॥
प्रथम जुधिष्ठिर१धर्मसौं, कुंती [4]औरस [5]ख्यात ॥ २ ॥
रहत वृहस्पति५सिंह५पर, मघा१०त्रयोदसि१३पाय ॥
कुंती औरस भीम२हुव, [6]अनिल अंस अ[7]तिकाय ॥ ३ ॥
इंद्र अंस अर्जुन३भयो, फालगुनी११।१२उडु एव ॥
[8]दस्र२न [9]सन माद्री जने, सुत नकुल४रु सहदेव५ ॥ ४ ॥
बासुदेव[10] जय[11]सौं बडे, मास तीन३परिमान ॥
या३ही मित[12] हरिसौं अधिक, [13]सीरी समर[14] सयान ॥ ५ ॥
भीमसेन [15]बलसौं बडो, या३ही क्रम अति जोर ॥
ऐसैं छे[16]त्रज पांडुकै, पञ्च५भये रनघोर ॥ ६ ॥
सोलह१६पन्द्रह१५सकरी१४, बरस त्रयोदस१३वेस ॥

लाना, बाणासुर की पुत्री उषा को प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का हरना, उस अनिरुद्ध को बाणासुर का कैद करना, बलदेव कृष्ण का विजय और बाणासुर के हाथों को काटना, महादेव की प्रार्थना से बाणासुर के प्राणों को छोडना, कृष्ण का उषा सहित अनिरुद्ध को पीछा लाने का बारहवां १२मयूख समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से चौवन ५४ मयूख हुए ॥

१कृष्ण बलदेव २ ज्येष्ठा नक्षत्र में ३ पैदाहुआ ४ कुन्ती के उर से ५ प्रसिद्ध ६ पवन के अंश से ७ बडा पराक्रमी अथवा बडे शरीरवाला ८ अश्विनीकुमारों ९ से १० कृष्ण ११ अर्जुन से १२ इसीप्रमाण १३ बलदेव १४ युद्ध में चतुर १५ बलदेव से १६ ये पुत्र पाण्डु के क्षेत्रज (पाण्डु के क्षेत्र में औरों के वीर्य

क्रमतैं पांडव पञ्चकं५हि, आयो गजपुर एस ॥ ७ ॥
इनके चरित असेस धरि, वरन्यौं भारत व्यास ॥
नृप सत्रुघ्न४३चरित्र बिच, कहिहैं सोहु समास ॥ ८ ॥
पुव्व जुधिष्टिर जन्मतैं, हायन तीस३०प्रमान ॥
भयो मघा१०के प्रथम१पय, वासुदेव४१चहुवान ॥ ९ ॥
पौराड्रदेस पुंड्रक४०जनक, यातैं पौराड्रक४१नाम ॥
वासुदेव४१वसुदेव४०सुत, यातैं हुव उद्दाम ॥ १० ॥
वृद्धसर्म्म भानेज यह, गुनवति४०।१जाठर जात ॥
मघा१०प्रथम१पय करि भयो, मच्छक४१हू भुव ख्यात॥११॥
दैत्य वली नर अंस जो, मोहन३२वैर सम्हारि ॥
जुव्वन लहि कुरु१जदु२नतैं, रचत भयो अति रारि ॥१२॥
ससिकुलभूखन नृप सुवल, जो जनपद गाधार ॥
लघुतनया ताकी लही, मच्छक४१ज्यौं रति मार ॥ १३ ॥
माउसिया दुज्जोधकी, छोटी नलिनी४१।१नाम ॥
सकुनीकी अनुजा स्वसा, व्याही नृप अभिराम ॥ १४ ॥
वासुदेवकै सुत भयो, नलिनी बिच रनधीर४२ ॥
वीतिहोत्र अरि तृन वनहिं, वीतिहोत्र कुल वीर ॥ १५ ॥

से पैदा हुए) हैं ॥ युधिष्टिर वर्ष का, भीमसेन, वर्ष का, अर्जुन वर्ष का और नकुल सहदेव १३ तेरा वर्ष के थे१ इस क्रम से २ पांच पाण्डवों का समुदाय ३ हस्तिनापुर में [हस्ती नामक राजा का बसायाहुआ होने के कारण उस नगर का नाम हस्तिनापुर था] आया ॥ ७ ॥ ४ सम्पूर्ण ५ संक्षेप से ॥ ८ ॥ ६ पहिले ७ वर्ष ॥ ९ ॥ ८ इसके पिता का नाम पुण्ड्र और देश का नाम पौण्ड्र होने से इसका नाम पौण्ड्रक हुआ. और इसके पिता का नाम वसुदेव भी था इसकारण से इसका नाम वासुदेव हुआ ९ निरङ्कुश १० पेट से पैदा. मघा नक्षत्र के प्रथम पाये में जन्म होने के कारण भूमि पर ११ मच्छक नाम भी १२ प्रसिद्ध हुआ १३चन्द्रकुल १४ देश १५ छोटी पुत्री १६ काम देव को रति मिली जैसी १७जो दुर्योधन की मासी थी १८ छोटी १९ बहिन शत्रुओं रूपी तृणों पर २० अग्नि रूपी २१ अग्निकुल में आविद्या करके जो

वासुदेव चहुवानकों, मनुज अविद्या मूढ ॥
कहनलगे हरि अप्पहो, ले अवतार अगूढ ॥ १६ ॥
सोहि मन्नि हरि चिन्ह सब, किय मच्छक४१ निज काय ॥
दूत पठायो द्वारका, हरि पँहँ एह कहाय ॥ १७ ॥

मुक्तादाम

दई नृप मच्छक४१ एह कहाय, अहं हुव विष्णु इहाँ नर आय ॥
सुन्यों हरि चिन्हहि धारत तोहि, न जोग्य यहै तजि सो भजि मोहि॥१८॥
गदा१ दर२ आदिक लच्छन टारि, तथा निज नामहु देहु निवारि ॥
कह्यो सुनि दूतहिं केसव एह, रावै तजिहौं ढिग आय सनेह॥१९॥
न होय जथा तुमसों भय मोहि, तथा करिहौं कहिहो सब सोहि॥
यहै कहिकैं दिन होत द्वितीय२, चढे उरगासन कन्ह गरीय॥२०॥
चले इनकों सुनि कासिय राय, सज्यो उत पौंड्रक४१ मित्र सहाय॥
भये मदघुम्मत सज्ज मतंग, तरारन लेत विनीत तुरंग ॥२१॥
रथी१ रथ घोरन सादि२ समूह, जुरे गजपिट्ठिनि सादि३ न जूह ॥
घनी मचि पक्खर घंटन घोर, अरे पलचार भरे चहुँ ओर ॥२२॥
उमा१ सिव२ आनि खरे लहि आस, त्वरा करि तक्कन चक्क तमास॥

१मूर्ख लोग थे वे वासुदेव चहुवान को कहने लगे कि २ आप विष्णु हो और प्रसिद्ध अवतार लिया है. विष्णु के सब चिन्ह अपने शरीर पर धारण करके ३ कृष्ण के पास द्वारका में दूत भेजा ४ मैंने ५ विष्णु के चिन्ह तुमको धारते सुना है सो छोडकर ६ मेरा सेवन करो ७ शंख ८ फिर ९ अपना नाम हरि आदि है सो भी छोड दो १० कृष्ण से यह सब कहा तब कृष्ण ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पास आके ही सब स्नेह पूर्वक छोडूंगा ११ जिस प्रकार १२ गरुड़ पर १३ सब से बडे हैं वे ॥ २० ॥ काशी का राजा भी अपने मित्र पौण्ड्रक की सहाय पर तैयार हुआ, मद में घूमते हुए १५ हाथी १४ तैयार हुए १६ शिक्षा पाये हुए १७ घोड़े छलांग लेते हुए निकले ॥ २१ ॥ रथों पर रथी और घोड़ों पर १८ घोड़ों के चढनेवालों का समूह और हाथियों पर १९ हाथियों के चढनेवालों का २० समूह २१ मांस खानेवाले ॥ २२ ॥ २२ पार्वती और शिव मुण्डमाला की आशा से आ खडे हुए २३ शीघ्रता करके २४ सेना की

ढमंक्किय ढोल नगारन नद्द, चमंक्किय आयुध ओज[1] विहद्द[2] ॥२३॥
धमंक्किय भुम्मि सबै हय[3]धार, ठमंक्किय अच्छरि घुग्घर मार ॥
पलट्टिय फट्टिय आकुल भोग[4], उलट्टिय सिंधु प्रलै[5] जनु जोग।२४।
कराक्किय कंटक[6] बंधन सत्थ, खराक्किय खप्पर जुग्गिनि हत्थ ॥
छराक्किय अब्भ[7]घटा बर्म[8]थून, झराक्किय बीरन नैन[9] जनून ॥२५॥
थराक्किय पब्बय थाल[10] थरक्क, फराक्किय झंडनपैं बह[11]रंक्क ॥
भरक्किय[12] कातर प्रानन चाहि, अरक्किय[13] पिक्खन देव उमाहि॥२६॥
मुराक्किय कच्छप ज्यौं ढरि ढाल, बराक्किय दंतुलि कोल[14] बिहाल ॥
ढरक्किय दिग्गज जानुन[15] जंक्कि[16], लरक्किय अंड[17]कटाह उचक्कि ॥२७॥
बढ्यो रज चक्किय[18] चक्क बिछोहि, चढ्यो नभ एहँ[19] दिवाकर[20] रोहि[21] ॥
बराणसि[22]राज१रु पौंड्रक२बीर, हल्ले[23] इम साजि चमूं[24] हमगीर ।२८।
विरांज[25] चढे इततैं हरि[26] आय, लये दल दोउ२न द्वै२गरदाय ॥
जुरे हरि१मच्छुक[27]२दारुन जुद्ध, उभै२निज आयुध छावत उद्ध[28]।२९।
उभै२मकरा[29]कृत कुंडल कान, उभै२अरि[30]१कंज[31]२गदा३दर[32]४वान ॥
उभै२श्रिय[33] बच्छ बिराजित बच्छ[34], उभै२गलकौस्तुभ[35] रंजित[36] अच्छ३०
उभै२कसि पीत निचोलन[37] तंग, उभै२घनस्याम स्है रूपि रंग ॥
उभै२लहि गोहिर[38]लौं बनमाल, उभै२दल नीरज[39] नैन विसाल।३१।

---

१ प्रताप २ बिना हद (अत्यन्त) ३ घोड़ों की दौड़ से ४ शेष नाग के फण ५ मानों प्रलय होने का योग आगया होवे ऐसा ६ कवच ७ आकाश को ८ हाथियों की सूंड के जलकणों की घटा से ९ क्रोध १० थाल में भराहुआ पानी थरके इस प्रकार पर्वत थरकने लगे ११ ध्वजा १२ कायरों के प्राण भड़के (चौंके) १३ अड़े (इकट्ठे हुए) १४ वराह की १५ घुटनों (गोडों) के बल १६ गिरे १७ ब्रह्मांड १८ चकवी चकवा के वियोग कराकर १९ वही रज २० सूर्य को २१ रोक कर २२ काशी का राजा २३ चले २४ सेना २५ पक्षियों के राजा (गरुड़) पर २६ कृष्ण २७ वासुदेव चहुवान २८ ऊपर की २९ दोनों के कानों में मकर की आकृति के ३० चक्र ३१ कमल ३२ शंखवाले ३३ दोनों की छाती पर ३४ विष्णु का (भृगुलता) चिन्ह ३५ दोनों के गलों में कौस्तुभ मणि ३६ शोभायमान ३७ पछेवड़ा (प्रच्छदपट) को काठा कस कर दोनों के ३८ पगों के टखने [गिरियों] तक वनमाला ३९ दोनों कमल नेत्र

उभै२उरगासन[1] केतन[2] अंक[3], उभै२रुचि रम्य[4] किरीट निसंक ॥
उभै२धनु[5] तड़ित भृंग बिकार, उभै२भुज च्यारि४स्यमंतक[6]वार ।३२।
उभै२बसुदेव तनूँज[7] समान, उभै२पलचारन[8] पोखन प्रान ॥
उभै२बिरदावलि[9]रावनमार, उभै२मधुकैटभ बच्छ[10] विदार ॥३३॥
उभै२रथ फेरत मंडल[11]मान, उभै२कुल जद्दव ओ चहुवान ॥
उभै२सिव दारिद मुंडन[12] जानि, उभै२कलिकार[13] हसावत आनि ।३४।
उभै२रनबीर मिले इम आय, उभै२करलाघव[14] दाव दिखाय ॥
लगे दुव२गैन[15] गुरावन जत्थ, मिलावन छावन मत्थन मत्थ ॥३५॥
चलै सर१तोमर[16]२संगि३त्रिसूल४, त्रसे[17] हुव कातर[18] सैंबर[19] तूल ॥
छिकैं दुव२घाँ[20] पटपीत सरीर, भई हलमल्ल भई भट भीर ॥३६॥
नचैं उठि रुंड तथुंग[21] तथेइ, करैं भरि बत्थ विपोथन[22] केइ ॥
कटैं रथ१कूबर[23]२चक्र[24]३बरूथ[25]४, फटैं प्रधि[26]५नाभि६जुगंधर[27]७जूथ ।३७।
उडैं ध्वज८अंबर रोपन[28] रीस, करैं जनु देवनकौं बखसीस ॥

२ध्वजा में १ गरुड़ के ३ चिन्ह ४ मनोहर ५ दोनों के हितके लिये सींग के धनुष ६ दोनों चार हाथवाले, और हाथ में स्यमंतक मणिवाले ७ पुत्र ८ मांस खानेवालों के प्राणों को पोषण करनेवाले दोनों ९ रावण को मारनेवाले [विष्णु के अवतार] हैं ऐसी स्तुति करानेवाले १० छाती को फाड़नेवाले ॥ ३३ ॥ ११ गोलाकार १२ महादेव के मस्तकों का दरिद्र जाननेवाले अर्थात् इस दरिद्र को हम मेटेंगे इस बात को जाननेवाले १३ दोनों नारद (युद्ध करानेवाले नारद को युद्ध बहुत प्रिय था, इसकारण से इधर की वार्ता उधर, और उधर की इधर कह कर युद्ध करा देते थे, इस से नारद को कलिकार कहते हैं) को हसाते [प्रसन्न करते] हैं ॥ ३४ ॥ १४शीघ्रता से १५आकाश गुड़ाने लगे (अत्युक्ति में आकाश का गिराना बहुधा कहा जाता है) और माथों से माथ मिला कर आकाश को छाने के लिये १६भाले १७डर कर १८कायर १९कमल नाल की रुई के समान हुए २० दोनों ओर पीताम्बर सहित शरीर छिके २१ये नाचके अनुकरण के शब्द हैं २२गिराना (कितने ही बाथ भरके गिराते हैं) २३ रथ के ओदण २४ पहिये २५ रथ के ऊपर का लोह का कवच (खोली) २६ पूठी २७ जुआ (जूड़ा) रहने की जगह २८ बाणों से (ध्वजा का वस्त्र क्रोध पूर्वक बाणों से उडता है सो मानो वह वस्त्र देवताओं को बखसीस किया जाता है

गिरैं भुव खाय कुलद्दन सूत[1], मनौं नट पट्ट क्रिया मजबूत ॥ ३८ ॥
हवंक्कत[2] घायनमैं लगि धाय, छुलक्कत रत्त[3] उबक्कत आय ॥
चटंक्कत[4] चापन चंड बिराव[5], सु[6] ज्यौं चटकारि खिलावन साँव[7] । ३९ ।
करैं सर सोदरहू अर एह, हजारन बंट परैं इक१देह ॥
सिखावत पच्छ बिमूढ[9] बहोरि,
न पै बिसवास करो हित कोरि१०००००० ॥ ४० ॥
कहैं सठ तून प्रसू[10] सन तून, लहैं इक१भागहु क्यौं हम ऊन[11] ॥
अरे करिहो इक१भाग सिवाय, सुही मुहिं देहु कहैं इम माय । ४१ ।
सु पै नहि मन्नि बदैं[12] फट बैंन, कढैं निज ज्यौं[13] तजि ज्यौं[14] पर लैन ॥
कटैं उर१जालिक[15]२जत्रु[16]३कपाल४, बनैं बढि चापल[17] अंत्रन[18]व्याल । ४२ ।
रसैं चउसट्ठि[19]६४चढावत[20] रत्त, बदैं[21] दुवपंच[22]५२मलंगत बत्त ॥
डकारत डाकिनि अस्र[23] अघाय, हकारत साकिनि पारत हाय । ४३ ।

१ सारथी २ फटेहुए घाव के बोलने का अनुकरण है ३ रक्त ४ जोर से खींचे हुए धनुष के शब्द का अनुकरण है ५ भयंकर शब्द ६ सो, जैसे चुटकी बजाक र ७ बालक को रमाते हैं ॥३९॥ अब यहां रूपक अलंकार से वर्णन करते हैं कि सगे भाइयों की भांति बाण (तीर) भी शीघ्र अथवा (अड़, हठ से) ही एक शरीर के हजारों बंट पाड़ते हैं जिनको अपनी पच्छ के मूर्ख लोगों के स मान तीर के पंख सिखाते हैं कि क्रोड़ बातों से भी इन [भाइयों] का वि- श्वास मत करो ॥ ४० ॥ एक बाण दूसरे बाण से कहता है कि हे मूर्ख तू भा था रूपी माता से निकला हुआ नहीं है इससे तुम्हारे कारण से हम एक हि स्सा कम क्यों लेवैं ? इसके उत्तर में वह कहता है कि अरे ? मैं एक भाग अधिक करूंगा, यह सुनके माता (भाथा, और उधर काली देवी) कहती है कि वह अधिक भाग मुझे देना ॥४१॥ इस बात को नहीं मानकर धिक्कार का अथवा फाटा (निर्लज्जता का) वचन बोलता है. बाण जब प्रत्यंचा से छूटता है तब "फट" ऐसा शब्द होता है और अपनी माता को छोड कर पराई भूमि लेने को जाता है (यहां पर ज्या शब्द माता और भूमि दोनो का वाचक है और ज्या का अर्थ प्रत्यंचा भी है कि अपनी प्रत्यंचा को छोड कर शत्रु के धनुष की प्रत्यंचा काटता है) १५ जाली १६ गला और धड़ की सन्धि (गले की हसली का स्थान) १७ चपल १८ आंतों के सर्प ॥ ४२ ॥ १९ चौसठ जोगनियां २० रक्त २१ बोलते हैं २२ बावन बीर [भैरव] २३ रक्त से तृप्त होकर

सिराहत संभु उठावत सीस, कटावत यौँ जिम रक्खस[1]१कीसं[2]२॥
सिराहत बुल्लि उमा[3] रन सूरि[4], भरैं तिन्ह लोहित[5] खप्पर भूरि[6] ॥४४॥
चटक्खट[7] पाँत गदा चउ४कोद[8], मच्यो हिय गिद्ध सिचानन मोद ॥
पटक्कत रत्त[9] गुरैं गजराज, झरैं जनु पब्बय बज्रन बाँज ॥४५॥
नचैं कहुँ भूत बिनाँ[11] बिधि तत्त, फिरैं कि[12] बजारनमैं उनमत्त ॥
सि[13]लैं घट तोमर होय दुसार[14], करैं कि तुला[15] क्रय१विक्रय२कार ॥४६॥
भ्रमैं ध्वजदंडन सुंडिन भाग, नमैं जनु चंदन चुंबन नाग ॥
खरे लखि रीझत नारद खेत, परेहु कहाँ भट पारत प्रेत ॥४७॥
बली दुव२चंद्र१धनंजय२बंस[16], अरे इम बिष्णु१बलीनरैं[17]२अंस ॥
कह्यो तहँ पौंड्रकसौं जदुनाथ, कहे तुमतेऽबँ[18] तजौं सब साथ ॥४८॥
दये कहि यौँ हरि सस्त्र चलाय, कटे तिन पौंड्रकके सब जाय ॥
निरायुध ह्वै बिनु स्यंदन[19] बाजि, अरयो पुनि सम्मुह मच्छक४९आजि[20]
हनैं बहु जद्दव मुट्ठिन मारि, दये अवनी[21] गज डुंगर डारि ॥
हनी अनिरुद्ध हिये दस१०मुट्ठि, प्रहारिय काम२कैं[22] फोणिन रुट्ठि ॥५०॥
रु उल्मुक३साम्ब२हनैं तलघात[23], गिरायउ दारुकैं[24]५दै उर लात ॥
बलाहक१सैव्य२तुरंग[25] जँकाय, गह्यो हरिको कटिबंध[26]हि जाय ॥५१॥
भये तहँ लोक चउद्दह१४भीत, बढ्यो सुँच[27] काल गिन्यौं बिपरीत ॥
कह्यो नभ[28] देवन कंपि पुकारि, रचो यह कौतुक[29] नाऽबँ[30] मुरारि ॥५२॥

राम और रावण के युद्ध में १ राक्षस और २ बन्दर कटते थे ऐसे ३ देवी ४ युद्ध में पण्डित ५ उनके लोही से ६ बहुत गदा के ७ पड़ने का चटचट शब्द चारों ८ दिशा में होता है ९ रक्त; मानों वज्र से पर्वतों के १० पंख झड़ते हैं ११ जहां पर १२ मानों बजार में बावला फिरे जिस माफिक, शरीर भाला से १३ छिदते हैं १४ पार फूट कर १५ मानों माल लेने और बेचनेवाले ने ताकड़ी (तराजू) कर रक्खी है चन्द्रवंशी और १६ अग्निवंशी १७ नर नामक दैत्य के अंशवाला वासुदेव चहुवाण १८ अब १९ विना घोड़े रथ और मच्छक चहुवाण २० युद्ध में ॥ ४९ ॥ २१ भूमि पर हाथियों रूपी पर्वत पटककर २२ प्रद्युम्न के कोहणी, कूर्णी (भुजमध्यग्रन्थी) ॥५०॥ २३ थप्पड़ की चोट से २४ कृष्ण के सारथि के २५ बलाहक और सैव्य नाम कृष्ण के घोड़ों को गिरादिया २६ कमरबन्धा ॥५१॥ २७ शोक २८ आकाश में २९ खेल ३० अब ॥५२॥

सबै विधिसर्ग[1] जमालय[2] जात, हनौं प्रभु पौंड्रकको तसमात[3] ॥
यहै सुनि कन्ह गदा घन घाय, हन्यौं पुनि पौंड्रक४१ चक्र चलाय।५३।
बनारसिराजहिं[4] मारि बहोरि, पठायउ तास पुरी सिर तोरि ॥
गदाधर[5] यौं अरिगंज गिराय, बिजै करि द्वारवतीपुर आय ॥५४॥
परयो उत कासियमैं नृप सोस, रची तस पुत्रहु सो लखि रीस।
त्वरा[6] करि छेत्र गयो अविमुक्त[7], प्रसन्न करे हर[8] लै बर युक्त॥५५॥

दोहा

कासिराज सुत संभुसौं, यह बर लिय उताल[9] ॥
ईस उठावहु घोर इक१, कृत्या[10] केसव काल ॥ ५६ ॥
ताके हवन[11] निकेतमैं, सिव सासन लहि एह ॥
उठी दक्खिन अग्गितैं[12], कृत्या दीपित देह ॥ ५७ ॥
ज्वाला करि जारत जगत, अकुलावत अब ओक[13] ॥
द्वारवती उप्पर गई, भीत भये लखि लोक ॥५८॥
तापर पठयो चक्र हरि, कहि यह बिघ्न मिटाय ॥
याहि चलावनहार पुनि, पुर जुत जारहु जाय ॥ ५९ ॥

षट्पदी

जबहि सुदर्सन जाय दये आघात दुरासद[14],
भजि कृत्या तब भीत सुरी निज मग परिहरि मद[15] ॥
पिट्ठि चक्र चलि प्रबल बिघन कासियपुर बार्यो,
तब तस नृपको सैन सहित प्रमथैन[16] संहार्यो ॥

१ब्रह्मा की सृष्टि २ जम के घर ३ इस कारण से ॥ ५३ ॥ ४ काशी के राजा को ५ कृष्ण ने ॥ ५४ ॥ ६ जल्दी करके ७ काशी क्षेत्र (नहीं छोडा जावे ऐसा क्षेत्र) ८ महादेव को ॥ ५५ ॥ ९ शीघ्र १० यज्ञ देवता विशेष, अथवा अग्नि विशेष जो कृष्ण का काल होवै ॥ ५६ ॥ उस राजा के ११ यज्ञघर से महादेव की आज्ञा लेकर १२ दक्षिणाग्नि से कान्तिमान् शरीर वाली कृत्या उठी ॥ ५७ ॥ १३ घर ॥ ५८ ॥ १४ दुर्द्धर्ष आघात दिया अथवा दुष्टों पर आघात दिया १५ घमण्ड छोडकर १६ महादेव के गणों सहित

अवसेस भर्गपुर जारि अरि कर हरिके पुनि वास किय,
रावरो राम नृप परपुरुख हरि रन इम पौंड्रक४१हनिय॥६०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणपौंड्रकवासुदेवजीवितसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे बलभद्र१पाण्डव२वासुदेवद्वय२जन्मकालाद्यवस्थातारतम्यसूचन-पौण्ड्रक ४१नलिनी४११नामसुबलराजसुतोद्वहन-तदौरसमात्स्यकिरणधीरो ४७द्भवन-हतानीककृष्णसकाशिराजपौण्ड्रकनिपातन-प्रतिहतकृत्याकलापचतुर्भुजचक्राऽग्निवाराणसीद्दहन त्रयोदशो१३मयूखः ॥ १३ ॥ आदितः पञ्चपञ्चाशत्तमः ॥५५॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

हो रनधीर४७कुमार तब, मातुल गृह गांधार ॥
जो आयो सुनि हत जनक, अप्पन देस उदार ॥१॥
पट्ट पिताको पंच५सिख, धरि हुव धीर धरेस ॥
निज धव बध सुनतहि कियउ, नलिनी ४११ अनल प्रवेस ॥२॥
मालव नृप बिंदात्मजा, निपुन सुबिंदा ४२१ नाम ॥
रनधीर सु ब्याही रसिक, रानी हित अभिराम ॥ ३ ॥

१ बाकी के २ शिव के पुर [काशी] को३चक्र४हे रावराजा रामसिंह आपके पुरखा पौण्ड्रक को कृष्ण ने इस प्रकार मारा ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण पौण्ड्रक वासुदेव के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका ऐसे श्रीकृष्ण के चरित्र में बलदेव कृष्ण दोनों की पाण्डवों के जन्म समय से न्यूनाधिक अवस्था का जनाना, पौण्ड्रक का नलिनी नामक सुबल राजा की पुत्री से विवाह करना, उस नलिनी के उर से मच्छक (पौण्ड्रक) के पुत्र रणधीर का जन्म होना, सेना को मारकर कृष्ण का काशिराज और पौण्ड्रक को मारना, कृत्या के समूह का नाश करके कृष्ण के चक्र की अग्नि से काशीपुर के जलने का तेरहवां मयूख समाप्त हुआ१३और आदि से पचपन मयूख हुए।५५। १मामा के घर२पिता को मरा हुआ सुनकर७सिंहासन८भूपति९पति को१०नलिनी ने अग्नि में प्रवेश किया. मालवा के राजा बिन्द की११पुत्री१२प्रवीण१३मनोहर

भयो नृपति रनधीरकै, तनय सत्रुघन ४३ सूर ॥
करन विदित चंडासिकुल[१], पन १ बितरन २ रन ३ पूर ।।

पट्पदी ॥

इत दुरजोधन नृपति सुता[३] हित किन्न स्वयंवर ॥
तँहँ सांबहु हरि तनय[४] गयउ दर्पित[५] रनदुर्द्धर[६] ॥
बलकर रथ बैठाय लग्यो कन्या लैजावन ॥
भीष्म १ द्रोन २ कृप ३ कर्ण ४ जुरे सुनतहि रनरावन[७]
पुनि जित्ति दयो कारा[८] पटाकि सु[९] सुनि लगे जदुभट सजन
बल[१०] कहिय तत्थ[११] क्यों सब चलहु मैं जावत यह मन्नि मन ।।

सञ्चरणगद्यम् ॥

बलभद्र बंधुनसौं ऐसैं आखिव[१२] हलहेति[१३] हस्त हस्तिनापुर गये अरु बाहिरके उपबन[१४]मैं रहि कौरवनतैं अपनौं आगम कहावत भ
सो सुनि सबन सहित सुजोधननैं अर्चन[१५]के उपहार[१६] आय अ[१७]
तकै अर्पन करे ॥
तिनको ग्रहन करि तालांक[१८]हू सांब संबंधी उपालंभन[१९]तैं स
नके श्रवन भरे ॥ ६ ॥

दोहा

कहिय राम तुम सिर करत, उग्रसेन आदेस[२०] ॥
सांब तजहु कन्या सहित, असु[२१] चहि मन्नहु एसैं[२२] ॥ ७ ॥
यह सुनि जंतु[२३] बारूद बिच, दिन्नौं खदिर[२४] दमंग[२५] ॥
सह परिकर[२६] धृतराष्ट्रसुत, भो जनु कुपित[२७] भुजंग[२८] ॥ ८ ॥

---

१ चहुवाण कुल को २ दान में और युद्ध मे पूरे पणवाला ३ पुत्री के लिये ४ कृष्ण क
पुत्र साम्ब ५ घमण्ड में भरा हुआ ६ रण में दुस्तर ७ रावण के समान रण
लड़नेवाले ८ कैद में ९ सो, सुनकर १० बलदेव ने कहा ११ तहां १२ कह
कर १३ हल शस्त्र को हाथ में लेकर १४ बाग में १५ पूजा की १६ साम
१७ शेषावतार (बलदेव) के १८ बलदेव ने भी १९ ओलंभा ॥ ६ ॥ २० आज्ञ
२१ प्राणों को २२ इस वार्ता को मानो २३ मानों २४ खैर की लकड़ी का २
तिणगारा [अग्निकण] २६ परगह २७ क्रोधित २८ सर्प ॥ ८ ॥

पट्पदी ॥

द्रोन१सुजोधन२करन३कृप४रु वाल्हीक ५ म[1]हाव्रत ६ ॥
[2]बुल्ले सब सन विदित बली जद्दव कबतैं [3]बैंत ॥
द[4]रितैं बापुरो उग्रसेन [5]यँहँ अरज लिखावत ॥
पुनि जजातिके साप पट्ट नृपता किम पावत ॥
कुरुकुल सदाहि सब सिर तपत सुहि सासन अप्पन सहज ॥
तुम गिने[6]असन१आसन२उचित ताको यह फल ब्रजँहु [7]व्रजा[8]॥९॥
कुरु द[9]र्पित इम कहि रु गये निजपुर वढाय बल ॥
नी[10]लांबर इत [11]अनखि हनिय लांग[12]ल निज भूतल ॥
फटि दरार मचि नाद करे पूरन दिस अंतर ॥
सुनि चिंतिय बलदेव हनौं कुरुकुल सब संग[13]र ॥
जा[14]न्हवी बोरि हत्थी[15]नयर घन [16]प्रातीपन घायहौं ॥
ल[17]छमनाँ सहित सांवहि स[18]जव बंधुन बिदित दिखायहौं ॥१०॥
यह हढकारि [19]धँकि अनख लंबभुज मु[20]ख गहि लांगल ॥
कौरवपुर [21]प्राकार [22]वप्र अग्रक ऐंच्यो बल ॥
ऊरध [23]कुट्टिम अधर [24]पटल नर पात्र अधोमुख ॥
उठ्यो नगर अरराय गिरन गंगा ऐंचन रुख ॥
गांगे[25]य १ द्रोन २ गोत[26]म ३ प्र[27]मुख माफ करायउ [28]नुति महित ॥

१ भीष्म २ बोले ३ यह वार्ता कब से है कि यादव बलवान् है४ डरा हुआ विचारा उग्रसेन ५ यहां सदैव अरजी लिखता है फिर उसको ययाति का श्राप है इसलिये राजापन का पाट किस प्रकार पासक्ता है हे बलदेव तुमको ६ भोजन और आसन के उचित समझे उसका यह फल है सो ७ मार्ग में ८ चलो अर्थात् विदा होओ ९ कौरव घमण्ड में भरेहुए १० बलदेव इधर११क्रोध करके१२अपना हल भूमि में मारा१३ युद्ध में१४हस्तिनापुर को१५गंगा में डुबो कर घले१६शत्रुओं को मारूंगा और१७दुर्योधन की पुत्री लछमना सहित साम्ब को१८शीघ्र१९क्रोध में तप्त होकर२०हाथ के अग्र भाग में लंबे हल को लेकर कौरवों के२१कोट (शहरपनाह) और२२धूलकोट के आगे से बलदेव ने खींचा जिससे२३ऊपर नींव और नीचे२४छत और मनुष्य; बरतन सब नीचे मुख होगये२५भीष्म२६कृपाचार्य२७आदि२८स्तुति के साथ.

शृंगारि सांब पठयो सबन दै दायज दुलहनि सहित ॥ ११ ॥

दोहा

*बलि पूजन बलभद्रको, करि अतिनम्र**असेस ॥
जोरि कर[1]नै जामातृ[2] जुत, पहुँचाये निज देस ॥ १२ ॥

॥ षट्पदी ॥

नरक असुरको मित्र जरठ[3] इक द्विविद बलीमुख[4] ॥
सखा कन्हहतं[5] सुनत दैन लग्गो देवन दुख ॥
मख बिगारि जन[6] मारि श्रौत[7] बिप्रन सातनं[8] रत ॥
साधु[9] सरनि[10] सब रुकि[11] लयो मनुजन मारन[12] व्रत ॥
सब जारि दये पुर देस बन गिरिन डारि जग चूर्ण किय ॥
पाथोधि[13] मज्झ रहि मारि पर्थ[14] जल बिथारि सब बोरि दिय॥१३॥

॥ दोहा ॥

कामरूप[15] अति दर्प कपि, अन्नादिक उपहार[16] ॥
भंजि तोरि सब भूमि भव, किन्नैं प्रहतं[17] करार ॥ १४॥
वषटकार[18]१ अरु अध्ययन[19]२, रोके बानर सर्ब ॥
भुव आयो आयो भयो, खल बल गर्ब अखर्ब ॥ १५ ॥
इक्क१समय रेवति[20] प्रमुख[21], लै बनिता[22] बहु व्रात[23] ॥
रैवत गिरि पर बल[24] सुरा, लग्गे पीवन ख्यात ॥ १६ ॥

॥ षट्पदी ॥

वह बानर तहँ आय चंड[25] बपु करि बिरोध चहि ॥

फिर**सम्पूर्ण १ दोनों हाथ जोड़ कर २ जमाई के सहित ॥१२॥ ३ बूढा ४ बन्दर अपने सखा को कृष्ण का मारा हुआ सुनकर ६ मनुष्यों को ७ वेद कर्म करनेवाले ब्राह्मणों को ८ मारने में तत्पर ९ श्रेष्ठ १० मार्ग सब रोक कर ११ मनुष्यों के मारने का १२ नियम १३ समुद्र मे १४ पग पीटकर ॥ १३ ॥ १५ इच्छानुसार रूप कर लेनेवाले ने १६ सामग्री १७ नाश ॥ १४ ॥ १८ होम १९ वेदों का पढना, भूमि पर भय के मारे वह आया वह आया, ऐसा होगया॥१५॥ बलदेव की राणी २० रेवती २१ आदि २२ स्त्रियों का बहुत २३ समूह २४ बलदेव प्रसिद्ध मद्य पीने लगे ॥ १६ ॥ २५ भयंकर शरीर

मदिरा भाजन[1] फोरि हस्यो बल ढिग सम्मुह रहि ॥
दारुन दंत दिखाय जदपि तरज्यो[2] हल प्रहरन[3] ॥
बहुन तदपि बिध्वंस[4] करि रु किन्नौं सब कनकन ॥
जव राम मुसल लिन्नौं स्वकर[5] कपि मुक्किय[6] सिल दिग्घ तब॥
ताकहँ अयोग्रँ[7] करि चूर्ण करि हुव जद्दव अति उग्र अब ॥१७॥
बहुरि मुसल अतिबेग छुट्यो बलको बानर पर ॥
लंघि[8] ताहि खल मर्लापि थाप डारिय हिय हलधर ॥
बलहु[9] कुप्पि तस बेग मुट्ठि मारिय मस्तक पर ॥
बलिमुख[10] लोहित बमत[11] घुज्जि वनि कुणप[12] पर्यो धर ॥
जिहिँ परत अद्रि चूरन भये बहुरि तास सत१००टूक करि ॥
सुर[13] सुमन[14] बुट्ठि बिलसत सहज हलिय चलिय भुव भार हरि ॥१८॥

दोहा

इम हरि१बल२लिन्नौं अखिल[15], अवनी[16] भार उतारि ॥
अच्छोहिनि[17] धृति१८धृति१८अहन[18], माधव[19] पुनि लिय मारि॥१९॥
अव आगम अवसानके[20], देवन पठयो दूत ॥
चउ४भुज[21] निज आलय चलहु, प्रभु जच्चत[22] पुरहूत[23] ॥२०॥
जगदीसहु दे सिक्ख जिहिँ, आवत हम इम आक्खि ॥
करत भये कुलबध जतन, रंचक[24] मेस[25] न रक्खि ॥२१॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहो

१मद्य के पात्र २हल शस्त्र से ३ डराया तोभी ४ बहुतों को मार कर बिखेर दिया ५अपने हाथ में ६ बड़ी शिला छोडी ७ मूसल से ॥ १७ ॥ ८ कूद कर ९ बलदेव ने भी क्रोध करके १० बन्दर ११ लोही उगलता हुआ १२मुरदा होकर १३देवताओं की १४ फूलों की वर्षा को बिलसते हुए बलदेव भूमि के भार को हर कर चले ॥ १८ ॥ १५सम्पूर्ण १६भूमि का १७अक्षोहिणी १८ अठारह दिन में १९ कृष्ण ने ॥ १९ ॥ २० अन्त समय का आगम होने पर २१ हे चार हाथवाले अपने घर (स्वर्ग) चलो आप को २२ इन्द्र २३ मांगता है ॥ २० ॥ २४ कुछ भी २५ बाकी नहीं रख कर ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

त्र चाहुवाणधीरजीवितकालसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे मत्स्यकराज्ञीनलिनीसहगमन-रणधीरपितृगद्दिकोपविशन-ग्रामारीसुविन्दो ४२।१द्वहन-तदौरसरणधीरिशत्रुघ्न४३प्रसवन-कौरवराजसाम्बनिग्रहण-सङ्कर्षणसीरसामजपुरसमाकर्षण-सुयोधनसपत्नीकसाम्बसम्प्रेषण-नीलाम्बरद्विविदवानरनिपातन-देवदूतद्वारकाऽऽगमन-प्रेपिततद्वासुदेवस्वकुलोत्सादनयत्नाऽऽरम्भणं चतुर्द्दशो१४मयूखः ॥१४॥ आदितः षट्पञ्चाशत्तमः ॥ ५६॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पट्पदी

इक्क १ समय द्विज अखिल्ल गये तीरथ पिंडारक ॥
बिश्वामित्र १ बसिष्ट २ अत्रि ३ नारद ४ अघंहारक ॥
दुर्वासा ५ भृगु ६ कण्व ७ अंगिरा ८ वामदेव ९ पुनि ॥
त्रित १० कश्यप ११ इत्यादि मिले चिद्बोध महामुनि ॥
जादवकुमार तहँ साम्बकौं गर्भ समेत बनाय तिय ॥
पूछे मुनीस व्हैहैं कहा याकैं यह सुनि उन कहिय ॥ १ ॥

धीर के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन श्रीकृष्ण के चरित्र में मच्छक [वासुदेव चहुवान] की राणी नलिनी का सती होना, रणधीर का पिता की गद्दी पर बैठना, ग्रामारी सुविन्दा से विवाह करना, उस सुविन्दा के उर से रणधीर के पुत्र शत्रुघ्न का जन्म होना. कौरवों के राजा दुर्योधन का साम्ब को कैद करना, बलदेव का हल से हस्तिनापुर को खींचना. सुयोधन का स्त्री सहित साम्ब को भेजना. बलदेव का द्विविद वानर को मारना, देवताओं के दूत का द्वारका में आना, उस दूत को पीछा भेज कर कृष्ण का अपने कुल को नाश करने का उपाय आरम्भ करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और आदि से छप्पन मयूख हुए ॥५६॥

१ सब २ द्वारका में पिण्डारक नामा तीर्थ है वहां पर ३ पाप को मिटानेवाले ४ मुनि विशेष ५ आत्मज्ञानी यादवों के कुमारों ने कृष्ण के पुत्र साम्ब को गर्भवती स्त्री का स्वांग कराकर मुनियों से पूछा कि इसके क्या होवेगा ६ उन मुनियों ने कहा.

दोहा

याकै इक १ व्है हैं मुसल, जासौं जदुकुलनास ॥
इम कहि मुनि कोपित गये, परचो द्वारका त्रास ॥ २ ॥
सांब उदर सैन हुव मुसल, चूरन तास कराय ॥
उग्रसेन जो कहि अखिल, दयो उदधि पटकाय ॥ ३ ॥
रह्यो खंड कछु भल्ल मित, जब चूरन हुव नाँहिं ॥
सोहु गिरायो सिंधु बिच, परचो सफर मुख माँहिं ॥ ४ ॥
चूरनको एरक भयो, व्याध जरा वह मच्छ ॥
मास्यो भल्ल कढ्यो सु निज, बान बनायो अच्छ ॥ ५ ॥
तदनु बनैं उतपात बहु, नगर द्वारका आय ॥
पठयो हरि बदरी बिपिन, उद्धवकौं समुझाय ॥ ६ ॥

षट्पदी

सबन हिंतु हरि कहिय होत उतपात महाभय ॥
निहचै जदुकुल नास रच्यो आगामि काल रय ॥
पहुँचैं सबहि प्रभास करैं दानादि बिहित क्रम ॥
सुनि यह हरि १ बल २ सहित गये तत्थहि जदुउत्तम ॥
करि न्हान१दान२ केसव हुकम रचि आपान बिनोदरस ॥
आसव असेस पीवनलगे वंस बिघातक कालबस ॥ ७ ॥

दोहा

---

१ से २ समुद्र में उस मूसल का थोड़ा सा ३ टुकड़ा ४ तीर की भाल के माफिक रहगया ५ वह टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा ६ लोहे का चूर्ण जो समुद्र में डाला था उसका एरा (बिना गांठ का तृण विशेष) हुआ और जो लोहे का टुकड़ा मच्छ के मुख में पड़ा था उसी मच्छ को जरा नामक ७ व्याध (शिकारी) ने मारा उसके पेट से वह भाल ८ निकला सो अपने बाण के लगाया ९ जिस पीछे१० बद्रिकाश्रम नामक वन में ११ सब से १२ आनेवाले समय ने वेग से १३ द्वारका के समीप ही प्रभास क्षेत्र है वहां पर १४ उचित १५ बलदेव १६ वहीं (प्रभास क्षेत्र में) १७ यादवों में श्रेष्ठ पुरुष थे सो १८ मद्य पीने की सभा (मतवाल) १९ वंश का नाश करनेवाला.

पीवत पीवत परसपर, बढ्यो सबन अति बाद ॥
लगे उट्ठि सब्बन लरन[1], मच्च्यो कलह प्रमाद[2] ॥ ८ ॥
तुट्टे प्रहरन[3] सकल तब, एरक[4] वेहिं[5] उपारि ॥
कुलतैं कुल लग्गे कटन, तेहु[6] भये तरवारि ॥ ९ ॥

पट्पदी

कृतबर्मा १ सैनेय २ सांब ३ प्रद्युम्न ४ दानिसुत ५ ॥
अनिरुद्ध ६ रु पृथु ७ बिपृथु ८ चारुधर्मा ९ चारुक १० जुत ॥
चारुदेष्ण ११ वृक १२ भानु १३ निसठ १४ उल्मुक १५ इत्यादिक ॥
एरक अँसनि[7] चलाय कटे सब प्रचुर[8] प्रमादिक[9] ॥
गोबिंद[10] बहुत बरजे तदपि[11] करत पच्छ[12] यह बुद्धि करि ॥
संख्या अतीत[13] जद्दव सकल मदबस गये प्रभास[14] मरि ॥ १० ॥

दोहा

नहि मानत कन्हहु कुपित, तोरी एरक मुट्ठि ॥
मुसल सोहु हुव लोहमय इम मारे बहु उट्ठि ॥ ११ ॥
तरु इक तर[15] तालांक[16] तब, करि उज्झित[17] नरकार्य[18] ॥
सेसरूप निकसे सितगु[19], जलनिधि[20] प्रविसे[21] जाय ॥ १२ ॥
अंबुधि[22] आयो लै अरघ, संमुह बंदन[23] सत्थ ॥
याके[24] जलमग सेस इम, स्वनिलय[25] पत्त[26] समत्थ ॥ १३ ॥

षट्पदी

---

१ युद्ध २ उन्मत्तपन से ३ शस्त्र ५ वेही ४ एरे जो लोह के चूर्ण से ऊगे थे ६ वे ही एरे तरवार रूप होगये ७ एरा रूपी वज्र को चलाकर ८ बहुत ९ मदिरा के मद से उन्मत्त १० कृष्ण ने ११ तोभी यह जाना कि ये १२ पक्षपात करते हैं १३ संख्या से बाहर (गिनती से नहीं आवैं जितने) सब यादव नशा के वश होकर १४ प्रभास क्षेत्र में मर गये कृष्ण का कहना नहीं माना तब कृष्ण ने भी क्रोध करके एरा की मुट्ठी तोड़ी वह लोहे का मूसल होगया जिससे उठ कर बहुतों को मारा १५ एक वृक्ष के नीचे १६ बलदेव ने मनुष्य के १७ शरीर को १८ छोड कर १९ स्वेत किरणोंवाले २० समुद्र में जाकर २१ प्रवेश करगये २२ समुद्र २३ नमस्कार के साथ २४ इस समुद्र के मार्ग से वह समर्थ २५ अपने घर को २६ पहुंचे

हलधर[1] गमन निहारि कन्ह अक्खियं[2] दारुक[3] कँहँ ॥
कुल १ बल[4] २ निपतन[5] कहहु पुरी जावहु पितरन[6] पँहँ ॥
काय मँहु जोग करि अबहि तजिहौं अरु अज्जुन ॥
ऐहँ यँहँ तस[7] संग सबहि निकसहु खिल[8] रहहु[9] न ॥
द्वारकापुरहिं बिनु मम निलय[9] अंबुधि[10] बोरहिं फैलि इम ॥
जयसौंहु[11] कहहु खिल[12] मम जनन[13] पालहु कौरव जनक[14] जिम।१४।

॥ दोहा ॥

दारुक पठयो द्वारका, श्रीहरि इम समुझाय ॥
अच्च्युत[15] किन्न बिचार अब, करन त्याग नर काय[16] ॥ १५ ॥
माधवको जैत्राम[17] रथ, हय सैब्यादि[18]४समेत ॥
पाथोनिधि[19] बिच गो प्रबिसि, पहुँच्यो निजहि निकेत[20] ॥ १६ ॥
गदा१चक्र२सारंग[21]३पुनि, नंदक[22]४संख५निखंग[23]६ ॥
हरिहिं प्रदक्खिन करि गये, व्हैं रवि[24] मग सब संग ॥ १७ ॥
रनतैं[25] इक१दारुक बच्यो, पुर गो छोरि प्रभास[26]॥
उग्रसेन बसुदेवसौं, सब अक्ख्यो[27] कुलनास ॥ १८ ॥
करि पय[28] पर पय कन्हहू, बैठे ब्रह्म[29] विलीन ॥
जहँ लुब्धक[30] आयो जरा[31], मृगमुख गिनि पय[32] पीन ॥ १९ ॥

१बलदेव का जाना देख कर कृष्ण ने अपने सारथी ३दारुक से २कहा कि द्वारका पुरी में जाकर ६माता पिता से ४ बलदेव और सब कुल का ५नाश कहो मैं भी योगविद्या से शरीर को ७ उस अर्जुन के साथ ८ बाकी मत रहना ९ मेरे मकान के बिना १०समुद्र डुबो देगा ११अर्जुन से कहना कि १२बाकी के मेरे १३लोगों को १४ कौरवों के पिता (धृतराष्ट्र) का पालन किया इसप्रकार पालना १५ कृष्ण ने १६ नरदेह का त्याग करने का कृष्ण का १७ जैत्राम नामक रथ १८ सैन्य आदि चारों घोड़ों सहित १९ समुद्र में प्रवेश कर गया २० अपने घर (स्वर्ग) में पहुंचा २१ शार्ङ्ग धनुष २२ नन्दक नाम खड्ग २३ भाथा २४ आकाश मार्ग से २५ उस युद्ध से २६ प्रभास क्षेत्र को छोड कर पुर में गया २७ कहा २८कृष्ण भी पग पर पग रख कर २९ ब्रह्म में लीन होकर बैठे जहां पर ३१ जरा नामी ३० शिकारी आया जिसने कृष्ण के पुष्ट ३२ पग को मृग का मुख जाना.

कढ्यो[1] सफर सन भल्ल जो, सोहि चलायो व्याध ॥
पगतल[2] बिच प्रभुकै लग्यो, ईहिं[3] मन्न्यों अपराध ॥ २० ॥
जरा[4] न सोचहु हरि कह्यो, हुव जानैं विनु एह ॥
जावहु चारु[5] विमान चढि, भुग्गहु स्वर्ग सनेह ॥ २१ ॥
आयो तबहि विमान तहँ, लिन्नों व्याध चढाय ॥
बुठ्ठत सुम[6] दुंदुभि बजत, पहुँच्यो दिवँ[7] मुद पाय ॥२२॥
हरिहु होय निज रूप मय, छोर्‌यो मानव देह ॥
द्वारवती[8] इत अर्जुनहु, आय सुन्यों सब एह ॥ २३ ॥

॥ षट्पदी ॥

सबनकोंहि सिर बज्र आय दारुक पटाकिय जब ॥
उग्रसेन१बसुदेव२ आदि जदुवृद्ध जरे तब ॥
रोहिनी[9]१रु देवकसुता[10] २हु हुव भस्म हुतासन[11] ॥
पारथ[12] सहित प्रभास गये जदुबंस जुवंति[13] जन ॥
रुकमिनी प्रमुख[14] पटरांगिनी[15] जरी आठ८हरिदेहँ[16] जुत ॥
रेवती[17] राम बिग्रह[18] सहित अनलँ[19] प्रवेसिय निखिलँ[20] नुत[21] ॥२४॥

॥ दोहा ॥

सोचि विजय दाहे सकल, प्रेत करम विधि ठानि ॥
जान्यों अब सूनों जगत, अति बिराग मन आनि ॥ २५ ॥
पारिजात[22]१पहुँच्यो त्रिदिवँ[23], सभा सुधर्मा२जुष्ट[24] ॥

---

१ मच्छ के पेट में से भाल (तीर का फूल) निकला था २ कृष्ण की पगतली में लगा इसको ३ उस जरा नामक व्याध ने अपना अपराध माना ४ हे जरा ५ सुन्दर ६ पुष्प वर्षते हुए नगारे बजते हुए आनन्द पाकर ७ स्वर्ग में पहुंचा ८ द्वारका में ९ बलदेव की माता १० देवकी (कृष्ण की माता) ११ अग्नि में १२ अर्जुन के साथ प्रभास क्षेत्र में यादवों की १३ स्त्रियें १४ आदि १५ पटराणियें १६ कृष्ण के देह के साथ आठों जल गई १७ बलदेव की राणी रेवती बलदेव के १८ शरीर के साथ १९ अग्नि में प्रवेश कर गई २० सब से २१ स्तुतियोग्य २२ कल्पवृक्ष २३ स्वर्ग में २४ प्रीति के साथ सुधर्मा नामक देवसभा भी गई

तक्कत[1] भुव केसव तजत, दब्बी[1] कलिजुग दुष्ट ॥ २६ ॥
एक१तनय अनिरुद्धको, बच्यो बज्र अभिधान[2] ॥
ताजुत[3] सब सुद्धांत[4] लै, पत्थ[5] कियउ प्रस्थान[6] ॥ २७ ॥
सत उत्तर सोलह सहँस१६१००, हरि ललना[7] लहि[8] संग ॥
निकस्यो अर्जुन बज्र जुत, कसि असि१चाप२निखंग३॥ २८ ॥
इतरहु[9] पुरजन काढ्ढि[10] सब, रह्यो[11] पंचनद आय ॥
प्रभु गृह बिनु सागर पुरी, दिन्नी अखिल[12] डुबाय ॥ २९॥
तसकर[13] तहँ सुंदर तियन, जय[14] लैजावत जानि ॥
नारिन१वसनन[15]२भूखनन३, लग्गे लुट्टन आनि ॥३०॥
जीव लहहु बुल्ल्यो बिजय[16], मरहु न जावहु मूढ ॥
सु[17] सुनि तरजि[18] बुल्ले हसित[19], अतुल[20] दर्प[21] आरूढ[22] ॥ ३१॥

॥ षट्पदी ॥

कलह जयद्रथ१करन२बिंद३भगदत्त४महाव्रत५ ॥
मारि बढ्यो अभिमान मुधा[23] अर्जुन तावक[24] मत ॥
ग्राम्य जननको जोर कबहु न लख्यो कुंतीसुत ॥
टरि जावहु नहि[25] टारि[26] अर्धचंद्रक[27] देहैं द्रुत[28] ॥
किय सज्ज्य[29] पत्थ गांडिव धनुख निट्ठि निट्ठि सो पै[30] चढ्यो॥
पुनि सिथिल भयो अरु अस्त्रहू[31] न कछु फुरयो बिस्मय बढ्यो ॥३२॥

१कृष्ण के इस भूमि को छोडते ही दुष्ट कलियुग, ताक रहा था जिसने दबा ली२ वज्र नामवाला अनिरुद्ध का एक पुत्र बचा३उस वज्र सहित४जनाने को लेकर५ अर्जुन ने६ गमन किया ७ कृष्ण की स्त्रियों को ८ साथा ९ और भी१०निकाल कर११अर्जुन पंचनद में आकर रहा१२सब १३ चोरों ने १४अर्जुन को ले जाता हुआ जानकर १५ वस्त्रों को १६ अर्जुन ने कहा कि १७ सो सुनकर १८ धमका कर १९ हसते हुए बोले २० बहु २१ घमंड पर२२चढे हुए॥ हे अर्जुन२४तेरे विचार में यह२३वृथा (झूठ) अभिमान बढगया है, हे कुन्तीपुत्र ग्रामीण लोगों का बल तुमने कभी नहीं देखा है इस कारण से टलजाओ२५ नहीं तो२७गलहूंपा (अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली को फैलाने से अर्धचन्द्राकार होजाता है वह गले में देकर२८शीघ्र२६टाल देवेंगे२९ अर्जुन ने गांडीव धनुष को ज्या (प्रत्यंचा) सहित किया३०परन्तु वह धनुष३१अस्त्र स्मरण नहीं

दोहा

नैंकहु*जयके सरनतैं, भिदे न [1]उनके अंग ॥
गोपिन तिय गोविंद[2]की, [3]भुग्गी करि [4]ब्रतभंग ॥ ३३ ॥
बज्रहिं ठै रु बिगारि मुख, अर्जुन मथुरा आय ॥
[6]ताँकी गद्दिय ताँहि धरि, गो गज[7]दंग सिटाय ॥ ३४ ॥
व्यास मिले मग बिजयकौं, बुल्ले क्यौं गत रोचि[9] ॥
पत्थ[10] कह्यो जदु[11]नास पुनि, स्त्रीजन लुट्टन सोचि ॥ ३५ ॥
कालपुरुखको यहहि क्रम, बिजयहिं आक्खिय[12] व्यास ॥
लुट्टे मिच्छन[13] जुवतिजन, इक तहँ कारन आस[14] ॥ ३६ ॥
सुबरनगिरि[15] पर इक समय, करि असुरन बधकाज ॥
सुरन[16] महा उच्छव सज्यो, संजुरि[17] बिबिध समाज ॥ ३७ ॥
मग बिच अष्टाबक्र मुनि, जहँ अच्छरिगन जात ॥
लखे सलिल[18] थित कंठ लग, ब्रह्मसमाधि बनात ॥ ३८ ॥
अतिआदर मुनिकी प्रनति[19], करी सबन कर जोरि ॥
व्है प्रसन्न मंगहु कह्यो, बर कछु बिप्र बहोरि[20] ॥ ३९ ॥
तिलोत्तमा १ रंभा २ प्रमुख[21], कह्यो भयो जु प्रसाद[22] ॥
सब बर लैबो सोहि है, लैबो इतर[23] प्रमाद[24] ॥ ४० ॥
अपर किते अच्छरिगनन, मंगे हरि भत्तार[25]॥

---

*अर्जुन के १ चोरों के २ कृष्ण की स्त्रियों को ३ भोगी ४ पातिव्रत्य व्रत भंग करे ५ वज्र की गद्दी पर ६ वज्र को ७ हस्तिनापुर गया ८ अर्जुन को मार्ग में वेदव्यास मिले ९ गई हुई कान्ति से १० अर्जुन ने ११ यादवों का नाश अर्जुन को व्यास ने १२ कहा कि कालपुरुष (यमसहाई)का यही क्रम है कि जो जन्म लेता है वह मरता है और जो १३ म्लेच्छों (नीच लोगों) ने स्त्रीजनों को लूटा इसमें एक कारण १४ है १५ सुमेरु पर्वत पर १६ देवता ओं ने १७ एकत्रित होकर मार्ग में अष्टावक्र मुनि १८ जल में ब्रह्मसमाधि बनारहे थे वहां अप्सराओं का गण गया जिन्हों ने बडे आदर से मुनि से वि शेष १९ नम्रता करी २० फिर ब्राह्मण ने कहा कि कोई वर मांगो २१ आदि ने कहा कि आप की २२ प्रसन्नता हुई सो ही सब बर लेना है इस प्रसन्नता को छोडकर २३ और ले । है सो २४ भूल है २५ भर्तार

सो दै निकसे नीरसौं, अष्टावक्र उदार ॥ ४१ ॥
तबहि अष्टधा बंक तनु, निरखि हसी दिवनारि ॥
दयो साप मुनि कुप्पि द्विज, निज अपमान निहारि ॥ ४२ ॥
पाय तुमहु गोविंद पति, भोग भुग्गि हरि सत्थ ॥
व्हैहो मिच्छन भोग्य पुनि, परि चोरनके हत्थ ॥ ४३ ॥
बज्र परत यह नम्म्र वनि, परी सकल मुनि पाय ॥
अक्खिय तब नवनीत हिय, बलि बसिहो दिवँ आय ॥४४॥
इम द्विजबरके सापतैं, जित्ति तोहि आभीर ॥
लै हरि नारिन लूट करि, गये बिचारहु बीर ॥ ४५ ॥
अर्जुन यह सुनि इम नगर, जँवी बिकलमन जाय ॥
रोवत जदुकुल नास मुखँ, दिन्नी सकल सुनाय ॥ ४६ ॥
अप्पि परिच्छितकौं अखिल, पांडव राज्य प्रबीन ॥
गये बिपिनँ हरिभक्ति गहि, भये छोरि भँव लीन ॥ ४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणरणधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणकश्रीकृष्णचरित्रे यदुकुमारदुर्वासःप्रमुखमुनिवञ्चनतद्यदुकुलोत्सादशापक्षेपणसाम्बोदरमुसलपतनासिन्धुक्षिप्ततच्चूर्णैरकोद्भवनशल्यजराविशिखन्यसनप्रभासाऽऽपानस्थितयदुकुलक्षयनशेषरूपबलभद्रस्वलोक

२आठ जगह से ३वांका शरीर ४स्वर्ग की स्त्रियां ५क्रोध करके अष्टावक्र ने कहा कि तुम ६विष्णु को पति पाकर ७फिर भील आदि नीच लोगों के भोग्य होओगी वचन रूपी यह वज्र पड़ते ही ८मक्खन के समान कोमल हृदयवाले मुनि ने कहा कि ९फिर १०स्वर्ग में इस कारण से ११ब्राह्मण के १२भील लोग १३वेग सहित १४ यादवों के कुल के नाश आदि (आदि पद से स्त्रियों का लूटना जानो) परीक्षित को १६ सम्पूर्ण १५ देकर १७ वन में १८ संसार को छोडकर विष्णु में लीन होगये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण रणधीर के जीवित समय के समान समय वाले श्रीकृष्ण के चरित्र में यादवों के कुमारों का दुर्वासा आदि मुनियों को ठगना, उन मुनियों का यदुकुल के नाश का शाप देना, साम्ब के उदर से मूसल का पड़ना, समुद्र में डाले

गमन-दारुकद्वारकाप्रविशनजरावाणविद्धचरणतत्प्रेषितशस्त्रादिश्री-
कृष्णस्वपस्त्यप्रस्थानकलियुगभूतलस्पर्शनश्रुतकुलनाशोग्रसेन१व
सुदेव२देवकी१रोहिणी२ प्रमुखयदुवृद्धपावकप्रविशनरुक्मिणी१रेव
ती २ प्रमुखस्त्रीजनसहगमनकृतसर्वसंस्कारधनञ्जयसवज्र१शुद्धांत२
पौरजननिष्कासनसिन्धुद्वारकाप्लावनचौराभीरप्रभुपरिग्रहलुण्टन-
मथुराराज्यसमभिषिक्तवज्रव्यासबोधितवृत्तान्तबीभत्सुगजसाह्वयनग
रगमन-परीक्षिताऽर्पितराज्यपाण्डवपरिव्रजनं पञ्चदशो१५मयूखः॥
॥ १५ ॥ आदितः सप्तपञ्चाशत्तमः ॥ ५७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भार हरयो सब भुम्मिको, इम हरि लै अवतार ॥
वासुदेव[1] ४१ मारयो बिदित, कलह[2] कन्हें जयकार ॥ १ ॥
वासुदेव नलिनी[3] ४११ तनय, भयो नृपति रनधीर ॥
बज्र भयो अनिरुद्ध सुत, मथुरा पालक बीर ॥ २ ॥
भूप परिच्छित राज्य इत, करत हस्तिपुर[4] धाम ॥

हुए उनके चूर्ण से एरा का होना, बाकी रहे हुए शल्य का जरा नामी व्या
ध के बाण में ठहरना (लगना) प्रभास तीर्थ में मद्य पीने की गोष्ठी में बैठे
हुए यादवों के कुल का नाश होना, शेष नाग के रूप से बलदेव का अपने
लोक में जाना, दारुक सारथी का द्वारका में जाना, जरा नामक व्याध के
बाण से चरण का विधना, कृष्ण के भेजे हुए शस्त्र आदि और श्रीकृष्ण का
अपने घर (गोलोक) जाना, कलियुग का भूमि को स्पर्श करना, कुल के ना
श को सुनकर उग्रसेन वसुदेव देवकी रोहिणी आदि यदुवृद्धों का अग्नि में
प्रवेश करना, रुक्मिणी रेवती आदि स्त्रियों का सती होना, सब का अग्नि
संस्कार करके अर्जुन का वज्र सहित जनाना और पुर के लोगों को निकाल
ना, समुद्र का द्वारका को डुबोना, चौर भीलों का कृष्ण के निज के लोगों
को लूटना, मथुरा के राज्य पर वज्र का अभिषेक होना, व्यास के समझाये
हुए वृत्तान्त से अर्जुन का हस्तिनापुर जाना, परीक्षित को राज्य देकर पाण्डवों के
जाने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ १५ और आदि से सत्तावन मयूख हुए ।५७।

१ वासुदेव चहुवाण को २ युद्ध में जय करने वाले कृष्ण ने ३ नलिनी
नामक स्त्री में वासुदेव चहुवाण से ४ हस्तिनापुर में

नगर अयोध्या इत नृपति, वृहतखत्र* ३ जिहिं नाम ॥३॥
मगधराज सोमावि ४ इत, देवगिरीस अभंग ॥
इंद्रकेतु ५ प्रामार इत, तपत अवंतिय दंग ॥ ४ ॥
धृष्टकेतु ६ सोमक नृपति, इत पंचाल अधीस ॥
एक काल इत्यादि छतं[2], हुव रनधीर[3] महीप ॥ ५ ॥
इक समय अभिमन्यु सुत, गो अभिमत[4] आखेट[5] ॥
ताडत[6] गौ जुग २ उग्र तँहँ, भयो सूद्र इक भेट ॥ ६ ॥
बरज्यो नृप तब तिहिं बंद्यो[8], आयो मैं कलि[9] अत्थ[10] ॥
कट्टि धर्मपय करत हूँ, सतंत[11] अधर्म समत्थ[12] ॥ ७ ॥
हैं हम जोलग नृप कह्यो, तोलग आवहु नाँहिं ॥
कछुतो मोहिहु कलि कह्यो, बखसहु पकरहु बाँहिं ॥ ८ ॥
तबहि द्यूतं[13] १ सूना[14] २ सुरा[15] ३, स्त्री रु[16] कनक[17] ५ ए पंच ५ ॥
कलिकौं दिन्नैं रहनकौं, रीति काल गिन रंच ॥ ९ ॥

षट्पदी

यह सुनि नृपकै छत्र कनकमय[18] तँहँ कलिजुग रहि,
करतभयो निज अमल सदा नृप संग रहन चहि ॥
इक १ दिन नृप जलकाम[19] फिरत बन लहि मुनि आश्रम ॥
मंग्यो जल तब द्विज समाधिथित कछु न कह्यो क्रम[20] ॥
मृत इक १ भुजंग नृप कुप्पि[21] तब मुनि गल डारि प्रयान किय॥
तस[22] बाल[23] नृपहिं सत्तम७दिवस तच्छक[24] दंसन[25] साप दिय।१०।

---

*वृहत्क्षत्र १ अवंतीपुर में २ एक समय मे इतनों के होते हुए ३ रणधीर चहुवाण राजा हुआ ४ अपनी ही सम्मति से अथवा इच्छा से ५ शिकार ६ दो गौवो को ७ पीटता हुआ क्रूर कर्म करनेवाला ८ उसने कहा ९ कलियुग १० यहां पर धर्म के पगों को काटकर अधर्म को ११ निरन्तर १२ समर्थ करताहूं १३ जूआ १४ हिंसा १५ मद्य १६ और १७ सोना (स्वर्ण) १८ राजा के सोने का छत्र था जिस में १९ जल की कामना से २० उत्तर देने का जो क्रम था वह कुछ नहीं कहा २१ राजा ने क्रोध करके एक मरा हुआ सर्प २२ उस २३ उस मुनि के बालक ने राजा को सातवें दिन २४ तक्षक नामी सर्प २५ डसैगा

दोहा

नृप यह सुनि सोच्यो ×निपट, +पै सु अवधि दिन पाय ॥
तच्छक दैव ÷निदेस डसि, कियउ भस्म *तस काय ॥११॥
भये परिच्छितके **तनय, जनमेजय १ श्रुतसेन २ ॥
उग्रसेन३अभिधान पुनि, भीमसेन४चउ४मैन[1] ॥ १२ ॥
भयो तनय[2] रनधीरकै, सो सत्रुघ्न४३सनाम ॥
इंद्रकेतु भानेज यह, अतिबल रन उद्दाम[3] ॥ १३ ॥
सुता मगध सोमाविकी, कलना४३।१नाम अनूप ॥
जित्ति स्वयंबर जो लई, परनि सत्रुघन४३ भूप ॥ १४ ॥
जनमेजय इत जनक[4]को,सुनि तच्छक[5]सौं नास ॥
रच्यो कुपित अहिसत्र[6] तँहँ, बरन्यौं भारत व्यास ॥ १५ ॥
सु सुनि सूत[7] नैमिष गयो, जानत भारत जानि ॥
पूछ्यो मुनि सौनक प्रमुख[8], लग्गो कहन प्रतानि[9] ॥ १६ ॥

॥ षट्पदी ॥

छेत्र नैमिसारराय बिप्र सौनक कुलपति तँहँ ॥
भृगुकुलभव[10] मख रचत समा[11] द्वादस १२ ब्रत लै तँहँ ॥
बडे ब्रह्मऋषि वृंद सकल राजत[12] जिहिं अवसर ॥
उग्रश्रवा अभिधान[13] सूत उन ढिग आयो वर ॥
सब मुनिन तास आदर रचिय दिय आसन सनमान जुत ॥
कल्ल्यान पुच्छि पुच्छिय बहुरि कितते आयउ सूतसुत ॥१७॥
सुनत सूत उच्चरिय नाग होमिय जनमेजय ॥
व्यास रचित सुनि तत्थ पुराय भारत कथान[14] चैय[15] ॥

यह श्राप दिया × बहुत + परन्तु ÷ दैव की आज्ञा से * उस राजा परीक्षित के शरीर को ** पुत्र १ चारों मदन अर्थात् कामदेव रूप २ पुत्र ३ युद्ध में निरंकुश ४ अपने पिता परीक्षित का ५ तक्षक सर्प से ६ सर्पयज्ञ ७ उस महाभारत को सुनकर सूत पौराणिक नैमिषारण्य क्षेत्र में गया ८ शौनक आदि ९ विस्तार करके १० भृगुकुल में जन्म लेकर ११ बारह वर्ष का १२ शोभायमान १३ उग्रश्रवा नामक श्रेष्ठ सूत १४ कथाओं का १५ समूह.

अरु तीरथ१आयतन२बहुत परसत न्हावत इत ॥
लखि समंतपंचक५सनाम छेत्रहु सुरसेवित ॥
जिहिं ठाम घोर अग्गैं भयउ कौरव पांडव रन अमित ॥
तिहिं तीर्थ होय आयो इहाँ ब्रह्मऋषिनके दरस हित ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्थ होहु सब आसनन, सावधान द्विजराज ॥
अब तुम पुच्छहु सो कहौं, सुंदर कथन समाज ॥ १९ ॥
तब मुनि बोले सूत जो, भाख्यो व्यास पुरान ॥
सुरन मुनिन पूज्यो सु सुनि, कहि विचित्र आख्यान ॥ २० ॥
जाके सुंदर पर्व१पद२, अर्थ१न्याय२उदार्म ॥
वेदतत्त्व भूखन रुचिर, अघहर भारत नाम ॥ २१ ॥
जनमेजय नृपसौं कही, बैसंपायन बिप्र ॥
सोहि व्यासकी संहिता, सुनी चहत हम छिप्रं ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणरणधीरजीवितसमयसमानाऽधिकरणकवज्र१परीक्षिता२ऽऽदिनृपोद्देशनकलिकुमतिपरीक्षिदनुचितकरणबालद्विजशापतक्षकतद्दंशनजनमेजयकौरवप्रभूभवनरणधीराऽनन्तरशत्रुघ्नपौण्ड्रादिराज्यसमासादनमगधेशसुताकलत्रोद्वहनसमारब्धसर्पसत्रमहाभा

१ तीर्थों का घर २ समन्तपञ्चक नाम क्षेत्र ३ देवताओं से सेवन किया हुआ ४ अत्यन्त ५ कथाओं का समूह ६ सूत पौराणिक से ७ कथा जिस भारत के अठारह पर्व और पद तो सुन्दर और अर्थ का रखना ८ गंभीर है, वेद का सार है सो ही उसका सुन्दर भूषण है और पाप को हरनेवाला भारत नाम है ९ शीघ्र

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण रणधीर के जीवित समय के बराबर है समय जिनका ऐसे वज्र और परीक्षित आदि राजाओं का कथन, कलियुग की खोटी बुद्धि से परीक्षित का अनुचित करना, बाल ब्राह्मण का श्राप देना, तक्षक नाग का परीक्षित को डसना, जनमेजय का कैरवों का पति होना, रणधीर के पीछे शत्रुघ्न को पौण्ड्र आदि देशों का प्राप्त होना, मगध के राजा की पुत्री कलत्र

स्तश्रवणाश्रुततल्लोमहर्षणिनैमिषाऽरण्यदीक्षितशौनकादिभारतशुश्रूषणं षोडशो१६मयूखः ॥ १६ ॥ आदितोऽष्टपञ्चाशत्तमः ॥ ५८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

हरिगीतम्

तब सूत आचरि मंगलादि कहंत भारतकी कथा,
जब लोक अप्रभ तामसाऽऽवृत हो तहाँ सुनिये जथा ॥
गुरु अंड हुव ब्रह्मंड नामक बीज अव्यय सर्गको,
जुग आदि दिव्य निमित्त जानहु मूल प्राकृत वर्गको ॥ १ ॥
ता माँहिं सुनियत ब्रह्म१ सत्य सनातनाऽभिध ज्योति जो,
अव्यक्त अद्भुत औ अचिंत्य समाख्य सुच्छम हेतु सो ॥
तसमात जो प्रकट्यो प्रजेस हिरण्यगर्भ२ सु जानिये,
ब्रह्मा१ रु सुरगुरु२ रुद्र३ ए तसमात उद्गत मानिये ॥ २ ॥
परमेष्टि१ मनु२ तिमही प्रचेतस३ दच्छ४ ए प्रकटी भये,
हुव सत्त७ दच्छ तनूज नाम तदीय हे नृप ए ठये ॥
तम१ अंगिरा२ विक्रीत३ कर्दम४ अश्व५ दम६ अरु क्रोध७ये,

से विवाह करना, सर्पयज्ञ का आरंभ होना, महाभारत का सुनना, उस महाभारत को सुनकर लोमहर्षण नामक सूत के पुत्र उग्रश्रवा का नैमिषारण्य में यज्ञ की दीक्षा लिये हुए शौनक आदि से भारत की प्रशंसा करने का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१६॥ और आदि से अठावन मयूख हुए ॥ ५८॥

तब सूत पौराणिक १मंगलाचरण आदि करके भारत की कथा कहने लगा कि जिस समय लोक २ विना कान्ति ३ तमो गुण से घिरा हुआ था सो सुनो। ब्रह्माण्ड नामक एक४बडा अंडा पैदा हुआ जो ५ परमेश्वर की ६ सृष्टि का ७ कारण और दिव्य युग आदि का भी कारण और ८ प्रकृति (जगत् का कारण) का मूल है उसी ब्रह्मांड में सत्य, सनातन ९नामवाले ब्रह्म की ज्योति स्वरूप सुनते हैं, वह ब्रह्म१० दीखने में नहीं आवे ऐसा अद्भुत ११ विचार में नहीं आवे ऐसा१२इन नामोंवाला सब का सूक्ष्म कारण है१३ उस ब्रह्म से जो१४प्रजा का पति प्रकट हुआ उसका नाम हिरण्यगर्भ जानो उसीसे ब्रह्मा, बृहस्पति और इन्द्र १५ पैदा हुए जानो. फिर कमल से पैदा होनेवाला १६ ब्रह्मा१७ दक्ष १८ दक्ष के सात पुत्र हुए १९उनके नाम ये हुए

पुनि मनु१ मरीचक१ आदि१४।७ सृष्टिप एकबीस२१ सुबोध ये ।३।
परमाख्य पुरुख१ जु अप्रमेय अनादि आत्मक सोधिये,
आदित्य१२ बिश्वेदेव१३ पुनि बसु८ दस्र२ जन्म प्रबोधिये ॥
बलि साध्य१२ पितर१ पिशाच२ गुह्यक३ इच्छ४ त्योंहु वशिष्ट जे,
बुंध ब्रह्मऋषि१ अरु राजऋषि२ गुनगंज पूर्ण प्रबिष्ट जे ॥४॥
नभ१ बात२ तेज३ रु नीर४ भू५ हुव अंतरिच्छ१ दिसा२ जथा,
हायन१ अयन२ ऋतु३ मास४ पच्छ५ रु द्यौस६ रत्ति७ भये तथा ॥
इम ओरहू खिल सर्व सम्यक लोकसाक्षिक होत भो,
दीसैं जु थावर१ जंगमा२ऽऽदिक सो असेस उदोत भो ॥ ५ ॥
बहुरयों जुगच्छयमैं यहे जग पक्कि पावत नासकों,
मधु अंत ज्यों जव ऊर्जमैं पुनि तेहि लेत प्रकासकौं ॥
निजकालमैं ऋतुचिन्ह ज्यों पुनि होत जग यह जानिये,
अरघट्ट घट जिम सर्वभाव१ अभाव२ संतत मानिये ॥ ६ ॥
यह यों अनादि अनंतभूत बिनासचक्र१ भ्रम्यों रहैं,
यापैं चढे सब जोनि जे चउरासि लक्ख८४०००००तिन्हैं गहैं ॥

१ प्रजापति २ श्रेष्ठ ज्ञानवाले ३ परम पुरुष नामवाला ४ जिसका प्रभाव जानने में नहीं आता ऐसे अनादि (परमेश्वर) के ५ आत्मा से बारह आदित्य, तेरह विश्वेदेव, आठ वसु, दो ६अश्विनीकुमारों का जन्म जानो. फिर बारह साध्यदेव ७ आत्मज्ञानी ८ गुणों के समूह में ९ प्रवेश करनेवाले इसीप्रकार १० आकाश ११ पवन १२ अग्नि, जल और भूमि हुए १३नक्षत्र मंडलस्थल१४वर्ष१५पक्ष१६बाकी के१७श्रेष्ठ प्रकार से१८सूर्य से अथवा लोक ही है साक्षी जिसका ऐसे परमेश्वर से १९ स्थावर और जङ्गम आदि सम्पूर्ण प्रकाशित हुए फिर२०प्रलय में २१ चैत्र मास में जव (धान्यविशेष) का अन्त होकर२२कार्तिक मे फिर प्रकाश होता है और अपने अपने२३ समय में ऋतुओं के२४ चिन्ह फिर पीछे होजाते हैं इसीप्रकार प्रलय हुए पीछे यह संसार पीछा उत्पन्न होता है जिसप्रकार२५ रहँट (कूप से पानी निकालने का यंत्र) का२६ घट (पात्रविशेष) बारंबार बाहर आकर भीतर जाता है ऐसे ही इस संसार का२७निरन्तर होना और मिटना मानो२८संसार के प्राणियों का विनाश करने का चक्र फिरता रहता है इस चक्र पर जो चढजाता है वह चौरासी लाख२९योनियों को पाता है ये नरलोक की योनियां कहीं अब छतीस हजार तीनसौ तेतीस प्रकार की

तेतीस संख्यसहस्र३३०००सततेतीस३३००अरुतैंतीस३३ए ३६३३३

संछेप[1] स्वच्छन सुरन[2]की इम सर्ग[3] सम्मिति[4] दीसये ॥ ७ ॥

दिव[5]पुत्र जानहु वृहदभानु१ रु च[6]च्छु२ आत्मा३ नामतैं,

ब[7]लि बिभावसु४ सविता५ ऋचीक६रु अर्क७ पूरनधाम[8]तैं ॥

रवि८ भानु९ आसावह१० इतेक बिवस्वदात्मज धारिये,

इनमाँहिं बरं[10] मनु१ तास आत्मजं[11] देवभ्राट२ बिचारिये ॥ ८ ॥

सुभ्राट३ तास तनूं[12]ज तास तनूजहू अर्बें[13]चीन ए,

दसज्योति४१अरु सतज्योति४२नाम सहस्रज्योति४३हु तीन३ए ॥

दसज्योतिकेर हजार दस१००००सतज्योतिकेर हजार सो१०००००

रु सहस्रज्योतिकके तनय[14] दसलक्ख१००००००संचय[15] फार सो ।९।

तिनसौंहि जदु१ कुरु२ भरत३ अन्वयं[16] लोक अंतर ख्यात[17] है,

इक्ष्वाकु४ के रु जजाति५ के तिनसौंहि ए कुलजात[18] है ॥

कुल यौं सु बिस्तर[19] भूत सर्ग[20] अनेक ओरहु जानिये,

रवि मूल एंह[21] त्रिलोक यौं रविमैं चराऽचर[22] मानिये ॥ १० ॥

तिनही रहस्य[23] त्रिधा[24] रु ए सब आहि[25] भूतन धाम जे,

बिज्ञान[26]१ जुत ब[27]लि बेद२ जोग३ रु धर्म४ अर्थ५ रु काम६ जे ॥

त्रैवर्ग[28]सास्त्र१ रु लौकिजात्रिक[29]२ सर्ब व्यास बिचारिकैं,

दिय व्यास[30]सौं रु समास[31]सौं यह भरतकुल बिसतारिकैं ॥ ११ ॥

इतिहास१श्रुति२व्याख्या[32]३समेत सु ग्रंथ भारत नामही ॥

२देवताओं की ३सृष्टि का ४ प्रमाण है जिनका स्वरूप १संक्षेप से जानो ५स्वर्ग के पुत्रों (देवताओं) के नाम बताते हैं ६ चक्षु ७ पुनि ८ लोक को पूर्ण करनेवाले ९ ये सूर्य के पुत्र जानो १० श्रेष्ठ ११ पुत्र १२ पुत्र १३ देखो १४ पुत्र १५ समूह १६ वंश १७ लोक में प्रसिद्ध है १८ पैदा हुए हैं १९ फैल कर २० प्राणियों की सृष्टि २१ इस त्रिलोकी का मूल सूर्य है २२ जङ्गम और स्थावर (जड़, चेतन) इसी सूर्य में मानो इन की ही २४ तीन प्रकार की [ब्रह्मा, विष्णु, महेश अथवा मनसा, वाचा, कर्मणा]२३ उपासना है और ये [सूर्य] प्राणीमात्र के धाम२५ हैं वेदव्यास ने विचार के साथ२६ब्रह्मज्ञान सहित२७पुनि२८अर्थ, धर्म, काम२९लौकिक यात्रा [लोकव्यवहारमें चलना] और ३० विस्तार से और३१ संक्षेप से इस भरत कुल को फैला दिया ३२ अर्थ

विरच्यो महाफल बादरायन[1] सर्बगुनगनधामही ॥
जानैं पढैं जु[2] सु[3] सर्बकोबिदैं[4] पंडिताऽधिपती[5] बनैं ॥
कितनैं पढैं मनुआदि १ आस्तिक[6] आदि २ भारतके मनैं ॥१२॥
कितनैं उँपरिचरसौं[7] ३ कहैं इम व्यास भारत बिस्तर्यो ॥
पर[8] सिस्यपाठनैं[9] कोन रीति बनैं बिचार यहै धर्यो ॥
सु बिचार जानि मरालआसँन[10] व्यास आश्रमपैं गये ॥
अरजी तिन्हैं कर जोरि पूजि रु व्यास यौं करते भये ॥ १३ ॥
प्रभु काव्यभारतमैं रच्यो न परंतु[11] लेखक तास को ॥
बिनु लेख जो बिथरैं न लेखहि एक हेतु[12] प्रकासको ॥
जामाँहिं सांगं[13] १ रहस्य २ श्रुति[14] १ इतिहास २ और पुरान ३ है ॥
अरु भूत१भव्यं[15]२भविष्य३विस्तृत[16] तीन३कालँन[17] ज्ञान है ॥१४॥
मग्नौं१जरा[18]२भय३व्याधि[19]४भावं[20]१अभावं[21]२निश्चय जुक्तही ॥
रु पुरान अर्थ १ रु वर्ण१ आश्रम २ धर्म ३ लच्छँनता[22] कही ॥
तप१ब्रह्मचर्य२मही३ रु रबि४ससि[23]५तारका[24]६जुग७मानसौं[25] ॥
ऋक[26]१साम[27]२यजु३अध्यात्म[28]४हू बरनैं समस्त बिधानसौं[29] ॥ १५ ॥
दान१रु चिकिच्छा[30]२पासुपत[31]३बलि[32] न्याय सिच्छा[33]४हू जथा,
कहि लछ्यं[34]१ लच्छनं[35]२ जुत्त ए सब पुण्यतीर्थ१ कहे तथा ॥

---

१ बादरायण नामक वेदव्यास ने २ जो ३ सो ४ सब विषयों में पण्डित ५ पंडितों का भी पति ६ एक महाभारत के पढने से मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्र और वेदानुयायी आस्तिक ग्रन्थों का पढना मानाजाता है ७ विमान में बैठ कर ऊपर भ्रमण करते हुओं ने भारत को फैलाया ८ परंतु ९ शिष्यों का पढाना कैसे बनै अर्थात् पुस्तकाकार हुए विना पढना नहीं होसकै १० ब्रह्मा ११ परंतु इसको लिखनेवाला नहीं मिलता १२ प्रकाश करने का मुख्य कारण १३ लिखना ही है अङ्गों सहित और अभिप्राय सहित १४ वेद है १५ वर्तमान १६ विस्तार सहित १७ तीनों काल [समय] का ज्ञान है १८ बुढापा १९ रोग २० होना २१ मिटना २२ लक्षण [स्वरूप] २३ चन्द्र २४ तारा और युग २५ प्रमाण से कहेगये हैं २६ ऋग्वेद २७ सामवेद यजुर्वेद २८ आत्मतत्त्व २९ रीति पूर्वक ३० रोग निवारण उपाय [इलाज] ३१ पाशुपत [शैव] धर्म ३२ पूनि ३३ न्याय शिक्षा ३४ ये सब लक्ष्य [वस्तु] का स्वरूप बनाकर उसको बताना ३५ लक्षण स्वरूप

बहुधा[1] नदी२ बन३ सैल[2]४ सागर५ देस६ पत्तन[3]७ बर्णगे,
कहि कल्पनिर्णय[4]१ जुद्धपाटव[5]२ बाक्यजाति[6]३ सबै दये ।।१६।।
सह लौकयात्रिक[7]१ बस्तुसबर्ग[8]२ जो सु आक्खिय[9] खुल्लिकैं,
पर[10] तास लेखक नाँ मिल्यो सु कहो जथातथ तुल्लिकैं ॥
बोले पितामह[11] व्याससौं तपवृद्ध मुनिचय श्रेष्ठ मैं,
विज्ञानगूढहिं[12] जानिबे सन तोहि जानत ज्येष्ठ मैं ॥१७॥
तैं सत्यवादिक व्यास मोसन काव्य मैं किय यौं कही,
तसमात[13] काव्यहि होहु यह विख्यात बिस्तरसौं मही[14] ॥
याकौं बिसेसन देनमैं कबि कोउ नाँहिं समर्थ हैं,
ज्यौं द्वितीयाऽऽश्रम[15]के बिसेसन आश्रमत्रय[16]३ व्यर्थ हैं ॥१८॥
इहिं काव्यकौं लिखनार्थ चिंतहु विघ्नपति[17] हित धारिकैं,
सुनि व्यास चिंतिय एकदंत[18] गये बिरंचि[19] पधारिकैं ॥
स्मृतमात्र[20] भक्तमनोर्थपूरक वारणानन[21] आयकैं,
उपरिष्टि[22] अर्चित[23] व्है दई सुनि हार्द[24] एह सुनायकैं ॥१९॥
खिन लेखिनी थिर जो रहै न ततो लिखैं हम ग्रंथकौं,
सुनि बादरायन[25] हू कह्यो संकेत इक यह पंथ[26]कौं ॥
बिनु अर्थबोध[27] लिखो न यौं सुनिकैं बिनायक[28] व्यासकी,

१अक्खर २पर्वत ३पुर ४प्रलय का ५युद्ध की चातुरी ६ज्ञाति के वाक्य (जिसमें अनेक विभक्तियें होवे उसको वाक्य कहते हैं) ७लोकयात्रा के साथ ८वस्तुओं के वर्ग अर्थात् कौन वस्तु किस वर्ग की है [अपनी जाति के समूह को वर्ग कहते हैं अथवा समान धर्मवाले को वर्ग कहते हैं] ९ सब खोल करके कहे हैं १०परंतु ११ ब्रह्मा बोला कि तप वृद्ध श्रेष्ठ मुनियों के समूह में १२ छिपाहुआ ब्रह्मज्ञान जानने से मैं तुमको बडा मानता हूं १३ इसकारण से १४ भूमि में विस्तार पूर्वक प्रसिद्ध होओ १५ गृहस्थाश्रम के विशेषण विना १६ ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास व्यर्थ है इसप्रकार १७ गणेश को १८ गणेश को १९ ब्रह्मा २० याद करने मात्र से ही २१ गणेश २२ ऊपर ठहरे हुए ही २३ पूजित होकर २४ अभिप्राय सुन कर मेरी कलम कुछ भी बन्ध नहीं रहै तौ २५ वेदव्यास २६ इस मार्ग का एक संकेत है कि २७ विना अर्थ समझे लिखो मत. २८गणेश ने व्यास की बात सुन कर

स्वीकार करि लिखिवे लगे दृढ धारि अर्थ प्रकासकी ॥२०॥

दोहा

ग्रंथमाँहिँ अति गूढ तब, रचि रचि ग्रंथ समाजे[2] ॥
लै संधा[3] पुनि यौं कही, बासवेय[4] मुनिराज ॥ २१ ॥
अष्टसहस्र८०००रु अष्टसत८००, भारत वृत्त[5] प्रमान ॥
मैं जानत जानत सुकहु, संजय जानत वा[6] न ॥ २२ ॥
गनपति जौलौँ खिनकि ढंवि, जानैँ कूटन अर्थ ॥
व्यासहु तौलौँ बहु रचैँ, सत्वैर वृत्त समर्थ ॥ २३ ॥
करि इम यह भारत कियउ, सट्ठि लक्ख६०००००० समुपेत[11] ।
लक्ख तीस३०००००० सुरलोक जो, पंद्रह१५००००० पितर निकेत[12] २४
लक्ख चउद्दह१४००००० ग्रंथ यह, धर्‍यो लोक गंधर्व ॥
लक्ख इक्क१००००० नरलोकमैँ, किन्नौँ प्रकट सुपर्व[13] ॥ २५ ॥
देवनसौँ नारद कहत, सुक गंधर्वन सत्थ ॥
पितरनसौँ देवल असित, वैसंपायन[14] इत्थ ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकजनमेजयस

२ गुथे हुए समूह अथवा ग्रन्थ का समूह ३ प्रतिज्ञा ४ वासवी के पुत्र [वेदव्यास] ५ भारत में आठ हजार आठ सौ छन्दों का अर्थ मैं जानता हूं और शुकदेव [वेदव्यास का पुत्र] जानता है ६ संजय जानता है अथवा नहीं जानता ७ गणेश जय तक ८ क्षण मात्र९ ठहर कर १० शीघ्रता से, छन्द रचना में समर्थ ११ संप्राप्त १२ पित्रीश्वरों के घर में १३ श्रेष्ट पर्वों वाला १४उपरोक्त महाभारत की कथा देवताओं को तो नारद मुनि कहते हैं गन्धर्वों को व्यास के पुत्र शुकदेव कहते हैं, पित्रीश्वरों को व्यासदेव के शिष्य देवल मुनि और असित मुनि कहते हैं और इस लोक में व्यास के शिष्य वैसंपायन मुनि कहते हैं [नारदादि मुनियों को पुराणों के मत से अमर मानते हैं इस कारण से यहां वर्तमान किया है] ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान (बराबर) है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन (एक समय में होनेवाले) जनमेजय के सर्पयज्ञ में महा

पंसत्रश्रुतमहाभारतलौमहर्षणिशौनकाऽऽदिश्रवणाऽऽरम्भणसमा-
ऽऽचरणमङ्गलपूर्वकसर्वंवर्णनचेतोनिर्मितभारतब्रह्मोक्तव्यास१गण-
पति२समयस्थापनग्रन्थगूढग्रन्थिसङ्ख्यासूचनविभजितप्रबन्धचतु-
र्लोक१विन्यसनतद्वक्त्रुद्देशनंसप्तदशो१७मयूखः ॥ १७ ॥ आदितएको
नषष्टितमः ॥ ५९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मुक्तादाम

भयो नृप पांडु सु भारत वंस, जयो[1] बहु देस स्वविक्रम[2] अंस ॥
रह्यो बन बीच सदार[3] नरेस, रम्यो मृगयारस[4] मत्त बिसेस ॥ १ ॥
तहाँ मुनि दंपति[5] ह्वै मृगरूप, व्यवाय[6] प्रसक्त[7] लखे इहिं भूप ॥
दयो मृगकैं जब बान धराप[8], लग्यो तब सो इहिं कुप्पि[9] ससाप[10] ॥ २ ॥
जबै करिहै नृप तूहु व्यवाय, तबै इमही मरिहै अकुलाय ॥
लह्यो यह पांडु प्रदुस्सह[11] साप, तज्यो तियसंग गह्यो दुख आप ॥ ३ ॥
कह्यो पुनि कुंतियसौं नृप एह, तज्यो रत मैं अनु[12] पुत्र न गेह ॥
कहैं पतिकै जु रमैं पर पास, न ह्वै खलु[13] भंग पतिव्रत तास ॥ ४ ॥

भारत सुन कर लोमहर्षण के पुत्र (उग्रश्रवा सूत पौराणिक) का शौनक आदि मुनियों को सुनाने का आरंभ करने के समाचार, मंगलाचरण पूर्वक सम्पूर्ण भारत का चित्त में बनाना, ब्रह्मा के कहने से वेदव्यास का गणेश के समय का स्थापन करना, महाभारत ग्रन्थ की छिपीहुई गांठो (गूढार्थ) की गिनती की सूचना करना, विभाग कियेहुए ग्रन्थ का चार लोकों में क्रम से स्थापन करना और उनके वक्ताओं(कहनेवालों)के कथन का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से उनसठ५९मयूख हुए ॥

१ जीता (विजय किया) २ अपने पराक्रम के अंश से ३ स्त्रियों सहित ४ शिकार ५ स्त्री पुरुष दोनों मृग का रूप करके ६ मैथुन करने में ७ आसक्त ८ भूपति पांडु ने ९ क्रोध से १० शाप दिया. मुनि ने कहा कि हे राजा तू भी जब मैथुन करेगा तब घबराकर इसी (हमारी) तरह मरेगा ११ बहुत दुस्सह १२ मैं ने तो स्त्रीसंग छोडदिया और पीछे घर में पुत्र नहीं है और जो स्त्री पति के कहने से पर पुरुष के पास रमै तो १३ निश्चै ही उसका पतिव्रत भंग नहीं होता।

जनौं सुत छेत्रजही तसमात, मिटैं रुन पैतृक तो मम सात ॥
दयो मुनि जो सु जप्यो तव मंत्र, बुलायउ कुंतिय धर्म स्वतंत्र ।५।
जुधिष्ठिर गर्भ लह्यो तसमात, कहैं नृपकै पुनि बुल्लिय बात ॥
भयो तिहिं भीम प्रभंजन अंस, भयो जय बासव तैं सुप्रसंस ।६।
रु माद्रियके हित दस्र बुलाय, कह्यो तिहिं कुंति तुहू उपजाय ॥
लहे तब माद्रिय हू दुव बाल, तहाँ रहतैं बितये कति काल ।७।
भयो पुनि पांडुहिं कामज ताप, रम्यौं गहि माद्रिय बीसरि साप॥
मस्यो ततकाल महीप मृगारि, गई सह माद्रिय कुंति निवारि ।८।
पृथा तब पोखि बडे किय बाल, रही मुनि आश्रम कोउक काल॥
तिन्हैं मुनि लै गजपत्तन आय, दये सिसु स्वीय कुटुंब मिलाय।९।
किते तिनकौं लखि बुल्लिय मूढ, न ए सिसु पांडुज एम अगूढ ॥
वदे कति पांडुजही इम बत्ति, बदे कतिही तिहिं आप बिपत्ति।१०।
बसे इम पांडुव गैपुर थान, भई सुमबुष्टि सदुंदुभि ध्वान ॥
पढे श्रुति४ सांग६ रु सास्त्र६ अनेक, रहे अकुलोभय आत बिबेक।११।

१ इस कारण से २ क्षेत्रज (अपने क्षेत्र में औरों के वीर्य से पैदा होवे उसको क्षेत्रज कहते हैं) पुत्र जनो तो सुख पूर्वक मेरा ३ पितृऋण मिट जावे ४ कुन्ती को कुमारपन की अवस्था में मुनि ने एक मंत्र दिया था कि इसका जप करके जिस देवता को तू अपने पास बुलावेगी वही आवेगा उसी मंत्र को जपा ५ उस धर्म से और राजा (पांडु) के कहने से फिर ७ पवन को ६ बुलाया ८ उस पवन के अंश से भीमसेन हुआ और ९ इन्द्र के अंश से १० प्रशंसा करने योग्य ११ अर्जुन हुआ १२ और पांडु की छोटी राणी माद्री के लिये १३ अश्विनीकुमारों को बुला कर कुन्ती ने १४ उसको कहा कि इनसे तू भी पुत्र पैदा कर १५ कामदेव से पैदा हुआ ताप १६ मृग रूपी मुनि का शत्रु राजा पाण्डु मरा तब कुन्ती को रोक कर माद्री सती हुई १७ हस्तिनापुर १८ अपने कुटुम्ब से १९ पाण्डु से पैदा हुए नहीं हैं २० इस प्रकार प्रसिद्ध कहने लगे २१ कितनोंकने कहा २२ कितनोंकने पाण्डु की आप की आपदा कही (आपद्धर्म जुदा ही है उसके अनुसार पांडु ने अनुचित नहीं किया) २३ हस्तिनापुर में २४ पुष्पों की वर्षा २५ नगारों के शब्द के साथ ॥ ये पांचों पांडव २७ अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) के साथ २६ वेद पढे २८ और अनेक शास्त्र भी पढे पांडवों को जब तक ३० ज्ञान नहीं आया तब तक अपने हिस्से की २९ भूमि का अलोभ रहा. दुर्योधन से अपनी भूमि

लही पुनि अर्जुन द्रौपदि जाय, धनुर्धर दुष्कर[1] कर्म बिधाय[2] ॥
भयो तबतैं वह पूजित लोक, जंयो[3] बहुजुद्ध हनैं अरि थोक ।१२।
धनंजय जित्ति लई दिस च्यारि४, लयो सबसौं कर[4] धर्म बिथारि ॥
रच्यो नृपसूय[5] समाभिध[6] सत्र[7], जुधिष्ठिर दीक्षित[8] भो नृप तत्र ।१३।
भई हरिके[9] नयसौं[10] इक ओर, धनंजय[11]१भीम२पराक्रम जोर ॥
हनैं नृप मागध[12]१ओ सिसुपाल२, रच्यो इम अध्वर[13] धर्म[14] बिसाल।१४।
जहाँ मनि१हाटक[15]२रत्न३अपार, रु[16] गो४गज५बाजि६बिचित्र प्रकार॥
बनैं बहुधा[17] पट[18]७कुंतल[19]८व्यूह, जथाक्रम रांकव[20] आसन९जूह[21]॥१५॥
निमंत्रित[22] तत्थ[23] सुजोधन आय, लखी सब दिव्य समृद्धि सुभाय ॥
सभा मयनिर्मित[24] जो मतिहीन[25], सुजोधन भो लखि मत्सर[26] लीन।१६।
हस्यो हरिके लखतैं जब भीम, सुजोधन रुठि[27] तजी श्रुति[28] सीम ॥
कह्यो धृतराष्ट्रहिं यौं तब जाय, तिन्हैं[29] हम जीतत द्यूत हराय ।१७।
भन्यौं सुत लोभित अंस्तुहि[30] भूप, रच्यो तब द्यूत महाछल रूप ॥
जुधिष्ठिरको सरबस्वहि जीति, सभा बिच द्रौपदि किन्न सभीति।१८।
बिपत्ति घनी लहि पांडव५एम, भये पुनि सज्ज लयो रन नेम ॥
अठारह१८द्यौस[31] भई तब रारि, लयो इनै[32] राज्य सुजोधन मारि।१९।
कियो धृतराष्ट्र तदुत्तर[33] ताप, गवल्गणापुत्र[34]हिं आकिखय[35] आप ॥

लेने का लोभ नहीं किया) १ कठिनाई से किया जावे ऐसा कर्म २ करके ३ विजय पायगा ४ खिराज ५ राजसूय ६ नामक ७ यज्ञ ८ उस यज्ञ की दीक्षा युधिष्ठिर ने ली ९ कृष्ण की १० नीति से एक और बात भी हुई ११ अर्जुन १२ जरासन्ध १३ यज्ञ १४ युधिष्ठिर ने १५ स्वर्ण १६ अरु १७ अनेक प्रकार के १८ वस्त्र १९ केसों का समूह (नाना प्रकार के केस भी भेट आये थे) २०मृगों के रोमों के बने हुए वस्त्र २१ समूह २२ न्योंता हुआ२३तहां पर२४मय दानव की बनाई हुई२५निर्बुद्धि (दुर्योधन) २६वैर (दूसरे की सम्पत्ति का असह होना) में कृष्ण के देखते हुए जब भीमसेन हसा तो दुर्योधन ने२७क्रोध करके२८वेद की मर्यादा को छोडी२९पांडवों को३०ऐसा ही होवे३१ अठारह दिन तक ३२ पांडवों ने ३३ जिस पीछे धृतराष्ट्र ने बहुत शोक किया और३४संजय को ३५ कहने लगा कि

बरी जब संजय[1] द्रौपदि पत्थ[2]१, तजी तबही जय आस अनर्थ[3] ।२०।
सुन्यौं जब खांडव दाह२गभीर, निवारिय अर्जुन बानन नीर३ ॥
सुन्यौं जतुभौंन[4] विरोचन दाह४, गये बचि पांडव कानन[5] राह ५।२१।
सुन्यौं जब संकरसौं जय[6] जुद्ध६, दिये सिव पत्थहिं अस्त्र७बिसुद्ध ॥
सुन्यौं दिवलोक गयो८जब पत्थ, पुरंदर[9]सौं लिय उत्तम अत्थ९।२२।
सुनी जब मैं इम अंबक[11] हीन, कुबेर समागम पांडव कीन१० ॥
सुनी पुर मच्छ जबै रन रीति, लये मम पुत्र धनंजय[12] जीति११।२३।
सुनी हरिहू हुव पांडव सत्थ१२, सुनी पुनि एक१हि मांधव[13]१पत्थ२।१३।
सुनी जब मोसुत१कर्ण२समेत, कियो हरि[14] बंधन मंत्र१४कुचेत!२४।
सुनी जब भीष्महिं अक्खिय कर्ण[15], लरौं नहिं तो[16]छत मैं१५इम बर्ण[17] ॥
सुनी हरि१पत्थ२रु गांडिव चाप३, मिले त्रय३।१६विक्रम उग्र अमाप ॥
सुनी जब मोह[19] रह्यो जय[20] पाय, दये हरि लोक१४स्व[21]बक्क दिखाय१७॥
सुनी जब पांडवकों रन बीच, बतायउ भीखमहू निज मीच[22]१८ ।२६।
सुनी जब पत्थ सिखंडिय ओट, हनैं रन भीखम सायक चोट १९ ॥

---

१ हे संजय २ अर्जुन ने जब द्रौपदी को वरी तभी हमने इम ३ अनर्थ वाली जय की आशा को छोडदी और खांडव वन का गंभीर दाह सुना जिस में अर्जुन ने बाणों से मेघ के पानी को रोकदिया तभी से हमने जयकी आश छोड दी "तभी से हमने जय (जीतने) की आश छोडदी" इस पद को आगे प्रत्येक कार्य के अन्त में लगालेना चाहिये. ४ लाक्षागृह में ५ वन के मार्ग से महादेव से ६ अर्जुन का युद्ध सुना ७ विशेष शुद्ध (निर्मल) ८ स्वर्ग में अर्जुन गया तब ९ इन्द्र से उत्तम १० फल पाये मुझ ११नेत्रहीन ने सुना कि पांडव कुबेर से मिले और जब मच्छ के पुर(वैराट) में युद्ध की रीति सुनी कि मेरे पुत्र को १२ अर्जुन ने जीत लिया तब ही विजय की आश छोड दी १३फिर सुना कि कृष्ण और अर्जुन एक ही हैं तभी से विजय की आश छोड दी. खोटी बुद्धिवाले मेरे पुत्र ने कर्ण के साथ १४कृष्ण को कैद करने की सलाह की सो सुनी. जब सुना कि भीष्म से कर्ण ने इस प्रकार१७अक्षर१५कहे कि१६ तुम जीवित रहोगे तब तक मैं युद्ध नहीं करूंगा तभी मैंने विजय की आश छोड दी १८धनुष२०अर्जुन को१९मोह प्राप्त होगया था तब कृष्ण ने अपने२१मुख में चौदह लोक दिखा कर अर्जुन का मोह मिटाया २२भीष्म ने अपनी मृत्यु बता दी कि इस उपाय से मैं मरूंगा अर्जुन ने अपनी श्रेष्ठ

सुनी जब द्रोनहु जुद्ध विचित्र, न मारत पांडवकौं२०जिम मित्र।२७।
सुनी जब पत्थ सुसंध[1] प्रवीर, जयद्रथ मारि लयो२१ताकि तीर ॥
सुनो हुव भीमहु मोह बिवर्ण[2], छुई धनु[3]कोटि हन्यौं नहि२२कर्ण।२८।
सुनी वृख[4] वासव[5]सक्ति सुभाय,घटोत्कच उप्पर मुक्किय२३आय ॥
सुनी जब द्रौपद[6] दुष्ट चलाय, हनैं गुरु द्रोन निरायुध[7]२४हाय । २९ ।
सुनी जब जुद्ध वृकोदर[8] सक्त[9], पियो हठि[10] कंठ दुसासन रक्त[11]२५॥
सुनीपुनि कर्ण महारथ वीर, हन्यौं२६जयं[12] दै रन तिच्छन तीर ।३०।
सुना नृप सल्य हन्यौं२७जब धर्म[13], हन्यौं सकुनी२८सहदेव सुवर्म[14] ॥
सुनी हरि सम्मत[15] भीम बकारि, लयो मम पुत्र गदा[16] रन मारि२९ ।३१।
सुनीजबद्रौणि[17] गयो निस गुप्त[18],हन्यौंपरसैन्य३०अखोहिनि[19]१सुप्त[20]॥
सुनीसर ब्रह्म[21]हु भो रन मोघ[22]३१, लयो जय[23] झेलि स्वअस्त्रन ओघ[24]।३२।
सुनी गुरुके सुतहू भय भिन्न, निकासि स्वमस्तकको मनि दिन्न३२॥
भई सुबलेस[25]सुता बिनु पुत्र, न को पितु१बंधु२ कुटुंब३ तनुत्र[26] ।३३।
कियो इम पांडु तनूजन[27] जत्न, गयो पुनि राज्य लयो असपत्न[28] ॥

---

१ प्रतिज्ञा के साथ वीरता से जयद्रथ को मार दिया जब सुना कि भीमसेन मूर्छा पाकर २ मलिन होगया था उसके धनुष का ३ अग्रभाग तो लगाया परन्तु कर्ण ने उसको नहीं मारा तब ही मैंने विजय की आश छोड दी ४ कर्ण ने ५ इन्द्र की दी हुई शक्ति (यह अमोघ शक्ति कर्ण ने अर्जुन को मारने के लिये इन्द्र से ली थी) को घटोत्कच पर छोड दी ६ द्रुपद के पुत्र (धृष्टद्युम्न) ने ७ विना आयुध ८ भीमसेन ने युद्ध में ९ आसक्त होकर १० हठ पूर्वक दुश्शासन का ११ लोहू पिया १२ अर्जुन ने महारथी कर्ण को तीखे बाणों से मारा १३ युधिष्ठिर ने राजा शल्य को मारा १४ श्रेष्ठ कवचवाले सहदेव ने १५ कृष्ण की सलाह से भीमसेन ने मेरे पुत्र (दुर्योधन) को १६ गदायुद्ध में मारलिया १७ अश्वत्थामा १८ छिप कर १९ शत्रु की एक अक्षौहिणी २० सूती हुई सेना को मारी २१ अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र भी २२ व्यर्थ होगया उसको २३ अर्जुन ने अपने अस्त्रों के २४ समूह से झेल लिया अश्वत्थामा ने भय से अपने मस्तक का मणि काढकर देदिया और २५ सुबल राजा की पुत्री (गान्धारी) विना पुत्रवाली होगई इस गान्धारी के कोई २६ रक्षा करने वाला नहीं रहा पांडु के २७ पुत्रों ने इस प्रकार का उपाय किया कि अपना गया हुआ राज्य विना शत्रुओं के ले लिया अर्थात् अब कोई शत्रु नहीं रहा

रहे दस१०जीवित भारत भीर, उतैं खिल सत्त७इतैं त्रय३वीर।३४।
भयो मम संजय विव्हल चेत, बढ्यो अतिमोह स्वपुत्रन हेत ॥
सुन्यो इम संजय अंध बिलाप,लग्यो बिसवासि निवारन ताप।३५।
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहो त्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावित-महाभारतसमासे पाण्डवोद्भवनमृगमुनिशप्तपाण्डुमरण-सपुत्रपृथा हस्तिनापुराऽऽगमन-सङ्क्षिप्तपाण्डवचर्यासूचन-चिन्तितभूतवृत्तधृतराष्ट्रपरिदेवनमष्टादशो१८ मयूखः ॥ १८॥ आदितः षष्टितमः ॥६०॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पदी ॥

सुनि संजय इम कहिय नृपहिं बिस्वासि जोरि कर ॥
भये पुब्ब नृप बहुत गये मरि सबहि काल सर ॥
सैव्य १ महारथ बीर बहुरि सृंजय २ धरनीपति ॥
कत्तीवान ३ सुहोत्र ४ रंतिदेव ५ हु बिसालमति ॥
बाल्हीक६दमन७इक्ष्वाकु८गय९आजिन१०चैद्य११सर्य्याति१२नल१३
नाभागअंबरीस१४हु नृपति विश्वामित्र१५प्रगल्भ बल ॥ १ ॥
मनु१६मसुत्त१७पुनि भरत१८राम१९दसरथनंदन अँथ ॥

भारत में इतनी भीड़ थी जिस में दश जीवित रहे १ बाकी रहे. तीन वीर इधर रहे २ हे संजय मेरा चित्त विव्हल होगया है ३ धृतराष्ट्र का विलाप

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूत पुत्र का महाभारत सुनाना,संक्षेप से पाण्डवों का जन्म,मृगरूप को धारण किये हुए मुनि के श्राप से राजा पाण्डु का मरना, पुत्रों सहित कुन्ती का हस्तिनापुर आना, संक्षेप से पाण्डवों के आचरण का जनाना.गये हुए वृत्तान्त को याद करके धृतराष्ट्र के विलाप करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१८॥ और आदि से साठ मयूख हुए ॥६०॥

धृतराष्ट्र का इस प्रकार का विलाप सुन कर संजय ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे राजा४पहिले बहुत राजा हुए वे भी काल के वस होकर सभी मरगये ५ बड़ी बुद्धिवाले ६ बड़े बलवान् ७ अब

महाभाग कृतवीर्य२०भूप ससबिंदु२१भगीरथ२२ ॥
तिम ययाति२३मखसील[1] महाविक्रम जनमेजय२४ ॥
अरु रघु१कुरु२जदु३पूरु४विश्वगश्व५हु पहुँचे छय ॥
अन्वह६ककुत्स्थ७युवनाश्व८बलि बीतिहोत्र९अरु अंग१०भव११॥
विजयाख्य१२वृहद्गुरु१३कंक१४त्यौं श्वेत१५उसीनर१६धरनिधव[2]
दंभोद्भव१७पर१८वेन१९सगर२०सतरथ२१दुलिदुह२२द्रुम२३ ॥
संकृति२४निमि२५रु अजेय२६परसु२७पुनि[3] पुंड्र२८सुनहु तुम ॥
देवावृध२९नृप संभु३०वृहद्रथ३१बलि देवाह्वय३२ ॥
सप्रतीक३३सुप्रतिम३४अनघ३५सब काल करे छय[4] ॥
प्रभु३६दीप्तकेतु३७सुक्रतु३८बहुरि महोत्साह३९निषधेसनल ४० ॥
अर्क४१रुसुमित्र४२तिमसांतभय४३सत्यव्रत४४चपल४५रुसुबल४६।
जानुजंघ४७अनरण्य४८धूर्त४९प्रियभृत्य५०सुचिव्रत५१ ॥
निरामर्द५२बलबंधु५३वृहद्बल५४केतुशृंग५५ गत ॥
वृहत्केतु५६पुनि धृष्टकेतु५७कृतबंधु५८ निरामय५९ ॥
दृढेषुधि६० रु संभाव्य६१भयउ इत्यादि सबन खय ॥
तव पुत्र दुष्ट चहिजे मरे तिनहि न सोचहु भूपबर ॥
जिन बुद्धि होत सास्त्रानुगत[5] ते नहि पावत मोह नर ॥ ४ ॥

दोहा

यौं सुतसोकसमुद्रमैं, मग्न[6] अंध सौं भाखि ॥
स्वस्थ[7] कियउ संजय सुमति, दै पूरब नृप साखि[8] ॥ ५ ॥
जो भारतके वृत्तको[9], चरनहु पढत सुचेत ॥
सर्ब दुरितं[10] सन मुक्त सो, होत मुक्तिके हेत ॥ ६ ॥

---

१ यज्ञकरने मे ही है शील जिस का २ भूपति ३ पुनि ४ सब काल ने नाश कर दिया इनको आदि लेकर सब का नाश होगया और तुम्हारे दुष्ट लोभ करके मरे जिनकी चिन्ता मत करो जिन की बुद्धि शास्त्रों के ५ पीछे चलनेवाली होती है वे मोह नहीं पाते ६ पुत्र के शोक रूपी समुद्र मे डूबे हुए धृतराष्ट्र से कह कर ७ स्वभाव को स्थिर किया ८ पहिले राजाओं की साक्षी देकर महाभारत के ९ छन्द का एक चरण भी जो श्रेष्ठ चित्त से पढे तो मुक्ति के अर्थ सब १० पापों से छूट जाता है

देव१ देवऋषि२ ब्रह्मऋषि३, सिद्ध४महोरग५ जच्छ[1]६ ॥
भारतको कीर्तन करत, कृष्ण चरित जहँ अच्छ ॥ ७ ॥
द्विज[2]न सुनावे श्राद्ध बिच, एक१हु चरन प्रसन्न ॥
भारतको तो तस पितर, पावैं अच्छय अन्न ॥ ८ ॥
च्यारि४हु बेद रहस्य जुत, तोलत इक१ आधार ॥
इक१[3]घाँ राख्यो एक१हू, भारत धारत भार ॥ ९ ॥
बहुरि लोम[4]हरखन सुतहिं, अक्खि[5]य मुनिगन एह ॥
तैं समंतपंचक कहिय, सु किम हनहु संदेह ॥ १० ॥
सूत कह्यो करिये श्रवन, उत्तर तास उदार॥
त्रेता१ द्वापर२ संधि हुव, परसुराम अवतार ॥ ११ ॥

षट्पदी

जनक[6] बैर द्विज राम कुप्पि इकवीस२१ बेर करि ॥
सब छत्रिय संहार गये तिन रुधिर ताल[7] भरि ॥
तहँ तिहिं तर्पन करत पितर आये ऋचीक मुक्ख,
तिन [9]अक्खिय यह कर्म तजहु बर लेहु [10]इष्ट रुख ॥
द्विजराम कहिय ए [11]अस्रके ताल पञ्च५तीरथ बनहु ॥
सुहि दै मुनीस वे सब गये रामहु छोरिय बैर बहु ॥ १२ ॥

---

१ यत्त. जो प्रसन्न होकर महाभारत के छन्द का एक चरण भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (इन तीनों की २ द्विज संज्ञा है) को श्राद्ध में सुनावे तो उसके पित्रीश्वर अक्षय अन्न पाते हैं चारों वेद अभिप्राय सहित तराजू के एक पलड़े में रख कर एक ३ तरफ महाभारत को रक्खा तो भारत में भार विशेष है. फिर४लोमहर्षण नामक सूत पौराणिक के पुत्र (उग्रस्रवा) को मुनियों ने ५ कहा कि तुमने समंतपंचक तीर्थ से आना कहा सो वह तीर्थ कैसा है यह सन्देह मिटाओ ६ पिता के वैर से क्रोध करके परशुराम ने इक्कीस बेर क्षत्रियों का नाश किया जिनके रुधिर से ७ तलाव भर गये. ८ ऋचीक को आदि लेकर ९ उन्होंने कहा कि१०जैसी तुम्हारी इच्छा होवे ऐसा बर लो तब परशुराम ने कहा कि ११ रुधिर के येपांचों तलाब हैं सो तीर्थ होजावे सो यही वर देकर वे मुनि तो सब गये और परशुराम ने भी क्षत्रियों से वैर छोड दिया

दोहा

यौं समंतपञ्चक भयो, थल नामहु तदधीन ॥
अच्छोहिनि अट्ठारहौं१८, छत्रिय जहँ हुव छीन ॥ १३ ॥
बहुरि मुनिन पुच्छिय कहहु, अच्छोहिनि परमान ॥
सु सुनि सूत अक्खिय सुनहु, संख्या प्रश्न सयान ॥१४॥

षट्पदी

द्विरद१इक्क१रथ१इक्क१पंच५पदचार५तीन३हय३ ॥
पत्ति१नाम तस गिनहु गिनहु सेनामुख३।३।१५।९तंत्रय३ ॥
सेनामुख त्रय ३ गुल्म ९।९।४५।२७
गुल्मत्रय३गन२७।२७।१३५।८१ पहिचानहु ॥
बाहिनी८१।८१।४०५।२४३सु गन तीन३,
तीन३पृतना२४३।२४३।१२१५।७२९ते जानहु ॥
पृतना सु तीन३कहियत चमू७२९।७२९।३६४५।२१८७,
तीन३चमू सु अनीकिनिय२१८७।२१८७।१०९३५।६५६१॥
एकत्र होय इनको दसक१०तबहि एक१अच्छोहिनिय।१५।

दोहा

प्रकृति२१सहस्र रु अष्ट८सत, सत्तरि२१८७०बहुरि प्रमानि ॥
एते रथ एते२१८७०हि गज, अच्छोहिनि बिच जानि ॥१६॥

---

१ उन तलावों के कारण से उस स्थल का नाम समन्तपञ्चक होगया है जहां पर क्षत्रियों की अठारह २ अक्षौहिणी का नाश हुआ है फिर मुनियों ने अक्षौहिणी का प्रमाण पूछा सो सूत पौराणिक ने कहा एक३हाथी, एक रथ, पांच पैदल और तीन घोड़े इनके समूह का नाम पत्ति है । ४ इनको तिगुना करने से सेनामुख कहलाता है । सेनामुख को तीन गुना करने से गुल्म कहलाता है । गुल्म को तिगुना करने से गण कहलाता है । गण को तिगुना करने से वाहिनी; और वाहिनी को तिगुना करने से पृतना कहलाती है । इस पृतना को तीन गुना करने से चमू कहलाती है और तीन चमू इकट्ठा करने को अनीकिनी कहते हैं और इस अनीकिनी को ५ दश गुना करने से अक्षौहिणी होती है एक अक्षौहिणी में इकीस हजार आठ सौ सत्तर हाथी, इतने ही रथ, एक लाख नौ हजार तीन सौ प-

एक१लक्ख अरु नव९सहँस, तीन३सत रु पंचास१०९३५०
ए नर हय पैंसठि६५सहँस, खट६सत अरु दस६५६१०तास ॥१७॥
यह अच्छोहिनि एक१जे, अष्टादस१८परिमान,
३९३६६०।३९३३६०।१९६८३००।११८६८० ॥
रन कौरव पांडव रचत, नि[1]धन गये तिंहिं थान ॥ १८ ॥
दस१०[2]बासर भीसम१लरे, पंच५द्रोन२गुरु [3]बेसं ॥
दिवस दोय२रन कर्ण३किय, दिवस अर्द्ध½मद्दे[4]स४ ॥ १९ ॥
अर्द्ध½दिवस [5]कुरुराज१अरु, भीम२गदारन किन्न ॥
इम अट्ठारह१८[6]अहनमैं, भयो छत्रकुल [7]भिन्न ॥२०॥
याही दिनके [8]अंतमैं, द्रौणि१[9]संगोतम२[10]भोजं३ ॥
हन्यौं [11]सुप्त [12]विस्वस्त दल, पांडवको अति ओज ॥ २१ ॥

षट्पदी

यह भारत इतिहास पर्व अष्टादस१८संजुत,
आदि१सभा२बन३अरु विराट४उद्योग५भीष्म६[13]नुतं ॥
द्रोण७कर्ण८कहि सल्य९पर्व सौप्तिक१०पुनि जानहु ॥
स्त्री११पर्व रु तिम सांति१२पर्व अनुसासन१३मानहु ॥
[14]हयमेध१४रु आश्रमबास१५सह मुसल१६[15]महाप्रस्थान१७जिम ॥
स्वर्गादिरोह१८[15]अवसान बिच अष्टादस१८[16]अभिधान इम॥२२॥

दोहा

चास पैदल और पैंसठ हजार छःसौ दश घोडे होते हैं यह एक अक्षौहिणी का प्रमाण है ऐसी अठारह अक्षौहिणी कौरवों पांडवों के युद्ध रचने से उस स्थान (समन्तपञ्चक) में १ नाश को प्राप्त हुई हैं २ दश दिन भीष्म लड़े, पां-च दिन ३ श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य लड़े, दो दिन कर्ण ने युद्ध किया और आधा दिन मारवाड़ ४ का राजा सल्य लड़ा आधे दिन में ५ दुर्योधन लड़ा और भीमसेन से गदायुद्ध भी हुआ ६ दिनों में ७ क्षत्रियों के कुल कटे ८ रात्रि में, अश्वत्थामा ९ कृपाचार्य १० कृतवर्मा ने १२ विश्वास युक्त (निःशङ्क) ११ सूर्ता हुई पांडवों की प्रतापवाली सेना को मारी १३ स्तुति योग्य १४ अश्व-मेध १५ अन्त में १६ अठारह पर्वों के इस प्रकार नाम हैं

पर्व नाम संग्रह कह्यो, यों *प्रत्येक गिनाय ॥
अब पर्वन मैं जे कथा, ते भाखत हित लाय ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिहोत्रचह्वुवानशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणाकसौतिश्राविवमहाभारतसमासेसञ्जयधृतराष्ट्रसमाऽऽश्वासनमहेतिहासमाहात्म्य समन्तपञ्चकोद्भवसूचनाऽक्षौहिण्याऽऽदिपरिसङ्ख्यानयुद्धदिनयोधाऽऽदिविवेचनपर्वनामसंग्रहणामेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥ आदित एकषष्टितमः ॥ ६१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

उत्तंक चरित१पहिलैं उदार, भृगुवंस२बहुरि विस्तर प्रकार ।
आस्तीक चरित३आख्यान जुक्त, जहँ गरुड१नाग२उतपत्ति४उक्त
सुर१असुर२छीर[3]सागर मथान५, उच्चैश्रवोऽश्व[4] उद्भव[5]६विधान ॥
पुनि दंदसूक[6]मखहोनबात७, भारतकथाँ[7]निका चलन८ख्यात ॥२॥
बलि बिबिध नृपनके जन्मबंस९, श्रीव्यासजन्म१०अवतार अंस ॥
पुनि देव१दैत्य२दानव३रु जच्छ[8]४,रक्[9]खस[10]५रु नाग[11]६अहि[12]७बंस८अच्छ

इस प्रकार*हर एक पर्व के जुदे जुदे नाम गिना कर सब पर्व इकट्ठे कहदिये हैं और इन पर्वों में जो कथा है वह अब स्नेह करके कहते हैं ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि मे अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् समकालीन सूत पुत्र (उग्रस्रवा) का महाभारत सुनाना, संक्षेप से संजय का धृतराष्ट्र को आश्वासन करना, महाभारत का माहात्म्य, समन्तपञ्चक तीर्थ के पैदा होने की सूचना, अक्षौहिणी की गिनती, युद्ध के दिन में योद्धा आदि का विवेचन, पर्वों के नामों के संग्रह का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ। १६। और आदि से इकसठ मयूख हुए। ६१।

१ विस्तार से २ कहीं ३ क्षीरसमुद्र का मथना ४ उच्चैःश्रवा नामक घोड़े के ५ जन्म का ६ सर्प यज्ञ होने की वार्ता ७ कथा का ८ पुनि ६ यक्ष १० राक्षस ११ सर्प (वासुकि को आदि लेकर बहुत फणोंवाले अथवा मनुष्य के आकारवाले फण और पूंछवाले सर्प) १२ सामान्य सर्प

गंधर्व१बिहंग१भवभूत भाय, अंसावतार हुव सर्व आय१२ ॥
पुनि बिपिन३ कण्वमुनि राज धाम, चलि आय भूप दुक्खंत४ नाम१३।४।
तँहँ इक१सकुंतला नारि पाय१४, सुत भरतनाम ताबिच बिधाय१५॥
जिहिं भरतहिंतु६ यह भुम्मि ख्यात, भारतकुल प्रकट्यो गिनहु तात।५।
संतनुकै पुनि वसु सप्त७पुत्र१६, गंगा विच७है पहुँचे अमुत्र१७ ॥
ताकैहि महाव्रत हुव१८बहोरि, लै ब्रह्मचर्य दिय राज्य छोरि१९॥६॥
व्रत निज करि पालन भीष्म बीर, चित्रांगद रच्छा कियउ२०धीर॥
गंधर्व हन्यौ चित्रांग देस२१,तब किय विचित्र बिज्ज१०हिं नरेस२२।७।
लहि पुनि मुनि अणि मांडव्य साप, अंतक११वतार हुव विदुर२३आप ॥
द्वै१२पायनसौं हुव तदनु ख्यात, धृतराष्ट्र१पांडु२ए उभय२भ्रात२४ ।८।
पुनि धर्म१सुजोधन२आदि सर्ब, लै जन्म बढे२५जित देवगर्ब ॥
जतु१५निलय वारणावत पठाय, किय कपट सुजोधन२६दहनकाय।९।
जँहँ बिदुर मिच्छ१६भाखा समर्थ, उपदेस कियउ नृप धर्म१७ अर्थ२७॥
तिहिं खोजि सुरुंगाद्वार१८धर्म, सकुटुंब विपिन१९ विहरिय२८सुकर्म॥१०॥
सुत पंच५सहित भिल्ली२०१समेत, हुव भस्म बिरोचन२९कुटिलचेत ।

१पक्षी२संसार के प्राणियों की रीति से सब अंशावतार हुए३वन में कण्व मुनि के स्थान पर४दुष्यन्त नामक राजा गया जिसने सकुन्तला नामक स्त्री को पाकर उसमें भरत नामक पुत्र पैदा ५ किया उसी भरत ६से यह भूमि भरत खण्ड नाम से प्रसिद्ध हुई और उसी भरत से भरतकुल प्रकट हुआ राजा शन्तनु के गंगा में सात पुत्र वसु नामक देवता हुए सो ७ परलोक पहुंचे जिस पीछे उसी शन्तनु के गंगा में ८ भीष्म हुए जिन्होंने ब्रह्मचर्य लेकर राज्य छोड दिया भीष्म ने अपना व्रत पालन करके छोटे भाई चित्रांगद की रक्षा की ९ इसी चित्राङ्गद को गन्धर्व ने मार डाला तब१०विचित्रवीर्य को राजा बनाया अणिमांडव्य नामक मुनि का श्राप लेकर ११ यमराज का अवतार विदुर पैदा हुआ१२जिसपीछे१३वेदव्यास से१४ प्रसिद्ध धृतराष्ट्र और पांडु दोनों भाई हुए १५ लाक्षागृह में वारणावतपुर भेज कर जहां पर विदुर ने १६ म्लेच्छ भाषा में १७ युधिष्ठिर को उपदेश किया कि दुर्योधन तुमको मारने के लिये वारणावत भेजते हैं सो सावधान रहना इत्यादि, तहां युधिष्ठिर ने १८ सुरंग का दरवाजा खोज कर कुटुम्ब सहित श्रेष्ठ कर्म करनेवाले १९ वन में विहार कर गये उस लाक्षागृह में पांच पुत्रों सहित एक २० भीलणी

बनबिच हिडंब लिय भीम मारि३०, परनी सु हिडंबा३१समयपारि॥११॥
हैडंब जनम अत्रैव[1] आ[2]स३२,अत्रैव आय किय दरस व्यास३३ ॥
तिन बचन एकचं[3]क्रानिवेस३४, द्विजगेह रहिय सब गुप्त बेस३५॥
पुनि भीम हनिय बकं[4]३६रन प्रचार, नागर[5]जन विस्मि[6]तहुव३७अपार॥
अरु धृष्टद्युम्न उद्भ[7]व३८अनूप, सह[8]जाहि तास कृष्णा[9]३९सुरूप॥१३॥
तद[10]नंतर अर्जुन गंगतीर, अंगारपर्ण जीत्यो ४० प्रवीर ॥
रु[11] सुनैं[12] उदंत४१करि सुह्र[13]द ताहि, तापत्य[14]१ [15]औौर्व२बासिष्ठ३चाहि ।१४।
पुनि जाय पत्थ[16]सब नृप निषेधि, कृष्णा[17]लिय४२भुजबल लक्ष्य वेधि॥
अरुसल्य१कर्ण२मुख[18]जित्तिसर्व,जय[19]१भीमकियउविक्रम४३अखर्व[20]।
सुहि देखि राम[21]१कृष्णा२हु उदार, पांडव न होय इम किय विचार४४ ॥
मिलिपंच५भ्रातकियएक१नारि४५,यहजानिद्रुपदलिय कोपधारि४६
हुव पंच ५ इंद्र आख्यान तत्र४७, करिदैवब्याहसु लहिय कलत्र[22]४८॥
बिदु[23]रागमहुव४९पांडवनपास,बल[24]१कृष्ण२मिले५०रचिहियहुलास॥
किय बहुरि जाचना रहन काज, पावहिं स्वकी[25]य हम अर्द्धराज ५१ ॥
तदनंतर नारद हुकम अप्पि, दिय द्रुपद सुता संकेत५२थप्पि॥१८॥

और खोटा चित्तवाला विरोचन भस्म होगये भीमसेन के पुत्र हैडंब का जन्म१ वहीं पर २ हुआ और वहीं पर वेदव्यास मिले जिनके कहने से ३ एकचक्रा नामक पुर में वास करके ब्राह्मण के घर में छिप कर रहे ४ बकासुर को ५ नगर निवासी लोग ६ आश्चर्य युक्त हुए फिर धृष्टद्युम्न का अनुपम ७ जन्म होना और उसके ८ साथ ही ९ द्रौपदी का होना १० जिस पीछे अर्जुन ने गंगा की तीर पर अंगारपर्ण को जीता ११ और १२ अर्जुन ने १३ उर्व मुनि के पुत्र औौर्व को और वशिष्ठ को १४ मित्र बनाकर १५ वृत्तांत सुने फिर १६ अर्जुन ने द्रुपद के पुर में जाकर सब राजाओं को हटा कर अपने भुज बल से लक्ष्य वेध करके १७ द्रौपदी प्राप्त की १८ आदि १९ अर्जुन और भीमसेन ने २० बडा पराक्रम किया २१ बलदेव ने यहां पांच इन्द्र की कथा कह कर द्रुपद को समझाया और दैव (आठ विवाह जो ऊपर लिख आये हैं उनमे से दैव नामक) विवाह करके पांच भाइयों ने एक २२ स्त्री ली २३ विदुर का आना २४ बलदेव २५ अपना आधा राज्य पाने की याचना की फिर नारद ने आज्ञा देकर द्रौपदी के पास एक एक वर्ष तक एक एक भाई रहै यह संकेत पांडवों में स्थापन कर दिया

सुंदो१पसुंद२आख्यान५३साखि, परनारि संग अवरोध५४आखि ॥
इक समय जुधिष्ठिर निज निकेत[3], एकांत लसत[4] कृष्णा समेत॥१९॥
श्रुत[5] द्विजपुकार जय तत्थ जाय, निज सस्त्र लैरु किय द्विज सहाय५५॥
बलि[6] व्है व्रतस्थ[7] लिय बिपिन[8] वास५६, इहिँ तत्थ उलूपी संग आस[9]५७[10]
जयपुण्यतीर्थ अभिगमन[11]५८जानि, बलि बभ्रुवाह उद्भव[12]५९बखानि ॥
पुनिबिप्र साप धृत नक्र[13]काय, अच्छरिन[14] मुक्ति बर्णन६०सुभाय ॥२१॥
हरि १पत्थ २ मिले तीरथ प्रभास ६१, हरि हुकम सुभद्राप्राप्ति६२तास[15]।
हरिआत्तहरन[16]मिलिहुवसहाय६३, अभिमन्युजनम६४पुनिअवधिपाय
हुवद्रौपदेय[17] पंच५हि६५उदार, बलि[18] हरि[19]१जय[20] जमुनातट बिहार६६ ॥
तहँ आश्रयास[21] द्विजरूप आय६७, लिहिँ पांडव दिय खांडव चराय६८॥
मय१असुर दियउ दवतैं उबारि६९, सारंग[22]४भुजंग[23]१हु दियउ टारि७०॥
इत्यादि कथा बिच आदिपर्व१, अध्याय वृत्त[24] संख्या[25]ऽबैं सर्ब ॥२४॥

॥ दोहा ॥

सत दुव सत्तावीस २२७ है, यँहँ अध्याय अमंद[26] ॥
अष्ट८सहस्र रु अष्ट८सत, चउरासी८८८४ सब छंद ॥ २५ ॥

१सुन्द और उपसुन्द नामक दो भाई एक स्त्री पर लड़कर मारेगये थे उनकी कथा सिखा कर कहा कि ऊपर के नियम के विरुद्ध२जनाना में जाना है वह परस्त्री के साथ गमन करना है ऐसा जानो, इस पीछे एक समय युधिष्ठिर अपने३घर में द्रौपदी के साथ एकान्त में४शोभायमान था सो एक ब्राह्मण की पुकार ५सुन कर उसकी सहाय के लिये अपने शस्त्र लेने को वहां अर्जुन चलागया इस कारण मे ब्राह्मण की सहाय किये पीछे ६ फिर ७ नियम में स्थित होकर ८ बनवास लिया तहां पर अर्जुन से ९ उलूपी नामक नागकन्या का संग१०हुआ. अर्जुन का पुण्यतीर्थों में११जाना और अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन का १२जन्म कहागया है. एक ब्राह्मण के शाप से पांच१४अप्सरायें१३मगर रूप होकर पंचतीर्थों में रहतीं थीं जिनका अर्जुन से उद्धार होने का वर्णन१५अर्जुन को कृष्ण के हुकम से सुभद्रा की प्राप्ति हुई और उस हरण१६ करने में सुभद्रा को पकड़ते ही कृष्ण अर्जुन के सहाई होगये१७द्रौपदी के पुत्र१८फिर १९ कृष्ण और२०अर्जुन का२१अग्नि ब्राह्मण का रूप करके आया जिसको अर्जुन ने खाण्डव बन चरादिया २२ सारंग पक्षि २३ सर्प को भी बचादिया २४ छन्दों की गणना २५ अब सब कहते हैं २६ मन्दता करके रहित

अब दूजो २ आरंभियत, सभापर्व २ अभिधान[1] ॥
बहुत रुचिर[2] वृत्तांत जुत, बंधुन बैर निदान[3] ॥ २६ ॥

॥ पज्झटिका ॥

गिनि प्रथम क्रिया परिखँद[4] विधान १, पुनि तहँ किंकर[5] दरसन कथान[6] २
लोकेस[7] सभा आख्यान ३ तत्र, पुनि राजसूय आरंभ सत्र[8] ४ ॥ २७ ॥
मगधेस[9] नास बलि भीम किन्न ५, अरु रुद्ध[10] नृपन हरि मुक्त दिन्न ६ ॥
पांडवन चउ ४ न दिगबिजय कर्म ७, सब नृपन सत्र आगम[11] ८ सुसर्म[12] ॥
तहँ[13] अर्घ वाद बिच गिनि कुभास[14], हरि किय निसंक सिसुपाल नास ९
कुरुराज सुजोधन तत्थ आय १०, लखि पर समृद्धि अमरख नमाय ११
दिगमूढ़[15] भयो १२ परिखद[16] विलास, किय सु[17] लखि भीम अट्टाट्टहास १३
तिहिं अनख[18] सुजोधन रचिय द्यूत १४, सरवस्वहि जीत्यो सुबलपूत[19] १५
कृष्णाहिँ[20] दुखित तहँ देखि अंध[21], कीनौं पुनि पांडव मुक्तबंध[22] १६ ॥
यह जानि सुजोधन हुय उदास १७, पुनि द्यूत जीति दिय बिपिन[23] बास १८
इत्यादि कथा आख्यान[24] सर्व, संजुक्त सभा २ अभिधान[25] पर्व ॥
यामैंहु वृत्त[26] अध्याय मान[27], संख्या समस्त सुनिये सुजान ॥ ३२ ॥
अध्याय अठंतरि ७८ मित[28] अमंद, दुव २ सहँस पंच ५ सत रुद्र २५११ छंद

---

१ सभापर्व नामक २ सुन्दर ३ भाइयों के वैर का कारण ४ पहला काम सभा रचने का है और फिर उस सभा को अपने ५ सेवकों को दिखाने की ६ कथा है वहीं पर ७ ब्रह्मा की सभा की कथा है और फिर राजसूय ८ यज्ञ का आरंभ है ९ जरासन्ध को भीम ने मारा और जरासन्ध के १० कैदी राजाओं को कृष्ण ने छोडे और सब राजाओं का यज्ञ में १२ सुख पूर्वक ११ आना प्रथम १३ पूजा किसकी की जावै इस वाद में १४ खोटे वचन बोलने से कृष्ण ने शिशुपाल को मारा ॥ १६ सभा को देखने में १५ दिशाभूल होगया १७ उसको देख कर भीमसेन उच्च स्वर से हसा उस १८ क्रोध से १९ शकुनि वहां पर २० द्रौपदी को दुखी देख कर २१ धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को उस द्यूत में हार जाने के २२ बन्धन से छोड दिया अर्थात् उनका सर्वस्व पीछा उनको देदिया २३ फिर द्यूत में जीत कर पांडवों को वनवास दिया २४ इनको आदि लेकर कथा और आख्यानों सहित सभा २५ नामक पर्व है जिस में २६ छन्दों का २७ प्रमाण २८ प्रमाण

इम पर्बसभा२ नामक बखानि, अब बिपिन३पर्ब आरंभ जानि ।३३।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्राविततमहाभारतसमासे प्रथम१सभा२पर्बकथासमसनं विंशतितमो मयूखः ॥ २० ॥ आदितो द्विषष्टितमः ॥ ६२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पज्झटिका ॥

पौरानुगमन नृप धर्म संग१, रवि आराधन२ ब्रत होत भंग॥
धौम्योपदेस३ अरु रवि प्रसाद४, हुव अन्न ऋद्धि५मेटन बिखाद।१।
धृतराष्ट्र बहुरि सुत लोभ धारि, छत्ताँ हित भाखत दिय निकारि६
वह गयउ पांडुपुत्रन समीप७,पुनि लियउ बुल्लि८अनयन महीप।२।
पांडव बनस्थ हनिये स्वतंत्र, इम कियउ सुजोधन१ करन२ मंत्र ९॥
यह दुष्टभाव लखि व्यास आय१०,किय रोध सुरभि आख्यान गाय११
मैत्रेय मुनिहु कोपित अमाप, दिय भिदन सुजोधन सक्थि साप ॥
रन भीम हनन किर्मीर१२घाय,पांचालि१वृष्णि२पुनि मिलन आय१३

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिनका अर्थात् एक समय में होनेवाले सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के संक्षेप से महाभारत सुनाने में आदिपर्व और सभापर्व की कथा के संक्षेप का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२०॥ और आदि से बासठ मयूख हुए ॥ ६२ ॥

अब आगे वनपर्व की कथा कहते हैं कि १ पुर के लोगों का २ युधिष्ठिर के साथ जाना और सदैव ब्राह्मण भोजन कराते थे उस ३ ब्रत का भंग होते देख कर धौम्य ४ मुनि के उपदेश से सूर्य की आराधना करना जिस से सूर्य ने ५प्रसन्न होकर एक पात्र दिया उस पात्र में६दुक्ख को मेटनेवाली अखूट अन्न की समृद्धि होना, हित की बात८कहते हुए ७ विदुर को निकाल दिया वह बिदुर पाण्डवों के पास चला गया जिसको ९ अंधे राजा (धृतराष्ट्र) ने पीछा बुलाया १०वन में ठहरे हुए ११ सलाह १२रोका. कामधेनु और इन्द्र का आख्यान कह कर (इस आख्यान से यह सिद्ध किया है कि संसार में पुत्र से प्यारी कोई वस्तु नहीं है) मैत्रेय मुनि ने दुर्योधन की १४ जंघा१३ टूटने का श्राप दिया, भीमसेन ने किर्मीर को मारा१५और धृष्टद्युम्न आदि

सकुनी ठगि जीते सुनि समस्त, हरि कोपकिय सुकिय पत्थ ध्वस्त॥
कृष्णाँ परिदेवन सुनि कृपाल, हरि दिय विसास१५सुनिये नृपाल॥५॥
लै संग सुभद्रा सुत समेत, पहुँचे मुकुंद अपने निकेत १६॥
भानेज पंच५ लै अप्प संग, बेदीजेंहु पहुँच्यो द्रुपद द्रंग १७॥६॥
पुनि द्वैत विपिन पांडव प्रवेस१८, संवाद१९ द्रौपदी सह नरेस२॥
इम धर्म१भीम२संबाद२०आस, दरसन दिय तत्थहि आय व्यास२१
उपदेसन विद्या२२दुलभ दान, जिम पांडव काम्यक बिपिन जान२३
अरु अस्त्र अर्थ अर्जुन बिवास२४, सबराकृति शिवसहँ जुद्ध२५तास॥८॥
पुनि लोकपाल दरसन२६प्रसंग, इम अस्त्र मिलन२७पत्थहिं अभंग
जयँ गयउ अस्त्र हित इंद्रलोक२८, पुनि हुव नृप अंधहिं अधिक सोक

वृहदश्व दरस ३० नृप व्यसन वत्त ३१,
दमयंती २ नल १ आख्यान ३२ तत्त॥

पुनि दत्तहृदय पांडव प्रबेस ३३, तँहँ आय त्रिदिवँ सन लोमसेस३४
तिनतैंसुनिजयदिवि विद्यमान३५, अजमीढकरियतीरथप्रयान३६॥
दिनकरसुतकुंडल२कवच१त्याग३७, गयनृपकोकीर्तनविभवजाग३८

पंजाबवाले और कृष्ण आदि वृष्णिवंशी यादवों का पांडवों से मिलने को जाना १ कृष्ण ने क्रोध किया २ सो ३ अर्जुन ने ४ मिटाया और ५ द्रौपदी का ६ विलाप सुन कर कृष्ण ने विश्वास दिया ७ कृष्ण अपनी बहिन सुभद्रा को अभिमन्युसहित ८ द्वारका ले गये और अपने भानजों (द्रौपदी के पुत्रों) को १० धृष्टद्युम्न ९ अपने संग ११ द्रुपद पुर ले गया १२ द्वैत वन में १३ युधिष्ठिर के साथ द्रौपदी का सम्वाद और इसीप्रकार युधिष्ठिर और भीमसेन का संवाद १४ हुआ दुर्लभ विद्या का १५ उपदेश देना १६ अस्त्रों के लिये अर्जुन का विदेश जाना (दूर वास करना) १७ भील की आकृतिवाले १८ महादेव से १९ अर्जुन का युद्ध होना फिर अर्जुन से लोकपालों का मिलना और अभंग अस्त्रों का मिलना२०अर्जुनका इन्द्रलोक जाना और धृतराष्ट्र को अधिक शोक होना बृहदश्व नामक ऋषि का दर्शन होना और युधिष्ठिर की आपदा का कथन और नल दमयन्ती का आख्यान२१ स्वर्ग से२२लोमस नामक मुनि से२३अर्जुन२४स्वर्ग में२५वर्तमान है यह सुन कर अजमीढ नामक तीर्थ को गये२६कर्ण का कुण्डल और कवच२७देना और २८ यज्ञ ही है विभव जिसका ऐसे गय नृप की कथा.

पुनि पुनि अगास्ति आख्यान ३९जानि,बातापि असुर मारन४०बखानि
तत्थहि अगस्तिसुत लोभलीन,लोपामुद्रा अभिगमन कीन४१ ।१२।
बलि ऋष्यशृंग मुनि चरित्त बात४२,द्विजराम कुपित हैहय निपात४३
पुनिमिलनवृष्णि१पांडव२प्रभास४४,आख्यानतत्थसौकन्य४५आस
दस्रनं दिवाय जँहँ सोमभाग, हुव तरुन च्यवन४६सर्याति जाग ॥
मांधातृभूपआख्यान४७ज्यौंहिं,तँहँरुचिरजंतुआख्यान४८त्यौंहिं।१४।
सेन१रुकपोत२आख्यान४९सार,अरुकथनभूपसिवि५०अतिउदार॥
मिलि जनक सत्र बिच अप्रमाद, बंदी१अरु अष्टावक्र२बाद५१ ।१५।
दकराजतनय जँहँ न्यायदच्छ, बंदी वह जित्तिय बाद५२अच्छ ॥
जवक्रीत१ रैभ्य२ आख्यान५३गान,अरु अद्रि गंधमादन प्रयान५४
नारायन आश्रम तिम निवास५५, पुनि आंजनेय दरसन५६प्रकास॥
जुज्झन क्रव्यादन भीम जोध५७,मणिमान आदि जच्छन बिरोध५८

फिर वारंवार अगस्ति ऋषि का आख्यान है. जिसमें अगस्ति का बातापि असुर को मारना और पुत्र उत्पन्न करने के लोभ से १ लोपामुद्रा नामक अपनी स्त्री से २ भोग करना ३ परशुराम ने क्रोध करके ४ हैहय को ५ मारा फिर ७ प्रभास तीर्थ में ६ कृष्ण और पांडवों का मिलना और राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या का च्यवन ऋषि को मिलने का आख्यान ८ हुआ. च्यवन ऋषि का वृद्धावस्था से तरुण होना और राजा शर्याति के ११ यज्ञ में ९ अश्विनीकुमारों को १० अमृत का भाग दिलाना, फिर मान्धाता का आख्यान और राजा सोमक के जन्तु नामक पुत्र हुआ उसको काट कर यज्ञ में होम देने से सोमक के सौ पुत्र होने की सुन्दर कथा है. राजा उसीनर के धर्म की परीक्षा के लिये इन्द्र ने श्येन पक्षी का और अग्नि ने कपोत का रूप धारण किया जिसकी कथा का सारांश और राजा शिबि की उदारता की कथा है, फिर जनक के १२ यज्ञ में सावधाम अष्टावक्र मुनि और वन्दी के शास्त्रार्थ में १३ वरुण के पुत्र उस वन्दी को जो न्याय में १४ चतुर था अष्टावक्र ने जीत कर समुद्र में डुबो दिया जिसकी कथा है और यवक्रीत का रैभ्य ऋषि की पुत्री बधू से भोग करना और रैभ्य ऋषि का क्रोध करके यवक्रीत के मारने को एक स्त्री और एक राक्षस को उत्पन्न करके यवक्रीत को मारना और पांडवों का गन्धमादन पर्वत पर जाना ॥ १५ ॥१६॥ १५ हनुमान् का भीमसेन को दर्शन होना १६ राक्षसों से भीमसेन का युद्ध १७ यक्षों से विरोध होना

रन भीम जटासुर मारि लिन्न५९,कैलास[1] अद्रि आरोहि[2] किन्न६०॥
मृडं[3] मित्र सहित पांडव मिलाप६१,बंधुन तँहँ दिविंगत[4] पत्थ[5] प्राप[6]६२
पौलोम[7] कालकेयादि[8] जंग, जयं[9] सब निवातकवच[10] किय भंग ६३॥
पुनि धर्मराजकौं सबहि पत्थ, आनैं सु दिखाये अत्थ[11] अत्थ[12]६४ ।१९।
निगं[13]स्यो पारींद्र[14]हु भीम६५चाहि, कहि प्रश्न छुरायउ धर्म[15] ताहि ६६॥
पांडवसुनिकाम्यकबिपिन[16]आय६७,श्रीकृष्णसमागमतँहँ६८सुभाय॥
अग्गैं मृकंडसुत सुनि उदंत[17]६९, श्रीपृथु आख्यान७०हु सुखद संत।
संबाद७१सरस्वति१गरुड२सुद्ध,पुनि मत्सक आख्यान७२हु प्रबुद्ध[18]२१
जिम इंद्रद्युम्न आख्यान७३जानि,नृप धुंधुमार आख्यान७४मानि॥
निकटहिपतिव्रता[19]ऽऽख्यान७५नाम,आख्यानआंगिरस७६पुनिलिलाम[20]
सत्या[21]१ कृष्णा[22]२ संबाद७७श्रेय, बन द्वैत गये पांडव७८ अजेय॥
पुनि सुनहु घोषयात्रा७९ प्रभूत[23], पकस्यो गंधर्बन अंधपूत[24]८० ॥ २३ ॥
तब बद्ध सुजोधन लज्जमान, जयनैंहिं छुरायो८१वह अजान ॥
मृगस्वप्ननिर्दर्सन[25]८२नृपहिंतत्थ,अरुकाम्यकबनप्रबिसन८३समत्थ।

---

१ कैलास पर्वत पर २ चढे ३ महादेव के मित्र (कुबेर) से पांडवों का मिलना और वहीं पर ४ स्वर्ग में गये हुए ५ अर्जुन का भाइयो से ६ मिलना ७ पौलोम और ८ कालकेय आदि दानवों से युद्ध होना और ९ अर्जुन का १० निवातकवचों को नष्ट करना फिर अर्जुन जो ११ अस्त्र लाया उसको १२ यहीं पर युधिष्ठिर को दिखाना ॥ १९ ॥ भीमसेन को १४ अजगर सर्प ने १३ ग्रस (गिट) लिया जिससे प्रश्न करके १५ युधिष्ठिर ने भीमसेन को छुडाया १६ वन में ॥ २० ॥ मार्कंडेय ऋषि का युधिष्ठिर से अनेक १७ वृत्तान्त कहना १८ पंडिताई का ॥ २१ ॥ १९ पतिव्रता का आख्यान २० सुन्दर ॥ २२ ॥ २१ सत्यभामा और २२ द्रौपदी का सम्वाद अपने पति को वश में करने के विषय में हुआ फिर घोष यात्रा (गायों की संभाल करने के मिस से पांडवों को अपना वैभव बताने के अभिप्राय से) में २३ बहुतों के साथ [विभव सहित] २४ दुर्योधन गया जिसको गन्धर्वों ने पकड़ लिया उस लज्जा पाये हुए बंधुए दुर्योधन को अर्जुन ने ही छुडाया २५ द्वैतबन के मृगों की राजा युधिष्ठिर से प्रार्थना करना और उसी उदाहरण से पांडवों का द्वैतवन छोड कर काम्यकवन में जाना

जँहँ ब्रीहिद्रौणिका॒ऽऽख्यान८४जानि, दुर्वाससआऽऽख्यान८५हुप्रमानि
कृष्णाकौं सिंधुपँ मूढ चौरि, लैजात वृकोदर पिट्टि दोरि ॥ २५ ॥
गहि लियउ जयद्रथ भीम जाय, छोरयो सुपंच्च५सिख करि८६कुभाय
पुनि रामायन आख्यान८७नाम, रावन जँहँ मारिय भूप राम८८।२६।
साविली आख्यान८९हु अभंग, पुनि अति उदार रविसुत प्रसंग९०॥
वृख दान तुष्ट सुरराज चाहि, दिय एक१घातिनी सक्ति ताहि९१ ।२७।
जिम आरणेय आख्यान९२जानि, पश्चिमदिस पांडव गमन९३मानि
इत्यादि कथा आरणय३पर्व, अध्याय वृत्त संख्याऽबै सर्व ॥ २८ ॥

दोहा

दुव२सत गुनहंतरि२६९गिनहु, आरणयक३अध्याय ॥
छंद सहँस ग्यारह११छ६सत, सचउसठि११६६४समुदाय।२९।

नराचः

लग्यो बिराट पर्व पांडवेयँ बेस लुप्त व्है१ ॥
समी मसान तिष्टमैं छिपाय सस्त्र२गुप्त व्है ॥
प्रछन्न नैरमैं प्रबेसि मत्सपैं रहे३सबै,
कुमार्ग सील कीचकाऽऽख्य भीमनैं हन्यौं४तबै ॥ ३० ॥

एक १ द्रोण [धान्य का तोल विशेष, सौलह सेर, मतांतर से बत्तीस सेर को द्रोण कहते हैं] २ धान्य का दान किया था उसकी कथा और दुर्वासा पांडवों को श्राप देने गये वह आख्यान और ३ द्रौपदी को ४ जयद्रथ हर कर लेगया जिसके पीछे दौड़ कर ५भीमसेन ने पकड़ लिया और ७बुरी तरह से ६ मुंडन करके छोड़ा राजा अश्वपति की कन्या सावित्री के प्रताप से उस के मरे पति का जीवित होना आदि कथा ८ कर्ण के पास से इन्द्र का कवच, कुंडल मांगना ९ कर्ण के दान से प्रसन्न होकर १० इन्द्र का कर्ण को एक वीर को११मारनेवाली बरछी देना॥२७॥द्वैतबन में एक मृग के सींग में ब्राह्मणों के अरणी का काष्ठ उलझ गया उसे लेकर जो मृग चला गया उस को पांडवों ने मारा जिसका आख्यान और पांडवों का पश्चिम दिशा में जाना, इनको आदि लेकर वनपर्व में कथा है १२ छन्दों की संख्या १३ अब ॥ २८ ॥ १४ पांडु के पुत्र वेस छिपा कर श्मशान भूमि में १५ खड़े हुए १६ खेजड़ी के वृक्ष पर १७ नगर में १८ खोटे मार्ग में है शील जिसका ऐसे कीचक

पज्झटिका

अब सुनहु पर्व उद्योग५नाम, संग्राममूल कुरुकुल बिराम ॥
तँहँ प्रथम सुजोधन२विजय१दोय२,हरि बरन द्वारका प्राप्त होय।१।
पुनि दुहुन२कहिय रन करहु भीर, पहिचानि कह्यो हरि भक्ति पीर॥
मैं सचिव निरायुध एक१ओर,इक१घाँ अच्छोहिनि कटक घोर।२।
इनमाँहिं कोन किहिं द्यों१अबार, सेना लिय नृप२तब जानि सार॥
लिय कृष्ण निरायुध सचिव पत्थ३,पुनि अवर नृपन आगम४समत्थ३
कुरुराज हर्यो नृप सल्य आत५, दै गुप्तभोग छल हित दिखात॥
पुनि सल्ल्य आय नृप धर्म पास६, तहँ कहिय इंद्र जय७वृत्र नास८ ॥
दिय द्रुपद पुरोहित उंत पठाय९, कहि सुनि गजपुरतैं सोहु आय१० ॥
पठयो पुनि संजय भूप अंध११, मिलि सोहु गयो लखि इन प्रबंध१२
अच्युत अरु पांडव२सुनि अभिन्न, धृतराष्ट्र प्रजागर रोग लिन्न१३।
दिन्नौं तँहँ अंधहिं बिदुर ज्ञान१४, पुनि सनतसुजातहु दिय१५सुजान।
प्रभुबहुरिहस्तिनापुरपधारि, हितकहियतदपिउन न लियधारि१६॥

अब उद्योग नामक पर्व को सुनो जो संग्राम का मूल और कुरुकुल का १ नाश रूप है उसमें प्रथम दुर्योधन और २ अर्जुन कृष्ण को ३ वरने (स्वीकार करने) को द्वारका गये ॥ १ ॥ ४ सहाय करो, तब कृष्ण ने पांडवों की अपने में भक्ति और उनकी पीड़ा देख कर कहा कि एक ओर तो मैं अकेला ६ विना आयुध ५ मन्त्री (सलाहकार) होकर रहूंगा ७ और एक ओर मेरी एक ८ अक्षौहिणी भयंकर ९ सेना रहेगी ॥ २ ॥ इस समय इनमें से किसको क्या दूं इस पर १० दुर्योधन ने ॥ ३ ॥ ११ मारवाड़ का राजा शल्य पांडवों की मदत पर जाता था जिसको गुप्त रीति से खानपान पहुंचा कर दुर्योधन ने अपनी ओर हरण करलिया। फिर शल्य ने युधिष्ठिर के पास जाकर इन्द्र ने १२ वृत्रासुर को मारा सो कथा कही ॥४॥ १३ कौरवों को समझाने के लिये द्रुपद ने अपने पुरोहित को १४ हस्तिनापुर भेजा सो कह सुन कर पीछा आया फिर १५ धृतराष्ट्र ने संजय को भेजा सो १६ पांडवों का प्रबन्ध देख कर इनसे मिल गया ॥५॥ १७ कृष्ण और पांडवों को १८ एक सुन कर १९ निद्रा नहीं आने का ॥ ६ ॥ २० कृष्ण हस्तिनापुर गये २१ तो भी कौरवों ने नहीं माना

तहँ दंभोद्भव आख्यान१७जानि, मातलि बर खोजन१८पुनि प्रमानि
तदनंतर[3] गालव मुनि चरित्र१९, बिदुलासुत अनुसासन२०पवित्र॥
हँरि दुष्ट[5] कर्ण१नृपर२मंत्र पाय, दिय सबन जोग[6]प्रभुता दिखाय॥८॥
कर्णहिं[7] बलि निज रथ कन्ह थप्पि, कृष्णा[8] विभाग हित हुकम अप्पि
राज्यादि लोभ दीने अनेक२१, मानी न एक१वृख२२बीर टेक।९।
हरि बहुरि पांडवन पास आय, सब हित[10] उदंत[11] अक्खिय२३सुभाय[12]।
सुनि पांडवेय[13] हुव[14] समर सज्ज२४, प्रस्थान[15] रचिय२५करि सिंहगज्ज॥
चतुरंग[16] उभय२हंकिय२६अचूक, पठयो कुरुनृप दूतहु उलूक[17] २७॥
पुनि रथ अतिरथ संख्या२८प्रमानि, अंबोपाख्यान[18]२९हु तत्थ जानि।

॥ दोहा ॥

सत रु छिँयासी १८६ कहिय मुनि, उद्यम[19]मैं अध्याय॥
खट६सहस्र खट६सत नवति, अठ६६९८वृंत्त[20] समुदाय॥१२॥
इम उद्योग समाप्त हुव, बिग्रह[21]१ संधि[22]२ निधान[23]॥

वहां परशुराम ने राजा १ दंभोद्भव और नर के युद्ध का आख्यान कहा और फिर वरुण की कन्या के लिये वर खोजने को २ मातलि गया जिसकी कथा है ॥ ७ ॥ ३ जिस पीछे विश्वामित्र के शिष्य गालव की कथा है,और फिर विदुला नामक क्षत्रियजाति की स्त्री ने उपदेश देकर अपने पुत्र को वीर बनाया जिसका आख्यान है. ४ कृष्ण ने ५ दुष्ट कर्ण और दुर्योधन की कृष्ण को कैद करने की सलाह का भेद पाकर उनको अपनी ६ योगप्रभुता (वैराटरूप) दिखाया ७ फिर कृष्ण ने कर्ण को अपने रथ पर बिठा कर दुर्योधन को छोड कर पांडवों से मिल जाने के अर्थ राज्यादि अनेक लोभ दिये जिस में यह भी कहा कि ८ द्रौपदी एक एक वर्ष एक एक पति के पास रहती है उनकी जब पांचों बारी (ओसरा) पूरी होजावेगी तब छठे वर्ष तुम्हारे पास भी रहेगी परन्तु बीरपन की टेक से ९ कर्ण ने एक नहीं मानी ॥ ९ ॥ १० वृत्तान्त ११ कहा १२ श्रेष्ठ रीति से १३ पांडव १४ युद्ध के लिये तैयार हुए १५ गमन ॥ १० ॥ युद्ध में नहीं चूकनेवाली दोनों सेना १६ चलीं उस समय दुर्योधन ने १७ उलूक नामी पुरुष को दूत करके पांडवों के पास भेजा१८वहीं पर काशिराज की कन्या अम्बा को भीष्म हरलाये थे जिसकी कथा है।११।१९उद्योगपर्वमें२०छन्दोंका समूह है॥१२॥इसप्रकार उद्योगपर्व समाप्त हुआ जो२१विग्रह(युद्ध)२२सन्धि[मिलाप]का२३घर है

भीष्म पर्व ६ आरंभ अव, अर्थ बिचित्र बिधान ॥ १३ ॥

॥ पज्झटिका ॥

तँहँ प्रथमखंड जंबू प्रमान १, पुनि होन धर्म दल सीदमान २ ॥
कलकलरनमाचिगतुमुल३कोह, फाल्गुनहुवतत्थहिमग्नमोह४ ।१४।
हरि मोह हन्यो५ दै ज्ञानगूढ, पुनि भीष्म लख्यो अति बल प्ररूढ६॥
तजि रथ मलंगि जदुबंससक्र, भीसम पर दौरे पकरि चक्र ७ ।१५।
पुनि पत्थ सिखंडी ओट पाय, दै बान महाव्रत दिय गिराय८ ॥
सरसज्जा संतनु सुत सयान ९, उपबर्ह दयो जय मारि बान॥१६॥

॥ दोहा ॥

एक १ सत रु अत्यष्टि ११७ मित, अत्थ कहिय अध्याय ॥
छंद सहँस सर५अट्ठ८सत, चउरासी५८८४जुत लाय । १७ ।

॥ पज्झटिका ॥

अब द्रोनपर्व७वर्णन विवेक, तँहँ गुरुहि सैन्यपति आभिषेक १ ॥
संधाहु जुधिष्ठिर गहन लेन२, जय पुनि संसप्तक जुद्ध देन३ ॥ १८॥
अरु सुप्रतीक साभ्रज अरोहि ४,भगदत्त मर्‍यो५जय संग मोहि ॥
कुरुसेन महारथ समिटि सर्व, अभिमन्यु हन्यौ६विक्रम अखर्व ।१९।
लै पत्थ नियम तव हनिय साथ, अक्खोहिनि सप्त७।७रु सिंधुनाथ८

अथवा विग्रह और संधि ही है धन जिसका ॥ १३ ॥
भीष्मपर्व में प्रथम जम्बूद्वीप प्रमाण है फिर १ युधिष्ठिर की सेना का २ कंपायमान होना और युद्ध का ३ कोलाहल४ मच कर ५ भयंकर ६ हाका होना और ७ अर्जुन का मोह में डूबना ॥ १४ ॥ ८ अत्यन्त बल पर आरूढ (सवार) ९ यदुवंशियों के इन्द्र (कृष्ण) ॥ १५ ॥ फिर अर्जुन ने शिखंडी की आड में आकर १० भीष्म को गिरादिया ११ भीष्म शरशय्या में सोये वहां १३ अर्जुन ने बाण मार कर १२ तकिया लगादिया ॥ १६ ॥ १४ द्रोण ने युधिष्ठिर को पकड़ने की प्रतिज्ञा ली और अर्जुन ने संसप्तकों को युद्ध दिया (उनसे युद्ध करना स्वीकार किया) १५ सुन्दर अङ्गोंवाले अथवा ईशान दिशा के दिग्गज के समान १६ हाथी पर चढ कर अर्जुन के साथ युद्ध करने में भगदत्त मरा और कैरवों की सेना के अतिरथियों ने १७ इकट्ठे होकर १८ बडे पराक्रमवाले अभिमन्यु को मारा ॥ १९ ॥ और अर्जुन ने नियम लेकर१९सात अक्षौहिणी सेना और२०जयद्रथ को मारा

*जुजुधान१भीम२पुनि फोज फारि,करि पंथ लये हरि१जय२निहारि
संसप्तकसंगर३मारितीर,नवकोटि९००००००००हनैं९पारथप्रवीर ॥
जलसंध१अलंबुस२जातुधान,बीरहु श्रुतायु३बलि बीर्यवान ॥ २१ ॥
भट सौमदत्ति४द्रुपद५रु बिराट६,धृतराष्ट्र पुत्र वहु वीर वाट ॥
नारायन गन१गोपाल ज्यौंहिं,पाखांन सस्त्र२हैडंब१त्यौंहिं ॥ २२ ॥
इत्यादि बहुत या पर्ववीच, तजि देह गये१०करि रुहिर कीच ॥
पुनि द्रुपदपुत्र बिनु सस्त्र द्रोन,मारे११कुबुद्धि किय उचित सोन॥२३॥
गुरुपुत्र कुपित तव बल बिथारि,नारायणाऽस्त्रमाविश्चकार१२ ॥
आग्नेय१३रुद्र१४माहात्म्य जानि,द्वैपायन आगम१५पुनि प्रमानि ।२४।
हरि१अर्जुन२महिमा कथन१६प्राप्त,इम द्रोनपर्व७सप्तम७समाप्त७॥
नभतुरगचंद१७०अध्यायअत्थ,नवगगनअंकवसु८९०९वृत्तसत्थ२५
अब कर्णपर्व ८ अष्टम ८ अभूत, तहँ मद्रराज हुव कर्ण सूत१ ॥
पुनि त्रिपुर हनन आख्यान२नाम,मद्रेस१कर्ण२संवाद३तांम॥२६॥
आख्यान हंसकाकीयं४जत्थ,गुरुपुत्र समर५अतिघोर तत्थ ॥
नृप पांड्य१दंड२अरु दंडसेन३,मारे द्विज६कैं बहु खंड सेन ॥२७॥

* सात्यकि और भीमसेन ने १ कृष्ण २ अर्जुन को ३ युद्ध में ४ राक्षस ॥ २१ ॥ ५ वीरों के मार्ग में ६ पत्थर ही है शस्त्र जिसके ऐसा ७हिडंबा का पुत्र (घटोत्कच) ॥२२ ॥ ८ रुधिर का कीचड़ करके ९ धृष्टद्युम्न ने ॥ २३ ॥ १० अश्वत्थामा ने पराक्रम फैला कर ११ नारायण अस्त्र को १२ चलाया फिर अश्वत्थामा ने अग्नि अस्त्र चलाया जिसको अर्जुन ने रुद्र (पाशुपत) अस्त्र से व्यर्थ करादिया इसका अश्वत्थामा ने बहुत शोक किया इस कारण से १३ वेदव्यास वहां पर आये और कृष्ण अर्जुन को तत्वज्ञान १४ के जाननेवाले कह कर महिमा की १५ छन्दों के साथ ॥ २४ ॥ २५ ॥ अथ आठवां कर्णपर्व १६ हुआ जिसमें मद्र देश का राजा शल्य कर्ण का १७ सारथि हुआ वहां कर्ण और १९ शल्य का संवाद हुआ २० तहां त्रिपुरासुर के १८ मारने का आख्यान है ॥ २६ ॥ वहीं पर हंस और काक २१ का आख्यान है और वहीं पर अश्वत्थामा का घोर युद्ध है २२ सेना के बहुत टुकड़े करके ॥ २७ ॥

*बलिकर्ण१जुधिष्ठिर२चत रारि७,दृखे धर्म दबायउ त्रास डारि८॥
अरुधर्म१पैत्थअन्योन्यक्रोध९,बिजयहिंदियकेसवउचितबोध१० ॥
राधेय लखत वृखसेन तास, सुत बिजय हन्यो११रन रचत रास॥
पर पूर्व भीम रन तुमुल पारि,दुस्सासनको उर जियत फारि ।२९।
अंजलि भरि करि तस रक्तपान, बुल्ल्यो सुधा न याके समान१२
बलिजुरिग१३करन१अर्जुन२बकारि,मद्रेस१कन्ह२जुतबिसिखमारि
तँहँ पुहवि कर्ण रथचक्र ग्रास१४,पुनि कर्ण बुलायउ नाग१५पास॥
रविसुत सु नाग निज रक्खि रोपं,अर्जुन पर मुक्किय१६अनल ओप
जिंहिं आतजानि हरि मचक मारि,रथ अवनि ग्रसायो१७डर निहारि
गजकेतु उतरि तब बल गरीयं,ईसा गहि अँच्यो रथ१८स्वकीयं।३२।
भूअखिलतजियनागेसभोगं१९,जुनचक्रतदपिनिकस्यो२०कुजोग॥
तिंहिं अंतर अर्जुन मारि तीर, हरि हुकम हन्यो राधेय बीर ।३३।

दोहा

अंक तर्क६६संख्या प्रमित, कर्णपर्व८अध्याय ॥

* फिर १ कर्ण ने२ युधिष्ठिर को भय डाल कर दबा लिया और युधिष्ठिर ३ अर्जुन के ४ परस्पर क्रोध हुआ उसमें अर्जुन ने दुर्वचन कहे इस कारण ५ अर्जुन आत्मघात करके मरने लगा तब ६ कृष्ण ने उचितज्ञान ७ दिया ॥ २८ ॥ ८ कर्ण के देखते ९ उस (कर्ण) के पुत्र वृखसेन को युद्ध रूपी रास रचकर अर्जुन ने मारा और १० शत्रु (दुर्योधन) के ११ आगे भीमसेन ने १२भयंकर युद्ध करके जीतेहुए दुश्शासन की छाती फाड़ कर ॥२९॥ अंजली (धोबा) भर कर लोहू पिया और बोला कि १३ अमृत भी इसके बराबर नहीं है१४ फिर ललकार कर कर्ण अर्जुन लड़े१५शल्य और कृष्ण के भी१६ बाण मार कर ॥ ३० ॥ तहां १७ भूमि ने कर्ण के रथ के १८ पहिये को ग्रस लिया जहां कर्ण ने नागपाश को बुलाया और १९ कर्ण ने सर्प को अपने२०बाण में रख कर २१ अग्नि के समान अर्जुन पर छोडा ॥३१॥ उस बाण को आताहुआ देख कर अर्जुन के मरने का भय देख कर कृष्ण ने मचक लगा कर अर्जुन के रथ को२२भूमि में घुसा दिया जिससे वह बाण ऊपर होकर व्यर्थ चलागया फिर २३ कर्ण ने उतर कर२४बड़े बल से अपने रथ के२५ओदण पकड़ कर खींचा॥३२॥ २७ सम्पूर्ण भूमि ने२८शेष नाग के२९फणों को छोड़ दिया३० परन्तु खोटे योग से वह पहिया नहीं निकसा उस अवकाश में कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने कर्ण को मारलिया ॥३३॥ ३१प्रमाण

बेद तर्क नव बेद४९६४बलि, सकल*वृत्त**समुदाय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासयुद्योग५भीष्म६द्रोण७कर्ण८पर्व४कथासमसनाध्यायवृत्तसंख्यानं द्वाविंशो मयूखः ॥ २२ ॥ आदितश्चतुःषष्टितमः ॥ ६४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

अब सल्यपर्व९बर्णन नवीन,कुरुपति निज दलपति सल्य कीन१॥
अभिसेक कर्म याकै२हु अत्थ, कौमार नाम आख्यान३तत्थ ॥१॥
बटि बीर बहुरि रथ जुद्ध वृत्त४, कुरुमुख्य गिरन बहु५विसिख कृत्त॥
लरि धर्मराज लिय सल्य६प्रान, सहदेव सुबलपुत्रहिँ जघान७ ॥२॥
जलथंभन रचि विद्या बिसेस८, किय जाय सुजोधन ह्रद निवेस॥
यहखबरिलुब्धकँनभीमजानि,बुल्ल्योसुजायजलतटकुबानि९ ॥३॥
कटुबैन सुनत कुरुपति कराल,इह छोरि कढ्यो जिम कुपित व्याल
नृप१ भीम२ गदारन रचिग१०जत्थ, सीरीहु तत्थ आये११समत्थ॥४॥

*सब**छन्दों का समूह ॥ ४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूतपुत्र के संक्षेप से महाभारत सुनाने में उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण पर्व की संक्षेप कथा, अध्याय और छन्दों की संख्या का बाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २२ ॥ और आदि से चौसठ मयूख हुए ॥ ६४ ॥

१ दुर्योधन ने शल्य को अपना सेनापति किया और २ यहां पर शल्य का अभिषेक किया तहां३स्वामिकार्तिक ने देवताओं का सेनापतिपन किया सो आख्यान हुआ ॥ १ ॥ बहुत वीर परस्पर बंट कर युद्ध का ४ वृत्तान्त और ५ बाणों से ६ कट कर कौरवों के मुख्य वीरो का गिरना फिर ७ युधिष्ठिर ने लड़ कर शल्य के प्राण लिये और सहदेव ने ८ शकुनि को ९ मारा ॥२ ॥१० शिकारियों से ॥ ३ ॥ ११ क्रोध किया हुआ सर्प टिपारे में से कढै ऐसे १२ बलदेव भी वहां आगये ॥ ४ ॥

सारस्वत तीर्थन पुराय बात१२, परिबो गदान दुवंश्चंडपात १३ ॥
कुरुपतिहिं भीम घनघात घाय, करि सक्थिभंग दिन्नों गिराय ॥५॥
आँसुहि मस्यो न खिल कछुक आयु१४,
बलि बढिय१५ बायुसुत अपर बायु ॥
एकोनसट्ठि५९ अध्याय अत्थ,नभ पक्ष नेत्र गुन३२२०वृत्त सत्थ ।६।

मुक्तादाम ॥

सुनौं अब सौप्तिकपर्व१०सुमोज, जहाँ गुरुपुत्र१रु गोतम२ भोज३
परयो हत ऊरु सुजोधन पाय, कह्यो हम मारत पांडव जाय१ ।७।
चले कहि तीन३हि यौं छलकाम,लयो मगमैं बटठां बिसराम २॥
लखे तहँ पेचक पातित काक३,भयो गुरुपुत्रहु तच्छलभार्क४।८।
धसे दलमैं भट तीन३हि गुप्त,अनीक हन्यौं सिविरस्थित सुप्त ५।
कियो द्विजसौं तहँ रक्खस जंग६,सुविप्र कस्यो सिवके बलभंग७।९।
हनैं सब सोवत द्रौपदि पुत्त८, हन्यौं द्रुपदात्मज बंधुन जुत्त९ ॥

सारस्वत नामक तीर्थों की १ पवित्र कथा हुई और भीमसेन और दुर्योधन के युद्ध में दोनों की गदाओं का २ भयंकर पतन हुआ वहां भीमसेन ने दुर्योधन को घने घावों से घायल करके ३ जंघा तोड़ कर गिरा दिया ॥ ५ ॥ कुछ आयु ९ बाकी होने के कारण ४ शीघ्र नहीं मरा ६ पुनि ७भीमसेन और ८ ऊर्ध्वश्वास बढे अर्थात् विजय पाने से भीमसेन बढा और दुर्योधन के अन्तिम श्वास बढे ९ छन्दों के साथ ॥६॥ १०अश्वत्थामा ११कृपाचार्य १२कृतवर्मा इन तीनों ने १३ तूटीहुई जंघा से पड़े हुए दुर्योधन को पाकर कहा कि हम जाकर पांडवों को मारते हैं ॥ ७ ॥ यह कह कर छल की कामना से तीनों चले और मार्ग में एक१४बड़ के वृक्ष नीचे विश्राम लिया वहां १५ उलूक (घूघू) के १६मारे हुए काकों (कागलों) को देखे १७ वही अश्वत्थामा को १८छल सिखानेवाला होगया अर्थात् इन मरेहुए काकपक्षियों को देख कर अश्वत्थामा ने यह उपदेश ग्रहण किया कि जिस प्रकार सोते हुए काकों को उलूक ने मारा है इसीप्रकार हम भी अपने शत्रुओं को सोतेहुओं को मारैं ॥ ८ ॥ १९ डेरों में २० सोती हुई सेना को मारी वहां एक २१ राक्षस ने अश्वत्थामा से युद्ध किया जिसको उस ब्राह्मण ने महादेव के वरदान के बल से मारा ॥ ९ ॥ २२ पुत्र २३ धृष्टद्युम्न को भाईयों सहित मारा, इन (अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा) तीनों वीरों से

रहे तिनसौं खिल पंच५हि भ्रात, तथा हरि१ सात्यकि२ए सब सात७॥१०॥
ब्रच्यो द्रुपदात्मजको इक१सूत११, कह्यो तिहिं पांडुनसौं यह भूत१२
सुन्यौं जब द्रौपदि पुत्र बिनास१३, तज्यो तब अन्न लह्यो अतित्रास१४
चल्यो धँकि बिप्रहिं मारन भीम१५, भयो द्विजको डर१६संगर सीम
अपांडव होहु मही यह जंपि, तज्यो द्विज अस्त्र सु ब्राह्मय१७प्रकंपि
न होहु कह्यो हरिहू तिहिं पेलि१८, लयो सुहि अस्त्रहिसौं जय झेलि१९
कृपीसुतकौं लखि यौं प्रति पाप, भये द्विज१०व्यास१परस्पर साप२०
सिरोमनि व्हाँ द्विजको जय काढि, दयो सुहि द्रौपदिकौं२१हित बाढि
इहाँ धृति१८मानकहे अधिआय, खघोटकवारन८७०वृत्तगिनाय।१४।
अबैं स्त्रियपर्ब११महादुख ओक, भयो नृप अंधहिं पुत्रन सोक १ ॥
मिलावहु भीमहिं अंकिखय अंध२, रच्यो हरि रक्खन ताहि प्रबंध३
अयोमय लै प्रतिमा तिहिं दिन्न४, सुहीमतिलोचन चूरन किन्न५॥
दयो अनुजातहु अंधहिं ज्ञान६, गये सबही पुनि जुज्झन थान७।१६।
भये तहँ बीरबधून बिलाप८, तँच्यो महिखीजुत अंधहु ताप ९॥

पांचों भाई पांडव, कृष्ण और सात्यकि ये सातों १ बाकी बचे ॥ १० ॥ २ धृष्टद्युम्न का एक सारथि ३ यह बीताहुआ वृत्तान्त ॥ ११ ॥ ४ क्रोध में जल कर ५ युद्ध की सीमा में अश्वत्थामा को भय हुआ इसकारण से धूज कर बिना पांडवों के भूमि होजाओ यह६ कह कर ब्रह्मास्त्र छोडा ॥ १२ ॥ कृष्ण ने कहा कि अपांडवी भूमि मत होओ, इस पीछे उस७अस्त्र को८अर्जुन ने अपने अस्त्र से झेल लिया९अश्वत्थामा को इसप्रकार अत्यन्त पापी देखकर वेदव्यास ने उसको तीन हजार दिव्यवर्षों तक निर्जन वन में घूमते रहने का श्राप दिया और उस अश्वत्थामा ने भी वेदव्यास को पीछा श्राप दिया कि हम तुम साथ ही घूमेंगे ॥१३॥ वहां पर अर्जुन ने अश्वत्थामा के१०मस्तक का मणि निकाल कर हित को बढा कर द्रौपदी को दिया ११ प्रमाण१२ अध्याय १३ छन्द ॥१४॥ १४ घर१५ धृतराष्ट्र को १६ धृतराष्ट्र ने कहा कि भीमसेन को मुझसे मिलाओ सो कृष्ण ने भीमसेन को बचाने का पहिले ही प्रबन्ध रच रक्खा था ॥१५॥ १७ लोहमयी१८मूर्ति धृतराष्ट्र को जिसको १९ धृतराष्ट्र ने चूर्ण कर दी वहां पर२० विदुर ने धृतराष्ट्र को ज्ञान दिया फिर२१जहां पर युद्ध हुआ था वहां गये ॥ १६ ॥ २२ वीरों की स्त्रियों का विलाप हुआ वहां २३ राणी सहित धृतराष्ट्र ताप से २३ तपका (दुःखद) गया.

लखे सुत१भ्रात२पिता३कुल नष्ट१०,दयो हरिबोध११निवारन कष्ट॥
तथा सबको सुचिदाहँ सुधारि१२, लग्यो तिन्ह दैन जुधिष्टिर बारि।
पृथा तँहँ अक्खिय धर्महिं एहु, ममात्मजँ कर्णहुकौं जल देहु१४ ॥
कियो सुनि तीव्र जुधिष्टिर ताप१५, तदाँ निज मातरमेव शशाप १६
अहो अबसौं मम साप प्रपात, रहो मत नारिनके हिय बात १७ ॥

॥ दोहा ॥

सप्तबीस २७ अध्याय यँहँ, वृत्त सप्त ७ सत ज्यौंहि ॥
पचहत्तरि ७७५ संजुत कहे, सांति पर्व १२ अब त्यौंहि॥२०॥
मारि पिता १ भ्राता २ स्वसुर ३, सुत४मातुल५सुहृदादि६॥
भो विरक्त पुनि धर्मनृप १ गिनि अनित्य देहादि ॥
बान कासिपु थित देवव्रत, कहे धर्म आख्यान २ ॥
भूपनकै श्रोतव्य जे, जे सु मुमुक्षु सुज्ञान ॥ २२ ॥
कहिय राज १ आपद २ धरम, मुक्ति धरम ३ नादेय ४॥
दानधर्म ५ आदिक कहे, सांतिपर्व १२ यह श्रेय ॥ २३ ॥
व्यास कहे अध्याय यँहँ, अंकअग्गि गुन ३३९ मान ॥
सप्त गगन मुनि बेद ससि१४७०७,वृत्त बिचित्र विधान॥२४॥
अब अनुसासन १३ अक्खियत, बिबिध कहे जँहँ दान १ ॥
तिनके फल २ अरु जोग ३ पुनि, पात्र विसेस ४ प्रमान ॥

१कृष्ण ने ज्ञान दिया॥१७॥२अग्निमें३ जल देने लगा वहां कुन्ती ने कहा कि कर्ण भी मेरा ४ पुत्र था जिसको भी जलाञ्जलि दो ॥ १८ ॥ ५ उसी समय अपनी ६ माता को ही श्राप दिया कि ७ धिक्कार है तुझको जो इस समय तक मुझको यह बात नहीं कही कि कर्ण तेरा भाई है इसकारण मेरे श्राप के पड़ने से अब से स्त्रियों के हृदय में बात मत रहो ॥ १९ ॥ ८ मामा ९ मित्र आदि १० शरीर आदि को अनित्य जान कर युधिष्ठिर विरक्त हुआ ॥ २० ॥ ११ वे आख्यान राजाओं के सुनने योग्य और १२ मुमुक्षु (संसार रूपी गांठ को भेदने का प्रयत्न करनेवाले) को श्रेष्ठ ज्ञान देनेवाले हैं ॥ २२ ॥ १३ राजधर्म१४ भीष्म ने ॥ २३ ॥ १५ अग्नि १६ प्रमाण १७ छन्द विचित्र रचना के ॥ २४ ॥ १८ अब अनुशासन पर्व कहते हैं. जिसमें अनेक प्रकार के दान, उनके फल, योग और पात्र विशेष हैं. ॥ २५ ॥

जोग ५ हु पुनि आचार ६ जिम, सत्य परा[1]गति ७ जुक्त ॥
महा[2]भाग गो द्विजनके, धर्म रहस्य ८ हु उक्त[3] ॥ २६ ॥
भीसमस्वर्गप्रयान ९ यहँ, तर्क इंद्र १४६ अध्याय ॥
वृत्त गगन नभ गगन बसु८०००, अनुसासन१३बिच आय ॥ २७ ॥
अश्वमेध १४ आरंभ अब, सुनहु कथा मतिमान ॥
सुभ मरुत्त १ संबर्त २ को, जहँ बिचित्र आख्यान १ ॥२८॥
कँनक[4] कोस[5] पावन २ कथन, जनम परिच्छित ३ काल ॥
अस्त्रदग्ध यह गर्भ[6]गत, रख्यो ४ कृष्ण कृपाल ॥ २९ ॥
पुनि हय फेरन सत्र[7] हित, भाल[8] बंधि जयपत्र[9] ५ ॥
जत्थ[10] लयो यह बंधि हय, तुमल[11] भयो रन तत्त ६ ॥ ३० ॥
बभ्रुबाहके समर बिच, भयो बिजय[12] असुभंग[13] ७ ॥
सिर खोजन ८ जित्तन उरग[14] ९, आनन अमृत १० प्रसंग ॥३१॥
नकुला[15]दिक आख्यान ११ पुनि, इम हयमेध १२ अमंद ॥
गुन नभ भू १०३ अध्याय यहँ, ख नयन गुनगन३३२०छंद ॥३२॥
आश्रमबास१५ उदंत[16] अब, सुबलसुता[17]१ अरु अंध[18]२ ॥

योग्य, आचार और १ परमेश्वर में गति होना, २ अत्यन्त धन्य गौ और ब्राह्मणों का अभिप्राय सहित धर्म ३ कहा है ॥२६॥ अश्वमेध के आरंभ में यज्ञ कराने के विषय में राजा मरुत्त और संवर्त मुनि के श्रेष्ठ संवाद का विचित्र आख्यान है ॥ २७ ॥ २८ ॥ और महादेव की पूजा करके युधिष्ठिर ने बहुत सोना ४ (स्वर्ण) पाकर अपने ५ भंडार को पवित्र किया जिसकी कथा है फिर ६ गर्भ में गये हुए अस्त्र से जले हुए परीक्षित का जन्म हुआ जिसको कृपाल श्रीकृष्ण ने जीवित करके रक्खा ॥ २९ ॥ फिर ८ ललाड़ पर ९ विजयपत्र बांध कर ७ यज्ञ के घोड़े को फेरा सो १० जहां पर इस घोड़े को बांध लिया वहीं पर घोर ११ संग्राम हुआ ॥ ३० ॥ मणिपुर के राजा अर्जुन के पुत्र बभ्रुबाहन के युद्ध में १२ अर्जुन का १३ मृतक होना और अर्जुन की स्त्री नागकन्या उलूपी का अर्जुन को जीवित करना १४ सर्पों को जीतना ॥३१॥ राजा युधिष्ठिर का यज्ञ समाप्त होने पर एक १५ नोल्या (जंतुविशेष) ने राजा के यज्ञ की निन्दा और एक ब्राह्मण के प्रस्थ (पस्सी) भर अन्नदान की महिमा की उसका आख्यान आदि की कथा है ॥३२॥ अब आश्रमवास पर्व का १६ वृत्तान्त है जिस में १७ गान्धारी १८ धृतराष्ट्र विदुर और

बिदुर३रु कुंती४ बन गये१, तजि सबसौं संबंध ॥ ३३ ॥
अंध लखे पुनि मृतकसुत, जीवत२ व्यास प्रसाद ॥
गयो बंधूजुत परमगति, बलि वह३ छोरि बिखाद ॥ ३४ ॥
संजय१ बिदुर२ हु बपु तजिय४, नारद१ धर्म२ मिलाप५ ॥
सुरमुनिसौं भूपति सुन्यौं, जदुकुल कर्दन६ दुराप ॥ ३५ ॥
नयन बेद४२ अध्याय यँहँ, पद्य सु इक१ हजार ॥
पंच५ सत रु खट१५०६ मित प्रकट, अब मौसल१६ उच्चार ।३६।
तँहँ जादव आपान रचि, लवणोदधिकी तीर ॥
एरकं संबनसौं सकल, कटे परस्पर१ वीर ॥ ३७ ॥
राम१ कृष्ण२ अवसेस रहि, निज कुटुंबकौं मारि ॥
छोरि देह संस्कार हित, गये स्वलोक पधारि२ ॥ ३८ ॥
बिजय आय संस्कार बिधि, देहन किय सुचि दाह३ ॥
सु सुनि जुधिष्ठिर सोक सह, रच्यो बिरक्तन राह४ ॥ ३९ ॥
बसु८ अध्याय रु यँहँ बिदित, कृति गुन३२०पद्य प्रमान ॥
निलय तजिय जँहँ पांडवन, सु अब महाप्रस्थान१७ ॥ ४० ॥
भ्रात पंच५ कृष्णा१ सहित, लगे हिमालय राह१ ॥
पावक बिच मिलि पत्थसौं, चाप लयो२ निज चाह ॥ ४१ ॥

कुन्ती सब से सम्बन्ध छोड कर वन में गई ॥३३॥ वेदव्यास की १ प्रसन्नता से धृतराष्ट्र ने अपने २ मरे हुए पुत्रों को देख ४ फिर विषाद ५ को छोड कर ३ स्त्री सहित मुक्त होगया ॥ ३४॥ ६ शरीर छोड ७ नारद मुनि युधिष्ठिर से मिले ८ नारद से युधिष्ठिर ने १० कठिनाई से होनेवाला ९ नाश सुना ॥ ३५ ॥ ११ छन्द १२ प्रमाण १३ मूसल पर्व कहते हैं ॥३६॥ १४ पानगोष्ठि (मनवाल) १५ एरा (विना ग्रन्थि तृणविशेष) रूपी १६ वज्रों से ॥ ३७ ॥ १७ बलदेव १८ बाकी रहे १९ अग्नि संस्कार (जलाने) के लिये अपने शरीर को छोड कर २० अपने लोक में पधार गये ॥ ३८ ॥ २१ अर्जुन ने आकर स्नान संस्कार करके २२ अग्नि मे दाह किया ॥ ३९ ॥ २३ पांडवों ने अपने घर को छोड कर वन गमन किया उसका नाम २४ महाप्रस्थान पर्व है ॥ ४० ॥ पांचों भाइयों ने द्रौपदी सहित हिमालय पर्वत का मार्ग लिया वहां २५ अग्नि ने बीच में मिल कर अर्जुन से अपना दिया हुआ गांडीव २६ धनुष पीछा

अनुज च्यारि४ अरु अंगना*१, गिरे ति** देखे नाँहिं३ ॥
गयो जुधिष्ठिर देह जुत, महादुल्लभ मग माँहिं ॥ ४२ ॥
गुन३ अध्याय रु छंद गिनि, बिदित तीन सत बीस३२० ॥
स्वर्गपर्व१८अब देवरथ, आय१लैन अवनीस ॥ ४३ ॥
कुक्कुर बिन भूपति कह्यो, मैंहु चढौं न बिमान२ ॥
लखि धीरज स्वानहु स्वबपु, तजि किय संग प्रयान३ ॥ ४४ ॥
देवदूत दिय व्याजसौं, धर्मंहिं नरक दिखाय४ ॥
सुनैं जुधिष्ठिर भ्रात निज, क्रंदत पीडन पाय५ ॥ ४५ ॥
नभगंगा बिच न्हाय पुनि, परिहरि मानव देह ॥
बसे जुधिष्ठिर धर्मबल, गुन नुत निर्जर गेह६ ॥ ४६ ॥
यह जानहु अष्ठारहौं, स्वर्गारोहन१८ नाम ॥
सर५ अध्याय रु दोय सत, अंक२०९वृत्त अभिराम ॥ ४७ ॥
ए धृति१८ सम्मित पर्व इम, जो इनसौं कछु सेस ॥
है सुहि खिल्ल हरिवंस१९मैं, उचित रीति उपदेस ॥ ४८ ॥
इक१ सहँस१०००अध्याय तँहँ, ख नभ गगन रवि१२०००छंद ॥
यहै पर्व संग्रह कह्यो, भारतको सानंद ॥ ४९ ॥

लिया ॥ ४१ ॥ चारों छोटे भाई और अपनी * स्त्री (द्रौपदी) हिम से गल कर मार्ग मे गिर गई ** तिनको युधिष्ठिर ने पीछे फिर कर नहीं देखा और इसी शरीर सहित दुर्लभ मार्ग मे गया ।४२। अब स्वर्गारोहण पर्व कहते हैं. जिसमें १ राजा युधिष्ठिर को लेने देवरथ आया ॥ ४३ ॥ युधिष्ठिर ने कहा कि मेरे साथ२कुत्ता है इसको भी स्वर्ग में ले चलो तो हम चलें नहीं तो इकले विमान पर नहीं चढें, राजा की यह धीरज देख कर ३ कुत्ते ने भी ४ अपना शरीर छोड कर साथ गमन किया ॥ ४४ ॥ देवदूत ने ६ युधिष्ठिर को ५ मिस मे नरक दिखा दिये वहां युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को पीड़ा पाकर ७ रोते हुए सुने ॥ ४५ ॥ ८ आकाश गंगा में स्नान करके १० मनुष्य देह को ९ छोड कर युधिष्ठिर अपने धर्म के बल से ११ स्तुति करने योग्य गुणोंवाले १२ स्वर्ग में बसा ॥ ४६ ॥ १३ छन्द १४ मनोहर ॥ ४७ ॥ १५ गिनती का प्रमाण १६ बाकी १७वह बाकी का उपदेश हरिवंश में है ॥४८॥ १८ उस हरिवंश के एक हजार अध्याय ॥ ४९ ॥

षट्पदी ॥

पढहु सांग६ श्रुति च्यारि४ पढहु उपनिषद अर्थ जुत ॥
भारत बोध३ बिहीन४ नाँहिं वह होय चतुर नुत५ ॥
मंजन६ पुष्कर नीर करहु क्यों भारत बोधित७ ॥
धेनु८ सतक१००क्यों देहु शृंग९ हाटक१० जरि सोधित ॥
दिन११भूत सकल प्रजरत दुरित१२ पश्चिम संध्या जापतैं ॥
निसि१३भूत पूर्व१४ संध्या पढत भारत पुराय प्रतापतैं ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारतसमासे शल्या९ऽऽदिहरिवंशान्तैकादश११पर्वकथासमसनाध्यायवृत्तसङ्ख्यानग्रन्थमाहात्म्यसूचनंत्रयोविंशति२३तमो मयूखः ॥ २३ ॥ आदितः पञ्चषष्टितमः ६५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सूत कहिय इम मुनिन१५ सन, भारत प्रथम समास१६ ॥

अब,माहात्म्य कहते हैं कि छःहों अंगों१सहित चारों२वेद और अर्थ सहित उपनिषद् पढो परन्तु भारत के३ज्ञान४विना५स्तुति करने योग्य चतुर नहीं होसक्ता और जिसको भारत का ७ ज्ञान है वह पुष्कर में क्यों ६ स्नान करे और शुद्ध किये हुए १० सोने (कुन्दन) से जड़ेहुए ९ सींगों की ८ सौ गौवें क्यों देवै क्योंकि ११दिन में पैदाहुए सम्पूर्ण १२पाप सायकाल में महाभारत के जप करने से, और रात्रि के १३ पैदाहुए पाप १४ प्रभात के जप के पुराय के प्रताप से जल जाते हैं ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के एक समय मे होनेवाले सूतपुत्र के संक्षेप से महाभारत सुनाने मे शल्य पर्व को आदि लेकर हरिवंश के अन्त तक ग्यारह पर्वों की कथा का संक्षेप और अध्याय छन्दों की संख्या और ग्रन्थ माहात्म्य के कहने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से पैंसठ मयूख हुए ॥ ६५ ॥

सूत ने शौनकादि मुनियों १५ से इस प्रकार महाभारत का १६संक्षेप कहा

तिमहि लोमहरखन तनय[1], बरनन लग्गो व्यास[2] ॥ १ ॥

पज्झटिका

जनमेजय बिरचिय दीर्घ सत्र[3], कुरुछेत्रमाँहिं सह बंधु तत्र ॥
श्रुतसेन१भीम२अरु उग्रसेन३, त्रय३बंधु सत्र रच्छक वलेन[4]॥ २ ॥
अध्वर[5] निकेत[6] इक आय स्वान, तिन्ह ताडित हुव रोरूयमान ॥
गो पुनि भजि जननी निकट ताहि,सरमा[8]हु कह्यो क्यों रुदन आहि[9]॥३॥
बुल्लिय[10] तव मंडल[11] बारबार, पारिच्छित[12] बंधुन किय प्रहार ॥
यह सुनत सुनी[13] मखथान आय, रचि अनख[14] नृपहिं बुल्ली रिसाय ॥४॥
मखघृतहु[15] लख्यो नहिं मम अपत्य[16],अपकार कछु न किय साधु सत्य ॥
बंधुन मम ताडित तदपि बाल[17], तसमात[18] साप झेलहु नृपाल ॥५॥
अहैं[19] अदृष्टभय तव कुकाम[20], इम सप्प[21] दये सरमा[22] जगाम[23] ॥
तब अतिबिखाद[24] कुरुराज पाय, मख करि समाप्त इभनगर[25]आय ॥६॥
द्रुत[26] सापत्रास मेटन उदार, मम है न पुरोहित किय बिचार ॥
कहुँ समय तदनु[27] मृगया[28] पधारि, बन इक मुनि आश्रम लिय निहारि ॥७॥
जहँ द्विज श्रुतश्रवा१नामधेय[29], सोमश्रवा२सु तस[30] तनय श्रेय[31] ॥
तहँ जाय बिरचि बिन्नति बिसेस, कर जोरि कहिय मुनिप्रति[32] नरेस ॥८॥

इसीप्रकार वही लोमहर्षण नामक सूत का १पुत्र (उग्रश्रवा) २ विस्तार करके कहने लगा ॥ १ ॥ ३ बडा यज्ञ ४ बलवान् अथवा तीनों भाई बल करके यज्ञ के रक्षक हुए ॥ २ ॥ उस ५यज्ञ के ६ स्थान में एक कुत्ता आया सो राजा जनमेजय के तीनों भाइयों से पीट खाकर ७ रोया और अपनी माता के पास गया वहां ८ कुत्ती ने कहा कि क्यों रोता ९ है ॥ ३ ॥ तब ११ कुत्ता बारंबार १० बोला कि १२ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) के भाइयों ने मुझे मारा१३कुत्ती१४क्रोध करके राजा से बोली ॥४॥१५यज्ञ में धरीहुई वस्तु को मेरे १६ पुत्र ने देखी ही नहीं और इस सत्यवादी श्रेष्ठ कुत्ते ने कोई बिगाड भी नहीं किया तो भी मेरे १७ बालक को तुमारे बंधुओं ने मारा है १८ इस कारण से हे राजा आप झेल ॥५॥ तुझ२०खोटे काम करनेवाले को१९बिना जाना हुआ भय आवेगा, इसप्रकार२१आप देकर२२कुत्ती २३ चली गई, तब जनमेजय बहुत२४खेद पाकर यज्ञसमाप्त करके २५ हस्तिनापुर आया ।६। २६जलदी आप का भय मेटनेवाला२७जिस पीछे २८ शिकार ॥ ७ ॥ २९ श्रुतश्रवा नामवाला ब्राह्मण ३१ श्रेष्ठ ३० उसका पुत्र सोमश्रवा ३२ मुनि

भवदीय पुत्र यह हे मुनीस, मम होहु पुरोहितपन अधीस ॥
सुनि बिप्र कहिय नृप श्रवन[2] धारि, मम रेत[3] पियउ इक सर्पनारि।९।
तामाँहिं भयो यह सुत उदार, विद्या१तप२संजुत दृढ बिचार ॥
याकै नृप है पन गूढ[4] एक, मंगैं[5] सु देत बिप्रन सटेक ॥ १० ॥
जो सकत नियम याको निबाहि, लैजाहु पुरोहित थप्पि याहि ॥
सुहि करि अंगीकृत द्विजहिं संग, आयो लै भूपति द्विरदद्रंग[6]।११।
बंधुन प्रति तहँ नृप कहिय बात, यह बिप्र कहैं सुनि करहु तात॥
पुनि तच्छसिला जित्तन जगाम, लिय जित्ति वहै जनपद[7] ललाम।१२।
कछु काल पुब्ब[8] आपोदधौम्य, हुव बिप्र महाबुध[9] सील सौम्य ॥
हुव छात्र[10] तीन३ताकै सुधाम[11], आरणि१उपमन्न्यु२रु वेद३नाम।१३।
आरुणि प्रति इक दिन दिय सुनाय, केदार[12] धसत जल रोकि जाय॥
इहिं सुनत जतन किन्नैं अपार, दक[13] तदपि[14] रुक्यो नहिं वेगदार[15]१४
वह सोय भयो केदार ओट[16], रुकि तोय[17] गयो जिम लहल कोट ॥
कतिदिन बिहाय गुरु तत्थ जाय, दै हेलो आरुणि लिय बुलाय।१५।
सुनि बचन उठ्यो आरुणि द्विजेस, गुरु पयन परयो अतिनम्र बेस ॥
सो देखि छात्र[18] सेवा प्रसस्त[19], बर दियउ फलहु बिद्या समस्त ॥१६॥

मे राजा ने कहा ॥ ८ ॥ हे मुनि १ आप का यह पुत्र मेरा पुरोहित होवै २ हे राजा सुनो, मेरा ३ वीर्य एक सर्पिणी ने पीलिया था ॥ ६ ॥ इसके एक ४ छिपाहुआ प्रण (नियम) है कि जो ब्राह्मण इससे मांगता है वह उसको हठपूर्वक देदेता है ॥ १० ॥ ५ वही बात स्वीकार करके ६ हस्तिनापुर आया ॥ ११ ॥ जनमेजय ने अपने भाइयों से कहा कि यह ब्राह्मण कहै सो ही करना, यह कहकर जनमेजय तक्षशिला को जीतने गया और वह सुन्दर ७ देश जीत लिया ॥ १२ ॥ कुछ समय ८ पहिले आपोदधौम्य नामक ब्राह्मण बडा ९ पंडित शीतल स्वभाववाला सौम्यमूर्ति हुआ जिसके ११ श्रेष्ठ धामवाले १० तीन शिष्य हुए. उनमें आरुणि नामक शिष्य से गुरु ने कहा कि अपने १२खेत में पानी घुसता है जिसको जाकर रोको, इसने यह सुन कर अनेक उपाय किये१४परन्तु१५वेग से वहनेवाला१३ पानी नहीं रुका ॥ १४ ॥ तब वह आरुणि पानी के आडा सोकर खेत की १६आड बनगया१७पानी रुक गया ॥ १५ ॥१८शिष्य की १९ उत्तम सेवा देख कर । १६ ।

तू उठिय वत्स केदार दारि, ह्वैहैं उद्दालक नाम धारि ॥
तिहिं सिक्खदई आसिख सुनाय, आपोदधौम्य पुनि गेह आय।१७।
उपमन्न्यु प्रतिहु गुरु कहिय एह, गो चारन जावहु वन सनेह ॥
उपमन्न्यु सु सुनि गुरुबचन तुष्ट, बनधेनु चरावत देह पुष्ट ॥१८॥
पुनि कहिय ताहि इक१दिन स्वभोन, तव देह पुष्ट आधार कोन ॥
भिच्छा लहि जीवत कहिय छात्र,गुरु कहिय देहु हमहिं सु सुपात्र१९
त्यौं करत कह्यो गुरु बहुरि ताहि, अब कोन वृत्ति वपु पुष्टि आहि॥
सु वंद्यो भिच्छा दुव२बेद लाय, इक१देत तुमहिं इक१रहत खाय२०।
बुल्ल्यो गुरु दूजैं२ नहिं विधान, इक१बेरहि आनहु धर्मवान ॥
तदनंतर इक दिन देखि पीन, गुरु कहिय अबहु बपु क्यौं न खीन।२१।
उपमन्न्यु कहिय गोदुग्ध पान, करि मैं वपु धारत हे सुजान ॥
गुरु तबहु कहिय बिनु मम निदेस, बच्छन बिगार नन करहु एस।२२।
ताकौं अति पीवर तदपि जानि, बुल्ल्यो अब कहा भोजन बखानि ॥
उपमन्न्यु कह्यो मैं रहत अत्थ, तर्णक मुख फेनन चट्टि तत्थ ॥२३॥

हे १ पुत्र तू खेत की आड को २ तोड़ कर उठा है इससे तेरा नाम उद्दालक होवेगा ॥ १७ ॥ अपने दूसरे शिष्य उपमन्यु से कहा कि वन में स्नेह पूर्वक ३गौ चराने को जाओ ४ प्रसन्न होकर गाय को चराने गया सो वन में चराते चराते आप ५ ताजा होगया ॥ १८ ॥ गुरु ने एक दिन अपने ६ घर में आयेहुए को कहा कि क्या ७ खाने से तेरा शरीर मोटा होरहा है तब शिष्य ने कहा कि भिक्षा ८ लाकर अपना जीवन करता हूं जब गुरु ने कहा कि हे सुपात्र वह भिक्षा हमको देदिया कर ॥ १९ ॥ उसने भिक्षा देदेने पर भी उसको मोटा ताजा देख कर कहा कि अब किस ९ जीविका से १० शरीर ताजा ११ है जब वह शिष्य १२बोला कि दोबार भिक्षा लाता हूं जिसमें एक वेर की तुमको देता हूं और एक बेर की मैं खाता हूं तब गुरु ने कहा कि दूजी वेर भिक्षा लाना १३ विधि नहीं है १४ जिस पीछे भी एक दिन१५पुष्ट देखकर गुरु ने कहा कि अब भी तेरा१६शरीर१७दुर्बल क्यों नहीं है ॥ २१ ॥१८गौ का दूध पीकर १९मेरी विना आज्ञा गउवों का दूध पीकर वछड़ों का यह बिगाड़ मत करो ॥ २२ ॥ २१तब भी उसको२० ताजा जान कर गुरु ने कहा कि२२अन्न क्या खाता है सो कह जब उपमन्यु ने कहा कि २३ वछड़ों के मुख पर दूध के२४झाग आते हैं वह चाट कर रहता हूं ॥२३॥

ताकोहु कियो गुरुनैं निवार उपमन्यु छुधातुर अब अपार ॥
गो धेनु चरावन बिपिन तत्र, जाठर दुख खाये अर्कपत्र ॥ २४ ॥
शिवमल्ली खावत होय अंध, ले धेनु चल्यो गुरुगृह सुसंध ॥
विनु नेत्र रह्यो दिगबोध नाँहिं, मग भुल्लि पर्यो इक अंधुमाँहिं २५
ताँबिनु घर आवत धेनु तामैं, आपोदधौम्य खोजन जगाम ॥
टेर्यो बन जाय रुउअनाद, उपमन्यु कूप संगत जगाद ॥ २६ ॥
भो नाथ छुधातुर अधिक तत्त, बिनु बोध भखे मैं अर्कपत्त ॥
तिनसौं मम लोचन आहि नष्ट, मग भुल्लि कूपपरि लहत कष्ट ॥२७॥
बुल्लिय प्रसन्न गुरु सुनहु बिप्र, नयनन हित सुमरहु दस्त्र छिप्र ॥
सुमरे तब छात्र हु बैद्यराज, तिन इक अपूप दिय असन काज॥२८॥
उपमन्यु कह्यो खैहौं न याहि, बिनु गुरु निदेस ओदन अचाहि ॥
आश्विनेन कहिय पहिले अनेहँ, किन्नौं तव गुरुहू असन एह ॥२९॥
उपमन्यु तदपि मन्नी न एक, बर दस्त्रन दिन्नौं जुत बिबेक ॥
व्हैहैं तव गुरुके कृष्ण दंत, व्हैहैं तव रद कनकाभ संत ॥ ३० ॥
तू नेत्र लहहु उपमन्यु तात, इम दस्त्र गये करि उचित बात ॥

इसके लिये भी गुरु ने १ मना किया तब उपमन्यु २ भूख से पीडित हुआ और ३ गौ चराने को ४ वन में गया तहां ५ जठराग्नि के दुःख से ६ आक वृक्ष के पत्ते खाये ॥ २४ ॥ ७ आक ८ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला ९ दिशा का ज्ञान नहीं रहा १० कुए में पड़गया ॥ २५ ॥ ११ उस उपमन्यु विना गौ घर पर आई १२ वहां १३ गया १४ कुए की संगति करनेवाला १५ बोला ॥२६॥ हे स्वामी भूख से अधिक पीड़ित होगया तब विना समझे मैंने आक के पत्ते खालिये उनसे मेरे नेत्र नष्ट होगये १६ हैं ॥ २७ ॥ जब गुरु बोले कि हे ब्राह्मण नेत्रों के लिये १७ अश्विनीकुमारों (स्वर्वैद्यों) का १८ शीघ्र स्मरण करो तब उस शिष्य ने१९उन वैद्यराज (अश्विनीकुमारों) को याद किया उन्होंने एक २० चूर्ण २१ खाने के लिये दिया ॥ २८ ॥ उपमन्यु ने कहा कि गुरु की आज्ञा के विना मेरे २२ अन्न की चाहना नहीं है इस कारण से इस चूर्ण को नहीं खाऊंगा इस पर २३ अश्विनीकुमारों ने कहा कि तुम्हारे गुरु ने भी पहिले २४ समय में इसको खाया है ॥ २९ ॥२५तो भी उपमन्यु ने एक बात नहीं मानी उस समय२६अश्विनीकुमारों ने२७विचार पूर्वक वर दिया कि हे पुत्र उपमन्यु तू नेत्र ले और तेरे२८दन्त२९सोने की कान्ति जैसे और

उपमन्न्यु पाय जुग२ नेत्र तत्त, कढि कूप१हिंतु गुरुगेह पत्त॥३१॥
ह्वै गुरु प्रसन्न दिन्नी असीस, लै सिक्ख गयो निजगृह मुनीस॥
गुरुगेह रह्यो अब बेद एक१, सब बिधि करि सेवन अहँ३ अनेक॥३२॥
ताकौंहि रीझि आपोदधौम्य, विद्या पढाय दिय सिक्ख४ सौम्य॥
किन्नौं बिवाह गृह बेद आय, ताकैहु छात्र त्रय३ हुव सुभाय॥३३॥
गुरुगेह लहे दुख चिंति ताम६, सिस्यन प्रति कछुहु न कहिय काम॥
इम रहत बेद आश्रम अनूप, आये जनमेजय १ पौष्प२ भूप॥३४॥
बेदहिं करि बिन्नति तँहँ बिसेस, बँरि ताहि गये लै दुव २ नरेस॥
तब बेद अग्नि पूजन सनेह, उत्तंक छात्र रक्ख्यो स्वगेह॥३५॥
इम होत भये कति दिन अतीत१०, उत्तंक रहत गुरुगृह अभीत॥
इकदिन गुरुपत्नी११ दिय कहाय, उत्तंक मोहि ऋतुकाल आय॥३६॥
तव गुरु न गेह अरु मैं सकाम, तस्मात१२ देहु रति हे ललाम१३॥
उत्तंक दयो उत्तर बलिष्ठ, तिय बचन१४ करैं नहिँ धर्मनिष्ठ१५॥३७॥
तदनंतर१६ बेदहु आय गेह, उत्तंक लक्ख्यो निज धर्म नेह॥
गृह जाहु कह्यो मुनि दै असीस, उत्तंक कह्यो इक सुनहु ईस१७॥

॥ दोहा ॥

तेरे गुरु के दन्तकाले होजावेंगे, यह कह कर अश्विनीकुमार तो गये और उपमन्यु दोनों नेत्र पाकर१ कुए से निकल कर गुरु के घर२ पहुंचा ॥३०॥३१॥ गुरु के घर में अब वेद नामक एक शिष्य रहा जिसने भी अनेक३ दिन सेवा की॥३२॥४ अनुग्रह करके सीख दी५ शिष्य॥३३॥ वेद मुनि ने अपने गुरु के घर पर दुःख पाया था उसको याद करके ६ तहां (अपने घर पर) शिष्यों को कुछ काम नहीं कहा ॥ ३४ ॥ वेद मुनि से विनय करके अपने यज्ञ के अर्थ ७ वरणी (स्वीकार) कर गये तब वेद मुनि ८ अपने घर में होम ९ करने के लिये उत्तङ्क नामी शिष्य को रख गये ॥ ३५ ॥ १० व्यतीत ११ गुरु की स्त्री ने कहलाया कि हे उत्तंक! मेरे ऋतुकाल आया है ॥ ३६ ॥ तेरा गुरु तो घर नहीं है और मैं कामदेव सहित हूं १२ इस कारण से हे१३ सुन्दर ! मुझे रति दान दे इस पर उत्तंक ने बलवान उत्तर दिया कि जिनकी१५ धर्म में निष्ठा है वे स्त्रियों का ऐसा १४ कहना नहीं करते ॥ ३७ ॥ १६ इस पीछे उत्तंक ने कहा कि१७ हे स्वामी सुनो.

मैं तुमसौं सिक्ख्यो सकल, विद्या बिबिध बिनोद ॥
यातैं गुरु कछु दक्खिना, पावहु प्रकट प्रमोद ॥ ३९ ॥
तब गुरु अक्खियं यह तिमहि, लहि गुरुनारि निदेसं ॥
पावन कुंडल पुष्यपुर, जाय जंचेहि द्विजेस ॥ ४० ॥
लै कुंडल उत्तंक मग, आवत तच्छक चोरि ॥
गो बडवामुखं तब यहहु, लायो निठिन दोरि ॥ ४१ ॥
तच्छकको उत्तंक तब, करन महा अपकार ॥
जनमेजय नृपपँहँ गयो, बाढन सत्रं बिचार ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न ४३ जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारते पारीक्षितदेवसरमाशपनतद्भीतसोमश्रवःपुरोधीकरणतक्षशिलाजयनाऽऽपोदधौम्यछात्रत्रय ३ चर्याकथनवेदमुनिशिष्योत्तङ्कतक्षकनागवैरसमसनं चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥
आदितः षट्षष्टितमः ॥ ६६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

बहुरि कहौं बिस्तार करि, यहहि कथा उत्तंक ॥

---

१ गुरु ने कहा कि तुम्हारी गुराणी मांगे सो दो तब उत्तंक ने गुरु स्त्री की २ आज्ञा लेकर पुष्यपुर जाकर कुंडल ३ मांगे ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४ पाताल में, कठिनाई से दौड़ कर लाया ॥ ४१ ॥ इस कारण से तक्षक नाग का अपकार करने के लिये ५ सर्प यज्ञ का बिचार बढाने को उत्तंक मुनि राजा जनमेजय के पास गया ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समान है समय का आधार जिसका ऐसे सूतपुत्र (उग्रश्रवा) के महाभारत सुनाने में परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) को कुत्ती का श्राप देना, उसके डर से सोमश्रवा को पुरोहित करना, तक्षशिला को विजय करना आपोदधौम्य के तीन शिष्यों की चर्या कहना, वेद मुनि के शिष्य उत्तंक से तक्षक नाग के वैर का संक्षेपकथन का चौबीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २४ ॥ और आदि से छासठ मयूख हुए ॥ ६६ ॥

जिम आनैं[1] कुंडल जंचि रु, निजगुरु भक्त निसंक ॥ १ ॥
तच्छक जिम कद्रूतनय, बंचहि करि छल बेस ॥
कुंडल हरि पातालकौं, गो बंचक[2] भुजगेस ॥ २ ॥
अग्गैं जिम उत्तंक हुव[3] अर्बुद जन्म निदानैं[4] ॥
अैसैं यह सुनियें[5] अपर, चोरदमनैं[6] चहुवान ॥ ३ ॥

पज्झटिका

जो बेद भयो मुनि[7] ब्रह्मबंस, श्रुति[8] सांग निपुन[9] अघतिमिर हंसैं[10][11] ॥
उत्तंक नाम हुव छात्र[11] तास, बेदादि पढ्यो बानी बिलास ॥ ४ ॥
अवसर घर जावन जबहि आय, जंपिउँ[12] तब गुरु ढिग शिष्य जाय ॥
कछु लेहु दक्खिना प्रभु[13] पुनीत, अब मोहिं फुरैं[14] जिम सब अधीतैं[15] ॥ ५ ॥
तब बेद कह्यो सुनि बच्छ[16] एहु, गुरुनारि कहैं तव सोहि देहु ॥
सुनि गो गुरुपतनी निकट बिप्र, कछु लेहु दक्खिना कहिय छिप्र[17] ॥ ६ ॥
गुरुनारि कह्यो जो ध्रुव[18]हि देयँ[19], तो अम्हकेर[20] वांछित बिधेयँ[21] ॥
नृप पुष्य बहूकी[22] श्रुतिनैं[23] माँहिं, कुंडल अनर्घ[24] दुवरदिव्य आँहिं[25] ॥ ७ ॥
उत्तंक मोहि ते देहु आनि, जंपतिकै[26] अवर न इष्ट जानि ॥
चौथे४दिन कुंडल देहु लाय, हमरै द्विज भोजन है हितँाय[27] ॥ ८ ॥

---

१ उत्तंक ने जिसप्रकार कुंडल मांग कर आने ॥ १ ॥ २ ठग, सर्पों का पति ॥ २ ॥ हे चौरों को ६ दंड देनेवाले चहुवाण रामसिंह आगे जैसे उत्तंक मुनि ३ आबू पर्वत के जन्म का ४ कारण हुआ तैसे ही यह ५ दूसरा सुनो अर्थात् आबू पर्वत के होने की जो कथा पहिले लिखीगई थी वह विष्णुपुराण के मत से लिखीगई थी अब वही कथा महाभारत के मत से फिर लिखते हैं ॥ ३ ॥ ७ ब्रह्मा के वंश मे जो वेद नामक मुनि हुआ वह अंगों सहित ८ वेदो मे निपुण और ९ पाप रूपी अन्धेरे का १० सूर्य था उसके ११ शिष्य ॥ ४ ॥ जब घर जाने का समय आया तब शिष्य ने गुरु के पास जाकर १२ कहा कि हे १३ पवित्र स्वामी अब कुछ दक्षिणा लो जिससे मुझे १५ पढाहुआ १४ स्मरण (याद) होवै ॥ ५ ॥ १६ हे वत्स (पुत्र) तेरे गुरु की स्त्री कहै सो उसको दो १७ शीघ्र ॥ ६ ॥ १८ निश्चै ही १९ देना है तो २० मेरी चाहना के योग्य २१ कर्तव्य यह है कि राजा पुष्य की २२ स्त्री के २३ कानो मे २४ अमूल्य दो दिव्यकुण्डल २५ हैं ॥ ७ ॥ सो हे उत्तंक वे मुझे ला दै हम २६ स्त्री पुरुष के उन कुण्डलों से और कोई प्रिय नही है २७ हित के अर्थ ॥ ८ ॥

तिन पहिरि परूसा पंति पंति, करिहौं गहि व्यंजन भंति भंति ॥
दिन चोथे जो यहँ लाय दैं न, बलि तोहि ततो सपिहौं कुबैन ॥९॥
सुनि बचन लग्यो मग द्विज सुभाय, बिच बैल मिल्यो इक दीर्घकाय
तिंहिं पिट्ठि चढ्यो इक पिहुल देह, निरख्यो सु पुरुख बुल्ल्यो अनेह॥
गोमय या वृषको खाय लेहु, उत्तंक कह्यो नहिं उचित एहु ॥
तिहिं कहिय भख्यो तव गुरु सुजान, तत्त्वमपि बिप्र तस्मादसान।११।
गोमय सम्मूत्र सुनि भखिय बिप्र, ठाढैंहि चल्यो आचम्य छिप्र ॥
पहुँच्यो तदनंतर पौष्यपास, आसिख दै बुल्ल्यो इष्ट आस ॥ १२ ॥
अर्थी मैं तव ढिग आय भूप, गुरु हेत जँचत कुंडल अनूप ॥
बर जे श्रुति धारत तुज्झ बाल, ते मे प्रदातुमर्हसि नृपाल ॥ १३ ॥
सुनि पौष्य कह्यो हे द्विज सुभाय, जाया मम अंदर जचहु जाय ॥
सुद्धांत गयो तब द्विजहु संत, रानी न लखी सबठाँ फिरंत ॥ १४ ॥
उत्तंक भयो बिस्मित अपार, आयो नृप अंतिक गिनि लबार ॥
बुल्यो न उचित तव अन्नृत बैन, महिखी न लखी अवरोध ऐन।१५।

भांति भांति की भोजन की तैयारियां लेकर उन कुण्डलों को पहिन कर पंक्ति पंक्ति में पुरुषावणी (पुरुषगारी) करूंगा और जो चौथे दिन नहीं ला देगा तो १ फिर तुझको २ खोटे वचनों से श्राप दूंगी ॥ ९ ॥ यह वचन सुनकर वह ब्राह्मण मार्ग लगा जिसको बीच में एक ४ बडे शरीरवाला ३ बैल मिला जिसकी पीठ पर एक बडे ५ शरीरवाला पुरुष चढा जिसने उत्तंक से ६ कहा कि ७ इस समय इस ९ बैल का ८ गोबर खा ले, जब उत्तंक ने कहा कि यह उचित नहीं है तब उस पुरुष ने कहा कि तेरे श्रेष्ठ गुरु ने भी खाया है ११ इस कारण से ११ हे ब्राह्मण इसको १० तू भी खा ले ॥ ११ ॥ यह सुनके उस ब्राह्मण ने १४ मूत्र के साथ १३ गोबर को खालिया और १५ खड़े खड़े ही १६ आचमन करके १७ शीघ्र चला १८ जिस पीछे पौष्य राजा के पास जाकर बोला कि आप का १९ कल्याण २० होओ ॥ १२ ॥ हे राजा मैं २१ धन की इच्छा करनेवाला तुम्हारे पास आया हूं और गुरु के लिये २३ उपमा रहित कुण्डल २२ मांगता हूं २४ जो श्रेष्ठ कुंडल २६ तेरी स्त्री २५ कानों में धारण करती है वे हे राजा मुझे २७ दे २८ मेरी स्त्री भीतर है जिससे जाकर मांग २९ जनाने में ३१ राजा को झूठा जानकर ३० पास आया और कहा कि तुझको ३२ झूठ बोलना उचित नहीं मैंने ३३ राणी को ३४ जनाने ३५ महल में नहीं देखी

यह सुनत पौष्य कछु लव[1] बिचारि,धरनीप[2] कह्यो तिहिं सत्य धारि॥
मम रानी खलु[3] अवरोधमाँहिं,न पवित्र ह्वै सु तिहिं लखत नाँहिं॥१६॥
देख्यो बिचारि तब भूमिदेव[4], जान्यौं स्वदेह अपवित्र[5] एव ॥
बुल्ल्यो नृप जानिय मैंहु[6] अद्य, आचमन होत ठड्डै[7] अवद्य[8] ॥ १७ ॥
तस्मात[9] देह मम असुचि आँहिं[10], सुचि ह्वै[11] बं जात अवरोधमाँहिं ॥
यह भाखि पूर्व[12]अभिमुख बिधाय[13], बैठो पखारि मुख पाँनि[14] पाय ।१८।
बिनु सब्द अफेन[15] रु नंदज[16] सीत, लै तोय[17] आचमन तीन३पीत ॥
किय दोय२बेर मार्जन[18] द्विजेस, करि अल्ल[19] छिद्र करनन[20] असेस ॥१९॥
ह्वै सुचि इम अंतेउर[21] जगाम[22], देखी तब महिखी दिव्यधाम ॥
बुल्ली सु बिप्र प्रति हे प्रवीन, तुम अत्थ भलैं आगमन कीन॥२०॥
सेवा जु उचित भाखहु द्विजेस, सो करहिं मन्नि हम श्रुति[23] निदेस[24] ॥
उत्तंक कह्यो सुनि नृपति नारि,बर[25] कुंडल ए तव श्रव[26] बिहारि।२१।
मुहिं देहु जचत गुरु रमनि[27] हेत, इत दिय सुनि रानी हित उपेत[28] ॥
भूसुर[29] समुझायो बिबिध भाखि, पहुँचावहु कुंडल जतन राखि॥२२॥
परिहै जो रच्छा[30]मझ्झ चूक, हरिहै तो तच्छक[31] दंदसूक[32] ॥

१क्षणमात्र विचार कर२भूपति ने कहा३निश्चै ही जनाने में है परन्तु जो अपवित्र होता है वह उसको नहीं देख सक्ता॥१६॥तब उस४ब्राह्मण ने विचार कर देखा जब अपने शरीर को अपवित्र५ही जाना और बोला कि हे राजा मैंने भी ६इसी समय जाना कि७खड़े होकर आचमन करै वह८अधम होता है॥१७॥९इस कारण से मेरा शरीर अपवित्र१०है क्योंकि मैंने बैल का गोबर खाकर खड़ेहुए ने ही आचमन किया था११अब पवित्र होकर जनाने में जाता हूं१२पूर्वदिशा के सामने मुख १३ करके १४ हाथ पग धोकर बैठा ॥ १८ ॥ जिस पानी में शब्द नहीं होता ऐसा विना १५ झाग और १६ नदी का ठंढा १७ पानी लेकर तीन आचमन किये और उस ब्राह्मण ने दो वार१८मार्जन किया और २० कानों के छिद्रों को १९ आले (आर्द्र) किये ॥ १९ ॥ इस प्रकार पवित्र होकर २१ जनाने में २२ गया२३वेद की२४आज्ञा को मान कर२५श्रेष्ठ कुण्डल२६तेरे कानों में विहार करनेवाले॥ २० ॥ २१ ॥२७गुरु की स्त्री के अर्थ मांगता हूं२८हित के सहित२९उस ब्राह्मण को नाना प्रकार से कह कर समझाया कि यत्न रख कर इनको गुरु स्त्री के पास पहुंचाना जो३०रक्षा में चूक पड़गई है तो ३१ तक्षक नामक ३२ सर्प इनको चोर लेगा ॥ २२ ॥

उत्तंक कह्यो राखहु अनंद, मोसौं जु नाहिं लेसकत मंद ॥२३॥
इम कहि द्विज निकसत[1] अप्रमाद, जिगमिषु[2]मवनीपति[3]रपि[4] जगाद[5] ॥
मम श्राद्ध करन मन अज्ज[6] आँहिं[7],द्विज पात्र मिलत चिरकाल[8]माँहिं२४
तसमात[9] करहु भोजन कृपाल, द्विज कहिय सद्य[10] आनहु नृपाल ॥
यह सुनत भूप ओदन[11] मँगाय, उत्तंक अर्थ दिय मोद पाय ॥ २५॥
वह देखि अन्न सीत रु सकेस[12], भूपहिं ससाप[13] प्रकुपित द्विजेस ॥
दिय असन[14] असुचि[15] तुम किय कुचाल,तसमात अंध होवहु नृपाल२६
सुनि साप नृपति बुल्ल्यो सछोह[16], मैं सुद्ध अन्न दिय टारिमोह[17] ॥
कहि असुचि ताहि मुहिं देत साप, तसमात होहु अनपत्य[18] आप२७
उत्तंक कह्यो नृप लखहु अन्न, नहि असुचि होयतो मैं प्रसन्न ॥
यह सुनत अन्न देख्यो नरेस,जान्यौं वह सीतल अरु सकेस ॥२८॥
तब कहिय छमाँ करिये निहारि, काही[19] अयाहि कचमुक्त[20] नारि ॥
होऊ न अंध तिम कहहु बैन, द्विज कहिय व्है[21] रु व्है है सनैन[22] ॥२९॥
मम साप हरहु नृप तुमहु व्यर्थ, नृप कहिय मैं न अैचन समर्थ ॥
नवनीत[23] हृदय बिप्रन बखानि, छुरधार[24] तीव्र[25] छत्रियन जानि ॥३०॥
द्विज कहिय अन्न तुम लखिय गाव, निकस्यो सकेस सीतल सुभाय

१सावधान होकर २ जाने की इच्छावाले ब्राह्मण (उत्तङ्क) से३भूपति (पुष्य) ने ४ निश्चै करके ५ कहा कि ६ आज मेरी इच्छा श्राद्ध करने की ७ है और पात्र ब्राह्मण ८ बहुत समय में मिलता है ॥ २४ ॥ ९ इसकारण से हे कृपालु भोजन कर जाओ१०ब्राह्मण ने कहा कि हे राजा१०जल्दी लाओ ११ अन्न ॥ २५ ॥ उस अन्न को ठंढा और १२ केस सहित देख कर ब्राह्मण ने क्रोध में होकर राजा को १३ शाप दिया कि हे राजा तुमने मुझको १४ अपवित्र १५ अन्न देकर कुचाल की है इस कारण से अन्धा होजा ॥ २६ ॥ शाप को सुनकर राजा ने भी १६ क्रोध के साथ कहा कि मैंने १७ सावधानी से शुद्ध अन्न दिया जिसको अपवित्र कह कर मुझे शाप देते हो इससे तुम भी १८ विना सन्तानवाले होओ १९ कोई स्त्री २० खुले केसों से चली आई इसकारण से अन्ध मत होओ ऐसा वचन कहा. ब्राह्मण ने कहा कि पहिले अन्धा होकर२१फिर २२ नेत्रों सहित होजावेगा ॥२९॥२३मक्खन के समान कोमल हृदयवाले२४पाछणा की धार के समान२५तीखा हृदय क्षत्रियों का जानो ॥ ३० ॥

मेरेहु व्है न तसमात साप, इम कहि लै कुंडल चलिय आप ॥३१॥
मगमाँहिँ लख्यो उत्तंक विप्र, छपनंक इक१ आवत नग्न छिप्र ॥
वह तच्छक करि अहिवेस लुप्त, छिन परत दिट्ठि छिन होत गुप्त ३२
भो द्विजहिँ सौचें संकाज धर्म, कुंडल धरि गो तब करन कर्म ॥
सु जती यह अवसर इष्ट पाय, कुंडलन चल्यो लै दुर्त पलाय ॥३३॥
उत्तंक लख्यो भजि चोर जात, करि तोयकाजँ किय पूत गात ॥
कीनों गुरु देवन नमसकार, दारघो तदनंतर द्विज उदार ॥३४॥
गाढैं गहि लीनों पहुँचि चोर, वह वेस छोरि अहि भो जु घोर ॥
ततकाल विबर हुव भूमिदेस, तेनाहिरधोभुवनं विवेसं ॥ ३५ ॥
उत्तंक भयो अंतर अचैन, सुमिरे सब रानी कथित बैन ॥
पुनि चिंतिय मैं नरदेहवान, बिल तुच्छ यहै किम व्है प्रयान ॥३६॥
लै दंड खनन लगि भूमि लोक ज्यौं भू खुदो नँ त्यौं हुव ससोक॥
उत्तंक चित्त अति कष्ट मानि, वह बर्त लई पुरहूत जानि ॥ ३७ ॥
कुलिसहिँ तब अक्खिय निर्जरेस, उत्तंक दंड बिच करि प्रवेस ॥

ब्राह्मण ने कहा कि हे राजा तुमने अन्न को देख लिया वह ठंढा और केस सहित निकला १ इस कारण से मेरे भी श्राप नहीं लगैगा ॥३१॥ उस उत्तंक ब्राह्मण ने देखा कि मार्ग में एक नंगा २ चपणक (संन्यासी) ३ शीघ्र आता है वह तक्षक ४ सर्प अपने वेस को छिपा कर क्षण में दीखता और क्षण में छिपजाता है ॥ ३२ ॥ उस समय उत्तंक को ५ दिशा (पाखाने) जाने की आवश्यकता हुई तब कुंडलों को रख कर दिशा गया जब ६ वह संन्यासी अपने ७ अनुकूल समय पाकर कुंडलों को लेकर ८ शीघ्र ९ भागा ॥ ३३ ॥ १० उजलाई करके (आवदस्त लेकर) ११ शरीर को पवित्र करके १२ जिस पीछे ।३४। संन्यासी का वेस छोड कर भयंकर १३ सर्प होगया और भूमि में १४ तुरन्त १५ बिल (छिद्र) हुआ १६ उसमें होकर वह सर्प १७ पाताल में १८ प्रवेश करगया ॥ ३५ ॥ उत्तंक के चित्त में दुःख हुआ और राणी के १९ कहे हुए वचन याद आये, फिर सोचा कि मैं तो २० मनुष्य देह को धारण करनेवाला हूं और यह छिद्र २१ छोटा सा है जिसमें २२ जाना कैसे होसकै ॥३६॥ इसकारण से दंडा लेकर भूमि को २३ खोदने लगा परन्तु ज्यों भूमि २४ नहीं खुदी त्यों उत्तंक शोक सहित हुआ उत्तंक ने अपने चित्त मे जब बहुत कष्ट माना वह २५ वार्ता २६ इंद्र ने जानली ॥३७॥ तब २६ इन्द्र ने २७ वज्र से २८ कहा कि

सुनि संब सद्य करि दंड वास, भू भेदि कियो बिल सावकास ॥ ३८ ॥
तिहिं पैठि बिप्र गो नागलोक, बर बिबिध जत्थ बलभीन थोक ॥
प्राँसाद हर्म्य निर्यूह केक, इत्यादि लखे आलय अनेक ॥ ३९ ॥
उच्चावचं क्रीड़ाथल्ल अपार, तत्रोत्तंकं स्तवनं चकार ॥
जिनमैं ऐरावत करत राज, मैं नमत तिन्हैं निजसिद्धि काज ॥४०॥
पवनेरित संपाँजुत छरंत, जीमूत जेम जे अति लसंत ॥
जिनके सु रूप बहु रूप जानि, कल्मासक कुंडल जे बखानि ॥४१॥
सबिता जिम ऐरावत प्रभूत, सब नाकपृष्ठ सोभित अभूत ॥
अरु नागनके आलय बिसेस, गंगातट उत्तर हैं सुबेस ॥ ४२ ॥
तत्थहु रहंत पन्नग महान, तिनकीहु करौं नुति नम्रमान ॥
ऐरावत बिनु रविकिरन माँहिं, को जायसकत यह ख्यात आँहिं ॥४३॥
सतअसियअष्टबिंसतिहजार२८०००, इतनैं अहिरा विहयगुनउदार ॥
धृतराष्ट्र करत जिन्ह दीप्यमान, प्रणमामि तिनहु मैं पन्नगान ॥४४॥
जे चलत निकट याके भुजंग, अरु दूर रहत केते अभंग ॥

उत्तंक जिस दण्ड से भूमि खोद रहा है उसमें प्रवेश कर. यह सुनते ही १वज्र ने २शीघ्र दंड में वास करके ३भूमि को फोड़ कर बिल को ४अवकाश सहित(चौड़ा)कर दिया उसमें घुसकर उत्तंक ब्राह्मण पाताल में गया जहां ५श्रेष्ठ और नानाप्रकार के ६ बळींडों से छायेहुए झोंपडे ७महल ८पक्के मकान ९कई द्वार (दरवाजे) अथवा वलभी आदि सब गृह विशेष जानो. इनको आदि लेकर अनेक १०मकान देखे ॥३९॥ ११ऊँचे नीचे क्रीडा करने के अनेक स्थल हैं तहां जाकर १२उत्तंक १३स्तुति १४की १५ऐरावत जाति के सर्प ॥४०॥ १६पवन से प्रेरे हुए १७बिजुली सहित १८टपकते हुए १९मेघ के समान शोभायमान हैं जिनके अनेक प्रकार के स्वरूप. और २०चित्र विचित्र छिड़कें (धब्बे)जिनके शरीरों पर हैं वे ॥४१॥ ऐरावत से २१पैदा हुए २२सूर्य के समान तेजवाले जो स्वर्ग में शोभायमान २३हुए और गंगा के उत्तर किनारे जिनके विशेष घर हैं ॥४२॥ वहां भी बडे सर्प रहते हैं उनकी भी नम्रता पूर्वक २४स्तुति करता हूं,ऐरावत सर्पों के बिना २५सूर्य की किरणों में कौन जासक्ता है यह २६प्रसिद्ध २७है॥४३॥ अठाईस हजार आठ सौ २८सर्प सूर्य के घोडों का २९रस्सी बने हुए हैं जिनको ३० धृतराष्ट्र नामक सर्प प्रकाशमान करता है उन ३२ सर्पों को मैं ३१नमस्कार करता हूं ॥ ४४ ॥ ॥ जो सर्प धृतराष्ट्र के पास चलते हैं और कितने

ऐरावतके जे ज्येष्ठभ्रात, तिन सबन नमत मम करहु त्रात ॥ ४५ ॥
कुरुखेत्रमाँहिं जाको निवास, भो खांडवहूमैं प्रथम बास ॥
वह नागराज तच्छक सुनाम, मैं ताहि नमत कुंडल सकाम ॥४६॥
काकोदर तच्छक१अश्वसेन२, ए दुवरहि नित्य सहचर सुखेन ॥
कुरुखेत भिच्छुमति सरित तीर, जे करत भये सहँवास धीर ॥४७॥
तच्छक जघन्न्य भव नागराज, श्रुतसेन नाम मम करहु काज ॥
इत्यादि बहुत दर्वीकरेस, बंदत मैं तिनकौं नत बिसेस ॥ ४८ ॥
उत्तंक करी इम नुति अदर्प, कुंडल तथापि ल्याये न सर्प ॥
उत्तंक लख्यो इक चरित तत्र, द्वैरनारि बुनत पट व्है इकत्र॥४९॥
सित असित तंतु तानाँसु कीन, हुव चकित लखि सु कौतुक नवीन॥
इक१चक्र लख्यो पुनि द्वादसा१२र, देखे तिंहिं फेरत खट६कुमार॥५०॥
लखि एक१पुरुख अरु बीति एक१, सबकौं किय बंदन जुत बिबेक॥
बुल्ल्यो सु पुरुष द्विज प्रनर्त जानि, उत्तंक प्रयोजन कहहु जानि॥५१॥
आकर्ण्य सइति तं पुरुषमाह, सब सर्प होहु मम बस सदाह ॥

ही दूर चलते हैं तिनको और ऐरावत के बडे भाई इन सब को नमस्कार करता हूं सो मेरी १ रक्षा करो ॥ ४५ ॥ कुरुक्षेत्र मे जिसका निवास है और २खांडव वन में जिसका पहिले वास हुआ था उस सर्पों के राजा तक्षक को कुंडल लेने की कामना से नमस्कार करता हूं ॥ ४६ ॥ तक्षक ३ सर्प और अश्वसेन सर्प ये दोनों सदा५सुख पूर्वक४साथ रहनेवाले हैं और जिन्होंने कुरुक्षेत्र मे ६ भिक्षुमति नदी के तीर पर७साथ होकर वास किया था ।४७। तक्षक से ८ अन्त में होनेवाला श्रुतसेन नामक सर्पराज मेरा कार्य करो, इनको आदि लेकर बहुत ९ सर्पों को विशेष नम्रता के साथ नमस्कार करता हूं ॥ ४८ ॥ उत्तंक ने इसप्रकार ११ घमंड रहित होकर १० स्तुति करी १२ तो भी सर्प कुंडल नहीं लाये वहां पर उत्तंक ने एक चरित्र देखा कि दो स्त्रियां इकट्ठी होकर एक वस्त्र बुनती हैं ॥ ४९ ॥ जिनमें १३ स्वेत और १४ काले रंग के तन्तुओं से ताना किया है, इस नवीन तमाशे को देख कर उत्तंक चकित हुआ, फिर एक चक्र (पहिया) देखा जिसके१५बारह अरे लगेहुए हैं तिसको छः बालक फेर रहे हैं ॥ ५० ॥ फिर एक पुरुष और एक १६ घोड़ा देखा जिन सबको उत्तंक ने नमस्कार किया १७ वह पुरुष उत्तंक को विशेष १८ नम्रतावाला जान कर बोला कि हे उत्तंक तेरा प्रयोजन होवे सो कह ॥ ५१ ॥ १९ यह सुन कर २० वह ब्राह्मण २१ उस पुरुष से बोला कि सब सर्प मेरे

तब पुरुष कह्यो यह आहि अस्व, तदपानमार्गमाशुहि धमस्व।५२।
सुनि बिप्र धमिय घोटक अपान, तसमात कढ्यो सुचि धूमवान॥
तिहिं सन संतप्त हुव नागलोक, संभ्रांत भयो तच्छक ससोक।५३।
लै कुंडल दिय उत्तंक हेत, उत्तंक बिचारिय गमन चेत॥
यह अवधिदिन रु गुरुगेह दूर, किम होय अज्ज जावन जरूर।५४।
तब पुरुष कह्यो द्विजप्रति सुबैंन, इहिं हय चढि जैहैं अबहि ऐंन॥
उत्तंक सुनत चढि हय ललाम, जवनो गुरूदवासितं अगाम॥ ५५॥
कुंडल दये ति गुरुनारि अर्थ, तासौं सुभ आसिख लै समर्थ॥
गुरु ढिग हु आय किय नमसकार, गुरु कहिय चिरागत क्यौं उदार।५६।
उत्तंक कह्यो हुव बिघ्न जाल, कुंडल हरि तच्छक गो पयाल॥
हरि छात्र गयो तब नागभोन, मैं तत्थ लखे ते कहहु कोन॥५७॥
दुव२नारि बुनत देखी निचोल, तानि तंतु तंत्र परि असितधोल॥
इक१चक्र लख्यो मैं द्वादसार, परिबर्तक ताके खट६कुमार।५८।
इक१पुरुख लख्यो इक बीति तत्थ, हे कोन सबन कहिये समत्थ॥
जावतहु लख्यो मैं हे अयेह, इक१पुरुष चढ्यो वृषं दीर्घ देह॥५९॥
बुल्ल्यो वह मोप्रति हे सुजान, वृषजातमूत्रगोमयमशान॥
खाये जे तव गुरु पूर्वकाल, यह सुनत मैंहु खाये कृपाल॥६०॥

वश में होजावें तव उस पुरुष ने कहा कि यह घोड़ा १ है जिसकी २ गुदा में ३ शीघ्र ४ फूंक मार ॥५२॥ यह सुनकर ब्राह्मण ने ५ घोड़े ६ की गुदा में फूंक मारी ७ जिसमें से धूम सहित ८ अग्नि निकला ९ जिससे नाग लोक १० तप गया इस से ११ उद्विग्न तत्तक १२ शोक सहित होगया १३ जाने की अवधि का यही दिन है १४ आज ही तव उस १५ पुरुष ने ब्राह्मण से श्रेष्ठ वचन कहा कि इस घोड़े पर चढ कर अभी १६ घर जावेगा १७ सुन्दर १८ वेग से गुरु के १९ घर में २० गया हे उदार तू २१ देरी से क्यों आया. २२ आपका शिष्य हठकरके नागलोक में गया वहां पर मैंने देखे वे कौन थे सो कहो २३ वस्त्र २४ काला २५ स्वेत २६ बारह अरोंवाला २७ उसके फेरनेवाले छः बालक तहां पर एक पुरुष और एक २८ घोड़ा देखा सो वे कौन थे और हे २९ श्रेष्ठ बुद्धिवाले एक पुरुष बडे शरीरवाले ३० बैल पर चढा था उसने मुझसे कहा कि हे सुजान हम ३१ बैल से पैदाहुआ मूत्र और गोबर ३२ खा, तेरे गुरु ने भी पहिले समय में खाया था.

को कौन वहै कहिये महंत, तब बेद कह्यो सुनि सकल संत ॥
पाताल लखी तैं दोय२नारि, धाता१रु विधाता२ते बिचारि ॥६१॥
अरु तंतु लखे असिताऽवदात, रजनी१रु दिवस२ते गिनहु ख्यात ॥
अरु चक्र कह्यो तैं द्वादसार, वह अब्दचक्र जानहु उदार ॥६२॥
प्रेरित तिहिं देखे खट६कुमार, खट६ऋतु तिन्ह जानहु धर्मधार ॥
जे पुरुख लख्यो तैं सर्पथान, पर्ज्जन्य गिनहु वह गुननिधान ॥६३॥
वह तुरग बन्हिं जानहु प्रसस्त, अपरहुँ उदंत अब सुनि समस्त ॥
जो वृषभ मिल्यो मग विच द्विजेस, ऐरावत वह दंतावलेस ॥६४॥
जो पुरुप लख्यो आरूढ ताहि, उत्तंक जानि पुरुहूत वाहि ॥
लीनों तैं गोमय तास खाय, पीयूख जानि वह मोदपाय ॥ ६५ ॥
तासौंहि बच्यो अहिलोकमाँहिं, मघवा वह मेरो मित्र आँहिं ॥
कीनौं अति सेवन तैं सुभाय अब जाहु वच्छ अपनैं निकाय॥६६॥
इम कहि असीस गुरु बेद देत, उत्तंक चल्यो कुरुपति निकेत ॥
छर्म नाग तच्छकहिं करन छार, अति कोप गह्यो द्विज हे उदार ॥६७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

वे कौन कौन थे सो हे कृपाल कहिये, तब वेद नामक मुनि ने कहा कि हे संत सब सुनो, पाताल में तुमने दो स्त्रियें देखीं उनको धाता और विधाता जानो और काले और स्वेत ततु देखे तिनको रात्रि और दिन मानोऔर बारह अरोंवाला जो पहिया तुमने देखा वह १ वर्ष का चक्र जानो और उस चक्र को चलाते छःबालक देखे उनको हे धर्म को धारण करनेवाले उत्तंक छहों ऋतु जानो और जो नागलोक में तुमने पुरुष देखा उसको गुणों का घर२इन्द्र जानो और जो घोड़ा तुमने देखा उसको४प्रशंसायोग्य ३ अग्नि जानो ५ और६वृत्तांत भी अब सब सुनो मार्ग में जो७बैल मिला था वह ८ हाथियो का पति ऐरावत था और उस पर ९ चढाहुआ पुरुष देखा उसको हे उत्तङ्क १० इन्द्र जानो और उस बैल का तैंने ११ गोबर खाया उसको १२ अमृत जानो उसी अमृत से तू नागलोक में बचगया, वह १३ इन्द्र मेरा मित्र १४ है १५ हे पुत्र अब अपने १६ घर को जा इसप्रकार कह कर वेद मुनि के आशीर्वाद देते ही उत्तंक कौरवों के पति (जनमेजय) के १७ स्थान पर चला, तक्षक के १८ अपराध से सर्पों को भस्म करने के लिये हे उदार रामसिंह उस ब्राह्मण (उत्तंक) ने अत्यंत कोप ग्रहण किया

वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौति
श्रावितमहाभरते वेदमुनिछात्रोत्तङ्कपौष्यनृपपत्नीकुण्डलमार्गणतत्त
क्षकहरणजितनागलोकनीतकुण्डलोत्तङ्कगुरुपत्नीप्रसन्नीकरण-वि-
चारिततत्तकदाहजनमेजयपुरगमनं पञ्चविंशो२५मयूखः॥२५॥

आदितः सप्तषष्टितमः ॥ ६७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

रचि तच्छक सिर उत्तंक रीस, आयो जहँ जनमेजय अधीस ॥
उत तच्छसिला नृप जित्ति आय, ससचिव जय उच्छव किय सुभाय
यह अवसर लहि उत्तंक विप्र, पारिच्छित परिखद प्रबिसि छिप्र॥
दै नृपहिं उचित आसिख द्विजेस, बुल्ल्यो सु बचन रचना बिसेस।२।
नहिं करत भूप करतव्य काज, बालक जिम औरहि करत आज॥
यह सुनत पुज्जि बिप्रहिं नृपाल, बुल्यो मुनि मैं किम बुद्धिबाल।३।
जुतधर्म प्रजापालन तजौं न, करतव्य कौंन मैं करत हौं न ॥
कहिये जु होय भवदीय काज, करिहौं तथापि दुष्कर दराज।४।
उत्तंक सु सुनि अक्खिय धराप, अपनौंहि निवेरहु काज आप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन (एक समय में होनेवाले) सूतपुत्र उग्रश्रवा के महाभारत सुनाने में वेद मुनि के शिष्य उत्तंक का पौष्य राजा की स्त्री से कुण्डल मांगना, उन कुण्डलों को तच्चक का हरना, नागलोक को जीत कर कुण्डल प्राप्त करके उत्तंक का गुरु स्त्री को प्रसन्न करना, तच्चक को भस्म करना विचार कर उत्तंक का जनमेजय के पुर में जाने का पच्चीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२५॥ और आदि से सड़सठ मयूख हुए ॥६७॥

तच्छक सर्प पर क्रोध करके उत्तंक राजा जनमेजय के पास आया उधर राजा भी १ तक्षशिला नामक देश को जीतकर आया और इस विजय का अपने २ कामदारों सहित उत्सव किया ॥१॥ ३ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय की ४ सभा में ५ शीघ्र प्रवेश किया हे राजा राजाओं के ६ करने योग्य कार्य तो नहीं करता और बालक के समान और ही कार्य करता है ७ हे मुनि मैं बालक बुद्धिवाला कैसे हूं ८ आपका कार्य होवे सो कहो १० बड़ा ११ दुष्कर (कठिनाई से करने योग्य) होवेगा ९ तोभी करूंगा १२ हे भूपति आप अपना ही कार्य

तव जनक[1] हन्यौं तच्छक[2] अहीस, मख रचहु ताहि होमन महीस
मोर्‍यो द्विज[3] कास्यप मगहि बीच, नृप आय डस्यो जिहिं नाग नीच॥
भो डसत परिच्छित भस्म भूप, रँय[4] बज्रपात[5] हत बिटपिरूप[6] ॥६॥
जाकै अति दर्प[7] सु ज्वलित जाग, निहचैहि हुष्ट हवनीय[8] नाग ॥
मेरोहु कियो अपराध मंद[9], कुंडल हरि लैगो कलुख[10] कंद[11] ॥ ७ ॥
कुरुराज सुनि सु तच्छक कुचाल, कुप्यो जनु भैरव प्रलयकाल॥
मंत्री निज पुच्छिय छिप्र छोहिं[12], मम जनक नास किम कहहु मोहि

दोहा

सौनक बीचहि प्रश्न किय, बदि भृगुकुल बिस्तार ॥
सुनत सूत[13] सानंद ह्वै, आरंभिय उच्चार ॥ ९ ॥
बरुन जग्यके बन्हिमैं[14], ब्रह्मासौं भृगु१ जात[15] ॥
च्यवन२ भयो ताके तनय[16], प्रमति३ तास सुत ख्यात[17] ॥१०॥
भयो घृताची उदरतैं, प्रमति पुत्र रुरु४ नाम ॥
सुनक५ भयो रुरुकै तनय, जिहिं कुल सौनक जाम[18] ॥११॥
इक द्विजकै पुत्री भई, नाम पुलोमा जास ॥

निवेड़ो, तुम्हारे १ पिता को २ सर्पों के राजा तक्षक ने मारा है उसको होमने को हे राजा यज्ञ रचो जिस नीच सर्प ने ३ काश्यप नामी ब्राह्मण को जो परीक्षित को मंत्रबल से जिलाने को आता था धन देकर बीच से ही पीछा मोड़ दिया और राजा को आकर डसा उसके डसते ही राजा परीक्षित भस्म होगया जैसे वज्र के ५ पड़ने के ४ वेग से ६ वृक्ष भस्म होजाता है ॥ ६ ॥ जिसके बहुत ७ घमंड है वह सर्प निश्चै ही होम की अग्नि में ८ होमने योग्य है, उस ९ मूर्ख ने मेरा भी अपराध किया है कि वह १० पापों का ११ समूह कुंडल हरकर ले गया ॥ ७ ॥ १२ क्रोध करके इस कथा के बीच मे ही शौनक मुनि ने सूत पौराणिक से प्रश्न किया कि भृगुवंश का विस्तार से वर्णन करो १३ सूत पौराणिक ने प्रसन्न होकर कहना प्रारम्भ किया ॥९॥ वरुण यज्ञ की १४ अग्नि से १५ पैदा हुए १६ पुत्र च्यवन के प्रमति नामक १७ प्रसिद्ध पुत्र हुआ घृताची नामक अप्सरा के पेट से प्रमति का पुत्र रुरु हुआ, रुरु के शुनक नामी पुत्र हुआ उस शुनक के कुल में शौनक १८ जनमे ॥११॥ एक ब्राह्मण के पुत्री हुई जिसका नाम पुलोमा रक्खा

जाहि बालपनमैं जनक, दयो हसी करि त्रास ॥१२॥
अरे पुलोमा तू असुर, मम तनया लैजाहु ॥
तदनु बढत बय ताहिकौ, बिरच्यो भृगुसौं ब्याहु ॥१३॥

पज्झटिका॥

भृगु सदन एकदा चौर भाय, सुहि असुर पुलोमा नाम आय ॥
आतिथ्य कियउ भृगुनारि नत्त, दियपुज्जि असन फल मूल पत्त॥१४॥
तिहिँ लखत चित्त कंदर्प छाय, आसुर सुहि चोरन किय उपाय॥
पूछ्यो कृसानु वह नय उचारि, भृगुकी वा मेरी कहहु नारि॥१५॥
पहिलैं मुहिँ दीनी जनक जाहि, बलि सठ दई सु भृगुकौं बिबाहि
देवनको आनन तू कहात, बुल्लहु कृसानु ऋत उचितबात ॥१६॥
सुनि बचन अग्नि सोच्यो दुरओर, इक होत अनृत इत साप घोर॥
इम चिर बिचार सुचि ओजऐन, बुल्ल्यो करि निश्चित पुब्ब बैन॥
तैं प्रथम बरी बिधिमंत्रहीन, पीछैं भृगु बिधिजुत परनलीन ॥
यह सुनत गयो हरि असुर ताहि, व्है त्रस्त करयो तिय पाहि पाहि॥

उसको उसके पिता ने बालपन में हसी से१डराया कि ॥ १२ ॥ अरे पुलोमा राक्षस तू मेरी पुत्री को लेजा, यह बात पुलोमा नामा राक्षस सुनता था २ जिस पीछे ऊमर बढने पर उस पुलोमा नामक कन्या का भृगु से विवाह किया ॥ १३ ॥ ४ एक समय भृगु के ३ घर में चौर की ५ भांति वही पुलोमा नामक असुर आया जिसका भृगु की स्त्री ने आतिथ्य किया और पूजन करके भोजन के लिये फल मूल और पत्ते दिये ॥ १४ ॥ उस स्त्री को देखते ही ६ कामदेव छागया और असुर ने उस स्त्री को चोरने का उपाय किया और ७ अग्नि से पूछा कि नीति से कहो कि यह स्त्री भृगु की है या मेरी ॥ १५ ॥ इस के८पिता ने पहिले मुझे दी थी ९ फिर उस मूर्खने भृगु को विवाह दी, हे अग्नि तू देवताओं का १० मुख कहलाता है सो ११ सत्यवार्ता होवे वह कहो ॥ १६ ॥ यह वचन सुन कर अग्नि ने सोचा कि उधर तो १२ झूठ बोलने का पाप और इधर आप का भय है इस प्रकार १३ बहुत देर तक सोच कर प्रताप के घर १४ अग्नि ने पहिले का वचन निश्चय करके कहा ॥ १७ ॥ तैंने विना रीति और विना मंत्रों के पहिले वरी है और पीछे भृगु ने विधि सहित परणी है, यह सुनते ही उस स्त्री को असुर हर कर लेगया तब स्त्री ने डर कर १५ रक्षा करो रक्षा करो यह

हो। गर्भ तास सो तहँ सुधाम[1],च्युत होय परयो तिँहिँ च्यवन२नाम॥
भो भस्म पुलोमा तेज तास, लै बाल चली वह निज निवास[2] ।१९।
संत्रस्त[3] जानि इम स्वसुत[4] नारि, विस्वस्त[5] करी ब्रह्मा पधारि ॥
जो परिय पुलोमा नेत्र तोय[6], ह्रदिनी[7] बाहे निकासिय तास होय ।२०।
विधि[8] तिँहिँ बधूसरा नाम दीन, इम च्यवन२जन्म जानहु प्रबीन॥
निजगेह गई जब भृगु कलत्र[9], कोपित मुनि पूछी तमकि[10] तत्र ॥२१॥
रक्खस[11]की कोनैं कहिय तोहि, मोतैं न डरत को कहहु मोहि ॥
सुनि भीतँ[12] पुलोमा कहिय हेतु[13], मैं तोहि बताई धूमकेतु[14] ॥ २२ ॥
सुनि भृगु प्रकुप्पि[15] तिँहिँ साप दीन, सबभखहु[16] होहु पावक[17] मलीन।
सुचि[18] कहिय भृगुहि सुनि घोर साप, अपराधबिनाँ किय प्रसभ[19] आप॥
जे संतत[20] धर्म संगत रहंत, ते सक्खि[21] नाँहि मिथ्या कहंत ॥
भाखत अलीक[22] जे सक्खि काल, ते रहत पापपीडित बिहाल।२४।
भावी[23] पुनि सात७रु भूत[24] सात७, इतनैं कुलपुरुखन करत घात ॥
तुहिँ दैन साप मैंहू समर्थ, पै पूज्य बिप्र यह बेद अर्थ॥२५॥
मैं बिरचि जोगबल बहुत देह, सबमाँहिँ रहत भृगु जानि एह ॥

कहा ॥ १८ ॥ उसके गर्भ था सो उसी स्थान पर १ गलित होकर पड़ गया इसी से उसका नाम च्यवन हुआ उसके तेज से पुलोमा नामक असुर भस्म होगया, वह स्त्री उस बालक को लेकर अपने २ घर गई ॥ १९ ॥ ४ अपने पुत्र की स्त्री को ३डरी हुई जान कर ब्रह्मा ने आकर५विश्वासी, उस पुलोमा स्त्री के नेत्रों से ६ पानी पड़ा उसकी ७ नदी वह निकली ॥२०॥ उस नदी का८ब्रह्मा ने बधूसरा नाम दिया, इसप्रकार हे प्रवीण (शौनक) च्यवन का जन्म जानो. भृगु की ९ स्त्री जब अपने घर में गई तब क्रोध किये हुए मुनि ने १० ताण कर (विशेष क्रोध से) पूछा ॥ २१ ॥ ११ राक्षस की १२ डर से १३ कारण १४ अग्नि ने मुझको राक्षस की पहिले बरी हुई बताई ॥ २२ ॥ १५ विशेष कोप करके अग्नि को श्राप दिया कि हे१७अग्नि तुम१६सर्वभक्ष होकर मलीन होओ १८ अग्नि ने घोर श्राप सुन कर भृगु से कहा कि आपने विना ही अपराध १९ हठ किया है ॥ २३ ॥ जो २० निरंतर धर्म के साथी रहते हैं वे २१ साक्षी में झूठ नहीं कहते जो साक्षी के समय २२ झूठ बोलते हैं वे पाप से पीड़ित होकर बिहाल रहते हैं ॥ २४ ॥ और सात पीढी २४पहिले और सात२३पीढी पिछले कुल पुरुषों की घात करते हैं ॥२५॥

मोमाँहिँ बेद बिधि[1] करत होम, तब तृप्त होत सुर१पितर२तोम[2] ॥२६॥
सुख लहत अमा[3]३०दिन पितर तत्थ, पुन्निम१५दिन मोदत सुर[4] समत्थ
सर्व[5]दिन ह्वैहौं किम द्विजेस, यह अक्खि[6] बन्हि समिट्यो असेस[7] ।२७।
हुव अग्निहोत्र१मख२होम३खीन, ॐकार१वषट्२स्वाहा३विहीन ॥
बिन बन्हि प्रजा बढि प्रचुर[8] पीर, अनलानन[9] सुर१मुनि हुव अधीर।
थपि मंत्र गये सुर द्रुहिन[10] थान, नमि कहिय ज्वलन[11] नासन निदान[12]॥
बिधि[13] अक्खिय तब पावक[14] बुलाय, तो बिनु त्रिलोक ह्वै नष्ट जाय॥
तू सर्बलोक गति बन्हि देव, सबभक्ष ह्वै न सब देह एव ॥
जे अर्चि[15] रहत तेरे अपान[16], ते सर्व अदन[17] करिहै सुजान ॥३०॥
द्रव्यादि रूप तब हेति[18] जोहि, तदितर[19] नहिं खैहैं असुचि सोहि ॥
ज्यों होत पूत[20] लहि अंसु[21] मित्र[22], तब दग्धहु[23] त्यों ह्वैहै पवित्र॥३१॥
मुनि साप सत्य करि सानुराग[24], लहिहै ऽब[25] तूहु होमिति विभाग ॥

योगबल से बहुत देह रच कर मैं सब में रहता हूं वेद की १ विधि से मुझ में होम करते हैं तब देवता और पितरों के समूह २ तृप्त होते हैं ॥ २६ ॥ ३ अमावास्या के दिन होम होने से पितर सुख पाते हैं और पूनम के दिन होम होने से बलवान् ४ देवता प्रसन्न होते हैं सो हे ब्राह्मणों के ईश मैं ५ सर्वभक्षी कैसे होऊंगा यह ६ कहकर सम्पूर्ण ७ अग्नि इकट्ठा होगया ॥२७॥ ॐकार, वषट् और स्वाहा इन शब्दों के विना अग्निहोत्र (प्रभात और सन्ध्या के होम करने को अग्निहोत्र कहते हैं यह) और होम (पांचयज्ञों में दैव यज्ञ का नाम होम है) क्षीण होगये अग्निहोत्र में ॐकार, यज्ञ में वषट् कार और होम में स्वाहा, इन मंत्रों से आहुति दीजाती है और अग्नि के विना प्रजा में ८ अत्यन्त पीड़ा बढ गई और ९ अग्नि ही है मुख जिनका ऐसे देवता और मुनि अधीर होगये ॥ २८ ॥ सलाह करके देवता१०ब्रह्मा के स्थान पर गये और नमस्कार करके ११ अग्नि के नाश होने का१२कारण कहा तब १३ ब्रह्मा ने१४अग्नि को बुलाकर कहा कि तेरे विना तीनों लोकों का नाश होजावेगा ॥ २९ ॥ हे अग्नि देव तू सब लोकों का मुक्ति देनेवाला तथा आश्रय है और सब शरीरों में गमन करनेवाला है इस कारण से सर्वभक्षी नहीं होसक्ता परन्तु जो १५ ज्वाला [झाल] तेरे१६गुदा में रहती हैं वे१७ सर्वभक्षण करेंगी ॥३०॥ तेरी१८ज्वाला जो द्रव्यादि रूप है उसके१९ विना अशुचि पदार्थ नहीं खावेगा, जैसे२२सूर्य को लेकर२१किरणें२०पवित्र होती हैं तैसे ही तुझसे२३भुनाहुआ पवित्र होवेगा ॥ ३१ ॥ २४ प्रीति सहित२५अब

कहि एवमस्तु[1] जब आश्रयास[2], बिधि हुकम मन्नि गो निजनिवास॥
मख१ अग्निहोत्र२ प्रकटे बहोरि, सानंद भये सब त्रास छोरि ॥ ३२ ॥
पौलोम[3] यहै आख्यान जानि, भृगुसूनु[4] च्यवन उद्भव बखानि।३३।
हुव पुत्र च्यवन मुनिकै सुधाम, सर्याति सुता बिच प्रमति नाम॥
लहि काल घृताची उदरजात, हुव प्रमतिपुत्र रुरु नाम ख्यात॥३४॥
रुरुकै प्रमद्वरा माँहिं पुत्त, हुव सुनक नाम जम नियम जुत्त ॥
वह रुरु चरित्र कहियत उदार, वृत्तांत जथाश्रुत बिधि बिथार।३५।
सुरगायन[6] विस्वावसु प्रसंग, हुव पुत्रि मेनकामैं सुरंग ॥
जिहिं जनत मेनका पाप किन्न, दोहद[7] तटिनी[8] तट डारि दिन्न।३६।
तिहिं आय लै रु मुनि थूलकेस, धरि अंक गये करि हित बिसेस॥
तनयाँ[10] जिम पोखी निलयँ[11] आय, बहु खान१ पान२ लालन३ बनाय।३७।
तस प्रमदबरा दिय नाम तातैं[13], इकदिन गही सु रुरु दृष्टि पात ॥
कंदर्प[14] मूढ रुरु लहि निकेत, अनुचितहु कहिय जनकहिं अचेत।३८।
सुनि प्रमति कहिय जँहँ थूलकेस, रुरु अर्थ देहु कन्या द्विजेस ॥
सुनि मुनि बिबाह आरंभ कीन, सुभ लगन हत्थँ[15] नच्छत्र लीन॥३९॥
हुव तँहँ बिबाह पहिलैंहि चूक, कन्या सु डसी इक दंदसूक ॥

होम किया हुआ विभाग लेवेगा. १ ऐसा ही होवेगा यह कहकर २ अग्नि ब्रह्मा का हुकुम मानकर अपने घर गया ।३२। यह ३ पुलोमा का आख्यान और भृगु के ४ पुत्र च्यवन के ५ जन्म का वर्णन जानो ।३३।३४।३५। ६ गंधर्व विश्वावसु के संग करने से मेनका अप्सरा के पेट से पुत्री हुई ७गर्भ को ८नदी के ९ किनारे पर ॥ ३६ ॥ उस गर्भ को थूलकेस नामक मुनि आकर अपनी गोदी में धरकर लेगये और अपनेघर में११आकर उसको१०पुत्री के समान पाली१२लाड॥३७॥१३पिता ने उसका नाम प्रमद्वरा रक्खा उसको रुरु ने अपनी दृष्टि पटकने से ग्रहण की अर्थात् देखी और१४कामदेव से मूढ होकर अपने घर में जाकर ऐसी बात का पिता से कहना अनुचित था तोभी अचेतपन से पिता से कही ॥ ३८ ॥ सो सुनकर प्रमति ने थूलकेश से कहा कि हे द्विजेश मेरे पुत्र रुरु के अर्थ तुम्हारी कन्या दो, यह सुनके थूलकेश ने१५हस्त नक्षत्र में शुभ लग्न लेकर विवाह का आरंभ किया ॥३९॥ विवाह से पहिलेही

एकत्र भये सब सुनत एह, लगि सोक बिचारत दैवलेह ॥४०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न३३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारते तक्षकजिघांसूत्तङ्कहस्तिपुराऽऽगमनकाद्रवेयकुकृत्यकौरवकोपनभृगुवंशव्याख्यानजातवेदःपिधानप्रकटनरुरुप्रमद्वराऽभिलषणादन्दसूकदंशतन्मरणं षड्विंशतितमो२६मयूखः॥ २६॥ आदितोऽष्टषष्टितमः ॥ ६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

करत गये ताके मरत, बन रुरु रुदन बिलाप ॥
देवदूत तँहँ आय तिंहिं, बुल्ल्यो न करहु ताप ॥ १ ॥
नष्ट भई वह आयु बिनु, जानि प्रमतिसुत एह ॥
वाहि जिवावत जो बहुरि, अर्द्ध आयु निज देह ॥ २ ॥
सो जब रुरु स्वीकृत करिय, निज जीवित दल देन ॥
देवदूत द्रग नेह लखि, गयउ दंडधर ऐन ॥ ३ ॥
कालधर्म प्रभुसौं कह्यो, सब नय रीति समेत ॥

तहां चूक हुआ कि कन्या को एक सर्प ने डसलिया १ दैव के लेख ॥ ४० ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के एक समय में होनेवाले सूतपुत्र के महाभारत सुनाने में तक्षक को मारने की इच्छा से उत्तंक का हस्तिनापुर में आना, सर्प के खोटे कार्य से कौरव (जनमेजय) का कोप करना, भृगुवंश के आख्यान में अग्नि का अन्तर्धान होकर फिर प्रकट होना, रुरु का प्रमद्वरा के लिये अभिलाषा करना, सर्प के डसने से उस प्रमद्वरा के मरने का छब्बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २६ ॥ और आदि से अड़सठ मयूख हुए ॥ ६८ ॥
उस प्रमद्वरा के मरते ही रुरु रुदन और विलापात करताहुआ वन में गया तहां कालपुरुष ने आकर कहा कि खेद मत करो ॥ १ ॥ वह आयु विना मरी है सो हे प्रमति के पुत्र (रुरु) उसको जिवानी है तो अपनी आधी आयु दो ॥ २ ॥ २अंगीकार३आधा४यमराज के घर पर ॥३॥ काल ने धर्मराज से नीति और रीति सहित सब कहा कि हे धर्मराज उस सुन्दरी को जिवाओ

समन जिवावहु सुंदरी, दल आयुख रुरु देत ॥ ४ ॥
श्राद्धदेव[1] अक्खिय सु सुनि, उचित न्याय जो एह ॥
प्रमदवरा तो पाय पिय, नवहित बंधहु नेह ॥ ५ ॥
वैवस्वत[2] इम बुल्लतहि, प्रमदबरा असु[3]पाय ॥
उठी मनहु सोवत जगी, अब व्याही रुरु आय ॥ ६ ॥
रुरु तबतैं पकरी अदय[4], व्याल बिनासन टेक ॥
बन बिच देख्यो चरम वय, ऊँघत डुंडुभ एक ॥ ७ ॥
देखतही रुरु दंड लै, बिरचन लग्गो वाध[5] ॥
डरि डुंडुभ रुरुसौं रव्यो, रंचक कहि अपराध ॥ ८ ॥

षट्पात् ॥

प्रमति पुत्र तब कहिय डसिय मम नारि भुंजगन ॥
जिंहिं कारन अहिजात सत्र तजिहौं न दंड इम ॥
डसत न डुंडुभ जाति कह्यो रुरुसौं डुंडुभ जब ॥
रुरु अक्खिय किम कहहु सोहु तव जन्म हेतु सब ॥
डुंडुभहु कह्यो मैं पूर्वभव हो मुनि नाम सहस्रपद ॥
द्विज दरित साप डुंडुभ भयो बलि रुरु आक्खिय सोहु वद॥९॥
डुंडुभ अक्खिय खगम नाम मम मित्त अग्ग हुव ॥
मैं सिसुपन बस मंद धूर्त तृन सर्प बिरचि ध्रुव ॥

रुरु अपना आधा आयु देता है ॥ ४ ॥ १ धर्मराज ने कहा ॥५॥ २ धर्मराज के इस प्रकार बोलते ही ३ प्राण पाकर ॥ ६ ॥ ४ निर्दयता. सर्पों के नाश करने की टेक पकड़ी, वन में कभी बुढापे में ऊंघताहुआ एक डुंडुभ जाति का (जलसर्प) सर्प देखा ॥७॥ ५ वध. कुछ तो अपराध बता मुझे क्यों मारता है ॥ ८ ॥ रुरु ने कहा कि मेरी स्त्री को सर्पों ने डसा है इस कारण से टग सर्प जाति को दंडे से दण्ड देने से नहीं छोडूंगा जब डुंडुभ ने कहा कि डुंडुभ जाति के सर्प नहीं डसते हैं तब रुरु ने कहा कि यह कैसे कहता है तुम्हारे जन्म का कारण सब कहो, डुंडुभ ने कहा कि पूर्वजन्म में मैं सहस्रपाद नामक मुनि था ब्राह्मण के श्राप से डराहुआ डुंडुभ सर्प हुआ, फिर रुरु ने कहा कि वह भी कह ॥ ९ ॥ मूर्खता के वश होकर धूर्तता से तृणों का सर्प बनाकर अग्निहोत्र में बैठेहुए खगम नामक के पास डाल कर उसको ड-

अग्निहोत्र थित आय डारि वह खगम डरायउ ॥
अहि डरि तिँहिं निश्चेष्ट होय पुनि चेतन पायउ ॥
करि कोप खगम मोसौं कह्यो जिते जोर यह सर्प किय ॥
तैसोहि पराक्रम पाय तू सर्प होहु इम साप दिय ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मैं तब अक्खिय खगमसौं, हसीमाँहिं यह साप ॥
आगस[1] अल्प रु दंड अति, उचित छमौ[2] के आप ॥ ११ ॥
कह्यो खगम मेरो कथन, नैंक अलीक[3] न होय ॥
सापहु छुट्टहिं अवधि सिर, धीर होहु अघ[4] धोय ॥ १२ ॥
प्रमतिपुत्र रुरु नाम इक, व्हैहै मुनि भृगुबंस ॥
ताहि लखत अहिरूप तजि, पैहै निज[5] सुप्रसंस ॥ १३ ॥
सो रुरु तू अरु मैंहु सो, बदत ताहि इम बैन ॥
तजि डुंडुभपन विप्र तनु, इहिं पायो गुन ऐन ॥ १४ ॥
बद्यो प्रमतिसुतसौं बहुरि, सो द्विजवर सिख ठानि ॥
धर्म अहिंसा परम धन, जो रुरु निश्चित जानि ॥ १५ ॥
बिनय सहित सूतहिं बहुरि, सौनक अक्खिय सार ॥
कुरुभूपति अहिसत्र किय, बदि सुहि करि बिस्तार ॥ १६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत सूत उच्चरिय भयउ इक जरतकारु द्विज ॥

राया सो सर्प से डरकर खगम मूर्छित होकर फिर चेता और मुझसे कहा कि जितने जोर (पराक्रम) का यह सर्प बनाया है वैसा ही पराक्रम पाकर तू सर्प हो ॥ १० ॥ १ अपराध न्यून २ आप क्षमा करने योग्य हो ॥ ११ ॥ ३ मिथ्या ४ पापों को धोकर ॥ १२ ॥ ५ श्रेष्ठ प्रशंसा योग्य अपना रूप पावेगा । १३ । ॥ १४ ॥ उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने शिक्षा के अर्थ रुरु से कहा कि हे रुरु अहिंसा धर्म ही परम धन है सो यह निश्चय जानो अर्थात् सर्पों को मारने की हिंसा मत करो ॥ १५ ॥ इस पीछे नम्रता पूर्वक शौनक ऋषि ने सूत पौराणिक से कहा कि राजा जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया उसीको विस्तार करके कहो ॥ १६ ॥ सूत बोले कि जरत्कारु नामक एक ब्राह्मण हुआ जो स्त्रियों में

नारिन बिच निष्प्रेम भजत व्रत ब्रह्मचर्य निज ॥
गर्त माँहिं जिहिं पितर लखे अपनैं अवलंबित ॥
उद्धचरन अधबदन गहैं इक तंतु बिकल चित ॥
तिनप्रति उवाच तुम कोन यह सहत दुक्ख विपरीत क्रम ॥
यह सुनत विकल बुल्ले अखिल जरतकारुके पितर हम॥१७॥

॥ दोहा ॥

न करत वह पानिग्रहन, नष्ट होत संतान ॥
ताके पाप अधोबदन, झूलत हम इहिं थान ॥ १८ ॥
जरतकारु जो तुम कह्यो, सो मैं आक्खिय विप्र ॥
अब जो तुमहित अप्पनो, कहो करौं सुहि छिप्र ॥ १९ ॥
सुनि पितरन तासौं कह्यो, विरचि प्रजा करि व्याह ॥
यातैं हम व्हैहैं अनघ, जैहैं ससुतन राह ॥ २० ॥

॥ षट्पदी ॥

जरतकारु तब कहिय नाम मेरै मिलिहै तिय ॥
तो करिहौं उपयाम कथित तुमरो बिचारि हिय ॥
तिम तिन प्रति दृढ अक्खि चल्यो तिय हेत चित्त धरि ॥
बन बिच कन्या देहु कहिय इम तीन ३ बेर करि ॥

कुछ स्नेह नहीं रखता था और ब्रह्मचर्य सेवन करता था उसने अपने पितरों को एक खड्डे मे लटकते हुए देखे जो एक तन्तु को पकड़े हुए ऊपर चरण और नीचे मुख किये हुए विकल चित्त से थे, उनसे जरत्कारु बोला कि तुम उलटे क्रम से दुख सहनेवाले कौन हो, यह सुनकर सब बोले कि हम जरत्कारु के पितर हैं ॥ १७ ॥ वह विवाह नहीं करता इससे हमारी सन्तान नष्ट होती है उसके पाप से हम अंधे मुख झूलते हैं ॥ १८ ॥ जरत्कारु बोला कि जिसको तुम जरत्कारु कहते हो वह मैं ही हूं अब जो तुम अपनी भलाई चाहो सो कहो मैं उसको शीघ्र करूंगा॥ १६ ॥ १सन्तान पैदा कर २पाप रहित सन्तानवाले पितर जिस मार्ग जाते हैं उसी मार्ग हम भी जावेंगे ॥ २० ॥ मेरा नाम (जरत्कारु) है इसी नाम की स्त्री मिलजावेगी तो हृदय में तुम्हारा कहना विचार कर ३विवाह करूंगा वन में जाकर तीन बेर यह कहा कि मुझे कन्या दो, इस बात को वासुकि नाग ने सुनकर जलदी से

सुहि सुनत नाग वासुकि सजव लै निज भगिनी संग वह ॥
करि बिनय जरतकारुहिँ कहिय अप्प नाम तिय लेहु यह।२१।
कुल निज रक्खन काज जामि वासुकि दिन्नी जव ॥
जरतकारु निज नाम जानि तिय लिय बिवाहि तव ॥
जरतकारु सन जरतकारु आस्तीक जनिय सुत ॥
पठित वेद बंदांग बिसद विद्याबिनोद जुत ॥
जनमेजय अहिमख जत्थ किय तत्थ जाय आस्तीक द्विज॥
भूपहिँ निवारि वर मंगि सब रक्खिय मातुल बंस निज।२२।
सौनक अक्खियं बहुरि कहहु विस्तारि कथा यह ॥
इम सुनि सूत उवाच सुनहु मुनिराज महामह ॥
प्रथम देवजुग माँहिँ दच्छतनया प्रकटी दुव२ ॥
कद्रू१विनता२नाम लई कश्यप बिवाहि धुव॥
वर लेहु कह्यो कद्रू सु सुनि नाग सहँस१०००सुत मंगि लिय॥
तिनसौं वलिष्ठ विनता तनय दुव२मंगिय मुनि नेहु दिय ।२३।
दोहद लच्छन दुहुँन२ बढ लहि काल महाबल ॥
कद्रू अंड हजार जनैं बिनता निज जामल२ ॥
सोपउवेदक भांडमाँहिँ कद्रू रक्खिय जव ॥

अपनी बहिन को साथ लेकर नम्रता के साथ जरत्कारु से कहा कि आपके नामवाली यह स्त्री लो ॥ २१ ॥ जनमेजय के यज्ञ में होम होनेवाले अपने कुल की रक्षा के अर्थ वासुकि नाग ने अपनी बहिन दी जब अपने नामवाली स्त्री जानकर ली और जरत्कारु नामक स्त्री ने जरत्कारु ने नामक पुत्र जना. वेद वेदांग सहित निर्मल विद्या चमत्कार सहित पढे हुए आस्तीक ब्राह्मण ने जहां जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया वहां जाकर वर मांग कर राजा को यज्ञ करने से मना करके अपने मामा (सर्पों) के वंश की रक्षा की ॥२२॥१बोला२बडे उत्सव के साथ ॥ सत्ययुग में दक्ष प्रजापति के कद्रू और विनता नामक दो कन्या हुईं जिनको कश्यप ने ब्याहीं, इनको कश्यप ने कहा कि वर मांगो सो सुनकर कद्रू ने हजार पुत्र सर्प मांगे और विनता ने उन सर्पों से बलवान् दो पुत्र मांगे सो कश्यप ने दिये ॥ २३ ॥ समय पाकर दोनों के गर्भ बढ़े. कद्रू ने हजार और विनता ने दो

अब्द पंच सत५०० अंड नाग तिनमैं जनमैं सब ॥
तिन देखि दुखित बिनताहु इक१अंड अपक्क बिदीर्ण किय ॥
पूर्वाऽर्धकाय तिंहिं व्है अरुन१दासी होवहु साप दिय ॥२४॥
पुनि हायन सत पंच५००गयैं यह अंड द्वितीयक२ ॥
पक्कि जनहिं जो पुत्र मात तव साप बिमोचक ॥
(यक१ चक२ अन्त्यानुप्रासः १)
इम बिनता प्रति अक्खि आप स्वच्छंद अरुन गय ॥
कद्रू१विनता२ कवहु लख्यो उच्चैश्रवा सु हय ॥
जो कढयो अमृत मंथानतैं तुरगरत्न उरुतेज ध्रुव ॥
यह सुनत बहुरि सौनक कहिय किम समुद्र मंथान हुव।२५।
सूत कहिय इक समय अमर सब रत्नसानु पर ॥
अमृत हेत किय मंत्र होन पीवर अरु निर्जर ॥
श्रीनारायन कहिय मथहु सुर१असुर२पयोनिधि ॥
औषध१ रत्न२असेस डारि तिंहिं बिच बिसेस विधि ॥
तसमात अमृत व्हैहैं प्रकट सो लहि होहु बलिष्ठ सब ॥
असुरन मिलाय किन्नौं सुरन मथन सिंधु आरंभ तब ॥२६॥

अंडे जने. १वर्ष२विना पके एक अंडे को फोड़ा जिसमें से ऊपर के आधे अंग सहित अरुण उत्पन्न हुआ जिसने श्राप दिया कि कच्चे अंडे को फोड़ कर मुझको अंगहीन किया इसकारण से तू दासी हो ॥२४॥ और हे माता फिर पांच सौ वर्ष गये पीछे यह दूसरा अंडा पककर पुत्र जनेगी वह तुझको श्राप से छुडानेवाला होवेगा इसप्रकार विनता को कहकर अरुण स्वतंत्र होकर गया जिस पीछे कभी कद्रू और विनता ने उच्चैःश्रवा नामक सूर्य के घोड़े को देखा जो समुद्र से (जल के मथने से) बड़ा तेजस्वी रत्नरूप घोड़ा निकला था, यह सुनकर शौनक बोले कि समुद्र का मथन कैसे हुआ ॥ २५ ॥ सूत पौराणिक ने कहा कि एक समय देवताओं ने सुमेरु पर्वत पर पुष्ट और जरा (बुढापा) रहित होने के लिये अमृत के अर्थ सलाह की जब विष्णु ने कहा कि देवता और असुर मिल कर विधिपूर्वक औषधि और रत्न सब डालकर समुद्र को मथो, उससे अमृत प्रकट होवेगा उसको लेकर बलवान होओ. तब देवताओं ने असुरों को सामिल करके समुद्र मथने का आरंभ

अभ्र सिखर आकार शृंग सोभित गिरि मंदर ॥
लता जाल संकुलित बिबिध पतगन कूजित वर ॥
त्रिविध दंष्ट्रि संपन्न सहित किन्नर अच्छरिगन ॥
अंतर१बाहिर२तुल्ल्य सहँस एकादस११००० जोजन ॥
वह अद्रिराज मंथान थपि उत्पाटन किय जोर अति॥
तदपि न उठाय कोऊ सकत कहिय बिष्णु तँहँ सेस प्रति।२७
तुम अनंत उद्धरहु अद्रि मंदर अतुल्ल्य भर ॥
सुनि उठाय लिय सेस गये सब अब्धि कूल पर ॥
जहँ बासुकि किय नेत्र कहिय सागर तहँ असहन ॥
धरहु अंस मोमाँहिं सहौं मंदर अवघट्टन ॥
तदनंतर कच्छपराजसौं सुर असुरन करि नति कहिय॥
आधार अप्प अगके बनहु सु सुनि कमठ तस्र तल रहिय।२८।
सुरन पुच्छ संग्रहिय फटा असुरन औंचिय जब ॥
लगत मथन छीरोद भयउ उत्कट बिराव तब ॥
नागराज मुख पवन कढे ज्वालाजुत धूमित ॥

किया ॥ २६ ॥ मेघशिखर के समान शोभायमान है शिखर जिसका ऐसा मंदर नामक पर्वत लताजाल से सघन (अवकाश रहित) नानाप्रकार के पक्षिगणों से शब्दायमान, नानाप्रकार के डाढवाले पशुओं से युक्त, किन्नर और अप्सराओं के गण सहित, भीतर और बाहर से समान ग्यारह हजार योजन के उस पर्वतराज को मथने का दंड (रई) बनाकर उसको उखाड़ने में बहुत जोर किया तोभी उसको कोई नहीं उठासका तब विष्णु ने शेषनाग से कहा ॥ २७ ॥ मंदर नामक पर्वत अतोल भार सहित है इसको हे शेषनाग तुम उठाओ, यह सुनकर शेष ने उठालिया और समुद्र के किनारे पर लेगया जहां वासुकि सर्प का नेता किया। तहां समुद्र ने कहा कि यह मुझसे सहन नहीं होसक्ता मुझमें सबका अंश रक्खो तब मंदराचल की टक्कर सह सकूं जिस पीछे कमठराज से सुर असुरों ने नम्रता करके कहा कि आप पर्वत के आधार बनो यह सुनकर कमठ उस पर्वत के नीचे रहे।२८। जब देवताओं ने पूंछ को पकड़ी और दैत्य फण को खींच कर क्षीरसागर को मथने लगे तब तीव्र शब्द हुआ. नागराज के मुख से ज्वाला और धुएं

मुदिर होय तिन महत बुट्टि बिरचिय प्रसांति हित ॥
गिरि हल्लन पिष्ट जल जीव हुव बरुनराज बैभव बिगरि ॥
शृंगस्थ विटपि पतगन सहित भ्राम्यमान च्युत गयउ झरि २९
अवघट्टन भव आग्गि छुट्टि पब्बय किय छादित ॥
सिंह गजादिक सत्व भये सब तत्थ भस्म मित ॥
अभ्र सलिल करि इंद्र सोहु दवदाह समायउ ॥
स्रवित तरुन निर्य्यास उदधि अंतर झरि आयउ ॥
मिश्रित समस्त औषध रसन छीर भयउ सागर सकल ॥
एकांत मथन आकूल इम भयउ आज्य नीरोधि जल।३०।
तदनंतर सब सुरन कहिय हुव हीनसक्ति हम ॥
औंघि नेत्र नहिँ सकत करहु बल होय जथाक्रम ॥
हरि सन लहि बल बृद्धि करिय प्रंबुधि आकुल घन ॥
पाय अवधि परिनामँ भ्रमत प्रकटिय रतनन गन ॥
कुमुदेस१ आज्य सन तँहँ कढिय श्री २ पुनि पांडुर बासिनिय ॥
देवी सुरा३हु प्रकटिय बहुरि सुभ्र सप्ति४सुरराज प्रिय।३१॥
कौस्तुभ मनि ५ पुनि कढिय हुव सु हरिबच्छ बिभूखन॥

सहित पवन निकला उसकी शान्ति के अर्थ मेघ ने उन (देवता और दैत्यों) के पूजनीय होकर वृष्टि करी, पर्वत के हिलने से जल के जीव पिस कर वरुण राज का वैभव बिगड गया और शिखर पर ठहरे हुए वृक्ष और पक्षी चक्कर (भँवल) खाकर छूट कर गिरगये ॥ २९ ॥ टक्कर (परस्पर की रगड़) से पैदा हुई अग्नि ने छूट कर पर्वत को छालिया जिससे सिंह हाथी आदि जीव जहां पर भस्म होगये तहां इन्द्र ने मेघ के पानी से इस अग्नि की दाह को भी मिटाया, वृक्षों से बह कर गूंद समुद्र में झड़ गया और सब औषधि और रसों के मिल जाने से सम्पूर्ण समुद्र दूध का होगया और अत्यन्त मथने से किनारों पर्यन्त समुद्र का पानी घृत होगया ॥३०॥ १जिस पीछे देवताओं ने कहा२समुद्र को३अन्त में४उस घृत से चन्द्रमा निकला और फिर स्वेत वस्त्रोंवाली लक्ष्मी, फिर देवी मदिरा प्रकट हुई और स्वेत रंग का घोड़ा निकला जो इन्द्र को प्यारा है ॥३१॥ ५विष्णु की छाती का भूषण हुआ

पारिजात ६ पुनि कढिय कामसुरभी ७ अच्छरिगन ८ ॥
द्विरदराज चउ४दंत ९ कल्पपादप१० कपिला११ जिम ॥
कर निज अमृत करीर १२ कढे धन्वंतरी १३ हु तिम ॥
अति मथन होत प्रलयानुचर उफानि धूमजुत जनु अनल ॥
निजगंधमूढ त्रिभुवन करत कालकूट१४प्रकटिय प्रबल।३२।

॥ दोहा ॥

मंत्रमूर्ति सिव कंठ निज, धरयो गरल करि पान ॥
भाल तिलक हित किन्न भव,निज सासि अमृत निधान।३३।
श्री१कौस्तुभ२हरि उर बसे, हय१गज२गो३तरु४हत्थ ॥
वासवकै लगतहि बढे, सुधा असुर लहि तत्थ ॥ ३४ ॥
महादर्प रचि रन तुमुल, लग्गे लुट्टन रत्न ॥
माधव व्है तब मोहिनी, जोरयो मोहन जत्न ॥ ३५ ॥
माया मूढन मिलतहीं, दयो सुधाघट ताहि ॥
पीवहिँ हम बिच सो प्रथम, जिहिँ तुम पावहु चाहि॥ ३६ ॥
पायो सब कहि पंति करि, असुर सुरन दुहुँ२ओर ॥

फिर देवतरु, कामधेनु और अप्सराओं का गण प्रकटा, चार दांतवाला ऐरावत हाथी कल्पवृक्ष (वांछित फलदायक देवतरु) कपिला नामक (पीले रंग की) गौ और हाथ में अमृत का घड़ा लिये हुए धन्वन्तरि निकले. अत्यन्त मथने से प्रलय के साथ चलनेवाला मानों धूम के साथ अग्नि होवे इसप्रकार उफण कर अपनी गन्ध से तीनों लोकों को मूर्छित करता हुआ प्रबल विष (जहर) प्रकट हुआ ॥ ३२ ॥ उस विष को शिव ने पीकर मंत्र से प्रतिमा के समान अपने कंठ में धरा और अमृत ही है धन जिसके ऐसे चन्द्रमा को महादेव ने अपने ललाट का तिलक किया अर्थात् चन्द्रमा को ललाट पर रक्खा ॥३३॥ लक्ष्मी और कौस्तुभ मणि विष्णु के उर में बसे, और घोड़ा, हाथी, गौ और कल्पवृक्ष इन्द्र के हाथ लगते ही अमृत लेकर दैत्यों का साथ बढ़ा ॥ ३४ ॥ बड़ा घमंड रचके भयंकर युद्ध करके रत्न लूटने लगे तब विष्णु ने मोहिनी रूप होकर असुरों को मोहने का उपाय जोड़ा॥३५॥ १अमृत का घड़ा ॥३६॥ दैत्य और देवताओं की दोनों ओर पंक्ति करके सब को पाया जिसमें राहु ने समझा कि अमृत तो देवताओं को पिलाते हैं

समुझि राहु पावत सुरन, चोरयो सुर वपु चोर ॥ ३७ ॥
सूर १ सीतकर २ सैन सन, हरि सो अरि अरि मारि ॥
दिन्नौं ग्रहपन कारि दलित, अमृत न भोग्य उचारि ॥३८॥

॥ षट्पदी ॥

सुधा कलस तब सजव झपटि असुरन हरि सन लिय ॥
प्रहरन सुरन प्रहारि कलह अवमर्द प्रचुर किय ॥
नारायन १ निजचक्र चाप २ नर १ अतुल चलावत ॥
सो घट पायउ सुरन बिजय सम्मद छक छावत ॥
दस दिसन कंपि आसुर दुरिय सुर प्रसन्न दिव संचरिय ॥
हरि१बल भजाय असुरन हुलासि सुरन सुधा इम उद्धरिय ॥

दोहा

तब जो निकरयो सित तुरग, तिँहिँ निमित्त पण वाद॥
विनता कद्रूकै बन्यौं, सु कहौं सुनहु प्रमाद ॥ ४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रा

इसकारण से उस चोर ने देवताओ का शरीर चुराया अर्थात् दवताओं का स्वरूप करके उसकी पंक्ति में जाबैठा ॥ ३७ ॥ जब सूर्य चन्द्रमा ने सैन से कहा कि यह असुर है तब विष्णु ने अमृत तुमारे भोग लायक नहीं यह कह कर चक्र से उस शत्रु को मार कर टुकड़े करके ग्रहपन दिया (मस्तक का केतु और धड़ का राहु इन नामों से दोनों ग्रह बने) ॥ ३८ ॥ तब असुरों ने विष्णु से जलदी झपट कर अमृत का घड़ा ले लिया जब देवताओं ने शस्त्र चला कर युद्ध में बहुत पीड़ित किये और नारायण ने अपना चक्र और नर ने अपना धनुष चलाया इस से देवताओं ने विजय के हर्ष के उत्साह में छाकर वह घड़ा पाया, असुर धूज कर दशों दिशा में छिपे और देवता प्रसन्न हो कर स्वर्ग में गये, इसप्रकार विष्णु के बल से असुरों को भगाकर देवताओं ने अमृत को निकाला ॥ ३९ ॥ उस समय जो स्वेत रंग का घोड़ा निकला उसके निमित्त भूल से कद्रू और विनता के पण (सर्त, होड) का विवाद हुआ वह कहता हूं सो सुनो ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के समकालीन सूतपुत्र के महाभारत सुनाने

वितमहाभारते प्रमद्वराप्रत्युज्जीवनरुरुविबहनडुण्डुभशापमोक्षणा जरत्कारुदंपत्युपयमनाऽऽस्तीकजननना।गाऽरुणागरुडोद्भवनसुराऽसुरसमुद्रमन्थनसुधा१सप्ति२मुख्यमहारत्ननिष्कसनगिरीशगरलग्रसनप्रभुपूर्वदेवपराजयनसप्तिसुधासुरभीसिन्धुराऽऽदिसुरेशाऽर्पणां सप्तविंशति २७ तमो मयूखः ॥ २७ ॥ आदित एकोनसप्ततितमः ॥ ६९ ॥ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

विनतासौं कद्रू कहिय, उच्चश्रवा किहि रंग ॥
विनता तब अक्खिय बिसद, धाँनि मेचक अंग ॥ १ ॥
कहैं अनृत सो किंकरी, होय परस्पर हाल ॥
किय दोउन२संकेत इम, कद्रू कुहक कुचाल ॥ २ ॥

षट्पदी

तब कद्रू निज तनय अखिल बुल्लि रु बुल्लिय इम ॥
होयं असित कच रहहु जु हय मेचक्क दिखाय जिम ॥
नटे सुनत सब नाग होय हमतैं अधर्म नन ॥

में प्रमद्वरा का पीछा जीना और रुरु का विवाह होना, डुंडुभ सर्प का श्राप छूटना, जरत्कारु नामक स्त्री पुरुष का विवाह, आस्तीक का जन्म, सर्प अरुण और गरुड़ का पैदा होना, देवता और दैत्यों का समुद्र मथना, अमृत और घोड़ा है मुख्य जिनमें ऐसे महारत्नों का निकलना, शिव का विषपान करना, प्रतापी दैत्यों का पराजय होना, घोड़ा अमृत कामधेनु ऐरावत आदि इन्द्र के अर्पण होने का सत्ताईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २७ ॥ और आदि से उनहत्तर मयूख हुए ॥ ६९ ॥

उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा किस रंग का है. विनता ने कहा कि स्वेत रंग का है. कद्रू ने कहा कि श्याम रंग का है ॥ १ ॥ इनमें जिसका वचन झूठा निकले वह अभी एक दूसरी की दासी होवै, इसप्रकार जालसाज कद्रू ने अपनी खोटी चाल से दोनों में संकेत किया ॥ २ ॥ तब कद्रू अपने सब पुत्रों को बुला कर बोली कि तुम श्याम रंग के केस होकर घोड़े के लगजाओ जिससे वह घोड़ा श्याम रंग का दीखै. १हम से यह अधर्म नहीं होता

सुनि कद्रू दिय साप करन संहार स्वपुत्तन ॥
जनमेजय नृपके जाग बिच तुमहिँ ज्वलित खै हैं अनल ॥
सुनि असह कहिय सर्पन करहिँ कछुक स्याम हय बुद्धिबल ३
तब भुजंग कच स्याम होय यह लूम मध्य रहि ॥
आये दोउन दिट्ठि जीत मेरी कद्रू कहि ॥
विनता किय किंकरिय गरुड पुनि अवधि पाय हुव ॥
जातमात्र उडि गगन त्रस्त किन्नैं निर्जर ध्रुव ॥
सब कंपि गये पावक सरन इन्ह नुति सुनि बुल्ल्यो अनल॥
जिन डरहु गरुडमम तेज सन सुर हितकर यह हुव प्रबल ।४।
गरुतमान यह सुनत सुरन संतत बिरुदायउ ॥
सुनि नुति कश्यप सूनु दिव्य निज तेज समायउ ॥
अग्रजात निज अरुन रह्यो रवि संग अटन रति ॥
गृह पुनि आवत गरुड कहिय कद्रू विनता प्रति ॥
बहि हमहिँ सहल हित लैचलहु सिंधुकोन अहिलोक जहँ ॥
बहि ताहि सुनत बिनता चलिय गरुड अहिन बहि गयउ तहँ ।५।

---

१ यज्ञ मे तुमको जलता हुआ अग्नि खावेगा यह असह शाप सुन कर सर्पों ने कहा कि हम बुद्धिबल से घोड़े को थोड़ा सा श्याम करैंगे॥३॥तब सर्प श्याम रंग के बाल होकर घोड़े की पूँछ में लग गये, वही पूँछ का भाग दोनों की दृष्टि आया जब कद्रू ने कहा कि मेरी जीत हुई, यह कह कर विनता को दासी बना ली. जिस पीछे अवधि पाकर विनता का दूसरा पुत्र गरुड उत्पन्न हुआ जन्मते ही आकाश मे उडकर देवताओं को निश्चै ही भयभीत किया तब सब धूज कर अग्नि के शरण गये जब इन (देवताओं) की स्तुति सुनकर अग्नि बोला कि मत डरो यह गरुड़ मेरे तेज से देवताओं का हित करनेवाला प्रबल हुआ है ॥ ४ ॥ यह सुनकर देवताओं ने गरुड़ की निरन्तर स्तुति की. वह स्तुति सुनकर कश्यप के पुत्र (गरुड़) ने वह दिव्यतेज अपने आप में शान्त कर लिया. गरुड़ का बडा भाई अरुण फिरने में प्रीति करके सूर्य के साथ रहा और जब गरुड़ पीछा घर पर आया तब कद्रू ने विनता से कहा कि हमको उठाकर सहल कराने को समुद्र के कोने में सर्पलोक है वहां लेचलो. तब विनता कद्रू को और गरुड़ सर्पों को उठाकर लेगये ॥ ५ ॥ फिर

पुनि गरुडहिँ तिन कहिय लोक यातैँ इक अद्भुत ॥
तहाँ हमहिँ बहि चलहु दुक्ख गरुड सु बिचारि द्रुत ॥
विनता पुच्छिय जाय मात इनकैं क्योँ किंकर ॥
जिहिँ अक्खिय इन कोल जित्ति अप्पुन किय अनुचर ॥
तब गरुड अहिन प्रति उच्चरिय चेटकपन मोचन करहु ॥
जो लेहु मंगि देहौं सजव इष्ट सोहि हित अनुसरहु ॥६॥
अहिन गरुड प्रति कहिय देहु पीयूख आनि जब ॥
दासभाव सन छुटहु तक्ख तामहिँ बुल्ल्यो तब ॥
अमृत लैन मैं जात छुधा आतुर परंतु अति ॥
असन बतावहु अंब कहिय बिनता तब सुत प्रति ॥
है सिंधुकुक्षि बिच लोक इक बसत तत्थ सहँसन सबर ॥
बिनु विप्र खाय तू तिन सबन आनहु अमृत अपत्यबर ।७।

दोहा

किम जानौं खगपति कह्यो, छन्न चिन्न्ह द्विज छिप्र ॥
करत असन बिनता कहयो, बन्हि बनैं सुहि बिप्र॥८॥

पज्झटिका

सुनि गरुड गयो उडि सबरलोक, खाये निषाद सकुटुंब थोक ॥

सर्पों ने गरुड़ से कहा कि इससे भी एक दूसरा लोक अद्भुत है वहां हम को लेचलो यह सुनकर गरुड़ ने यह दुःख विचार कर शीघ्र ही माता से पूछा कि हम इनके दास क्यों हैं जब विनता ने कहा कि कद्रू ने मुझको एक कोल में जीत कर अपने को दास बनाया है तब गरुड़ ने सर्पों से कहा कि हमको दासपन से छोड़ो. जो तुमको प्रिय होवे वह मांगो सो जल्दी देऊँगा यह हमारा हित करो ॥६॥ सर्पों ने गरुड से कहा कि अमृत ला दो तब दासपन से छूटोगे जब गरुड बोला कि अमृत लेने को तो मैं जाता हूं परन्तु भूख से बहुत पीडित हूं सो हे माता भोजन बता. समुद्र के बीच में हजारों भील बसते हैं उनमें ब्राह्मण को छोड के सब को खाना और हे श्रेष्ठ पुत्र अमृत लाओ ॥ ७ ॥ गरुड़ ने कहा कि भीलों के सामिल रहनेवाले छिपेहुए चिन्हों के ब्राह्मण को जल्दी कैसे पहिचानूं तब विनता ने कहा कि खाते समय गले में अग्नि लगजावे उसीको ब्राह्मण जानो ॥ ८ ॥ १ स्त्री सहित

सबरीपति हो द्विज एक तब, खग सोहु गिल्यो संजुत कलत्र॥९॥
जब जरन लग्यो गल[1] पन्नगारि, तब वह अलात[2] उगिल्यो सनारि॥
खगराज जदपि खाये निखाद, नहिं तदपि छुधा[3] मिटि भो प्रसाद॥१०॥
कश्यप समीप तब गरुड जाय, बलि कहिय देहु भोजन बताय॥
यह खगहु सरोवर कहिय तात, दुव[1] अत्थ द्विरद कच्छप दिखात॥११॥
जिनके जनमातरसौं विरोध, सुनि सोहु दुवहि खावहु सुबोध॥
हुव बिप्र बिभावसु[1] नामधेय, अनुजात प्रतीक[2] हु भो अजेय॥१२॥
द्विज अनुज कहिय वसु बांटि देहु, विश्वावसु बुल्ल्यो अनृत एहु॥
धनभाग करैं नहिं साधु भ्रात, तू कहत एकता छोरि बात॥१३॥
तसमात अनुज मातंग होहु, सुनि देत भयो जिहिं साप सोहु॥
बनि कच्छप तुम जल करहु बास, तिन लहिय परस्परसाप त्रास॥
तबतैं दुव[2] बारन[1] कमठ[2] काय, यह सुनि सुपर्ण सर निकट आय॥
दुव[2] नखनवीच गहि दुहुन[2] आप, उडि द्रुत सुमेरु शृंगहिं अपाप॥१५॥
निज गरुत बात लखि द्रुमन भीत, पुनि अग्ग चलिय खगपति पुनीत॥
इम उडत लख्यो न्यग्रोध एक, हाटकमनिसाखा फल अनेक॥१६॥

---

१ गरुड का गला जलने लगा २ उस अग्नि के अंगारे (खीरे) को ३ भूख मिट कर प्रसन्न नहीं हुआ॥ १०॥ फिर गरुड को पिता ने कहा कि यह तालाव है तहां हाथी और कछुआ दोनों दीखते हैं॥ ११॥ जिनके कई जन्मों से वैर है. विभावसु नाम का ब्राह्मण आगे हुआ था उसका छोटा भाई प्रतीक भी किसीसे जीतने मे नहीं आवे ऐसा था॥ १२॥ छोटे भाई ने कहा कि धन बांट दो विश्वावसु ने कहा कि तूने यह मिथ्याभाषण किया है. श्रेष्ठ भाई धन के बंट नहीं करते॥ १३॥ इसकारण मे हे छोटे भाई! तू हाथी हो. यह सुनकर प्रतीक ने भी कहा कि तू कच्छप होकर जल में वास कर, इसप्रकार उन्होंने परस्पर शाप का भय लिया॥ १४॥ जब से दोनों हाथी और कच्छप का शरीर धारण करते हैं, यह सुनकर गरुड तालाव के निकट आकर दोनो नखो में दोनो को पकड कर सुमेरु पर्वत के शिखर पर प्राप्त हुआ॥ १५॥ अपने पांखो के पवन से वृक्षों को भय होता देख कर वह पवित्र गरुड आगे चला. इसप्रकार उडते हुए ने एक वट (बड़) का वृक्ष देखा जिसके सोने की शाखा और मणियों के अनेक फल थे॥ १६॥ जिस

सबरीपति हो द्विज एक तत्र, खग सोहु गिल्यो संजुत कलत्र१।
जब जरन लग्यो गल पन्नगारि, तब वह अलात उगिल्यो सनारि॥
खगराज जदपि खाये निखाद, नहिं तदपि छुधा मिटि भो प्रसाद१०।
कश्यप समीप तब गरुड जाय, बल्लि कहिय देहु भोजन बताय॥
यह खगहु सरोवर कहिय तात, दुव२ अत्थ द्विरद कच्छप दिखात।११।
जिनके जनमातरसौं बिरोध, सुनि सोहु दुवरहि खावहु सुबोध॥
हुव बिप्र बिभावसु१नामधेय, अनुजात प्रतीक२हु भो अजेय॥१२॥
द्विज अनुज कहिय बसु बंटि देहु, विश्वावसु बुल्ल्यो अनृत एहु॥
धनभाग करैं नहिं साधु भ्रात, तू कहत एकता छोरि बात॥१३॥
तसमात अनुज मातंग होहु, सुनि देत भयो जिहिं साप सोहु॥
बनि कच्छप तुम जल करहु बास, तिन लहिय परस्परसाप त्रास॥
तबतैं दुव२बारन१कमठ२काय, यह सुनि सुपर्ण सर निकट आय॥
दुव२नखनबीच गहि दुहुन२आप, उडि द्रुत सुमेरु शृंगहिं अपाप१५
निज गरुत बात लखि द्रुमन भीत, पुनि अग्ग चलिय खगपति पुनीत।
इम उडत लख्यो न्यग्रोध एक, हाटकमनिसाखा फल अनेक॥१६॥

१ गरुड का गला जलने लगा २ उस अग्नि के अंगारे (खीरे) को ३ भूख मिट कर प्रसन्न नहीं हुआ॥ १०॥ फिर गरुड को पिता ने कहा कि यह तालाव है तहां हाथी और कछुआ दोनों दीखते हैं॥ ११॥ जिनके कई जन्मों से वैर है. विभावसु नाम का ब्राह्मण आगे हुआ था उसका छोटा भाई प्रतीक भी किसीसे जीतने में नहीं आवे ऐसा था॥ १२॥ छोटे भाई ने कहा कि धन बांट दो विश्वावसु ने कहा कि तूने यह मिथ्याभाषण किया है. श्रेष्ठ भाई धन के वंट नहीं करते॥ १३॥ इसकारण से हे छोटे भाई! तू हाथी हो. यह सुनकर प्रतीक ने भी कहा कि तू कच्छप होकर जल में वास कर, इसप्रकार उन्होंने परस्पर श्राप का भय लिया॥ १४॥ जब से दोनों हाथी और कच्छप का शरीर धारण करते हैं, यह सुनकर गरुड तालाव के निकट आकर दोनो नखों में दोनों को पकड़ कर सुमेरु पर्वत के शिखर पर प्राप्त हुआ॥ १५॥ अपने पांखो के पवन से वृक्षों को भय होता देख कर वह पवित्र गरुड़ आगे चला. इसप्रकार उडते हुए ने एक बट (बड़) का वृक्ष देखा जिसके सोने की शाखा और मणियों के अनेक फल थे॥ १६॥ जिस

जोजन सत१००अवयव पतत जास,पाथोधि छुवत छाया प्रकास॥
सतकारि गरुड बुल्ल्यो द्रुमोहि,इभ१कूर्म२भखहु मम सिर अरोहि॥
जब गरुड चरन कछु परस जात,साखा सु चली तुटि अकसमात॥
लग्गे जहँ अधमुख लंबमान, मुनि बालखिल्य तपदमनिधान ।१८।
लखि तिन्ह खगेस भयसोकलीन,लिय झेलि न साखा गिरन दीन॥
उडि ताहि चंचु गहि चलिय आप, मुनिजनन कह्यो विक्रम अमाप॥
उड्डीन एह गहि भर गरिष्ट, तसमात गरुड नामा वरिष्ट॥
उडि आय गंधमादन अगेस, तहँ तात लखे कश्यप खगेस ॥२०॥
बुल्ले मुनि यों लखि बैनतेय,साहस यह छोरहु न कछु श्रेय॥
सुन कहिय तजत साखा स्वभाय,निज बालखिल्य ह्वै पिष्ट जाय२१
प्रभु कश्यप तब मुनि किय प्रसन्न,तिहिं छोरि भये हिमगिरि प्रपन्न॥
बलि गरुड कश्यपहि कहिय बैन, साखा यह डारौं कोन ऐन ।२२।
इक गिरि तब कश्यप दिय बताय,डारी तहँ साखा गरुड जाय॥
इभ१कमठ२भखे तिहिं शृंग बैठि,पब्बय दरारि भुव गयउ पैठि॥२३॥

के अंग सौ योजन तक फैले हुए और जिसकी छाया समुद्र को स्पर्श करती थी वह बट वृक्ष गरुड़ का सत्कार करके बोला कि मेरे ऊपर बैठ कर हाथी और कच्छप को भोजन करो॥ १७॥ जब गरुड़ ने अपना चरण लगाया तब उसकी शाखा अचानक टूट कर चली. जिसमें इन्द्रियों को रोकना और तप ही है धन जिनका ऐसे बालखिल्य नामक ऋषि नीचे मुख किये लटक रहे थे ॥ १८ ॥ उनको देख कर गरुड़ शोकलीन हुआ और उस शाखा को भी अपनी चोंच में झेल कर गिरने नहीं दी जिसको देख कर मुनियों के गण ने कहा कि इसका अमाप विक्रम है॥ १९॥ इस शाखा को पकड़ कर बड़ा उडाण भरा इसकारण से सब से श्रेष्ठ गरुड नाम हुआ, गंधमादन नामक पर्वत राज पर उड कर आया तहां पिता कश्यप ने गरुड़ को देखा॥ २०॥ इसकारण गरुड़ को देख कर कश्यप मुनि बोले कि यह हठ छोड दो इसमें कुछ लाभ नहीं यह सुनकर पुत्र (गरुड़) ने कहा कि शाखा को छोडते ही अपने बालखिल्य ऋषि चूर्ण होजावेंगे॥ २१॥ जब कश्यप ने बालखिल्य मुनियों को प्रसन्न किया. तब वे उस शाखा को छोड कर हिमालय पर्वत के शरण में गये फिर गरुड़ ने कश्यप से कहा कि किस स्थान में डालूं॥ २२॥
१ हाथी २ गंधमादन पर्वत के शिखर पर बैठकर॥ २३॥ देवताओं के घर

उड्डि चल्लिय गरुड तब अमृत हेत, उतपात मचे अमरन निकेत ॥
सुरगुरु बुलाय पुच्छिय सुरेस, उतपातब्रात किम होत एस ॥२४॥
इंद्रहिं गुरु अक्खिय तव प्रमाद, पुनि पाय बालखिल्यन प्रसाद ॥
कश्यप तनूज यह गरुड नाम, अमरालय आवत अमृतकाम ॥२५॥
अमरन प्रति अक्खिय सक्र एहु, दृढ रत्न सुधा नहिं जान देहु ॥
हुव ससुर सज्ज इम कहि सुरेस, सुनतहिं यह पुच्छिय सौनकेस २६
किम किय प्रमाद सुरराज सूत, किम बालखिल्य तप गरुड भूत ॥
किम हुव सकुंत कश्यप अपत्य, सब हेतु सावयव कहहु सत्य ॥२७॥
सुनि कहिय पुब्ब कश्यप समर्थ, मख रचत भये बर पुत्र अर्थ ॥
दीनैं सुर इंधन हित पठाय, ऋषि बालखिल्य जुत देवराय ॥२८॥
तहँ सक्र सहज अतिबल निधान, आयो लै इंधन अग प्रमान ॥
गन बालखिल्य अति अल्पगात्र, सब एक१पर्व अंगुष्ठमात्र ॥२९॥
पालास पिंट इक१लिय उठाय, सब तदपि रहे भर खेद पाय ॥
मगमैं कहुँ गोपद पूर्ण नीर, तामाँहिं गिरे सब अणु सरीर ॥३०॥

(स्वर्ग) में बृहस्पति को बुलाकर इन्द्र ने पूछा यह उत्पातों का समूह क्यों होता है ॥२४॥ बृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि तुम्हारी भूल और बालखिल्य मुनियों के वर से कश्यप का पुत्र यह गरुड़ नामक हुआ जो अमृत लेने को स्वर्ग में आता है ॥ २५ ॥ देवताओं से इन्द्र ने कहा कि अमृत अपना दृढ़-रत्न है जिसको मत जाने दो, यह कहकर देवताओं के सहित इन्द्र सज्जीभूत हुआ, यह सुनकर शौनक मुनि ने सूत पौराणिक से पूछा कि ॥ २६ ॥ हे सूत इन्द्र ने कैसे भूल की और बालखिल्य मुनियों के तप से गरुड़ कैसे पैदा हुआ और पक्षी कश्यप का पुत्र कैसे हुआ, सबका कारण अंग उपांग सहित सत्य कहो ॥ २७ ॥ यह सुनकर सूत ने कहा कि पूर्वकाल में समर्थ कश्यप ने श्रेष्ठ पुत्र के लिये यज्ञ रचा जिसमें इंधन लाने को देवताओं को भेजा और बालखिल्य ऋषियों सहित इन्द्र भी गया. बड़ा बलवान् इन्द्र सहज से ही पर्वत के समान इंधन उठालाया और बालखिल्यों का समूह बहुत छोटे शरीरवाला सब अंगूठे के एक पेरावामात्र थे ॥ २९ ॥ ढाक के पत्ते का एक बींट सब ने मिलकर उठाया तो भी भार से खेद युक्त होगये और मार्ग में कहीं गौ के खुर में पानी भरा था उसमें अणु के समान शरीर वाले गिर गये ॥ ३० ॥

हसि लंघि तिनहिं बासव जगाम, हुव मुनिहु ताहि जित्तन सकाम ॥
किय सबन अग्नि बिच होम आय, कहि बचन इन्द्र असहन सुभाय ॥
सत१००गुनित इंद्रतैं बल बिसेस, रन जो प्रचारि जित्तैं सुरेस ॥
इक१इंद्र होहु ऐसो बलिष्ट, यह सुनत सक्र हुव सो कनिष्ट॥३२॥
कश्यप प्रति आक्खिय बिनु बिसास, मुनि बालखिल्य मम करत नास
कश्यप सुनि तिन प्रति कहिय जाय, कसमात हवन करियत श्रमाय ॥
यह इंद्र रच्यो लोकेस आप, जग अखिल लान कारन प्रजाप ॥
तुम अपर इंद्र हित जत्नवान, बिधि बचन व्यर्थ न करहु सुजान ।३४।
संकल्प स्वीय नहिं अनृत आज, तिहिं होहु होमफल बिहगराज
कश्यप प्रति आक्खिय तब मुनीन, मख रचत तुमहु सुत लोभ लीन
संकल्प सत्य तो होहु सत्य, वह बिहगराज तावक अपत्य ॥
इम सूत गरुड भव हेतु गीत, अब कहत गरुड जिम अमृत नीत॥
लिय सजव सुधा सुरलोक जाय, सक्रादि सुरन सन विजय पाय
पुनि सक्र गरुड मित्रत्व आस, बलि किय खगेस हरिकेतु बास३७

जिनको उल्लंघन करके हस कर इन्द्र चलागया इससे मुनियों ने क्रोध करके इन्द्र को जीतने की कामना की ॥ ३१ ॥ युद्ध में ललकार कर इन्द्र को जीतै ऐसा बलवान् एक दूसरा इन्द्र होवे, यह सुनकर इन्द्र शोक में अच्छा रखनेवाला (शोक सहित) हुआ ॥ ३२ ॥ अपने बल में विश्वास रहित होकर कश्यप से कहा कि वालखिल्य मुनि मेरा नाश करते हैं, कश्यप ने वालखिल्य ऋषियों से जाकर कहा कि किसकारण परिश्रम करके होम करते हो ॥ ३३ ॥ इस इन्द्रको स्वयं ब्रह्मा ने रचा है और सब जगत् की रक्षा करने को प्रजापति किया है, तुम दूसरे इन्द्र का यत्न (उपाय) करते हो सो हे सुजान ब्रह्मा के वचन को व्यर्थ मत करो ॥३४॥ आपका संकल्प भी आज झूठा नहीं होता इसकारण से आप के होम का फल पक्षिराज होओ. यह सुनकर मुनियों ने कश्यप से कहा कि तुम भी पुत्र के लोभ में लीन होकर यज्ञ करते हो ॥ ३५ ॥ सो हमारा संकल्प सत्य है तो वह पक्षिराज सत्य ही तुम्हारा पुत्र होवे, इसप्रकार सूत ने गरुड़ के जन्म की कथा कहकर अब जिसप्रकार गरुड़ ने अमृत प्राप्त किया सो कहते हैं ॥ ३६ ॥ १ शीघ्र २ अमृत ३ इन्द्र को आदि लेकर देवताओं को जीतकर ४ मित्रपन ५ हुआ ६ फिर७गरुड़ ने ८विष्णु की ध्वजा में वास किया ॥ ३७ ॥

नागन समीप पुनि अमृत लाय, दिय जननि दासभावहु छुराय॥
सौनक पुनि पुच्छिय सूत श्रेय, नागनके अक्खहु नामधेय ।३८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीये३राशौ वीतिहोत्रचहुवाणशत्रुघ्न४३जीवितसमयसमानाऽधिकरणकसौतिश्रावितमहाभारते कद्रू१विनता२पणबदनसवित्रीनागशपनकौहक्यकद्रूपणजयनविनताकिङ्करीकरणगरुडोद्भवनतन्निषादाऽदनविभावसु१सुप्रतीका २ऽऽख्यानगरुडनामप्रकटनकरि१कमठ२भक्षणबालखिल्यप्रसादनतार्क्ष्यजन्महेतुकथनसुपर्णसुधानयनसुरेशतत्सौहार्दविरचनगरुत्मद्गदाधरध्वजनिवसनसमानीतसुधाम्बसावित्रीदासत्वमोचनशौनकनागाऽभिधानप्रश्नकरणमष्टाविंशतितमो२८ मयूखः ॥ २८ ॥ आदितः सप्ततितमः ॥ ७० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

सुनिसूत कहिय हुव बहुत नाग, कछु नाम कहत सुनिये सुभाग[1]॥

सर्पों के नाम कहो ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण शत्रुघ्न के जीवित समय के बराबर है समय का आधार जिनका ऐसे सूतपुत्र के महाभारत सुनाने में कद्रू और विनता का होड (सर्त) लगाना, माता का सर्पों को श्राप देना, इन्द्रजाली कद्रू का पण में जीतना, विनता को दासी बनाना; गरुड का पैदा होकर भीलों को खाना, विभावसु और सुप्रतीक नामक ब्राह्मणों का आख्यान, गरुड नाम का प्रकट होना, गरुड का हाथी और कछुए को खाना, बालखिल्य ऋषियों की प्रसन्नता से गरुड के जन्म के कारण को कहना, गरुड का अमृत लाना, इंद्र का गरुड के साथ मित्र होना, गरुड का विष्णु की ध्वजा में वास करना, लायेहुए अमृत से अपनी माता का दासीपन छुडाना, शौनक का सर्पों के नाम का प्रश्न करने का अट्ठाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि से सत्तर मयूख हुए ॥ ७० ॥

१ हे श्रेष्ठ भाग्यवाले

कद्रू तनूज[2] हुव प्रथम सेस१, बासुकि२पुनि ऐरावत३बलेस ॥१॥
तक्षक४कर्कोटक५नाग नाम, गिनिये अब[3] धनंजय६[4]गरलग्राम ॥
कालीय७बहुरि मणिनाग८जानि,प्रकटितबल आपूरण९प्रमानि।२।

पिंजरक १० रु[5] एलापत्र ११ जात,
वामन १२ अनील १३ अरु नील १४ ख्यात[6] ॥
कल्माष१५शबल१६आर्यक१७भुजंग,
उग्रक१८रु कलसपोतक१९अभंग ॥ ३ ॥
रु शुनामुख२०अधिमुख२१बिमल२२व्याल[7],
पिंडक२३रु सप्त२४कोपन कराल ॥
पुनि सुनहु कोटरक२५संख२६नाम,
बलि सिख२७रु निष्टानक२८हु ताम[8] ॥ ४ ॥
हेमगुह२९नहुष३०पिंगल३१बखानि,
जिम बाह्यकर्ण३२हस्तिपद३३जानि ॥
बलि[9] मुद्गरपिंडक३४नाम व्याल,
कंबल३५रु अश्वतर३६पर कृपाल ॥ ५ ॥
जे[10]सिक्खि सरस्वति उक्तगान,
शिवके हुव कुण्डल बुद्धिमान ॥
कालीयक३७वृत्त३८रु पद्म४०दोय२,
संबर्त्तक४१अरु संखमुख४२होय ॥ ६ ॥
कूष्मांडक४३क्षेमक४४काद्रवेय,
पिंडारक ४५ बिल्वक ४६ नामधेय[11] ॥
करवीर ४७ पुष्पदंष्ट्र ४८ हु अहीस[12],
पुनि बिल्वपाण्डुर ४९रु संखसीस ५० ॥ ७ ॥
अहिकर्णभद्र ५१ बलि मूषकाद ५२,

---

२ पुत्र ३ अब ४ विष का समूह ५ अरु ६ प्रसिद्ध ७ सर्प ८ तहां ९ पुनि १० सरस्वती का कहा हुआ गाना सीख कर वे बुद्धिमान् सर्प महादेव के कानों के कुण्डल हुए ११ नामवाले १२ सर्पों के पति

रु हरिद्रक५३ अपराजित५४ विपाद५५ ॥
ज्योतिक५६ तथाहि श्रीबह५७ भुजंग,
सहसंखापिंड५८ कौरव्य५९ संग ॥ ८ ॥
बिरजाश्व६० नहुरि धृतराष्ट्र६१ व्याल[1],
रु[2] सुबाहु६२ सालिपिंड६३ हु बिसाल ॥
जिम हस्तिपिंड६४ पिठरक६५ हु जानि,
बलि सुमुख६६ कौणपासन६७ वखानि ॥ ९ ॥
कुंजर६८ रु प्रभाकर६९ कुठर७० सर्प,
कुमुदाक्ष७१ कुमुद७२ तित्तिरि७३ सदर्प[3] ॥
कर्दम७४ बहुमूलक७५ हल्लिकाख्य[4]७६,
कर्कर७७ रु अकर्कर७८ इति समाख्य[5] ॥ १० ॥
समहोदर७९कुंडोदर८०सुराग,सूचीमुख८१इति मुख[6] बहुत नाग ॥
तिनमाँहिं मुख्य श्रीशेषनाम, तप तपिय पाय बिषयन बिराम[7]॥११॥
बरलेहु कहिय बिधि[8] होय तुष्ट[9], अक्खिय अनंत[10] मम भ्रात दुष्ट ॥
तिनमाँहिरहौं नहिं मैं कृपाल, विधि कहिय धरहु छिति[11]हिपताल१२
यह भुम्मि धरत तबतें अनंत, बासुकि[12] मुख नागन अब उदंत[13]॥
सब दुखित होय कद्रू प्रसप्त[14],बिधिलोक गये अतिसोक तप्त।१३।
अक्खिय प्रसाद[15] अज करहु आप,जिम टरहिं नाथ हम नास पाप॥
लखि अहिन[16] दीन अज कहिय बैंन, जे धर्मनिष्ठ[17] ते तहँ जरैं न।१४।
जो पापनिष्ठ[18] बलि दुष्ट जेहि, तचिहैं[19] जनमेजय संत्र[20] तेहि ॥
पुनि सुनहु एक१ अपरहु[21] उपाय,बंचिहो कितेक वह बिधि विधाय[22] १५

१सर्प२अरु३घमंड सहित४हल्लिक नामवाले५इन नामोंवाले ६ इनको आदि लेकर ७ विषय भोग से निवृत्त होकर ॥ ११ ॥ ८ब्रह्मा ने ९ प्रसन्न होकर१० शेषनाग ने कहा कि मेरे भाई दुष्ट हैं ११ भूमि को धारण करो ॥ १२ ॥ जब से इस भूमि को शेष धारण करते हैं, अब वासुकि १२ आदि सर्पों का १३ वृत्तान्त है १४ कद्रू के शाप से ॥ १३ ॥ हे ब्रह्मा आप १५ कृपा करो १६ सर्पों को दीन देख कर ब्रह्मा ने वचन कहे १७ जो धर्म में निष्ठा करके स्थित हैं वे वहाँ नहीं जलेंगे ॥ १४ ॥ जो पाप में स्थित हैं १८ और दुष्ट हैं जनमेजय के २० यज्ञ में १९ जलेंगे २१ दूसरा २२ वह रीति करके ॥ १५ ॥

यायावर कुलबिच चित्त चारु, ह्वैहैं द्विजपुंगव जरतकारु ॥
खोजहिं सु बिप्र निज नाम नारि, बासुकि स्वसाहु सुहि नाम धारि १६
वह ताहि देहु यह मत मदीय, आस्तीक पुत्र ह्वैहैं तदीय ॥
सो जाय निवारहिं सर्प जाग, आये अज सासन सु सुनि नाग।१७।
जब जरतकारु हुव वह प्रबीन, बासुकि बिबाहि जिहिं जामि दीन ॥
आस्तीक पुत्र ताबिच बिधाय, बन जरतकारु गय बिरति पाय।१८।
इत बिष्णुरात सुत कुपित अंग, उत्तंक बचन प्रेरित अभंग ॥
मंत्रिन प्रति पुच्छिय जनक नास, अक्खिय उन तच्छक अनय आस।
इक समय गयो मृगया नृपाल, मुनि गल तहँ डार्यो मृतक ब्याल।१९।
तस छात्र नाम शृंगी सताप, सो देतभयो नृपहेत साप ॥ २० ॥
चक्री जिहिं गुरुगल धरिय ताहि, तच्छक दिन सत्तम डसहु जाहि॥
जब भूप सुनिय यह वज्र वात, इक थंभमहल किय बिष्णुरात।२१।
नहिं पवन जान कहुँ छिद्र तास, किय तत्थ परिच्छित सतत बास ॥
आयउ जब सप्तम दिवस छिप्र, तच्छकहु चल्यो ह्वै बृद्ध बिप्र ।२२।

यायावरों (कहीं घर बांध कर नहीं रहने और अमावास्या व पूर्णिमासी को होम किया करते हैं उन ब्राह्मण विशेषों को यायावर कहते हैं) के कुल में श्रेष्ठ चित्त वाला ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जरत्कारु नामक होवेगा वह अपने नाम की स्त्री को खोजैगा, १उसी नाम (जरत्कारु) को धारण करनेवाली वासुकि नाग की ब हिन ॥ १६ ॥ वह उस जरत्कारु को देना यह २ मेरा मत है ३ उसके ४ सर्प यज्ञ को रोकेगा ५ ब्रह्मा की यह आज्ञा सुन कर ॥ १७ ॥ ६ बहिन को ७वि रक्तपन पाकर ॥ १८ ॥ ८ परीच्छित के पुत्र (जनमेजय) ९ अपने पिता के ना श का कारण मंत्रियों से पूछा उन्होंने कहा कि तच्छक सर्प की ही १० अनी ति हुई ॥ १९ ॥ शिकार गया वहां एक मुनि के गले में मराहुआ सर्प डाल दिया उस मुनि के शृंगी नामक शिष्य ने क्रोध सहित राजा को श्राप दि- या ॥ २० ॥ कि जिसने जानकर गुरु के गले में सर्प डाला है उसको सातवें दिन तच्छक नाग डसो. जब यह वज्र पड़ने के समान वार्ता सुनी तब राजा परीच्छित ने एक थंभे का महल बनाया ॥ २१ ॥ जिसमें पवन जाने को छिद्र भी नहीं था उसमें परीच्छित ने निरंतर वास किया, जब सातवां दिन आ- या तब तच्छक भी बूढा ब्राह्मण होकर शीघ्र चला ॥ २२ ॥

दोहा

तच्छकसौं मगमैं मिल्यो, कास्यप नाम द्विजेस ॥
कोन अप्प जावत कहाँ, भाख्यो तिहिं भुजगेस ॥ २३ ॥
डसिहै तच्छक कौरवहिं, तहँ द्विज अक्खिय जात ॥
लैहौं ताहि जिवाय मैं, बलि लैहौं बसु व्रात ॥ २४ ॥
बटतरु डसि तच्छक कह्यो, भस्म भयो यह जानि ॥
याहि जिवावहु हम नृपहिं, लैहैं जीवत मानि ॥ २५ ॥
तोयहि कास्यप मंत्रि तब, छिरकिय भस्म असेस ॥
ततखिन बढि न्यग्रोध तरु, बन्यौं जथातथ बेस ॥ २६ ॥
जान्यौं तच्छक बिप्र यह, लैहैं ध्रुवहि जिवाय ॥
कह्यो बित्त हित जात तुम, प्रचुर कार्ज कछु पाय ॥२७
द्रव्य सु हमतैं लेहु द्विज, अक्खिय तच्छक एह ॥
तासौं लै बसु बिप्र तब, गो बाहुरि निज गेह ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

तब तच्छक बहु नाग बेस तजि बिप्र बनाये ॥
फलबिच कृमि हुव अप्प लै सु नृप पँहँ जुरि आये ॥
दे आसिख फल ताहि दंभ द्विजगेह गये सब ॥
इत नृप फलहिं बिदारि मध्य कृमि देखि कह्यो अब ॥
सप्तम७हु आज बित्यो दिवस ठैह ऋत जो द्विजबैन ननु ॥

१ आप कौन हो और कहां जाते हो यह २ तक्षक ने उस कश्यप नामी ब्राह्मण से कहा।२३। ब्राह्मण ने कहा कि राजा परीक्षित को तक्षक डसैगा उसको मै जिवा लूंगा और फिर धन का समूह लूंगा।२४। तक्षक ने बड़ के वृक्ष को डस कर कहा कि यह भस्म होगया है जिसको जिवा लो तो हम राजा को जिया हुआ मान लेंगे. कारयप ब्राह्मण ने पानी को मंत्र कर सब भस्मी पर छिड़का सो तुरंत बढ कर बड़ का वृक्ष जैसा था वैसा उत्तम बन गया ॥२६॥४ कोई कार्य पाकर ३ बहुत धन के लिये तुम जाते हो ॥२७॥ वह ब्राह्मण तक्षक से ५ धन लेकर अपने घर को पीछा फिर गया ॥ २८ ॥ तब तक्षक ने बहुत सर्पों को अपना वेस छोड कर ब्राह्मण बनाया और फल के भीतर आप कीड़ा होकर रहा. कपटी ब्राह्मण अपने घर गये. जो त्रिश्चै ही श्राप देनेवाले

ता डसहु होय आहि यह कहि रु कृमि सु छुवायउ स्वीय तनु ।२९।

॥ दोहा ॥

छुवतहि तच्छक होय कृमि, डस्यो परीच्छित अंग ॥
भस्म भयो प्रासाद जुत, गो निज गेह भुजंग ॥ ३० ॥
यह सुनत मानहुँ भयो, ज्वलन आज्य संजोग ॥
जनमेजय आहि जागही, मन्यौं भूपन भोग ॥ ३१ ॥
द्विज बुध करि इक्कत द्रुतहि, अरु अमेय उपहार ॥
भूपति तब दिच्छित भयउ, करन काद्रवन छार ॥ ३२ ॥

॥ षटपात् ॥

च्यवन बंस अवतंस चंड१भार्गव होता१हुव ॥
मुनि जौमिनि २ सांगरव २ भये ब्रह्मा २ विदग्ध धुव ॥
ऋषि पिंगल३अध्वर्यु३कौत्स४द्विजवर उद्गाता ४ ॥
व्यास ५ छात्रगन सहित सभ्य ५ हुव संविददाता ॥
उद्दालक१नारद२कालघट३स्वेतकेतु४पर्बत५जठर ६ ॥
आत्रेय७कुंड८देवल९आसित१०बलि२ ऋत्विज इत्यादि बर ॥३३॥
औषट बौषट बषट स्वधा स्वाहादि सब्द रचि ॥
अनल कुंड आहुति हवन सर्पन समंत्र मचि ॥

ब्राह्मण का वचन सत्य होवे तो यह कीड़ा है वह सर्प होकर डसो यह कहकर उस कीड़े को अपने शरीर से छुआया ॥ २९ ॥ १ महल सहित ॥ ३० ॥ यह सुनते ही मानों अग्नि से घृत का संयोग हुआ इसप्रकार तेज होकर जनमेजय ने सर्प यज्ञ करना ही राजाओं के करने योग्य विषय माना ॥ ३१ ॥ पंडित ब्राह्मणों को शीघ्र इकट्ठे करके उपमा रहित (अत्यन्त) सामग्री इकट्ठी करके फिर राजा ने यज्ञ की दीक्षा ली. सर्पों को भस्म करने के लिये।३२। च्यवन वंश के मुकुट चंड मुनि होता (ऋग्वेद के जाननेवाले) हुए. संगरव के वंश के जैमिनि मुनि ब्रह्मा(सब वेदों के जाननेवाले) हुए. पिंगल ऋषि अध्वर्यु (यजुर्वेद के ऋत्विज) और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कौत्स मुनि उद्गाता(सामवेद के ऋत्विज) हुए. और वेदव्यास अपने शिष्यों सहित ज्ञान के देनेवाले सभ्य (सभासद) हुए.२पुनि, इनको आदि लेकर और भी श्रेष्ठ ऋत्विज हुए ।३३।
औषट् से लेकर स्वाहा पर्यन्त के शब्द आहुति देने के समय बोलने के हैं

तच्छक बासव सरन जाय किन्नौं अभिबंदन ॥
स्वागत भाख्यो सक्र डरहु जिन कस्यपनंदन ॥
इत सहस्रन अयुतन अर्बुदन भुजग मंत्र अँचित जरिय ॥
तिन्ह कहत वर्ण कुल नाम जे बासवेय कछु कछु करिय ॥३४॥
कोटिस१मानस२पूर्ण३चक्र४सल्ल५पाल६हलीमक७॥
पिच्छल८कौणप९शरण१०कालदंतक११पुनि तच्छक१२ ॥
कालबेग१३रु हिरण्यबाहु१४पुनि नाग प्रकालन१५॥
एते वासुकिपुत्र जरिय कुंडोदर[2] ज्वालन ॥
पारावत१पांडुर२हरिण३कृश४पारियात्र५मोद६रु सरभ७ ॥
रु विहंग८हंसतापन९बहुरि भयो प्रमोद१०हु भस्मप्रभ[3] ॥३५॥
ए ऐरावततनय बहुरि तच्छकसुत जानहु ॥
पुच्छांडक१मंडलक२पिंडसेक्ता३हु प्रमानहु ॥
सरभ४रभेणक५भंग६बिल्वतेजा७रु विरोहन८ ॥
उच्छिक९सलकर१०मूक११शिली१२सुकुमार१३प्रवेपन१४
मुद्गर१५सिसुरोमा१६महाहनु१७बहुरि सुरोमा१८बन्हिंहुत[6] ॥
तच्छकतनूज[7] इतनैं जरिय अब धृदार्कु कौरव्यसुत ॥३६॥
एरक१कुंडल२श्रृंगवेग३वेणी४रु कुमारक५ ॥
बाहुक६वेणिस्कंध७प्रांतक८रु अंतक९धूर्तक१०॥
(रक१तक२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥)
धार्त्तराष्ट्र अब गिनहु संकुकर्ण१रु आहि पिठरक २ ॥
पूर्णांगद३पूर्णमुख४कुठारानन५पुनि सेचक ६ ॥
हरि७सकुनि८अमाहठ९कामठक१०बलि सुषेण११भैरव१२वलियँ।

जिसको रचके सर्पों को होमने की मंत्रों सहित अग्निकुंड में आहुति मची उस समय तच्छक ने इन्द्र के शरण जाकर नमस्कार किया जिसका आदर करके इंद्र ने कहा कि हे कश्यप के पुत्र डरै मत मंत्रो से खींचे हुए सर्प जले उनके वर्ण, कुल और नाम कुछ कुछ वेदव्यास ने वर्णन किये हैं सो कहते हैं ॥ ३४ ॥ १ अरु २ अग्नि कुंड के भीतर अग्नि में जले ३ भस्म की कांति जैसे ॥ ३५ ॥ ४ पुत्र ५ अरु ६ अग्नि में होमे हुए ७ पुत्र ८ सर्प ९ पुनि १०जले

अ०थय१३प्रहास१४मानस१५ऋषक१६पिंडारक१७पुनि कुंडलिय॥
बहुरि सुंड बेदांग१८उद्दपारक१९पिसंग२०ननु॥
बेगवान२१रक्तांग२२सर्वसारंग२३महाहनु२४॥
पुनि बराह२५बीरणाक२६चित्रबेगिक२७पठ२८बासक२९॥
अरुण३०समृद्ध३१सुचित्र३२मणिस्कंध३३रु तिम तरुणाक ३४॥
पुनि नाग परासर३५अहि इते धार्तराष्ट्र सुचि भस्म हुव॥
इत्यादि नाग अँचित अमित धुज्जि गये जमलोक ध्रुव॥३८॥
त्रि३सिर सप्त७सिरनाग किते दस१०सिर हुत जानत॥
सत्रसालिका दुवार गयो आस्तीक बखानत॥
होत्रादिक सब बिप्र ज्यौंहिं जजमान भूप जँहँ॥
व्है प्रसन्न सुनि बिरुद ताहि लिन्नौं बुलाय तँहँ॥
नृप कहिय लेहु आस्तीक बर सु सुनि चंड बुल्लिय सुमति
जौलौं जरैं न तच्छक उरग न बर देय तौलौं नृपति॥३९॥
सक्र सरन तिहिं जानि कहिय चंडहिं महीपमनि॥
बुल्लहु तिहिं सेंद्राय तच्छकाय स्वाहा भनि॥
तबहि चंड तच्छक ससक्र बल मंत्र बुलायउ॥
इंद्रदान भय आनि ताहि तजि स्वर्ग सिधायउ॥
कहि तिष्ठ तिष्ठ आस्तीक तँहँ तीन३बेर करि उच्च कर॥

---

१ सर्प २ निश्चै ही ३ सर्प ४ अग्नि में ५ गणना में नहीं आवें इतने ६ तीन मस्तकवाले ७ होम हुए जानो ८ यज्ञशाला के द्वार पर आस्तीक नामा ब्राह्मण राजा की स्तुति वर्णन करता हुआ गया. होता को आदि लेकर सब ब्राह्मण और यजमान राजा (जनमेजय) ने स्तुति से प्रसन्न होकर उसको भीतर बुला लिया और राजा ने कहा कि हे आस्तीक वर मांग, यह सुन कर श्रेष्ठ बुद्धिवाले चंड मुनि बोले कि हे राजा जब तक तच्छक सर्प नहीं जलै तब तक वर मत दो ॥ ३९ ॥ उस तच्छक को इन्द्र की शरण में जान कर राजा जनमेजय ने चंड मुनि से कहा कि इन्द्र सहित तच्छक भस्म होओ, यह कह कर उसको बुलाओ. तब चंड मुनि ने मंत्रों के बल से इन्द्र सहित तच्छक को बुलाया सो इन्द्र तो अपने जलने के भय से तच्छक को छोंड कर स्वर्ग में चला गया और आस्तीक ने ऊंचा हाथ करके तच्छक से

इम नाग थंभि नृपसौं कहिय मख न हाय यह देहु बर॥४०॥

॥ दोहा ॥

तब वह सत्र समाप्त करि, दयो द्विजहिँ बर भूप ॥
व्यालन हू दिन्नौं सु बर, अब सुनिये अभिरूप ॥ ४१ ॥
यह आस्तीक उदंत सुभ, पढहिँ सुनहिँ मन लाय ॥
हमरो भय तस होय नहिँ, कह्यो अहिन मुद पाय ॥ ४२ ॥
याबिच मंत्रहु जे लिखे, व्यासदेव ऋषिराज ॥
वे समस्त मूलहि लिखे, सर्प अभयके काज ॥ ४२ ॥
असितं चार्तिमन्तं च, सुनीथं चापि यः स्मरेत् ॥
दिवा वा यदि वा रात्रौ, नास्य सर्पभयं भवेत् ॥ १ ॥
यो जरत्कारुणा जातो, जरत्कारौ महायशाः ॥
आस्तीकः सर्पसत्रे वः, पन्नगान्योऽभ्यरक्षत ॥ २ ॥
तं स्मरन्तं महाभागा, न मां हिंसितुमर्हथ ॥
सर्पापसर्प भद्रं ते, गच्छ सर्प महाविष ॥ ३ ॥
जनमेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तीकवचनं स्मर ॥
आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा, यः सर्पो न निवर्तते ॥ ४ ॥

"ठहर ठहर" ऐसा तीन बेर कह कर उसको आकाश में ठहराकर राजा से कहा कि यज्ञ नहीं होवे यह वर दो ॥ ४० ॥ १ यज्ञ २ सर्पों ने भी आस्तीक को श्रेष्ठ वर दिया सो वह ३ मनोहर वर अब सुनो ॥ ४१ ॥ इस आस्तीक के वृत्तांत को मन लगाकर जो पढैगा या सुनैगा उसको हमारा (सर्पों का) भय नहीं होवेगा, यह सर्पों ने आनन्द पाकर कहा ॥ ४२ ॥ ऋषिराज वेदव्यास ने महाभारत में जो मंत्र लिखे हैं वे सब सर्पों से अभय होने के कारण यहां पर मूल ही लिखदिये हैं. ॥ मंत्र के श्लोको का अर्थ– असित, आर्तिमन्त और सुनीथ इनका जो दिन में वा रात्रि में स्मरण करै उसको सर्पका भय नहीं होता ॥१॥ जरत्कारु माता से जरत्कारु नामक पिता से पैदा हुए बडे यशवाले जिस आस्तीक ऋषि ने तुम सर्पों की रक्षा की है॥२॥ उसका स्मरण करनेवाले मुझको हे महाभागो! तुम मारनको योग्य नहीं हो. हे महाविषवाले सर्प ! तेरा कल्याण हो तू पीछा जा ॥ ३ ॥ जनमेजय के यज्ञ में जो आस्तीक को सर्पों ने कहे उन वचनों का स्मरण कर आस्तीक के वचन सुन करके

षट्पदी ॥

जनमेजय राजनैर सत्र हयमेध विचारिय ॥
विजयपट्ट हयभाल बंधि भुव फिरन निकारिय ॥
उग्रसेन निज अनुज संग पठयो हय रक्खन ॥
पहुँचे जित जित प्रबल लचे तित तित नृप लक्खन ॥
उत अटतैं[2] उरुच्छय धरनिधव कौसलेस हय रुक्कयो ॥
मित्रकी भीर तहँ सत्रुघन४३ देहनिज सु सस्त्रन दयो ॥४॥

दोहा

तनय सत्रुघनकै भयउ, कलना आकर[3]रत्न ॥
नाम शालिबाहन४४ निडर, संगर दलन सपत्न ॥ ५ ॥
मगधराज सुभवानको, भागिनेय यह भूप ॥
जनकमित्र तनया ज्वला४४।१, इहिं परनी अभिरूप ॥ ६ ॥
अर्थिजनन दिन्नौं अनिस, इहिं नृप कनक अमान ॥
तिहिं कारन याको अपर२, हुव सुमेरु४४अभिधान ॥ ७ ॥
कौरवपतिके देसकौं, बंधि चमू बलवान ॥
लुट्टन रन जित्तन लग्यो, थिर उज्जर करि थान ॥ ८ ॥
निडर धीर गंभीर नृप, जनमेजय यह जानि ॥
उग्रसेन सोदर सुता, ताहि दई हित तानि ॥ ९ ॥

अश्वमेध यज्ञ करना विचार और घोड़े के ललाड़ पर विजयपत्र बांध कर निकाला. १ नये ॥ २ अयोध्या की ओर फिरते समय उरुच्छय नामक अयोध्या के राजा ने उस घोड़े को बांध लिया वहां मित्र की सहाय होकर चहुवाण शत्रुघ्न ने अपना शरीर शस्त्रों को दिया अर्थात् युद्ध में मारागया ॥ ४ ॥३कलना नामक स्त्री रूपी खान मे रत्न रूप४युद्ध में शत्रुओं को दलनेवाला ॥ ५ ॥ यह राजा शालिवाहन मगधदेश के राजा शुभवान् का भांणेज था जिसने अपने पिता के मित्र की ज्वला नामक सुन्दर पुत्री को ब्याही ॥ ६ ॥ इस राजा ने याचक लोगों को निरन्तर विना प्रमाण सोना दिया इसकारण से इसका दूसरा नाम सुमेरु हुआ ॥ ७ ॥ वह शालिवाहन बलवान् सेना बनाकर जनमेजय के देश को लूट करके मजबूत स्थानों को ऊजड़ (निर्जन) करके जीतने लगा ॥ ८ ॥ जनमेजय ने अपने सगे भाई उग्र-

कलाकुसल अभिधान करि, गोदा४४।२सुंदरगत्त ॥
व्याहि सालिबाहन४४बन्यों, अब कुरुकुल अनुरत्त ॥ १० ॥
जनमेजयको पट्ट लिय, सतानीक तस पुत्र ॥
भयो यहहु विख्यात भुव, नय१ जय२ सुकृत३ तनुत्र ॥११॥
नृप सुमेरु४४सुहि जामिपति, सतानीक सुहि साल ॥
इन दोउनके सुहृदपन, प्रतिदिन बढिग विसाल ॥ १२ ॥
(हिसाल१ बिसाल२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥)

षट्पात् ॥

सतानीक नरनाह सालिबाहन जामिप जुत,
जोगेश्वर सन जाय दुवरहि बेदन सिक्खे द्रुत ॥
गोतम कृपसन अस्त्रतत्व बोध सु सौनकसन,
सहित अंग उप अंग पढि रु आये धरनीधन ॥
बय वृद्धि होय लहि समय वलि निज निज पुत्रन राज्य दिय,
रानिन समेत वासि बनि विपिन बीतराग विधि बपु तजिय।१३।

दोहा

बैदेही विकला जरी, सतानीक नृप संग ॥
जिम सुमेरु४४जुत हुव ज्वला४४।१, अरु गोदा४४।२हुत अंग।१४।
अश्वमेध दत्तक लह्यो, सतानीक नृप पट्ट ।।

सन की बेटी शालिबाहन को दी ॥ ९ ॥ सुन्दर शरीरवाली गोदा नामक कन्या का कलाकुशल नाम रखकर शालिबाहन ने विवाही और अब कुरुकुल से प्रीति रखनेवाला बना ॥ १० ॥ १ नीति, विजय और २ धर्म का ३ कवच (रक्षा करनेवाला) हुआ ॥ ११ ॥ राजा सुमेरु तो ४ बहिनोई (बहिन-का पति) और शतानीक ५ शाला ६ मित्रपन ॥ १२ ॥ राजा शतानीक अपने बहिनोई शालिबाहन सहित याज्ञवल्क्य मुनि से जाकर वेदों को शीघ्र ही सीखा और गोतम वंशी कृपाचार्य से अस्त्र, शौनक से वेदान्त, इसप्रकार सांगोपांग पढकर दोनों भूपति आये. ७ पुनि ८ वन में विरक्तों की भांति दोनों ने शरीर छोडे ॥ १३ ॥ बिदेह की पुत्री विकला अपने पति शतानीक के साथ जली और सुमेरु (शालिवाहन) के सहित ज्वला और गौदा दोनों स्त्रियों ने शरीर होमे॥१४॥शतानीक के पाट पर अश्वमेध

यहहु भयो अतिबल अजित, बीर अतुल रनबट्ट ॥ १५ ॥

नृपति सालबाहन तनुज, सतानीक भानेज ॥

भयउ पुंड्र१ कर्णाटर नृप, कृतवर्मा४५रबितेज ॥ १६ ॥

ससिकुल सन आनर्त नृप, सुता राधिका४५।१नाम ॥

कृतबर्मा४५ सु बिबाह करि, आनी गृह अभिराम ॥ १७ ॥

तामैं कृतबर्मा तनय, भयउ सुबर्मा४६सूर ॥

मगधराज निरमित्रसौं, पढ्यो अस्त्र गुनपूर ॥ १८ ॥

॥ षट्पदी ॥

अग्ग नृपति सहदेव३८पुंड्रजनपद जव जित्तिय ॥

ताके नृप तब भज्जि द्रविड अधिराज सरन लिय ॥

ताकी संतति माँहिं भयउ इक बीर जयद्दल ॥

कृतबर्मा सन आनि सु अब जुज्झ्यो दुद्दर दल॥

हनि समर सालिबाहन सुतहिं जिहिं स्वकीय जनपद लयो।

कर्णाट अधिप अभिषेक लहि भूप सुबर्मा४६तब भयौ ॥१९॥

॥ दोहा ॥

पुंड्रदेस छुटि इम गयो, रह्यो मुलक करनाट ॥

कियउ सुबर्मा४६राज्य तँहँ, अरिन करन उच्चाट ॥२०॥

॥ षट्पदी ॥

नृपति सुवर्मा४६जाय बिदित बिंट्यो सु जयद्दल ॥

को गोद रक्खा १ रण के मार्ग में ॥ १५ ॥ राजा शालिवाहन का पुत्र और शतानीक का भाणेज पौंड्र और कर्णाट नामक दोनों देशों का राजा सूर्य के समान तेजवाला कृतवर्मा नामक हुआ ॥ १६ ॥ ३ आनर्त देश के राजा २ चन्द्रवंशी से ४ सुन्दर ॥ १७ ॥ १८ ॥ आगे राजा सहदेव ने जब पुंड्र देश को विजय किया तब पुंड्र देश के राजा ने द्राविड देश के स्वामी का शरण लिया था उसीके सन्तान में जयद्दल नामक वीर हुआ वह दुस्तर सेना लेकर कृतवर्मा से लड़ा. अपना देश पुंड्रक ने पीछा लेलिया तब कर्णाट देश के स्वामीपन का अभिषेक लेकर सुवर्मा राजा हुआ ॥ १९ ॥ ५ उद्वेग ॥ २० ॥ जयद्दल को घेर लिया जब उस कुशल जयद्दल ने सुवर्मा की सेना में दूत

कहि पठई जिहिँ कुसल दत मुकलि याके दल ॥
हमरी भुव तुम हत्थ करी अनुचित सुहि किन्नी ॥
सोहि बहुरि लहि समय लरि रु तुमसन हम लिन्नी ॥
छोरैं न अवनि जीवत छिनक मंडहु पग दृढकरि मतो ।
बप्पको बैर जो तुम चहहु तनया मम व्याहहु ततो ॥२१॥

॥ दोहा ॥

सुनत सुबर्मा४६लखि समय, किय सुहि अंगीकार ॥
सुना जयदूवलकी समी४६।१, आनी परनि उदार ॥२२॥
नृप जजाति सुत अनु जनन, नृप हुव सुतपा नाम ॥
असुरराज बलि अवतर्‍यो, व्है सुत ताके धाम ॥२३॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

वा बलीकी रानी सुदेष्णामैं दीर्घतमा मुनिसौं अंग१वंग२ कलिंग३पुंड्र४सुह्म५ए पंच५पुत्र भये ॥
तिनके नामन करि अंग१वंग२कलिंग३पुंड्र४सुह्म५ए पंच५ देस बिदित ठये ॥
तिनमैं चतुर्थ४जो पुंड्र ताके कुलमैं या जयदूवलनैं जन्म लीनौं ॥
तानैं कृतबर्माके बैरमैं कर्णाटराज सुबर्माकौं समी नाम अपनी आत्मजा बिबाहि बिदा कीनौं ॥२४॥
सुबर्मासौं समीमैं राजाधिराज दिव्यबर्मा४७भयो ॥

भेज कर कहला भेजा कि हमारी भूमि तुमने अनुचित करके लेली थी वही भूमि फिर समय पाकर तुम से लड़ कर हम ने पीछी ली है सो जीवित रहेंगे जब तक क्षण भर भी उस भूमि को नहीं छोडेंगे, लड़ना है तो दृढ विचार करके पग मांडो (खड़े रहो) और जो तुम अपने पिता का वैर चाहते हो तो मेरी पुत्री वैर मे देता हूं सो व्याह लो ॥ २१ ॥ सुवर्मा ने इस बात को स्वीकार करके समय देख कर जयद्दल की पुत्री समी को विवाह ली।२२। यह जयद्दल कौन था सो आगे कहते हैं कि राजा ययाति के अनु नामक पुत्र के वंश में सुतपा नामक राजा हुआ उसके घर में पुत्र होकर दैत्यों के राजा बलि ने अवतार लिया ॥ २३ ॥ उस बलि नामक चन्द्रवंशी राजा की राणी सुदेष्णा में दीर्घतमा नामक मुनि से ॥ १पुत्री.

ानैं कुरुराज अधिसीम कृष्णाकी दुहिता दयावती४७।१ बिबाह पुरिनके समाजसौं सुजस लयो ॥

दिव्यवर्मासौं दयावतीमैं राजकुमार यौवनाश्व४८ कन्या रंज ी४८ए दोय२ संतान भये ॥

या कन्याकौं दिव्यबर्मानैं अर्कअन्वय अवतंस अयोध्या न ारके अधिराज सहदेवकौं बिबाहि दायजमैं अनेकही द्रव्य दये।२५।

जामैं सहदेवसौं दिव्यबर्माके दौहित्र रघुकुलरवि वृहदश्व- नैं जन्म पायो ॥

अरु चहुवाण चक्रचंडभानु राजकुमार यौवनाश्व४८ देवगिरी । मगधराज स्वच्छकी सुता सुकला४८।१ कौं राक्षस बिबाह करि वयंबरतें जिति लायो ॥

याही समयमैं कुरुकुलराजा विवत्तुनैं गजपुरकौं गंगामैं ोरत जानि कौसांबी पुरीमैं जाय राज्य सुख अनुभूत कस्यो ॥

अरु सुकलामैं यौवनाश्वसौं कुमार हर्यश्व४९ तथा प्रीतिम ी४९ चारुमती४९ मतिमती४९ यह कन्याको त्रय३ भयो तिननैं स्व वरमैं एक१ अवंती अधीस प्रामारराज भीमको कुमार रामसेन हीं बस्यो ॥ २६ ॥

अरु हर्यश्व कुमार४९ नैं सूकरराज चालुक्य हरवाय५२ की न्या करेणुमती४९।१ विवाहि आनी ॥

तामैं हर्यश्वसौं राजकुमार अजपाल५० तथा तनया तरणि ी५०ए दोय२ अपत्य भये तिनमैं तरणीका५० तो जनकनैं मगध न श्रुतंजयकौं बिबाही सो देवगिरी जाय भई पट्टरानी ॥

राजा हर्यश्वके अनंतर राजकुमार अजपालनैं किसोरही ास्थामैं राज्य सम्हास्यो ॥

ी१ पंडितो के समाज से३ सूर्यवंशी के४ मुकुट५ स्वामी॥२४॥२५॥६ दोहिता, वंशी यों का सूर्य ७ हस्तिनापुर को ८ अनुभव किया. ९ उज्जीण के स्वामी सूकर नामक चत्र के राजा११ पुत्री१२ सन्तान१३ कन्या के पिता ने१४ पीछे

अरु चेदिराज सिसुपालबंस अवतंस राजा द्युमत्सेनकी दु
हिता दुर्मिला५०।१कौं बिबाह दिग्बिजयपैं प्रस्थान विचार्यो।२९।

॥ दोहा ॥

लोचन गज पावक३८२५मित, कलिजुग हायन[3] जात ॥
पट्ट लहिय अजपाल प्रभु, खल खंडन भुव ख्यात ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वी
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णाने शालिबाहन४४ज्वला४३।१गोदा४४।२कृ
तवर्म४५राधिका४५।१सुवर्म४६शमी४६।१दिव्यवर्म४७ दयावती ४७
।१योवनाश्व४८सुकला४८।१हर्यश्व४९करेणुमती४९।१ समासच-
र्याबर्णानहर्यश्वानन्तरप्राप्तपट्टायिवोढचेदिराजद्युमत्सेनदुहितृकाऽज-
पाल५०दिग्विजयविचारणं त्रिंशो३०मयूखः ॥३०॥ आदितो द्विस-
प्ततितमः ॥ ७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ षट्पात् ॥

चाहुवान अजपाल ५०चढिग[4] दिग्विजय विचारन ॥
बीस लक्ख[5]२००००००दल बिपुल सहँसबिंसति २००००बडबारन
तीन लक्ख३०००००तुक्खार सहँस बासठि६२०००साजि स्यंदन[9]॥
प्रबल सेस[10]१६१८०००पाइक्क करन [11]अरि नरन निकंदन ॥
कुंतल१बिदर्भ२केरल३द्रविड४चोल५अधिप नमि संग हुव॥

१चंदेरी के राजा शिशुपाल के वंश के मुकुट२पुत्री३कलियुग के वर्ष जाते समय राजा अजपाल ने पाट लिया जो दुष्टों को मारने में पृथ्वी में प्रसिद्ध है ।२८।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशवर्णन में शालिवाहन और उनकी स्त्रियें ज्वला और गोदा, कृतवर्म-राधिका, सुवर्म-समी, दिव्यवर्म-दयावती, यौवनाश्व-सुकला, हर्यश्व-करेणुमती के आचरण का संक्षेप वर्णन और हर्यश्व के पीछे पाट बैठ कर चंदेरी के राजा द्युमत्सेन की पुत्री को व्याह कर अजैपाल के दिग्विजय विचारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३०। और आदि से बहत्तर मयूख हुए ।७२।

४ चढा ६ बडा ५ सेना ७ बीस हजार बडे हाथी ८ घोडे९रथ १० बाकी के सौलह लाख अठारह हजार पैदल११शत्रुओं के मनुष्यों को नाश करनेवाले

मरहट्ठ६जित्ति पूरबस्तरफ किय प्रयान हरिअश्वसुव ॥ १ ॥
गंजि मुलक गोनर्द७अंग८बंग९हु द्रुत दब्बिय ॥
बर्मा१०उत्कल११अंध्र१२कामरूप१३हु अप्पन किय ॥
ताम्रलिप्त१४करि जेर मगध१५कोसल१६मैथिल१७जुत ॥
कौसंबी कुरुदेस१८दंडि उत्तर३हंकिय द्रुत ॥
बाल्हीक१९चीन२०तंगण२१अरब२२मूलिक२३तर्ण२४तुखारबलि
लंपाक२६दार्व२७प्रस्थल२८सहित करि नृप जित्तिय तुमुल कलि
निखिल देस नैपाल२९जित्ति जंगल३०सदसेरक३१ ॥
सह सतद्रु३२कसमीर३३अटक३४जित्तिय धमचक्क धक ॥
अरु कंधार३५इरान३६बल्क३७फ्रांस३८रु फिरंग३९जिम ॥
रूस४०मिसर४१सह रूम४२अखिल पच्छिम४जित्तिय इम॥
सोरठ४३सुमील४४आनर्त४५इत अर्बुद४६लग लाये चरन॥
सुनि जग पुकार सत्वर सुपहु पुष्कर वन आयउ लरन ॥

॥ दोहा ॥

(अजैपाल) पूर्वदिशा को चला ॥ १ ॥ पूर्वदिशा में गोनर्द, अंग, वंग, को भी शीघ्र दबाया और वर्म, उत्कल, अन्ध्र, कामरूप को भी अपना करके ताम्रलिप्त, मगध, कोशल, मैथिल, कौशांबी नगरी के साथ कुरुदेश को दंड देकर उत्तर की तरफ चला उत्तर में वाल्हीक, चीण, तंगण, अरब, मूलिक, तूर्ण, तुखार, लंपाक, दार्व प्रस्थल देशों के साथ भयंकर युद्ध किया ॥ २ ॥ सम्पूर्ण नैपाल देश को जीत कर दशेरक सहित जंगल देश को जीता और शतद्रु नदी क किनारे के देश सहित कश्मीर को और अटक नदी के किनारे के देश को युद्ध करके जीता (यहां पर जिन देशों के प्राचीन नाम आये हैं यही नाम अनेक स्थलों पर आते हैं सो वार वार इनका अर्थ करके पूरा पता देने से टीका के विस्तार का भय है इसकारण से ग्रन्थ प्रारंभ से पहिले सब देशों के पते और जहांतक मिल सकेगा वहां तक उनके पर्याय नाम एक ही स्थान पर लिख देवेंगे इसीकारण से यहां देशों के नामों की टीका नहीं की गई है सो पाठक लोग इस त्रुटि को क्षमाकरैं.) सम्पूर्ण पश्चिम के देश इसप्रकार विजय किये और फिर इधर (भारत वर्ष मे) के देशों में सोरठ, सुमील, आनर्त और अर्बुद के राजाओं को अपने चरणों में लगाये फिर संसार के लोगों की पुकार सुनकर वह श्रेष्ठ राजा शीघ्र पुष्कर वन में लड़ने को आया ॥ ३॥

पहिलैं जँहँ चंडासि१ किय, बानसुतन सन जंग ॥
हो तँहँ सो रावन असुर, भो न आयु बल भग ॥ ४ ॥
श्री कन्हरके समयमैं, दुरयो रह्यो डरि दुष्ट ॥
सब जगकौं तिहिं इहिं समय, रुवन लगायो रुष्ट ॥ ५ ॥
बसैं जु पुष्कर गहन बिच, करि गिरिनाग निकाय ॥
जट नामक निज पुत्र जुत, हनत सबन खल आय ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

जहँ जद्दव ध्रुवसेन हुव सु सकुटुंब मारि लिय ॥
पुष्कर तीरथप्रात कोस चउसाट्ठि६४ बिजंन[1] किय ॥
रावन तत्थ सु रहत सूनुं[2] जट साहित महाऽसुर[3] ॥
जिहिं दिन्ने सब जारि खेट१ खर्बट२ निवसथ३ पुर ४ ॥
संगी[4] तदीय[5] रक्खस[6]१ असुर[7]२ बक्र१ बिडाल२ बकाल३ बक ४ ॥
बिकट५ रु बिडंब६ इत्यादि जुरि नरन जित्ति खावत अछक ॥७॥
अग्निहोत्र१ मख२ अखिल निलय किन्नैं तर उप्पर ॥
बिष्टा१ प्रस्त्रव२ बरासि समल किन्नैं सरिता१ सर२ ॥
सब तीरथ३ मग रुंधि श्राद्ध१ तप२ बिहित बिगारत ॥

ऐसी सेना से दक्षिण दिशा के कुन्तल, विदर्भ, केरल, द्रविड़ चोल देशों के राजा नम कर साथ हुए और महाराष्ट्र देश को जीत कर हर्यश्व के पुत्र चहुवाण ने बाणासुर के पुत्रों से युद्ध किया वहां रावण नामक असुर था भो आयु के बल से नहीं मरा ॥ ४ ॥ और यही शठ श्रीकृष्ण के समय में छिपा रहा वही रावण क्रोध करके इस समय संसार को रुलाने लगा ॥५॥ वह रावण नाग पहाड़ (अजमेर और पुष्कर के बीच में पर्वत है उसका नाम नाग पहाड़ है) को अपना घर बना कर पुष्कर वन में रहने लगा और अपने जट नामक पुत्र साहित आकर सब को मारने लगा ॥ ६ ॥ १ निर्जन २ पुत्र ३ बडा असुर रहता था जिसने खेड़े (छोटे ग्राम) पर्वत तथा नदी तट के ग्राम सामान्य ग्राम और पुरों (जिसमें बाजार होवे और आसपास के ग्रामों का जहां व्यापार होता होवे उसको पुर कहते हैं) को जला दिये ५ उसके ४ साथी ६ राक्षस और ७ दैत्य , ॥ ७ ॥ यज्ञ के सब घर नीचे ऊपर कर दिये मूत्र की वर्षा करके नदी और तालावों को मल सहित करदिये

इत उत खावत अटत औत बिप्रन संहारत ॥
प्रति बसति[1] सिला पब्बय[2] पटकि कुटिल लोक चूरन करत ॥
हा हंतकार सब ठाम हुव ज्वालमाल व्याकुल जरत ॥८॥

दोहा

बरुनदिसाके[3] बिजयमैं[4], यह दुख पाय अपार ॥
प्रनमि करी अजपालसौं, प्रचुरनैं जाय पुकार ॥ ९ ॥

षट्पात्

अनुचित सुनि अजपाल प्रबल हंकिय रावन पर ॥
अरु पुक्खरवन[5] आय बिंटिलिय[6] नागधँराधर[7] ॥
सूनु[8] सुभट सब सज्जि खलहु आयो अनखावत ॥
सकति१ भुसुंडी२सूल३बान४तोमर५बरसावत ॥
रचि रन बजाय भुज उच्चरिय थिर पय मंडहु लरन थपि ॥
चंडासि दाव बहु करि थक्यो पैं अतिबल न मस्यो तदपि।१०।

सौराष्ट्री दोहा

प्रभु अजपाल प्रबीन, सुनि आक्खिय चंडासि नृप ॥
सोसे खल गिनि दीन, न हनैं सो अनुचित निपट ॥ ११॥
मलिन जानि तुहिं मंद[9], नृपति छुवाये सस्त्र नहिं ॥
अब रक्खहु आनंद, मित्र होहु मम संरनको[10] ॥ १२ ॥

षट्पात्

वेद कर्म करनेवाले ब्राह्मणों को, प्रत्येक १ घर पर शिला और २ पर्वत पटक कर ॥ ८ ॥ ३ पश्चिम दिशा के विजय करते समय में ४ बहुत लोगोंने ॥ ९ ॥ ५ पुष्कर तीर्थ के वन में आकर ६ घेर लिया ७ नाग पहाड़ को ८ पुत्र और अपने सुभटों सहित क्रोध करता हुआ दुष्ट (रावण) भी आया और शक्ति आदि शस्त्र अस्त्रों को बरसा कर भुज ठोक कर चहुवाण अनेक दाव करके थक गया तोभी बडा बलवान रावण उससे नहीं मरा।१०। प्रवीण राजा अजपाल बोला कि चहुवाण(चहुवाणों के आदि पुरुष)ने दुष्टों का पोषण किया और तुझको दीन जान कर नहीं मारा सो बहुत अनुचित किया ॥ ११ ॥ ९ हे मूर्ख तुझको नीच जान कर उस राजा ने शस्त्र नहीं छुवाये १० मेरे बाणों का मित्र हो अर्थात् बाणों से मिल ॥ १२ ॥

इम अक्खत खल अनाखि इक्क डारिय गिरि उप्पर ॥
आवत लखि अजपाल सु किय बहु टूक मारि सर ॥
सैय धारि तदनु त्रिसूल भूप मुक्किय रावन रुख ॥
धरि खल सम्मुह पैंड गह्यो दंतन उबाय मुख ॥
सर तिक्ख बहुरि मुक्क्यो सुपहु कट्टयो तिहिं खल बाम कर॥
नहिं संकि तदपि सम्मुह निडर गयउ गज्जि मंडत गुमर ।१३।
तब रावन इक्क तोत्र पंच भल्लक खिजि प्रेरिय ॥
सायक दै नृप सोहु खमग रज रज करि खेरिय ॥
जटके आयुध कट्टि बिकट बक्रहिं करि बिव्हल ॥
तिम बिडाल सिर तोरि निकट लिन्नौं रावन खल ॥
असुरहु कृपान झारिय उछटि हय रु सूत नृपके हनैं ॥
तानैंहु उतरि रथतैं त्वरित घायउ सठ दै असि घनैं ॥१४॥
इहिं अंतर जट आय बिहसि अजपाल बकारिय ॥
नृपके मंत्रिय नील पकरि असि ताहि प्रहारिय ॥
सोमचूड सामंत सरन मारयो बिडंब सठ ॥
मंडलग्ग नृप मारि हन्यौं रावन रावन हठ ॥
जट१बक२प्रमुख्य भज्जिय जबहि भूप बिजय जगजस भरिय ॥
सानंद सुरन बरखे सुमन कहिय अतुल उपकार किय॥१५॥

दोहा

१उस पर्वत को२हाथ में३जिस पीछे त्रिशूल धारण करके रावण की४ओर छोड़ा ५ चौड़ा करके६तीखा बाण७छोडा तोभी८घमण्ड ॥ १३ ॥ रावण ने पांच फलवाला९भाला चलाया१०आकाश मार्ग में११बहुत वार खड्ग चला कर राजा ने रावण को घायल किया ॥ १४ ॥ इस बीच में जटासुर ने आकर हस कर अजपाल को ललकारा उस समय राजा के नील नामक मंत्री ने खड्ग लेकर जट पर प्रहार किया और सोमचूड़ नामक अजपाल के उमराव ने बिडंब नामक असुर को मारा और राजा ने खड्ग मार कर रावण के समान है हठ जिसका ऐसे रावण को मारा१२आदि देवताओं ने प्रसन्न हो कर पुष्पों की वर्षा की और कहा कि बडा उपकार किया॥ १५ ॥

हनि रावन अजपाल इम, गचि तीरथगुरु न्हान ॥
नागअद्रि तल आय नृप, चिंतिय यह चहुवान ॥ १६ ॥
मही कोस चउसट्ठि६४मित, किय असुरन वन घोर ॥
भयउ तिरोहित तीर्थगुरु, इंग रचहिं इहिं ठोर ॥ १७ ॥
यह बिचारि गिरि नागके, कटक अधर अभिराम ॥
प्राची दिस अजमेर पुर, बिरचिय आयत बाम ॥ १८ ॥
सुपहु राम तबतैं बस्यो, यहै नगर अजमेर ॥
पांडव सक मुनि गज अनल३८७,मधु सित बारसि१२वेर॥
किते कहत रविकुलकलस, भो अजपाल जु भव्य ॥
यह पुर तिहिं विरच्यो रु इहिं,नृप७०।१जीरन किय नव्य २०

पट्पात्

इम बसाय अजमेर मध्यदेसहु किन्नैं बस ॥
अरु अमोघ१ आदेश जगत बिसतारि लियउ जस ॥
सुनतहि जाको नाम रहत जिमतिम चित्रा२कृति ॥
तप्यो नृपति इहिं तोर सबन उप्पर धारत धृ३ति ॥
पुहवी प्रसिद्ध याको अपर जय करि नाम जिगीसु५०हुव ॥
जिन नगर आय मिहिकावतिय किय सोभितकरनाट भुव ॥२१॥

दोहा

नागपहाड़ के नीचे आकर यह विचार किया कि ।१६। चौसठ कोस प्रमाण-वाली भूमि को असुरों ने घोर वन कर दिया जिससे पुष्कर तीर्थ छिप गया इसकारण इस फैलाव में नगर बसावें ॥ १७ ॥ नाग पर्वत के शिखर के नीचे पूर्वदिशा में पुण्यकर्मों के भोग से अजमेर नामक चौड़ा शहर बसाया ।१८। हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह ! युधिष्ठिर के३८७के संवत में चैत्र सुदि बारस को यह अजमेर पुर बसा है ॥ १९ ॥ कितनेक कहते हैं कि सूर्यवंशियों के कुल का कलश अजपाल नामक राजा योग्य हुआ था उसने अजमेर नगर बसाया है और इस अजपाल चुहाण ने जीर्ण को नया किया है ॥ २० ॥
१पीछा नहीं फिरे ऐसा हुकुम२चित्राम की आकृति के समान३धैर्य को धारण करके भूमि में विजय करने के कारण इसका दूसरा नाम जिगीषु (जीतने

दिव्यबर्म४७नरनाहसों, बढती संतति जानि ॥
ब्याह च्यारि४किन्नैं बहुरि, प्रनति उक्त पहिचानि ॥ २२ ॥

षट्पात्

प्रथम दुर्भिला५०।१परनि जित्ति पुनि सकल दिगंतर२ ॥
अब मातुल पुरसानु५३सुता सुगुणा५०।२ब्याहिय वर ॥
मधु महीप५२प्रतिहार सुता लावण्यवती५०।३जिम ॥
रविकुल रैवतराज़ तुंग दुहिता वृंदा५०।४तिम ॥
पंचमी५उमा५०।५मथुरा नृपति,सेनपाल तनया परनि ॥
अजपाल५०नगर मिहिकावतिय धन्न्य अखिल भुग्गिय धरनि।२३।

दोहा

याहि समय अजपालको, सालक३ लुद्दर५३नाम ॥
कोसलेस नृप अश्वरथ, हन्यौं असुत रनधाम ॥ २४ ॥
पितर जाहि प्रतिहार कुल, निखिल गिनत नृप४ राम ॥
तास पट्ट लिय अनुज५ तस, बिनय महीपस५४नाम ॥२५॥

रोला

नृप अजपाल तनूज६ भये तेरह१३प्रसिद्ध७ भुव ॥
प्रथम नाम भटदलन५१।१महासेन५१।२सु द्वितीय२हुव ॥
महाबाहु५१।३पुनि भीमसेन५१।४धृढधन्वा५१।५जानहु ॥
अश्वपति५१।६रु तिम नृपति५१।७जगतपति५१।८प्रथित८प्रमानहु ॥
सुकर्मा५१।९रु भगदत्त५१।१०इंद्रदत्ताख्य५१।११धनेश्वर५१।१२ ॥
विष्णुदत्त५१।१३सब अनुज९ एहि प्रतिजगति१३बीरबर ॥

की इच्छावाला) हुआ ॥ २१ ॥ दिव्यवर्म नामक राजा से चहुवाणों की सन्तान बढने लगी इस बात को जान कर कि हम अधिक विवाह करेंगे तो हमारी सन्तान भी अधिक बढैगी१करी हुई ॥ २२ ॥ २ दिशाओं के अत तक ॥ २३ ॥ ३ शाला को४हे राजा रामसिंह उस लुद्दर को सब प्रतिहार कुल पितर (विवाह करने से पहिले जो युद्ध में मारा जाता है अथवा विना सन्तान हुए माराजाता है उसको उसके कुलवाले पितर मान कर पूजते हैं) ५लुद्दर के छोटे भाई विनय ने॥२५॥६पुत्र७प्रसिद्ध।२६।८इन्द्रदत्त नामक९सब

प्रथम१चतुर्थ४रु नवम९चेदि अधिराज सुता सुत ॥
जद्दु जामेयं द्वितीय२षष्ट६सप्तम७अष्टम८जुत ॥ २७ ॥
तीजो३पंचम५दसम१०जन्यौं चालुक तनयालयं३ ॥
प्रतिहारन भानेज इंद्रदत्त५१।१सु अतीतंभय ॥
भ्रात धनेश्वर५१।१२विष्णुदत्त५१।१३वृंदा५१।४जाठरंजनि ॥
इन दोउन२अनुजात सुता रुचि५१तियन सिरोमनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कुरुपति सुचिरथको कुमर, बुल्लि परिम्लुच नाम ॥
परिनाई अजपाल इहिं, रुचि५१तनया अभिराम ॥ २९ ॥
भटदलनहिं दै राज्यभर, कानन रहि लहि काल ॥
बिग्रह छोरयो जोगबल, पुहवीपति अजपाल ५० ॥ ३० ॥
पांडव सक नभ छ चउ४६०मित, जहँ कलिहायन जात ॥
भूप भयो तहँ भटदलन५१, बसुधातल विख्यात ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनेऽजपाल ५० दिग्विजयन-रावण१ बिडाल २ बिडम्बा ३ ऽसुररक्षोध्वंसनाऽजमेरनगरनिर्माणमहिषी-दुर्मिला ५०।१ सुगुणा ५०।२ लावण्यवती ५०।३ वृन्दो ५०।४ मा ५०।५ सन्ततिभटदलनाऽऽदिसुतत्रयोदश १३ कन्यारुचि १ समुद्भवनकोसलेशाऽश्वरथप्रतिहारलुट्टर ५३ निपातनलद्बुजसु-

से छोटा १ चन्देरी के राजा की बेटी के बेटे २ यदुवंश के भाणेज ॥ २७ ॥ सोलंखी की ३ पुत्री ने ४ निर्भय ५ उदर से ६ छोटे ।२८। ॥२९॥ राज्य का भार अपने पुत्र भटदलन को देकर वन में रहकर समय पाकर राजा अजपाल ने योगबल से शरीर छोडा ॥ ३० ॥ युधिष्ठिर के संवत के अनुसार कलियुग के ४६० वर्ष जाते समय भूमितल पर प्रसिद्ध भटदलन नामक राजा हुआ ॥ ३१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में अजपाल का दिग्विजय, रावण-विडाल-बिडंब आदि दैत्य और राक्षसों को मारना, अजमेर नगर का बसाना, राणी दुर्मिला-सुगुणा-लावण्यवती-वृन्दा-क्षमा की सन्तान भटदलन आदि तेरह पुत्र और रुचि

तविनयमहीप ५४ बिंबस्थलाऽधिपत्यप्रापणवैखानसाऽजपालत
नुत्यजनभटदलनराज्यसमासादनमेकत्रिंशो ३१ मयूखः ॥ ३१ ॥
आदितस्त्रिसप्ततितमः ॥ ७३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पत्तन मिहिकावती, भटदलन ५१ सु हुव भूप ॥
करन किति वितरन करन, रन कपिकेतन रूप ॥ १ ॥
जनक बैर रावन तनुज, तकत अवसर पाय ॥
निस सोवत नृपके अनुज, अखिल १२ हनें जट आय ॥२॥
आसापूरनि स्वप्न दै, सावधान नृप कीन ॥
नतो जनन चंडासिको, खल सु करैं सब खीन ॥ ३ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

कर्णाटराज चहुवान भटदलन ५१ नैं कार्तवीर्य कुलाऽवतं
स कुंतलाऽधिराज कमलसेनकी कन्या कांति ५।१।१ नाम बि
बाहि आनी ॥

तामैं चहुवानचक्रचूडामनिसौं लोहराज५२।१निम्मराज५२।२
अनंगराज ५२।३ तीन ३ ही भये महादानी ॥

नामक कन्या का पैदा होना, अयोध्या के राजा अश्वरथ का प्रतिहार लुट्टर को मारना उसके छोटे भाई राजा विनयका विंबस्थल के स्वामिपन को प्राप्त होना, वानप्रस्थ होकर अजपाल का शरीर छोडना, भटदलन का राज्य प्राप्त होने का इकतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥ और आदि से तिहत्तर मयूख हुए ॥ ७३ ॥

इसप्रकार मिहिकावती नामक पुर में भटदलन राजा कीर्ति करने के अर्थ दान देने में कर्ण के समान और युद्ध में अर्जुन के समान हुआ ॥ १ ॥ रावण के पुत्र ने पिता के वैर को देख कर समय पाके रात्रि में सोतेहुए भटदलन के सब छोटे भाइयों को जटासुर ने मार डाले ॥ २ ॥ आशापूरण नामक कुलदेवी ने राजा भटदलन को स्वप्न में सावधान कर दिया नहीं तो वह दुष्ट चहुवाण के सब वंश को ही नाश कर देता ॥ ३ ॥ १ कार्तवीर्य के कुल के मुकुट २ कुन्तल देश के स्वामी ३ चहुवाण गण के शिरोमणि भटदलन से

जिनमैं बडे दोहू २ तो अप्रजही किसोर[2] अवस्थामैं मातुलके[3] निकेत[4] जावत असुरननैं मारिलये ॥

अरु उभय २ ही धारा तीर्थमैं देह डारि बसुधेश्वरके वंसके[5] पूजनीय पितर भये ॥ ४॥

(षट्पदी)

लोहराज५२।१ अरु निम्मराज५२।२ सोदरभ्राता[6] दुव२ ॥
जनँपद[7] कुंतल जात मग्ग असुरन आहव[8] हुव ॥
रावन सुत जट १ असुर बहुरि बक२ असुर महाबल ॥
लैन बैर हठ लग्गि खिज्जि पहुँचे दकाल[9] खल ॥
बरखे त्रिसूल१ तोमर[10]२ बिसिख[11]३ गदा४ सकति५ घन६ प्रास[12]७ गन ॥
अभिमन्न्यु तरह कट्टत इनहिं रुपे उभय२ चहुवान रन ॥ ५ ॥
तीन३ पहर रन तुमुल[13] जुरत बालक न हटे जब ॥
असुरन माया अतुल तमकि उप्पर प्रेरी तब ॥
न पटि सके सिसु अस्त्र खलन बीचहि रन रोहे[14] ॥
माया करि इम बिबस लगे घुम्मन दुव२ मोहे[15] ॥
बक१ जट२ सु पिक्खि अनुक्रम आसिन[16] दुव२ बालन सिर कट्टिलिय ।
भटदलन सुतन बिनु सिर बहुरि कलह पंच५ घँटिका[17] करिय ॥६॥

पादाकुलकम् ॥

लोहराज५२।१ अरु निम्मराज२ दुव२, रन तीरथ इम पूज्य पितर हुव॥
बपु[18] भटदलन५१ नरेस तज्यो जव, लही अनंगराज५ग।३ गाद्दिय तब।७।

१ विना सन्तान २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था से पहिले ही (दशवर्ष से ऊपर और पन्द्रह वर्ष से नीचे की अवस्था को किशोर कहते हैं) ३ मामा के ४ घर जाते समय दैत्यों ने मार डाला ५ चहुवाण वंश के ॥ ४ ॥ ६ एक उदर से पैदा हुए भाई ७ कुन्तल देश में जाते हुए दैत्यों से ८ युद्ध हुआ ९ ललकार (प्रचार) के १० शक्ति विशेष (सांग) ११ बाण १२ भाला ॥ ५ ॥ १३ भयंकर १४ युद्ध में रोक लिये १५ मूर्च्छित होगये तब बकासुर ने लोहराज का और जटासुर ने निम्मराज का इस अनुक्रम से १६ तरवारों से शिर काट लिये फिर भटदलन के पुत्रों ने पांच १७ घड़ी तक विना मस्तक युद्ध किया ॥ ६ ॥ जब राजा भटदलन ने १८ शरीर छोड़ा तब अनंगराज ने गद्दी ली ॥ ७ ॥

अर्बुदपति सोमार्क नरेश्वर, ससि जदु क्रोष्टु वंस दीपक बर ॥
सुता तासु ससिभानु५२।१सयानी,परनि अनंगराज५२नृप आनी।८।
रबि अन्वय नेपाल धराधन, कीर्तिसेन अभिधान महामन ॥
सुता तास गुन नाम सिराही,कीर्तिमती५२।२दूजे२नृप ब्याही ।९।
चोलदेस हैहय कुल भुखन, बसुधापति अभिधानँ बिदूखन ॥
तास सुता आव्हँय करि भामा५२।३,
यह ब्याहिय तीजी३ अभिरामा ॥ १० ॥
हुवइकबीस२१ अनंगराजसुत,भीम५३।१रुधर्मपाल५३।२ पाटवजुत
बहुरि धर्मरत५३।३ रत्नपाल५३।४ हुव,
रुक्मरथ ५३।५ रु रुक्मेस ५३।६ धीर ध्रुव ॥ ११ ॥
रुक्मकोस५३।७ पृथ्वीपाल ५३।८ रु पुनि,
रुक्मसेनु ५३।९ हरिभानु ५३।१० लेहु सुनि ॥
चंद्रभानु ५३।११ अरु भानु५३।१२ कित्तिकर,
जगद्भानु ५३।१३ बलि सोमदत्त५३।१४ बर ॥ १२ ॥
जयचंद्र ५३।१५ रु अन्वय चंद्र५३।१६ हु जिम,
देबीचंद्र ५३।१७ त्रिलोकचंद्र५३।१८ तिम ॥
अमर ५३।१९ रु दीपचंद्र५३।२० मन उज्वल,
ब्रह्मदत्त ५३।२१ सब अनुज महाबल ॥ १३ ॥
कीर्तिमती५२।२ औरस पहिले दस१०,
जिम ससिभानु५२।१ तनय खट६ अतिजस ॥
देबीचंद्र५३।१७आदिपंचक५जनि हुवभामा५२।३हुतनूजरत्नखानि १४

१चन्द्रवंशी यादवों में राजा क्रोष्टु के वंश को प्रकाश करनेवाला ॥८॥ २सूर्यवंशी नैपाल के राजा कीर्तिसेन नामक बडे मनस्वी की बेटी दूसरे विवाह में परणी ॥ ९ ॥ ३ बिदूखन नामक ४ भामा नामवाली ५ मनोहर ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पहिले गिनाये हुए दश पुत्र कीर्तिमती के उदर से पैदा हुए इसीप्रकार बडे यशवाले छः पुत्र शशिभानु के पेट से उपजे, देवीचन्द्र आदि पांच पुत्रों को जन कर भामा नामक राणी भी पुत्रों रूपी रत्नों की खान हुई ॥ १४ ॥

दोहा

बडे भीम५३।१ जुव्वन लहिय, बीस२० अनुज तस बाल ॥
रावनसुत खल जट बहुरि, किय तँहँ कर्म कराल ॥ १५ ॥
परिसर बिच खेलत पकरि, बीसन२० हरि बहिकाय ॥
असुरनकी कुलदेवता, अग्गैं मारिय जाय ॥ १६ ॥
नृप अनंगराज५२ हु तजिय, काननं रहि निज काय ॥
तीन३हि रानिन सहगमन, कियउ पतिव्व्रत पाय ॥ १७ ॥
तब जनपद करनाट पति, भयउ भीम५३ नरनाह ॥
रिपुगन भंजन मानरन, दान१ कृपान२ दुबाह ॥ १८ ॥
रुकमी जँनन बिदर्भपति, नगर भोजकट नाम ॥
दुव२ कन्या नृपदेवकैं, हुव गुन गनन ललाम ॥ १९ ॥

(षट्पात्)

जेठीमति५३।१ अभिधान भीम५३ चहुवान बिवाहिय ॥
अनुजा नीति सु गोडभूप भवदेव परनि लिय ॥
जट खल रावन तनुज तीन३ पीढिन लग छल बस ॥
करिय बंस उच्छेद धरिय चहुवान सोक तस ॥
इक दिन सिकार अद्रिन अटत कंदर बिच किय मुनि दरस॥
आस्तीक बंस उत्तान द्विज सेवन नृप सद्धिय सरस ॥२०॥
हुव प्रसन्न उत्तान कहिय कछु लेहु महीपति ॥

बडा भीम था सो तो युवा होगया और उसके वीस छोटे भाई थे जिनके लिये जटासुर ने भयंकर कर्म किया ॥ १५ ॥ १ ग्राम के समीप (गोरवें में) की भूमि में खेलते हुओं को बहका कर ॥ १६ ॥ २ वन में रह कर अपने शरीर को छोडा ३ साथ जल गई ॥ १७ ॥ कर्णाट देश का पति भीम हुआ जो युद्ध में शत्रुओं का मान मारनेवाला और दान में और युद्ध में दोनों हाथों से बाह (वार) करनेवाला था, यहां दान में दुबाह अर्थात् दोनों हाथो से दान देनेवाला ॥ १८ ॥ रुक्मी के ४ वंश में ५ सुन्दर॥१९॥ मति नामक बडी कन्या को भीम चहुवान ने विवाही और नीति नामक छोटी को भवदेव नामक गोड़ राजा ने व्याही ६ वंश का नाश किया ७ पर्वतों में फिरते समय ॥ २० ॥ राजा ने कहा कि जटासुर हमारी सन्तान को

अक्खिय नृप जट असुर बढन देत न सठ संतति ॥
तातैं एक१हु तनय होय दुष्टन संहारक ॥
दया उदधि यह देहु अप्प जगहित उपकारक ॥
है नागराज भानेज हम करहुँ अरज प्रभुसेससौं ॥
कछु दिन बिताय पावहु तनय इम द्विज कहिय नरेससौं ॥२१॥

दोहा

कहि इम भूपहिं सिक्खदै द्विज बडवामुख जाय ॥
किन्नी अरज अनंत२सौं, असुरन हनन उपाय ॥ २२ ॥
भुवन आय नृप भीम५३हू, चहि अनसन व्रत चंड ॥
आराधन श्रीसेसको अह निस कियउ अखंड ॥ २३ ॥

षट्पात्

उत अक्खिय उत्तान पानि दुव२जोरि सेस प्रति ॥
प्रभुको भक्त नरेस भीम५३बुड्डत तस संतति ॥
इक१ तंतु अवसेस रहिय कछु अप्प अनुग्रह ॥
अद्यावधि सिसु इतर असुर जट भखत खोजि वह ॥
जिहिं त्रास होत व्याकुल्ल जगत रुक्कि बेदन पद्धति रहिय॥
रावरो सरन पंजर बिरुद सोहि सरन भीम५३हु गहिय।२४।

दोहा

नहीं बढने देता इसकारण से हे दया के समुद्र आप जगत्के लिये उपकार करनेवाले हो सो एक ही पुत्र जटासुर आदि दुष्टों को मारनेवाला होवे य ह बर दीजिये, हम नागराज के भाणेज हैं सो आप शेषनाग से अर्ज करो, मुनि ने राजा से कहा कि कुछ दिन बिता कर ऐसा पुत्र पावोगे ॥ २१ ॥१ पाताल में जाकर २ शेष नाग से ॥ २२ ॥ राजा भीम ने भी अपने घर आ कर अनशन (निराहार) भयंकर व्रत करके शेषनाग की दिन रात अखंड आ राधना करी ॥ २३ ॥ उत्तान नामक मुनि ने दोनों हाथ जोडकर शेषनाग से कहा कि राजा भीम आप का भक्त है उसकी सन्तान डूबती है, आपकी कृ पा से एकतन्तु बाकी रहा है आजतक दूसरे बालकों को हेर कर जटासुर खाजाता है जिसके भय से जगत् व्याकुल होरहा है और वेदों के मार्ग रु- करहे हैं, शरण आयेहुओं की रक्षा करने का आपका बिरुद है वही शरण

करिय सु सुनि कर्कोटकहु, अरज सेस प्रति एह ॥
जनन वहहु जामेय है, नाथ धरहु तँहँ नेह ॥ २५ ॥
अनुजकी रु उत्तानकी, इम सुनि अरज अनंत ॥
अति आराधन भीमको, सो पुनि जानि सुमंत ॥ २६ ॥
काद्रवेय एकत्र करि, अक्खिय सब सन सेस ॥
इक्क१जाय तँहँ अवतरहु, असुरहु हनहु असेस ॥ २७ ॥

(नसेस१असेस२अन्त्यानुप्रास)

सबन कहिय श्रीसेस सन, समुझि करहु अघ³ साथ ॥
अब कलिजुग बरतत उहाँ, नरक न डारहु नाथ ॥ २८ ॥

(सचरणगद्यम्)

उत्तानमुनि के समागमके पूर्व चंडासिराज भीमसौं बैदर्भी मैं कनकावती५४नाम एक१कन्या भई ॥

जो चन्द्रवंस भूखन आनर्तराज हरिसेनकौं बड़े विधानसौं बिबाहि दई ॥

जाके उदर अरणितैं बैरिनके बनके वन्हि भागिनेय बाल नैं जन्म लीनौं ॥

याही समयमैं मगधराज सुव्रतनैं देवगिरिको रहनौं तजि ताहीके समीप पाटलिपुत्र⁴ पत्तनमैं आय निवास कीनौं ॥२९॥

(दोहा)

आराधे इक्क१मासलौं, इत नृप सेस उदार ॥
श्रद्धामय निश्चय सहित, अनसन व्रत आधार ॥ ३० ॥

भीम ने गहा है ॥ २४ ॥ यह सुनकर कर्कोटक नाम सर्प ने अर्ज की कि वह वंश अपना, भाणेज है सो हे नाथ उस पर स्नेह धरो ॥ २५ ॥ शेषनाग ने अपने छोटे भाई की और उत्तान मुनि की अर्ज सुनकर और राजा भीम का आराधन करना जान कर ॥ २६ ॥ १सर्पों को इकट्ठे करके २ अवतार लो।२७। ३पाप के साथ।२८।उत्तान मुनि से राजा भीम मिला जिस पहिले विदर्भ देश के राजा की पुत्री के उदर से उसके उदर रूपी अरणी(होम की अग्नि प्रकट करने का काष्ठ) से शत्रुओं रूपी वन के अग्नि बाल नामक भाणेज ने जन्म लिया।४पटना

(पद्धपात्)

इत सब नागन नटत कहिय पुनि सेस धराधर ॥
जावहु इक्क लिपि है न दुरित मामक निदेस डर ॥
मानिजन उपकार होय कृतघन जिन भुल्लहु ॥
जरतकारु कुल जिमहि तिमहि सुमना॥१कुल तुल्लहु ॥
उत्तान कहत अरु वह करत आराधन अपनौं सतत ॥
जगमाँहिं बहुरि मारत जटहिं सचिहै किंत्ति रु धर्म मत॥३१॥
ऐरावन यह सुनत कहिय कर जोरि सेस प्रति ॥
करहु अल्प संकेत ततो जावन मामक मति ॥
सुनि बुल्लिय श्रीसेस दुवहि तँहँ जान प्रयोजन ॥
इक१संतति बिस्तरन१अँपर२असुरादि हनन२रन ॥
सिर धरि निदेस हमरो सजव काम अनुज उभयहि करहु ॥
अरु अश्वसेन तच्छक तनय यह तव बाहन अवतरहु ॥ ३२ ॥

दोहा

ऐरावत अक्खिय असुर, मारन सुगमहिं आँहिं ॥

नामक नगर में ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ पृथ्वी को धारण करनेवाले शेष ने सर्पों से कहा कि तुम में से कोई एक जाओ उसको मेरी आज्ञा के भय से पाप नहीं लगेगा कृतघ्न (किये हुए उपकार को नहीं मान नेवाले) होकर आस्तीक का किया हुआ उपकार (आस्तीक ने जनमेजय के यज्ञ में सर्पों को जलने से बचाया था सो) मत भूलो. अपने समीप जैसा जरत्कारु का कुल है इसीप्रकार सुमना (सुमना नामक नागकन्या जो चहुवाण की राणी थी) के कुल को जानो. इधर तो उत्तान मुनि कहता है और उधर राजा भीम अपना निरंतर आराधन करता है १ जटासुर को मारने से २ कीर्ति ॥ ३१ ॥ यह सुनकर ऐरावत नामक सर्प ने हाथ जोड़ कर शेष से कहा कि वहां पर थोड़े समय तक रहने का जो आप संकेत करें तो मेरा विचार जाने का है ३ सन्तान का फैलाना ४ दूसरा दैत्य आदि को मारने का है सो हमारा हुक्म शिर पर धर कर हे भाई दोनों कार्य शीघ्र करो और तक्षक का मित्र अश्वसेन नामक सर्प है यह घोड़े का अवतार होकर तेरा वाहन बनो ॥३२॥ ऐरावत ने कहा कि असुरों का मारना तो सहज ही है परन्तु

बरस तीस३०लग पै प्रजा, न व्है रहै तो नाँहिं ॥३३॥

पटपात्

ऐरावत१अरु अश्वसेन२इम सेस हुकम लहि ॥
आये भुव अवतरन१ चंड२ असुरन मारन चहि ॥
प्रथम३१नाग भीम५३सन रहिय मति ५३।१गर्भ महाबल ॥
अपर२सु बडवा उदर बढे उभयरहि पुनि पल पल ॥
सरअट्ठबिखय५८५कलिजुगबरस धर्मतनय सक जात ध्रुव॥
अभिधान गोग५४नृप भीम५३सुत ऐरावत अवतार हुव।३४।

दोहा

नवमीतिथि आधी निसा, मेचक४ भद्दव मास ॥
मति५३।१जाठर श्रीगोग५४सुत, प्रकटिय प्रसव प्रकास।३५।
अश्वसेनके अंस हुव, बडवाकै हु किसोर ॥
लियउ गोग अवतार इम, चाहुवान कुल मोर६ ॥३६॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने रावणिजटासुरसुप्तभटदलनाऽनुजमहासेनाऽऽदिद्वादश१२भारणभटदलन५१लोहराज५२।१निम्मराजा-५२।२ऽनङ्गराजो५२।३द्भवनकिशोराऽवस्थाऽग्रजद्वय२बक१जटर२-

तीस वर्ष में सन्तान नहीं होवे तो इस से आगे मैं वहां पर नहीं रहूं।३३। १ अवतार लेने को २ भयंकर असुरों को ३ पहिला सर्प (ऐरावत) राजा भीम से मति नामक राणी के गर्भ में रहा और दूसरे सर्प (अश्वसेन) ने घोड़ी के गर्भ में जन्म लिया और दोनों क्षण क्षण में बढे. युधिष्ठिर का सम्वत् जाते समय गोग नामक राजा भीम का पुत्र ऐरावत सर्प का अवतार हुआ ॥ ३४ ॥ ४ कृष्णपक्ष भादवा महीने का ५ मति के उदर से जन्म लेकर प्रकट हुआ॥ ३५ ॥ अश्वसेन सर्प के अंश से घोड़ी के वछेरा हुआ६चहुवाण कुल का मुकुट ॥ ३५

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश के वर्णन में रावण के पुत्र जटासुर का भटदलन के महासेन आदि सोते हुए बारह छोटे भाइयों को मारना, भटदलन के लोहराज-निम्मराज-अनङ्गराज का पैदा होना, किशोर अवस्था में दोनों बड़े भाइयों को

रणशय्याशायनभटदलनाऽनन्तरप्राप्तराज्याऽनङ्गराज५२शशिभानु-५२।१कीर्तिमती५२।२भामा५२।३राज्ञीत्रयो३पयमनभीमाद्येकविंश-ति२१पुत्रजननजटासुरभीमविहीनतद्विंशति २० निपातकर्णाटराड-नङ्गराज५२तनुत्यजनराज्ञीत्रय३सहगमनभीम५३गद्दीकोपविशनवै-दर्भीमति५३।१विवहनपूर्वकन्याकनकावती५४प्रकटनतदानर्तराज हरिसेनाविवाहनदौहित्रबालोद्गमनृपोत्तानमुनिमिलनश्रीशेषाऽऽरा धनतदाज्ञप्तैरावतनागाऽवतारभौमिगोगदेवो५४द्भवनवडवाश्वसेनां-शत्रसवनं द्वात्रिंशो३२मयूखः ॥३२॥ आदितश्चतुस्सप्ततितमः ॥७४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(दोहा)

होत तनय[1] नृप भीमनैं, लक्खन द्रम्म[2] लुटाय ॥
जातकरम किय रीति जुत, प्रचुर[3] मोद भर पाय ॥ १ ॥
आय तबहि उत्तान मुनि, नृपसन किन्न निदेस ॥
ऐरावत अवतार यह, सुत तव पठयो सेस ॥ २ ॥
अश्वसेनको अंस यह, है बर तुरग असोक[4] ॥
हनि असुरन रहिहैं थिर न, जैहैं दुवरनिज लोक ॥ ३ ॥

जटासुर का रणशय्यामें सुलाना, भटदलन के पीछे राज्य को प्राप्त होकर अनङ्गराज का शशिभानु-कीर्तिमती-भामा नामक तीन राणियों से विवाह करना, भीम को आदि लेकर इक्कीस पुत्रों का जन्म होना, उन में भीम के विना बीसों को जटासुर का मारना, कर्णाटक के राजा अनङ्गराज का शरीर छोड़ना, तीनों राणियों का साथ जलना, भीम का गद्दी बैठना, विदर्भ देश के राजा की पुत्री मति से विवाह करना, प्रथम कनकावती नामक कन्या का प्रकट होना, जिस को आनर्त देश के राजा हरिसेन को व्याहना, बाल नामक दौहित्र का पैदा होना, राजा भीम का उत्तान मुनि से मिलना, श्रीशेष नाग का आराधन करना, शेष की आज्ञा लेकर ऐरावत नाग का अवतार लेकर नागलोक से गोगदेव का जन्म होना, घोड़ी के पेट से अश्वसेन नाग के अंश से अश्व के पैदा होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३२॥ और आदि से चौहत्तर मयूख हुए ॥ ७४ ॥

१पुत्र२रुपये३बहुत॥१॥४अशोक नामक श्रेष्ठ घोड़ा अश्वसेन नामक सर्प के

(षट्पात्)

पूजन तँहँ मुनि पाय गये इम कहि निज आश्रम ॥
नृप कुमार इत गोग५४ढिग सित पक्ख कला क्रम ॥
वय लहि सोलह१६वरस रमत मृगया बन अंतर ॥
हय असोक आरूढ हनत मृगपति बराह बर ॥
जट१बक२बहोरि खल आय जहँ कहिय तजहु आयुध कुमति ॥
जो यह करो न तो जायहो गोग५४पितृव्यक बीस२०गति ॥४॥
सुनि यह गोग५४कुमार कहिय सबही न छुरावहु ॥
तजिहों आयुध उभय२लेहु उभय२हि इत आवहु ॥
बक तब मुक्किय वान कुमर सहजहि वह कट्टिय ॥
अस्व असोक उडाय प्रदर मारिय कनपट्टिय ॥
बक लियउ मोह सोनित बमत जट अपुब्ब घमसान किय ॥
दिय पंच५कुमर छत्तिय प्रदर हनिय पंच५हयराज हिय ॥५
लगत बान चहुवान जेठ दिनकर हुव जुज्झन ॥
सय दक्खिन तस सतत बन्यों निज श्रुति ढिग बुज्झन ॥
सिर पंचक५दुव२संख अट्ठ८गोधि रु चउ४आनन ॥
त्रय३लागि छत्तिय तीस३०बेधि जट बपु इम बानन ॥

अंश से पैदा हुआ है बहुत नहीं रहेंगे ॥ ३ ॥ १ शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की कला बढ़े इस प्रकार बढ़ा२शिकार३सिंह श्रेष्ठ सूवरों को मारता था नहां जटासुर और बकासुर असुरों ने आकर कहा कि हे खोटी बुद्धिवाले (गोग) आयुध छोड़ दे और जो नहीं छोड़े (डाले) गा तो हे गोग तुम्हारे बीस काके (चचे) गये उसी गति तू भी जावेगा ॥ ४ ॥ गोग ने कहा कि मेरे सभी शस्त्र तो मत छुडाओ दो शस्त्र छोडूंगा सो तुम दोनों इधर आकर लेलो जब बक ने बाण छोड़ा उसको कुमार ने सहज में ही काटडाला और अशोक नामक अपने घोड़े को उड़ाकर बक की कनपटी (आंख और कान के बीच की जगह) में बाण मारा सो रक्त उगलते हुए बकासुर ने मूर्छा लेली तब जटासुर ने अपूर्व युद्ध किया ॥ ५ ॥ युद्ध करने के लिये ज्येष्ठ मास के सूर्य के समान तेजस्वी हुआ उस समय गोग का दाहिना हाथ निरंतर अपने कान के समीप यह पूछने को हुआ कि शत्रु के अङ्ग में कहां पर बाण लगावे

खिजि कहिय हेति छोरन लखहु पुहवि खलहु मूर्छित पर्‍यो ॥
बक चेति तबहि माया बहुल करि प्रसार तंडन कर्‍यो॥६॥
तहँ बक माया तनत अभ्र छादित हुव अंबर ॥
अतुल फैलि अंधार१ओघ उलका२आडंबर ॥
बिकटभूत१बेताल२निकट डाकिनि३डरान लगि ॥
मार मार रव मचिग काल बिकराल ज्वाल४जगि ॥
बिच्छिय१भुजंग२गज३सिंह४बहुफेरव५वृक६चित्रक७फिरत॥
बिज्जुलि१अलात२आयुध३बिटपि४ग्राव५असनि६करका७गिरत।७।
कुमर गोग५४तब कलह मारि बानन घन मंडिय ॥
माया[1] अस्त्रन मेटि खूब सस्त्रन खल खंडिय॥
जटहु मोह[2] तजि ज्वलित अंखि तोमर गहि आयउ ॥
इहिँ असोक झपटाय कंठ करवाल चलायउ ॥
गिरिकूट प्रमित जटासिर गिरिय रुंडहु जुज्झिय घोर रन ॥
खुंदाय खुरन जट नाम खल डारिय कुमर प्रवीरपन ॥८॥
टापन मारि असोक करिय जट देह टूक सत१०० ॥

फिर पांच बाण मस्तक में दो बाण कनपट्टी (कान के समीप की हड्डी) में आठ ललाट में चार मुख में तीन बाण छाती में और तीस बाण जटासुर के बाकी के शरीर में लगाकर इस प्रकार वेधन किया और क्रोध करके कहा कि शस्त्रों का छोड़ना देखो वह दुष्ट भी मूर्छित होकर भूमि पर गिर गया, उसी समय चेत कर बक ने बहुत माया फैलाकर नृत्य किया ॥६॥ आकाश बादलों से छागया और अग्नि के अंगारों के समूह का आडंबर होकर शब्द मचकर काल के समान विकराल ज्वाला जगी. बीछू सर्प स्याल (गीदड़) भेड़िये चीते फिरने लगे अग्नि के अंगारे वृक्ष पत्थर वज्र ओले (गड़े) गिरने लगे ॥ ७ ॥[1]अस्त्रों से माया को मेटकर शस्त्रों से दुष्टों के टुकड़े किये[2]मूर्छा को छोडकर लाल नेत्र करके भाला लेकर आया, गोग ने अशोक नामक घोड़े को उडाकर जटासुर के कंठ पर खड्ग चलाया सो पर्वत के शिखर के समान जट का मस्तक गिरा. उसके धड़ ने भी भयंकर रण किया जिसको घोड़े के खुरों से खुंदाकर कुमर ने विशेष वीरपन से जट को गिराया ॥ ८ ॥ घोड़े के अगले पैरों की चोट से अशोक नामक घोड़े ने जटासुर के देह के

कुमर मुक्कि सर साठ्ठि६०वकहु बेधिय अति उद्धत ॥
जिम छिद्रित घट जाव लसत घावन इम लोहित ॥
असुर परिय अरराय मरम फट्टत वक मोहित ॥
सिर तसहु कट्टि दुव२गेंद सम उच्छटावत हय पयन करि ॥
इम रन भजाय आयउ कुमर छतविग्रहछत्तीस३६धरि ॥९॥

(दोहा)

बहुल बधाई भीम नृप, कुमर बिजय हित किन्न ॥
बारन१हय२भूखन३बसन४, द्रव्य५सुरभि६भुव७दिन्न ॥१०॥
ससिकुल श्रीधर वंग नृप, तनया गुनन निधान ॥
प्रमा५४।१नाम निजपुत्रकों, परिनाई चहुवान ॥११॥

(षटपात्)

इम गोगहि परिनाय भीम५३नरनाह बिरति गहि ॥
करि कुमार अभिसेक अप्पि निज पट्ट समय लहि ॥
बैदर्भी५३।१जुत बिपिन जाय अभ्यस्त जोग किय ॥
ब्रह्मरंध्र पथ प्रान तजि रु प्रकृतिहिं बियोग दिय ॥
चहुवान गोग५४भूपति भयउ बीर अट्ठारह१८बरस वय ॥
सुभकर्ण५५भयउ ताकै सुघर तात तुल्य बिक्रम तनय॥१२॥

(दोहा)

गोतम कृप गोगहि मिले, तीरथराज प्रयाग ॥
तिनपहँ सस्त्र१रु सास्त्र२सब, सुतहिं सिखाय सुभाग॥१३॥

सौ टुकड़े करदिये और कुमर गोग ने साठ बाण छोडकर अत्यन्त उद्धत ब-कासुर को बेधा, जिसके घाव छिद्र कियेहुए घड़े के समान रक्त से शोभित हुए और मर्मों के फटने से मूर्छित होकर वह असुर अरराट (गिरने के शब्द का अनुकरण है) शब्द करके पड़ा१घोड़े के पगो से उडाता हुआ२शरीर में छत्तीस घाव धारण करके ॥९॥३अत्यन्त४हाथी५गायां ॥१०॥६चन्द्रवंशी ।११। ७विरक्त रन८अपना पाट देकर९वन में योग का अभ्यास किया और१०कपाल मार्ग से प्राणों को छोड कर जगत के कारण (जन्म मरण) को वियोग दिया अर्थात् मुक्त होगया.११ पिता के समान विक्रमवाला सुन्दर पुत्र हुआ ।१२। गौतमवंशी कृपाचार्य प्रयाग में गोग चहुआण से मिले जिनसे ॥१३॥

आयउ पुर मिहिकावातिय, राज्य कियउ रिपु तोद ॥
सिसु बसहि सुभकर्ण५५ह, दिय जनकहिं गुन मोद॥१४॥
मायामह चहुवानके, अप्पहिं अतनय जानि ॥
दियउ भोजकट राज्य सब, गोगहिं हित पहिचानि ॥१५॥
दै गोगहिं भुव देव नृप, जाया जुत बन जाय ॥
तीजो३आश्रम सद्धि तहँ, किय प्रानन बिनु काय ॥१६॥
गोड नृपति भवदेव इत, अग्ग भीम नृप सत्थ ॥
माउसिया नृप गोगकी, परन्यो नीति समत्थ॥१७॥
ताकै दुव२जनमे तनय, सुर्जन१अर्जुन२नाम ॥
देव मरन तिनहू सुनिय, गोग लहन तस धाम॥१८॥

(षट्पात्)

सुर्जन१अर्जुन२उभय२मरत सुनतहि मातामह ॥
नगर भोजकट आय कहिय, गोगहिं अति आग्रह ॥
दब्बी भुव अजपाल सुपै तुमसौं सब छुट्टिय ॥
मातामहको मुलक लुब्ध तक्कत इत लुट्टिय ॥
दायाद छत न इक्कहिं मिलत सकल बंटि बिरचहु सकल॥
हम तुम समान अधिकार यँहँ गोड कुलहु कबैं निबल॥१९॥

शत्रुओं को पीड़ा देनेवाला ॥१४॥ चहुवान के नाना ने अपने को विना सन्तान जान कर भोजकट का सब राज्य गोग को देदिया ॥ १५ ॥ देव नामक राजा ने गोग को भूमि देकर स्त्री सहित वन में जाकर तीसरा आश्रम (वानप्रस्थ) का साधन करके शरीर को विना प्राण किया ॥ १६ ॥ गौडवंश का भवदेव नामक राजा राजा भीम के साथ आगे गोग चहुवाण की मासी (माता की बहिन) को परणा था ॥ १७॥ जिसके सुर्जन, अर्जुन नाम के दो पुत्र हुए उन्होंने भी भवदेव का मरना और उसका राज्य गोग को मिलना सुना ॥ १८ ॥ अपने नाना को मरा हुआ सुन कर भोजकट नामक नगर में आकर गोग से हठपूर्वक कहा कि अजपाल ने जो भूमि दबाई थी वह तो तुमसे सब छूट गई और इधर आकर लोभ से नाना के मुल्क को लूटा सो सपिंड(सात पीढी पिता के कुल की और पांच पीढी माता के कुल की को सपिंड कहते हैं) के होते हुए एक को नहीं मिल सक्ता इस कारण से सब राज्य को

(दोहा)

हम अधीस कंबोजकं, तुम करनाट नरेस ॥
मातामह बैभव अमित, दुव२मिलि भुग्गहिं देस ॥२०॥
गोग कहिय तब आवते, देते तुमहिं कछूक ॥
वा न बुलाये याहितैं, तुमहि न देते टूक ॥२१॥
देव गये भुव मोहि दै, भाग चहत तुम आज ॥
दान लेहु देहौं अखिल, कछु बलसौं नहि काज॥२२॥
यह सुनि गोडन रन रचिय, सहज जित्ति नृप सोहु ॥
सोदर वे भवदेव सुत, दिय बिडारि तब दोहु ॥२३॥
सब पुहवीके नृपन सन, करि करि कुक्कि पुकार ॥
भ्रमत थके कोउ न भयो, इन सहाय हुसियार ॥२४॥
उत्तरि तब सरिता अटक, पहुँचे दुव२ प्रत्यंत ॥
जिन दिवसन ईरानपति, राजैं कटक अनंत ॥ २५ ॥
पेस भरैं जिहिं रूम लग, नाम अबूफर जास ॥
तासौं किन्न पुकार तब, गोडन बंटन ग्रास ॥ २६ ॥
कहिय हमारे मुलकमैं, आवहु अमल जमाय ॥

बांट कर टुकड़े करलो. नाना के राज्य पर हमारा तुम्हारा बराबर अधिकार है और गौड़वंश निर्बल भी नहीं है ॥ १९ ॥ २० ॥ गोग ने कहा कि अपना नाना जीता था तब आते तो कुछ तुम को भी देते परन्तु उस (नाना) ने तुम को अपने मरते समय नहीं बुलाया इस से जानते हैं कि तुम को एक टुकडा भी नहीं देते ॥ २१ ॥ राजा देव मुझको भूमि दे गये हैं उस को आज तुम बंटवाना चाहते हो सो बल करने से तो कार्य नहीं हो सक्ता और दान लो तो सभी देदूं ॥ २२ ॥ गौड वंश के क्षत्रियो ने युद्ध रचा जिन को राजा गोग ने सहज से ही जीत कर भवदेव के पुत्र दोनो सगे भाइयों को ताड दिया ॥ २३ सब भूमि के राजाओं से कूक कूक कर पुकार करके भ्रमण कर थक गये परन्तु कोई इन का सहाई होने को तैयार नहीं हुआ ॥ २४ ॥ तब अटक नदी उतर कर सुर्जन और अर्जुन गौड दोनों म्लेच्छ देश में गये उन दिनों में ईरान देश का पति अबूफर नामक शोभायमान था जिस के पास अनन्त सेना और जिस को रूम देश तक खिराज देते थे उससे जाकर जीविका बांटने के लिये गौड़ ने पुकार करी ॥ २५ ॥ २६ ॥

हम तुमेर पय पारिहैं, सब हिंदुन समुदाय ॥ २७ ॥
इक्क गोग अजपाल कुल, हमरी भुव किय हत्थ ॥
ताहि दिवावन चलहु तुम, सत्रुहि दमन समत्थ ॥ २८ ॥
अग्गैं नृप अजपाल किय, जवन रूस लग जेर ॥
सुनत नाम सुलतान तस, आक्खिय चकित अबेर ॥ २९ ॥
सुर्जन१ अर्जुन२ सुनि कहिय, इम नहिं जिम अजपाल ॥
अब उनकै बल अल्प है, बिनु भुव बित्त बिहाल ॥ ३० ॥
जवनराज तुम जित्तिहो, इम बढाय उच्छाह ॥
कियउ निठि गोडन कहि रु, सज्ज अबूकर साह ॥ ३१ ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिबंशबर्णने राजकुमारगोग५४ सुरारिजट१ बक२निपातनशशिबंशाऽवतंसबङ्गराजश्रीधरसुताप्रभा५४।१परिणायनसमभिषिक्तकुमारस्वभ्यस्तयोगभीम५३ पुद्गलपरिहरणबैदर्भी५३।१वन्हिबिशनगोगात्मजशुभकर्ण५५ द्रमनपूजितकृपप्रयागतच्छिक्षादापनेदंत्तदौहित्रचहुवाणराज्यसपत्नीकबिदर्भराजदेवपरिब्रजनभावेदविगौ-

---

पगों में पटक देवेंगे सब हिन्दुओं के समूह को ॥ २७ ॥ १ शत्रु को दंड देने में तुम समर्थ हो ॥ २८ ॥ यहां जवन शब्द नीच लोगों का बाचक है मुहम्मद मतानुयायी नहीं जानना चाहिये; क्योंकि उस समय मुहम्मद पैदा ही नहीं हुआ था. सुलतान ने उस अजैपाल का नाम सुनते ही चकित होकर कहा कि देरी करना चाहिये ॥ २९ ॥ यह सुनकर सुर्जन अर्जुन ने कहा कि जैसा अजपाल था ऐसा अब गोग नहीं है अब उसके सेना कम है और बिना भूमि और विना धन बेहाल है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में राज कुमार गोग का दैत्य जट और बक को मारना, चन्द्रवंशियों के मुकुट वंग देश के राजा श्रीधर की पुत्री प्रभा से विवाह करना, कुमार का अभिषेक करके योग का अभ्यास करके भीम का शरीर छोडना, विदर्भ देश के राजा की पुत्री का अग्नि में प्रवेश करना, गोग के पुत्र शुभ कर्ण का जन्म होकर पूजा किये हुए कृपाचार्य से प्रयाग में उसको शिक्षा दिलाना, अपने दौहित्र चहुवाण राजा को विदर्भ देश का राज्य देकर स्त्री

डसुर्जना१र्जुन२प्रसभ्यवैदर्भविभागमार्गणमेभि५४तदनुररीकरण-पराजितसर्वतिरस्कृतलंघितकरतोयसोदरगौडप्रत्यन्तेन्द्राऽबूफरप्रार्थनतत्सज्जीभवनं त्रयस्त्रिंशत्तमो३३मयूखः ॥ ३३ ॥ आदितःपञ्चसप्ततितमः ॥ ७५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
(महाचर्च्चरी ॥ महागीतिकेत्येके ॥)

सज्ज साह इरानको दल लै अबुफ्फर उप्पर्यो इम ॥
संग सोदर गोड नक्क कटायकैं अपसौंन दें जिम ॥
मत्त फीलन पिट्ठिके बहरक्क मेचक रंग खुल्लिय ॥
खेह संकुलि अंधकार अपार चक्किय चक्क डुल्लिय ॥ १ ॥
निक्खसे हय लै तरारन अक्कके हिय लोभ आनत ॥
जे बिनीत तुखार१ ताजिक२ अर्बके३ थकिबो न जानत ॥
बावरी घट मिच्छ्रहै कमनैतके हुसियार हंकिय ॥
पंच५ जोजन भुम्मि फोजन फेरके घन घेर ढंकिय ॥ २ ॥

महित देव का जाना, भवदेव गौड के पुत्र सुर्जन और अर्जुन का हठ पूर्वक वैदर्भ देश का बंट मांगना, भीम के पुत्र (गोग) का उसके अर्थ इनकार करना, पराजित होकर सब से तिरस्कार पाकर अटक नदी को लांघ कर दोनो सगे भाई गोड़ों का ईरान के इन्द्र अबूफर से प्रार्थना करना और उस के सज्जीभूत होने का तेतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३३॥ और आदि से पचहत्तर मयूख हुए ॥ ७५ ॥

दोनों सगे भाई गोड अपना नाक कटा कर दूसरों को अपशकुन देवै इस माफिक साथ हुए. मस्त हाथियों की पीठ पर काले रंग की ध्वजायें खुलीं (ईरानवाले काले वस्त्र रखते हैं इसी कारण से उनका नाम कज़लबास मशहूर है) खेह से अवकाश रहित होकर अपार अन्धकार होगया जिस से चकवी चकवा डुल गये (रात्रि में चकवी चकवे का वियोग होजाना प्रसिद्ध है)।१। सूर्य के हृदय में लोभ उत्पन्न करते हुए (ऐसे घोड़े हम को भी मिलें तो अच्छे) घोड़े तरारें लेते निकले; जो शिक्षा पाये हुए, तुखार, ताजिक और अरब देशों के पैदा हुए, थकना जानते ही नहीं. कितने ही बाण विद्या के जाननेवाले म्लेच्छ सावधान होकर बावली स्त्री के घड़े के समान होकर चले अर्थात् बावली (पागल) स्त्री जहां चाहे वहां अपने घट को डाल कर नाश करदेती है ऐसे ही वे बीर भी अपने घट (शरीर) का नाश

चिल्ह गिद्ध सिचान संगहि जुग्गिनीन जमाति लग्गिय ॥
दीपमाल समान है खुरताल्ल ग्रावन ज्वाल जग्गिय ॥
व्है धरातल धुंधि लोकन रुंधिकैं चकचुंधि मंडिय ॥
चायसौं चहकाय चंडिय त्यौं महानट आय तंडिय ॥ ३ ॥
लंघि सिंधु सनाम यौं सरिता अबूफर साह आयउ ॥
और औरन लुट्टि तोर सजोर सोर मही मचायउ ॥
गोग५४हू स्मित पुब्ब सो सुनि मिच्छकौं तृन मान मन्निय॥
छोहि मुच्छन उब्भरे कच रारि रीति रहैं न छन्निय ॥ ४ ॥
गोगको तब भागिनेय जु बाल१सो हरिसेनको सुत ॥
होय मातुल भीर देस बिदर्भ गो दल लक्ख१०००००संजुत ॥
बंगराज तनूजहू पहुँच्यो प्रतर्दन२गोग सालक ॥
भीर पाटलिपुत्रको हु नरेस सुब्रत३गो उतालक ॥ ५ ॥
वंस राघव कोसलेस कुमार किन्नर४गो सहायक ॥
वंस पाडव दीप त्यौं पहुँच्यो नृपंजय५सत्रुघायक ॥
सालिबाहन पारमार कुमार गो जयसेन६गज्जित ॥
प्रातिहार प्रदीप सल्ल महीप७गो नृप भीर सज्जित ॥ ६ ॥

करते देरी नहीं करते. चार कोस का एक जोजन होता है ऐसे पांच जोजन (वीस कोश) के फेर की जमीन मेघ के घर के समान फौज से ढंक गई ॥२॥ पत्थर पर घोड़े की खुरताल की रगड़ लगने से दीपमाला के समान अग्नि उठने लगी और धरातल धूँधला होकर लोकों को रोक कर चकाचोंध होने लगी, रक्त पीने की चाहना से प्रसन्नता का शब्द करके देवी और इसीप्रकार महादेव आकर नाचने लगे ॥ ३ ॥ सिन्धु नामक नदी उल्लंघ कर अबूफर साह आया और चारों ओर लूट करके अपने प्रताप के जोर का शोर भूमि में मचा दिया. हसी पूर्वक उस म्लेच्छ को तृण के माफिक माना. क्रोध से मूछों के केस ऊँचे उठे जिनसे युद्ध रीति छिपी नहीं रहती ॥ ४ ॥ बाल नामक हरिसेन का पुत्र जो गोग का भाणेज था वह विदर्भ देश से लाख सेना लेकर मामा की सहाय को आया. गोग का शाला वङ्गदेश के राजा का पुत्र प्रतर्दन नामक आया, पटना का राजा सुव्रत भी शीघ्रता से सहाय को गया ॥५॥ रघुवंशी अयोध्या के राजा का कुमर किन्नर गया. १शत्रुओं को

चोलराज बिदूखनाभिधको हु बिक्रम८नाम नत्तिय ॥
सूर९अर्बुदराज गो ससिबंसि मुच्छन हाथ घत्तिय ॥
बीरराज१०कलिंगभूप कुबेर११केरलको महीपति ॥
अङ्गको नृप चित्रसेन१२जयंत१३सोरठको महामति ॥७॥
साल्वको ससिबिंदु१४डाहलको सुबाहु१५त्रिगर्तको जय१६
कुंतलेश्वर कर्मसेन१७प्रसेन१८मैथिल भूप निर्भय ॥
दुर्ग१९तर्जिकको प्रतान२०सुबीरको नृप भीम आयउ ॥
केसरी२१टकराज अर्जुन२२मच्छदेस पती चलायउ ॥
चालुक्कान्वय सूकरेश्वरको कुमार रणातिथी२३जिम ॥
मद्रराज सुवर्म२४धन्वधरेस दुर्दम२५सज्जही तिम ॥
मिच्छ आवत जानिके इन्ह आदि भूप बिनाँ निमंत्रन ॥
धर्मके अनुसार नीति सम्हारि सर्ब जुरे महामन ॥ ९ ॥
मिच्छसौं इक१को बनैं सु बनैं समस्तनको पराजय ॥
इक्क१ कारन एह औ भुव जाय दुष्टनकै सुपै भय ॥
यौं बिचारि महीप सज्जित व्है भये सब आनि इक्कत ॥
गोग आक्खिय क्यों लरो तुम मैं घनौं सबही गिनौं मत ॥१०॥
मोहि जो खल मारिकैं इतकौं बढे तब सर्ब जुज्झहु ॥
हत्थ पिक्खहु गोगके जबलौं यहै रन टेक उज्झहु ॥
सौंह दै सबकौं तहाँ इम रक्खि भो चहुवान सज्जित ॥
सूर नूर बढे भये मुख नीर उत्तरि भीरु लज्जित ॥ ११ ॥

मारनेवाला ॥६॥ १विदूखन नामक चोलदेश के राजा का विक्रम नामक पोता मूछों पर हाथ घाल कर ॥ ७ ॥ ८ ॥२ चालुक्य वंशी सूकरक्षेत्र के राजा का कुमर३मारवाड़ का४बिना बुलाये ॥९॥ इस म्लेच्छ से एक का पराजय हुआ तो सभी का पराजय (हार) है एक तो यह कारण और यह भूमि दुष्टों के हाथ में चली जावे यह भी भय है इन दोनों कारणों को विचारकर राजा सज्जीभूत होकर इकट्ठे हुए ॥१०॥५लड़ना,६जब तक गोग के हाथ देखो (युद्ध में कैसे चलते हैं) तब तक युद्ध करने की टेक को छोड़ दो इसप्रकार सब को सोगन दिलाकर सब को वहीं पर रखकर चहुवाण तैयार हुआ उस समय सूरवीरों का रूप बढा और कायरों के मुख का पानी उतर कर लज्जित

यौं अबूफर हू कियो दुव२दीहको इक१दीह मग्गहु ॥
धेनु घेरन मुक्कले असवार तीस हजार३००००अग्गहु ॥
जायकैं तिन घेरि गाय बिदर्भकी गन ग्वाल मारिय ॥
त्राहि त्राहि उचारि कोउक जाय भूपतिपै पुकारिय॥१२॥
गोगराज असोक आरुहि सेन सज्जि स्वकीय हंकिय ॥
ज्यौं बितान बितान अंबर अच्छरीन बिमान ढंकिय ॥
कोस पंचक५ जातही चहुवान मिच्छन पिट्ठि दब्बिय ॥
मित्र हूरनके मुरे तहँ सत्रु हूरनके मुरब्बिय ॥ १३ ॥
झल्लरी झननंकि कोचनकी करी रननंकि तुट्टिय ॥
निक्खसे सननंकि बान सिचान ज्यौं भननंकि छुट्टिय ॥
बीरँ हत्तनकौं तजैं लगि वीर पत्तनकौं बसावन ॥
बेधि गत्तनकौं चलैं ँति निषेधि छत्तनकौं नसावन ॥ १४ ॥
गोगके हु कँलंब मिच्छन भोगकेहु निदान फुट्टिय ॥
रोगकेहु निदान जे लगि छोगकेहु निदान छुट्टिय ॥
कोटिभाग कटट्ठि चाप चटट्ठि चंड चलात बानन ॥

हुए ॥ ११ ॥ उधर अबूफर ने भी मार्ग में दो दिन का एक दिन ही किया, अर्थात् दो दिन के मार्ग को एक दिन में ही समाप्त (डबल कूँच) किया १गौवें घेरने को ॥ १२ ॥ अशोक नामक घोड़े पर चढकर अपनी सेना सझ कर चला. डेरों के समान अप्सराओं के विमान तण कर आकाश ढक गया. पांच कोश पर जाते ही जहां चहुवाण ने म्लेच्छों की पीठ दवाई तहां हूरों के मित्र (म्लेच्छ) पीछे मुडे जो शत्रु थे, परन्तु युद्ध के मुरब्बी (वडे) थे ॥ १३ ॥ २कवचों की कड़ियें३शिकरा (बाज नामक पक्षी) बाण हैं सो४वीरों के हाथों को छोड कर वीरों के शहर वसाने लगे (अप्सराओं के साथ वीर लोग जुदे शहर वसाते हैं)५ जो शरीरों को वेध कर निकलते हैं ६ वे मुहाल के छाते का तिरस्कार करते हैं अर्थात् मधुमाक्षिका के छाते में छेद हैं उनसे भी अधिक छेद शरीर में करके नाश करते हैं । १४ । गोग चहुवाण के भी७तीर म्लेच्छों का भोजन करने के ८ कारण होकर फैले और वे ही वाण रोग (पीड़ा) के कारण हुए. जिनके लगने से म्लेछों के विजय के उत्साह का कारण छूट गया. धनुष के चटठाट (धनुष को खींच ने में जो शब्द होता है उसका अनुकरण है) करते हुए कोणों [गोशों] को खींच कर भयंकर वाण चलाते हैं सो

तत्वकौं रु प्रधानकौं लखि ज्यौं अहम्मति देत आनन ॥१५॥
अर्क अंड कटाहमैं जिम रंगमैं चहुवान राजत ॥
जंगमैं बरजोर सत्रुन संगमैं गति घोर साजत ॥
घाय अल्पहु पाय कातर हाय हक्कत माय हारद ॥
ठौरतैं न डिगाय काय सु जानि उंदुरु पीत पारद ॥ १६ ॥
दब्बि हत्थिन हेठके अकुलात घायल गात मानव ॥
जानि सिंधु मथान मंदर आदिके तल देव दानव ॥
भागिनेय नरेसको वह बाल नामहु संगआयउ ॥
मिच्छ बीस हजार २०००० दोउ रन मारि गोधनकौं छुरायउ ॥१७॥
सेस भज्जत सेसको अनुजात उद्धत पिट्ठि लग्गिय ॥
बाहिनी जवनेसकी इततैं मिली रन प्रीति पग्गिय॥
किन्न मंदर गोगके हय मिच्छ सागरको बिलोडन ॥
जानिकैं जमफेट सम्मुह व्है सके दुव भ्रात गोड न॥ १८ ॥
बालके करहू चले जिम बालके कर खान मोदक ॥
आजिमैं चहुवानकी बिथरी दिसा विदिसान ओदक ॥

मानो परमेश्वर को और प्रकृति को देख कर अज्ञान नहीं आने देता अर्थात् पुरुष और प्रकृति की साम्यावस्था होने से मोक्ष होता है सो अज्ञान नहीं होने देता इसीप्रकार धनुष के दोनों कोणों को सामिल नहीं होने देकर बाण छूट जाता है ॥ १५ ॥ ब्रह्मांड मे सूर्य है इसीप्रकार युद्ध में चहुवाण शोभायमान है और युद्ध मे श्रेष्ठ बलवाला शत्रुओं के साथ भयंकर कर्म को साधना है, छोटे घाव लगने पर भी कायर लोग हाय-माय ऐसे शब्द करके हार (अजय) देनेवाले होकर निकलते हैं परन्तु भय के मारे उनके शरीर पारा पियेहुए चूहे के समान ठौर से नहीं डिगते ॥ १६ ॥ कितने ही हाथियों के नीचे घायल मनुष्यों के शरीर अकुलाते हैं सो मानों समुद्र के मथने के दंड रई रूपी मंदर नामक पर्वत के नीचे देवता और दानव अकुलाते हैं, गोग चहुवाण का भानजा बाल भी साथ आया १ म्लेच्छों को ॥ १७ ॥ बाकी की सेना भगते ही शेष नाग का छोटा भाई [गोग] पीठ लगा २ सेना ३ गोग चहुवाण के घोड़े रूपी मन्दराचल ने म्लेच्छों की सेना रूपी समुद्र को मथन किया सुर्जन और अर्जुन नामक दोनों भाई गोड सामने नहीं होसके ॥१८॥ बालक के हाथ लड्डू खाने पर चलें जिस माफिक गोग के

भीर जे हुव भूप इक्कत ते यहै सुनि पिक्खितैं चाढि ॥
जंगमैं पहुँचे सबै न रुके रजोगुन वेगमैं बढि ॥१९॥
भो बडो घमसान प्रानन खान ज्यौं कुरुखेत भारत ॥
अष्टमी८ सुचि स्यामसौं मचिगो प्रलै जनु ज्वाल जारत ॥
उच्छटैं कटि गाल्ल भाल कपाल बुल्लत टूक टोपन ॥
विष्णु[2] आरति काल बादन तालमैं हु इतीक ओपन ॥२०॥
फार धार प्रसार सोनित उब्बकै गज गात अंदर ॥
जंबुके रसकी नदी जनु मेरु मंदरकेर कंदर ॥
बात ज्यौं खतमाल यौं करवाल्ल कोचनकौं बिदारत ॥
राधमास पलास पुष्पित भास अंग तुरंग धारत ॥ २१ ॥
प्रास[3]१कुंत[4]२कटार३खग्ग४चलैं गदा५बरछी६विपाट[5]क७ ॥
तुंड[6]मुंड कटैं नचैं उठि रुंड झुंड सु नव्य नाटक ॥
फुट्टि बीरनके सरीरन भुम्मि पैठत तीरकी तति ॥
कूट सक्खिहिं जो भरैं तस पूर्ब पूरुख ज्यौं अधोगति ॥२२॥
मित्र मस्तक१ कंधरा१ दुव२ मेल छोरत पिक्ख संगर ॥
बाजि नालन कीलमैं उरझैं कहौं गज लंबलंबर ॥
अर्द्धचंद्र कलंबमैं चिपि अंत यौं निकसंत अच्छिय ॥

भाणजवाल के हाथ म्लेच्छों पर चले (आजि) युद्ध में (आदक) भय। १९। प्राणों का खानेवाला बडा युद्ध हुआ १ शुक्ल पक्ष की अष्टमी की संध्या से २ विष्णु भगवान की आरती के समय के बाजों में भी इतनी शोभा नहीं अथवा इतनी उपमा नहीं ॥ २० ॥ धारों के समूह फैल कर हाथियों के शरीरों से रक्त उपकता है सो मानों सुमेरु पर्वत की कन्दरा से जांबू के रस की नदी बहती है. जैसे पवन मेघ को विदारण करता है तैसे खड्ग कवचों को काटते हैं और वैशाख मास में ढाक का वृक्ष लाल रङ्ग का होजाता है उस क्रान्ति को गोग के घोड़े के अंग ने धारण की ॥ २१ ॥ ३ सांग (शस्त्र विशेष) ४ भाला ५ बाण ६ मुख और मस्तक कहते हैं और रुंडों के झुंड उठकर नवीन नाच नचते हैं और वीरों के शरीर फूटकर बाणों की पंक्ति भूमि में पैठती है सो मानों झूठी साक्षी भरनेवाले के पूर्व पुरुष (बडाउवे) अधोगति को जाते हैं ॥ २२ ॥ मस्तक और कन्धा दोनों मित्र हैं वे भी मिलाप को छोडते

सर्प अंकुस संगके बनसी ग्रसी जनु वाम मच्छिय ॥ २३॥
कुंभ ज्यों गजकुंभ उत्तरि जात तेगनकी तराकन ॥
दंत कंडन कुट्ट से बिखरंत अंबरमैं बराकन ॥
कालखंडन खंड होत अदोख ज्यों अहिफेन बट्टिय ॥
फट्टिजात किंवार छातियके मनौं पयलौंन खट्टिय ॥ २४ ॥
सारथी१रथ२चक्र३केतन४पत्ति५बारन६वाजि७कट्टत ॥
जूह सादिन८के निसादिनके९उडैं नटलौं उलट्टत ॥
खेत्रपाल खुसाल खेलत मोदसौं भरि गोद गल्लन ॥
आसनोट बिहीन घोट लगैं परस्पर चोट घल्लन ॥ २५ ॥
जालकौं जिम कीर अंत्रन मालकौं खुरताल ऐंचत ॥
सुंडिकी मुरली बनाय बजात बावन५२नैंन मैंचत ॥
पत्तमैं भरि रत्त पावन तत्त जुग्गिनि मत्त डोलत ॥
टोप खेटक छत्र लोहित नीर कच्छपलौं किलोलत ॥ २६ ॥
कंधरा हयकी कटी गहि प्रेत बल्लकिका बनावत ॥
कील ठ्हाँ नलकीलके करि तंत अंत्रनके तनावत ॥

हैं अर्धचन्द्राकार बाण में छिप कर आंत इसप्रकार निकलती है जैसे अंकुश के संग में सर्प, अथवा वंसी (कांटा) में छिप कर वामजाति की मच्छी निकसे ॥ २३ तरवारों की तड़ाको से घड़ों के समान हाथियों के कुंभ [कपाल] उतरते हैं और हाथियों के दांत ऊखल में कूटे हुए से होकर आकाश और युद्ध में बिखरते हैं, बिना तूटी हुई अफीम की बट्टी के समान कलेजों के टुकड़े होते हैं और जैसे निमक के पड़ने से दूध फट जाता है तैसे छाती के किवाड़ फटते हैं ॥ २४ ॥ सारथी रथ पहिये ध्वजा पैदल हाथी घोड़े कटते हैं और उडते हुए नट के समान घोड़े के सवारों और हाथियों के सवारों के समूह उलटते हैं. प्रसन्न होकर गालों में गोद भर कर बिना पलानों [जीणों] के घोड़े परस्पर चोटें मारते फिरते हैं ॥ २५ ॥ हाथी की सुंड की वंसी बना कर बावन भैरव नेत्र बंध करके बजाते हैं [पूर्ण आनन्द आने के समय नेत्र मिलजाते हैं] पत्र में ताता [गर्म] रक्त भरकर जोगनियां(देवी की दासियां) मस्त होकर फिरती हैं रक्त रूपी जल में टोप ढाल और छत्र कच्छप के समान किलोल करते हैं ॥ २६ ॥ कटीहुई घोड़े की गर्दन को लेकर प्रेत वीणा बनाते हैं, उस वीणा के मनुष्यों की नली की हड्डी की खूंटिये बनाकर आंतों के तार

भद्रबारन माथ फट्टि गिरंत मुत्तिय ज्यौं पयोघन ॥
यौं गदा सिरपैं बजैं जिम लोहकारनके[1] अयोघन ॥ २७ ॥
गोगको असि[2] चक्खि मिच्छन किन्न गड्डनकी तयारिय ॥
लुत्थिपैं लगि लुत्थि ज्यौं बनिजार[3] लोकन टंड ढारिय ॥
भद्दके भ्ऋरकी प्रभा चहुवानके सरकी भई जब ॥
चाह लै घरकी अबूफरकी अनी लरकी घनी तब ॥ २८ ॥
नर्मदा तट पारलौं अतिघोर मिच्छनहू कियो रन ॥
धार आवत निट्ठि निट्ठि लगे सबै मुख अग्ग भज्जन ॥
स्रोतके भ्रममैं परे ति कितेक नाव समेत बुड्डिय ॥
वारहू लखि भूपकौं खल तंतितैं जनु तूल उड्डिय ॥ २९ ॥
चम्मलौ रु बनास आदिक आपगा सब यौंहि उत्तरि ॥
होय सस्त्रनके हमाल लजेहि मिच्छ भजे त्वरा करि ॥
निट्ठ निट्ठ गये ति बग्गड़ पिट्ठि हिंदुन सस्त्र खावत ॥
घोर जंग बहोरि भो हरियान देस मझारि जावत ॥ ३० ॥
मिच्छ एडिनपैं अंगुठन देत उत्तर ओर चल्लिय ॥
आतही हरियानलौं सब मारि भूपन घेर घल्लिय ॥

तनते हैं. [1]लुहारों के लोहे के घण ॥२७॥ [2]खड्ग चखकर [3]वणजारों ने टांडा ढाला होवे इस माफिक, चहुवाण के बाणों की क्रान्ति जब भाद्रवा महीने के झड़ के समान हुई तब अबूफर की सेना घर की चाहना करके बहुत नमी(पीछी हटी) ॥२८॥ नर्मदा नदी के वरे आने पर, कितने ही नदी के प्रवाह के भ्रमर में पड़े वे नाव सहित ही डूब गये और नदी के वरले तरफ भी राजा गोग को देख कर तांत के आगे रुई उडै इस माफिक दुष्ट उडै ॥ २९ ॥ चामल नदी और बनास नदी सब इसीप्रकार उतरे और शस्त्रों के हमाल (बोझा उठानेवाले) होकर लज्जा पायेहुए म्लेच्छ शीघ्रता करके भागे और पीठ पर हिन्दुओं के शस्त्र खातेहुए नीठ नीठ (बडीकाठिनाई से) बागड़ देश में गये. (मालवे के एक प्रान्त का नाम बागड़ है जो इस समय डूंगरपुर और प्रतापगढ के अधिकार में है इस प्रदेश को लांघे पीछे चामल और बनास नदी आती है इसकारण से मुदाफर के भागने में भी बागड़ में होकर चामल और बनास नदी उतरने का क्रम जानना चहिये) हरियाणा में जाते फिर भयंकर युद्ध हुआ ॥३०॥ गोग ने घोड़े को झपटाकर अबूफर की छाती में भाला लगाया

गोग है झपटाय कुंत दयो अबूफर साह छत्तिय ॥
बग्गुली तरुकै जथा सु रकाब लंवत भूप पत्तिय ॥ ३१
गोड अर्जुन सीस कट्टिय कोसलेस कुमार किन्नर ॥
मारिकैं जवनेस पुत्रहिं बाल जामिज हू पर्यो धर ॥
बीरराज कलिंग भूप वजीरकों हनि गो सुरालय ॥
फोजदारहिं मारि पांडव बंसदीप पर्यो नृपंजय ॥ ३२ ।
गोगहू निज देह द्वै सत२००घाय पाय हन्यौं अबूफर ॥
गोड सुर्जन भज्जि गो जय हिंदु भूपनको बढ्यो बर ॥
म्लिच्छ यों हरियानलौं भजि आत आत हनैंगये सब ॥
बंब[1] आनकै[2] कोसतालै[3] चुहानके जयके बजे अब ॥ ३३ ॥

(दोहा)

उभय२मास आहर्व[4] भयउ, परे खेत नव लक्ख९०००००
लरत भजत नहिं निज निलय[5], पहुँचि सके परपक्ख[6] ॥३४
प्रतिदिन खल पच्छे डिगत, आयुध अतुल प्रहारि ॥
पहुँचि देस हरियान लग, लयो अबूफर मारि ॥३५॥

॥ सोरठा ॥

तीन लक्ख३०००००खट लक्ख६०००००, इत उतके क्रमतैं परे
नृपहु मरे नृप[7] पक्ख, नृप[8] तिनके नामहु सुनहु ॥३६॥
भागिनेय[9] वह बाल१, सुत आनर्त नरेसको ॥
देस कलिंग नृपाल, बीरराज२रनमैं रहिय ॥३७॥

जिससे, वृक्ष के बागल (चमगीदड़) लटके जिस माफिक घोड़े की रका
मे लटकने लगा. उस समय राजा गोग जापहुंचा ॥ ३१ ॥ अर्जुन गोड व
मस्तक अयोध्या के राजा के पुत्र किन्नर ने काट लिया और अबूफर के पु
को मारकर बाल नामक गोग का भाणेज भूमि पर गिरा, कलिंगदेश व
राजा वीरराज अबूफर के वजीर को मारकर स्वर्ग गया ॥ ३२ ॥ १ नक्का
२ नोबत ३ ढोल ॥ ३३ ॥ ४ युद्ध हुआ ५ अपने घर पर ६ शत्रु ॥ ३४ ॥ ३५
७ गोग चहुवाण के पक्ष के ८ हे राजा रामसिंह उनके नाम भी सुनो ॥ ३६
९ भाणेज.

कोसंबी नरनाथ, पांडव बंसि नृपंजय३हु ॥
सूर४पस्यो तिम साथ, ससिकुल[1] रवि अर्बुद अधिप ॥३८॥

षट्पात्

केरलराज कुबेर५कर्मसेन६सु कुंतलपति ॥
सल्ल महीप७सनाम भूप प्रतिहार महामति ॥
मैथिलराज प्रसेन८दुर्ग९तर्जिक भुवनायक ॥
मगधराज सुव्रत१०सुबर्म११मद्रेस सुभायक ॥
अर्जुन१२बिराट बंसिय परयो मरुमहीप दुर्दम१३सहित ॥
क्रमतैं त्रिगर्त१डाहल२नृपति जय१४सुबाहु१५संहरि[2] अहित[3] ॥३९॥

(दोहा)

हन्यो अबूकर जवनपति, सुर्जन गोड भजाय ॥
अल्प जवन पहुँचे घरन, रन जित्तिय रनराय ॥४०॥
बचे नृपति एकत्त करि, गोग५४कहिय तब एह ॥
अब हमरी जानहु अवधि, न यँहँ रहन सन नेहँ ॥४१॥
सूरि भयो सुभकर्ण५५हू, वय दस१०हायनँ बीर ॥
पुनि पंद्रह१५मम काज पर, भरे धरनि पँति धीर ॥४२॥
कोल समय आयउ निकट, रहो सेस कछु सेस ॥
भनि इम हय जुत पैठि भुव, गो पाताल नरेस ॥४३॥
आतिजगती खट६१३मित बरस, कलिजुग जावत काल ॥
दिन जिहिँ जनम्यौ ताहि दिन, पहुँच्यो नृप पाताल॥४४॥

(अत्र शेषोपालंभः पुनः प्रेपणं वाच्यम्)

निलय गोग चहुवानके, रचि जनपद हरियान ॥

---

१ चन्द्रवंशी ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २ शत्रुओं का ३ संहार करके ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ४ यहां रहने से अब प्रीति नहीं ॥ ४१ ॥ मेरा पुत्र शुभकर्ण भी ५ पंडित होगया ६ दश वर्ष की ऊमर में वीर है ७ भूपति ॥ ४२ ॥ ८ हे शेषनाग मेरे यहां रहने के कोल का समय नजीक आगया कुछ ही ९ बाकी रहा है इसकारण से अब मैं यहां रहना नहीं चाहता यह कहकर राजा गोग घोड़े सहित पाताल में पैठ गया ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ हे चहुवाण राजा रामसिंह

ताकौं सब पूजत जगत, अब लग नृप चहुवान ॥४५॥
सुभकर्णहिँ कर्णाटपति, करि अभिसेक बिधाय ॥
बसुधापति रनतैं बचे, निज निज पत्त[2] निकाय[3] ॥४६॥
सुनत प्रमा५५।१किय सहगमन, रक्खि पतिव्रत राह ॥
अनला५४।१हू याको अपर, नाम विदित नरनाह ॥४७॥
गोगहिँ भूप प्रबिष्ट गिनि, नतिजुत राम नरेस ॥
पूजित जाहिर पीर कहि, कतिपय जवन बिसेस ॥४८॥
ताहि सर्व भय होत नहि, बरनत जो यह बात ॥
सर्पहु गोग प्रभाव सुनि, जवी निलयँ तजि जात ॥४९॥
रथन जुद्द तिन दिननतैं, लगे मिटन नृप राम ॥
बडे अनृत१छल जुद्ध२बलि, क्रोधं३लोभ४मद५काम६ ।५०।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचंडाग्निवंशवर्णने प्रत्यन्तेन्द्राबूफराऽऽगमनज्ञातम्लेच्छाऽऽगमसर्वनृपगोगसहायकरणमहारणाऽनुष्ठाननिपातितयवनेन्द्रभैमिविजयनभागिनेयबालाऽऽदिपञ्चदश१५नृपशूरशय्याशयनसवाजिविग्र

हरियाणा देश में उस गोग चहुवाण का मकान बनाया जिस गोगको अब तक सब जगत् पूजता है ॥ ४५ ॥ १ राजा अपने अपने ३ घर २ पहुंचे। ४६। गोग का जाना सुनकर राणी प्रमा ने भी पतिव्रत की राह रखकर सहगमन किया जिसका दूसरा नाम हे राजा रामसिंह अनला भी प्रसिद्ध है ॥ ४७ ॥ हे राजा रामसिंह गोग राजा को पाताल में घुसा जान कर कितने ही यवन भी नम्रता पूर्वक पीर कहकर उसको पूजते हैं ॥ ४८ ॥ ४ शीघ्रता से ५ घर छोडजाना है ॥ ४९ ॥ हे राजा रामसिंह उन दिनों से ही रथों में बैठ कर युद्ध करना मिटने लगा और बडे झूठ से पुनि क्रोध लोभ मद और काम से छलयुद्ध होने लगे ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि मे अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में ईरान देश के इन्द्र अबूफर का आना जानकर उस म्लेच्छ के आने पर सब राजाओं का गोग की सहायता करना, बडे रण के अनुष्ठान मे यवनेंद्र को मार कर भीम के पुत्र (गोग) का विजय होना, बाल नामक भाणेज को आदि लेकर पन्द्रह राजाओं का शूरशय्या में सोना, अपने घोडे और

हगोग५४पृथ्वीप्रविशनप्रमा५४।१सहगमनशुभकर्ण५५वैदर्भ १ कर्णाट२राज्यसमासादनं चतुस्त्रिंशत्तमो३४ मयूखः ॥ ३४ ॥ आदितः षट्सप्ततितमः ॥ ७६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

गोग५४ नृपति पाताल गय, इम हनि दुष्ट असेस ॥
भोजकट१रु मिहिकावतिय२, हुव सुभकर्ण५५नरेस ॥ १ ॥
मरु महीप दुर्दम सुता, कनकलता५५।१ अभिधान ॥
सो व्याहिय सुभकर्ण५५नृप, सुघर सुसील सुजान ॥ २ ॥
सूनु³ भयो सुभकर्णकै, उदयकर्ण५६अति बीर ॥
कोसलेस किन्नर सुता, धन्या५६।१ परन्यौं धीर ॥ ३ ॥
उदयकर्णकै हुव तनय⁴, सो जसकर्ण५७सनाम ॥
चेदिराज लछमन सुता, व्याह्यो सुमना५७।१वाम⁵ ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

नृप जसकर्ण तनूज⁶ भयउ हरिकर्ण५८नरेस्वर ॥
मगधराज हढरसन सुता विसरा५८।१ परन्यौं बर ॥
ताकै सुत कीर्तिस५९ समर⁷ सागर अवगाही⁸ ॥
मागध⁹ सुमति सुता सती५९।१सु जिहिं बीर बिबाही ॥
हुव बालकृष्ण६० ताकै तनय कोसलेस धर्म्मी सुता ॥
रेनुका६० नाम परन्यौं यहहु सील रूप गुन संजुता ॥ ५ ॥
बालकृष्णकै तनय भयउ हरिकृष्ण६१ महीपति ॥

अपने शरीर के साथ गोग का भूमि में घुसना, प्रभा नामक राणी का सती होना, शुभकर्ण को वैदर्भ और कर्णाट देश का राज्य प्राप्त होने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से छहत्तर मयूख हुए ॥ ७६ ॥

१ सम्पूर्ण २ कनकलता नामक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ पुत्र ॥ ३ ॥ ४ पुत्र ५ सुमना नामक स्त्री को ॥ ४ ॥ ६ पुत्र ७ युद्ध रूपी समुद्र का ८ थाह लेनेवाला ९ मगध देश के राजा सुमति की सती नामक पुत्री को ॥ ९ ॥

सससिकुल टकपतिसिंह सुता परन्यौं सुमनारति६१।१ ॥
रामकृष्ण६२ हुव तास धर्म नयदानधुरंधर ॥
मगधराज सत्यजित सुता स्यामा६२।१ परन्यौं बर ॥
बलदेव६३भयो ताकैं तनय सो रघुकुल कससमीरपति ॥
प्रद्योत सुता जमुना६३।१परनि भयो बिदित भुव मंजुमति ॥

(पादाकुलकम्)

नृप बलदेव तनूज महामन, हुव हरदेव६४नाम धरनीधन ॥
मागधराज रिपुंजय दुहिता, ससिप्रभा६४।१परन्यौं यह सुहिता ॥७॥
लग्न समय ससधर कुल उत्तम, कहिय पुरोहित नाम जथाक्रम ।

(अथ चन्द्रवंशोद्देशनम्)

नारायनके नाभिकमलसन, निखिल जनक प्रकटिय चतुरानन१॥
ताकैं अत्रि२रु चंद्र३तास सुव, ताकैं जीवबधू बिच बुध४हुव ॥
तास इला विच पुरूरवा५सुत, ताकैं हुव खट६पुत्र धर्म जुत ॥९॥
आयु ६।१ तथा धर्मायु ६।२ अमावसु ६।३,
विस्वावसु ६।४ रु सतायु ६।५ अनुज तसु ॥
पुनि श्रुतायु६।६यहँ जो तृतीय३सुत, ताकैं भीम७तास कांचन८नुत।
तास सहोत्र९जन्हु१०ताकैं सुनि, गंगा सोसि सुता जिहिं किय पुनि
तास सुजंघु११अजक१२तस जानहु,
तस बलाक१३कुस१४तास प्रमानहु ॥११॥

१चन्द्रवंशी टकपतिसिंह की पुत्री सुमना को प्रीति सहित परना २ नीति धर्म और दान के धुर को धारण करनेवाला३श्रेष्ठ बुद्धिवाला।६।४राजा।७।लग्न के समय उत्तम चन्द्रवंश के नाम पुरोहित ने यथाक्रम से कहे. यहां चन्द्रवंश का कथन है कि नारायण के नाभि कमल से सब का पिता चार मुखवाला(ब्रह्मा प्रकट हुआ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा के अत्रि, उसके चन्द्र, और चन्द्रमा के बृहस्पति की (बृहस्पति की तारा नामक स्त्री को चन्द्रमा ने घर में डाल ली थी जिस) स्त्री में बुध नामक पुत्र हुआ, उसके इला नामक स्त्री में पुरूरवा नामक पुत्र हुआ, उसके धर्मात्मा छः पुत्र हुए ॥९॥५ स्तुति योग्य ॥१०॥ सहोत्र के जन्हु हुआ जिसने गंगा को शोषण करके फिर उसको पुत्री बनाई.

सुत कुसांब१५।१कुसनाभ१५।२मूर्तरय१५।३,

वसु१५।४सुत चउ४कुसके हुव दुर्जय ॥

बडो कुसांब१५गाधि१६ताके सुव, अतितप लखि इंद्रा१ऽवतार हुव१२

ताकै बिश्वामित्र१७महामुनि, सुनस्सेफ१८।१अंकरथ तास पुनि ॥

मधुच्छंद१८।२आदिक औरस सुत, बहु द्विज भये गोत्र कौसिक जुत

पुरूरवा सुत ज्येष्ट आयु६जो, परन्यौं सुता राहुकी नृप सो ॥

हुवसुतपंच५तासनहुप७।१जथा,क्षत्रवृद्ध२अरुरंभ३रजि४तथा ॥१४॥

अनेनाहु७।५इनमैं पंचम५जिम, या पंचम५कें हुव सुहोत्र८तिम ॥

त्रय३तस काम्यप९।१आसह९।२गृत्समद९।३,

सकुन१०तृतीय३ज वर्णा च्यारि४हद ॥१५॥

काम्यपकै कौसेय१०बिजित अरि, दीर्घतमा११तस तस धन्वंतरि१२

वैद्यराज जिहिं वर हरितैं लहि, आयुर्वेद अष्टधा८किय महि ॥१६॥

षट्पात्

केतुमान१३हुव तास भीमरथ१४तास महामन ॥

दिवोदास१५हुव तास तास हुव तनय प्रतर्दन१६॥

सोहि सत्रुजित१६नाम बच्छ१७धर्मिष्ट तास सुत ॥

सोहि ऋतध्वज१७कुसलयाश्व१७अभिधान तीन३जुत ॥

ताकै मदालसा नारि बिच उपजे आत्मज च्यारि४जहँ ॥

चोथो४अलर्क१८ताकै भयो संतति१९तास सुनीथ२०तहँ ॥१७॥

दोहा

भयो सुकेतु२१सुनीथकै, वैतहोत्र२२तस आस ॥

भार्ग२३नाम ताकै तनय, भार्गभूमि हुव तास ॥१८॥

षट्पात्

क्षत्रवृद्ध७।२जो भयउ प्रतिक्षत्र८सु ताकै हुव ॥

१इंद्र का अवतार२गोद रक्खा हुआ३सवर्णा विवाहिता स्त्री में पैदा हुए४का-श्यप चारों वर्णों की हद(सीमा)हुआ५शत्रुओं को जीतनेवाला६विष्णु से वर लेकर भूमि पर आयुर्वेद के आठ भाग किये७तीन नामों सहित८पुत्र९हुआ

तस संजय९तस जय१०रु तास विजय११रु तस कृत१२सुवं
तास हर्षबर्द्धन१३रु तास सहदेव१४तास्स सुत ॥
जयसेन१५रु संकृति१६तदीय³ तस खत्रवर्म१७जुत⁴ ॥
अरु रंभ७१३सु हुव सु⁵अग्रज मरिय सुर⁶ सहाय किय अनुज रजि७१४
तस तनय स्वर्गपति व्है सकल⁷ मरे इंद्र सर्न पाप भजि ।१६।

पादाकुलकम्

बडो आयु सुत नहुष७१९लेहु सुनि, सो व्है इंद्र भयो अजगर पुनि॥
यति८१९ययाति८१२संयाति८१३लर्भक,
आयति८१४वियति८१५तथाकृति८१६नामक ॥ २० ॥
ए खट६पुत्र नहुषके मानहु तिनमैं जती८।१जंती¹¹ हुव मानहु ॥
नृपययाति८१२भोतासपंच५सुव, यदु९१।१तुर्वसु२द्रुह्य३अनु४पुरु५हुव
पहिले उभय२इंदसुतके जे, दंइ दोहिती उर उपजे जे ॥
तीन३अपर¹¹ जे बिक्रम नय¹² जुत, सरमिष्टा दानवी जने सुत ।२२।

सचरणगद्यम्

ययातिनैं सुक्रके सापसौं जरा¹³ पाय बडे पुत्र जदुसौं कह्यो तेरे बैंयतैं¹⁴ मैं कछु काल बिषयानंद अनुभूत¹⁵ करौं यातैं सुपुत्र जुब्बन मोहि दैकैं जरा¹⁶ लेहु ॥
सो सुनतही वानैं अंगीकार न कीनी तब तेरे अन्ववाँय¹⁷ आधिपत्यके उचित कबहू मति होहु दयो सराप एहु ॥
अनंतर¹⁹ तुर्बसु द्रुह्य अनु इनहूकौं नटे जानि साप देकैं छोटे पुत्र पुरूसौं जुब्बन पाय भोग भोगंत भयो ॥
अरु तृप्ति न जानीं तब हारिकैं पुरूकौं पंछो²⁰ जुब्बन दै

२ पुत्र ३ उसके ४ स्तुतियोग्य ५ विना सन्तान मरा उसके रजि नामक छोटे भाई ने ६ देवताओं की सहाय की ७ सब पाप का सेवन करके इन्द्र ८ से मारे गये ९ सुन्दर १० इन्द्रियों को रोकनेवाला हुआ मानों ११ दूसरे १२ नीति सहित१३बुढापा१४तेरी युवा अवस्था से१५परिचय (अनुभव) करूं इसकारण से हे सुपुत्र तेरा जोबन मुझे देकर मेरा१६बुढापा तू ले१७वंश १८ स्वामिपन के उचित १९ इस पीछे २० पीछा यौवन देकर ।।२३।।

समय पर स्वर्गको लाह लयो ॥ २३ ॥

जजातिके बडे पुत्र जदुकै सहस्रजित् १०।१ क्रोष्टु १०।२ नल १०।३ रघु १०।४ यह पुत्रनको चतुष्क¹ ४ जान्यौं ॥

तिनमैं बडे पुत्र सहस्रजितके सतजित ११ ताकै हैहय१२।१ महाहय १२।२ वेणुहय १२।३ यहै तनूजनको त्रितय² ३ मान्यौं ॥

बडे हैहयके धर्म १३ताकै धर्मनेत्र१४ताकै कुंति१५ताकै सोहंजि१६तासौं माहिष्मान१७पराक्रमी जो माहिष्मती पुरी बसाय तत्थ रह्यो ॥

ताकै भद्रश्रेण्य १८ ताकै दुर्दम १९ ताकै बनक२०तासौं कृतबीर्य २१।१कृताग्नि२१।२कृतवर्मा२१।३कृतौजा२१।४यह पुत्रनको चतुष्टय³४कह्यो ॥२४॥

इनमैं कृतबीर्यके सहस्रार्जुन २२ सप्त७द्वीपवतीनरेस लंकेस्वर रावणकौं सरासैंनकी सिंजनी⁴मैं बांधि लायो ॥

जानैं दस हजार१००००सत्र⁶ करि दत्तावतारके बरसौं बाँहु सहस्र⁷१अधर्मरतबिज्ञान⁸२धर्मसौं पृथ्वीजय३धर्मसौं पालन४सत्रुनसौं बिजय५परमेश्वरसौं मृत्यु६पायो ॥

पच्चयासी हजार८५०००हायन⁹ माहिष्मतीमैं राज्य करि अधर्मके संकलपहुकौं जरूर जानि जानि द्वीपनमैं जाय जाय दंड देत भयो॥ अरु जाके चिंतनतैं नष्ट वस्तु को प्राप्ति होय ऐसो प्रभाव लयो।२५।

अर्जुनकै सूरसेन २३।१ मधु २३।२ जयध्वज २३।३ प्रमुख¹⁰सत१००

१ चारों का समुदाय २ तीनोंका समुदाय ३ चारों का समुदाय ४ धनुष की ५ प्रत्यञ्चा में ६ यज्ञ कर दत्तात्रेय के वरसे ७ सहस्रार्जुन ने अधर्म में प्रीति करनेवाले मनुष्यों से तो ८ ज्ञान लिया, धर्म से पृथ्वी का विजय किया, धर्म से ही पालन किया, शत्रुओं से विजय पाया और परमेश्वर से मृत्यु पाई ९ वर्ष माहिष्मती नगरी में राज्य करके अन्य द्वीपों में अधर्म में मनुष्यों के मन का व्यापार जान कर वहां जा जा कर उनको दंड दिया, जिस सहस्रबाहु को याद करने से नाश पाई हुई वस्तु की फिर प्राप्ति होजावे ऐसा प्रभाव उसने लिया ॥ २५ ॥ १०आदि

पुत्र भये ॥

तिनमैं जयध्वजकै तालजंघ २४ तालजंघहूकै तालजंघ२५ नामक सत १०० पुत्र ठये॥

तिनमैं मुख्य तो बीतिहोत्र २५।१ तासौं अर्जुनको बंस बिसेसहू बीतिहोत्र कहिये ॥

अरु याको अनुज २५।२ ताके वृष २६ ताके मधु २७ ताकै हू वृष्णि २८ प्रमुख सत १०० पुत्र श्रवनपथमैं गहिये ॥ २६ ॥

जदुके दूजे २ पुत्र क्रोष्टुकै वृजिनीवान ११ ताकै स्वाहित १२ताकै ऋष्यंगु १३ ताकै चित्ररथ १४ ताकै चतुर्दस १४ महारत्नपति चक्रवर्त्ती महाकुटुंब राजा सप्तबिंदु १५नैं जन्म लीनौं ॥

जाकै लक्ख १०००० रानी दसलक्ख१००००००तनय भये तिनमैं बडे पृथुजसा१६।१पृथुकर्मा१६।२पृथुजय१६।३पृथुकीर्ति१६।४ पृथुदांता१६।५पृथुश्रवा१६।६छ६पुत्र अपने जसको प्रसार कीनौं ॥

इनमैं छोटे पृथुश्रवाकै पुत्र तम१७ताकै असना१८ जानैं एक सत१०० अश्वमेध करे ॥

अरु असनाके सतेषु१९ताकै रुकमकवच२०ताकै परावृत२१ताकै रुक्मेषु२२।१पृथुरुक्म२२।२ज्यामघ२२।३पालित२२।४हरि२२।५पंच५पुत्र भये धर्म भरे॥ २७॥

तिनमैं तीजो३ज्यामघ२२।३महास्त्रीजित कोऊ राजकन्याकौं बिबाहके अर्थ जीति लायो तथापि सैव्यारानीके भयतैं अपनौं संकल्प वृथा करि तेरे पुत्र होयगो ताकौं बिबाहिबेकौं यह आनी यैं सैं कहत भयो ॥

पीछैं ज्यामघसौं सैव्यामैं विदर्भदेसको प्रवर्तक पुत्र विदर्भ२३प्रकट्यो ताकौं वह कन्या बिबाही तामैं विदर्भसौं क्रथ२४।१ कौसिक२४।२लोमपाद२४।३यह तनयको त्रिक३उद्गमैं लहत भयो ॥

२ कानों में ग्रहण करो [सुनो ३ पुत्र ४ स्त्री का जीताहुआ [स्त्री से डरनेवाला] ५ विदर्भ देश, इस नाम की प्रवृत्ति करानेवाला ६ जन्म लिया

तिनमैं कोसिक२४।२कै बभ्रु२५ताकै धृति२६ताकै कौसिक२७ताकै पुत्र चेदि२८तासौं चेदिवंस बिख्यात जान्यौं ॥

अरु बिदर्भके बडे पुत्र क्रथकै कुंति२५ताकै वृष्णि२६ताकै निर्वृति२७ताकै दासार्ह२८ताकै व्योम२९ताकै जीमूत३०ताकै बिकृति३१ताकै भीमरथ३२ताकै नवरथ३३ताकै दसरथ३४ताकै सकुनि३५ताकै करंभि३६ताकै देवरात३७ताकै देवक्षत्र३८ताकै मधु३९ताकै तनय कुरुबंस४०ताकै अनुरथ४१ताकै पुरुहोत्र४२ताकै अंसु४३ताकै पुत्र सात्वत४४मान्यौं ॥ २८ ॥

सात्वतकै भजन४५।१भजमान ४५।२ दिव्यांतक४५।३ देवावृध ४५।४महाभोज४५।५अंधक४५।६वृष्णि४५।७ए सप्त७ पुत्र भये ॥

तिनमैं दूजे२भजमानकै निमि४६।१कृकण४६।२वृष्णि ४६।३तथा इनहीके सापत्न[1] भ्राता सतजित् ४६।४सहस्रजित् ४६।५अजिता यु४६।६ए खट६तनुज ठये[2] ॥

अरु चोथे४देवावृधकै बभ्रु४६तथा सात्वतके पंचम५पुत्र धर्मधुरीण महाभोजके कुलमैं भोज१मार्तिक२अवदात३प्रमुख[3] महाबिख्यात राजा जानिये ॥

अरु सात्वतकै पुत्र वृष्णिकै सुमित्रो नामक पुत्र युधाजित्४६ ताकै अनुमित्रासित४७ताकै अनुमित्रनिघ्न४८ताकै सत्राजित४९।१ प्रसेन४९।२दोय२पुत्र भये तिनमैं सत्राजितहूकौं सूर्यके दये स्यमंतक मनिके प्रभावतैं महाश्रील[4] मानिये ॥ २९ ॥

अरु वाही वृष्णिके पौत्र अनुत्रासितकै सिनि४८ताकै सत्यक ४९ताकै जुजुधान५०ताकै असंगत५१ताकै कुणि५२ताकै युगंधर ५३यहै सैनेय बंस कह्यो ॥

अरु वाही अनुमित्रासितकै वृष्णि४८भयो ताकै स्वफल्क ४९।१ चित्रक४९।२यह तनूजनको युग्म[5] लह्यो ॥

१माता की सौत [सोक] से पैदा हुए भाई २हुए ३आदि ४बडा धनवान् ५जोड़ा

स्वफल्ककै अक्रूर५०।१उपसंग५०।२मृदुरवस ५०।३ अरि५०।४गिरि५०।५रक्त५०।६उपेक्ष५०।७सत्रुघ्न५०।८आरिमर्दन५०।९ मंधृक५०।१०वृषधर्म५०।११ गंध५०।१२ सोजबाह ५०।१३ प्रति५०।१४प्रमुख पुत्र तथा सुतारा५०।१कन्या भई ॥

अरु चित्रककै पृथु५०।१विपृथु५०।२प्रमुख त्यौंही अक्रूरकै देव५१।१अनुपदेव५१।२यहै ही दायादनकी द्वैई२ ॥ ३० ॥

अरु सात्वतके छठे पुत्र अंधकके कुकुर४६।१भजमान४६।२सुचि४६।३कंबलबर्हिष४६।४ए च्यारि४पुत्र सुनेंगये ॥

तिनमैं वडे कुकुरके वृष्णि४७ताकै कपोतरोमा४८ताकै विलोमा४९ताकै तुंबुरुसखा भवसंज्ञ चंदनोदक दुंदुभि५०ताकै अभिजित पुनर्वसु ५१ताकै पुत्र आहुक५२।१कन्या बाहुकी५२।२ए दोय२संतान भये ॥

आहुकके उग्रसेन५३।१देवक५३।२द्वै२ही तनय तिनमैं बडे उग्रसेनकै कंस५४।१न्यग्रोध५४।२सुनामा५४।३कंक५४।४संकु५४।५सभूमि५४।६राष्ट्रपाल५४।७युद्धसृष्टि५४।८तुष्टिमान५४।९ए नव९पुत्र तथा कंसा५४।१कंसवती५४।२सुतनु५४।३राष्ट्रपालिका५४।४कंका५४।५ए पंच५पुत्री भई ॥

अरु देवककै देववान५४।१उपदेव५४।२वसुदेव ५४।३ देवरक्षित ५४।४ए च्यारि४सूनु तैसैं ही वृपदेवा५४।१उपदेवा५४।२देवरक्षिता ५४।३श्रीदेवा५४।४सांतिदेवा५४।५सहदेवा५४।६देवकी५४।७सप्त ७ कन्या भई ॥३१॥

पहिलैं सात्वतको दूजो२पुत्र भजमानक कह्यो ताहीकै एक पुत्र विदूरथ भयो४६ताकै सूर४७ताकै सनि ४८ सनिकै प्रतिक्षत्र ४९ताकै स्वयंभोज५०ताकै हृदीक५१ताकै कृतबर्मा५२।१सतधन्वा ५२।२देवामीढ५२।३ताहीकौं सूर५२।३हू कहै ऐसैं यह तनूजनकी

---

१ आदि २ भाइयों का ३ जोड़ा ४ तुंबुरु [देवयोनि विशेष] का मित्र ५ पुत्र

ई३मानौं ॥

तिनमैं देवामीढसौं माग्षिा पत्नीमैं बसुदेव५३।१देवभाग५३।२ वश्रिय५३।३अनावृष्टि५३।४कथक ५३।५वत्स५३।६आनंद५३।७ [ंजय५३।८समीक५३।९गंडूष५३।१०ए दस१०पुत्र अरुपृथा५३।१श्रु देवा५३।२श्रुतकीर्ति५३।३श्रुतश्रवा५३।४राजाधिदेवी५३।५ए पंच५ त्रिका भई जानौं ॥

इनमैं बडी पुत्री पृथा५३।१तो पितानैं असंतति अपनैं मित्र रा- ा कुंतिकौं संतानभूत[३] दई ॥

जाकै कन्याभावमैं दिवाकरसौं कर्ण१भयैं पीछैं यह कुरुराज ांडुनैं बिबाहि लई ॥३२॥

अरु श्रुतदेवा५३।१कारूषराज वृद्धशर्मांकौं बिबाही जामैं दामो- रको द्रोही दंतबक्र भयो ॥

अरु श्रुतकीर्ति५३।१कैकेयराजकौं दई तामैं संतर्दनादिक पुत्र नके पंचक५नैं जन्म लयो ॥

श्रुतश्रवा५३।४चेदिराज दमघोषकौं बिबाही तामैं सिसुपालनैं उद्गम पायो ॥

अरु राजाधिदेवी५३।५अवंतिराज जयसेनकौं परिनाई तामैं बिं द१अनुबिंद२पुत्र मित्रबिंदा पुत्रिका यह संतति त्रिक ३ उद्भव ल- हि भयो ठायो ॥३३॥

बसुदेवसौं रोहिणीमैं बलभद्र ५४।१ सारण ५४।२ सठ ५४।३ दु- र्मद ५४।४ प्रमुख मदिरामैं नंद ५४।१ उपनंद ५४।२ कृतक ५४।३ प्र मुख भद्रामैं उपनिधि ५४।१ गय ५४।२ प्रमुख ॥

१ तीनों का समूह २ सन्तान रहित अपने मित्र कुन्ति नाम के राजा ३ सन्तान के उचित समझकर [इसीको अपना सन्तान मानो] देदी उसके कुमारपन में ४ सूर्य से ५ कृष्ण से द्रोह करनेवाला ६ पांचों के समुदाय ने जन्म लिया यहां यह नहीं जानना चाहिये कि पांचों ने एक साथ जन्म लिया था किन्तु कैकय राजा के पांच पुत्र हुए इसकारण पांचों का समूह कहागया है ७ जन्म लिया ८जन्म लेकर प्रसिद्ध हुआ ९ आदि

बैशलीमें कौशिक ५४।१ देवकीमें कीर्तिमान ५४।१ सुसेन५४।२ भद्रसेन ५४।३ इंगुद ५४।४ सुभद्र ५४।५ बिदेव ५४।६ बसुदेव५४।७ गद ५४।८ प्रमुख पुत्र सुभद्रा ५४।१ पुत्रिका इत्यादिक अनेकनमैं अनेक संतान भये ॥

अरु बलभद्रके निषठ ५५।१ उल्मुक ५५।२ सारणाकै नार्षिमान् ५५।१ इसच्छिसु५५।२ सत्यधृति ५५।३ प्रमुख श्रीबासुदेवकै रुक्मिणीमैं प्रद्युम्न ५५।१ चारुदेष्ण५५।२प्रमुख प्रद्युम्नकै ककुद्मतीमैं अनिरुद्ध५६ तासौं भद्रामैं बज्र५७ ताकै प्रतिबाहु५८ ताकै सुचारु ५९ ऐसैं अनेक संततिके प्रयुतन[1] प्रस्तार[3] गये ॥

या जदुकुलके कुलनकी हू संख्याको गनिबो गणकराजनकै[4] सिंहके बृहस्पतिको बिबाह भयो जात ॥

अरु तीन खर्ब अष्ट सहस्र अष्ट सत ३०००००००८८०० प्रमित[5] जिनके[6] अध्यापक भये ख्यात[7] ॥ ३४ ॥

ऐसैं मगधराजके पुरोहितनैं चंद्रबंसमैं जदुबंस कहि जजातिके दूजे पुत्र तुर्वसुको बंस कह्यो ॥

तुर्वसुकै पुत्र बन्हि१०ताकै भर्ग११ताकै भानु१२तासौं चित्रभानु१३ताकै करंधम१४ताकै मरुत्त१५भयो जानैं संततिके[8] अभाव करि पुरूके हो[9] कुलमैं अंतर्भाव लह्यो ॥

तोजे३पुत्र द्रुह्युकै बभ्रु१०ताकै सेतु११तासौं आरब्ध१२ताकै गांधार१३तासौं धर्म१४ताकै घृत१५तासौं दुर्मद१६ताकै प्रचेता१७जाकी संततिनैं अधर्मके आचरनतैं उदीचीको[10] आधिपत्य[11] लहि म्लेच्छभाव पायो ॥

१श्रीकृष्ण के २ दश लाख को प्रयुत कहते हैं ऐसे अनेक प्रयुत ३ फैल गये ४ ज्योतिषियों के सिंह राशि पर स्थित बृहस्पति के विवाह के समान हो गया अर्थात् सिंहस्थ में विवाह होते ही नहीं उसीमाफिक यदुवंश की गणना भी नहीं होसक्ती ५ प्रमाण से ६ पढ़ानेवाले ७ प्रसिद्ध हुए ८ सन्तान नहीं होने के कारण पुरु के कुल में ही ९ मिल गया १० उत्तर दिशा का ११ स्वामी होकर म्लेच्छ (नीच जाति) होगया

अरु चोथे ४ पुत्र अनुकै सभानर १०।१ चक्षु१०।२ परमेक्षु१०।३ तीन ३ तनय तिनमैं बडे सभानरके कालनर ११ तासौं सृंजय १२ ताके पुरंजय १३ ताकै जनमेजय १४ तासौं महासाल १५ ताके महामना १६ तासौं उसीनर १७।१ तितिक्षु१७।२ यह अंगजनको उभय २ मागधननैं गायो ॥ ३५ ॥

उसीनरकै सिवि १८।१ नृग १८।२ नष्ट १८।३ कृमि १८।४ वर्चस्वी १८।५ पंच ५ पुत्र भये ॥

तिनमैं बडे महाउदार सिविकै बृषदर्भ १९।१ सुबीर १९।२ कैकेय १९।३ मद्रज १९।४ च्यारि ४ ही आत्मज ठये ॥

उसीनरके अनुज तितिक्षुकै उपद्रव्य १८ ताकै हेम १९ तासौं सुतपा २० ताकै बलि २१ जाके क्षेत्रमैं दीर्घतमासौं अंग २२।१ वंग २२।२ कलिंग २२।३ पुंड्र २२।४ सुम्मह २२।५ यह पुत्रनको पंचक ५ जानिये ॥

तिनमैं अंगके अयोन्य २३ ताकै दिविरथ २४ तासौं धर्मरथ २५ ताकै चित्ररथ रोमपाद २६ ताकै चतुरंग २७ तासौं पृथुलक्ष २८ताकै चंपापुरीको निर्माता चंप २९ मानिये ॥ ३६ ॥

चंपकै उर्यंग३०ताकै भद्ररथ३१ताकै वृहद्रथ३२।१वृहत्कर्मा३२।२ दोय२पुत्र जन्म लह्यो ॥

वृहत्कर्माकै वृहद्भानु३३ताकै वृहन्मना३४तासौं जयद्रथ३५ताकै द्विज१राजन्य२वर्ग्ग के अंतराल सूतोपनामक बिजय३६ताकै धृति३७तासौं धृतव्रत३८ताकै सत्यकर्मा३९तासौं अधिरथ४०जानैं देवनदीतैं मंजूषा निकारि कर्ण४१सो पुत्र पायो कर्णकै वृखसेन४२

---

१ पुत्रों के इस जोड़े का होना २ भाट लोगों ने कहा है ३ पुत्र हुए. बलि नामक राजा की ४ राणी में दीर्घतमा नामक मुनि से ५रचनेवाला ६ ब्राह्मण और क्षत्रिय ७ वर्ण के ८ बीच में ९ सूत (ब्राह्मणी स्त्री में क्षत्रिय के वीर्य से पैदा होवे उसको सूत कहते हैं) उपनामक१०गंगा नदी से११मंजूस [सन्दूक] निकाल कर

प्रमुख पुत्र ऐसैं अनुक्रोहु अन्ववाय कह्यो ॥

जजातिके पंचम५पुत्र पुरूकै जनमेजय१०ताकै प्रचिन्वान्११ तासौं प्रवीर१२ताकै मनस्यु१३तासौं अभयद१४ताकै सुद्युम्न१५तासौं बहुगव१६ताकै संयाति१७तासौं अहंयाति१८ताकै रौद्राश्व१९ तासौं ऋतेयु२०।१अनिलेयु२०।२कृतेयु२०।३कक्षेयु२०।४स्थंडिलेयु २०।५धृतेयु२०।६स्थलेयु२०।७धर्मेयु२०।८संप्रतेयु२०।९वनेयु२०।१० इन दस१०राजकुमारन माताकौं सपुत्रा कीनी ॥

तिनमैं बडेऋतेयुकै रंतिनार२१ताकै पुत्र अप्रतिरथ२२।१ध्रुव२२।२ या अंगज[3] उभय२मैं अप्रतिरथकै कण्व२३तासौं विधातिथि२४जहाँसौं काण्वायन विप्र होय प्रतिग्रह[4]१जाजन[5]२अध्यापन[6]३सहित छह[7] कर्म वृत्ति लीनी ॥ ३७ ॥

अरु अनिलेयु आकरसौं दुष्खंत२१आदि च्यारि४रत्न प्रकटे तिनमैं दुष्खंतसौं सकुंतला अधर[10] अरणीमैं आहित[11] हव्य[12]को आहारक[13] चक्रवर्ती नरेस भरत२२दीप्यमान भयो ॥

ताकै नव९पुत्र भये तिनकौं अपनैं अनुरूप[14] न देखि जनकनैं[15] कुपुत्र कहे तब उनकी जननिनैं सबनहीकौं मारि पोतनको[16] पाप लयो ॥

तदनंतर[17] भरतनैं पुत्रकामना करि मरुत्सोमसत्र[18][19] कीनौं तहाँ पहिलैं वृहस्पतिसौं अग्रज उतत्थ्यकी अंगना[20] ममतामैं आग्रह करि उपज्यो ज्यो भारद्वाज ताकौं मरुतदेवनैं भरतकौं संतानभूत[21] करि

१आदि२वंश३इन दोनों पुत्रोंमे४दान लेना५यज्ञ कराना६वेद पढाना७छः कर्म[यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेद पढाना, दान देना और दान लेना]अनलेयु रूपी८खान से ९दुष्यन्त आदि चार रत्न प्रकटे तिनमें दुष्यन्त से शकुन्तला की१०योनि रूपी अरणी में १२ होम के पदार्थ रूपी११शत्रुओं को१३खानेवाला (अग्नि) चक्रवर्ती राजा भरत प्रकाशित हुआ१४अपने सदृश नहीं देख कर१५पिता ने१६ बालकों का पाप लिया १७ जिस पीछे भरत ने पुत्र होने की कामना से१८ मरुत्देवों के अर्थ १९ सोमयज्ञ किया तब वृहस्पति के बडे भाई उतत्थ्य की ममता नामक २० स्त्री मे पैदा हुए भरद्वाज को मरुत्देवों ने२१ सन्तान

अप्यो तानैं बितथ२३नाम पायो॥

वितथकै भवमन्न्यु२४ताकै वृहत्क्षेत्र२५।१महावीर्य२५।२आनर२५।३गर्ग२५।४यह पुत्र चतुष्क४प्रादुर्भाव लायो ॥ ३८ ॥

इन च्यारि४नमैं आनरकै तो स्वयंगुरुधी २६।१रंतिदेव२६।२द्वै२ही सुनैं रु छोटे गर्गके सिनि२६पुत्र भयो जहाँ तैं गर्गकेहू कुलके सबननैं बिप्र होय गार्ग्यसैन्य असो उपटंक धार्‌यो ॥

अरु बितथके दूजे२पुत्र महाबीर्यकै उरुक्षय२५ताकै त्र्यारुणा२६।१पुष्करिणा२६।२कपि२६।३ए तीन३तनय भये तिनहू बिप्र होय राजन्यधर्म बिसार्‌यो ॥

बडे वृहत्क्षत्रके सहोत्र२६ताकै हस्तिनामपुरको निर्माता हस्ती२७ नाम पुत्र जान्यौं ॥

अरु ताकै अजमीढ २८।१ द्वयमीढ २८।२ उरमीढ२८।३यह तनयनको त्रितय ३बखान्यौं ॥ ३९ ॥

इनमैं बडे अजमीढके कंठ २९।१ वृहदिषु २९।२ नील २९।३ ऋक्ष २९।४ प्रमुख पुत्रनमैं जेठे कंठके तो कांठायन द्विज भये रु वृहदिषुकै वृहद्धनु ३० तासौं वृहत्कर्मा ३१ ताकै जयद्रथ ३२ तासौं बिश्वजित ३३ ताकै श्वेतजिव्ह ३४ तासौं श्येनजित३५।१ चिरांसुक ३५।२ अंकस्पद ३५।३ दृढधनु ३५।४वत्स ३५।५तिनमैं श्येनजितकै रुचिरांचक ३६।१ पृथुसेन ३६।२ इनमैं अनुजनकै पार ३७ तासौं नीर ३८ ताकै सत १०० पुत्र तिनमैं कांपिल्यराज ३९ समरप्रधान ॥

अरु समरकै पार ४०।१ सुपार ४०।२ सदश्व४०।३ तीन ही तनय नयनिधानँ ॥

इनमैं पारसौं पृथु ४१ ताकै सुकृति४२ तासौं बिभ्राज४३ताकै अणुह ४४ तासौं व्यासावतारके तनय शुक मुनिकी तनया की

रूप दिया १ जन्म लिया २ पदवी (खिताब) ३ क्षत्रियों के धर्म को छोड दिया ४ रचनेवाला ५ आदि६वडे७नीति ही है धन जिनके८वेदव्यास के पुत्र

जो रानी तामैं तनूज ब्रह्मदत्त ४५ भयो ॥

तासौं भल्वाट४६ताके द्विढ४७तासौं यवीनर ४८ताके धृतिमान ४६तासौं सत्यधृति५०ताकै दृढनेमि५१तासौं सुपार्श्व५२तासौं सुमति ५३तासौं सन्नतिमान५४ताकै पुत्र कृत५५जानैं हिरण्यगर्भसौं जोगलयो

या कृतकै उग्रायुध५६ताकै क्षेम५७तासौं सुबीर५८ताकै रिपुंज य५९तासौं बहुरथ६०नाम तनय जात ॥

अरु हस्तीके पुत्र अजमीढकै नीलिनी नाम रानीमैं भयो जो नील२९।३ताकै पुत्र सुसांति३०तासौं पुरुजानु३१ताकै चक्षु३२तासौं हर्यश्व३३ताकै मुद्गल३४।१शृंजय३४।२बृहदिषु३४।३यवीनर ३४।४कंपिल्य३४।५ए पंच५पुत्र भये तिनह्नीतैं पांचालदेस जानौं ख्यात ॥

इनमैं मुद्गलकै कोउक संतानके तो पांचाल मौद्गल्य उपनामक बिप्र भये ॥

त्यौंही मुद्गलकै अपर पुत्र दृढाश्व३५ताकै पुत्र दिवोदास ३६कन्या अहल्या३६ए दोय२ठये ॥ ४१ ॥

या अहल्यामैं तो सुरथसौं सूनु सतानंद१तासौं धनुर्वेदको पारंगत सतधृति२भयो जाको सुक्र उर्बसीकौं देखतही स्कन्न होय तेजनके तंबनमैं द्विधाभूत पर्‌यो ॥

तासौं कृपाचार्य३।१तथा कृपी३।२यह युग्म२भयो जाकौं सिकार के समय राजा संतनु देखि अपनैं पुर लाय पोखित कर्‌यो॥

अरु दृढाश्वको पुत्र जो दिवोदास३६ताकै मित्रायु तासौं च्यवन३७ताकै सुदास३८तासौं सहदेव३९ताकै सोमक४०तासौं जंतु४१प्रमुख सत१००पुत्र भये तिनमैं छोटो वृपभ४१ ताकै द्रुपद४२ताकै धृष्टद्युम्न४३तासौं धृतकेतु४४ऐसैं नीलको बंस कह्यो ॥

शुकदेव की पुत्री १ ब्रह्मा से २ जन्मे ३ पञ्जाब देश प्रसिद्ध हुआ ४ दूसरा पुत्र ५ पुत्र ६ धनुर्वेद के पार जानेवाला अर्थात् सम्पूर्ण जाननेवाला ७ वीर्य ८ गलित (झर कर) होकर ९ बांस के१०वृन्दों (बड़े) में ११ दो टुकड़े होकर गिरा १२ आदि

अरु अजमीढको चोथो४पुत्र जो ऋक्ष ताकै संबरण३०ताकै रानी तपनकी[1] तनया[2] जो तपती तामैं कुरुक्षेत्रके प्रवर्तक कुरु३१नाम पुत्रनैं जन्म लह्यो ॥ ४२ ॥

राजा कुरुकै सुधनु३२।१जन्हु३२।२परीक्षित३२।३प्रमुख[3] पुत्रनमैं सुधनुकै सुहोत्र३३ताकै च्यवन३४तासौं कृत३५ताकै परिवसु३६तासौं बृहद्रथ३७।१प्रत्यग्र३७।२संबल३७।३कुस३७।४ऋषभ३७।५बेल्य-३७।६मत्स्य३७।७प्रमुख पुत्र जानिये ॥

तिनमैं बडे बृहद्रथकै कुसाग्र३८।१जरासंध३८।२उभय२अंगजनमैं कुसाग्रकै वृषभ३९ताकै पुष्पवान४०तासौं सत्यहित४१ताकै सुधन्वा४२तासौं जतु४३असैंही जरासंधकै सहदेव३९ताकै सोमावि४० तासौं श्रुतश्रवा४१सोही सुभवानू४१ताकै अयुतायु४२तासौं निरमित्र४३ताकै स्वक्ष४४तासौं बृहत्कर्मा४५तासौं सेनाजित्४६तासौं श्रुतंजय ४७ ताकै बिप्र ४८ ताकै सुचि ४९ ताकै क्षैम्य५० ताकै मनौं आपहीकौं भावी[4] जामाता[5] जानि प्रीतिपरायन चातुर्भुज[6] गोगके सहाय समर्थ सुब्रत ५१ तासौं धर्म ५२ ताकै सुश्रम ५३ तासौं दृढासन५४ ताकै सुमति५५ तासौं सबल५६ तासौं सुनीत ५७ ताकै सत्याजित ५८ तासौं विश्वजित ५९ ताकै रावरो[7] स्वसुर यह राजा रिपुंजय ६० मानिये ॥

अरु कुरुके तीजे३पुत्र परीक्षितके जनमेजय३३।१श्रुतसेन३३।२ भीमसेन३३।३उग्रसेन३३।४च्यार४ही पुत्रनके जुदे बंस भये ॥

अरु कुरु सुत जन्हुकै सुरथ३३ताकै बिदूरथ३४तासौं सार्वभौम ३५ताकै जयसेन३६तासौं अर्वाचीन३७ताकै आयु३८आयुसौं अक्रोधन३९तासौं देवातिथि४०ताकै ऋक्ष४१तासौं भीमसेन४२ताकै दिलीप४३तासौं प्रतीप४४ताकै देवापि४५।१संतनु४५।२वाल्हीक

१ सूर्य की २ पुत्री ३ आदि पुत्रों में ४ होनेवाला ५ जमाई ६ चहुवाण ७ हरदेव नामक चहुवाण से विश्वजित् का पुरोहित कहता है कि सत्यजित् के यह आपका सुसर विश्वजित् है.

४५।३नामक तीन३ही तनुज ठये ॥ ४३ ॥

इनमैं बडे देवापिनैं तो अल्पही अवस्थामैं जोगको अभ्यास धारे कलाप ग्राममैं जाय निवास कीनौं

अरु जा जा वृद्धकौं स्पर्श करै सो सो ही जुब्बन लहै ऐसो जो मध्यम पुत्र संतनुनैं हस्तिनापुरको राज्य लीनौं ॥

छोटे बाल्हीकके सूनु सोमदत्त४६ताकै भूरिश्रवा ४७।१भूरिश्रव ४७।२सल४७।३तीन३ही तनूजन ख्याति पाई ॥

अरु संतनुकै गंगामैं बसुदेवनके अवतार अष्ट८पुत्र भये तिनमैं बडेसात७ सोदर्य्यन बालही अवस्थामैं तनूं बिहाई ॥ ४४ ॥

अरु अष्टम८पुत्र महापराक्रमी देवव्रत४६रह्यो जानैं गंगाके प्रस्थानके अनंतर पिताके अर्थ राज्यकौं बिहाय ब्रह्मचर्य लैकै भीष्म नाम कहाय धीवरनैं पोखी ऐसी उपरिचरकी कन्या व्यासकी माता सत्यवती आनी ॥

तामैं संतनुसौं चित्रांगद४६।१विचित्रबीर्य४६।२दोहू२पुत्र भये समर मानी ॥

बडो चित्रांगद तो निज नाम गंधर्वसौं मस्यो तब अनुज अवनीस भयो ताकौं देवव्रतनैं कासिराजकी कन्या अंबिका१अंबालिका२आनि बिबाही ॥

तिनमैं अति आसक्त होय यानैं अंग तज्यो तब सत्यवतीके

१ पुत्र हुए २ छोटी अवस्था मे ३ जिस जिस वृद्ध को स्पर्श करैं वह वह ४ जोबन लेवें (युवा) होजावे ऐसा जो शन्तनु उसने हस्तिनापुर का राज्य लिया ५ प्रसिद्ध हुए ६ एक उदर से पैदा होनेवाले भाइयों ने बालक अवस्था में ही ७ शरीर छोडे और आठवां बडा पराक्रमी पुत्र देवव्रत रहा जिसने शन्तनु के घर से गंगा के ८ चले गये ९ पीछे पिता के लिये राज्य को १० छोड कर ब्रह्मचर्य लेकर भीष्म नाम कहला कर १२ वसु (देवयोनि विशेष) जो विमानों में बैठ कर ऊपर ही ऊपर भ्रमण किया करते हैं उसकी कन्या जिस को ११ धीवर (नाव चलानेवाले) ने पाली जिसके कन्यापन में वेदव्यास पैदा हुए थे उस कन्या को शन्तनु के लिये आनी १३ अपने नाम (चित्रांगद) नाम वाले गन्धर्व से मारा गया और१४छोटा भाई राजा हुआ जिसको१५भीष्म.

निदेससौं[1] द्वैपायननैं[2] विचित्रबीर्यके छेत्रनमैं धृतराष्ट्र ४७।१ पांडु ४७।२ जुग२पुत्र जनैं तिनकी संतति[3] सुनिये जो सूरिनन[4] सिराही ॥ ४५ ॥

धृतराष्ट्रसौं सुबलसुतामैं[5] दुर्योधन४८प्रमुख[6] सत १०० पुत्र तथा दुस्सला१कन्या भई ॥

दुर्योधनसौं भानुमतीमैं लक्ष्मण४९प्रमुख पुत्र लक्ष्मणा१कन्या इते भये तिनमैं भगिनी[7] जो दुस्सला ताकौं सिंधुराज[8] वृहद्रथ कुमार जयद्रथकौं बिबाहि पुत्री लक्ष्मणाकौं गदाधरके पुत्र सांबकौं[9] बिबाहि दई ॥

पांडुके छेत्रनमैं धर्म१[10] बात२[11] बासव३[12] दस्र २।५नतैं जुधिष्टिर ४८।१ भीम४८।२अर्जुन४८।३नकुल४८।४सहदेव४८।५पंच५पुत्र भये ॥

तिनमैं जुधिष्टिरसौं द्रौपदीमैं प्रतिविंध्य४९।१यौधेयीमैं देवक४९।२इत्यादि पुत्र ठये ॥४६॥

भीमसौं द्रौपदीमैं श्रुतसोम४९।१हिडंबामैं घटोत्कच४९।२

किरीटीसौं[13] कृष्णामैं[14] श्रुतकीर्ति४९।१उलूपीमैं इरावान्४९।२चित्रांगदामैं बभ्रुबाहन४९।३सुभद्रामैं अभिमन्यु ४९।४पुत्र जानियें ॥

अरु नकुलसौं नित्ययौवनामैं[15] सतानीक४९।१करेणुमतीमैं निरमित्र४९।२सहदेवसौं सैरं १६ ध्रीमैं श्रुतकर्मा ४९।१जयामैं सुहोत्र ४९।२इत्यादि पांडवनके पुत्र मानिये ॥

अभिमन्युकै उत्तरामैं पुत्र बिष्णुरात[17]न५०ताकै जनमेजय ५१।१ श्रुतसेन ५१।२ भीमसेन ५१।३ उग्रसेन५१।४यह पुत्रनको चतुष्क ४कह्यो ॥

अरु जनमेजयकै सतानीक५२ताकै अश्वमेधदत्त५३तासौं

१ सत्यवती की आज्ञा से २ वेदव्यास से विचित्रवीर्य की राणियों ने धृतराष्ट्र और पांडु दो पुत्र जने जिनकी ३ सन्तान सुनो. जिनकी ४ पंडितों नें प्रशंसा की है ॥ ४ ॥ ५ सुबल नामक राजा की पुत्री (गान्धारी) मे ६ आदि ७ बहिन ८ सिन्धु देश के राजा ९ श्रीकृष्ण के पुत्र. पांडु की राणियों में धर्मराज १० पवन ११ इन्द्र १२ अश्विनीकुमारों से पुत्र १३ अर्जुन से १४ द्रौपदी से १५ द्रौपदी सें १६ द्रौपदी से १७ परीक्षित.

अधिसीमकृष्ण५४ताकै बिवक्षु५५जानैं कौसांबीमैं जाय निवास लं ह्यो ॥४७॥

बिबक्षुकै ऊष्ण५६ताकै चित्रूरथ५७ताकै सुचिरथ५८तासौं परिम्लुच५९तासौं सुनय६०तासौं मेधावि६१ताकै नृपंजय६२जो चंडासिराज गोगके सहाय यवनेंद्र अबूकरके चमूपतिकौं मारि सूरधर्मको प्राप्त भयो तासौं ऊर्ब६३ताकै तिग्म६४तासौं वृहद्रथ६५तासौं बसुदान ६६ ताकै सतानीक ६७ताकै उदयन६८तासौं अहीनर६९ताकै दंडपाणि७०ताकै पुत्र निरामित्र७१जो क्षेमक७२कुमारसहित कौसांबीमैं विद्यमान² कहिये ॥

अैसे याइंदु³केअन्ववाय आकरमैं रत्नभूत जो मगधराज रिपुंजयकी सुतादुल्लहीसिसुप्रभासहित चंडासिराजदुल्लहहरदेव६४चिरजीवीरहियै

अैसैं सप्त७पदीके पूर्व ससिं⁵कुलके सगोत्र⁴ सुनाय मगधेसनैं नरेस हरदेवकौं ससिप्रभा६४।१विबाहि सीख दई ॥

अैसैं रावराजेंद्र चंडासिराज हरदेवलौं अ⁶नलके अन्ववाँ⁷यकी कला६४प्रमित पीढि भई ॥ ४८ ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचंडासिबंशवर्णने शुभकर्ण५५कनकलतो५५।१दयकर्ण५६धन्या५६।१यशःकर्ण५७सुमनो५७।१हरिकर्ण५८विशरा५८।१कीर्तिश५९सतो५९।१बालकृष्ण६०रेणुका६०।१हरिकृष्ण६१रति६१।१रामकृष्ण६२श्यामा६२।१बलदेव६३यमुना६३।१ हरदेव६४शशिप्रभो२४।१द्वेशनचरमदम्पतिरपरिणायनमभयचन्द्रबंशसमाससूचनं पञ्चात्रिं

१चहुवाण राजा २मौजूद ३चन्द्र वंश रूपी खान मे ४फेरा (विवाह के समय अग्नि की प्रदक्षिणा) फिरने से पाहिले ५चन्द्रवंश के ४सगोत्र सुना कर ६अग्नि ७वंश की चौसठ पीढी हुई ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में चहुवाण वंश वर्णन में शुभकरण-कनकलता, उदयकर्ण-धन्या, यशकर्ण-सुमना, हरिकर्ण-विसरा, कीर्तीश-सती, बालकृष्ण-रेणुका, हरिकृष्ण-रति, रामकृष्ण-श्यामा, बलदेव यमुना, हरदेव-शशिप्रभा के कथन में अन्तिम स्त्री पुरुष के विवाह समय में

शत्तमो३५मयूखः ॥ ३५ ॥ आदितः सप्तसप्ततितमः ॥ ७७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पज्झटिका

मगधेस रिपुंजय नाम भूप, हरदेव६४स्वसुर जो यँहँ अनूप ॥
अभिधा मुनिक्य हुव सचिव तास, तिहिँ करि नरेस मागध बिनास
प्रद्योतन नाम जु अप्पपुत्त, धरि सो दयोहि तस तखत धुत्त ॥
पटना१रु देवगिरि२दुर्ग पाय, सब नृपन भयो जेता स्वभाय ॥ २ ॥
रघुकुल प्रसेनजित प्रमुख राज, सब हारि थके लरि लरि समाज॥
हरदेव६४इत सु चहुवान नाह, बन तजिय देह रहि जोग राह ॥ ३ ॥
हुवभीम६५तनय ताकै उदार, कविकुमुदचंद्र दुख दलनहार ॥
गांधारराज बसुमित्र गेह, तिहिँ काल सुता निधि ललित लेह³ ॥४॥
बसु६५।१नाम जुबतिजनभाललाल, दृग कंज कलित पम्हलअराल
परनी सु भीम६५चहुवान नाथ, सद्धिय स्वधर्म सुभ जुगलरसाथ ।५।
प्रद्योतन मागध समय पाय, लिन्नौं बिदर्भ नृपतैं छुराय ॥
तिहिँ जंग मरिय करनाटराज, व्है हेतिपूत लिय सुर समाज ॥ ६ ॥

संक्षेप से चन्द्रवंश की सूचना करने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३५॥ और आदि से सतत्तर मयूख हुए ॥ ७७ ॥

हरदेव चहुवाण का श्वशुर मगधदेश का राजा रिपुंजय उपमा रहित था उसके मुनिक्य नामक कामदार (मन्त्री) ने उस राजा को मार डाला उस धूर्त कामदार ने अपने पुत्र प्रद्योतन को उस राजा के तख्त पर बिठा दिया जो सब राजाओं को जीतनेवाला हुआ ॥ १ ॥ २ ॥१आदि ॥ ३ ॥ २ कवि रूपी कुमोदनी (रात्रि विकाशी कमलों) का दुःख मेटनेवाला चन्द्रमा ३ सुन्दर लेख से निधि रूपी पुत्री हुई ॥ ४ ॥ उसका नाम बसु था वह अन्य स्त्रियों के ललाट का लाल (टीका अथवा लाल नामक रत्न) था जिसने कमल के समान नेत्र पाये और पक्ष्मल(कटाक्ष)टेढे पाये अर्थात् टेढे कटाक्षवाली अथवा टेढे भौंहवाली, उसको भीम चहुवाण ने परनी ४ जोड़ा सहित ॥ ५ ॥ प्रद्योतन नामक मगधदेश के राजा ने समय पाकर विदर्भ के राजा से विदर्भ देश छुडा लिया उस युद्ध में शस्त्रों से पवित्र होकर भीम ने देवताओं का समाज लिया [मारा गया] ॥ ६ ॥

सहदेव६६भीमसुत हुव सुपुत्र, नय१धर्म२बेद३गो४द्विज५तत्रुत्र ॥
नृप चेदिराज दृढरथ सनाम, तनया पृथा६६।१सु परन्यौं ललाम।७।
सहदेव तनय हुव रामदेव६७, कंमनैत कर्मन छवि कामदेव ॥
नेपालराज सुब्रत निकेत, तुंगा६७।१सुता सु परन्यौं सुचेत ॥ ८ ॥
सहजा६७।२हु अपर अभिधान तास, वसुदेव६८भूप हुव जठर जास॥
विद्याबिनोद१रन२सूरि१सूर२,पानिप रजपूती उदधि पूर ॥ ९ ॥
कुंडक नृप रघुकुल कोसलेस, बेला६८।२तदीय तनया सुवेस
बसुदेव६८बिबाहन ताहि तत्त, साकेत नगर बर बिहित पत्त ॥१०॥
बंदन नीराजन बिधि बनाय, प्रविसायउ मंडप लग्न पाय ॥
नृप स्वपुर पुरोहित उचित काल, तँहँ तपन बंस बरनिय बिसाल ॥

(अथ सूर्यवंशोद्देशनम् ॥)

हुव बिष्णुनाभि सन वारिजात, तासौं हुव धाता१सर्ग तात ॥
विधिकै मरीचि२कश्यप३तदीय, रवि४अदिति जन्यौं तिनसौं गरीय,
वैवस्वत५मनु रविसुत प्रवीर, नव९तनय तास हुव धर्मधीर ॥
इक्ष्वाकु६।१तथामगधिष्ट२जानि, सर्याति३नरिष्यंत६।४हु बखानि ॥
नाभाग६।५बहुरि वृषकेतु६नाम, दिष्ट७रु करूष८रु प्रषध्र६।९ताम॥
सुत काम रचिय मनु बहुरि सत्र, होता मिलाय नृपनारि तत्र।१४।

१कवच२वाणविद्या का जाननेवाला३सुन्दर४सुव्रत के घर में।८।५दूसरा नाम६ उदर से७विद्या विनोद में पंडित और रण में शूर८रजपूती के पराक्रम मे पूर्ण समुद्र ॥९॥ कुंडक नामक रघुवंशी अयोध्या का राजा जिसकी बेला नामक सुन्दर पुत्री को व्याहने के लिये वसुदेव चहुवान उचित वर होकर अयोध्या में पहुँचा ॥ १० ॥ नम्रता पूर्वक आरती करके लग्न के समय मंडप में प्रवेश कराया और कुंडक राजा के पुर के पुरोहित ने उचित समय पाकर वहां पर सूर्य वंश का वर्णन किया ॥ ११ ॥ अब सूर्यवंश का कथन है॥ विष्णु की नाभि से कमल हुआ. उस कमल से सृष्टि के पिता ब्रह्मा हुए, ब्रह्मा के मरीचि और उनके कश्यप हुए उन कश्यप से अदिति ने कश्यप से भी पूज्य सूर्य जना ॥ १ ॥ सूर्य का पुत्र वैवस्वतमनु हुआ जिसके धर्म को धारण करनेवाले नव पुत्र हुए ॥ १३ ॥ जहां मनुने पुत्र कामना से यज्ञ रचा जहां होता को मिला कर राजा [मनु] की राणी ने ॥ १४ ॥ कहा कि हे ब्राह्मण

इम कहिय चाह मम चित्त एहु, द्विजराज अप्प दुहिता हु देहु ॥
तब हुव सुताहि होता प्रभाव, अभिधान इला६।१०साबिनय स्वभाव
पुनि मित्रावरुन कृपानुसार, सुद्युम्न६।१०नाम सुहि हुव कुमार ॥
गो कबहु इलावृत भर्ग गेह, भो नारि अपर्णा साप एह ॥ १६ ॥
पहिलैं सनकादिक सुनन ज्ञान, आये गिरीस पँहँ मोदमान ॥
तँहँ संभु१सिवा२बिरचित व्यवाय, यह लखि मुररे मुनि दृग दुराय
अंबाहु भई लज्जित अमाप, सामान्य भयो इम तबहि साप ॥
आवैं जु इलावृत माँहिं कोउ, अबसौं तजि पौरुख नारि होहु ॥
इहिं साप भई वह भुव अगम्य, सुद्युम्न६।१०गयो तँहँ रमत रम्य॥
तिय अप्प भो रु बडवा तुरंग, ससिसुत लखि लैगो ताहि संग ।१९।
तामाँहिं रुचिर बुधसौं तनूज, प्रकट्यो पुरूरवा प्राप्तपूज ॥
मनु५जानि यहै मुनि मत मिलाय,करि सत्र किय सु पुनिपुरुखकाय
पुर ताहि प्रतिष्ठानाभिधान, थिर दिय वैवस्वत रहन थान ॥

आप मुझे एक पुत्री भी दो तब उस होता [होम करनेवाले] के प्रभाव से इला नामक नम्र स्वभाववाली कन्या हुई ॥ १५ ॥ फिर मित्रावरुण की कृपा से सुद्युम्न नामक कुमार हुआ. वह कभी इलावृत खंड में महादेव के स्थान पर गया सो पार्वती के श्राप से स्त्री होगया ॥ १६ ॥ अब उस श्राप का कारण बताते हैं कि पहिले कभी ज्ञान सुनने के लिये सनकादिक मुनि हर्ष मानकर महादेव के पास आये जहां महादेव और पार्वती मैथुन कररहे थे जिनको देख कर वे मुनि नेत्र बंध करके पीछे फिर गये ॥ १७ ॥ पार्वती भी बहुत लज्जित हुई तब सब के लिये श्रापहुआ कि अब से जो कोई इलावृत खंड में आवेगा वह पुरुषपन को छोड कर स्त्री होवेगा ॥ १८ ॥ इस श्राप के कारण वह भूमि नहीं जाने योग्य होगई, उस सुन्दर स्थल में रमता हुआ सुद्युम्न भी चला गया सो आप तो स्त्री हो गया और सवारी का घोड़ा था सो घोड़ी होगई. उस स्त्री को चन्द्रमा का पुत्र (बुध) लेगया ॥ १९ ॥ उस स्त्री में बुध से सुन्दर पुत्र पुरूरवा पूजा के योग्य प्रकट हुआ, सुद्युम्न के स्त्री होने की वार्ता जानकर मनु ने मुनियों की सलाह लेकर यज्ञ करके उसको पीछा पुरुष करलिया ॥ २० ॥ उसको प्रतिष्ठान नामक पुर वैवस्वत ने दिया, सुद्युम्न के तीन पुत्र प्रवीर हुए तोभी है

ताके उत्कल७१गय२बिनत७३तीन३, वसुदेव सुनहु सुतहुवप्रवीन
यानैं तथापि वह पुर अधीन, निज औरस बुधसुतकौंहि दीन॥
मनुसुत पृषध्र६१९हुव जो कनिष्ट, गो पालन पठयो गुरु वसिष्ट ।२२।
गोवाट माँहिं निस कहुँ मृगारि, आयो लखि झारिय सु तरवारि॥
अति कुहर नखायुध दिय चुकाय, गुरुकीहि हनी लहि नियति गाय॥
मारी न जदपि मति चहि कुमार, भो तदपि सूद्र गुरु साप भार ॥
मनुसुत करूषके अन्ववाय, कारूष सकल रविकुल कहाय ।२४।
मनुपुत्र दिष्टकै हुव कुमार, नाभाग७नाम अतिबल उदार ॥
लखि चैत्र२ बनिक तनया ललाम, भो कामबिवस तिहिं करन भाम॥
जच्ची सु जनक पँहँ कुमर जाय, कर जोरि चैत्र अक्खिय उपाय॥
हम बनिक तुमहिं कर३ दैनहार, संबंध तुल्य व्है सोहि सार ॥२६॥
नृपकौं हम पुच्छत जो निदेस४, करिहैं सु करहिं नय५ उचित एस ॥
अक्खिय नृप दिष्टहिं बनिक बत्त, नाभाग सुता मम चहत रत्त ।२७।
नृप तब ऋचीक मुख६ मुनि बुलाय,बुल्लिय समुझावहु सुतहि न्याय॥
तब मुनिन कहिय श्रुति७रीति ताहि,अभिसिक्त८सुता पहिलैं बिबाहि॥
पुनि चैत्र सुता व्याहहु प्रबुद्ध,इम करहु धर्म व्है नहिं असुद्ध ॥

वसुदेव चहुवान आप सुनो कि॥२१॥तोभी सुद्युम्न ने अपने उदर से जो बुध का पुत्र हुआ उसीको प्रतिष्ठान पुर दिया. छोटा हुआ उसको वसिष्ठ मुनि ने आपनी गौ की पालना करने को भेजा ॥२२॥ किसी समय रात्रि में गउवों के बाड़े में सिंह आया जिसको देख कर पृषध्र ने तलवार मारी सो अत्यन्त अन्धेरे में सिंह ने चुका दी और दैवयोग से वसिष्ठ की गाय को ही मारी ॥ २३ ॥ कुमार ने अपनी बुद्धि से उसको नहीं मारी तोभी गुरु के भारी श्राप से वह शूद्र होगया १ वंश ॥ २४ ॥ २चैत्र नामक बनिये की पुत्री को सुन्दर देख कर अपनी स्त्री करने के लिये ॥ २५ ॥ कुमार ने उस कन्या के पिता के पास जाकर उसको मांगी ३आपको हासिल देनेवाले हैं बराबरवालों में संबंध होवे सो ही अच्छा है ॥ २६ ॥४ आज्ञा ५ यही उचित नीति है , बनिये ने दिष्ट नामक राजा से जाकर कहा कि आपका पुत्र नाभाग मेरी पुत्री को प्रति पूर्वक चाहता है।२७।६आदि७वेद की रीति से कहा कि पहिले८राजा की कन्या को व्याह कर ॥ २८ ॥ हे बुद्धिमान पीछे

नाभाग सु सुनि मुनि बच[1] निवारि,लौ ताहि सज्ज हुव रचन रारि।२९।
किय बनिक[2] दिष्टपँहँ तब पुकार, गो भूप लरन पकरन कुमार ॥
नाभागकलहाकियतुमुल[3]तत्थ,सबजनकक[4]कटकमारिय समत्थ॥३०॥
दिष्टहिं हुव संसय बिजय माँहिं,पुनि कहिय नृपहिं रन बिहित[5] नाँहिं॥
हुव बनिककुमर दर्पक[6] अधीन, तासौं न लरहु समता बिहीन।३१।
असवर्णा सुता पहिलैं बिबाहि, ताकोहि बर्णा बर लहत आहि ॥
नृप सु सुनि गयो रन तजि निकेतँ, परनी सु कुमारहु हित उपेत ॥
अक्खिय पुनि दिष्टहिं नगर आय, मम वृत्ति जनक देहु ब बताय ॥
तब मुनिन बनिज१कृषि२पसुनत्रान३,तिहिं वृत्तिदई श्रुतिपथप्रमान॥
हुव तनय भलंदन८नाम तास, पटु बीर बिहित बिक्रम प्रकास ॥
अंबा तिहिं इकदिन कहिय एह, जावहु गोपालहु सुत सनेह॥३४॥
तहँ अर्थ भलंदन गहिय एस,गो भुम्मि ताहि पालन निदेस ॥
इम चिंति गयो वह तुहिन पत्थ,किय तुष्ट राजऋषि नीप तत्थ।३५।
गोपालन तासन अस्त्र ग्राम, सब सिक्खि बहुरि आयो स्वधाम ॥
बसुरात७प्रमुख जे दिष्टपुत्र, तिन प्रति यह अक्खिय बलतनुत्र।३६।

चैत्र वैश्य की पुत्री को व्याहा १ वचन ॥ २९ ॥ २ वानिया ने दिष्ट राजा से जाकर पुकार की ३ भयंकर ४पिता की सब सेना को ॥ ३० ॥ ५उचित नहीं ६घमंड के अधीन ॥ ३१ ॥ जो वर्ण उस असवर्णा स्त्री का होवे वही वर्ण उससे विवाह करनेवाले का होता है७अपने घर८हित सहित ॥ ३२ ॥ फिर नाभाग ने नगर में आकर राजा दिष्ट से कहा कि हे पिता अब मेरी जीविका बताओ तब मुनियों ने वेदमार्ग के प्रमाण से व्यापार, खेती और पशुओं की रक्षा करना बताया ॥ ३३ ॥ ९चतुर वीर और उचित विक्रम को प्रकाश करनेवाला हुआ. उसको एक दिन माता ने कहा कि हे पुत्र जाओ गो का पालन करो ॥ ३४ ॥ इसका अर्थ भलंदन ने यह समझा कि गो नाम भूमि का है जिसकी पालना करने की माता ने आज्ञा दी है. यह विचार कर वह हिमालय के मार्ग को गया. तहां नीप नामक राज ऋषि को प्रसन्न किया॥३५॥पृथ्वीकोपालनेके लिये उनसे अस्त्रों का समूह सीख कर अपने घर आया और बसुरात आदि राजा दिष्ट के पुत्र थे उनसे उस बल रूपी कवच धारण करनेवाले ने कहा कि ॥ ३६ ॥ हे चचा (काका) ओ मेरा

अब देहु पितृव्यक बंटि अंस, उन कहिय बनिक क्यौं देत दंस ॥
सब जित्ति भलंदन तव समर्थ, अर्पन किय लै भुव जनक अर्थ ॥
नाभाग कहिय मैं पितु निदेस, लैहौं न बनिक बनि पुहवि लेस।
करि तूंहि राज्य तवजित कुमार, यह सुनि तस पतनी किय उचार
बनिक न तुम हो नृप हे प्रबुद्ध, त्यौं मैंहु राजतनया हि सुद्ध ॥
पहिलैं सुदेव हुव नृप पवित्र, धूम्रास्व तनय नल तास मित्र॥३६॥
इक समय मास बैसाख तत्त, नारिन जुत क्रीडन विपिनै पत्त ॥
तहँ करत नदीतट मद्यपान, मुनि प्रमति नारि निरखी सुजान ॥
नल दोरि गही वह बाहुपास, मुनि नारि पुकारिय त्राँहि त्रास ॥
मुनि प्रमति सुदेवहिं कहिय आय, तू भूप देहु मम तिय छुराय॥४१॥
नृप कहिय बनिक मुहिं गिनहु विप्र, छत्रिय पँहँ जावहु कहहु छिप्र॥
द्विज तव छत्राधम बनिक होहु, यह साप दै रु किय भस्म सोहु
नल भस्म पिक्खि अ.क्खिय सुदेव, मुनि छमहु करिय हम अनय एव॥
मुनि सदयँ कहिय तव साप धोय, व्है है पुनि छत्रिय बनिक होय।
छत्रिय तव तनया गहहिं जत्थ, तू छत्र बनिकपन छोरि तत्थ॥
यौं नृप सुदेव है मोर तात, मेरी हु सुनहु वरती सु बात॥४४॥
हुव पुव्व सुरथ नामक्क नरेस, तप तपत गंधमादन नगेस ॥

अंश बांट दो, उन्होंने कहा कि तू बनिया होकर क्यों दन्त देता है (खाना चाहता है) तब उन सबको समर्थ भलंदन ने जीतलिया और भूमि लेकर पिता के अर्पण करी ॥ ३७ ॥ नाभाग ने कहा कि मैं पिता की आज्ञा से बनिया होगया हूं सो भूमि का लेश भी नहीं लूंगा. यह राज्य तेरा विजय किया हुआ है सो तू ही कर यह सुन कर नाभाग की स्त्री बोली ॥३८॥ १हे विद्वान् ॥३६॥२वन में गया ॥४०॥३भुजों में पकड़ली४रक्षा करो५प्रमति मुनि ने राजा देव से कहा ॥ ४१ ॥ मुझको बनिया जानो. शीघ्र ब्राह्मण ने कहा कि हे अधम क्षत्री तू बनिया होजा. यह आप देव को देकर उस नल को भी भस्म कर दिया ॥४२॥६ मैंने यह अनीति करी सो क्षमा करो७दया सहित पहिले बनिया होकर फिर क्षत्री होवेगा ॥ ४३ ॥ जहां कोई क्षत्रिय तेरी पुत्री को ग्रहण करैगा तहां तू वैश्यपन को छोड कर क्षत्रिय होवेगा, इसप्रकार राजा देव मेरा पिता है अब मेरी वार्ता भी सुनो जो मुझमें

इक समय सेनमुख सन पपात, सारी तँहँ कंपत अकसमात।४५।
मूर्छित हुव सो लखि सदय भूप, उपजी तँहँ तासौं मैं अनूप ॥
इक दिन अगस्त्य भ्राता अगस्ति, मम सखिन कह्यो यह बनिक अस्ति
सुनि कुपित बिप्र दिय साप मोहि, जो मोहि कहत तब होहु सोहि॥
तब पायपरिय करि प्रनंतिख्याति, उन कहिय बहुरि लहिहै स्वजाति४७।
यौं मैं सुदेवतनया अनूप, भूपाल दिष्टसुत तुमहु भूप ॥
तसमात करहु सुत बिजित राज्य, नाभाग कहिय है न मम भाज्य॥
पितु हुकम तज्यो न गहौं बहोरि, जित राज्य करहु सुत धर्म जोरि॥
तब कुमर भंलदन८भो नरेस, बत्सप्री९तस सुत हुव सुबेस॥ ४९ ॥
जिहिं हनि कुजंभ पाता लजाय, सौनंद मुसल आंन्यौं सुभाय॥
सुमति१९ सुनीति२सोदर समेत, आनी मुदावती१ जय उपेत ॥
तब भूप बिदूरथ सो सु ताहु, याकौंहिं दई रचि बिहित व्याहु ॥
बत्सप्रीके हुव प्रांसु१०नाम, सुत ज्येष्ठ मुदावतिमैं ललाम॥ ५१ ॥
हुव पुत्र प्रजापति११प्रांसु गेह, नव९नवति८१०हनत हुव असुर एह॥
खनिमित्र१२प्रमुख ताकै कुमार, खनिमित्र तनय क्षुप१३हुव उदार
तस बिंस१४बिबिंस१५सु तस सुजान, हुव तास खनीनेत्रा१६भिधान

सड़सठि सत६७००अरु सड़साठि हजार ६७०००,
सड़सठि६७जुत किय मख जिहिं उदार ॥ ५३ ॥

हुव तास करंधम१७नाम पुत्त, जाकै अबिबिक्षित १८धर्मजुत्त ॥
जिहिं नृपन स्वयंबर जीति जीति, आनी अनेक कन्या अभीति

बरती है ॥ ४४ ॥ गंधमादन नाम पर्वत में तप तपते थे वहां शिकरा (बाज) के मुख से अचानक कांपती हुई मैना (पक्षि विशेष) पड़ी ॥ ४५ ॥ १ बनिया है ॥ ४६ ॥ २ मुझे जिसने बनिया कहा वही बनिया होओ ३ प्रणाम (विशेष नम्रता) ॥ ४७ ॥ ४ इसकारण से पुत्र का विजय किया हुआ राज्य करो ५ मेरे ग्रहण करने योग्य भाग नहीं ॥ ४८ ॥ ६ तेरा विजय कियाहुआ राज्य धर्म के साथ हे पुत्र तू ही कर ॥ ४९ ॥ ७ सौनन्द नामक (बलदेव के रखने का) मूसल ८ विजय सहित ॥ ५० ॥ ९ आदि१०पुत्र११खनीनेत्र नामक राजा हुआ जिसने ६७६७६७ यज्ञ किये ॥ ५२ ॥ १२ पुत्र

इम नृप बिसाल कन्या कुमार, सब नृपन जित्ति आनी उदार ॥
इक१होय सबन लरि करि अधर्म, मूर्छित यह पकर्यो वेधि मर्म
जब सुतहिं करंधम कैद जानि, आहव करि जीते अहित आनि
निजसुत छुराय अक्खिय नरेस, अब चलहु कन्यका परनि एस।५६।
तब कुमर कहिय तिय लखत मोहि, सत्रुन गहि बंध्यो सकुच सोहि
जो नारि१ नारि२परिनियन न्याय, तो मैंहु चलौं दुलही बनाय।५७।
अबिबिच्छित यौं कहि तिय प्रसंग, सब छोरि दयो रहि प्रसभ रंग॥
कन्याहु अनूढा बिपन पत्त, परन्यौं न और रति तत्त तत्त॥५८॥
तनु तजन लगी तब यह कहाय, दिय देवदूत देवन पठाय॥
न बिसालसुता तनु तजन जुत्त, व्है है तुव सब भुव भूपपुत्त।५९।
तिहिंकहियजियतपरनौंनअन्य, धवमम्मअबिबिच्छितकुमरधन्य ॥
सो मुहिं बरै न क्रिम तनय जम्म, इहिं कहिय परनिहै सुहि सुकम्म
बीरा अबिबिच्छित जननि नाम, कुल नसत जानि चिंत्यो बिराम ॥
ब्रत धारि किमिच्छक नाम नेम, पतिकौं लै सम्मत जनन प्रेम ॥ ६१ ॥

१करंधम जब अपने पुत्र को कैद जाना तब शत्रुओं को जीतकर अपने पुत्र को छु-डा कर कहा कि अब इस कन्या का परण कर चलो।५६।कुमर ने कहा कि स्त्री के देखते हुए मुझको शत्रुओं ने पकड़ कर बांधलिया इसका मुझे संकोच है जो यदि स्त्री का स्त्री के साथ विवाह होना उचित होवे तो मैं भी इस कन्या को दुलही बनाकर चलूं ॥ ५७ ॥ यह कहकर अविविच्छित ने अपने हठ के रंग मैं रहकर स्त्री का सब प्रसंग छोड दिया और वह कन्या भी विना विवाही वन में पहुंची, उस वैश्य की कन्या में प्रीति होने के कारण तहां अविविच्छित ने भी अन्य विवाह नहीं किया ॥ ५८ ॥ वह कन्या शरीर छोडने लगी वहां देवताओं ने कालपुरुष को भेज कर कहलाया कि हे वैश्य की पुत्री तेरे सर्व भूमि का पति ऐसा पुत्र होवेगा इसकारण से तेरा शरीर छोडना युक्त (योग्य) नहीं है ॥ ५९ ॥ और को नहीं परणूंगी मेरा पति अविविच्छित है सो मुझे परणे नहीं फिर पुत्र का जन्म कैसे होसक्ता है? उस देवदूत ने कहा कि वही सुकर्मी तुझे परणेगा ॥ ६० ॥ उस अविविच्छित की माता का नाम वीरा था उसने अपने कुल का नाश होता जानकर कुछ विश्राम (सहारा) चिन्तवन किया और अपने वंश में प्रीति करके पति की सलाह लेकर किमिच्छक (मार्कंडेय पुराण में कहा हुआ व्रत विशेष) नामा व्रत का नेम लिया ॥ ६१ ॥

अबिबिच्छितसौं[1] अक्खिय उदंत[2], मैं लियउ किमिच्छक ब्रत महंत ॥
मँगैं सु देहु अर्थिनं[3] कुमार, होहु न सुपुत्र[4] ब्रतभंगकार ॥ ६२ ॥
[5]स्वीकारि अबिबिच्छित भयउ सज्ज, सब दैन लगो भिच्छुन[6] सुलज्ज॥
तहँ जनक कहिय कछु दिन बिताय, अर्थी सुत तव ढिग मैंहु आय।६३।
कै देहु मोहि इच्छित[7] उदार, कै होहु जननि[8] वृतभंगकार ॥
सुत कहिय मैंहु तुमरे अधीन, पितु लेहु इष्ट जो हिय प्रबीन ।६४॥
नृप कहिय देहु नत्तियं[10] दिखाय, मम बंस बच्छ[11] नहि नष्ट जाय ॥
तब कुमर कहिय मम ब्रम्हचेर[12], तुमरै न इतर सुत बिफल बेर ॥
नृप अक्खिय तव ब्रत छोरि देहु,सुत करहु कथित[13] मम सफल एहु॥
सुत कहिय निलज[14] नक्कहिँ कटाय, रचिहौं इक सुत जो चहत राय॥
तदनंतर[15] गय मृगया कुमार, तँहँ त्राहि त्राहि सुनि तिय पुकार ॥
ढिग जाय लख्यो दृढकेस नाम,इक दनुज[16] रह्यो गहि बिकल बाम[17]॥
सो कहत करंधम पुत्र नारि, मैं[18] दुष्ट गही मम पति बिसारि ॥
है कोउ बचावन करन भीर[19], बुल्ल्यो अविबिच्छित सुलखि बीर ॥
नृप मुकुट करंधम तपत आज, को दुष्ट हरत तिय करि कुकाज॥
यह सुनत समुख हुव दनुज दुष्ट, गिरि सस्त्र अस्त्र डारे प्ररुष्ट[20] ॥६९॥
सब कट्टि कुमर दृढकेस मारि, बुल्ल्यो सु कोन तू बिजन[21] नारि ॥
इहिँ अंतर हुव आकासबानि,अबिबिच्छित यह तव नारि जानि।७०।

१वृत्तान्त २बडा ३याचना करनेवालों को ४हे पुत्र मेरे व्रत को भंग करनेवाला मत होना ॥६२॥ ५स्वीकार ६भिक्षा करनेवालों को अविबिक्षित के पिता ने कुछ दिन बिताकर कहा कि हे पुत्र मैं भी याचना करनेवाला होकर तेरे पास आया हूं ॥६३॥ ७जो मैं चाहूं वह ८माता के व्रत का भंग करनेवाला ९जो आप की इच्छा होवे वह ॥६४॥ राजा ने कहा कि मुझे १०पोता (पौत्र) दिखा दे ११हे पुत्र १२ब्रह्मचर्य है और तुम्हारे दूसरा पुत्र नहीं इससे मेरा शरीर निष्फल है कि मैं आपकी याचना को पूर्ण नहीं करसका ॥ ६५ ॥ १३हे पुत्र मेरा कहना कर १४निर्लज्ज होकर नाक कटा करके एक पुत्र रचूंगा जो हे राजा आप चाहते हो । ६६ ।१५जिस पीछे कुमर शिकार गया १६दैत्य १७स्त्री को ।६७। १८मुझको १९सहाय करनेवाला बोला २०बहुत क्रोधित होकर २१इस निर्जन स्थान में हे स्त्री तू कौन है

यामाँहिं चक्रवर्त्ती कुमार, व्है है तव दुर्जय अरि बिदार ॥
कन्या प्रति अक्खिय कुमर एह, किम भीरु अत्त आवन अनेह ॥
तिहिं कहिय तजन तनु अत्थ आय, मैं देवदूत वज्जी मनाय ॥
तबतैं हि रावरी लखन राह, इक ओर भई सुनिये सुनाह ॥७२॥
परसौं गंगाबिच न्हाँन काल, इक नाग गयो मुहिं लै पताल ॥
पूजी तहँ नागन सबन मोहि, अक्खी सुत जनिहै दमन द्रोहि॥७३॥
तस आगस करिहै नाग वाल, इन्है मारन कुप्पहिं सो कराल ॥
तहँ सुतहिं निवारहु अभय देह, अंगीकृत कीनी मैंहु एहु ॥७४॥
तब दिव्य बसन भूखन बनाय, नागन यहँ आनी हित तनाय ॥
दृढकेस गही मैं आज दुष्ट, तुम नाथ बचाई होहु तुष्ट ॥ ७५ ॥
यह होत कहिय गंधर्व तत्थ, यह ममहु सुता जानहु समत्थ ॥
घटभवँ मुनि कोलहि साप एह, दुहिता हुव जाय बिसाल गेह॥७६॥
अब गहहु पानि याको उदार, मम लोक चलहु पुनि धर्म धार ॥
तिहिं ब्याहि कुमर तब निपुन नेह, गंधर्व लोक गो स्वसुर गेह॥७७॥
तहँ तनय भयो याकै प्रसस्तं, किय जातकर्म तुंबुरु समस्त ॥
आकासबानि तब कहिय पुत्त, यह होय विदित नामक मरुत्त॥७८॥
आयो अविक्षित गृह समोद, वह बाल धर्यो निज जनक गोद॥
पुनि कहिय राज्य १ अरु नारि संग २,
अबतैं न करौं जिति हतउमंग ॥ ७९ ॥
दै राज मरुत्तहिं तब नृपाल, वीराजुत गो बन चर्म काल ॥

१कठिनाई से जीतने में आवे ऐसा २हे श्रेष्ट स्त्री तेरे यहां आने का यह क्या समय है ३शरीर छोडने को यहां आई थी परन्तु कालपुरुष ने मुझे मना कर दी ४हे पति ५शत्रुओं को दंड देनेवाला।७३।उस तेरे पुत्र का मूर्ख सर्प अपराध करेंगे जिनको मारने का वह भयंकर क्रोध करैगा जिसको मने करके सर्पों को बचाना यह वार्ता मैंने स्वीकार की।७४।६अब मुझ पर प्रसन्न होओ।।७५।७अगस्त्य मुनि के श्राप से वैश्य के घर में जाकर ॥७६॥८हाथ ॥७७॥९बहुत श्रेष्ठ ।७८।१०अपने पिता की गोद में धर कर फिर कहा कि शत्रुओं ने मुझे जीत लिया इसकारण उत्साहभंग होकर अब से राज्य का और स्त्री का संग नहीं करूंगा ॥ ७९ ॥ राजा करंधम मरुत्त को राज्य देकर वीरा नामक राणी के साथ

क्रिय राज्य मरुत्त१९ह धर्मधाम, भार्गव सन सिक्ख्यो अस्त्र ग्राम ।
अवनी यह पुक्खर दीप अंत, सब एकछत्र भुकती सुमंत ॥
पाताल स्वर्ग गति सक्ति पाय, सब सिर मरुत्त प्रतप्यो सुभाय।८१।
करि अब्द सहँस१०००तपं जोग जोरि,गो नाककरंधम देह छोरि॥
बीरा तब साध्यि ब्रह्मचेर, बारयो न सती दुख दैन बेर ॥ ८२ ॥
मखँ अतुल करे इतने मरुत्त, जग सकल भयो मखनियम जुत्त ॥
इकदिन इक तापस कहिय आय,
नृप सुनि मरुत्त तव छत न न्याय ॥ ८३ ॥
मुनि और्व उटज बीराभिधान, है तव पितामही ब्रतनिधान ॥
भिधान१निधान२अन्त्यानुप्रासः ॥
तानैं कहि पठयो पौत्र तोहि, सब सीस तपत यह कष्ट मोहि॥८४॥
बहु नाग आय डसि गरल तप्त, मारे यह मुनिजन बिप्र सप्त७ ॥
निज ठीवन१गूथ२रु मूत्र३डारि, बिपूनके दीनैं हँवि बिगारि ॥८५॥
क्रिय दुष्ट खलन जल थल समस्त,तू रँवि दिवसहि किम रोस अस्त
जबलौं न परैं अभिषेक वारि, नृपसुत न भोग तबलौं निहारि।८६।
अब पौत्र पट्ट लहि बिखय मोहि, चारांधभाव नहिँ उचित तोहि ॥

अन्त समय में वन में गया परशुराम से अस्त्रों का समूह सीखा ॥ ८० ॥
इस पुष्करद्वीप के अंत तक की भूमि श्रेष्ठ बुद्धिवाले मरुत्त ने एकछत्र भो-
गी और पाताल स्वर्ग में जाने की शक्ति पाकर सब के शिर तपा ॥ ८१ ॥
१वर्ष२तपस्या और योग करके करंधम स्वर्ग को गया तब वीरा ने अपने श-
रीर को दुःख देने के लिये ब्रह्मचर्य साधा और जली नहीं ॥८२॥३यज्ञ । ८३ ।
और्व मुनि की पर्णशाला (तृण और पत्तों से छाई हुई कुटी) में व्रत ही है
धन जिसके ऐसी वीरा नामक तेरी दादी (पिता की माता) है उसने क-
हलाया है कि तू सबके शिर पर तपता है और मुझे यह दुःख है ॥८४॥४त
पेहुए विष से५अपना थूक (मुख का मल) ६विष्ठा७होमने के पदार्थ बिगाड़
दिये ॥ ८५ ॥८अशुद्ध(खराब)९तू ने सूर्य होकर इन बातों को सहन करके दि-
न में ही कैसे क्रोध को मिटा रक्खा है, जब तक यज्ञ समाप्त होकर अभिषे-
क का पानी नहीं गिरे तब तक हे राजपुत्र तू अपना सुख मत देख ॥ ८६ ॥
हे पौत्र अब तैंने तो सिंहासन पाया है और मुझे विखा [विपत्ति] है. हल-
कारों द्वारा सुधि [खबर], नहीं मंगवाने में तुझको अन्धापन नहीं रखना चा-

यह सुनत निंदि अप्पहिँ मरुत्त, जीवा चढाय कोदण्ड जुत्त ॥८७॥
टंकारि औौर्व आश्रम जगाम, प्रेरयो संवर्तक अस्त्र ताम ॥
लग्गो तब प्रजरन नागलोक, सब काद्रवेय डरि मग्न सोक ॥८८॥
कंपत अविविच्छत गेह आय, भामिनिकौं दीनी सब सुनाय ॥
धवसौं तब भामिनि कहिय सर्व, इन्ह पूर्व अभय दिय ज्यौं अखर्व॥
अविविच्छत आयो तब अरण्य, बरज्यो निजपुत्तहिँ कहि अगण्य॥
पितु चरन बंदि तदपि न मरुत्त, निज टेक तजी कहि धर्म जुत्त।९०।
अविविच्छतहू तब अनख पाय, टंकारि चाप आयो रिसाय ॥
सुत जनक लरत ब्रह्मंड सांकि, धर मचक डिगी दुर्धर धमंकि।९१।
दिग्गजन दये मल मूत्र डारि, सब सृष्टि लगी बिनसन पुकारि ॥
यौंहू तब नागन मरन जानि, भार्गव प्रति अक्खिय बिनय बानि।
हम दष्ट मुनिन दैहैं जिवाय, यह कलह निवारहु बीच आय ॥
तब और्व निठ्ठि बरजे नरेस, नागन जिवाय दिय मृत असेस ।९३।
सुत जनक तबहि आये सुधाम, किय इम मरुत्त बहु अतुल काम।
परन्यौं यहै हु रानी अनेक, अष्टादस१८तस सुत बर बिवेक ॥९४॥
तहँ ज्येष्ट नारिष्यंता२०ऽभिधान, सुंडीर१ विनय२ वितरन३ सुजान ॥
सत्तरि हजार७००००दसपंच१५जुत्त,हायन प्रमान प्रतप्यो मरुत्त९५

हिये मरुत्त ने अपनी ही निन्दा करके प्रत्यंचा चढाकर धनुष को युक्त किया ॥ ८७ ॥१गया तहां पर अग्नि अस्त्र चालाया जिससे नागलोक जलने लगा सब सर्प डर कर शोक में बूड गये ॥ ८८ ॥ वे सर्प धूजतेहुए अविविक्षित के घर पर आये और उसकी स्त्री से सब कथा कही तब भामिनी ने सर्पों को पहिले बडा अभय दिया था सो पति से कहा ॥ ८९ ॥ वन में गणना में नहीं आवे इतनी वेर कहकर मना किया तोभी पिता के चरणों में नमस्कार करके अपनी टेक नहीं छोडी और कहा कि यह टेक धर्मयुक्त है ॥ ९० ॥२नहीं सुनने योग्य धक्कों से ॥ ९१ ॥३पृथ्वी के हिलने की चोटों से सर्पों ने अपना मरना जान कर भृगुवंश के मुनि से नम्रता के वचन कहे कि ॥९२॥ ४हम डसेहुए मुनियों को पीछे जिवादेवेंगे५और्व मुनि ने कठिनाई से राजा को मना किया ६सब मरेहुओं को ॥९३॥७श्रेष्ठ ज्ञानवाले ॥ ९४ ॥ बडा नरिष्यन्त ८नामक ९ शूरता १० नम्रता ११ दान में सुजान १२ वर्ष ॥ ९५ ॥

सासित करि निजबल सत्त७दीप, परलोक गयो पुनि यह महीप॥
भो अतुल नरिष्यंत२०हु नरेस, बंसहुसौं कीनैं मख बिसेस ॥९६॥
जाकौं जजायैं द्विज द्रव्य पाय, मख करन लगे भूतल नमाय ॥
नृपं खोजत जाजक अब मिलै न, सबकाल मचे मख अखिल अैन॥
दिस पुब्ब१अठारह कोटि१८००००००तत्र,
सुभ सप्तकोटि७००००००प्रातीच्य२सत्र ॥
आवाच्य ३ चउद्दह कोटि१४००००००थान,
पंचासकोटि५०००००००उत्तर४प्रमान ॥९८॥
खोजत द्विज दूतन वहु बिबेक, इक काल गिनै भुव मख इतेक ॥
अैसो मरुत्त सुत भो उदार, भुवमैं न रह्यो दालिद्र भार ॥९९॥
रानी तस बाभ्रव बंस जात, सुभ नाम इंद्रसेना सुहात ॥
वच्छर नव९करि तस जठर बास, दम२१नाम पुत्र हुव भव्य बास१००
वृषपर्वा दानवसौं कुमार, सिक्ख्यो सुबुद्धि धनुबेद१सार ॥
रु तपस्वी दुंदुभि दैत्यराज, किन्नौं गुरु सिक्ख्यो अस्त्र काज॥१०१॥
जुत अंग६सुक्र सन वेद ३ पाय, लिय आर्ष्टिसेन सन जोग४जाय॥
दम २१ कुमर भयो अैसो उदार, पाये वहु जंगन जय प्रकार१०२
सुदसार्णराज तनया बिबाहि,सब नृपन जित्ति आयो उमाहि॥
दुव राज कुमारन यह सही न, दमसौं मग रुंधि रु कलह कीन१०३
इक१मद्रराज सुत बल अमान, ज्यो ख्यात महानंदाऽभिधान१॥
दूजो२विदर्भपतिको कुमार, धानुष्कं वपुष्मत२नाम धार ॥१०४॥

१आज्ञावर्ती २यज्ञ ३जिसको यज्ञ कराके ४ राजा ने फिर यज्ञ करानेवालों का खोज कराया सो नहीं मिले क्योंकि सब ५ घरों में सब समय यज्ञ होने लगे ॥ ९७ ॥ ६ पश्चिम दिशा में ७ यज्ञ होरहे थे ८ दक्षिण दिशा में ॥९८॥ ९ भूमि पर एक समय में इतने यज्ञ होते हुए दूतों ने गिने, मरुत्त का पुत्र ऐसा उदार हुआ ॥ ९९ ॥१०उपजीहुई ११उसके पेट में १२नव वर्ष वास करके १३शुभ वास करनेवाला ॥ १०० ॥ शुक्राचार्य से १४छहों अंगों सहित वेद सीखे १५आर्ष्टिसेन नामक मुनि से योग सीखा ॥ १०१ ॥ १०२ ॥१६मार्ग रोक कर ॥ १०३ ॥१७महानंद नामक १८धानुष्क और वपुष्मत् दो नामोंको

मद्रेस सुत १ सु दम लियउ मारि, दूजो२अचेत करि दियउ डारि॥
दै राज्य दमहिँ गुन१अग्रगराय, गो भूप नरिष्यंत२०हु अरराय ॥१०५॥
बन कबहु बपुष्मत गो सिकार, दम२१जनक लख्यो तहँ सहित दार
दम२१की जननी सन पुच्छि नास,खलहनिय नरिष्यंत२०हिँ बिकाम
यह घोर खबरि दम२१भूप पाय, बैदर्भ हन्यौं तस देस जाय ॥
दम तनय राजबर्द्धन२२उदार, हुव तासु सुधृति२३नामा कुमार१०७
ताकै नर२४कंबल२५तस सुजान, तस बंधुमान२६तस बेगवान२७॥
तस बुद्ध२८तास तृणबिंदु२९आस,अच्छरि अलंबुसा माँहिँ तास॥
सुत हुव बिसाल३०जो अजितजंग,जिहिँ रचिय बिसाला नाम द्रंग॥
तस हेमचंद्र ३१ धूम्रास्व३२तास,
तस सृंजय ३३ तस सहदेव ३४ भास ॥ १०९ ॥
ताकै कृसास्व३५तस सोमदत्त३६, किन्नैं जिहिँ दस१०हयमेध सत्त॥
जनमेजय ३७ तस तस सुमति सूर ३८,
पानिप १ जस २ उद्यम ३ धर्म ४ पूर ॥ ११० ॥
वैवस्वत आत्मज चउ४चरित्र, पहिलैं इम बरन्यौं तहँ पवित्र ॥
द्विज नव्वल कुंडक भूपकेर, बरनत पुनि इतरन व्याह बेर॥१११॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३ राशौ बी
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने भीम ६५ बसु ६५।१ सहदेव६६ पृथा ६६।१
रामदेव ६७ तुंगा ६७।१ बसुदेव ६८ बेला ६८।१ इशनचर्म ६८ दम्प
तिपरिणयनसमयबिवस्वद्वंशव्याख्यानाऽनन्तरगतमनुतनुजसुद्युम्न१

धारण करनेवाला ॥ १०४ ॥ १ गुणों में सब से आगे गिनती में आनेवाला २ वन में ३ दम के पिता को ४ स्त्री सहित देखा ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ५ हुआ ६ अप्सरा ॥ १०८ ॥ ७ युद्ध में नहीं जीतने में आवे ऐसा ८ पुर ९ कान्तिमान ।१०९।१०अश्वमेध११यज्ञ१२पराक्रम इसप्रकार वैवस्वत मनु के चार पुत्रों का पवित्र चरित्र प्रथम वर्णन कियागया और कुंडक राजा का नव्वल नामक पुरोहित विवाह समय में मनु के दूसरे पुत्रों का वंश अब वर्णन करता है१११

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में भीम-बसु, सहदेव-पृथा, रामदेव-तुंगा, बसुदेव-बेला के कथन में अन्तिम स्त्रीपुरुष के विवाह समय में सूर्य वंश की कथा के भीतर मनु के

पृषध्र २ करूष ३ दिष्ट ४ चतुष्टय ४ चर्या १ बंश २ बर्णनं षट्त्रिंश
त्तमोमयूखः ॥ ३६ ॥　　आदितोऽष्टसप्ततितमः ॥ ७८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पज्झटिका)

वैवस्वत सुत सर्याति ६।३ नाम, नृप सो हु भयो गुनगन ललाम[1] ॥
आनर्त ७ नाम तस सूनु श्रेय, तनया हु सुकन्न्या[3] १ नामधेय१॥१॥
परनी जु च्यवन भृगुबंस दीप, आनर्त ७ हु भो अतिबल महीप ॥
आनर्तदेश जिहिँ करि कहात २ ताकैं सुत रेवत ८ खग्ग[4] ख्यात ॥
तस पुत्र ककुद्मी हुव नरेस, रैवत ९ हु कहत जिहिँ बुध बिसेस[5] ॥
रेवतिका१कन्या हुव तदीय[6], सुभरूप१सील२गुनगन[7]३गरीय॥ ३ ॥
तदुचित बर पुच्छन जनक[8] ताहि, लेगो बिरंचिकैं[10] लोक चाहि ॥
हाहा[11]१हूहू२तहँ करत गान, अतितान नाम स्वर दिव्यवान ॥ ४ ॥
तहँ इक मुहूर्त[12] सुनि दिव्य गेय[13], पूछ्यो पुनि बिधिसन हार्द[14] प्रेय॥
बिधि कहिय लये तैं बर निहारि, तिनके न बंस अब भुव बिचारि॥५॥
जदुबंस माँहिँ कृष्णावतार अग्रज[15] है तिनकै बल[16] उदार ॥
यह देहु तिनहिँ कन्न्या बिवाहि, आयो सुनि रैवत भुव उमाहि६
तनया सु बलहिँ परिनाय तत्त, बन तुहिन[17] गयो रैवत बिरत्त[18] ॥
बल[19] सीर अग्र करि तिहिँ नमाय, सम किन्न प्रांसुपन[20] नस बिहाय।७।

पुत्र सुद्युम्न, पृषध्र, करूष, दिष्ट इन चारों के आचरण और वंशवर्णन का छ-त्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ आदि से अठहत्तर मयूख हुए ॥ ७८ ॥
१ सुन्दर २ आनर्त नामक श्रेष्ठ पुत्र हुआ जिसके नाम से आनर्त देश प्रसिद्ध हुआ ३ सुकन्या नामक ४ खड्ग चलाने में प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ ५ विशेष पंडित ६ उस रेवत के रेवती नामक कन्या हुई ७ गुणों में बड़ी ॥ ३ ॥ उस कन्या का ९ पिता ८ उसके उचित वर पूछने को १० ब्रह्मा के लोक में लेगया वहां ११ हाहा हूहू नामक गन्धर्व गान करते थे ॥ ४ ॥ १२ दो घड़ी तक १३ गान १४ प्रिय अभिप्राय ॥ ५ ॥ १५ बड़ा भाई ॥ ६ ॥ १६ बलदेव को १७ हिमालय के वन में १८ विरक्त होकर १९ बलदेव ने हल के अग्रभाग से २० ऊंचापन मिटा कर बराबर किया ॥ ७ ॥

रैवतके इतर[1]हु कुल बिसेस, सब दिसन माँहिं जानहु नरेस ॥
मगधिष्ट६।२कह्यो जो मनुतनूज[2], धृष्ट६।२हु कहात वह प्राप्तपूज[3]
ताकैहु बंस बहुधार्ष्टनाम, सबठाम बढे भूतल सुधाम ॥
मनु पुत्र नभग६।५कै हुव कुमार, नाभाग७नाम अतिबल उदार।९।
हुव अंबरीष८ताकै बिरक्त, दुर्वासदमन[4] रु बिष्णुभक्त ॥
ताकै बिरूप९वृहदश्व१०तास, तस पुत्र रथीतर११भूरिभास ॥१०॥
ताकी तियमैं मुनि अंगिराहि, आत्मज जने[5] ति[6] सब बिप्र आहि[7] ॥
मनुपुत्र नरिष्यंत६।४हु महंत, कुल तास अतुल सब दिस कहंत।११।
वृषकेतु६।६बंस त्यौंही विथार, सब दिसन पाय हुव धर्मधार ॥
इक्ष्वाकु६।१भयो मनु पुत्र अच्छ[8], दंडक सब दुष्टन धर्म दच्छ[9] ।१२।
सत१००पुत्र भये याकेहु श्रेष्ठ,
जिनमैं बिकुक्षि७।१निमि७।२दंड७।३ज्येष्ठ ॥
पंचास५०इतर[10] उत्तर अधीस, अरु तुरगबेद४७जम[11]ककुभ ईस।१३।
रुचि श्राद्ध करन इक्ष्वाकुराज, पठयो बिकुक्षि७पल[12] हरन काज ॥
बनमाँहिं छुधित[13] इक१सस[14]हिं खाय, पह[15]कुमर खिल[15]हिं लायो निकाय[16]॥
इम तस ससाद७अभिधान आस[17], हुव पुत्र पुरंजय८नाम तास ॥
असुरन[18]के जित्ते सुर[19] असेस, बैकुंठ[20] सरन हुव दीन बेस ॥ १५ ॥
हरि कहिय पुरंजय८नाम राज, लै तुम सहाय निज करहु काज॥
तब देव पुरंजय सरन पत्त[21], बुल्ले[22] जय दीजै अप्रमत्त[23] ॥१६॥

१और भी २मनु का पुत्र३प्राप्त हुई है पूजा जिसको (पूजायोग्य)४दुर्वासा को दंड देनेवाला ५ पुत्र जने ६ वे सब ब्राह्मण ७ हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ८ श्रेष्ठ ९ धर्म में चतुर ॥ १२ ॥१०दूसरे पचास पुत्र उत्तर दिशा के स्वामी हुए।१३। और सैंतालीस पुत्र ११दक्षिण दिशा के पति हुए. रुचि का श्राद्ध करने को इक्ष्वाकु ने विकुक्षि को १२ मांस लेने भेजा वहां वन में १३ भूखा होने के कारण एक १४ खरगोस खाकर १५ बाकी मांस १६ घर पर लाया ॥ १४ ॥ इसकारण से (सस को खाने से) उसका ससाद नाम १७ हुआ. १८दैत्यों ने सम्पूर्ण १९ देवताओं को जीत लिया वे दीन होकर २० विष्णु के शरण गये २१ पहुंचे २२ बोले २३ सावधान होकर ॥ १६ ॥

नृप कहिय मोहि नर देवराय, व्है बाह बहैं तो मैं सहाय ॥
सुरपति बइल्ल हुव तब सयान, थिर भूप चढ्यो तस ककुद थान ॥
इम तास ककुत्स्थ हुव नामधेय, काकुत्स्थ८बंस जिहिं करि अजेय।
भूप सु लर्यो हि करि सुरन भीर, बासवं रिपु मारे सब प्रबीर॥१८॥
हुव पुत्र पुरंजयकै उदार, अभिधान अनेना ९ धर्मधार ॥
ताकै पृथु१०बिश्वग११पुत्र तास,तस चांद्र१२तास सुत उभय२आसं
युवनाश्व१३।१बहुरि श्रावस्त१३।१जोहि,श्रावस्तीनगरी रचक सोहि
श्रावस्त तनय बृहदश्व१४नाम, हुव कुवलयाश्व१५ताकै ललाम ॥
इकबीस सहँस२१०००पुत्रन उपेतं,जुज्झ्यो सु धुंधुसन खिजि खेत
उत्तंक बिप्रको अहितकार, हनि धुंधु कहायउ धुंधुमार१५ ॥ २१ ॥
युवनाश्व सुतहु इहिं रन समस्त, धुंधु हने उबरे त्रय३अत्रस्त ॥
नृप जे दृढाश्व १४।१ चंद्राश्व १४।१ नाम ॥
कपिलाश्व १४।३ बहुरि ए ३ धर्मधाम ॥ २२ ॥
रु दृढाश्व तनय हर्यश्व१५बीर, ताकै निकुंभ१६धरनीस धीर ॥
तस संहिताश्व१७जानहुनृपाल,ताकैकृसास्व१८ कलिअहितकाल
ताकै प्रसेनजित१९नामधेय, युवनाश्व२०तास अप्रजं अजेय ॥
लखि सुत अभाव निर्बेदं लाय, जु रह्यो बन मुनिगन उटंज जाय।२४।
तँहँ मुनिन दया करि इष्टि कीन, जल मंत्रि धर्यो घट इक प्रबीन॥
नृपजगिनिसीथंकियसोहिपान,नहिंजानिसक्योतंसबसनिदान।२५।

राजा ने कहा कि मैं मनुष्य हूं जिसको इन्द्र वाहन होकर मुझे उठावे तो मैं सहाय करूं. तब इन्द्र बैल(वृषभ)हुआ जिसकी ककुद(पीठके ऊपरका मांस पिंड) पर राजा चढा ॥ १७ ॥ इस कारण उस राजा का नाम ककुत्स्थ हुआ उसीके नाम से काकुत्स्थ वंश कहाता है १ इन्द्र के शत्रुओं को मारे ॥ १८ ॥ २ नाम ३ हुआ ॥ १९ ॥ ४ रचनेवाला ५ सुन्दर ॥ २० ॥ इक्कीस हजार पुत्रों ६ सहित ॥ २१ ॥ ७ निर्भय ॥ २२ ॥ ८युद्ध में शत्रुओं का काल ॥ २३ ॥ ९ विना सन्तानवाला १० पुत्र नहीं होने के कारण ग्लानि लाकर वन में मुनियों की ११ पर्णकुटी में जारहा । २४ । तहां मुनियों ने दया करके राजा के पुत्र होने के अर्थ १२ यज्ञ किया१३आधी रात्रि में जग कर उस पानी को पीगया १४ प्यास के वश में होकर उस का कारण नहीं जान सका ॥२५॥

जगि मुनिन लख्यो निर्जल करीर, बुल्ले किहिँ पिन्नौँ निखिल नीर
युवनाश्व बधूके उचित जोहि; करि पान भयो सह गर्भ कोहि।२६।
पिन्नौँ अजान मैं कहिय भूप, अरु उदर बढ्यो गर्भ हु अनूप ॥
समयांत कुक्षि अपसव्य फारि, सो बाल कढ्यो जनकहिँ न मारि।
कां धास्यति यह इम मुनि कहाय,मां धास्यति अक्खिय इंद्र आय
तातैं मांधाता २१ नाम्न तास, हुव ख्यात बिरचि पुहवी प्रकास।२८।
सुरपति निज अंगुलि मुख तदीय, पीयूख भरी दिय पिट्ठुल पीय ॥
तासाहि बढ्यो वह नृप कुमार, भो द्वीप सप्तभोक्ता उदार ॥२९॥
ससबिंदु भूप दुहिता सुबेस, तिय बिंदुमती परन्यौँ नरेस ॥
तामैं मांधाताकै तनूज, प्रकटे त्रय३दुर्द्धर प्राप्तपूज ॥३०॥
पुरुकुत्स२२।१बडोपर्ट्टपप्रमानि,ज्यौँअंबरीष२२।२मुचुकुंद२२।३जानि
तनया पचास५०हुव बहुरि तास,परनी समस्त सौभरि सभास ३१
पहिलैँ करि जमुना ह्रद प्रवेस. सौभरि तप सद्धिय बिधिबिसेस॥
तहँ मीनसंग लखि ताजि समाधि, आयो मुनि बाहिर सहत आधि
जर्ज्जर सरीर सौभरि सजाय, अक्खिय मांधाता पास आय ॥
पुत्री नरेस तव हैं पचास५०, इक१मोहि देहु लखि भोग आस।३३।

१ घड़े को बिना जल देखा २ सब पानी किसने पिया वह तो युवनाश्व की स्त्री के उचित था सो उसको पीकर गर्भ सहित कौन हुआ ॥ २६ ॥ ३ उपमा रहित ४ गर्भ की अवधि के अंत मे दाहिनी कूख फाड़ कर पिता को बचा कर वह बालक कढा ॥२७॥ जब मुनियो ने कहा कि इसको कौन धावे (दूध चुंगावे) गा तब इन्द्र ने आकर कहा कि मैं धाऊंगा. इसी से उसका नाम मांधाता हुआ ॥ २८ ॥ इन्द्र ने अमृत की भरी हुई अंगुली उस बालक के मुख में दी जिसको बहुत पीकर वह उदार सातों द्वीपों का भोगनेवाला हुआ ॥ २९ ॥ ५ पुत्री को ६ पुत्र ७ पूजन योग्य ॥ ३० ॥ ८ पाटवी ९ पचास पुत्रियां हुई जिनको सौभरि नामक ऋषि ने व्याहा ॥ ३१ ॥ उस सौभरि मुनि ने जमुना के द्रह (जलाशय) में प्रवेश करके विशेष विधि से तप साधा वहां १० मच्छियों को संगम करते देख कर समाधि छोड कर मन की पीड़ा सहता हुआ बाहर आया ॥ ३२ ॥ फिर वह सौभरि मुनि बहुत बूढा शरीर बनाकर मान्धाता के पास आकर

जान्यौं नृप बोरौं कूप काहि, जंपिय जो चाहैं लेहु जाहि ॥
करि मंजु रूप तब उचित काल, अवरोध गयउ सौभरि उताल ॥
देखतहि रम्य कन्न्या हु दोरि, मुनि संग लगी सब लज्ज छोरि ॥
उपयम करि लायो सबन एह, सब पास रम्यौं करि भिन्नदेह।३५।
पुरुकुत्स२२हु भो बर भूमिपाल, बिक्रम१नय२बिद्या३बल४बिसाल
जबही छकोटि६००००००० पाताल धाम, गंधर्व बढे मौनेय नाम॥
नागनसौं जय करि छिन्नि रत्न, सठ होय रहे दुस्सह सपत्न ॥
पहुँचे जलसाँई सरन व्याल, अक्खिय सहाय करिये कृपाल॥३७॥
प्रभु कहिय जाहु पुरुकुत्स२२पास, वैहैं सहाय होहु न उदास ॥
नागन तब रेवा नदि पठाय, पुरुकुत्स बुलायउ निज निकाय।३८॥
नागनकी भगिनी नर्मदाहु, परन्यौं पुरुकुत्स सु विहित व्याहु ॥
लाई पुनि भूपहिं नागलोक, इहिं जित्ति लये गंधर्बओक ॥३९॥
जननी मुनि१कश्यप२जनक जास, ब्रातैं सु नृप मेट्यो करि बिनास
निज पाय रत्न१अधिकार२नाग, राजाहित बर दिय रक्खि राग४०
जोलौं रवि उदय रु अस्त जाय, पुरुकुत्स२२कुल न उच्छेद पाय ॥
बर दिय स्वसाहुकौं मधुर बैन, नर तोहि चिंति अहिभय लहै न

बोला ॥३३॥ राजा ने जाना कि इसके साथ बिवाह करके मैं किस लड़की को कुए में डुबोऊं. जब मुनि से कहा कि जो कन्या तुमको चाहै उसीको लेजाओ तब मुनि अपना मनोहर रूप करके समय देख कर शीघ्र ज़नाने में गया ॥ ३४ ॥ उसको १ सुन्दर देख कर २ बिवाह करके ३ जुदे जुदे शरीर करके ॥३५॥४ श्रेष्ठ राजा हुआ ५ गन्धर्व गण विशेष ॥ ३६ ॥ ६ शत्रु ८ सर्प ७ विष्णु के शरण गये ॥३७॥ ९ सर्पों ने नर्मदा नदी को राजा पुरुकुत्स के पास भेज कर अपने घर पर बुलाया ॥ ३८ ॥ वह नर्मदा नदी सर्पों की बहिन थी जिसको उचित विवाह करके पुरुकुत्स परणा १० गंधर्वों के घर जीत लिये ॥३९॥ मुनि नामक जिनकी माता और कश्यप जिनका पिता है ऐसे ११ समूह का राजा ने नाश करके मेटदिया १२ प्रीति रखकर राजा को वर दिया ॥ ४० ॥ जब तक सूर्य उदय अस्त को गमन करता रहै तब तक पुरुकुत्स का वंश नाश नहीं पावे. अपनी बहिन नर्मदा नदी को भी वर दिया कि जो मनुष्य तेरा चिन्तवन करेगा उसको सर्प का भय नहीं होवेगा ॥ ४१ ॥

नृप आयउ रेवाजुत[1] निकेत, सह धर्म भोग भुक्ते सुचेत ॥
याकै हु त्रसदस्यु[2]२३अभिधान, सुत भो प्रवीर नेता[3] सुजान॥४२॥
अनरण्य२४भयो ताकै अभंग, जो मारयो रावन विजय जंग ॥
हर्यश्व२५भयो अनरण्य पुत्त[4], ताकै सु वसुमना२६धर्मजुत्त॥४३॥
सुत तास त्रिधन्वा२७नामधेय[5], अधिवीर त्रयारुण२८तस[6] अजेय॥
सत्यव्रत २९ ताकै तनय सूर, संकुलय[7] ३ धारक गुन गरूर॥४४॥
पितु हुकम भंग१गुरुधेनु घात२, अप्रोक्षित[8] आमिष[9] खान३ख्यात॥
यातैं त्रिसंकु२९सोही कहाय, चांडाल भयो गुरुसाप पाय ॥ ४५ ॥
कौसिक[10] मुनि पठयो स्वर्ग जोहि, लुंब्योहि अधोमुख गगन सोहि[11]॥
हुव तास हरिश्चंद्राभिधान[12]३०,तस लोहिताश्व३१नय गुन निधान॥
तस हरित ३२ तास चंपक ३३ सधीर,
विजय ३४।१ रु सुदेव ३४।२ हुव २ तस प्रवीर ॥
सुत द्रवक३५विजयकै सावधान,वृक३६तास बाहु३७ताकै सुजान
जाकौं अनेक ससिवंस संघ, जित्ते रन हैहय तालजंघ ॥
परिभूत बाहु३७तव विपिन पत्त, रानीहु गर्भ जुत तदनु रत्त॥ ४८ ॥
दिय तिहिं सउत्ति गर असन डारि,च्युत होहु गर्भ यह मति विचारि
सो स्तब्ध गर्भ हुव अब्द सात७, तत्थाहि वपु छोर्यो तास तात॥४९॥

१ नर्मदा सहित २ त्रसदस्यु नामक ३ नायक(सब को निभानेवाला)॥४२॥ ४ पुत्र ॥ ४३ ॥ ५ नामवाला ६ पुत्र ७ तीन शल्य (साल अथवा संकोच) धारण करनेवाला ॥ ४४ ॥ ८ विना मंत्र संस्कार कियाहुआ ९ मांस खाने में प्रसिद्ध , इन्हीं कारणों से वह त्रिशंकु कहलाया ॥ ४५ ॥ ११ आकाश में नीचे मुख लटकते हुए को १० कौशिक मुनि ने स्वर्ग में भेजा १२ हरिश्चन्द्र नामवाला ॥ ४६ ॥ जब हैहय और तालजंघ आदि चन्द्रबंशियों के समूह ने बाहु नामक राजा को जीतलिया तब वह अनादर पाकर वन में गया और रानी भी गर्भवती थी तोभी उसके पीछे प्रीति रखनेवाली हुई अर्थात् उसके साथ गई ॥ ४८ ॥ उसके भोजन में उसकी सोकने विष डाल दिया , इस विचार से कि इसका गर्भ गिर जावेगा. वह गर्भ सात वर्ष तक जड़ रूप होगया वहीं पर (उसी वन में) उस गर्भ के पिता (बाहु) ने शरीर छोड दिया ॥ ४९ ॥

रानी सु लगी प्रविसन चिताहि, जब आय निवारिय और्व जाहि ॥
इम कहिय उदर तव गर्भ एस, नभु होहिँ चक्रवर्ती नरेस॥ ५० ॥
इम ताहि वरजि निज उटज लाय, रानी मुनि रक्खिय हित रचाय॥
लहि काल सगर हुव बाल तास, यातैं तस नामहु सगर आस ॥
व्रतगुन१लिवाय तिहिँ सास्त्र१बेद२,आग्नेयँ अस्त्र३सस्त्रन प्रभेद४॥
इत्यादि सिखाये और्व जाहि,इकदिन सुत पुच्छिय अंबिकाहि॥५२॥
क्यों काल निकासत अत्थ माय, सो देत भई तब सब सुनाय ॥
सुनि सगर कुप्पि टंकारि चाप, आयउ निज सत्रुन हनन आप।५३।
जुरि लक्खन हैहय तालजंघ, संग्राम हने परपत्तसंघ ॥
भाजिगय बसिष्टपँहँ कति बिभान, पुनि कहिय देहु मुनि हमहिं प्रान
मुनि कहिय मिच्छ होवहु समस्त, तजि सगर दये तिम होत त्रस्त।
किन्नै सिर मुंडित१जवन केक, इम करिय अर्द्धमुंडित१अनेक।५५।
छुरकर्म रहित पन१कतिन अप्पि, सकजाति२करे प्रत्यंत थप्पि ॥
पारद ३ अरु पल्लहवँ ४ केक कीन,
मुख लोम अकर्तन ३।४ तिनहिँ दीन ॥ ५६ ॥
परिभूत सगरसन अप्रसंस, बहु मिच्छ भये इम चंद्र बंस ॥

रानी चिता में घुसने लगी जब और्व मुनि ने रोकी १ निश्चय ही।५०।२ पर्णकुटी में लाकर ३ रानी को ४ समय आने पर ५ विष के सहित बालक हुआ इसी-कारण से उस का नाम सगर ६ हुआ ॥ ५१ ॥ ७ अग्नि अस्त्र ८ माता को पूछा ॥ ५२ ॥ हे माता ९ यहां पर समय क्यों निकालते हैं ॥ ५३ ॥ १० शत्रुओं के समूह को ११ विना चेत ॥ ५४ ॥ १२ म्लेच्छ (नीचजाति) हो जाओ , जब वे मुनि के कहने अनुसार नीच जाति वाले होगये तब उन डरे हुओं को सगर ने छोड दिया , उन कितने ही यवनों के शिर मुंडवा दिये और कितनों का अर्धमुंडन करादिया ॥ ५५ ॥ कितनों को ऐसे कर-दिये कि जिनके पाछने (बाल काटने का शस्त्र) का काम ही नहीं रहा , उनको शक (म्लेच्छ जाति प्रभेद) बनाकर म्लेच्छ देश में स्थापन करे और कितनों को १३ पारद (म्लेच्छ जाति विशेष शूद्र) १४ पह्लव(डाढी मूंछ के बाल नहीं कटवानेवाले म्लेच्छ विशेष) करके मुख के बाल नहीं कटवानेवाली जाति के बनाये ॥ ५६ ॥ इसप्रकार सगर से हार कर

असपत्न[1] सगर३८लिय राज्य आनि, भो द्वीपसप्त७पालक प्रमानि
ब्याह्यो हुव २ रानी सगर बामै, इक१कस्यपतनया सुमति१नाम॥
दूजी२बिदर्भनृप आत्मजा[3] सु, सुभरूप केसिनी२नाम तासु॥५८॥
मुनिऔर्व[4] सेय मंगे दुहू२न,सुतछअयुत६००००अरु इक१बलअनून
क्रम सुमति१जने छ अयुत६००००कुमार,
असमंजस३९१केसिनि२इक१उदार॥५९॥
चल्लिय असमंजस३९अति कुचाल, हुव अंसुमान४०तस है नृपाल
सुभकर्म बिगारत लखि स्वभाय, त्याग्यो असमंजस सगरराय ६०
इतरहु सुत असमंजस निसर्ग, विध्वस्त करत हुव धर्म गर्व ॥
कपिलावतारको सरन पाय, तिन प्रति पुकार किय द्विजन जाय॥
प्रभु कहिय नास पैहैं ति दुष्ट, हयमेध रचिय इत सगर तुष्ट॥
कोउक मखहयकों[11] कपिल पास, लैगो कैंजाक[12] मुसि[13] अप्रकास६२
खोजन तिंहिंछअयुत६००००सगरपुत्त,जवकरि[14]भुवविचरेप्रसभजुत्त॥
भुवहेग्खिनननअधलोक[15]झुम्मि,बटिइक१इक१जोजन खनिय भुम्मि
पाताल जाय पिक्ख्यो स्वबीति[16], कपिलहु ढिग जानैं कुहक[17] रीति
दौरे तिन्ह मारन बकि अखर्व, प्रभु कछुक पिक्खि किय भस्म सर्ब
नाती तब पठयो अंसुमान ४०, जिहिं आय कपिल सेये सुजान॥

प्रशंसा हीन बहुत चन्द्रवंशी म्लेच्छ होगये. सगर ने १ विना शत्रु (निष्कंटक) होकर अपना राज्य पीछा लिया ॥ ५७ ॥ २ स्त्रियां ३ पुत्री॥५८॥४और्व मुनि की सेवा करके दोनों रानियों ने पुत्र मांगे जिनमें एक ने५साठ हजार और एक ने ६ बड़ा बलवान् पुत्र मांगा ॥ ५९ ॥ ६० ॥७दूसरे पुत्र भी असमंजस के जैसे ८ स्वभाववाले ही थे जिन्होंने धर्म के समूह का ९ नाश किया ॥ ६१ ॥ १० ते (वे) दुष्ट नाश पावेंगे१२ किसी युक्त करानेवाले (छली) ने छाने १३ छलकर ११ यज्ञ के घोड़े को कपिलदेव के पास जाबांधा ॥ ६२ ॥ १४ शीघ्रता करके हठ पूर्वक १५ पाताल को खोदने लगे और एक एक ने एक एक योजन भूमि बांट कर खोदी ॥ ६३ ॥ १६अपने घोड़े को देखा और पास देख कर कपिलदेव को ही १७ छली जाना कि घोड़ा चुराकर अब तपस्वी बन बैठा है ॥ ६४ ॥ इन साठ हजार पुत्रों को

हरि व्है प्रसन्न दै तुरग ताहि, पुनि कहिय कछुक बर लेहु चाहि६५
अंजलिं करि बुल्लिय अंसुमान, थप्पहु मम[2] पितरन मुक्ति थान ॥
हरि[3] कहिय पौत्र व्है है त्वदीय, गंगा जो आनहिं भुव गरीय।६६।
तब तुज्झ पितृव्यर्क[4] लहहिं मुक्ति, अश्वहिं यह लायो सु सुनि उक्ति
सगरहु विरक्त करि मख सुढार, दिय राज्य अंसुमान४०हिं उदार
याकै दिलीप४१सुत हुव अजेय, सुत तास भगीरथ ४२ नामधेय॥
जिहिं नाकनदी भुवलोक आनि, किय पितर मुक्तमनभक्ति मानि
सुत अंबरीष४३ताकै सुधाम, ताकै हुव सिंधुद्वीप४४नाम ॥
ऋतुपर्ण४५तास लहि नल सहाय, सिक्ख्यो जु अक्ष[6]विद्या सुभाय
तस सर्बकाम४६तस सुप्रकास४७, ताकै सुदास४८सौदास४९तास
जिहिं नाम मित्रसह४९अपर आहि, इक काल गयो मृगर्या उमांहि
रक्खस[9] दुव२हे तहँ व्याघ्र रूप, तिनमैं इक१मारयो भयंद भूप ॥
तव आक्खि बैर लैहौं द्वितीय२,गो पिहित[11] होयभजि छलंगरीय[12]॥७०॥
नृप मित्रसह४९हु आयो निकेत[13], आरंभिय अध्वर[14] धर्म हेत ॥
बनि तब बसिष्ट औसिर[15] सु आय, बुल्ल्यो बँ[16] देहु नरपल[17] जिमाय
गुरु गिनि नृप हुव आणा अधीन, पुनि खल[18] व्है सूद[19] सु सिद्ध कीन
भो पिहित[20] दुष्ट नृपहिं सु दिखाय,अनुचित बसिष्ठ मन्नो सु जाय॥

प्रसन्न हुए जानकर सगर ने अपने पोते अंशुमान् को भेजा॥ ६५ ॥ १ हाथ जोड़ कर बोला २ मेरे साठ हजार मरे हुए पितरों को ३ कपिलदेव ने कहा कि तेरे पोता होवेगा वह भारी गंगा नदी को लावेगा ॥ ६६ ॥ तब तुम्हारे ४ चचे मुक्ति पावेंगे ॥ ६७ ॥ ५ जिसने स्वर्ग की नदी को भूमि लोक में लाकर अपने पितरों का उद्धार किया ॥ ६८ ॥ ६ द्यूतविद्या ७ दूसरा नाम ८ शिकार गया ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ९ राक्षस १० भय देनेवाले (भयंकर) व्याघ्र का ११ अन्तर्धान होकर १२ छल में भारी ॥ ७१ ॥ १३ अपने घर १४ यज्ञ का आरंभ किया तब उस १५ राक्षस ने वशिष्ठ मुनि का स्वरूप करके राजा से कहा कि १६ अब १७ मनुष्य का मांस जिमा दो। ७२। उसको गुरु जानकर राजा उस १८ अधम (नीच) के आधीन होगया, फिर उसी राक्षस ने १९ रसोईदार होकर पकाया २० अन्तर्धान होगया ॥ ७३ ॥

आक्खिय नृप नरपल हमहिँ देत, क्रव्याद होहु यातैं कुचेत॥७४॥
नृपकहियकह्यो तुमही निदान,सुनि मुनिहु लखी सब विरंचि ध्यान
बुल्ले अब बारह१२अब्द होहु, जल लेत भयो तब सपन सोहु ॥
रानी मदयंती दिय निवारि, दिन्नौं तब जल निज पयन डारि॥७५॥
यातैं सु होय कल्माषपाद४९,क्रव्याद भयो नृप अप्रमाद ॥
छट्ठे६दिन दुर्मति प्रबल पाय, खेबे लग्यो सु मनुजन खिसाय॥७६॥
इक समय मुदित मोहन प्रसक्त, देखे द्विज दंपति नेह अक्त ॥
तिनमाँहिँ नरहिँ लग्गो सु खान,पतनी तस जाँचिय देहु प्रान ॥७७॥
न भई कृतार्थ मैं नरननाह, अब रुद्ध करहु खावन उछाह ॥
मन्नी न तदपि नृप लियउ खाय, सहगमन द्विजा बिरचिय सुभाय॥
दिय नृपहिँ साप करिहै व्यवाय, कामुक तब तजिहै तूहु काय ॥
तदनंतर बारह१२लंघि बर्ष, निज रूप पाय नृप हुव सहर्ष ॥७९॥
लोलुप मदयंती अंक लिन्न, दयिता सु साप सुमिरायदिन्न ॥
तब ताहि छोरि बंदे बसिष्ठ, अक्खी ब करहु इहिँ गर्भ निष्ठ ॥

मनुष्यों का मांस हमको देता है इसकारण से राचस होजा, राजा ने कहा कि तुमने ही तो कहा है इसका कारण तो तुम ही हो, यह सुन कर वसिष्ठ ने ध्यान करके सब बात को जान ली।७४।बारह वर्ष तक राचस होओ यह जब वसिष्ठ ने कहा तब राजा ने भी शाप देने के लिये हाथ में पानी लिया जब मदयंती नाम रानी ने राजा को मना किया तब उस जल को राजा ने अपने ही पगों पर डाल दिया ॥ ७५ ॥ जिससे राजा के पग काले होगये इससे उसका नाम ही कल्माषपाद हुआ, वह सावधानता पूर्वक राचस हुआ खोटी बुद्धि पाकर क्रोध करके मनुष्यों को खाने लगा ॥ ७६ ॥ एक समय ब्राह्मण जाति के स्त्री पुरुष को स्नेह युक्त मैथुन करने में आसक्त देखे जिनमें से जब पुरुष को खाने लगा तब स्त्री ने याचना की कि इसके प्राण मुझे दे ॥ ७७ ॥ मैं कृतकार्य नहीं हुई हूं इसकारण से खाने के उच्छाह को रोक. तोभी राजा ने नहीं मानी और जब उस ब्राह्मण को खालिया तब वह ब्राह्मणी भी जल गई ॥ ७८ ॥ उस ब्राह्मणी ने राजा को शाप दिया कि जब तू भी मैथुन करेगा तब हे कामी तू भी शरीर छोडेगा ॥ ७९ ॥ बारह वर्ष का शाप भोगे पीछे अपना स्वरूप पाये पीछे अत्यन्त लोभी होकर राजा मित्रसह ने मदयन्ती राणी को भुजपाश में ली जब स्त्री ने शाप की याद दिलाई

तब मुनि बसिष्ठ आधान तास, नैगम मग रक्खिय सुख निरास॥
मदयंती स्वोदर[1] अस्म[2] मारि, निजगर्भ लह्यो चिरं[3] सहि निकारि।८१।
यातैं सु अस्मक५०हि हुव अनूप. ताकै हुव मूलक५१भीरु[4] भूप ॥
जो राम करत नच्छत्रदेस, नारिन छिपाय रक्ख्यो नरेस॥ ८२ ॥
नारीकवच५१हु इत तास नाम, ताकै सुत दसरथ५२धर्मधाम ॥
सुत तास भयो इलविल ५३ सुभास,
तस बिश्वसह ५४ रु खट्वांग ५५ तास ॥ ८३ ॥
जिहिं सुर[6] सहाय करि रन अजेय, मारे नृप आसुर अप्रमेय[7] ॥
बरलेहु कह्यो तब सुरन जाहि, बुल्ल्यो मम[8] आयु खिल[9] कतिक[10] आंहि ।८४।
सु मुहूर्त[11] १ बतायउ सुरन सेसं[12], बुल्ल्यो तब पहुँचौं अबहि देस ॥
तब सुरन पठायउ सीघ्र तत्थ, सो हुव कृतार्थ तजि त्रि३ गुंन[13] सत्थ।८५।
हुव दीर्घबाहु५६ताकै कुमार, ताकै रघु५७ताकै अज५८उदार ॥
अजकै नृप दसरथ ५९ भाग्यवान,
श्रीराम ६०।१ आदि चउ ४ तस सुजान ॥ ८६ ॥
कौसल्या औरस[14] रामचंद्र ६०।१, भरत६०।२सु कैकेई सुत अतंद्र[15]॥
सत्रुघ्न६०।३ रु लक्खन६०।४धर्मधीर, प्रकटे ति सुमित्रामैं प्रबीर।८७।
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्र-

तब राणी को छोड कर वसिष्ठ मुनि से नमस्कार करके कहा कि आप के कारण मैं तो स्त्री संग नहीं करसक्ता अब आप इस राणी को गर्भवती करो ॥ ८० ॥ मुनि ने वेदमार्ग से राणी के गर्भ रक्खा. १ बहुत समय तक सहन किये पीछे राणी ने अपने १ उदर (पेट) पर २ पत्थर मार कर गर्भ का निकाल किया ॥ ८१ ॥ इसकारण से उसका नाम अश्मक हुआ. ४ कायर ५ जब परशुराम भूमि को नछत्री करने लगे तब मूलक नामक राजा को स्त्रियों ने छिपा रक्खा ॥ ८२ ॥ इसीसे उसका नाम नारीकवच प्रसिद्ध हुआ॥ ८३ ॥ ६ देवताओं की सहाय करके ७ विना गिनती के असुर मारे जब देवताओं ने कहा कि वर मांग. तब राजा ने कहा कि८मेरी आयु ९ बाकी कितनी१० है ॥८४॥ देवताओं ने ११ दो घड़ी आयु १२ बाकी बताई. १३ सत, रज, तम का साथ छोड (मुक्त हो) कर ॥ ८५ ॥ कौशल्या के १४ उदर से १५ निरालसी ॥ ८७ ॥

चण्डासिवंशवर्णने बसुदेव८६वला८६।१ विवहनसमसूर्यवंशसमुद्देश सङ्गतवैवस्वतमनुसुतशर्याति१मगधिष्ट २ नभग३ नरिष्यन्त४ ... के तु५सन्ततिसूचनमुख्यमेक्ष्वाकु१वंशान्तर्भूतविकुक्षिवंशपरम्पराप्राप्तस सुतचतुष्क ४ दशरथावसानाऽन्वबायसमाख्यानं सप्तत्रिंशो३७मयूखः ॥३७॥ आदित एकोनाशीतितमः ॥७९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

दसरथकै चउ४सुत उदित, उपजे प्रभु अवतार ॥
पायउ बेस[1] किसोर[2] पुनि, भुम्मि उतारन भार ॥१॥

षट्पात्

जँहँ कौसिक मुनिराय राम६०।१लक्खन ६०।२जच्चे[3] जब ॥
कौसलेस[4] अकुलाय[5] निट्ठि तिन संग दये तब ॥
लै कुमरन गाधेय[6] आन लग्गे निज आश्रम ॥
रात्रिंचरी[7] मग रुक्कि मिली बिच चहि कराल क्रम ॥
ताडका नाम बिक्रम अतुल सो रघुबर मारिय सहज ॥
मुनि रचिय सत्र[8] अप्पन उटज[9] बढिय तत्थ क्रव्याद[10] ब्रज[11] ॥२॥
मिलि सुबाहु१मारीच२आदि रक्खस अति साहस ॥
अध्वर[12] नासन[13] आय रचे बिग्रह[14] बिरोध बस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में चहुवाण बसुदेव और वेला के विवाह समय में सूर्यवंश के कथन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र शर्याति-मगधिष्ठ-नभग-नरिष्यन्त-वृषकेतु के सन्तान की सूचना में मुख्य इक्ष्वाकु वंश के भीतर विकुक्षि के वंश के अनुक्रम (पीढियों) को प्राप्त होकर अंतिम वंश दशरथ के चार पुत्रों के श्रेष्ठ आख्यान का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से उन्यासी मयूख हुए ॥ ७९ ॥

१ अवस्था २ दश वर्ष से ऊपर और पन्द्रह से नीचे किशोर अवस्था कहलाती है ॥ १ ॥ ३ मांगे ४ दशरथ ने ५ कठिनाई से ६ विश्वामित्र ७राक्षसी८यज्ञ ९अपनी पर्णकुटी में १० राक्षसों का ११ समूह ॥ २ ॥ १२ यज्ञ का १३ नाश करने को १४ युद्ध रचा.

तबहि चाप टंकारि राम मारिय सुबाहु रन ॥
पुंख[१] पवन मारीच जलधि डारिय सत१०जोजन ॥
कौसिक स्वकीय मख सिद्ध करि जनक[२] सत्र पिक्खन चलिय ॥
तहँ उपल[३] रूप गोतम तियहिं परसि पाय प्रभु मुक्ति दिय।३।

दोहा

पहुँचे पुनि मिथिला पुरी, आयउ समुह बिदेह ॥
कौसिक[४]१कुमर२वधायकौं, नगर लये धरि नेह॥४॥
उच्छव दिन नृप इकठे. सकल करे मख[५]साल ॥
कह्यो चढावहु चापकों, लहहु जानकी लाल ॥५॥

षट्पात्

रावनसे जहँ खैं[६]रखि करखि हारे कोदंड[७]हिं ॥
[८]इतर नृपहु हत ओज बिमद हुव परसि प्रचंड[९]हिं ॥
जनक भूप यह जानि कहिय अनुचित पँन[१०] किन्नों ॥
[११]अवितत कन्न्याकाल[१२] दिष्ट[१३] पुत्रिय हत दिन्नों ॥
गत छँत्र[१४] बीज भासत धरनि कुप्पि सु[१५] सुनि लक्खन कहिय
अनुचित बिदेह जंपहु[१६] यह न मन्नहु प्रभु रघुकुल महिय।६।

दोहा

है न मोहि[१७] अग्रज हुकम, कितो सरासन[१८] काम ॥
तृन जिम तोरौं कर करखि, रुचि जो धारहिं राम॥७॥

षट्पात्

१बाण के पांखों के पवन से मारीच को समुद्र में डाला२राजा जनक के यज्ञ को देखने चले३पाषाण४विश्वामित्र और दोनों कुमरों(राम लक्ष्मण)को५यज्ञ शाला में ६ खैंच खैंच कर ७ धनुष को ८ दूसरे राजा भी हतकान्ति होकर मद रहित होगये ९ भयंकर धनुष का स्पर्श करके १० मैने यह नेम अनुचित किया, १३ दैव ने कन्यापन का १२ समय ११ न्यून दिया और भूमि के ऊपर १४ क्षत्रियों का बीज गया हुआ मालूम होता है १५ सो (यह) सुन कर लक्ष्मण ने कहा कि यह अनुचित मत १६ कहो ॥१६॥ १७ बडे भाई का १८ धनुष चढाने का कार्य कितना है॥ १७ ॥

सेसं[1] कथन यह सुनत अखिल चितये[2] कुमरन इत ॥
कौसिक मुनि तहँ कहिय देहु रघुराज चाप चित ॥
सुनि समेटि पटपीत अखिल प्रेरक[3] हसि उट्ठिय ॥
रहे निरखि रुद्रादि[4] मिलत लस्तक[5] प्रभु मुट्ठिय ॥
कंपात धरनि धनु करि निकट वाम सु करपल्लव[6] बहिय ॥
सद्दूलँ[7] छुधित[8] डगधरि सम्मुख गड्डरि जनु खिल्लति[9] गहिय ॥८॥
कर घल्लत कोदंड[10] चकित दिकपाल चमंकिय ॥
चलि[11] पब्बय भुव चक्क संक[12]१संकर२अज[13]३संकिय ॥
कौसलराज कुमार करखि टंकारि सहज क्रम ॥
तृन सम डारिय तोरि दुसह दुव२खंड अरिंदम[14] ॥
पिक्खिय बिदेह अंतहपुरहु[15] गुंन[16] अवाज लोकन गई ॥
श्रीराम बरस द्वादस१२समय जनक टेक जानन दई ॥९॥
मैथिल नृप अतिमुदित पत्र साकेत[17] पठायउ ॥
सहित भरत१सत्रुघ्न२अधिप दरसथ तँहँ आयउ ॥
सीरध्वज[18] नृप समुख बिहित क्रम जाय वधाये ॥
लग्न उदय चउ४ललित सूच्य[19] तोरन पधराये ॥
नीराजनादि[20] सब साद्धि नय[21] सतानंद मुनि अग्ग सरि ॥
मंडप प्रदेस आनैं मुदित क्रम अर्चन निगमोक्त करि॥१०॥

---

१ लक्ष्मण का यह कहना सुन कर सब कुमरों की ओर २ देखने लगे ३ सम्पूर्ण संसार को प्रेरणा करनेवाले (परमेश्वर) ४ महादेव को आदि लेकर सब देख रहे थे. ५ धनुष के मध्यभाग (मूंठ) पर रामचन्द्र की मुट्ठी मिलते ही भूमि को धुजाते हुए धनुष को समीप लेकर वाम हाथ की ६ अंगुलियों में ग्रास किया सो मानों ९ खेलते हुए ८ भूखे ७ सिंह ने सामने पैंड देकर भेड़ पकड़ा ॥८॥ १० धनुष पर हाथ घालते ही दिशाओं के हाथी चकित होकर चौंक गये और भूमि का गोला और पर्वत ११ चलायमान होगये १२ इन्द्र शिव और १३ ब्रह्मा डरगये, १४ शत्रुओं को दंड देनेवाले १५ जनाने ने भी देखा १६ प्रत्यंचा का शब्द ॥ ९ ॥ १७ अयोध्या को पत्र भेजा १८ राजा सीरध्वज (जनक) पेसवाई कोगया, सुन्दर चार १९ दुलहे २० आरती आदि सब २१ नीति साधकर शतानन्द मुनि आगे चल कर वेद के कहे हुए क्रम से पूजन करके मंडपस्थान में लाया।१०।

(दोहा)

पीठ[1] चरनधावन २ प्रमुख, रचि पुब्बावर राह ॥
किन्नौं कुमर चतुष्क ४ को, विधिजुत जनक विबाह ॥११॥
सीता १ दुलहनि समय गहि, दुल्लह राम १ उदार ॥
मंजु[2] भरत २ वर मांडवी२, किय बामांग कुमार ॥ १२ ॥
इम पुनि लक्खन ३ ऊर्मिला३, निज किय धर्मनिधान ॥
सत्रुघ्न हु श्रुतकीर्ति ४ सुभ, व्याहिय उचित विधान॥ १३ ॥

(पट्पात्)

साकेतप[3] चउ ४ सुतन पाणिपीडन[4] सुभ सद्दिय ॥
दायज अगनित द्रव्य दास दासिय मैथिल[5] दिय ॥
पटु[6] विधि दंपति २ पुज्जि सिक्ख अप्पिय बरात सह ॥
राम नाम अभिराम गलित किय राम अनाग्रह ॥
कोसला ससुख पहुँचे कुमर नृप लडाय रक्खे निकट ॥
कैकेयराज तनया[9] कुटिल बहुरि फंद डारिय बिकट ॥१४॥
दुव २ अग्गै बरदान कथित दसरथ देनैं करि ॥
कैकेयी मन मुदित भूप किय प्रचुर अंक भरि ॥
अक्खिय तिहिं अवकास बहुरि मैं लहि लैहौं बर ॥
तिन्ह चाहत तबतैंहि सुगम पिक्ख्यो अंब ओसर ॥
चिंतहु करार नृपसौं चवियँ[11] कोसलेस भरतहिं करहु१ ॥

१आसन और चरण धोने आदि आगे पीछे की राह रच कर२मनोहर३अयोध्या के पति (दशरथ) ने चारों पुत्रों का शुभ ४ विवाह किया ५जनक ने६ सुन्दर विधि से ७ स्त्रीपुरुष के जोड़े को पूज कर बरात को सीख दी वहां रामचन्द्र ने विना ही आक्रमण (घेरा लगाने) के परशुराम के ८ मनोहर नाम को गलित कर दिया अर्थात् परशुराम का मान मर्दन किया९ कैकेय राजा की पुत्री [कैकेयी] ने फिर भयंकर फंदा डाला ॥ १४ ॥ दशरथ ने आगे कैकेयी को दो वरदान दिये थे कि जो कहैगी सो देवेंगे इसप्रकार कैकेयी को अंकमें लेकर बहुत मन प्रसन्न किया था, उसने कहा कि जब अवकाश होगा तब लेलूंगी १० अब समय देखा ११ राजा से कहा कि आपका करार याद करो और रामचन्द्र को बनवास देकर अयोध्या का

वनवास देहु रामहिँ१ बिदित अधिप इष्ट मम आदरहु ॥१५॥

(दोहा)

किय देवन याकी कुमति. हित निज साधक होय ॥
अक्खिय रानी याहितैं,[2] दिज्जै ए बर दोय २ ॥ १६ ॥

(षट्पात्)

सुनत बज्र सिर परिय कछुन अक्खिय हित[3]कातर ॥
पाटल[4]पट अप्पे सउत्ति जननी रघुबर कर ॥
निरखि तबहि सब नाथ जथा अभिषेक तथा गहि॥
सदा मुदित संक्रामित चलन लक्खन १ सीता २ चहि ॥
अटकेहु पनमि पितरन उभय २ भा जिम हठि संगहि भये
साकेत सहर उच्छव समय गजब फुट्टि हा रव गये ॥१७॥
पट भूखन दिय पुष्प कलपद्रु १ लता २ पात्रन कहँ ॥
सुराहा[5] जिम अज्जू[6] सुमंतु तिन्ह रथ चढाय तहँ ॥
किन्न गमन चउ ४ कोस प्रजा लग्गिय पहुँचावन ॥

राजा भरत को करो, यही मेरा प्रिय करके हे राजा मेरा आदर करो ॥१५॥ १ कैकेयी की २ इसीकारण से राणी ने कहा कि ॥ १६ ॥ ३ कैकेयी के स्नेह के कायर दशरथ ने पीछा कुछ नहीं कहा माता की सौति (सोक) कैकेयी ने रामचन्द्र के हाथ में ४ भगवां वस्त्र दिये जिनको देख कर सब के स्वामी रामचन्द्र ने राज्याभिषेक के वस्त्र लेवे इस माफिक ले- लिये, जो सदैव आनन्द से साथ चलते हैं उन लक्ष्मण और सीता ने सा- थ चलना चाहा जिनको मना किया तो भी माता पिता और सास ससु- र को प्रणाम करके हठ के साथ छाया के समान साथ ही हुए. इसप्रकार अयोध्या शहर में उत्सव के समय गजब करनेवाला हाहाकार शब्द फू- टगया ॥ १७ ॥ प्रफुल्लित होकर कल्पवृक्ष के समान रामचन्द्र ने और कल्प- लता के समान सीता ने पात्रों को वस्त्र और आभूषण दिये अथवा कल्प वृक्ष और कल्पलता पुष्प देवे जैसे राचन्द्र और सीता ने पात्रों को वस्त्र और भूषण दिये और ५ स्नुषा (पुत्र की स्त्री) को ६ ससुरा चढावे ऐसे ७ सुमंत्र ने सीता को रथ पर चढाली और रामचन्द्र चार कोस गये वहां

बारि गहिर गुन बद्ध नैंक छोरत जिम नावन ॥
दसरथ नरेस करतैं बिछुटि किम तत्थहि ठहरन कहैं ॥
मखतूल रज्जु साकेत मन रामचन्द्र संगहि रहैं ॥ १८ ॥

दोहा

पक्ख बिसद मधु पंचमी१, तटिनी सरजू तीर ॥
नगर कोसलातैं निकसि, वसे रत्ति२ रघुबीर ॥ १९ ॥
सोवत तँहँ परिहरि सबन, छिप्र कढे जगि छन्न ॥
तजि पुद्गल३ असु जिम तरल४, सम्मन सुमंत्र प्रसन्न ॥ २० ॥
दूजे२दिवस मिलान५ दिय, शृंगबेर पुर सुद्ध ॥
ईस तहाँको गुह मिल्यो, प्रभुसन भिल्ल प्रबुद्ध६ ॥२१॥
वय बसु८सम उपबीत लिय, बारह१२बेस बिबाह ॥
अब्द पचीसम२५किय अटन, राघव कानन राह ॥२२॥

षट्पात्

शृंगबेर पुर सबन प्रनत लग्गो प्रभु पायन ॥
दिय सुमंतकँहँ सिक्ख तत्थ परपुरुख परायँन ॥
कहिय जाहु साकेत कहहु किय हुकम धनीको ॥

तक पहुंचाने को प्रजा साथ लगी. जैसे गहरे जल में रस्सी से बंधी हुई नाव थोड़ी सी छोडते ही वहां नहीं ठहर सकती तैसे ही प्रजा रूपी नाव दशरथ के हाथ से छूट कर वहीं पर कैसे ठहर सक्ती है. रेसम की डोरी से बंधाहुआ अयोध्या का मन रामचंद्र के साथ ही रहता है ॥ १८ ॥ १ चैत्र सुदी पक्ष की पंचमी को सरजू नदी के तट पर २ रात्रि ॥ १९ ॥ ३ शरीर को छोड कर ४ चंचल प्राण चलाजाता है ऐसे रामचन्द्र सब को सोते हुए छोड कर छाने जगकर शीघ्र कढगये जिसके साथ सुमंत्र गया इससे वह मन से प्रसन्न रहा ॥ २० ॥ ५ मुकाम ६ बुद्धिमान् ॥ २१ ॥ रामचन्द्र ने आठ वर्ष की अवस्था में जनेऊ ली, बारह वर्ष की अवस्था में विवाह किया और पचीसवें वर्ष में वन के मार्ग में गमन किया ॥ २२ ॥ नम्रता सहित ७सब के आश्रय परम पुरुष विष्णु भगवान् ने ८ अयोध्या को जा और यह कहना कि जैसी स्वामी की आज्ञा थी वैसा कर आया हूं अर्थात् रामचन्द्र को बन में छोड आया हूं यदि ऐसा नहीं कहैगा तो कैकेयी ठीक

कैकेयी करिहै न नतो प्रत्यय कछु नीको ॥
स्वीकृत न किन्न दसरथसचिव तदपि बुद्धि पलटाय तिम।
पठयो सुमंतु रथजुत पुरहिं आदरि वन रघुनाथ इम ॥२३॥

दोहा

सृंगबेर सन धारिय सब, वैखानस व्रत१वेस२ ॥
बटपय तप्पा बंधिकै, अटन किन्न अखिलेस ॥२४॥
आश्रम भारद्वाज अब, पहुँचे पयन कृपाल ॥
कुस दब्बत अपदत्र क्रम, विलसत सानुज बाल ॥२५॥
रत्ति२ निवसि पुनि गमन रचि, चित्रकूट नगपाल ॥
ऋषिजन अनुमत तहँ रहे, कछु दिन कट्टन काल ॥२६॥
बिजन३ थान करि ४वास्तुविधि, छदनंन छत्ति छवाय ॥
बसे मुदित बहु बासरंन, रुचि करि तहँ रघुराय॥२७॥

षट्पात्

समय इक्क सौमित्रि गहन फल मूल गहन गय ॥
मैथिलजा१रघुमुकुट२ललित विलसत उटजालय ॥
स्वपति अंक सीताहु सोय गहि गाहिर गुडाका ॥
पुनि जगि पति पौढाय रही ससिजुत जिम राका ॥

विश्वास नहीं करैगी, यह सुमंत्र ने स्वीकार नहीं किया तोभी उसकी बुद्धि पलटाकर सुमंत्र को रथ सहित अयोध्या को भेज कर रामचन्द्र ने वन को आदर दिया (वन में गये) ॥ २३ ॥ शृंगवेर पुर से ही रामचन्द्र ने वानप्रस्थ का व्रत और भेस धारण किया. वड़ के वृक्ष के दूध से जटा बांध कर सब के स्वामी ने गमन किया ॥ २४ ॥ १पैदल विना पगरक्खी (जूते) डाभ को दबाते हुए छोटे भाई और स्त्री सहित विलास करने लगे ॥ २५ ॥ २ रात्रि में निवास करके ऋषियों के आज्ञाकारी होकर चित्रकूट नामक पर्वतराज में रहे ॥ २६ ॥ ३ निर्जन स्थल में ४ घर बनाने की भूमि को विधि पूर्वक ५ पत्तों से ऊपर की छत को छाकर ६ बहुत दिनों तक ॥ २७ ॥ ७ लक्ष्मण फल मूल ग्रहण करने को वन में गये सीता पर्णकुटी में अपने पति की गोदी में गहरी निद्रा लेकर सोई, फिर आप तो जग गई और पति को पौढा कर ऐसी रही जैसी चन्द्रमा को लेकर पूर्णिमा, वहां इन्द्र के पुत्र, दुष्ट जयन्त ने

तहँ सठ जयंत वासव तनुज करटकाय छबि देखि छकि ॥
जननी उरोज चुंबन जहर त्रोटित्रय३मारिय तमकि ॥२८॥
अतुल[1] चंचु आघात चलिग सोनितें[2] पिचकारिय ॥
प्रभु लग्गन भय पाय नहिन अंबा सु निवारिय ॥
छुवत छतज जगि छिप्र सींकं[4] धरि सहज ब्रह्मसर ॥
द्विकं[5] पर मुक्कत दहन दहन लग्गिय तिहिँ दुद्धर ॥
भ्रमि खल सभीक सक्कारि१४भवन सु पुनि आय राघव सरन ॥
असु पाय भयउ बंदत अभय चंडकिरनकुलपति चरन।२९।

दोहा

अक्खिय प्रभु निज अस्त्रसन, तू रक्खन निज तोर ॥
काकहिँ इकदृग हीन करि, ज्वलन समावहु जोर ॥३०॥
समिटि सम्यौं तब ब्रह्मसर, करि जयंत कँहँ कान ॥
द्विककुल तबतैं इक्कदृग, यहहु धरत अभिधान ॥ ३१ ॥

(षट्पात्)

उत सुमंतु पुर जाय कहिय रघुबर जिम किन्नी ॥
दसरथ सुनत सदाह[6] द्रुतँहि[7] तनु[8] निज तजि दिन्नी ॥
आये इत अखिलेस[9] भरत हो तब मामालय ॥

काकपक्षी का स्वरूप करके सीता माता के कुचों से विष चूसने के लिये खींच कर तीन चौंच मारी ॥ २८ ॥ चंचु के १ बहुत आघात से २ रुधिर ३ शीघ्र एक ४ तिनका लेकर ब्रह्मबाण करके ५ उस काक पर छोडा उसकी अग्नि से वह जलने लगा. भय सहित वह दुष्ट चौदह लोकों में भ्रम कर फिर रामचन्द्र के शरण आया और प्राण पाकर सूर्यवंश के पति के चरणों में नमस्कार किया ॥ २९ ॥ रामचन्द्र ने अपने अस्त्र से कहा कि तू अपना तेज रखने के लिये इस काकपक्षी का एक नेत्र फौड़ कर अपनी अग्नि को सिमेट ले ॥ ३० ॥ तब अग्नि को समेट कर वह ब्रह्मशर आप भी शान्त होगया. जयंत को काणा किया जब से ही काक पक्षियों ने काण नाम धारण किया है ॥ ३१ ॥ ६ दाह सहित ७ शीघ्र ही अपना ८ शरीर छोड दिया ९ सब के स्वामी (रामचन्द्र) बन को आये तब भरत अपने मामा के घर थे जहां विरुद्ध

पिक्खि स्वपन प्रतिकूल गेह अप्पन आतुर गय ॥
बन राम बास १ नृपनास २ बलि सुनि बिहाल रोवत सततं ॥
निजमाय तरजि खिल दुव२जननि बंदन किय परि पय विरंत।३२॥
नृपहिं अप्पि तिलनीरं भरत सकुटुंब सोक भरि ॥
नर नागर१जानपद२कटक१पुनि सचिव२संग करि ॥
चित्रकूट रुख चलिय संग लै गुह ढिग जावत ॥
पृतनादिक तजि पिट्ठि अग्ग पहुँच्यो अकुलावत ॥
नभरज बितान इत प्रभु निरखि लक्खन प्रति अक्खिय ललित॥
बिनु कटक खेह न इती बढत है खलु आवन भरत हित॥३३॥
सुनत एह सौमित्रि भनिय दासहिं प्रभु भेजहु ॥
अप्पहिं मारन आत लुंचि मैं तिहिं अहौं लहु ॥
किय बर्जित सुनि कोसलेस भरतहु इहिं अंतर ॥
इक्क मिजल दल अग्ग सगुह पहुँचे अग्रेसर ॥
पहिचानि निट्ठि इतउत परत गिरत पाय प्रभु लाय गल ॥
आगम निदान पुच्छिय अभय कहहु भरत कौसल कुसल॥३४॥

(दोहा)

विजन मंत्र तव है कि बलि, है कि सत्रु मदहीन ॥
है कि जनक आमय रहित, प्रकटहु हेतु प्रबीन ॥ ३५ ॥

स्वप्न देख कर घबराकर अपने घर गये तहां रामचन्द्र का वन में जाना और फिर दशरथ का नाश सुन कर १ निरन्तर २ बाकी की ३ विशेष प्रीति युक्त होकर ॥ ३२ ॥ ४ तिलांजली देकर ५ नगरनिवासी ६ देश में रहनेवालों को ७ सेना को पीछे छोड कर आगे पहुंचे. इधर रामचन्द्र ने आकाश में खेह को फैली हुई देख कर लक्ष्मण से मनोहर वचन कहे कि विना सेना के इतनी खेह नहीं पढती इससे निश्चय ही यह रज भरत के आने से है॥३३॥ ८ लक्ष्मण ९ लुंचन करके १० शीघ्र ११ सेना से एक मंजिल आगे १२ गुह सहित १३ सब से आगे १४ आने का कारण पूछ कर कहा कि हे भरत सम्पूर्ण कौसल देश कुशल है सो कहो. तुम्हारा मंत्र (सलाह) कोई दूसरा मनुष्य जानसक्ता है कि नहीं? फिर तुम्हार शत्रु मदहीन हैं कि नहीं? पिता (दशरथ) रोग रहित हैं कि नहीं? हे प्रवीण इनका कारण प्रकट करो॥ ३५ ॥

(पद्धपात)

भरि लोचन सुनि भरत कहिय प्रभु जब इत आये ॥
दुख इहिँ सत्तम ७ दिनहि सुपहु परलोक सिधाये ॥
सून्य अमृत साकेत पट्ट निज धरहु पधारहु ॥
रुदन पुव्व सुनि राम बिहित जनकहिँ दिय वारहु ॥
करि न्हान सरित मंदाकिनिय भरि उपहारन सुद्ध भुव ॥
विधि श्राद्ध सद्धि श्रद्धा बहुल छदनसदन पुनि आत हुव ॥३६॥
अह दूजे२ तँहँ आय मिले गुरुजनहु प्रसू मुख ॥
भरत सअंजलि भनिय स्वामि भुग्गहु नृपता सुख ॥
को लुप्पत प्रभु कहिय जनक संधा सुत जीवत ॥
राज्य दयित तुम करहु रग्ग हम भजहिँ धर्मरत ॥
मन्न्यौं न राम जब इम मुरन लैबे व्रत दारुन लगिय ॥
निजसुतहिँ सत्यपालक निरखि कौसल्याहु[१] निदेस किय ॥३७॥

(दोहा)

प्यारे अनुजहि पादुका, अप्पि जाहु रघुईस ॥
भरत उठावहिँ राज्यभर[२], सनति[३] तिन्हैं धरि सीस ॥३८॥
गगनहु हुव तिहिँ खिन गिरा, भरत प्रबोधनै[४] पाय ॥
करन देव द्विज काजकौं, रग्ग अटन रघुराय॥ ३९ ॥

आपइधर आये जिसके सातवें दिन इसी दुःख से वह श्रेष्ठ राजा परलोक सिधा गये अब अमृत रूपी अयोध्या का पाट शून्य है जिसको पधार कर धारण करो यह बात रामचन्द्र ने रुदन पूर्वक सुन कर पिता को जलांजली दी. सामग्री से शुद्ध भूमि को भर कर बहुत श्रद्धा से श्राद्ध करके फिर पत्तों के छायेहुए घर में आये ॥ ३६ ॥ दूसरे दिन माता आदि गुरुलोग भी आ मिले जब भरत ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे स्वामी राजापन का सुख भोगो तब रामचन्द्र ने कहा कि कौन ऐसा पुत्र है कि जो अपने जीते जी पिता की प्रतिज्ञा को लोपै. वह प्यारा राज तुम करो हम धर्म में प्रीति रख कर वन सेवन करेंगे १ कौसल्या ने आज्ञा की ॥ ३७ ॥ २ राज्यभार ३ नम्रता सहित ॥ ३८ ॥ उस समय आकाशवाणी हुई कि हे भरत ४ विशेष ज्ञान पाकर. देवता और ब्राह्मणों के कार्य करने को रामचन्द्र वन में जाते हैं ॥३९॥

आग्रह तजहु बिचारि इम, सुनि भरतहु मन सुद्ध ॥
प्रभुकी सिर धारि पादुका, बुल्लिय विदित प्रबुद्ध ॥ ४० ॥
तक्के जे व्रत राम तुम, अब तेही मम आहि ॥
राज्य करहिँ प्रभु पावरी, आगम अवधि निबाहि ॥ ४१ ॥
अब्द चउद्दह१४लंघि इत, दैहो चित्त न देव ॥
देखहु तो निजदासको, आलय पावक एव ॥ ४२ ॥
बदि इम लै सब रामव्रत, सह कुटुंब निजसत्थ ॥
गहिय भरत साकेत मग, समुझि भविष्य समत्थ ॥ ४३ ॥
कछु अंतर साकेततैं, नंदीग्राम सुधाम ॥
भक्त रहिय तोलौं भरत, राह निहारत राम ॥ ४४ ॥

षट्पात्

जे प्रभु व्रत लिय भरत सचिवँ मुख कति न तेहि लिय ॥
इत रामहु छुपि अटन बिपिनँ दंडक प्रवेस किय ॥
तहँ विराध क्रव्याद गहिय सीता खावन हित ॥
भीमकाय पुनि भनिय चलहु न करहु मोचनँ चित ॥
सुनि प्रभु छुराय सैरध्वजिय मारि बिराधहिँ दिय मुकति ॥
तिहिँ कहिय मभ्भ गड्डहु तनुव गज१हम२अनु पावैं न गति ॥४५॥

यह विचार कर १हठ छोड दो २पावड़ी [खड़ाऊ] ३ विद्वान् भरत बोले ॥४०॥ हे रामचन्द्र जो व्रत आपने लिये वे ही व्रत अब से मेरे हैं, आपके पीछे आने की अवधि तक आप की पावड़ी राज्य करैंगी ॥ ४१ ॥ हे देव जो चौदह वर्ष लांघ कर इधर आने को चित्त नहीं देओगे तो आप के दास [भरत] के घर को अग्नि ही देखोगे अर्थात् घर सहित जलजाऊँगा ॥ ४२ ॥ यह कह कर जितने व्रत रामचन्द्र ने लिये थे वे ही नियम लेकर भरत ने सब कुटुम्ब को अपने साथ लेकर भावी को बलवान् जान कर अयोध्या का मार्ग लिया ।४३।४४॥ ४ सचिव आदि ने ५ दंडक वन में विराध नामक राक्षस ने सीता को पकड़ ली उस भयंकर शरीरवाले ने कहा कि चले जाओ ६ छुडाने का चित्त मत करो यह सुनके रामचन्द्र ने जानकी को छुडा कर विराध को मार कर मुक्ति दी उस विराध ने कहा कि मेरे शरीर को भूमि में गाड़ दो. खड्डे के विना हम पीछे गति नहीं पाते [राक्षस लोग खड्डे में गडने से ही गति पाते हैं] ।४५।

दोहा

पहुँचे करि तैसैंहि प्रभु, सारभंग संकेत ॥
मुनि स्वागत अनुसर मिले, हरि करि परि भरि हेत ॥४६॥

षट्पात्

सरनि लखत सरभंग निरखि निट्ठिन रघुनायक ॥
प्रभुके लखत प्रबिष्ट भये अप्पित्त सुभायक ॥
बालखिल्ल्य मुख बिबिध प्रभुहिं आये मुनि पिक्खन ॥
रदऊखल१दल१किरन२जल३रु पवना४ऽऽद घने जन ॥
किय अग्ग गमन रबिकुलकलस जहँ अगस्त्य आश्रम उचित ॥
धरि दिव्य अस्त्र आवत लख्यो हरिहय हरि निज काजहित॥ ४७ ॥

दोहा

मुनि सुतीक्ष्ण आश्रम मुदित, बलि पहुँचे रघुबीर ॥
स्वागति किय तीनन सुमति, धरा नरोत्तम धीर ॥ ४८ ॥

षट्पात्

अक्खिय प्रभु किहिं ओर आहि घटभव मुनि आश्रम ॥
चलि सुतीक्ष्ण पहुँचान कहिय तब मग्ग प्रकार क्रम ॥
प्रभु सुनि पिप्पल बिपिन१बहुरि लंघिय बदरीबन२ ॥

विराध ने कहा वैसे ही उसको भूमि में दबाकर शरभंग ऋषि के स्थान पर जाने का विराध ने संकेत [विराध ने मरते समय रामचन्द्र से कहा कि यहां से आप शरभंग मुनि के आश्रम पर जाइये वहां आपको बड़ा लाभ होवेगा उसी संकेत के अनुसार] बताया था उस माफिक वहां गये मुनि आये का आदर करके मिले और हरि [रामचन्द्र] ने नेह भर कर आलिङ्गन [भुजों से भर कर मिलना] किया ॥ ४६ ॥ मार्ग देखते हुए शरभंग ने नीठ नीठ रामचन्द्र को देखे और रामचन्द्र के देखते हुए अग्नि में प्रवेश कर गये वहां रामचन्द्र को देखने के लिये बालखिल्य आदि नानाप्रकार केमुनि आये उनमें रदऊखल (जिनके दन्त ऊखल का काम देते हैं) तथा पत्ते, सूर्य की किरणें, जल और पवन भक्षण करनेवाले बहुत थे. शरभंग ऋषि से अपने हित के लिये मिलने को हरे रंग के घोड़े रथ में जोत कर इंद्र आया था उसको रामचंद्र ने देखा ॥ ४७ ॥ १ पुनि २ मनुष्यों में उत्तम ॥ ४८ ॥ रामचद्र ने कहा कि ३ अगस्त्य का आश्रम किधर है ४ मार्ग का क्रम बताया ५ पीपल वृक्षों

मिंटे*कुंभजभ्रात अग्ग विचरत पथ१ अंकन ॥
आतिथ्य पाय तिनसौं उचित घटभव मुनिके छदनघर ॥
पहुँचे सुतीक्ष्ण२ पर्णौक सन प्रमित अष्ठ८गव्यूति पर ॥४९॥

दोहा

मुनि अगस्त्य तहँ किय महत, प्रभुपूजन मुद पाय ॥
इंद्र गयो धरि अस्त्र जे, अप्पे रामहिं आय ॥ ५० ॥
अक्खय३ धनु१तूणा२ऽऽदि ए, हेति धरे रघु हेलि ॥
निरखे बहु देवन निलय, ठाये४ कलिमल५ ठेलि ॥ ५१ ॥
विचरत इम दंडक बिपिन, कढ्ढि बरस दस१०काल ॥
बसे जाय प्रभु पंच५वट, सुभग विरचि छदसाल६ ॥ ५२ ॥

षट्पात्

पहिलैं इक मनुपुत्र भोज दांडिक्य भूप हुव ॥
सु लहि पुरोहित सुक्र भयउ प्रभु सत१००जोजँन७ भुव ॥
अरजा८ जिहिं अभिधान सुक्र तनया सु सयानी ॥
भुग्गी तिहिं गहि भीत बिजय९ खलनृप बिललानी ॥
कन्न्या सु कुकृत जनकहिं कहिय तमकिं१० सुक्र दिय साप तब ॥
मम११ थल निवारि सत्तम७दिवस यह भुव दब्बहु धूलि अब ॥५३॥

(दोहा)

सत्तम७दिन कविके१२ सपन, घन बुट्ठिय रज घोर ॥

का वन * अगस्त्य के भाई स मिले १ मार्ग को चिन्हित करते हुए २ सुतीक्ष्ण मुनि की पर्णकुटी से आठ गव्यूति (दो कोश को गव्यूति कहते हैं) अर्थात् सौलह कोश पर अगस्त्य मुनि की पर्णकुटी पर पहुँचे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ अच्चय धनुष भाथा आदि शस्त्र रघुवंश के सूर्य ने धारण किये और बहुत देवताओं के घर देखे ४ प्रसिद्ध ५ पापों को हटाकर ॥ ५१ ॥ ६ पर्णकुटी रचकर ॥ ५२ ॥ ७ चार सौ कोश की भूमि का स्वामी हुआ ८ अरजा नामक शुक्राचार्य की पुत्री को उस दुष्ट राजा ने पकड़ कर ९ विजय करके अथवा विमान में बिठाकर भोगी जिसके भय से वह रोई, इस खोटे कृत्य को कन्या ने पिता (शुक्र) से कहा १० क्रोध करके ११ मेरे स्थल को छोडकर ॥ ५३ ॥ १२ शुक्र के श्राप से उस राजा के सीमा तक फैले हुए देश को रज की वर्षा होकर दबा

तस जनपद जोजन सतक१००, दब्ब्यो सीमन दोर॥५४॥
बच्यो सुक्र आश्रम बिहित, मित इक्क जोजन मान ॥
जनस्थान अभिधान जो, थिरा बिदित हुव थान ॥ ५५ ॥
बज्ज्यो सब दंडक विपिन, दब्ब्यो जो रज देस ॥
बिरचत तामैं पंच५वट, इम पहुँचे अखिलेस ॥ ५६ ॥
जनस्थान बिच जिन दिनन, सहँसन आसिर सत्थ ॥
रावनको थानौं रहत, मुख्य खरादि समत्थ ॥ ५७ ॥
ताके अंतिकं समय तिहिं, सानुज राम ससीत ॥
पंच५बटी निबसे प्रथित, भुवनन करत अभीत ॥ ५८ ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्बायणो तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशबर्णाने बसुदेव ६८ बेलो ६८।१ पयामसमयबर्णानबिषयजयच्चतुर्जननसमुद्देशसङ्गतबैवस्वतात्मजनुरिक्ष्वाकु ६पट्टपपुत्रीबिकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरित्रेश्रीरामपञ्चबटीनिवसनमष्टात्रिंशो३८मयूखः।३८। आदितोऽशीतितमः।८०।

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(हरिगीतम्)

अटमान दंडक रण्ण यौं रघुराज पंच५बटी रहे ॥

लिया ॥ ५४ ॥ १ एक जोजन प्रमाणवाला वह स्थान भूमि पर जनस्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥ ५५ ॥ जिस देश को रज ने दबालिया था वह दंडक नाम से प्रसिद्ध हुआ २ सब के स्वामी ॥ ५६ ॥ ३ राक्षसों का साथ ४ खर को आदि लेकर बलवान् ॥ ५७ ॥ ५ उसीके समीप छोटे भाई सहित और सीता सहित प्रसिद्ध पंचवटी में वास किया ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय वर्णन करने के विषय (आश्रय) में सूर्य वंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्र उत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतरश्रीसीता के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रामचन्द्र का पंचवटी निवास करने का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३८। और आदि से अस्सी मयूख हुए ।८०।

इसप्रकार दंडक बन में भ्रमण करतेहुए रामचंद्र पचवटी में रहे

रचि पर्णसाल बिसाल ह्हाँ दिन सेस कड्ढनको चहे ॥
तिहठाँ बिभीखनसौं बडी बहिनी दसाननकी गई ॥
जिहिं नाम सुप्पनखा सु रामहिं रीझिकैं लखती भई ॥१॥
सजि रूप सुंदर यौं कह्यो करि मोहि राघव सुंदरी ॥
सौमित्रि आहि अदारकौं इक१दारहौं प्रभु उच्चरी ॥
तब जाय लक्खनको सुनायत सेस उत्तर यौं दयो ॥
तजि स्वामिनीपनतैं तृथा यह किंकरीपन क्यौं लयो ॥२॥
नहि खान१ पीवन२ सैंन३ चैन रु ऐन४ है न निवासकौं ॥
सुनि रक्खसी पुनि जाय जंपिय लैन जानकि ग्रासकौं ॥
तब राम सस्मित सैनसौं अनुजात कड्ढि कृपानिका ॥
श्रुति१नक्क२कट्टि दई बिडारि धुरीण जो अघधानिका ॥३॥
जनथानमैं तिहिं जाय दूखन१सौं त्रिसरतक२सौं कह्यो ॥
खर३सौं तथा कहि दुर्मुखी हिय जाय रावनको दह्यो ॥
जनथानसौं द्वु हजार सक्करि १४००० रक्खसी पृतना चली॥
रनघोर तानक बंब१आनक२हे अचानक भू हली ॥ ४ ॥
लखि खेह अब्भ विदेहजा प्रभुनैं पठाय दरी दई ॥
तस द्वार लक्खन रज्ज रक्खि रु दिट्ठि अग्ग स्वयं लई॥

पत्तों से छाईहुई पर्ण शाला में बाकी के दिन निकालने चाहे १ वहां पर रावण की बहिन २शूर्पणखा ॥ १ ॥ हे रामचन्द्र मुझको तुम्हारी स्त्री बनालो जब रामचन्द्र ने कहा कि मैं तो एक स्त्री रखने का नियम रखनेवाला हू और लक्ष्मण बिना स्त्रीवाला है उसको पति बना. तब वही वार्ता लक्ष्मण से कही. लक्ष्मण ने कहा कि मालिकपन को छोड कर दासीपन क्यों लेती है ॥ २ ॥ ३रहने को घर भी नहीं है४राक्षसी ने यह सुन कर फिर रामचन्द्र से जाकर कहा कि या तो मुझे स्त्री बनालो नहीं तो सीता को खाजाऊंगी. हसते हुए रामचन्द्र के इसारे से छोटे भाई (लक्ष्मण) ने तरवार निकाल कर कान और नाक काट कर निकाल दी जो पापों के आधार में मुख्य थी॥ ३ ॥१दूषण नामक राक्षस से और त्रिशिरा नामक राक्षस से खोटे मुखवाली ने ६ सेना ७ घोर युद्ध को फैलानेवाले नक्कारे और नोबत बजकर ॥ ४ ॥ आकाश में खेह देख कर रामचन्द्र ने सीता को एक गुफा में भेज दी उस गुफा के द्वार पर

कट कच्छिकैं पट पीत उत्कट बल्गु बांधि जटावली ॥
कसि पिट्ठि अक्खय[1] तून ज्यौं[2] फटकारि चाप लयो बली ।५।
सिर सेसके पय गड्डि संगर[3] साँवरो समुहो भयो ॥
हनिकैं चउद्दह ही हजार१४०००अनीक[4]कौं पद जो दयो ॥
घटिका[5]ऽर्ध जुत मुहुत्त २।[1]मैं निसचार चक्कहि चूरिकैं ॥
खर१ दूखन२ त्रिसिरा३ हनैं धनुज्यां[6] दिसामुख पूरिकैं ।६।
दससीस चार अधीस बत्त यहै अकंपन जानिकैं ॥
बरनी निसाचरराजसौं पुरलंक आतुर आनिकैं ॥
बसि द्वै२ मनुष्यन रागा दंडक्क स्वैरता बहु बित्थरी ॥
प्रभुकी स्वसा जिन नक्क१कर्ण२विहीन सूर्पणखा करी ।७।
जनथानको अपनौं अनीक खरादि३संजुत संहरयो ॥
अपमान सो प्रभुको कुपावन काल कूरननैं करयो ॥
तिन संग है इक१नारि सुंदर अद्वितीय त्रि३लोकमैं ॥
हरि ताहि आनहु दुष्ट वे मरिहै परे तस सोकमैं ॥ ८ ॥
सुनि विश्वबासुत स्वीय मातुल पास जाय सुही कही ॥
मारीच हेमकुरंग व्है तुम जाहु दंडकमैं सही ॥
लैजाहु दूर लुभाय रामहिं मैं हरो जुवती जहाँ ॥
सुनि यौं नट्यो वह भाइने जहिं मृत्युहै तुमरो तहाँ ॥ ९ ॥

लक्ष्मण को सज्जीभूत रख कर अपनी दृष्टि राक्षसों की ओर आगे दी और तीव्र होकर कमर पर पीताम्बर और सुन्दर जटा की पंक्ति को बांध ली १ भाथा २ प्रत्यंचा को फटकारके बलवान् (रामचन्द्र) ने धनुष लिया ॥ ५ ॥ ३ युद्ध में श्याम रंगवाले [रामचंद्र] सम्मुख हुए ४ सैन्य को वही सैन्य पद दिया अर्थात् सबको शयन करादिया ५ आधी घड़ी के सहित एक मुहूर्त [दो घड़ी] अर्थात् अढाई घड़ी में राक्षसों की सेना का चूर्ण करके ६ धनुष की प्रत्यंचा के शब्द से दिशाओं को पूर्ण करके ॥ ६ ॥ रावण के हलकारों के स्वामी अकंपन ने यह बात जान कर रावण से कही ७ दंडक वन में वास करके बहुत स्वतंत्रता फैलाई है. हे स्वामी आपकी बहिन सूर्पणखा को नाक और कान विना कर दी । ७ । ॥ ८ ॥ रावण ने यह सुनकर अपने मामा (मारीच) से जाकर कहा ८ भाणेज़

प्रभु राम है बलवानतें न बिरोध चित्तहु धारिये ॥
सिखयो जिन्हैं यह मंत्र अप्पहिं ते स्वसत्रु बिचारिये ॥
इम पाय मातुलसौं प्रबोध स्वगेह रावनहू गयो ॥
इहिं काल सुप्पनखा हु आनन तास दिट्ठि निवेदयो ॥१०॥
रु कह्यो करी यह मो दसा जनथान सेन सबै हनी ॥
धिक्कार तावक[१] भूपताकहँ जाहि जीवत यौं बनी ॥
भगिनी प्रबोधित कर्बुरेस[२] बहोरि मातुलपैं गयो ॥
मगमैं महाबल बैनतेय[३] प्रभाव जो लखतो भयो ॥ ११ ॥
खखइंदु१००जोजन उच्छ्रयी बहुपाद पादप साखपैं ॥
खगराज बैठिय आनि खावन कुम्भ१गै२अभिलाखपैं ॥
तस भार तुट्टिय साख लुंबत वालखिल्ल्य समेतही ॥
तिहिं त्रोटिमैं गहि तातपैं उरगारि चल्लनकी चही ॥ १२ ॥
पथमाँहिं कौतुक पिक्खि यौं दससीस मातुलपैं सर्यो ॥
मारीच याहि बहोरि हू प्रथमोक्त[४] आसय उच्चर्यो ॥
तब बिश्रवासुत कुप्पि अक्खिय तोहि तो अब मारिहौं ॥
नहिं जो करैं यह औ करैं बहु थान मान बढारिहौं ॥१३॥

से नटा कि वहां तुम्हारा मृत्यु है ॥ ९ ॥ रामचंद्र ईश्वर हैं इसकारण बलवान् से चित्त में भी विरोध नहीं करना चाहिये. आपको जिसने यह सलाह दी है उसको अपना शत्रु मानो मामा से ज्ञान पाकर रावण अपने घर गया, इसी-समय सूर्पणखा ने अपना मुख रावण को अर्पण किया (दिखाया) ॥ १० ॥ १ तेरे राजापन को २ राक्षसों का पति (रावण) अपनी बहिन को समझाकर मारीच के पास गया वहां मार्ग में ३गरुड़ के बडे बल का प्रभाव देखा ॥११॥ सौ योजन ऊंचे बड़ वृक्ष की शाखा पर एक हाथी और कच्छप को खाने को अभिलाषा से गरुड़ आकर बैठा उसके भार से वह शाखा टूटगई जिसके साठ हजार वालखिल्य ऋषि लटकरहे थे उनके सहित ही उस शाखा को चौंच में पकड़कर गरुड़ ने अपने पिता कश्यप के पास जाना चाहा ॥ १२ ॥ यह तमाशा मार्ग में देखकर रावण मामा के पास चला. ४पहिले कहा उसीमाफिक रावण ने क्रोध करके कहा कि तू मेरा कहना नहीं करैगा तो अभी मारडालूंगा और कहना करैगा तो बहुत स्थान देकर मान बढाऊंगा ॥ १३ ॥ मारीच ने दोनों

मारीच द्वैरदिस मिच्चुमैं लखि अच्छ श्रीअखिलेससौं ॥
खलसंग पंचवटी गयो तपनीय मृगबरबेससौं ॥
सीताहु हाटक एनकौं लखि रामसौं बिनती करी ॥
गहिलेहु याकँहँ वा हनौं इहिं चर्मइष्ट हमैं बरी ॥ १४ ॥
तब सेस वारितहू चले सर चाप राम सम्हारिकैं ॥
लैजान राघवकौं बिदूर चल्यो कुरंग विचारिकैं ॥
थपि मैथिली ढिग सेसकौं प्रभु जाय एन सु मारयो ॥
बपु बान लग्गत हाय लक्खन हा प्रिया सु पुकारयो ॥१५॥
सुनि जानकी सु कह्यो हि देवर जाहु संकट तत्थ है ॥
सौमित्रि अक्खिय सर्बके प्रभु कौसलेस समत्थ है ॥
सुनि छद्मकातर कर्बुरध्वनि अप्प नाँ बिधुरा लहो ॥
जगदंब अक्खिय राम अर्क अथाय मोहि वृथा चहो ॥ १६ ॥
पठये कहा तुम केकईसुत राम मारन कज्जही ॥
सुनिकैं इती श्रुति मुंदि सेस अरण्यदेवनसौं कही ॥
तुम सक्खि रक्खहु जानकी जबलौं मुरौं लखि रामकौं ॥
इम अक्खि सेस चल्यो रु रावन सिद्ध पिक्खिय कामकौं ॥१७॥

ओर में मृत्यु देखकर रामचंद्र के हाथ से मरना ही अच्छा जाना।सोने का मृग बनकर २सोना का मृग देख कर रामचंद्र से कहा कि इसको पकड़ लो अथवा मार डालो इसका चमड़ा मुझे प्यारा है सो मैंने स्वीकार किया है॥ १४ ॥ उस समय लक्ष्मण के मना करने पर भी रामचंद्र चले.सीता के पास लक्ष्मण को रख कर रामचंद्र ने हरिण को मारा जिसके शरीर में बाण लगते ही हा लक्ष्मण हा प्रिया ऐसा शब्द उच्चारण किया ॥१५॥ सो सुनकर सीता ने कहा कि हे देवर तुम जाओ वहां संकट है. लक्ष्मण ने कहा कि रामचन्द्र सब के स्वामी बलवाले हैं छल से कायर हुए राक्षस का शब्द सुन कर आप विकलता को प्राप्त मत होओ (मत घबराओ) इस पर सीता ने कहा कि रामचन्द्र रूपी सूर्य को अस्त कराके तुम मुझको चाहते हो सो यह वृथा है॥ १६ ॥ यह सुन कर कान मूँद कर लक्ष्मण ने वनदेवताओं से कहा कि सीता ने कहा जिसके तुम साक्षी हो. जब तक रामचंद्र को लेकर पीछा आऊं तब तक तुम सीता की रक्षा करना ॥ १७ ॥

धारि भिच्छुवेस रु बेसके अनुकूल टेर तहाँ दई ॥
कछु दैन लग्गिय मैथिली गहि तत्थ रावननैं लई ॥
निज नाम१रूप२प्रकासि चिंति अरोहि स्यंदनकौं चल्यो ॥
तिहिं जात रोकि अनूरुको सुत आय आहव उज्झल्यो ।१८।
सु जटायु सट्ठि हजार६००००हायन वैधरैं बटपैं रह्यो ॥
कित जात तस्कर मो छतैं करि लूट यौं खलसौं कह्यो ॥
तरु तोरि पच्छन२ पोनतैं अवनी धुजावत उत्तर्‍यो ॥
नख१त्रोटि२कोटिन मारिकैं रथ हीन रावनकौं कर्‍यो ।१९।
हय१सूत२मारत बेग मारुत नावलौं अवनी धुकी ॥
खगराज पत्रन बाज बाजत गाज भद्दवकी लुकी ॥
मगमैं अचानक सिंह उट्ठत आत अध्वग संकरैं ॥
गहि एक रावनकी जटायु करी सु क्यों न अलं करैं ॥२०॥
संकरैं१लंकरैं अन्त्यानुप्रासः ॥
कछुकालमैं खल्ल हू सम्हारि रु चंद्रहास प्रहारिकैं
खगराज पच्छति दोहु२कट्टि दयो सु छोनिय डारिकैं ॥
रु बिमान पुष्पक चिंति बैठि स्वगेहलौं उडि संचर्‍यो ॥
कढि ऋष्यमूक अहार्यपैं मन अग्ग धावनकौं धर्‍यो ॥२१॥
तहँ जानकी कछु स्वीय भूखन उत्तरीय उतारिकैं ॥

भिक्षुक का वेस धारण किया और उस वेस के माफिक ही शब्द किया १सीता को रथ पर चढा कर चला जिसको रोक कर अरुण का पुत्र(जटायु)युद्ध के लिये बढ़ा।१८।वह जटायु साठ हजार वर्ष तक वैधरे नामी बड़ के वृक्ष पर रहा था, जिसने चोर से कहा२अपने पांखों के पवन से वृक्ष को तोड़ कर भूमि को धुजाता हुआ उतरा और क्रोड़ों नख और चंचू मार कर रावण को रथहीन कर दिया।१९। पवन के वेग से नाव धूजै जैसे भूमि धूजने लगी, जटायु के पंखों के बाजने से भादव के मेघ की गर्जना छिपगई, और मार्ग में अचानक सिंह के उठने से मार्ग चलनेवाला सकड़ाई में आजाता है वह गति जटायु ने रावण की करी सो क्यों नहीं करै क्योंकि जटायु बल से पूर्ण था ॥२०॥ ३खड्ग मार कर जटायु के दोनों पंख काट कर भूमि पर डाल दिये ४ ऋष्यमूक नामक पर्वत पर जानिकला और आगे दौड़ने का मन किया ॥२१॥ वहां सीता ने अपना

अध डारि रक्खस नैर जाय सती रही ब्रत धारिकैं ॥
प्रभुता बढाय बढाय दुष्ट दिखाय बैभवकौं थक्यो ॥
जननी गिन्यौं तृन तुच्छ व्हाँ बलि कोप उद्धत व्है बक्यो२२
भजि मोहिकौं बचिहै न तो भखिलेहु याहि निसाचरी ॥
करि इक्क१अब्द करार यौं जननी असोक बनी धरी ॥
इत पाय राम कलंब हाटक एन व्है निजरूपसौं ॥
परि छोरि पुद्गल गम्यलोक्क गयो सु उद्धरि कोपसौं ॥२३॥
मृग और लै तब राम बाहुरि सेसकौं बहुरायकैं ॥
अतिबेग दोउन१पर्नआलय सून्य पिक्खिय आयकैं ॥
अनु२जात जावन निंदि राम बिलप्पि कातरता लई ॥
तहँ सेस अक्खिय कै सु न्हावन३ गोदिका तटपैं गई ॥२४॥
अथवा गई फल लूमकौं इम आक्खि खोजन नीसरे ॥
प्रभुनैं कह्यो सब दुक्ख मैं लहि जानकी सुख बीसरे ॥
हिय फाँक होवत जात लक्खन ए विलाप धरे धनी॥
प्रति४रूक्खं पुच्छत निक्खसे प्रभु लाय पीर घनी घनी ॥२५॥

भूषण और कंधे पर रखने का उत्तवस्त्र उतार दिया. नीचे डालकर राक्षस के पुर में जाकर वह सती (पतिव्रता) व्रत धारण करके रही, रावण अपना बडप्पन और वैभव दिखा दिखा कर थक गया जिसको माता (सीता) ने तृण से भी तुच्छ गिना फिर कोप में उद्धत होकर कहा कि॥ २२ ॥ मुझको सेवन करने से बचैगी नहीं तो हे राक्षसियो इसको खाजाओ, फिर एक वर्ष में मुझको स्वीकार नहीं करैगी तो मारडालूंगा ऐसा इकरार करके सीता को अशोक वाटिका में रख दी। इधर रामचन्द्र के बाण लगने से सोने का हरिण अपना राक्षस रूप होकर भूमि पर गिरके शरीर छोड जाने योग्य (स्वर्ग) लोक में कोप से निकल कर गया ॥ २३ ॥ रामचन्द्र दूसरा मृग मार कर लक्ष्मण को पीछे फेरकर आप भी पीछे फिरे १पर्णकुटी को छोटे२भाई (लक्ष्मण) सीता को छोड कर चले गये जिसकी निन्दा करके रामचन्द्र ने विलापकरके कायरता पाई. ३गोदावरी नदी के किनारे गई होवेगी ॥ २४ ॥ रामचन्द्र ने कहा कि मैं सीता का सुख लेकर सब दुःख भूल गया था सो हे लक्ष्मण हृदय फटाजाता है. इसप्रकार के विलाप स्वामी (रामचन्द्र) ने धारण किये४प्रत्येक वृक्ष से पूछते हुए ॥ २५ ॥

इम दोहु२दंडक अंतरागत क्रौंच काननमैं गये ॥
गहि तत्थ खावन काज कुप्पि कवंध रक्खसनैं लये ॥
इक१इक्क१जोजन लंब व्हाँ खल हत्थ दोउन२कट्टिकैं ॥
दिय मर्म छेदि गिराय बीरन दाव दुद्धर दट्टिकैं ॥ २६ ॥
तब पूर्वरूपहिं पाय रक्खस रामसौं नुतिकैं कह्यो ॥
गधर्व मैं लहि साप राघवँ अंग आँसिरको लह्यो ॥
अबँ अप्प अप्पिय स्वर्ग ओ प्रभु जाहु हे सबरी जहाँ१ ॥
रु मतंग आश्रम१ऋष्यमूक२पधारि खोज लहो तहाँ ॥२७॥
इम अक्खि गो वह ए उभै२सबरी निकेतनपैं गये ॥
तँहँ अर्चना उपहार तुच्छहु तास सम्मदसौं लये ॥
परिनामकैं प्रभु अग्ग आत्मसमाधिकैं सबरी जरी ॥
रु मतंग आश्रम गौं गये अनुजात संजुत श्रीहरी ॥ २८ ।
बहु बिप्रराजन पाय पूजन पंपिकाँ तटपैं गये ॥
छबि तास पिक्खत श्रीनिवास बिसेसही बिरही भये ॥
पुनि राम लक्खननैं प्रबोधिय पंपिका तट पारपैं ॥
सुग्रीव ए निरखे धराधर ऋष्यमूक सुढारपैं ॥ २९ ॥
कपि च्यारि४कीसनसौं इहाँ यह बालिसौं बचिबे रह्यो ॥

दंडक बन से दूर आकर क्रौंचवनमें गये वहां क्रोध करके खाने के लिये दोनों भाइयों को कवंध नामक राक्षस ने पकड़ लिया उसके एक एक योजन लंबे हाथ दोनों भाइयों ने काट कर मर्मस्थल बेध कर दुस्तर दाव से दबादिया।२६।१स्तुतिकर के रामचंद्र से कहा कि२हे रामचंद्र३राक्षस का शरीर लिया है. अब४आपने स्वर्ग दिया है।२७।५भीलनी के घर पर गये वहां तुच्छ पूजन और तुच्छ सामग्री पाकर भी हर्ष के साथ लिये वहां रामचंद्र से प्रणाम करके आत्मसमाधि करके शबरी(भील की स्त्री)जल गई.६छोटे भाई सहित श्रीरामचन्द्र मतंग के आश्रम पर गये।२८।७पंपा नामक सरोवर की तीर पर गये, उस तालाव की विशेष शोभा देख कर लक्ष्मी के निवास (रामचन्द्र) बहुत विरही हुए वहां लक्ष्मण ने रामचंद्र को समझाया. ऋष्यमूक नामक श्रेष्ठ पर्वत के ऊपर से सुग्रीव ने पंपासर के पहले किनारे इन (रामचंद्र) को देखा. सुग्रीव नामक बंदर चार बंदरों सहित बालि से बचने के अर्थ इस पर्वत पर रहा था जिसने जाना

जिहिं जीवते तजिहै न ए अब बालिनैं पठयो कह्यो ॥
हनुमान निश्चय लैंनकौं तब विप्र आकृति उत्तरे ॥
धरि खंध दोउ२न ऋष्यमूक अधित्यका सुखसौं धरे ॥३०॥
तहँ अग्गिकौं करि सक्खि राघव १कीसराज२सखा भये ॥
कछु खोज पुच्छिय राम ह्वाँ हनुमान प्रत्यय अप्पये ॥
केयूर१कुंडल२रम्य हंसक३उत्तरीय४निहारिकैं ॥
अनुजातसौं प्रभु उच्चरी लखि चिन्ह बच्छ बिचारिकैं ॥
सौमित्रि अक्खिय औरकी पहिचानि मोहि कछू नहीं ॥
पय नित्य बंदनतैं लखे जगदंब हंसक ए२सही ॥
सुनि राम सो प्रभु हे तथापि बिलप्पि रोदन वित्थस्यो ॥
सुग्रीव१राघव२नैं परस्पर काज सद्धन स्वीकरयो ॥ ३२ ॥
कपिराज अक्खिय आत्मभू सन कीस ऋत्तरजा भयो ॥
इक दीर्घिका जल संगसौं ततकाल नारि सु ह्वै गयो ॥
तँहँ आय बासव पिक्खि ताकँहँ बीज उज्भिय अप्पनौं ॥

कि हम को मारने के अर्थ बालि ने इनको भेजा है सो अब ये नहीं छोडेंगे. ब्राह्मण का स्वरूप करके हनुमान् निश्चय करने को गया जिसने राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को अपने कंधे पर रख कर पर्वत के मस्तक की भूमि पर जा रक्खा ॥ ३० ॥ वहां पर अग्नि को साक्षी करके रामचन्द्र और सुग्रीव सखा हुए जब रामचंद्र ने सीता का पता पूछा तब हनुमान् ने विश्वास कराने के लिये (जिसके करने से या दिखाने से प्रतीति होवे उसको प्रत्यय कहते हैं इसीको यावनी भाषा में सुबूत कहते हैं) भुजबंध, कुंडल, पगों में पहनने के कड़े और उपवस्त्र दिये जिनको देख कर रामचंद्र ने छोटे भाई से कहा कि हे वत्स (पुत्र) इनको विचारो कि सीता के ही हैं या नहीं ॥ ३१ ॥ लक्ष्मण ने कहा कि औरों की मुझे पहिचान नहीं है क्योंकि मैं कभी सीता के सामने नहीं देखता था परंतु पगों में नित्य नमस्कार करने के कारण जानता हूं कि ये पगों के कड़े अवश्य जगत्माता (सीता) के हैं यह सुनकर रामचन्द्र परमेश्वर थे तोभी विलाप करके रुदन करने लगे १ स्वीकार किया ॥ ३२ ॥ अब बालि और सुग्रीव की उत्पत्ति कहते हैं, सुग्रीव बोला कि ब्रह्मा से एक बंदर रीछों का अथवा बंदरों का राजा हुआ वह एक बावड़ी (वापी) के जल के संग से तुरत स्त्री होगया. वहां पर इन्द्र आया जिसने उस स्त्री को देख

परि तास बालनमाँहिँ सो हुव बालि१बीर बली घनों ॥३३॥
पुनि तत्थ आयउ अक्क पिक्खत ताहुकी गति सो भई ॥
परि कंधराविच बीजमैं१कपिजुग्ग२यों हुव हे जई ॥
वनिता प्लवंगम व्है बहोरि सु नैर किष्किंधा रह्यो ॥
परमेष्ठि सासन पाय हम जुत राज्यभार इहाँ लह्यो॥३४॥
सुनि बालि भो कपिराज अस्सुप दुंदुभी तँहँ आयकैं॥
करि गज्ज अग्रज बुल्लयो सु जुरयोहि रंग रिसायकैं ॥
कपिराजसौं सिर तास तुट्टि रु पाय ठोकर उच्छर्यो ॥
सु मतंग आश्रम रत्त रंगन इक्क१जोजनपैं पर्यो ॥ ३५॥
लखि अस्त्र साप मतंग अप्पिय अत्थ खेपक आयहै ॥
तब तास मस्तकके हु मोबच टूक टूक गिरायहै ॥
इहिँ हेतु बालि न अत्थ आवत यों इहाँ रहिँ मैं बच्यो ॥
मायावि नामक दुंदुभीसुत जंग व्हाँ बहुर्यो रच्यो ॥३६॥
जब बालि सानुज सूर सम्मुह तास जुज्झनकों गयो ॥

कर अपना वीर्य छोड़ा सो उस स्त्री के बालों में गिरा जिससे बालि नामक वीर पैदा हुआ ॥ ३३ ॥ फिर वहां पर सूर्य आया उसने उस स्त्री को देखा जिसकी भी वही गति हुई अर्थात् स्त्री को देखते ही सूर्य का वीर्य गिरा सो उस स्त्री के कंधे पर गिरा जिससे मैं [सुग्रीव] हुआ हे विजय पानेवाले (रामचंद्र) इसप्रकार दोनो बंदर हुए. वह स्त्री भी पीछा बंदर होकर किष्किंधा नामक नगर में रहा १ ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ॥ ३४ ॥ बालि को बंदरों का राजा हुआ सुन कर राक्षस दुंदुभी (मय के पुत्र मायावी से और बालि से स्त्री के कारण वैर होगया था वही मायावी दुंदुभी का पुत्र हुआ जिस) ने आकर मेरे बड़े भाई (बालि) को बुलाया सो युद्ध में क्रोध करके जुड़ा उसका शिर टूट कर बालि की ठोकर लग कर उड़ा सो रुधिर से रंगा हुआ एक योजन पर मतंग ऋषि के आश्रम में पड़ा ॥ ३५ ॥ उस रुधिर को देख कर मतंग ने श्राप दिया कि इसका फैंकनेवाला आवेगा तब मेरे वचन से उसका मस्तक टूकटूक होकर गिरेगा, इसकारण से बालि यहां नहीं आता है इसीसे मैं भी यहां आकर बचा हूं. और मायावी नामक दुंदुभी के पुत्र ने वहां फिर युद्ध रचा ॥ ३६ ॥ छोटे भाई १ (सुग्रीव) सहित पर्वत की गुफा में घुस कर सब से गुप्त होगया वहां एक वर्ष में पीछा आने का इक-

तब भज्जि सो खल कंदरा धसि छन्न सर्बनसौं भयो ॥
करि इक्क१ अब्द करार व्हाँ बिलमाँहिं बालिहु संचरयो ॥
नहिं कोलपैं सु कढ्यो कढ्यो छतजात उब्बाकि उच्छरयो।३७।
तब मैं भज्यो हत बालि जानि रु पैठि पत्तनमैं डरयो ॥
जुवराज अंगद थप्पि पंचन मोहि गद्दियपैं धरयो ॥
पुनि मारि दुंदुभिपुत्रकौं कढिकैं कपीश्वर[1] गज्जयो ॥
हनुमान आदिक च्यारि४कीस[2] उपेत मैं तब भज्जयो ।३८।
खिजि बालि पिठ्ठि लग्यो फिरे हम सर्ब भूतलपैं जहाँ ॥
हनुमान[3] प्राननत्रान तानक ऋष्यमूक कह्यो तहाँ ॥
तब खेत सुक्कत मेघलौं यह अद्रि पाय इहाँ बसे ॥
अब रावरे पय कंज पिक्खत त्रास१पाय२सबै नसे ॥ ३९ ॥
यह सुक्क दुंदुभि सीस फैंकहु बालि ज्यों प्रभु पायसौं ॥
सुनि फैंकि अंगुल[4]सौं दयो चालीस४०कोस सु चायसौं ॥
कपिनैं कह्यो पुनि ताल सप्तक७बालि वेधत बान दै ॥
इन्ह अज्ज वेदहु अप्पहू किय सोहु स्वीकृत कान दै ॥४०॥
तब ऐंचि अक्खय तूनतैं इखु ईस इक्क१हि मुक्कयो ॥
तरु सत्त७भेदि रु भेदि सो गिरिसौं रसातललौं गयो ॥

रार करके वालि भी उस बिल में घुस गया. उस कोल पर बालि तो नहीं निकला और रुधिर उवक कर निकला ॥ ३७ ॥ बालि को मराहुआ जान कर मैं वहांसे भागा और डर कर पुर में घुस गया १ वंदरों का राजा (बालि)२वंदरों सहित॥३८॥३हनुमान् ने प्राणों की रक्षा का फैलानेवाला ऋष्यमूक पर्वत बताया तब सूखतेहुए खेत पर मेघ के समान इस पर्वत को पाकर यहां बसे. अब आपके चरणकमल के देखने से भय और पाप सब मिटगये॥३९॥बालि ने जिसप्रकार दुंदुभी के मस्तक को फैंका था तिस प्रकार इस सूखे हुए मस्तक को आप भी पग से फैंकिये४पग के अंगूठे से चालीस कोश फैंक दिया , फिर सुग्रीव ने कहा कि ताड़ के सात वृक्षों को बालि बाण देकर बेधदेता है इनको आप भी आज बेधिये सो सुन कर रामचंद्र ने स्वीकार किया ॥ ४० ॥ तब अक्षय भाथा से बाण रामचंद्र ने छोडा सो उन सात वृक्षों

मुरिकैं बहोरि सुरोप राघवके कलापहिमैं रह्यो ॥
तब बालिपातनमाँहिं प्रत्यय अर्कअंगजनैं लह्यो ॥ ४१ ॥
प्रभुनैं प्लवंग सुकंठ जुज्झन बालिपैं पुनि मुक्कल्यो ॥
सुरराजके सुतसौं सु हारि बिहाल राघवपैं चल्यो ॥
तब राम सासन पाय सेस सुकंठ कंठ यहै करी ॥
पहिचानिकौं गजपुष्पिका व्रतती प्रफुल्लित लै धरी । ४२ ।
पुनि जुज्झकौं पठयो सु जानि रु इन्द्रकौं सुत आत भो ॥
तिय तारिकाँ बरज्यो बली रयकौं न तोहु रुकात भो ॥
करि मल्लसंगर सूरसूनुहिं बालि मारनको भयो ॥
तरु ओटतैं प्रभुनैं कलंब तहाँ कपीश्वरकैं दयो ॥ ४३ ॥
जिय जात बेरहु बालि बानर दोस दै प्रभुकौं कह्यो ॥
लखिबो तुम्हैं फलजन्मको अवसाँन दुर्लभ मैं लह्यो ॥
कहते जु मोकँहँ तो सरावन मैथिली यँहँ आनतो ॥
बरन्यौं न बीरन धर्म है यह छद्मघात विधान तो ॥ ४४ ॥
तब राम ताकहँ प्रान देनलगे बहोरि तहाँ कही ॥
करिये बँ क्यों यह जो जतीन दुराप सो गति मैं लही ॥
अनुजातसौं पुनि बालि बुल्लिय धर्मसौं भजि तू धरा ॥

को और उस पर्वत को भेद कर रसातल तक जाकर पीछा फिरके वह बाण रामचंद्र के भाथे में आरहा जब वालि के मारने में सूर्य के पुत्र (सुग्रीव) ने विश्वास (भरोसा) किया ॥ ४१ ॥ फिर रामचंद्र ने सुग्रीव बंदर को वालि से युद्ध करने भेजा १ वालि से २ सुग्रीव के कंठ में फूलीहुई ३ नागपुष्पी नामक लता (बेलि) धरदी ॥ ४२ ॥ ४ युद्ध को भेजा ५ तारा नामक वालि की स्त्री ने मना किया तोभी उस बलवान् ने अपने वेग को नहीं रोका ६ मल्लयुद्ध करके सूर्य के पुत्र को वालि मारने लगा जब वृक्ष की आड से रामचंद्र ने वालि के वाण दिया ॥ ४३ ॥ ७ अंत समय में आपका देखना दुर्लभ है सो मुझे मिला, मुझे जो आप कहते तो रावण सहित सीता को यहां लादेता. छलघात से मारना वीरों की रीति नहीं है ॥ ४४ ॥ ८ अब आप यह क्यों करते हो, योगियों को भी दुर्लभ है सो गति मैंने ली है, फिर अपने छोटेभाई से बोला.

प्रिय अंगदादिनकौं बनाय रु पायहै गति जो पैरा ॥४५॥
सुतसौंहु आक्खिय बुल्लि सीस सदा पितृव्यककौं धरो ॥
सुग्रीव तात गिनौं तदीय अरातिकौं न सखा करो ॥
बपु बालि एम तज्यो वलीमुख भूप भानुतनै भयो ॥
तारा बिलप्पि गई तहाँ प्रभु बोध याहिहु अप्पयो ॥ ४६॥
पुनि बालि काय जराय किय सुग्रीव किष्किंधा धनी ॥
रु कह्यो ब पाउसं अंत हेरहु है कि मैथिलजा हनी ॥
सुग्रीव स्वीकृत सो सबै करि पैठि पत्तनं भूप भो ॥
इत राम१ लक्खन२ बास प्रस्रवनाद्रि शृंग अनूप भो॥४७॥
क्रमसौं प्रियाविरही तहाँ प्रभु निट्ठि पाउसं कट्टयो ॥
पुनि पाय राम निदेस सेस प्रवेस पत्तनमैं लयो ॥
जँहँ गेह अंगद१मैंद२गज३हनुमान४नील५गवाक्ष६के ॥
संपाति७गवय८सुबाहु९कुमुद१०सुनेत्र११नल१२सूर्याक्ष१३के।४८।
द्विविद१४रुसुपाटल१५सरभ१६विद्युन्मालि१७दधिमुख१८तार१९के।
जँहँ जांबवान२०सुसेन२१बानर बीरबाहु२२अगारके ॥
इत्यादि पिक्खत सेस कीसनरेस द्वार गये जहाँ ॥
ताराहि पूरब आय राघव रोस सो समयो तहाँ ॥ ४९ ॥
पय अंगदादि परे बहोरि कपीसं हू बिनती करी ॥

---

१ परम गति (मोक्ष)॥ ४५ ॥ अंगद से भी कहा कि सदैव काका की आज्ञा धारण करो सुग्रीव को पिता जानो और उसके शत्रु को कभी मित्र मत बनाओ, इसप्रकार बालि ने शरीर छोडा और सूर्य का पुत्र बंदर सुग्रीव राजा हुआ तारा भी विलाप करके वहां गईउसको भी रामचंद्र ने ज्ञान दिया ॥४६॥२ अब वर्षा के अंत में हेरना ३ सीता है कि मारी गई ४स्वीकारकरके ५ पुर में जाकर राजा हुआ ६ प्रस्रवण नामक पर्वत पर ॥ ४७ ॥ ७ वर्षा समय कठिनाई से काटा फिर रामचंद्र की आज्ञा लेकर लक्ष्मण किष्किंधा पुरी में गये ८ कितने ही घर ९ सुग्रीव के द्वार पर गये वहां सब से पहिले बालि की स्त्री तारा जो सुग्रीव की स्त्री होगई थी आई और लक्ष्मण का क्रोध शान्त किया ॥ ४९ ॥ १०सुग्रीव ने भी नम्रता करी

तुम भल्लि भोगनमैं रहे यह बत्त[1] लक्खन उच्चरी ॥
सुनि सोहि कंपि कपीस बुल्लि प्रधान प्लत्त१प्रभास२कों ॥
किय यों निदेस असेस बुल्लहु कीस जानकि चासकों[2]॥५०॥
सुनि यों अमात्यन[3] दूत मुक्कलि सर्व बानर बुल्लये ॥
भुवभार दब्बत गज्जि गब्बत[4] जूह[5] हाजरि जे भये ॥
तिनमाँहिंसौं बिनता१दि बानर लक्ख१०००००बानर संग दै ॥
दिस पुब्ब खोजन मुक्कले द्रुत[6] राज्य ऋद्धि उमंग दै ॥ ५१ ॥
तिम लक्ख१०००००बानर दै सँतादिबली२वलीमुख उत्तरा
पठयो रु अक्खिय कज्जकों करि आय श्री[10] लहिहै परा[11]॥
तारापिता सु मरीचिपुत्र सुसेन३पच्छिम३थप्पयो ॥
दिय लक्ख१०००००बानर संग ओ भुजभाग अप्पन अप्पयो ॥५२॥
जमै[12] ओर४अंगद४जांबवान१रु आंजनेय[13]२सुसील ज्यों ॥
सरगुल्म३मैंद४सुहोत्र५द्विबिद६रु गंधमादन७नील८ज्यों॥
उल्कावदन९गज१०ओ गवाक्ष११सरारि१२संग असंग१३हू।
कपि द्वै२सुसेन१४।१५चले इतैं इम लक्ख१०००००पौंनिपमैं[14] पहू[15]॥५३॥
कपिराज अक्खियं[16] सर्व आवहु इक्क१मास करारलों ॥
अरु पाय दैव विलंब आवहु माघ लग्गत वारलों ॥
कपि कोल चुक्कत प्रानदंडहिं पाय बेर[17] बिहायहै ॥
अरु जानकी लखि आयहै सुख मो समान सु पायहै ॥५४॥
लहि स्वामिसाँसन[18] सूर यों चहुं४ओर बानर उज्झले ॥
हनुमान अंगद आदि ए इत बीर दक्खिनघाँ[19] चले ॥
पुर१ग्राम३अंद्रि[20]३अरगयं[21]४खोजत बिंध्यं[22] पव्वयपैं गये ॥
तस[23]१भूख२पीडित जाय इक्कंत[24] कंदरा इक१मैं गये ॥५५॥

---

१ यह वार्ता लक्ष्मण ने कही २ खबर करने को ॥ ५० ॥ ३ मंत्रियों ने ४ गर्व (घमंड) करते हुए ५ समूह ६ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ७ शतबली ८ बंदर को ९ उत्तर दिशा को भेजा १० परम ११ लक्ष्मी पावेगा १२ दक्षिण दिशा में १३ हनुमान् १४ पराक्रम में १५ प्रभु (नायक) ॥ ५३ ॥ १६ कहा कि १७ शरीर छोडोगे ॥ ५४ ॥ १८ स्वामि की आज्ञा १९ दक्षिण की ओर २० पर्वत २१ वन २२ विंध्याचल पर गये २३ तृषा (प्यास) से २४ इकट्ठे होकर ॥५५॥

जहँ दिव्य उपबन[1]रत्न[2]त्यौं विटपी[3]जलासय[4]पिक्खये ॥
लखि अर्क कोटि प्रकास व्है मिचि नैन कीसनके[3] गये ॥
पुनि खोजिखोजि प्रसन्न व्है फल मूल खावनकौं चले ॥
जुवराज[4] अक्खिय हेरि मालिक होहु आयस[5] लै भले॥५६॥
सुनि त्यौंहि हेरत इक्क१वृद्ध तपस्विनी सबनैं लही ॥
करि प्रार्थना तिहिं अंब[6] ए फल देहु खावन यौं कही ॥
तजिकैं समाधि सु नारि बुल्लिय हेमिका इक१अच्छरी ॥
तस मैं सखी रु स्वयंप्रभा मम नाम जानहु हे हरी[7]॥५७॥
मय नाम दानवकै रु अच्छरिकै हु ही अति मित्रता ॥
तस बासकौं मयनैं रची यह अत्थ थान विचित्रता ॥
सुनि तास सासन पायकैं फल खाय स्वस्थ भये भले ॥
कर जोरि अक्खिय जुग्गिनी सन प्रान चेरनके[8] चले॥५८॥
तब पुच्छि पुच्छि स्वयंप्रभा सब आदि अंत सुनी कथा ॥
रु कह्यो बिहावहु[9] भीमं[10] है इत आयबो तुमरो वृथा ॥
अनई दसानन जानकी हरिकैं असोक बनी[11] धरी ॥
तुम सिंधुके तट जाहु पूरनकामना करिहैं हरी[12] ॥ ५९ ॥
संपाति नामक गिद्ध है तँहँ सो बहोरि बतायहै ॥
हरि[13] बुल्लये तब नैंकहू न हमैं दिसा सुधि माय[14] है ॥
सुनि कीसैं[15] नैन मिचाय व्हाँ पहुँचाय जुग्गिनिनैं दये ॥
तँहँ पिक्खि सिंधु अगाध[16] बानर प्रान उज्झन[17]कौं भये ॥६०॥

---

१ बाग २ वृक्ष ३ बंदरों के नेत्र मिचगये ४ अंगद ने कहा कि इस बाग के मालिक को हेर कर उसकी ५ आज्ञा लेकर भले ही खाओ ॥ ५६ ॥ ६ हे माता ७ हे बंदरो ॥ ५७ ॥ ८ आप के सेवकों के अब प्राण जाते हैं ९ इस स्थान को छोड दो यहां आना १० भयंकर और वृथा है ११ अशोकबाटिका में १२ विष्णु तुम्हारी कामना पूर्ण करेंगे ॥ ५९ ॥ १३ बंदर बोले कि १४ हे माता हमको दिशा की कुछ भी सुध नहीं है यह सुन कर १५ बंदरों के नेत्र बंध करवाकर उस योगिनी ने समुद्र के किनारे पहुंचादिये वहां १६ अथाह समुद्र को देख कर बंदर प्राण १७ छोडने को तैयार हुए ॥ ६० ॥

जुवराज अक्खिय इक्क१मास करार बिंध्यहि बित्तयो ॥
रु न माघ पुब्ब करार अप्पनसौं सध्यो जु तपा गयो॥
अब सिंधु सोधन क्यों वनैं इतनौं हि अप्पन आयु हो ॥
रन राम काम मर्यो सु गिद्धहि भाग्यवान जटायु हो ॥६१॥
जिहिं प्रेतकर्म स्वतात[1] ज्यौं रघुराज राम सबै कर्यो ॥
इम द्वादसाहँ[2] ब्रतस्थ[3] सद्धि रु अग्ग आवन अद्दर्यो ॥
अब नास होहु अनास[4]सौं कपिराज व्हाँ[5] हन्निहै नतो ॥
संपाति पच्छ विहीन तत्थ सुन्यों सु कीसन[6]को मतो॥६२॥
कढि कंदरासन निट्ठि बुल्लिय अद्रिके अनु[7]कार जो ॥
तुममाँहिं मोहि उठाय रक्खहु पायहो दुख पार जो ॥
सुनि यौं प्लवंग[8]न गिद्धराज उठाय अप्पनमैं धर्यो ॥
तुम कोन यौं सुनि अग्गभूत उदंत अंडज विस्तर्यो ॥ ६३ ॥
सुत मैं १ जटायु २ अनूरुके उडि अक्कमंडललौं गये ॥
तिहिं घाममैं हम पच्छ तापन तापमैं जरते भये ॥
मम हेठ भ्रात बचाय म जरि पिंडसेस इहाँ पर्यो ॥
तबतैं सु बल्लभ बीर भ्रात जटायु मोसन बिच्छुर्यो ॥६४॥

अंगद ने कहा कि एक महीने का करार था सो तो विंध्याचल में ही बीत गया और माघ मास से पहिले आने का करार था सो भी अपने से नहीं सधा और वह माघ मास गया अब समुद्र का सोधना कैसे बने इसकारण से अपना आयु इतना ही था ॥ ६१ ॥ १ अपने पिता के समान २ बारह दिन तक ३ ब्रत में स्थित रहकर प्रेतकर्म साध कर ४ नाश नहीं होने से वहां ५ विना पंखवाले सम्पाति ने ६ बंदरों का यह मता सुना ॥ ६२ ॥ ७ पर्वत के समान संपाति कन्दरा से नीठ कढिकर बोला ८ बंदरों ने गिद्धराज को उठाकर अपने में धर दिया और तुम कौन हो ऐसा प्रश्न सुन कर उस पक्षी ने आगे बीता हुआ वृत्तांत विस्तार से कहना प्रारंभ किया ॥ ६३ ॥ मैं और जटायु अरुण के पुत्र हैं सो एक समय हम दोनो उड़कर सूर्यमण्डल में गये जब उस सूर्यमंडल की गर्मी में हमारे पंख सूर्य के ताप में जलगये तब मैंने भाई को नीचे लेकर बचाया और मैं जलकर पिंड मात्र बाकी रहकर यहां पड़ा ॥ ६४ ॥

मुनि ह्याँ निसाकर नाम हे तिन मोहि आनि दया कही
चउबीस २४ मैं त्रेता अनेह पतत्र तू लहिहे सही ॥
प्रभु रामदूत प्लवंग[1] हेरन मैथिली इत आयहैं ॥
सुनिकैं कथा तिनसौं सपत्र स्वतंत्रभाव[2]हिं पायहैं ॥६५॥
सत १००अब्दपूरब वे समाहित सिद्धलोक गये मुनी ॥
अरु अज्ज मैं इहिंठाँ परास्त[3] व्यथा जटायु कथा सुनी ॥
सु जटायुको सुनि यौं समस्त उदंत कीसन बर्णयो ॥
ततकाल सो करि कर्ण[4] तंत्र सपत्र पत्रिपती[5] भयो ॥६६॥
रु कह्यो पितामह[6]नैं हमैं बर दूर देखनको दयो ॥
इमही हजारन कोस आमिख[7] गूर्द[8] गिद्धनकैं गयो ॥
तसमात[9] जानहु मैथिली खल कर्बुरेस्वर[10]नैं हरी ॥
तरु सिंसपा तर मोहि दीसत सो असोकबनी धरी ॥६७॥
इम आक्खि भ्राताहि नीर दै उडि गिद्धनैं खगता[11] गही ॥
इत[12] सिंधु लंघन अप्प अप्पन सक्ति कीसननैं कहो ॥
गज १ बुल्लयो दस १० मान जोजन त्यौं गवाक्ष २ सुबिंसती २०॥
अरु रंभ ३ तीस ३० सुहोत्र ४ तिम चालीस ४० गज्जि चवी[13] गति।६८।
पंचास५०कोस सुसेन५जोजन सट्ठि६०मैंद६हु उच्चरी ॥
द्विविदाख्य[14] ७ सत्तरि ७० ओ असी ८० गति गंधमादन ८ उच्चरी॥
जँहँ जांबवान ९ कह्यो बैं[15] वृद्धहु झंप मैं नवती ९० करौं॥
जुवराज१०आक्खिय जाय सत१००पुनि आत संसयमैं परौं॥६९॥

यहां पर निशाकर नाम मुनि थे उन्होंने मुझ पर दया लाकर कहा कि चौबीसवें त्रेतायुग के समय में तू अवश्य पंख लवेगा१बंदर सीता को हेरने के लिये२आपसे आप ही पंख पावेगा।६५।सौ वर्ष पहिले वे जितात्मा[आत्मा को जीतनेवाले] सिद्ध लोक को गये ३ अनादर पायाहुआ ४ वहां पर ५ पक्षिराज पंखों सहित होगया ॥ ६६ ॥ ६ ब्रह्मा ने ७ मांस ८ मज्जा ९ इ सकारण से १० राक्षसों के पति (रावण) ने ॥ ६७ ॥ ११ आकाश में जाने की गति-१२ इधर समुद्र को कूदने में सब बंदरों ने अपनी अपनी शक्ति कही १३ कही १४ द्विविद नामक ने१५अब वृद्ध होगया हूं तोभी॥६८॥६९॥

तब वारि सर्वन बालिपुत्र सिराह मारुतिकी करी ॥
बलवान तू ग्रहराज ग्रासक होतमात्र बन्यौं हरी ॥
हनुमान ईसवतार बीर यहैहु तावक बेर है ॥
सुनि फुल्लि मारुति बुल्लयो कति दूर भू खलकेरहै ।७०।
उदयाद्रिसौं उडि अस्त जाय बहोरि तेंद्दिन बाहुरौं ॥
अब स्वांमि सद्धन कज्ज हौं द्रुत सज्जहौं हर क्यौं दुरौं ॥
तब ही समस्तन प्रानरच्छक जानि मारुतिसौं कही ॥
हम तोरआगम अंत हयाँ इक १ अंघ्रिसौं रहिहैं मही ॥७१॥
हनुमानहू तब तीस ३० जोजन उच्च भूँधरपैं गयो ॥
तँहँ पुव्व चित्तहिसौं सु रक्खसराजके घरपैं गयो ॥
पुनि झंप लै पवमानको सुत सिंधु लंघन उच्चरयो ॥
जवजोरसौं सिखरी मलप्पत मग्न भूतलमैं करयो ।।७२॥
लखि जात मारुति सिंधुनैं मइनाक उप्पर प्रेसयो ॥
उर फेट दै तिहिं विघ्न जानि डुलाय आनिलनैं दयो ॥
तब सिंधु आक्खिय पुत्र तैं मिहिकाद्रिको यह मुक्कल्यो ॥
मम मान्नि स्वागत जाहु मेल दुराप संचितसौं फल्यो॥७३॥

सबको मना करके अंगद ने हनुमान् की प्रशंसा करी हे बलवान् बंदर तू जन्म लेते ही सूर्य को पकड़नेवाला हुआ था हे हनुमान् तू महादेव का अवतार है तेरा यही समय है यह सुन कर प्रफुल्लित होकर हनुमान् बोला कि दुष्ट (रावण) की भूमि क्या दूर है ॥ ७० ॥ १ उसी दिन पीछा आजाऊं २ स्वामी का कार्य साधने के लिये मैं शीघ्र ही तैयार हूं शिव का अंश होकर मैं क्यों छिपूं ३ एक पग से खड़े रहेंगे ॥ ७१ ॥ ४ पर्वत पर गया उससे पहिले ही वह हनुमान अपने मन करके रावण के घर पर चलागया था ५ पवन के पुत्र ने जोर से झंप लेने के वेग से ६ पर्वत को भूमि में डुबो दिया ।७२। हनुमान को जाता हुआ देख कर विश्राम देने के लिये समुद्र ने मैनाक नामा पर्वत को ऊपर भेजा जिसको भय जान कर हनुमान ने छाती की टक्कर से उडा दिया तब समुद्र ने कहा कि हे पुत्र इस हिमवान् पर्वत को मैंने ही भेजा है मेरे किये हुए सत्कार को मान कर जाओ. तुम्हारा मिलना दुर्लभ है सो सचित कर्मों के फल से ही हुआ है ॥ ७३ ॥

छुवि हत्थसौं तब अद्रिकौं हनुमान अग्ग बढ्यो बली ॥
अहिमात कस्यपनारि देवन ह्वाँ परक्खन मुक्कली ॥
मइनाककौं तबतैं हि इंद्रहु पच्छछेद अभै दयो ॥
इत खान मारुतिकौं बडो मुख्ख फारि सर्पप्रसू लयो ॥७४॥
रु कह्यो इहाँ बिधि मैं धरी इतकेहि अध्धग खाइबे ॥
सुहि मन्नि तोकँहँ चक्खिहौं किय चित्त क्यौं इत आयबे ॥
दस१०जोजनी प्रम पिक्खि तम्मुह बीस२०जोजन कीस हू ॥
सत१००या अनुक्रम तुंड ह्वाँ नवति९०प्रमान कपीस हू ॥ ७५ ॥
मुख तास पैठि रु ओठ मीलन पुब्ब आयउ अल्प ह्वै ॥
सुरसा हु आसिख दै कह्यो सुत काज सद्धहु कल्प ह्वै ॥
कपि अग्ग हंकिय सिंहिका तँहँ छाँहग्राहिनि रक्खसी ॥
कपि छाँह बंधिय ताहिसौं गति बीरकी बहती नसी ॥७६॥
सुपरयो अचानक हेठ्ठ आय रु लीलि पापिनिनैं लयो ॥
कपि ताहि अंत्रन तंत्र तंत्रित फारि बाहिर ह्वैगयो ॥

हनुमान् हाथ से उस पर्वत का स्पर्श करके आगे बढा तब से ही इन्द्र ने मैनाक पर्वत को पंख काटने का अभय दिया कि अब तुम्हारे पंख नहीं काटेंगे. फिर कश्यप की स्त्री और सर्पों की माता को देवताओं ने हनुमान की परीक्षा लेने को भेजी जिस सर्पों की माता ने हनुमान को खाने के लिये बडा मुख फाड़ा।७४।और कहा कि ब्रह्मा ने मुझे इधर के मार्ग चलनेवालों को खाने के लिये ही रक्खी है. दश योजन के प्रमाणवाला उसका मुख देख कर हनुमान बीश जोजन के शरीर वाला होगया इस क्रम से सौ १०० जोजन उसका मुख हुआ तब निव्वे योजन मोटा हनुमान होकर ॥ ७५ ॥ उसके मुख में घुस कर पीछे आंठ बंध नहीं करे जिस पहिले छोटा शरीर करके पीछा बाहरआगया तब सुरसा ने भी आशिष देकर कहा कि हे पुत्र प्रलय का रूप होकर कार्य सिद्धि कर. इससे आगे हनुमान गया जहां छाया को पकड़ लेनेवाली सिंहिका (राहु की माता) नाम राक्षसी ने हनुमान की छाया को पकड़ ली जिससे उसकी गति रुक गई ॥ ७६ ॥ और जब वह नीचे आपड़ा तब उस पापिनी ने लीला पूर्वक (खेल से ही) खालिया जहां हनुमान आंतों से तने हुए तंत्र (बेजे) को फाड़ कर बाहर आगया और लंका के कोट पर चढ उस

चढि लंक कोट बइट्ठ तासन पिक्खि पत्तन सर्वही ॥
वृखदंस मान कपीस वाहिर आय द्वारदिसा लही ॥७७॥
धसिकैं खुले पुर द्वार जामिक जातुधाननमैं कढ्यो ॥
नहि तेहु जानि सके पुरी तँहँ पाय जावहु जै पढ्यो ॥
कपिनैं कह्यो तिय है अवध्य टरै नतो करि वार तू ॥
तल लंक दै कछु मुट्ठि लै छकि उच्चर्यो अवतार तू॥७८॥
जिम अग्ग मारुति मैं भई तिम भाव रक्खसको मिल्यो ॥
सुनि सो सबै हनुमान आसय अज्ज मो हिय है खिल्यो ॥
॥
॥७९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८ वेला६८।१ पयामसमयवर्णनविषयकजगच्चक्षुर्जननसमुद्देशसङ्गतवैवस्वतमन्वाऽऽत्मजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीवैदेहीवल्लभचरि

बैठ कर उसके ऊपर से उसने सब शहर देखा. फिर बिल्ली के समान होकर बाहर आकर दरवाजे का मार्ग लिया ॥ ७७ ॥ शहर का द्वार खुला हुआ था जहां पहरेवाले राक्षसों में होकर निकल गया परन्तु किसीने इसके आने का कारण नहीं जाना तहां लंका पुरी ने आकर कहा कि मुझे विजय करके जा, जब हनुमान ने कहा कि स्त्री मारने योग्य नहीं इसकारण तू टल जा और नहीं टलै तो पहिले तू प्रहार कर तब लंका ने हनुमान के लात की दी फिर हनुमान ने उसके मुकी लगाई जिससे छक कर लंका ने कहा कि तू अवतार है ॥ ७८ ॥ फिर वह लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी बोली कि हे हनुमान मुझमें जिसप्रकार आगे हुई थी वही भाव राक्षसको मिला है अर्थात् ब्रह्माजी ने पहिले हम से कहा था कि जब कोई वानर विक्रम प्रकाश करके तुझको अपने वश में करलेगा तभी तू यह जानलेना कि राक्षसों को भय आन पहुँचा सो वही आशय आज खुला ॥ ७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन करने के विषय में सूर्यवंश के कीर्तन के साथ वैवस्वत मनु के पुत्रोत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन(उचित अनुचित के निश्चय करले) के भीतर श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में श्रीरामचन्द्र के

ग्रे श्रीरामसन्देशहारकहनुमल्लङ्काबिजयनमेकोनचत्वारिंशत्तमो ३९ मयूखः ॥ ३९ ॥ आदित एकाऽशीतितमः ॥ ८१ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

कपिपति प्रति लंका कहिय, आसिर तीनन ३ अग्ग ॥
त्रिदसनसौं लिय लोक त्रय ३, मेटि निखिल श्रुतिमग्ग ॥ १ ॥

(पादाकुलकम्)

माली१बहुरि सुमाली२रक्खस, माल्यवान३तीजो३बल दुर्बस ॥
इक्क समय ए तीन बढे अति, सेवक किन्न सुरन जुत सुरपति ॥२॥
करि तिन हुकम विश्वकर्मा सन, मैं लंका बनवाई सुखमन ॥
पुरटजंत्र१परिखा२प्राकारा३, बिहित बीस२०जोजन बिस्तारा॥३॥
जोजन सत१००लंबी जग ठाई, सस्त्रन संकुल२ पुरी सुहाई॥४॥
वर्द्धकिराज रची मैं बामा, रात्रिचरन भुग्गी अभिरामा ॥
द्रुहिन लोक पहुँचे सुर अति दुख,समय खिलहु तिन कहिय तजहु सुख
त्रिदस फटिक सिखरी पहुँचे तब, सिवहु कह्यो बिधिको आसय सब॥
विष्णु सरन पहुँचे वृंदारक, कहिय नाथ रक्खस त्रय३मारक॥६॥

दूत हनुमान का लंका की अधिष्ठात्री राक्षसी को विजय करने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥३९॥ और आदि से इक्यासी मयूख हुए॥८१॥
वह लंका राक्षसी हनुमान को प्राचीन इतिहास कहने लगी कि आगे तीन राक्षसों ने देवताओं से सम्पूर्ण वेदमार्ग मिटाकर तीनों लोक लेलिये ॥ १ ॥ [1]देवताओं सहित इंद्रको सेवक करलिया ॥२॥ उन तीनों राक्षसों ने आज्ञा देकर विश्वकर्मा से मुझ लंका को बनवाई. स्वर्ण के तोप आदि अस्त्र, खाई, कोट रचे ॥ ३ ॥ २ शस्त्रों से भरी हुई ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा ने मुझ स्त्री रूपी पुरी को रची जिस मनोहर स्त्री को राक्षसों ने भोगी, इस अत्यन्त दुःख से दुखी होकर देवता ब्रह्मा के लोक में गये वहां ब्रह्मा ने कहा कि सुख को छोड कर समय को देखो ॥ ५ ॥ तब देवता हिमालय पर्वत पर गये जब शिव ने भी ब्रह्मा ने कहा था वैसा ही कहा जब फिर देवता विष्णु की शरण में गये ॥ ६ ॥

प्रभु दयालु सुनि भीर पधारे, पुर लंका क्रव्याद प्रचारे ॥
भयो दुहुँ ओर तुमुल रन भारी, अच्युत लरे बैठि उरगारी ॥७॥
कति उडि खगपति पत्र पवन करि, मूढ कतिक सुनि दरहि गये मरि॥
कतिक प्रहारि सुदर्सन कट्टे, दल रक्खस दिस दिस प्रभु दट्टे ।८।
खिजि तँहँ समुख भये तीन३हि खल,दुर्द्धर जुरे मोरि अप्पन दल॥
रोप१कुंत२असि३भ्कारि प्ररुष्टन, द्विजपति पिट्ठि फिराई दुष्टन॥९॥
सचिवनको जित्यो जिम स्वामी, बलहक मंगत भजत बिरामी॥
इम दृग मुंदि मुर्‌यो उरगासन,परे किलकि कर्बुर चउ४पासन।१०।
प्रभु अक्खिय खगपति फिरि पच्छो,अपनौं क्यौं न दिखावत अच्छो॥
लावत अमृत लख्यो जो लक्खन,सु कितगयो बल तोर समक्खन११
सुनि मुरर्‌यो संपाति पितृव्यक,धारि लखन खंडन कर रीधक॥
मार्‌यो तमकि महाप्रभु माली१,चकित सेस पृतना भजि चाली।१२।
पुनि हरि लग्गे पिट्ठि प्रहारन, माल्यवान१रु सुमाली२मारन ॥
चविय३ उनहु तँहँ सुनहु चक्रधर, बीर न भजत न हनत बीरवर१३
दर४ वजाय तब मुरे महादय५, भजि पाताल दुरे खल अतिभय ॥

दयालु प्रभु सुन कर मदत को आये. लंकापुरी में आकर राक्षसों को ललकारे भयंकर विष्णु भगवान् गरुड़ पर बैठकर लड़े ॥ ७ ॥ कितनेक तो गरुड़ के पंखों के पवन से और कितनेक शंख के शब्द से मूर्छित होकर मरगये ॥ ८ ॥ तब माली, सुमाली और माल्यवान् ये तीनों राक्षस क्रोध करके सामने हुए और अपनी भगीहुई सेना को पीछी फेर कर दुस्तर युद्ध में जुड़े, उन दुष्ट क्रुधित राक्षसों ने बाण, भाला, तरवार मारकर गरुड़ की पीठ फिरा दी।६। कामदारों का जीताहुआ राजा सेना के तनखा मांगने से विश्राम लेना चाहकर भागता है ऐसे नेत्र मींचकर गरुड़ पीछा फिरा और राक्षस किल-किला शब्द करके चारों ओर हुए ॥ १० ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि हे गरुड़ पीछा फिर अपना अच्छा क्यों नहीं दिखाता है. स्वर्ग से अमृत लाने के समय लक्षों देवता आदि ने तेरा बल देखा था वह मेरे सामने (नेत्रों के आगे) कहां गया ॥ ११ ॥ सम्पाति का चचा (गरुड़) यह सुनकर मुड़ा १ विष्णु भगवान् ने माली नामक राक्षस को मारा २ बाकी की सेना ।१२। ३ उन राक्षसों ने कहा ॥ १३ ॥ ४ शंख बजाकर ५ बडी दयावाले

सुरन स्वीय अधिकार सम्हारे, प्रभु अनिच्छ निजलोक पधारे१४

(दोहा)

सुत पुलस्त्यके इक समय, निरघ बिश्रवा नाम ॥
करत राज्य तृनबिंदुके, तप१जप२साद्धिय ताम ॥ १५ ॥

(पादाकुलकम्)

कन्या सबपुरकी प्रतिदिन क्रम, आवन लगी बिश्रवा आश्रम ॥
अधिप सुताहु संग तिन आवैं, सुखद१ ठाम वह सबन सुहावैं१६।
करैं बिबिध गीतादि कुतूहल, पहुँचि समाधि खुलैं मुनिके पल॥
तब तिन्ह कुपितबिश्रवा तरजैं, बिहित अक्खि आवन तहँ बरजैं१७
इक दिन कहिय बहुरि जो ऐहो, परिनय विनुहि गर्भ सब पैहो॥
सुनत इतर आई न भीति सन, नृप तृनविंदु सुता सु सुनी नन १८
अह दूजे२हु इडबिडा आई, सो अहेतु लहि गर्भ सिधाई ॥
यह तृनबिंदु जानि गति अन्न्या, करिय बिश्रवा भेट सु कन्न्या१९
तनय२ कुबेर भयो तहँ ताकै, जप१तप२सिद्धि३बढी अति जाकै ॥
जोग साद्धि एकांत जनकै४ जिम, एकपिंग५ सु समर्थ भयो इम॥२०॥
विधि अधिकारी उचित बिचास्यो,नाती सुत यह बिहित निहास्यो
कंजज काज विश्वकर्मा किय,प्रथित विमान नाम पुष्पक प्रिय।२१।

देवताओं ने अपने अधिकार सम्हाले और विष्णु भगवान् इच्छा रहित थे सो अपने लोक पधार गये ॥१४॥ एक समय पुलस्त्य के पाप रहित विश्रवा नामी पुत्र ने तृणविन्दु नामक राजा के राज्य करते समय तहां पर तप और जप साधा॥ १५ ॥ राजा तृणविन्दु की पुत्री भी उन कन्याओं के साथ आने लगी १ सुख देनेवाली (सुन्दर) जगह ॥ १६ ॥ उन कन्याओं को विश्रवा धमकावे और उचित वार्ता कहकर उनको वहां आने से मना करै ॥ १७ ॥ विवाह किये विना ही गर्भ पाओगी, यह सुनकर और तो डर से नहीं आई परन्तु राजा तृणविन्दु की कन्या ने वह वात नहीं सुनी ॥ १८ ॥ इडविडा नामक वह कन्या दूसरे दिन फिर आई सो विना ही कारण [संगम किये विना ही] गर्भवती होकर गई तृणविन्दु राजा ने उसकी दूसरी ही गति (गर्भवती) जान कर उस कन्या को विश्रवा के भेट करदी ॥ १९ ॥ २ पुत्र ४ पिता के समान योग ३ साधकर ५ कुबेर समर्थ होगया ॥२०॥ ब्रह्मा ने इसको उचित अधिकारी विचारा और अपने पुत्र (पुलस्त्य) के पोते को कार्य करने योग्य देखा. ब्रह्मा के

सो कुबेर कँहँ दै हंसासन, थप्पि बहुरि लंकापुर आसन ॥
स्वापतेय अधिकार समप्पिय, दिश उत्तर लोकाधिपत्य दिय ।२२।
गुह्यक१किन्नर२दच्छ३प्रभृत गन, सासनीय तस किय कंजासन॥
पाय मोहि धनपति सुख पाये, ब्योमकेससे मित्र बनाये ॥२३॥
प्रभु कुबेर इम धारि श्रीदपन, सविनय जात विश्रवा दरसन ॥
माल्यवान रक्खस बडवामुख, श्रीद अधीन जानि दुर्लभ सुख।२४।
पुत्री आनि कैकसी अप्पन, धरि विश्रवा निकट मायाधन ॥
बुल्ल्यो बीज प्रबल तातैं बरि, भजहु विश्रवा हाव भाव करि।२५।
सुत तो तू जनिहै कुबेर सम, रक्खस कुल रखवार मनोरम ॥
कर्बुर गो प्रच्छन्न यहै कहि, रचिय तास तनया सेवन रहि ॥२६॥
इक्क समय मुनि आंखि उघारी, निज ढिग विनत लखी बरनारी ॥
कहिय भीरु सेवत किहिं कारन, बलि सुनि हार्द कहिय सुभवारन
लग्गि प्रसभ तब मुनि ललचायउ, प्रबल गर्भ संध्या विच पायउ॥
हसि मुनि कहिय घोर दुवर्हैहै, पुत्र तृतीय३सांतमति पैहैं।२८।
इम मुनि तीन३तनूज उपाये, जे रन बीर कैकसी जाये ॥

अथ विश्वकर्मा ने पुष्पक नामक प्रसिद्ध और प्यारा विमान बनाया ॥ २१ ॥ वह विमान ब्रह्मा ने कुबेर को देकर फिर लंका के आसन पर स्थापन किया और धन का अधिकार देकर उत्तर दिशा के लोक का स्वामी बनाया । २२ । १ आदि गणों को ब्रह्मा ने उसकी आज्ञा में किया. मुझ (लंका) को पाकर कुबेर ने सुख पाया और महादेव जैसे मित्र किये ॥ २३ ॥ २ लक्ष्मी का दातापन अथवा लक्ष्मी का प्यारापन पाया, वह कुबेर नम्रता पूर्वक अपने पिता विश्रवा के दर्शन करने जाता था जिसको देखकर पाताल में माल्यवान् राक्षस ने कुबेर के अधिकार में दुर्लभ सुख जानकर ॥ २४ ॥ माया ही है धन जिसके ऐसा माल्यवान् कैकसी नामक अपनी पुत्री को विश्रवा के आसन के समीप धरकर बोला कि इसका वीर्य प्रबल है इसकारण से इसको बर कर हाव भाव सहित विश्रवा का सेवन कर ॥ २५ ॥ ३ राक्षस तो यह कह कर अंतर्धान होगया और उसकी पुत्री ने सेवन रचा ॥ २६ ॥ ४ विशेष नम्र श्रेष्ठ स्त्री को देखा ५ हे सुन्दर स्त्री तू किसकारण सेवा करती है ६ फिर उसका अभिप्राय सुन कर मुनि ने कहा कि यह समय शुभ नहीं है ॥२७॥ जब स्त्री ने ७हठ किया तब मुनि भी लालच के वश होगया ॥२८॥ ८पुत्र

दसग्रीव१ज्येठो हुव दारुन, अनु तस कुंभकर्ण२हग आरुन॥२९॥
भक तृतीय३बिभीखन३भ्राता, ज्यौं पुनि सूर्पनखा१अनुजाता॥
पोतँ च्यारि४कैकसि ए पोखत, नाथ बिश्रवा निलय रही नत॥३०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचरडासिवंशवर्णने वसुदेव६८वेला६८१पाणिपीडनबेलावर्णितजगच्चक्षुर्जननमणिवैवस्वतमन्वङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि ७सन्तातिसमर्थनाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँवादे दशग्रीवाद्युद्भवनंचत्वारिंशत्तमोमयूखः॥४०॥आदितो द्व्यशीतितमः॥८२॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

पादाकुलकम्

अर्भक५बढे उचित बय आवत, जनक६ दरस हित धनपति७जावत॥
छर्म८ पुष्पक बैठो छक छायो,तबहि कैकसी सुतन बतायो॥१॥
भनी लखहु तुमरे इहिँ भाई, प्रभुता मोर सोति सुत पाई॥
तप बिहीन कुलपांसन हो तुम,दुलभ फलत इक तपहि कल्पद्रुम॥२॥
दसग्रीव आदिक सुनि दुद्धर९, सोदर चले करन तप सत्वँर॥
कह्यो अधिक व्है हैं कुबेर सन, पै न्यून न ऐ हैं गृह हठपन॥३॥

---

१ उसके पीछे ॥ २९ ॥ २ पीछे जन्म लेनेवाली ३ बालक ४ पति विश्रवा के घर में नम्र होकर रही ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंशमणि वैवस्वत मनुपुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के पाटवीपुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतर जानकीजानि (रामचन्द्र) चरित्र में हनुमान् और लंका के संवाद में रावण आदि के जन्म का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और आदि से बियासी मयूख हुए ॥ ८२ ॥

५ बालक ६ पिता के ७ कुबेर ८ समर्थ पुष्पक विमान में बैठा मोद से छाया हुआ कैकसी ने अपने पुत्रों को बताया ॥ १ ॥ और कहा कि मेरी सोत के पुत्र और तुम्हारे भाई ने कैसी प्रभुता पाई है, तप के विना तुम कुल को दोष लगानेवाले हो, दुर्लभ फल का देनेवाला एक तप ही कल्पवृक्ष है ॥ २ ॥ ९ दुस्तर तप करने को १० शीघ्र चले ॥ ३ ॥

इम कहि छेत्र गोकरन[1] आये, करि संधा[2] तप कठिन कुमाये ॥
दसहजार१००००हायन[3]दसकंधर१, पंचसहँस५०००मध्यम[4]२तपतत्पर
बच्छर[5] पंचहि सहँस५०००विभीखन३, तँहँ इम तपन लगे लैलै पन॥
सबसौं कठिन दसानन सद्धी, होमन सीस लग्यो खल हद्दी[6]॥५॥
समाँ[7] सहस्र इक्क१०००प्रति इक१सिर, कट्टि कट्टि हुत अनल[8] करे किर[9]
हुव पूरन जब दसम१०हजारा, धरी दसम गलपर असिधारा ॥ ६ ॥
त्वरित पधारि निवार्‌यो बिधि[10] तब, आकिखय नन[11] कट्टहु मंगहु अब ॥
मंगिय दुष्ट काहुसौं न मरौं, करि प्रतिहत[12] सत्रुन बिजय करौं ॥ ७ ॥
प्रभुता मोसम अन्य न पावैं, चउ ४ दिस सासन[13] सीस चढावैं ॥
तब बिधि कहिय तथास्तु[14] इष्ट तव, जंगम[15]१वर२पेरहु सासन जव॥८॥
इतर कहा न मरैं हरि१ईस२न, करहु बिचारि वैर नर१कीस२न ॥
हुतभुक[16] जे सिर कट्टि करे हुत, जे तव होहु बहुरि सुखमा[17] जुत ॥९॥
रावन कहिय बली बर टारे, है नर१बानर२अन्न हमारे ॥
मन्नैं कुंभकरन निज मानस, बर लहि नहि व्हैहौं निद्राबस॥१०॥
आलस हीन करौं जय अबिरत, मोर्‌यो सुरन गिरा करि यह मत॥
बिधिके ब्रूहि[18] कहत भाखा बट, खल बर मंगिय सयन श्राम[19] खट॥११
परं[20] प्रभुसक्ति बिभीखन पाई, आसिरँ[21] त्रयी३निलय अब आई ॥

१ गोकर्णेश्वर महादेव जो जयपुर के राज्य में बनास नदी के किनारे पर हैं २ प्रतिज्ञा ३ वर्ष ४ कुंभकर्ण ५ वर्ष ६ हनबुद्धि ॥ ५ ॥ ७ एक हजार वर्ष में एक मस्तक को काट कर ८ अग्नि में ९ फैंक कर होम किये ॥ ६ ॥ १० ब्रह्मा ने ११ मस्तक मत काट और वर मांग १२ बंधन [कैद] करके ॥७॥ १३ मेरी आज्ञा को १४ ऐसा ही होओ १५ चलनेवाले पदार्थों पर वर के प्रभाव से शीघ्र आज्ञा प्रेरो ॥ ८ ॥ और तो क्या है? विष्णु और शिव से भी नहीं मरेगा परंतु मनुष्य और बंदरों से विचार कर वैर करना १६ अग्नि में होमे १७परम शोभा सहित॥ ९ ॥ रावण ने कहा कि आपने अच्छे बलवान् टाले. मनुष्य और बंदर ये तो हमारे अन्न हैं, कुंभकर्ण ने अपने मन में यह विचारा कि निद्रा के वश नहीं होने का वर मांगूंगा ॥ १० ॥ निरंतर देवताओं ने सरस्वती करके उस का यह विचार फेर दिया, १८ मांग यह कहते ही १९मास॥११॥२०परम प्रभुशक्ति २१तीन खुअरों का समूह अपने घर आया.

बिरचिजनक१जननी२पयबंदन,छकभरिकहियकवनहमछंदन॥१२॥
रचि बल हुकम सबन सिर रक्खन, लग्गो करन उपद्रव लक्खन॥
यह सुनि माल्यवान खल आदिक,पहुँचे तजि पाताल प्रमादिक।१३।
मातामह३ अक्खिय दसमुख सन, अग्ग हुतो लंकापुर अप्पन॥
भुग्गत अब तिहिं धनंद४ बीतभय, जाय कड्ढि दौहित्र करहु जय।१४।
सुनि दससिर लंका रचि संगर, धनद कड्ढि सब छिन्न लई धर॥
खंधाबार५ तत्थ मंडिय खल, बोरन लग्यो धर्ममग अतिबल॥१५॥
जो सुनि खलहिं धनंद६ बरजायो,भ्रात न दुरित७ करहु मन भायो॥
धनद दूतकँहँ हनि दसकंधर,प्रथम चढ्यो यह सुनि अलकापर८।१६।
करि जय दमित९ कुबेरहिं किन्नौं, लरि विमान पुष्पक खल लिन्नौं॥
आरुहि१० ताहि चल्यो उत अग्गैं,भनंक११ सुनत जितजित सब भग्गैं।१७।
पहुँचत सीस अद्रिअष्टापद१२, देख्यो रुकत बिमान सु दुर्मद॥
सचिव प्रहस्त ढिग रु भट रक्खस,१३बलि१४ मातुल१५ मारीच हुकम बस१८।
बिस्मित हुव तब रुकत बिमानहिं,दससिर पुच्छिय रोध१६ निदानहिं॥
इहिं अंतर नंदी१७ तँहँ आयउ, सयं१८ त्रिसूल असंख उफनायउ१९।१९।
जंपियं२० दुगम फटिक२१ गिरि जानहु, मध्य रमत सिव सांब२२ प्रमानहु
ईश्वरको प्रविसन२३ आदेस न, आसिरं२४ बचहु करहु भट एस न।२०।

१ हमारे वश में कौन नहीं है ॥ १२ ॥ २ उन्मत्त होकर ॥ १३ ॥ ३ नाना (माल्यवान्) ने कहा कि लंका पुर पहिले अपना था जिसको ४ कुबेर विना भय होकर भोगता है ॥ १४ ॥ वहां दुष्ट ने अपनी ५ राजधानी बनाई ॥ १५ ॥ ६ कुबेर ने मना कराया कि हे भाई मनमाना ७ पाप मत कर ८ कुबेर की पुरी पर चढा ॥ १६ ॥ ९ दंडित १० पुष्पक विमान पर चढ कर उसी तरफ (उत्तर) को आगे चला ११ आहट सुनते ही ।१७। १२ सुमेरु पर्वत के मस्तक पर पहुंचते ही उस दुर्मद ने अपने विमान को रुकता देखा १३ राक्षस १४ फिर १५ मामा ॥ १८ ॥ १६ रुकने का कारण १७ नन्दी नामक महादेव का गण १८ हाथ में त्रिशूल लिये १९ क्रोध में उफना ॥ १९ ॥ उसने २० कहा कि २१ कैलास पर्वत को दुर्गम जानो इसमें २२ पार्वती सहित महादेव रमते हैं इसके २३ भीतर जाने की महादेव की आज्ञा नहीं है २४ हे राक्षस

अधिप सदार[1] रमत खल अक्खिय, रीति किम सु अवधूत[2] न रक्खिय॥
कुक्कत तू बानर अनुकारक[3], धनी तिमहिं व्है हैं वृखधारक[4] ।२१।
गर्ब अतुल लखि दियउ साप गन, मोसे कपिहि होहु तव मारन॥
धक्कि[5] यह सुनत बढ्यो दसकंधर, कइलासहिं उप्पार लयो कर॥२२॥
कंपिय गिरि बसवान त्रान[6] करि, भव[7] गर लगी सिवा हाहाभरि[8]॥
सिव दब्बिय अंगुष्ठ इक्क[1]सन, रोयो कर[9] गिरि तर चिपि रावन॥२३॥
रीति[10] कहिय मारीच न रोवहु, खंडपरसु[11] नुति[12] करि दुख खोवहु॥
प्रभुसौं अभय दीन बनि पावहु, जिन करि बुंब[13] त्रिलोक जगावहु२४
धृति[14] तव निष्ठि निष्ठि खल धारी, पढि श्रुति[15] साम नुये[16] त्रिपुरारी॥

बलि अप्पहु इक स्तोत्र बनायो,

मुख दस १० दस १० हि नराच[17] नमायो ॥ २५ ॥

त्वरित तुष्ट अक्खिय प्रभु त्र्यंबक[18], कछु अंगहु करि प्रनति कदंबक[19]॥
तव क्रव्याद[20] कहिय कर तुट्ट, छिप्र[21] प्रसाद होय जव छुट्टैं ॥२६॥
खगडपरसु[22] हसि छोरि दयो खल, वलि इक ताहि सस्त्र दिय अतिवल॥
कहिय घोर परिहै जव संकट, करि अरिवध व्हैहै तव कंकट[23]२७
याको तू जव करहिं अनादर, तव मम ढिग ऐहै यह सत्वर[24] ॥

ऐसा मत करो. बचो ॥ २० ॥ रावण ने कहा कि शिव १ स्त्री सहित रमते हैं तो २ योगियों की रीति कैसे बनारक्खी है, तू ३ बंदर के समान कूकता है ऐसे ही ४ बैलको रखनेवाले तेरे धनी होवेंगे ॥ २१ ॥ ५ क्रोध करके ॥ २२ ॥ ६ रक्षा करो यह कह कर और ८ पार्वती भी हाहाकार करके ७ शिव के गले लगगई जब महादेव ने अपने अंगूठे से पर्वत को दबाया तब उस के नीचे ९ हाथ चिपजाने से रावण रोया ॥ २३ ॥ मारीच ने छूटने की १० रीति बताई कि रोवै मत ११ महादेव की १२स्तुति करके दुःख मिटा १३कूक करके तीनों लोकों को मत जगा ॥ २४ ॥ १४धीरज१५ सामवेद पढ कर शिव की १६ स्तुति करी १७ नाराच जाति का छन्द ॥२५॥ १८महादेव ने कहा कि मैं प्रसन्न हुआ१९नमस्कारों के समूह करके (बहुत नमस्कार करके)तब२०राक्षस ने कहा कि मेरा हाथ टूटता है सो आप२१शीघ्र प्रसन्न होवें जब छूटैगा ॥ २६ ॥२२महादेव ने हसकर२३कवच ॥ २७ ॥२४शीघ्र मेरे पास पीछा आजावेगा

तैं रुदनारव दिसन तनायउ, आह्वय तव रावन अब आयउ।२८।
खण्डपरसु इम छोरि दयो खल,आयो विमद तुराय द्रुणं कि अल॥
पुनि दिग्विजय काज दिस प्राची,रावन चल्यो टेक हिय राची।२९।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ पाणिपीडनवेला वर्णितसप्तसप्तिसन्ततिवर्य्यवैवस्वतमन्वङ्गजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्र विकुक्षि ७वंशवर्णनान्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रेहनुमल्लङ्कासंवादे रावणपूर्वचर्यायां वेधो१वामदेव१वरप्रापणमेकचत्वारिंशत्तमो४१ मयूखः ॥ ४१ ॥ आदितस्त्र्यशीतितमः ॥ ८३ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

भूसुर[3] इक पहिलैं भयो, बिद्या अतुल[4] विवेक ॥
बेद पढ़त तस बदनतैं, उपजी कन्न्या एक ॥१॥

पादाकुलकम्

दै तिहिं बेदवती आह्वय[6] द्विज, निरखि अतुलगुन१रूप२सुतानिज
याकैं उचित धवं न बिनु अच्युत, दैन तिन्हैं करि तुष्ट तपौं द्रुत।२।
इम विचारि अखिलेस रिझावन, प्रथित[9] करन लग्गो तप पावन॥

तूने रोने का शब्द दिशाओं में फैला दिया इसकारण से तेरा नाम रावण होवेगा ।२८। महादेव ने उस दुष्ट को छोड दिया सो मानों१बीछू२डंक तुड़ाकर आवे ऐसे बिना मद होकर आया फिर दिग्विजय करने को पूर्वदिशा में गया ।२९।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य सन्तान प्रजापति वैवस्वत मनु के पुत्र जन्म में इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि के वंश वर्णन में श्रीजानकीपति (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में ब्रह्मा और महादेव से वर प्राप्त होने का इकतालीसवां मयूख समाप्त हुआ।४१।और आदि से तैंयासी मयूख हुए।८३।

३ब्राह्मण ४ बहुत ज्ञानवान् ५ मुख से ६ वेदवती नाम दिया ७ पति ८ विष्णु भगवान् के विना और कोई नहीं उन विष्णु को प्रसन्न करने के लिये शीघ्र तप करो ॥ २ ॥ ९ प्रसिद्ध

नृपन बहुन द्विज मंगि बहोरिय, छमै न तदपि हरिसौं हठ छोरिय॥३॥
कन्यारूप निरखि क्रव्यादन, द्विज सन मंगिय पाय प्रमादन॥
नहि दिन्नी तब द्विजहिं निलज्जन,
खाय कहिय तोसम भुव खज्जन ॥ ४ ॥
भरत विप्र तस नारि गई मरि, वेदवती सु बची हिय हरि भरि॥
सो तव करत निहारी दससिर, केसपकरि लेजान लग्यो फिर॥५॥
कचनिज कट्टि सु गई धरनि धसि, मोही करि मरिहै इम कहि हसि
सुनि रावन यह अग्गासिधायउ, उसीरवीज देसबिच आयउ ॥६॥
नृप मरुत्त तहँ सत्र वनावैं, जीवे भ्रात संवर्त जँजावैं॥
वासौं रन मंगत नृप उट्ठत, रोक्यो मुनिन दिच्छित न रुट्ठत॥७॥
तिनके कहैं कही यह तानैं, हारे हम मखही मिस मानैं॥
आयेहे देवहु तिहिं अध्वर, चकित भजे छिपि छिपि सुनि निसचर।८।
इन्द्र१मयूर२उड्यो द्विक२०है यम२, श्रीद३सरट३वक्रांग४वरून४सम
हार्यो नृपहिं कहाय दुष्ट हसि, गो जब रावन सुरन गर्व ग्रसि।९।
आये लोकपाल तब अध्वर, बेस धरे तिन्हके जिन्ह दिय वर॥
चविय सक्र१है सिखि१तेरेचाहि, होहु पुच्छ ममनयन हजार१०००हि

१उस समर्थ ने तोभी विष्णु को विवाह ने का नहीं छोडा।३। २ राक्षसों ने ३उस ब्राह्मण को खाकर कहा कि तुम्हारे समान और खज(खाने की वस्तु) नहीं है।४। ४विष्णु को हिये में भरके५उसके तप में विक्षेप करते।५। ६अपने केसों को काट कर भूमि मे घुसगई और कहा कि मेरे कारण से ही तू मरैगा७उसीरवीज नामक(कन्धार)देश में८यज्ञ९वृहस्पति का भाई१०यज्ञ करारहा था ११ जिसने यज्ञ की दीक्षा ली होवे वह क्रोध नहीं करता है ॥ ७ ॥ उन मुनियों के कहने से राजा ने रावण से कहा कि यज्ञ को ही मिस (वहाना) मान कर हम हारे. उस यज्ञमें देवता भी आये थे सो रावण को आया हुआ सुन कर चकित होकर छिप छिपके भागे ॥ ८ ॥ इन्द्र मयूर होकर उडा और यमराज १२ काक पक्षी हुआ १३ कुबेर १४गिरगिंट (किरकांटिया) और वरुण १५ हंस होकर राग द्वेष से रहित होकर भागे१६देवताओं का गर्व ग्रस कर जब रावण चला गया ॥ ९ ॥ तब उपरोक्त लोकपाल पीछे १७ यज्ञ में आये और जिन जिन देवताओं ने जिन जिन का रूप धारण किया था उनको वर दिये १८ इन्द्र ने कहा कि हे मयूर ॥ १० ॥

जलद१ मंडि मैं वुष्ट करौं जब, तरै अति आनंद बढहु तब ॥
भनिय समन२ काकहिं २ सुखभावहिं, जेतोकँहँविचश्राद्धजिमावहिं
तृप्ति पितर लहिहै सब तासौं, अभय फिरहु बायस इच्छासौं ॥
सरटन३ श्रीद३ पुरटबपु थप्पिय, सब गुन हंसहिं४ वरुन४ समप्पिय१२
इम मरुत्त अध्वर उदंत हुव, भयद चल्यो रावन जिततित भुव ॥
पुरूरवा१ गय२ गाधि३ महीपति, सुरथ४ बहुरि दुक्खंत५ सुद्धमति॥१३॥
नृप इतिमुख६ पुच्छाय परस्पर, भेजत भये पराभव कग्गर ॥
समय चिंति इम भूप नटे सब, आयउ यह साकेत दुष्ट अब।१४।
जहँ अनरराय नरेस बिराजैं,
सिंधुर अयुत १०००० द्विगुन २०००० रथ साजैं ॥

••

तुरग९ लक्ख१००००० पाइक्क१० द्विगुन२००००० तस ॥ १५ ॥
हसि खल्ल कह्यो बचहु कहि हारे, मुरयो तउ न नृप बहु अरि मारे॥
कायतजत अनरराय तुमुलकरि, धीरकहिय खल्ल संक कछु न धरि१६
पोखि प्रजा किय राज्य धर्मपथ, जो हम तो यह होहु जथातथ ॥
ध्वंसक तव होवहु मम कुल धव,
भनि अनरराय तजे तब बपु १ भव २ ॥ १७ ॥

---

१ मेघ मँडकर जब मैं वर्षा करूं २ यमराज ने काक से कहा कि जो तुझको श्राद्ध में जिम्हावे। ११। उसके पितर उससे तृप्ति लेवेंगे ३ हे काक तू अपनी इच्छा से निर्भय फिर गिरगिट को कुवेर ने सोने के शरीरवाला बनाया और वरुण ने हंस को सब गुण दिये ॥ १२ ॥ इसप्रकार मरुत्त नामक राजा के यज्ञ में वृत्तान्त हुआ ४ भय देताहुआ ५ दुष्यन्त ॥ १३ ॥ ६ इत्यादि राजाओं ने परस्पर पुछाकर समय देखकर सब राजाओं ने युद्ध करने से नटकर रावण के पास पराजय (हार) के पत्र भेजे ७ अयोध्या मे॥१४॥८ हाथी ९ घोड़े १० पैदल ॥ १५ ॥ शरीर छोडते समय भयंकर कार्य करके रावण की कुछ शंका नहीं करके अनरण्य ने कहा ॥ १६ ॥ हम ने जो प्रजा का पालन करके धर्म से राज्य किया है तो जैसा मैं कहता हूं वैसा ही होवेगा कि हमारे कुल का पति तुम्हारा मारनेवाला होवेगा यह कहकर अनरण्य ने इस संसार से सरीर छोडा

छितिपालन इम गंजि बडे छक्क, उप्पर चल्यो देन दिवँ ओदक॥
नारद मिलि जँहँ कहिय निवारहु, मारि काल रक्खे ति न मारहु।१८।

(दोहा)

संजामिनी पुरमैं सदा, करत बास सुहि काल ॥
जित्तहु ताकौं जायकैं, प्रबल पुराय जनपाल ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

मोरयो इम वीचाहि नारद मुनि, संजामिनी पहुँच्यो रावन सुनि ॥
कनक१रत्न२महलन बिच केते, जहँ खल लखे पुरायनर जेते।२०।
त्यौं नरकन पापी बहु त्रासे, बाहिर खल तिन्ह कड्ढि बिसासे ॥
कर्बुर४पति पुनि जमहिं कहाई, भनहु हारि वा जुज्झहु भाई ॥२१॥
जम१रावन२बहु दिन जब जुट्टे, छोहँ प्रसभ दुहुँ२ओर न छुट्टे ॥
हुलसिपिक्खिनारदकियहासहिं, बिधिआयेलखिसृष्टिबिनासहिं२२
बरजि बढे मन दुहुँन२बहोरे, जय न दुरघाँ न दुरघाँ कर जोरे ॥
अजकी सुनि रावन मुरि आयो, चंडकिरन जित करन चलायो२३
कहिय जाय रबिमंडल कंटक, हारि धरहु वा लरहु वीर हक ॥
पासवान दंड सु सुनि रविपँहँ, जाय निवेदि लग्यो आसय जँहँ।२४।

---

१ राजाओं को २ स्वर्ग का ३ भय देने को चला जहां मार्ग मे नारद मुनि मिले तिनने कहा कि जिनको काल ने पहिले ही मार रक्खे हैं तिनको मत मार ॥ १८ ॥ सबको मारनेवाला वह काल संयमिनी नामक पुर में वास करता है सो हे राक्षसों की पालना करनेवाले (रावण) उस को जाकर जीत ॥ १९ ॥ यमराज की राजधानी में पहुंचा वहां रत्नों के जड़े हुए सोने के महलों में धर्मात्मा मनुष्यों को देखा ॥ २० ॥ और नरकों में त्रास पाते हुए पापीलोगों को बाहर निकाल कर उनको धीरज दिया फिर४रावण ने ॥ २१ ॥५क्रोध और हठ दोनों ओर का नहीं छूटा जिनको देखकर प्रसन्न होकर नारद हसे उस समय सृष्टि का नाश देखकर ब्रह्मा आये ॥ २२ ॥ दोनों ओर से मन बढरहे थे जिनको मना करके पीछे फेरे इनमें दोनों ओर नतो किसीका विजय हुआ और न दोनों ओर में किसी ने हार मानकर हाथ जोड़े ब्रह्मा की बात सुनकर रावण वहांसे पीछा फिर आया और सूर्य की तरफ विजय करने को चला ॥ २३ ॥ सूर्य की कक्षा के नीचे (समीप) रहनेवाले दंड नामक सूर्य के सेवक ने सूर्य से जाकर कहा

हेलिहु कहिय दुष्ट सन हारे, पुनि खल ससि[1] दिस सुभट प्रचारे ॥
ससिमंडल पहुँचत भट सारे, प्रचुर[2] सीत जड होय पुकारे ॥ २५ ॥
सुनि मारीच१ प्रहस्त२ आदि सन, रावन अक्खिय भय न उचित रन
जंपिय उनहु गरे हम जावत, निठुर हिमानी[3] दर्प नसावत ॥ २६ ॥
रक्खहु गाढ सबन कहि रावन, पुनिहु बढ्यो ससिसौं जय जावन ॥
विधिहिं[4] आनि पुनि खलहिं बहोरयो, छिति अमृत द्विजपति[5] सुनि छोरयो ॥
बलि जित्तन अधभुवन[6] विचारत, पहुँच्यो नागलोक भय पारत ॥
प्रतिभट भोगवतीपुर[7] के पहु, बासुकि आदि नाग जित्यो वहु ॥ २८ ॥
उत्तम नागसुता गहि आनी, मनिमय नगर गयो पुनि मानी ॥
सट्ठिहजार६०००० निवातकवच जहँ, तिनहु घोर संगर मंडिय तहँ ॥ २९ ॥
उनहु सुभट रावन किय आकुल, सांग्र[8] अब्द[9] रनं[10] रहिय समाकुल
विधिहि[11] आय तत्थहु दुव२ वरजे, तुम मम बर होहु न पर तरजे ॥ ३० ॥
इत मम बर लंकेसहु उद्धत, मित्र बनहु अब दुहुँ दिस सम्मत ॥
सुनि निवातकवचन रावन सन, मैत्री करि रक्ख्यो वह हित मन ॥ ३१ ॥
लंकासौं हु अधिक सुख लिन्नौं, क्रम पयान अग्ग पुनि किन्नौं ॥
खोजत पुच्छि बरुनलोकहिं खल, पुर अस्म[12] के पहुँच्यो बिमानबल ॥ ३२ ॥
दानव जत्थ च्यारिसत४०० दुद्धर[13], कालकेय निवसैं बल जयकर ॥

॥ २४ ॥ सूर्य ने भी कहा कि उस दुष्ट से हारे १ चंद्रमा की ओर २ बहुत ठंढ से जड़ होकर पुकारे ॥ २५ ॥ दया रहित ३ वर्फ़ हमारा घमंड मिटानी है ॥ २६ ॥ ४ ब्रह्मा ने आकर उस दुष्ट को पीछा फेरा तब ५ चन्द्रमा ने पृथ्वी की ओर अमृत छोडा (चन्द्रमा सदैव अपने पास से अमृत वर्षाकर पृथ्वी की पालना करता है सो रावण के जाने से बन्ध कर लिया था सो फिर छोडा) ॥ २७ ॥ फिर ६ पाताल को जीतने का विचार करके ७ भोगवती नामक नगरी के राजा सामने युद्ध करनेवाले हुए जिन वासुकि आदि बहुतों को विजय किये ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ उमरावों सहित ९ डेढ वर्ष तक १० भरपूर युद्ध रहा ११ ब्रह्मा ने कहा कि तुम दोनों मेरे वर से बढे हो सो परस्पर एक दूसरे को त्रास देनेवाले मत हो ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२ अस्म नामक पुर में ॥ ३२ ॥ १३ दुस्तर (दुधर्ष) विजय करनेवाली कालकेयों की सेना जहां वास करता

इक तहँ विद्युज्जिव्ह करालक, सुप्पनखा व्याही जिहिँ सालक३३
सो लहि कालकेय सब सत्थैँ, मंडि चल्यो रन रावन मत्थैँ ॥
सहबल खल भाम सु संहारयो, बलिजयकरितससोकबचारयो॥३४
पासीलोक खोजि तिहँ पापी, थिरहठ प्रविसि लरन मति थापी ॥
रोक्यो तत्थ जामिकन रावन, प्रविस्योतिन्हहनिअग्गअपावन ।३५
पासीसुत इहिँ सुनि गो१पुष्कल२,विरचन रन आये उद्धतबल ॥
लरे बहुत तदपि न जय लद्धो, खल तिनकोहु कटक बहु खद्धो।३६
स्यंदन छोरि गगन पासीसुत, जाय लरे बहुतहि छलबलजुत ॥
तदपि न रावन हारि भई तब, स्वपुर गये भाजि खिलँ भट लै सब३७
कहि पठई रावन करि हासी, पठवहु लरन छिप्यो क्यों पासी ॥
जलपति सचिव प्रभास कह्यो जहँ, क्योंयँहँहेरतअप्पवरुन कँहँ।३८
सुनन गानविद्या सु बिलासी, पंकज सूनु लोक गो पासी ॥
कहि मम बिजय भयो दसकंधर, खोजनलग्यो इतर तँहँ खेचर३९

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वी-
तिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८वेला ६८।१ पाणिपीडनवेला-
गिनतसूर्यसन्ततिवर्य्यवैवस्वततनुजजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षिवंश

है वहां एक विद्युज्जिव्ह नामक १ भयंकर राक्षस जिसको रावण की बहिन सूर्पणखा को शाले (रावण) ने परणाई थी ॥ ३३ ॥ दुष्ट रावण ने सेना सहित २ बहिनोऊ को मारकर फिर उसका शोक किया ॥ ३४ ॥ वहां ३ वरुण लोक को खोजकर ४ पहराइतों ने रावण को रोका ।३५। यह सुनकरगो और पुष्कल नामक वरुण के पुत्र युद्ध करने को गये५तोभी ॥ ३६ ॥ ६ रथ को छोडकर ७ बाकी के बचेहुए वीरों को लेकर ॥ ३७ ॥ ८ वरुण क्यों छिपगया है ९ वरुण के सचिव प्रभास ने कहा कि आप वरुण को यहां क्यो हेरते हो ॥ ३८ ॥ वह वरुण गानविद्या सुनने का विलासी ब्रह्मा के लोक में गया है, यह सुनके मेरा विजय हुआ यह कहकर राक्षस (रावण) दूसरों को हेरने गया ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के सन्तान प्रजापति वैवस्वत के पुत्रों की उत्पत्ति में इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र

व्याख्यानाऽन्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रेहनुमल्लङ्कासँब्वादेरावणपूर्वचर्यायां दिग्विजयवारुणस्थानपर्यन्तसमाक्रमणं द्विचत्वारिंशत्तमो ४२मयूखः ॥४२॥ आदितश्चतुरशीतितमः ॥८४॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम्

करिइमअइमनगरदुव२जयकलि[1],वलिकोस्थानतृतीय३लख्योबलि[2]
दिव्य नगर आभा[3] तँहँ दीसी, तिरस्कार दिवको करती सी ॥१॥

॥ शुद्धप्राकृतिभाषा ॥ गीई ॥

वेरुलिअवार१गोउर२कुड्ड३कवाडा४वइरविअड्डिवरा ॥
फलिहमणिप्पायारा दिट्ठा तह दहमुहेण बलिणयरी॥२॥
एत्ताहे तं ठाणं दट्ठूण अमुम्मि को हु वसइ त्ति ॥
पट्ठाविओ खलेण वि मारीओ माउलो सुवो मज्झे॥३॥

गीर्वाणभाषा

चाक्चक्यचकितचेता मारीचोऽपि प्रविश्य वरणाऽन्तः ॥
आदर्शमिव मयकपिः सोऽद्राक्षीद्दैत्यराजनिजनिलयम् ॥४॥

विकुक्षि के वंशवर्णन के भीतर श्रीजानकी प्रिय (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान् और लङ्का के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में वरुण के स्थान को घेरने पर्यन्त दिग्विजय का बियालीसवां मयूख समाप्त हुआ। ४२। और आदि से चौरासी मयूख हुए ॥ ८४ ॥

१ युद्ध में २ फिर ३ क्रान्ति ५ स्वर्ग का ४ अनादर करती हुई दीखी ॥ १ ॥ वहां रावण ने लहसनियों से वनेहुए शहर के दरवाजे, दीवारें और किंवाडोंवाली हीरों की वेदियोंवाली और बिल्लोर के कोटवाली बलि की पुरी देखी ॥ २ ॥ उस समय में उसको देखकर इसमें कौन रहता है यह देखने के लिये दुष्ट रावण ने अपने मामा मारीच को भीतर भेजा ॥ ३ ॥ जिस प्रकार बंदर काच के बनेहुए महल को देखें तिसप्रकार, चकाचौंधि से चकित हुआ है चित्त जिसका ऐसे मारीच ने कोट के भीतर घुसकर दैत्यराज के मुख्य महल को देखा ॥ ४ ॥

गीती ॥ वैदूर्यद्वारगोपुरकुड्यकपाटा वज्रवितर्दिवरा। स्फटिकमणिप्राकारा दृष्टा तत्र दशमुखेन बलिनगरी ॥२॥ एतस्मिन्काले तत्स्थानं दृष्ट्वा अमुष्मिन्क खलु वसतीति। प्रस्थापित खलेनापि मारीचो मातुल स्तो मध्ये॥३॥

पट्६कक्ष्यापुटदेशं कथञ्चिदुल्लङ्घ्य सप्तम७द्वारि ॥
वीक्ष्य चतुर्भुजपुरुषं मीलितदृक्कोटि१०००००००रविरुचं प्रत्यैत् ॥५॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

मारीचहु[1] जामेयसौं, आक्खिय सब अनुभूत[2] ॥
एकाकी[3]दससिर उतरि, हंकिय जिम आहूत ॥ ६ ॥
सउधनकी सोभा लखत, देख्यो सप्तम७द्वार ॥
स्याम चतुर्भुज पुरुष सुहि, कुल रक्खस भयकार ॥ ७ ॥
पिक्खत खिन सो हुव पिहित, जिहिँ भग्गो खल जानि ॥
बिबिध जनन इक्खत प्रबिसि, अग्ग लख्यो बलि आनि ॥ ८ ॥

(पादाकुलकम्)

तू यहँ कोन१कहिय बलि तासौं, को अभिधान२थान२जनि कासौं
रक्खसराज१कह्यो मैं रावन२,प्रभु मुनि जनक विश्रवा३पावन।९।
यहँ जित्तन लंकापति४आयो, प्रतिभट कहुँ न जुरन रन पायो ॥
हरि रक्खे तुम रोकि सुनैं हम,मुक्कौं तुमहिं चलो ब संग मम॥१०
बलि आक्खिय नर द्वार महाबल,निकसन दै न तजहु हठ निष्फल
रावन कहिय तजहु भय रंगहि,सुख भुग्गहु चल्लहु मम संगहि११

छ परकोटों को किसीप्रकार लांघकर सातवें द्वार पर चार भुजवाले पुरुष को देखकर मीलितनयन(नेत्र मीचकर)कोटि सूर्यों की कान्तिवाला जाना॥५॥ १ भाणेज से २ अनुभव किया हुआ सब वृत्तान्त कहा ३ अकेला ४ जैसे बुलायाहुआ जावे तैसे गया ॥ ६ ॥ ५ राज के महलों की शोभा देखताहुआ छ. दरवाजे लांघकर ६ सातवें दरवाजे पर राक्षसों के कुल का नाश करनेवाले श्यामरंग और चार हाथवाले पुरुष को देखा ॥७॥ देखते ही वह पुरुष ७ अन्तर्धान होगया जिसको दुष्ट (रावण) ने भागाहुआ जानकर नानाप्रकार के लोगो को ८ देखताहुआ घुसकर आगे ९ बलि नामक दैत्यराज को देखा ॥ ८ ॥ १० तेरा नाम क्या है ११ तेरा जन्म किससे है १२ विश्रवा नामक पवित्र मुनि मेरे पिता हैं ॥ ९ ॥ १३ सामने होकर युद्ध करनेवाला कोई नहीं मिला १४ हमने सुना है कि तुमको विष्णु ने रोक रक्खा है सो मैं तुमको १५ छुडाता हूं १६ अब मेरे साथ चलो ॥ १० ॥ १७ मेरे द्वार पर बडा बलवान मनुष्य बैठा है वह नहीं निकलने देता ॥ ११ ॥

पुनि बलि कहिय होय जब प्रत्यय, सहज करहु इक कज्ज बीस२०सय
मंजूषा यह लखहु मनोरम, याबिच है कुंडल दुव२उत्तम ॥१२॥
मेरो तबहि जानिहौ मोचन, आनहु करहु बल१रु आलोचन२ ॥
वह पेटा तब दुष्ट उघारी, कुंडल दुव२देखे रुचिकारी ॥ १३ ॥
उट्ठे तदपि न जदपि उठाये. लहि अचिज्ज भुज सबहि लगाये ॥
जोर करत गिरगो टिक जानुन, गर्बहिं तजि आयो लज्जित गुन१४
कंदुक करि कइलास उठायो, इक१हु न तासौं कुंडल आयो ॥
आकिखय हसि बलि पुब्बकाल अह, मम जु हिरणयकस्यपु प्रपितामह
धारतहो कुंडल ए२उत्तम, सु हन्यौ द्वारपुरुप सो दरसम ॥
अतिबल स्यामपुरुप यह असो, हठ तजि जाहु द्वार पर है सो॥१६॥
बिरचतदपिबलिमंदिरबाहिर, जयनिज कहि निकस्यो खल जाहिर॥
पुष्पक चढि लैकैं निज पंचन, आयो निजपुर धर्म उदंचन ॥१७ ॥

नर १ गंधर्व २ जच्छ ३ सुर ४ किन्नर ५,
दनुज ६ नाग ७ कन्न्या बहु निरदर ॥

लायो पकरि रूप१गुन२लच्छी, उद्धत दर्प बिक्खि सब अच्छी॥१८॥
मय कन्न्या पहिलैं मंदोदरि, आनी परनि बेदपद्धति अरि ॥
तनुज ति मेघनाद हुव तामैं, सबन बडो बर सूर सभामैं ॥ १९ ॥

२हे बीस हाथवाले तुम्हारे कहने का जब १ विश्वास होवे कि एक सहज कार्य है उसको कर दो, यह ३ सन्दूक (पेटी) ॥ १२ ॥ ४ तभी मेरा छुडाना मान लूंगा, उन कुंडलो को बल करके ला और उनके ५ दर्शन कर, अथवा विना विचार किये उठा ला, तब रावण ने उस६पेटी को खोली ॥ १३ ॥ ७ आश्चर्य करके ८ घुटने टिक कर ॥ १४ ॥ ९ गेंद के समान कैलास पर्वत को १०पहिले समय मे मेरा पड़दादा ॥ १५ ॥ ११उसको१२द्वार पर रहनेवाले इस पुरुष ने जैसे१३शंख को फोड़ डाले इसप्रकार मारडाला, ऐसा बलवान् यह श्याम पुरुप है सो द्वार पर है इससे हठ छोड कर चला जा ॥ १६ ॥ तोभी वह नकटा बली के घर के बाहिर अपना विजय कहता हुआ निकसा १४ ढकना (धर्म को ढक देनेवाला) ॥ १७ ॥ १५ निर्भय अथवा निर्लज्ज १६ लक्ष्मी के समान १७ घमंड में भरेहुए ने १८ अच्छी देख देख कर ॥ १८ ॥ १९ वेदमार्ग के शत्रु (रावण) ने ॥ १९ ॥

यह दिगविजय करन खल गो यह, मेघनाद आरंभिय तव मह॥
दिच्छा ले रु बुल्लि तहँ देवन, सोम१हव्य२उपहरि किय सेवन।२०।
उचित द्विजहु लंका मख आये, रक्खस इम सब सप्त७रचाये ॥
ब्रह्मादिक देवन तिहिं दिय बर, माया रहहु तामसी१तव कर॥२१॥
समर अदिठ होहु२सब सत्रुन.अरु तू लखि लखि करहु जेर४उन॥
क्रतुए७जब घननाद१रह्यो करि,सुत्तो कुंभकरन२वर अनुसरि।२२।
बैठि तबहिं जलबीच बिभीखन, संतत व्रत लग्गो तप सद्दन ॥
अस्म नगरसन रावन नायो, मधु इहिंअंतर जोर मचायो॥ २३ ॥
आसिर यहहु थाम रावनको, अवसर पिक्खि चोर आवनको ॥
लंका आय पैठि अंतहपुर, तहँ निज इष्ट खोजि अंटि आतुर।२४।
भव्य बंधुगन रावन भगिनी, असुरप कुल मायागुन अगिनी ॥
कुंभीनसी नाम कांता जो, साहस प्रबल ताहि गहि मधु सो।२५।
आलय निज मधुबन वह आयो,बसि दंपति सुख समय बितायो॥
रावन१नहि घननाद२जंजनरत,ज्यौं दुव२अनुज सुप्त१अरु जलगत२

१ जब ऊपर कहा हुआ दिग्विजय करने को यह रावण गया था तब मेघनाद ने २ उत्सव आरंभ किया ३ यज्ञ की दीक्षा लेकर देवताओं को बुलाये और सोमयज्ञ के ४ होमने की सामग्री का सेवन किया ॥ २० ॥ उचित ब्राह्मण भी लंका के यज्ञ में आये और मेघनाद ने सात यज्ञ किये ५ तमोगुणी (राक्षसी) माया तेरे हाथ में ॥ २१ ॥ युद्ध में सब शत्रुओं से ६ अदृष्ट होकर तू उनको देखकर सब को दबा. जब यह मेघनाद ७यज्ञ कर रहा था और८वर के अनुसार कुंभकर्ण सोता था ।२२। विभीषण जल में घुस कर ९ निरंतर व्रत करके तप साधरहा था और अस्म नगर से रावण पीछा१०नहीं आया तब इस समय में ११मधु नामा राक्षस ने बल पकड़ा।२३।यह १२राक्षस रावण का१३वहिनोऊ चौर के आने का समय देख कर लंका में आय १४जनाने में घुम कर जल्दी से१५फिर कर।२४।१६सुन्दर बंधुगण में रावण की बहिन(सगी बहिन नहीं थी)१७राक्षसों के कुल की माया के गुणों मे अग्रणी कुंभीनसी नामक १८ सब अंगों में सुन्दर को बडे हठ से मधु ने पकड़ी ॥ २५ ॥ उसको लेकर मधुवन नामक अपने १९ स्थान में आया और २० स्त्रीपुरुष ने जोड़े से बास कर सुख से समय विताया. रावण तो था नहीं, मेघनाद२१ यज्ञ करने में रत था इसीप्रकार २२ कुंभकर्ण शयन में और विभीषण पानी में गया

निज निज कर्म तजि सु अटक्यो नन,
मधु करि सफल गयो इच्छित मन ॥
अस्म नगर संगत रावन इत,जुरि करि कालकेय१ बारुनें२ जित ।२७।
ह्वै बलिधाम३ गेह अब आयो, ललित३ बिबिधकन्न्या गहिलायो॥
आत सुन्यों सागसें४ मधु आगम१,मेघनाद मख सुरॅन समागम।२८।
सुतसौं कुपित कह्यो तहँ दससिर, कुतनय६ भयो सत्रुपूजक किर॥
देवन तिन्ह मैं प्रभु अब दंमिहौं,रन मधु मारि अनॅगल रमिहौं॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेलाबर्णितसूर्यसन्ततिवर्यवैवस्वततनुजेक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि७वंशबर्णनसावसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँवादे रावणपूर्वचर्यायांबलिस्थानमर्दितमानदशग्रीवागमनं त्रिचत्वारिंशत्तमो ४३ मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः पञ्चाशीतितमः ॥ ८५ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(पादाकुलकम्)

इमकहिचढ्योतितॅहिअतिआग्रह,सहँसइक्क१०००अँच्छोहिनिदलसह

हुआ था ॥ २६ ॥ इन्होंने अपना अपना कार्य छोड कर मधु को नहीं रोका १ इधर अस्मनगर के साथ कालकेय और २वरुण के सेवकों को जीतकर ॥ २७ ॥ ३ सुन्दर ४ अपराध सहित मधु का आना और मेघनाद का यज्ञ में ५ देवताओं का मिलना सुना ६ कुपुत्र हुआ. शत्रुओं की पूजा करनेवाला और ७ प्रीति करनेवाला होकर. ८ मैं समर्थ हूं सो उन देवताओं को ९ दंड दूंगा और मधु को युद्ध में मार कर १० बिना रोक टोक रमूंगा ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यसन्तान प्रजापति वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के अवसर में श्रीजानकी है स्त्री जिनकी अर्थात् जानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पहिले आचरण में बलि के स्थान में मानमर्दित होकर रावण के आने का तियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से पच्यासी मयूख हुए ॥ ८५ ॥

बोढियं जाय दसानन मधुबन, मधुहु सुनत लायो ओदक मन॥१॥
यह लौंगो सु भ्रातढिग आई, बैलय पोत निज लाज बताई॥
बुल्ली भामहि सदय बचावहु, परैं काम तहँ लरन पठावहु ॥ २ ॥
कांतँ बिहीन मोहि जो करिहो, भ्रात तदपि मोदुख हिय भरिहो॥
यहहि बत्त सचिवन जब अक्खिय, रिसतजि तवहि छमा खल रक्खिय

(शुद्ध प्राकृतभाषा इन्दवज्ञा)

णाऊण लङ्कावइणा वि विज्जूजीहं, निसुट्टं किर कालकेअं ॥
भामं सुवं सुप्पणहीछइल्लं, पल्लट्टिऊण त्ति जढो महुग्गं॥४॥

(वंशस्थो)

काऊण सत्थे दहकंधरो वि तं कुम्भीणहीकङ्कणपीढकंधरं ॥
अप्फुरणाअट्ठावयपव्वओवल्ले ठाही खलो मेरुसिरं स गव्विरो॥५॥
रम्भातहिंअच्छरसाऽहिसारिआजान्तिधणाऽहीससुअप्पिआऽलअं।
सुण्हा वि विक्खेण खलेण वेवई वलेण भुत्ता पयडं पसूविय॥६॥

१ १मधुवन की ओर १२ एक हजार अक्षौहिणी सेना सहित १ धेरा २ मन में भय लाया ॥ १ ॥ मधु लेगया था ३ वह (कुम्भीनसी) भाई (रावण) के पास आई और अपने ४ चूड़ा और ५ निमणियां (गले का भूषण) की लज्जा वताई कि इन दोनों की लज्जा तुझे है (स्त्रियां उन दोनों पदार्थों को सुहाग का चिन्ह मानती हैं) ६ तुम्हारे वहिनोऊ को दया सहित बचाओ ॥ २ ॥ ७ मुझे जो पति विना करोगे तो ॥ ३ ॥ रावण ने भी काल केय वंश के अपनी वहन सूर्पणखा के पति क्रूर विद्युज्जिह्व को पहिले समय में मूल से मारडाला था उसको सोचकर कुंभीनसी के पति मधु को छोड दिया ॥ ४ ॥ फिर दुष्ट रावण उस कुम्भीनसी के पति मधु को साथ लेकर सुवर्ण पर्वत (मेरु) का आक्रमण करके गर्वित होकर विचार बांध कर उसके शिखर पर स्थित हुआ ॥ ५ ॥ वहां रंभा नाम अप्सरा कुबेर के पुत्र की प्यारी अभिसारिका की तरह अलकापुरी को जाती थी उस भय से कांपती हुई पुत्रवधू को भी दुष्टरावण ने प्रत्यक्ष पशु की तरह वल

इन्द्रवज्रा ॥ ज्ञात्वा लङ्कापतिनापि विद्युज्जिह्व निपातित किल कालकेयं। भाम स्व सूर्पणखारसिक पर्यस्य इति त्यक्तो मधु उग्रम् ॥४॥ वंशस्थः॥ कृत्वा सार्थे दशकन्धरोऽपि त कुम्भीनसीकङ्कणपीठकन्धरम्। आक्रान्ताऽष्टापदपर्वतो निर्द्धार्य तस्थौ खलो मेरुशिरसि स गर्वित ॥५॥ रम्भा तत्र अप्सरा अभिसारिका यान्ती धनाधीशसुतप्रिया अलकाम्। स्नुषापि विलक्ष्येन खलेन वेपमाना बलेन भुक्ता प्रकट पशुरिव ॥६॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

तिहिँ अक्खिय हाहा तजहु, तनयँ[1] बधू मैँ तोर ॥
तदपि[2] सिलातल डारि तहिँ, जहण[3] किन्न छक जोर॥ ७ ॥
गति विहाल अच्छरि गई, नलकूबर ग्रह निठ्ठि ॥
कंपत उर धकधक विकल, दुमँन[4] परी तस दिठ्ठि ॥८॥
कारन तासौँ श्रवन करि, श्रीदतनयँ[5] दिय साप ॥
अबसौँ बल करि अंगनाँ[6], पकरत मरिहै पाप ॥ ९ ॥
इत दससीसहु इंद्र पर, कटक चढाई किन्न ॥
सुरपति गो हंसगँ सरन, भीलु कहिय भय भिन्न ॥१०॥
दुर्जय वह अक्खिय द्रुहिन, प्रिय मोसौँ बर पाय ॥
दुष्ट तुमहिँ दैहैँ सु दुख, लखहु काल नयँ[10] लाय ।११।

षट्पात

सुनि अर्ज[11] बच सक्रादि[12] पहुँचि तजि ओर धनी पँहँ ॥
कहन लगे हम कृषुकँ[13] तंत्रँ[14] सचिवन किन्ने तँहँ ॥
कथित कथित हम करत तदपि वृख[15]१सकँट[16]२बिकाये ॥
सचिव ईस१ बिधि२सरनि लुप्पि बँहुरेहु[17] लुटाये ॥
बर कूप१बित्त२चोरहिँ बख्खसि पटक्यो रावन धाट पर ॥

पूर्वक भोगी ॥ ६ ॥ मैं १ तेरे पुत्र की स्त्री हूं तोभी २ जबरी से ३ भोग किया ॥ ७ ॥ ४ उदास दीखी ॥ ८ ॥ ५ कुबेर के पुत्र नलकूबर ने रावण को श्राप दिया कि अब से किसी अन्य पुरुष की ६ स्त्री को उस की इच्छा विना बल से पकड़ते समय यह पापी मरैगा ॥ ९ ॥ ७ ब्रह्मा के शरण में ८ भीरु (कायर) ने कहा कि हम भय से भिन्न होगये हैं ।१०। ९ ब्रह्मा ने १० नीति लेकर ॥ ११ ॥ ११ ब्रह्मा के वचन सुनकर १२ इन्द्र आदि औरों को छोड कर मालिक (विष्णु) के पास पहुंचकर कहने लगे कि हम १३ कर्षे (खेती करनेवाले) हैं जिनको आपने मंत्रियों के १४ वश में करादिये , उनका हम कहना करते हैं तोभी १५ बैल और १६ गाडा (छकड़ा) विका दिये , आपके मंत्री महादेव और ब्रह्मा हैं. जिन्होंने मार्ग लोप कर हम को १७ बहुरूं (उधार देनेवालों) से लुटवालिये. अश्रेष्ठ कुए और धन चोरों

अब निलयसौँहु कढ्ढत असहि धनी सरन लिय चक्रधर१२

दोहा

सोक अनस्वर नाथके , सरैँ करहु विनु काम ॥
हम भिच्छुक कितती रहै, धनी बतावहु धाम ॥१३॥
हरि अक्खिय सचिवन बहुत, पन परिक्ख कछु पारि ॥
मैं तुम तक्खर मारिहौँ, पक्खर गुरुर प्रसारि ॥१४॥
सुरन कहिय जोलौँ समय, परखन तोलौँ पीर ॥
हेलन[1] विनु हसिकैँ सु हरि, धरहु अबै कहि धीर ।१५।
वासव[2] मुख दुर्मन विबुध, आय तिदिव यह अक्खि ॥
अधिक सज्ज अमरावती[3], रचिय जतन दृढ रक्खि ॥१६॥

पट्पात्

इहिँ अंतर बल अतुल त्रिदिव[4] पत्तो[5] लंकापति ॥
दुव२ दिस जुज्झिय दुसह अमर[6]१ आसिर २ प्रसभी अति॥
बसु निर्ज्जर साविल १ मिलत उत जरठ सुमाली २ ॥
सुरनैँ रक्खस सीस कट्टि मोदित किय काली ॥
मृत सुनत ज्येष्टमातामहहिँ कलि प्रचंड रावन करिय॥

को दिला कर रावण को धाड़ा डालने को डाला और अब घर से भी निकालते हैं सो नहीं सहन करके हे विष्णु भगवान् आप धनी का हम ने शरण लिया है ॥ १२ ॥ आपके शोक और पीड़ा रहित होने से सरजाता (काम चलजाता) है इसीप्रकार हम को भी कामना रहित कर दो नहीं तो हम भिक्षुक हैं सो कहीं तो जाकर रहैं सो हे स्वामी जगह बताइये॥ १३ ॥ विष्णु भगवान् ने कहा कि कामदारों के बहुत नियम है जिनकी कुछ परीक्षा करके मैं तुम्हारे तस्करों (चोरों) को गरुड़ पर पाखर डालकर मारूंगा ॥ १४ ॥१देवताओं की अवज्ञा नहीं करके विष्णु ने कहा कि अभी धीरज करो ॥ १५ ॥ २ इन्द्र आदि उदास देवताओं ने स्वर्ग में आकर यह [विष्णु ने कथन किया वह] कहा ३ इन्द्र की राजधानी अमरावती नामक नगर को ॥१६॥ ४ स्वर्ग में ५ पहुंचा ६ देवता और राक्षस, अत्यन्त हठ करनेवाले लड़े बसु जाति का साविन्न नाम देवता और सुमाली नामक बुढ्ढा राक्षस जुड़े जिन में देवता ने राक्षस का मस्तक काट कर देवी को प्रसन्न करी. बडे नाना को मराहुआ सुन कर रावण ने भयंकर युद्ध किया

तामसी प्रबल माया तबहि बारिदनादहु बित्थरिय॥ १७॥

(दोहा)

सक्र गह्यो सुर जित्ति सब, निडर बली घननाद ॥
भजि जयंत व्यवहित भयो, बदि न सक्यो रनबाद॥ १८॥
दिव झंडे दससीसके, गड्डे सुर मदगारि ॥
याहि नाम दिय इंद्रजित, पंकजजात पधारि ॥ १९ ॥
बलि दससिरहिं सिराहि बिधि, इन्द्रहिं त्रिदिव दिवाय ॥
लंका पुर पठयो खलहु, सदयभाव समुझाय ॥ २० ॥
कन्न्या इक ¹बारिजकुसुम, बैठी ²बारिधि बीच ॥
लंका आयउ ताहि लै, ³निधरक रावन नीच ॥ २१ ॥
काहूको सुनि पुनि कथन, निलज तजी वह नारि ॥
बहुरि ⁴बिथारन दिग्विजय, हंक्यो गिनि तहँ हारि ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव६८बेला६८।१पाणिपीडनबेलाबर्णितमिहिरसन्तानमणिवैवस्वततनुजेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रबिकुक्षि७वंशवर्णनसाऽवसरश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासँव्वादेरावणपूर्वचर्यायांस्वर्गसमाक्रमणं चतुश्चत्वारिंशत्तमो४४मयूखः॥४४॥आदितः

उस समय मेघनाद ने तमोगुणी माया फैलाई ॥१७॥ देवताओं को जीतकर मेघनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया और इन्द्र का पुत्र जयन्त छिपगया ॥ १८॥ देवताओं के मद को नाश करनेवाले (मेघनाद) ने स्वर्ग में रावण के झंडे रोप दिये इस कारण से ब्रह्मा ने आकर उसका नाम इन्द्रजित् दिया ॥ १९ ॥ ब्रह्मा ने रावण की प्रशंसा करके दयाभाव से समझाकर इन्द्र को स्वर्ग दिलाकर पीछा लंका को भेजा ॥ २० ॥ १ कमल के पुष्प पर २ समुद्र में ३ निर्भय ॥ २१ ॥ ४ दिग्विजय फैलाने को ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाहवर्णन समय में सूर्य की संतान में मणि रूप वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि के वंशवर्णन के समय में श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में , हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पूर्व आचरण में स्वर्ग को घेरने का चवालीसवां मयूख

षडशीतितमः॥ ८६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

(सोरठा)

समय इक्क[2]दससीस, [1]मत्त नगर माहिष्मती ॥
आय निसाचरईस, पठई कहि हैहय नृपहिँ ॥ १ ॥
कै रन मंडहु कूर, कै परिजित तेरे कहहु ॥
समुख चलावत सूर, दारन बिच कातर दुरत ॥२॥
जदु हैहयपति जत्थ, अर्जुन तपत सहस्रकर ॥
रेवा सलिल समत्थ, क्रीडत हो सकलत्र सो ॥ ३ ॥
रावनको किय रोध, जब ताके जामिक जनन ॥
कंटक तबहि कुबोध, हनैँ बहुत परतंत्र हठि ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

[3]जंपिय कतिकन जाय तबहि नृपसौँ खल तर्जन ॥
ऐहौँ अर्जुन कहिय जबहि [4]क्रीडा उत्सर्जन ॥
व्रत प्रदोस दसबदन हो सु यह सुनि तब श्रीहर ॥
पूजन लग्गो [5]प्रनत धुनीकूलहि साहस धर ॥
रोक्यो सु सलिल अर्जुन रमत कर नदि सेतु सहस्रकर ॥
तस स्रोत उफनि प्रतिगति तबहि बोरे खल उपहार बर॥५॥
बहत इक्खि उपहार [6]जजन रावन जिम तिम करि ॥

समाप्त हुआ॥८४॥ आदि से छियासी मयूख हुए ॥ ८६ ॥

१उन्मत्त (मस्त) रावण ने ॥१॥२हाराहुआ स्त्रियों में कायर घुसता है ॥ २ ॥ यदुकुल का पति हैहयार्जुन हजार हाथोवाला जहां पर तपता था सो वह समर्थ स्त्रियों सहित नर्मदा नदी के जल मे क्रीड़ा करता था ॥ ३ ॥ रावण को जब उसके पोहरायतों ने रोका तब उन पराधीनोंको हठ से मारडाला ॥ ४ ॥ ३ कहा ४ जलक्रीड़ा को छोडूंगा जब ५ विशेष नम्र होकर नदी के किनारे पर ही हठ धारण करके पूजन करनेलगा सो सहस्रार्जुन ने जलक्रीडा करते समय अपने हाथों का पुल बांधकर नदी के जल को रोकदिया जिससे प्रवाह उलटा बढ़कर पूजा करने की रावण की सामग्री को डुबोदी ॥५॥६पूजन.

नच्चि त्रिलोचन अग्ग भेट कुसुमन अंजलि भरि ॥
संगर पर हुव सज्ज इतहु क्रीडन करि अर्जुन ॥
गरूर झंपि जिम नाग गह्यो कर्बुर कमान गुन ॥
कौतुक समान ताकौं करखि लै निजपुर आयउ लसत ॥
•• ॥ ६ ॥

(दोहा)

अर्ज्जुनको सब दिस उड्यो, अतुल सुजस आमोद ॥
सो सुरलोक पुलस्त्य सुनि, क्रमैं सहँसकर कोद ॥ ७ ॥
बुल्लिय मिलि तव जस बगर, छिति दिव दिन्न छिपाय ॥
क्यों अब रक्खहु विप्रको, ज्यौं गुनदोखहिं जाय ॥ ८ ॥
छोर्यो तब रावन छितिप, यहँ पुलस्त्य पुनि अक्खि ॥
करे मित्र दुव मेल करि, सप्तकील धरि सक्खि ॥९॥
सो दससिर कोउक समय, किष्किंधा रन काज ॥
खोजन कपिपति बालि खल, पहुँच्यौं लोपत लाज ॥१०॥
स्वसुर लख्यो सुग्रीवको, तत्थ बलीमुख तार ॥
मिलि पुच्छयो कित बालि मैं, हेरत जुज्झनहार ॥ ११ ॥
बुल्ल्यो वह कछु दिन बचहु, निरखहु प्रसभ निवारि ॥
अस्थिकोट किय बालि ए, प्रतिभट निचय पछारि ॥ १२ ॥

१ शिव के आगे फूलों की अंजली भेट करके युद्ध पर तैयार हुआ. इधर अर्जुन ने भी जलक्रीड़ा करके गरुड़ झंप लेकर सर्प को पकड़े ऐसे धनुष की प्रत्यञ्चा में राक्षस को पकड़ लिया और खेल के समान उस-को खींचकर शोभायमान होता हुआ अपने पुर में ले आया ॥ ६ ॥ २ गन्ध चले ३ सहस्रार्जुन की दिशा को ॥ ७ ॥ तेरे यश ने फैलकर भूमि और स्वर्ग को छिपा दिया अब इस ब्राह्मण (रावण ने विश्रवा ब्राह्मण से जन्म लिया था) को क्यों रखता है इससे तो तेरा विजय करने का गुण है वही ब्राह्मण के कैद करने से दोष होजाता है ॥ ८ ॥ ४ राजा सहस्रार्जुन ने ५ अग्नि को साक्षी करके ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ तार नामक बंदर को ॥ ११ ॥ ७ हठ छोड़ कर ८ हड्डियों के ढेर ९ युद्ध करनेवाले के समूह को गिराकर ॥ १२ ॥

प्रतिकूलहि जो प्रानसौं, रंच लखहु तो राह ॥
[1]कुपरिधि इक[2]मुहूर्त क्रमि, नित्यहि जिम्मत नाहँ[4] ॥ १३ ॥
यातैं अवनि परिक्रम्मन, अवहीं पूरब ओर ॥
भूप गयो तँहँ जाहु भल, जो मन जुज्झन जोर ॥ १४ ॥

(षट्पात)

सुनि करि पुच्छ प्रयानखलहु खोज्यो वाँसव सुत ॥
सागर तट पायो सु करत संध्या बिधि संजुत ॥
उदधिमाँहिं गहि याहि अबहि बोरौं बिचार इम ॥
पकरन लग्गो पाय तउ न कपि कर्म तजिय तिम ॥
गहि सहज कंख धरि दसगलहिं करत रह्यो आन्हिक सकल॥
बलि सहि प्रदक्खिन भुव बलय पत्तन निज आयउ प्रबल ॥१५॥

(दोहा)

गैल गैल लुंबत गयो, गरुँर त्रोटि जिम नाग ॥
आय निकासो निज निलय, भनित मुहूर्त बिभाग ॥१६॥
निकसि जोरि कापिसौं नयन, सो हतओज सिटाय ॥
विरुदावनलग्गो बिबिध, लज्जा अंतर लाय ॥ १७ ॥
मनहीसौं तिहिं मित्र करि, कहि प्रानहु तव काज ॥
किष्किंधा इक[1]मास मित, रह्यो निसाचरराज ॥१८॥

(षट्पात)

इक्क समय इम अटतं पुरुख पिक्ख्यो इक आसिरं ॥
पिक्खत खिन हुव पिहितं खल सु सोधन लग्गो चिर ॥

जो१तू अपने प्राण से ही विरुद्ध है२भूमि की परिक्रमा में दो घड़ी तक३फिरकर वह ४ स्वामी नित्य भोजन करता है ॥ १३ ॥ पूर्व दिशा में जाकर रावण ने ५ इन्द्र के पुत्र (बालि) को खोजा ६ सन्ध्या ॥ १५ ॥ ७ गरुड की चंचू में सर्प लटके ऐसे रावण साथ साथ लटकता गया ८ अपने घर में जाकर ऊपर कहे हुए दो घड़ी के समय में निकाला ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ फिरते हुए १० राक्षस (रावण) ने ११ देखते ही वह पुरुष अन्तर्धान होगया

इतउत लखि बिल इक्क प्रविसि परिकरहिँ द्वार धरि ॥
जिहिँ बिल अंदर जाय भुवन पिक्ख्यो बिम्मय भरि ॥
ऋतु उचित रम्य रविकोटि रुचि भोग दिव्य तिहिँ ठाँ सुभग ॥
पिक्खेत्रिकोटि३००००००० चउ४भुजपुरुखज्वलितधामधारकत्रिजग

दोहा

ताँहँ बिस्मित रावन अटत, इक अद्भुत आवास ॥
इक्क पुरुख सबसौँ अधिक, पिक्ख्यो अमित प्रकास । २० ।
नील जलद १ अतसी सुमन२, स्याम सदय सुकुमार ॥
ललित तल्प पोढे लखे, ते ईश्वर कत्तार ॥ २१ ॥
प्रभुके ढिग इक पीढँ पर, देखी कमला दुष्ट ॥
कांतहि बीजत व्यजन करि, तिमहि चतुर्भुज तुष्ट ॥ २२ ॥
श्रीकहँ रूप विरूढ सठ, जब चिंतिय लैजान ॥
हस्य तबहि वह परपुरुख, मंदहिँ करन विमान ॥ २३ ॥
हसतहि दुष्ट अचेत व्है, जंकि जानुन परि जत्थ ॥
भंतिगति इक्क१मुहूर्त मैं, हठि निष्ठिन किय हत्थ ॥ २४ ॥
बुल्ल्यो खल बंदन विरंचि, अप्प चराचर ईस ॥
होय मिच्चु प्रभु हत्थतैं, यह मैं चहत असीस ॥ २५ ॥

(षटपात्)

१अपनी परगह[साथ के लोगों] को द्वार पर रखकर रावण उस बिल में घुसा २ क्रोड़ सूर्यों की कान्तिवाला ॥ १६ ॥ ३ महल में ॥ २० ॥ ४ अतसी के पुष्प समान श्याम रंगवाला दयावान् कोमल ५ सुन्दर सेझ पर ६ कर्तार ॥ २१ ॥ ७ आसन पर उस दुष्ट रावण ने लक्ष्मी को देखी जो पति को पंखे से पवन करती थी, इसीप्रकार चार हाथवाले [विष्णु भगवान्] भी प्रसन्न थे ॥ २२ ॥ लक्ष्मी को विशेष रूप पर चढीहुई देख कर दुष्ट रावण ने उसको लेजाना चाहा तब मूर्ख [रावण] को विना मान-करने के लिये वे परमात्मा हसे ॥ २३ ॥ ६ घुटनों के बल ८ गिर गया सो १० दो घड़ी में ११ बुद्धि और चलने की शक्ति कठिनाई से पीछी मिली ॥ २४ ॥ १२नमस्कार करके १३आप के हाथ से मृत्यु होवे यह मैं मांगता हूं.

प्रभु अक्खिय नहिं भस्म भयउ यह कुकृत[1] बिचारत ॥
कारन याको कछुक काल[2] बिधि[3] बर प्रतिपारत ॥
मंगत मम कर मरन सोहु लहिहै समयांतर[4] ॥
इम कहि ताहि दिखाय बिश्वरूपहु[5] दिय श्रीवर[6] ॥
सिर ताहि नाय रावन दस१०हि आय लह्यो निज सत्थ इम ॥
इक समय अग्ग सनकादिकहु तिहिं खल्ल पिक्खे सरँनि[7] तिम॥२६॥

(दोहा)

मिलत खल्ल सु पुच्छ्यो मुनिन, कहाँ जात किहिं काम ॥
बुल्ल्यो यह खोजन प्रबल, जो न मिलत श्रर्मजाम[8] ॥ २७ ॥
जोगीजन काकौं भजत, अखिल नाथ को आहि[9] ॥
समर मरैं जासौं सुगति, तुम मुनि अक्खहु ताहि ॥ २८ ॥
कह्यो मुनिन है बिष्णुको, कोपहु बर अनुकार[10] ॥
तिनके कर मरि सुगति तू, पैहै तरि भुव पार ॥ २९ ॥
इमहिं रुक्कि क्रव्याद[11] हुव, तू जय[12] तब सहि साप ॥
पच्छो[13] लहिहै काल पर, पद अपनौं तजि पाप ॥ ३० ॥
इक समय रावन इमहि, मुनि नारद मिलि मग्ग ॥
कित जावत पुच्छ्यो कह्यो, अति बल लखन उदग्ग[14]॥३१॥

॥ २५ ॥ परमेश्वर ने कहा कि लक्ष्मी को लेजाने का १ खोटा कार्य विचार ते ही भस्म नहीं हुआ जिसका यह कारण है कि थोड़े २ समय तक ३ ब्रह्मा के वर को पालते हैं ४ समय के अंतर से ५ विराट् स्वरूप ६ परमेश्वर ने ७ मार्ग में सनकादिक ऋषियों को देखे ॥ २६ ॥ ८ श्रम उत्पन्न करानेवाला नहीं मिलता ॥ २७ ॥ रावण ने पूछा कि योगीजन किसको भजते हैं, और सब का स्वामी कौन९है. रावण बोला कि युद्ध में जिसके हाथ से मरने से श्रेष्ठ गति मिलै उसको बताओ ॥ २८ ॥ मुनियों ने कहा कि विष्णु का कोप भी वर के १०जैसा [अनुकरण करनेवाला] है ॥ २९ ॥ सनकादिकों ने कहा कि हम जब विष्णु भगवान के दर्शन को जाते थे तब तू१२जय नामक द्वारपाल था जिसने हमको रोका था तब हमारा ही श्राप लेकर११राक्षस हुआ था सो१३पीछा लेवेगा। ३०।१४ उदग्र [उठेहुए मस्तकवाला अर्थात्

बुल्ले मुनि सबसौं प्रबल, स्वेतद्वीप बिच सूर ॥
है दुद्धर[1] तहँ जाहु हम, देखहिं कौतुक[2] दूर ।३२।
भनि नारद संगहि भये, जोहु गयो सुनि जत्थ ॥
स्वेतद्वीपकी सुंदरिन, तसं[3] दुर्गति किय तत्थ ॥ ३३ ॥
प्रमदा निकर निपान पर, उदक लैन बहु आय ॥
सह अचिज्ज लखि दस१०सिरहिं, उन लिय बिहसि उठाय३४
नँव[4] आकृति फेरयो फिरयो, दिस दिस हत्थनहत्थ[5] ॥
जान्यौं रावन करन जय, आयो यह हुव अंत्थ ॥ ३५ ॥
खल गड्डे जब रद१नखर२, धुंनि[6] तिन डारिय धूरि ॥
कैसोरी यह कौटि कहि, बाहुन लेत लबूरि ॥ ३६ ॥
गर्ब बिसरि अैसीहु गति, पाप लही बहु पाय ॥
संतापत त्रिजगहिं तदपि, रुक्यो न कर्बुरराय[9] ॥ ३७ ॥
मैं आई जब मंदकैं, सोची वृजिन बिचारि ॥
अजपैंह जाय रु किय अरज, कहिय द्रुहिन हितकारि॥३८।
जब कोउक कपि जित्तिहै, त्रेता अंतर तोहि ॥
उहाँ दसानन अंतको, जानहु अंकुर[10] जोहि ॥ ३९ ॥
सो तबतैं अघभर[11] सहत, मैं व्याकुल हनुमंत ॥
दुरित अज्ज तैं मम[12] दल्यो, अब ढिग रावन अंत ॥ ४० ॥

नम्रता रहित॥३१॥१दुर्धर(जिसका अनादर नहीं होसके)हम दूर खड़े रहकर २तमाशा देखेंगे ॥ ३२ ॥ स्वेतद्वीप की स्त्रियों ने ३ रावण की दुर्गति ॥३३॥स्त्रियों के समूह पनघट पर पानि लेने को बहुत आये उनके अचरज के साथ रावण को देखकर हसकर उठालिया ॥ ३४ ॥ ४ नवीन स्वरूपवाला ५ एक हाथ से दूसरे हाथ में ॥ ३५ ॥ दुष्ट रावण ने जब उन स्त्रियों के दन्त और नख गडाये तब उनने रुई को पींजै इस माफिक ६ पींजकर ७ कीड़ा ॥ ३६ ॥ ८ दुःख देता हुआ ९ राक्षसों का राजा ॥ ३७ ॥ लङ्का कहती है कि जब मैं इस मूर्ख के आई तब कर्मों के फल को विचारकर चिन्ता करके ब्रह्मा के पास जाकर मैंने अरज की तब ब्रह्मा ने हित करके कहा ॥३८॥१०प्रादुर्भाव(उदय)॥३९॥११पाप का भार१२मेरे पाप का आप ने नाश किया, अब रावण का नाश भी समीप ही है ॥४०॥

(शुद्धप्राकृतभाषा गीई)

इअ वयणं सोऊणं लङ्काए अकुसीअ हणुमन्तो ॥
बहुणिसिअरणिलएसुं घत्तन्तो सीअ मग्गमग्गम्मि ॥४१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचाण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ पाणिपीडनवेलावर्णितजगच्चक्षुर्जनन्मणिवैवस्वताङ्गजन्मेक्ष्वाकु ६ षष्ठपुत्र विकुक्षि ७ सन्ततिसमर्थनान्तर्गतश्रीजानकीजानिचरित्रे हनुमल्लङ्कासंवादे रावणपूर्वचर्यायां रक्षोराजस्मानमर्द्दनंपञ्चचत्वारिंशत्तमो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः सप्ताऽशीतितमः ॥ ८७ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

लंकाकों इम जित्ति लघु, आसिर पुव्व उदंत ॥
सुनि मारुति अग्गैं सरयो, सीता सोधन संत ॥१॥

पज्झटिका

जिहिं दंग विस्यो अब बातजात, कौणप गृह पिक्खत सब सुहात
लखि बज्रदंष्ट्र१अतिकाय२ओक, सोधे सुक३सारण४गृह विसोक
मकराक्ष५महोदर६माल्यवान७, धूम्राक्ष८नरांतक९बलाविधान ॥
देवांतक१०रु महापार्श्व११दुष्ट, रोमस१२कराल१३सुकनाभ१४रुष्ट

हनुमान् इसप्रकार वचन सुन कर बहुत से राक्षसों के स्थानों में मार्ग मार्ग में सीता को ढूंढताहुआ लंका से गया ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंशमणि वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन के भीतर श्रीजानकीपति के चरित्र में हनुमान और लंका के सम्वाद में रावण के पूर्वचरित्र में रावण के मानमर्दन का पैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और आदि से सत्यासी मयूख हुए ॥ ८७ ॥

इसप्रकार लंका को शीघ्र जीतकर राक्षस का पहिले का वृत्तान्त सुनकर सीता को सोधनेको हनुमान आगे चला॥१॥जिस१पुर में अब२हनुमान घुसा३राक्षस

इतिवचनं श्रुत्वा लङ्कायां अगच्छत् हनुमान् । बहुनिशिचरनिलयेषु गवेषयन् सीतां मार्गे मार्गे ॥ ४१ ॥

धूम्र१५रुप्रहस्त१६संपाति१७धीर,बक्र१८रुबिसाल१९यूपाक्ष२०बीर
तिम सादिन२१बिद्युज्जिह्व२२तत्त, बिद्युद्रूप२३बिरूपाक्ष२४मत्त२५।
घन २६बिघन २७दंष्ट्र २८प्रघस२९रु मघास३०,
रविसत्रु३१सुमाली३२रु[१]जिनवास ॥
कपर३३करद्रूप३४रु रस्मिकेतु३५,हस्तिमुख३६अकंपन३७पापहेतु
बलि बिद्युन्माली३८बज्रकाय३९,क्रव्याद ध्वजग्रीव४०हु कुमाय॥
अरुणाक्ष४१जंबुमाली४२[४]अपराग,क्रमयुद्धोन्मत्त४३रु-हस्वकर्ण४४
कुंभरु४५।[५]निकुंभ४६।[६]निद्रालुजात,खलइंद्रजिव्ह४७अघइष्ट[७]ख्यात
घननाद४८बिभीषन४९कुंभकर्ण५०, इत्यादि ओक[८] बिक्खे सुबर्ण
दसकंधरके नाना निवास, पुनि अग्ग लखे कपि रबिप्रकास[९] ॥
तँहँ भुवन इक्क पिक्ख्यो सतोस, चउ४कोस दिग्घ[१०] आयत[११] दु२कोस
जँहँ हुव प्रबिष्ट मारुति[१२] सुजान, पिक्ख्यो धर्यो सु पुष्पक बिमान
सहँसन जहँ सुंदरि करत सैन, अति नाक[१३] भोग पिक्ख्यो सु ऐन[१४]
निरखी मयतनया[१५] तिहिं निकेत[१६], सोवत हजार१०००दासिन समेत
जिहिं प्रथम जनकतनया[१७]हि जानि, पुनि मंच[१८] लखत मुरर्यो प्रमानि
रसवति[१९]१सुगंधगृह२राजमान[२०], वासोक[२१]३चंद्रसाला४बितान[२३]५॥
बेदी६अलिंद[२४]७तोरन[२५]८बिसाल, मनिखचित[२६] लसत बहु रचित माल
इम अखिल परस्य पिक्खे प्रबीन, मैथिलजा[२७] मारुतिकों मिली न

१पाप का निवास॥५॥२पुनि३राक्षस४बिना पक्षोंवाला (पक्का बनाहुआ)॥६॥ ५कुंभकर्ण का पुत्र६पाप ही है७प्यारा जिसके७घर८स्वर्ण के बने हुए अथवा श्रेष्ठ रंगवाले ॥ ७ ॥ ९ सूर्य के प्रकाश समान प्रकाशवाला१०लंबा११चौड़ा ॥ ८ ॥ १२ हनुमान१३स्वर्ग के समान है भोग जिसमें ऐसा१४घर ॥ ९ ॥१६ उस स्थान में१५मंदोदरी को देखी १७ जिसको पहिले सीता ही जानी परंतु उसको १८ पलंग पर शयन करती देख कर पीछा फिरगया अर्थात् रामचन्द्र के वियोग में सीता पलंग पर नहीं सोसक्ती यह प्रमाण मानकर पीछा फिरा ॥१०॥ १९रसोड़ा और सुगंध के घर २० शोभायमान २१ शयन गृह२२ सब से ऊपर का महल २३ यज्ञशाला, बेदी २४ बाहर का चौक २५ द्वार, मणियों के २६ जड़े हुए ॥ ११ ॥ सब घर देखे २७सीता हनुमान को नहीं

नेबेद लह्यो तँहँ आंजनेय, स्मृत हुव कह्यो जु संपाति श्रेय॥१२॥
जब मुदित व्यर्थ झंपन न जानि, ...॥
जिहिं सिंसपा तर जानकी सु,क्रम पिहित चढ्यो तिहिं थान कीसु॥
अवसेस रत्ति इक१जाम जत्थ, तजि निंद उठ्यो दससीस तत्थ॥
सो दुष्ट मंदउदरी समेत, क्रव्याद चल्यो सीता निकेत ॥१४॥
सहँसन प्रदीपिका पथ प्रकास, जुवतीजन सहँसन संग जास॥
वादित्र अग्ग सहँसन बिबाँद, प्रतिहार प्रनत बुल्लत प्रसाद ॥१५॥
पवमानजात यह भेद पाय, कपिदलन दुर्यो करि अलपकाय॥
क्रव्याद आय तँहँ कैकसेय, अंबा प्रति अक्खिय हौँ न हेय ॥१६॥
मैं किय करार इक१अब्दमाँहिं, अवसेस तत्थ दुव२मास आँहिं॥
माँनिनि तथापि भजिहै न मोहि, तो सूद धरहिं उद्धान तोहि ॥१७॥
सुनि असह जननि अक्खिय समास,गोमायु न मारि चहि सरभग्रास
खल तदपि कह्यो अतिसय खिसाय,बहु जामिक कर्बुरिका बुलाय
गोकर्णी१ त्रिजटा२ गोपदी३रु, अजवदना४ गजबदना५ अभीरु॥
गतनासा६अतिनासा७कुगात्र, पुनि पादचूलिका८पापपात्र ॥१९॥
बिकराल दीर्घनासा९बहोरि, जिन संग संकुकर्णी१०हु जोरि॥
सरमा११हु बिभीषन नारि सत्थ,इत्यादि टेरि अक्खिय अनत्थ॥२०॥

मिली उस समय १ हनुमान को २ ग्लानि होगई परंतु फिर सम्पाति ने कहा था वह ३ स्मरण हुआ कि सीता अशोक वन में है ॥ १२ ॥ सिंसपा ४ वृक्ष के नीचे सीता थी उस पर ५ बंदर (हनुमान) छिपकर चढगया ।१३। एक ६ पहर रात्रि बाकी रहे ७ मन्दोदरी सहित ८ राक्षस (रावण) सीता के स्थान पर चला ॥ १४ ॥ ९ दीपक १० बजते हुए ११ द्वारपाल विशेष नम्रता से १२प्रसन्न करने के शब्द बोलते हुए ॥ १५ ॥ १३हनुमान यह भेद पाकर छोटा शरीर करके पत्तों में छिपगया १४कैकसी के पुत्र (रावण) ने आकर १५ सीता माता से कहा कि मैं १६ त्याग ने योग्य नहीं हूं ।१६। १७ एक वर्ष में दो १९ मास १८बाकी हैं तो भी जो२०हे मान करनेवाली मुझे नहीं भजेगी तो २१ रसोईदार (रसोई पकानेवाले) तुझको २२चूल्हे में धरेंगे १७ ॥ २३ संक्षेप से ही उत्तर दिया २४ हे गीदड़ २५ सिंह के ग्रास की चाहना करके मत मर २६ पहिरायत राक्षसियों को बुलाकर ॥ ८ ॥ १९ ॥

अबहू तुम रात्रिचरी असेस, दै इहिं समुझावहु सूपदेस ॥
इम आक्खि गयो दसमुख आगार,कहि हारि देहु सोई कुदार॥२१
जननी जनलीला बिहित जानि,प्रभु जत्न सिथिल अबलौं प्रमानि॥
हेरन लगी सु बपुहानि हेतु,कछु ढिग न सस्त्र१बिख२धूम्रकेतु॥२२
गहि इक तरु साखा तब गरीय, उद्बंधनकौं लिय उत्तरीयं ॥
जो लखि चरित्र पवमानजात,बरनी सब स्वाऽऽगम अवधि बात२३
लघु सुनत मोद जननीहु लाय,आक्खिय उपांसु तजि बध उपाय॥
किम नृपन१कपिन२संगति अकत्थ,सुग्रीव सक्खिकिमरामसत्थ२४
अब कहहु चिन्ह जो सत्य एह, बरनैं तब लक्खन१राम२देह ॥
बानी१निसर्ग२इंगित३बताय सामुद्रिक४सब दिय कपि सुनाय२५
बिस्वास तदपि न लख्यो बिसेस,पुनि अंगुलीयक५सु किन्न पेस॥
प्रत्ययं हित पठयो प्रभु पुनीत,सीता लखि किय हिय तप्त सीत२६
पुनि आक्खिय औहैं कथ कृपाल,कपि आक्खिय जानहु तूर्णकाल॥
माता निदेस तब होय मोहि, तो लै बैं मिलाऊँ जाय तोहि॥२७॥
सुनि जननि असंभव कहिय एह, दुर्द्धर तब कपि किय अद्रिदेह॥

॥ २० ॥ १ हे राक्षसियो तुम सब अब भी इसको २ श्रेष्ठ उपदेश देकर समझाओ ३ स्त्रियां ॥ २१ ॥ सीता माता ४ मनुष्य लीला को ५ उचित जानकर और रामचन्द्र को ६ उपाय में अब तक शिथिल मानकर ७ शरीर को नाश करने का साधन करने लगी परंतु पास नतो शस्त्र था न विष था और न ८ अग्नि था ॥ २२ ॥ तब एक वृक्ष की बडी शाखा को पकड़ कर ९ फांसी खाने को १० उपवस्त्र (उत्तरासन) लिया ११ हनुमान ने १२ अपने आने की बात कही ॥ २३ ॥ १३ शीघ्र १४ बहुत धीरे से (पासवाला भी नहीं सुनसकै इसप्रकार) बोली १५ सखापन ॥ २४ ॥ १६ स्वभाव १७ चेष्टा १८ सामुद्रिक शास्त्र में पुरुष के लक्षण लिखे हैं वे रामचन्द्र के शरीर में मिलते थे सो भी सब सुनाये ॥ २५ ॥ १९ तोभी २० अंगूठी जो रामचन्द्र ने हनुमान को, सीता को २१ विश्वास कराने के अर्थ दी थी वह भेट की जिससे सीता ने अपने २२ तपेहुए हृदय को ठंढा किया ॥ २६ ॥ २३ उस समय को शीघ्र जानो और जो हे माता मुझे आज्ञा होवे तो २४ अभी तुम को लेकर रामचन्द्र से जा मिलाऊं ॥ जब सीता ने कहा कि यह २५ असंभव है तब हनुमान् ने नहीं सहन किया जावे ऐसा २६ पर्वत के समान शरीर किया

पुनि माय कहिय प्रत्यय सु पाय,है बिहित¹ नाथ आगम हिताय।२८।
मदअंध खलहिं सकुटुंब मारि, लै मोहि जाय यह कित्तिकारि²॥
माता निदेस तैसैंहि मानि,अब किय कपि प्रकटन जत्न³ आनि ।२९।
बिध्वंसन लग्गो लुंचि⁴ बाग,फिरि किय सत१००रच्छक कालभाग⁵
निकसांजनिको⁶ इक चैत्य नाम,प्रासाद⁷ हुतो तँहँ केलिकाम⁸।३०।
वाकेहि थंभ मारुति उपारि, मज्झुल्ल⁹ रच्छकहु लिय ति मारि॥
अरु कहिय जयति रघुराज राम,१ सौमित्रि¹⁰२जयति सुभधर्मधाम।३१
सुग्रीव३जयति प्रभु पाल्यमान, बदि इम किय आस्फोटन¹¹ बिधान॥
यह सुनि अचिज्ज लंकेस आप, पठये प्रधान सुत¹² सप्त७पाप३२
रचि तिन अनीकं¹³ जुत अतुल रारि, परलोक लह्यो कपिकौं प्रचारि
क्रव्याद¹⁴न किंकर¹⁵ अयुतअष्ट८००००.पठयेति¹⁶पुनिहुकियनिखिलनष्ट
निजपुत्र कुपित तब अक्ष नाम,कर्बुरपति¹⁷ पठयो बिजयकाम ॥
भवअंस¹⁸ सोहु पय गहि भ्रमाय,सानीक¹⁹ हन्यौं निजभुजसहाय।३४।
नैकष²⁰ तब पिल्ल्यो सुदिर²¹नाद, बिरच्यो तिहिं अद्वय²² तुमुल²³ बाद॥
पिक्ख्यो तथापि कपिपति²⁴ कराल,तब ब्रह्मअस्त्र मुक्क्यो उताल।३५।
स्वासिनि²⁵ नत तिहिं लखि धर्मसक्खि, आयो गहिबेमैं उचित अक्खि
निगडित²⁶ करि लै गो मेघनाद, प्लवगेस²⁷ लख्यो बैभव प्रसाद३६
हियमैंहि कह्यो जो धर्म होय, दसमुखहि इक्क१ प्रभु तो न दोय२

जिससे विश्वास पाकर सीता ने कहा कि रामचंद्र का आना ही¹उचित है ॥ २८ ॥ २ कीर्ति करनेवाला कार्य है ३ प्रसिद्ध होने का उपाय ॥ २९ ॥ ४ तोड़ फोड़ कर ५ काल के हिस्से में ६ राक्षसों (निकसा है माता जिनकी) का चैत्य नामक ७ महल ८ क्रीड़ा करने का था उसके खंभे उपाड़ कर ९बीच के रक्षकों को१०लक्ष्मण की जय हो११भुज ठोके१२मुख्य पुत्र१३सेना सहित १४ राक्षसों के १५ सेवक१६तिनको १७रावण ने१८शिव के अवतार (हनुमान) ने१९सेना सहित मारलिया ॥ ३४ ॥२०नैकषी के पुत्र(रावण)ने२१मेघनाद को भेजा जिसने२२अद्वितीय२३भयंकर शब्द किया तोभी२४हनुमान् को भयंकर देखा तब शीघ्र ब्रह्मास्त्र छोडा॥३५॥२५पवनपुत्र(हनुमान्)नम्र होकर धर्म को साक्षी जानकर२६बंधन युक्त करके२७हनुमान् ने उसको वैभव में प्रमत्त देखा ॥ ३६ ॥ और अपने मन में ही कहा कि रावण में धर्म जो होवे

ऐसे विचार जुत आंजनेय, मांदोदरेय गहि गो अमेय॥ ३७ ॥
रावनजँहँ परिखद राजमान, जो किय तँहँ हाजरि जातुधान ॥
दससिर प्रहस्तसन किय निदेस, आयउ किम पुच्छहु कोन एस ३८
उपवन बिगार क्यों किय अजान, अच्छादि हनैं क्यों प्रथित प्रान॥
पुच्छिय प्रहस्त कहि सत्य काज, पठयो तू इंद्र कि राजराज ३९।
प्लवंग न तू ह्वैहै करि प्रकास, बिनु सत्य न छुट्टहिं बंदिबास ॥
सुनि कहिय कीस हनुमान नाम, मैं दूत पठायउ अत्थ राम ।४०।
लायो हरि सीता तू निलज्ज, आसोक बेलि पिक्खी सु अज्ज ॥
लग्गैं न खबरि बिनु कछु बिगार, किय इम बिरूप उपवन प्रकार ४१
अच्छादि हनैं जुज्झत असेस, आन्यों ब इंद्राजित पकरि एस ॥
अब जो रक्खसकुल वध न इष्ट, वलि प्रान दयित प्रभुता विसिष्ट ४२
तो कालरात्रि सीताहिं जानि, प्रभु हित चलि अप्पहु जोरि पानि॥
सुग्रीव सखा तव जो सनेह, वानैंहु कहाइय बत्त एह ॥ ४३ ॥
दससीस सु सुनि खिजि दिय निदेस, इहिं कपिहिं हनहु संसय न सेस॥
तब कहिय बिभीषन सुनहु सार, है प्रभु अबध्य संदेसहार ॥४४॥
कीसनकैं पुच्छहि प्रिय कहात, तिहिं जारि देहु जो रुचत तात ॥
हढ हुव यहैहि परि बहु बिवाद, सासन सुहि अप्पिय मानुषाद ४५
तब आनि सूल सन तैल तूल, मढि पुच्छ दयो कपिको समूल॥

तो संसार भर मे यह एक ही है ऐसी प्रभुतावाला दूसरा नहीं है, इसप्रकार विचार करतेहुए १ हनुमान्‌को ३ प्रमाण रहित पराक्रमवाला २ मन्दोदरी का पुत्र (मेघनाद) पकड़ कर लेगया ॥ ३७ ॥ रावण जहां सभा में ४ शोभायमान था तहां ५ राक्षस ने हनुमान् को हाजिर किया. ६ बाग का ७ अक्षकुमर आदि ८ प्रसिद्ध ९ बलवान् थे जिनको क्यों मारे १० कुबेर ने भेजा है ॥३९॥ ११ तू बंदर नहीं होवेगा १२ कैदखाने से १३ बंदर ने ॥ ४० ॥ १४ अशोकबाटिका में आज मैं ने देखी १५ बाग को ॥ ४१ ॥ १६ प्रभुता सहित प्राण जो प्यारे हैं तो ।४२। सीता को १७ मृत्यु जानकर १८ हाथ जोड़ कर रामचन्द्र को देदै ॥ ४३ ॥ संदेह १९ बाकी नहीं समझ कर २० दूत ॥४४॥ बन्दरों के पूंछ ही प्यारी है सो रुचै तो जलादो इसपर बहुत बाद विवाद होकर पूंछ जलाना ही निश्चित हुआ और २१ मनुष्यों के खानेवाले (रावण) ने यही आज्ञा दी ॥ ४५ ॥ २२ रुई

लंकेस कहिय अब*अग्गि लाग,इहिँ देहु जारि पुर बिच फिराहि।४६।
सुनि धूम्रकेतु करि लूम संग, दोरे गाहि फेरन ताहि ढंग ॥
बंधन तब तोरे बपु बढाय, लै भ्रंप महल दिन्नैं लगाय ॥ ४७ ॥
इक इक गृह लंकापुर असेस, बालधि करि जारे बानरेस ॥
इक१टारि बिभीखनको अगाँर,छिन बिच किय लंका नेर छार।४८
जंवनी१कपाट२उल्लोच३जेम, हुव भस्म बह्यो तिम द्रवित हेम ॥
लंकापुर करि करिबीर कल्प,अरार्णव कपि मज्जित भ्रंपि अल्प४९
बालधि बुभ्राय निज छार वार,चढि पुनि पुर गोपुर किय बिचार॥
मैं मंद लखी नहिँ मन्न्यु माँहिँ, अंबा बची कि दव दग्ध आँहिँ५०
तब चारनदेवन कहिय तत्थ, सीताहु बचाई कपि समत्थ ॥
यह सुनत असोकाराम आय, किय दरस प्रसूको प्रनत काय५१
जंपिय अब किंकर तत्थ जात, मन धरहु नियत बिस्वास मात ॥
जगदंबा अक्खिय कल्हि जाहु,लखि ताहि फुरत प्रभु मिलन लाहु५२
कपि कहिय रहैं बिबंढत बिलंब, आनत मैं छिप्रेहि प्रभुहिँ अंब ॥
तब सीता निज सिरमनि उतारि,कपिकौं दिय प्रत्ययपुष्टकारि।५३।
कहि एह जनक दिय लग्नकाल, लै याहि जाहु प्रभुपास लाल ॥

* अग्नि लाकर १ अग्नि २ पूंछ में लगादिया ३ पुर में फेरने लगे ४ शरीर को बढाकर॥ ४७ ॥ ५ सम्पूर्ण ६ पूंछ से ७ विभीषण के घर को छोड कर ८ भस्म करदिया ॥ ४८ ॥ ९ पड़दा, किंवाड़ चंदवा (घर की छत में लगाने का वस्त्र) भस्म होगये और स्वर्ण पिघल कर बहगया, उस वीर ने लंका में प्रलय कर करके छोटी मलंग लेकर समुद्र में गोता लगाया ॥ ४९ ॥ पूंछ को वुभाकर, अपने शरीर के ऊपर की भस्म को दूर करके शहर के दरवाजे पर चढकर जब विचार किया कि मुझ मूर्ख ने क्रोध में नहीं देखा कि सीता माता बची कि अग्नि में भस्म होगई है ।। ५० ॥ तब वहां पर चारण देवताओं ने कहा कि समर्थ कपि ने लंका को जलाकर सीता को बचा ली. अशोकवन में आकर नम्र शरीर होकर माता का दर्शन किया ॥ ५१ ॥ ६ सीता माता ने कहा कि कल जाना तुम्हारे देखने से रामचन्द्र के मिलने का लाभ स्मरण होता है ॥ ५२ ॥ १० विशेष बढता है ११ शीघ्र ही १२ हे माता १३ विश्वास को दृढ करनेवाली ॥ ५३ ॥

इकककहहु *पिहितइतरहुउदंत,जबचित्रकूटआये **अनंत॥५४॥
जो द्विक जयंत ईर्षत अजान, किय तजि इषीक अघलिप्सु ,
दुवश्प्रत्यय मारुति ए द्रढाय, चहि सीघ्र प्रभुहिँ आनहु चढाय ॥५५॥
लक्खनै प्रति अक्खहु बिदित बीर, मुल्लहु मम बैन रु करहु भीर ॥
करै तुज्झ लज्ज रघुबंसकेर, देवर अब नैंक न उचित देर ॥५६॥
करि प्रनति यहै सुनि चलिय कीस, आरूढ भयउ पुरआद्रिसीस ॥
लिय मलपि झंप चहि वार आन,बिच आत रच्योक्ष्वेडा विधान५७
अंगद मुखँ सुनि हुव मोद इद्ध, संसय तजि जानिय काज सिद्ध ॥
इहिँ अंतर मारुति मिलिय आय,सब भूत अंगदहिँ दिय सुनाय५८
दुव२चरन धरे तब भूप्रदेस, आये किष्किंधा पुनि असेस ॥
मधुवन तँहँ रविसुत माल्यवान, खुलवाय लगे फल मूल खान५९
पिन्नौं ताडा सिव मुद प्रसारि, बरजे ति दये रच्छक बिडारि ॥
दधिमुख हु बेल अध्यक्ष दोरि, बरजे रुके न बिलसे बहोरि ॥६० ॥
कपिपतिको मातुल एह ईस, अपमानि पठायो जँहँ अधीस ॥
दधिमुख तहँ अक्खिय अंगदादि, मन्नैं न बाग लुंचत प्रमादि ॥६१॥
सुग्रीव सु सुनि गिनि काज सिद्ध, आन्यौं स्वचित्त उच्छाह इद्ध ॥
इहिँ अंतर अंगद प्रमुख आय, निज वृत्त कह्यो सिर पयन नाय ६२

*एक और छिपाहुआ वृत्तान्त भी कहना**रामचन्द्र ॥५४॥ इन्द्र के पुत्र जयंत ने मूर्खता से काकपक्षी होकर इर्षा की थी उस पाप की इच्छावाले को दर्भ की सींक छोडकर काणा किया था यह दोनों सुबूत देकर हे हनुमान् प्रभु को शीघ्र चढालाना।५५।१लक्ष्मण से कहना२तुम्हारे हाथ में रघुवंश की लाज है॥५६॥३ प्रणाम करके४बंदर५पुर के समीप पर्वत था उस पर चढा६सिंहनाद किया ॥ ५७ ॥ अङ्गद ७ आदि ने सुन कर ८ आनन्द बढानेवाले हुए ६ बीतेहुए समाचार ॥ ५८ ॥ अङ्गद आदि बंदरों ने हनुमान् के पीछे आने तक एक पग से खड़े रहने की प्रतिज्ञा की थी सो अब दूसरा पग भूमि पर धरा. १० सब, सुग्रीव का मधुवन नामक बाग था जिसको फल मूल खाने के लिये माली से खुलवाया ॥ ५९ ॥ ११ ताड़ी का मद्य १२ बाग का दरोगा ॥ ६० ॥ दधिमुख नामा यह बंदर सुग्रीव का १३ मामा था उसका अपमान करके जहां १४ सुग्रीव था वहां भेजा ॥ ६१ ॥ १५ अंगद आदि १६ अपना वृत्तान्त कहा

सुनतहि प्रसन्न लै सबन संग, आयो सु प्रश्रवन गिरि अभंग ॥
साखामृग प्रभु पय परि समस्त, हनुमान दयो मनि कहि हस्त ६३
दजोरहु कह्यो व्यवहित उदंत, जामैं इकलोचन भो जयंत ॥
प्रभु सुनत सिराहे अखिल प्रेय, उर लाय लयो द्रुत आंजनेय६४
दिय सासन होवत त्रिविध दास, तू मारुति उत्तम आहि तास।
भृत्या बिनु तैं किय दुष्कर भृत्य, कोउ न तस प्रत्युपकार कृत्य६५
बदि इम प्रभु मनि लखि किय विलाप,करिहैं कब जानकि त्यक्तताप
बल तदनु सजि धरि चापवान, प्रभु करिय खबरि सुनतहि प्रयान
मध्यान्ह समय मंगल मुहूर्त, प्रस्थान अभिजितं बिजय पूर्त ॥
संख्याबिहीन कपिरिच्छसेन, रघुनाथ चले लै नरसुरेन ॥६७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गीतिः ॥

रघुवरवर्धितदर्प्पा गोलाङ्गूलर्क्षवीरबल्युबला: ॥
प्लवगा अहमहमिकया लङ्कां जय्यां निरीयुरुद्दिश्य ॥६८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीयराशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव६८बेला६८पाणिपीडनवेलावणितबिभाकरबंशवर्यवैवस्वताङ्गजनुरिक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि७

१ सब बन्दर ॥ ६३ ॥ २ छिपाहुआ ३ वृत्तान्त ४ मेरे प्यारे ऐसा कहकर रामचन्द्र ने सब की प्रशंसा की और ५ हनुमान को हृदय से लगालिया ॥ ६४ ॥ और आज्ञा दी कि तीन प्रकार के सेवक होते हैं जिनमें हे हनुमान तू उत्तम है तूने विना ५ तनख्वा आदि जीविका के ६ दुष्कर (कठिनाई से होनेवाला) कार्य किया है सो ७ पीछा मेरा उपकार करने के योग्य कोई कार्य नहीं है ॥ ६५ ॥ ८ ताप रहित ९ जिसपीछे सेना सज कर ॥६६॥ १० विजय से भरेहुए अभिजित् नामक मुहूर्त में मनुष्य और देवताओं के पति अथवा नरेन्द्र रामचन्द्र ने प्रयाण किया ॥ ६७ ॥ रामचन्द्र से बढा है घमंड जिनके ऐसे वीर गोपुच्छ (लंगूर) और रीछों के समान श्रेष्ट बलवाले वानर लंका को जीत लेना मन में ठान कर अहंभाव के साथ अर्थात् मैं आगे होऊं मैं आगे होऊं इसप्रकार निकले ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाहसमय के वर्णन में सूर्यवंशी प्रजापति वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के बडे पुत्र विकुक्षि की सन्तान के समर्थन

सन्ततिसमर्थनान्तर्भूतश्रीवैदेहीवल्लभचर्यायांदृष्टजगदम्बदग्धरक्षोद
ङ्गपावमानिप्राप्तप्रत्ययश्रीरघुनाथविजयप्रस्थानं षट्चत्वारिंशत्तमो
४६ मयूखः ॥ ४६ ॥ आदितोऽष्टाशीतितमः ॥८८॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

षट्पात्

बीरचलियसतबलिय१संगकपिअयुतकोटि१०००००००००००करि।
गोलांगूल[1] गवाक्ष२धीर भट सहँस कोटि१००००००००००धरि ॥
रिच्छ[2] धूम्र३दुव सहँस कोटि२००००००००००भल्लूक[3] सज्जि भट॥
सह त्रिकोटि३०००००००कपि सेन पनस४हंकिय कर कंकट[3] ॥
कपि नील५कटक दस कोटि१००००००००जुत,
गज६त्रिकोटि३०००००००जुत जंगजय ॥
कपिकोटिपंच५०००००००सहँसंक्रमियकनक[4]कांतिगज्जतगवय७
सहँसकोटि१००००००००००कपिसहित मुदित रन हलिय दरीमुख८
द्विबिद१मैंद१।१०दुव२कपिनसजियतेते१००००००००००हिसमरसुख
कपि१भल्लुक२दसकोटि१००००००००जांबवान११हुसज्जियाजिम
रुमरावान१२इक अब्ज१०००००००००तबहि ललकारि चढिय तिम
सत संकु १००००००००००००००० गंधमादन१३साजिय,
दुर्मुख १४ कपि दुव कोटि २००००००० दल ॥
दसकोटि १०००००००० साजिय दधिमुख१५ दुसह,
सहँस कोटि १०००००००००० मारुति १६ सबल ॥ २ ॥

(दोहा)

सहँसपद्म१०००००००००००००००सततसंकु१०००००००००००००००साँ,

(योग्यायोग्यविचार) के भीतर जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में सीता माता को देखने और राक्षस के पुर को जलानेवाले हनुमान से सुबूत पाकर श्रीरामचन्द्र का विजय के लिये गमन करने का छियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से अठ्यासी मयूख हुए ॥ ८८ ॥

१ लंगूर (काले मुख का बन्दर) २ रींछ ३ हाथ ही है कवच जिसके ४ चला ५ स्वर्ण के समान कान्तिवाला ॥१॥२॥

अंगद १७ भयउ तयार ॥
सेना ग्यारह कोटि११०००००००सह, इंद्रभानु१८लगि लार ॥ ३ ॥
सहँस रुद्र११००० इक सत१००सहित, रंभ१९चल्यो कपि रज्जि[1]॥
सत मित कोटि १०००००००००० रु इक सहँस १०००,
सत इक १०० सौं नल २० सज्जि ॥ ४ ॥
रुमा[2]जनककपिपतिस्वसुर,सहँसकोटि१००००००००००सनतार२१
दूजो २ तार२२हु सज्जि दल,पंचक कोटि ५०००००००प्रसार॥५॥
जिम केसरि २३ मारुति[3]जनक, अर्कतरुन[4]वपुआभ ॥
सहँस अनेकनसौं सज्यो, लंका रन जय लाभ ॥ ६ ॥
कनका[5]चलरुचि[6] बीर करि, सहँस अनेकन सत्थ ॥
तारा[7]जनक सुसेन२४तिम, संक्रम रचिय समत्थ ॥ ७ ॥
कीस सरभ२५वन्हि२६रु कुमुद२७, चले जुत्थपति चंड ॥
दूजे२रंभ२८समेत दल, उफन्यौं सरनि[8] अखंड ॥ ८ ॥

षट्पात्

अंस बिबिध अवतार मिलिग भल्लुक१[9]कपि२[10]मर्कट३[11] ॥
प्रसरि चले इति प्रभृति[12] व्योम[13]१जल२थल३बट[14]१उब्बट[15]२ ॥
सविता[16]सुत सुग्रीव१अंस वासव[17]भव अंगद२ ॥
तार३त्रिदिसगुरु[18] तनय गंधमादन४ कपि धानद[19] ॥
पावक[20]वतार नील५सु प्रथित[21] विस्वकर्म अवतारनल६ ॥
दुवर्[22]दस्र अंस मैंद१ रु द्विविद२।८ प्राभंजन[23] हणुमा९प्रबल ॥ १ ॥

१प्रीति सहित२रुमा नामक सुग्रीव की स्त्री का पिता और सुग्रीव का ससुर ॥५॥३हनुमान् का पिता, ४ प्रभात के सूर्य समान कान्तिवाला ॥६॥ ५सुमेरु पर्वत के समान ६ कान्तिवाला ७ बालि की स्त्री तारा का पिता ८ मार्ग में बढ़ा ॥ ८ ॥ ९ रींछ १० बन्दर ११ लंगूर १२ इनको आदि लेकर १३ आकाश में १४ मार्ग और १५ विना मार्ग (ऊजड़)फैलकर चले १६ सूर्य का पुत्र सुग्रीव १७ इंद्र के अंश बालि का पुत्र अंगद १८ बृहस्पति का पुत्र तार १९ धनद (कुबेर) के पुत्र गंधमादन का पुत्र गंधमादन२०अग्नि का पुत्र नील २१ प्रसिद्ध २२ दोनों अश्विनीकुमारों के अंश से २३ पवन के अंश से ॥९॥

दोहा

ताराजनक सुसेन१०कपि, मुनि मरीचि अवतार ॥
बरुन[1] अंस उद्भव बली, अपर[2]सुसेन११उदार ॥ १० ॥
जांबवान१२गड्डद[3] जन्यौं, जन्यौं सरभ१३परजन्य ॥
इत्यादिक अंसन उतरि, उमडे लरत अनन्य ॥ ११ ॥
अमर१सिद्ध२चारन३उरग४, विद्याधर५मयुँ[6]आर्त ॥
नागु७जच्छ[8]८गंधर्व९मुनि१०, इतिमुँख[10] अंसन जात[11] ॥१२॥

(षट्पात्)

इतिमुख अंसन जात क्रूर भल्लुक१मर्कट२कपि३ ॥
किष्किंधा सन कढिय जुद्ध उत्सुक[12] जय जय जपि ॥
सानुज[13] रघुबर सज्ज बंधि परिकर[14] पट पीवँल[15] ॥
चलिय चाप टंकार चलित[16] करि सर्ग[17] चलाऽचल[18] ॥
दिस दिसन फुट्टि ओर्द्धके[19] दुसह भुवनचउद्दह१४बीच भरि॥
देखत निमित्त जिततित दरित[20] प्रबल छोह बिस्मय पकारि ॥१३॥
कीटी[21] उप्पर कोप जदपि सरभ[22] न करि जानैं ॥
तदपि सहज संक्रमत[23] त्रास स्वासहि तस[24] तानैं ॥
उघरि इस बफनिय[25] गाज घन[26] बिनु घुररक्किय ॥
रज ढक्किय सिसुमार[27] मेरु अवयव[28] मुररक्किय[29] ॥

---

१ वरुण के अंश से पैदा हुआ बलवान् २ दूसरा सुसेण ३ ब्रह्मा का पुत्र जाम्बवान् ४ मेघ अथवा इन्द्र का पुत्र शरभ ॥ ११ ॥ ५ देवता ६ सर्प ७ किन्नरों से ८ समूह ९ यक्ष १० इनको आदि लेकर ११ उत्पन्न हुए ॥ १२ ॥ १२ युद्ध की इच्छा करनेवाले १३ छोटे भाई सहित रामचंद्र १५ पीताम्बर को १४ दृढ बांध कर १७ सृष्टि और १८ चर अचर को १६ चलायमान करके चले १९ भय २० डरकर ॥ १३ ॥ यद्यपि २१ चींटी पर २२ सिंह कोप नहीं कर जानता तद्यपि २३ सहज से चलने में भी २४ उस चींटी के स्वास खिचते हैं ऐसे ही रामचन्द्र के सहज चलने से रावण के स्वास खिचत हैं. शिव की २५ पलें खुलगईं और विना ही २६ मेघ के गर्जना का घर्घराट शब्द होनेलगा २७ शिशुमार चक्र रज से ढकगया और मेरु पर्वत के २८ अंग २९ मुरक गये

उच्छलि अमेय सिंधुन सलिल लोकन छलि छिरकन लगिय॥
रघुनाथ चढत भूतल दराकि करकि अंड चटचट्ट किय।१४।
डलटि सेस सिर सहँस१०००सहँस दुव२०००वटि उर चट्टिय
दव्वत दंतुलि दारि पुहवि सूकर कनपट्टिय ॥
कमठ पिट्ठि कंडनिय धसत किरि पय चउ४मूसल ॥
अवनि दरारन उमँगि जंत्र जिम कढत गर्भजल ॥
मृतगति गिरंत दिग्गज विमद पलट देत दुस्सह पवन ॥
साँवरो चढ्यो व्है किम सहज भनत कल्प चहुदह१४भवन॥१५॥
डरि डुंगर डगडगत जगत लगलगत पत्र जिम ॥
दाव दगत भिरि ग्राव ताव झगझगत उव्व तिम ॥
दुर्द्दम रज दिसदिसन करत कर्द्दम कासारन ॥
निखिल धाम नीहार अतिग भद्दव आसारन ॥
जन अजक भूमि भौंनन भजत मोन चरन हुव थिर न मत॥
करता चढ्यो सु नड्डुल कहत बहत देवलिपिलेवव्रत।१६।

समुद्रोंसे अमाप जल उछलकर बाहर बढकर लोकों को छिड़कनेलगा इसप्रकार रामचंद्र के चढने से भूमि फटकर ब्रह्मांड चटचट शब्द करने लगा ।१४। शेषके हजार मस्तक उलटकर दो हजार जिव्हा उर चाटने लगीं और दन्तुलि दबाकर भूमि से सूवर(वराह)की कनपट्टी फटनेलगी, कमठ की पीठ ऊखल के समान हो कर उसमें मूसल के समान सूवरके चारों पग घुसनेलगे, भूमिके दरारोंसे भीतर का जल फुहारोंके समान उबकने लगा, दिशाओं के हाथी मुर्दों के समान गिर नेलगे और पवन दुस्सह पलटा करनेलगा, रामचन्द्र ने चढाई की सो कैसे सहज होसकता था चौदह लोकों का प्रलय होना कहने लगे ॥ १५ ॥ पर्वत हिल- ने लगे संसार पत्ते के समान कांपने लगा, पत्थर से पत्थर की रगड़ लगकर वड वाग्नि के समान अग्नि जलनेलगा, कठिनाई से मिटसके ऐसा रज दशों दिशा में बढकर तालावों में कीचड़ करने लगा, सम्पूर्ण बर्फ के स्थानों की अत्यन्त गति बढकर भादवा के मेघ के समान बहनेलगे, भूमि के भवनों में मनुष्य अचैन भोगनेलगे और मौन धारण करनेवालो के मत भी स्थिर नहीं हुए. वासुदेव चहुवान को अयोध्या के राजा कुंडक का नड्वल नामक पुरोहित कहता है कि संसार का कर्ता चढा सो मानों देवलिपि को लीपने का नियम धारण करता है अर्थात् पर्वत जलआदि की दैवकृत मर्यादा मिटाता है ॥१६॥

पय कुलाल घटपिंड चिपत पब्बय दल चल्लत ॥
बदरीबन जनु बट्ट मही झालन हलमल्लत ॥
तरुन लुंबि ताजि तरुन बदत बानर बुंकारव ॥
आनूपक मारव न मचत आनूपन मारव ॥
मिटि मिटि मवास पद्धर परत त्रास असह जितातित तचिग॥
पुहवी नटेस फन पट्टरिय नियत नच्च तद्दिन नचिग ॥१७॥
छार गिरत जलछार निखिल खलभलत निपानन ॥
कतिक अल्प गिरि करभ भजत मुखरुख मग भानन॥
गड्ड कड्डत गहिर गरद कड्ड थल गड्डत ॥
तरु उड्डत बहु तुड्डि छदन छत्ति सु गेहन गत ॥
पत्थर न तत्थ पब्बय परत गिरि उच्छित तँहँ ग्रावनन ॥
रघुनाथ कटक मारव पवन पलटावत लघुदिग्घपन ॥१८॥
सरदकाल जिम सलभ प्रचुर तप अंत पिपीलक ॥

कुम्हार के घड़े का पिंड फिरते हुए चाक पर चिपजाता है इसीप्रकार सेना के चलने से फिरती हुई भूमि पर पर्वत पग चिपाते हैं. और मानों बदरीवन के मार्ग में भूमि झोले खाकर हींडती है. वृक्षों के लटक लटक कर उनको छोडते हुए बन्दर बुंकार शब्द करते हैं जिससे समुद्र उछल कर जलमयी देशों को जलहीन और जलहीन देशों को जलवाले करते हैं. विकट स्थानों में चोरों के घर हैं सो मिटकर सीधे होते हैं और जिधर देखें उधर दुस्सह त्रास के ताव से सकुचते हैं, भूमि रूपी नटेस (नाच करनेवालों में ईश) शेष नाग के फणों रूपी पटड़ी पर उस दिन निरन्तर नाच नचा ॥ १७ ॥ रज उडकर खारे पानी (क्षारसमुद्र) में गिरती है जिससे सब जलाशय खलभला गये और कितने ही छोटे पर्वत जिधर मुख होवे उधर ही ऊँटों के समान विना ज्ञान भागनेलगे और जो भूमि में गहरे गडे थे वे बाहर निकल आते हैं और जो बाहर के स्थल हैं उनको वह रज गहरे गाड देती है, बहुत से वृक्ष तूट कर उडते हैं उनके पत्ते घरों की छतों पर जाते हैं, जहां एक भी पत्थर नहीं तहां पर्वत पड़जाते हैं और जहां ऊँचे पर्वत हैं तहां पत्थर भी नहीं रहते इसप्रकार मारवाड़ के पवन के समान रामचन्द्र की सेना छोटे और बडेपन का पलटा करती है (मारवाड़ में जब पवन चलता है तब रेत उड कर समभूमि में तो ऊँचे टीलेहोजाते हैं और जहां ऊँचे टीले होते हैं वे उडकर समभूमि होजाती है) ॥ १८ ॥

पाउस मसकन प्रसर मुदिर सीकर उन्मीलक ॥
पट्पद पद्य प्रसार अतुल रजकन अवनीतल ॥
फबत दाव फुल्लिंग विपिन तरु तरुन फुल्ल फल ॥
अगनित समूह कपि१रिच्छ२इम बढत जंग इच्छत वलिय॥
रघुवंसतिलक रावन तरफ कटक[1] कुंच दरकुंच किय॥१९॥

(दोहा)

कीस संग दुव लक्ख२००००० करि, ईश्वर[2] पठयो अग्ग ॥
नील चल्यो तब हुकम नत, मुदित परक्खन मग्ग ॥२०॥
सब अनीक[3] जुत पिट्ठि सन, हले हंस[4]कुल हंस[5] ॥
बैठे कहुँ कहुँ अमित बिभु[6], उभय[7]पवनसुत अंस ॥२१॥
कति बानर नभगति[8] क्रमत, कति उत्पंथ[9] अतिकाय ॥
कति पथ राघव संग करि, विचरत भक्ति बढाय ॥ २२ ॥
सह्य[10] सिलोच्चय[11] लांघि सब, सानुज राघव सेन ॥
पहुँचे छार[12]मितद्रु पर, तरि मारन रन तेन ॥२३॥
उत मारुति[13] लंका अनल, दै आयो प्रभुदूत ॥
तदनंतर[14] दसकंध तँहँ, कियउ मंत्र साकूत[15] ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

कियउ मंत्र दसकंध सबन इक्कत करि संसद[16] ॥
कवन कज्ज अब कहहु दहन[17] दैगो कपि दुर्मद ॥

शरद ऋतु के अन्त में टीडियां बहुत होती हैं इसीप्रकार ग्रीष्म ऋतु के अंत-में चींटियां, वर्षाकाल में मच्छरों का फैलाव, और मेघ की बुन्दों का विकाश, और छप्पय छन्द का प्रस्तार, भूमितल पर विना गिनती के रजकण, अग्नि के कण, वन के वृक्ष और वृक्षों के फल फूल अगणित होते हैं इसीप्रकार बन्दर और रीछों के अगणित समूह युद्ध की इच्छा करते हुए बढे १ सेना का ॥१९॥ २ ईश्वर नामक बन्दर को ॥ २० ॥ ३ सेना सहित पिछाड़ी से ४ सूर्यवंश के ५ सूर्य चले ६ व्यापक (रामचंद्र और लक्ष्मण) ७ हनुमान् के कंधे पर ॥ २१ ॥ ८ आकाश में चलते हैं ९ उप्रवट (विना मार्ग) ॥ २२ ॥ १० सह्य नामक ११ पर्वत को लांघ कर १२ क्षारसमुद्र पर ॥ २३ ॥ १३ हनुमान् ने १४ जिस पीछे १५ अभिप्राय सहित ॥२४॥ १६ सभा में १७ अग्नि

मातामह[1] तव माल्यवान[1] बलि[2] अनुज बिभीखन[2]॥
कुंभकरन[3] इन कहिय नाथ रक्खहु सीता नन ॥
सचिवहु प्रहस्त आदिक सकल यहहि करन लग्गे अरज॥
मन्त्री न खल सुन भजत मिलहि कबहु चर्म मृदुपन करज[3]।२५।

(दोहा)

परिखँद[4] दूजी[5] बेर पुनि, करन मंत्र खल कीन ॥
जबहु दिवावन जानकी, अक्खिय प्रनीति अधीन ॥ २६ ।

आसय खलको जानि अब, मौन रहे सब मानि ॥
वहहि बिभीखन किय अरज, तीजी बेरहु तानि[6] ॥ २७ ॥

सुनत सु दब्यो सक्रजित[7], तराजि पितृव्यक[8] तत्थ ॥
कौणपराज[9]हु कोप किय, महत बिभीखन मत्थ ॥ २८ ॥

(षट्पात्)

कुलकुठार खल कुटिल बदत[10] जसहानि बिभीखन ॥
जब जब संसद जुरत गिनत तब तब सब सीखन[11] ॥
मिल्यो ध्रुव[12]हिँ रिपुमाँहिँ जत्थ तापस[13] तँहँ जावहु ॥
मुख मेचक तव मंद[14] बहुरि नन हमहिँ बतावहु ॥
तब निजप्रधान मालीतनय[15] बिहग[1] अनल[2] संपाति[3] बलि ॥
अरु सरभ[4] जुत्त रावन अनुज चल्यो गगन प्रभु सरन चलि२९
इम द्रुत[16] अर्णव[17] वार वियत[18] मग आय बिभीखन ॥
प्रभु दल अंतिक पहुँचि[19] संनति अक्खिय कपिपति सन ॥

१रावण का नाना २पुनि ३कोमल नखों से भागते हुए की चमड़ी नहीं मिलसकती।२५।४सभा ५विशेष नम्रता करके ॥२६॥६खींचकर ॥२७॥७मेघनाद ने विभीषण को दबाया ८ काका को ९ राक्षसराज (रावण) ने ॥ २८ ॥ हमारे यश की हानि होवे ऐसा १० बोलता है और जब जब सभा जुड़ती है तब तब सब ११ शिक्षा गिनाता है १२ निश्चय ही १३ जहां पर तपस्वी (रामचन्द्र) है तहां जा और हे मूर्ख तेरा १४ कालामुख फिर मत बता १५माली नामक राक्षस का पुत्र ।२९।१६शीघ्र१७समुद्र के इधर१८आकाश मार्ग से आया और रामचंद्र की सेना के समीप पहुंच कर१९नम्रता सहित सुग्रीव से कहा।

रामसरन में रंक भयो रावन लघुभ्राता ॥
अरज निवेदहु अप्प त्रास टारहु बनि त्राता ॥
कपिराज सुनत विन्नति करि रु राम हुकम चाहत रहिय॥
करतार निकट कतिपय कपिन करि परक्ख लावन कहिय॥३०॥
बाततनय तहँ बदिय विनत यह साधु बिभीखन ॥
देख्यो सिक्खहि देत उतहु जननी कहँ अप्पन ॥
कहा परख प्रभु कहिय सजव आनहु सरनागत ॥
राह कहुँ न तस रुद्ध जदपि अंतरछल जागत ॥
आन्यों सु कपिन होवत हुकम हिय लगाय प्रभु मिलि मुदित॥
कपिसमज मध्य लंकेस कहि अभय दिन्न दुर्लभ उचित॥३१॥
जदिन सयन१तृनतल्प चरन बाहन२सपत्र सुन ॥
छदन३मृदुच्छद छल्लि असन४सुमबान५सलाटु२न ॥
पत्थर खर पारीढ६थाल७पत्रावलि पावन ॥
उटज खास आवास७पास जामिक८रोपासन ॥
विरहग्गि भोग उपहार९बिधि पसुन सभ्य संगम१०दियउ॥
उपपन्न अरथ राघव तदिन कनक ढंग बितरन कियउ॥३२॥

(दोहा)

---

१ रक्षा करनेवाला होकर २ रामचंद्र के पास कितनेक बंदरों ने कहा कि परीक्षा करके विभीषण को लाना चाहिये ॥ ३० ॥ हनुमान ने कहा कि विभीषण श्रेष्ठ और विशेष नम्रतावाला है लंका में भी सीता माता को अपनी शिक्षा ही देते देखा है. रामचंद्र ने आज्ञा दी कि शरण आये हुए की क्या परीक्षा है शीघ्र ले आओ. उसके मन में छल है तो भी उसका मार्ग मत रोको. ३ बंदरों के समूह में (पशुओं के समूह को समज कहते हैं "पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ॥" इत्यमर)॥३१॥ जिसदिन तृणों की सेज, बिना पगरक्खी (उपानत्) के चरण ही बाहन, भोजपत्र की छाल ही वस्त्र, पुष्प और गीले फल ही भाजन, तीखे पत्थर ही आसन, पत्रावलि ही पवित्र थाल, पर्णशाला (पत्तों से छाईहुई झोंपड़ी)ही खासामहल, पास में धनुष ही पोहोराइत, विरह की अग्नि ही भोग की सामग्री, सभासदों में पशुओं का साथ था तिसदिन रामचन्द्र ने अपने साथी (मित्र) को

पुनि लक्खन सन अक्खि प्रभु, उचित न्हान करवाय ॥
कौणप[1]कै अभिसेक किय,लंका दै हित लाय ॥३३॥

(षट्पात्)

अक्खिय पुनि अखिलेस कलह[2]मैं हनि दसकंधर ॥
तोकँहँ लंका तखत धरौं प्रभु करि सर्वोपर ॥
है मोकँहँ त्रय ३ भ्रात सपथ[3] नहिं वितथ बिभीखन ॥
इहिं अक्खिय असु रहहिं करहिं तोलौं किंकरपन ॥
त्रि३गुनेस बैठि कुसकट तदनु राह उदधि जोवत रहिय ॥
वित्तिय त्रि३जाम नायउ बनधि कुप्पित बहि सेसहिं कहिय।३४।
संतत छमा सौमित्रि[4] करत निंदा अब अप्पन ॥
यातैं सर१धनु२आनि मोहि अप्पहु जल मप्पन ॥
सुनत चाप१सर२सेस दये जोरे जगनायक ॥
हुव त्रि३भुवन हाकार देखि आकृति भयदायक ॥
फटि नीर इक्क१जोजन अवधि कांति[5] हरित नीराधि कढ्यो॥
रुचि[6] दिव्य बसन १ भूषन २ धरत पायन परि हायनँ पढ्यो॥३५॥
भूरि रतन करि भेट छमहु अक्खिय छारोदकँ[10] ॥
सही न जावत समुख अबहु संधितँ[11] सर ओदक ॥
प्रभुके पुरुखन अग्ग मैंहु बिरच्यो करुनामय ॥
अनुगँ[12] धनीको अभय अप्पि मेटहु यह आमय[13] ॥
हो दूर बहुत इम देर हुव कहहु नाथ सुहि अब करौं ॥

सोने का पुर दान किया ॥३२॥ १ राक्षस के ॥३३॥ २ युद्ध में३मुझको तीनों भाइयों की सोगन है कि हे विभीषण यह झूठ नहीं है, विभीषण ने कहा कि प्राण रहैगा तब तक सेवकपन करूंगा. सत, रज, तम तीनों गुणों के स्वामी (रामचन्द्र) जिसपीछे डाभ की चटाई पर बैठ कर समुद्र का मार्ग देखते रहे परन्तु तीन पहर बीत जाने पर भी समुद्र नहीं आया तब क्रोध करके लक्ष्मण से कहा॥३४॥४हे लक्ष्मण निरंतर क्षमा करने से अपनी निन्दा होती है.५हरे रंग की कान्तिवाला समुद्र निकला६दिव्यकान्ति७हाहाकार किया॥३५॥८बहुत९क्षमा करो यह कहा१०क्षारसमुद्र ने११संधान कियेहुए बाण का भय सहा नहीं जाता है१२आपका सेवक हूं सो१३रोग ॥ ३६ ॥

दियहुक्रम सेतु धारहु उदधि धुज्जि कहिय मस्तक धरौं ॥ ३६॥
प्रनत[1] सिंधु इम पिक्खि स्वामि अक्खिय अमोघ[2]सर ॥
तब तिहिं[3] मरुकांतार भेद्य अक्खिय कल्मष[4]भर ॥
तहँ प्रभु मुक्कि पृसत्क[5] भस्म किय देस भयानक ॥
दिय बर बहुरि[6] दयाल थिर सु होवहु सुभथानक ॥
जल मिष्ट हरित तरु बल्लि[7] जुत जीवहु तहँ सब दग्ध[8] जन॥
यह अक्खि सिक्ख[9] सिंधुहि दिय रु रचिय सेतु ताकहँ तिरन॥३७
विश्वकर्म सुत नल१बलिष्ट कपि हुव चितिकारक[10] ॥
सुमति नील२धरि सूत्र बन्यौं सरलत्व[11] विथारक ॥
दैनहार उपहार[12] रह्यो हनुमंत३भक्तिरत ॥
लावन लग्गे और पृथुल[13] पत्थर१तरु२पर्वत ३ ॥
क्रमपुब्ब[14] सेतु पद्धर कियउ जोजन दस१आयत[15] अतुल ॥
चउदह१४प्रमान जोजन रुचिर[16] प्रथम१घस्त्र[17] किय लंब पुल ॥३८॥
दूजे२ दिन सुहि दिर्घ[18] बीस२०जोजन बिसतारिय ॥
इहिं क्रम सन[19] इकवीस२१सु पुनि वावीस२२सुधारिय ॥
बासर पंचम५विक्रात२३जोरि पूरन सत१००जोजन॥
सेतु पृथुल[20] करि सज्ज फैल मंडिय कपि फोजन ॥
कपिराज ताहि परखन हुकम दलौंहि[21] जान आवन दयो ॥
तिहिं हद्द दिखाय रघुकुलतिलक अब पयान आरंभयो॥३९
सुक रक्खस[22] यह सुनत दूत पठयो दसकंधर ॥

१विनीत नम्र २मेरा बाण अमोघ है(खाली नहीं जाता)समुद्र ने कहा कि ३ मरुवन ४ पापों से भराहुआ है जिसको भेदो ५ बाण छोड कर ६ फिर उस वन को वरदिया. ७ वैलों सहित ८ जलेहुए मनुष्य फिर जीवित हो-जाओ ९विदा ॥ ३७ ॥ १०चुणाई करनेवाला ११ सीधेपन को फैलाने (पैमा-यस करने)वाला १२सामग्री देनेवाला १३बडे १४क्रम पूर्वक सेतु को सीधा किया १५ दश योजन (चालीस कोस) चौड़ा १६ सुंदर १७प्रथम दिन में लंबा पुल बनाया ॥ ३८ ॥ १८ लंबा १९ इसी क्रम से २० बडा २१ परीक्षा के लिये सेना को आगे आने का हुक्म दिया ॥ ३९ ॥ शुक नामक २२ राक्षस को

उदधि पार तिहिं आण कटक पिक्ख्यो सु भयंकर ॥
पकरि लयो पहिचानि कपिन छन्नैं तस्कर[1] कहि ॥
कुंच हुकम प्रभु करत चले अब सब उमंग चहि ॥
मारुति[2]अरोहि रघुकुलमुकुट[2]चढि अंगद[3]लक्खन[3]चलिय।
सुग्रीव[1]सहित ए अग्ग हुव इतर[4] पिछि दल उज्झलिय॥४०॥
गगन देव[1]गंधर्व[2]सिद्ध[3]चारन[4]सुम[5] डारत ॥
पहुँचे राघव पार हरिन[1]रिच्छक[2]हलकारत[6] ॥
दलँ[7] मुकाम तँहँ दियउ नाथ रचि व्यूह ऊहनय[8] ॥
निज दल अंगद[1]नील[2]दुव[3]हि रक्खे उर[9] दुर्जय ॥
दक्खिन[2]विभाग रक्ख्यो ऋषभ[1]वाम[3]गंधमादन[1]विदित ॥
सिरभाग[4]अप्प[1]सानुज[2]गहिय थिर कपीस[1]हुव जघन[10]थित॥४१॥

दोहा

कटक कुच्छि[11]द रच्छक करे, जांबवान[1]धुर धीर ॥
प्रथित[12] बेगदरसी[2]प्लवग, बलि सुसेन[3]त्रय[3]वीर ॥४२॥
करि इम व्यूह मुकाम किय, दकनिधि[13] उत्तर दूर ॥
बजत बाद्य लंका बहुल[14], सुनत तत्थ सब सूर ॥४३॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ बीतिहोत्रचहुआणवंशवर्णने बसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिबाहबेला वर्णितबिभाकरवंशबर्द्धकबैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रबिकुक्षि ७ सन्तानशिरोमणिश्रीजानकीजानिचर्य्यायां कृतप्रस्थानर

१ चोर कहकर २ हनुमान् पर चढ़कर ३ लक्ष्मण ४ दूसरे ॥ ४० ॥ ५ पुष्प डालतेहुए ६ बंदरों और रीछों को बढ़ातेहुए ७ सेना का ८ तर्कना और नीति से ९ हृदय के स्थान पर १० कटि (कमर) प्रदेश में ॥ ४१ ॥ ११ कोंख के १२ प्रसिद्ध ॥ ४२ ॥ १३ समुद्र को उत्तरादिशा में दूर छोड़कर १४ बहुत ॥ ४३ ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश को बढ़ानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के बड़े पुत्र विकुक्षि की संतान के शिरोमणि श्रीजानकी के पति (रामचंद्र) के चरित्र में प्रस्थान करके बिभी-

ह्मोराज्याऽभिषिक्तबिभीषणाबद्धवारिधिश्रीरघुनाथपारोत्तरणां सप्त
चत्वारिंशत्तमो४७मयूखः ॥४७॥ आदित एकोननवतितमः ॥८९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पद्धपात्

राम कहिय कपिराज कटक अप्पन प्रबंध किय ॥
सुक अब छोरहु सुनत दूत वह कपिन छोरि दिय ॥
जंपिय तिहिं उत जात वार उत्तरि अरि आगत ॥
सीता देहु कि समर रचहु अनुरूप जत्नरत ॥
पौलस्त्य कहिय चरमाद्रि पर जब रविउग्गम जानिहैं ॥
ध्रुव तबहि साम संसय धरहि प्रथम न हारि प्रमानिहैं॥१॥
इम कहि रावन उभय९सचिव पठये सुक१सारन२॥
कहिय लखहु तुम कटक कवन आसत जयकारन ॥
बिरचि दूत कपिबेस तबहि पत्ते दल अंतर ॥
दुवहि बिभीखन देखि चतुर पकराय लये चर ॥
उन किय सुनाय रामहिं अरज लंकेश्वर पठये लखन॥
प्रभु कहिय पिक्खि जावहु प्रथित बदहु तत्थ ए मम बचन॥

दोहा

षण के राक्षसों का पति होने का अभिषेक करना, समुद्र को बांध कर रामचंद्र का पार उतरने का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४७ ॥ और आदि से निव्यासी मयूख हुए ॥ ८९ ॥

रामचन्द्र ने कहा कि हे सुग्रीव आपन ने सेना का प्रबंध कर लिया इसकारण से अब शुक नामक रावण के दूत को छोड दो. उसने लंका में जाकर १ कहा२शत्रुका आना ३ युद्ध रचो ४ अपने स्वरूप के अनुसार यत्न करने में प्रीति करके ५ रावण ने कहा कि अस्ताचल पर सूर्य का उदय होना निश्चय मान लिया जावे तोभी हमारे सन्धि (मिलाप) में सन्देह ही जानो, पहिले से ही हार नहीं मानना चाहिये ॥ १ ॥ ६ वंदर का स्वांग करके ७ रामचन्द्र की सेना में पहुंचे ८ दूतों (हलकारों) को ६ रामचन्द्र ने कहा कि प्रसिद्ध होकर ही देखजाओ और वहां (रावण से) मेरे ऐसे वचन कहो ॥ २ ॥

रे दसकंध [1]कुमग्गरत, प्रसभ१[2]दर्प२अघ३पूर ॥
जिहिं बल आनी जानकी, सो [4]ब दिखावहु सूर ॥३॥
इम कहि सुक१सारन२उभयर२, दिय [5]छुराय जगदीस॥
लंकापुर तिन आय लहुं, [6]संबोधिय दससीस ॥४॥
जुरे इकट्ठे च्यारि४जँहँ, रघुबर१लक्खन२रारि ॥
[7]सुगल३बिभीखन४ते [8]सलिल, पटकहिं नगर उपारि ॥५॥
सुनत [9]तुंग प्रास्साद सिर, सुक१सारन२लै सत्थ ॥
चढि रावन बुल्ल्यो चवँहु, इक१इक१को को [10]अत्थ ॥६॥

पट्पात

सुनि सारन क्रम कहिय कटक अग्गैं [11]कंपिकुंजर ॥
सत सहस्त्र१०००००जुत्थप समेत यह नील१[12]धुरंधर ॥
वाहुन [13]कुंपित बजाय पुहवि [14]लंगूल प्रहारत ॥
जो अंगद२जुवराज [15]निनंद यह दिसन निकारत ॥
सो एह जुत्थ दसकोटि१०००००००सह निडर सेतु करतार नल
यह स्वेत४कोटि दससत१००००००००००अधिक,
बसू लक्ख८०००००प्रेरक प्रबल ॥७॥
नदिय गोमतिय निकट रुचिर पब्बय [16]संरोचन ॥
ताको पति अतितेज कुमुद५यह चहत रुप्परन ॥
[17]पृथुललोम जिहिं पुच्छ विदित बहुरंग बिराजत ॥
[18]चंडप्रकृति यह चंड६सहँस लक्खन१०००००००दल साजत
यह सह्य१सुदर्सन२विंध्य३अरु कृष्णा४[19]अचल सासन करत॥
सोरंभ७दिग्घकेसर दुसह [20]कपिलकांति धावहिं धरत ॥८॥

१कुमार्ग में प्रीति रखनेवाला २हठ ३घमंड और पाप से पूर्ण ४अब॥३॥५शीघ्र ६रावण को समझाया॥४॥७सुग्रीव ८जल में ९ऊंचे महल के ऊपर १०कहो॥५॥६॥ ११हाथी के समान शरीरवाला १२धुर को धारण करनेवाला १३ क्रोध कके भुज ठोकता है और भूमि पर १४पूंछ को पटकता है सो १५ नाद ॥ ७ ॥ १६संरोचन नामा पर्वत १७जिसकी पूंछ पर मोटे केस हैं १८भयंकर प्रकृति १९पर्वतों पर आज्ञा चलाता है २० पीली कान्तिवाला

(दोहा)

सत१००रुतीस३०लक्ख३०००००००नसहित,औसोयहकपिआहि[1]
लुंचि[2] बिगारन लंककौं, चहत निजहि बल चाहि ॥ ९ ॥

(षट्पात्)

इत बिहार उपटंकि[3] लक्ख चालीस४००००००प्लवगपति[4] ॥
अग[5] साल्वेय अधीस मुदित यह सरभ८महामति ॥
प्लवग लक्ख पंचास५००००००सहित यह पनस९सूरवर ॥
पारियात्र गिरिपाल नदत भेरी[6] जिम दुर्द्धर ॥
जलँनिधि समीप[7] दर्दुर[8] निभ[9] जु सो जुत्थप जानहु विनत१०॥
यह गवय११लक्ख सत्तरि७००००००अधिप गैर[10]कँरुचि दल
मध्यगत ॥ १० ॥

(दोहा)

पर्णासा नदि बिपिनै[11] पति, यह क्रोधन१२कपि अत्थ ॥
उदधि तीर ठड्ढो[12] अडरै[13], सट्ठि लक्ख६००००००दल सत्थ११
वितर्त[14] लूमँ[15] पृथुलोम[16] बहु, अरुन१असितँ[17]२सितँ[18]३पीतँ[19]४ ॥
सहँसन जुत्थप नाथ सो, भट यह तार१३अभीत ॥ १२ ॥
बहुगिरि१ वन२सँरिता३बसत, अमित रिच्छगन आहि ॥
नीलजलद१हव्यासँ[21]२निभ, तिनमैं इनँ[22] सुनि ताहि ॥१३॥
घोररूप रुचि घन सघन, ऋच्छवान गिरिराय ॥
रेवाँ[23]जलपाई खरो, भल्लुकँ[24] धूम्र१४सुभाय ॥ १४ ॥
जांबवान१५यह तस अनुजँ[25], नगँ[26]निभ जुत्थपनाह ॥

१है २तोड़फोड़कर॥८॥९॥३चिहार पदवी (खिताब) वाला ४ बंदरों का पति ५ साल्वेय नामक पर्वत का पति ६ नौबत के समान नाद करनेवाला ७ समुद्र के समीप ८ मेघ के ९ सदृश १० गैरू (रक्तधातु) के समान कान्तिवाला ॥१०॥११वन का पति१२खड़ा १३ निर्भय१४फैलाहुआ१५ पूंछ१६ बहुत मोटे बाल१७श्याम१८स्वेत१९पीले ॥ १२ ॥२० नदियों में २१ अग्नि के सदृश २२ राजा २३ नर्मदा २४ रींछ २५ उसका छोटा भाई२६पर्वत

सुर[1] सहाय जिहिँ हनि असुर, लेह बहुत बर लाह ॥ १५ ॥
इंद्र उपासक[2] अडर इत, डिगे न रन सन डंभ१६ ॥
बंदन[3] जास पिक्खत बहुत, थिर सो यह जयथंभ ॥ १६ ॥

(षट्पात्)

आखंडल[4] सन अग्ग जुज्झि पायो न पराजय ॥
अरु जुत्थप गनईस इक्क१ जोजन बपु उच्छ्रय[5] ॥
ता१हि प्रमित[6] पीनत्व[7] महत सब कपिन पितामह ॥
सो सन्नादन१७एह इतर जासौँ न भयावह[8] ॥
तब भ्रात धनद[9] क्रीडानिलय[10] जंबूगिरि तँहँ जो बसत ॥
गंधर्बसुता१सुचि१जुग२जनित सो यह कपि क्रोधन१८लसत ॥१७॥
बन गज मारक बिदित सहँस इक लक्ख१००००००कपिन सह ॥
सु कपि प्रमाथी१गिरि उसीरबीजक आश्रित[11] यह ॥
मेचकमुख[12] मर्कटन कोटि दस १०००००००० पति बढि कुहत ॥
गोलांगूल[13] गवाक्ष२० सु यह पिक्खहु महँत मत ॥
हनुमानजनक सत१००हेलि[14] छबि कांति सहस खग१मृग२करत ॥
जिहिँ कनकअद्रि[15] जो यह बसत सो केसरि२१अग्गैं संरत[16] ॥१८॥
सिंहन जिम चउ४दंष्ट्र[17] नखर आयुध अति तिच्छन ॥
पावक[18] आभ प्रबीर रहत गिरि मेरु चहत रन ॥
आवृत[19] पिंगल अंच्छि[20] किलक भैरव गिरिकायक[21] ॥
ए रावन तिन्ह ईस सु यह सतबलिय २२ सहायक ॥
आदित्य[22] उपस्थानहिँ करत प्रतिदिन राघव भक्ति पर ॥

के सदृश १ देवताओ की सहाय करके ॥ १५ ॥ २ इन्द्र की उपासना करनेवाला ३ मुख ॥ १६ ॥ ४ इन्द्र से युद्ध करके ५ऊंचा ६उसीमाफिक७मोटापन ८ भय देनेवाला, हे रावण तुम्हारे भाई ९ कुबेर के क्रीड़ा करने के१०स्थान ॥१७॥ ११उसीरबीज नामक पर्वत में रहनेवाले १२ कालेमुख के बंदरों का१३ लंगूर१४सौ सूर्यों के समान छविवाले१५सुमेरु पर्वत में१६आगे चलता है ॥१८॥ १७डाढोंवाले१८अग्नि के समान कान्तिवाला, पीले रंग से१९घिरेहुए २० नेत्रोंवाला२१पर्वत के समान शरीरवाला २२ सूर्य को नमस्कार करते हैं

बुल्लत वकारि मैंही बहुत आहव मम पिक्खहु इतर ॥ १९ ॥

(दोहा)

प्रबल जुत्थ दसकोटि१०००००००० पति, इत ठह्यो गज२३एह ॥
इतर विंध्यवासी अमित, देखहु ए गिरिदेह ॥ २० ॥
कपि इतिमुख सारन१कहै, अब सुक२कहत अनेक ॥
बहु जुत्थप मैंद२४रु द्विविद२५. पिक्खहु ए सुविवेक ॥ २१ ॥
दुव२कुमार सुररूप द्युति, आश्विन जुग२अवतार ॥
कहत एहु लंका कतिक, छिन बिच बिरचहिं छार ॥ २२ ॥
बहु वृंदन संकुन सहित, मपत निठि जिन्ह मान ॥
सचिव तेहि सुग्रीवके, ए इत लेत उडान ॥ २३ ॥
केसरिको जेठो कुमर, यह छेत्रज बलवान ॥
कहियत औरस वातको, है सो कपि हनुमान२६ ॥ २४ ॥
इत जुत्थप जुत्थप अमित, पति सुग्रीव२९प्रवीर ॥
सत१००प्रफुल्ल कांचन कमल, मालाधारक धीर ॥ २५ ॥
कहुँ जुत्थप१संख्या कहिय, पुनि कहुँ जुत्थ२प्रमान ॥
कहुँक व्यक्ति३घटि बढि कहुँक.पुव्व प्रमिति पलटान४॥२६॥
खर आदिक मारक खरे, ए रविकुलरवि राम १ ॥
जिनसौं दक्खिन बाहु जिम, ए लक्खन२अभिराम ॥२७॥
सोदर इत यह स्वामिको, रुप्यो बिभीखन१संग ॥

१ मेरे युद्ध को दूसरे देखो २ और भी विंध्याचल मे वसनेवाले ३ इत्यादि कपियों के नाम सारण नामक दूत ने कहे ४ विचार पूर्वक ५ देवताओं के स्वरूप की सी क्रान्तिवाले ६ दोनों अश्विनीकुमारों के अवतार ७सौ खर्बे का एक शंकु होता है ८ माप (गिनती) ॥ ९ केसरि की स्त्री में १० पवन के वीर्य से पैदा हुआ ॥ २४ ॥ ११ सोना के फूलेहुए सौ कमलों की माला को धारनेवाला ॥ २५ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि वाल्मीकि रामायण में कहीं तो यूथों की संख्या कही है और कहीं यूथपतियों का प्रमाण दिया है और कहीं १२ व्यक्ति पृथक् (आत्मा) घटबढ कही है और कहीं प्रथमके हीहुई १३गणना का फिर पलटा करादिया है ॥२६॥ १४सूर्यकुल के सूर्य ॥२७॥ १५हे स्वामी (रावण) यह१६आपका छोटा भाई

अप्पहु प्रभु सीता इनहिं, जुज्झहु जंग उमंग ॥ २८ ॥
सत्र सुजस तिनसौं सुनत, सारन१सुक२निकसाय ॥
कुटिल महोदरसौं कह्यो, रक्खस कुल अधिराय[3] ॥ २९ ॥
इतर[4] बुलावहु दूत यहँ, तिन्ह हम भेजहिं तत्थ ॥
सुनत महोदर टेरि सब, अर[5] बुल्ले चर[6] अत्थ ॥ ३० ॥

(षट्पात्)

दूत नाम सद्दूल[7] सु करि तिन बिच अग्रेसर ॥
कहि पठये तुम कटक तक्कि[8] आवहु सुबेल[9] तर ॥
बदलि रूप तब बेग दूत प्रबिसे राघव दल ॥
परखि बिभीखन पुनिहु खिज्जि पकराय लगे खल ॥
राघव छुराय पठये बहुरि हाजरि दससिर अग्ग हुव ॥
सद्दूल कहिय मैथिलसुतौं[10] देहु नतो नहि जेय[11] दुवर ॥ ३१ ॥

(दोहा)

पुनि रावन सद्दूल[12] प्रति, मंद[13] कहिय क्यौं मूक[14] ॥
कोन कोनके पुत्र कहि, कपि[15]१मर्कट[16]२भल्लूक[17]३ ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

सुनि रावन आदेस[18] कहिय सद्दूल जोरि कर ॥
ऋक्षराज कपिकेर सुवन[19] सुग्रीव१कपीश्वर ॥
जांबवान२।१अरु धूम्र३।२रिच्छ[20] ए दुव२गद्गद सुत ॥
तिम केसरि४।१अरु तार५।२जीव[21] अंगज बल संजुत ॥
ससधर[22] तनूज दधिमुख६सुमति कपि सुसेन७धर्मज[23] कहत॥

१इनको सीता देदो जो २ युद्ध करने की उमंग है तो लड़ो ३ राक्षसों के कुल के स्वामी ने ४ दूसरे ५ शीघ्र बुलाये ६ हलकारों को ॥ ३० ॥ ७ शार्दूल को अग्रणी करके ८ देख आओ ९ सुवेल नामा पर्वत के नीचे १० सीता को ११ विजय करने में आवें ऐसे नहीं हैं ॥ ३१ ॥ १२शार्दूल से१३मूर्ख (रावण) ने कहा कि१४चुप क्यों है१५बंदर १६ लंगूर १७रींछ, किस किस के पुत्र हैं सो कहो ॥ ३२ ॥ १८आज्ञा सुनकर१९पुत्र २०रींछ २१बृहस्पति के पुत्र २२ चन्द्रमा का पुत्र २३ यमराज का पुत्र

दुर्मुख८।१रु बेगदर्शी९।२सुमुख१०।३मृत्युतनय ए त्रय३महत३३

दोहा

पंच५कृतांततनूज पुनि, इतरन नाम उपेत ॥

गज११।१रुगंधमादन१२।२गवय१३।३,सरभ१४।४गवाक्ष१५।५समेत३४

ज्योतिर्मुख१६।१अरु स्वेत१७।२जुग२,प्लवंग प्रभाकर पुत्त ॥

बसुसुत दुवरविक्रांत१८।१कपि, जानहु दुर्धर१९।२जुत्त ॥३५॥

षट्पात्

बरुनपुत्तदूजो२सुसेन२०।१अरु हेमकूट२१।२दुव२॥

तीजो३बहुरि सुसेन२२सुकपि मुनिवर मरीचि सुव ॥

दूजो२सरभ२३उदार विदित परर्जन्य तनै बर ॥

अपर गंधमादन २४ कुबेर अंगज जय उद्धर ॥

बज्रांग२५नील२६ मैंद२७।१रुद्विविद२८।२

अंगद२९नल३०सुग्रीव३१यह ॥

पवमाने२५अनल२६आश्विन२७।२८वृषा२९

बिश्वकर्म३०रवि३१सुत असह ॥३६॥

दोहा

उचित प्रश्न सब आक्खि इम, दससिर सन सद्दूल ॥

भियँ लिय राम अनीकभव, हिय खलकै दिय हूल॥३७॥

॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ मालिणी ॥

इअ तह वि सुणन्तो दूअसद्दूलवक्कं

१मृत्यु के पुत्र२यमराज के पुत्र३सहित ४ बन्दर ५ सूर्य का पुत्र ६ बसु देवता के पुत्र॥३४॥ ३५ ॥ ७ पुत्र ८ इन्द्र का पुत्र ९ दूसरा गंधमादन १० कुबेर का पुत्र ११ दुर्द्धष, हनुमान १२ पवन का, नील १३ अग्नि का, मैन्द और द्विविद १४ दोनों अश्विनीकुमारों के, अंगद १५ इन्द्र (इन्द्र का पुत्र बालि और उसका पुत्र अंगद) का अंश १६ नल विश्वकर्मा का और सुग्रीव सूर्य का पुत्र है ॥ ३६ ॥ रामचन्द्र की सेना से पैदा हुआ१७भय लेकर दुष्ट (रावण) के हृदय में शूल लगाई ॥ ३७ ॥

मालिनी ॥ इति तत्रापि शृण्वन् दूतशार्दूलवाक्यं ज्ञातुमरिसैन्यं यातुधानानां नाथ । अनन्तर गिरिसुवेले शूर सवेष्टयमानं रघुकुलकलशं तं सानुजं स. अश्रौषीत्॥३८॥

मुणिउ मरिसइ रणं जाउहाणाण णाहो ॥
णवरि गिरिसुवेले सूरसंवेल्लमाणं,
रहुउलकलसं णं साऽणुअं सो सुणीअ ॥३८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव६८बेला६८।१विवाहबेलावर्णनविषयविभाकरवंशावितननवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु६पट्टपपुत्रविकुक्षि७कुलकलशश्रीवैदेहीवल्लभचरित्रे व्यूढबलरामशुक१सारण२शार्दूल३ऽऽदिमोचनतत्प्रतिगमनयूथपयूथगणनानिगदनमष्टचत्वारिंशत्तमो४८मयूखः ॥४८॥ आदितो नवतितमः ॥९०॥

शुद्धप्राकृतभाषा॥उवजाई

तदो खलो आदरिऊण बिज्जूजीहं निसाडं कुहएण तेण
तं जाणइं जूरविउं स सीसं कारीअ मायामइअं पहुस्स॥१॥
तहा व चावं:ससरं कलावं रणिम्माविऊणं सरिसं दहासो।
घेत्तूण जाहीअ असोअरण्णं रामं हयं जाणइ जाणइत्ति ॥ २ ॥

उससे पीछे राक्षसराज रावण ने शत्रु सेना का वृत्तान्त जानने के लिये मुख्य दूत की बात सुनते हुए सुवेल पर्वत पर स्थित शूरवीरोंको साथ लियेहुए छोटे भाई लक्ष्मण सहित रघुकुल कलश श्रीरामचन्द्र को सुना ॥ ३८ ॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्य के वंश को फैलानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलस श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में सेना का व्यूह रचकर रामचन्द्र का शुक, सारण, शार्दूल आदि को छोड़ना और उनका पीछा जाकर यूथपतियों के यूथों की गिनती कहने का अड़तालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४८॥ और आदि से निव्वे मयूख हुए ।९०।

तब दुष्ट रावण ने विद्युज्जिह्व राक्षस का आदर करके कपट से जानकी को ठगने के लिये उस राक्षस द्वारा प्रभु रामचंद्र का बनावटी मस्तक बनवाया ।१। इसीप्रकार बाण सहित सरीखा धनुष और भाथा बनवाकर, सीता रामचंद्र को

उपजातिः॥ तदा खल आदृत्य विद्युज्जिह्वं निशाटं कुहकेन तेन। तां जानकीं वञ्चयितुं सशीर्षमकारयन्मायामयं प्रभोः ॥१॥ तथैव चापं सशरं कलापं निर्माप्य सदृशं दशास्यः । गृहीत्वाऽयादशोकारण्यं रामं हतं जानीयाज्जानकीति ॥२॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

सीता ढिग दससीस मत्थ डारिय मायामय ॥
कहिय राम सह कटक[1] हन्यौं लखि चलहु मसालय[2] ॥
ताकै धनु१तूणीर२पराखि[3] प्रत्यय[4] अब पावहु ॥
महिखीपन[5] भजि मोहि धरहु भय बिबिध बिहावहु[6] ॥
जननी सु सुनत परि दुखजलधि[7] कैकेई गरहन[8] करिय ॥
मूर्छित मुहूर्त[9] गिरि दंड मित[10] सुधि बहोरि कछु अनुसरिय॥३।१।

(दोहा)

सुंधि सिरहिँ लखि चिन्ह सब, लग्गी करन बिलाप ॥
बुल्ली मंगत मैंहु बध, देहु देहास[11] दुराप[12] ॥ २ ॥

(पादाकुलकम्)

कहिय तत्थ कोउक[13] अव्यादन, सुनी प्रहस्त चहत कछु प्रभुसन[14]॥
यह सुनि उठि रावन गृह आयो, बल[15] अप्पन रन सज्ज बनायो॥३॥
पिहित[16] भये कृत्रिम[17] सिर१सर२धनु३,जनक[18]सुताइतचाहिय तजन तनु[19]॥
निसाचरी सरमा अभिधाना[20], निपुन कही हितकी तहँ नाना ॥४॥

(दोहा)

सरमा नाम निसाचरी, मित्र करी जगमाय[21] ॥
तानैं बिबिध बिसास दिय, कहि अजेय[22] रघुराय ॥ ५ ॥

मरेहुए जान लेवें इस प्रयोजन से रावण उन धनुष आदि को लेकर अशोकवाटिका को गया।२।१रामचंद्र को सेना सहित मारडाला जिसको देखकर २मेरे घर में चल३भाथा को परख कर अब४विश्वास(सुबूत)पाकर५राणीपन धारण कर६छोड दे७सीता यह सुनकर दुःख के समुद्र में पड़ कर कैकेयी की८निंदा करनेलगी ९ दो घड़ी तक दंड के१०समान गिरकर फिर कुछ चेत पाया ॥३॥ ११ हे दशास्य (रावण) १२ दुर्लभ ॥ ४ ॥ उस समय किसी १३ राक्षसी ने आकर रावण से कहा कि प्रहस्त १४ आप से कुछ सुना चाहता है १५ सेना को ॥ ३ ॥ १७ बनावटी मस्तक, बाण और धनुष १६ अंतर्धान होगये १८ सीता ने १९ शरीर छोडना चाहा २० सरमा नामक राक्षसी ने ॥ ४ ॥ २१ सीता माता ने अपनी मित्र बना ली थी २२ रामचन्द्र किसीसे विजय नहीं

रक्खस[1] यह माया रचिय निहचै प्रभुवध[2] नाँहिं ॥
जो तू चाहत तो सबन, आऊँ लखि ढिग[3] आँहिं ॥ ६ ॥
बात[4] १ गरुड़२मम बेगकौं, सुंदरि[5] पहुँचि सकैं न ॥
जानहु मामक[6] जानकी, गमन अनर्गल[7] गैंन[8] ॥ ७ ॥
सीता[9] अक्खिय हे सखी, पहिलैं रावन पास ॥
जाय खबरि आनहु सजव[10], कहा करत क्रव्यास[11] ॥ ८ ॥
तब सरमा उडि नभ पिहितैं[12], गई दसानन गेह ॥
पहुँची सब सुनि तत्थ पुनि अक्खी सुनि सुभ एह ॥ ९ ॥
रावन माता१कहि रही, तोहि दिवावन तत्थ ॥
वृद्ध[13] अमात्य अविद्ध१हू, सुँहि[14] अक्खी हित सत्थ॥ १० ॥
मन्त्री नैंक न मंदमति, यातैं सुभ अनुमान ॥
राघव जो नहि तो रचत, बैंलि[15] किम मंत्र विधान ॥११॥

(षट्पात्)

मातामह[16] इत माल्यवान दससिर संबोधियँ[17] ॥
असकुन होत अनेक देयँ[18] सीता जानहु जिय ॥
तुष्ट कहिय कैंति[19] दिनन रंगैं[20] पिक्खहु मृत[21] रामहिँ ॥
जावहु गृह तुम जरठ[22] करत प्रेरैन[23] बिनु कामहि ॥
इम तिहिँ विडारि[24] मंत्रिन उचित सज्ज करिय गढ१कोट२सब॥
प्रेरिय प्रहस्त१प्राँची[25]१ककुभ[26] तोरन पुर रखवार तब॥१२ ॥

(पादाकुलकम्)

कियेजावें ऐसे हैं ॥ ५ ॥ १ राक्षस ने २ रामचन्द्र का बध नहीं हुआ ३ पास ही हैं सो देख आऊं ॥ ६ ॥ ५ हे सुन्दरि! मेरे वेग को ४ पवन और गरुड़ भी नहीं पहुंचसक्के ६ मेरा जाना ८ आकाश में ७ विना रोक के है ॥ ७ ॥९सीता ने कहा१०शीघ्र११राक्षस ॥ ८ ॥१२छिपकर ॥ ९ ॥१३ बूढे कामदार ने१४रावण की माता ने कही वही बात ॥ १० ॥१५ फिर सलाह क्यों करता है ॥ ११ ॥ १६ रावण के नाना ने१७रावण को समझाया १८ देने योग्य १९ कितनेक दिनों में २० युद्धभूमि में २१ रामचंद्र को मराहुआ देखना २२ बुड्ढा २३ विना प्रेरणा किये ही कार्य करता है २४ उसको निकाल कर २५ पूर्व २६ दिशा के शहर के दरवाजे की रक्षा पर ॥ १२ ॥

महापार्श्व१अरु दुष्ट महोदर२, दक्खिन२द्वार पठाये दुद्धर ॥
जिम पच्छिम३गोपुर वासवजित १,
अप्प १ रु सुक २ सारन ३ उत्तर ४ इत ॥ १३ ॥
विचके गुल्म५तथाहि महावल, खल रच्छक किय बिरूपाक्ष१खल
यह प्रबंध पिक्खन पुर अंतर, विसे बिभीखन सचिव छल्लकर॥१४॥
अंडज वनि वायकर्ण लखि आये, सज्ज यथाक्रम सब्ब सुनाये ॥
रावन अनुज सुनि सु सबरीती.प्रभु सन कहिय वढाय प्रतीती१५
इमहि प्रबंध राम मन आयो, पूरव१.गोपुर नील१पठायो ॥ ॥
अक्खिय दव्वि प्रहस्तहिं आहव, मारहु जदपि सहाय उमाधव॥१६॥
दक्खिन१द्वार लरहु अंगद१इत, मूर वरुनदिस३द्वार पवनसुत१ ॥
उत्तर४द्वारमैं१रु लक्खन२इत, हनि हैं खलहि वीररस संहित ॥१७॥
रिच्छराज१कपिराज२विभीखन३, मध्यगुल्म५ए लरहु महाखल ॥
सेना जुत इम जाहु वीर सब, इक्क नियोग सुनहु इतरहु अब ॥१८॥
नरवपु कवहु कोहु धारहु नन, ज्यों पहिचानैं हमहिं पुरायजन ॥
लरिहैं नृवपु सत्त७मैं१लक्खन२,रावनभ्रात३सचिवचउ४ए७रन१९

दोहा

१ शहर के दरवाजे पर २ इन्द्रजित को ३ आप (रावण) ॥ १३ ॥ ४ बीच की सेना में ५ रक्षक ६ घुसे ॥ १४ ॥ २६ ॥ ७ पक्षी बन कर ८ सेना की रक्षा करनेवालों को देख आये ९ शत्रु जिस क्रम से तैयार हुए सो क्रम पूर्वक विभीषण को सुनाया ॥ १५ ॥ १० पूर्वदिशा के शहर के द्वार पर ११ युद्ध में प्रहस्त को दबाकर १३ महादेव राक्षसों की सहाय पर है १२ तो भी मारना ॥ १६ ॥ १४ शीघ्र १५ पश्चिम दिशा के द्वार पर १६ हनुमान १७ उत्तर के द्वार पर मैं (रामचंद्र) और लक्ष्मण १८ वीर रस सहित ॥ १७ ॥ १९ जाम्बवान २० सुग्रीव २१ बीच की सेना अथवा रक्षा के अर्थ जुदी रक्खी हुई (रिजर्व) सेना में अर्थात् जिधर विशेष भार पड़ाहुआ देखै उधर ही जाकर रक्षा करनेवाली सेना में २३ एक दूसरी २२ आज्ञा भी सुनो ॥ १८ ॥ युद्ध करते समय मनुष्य का २४ शरीर कोई मत धारण करना जिस कारण से २५ राक्षस हमको पहिचान लेवें २६ मनुष्य शरीर से सात जने लड़ेंगे जिनमें मैं (रामचंद्र) लक्ष्मण, विभीषण और विभीषण के चारों मंत्री ॥ १९ ॥

कहि इम प्रभु लंका निकट, बर लखि सैल[1] सुबेल ॥
रघुपति तँहँ रजनी[2] रहन, मन किय सम्मति[3] मेल ॥ २० ॥

षट्पात्

इम बिचारि प्रभु अँरहि बुल्लि सुग्रीव१ विभीखन२॥
अंगद३ मारुति४ आदि मुख्य इतरहु दुर्जय[6] मन ॥
सानुज लहि निज सत्थ चढे पब्बय सुबेल पर ॥
ससुख बैठि तस सिखर लखिय सब नयर[7] निसाचर ॥
भल्लुक१[8] प्लवंग२[9] मर्कट३[10] भटन इक्खत[11] किय गर्जन असह॥
सकलेस[12] बासिय परिकर[13] सहित इम सुबेल सिर रजनि वह॥२१॥

(दोहा)

राका[14] निस इम तँहँ रहिय, सित[15] फग्गुन सकलेस[16] ॥
पिक्ख्यो बहुरि बिहान[17] पुर, बहु प्रकार दिवि[18] बेस ॥ २२ ॥
सहँस१००० थंभ मनिमय सुघट[19], पिहुल[20] तुंग[21] प्रासाद[22] ॥
निरख्यो बिच रावन निलय[23], कृतरच्छक क्रव्याद[24] ॥ २३ ॥

(षट्पात्)

पुरगोपुर[25] परिकूट[26] सीस तहँ लखिय दसानन ॥
अरुन[27] धरत आभरन रत्तचंदन[28] अनुलेपन[29] ॥
पट ससलोहित[30] रंग नील बपु छबि नीरदनिभ[31] ॥

---

१ सुबेल नामक श्रेष्ठ पर्वत देखकर ३ सब की सलाह मिलाकर उस पर २ रात्रि भर रहना चाहा ॥ ४॥२० ॥४शीघ्र ही ५ हनुमान् आदि को ६ मन से भी नहीं जीतने में आवें ऐसों को ७ राक्षसों के पुर को देखा ८ रींछ ९ बंदर १० लंगूर वीरों ने ११ लंका को देखते ही १२ सबके स्वामी (रामचंद्र) १३ अपनी परगह सहित ॥ २१ ॥ फाल्गुन १५सुदि१४ पूर्णिमा की रात्रि को१६ सब के स्वामी१७ प्रभात समय में१८स्वर्ग के समान लंका-पुर को देखा ॥२२॥१९श्रेष्ठ घड़ना युक्त२०मोटा और२१ऊंचा२२महल के बीच में २३रावण का गृह देखा जिसकी रक्षा २४ राक्षस करते हैं ॥ २३ ॥ २५ शहर के दरवाजे के २६ ऊपर के मकान पर रावण को देखा जो २७ लाल रंग के भूषण २८ लाल चन्दन का २९ शरीर पर लेप किये हुए और ३०खरगोस के रुधिर समान लाल रंग के वस्त्र और ३१मेघ के समान शरीर की

बच्छ[१] धरत किण[२] विदित दंत जहँ दियउ इंद्रइभ[३] ॥
सिरछत्र[४] विसद चामर सुभग कछु[५] प्रबंध जुज्झन करत ॥
इम ताहि लखत कपिपति[६] उडिय हुलासि तास दर्प[७]हिं हरत २४

(दोहा)

बीर सु प्रभु[८] सासन बिनुहिं, लखि न सक्यो जय जुद्ध ॥
बानरराज सुबेलसौं, कुद्यो खलासिर क्रुद्ध ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

जिहिं गोपुर हो जातुधान[९] रन जतन बिचारत ॥
तहँ सुबेल सन मलपि गयउ कपिपति ललकारत ॥
इक मुहूर्त्त[१०] तिहिं इक्खि[११] बहुरि जुट्टिय उडि बत्थन[१२] ॥
कहिय कबहु छुट्टैं न होय मध्यग मम हत्थन ॥
दिय भुव गिराय दससिर मुकुट खलहु ताहि डारिय धरनि[१३]॥
पटक्यो यहैहु[१४] कपि पुनि प्रबल तनय[१५] जंग रुक्किय तरनि[१६]।२६।
दुवरहि जुरे बल१दाव२पलट३आघात४प्रसारत ॥
रत्नि[१७]१अरत्नि[१८]२कराग्र३मुष्टि४कूर्पर[१९]५तलं[२०]६मारत ॥
वरन[२१]१निखातक[२२]२बीच प्रसभ[२३] बत्थन संकुल भरि ॥
लग्गे पुनि उठि लरन धीर जहँ अग्ग मलप धरि ॥

कपि और १ हृदय पर इन्द्र के ३ हाथी ने दन्त लगाये थे जिनके २ सूखे व्रण (चकासे, निशान) मस्तक पर ४ श्वेतछत्र, सुन्दर चमर धारण किये हुए ५ युद्ध करने का प्रबन्ध करता हुआ. इस प्रकार उसको देख कर ६ सुग्रीव उसका ७ घमंड मिटाता हुआ उडा ॥ २४ ॥ ८ रामचन्द्र की आज्ञा के विना ही ॥ २५ ॥ ९ राक्षस १० दो घडी तक उसको ११ देखकर १२ भुजाओं में भरकर १३ रावण ने भी सुग्रीव को भूमि पर गिराया फिर सुग्रीव ने भी प्रबल होकर १४ रावण को पटका सो १५ अपने पुत्र (सुग्रीव) का युद्ध देखने को १६ सूर्य रुक गया ॥२६॥ १७ मुष्टि (मुक्की) बांधे हुए हाथ को रत्नि, और १८ फैलीहुई अंगुलियोवाले हाथ को अरत्नि कहते हैं १९ खूंणी (बाहु मध्यग्रन्थि) और २० लात मारते हुए २१ कोट की २२ खाई में २३ हठ पूर्वक अवकाश रहित भरगये और फिर उठकर लड़ने लगे

गोमूत्र[1]१थान[2]२मंडल[3]३गमन, गत४प्रत्यागत[4]५चक्रगत६ ॥
प्राघात[5] दैन१वर्जन[6]२प्रमुख[7], रचन लगे तिनि युद्धरत[8] ॥ २७ ॥

(दोहा)

परिधावन[9]१आप्लाव[10]२पुनि, अभिद्रवन[11]३आस्थान[12]४ ॥
परावृत्त[13]५समवप्लुत[14]६रु, अपावृत्त[15]७अवधान ॥ २८ ॥
इतिमुख असह नियुद्धके, प्रेरे दुहुन२प्रकार ॥
इत कपीस१दससीस२उत, जुरे प्रबल जुज्झार ॥ २९ ॥
जान्यौं दुर्जय[16] कीस जब, माया रचिय दसास[17] ॥
सु[18] लखि झपि सुग्रीव हू, पुनि आयो प्रभु पास ॥ ३० ॥
पुच्छि कुसल हिय लाय प्रभु, उपालंभ[19] दिय याहि ॥
तू इहिं हठ आतो नतो, करते उद्यम काहि ॥ ३१ ॥
लक्खन प्रति पुनि अक्खि लंघु[20], करन व्यूह बलकेर ॥
श्रीप्रभु उतरि सुबेलतैं, घन लंका दिय घेर ॥ ३२ ॥
पक्ख असित[21] मधु[22] पडिवया१, किय आहव आरंभ ॥
जित रावन उत्तर बलंज[23], थित तित प्रभु जयथंभ ॥ ३३ ॥

(षट्पात्)

प्राची गोपुर[24] नील१द्विविद२ मैंद३हु सज्जिय द्रुत[25] ॥
दक्खिन अंगद१गज२रु गवय३ऋषभ४रु गवाक्ष५जुत ॥

१गोमूत्र नामक चित्रकाव्य मे टेढी गति से पढाजाता है उसप्रकार टेढे चलकर २ अवकाश(छेटी)देना ३गोलाकार फिरना, आगे बढना ४पीछा हटना, तिरछी गति से चलना ५ चोट मारना ६ चोट बचाना ७ आदि ८ बाहुयुद्ध की रीति रच कर ॥ २७ ॥ ९ उलटा दौड़ना १० उठालेना अथवा झुकादेना ११ वेग से चलना १२ खड़ा रहना १३ लुढक जाना १४ कूदना १५ दाव से निकल जाना और सावधान रहना ॥२८॥ इनको आदि लेकर मल्लयुद्ध के दाव दोनों ने चलाये ॥ २९ ॥ जब सुग्रीव को अपने से १६ जय होने योग्य नहीं समझा तब १७ दशमुख ने माया रची १८ सो देखकर सुग्रीव कूद कर रामचन्द्र के पास आगया ॥ ३० ॥ १९ ओलंभा दिया ॥ ३१ ॥ २० शीघ्र ॥ ३२ ॥ २२ चैत्र २१ बदि एकम के दिन युद्ध आरंभ किया २३ उत्तर द्वार पर रावण था उधर रामचन्द्र जय के थंभ होकर खड़े हुए ॥३३॥ २४पूर्वदिशा के द्वार पर२५शीघ्र

पच्छिम गोपुर*पावमान१तरस२रु प्रजंघ३तिम ॥
उत्तर राघव अप्प१अनुज लक्खन२उपेत इम ॥
बिच गुल्म रहिय कपिपति१प्रमुख जुत्थप कोटि छतीस३६००००००० जहँ ॥ इहिंरीति चैत प्रतिपदि१असित अच्च्युत रन मंडिय असह३४

[दोहा]

राघवसौं पच्छिम तरफ, मध्यगुल्म ढिग मत्त ॥
भल्लुकराज १ सुसेन २ भट, उभय २ रहे अनुरत्त ॥३५॥
प्रभु तत्थहु नृपधर्मपटु, पुनि रचि मंत्र प्रकास ॥
बालितनय इत बुल्लिकैं, पठयो रावन पास ॥ ३६ ॥
कहिय जाय अंगद कहहु, किय रावन अघकाम ॥
तस फल पावन जिय तजन, रन अब भिटहु राम ॥ ३७॥

(षट्पात्)

तब यह सुनि तारेय गगन पद्धति मलंगि गय ॥
तहँ रावन सह सचिव जाय बुल्लिय तहँ दुर्जय ॥
जनकसुता लै जाय प्रान रक्खहु पायन परि ॥
कलह तथा सकुटुंब भुम्मि सोवहु गिद्धन भरि ॥
यह सुनत दुष्ट अमरख अनखि कुटिलनैन मंत्रिन कहिय ॥
इहिं हनहु बंधि यह सुनि उठि सु गरजि च्यारि४दुष्टन गहिय।३८।

(दोहा)

परबस यह जानत परयो, रयप्रकटन तारेय ॥
सु पुनि च्यारि४रक्खस सहित, उड्ड्यो गगन अमेय ॥३९॥

(षट्पात्)

---

* हनुमान् १ लक्ष्मण सहित २ सेना के बीच में ३ सुग्रीव ४ आदि ५ बदि एकम के दिन ६ रामचन्द्र ने दुस्सह रण प्रारंभ किया ॥ ३४ ॥ ७ जाम्बवान ८ प्रीति पूर्वक ॥ ३५ ॥९ राजाओं के धर्म में चतुर१०अंगद को बुलाकर ।३६। ११ युद्ध में राम से भिड ॥ ३७ ॥ १२ तारा का पुत्र (अंगद) १३आकाश मार्ग में १४ गिद्धों का भरण पोषण करके १५ टेढे नेत्र करके ॥३८॥ १६ अंगद अपना वेग प्रकट करने के लिये वह१७अमाप बलवाला आकाश में उड़ा

उडत बालिसुत उद्ध गिरे मूर्छित चउ४ग्राहक ॥
उद्ध तुंग इक सिखर धीर पहुँच्यो जयबादक ॥
सहज भंजि वह सृंग अक्खि आह्वय निज अंगद ॥
बहुरि झंप लिय बीर मारि आसिर अधीस मद ॥
प्रभु जत्थ तत्थ आयउ प्रबल पुण्यजनन बिस्मय परिय ॥
रघुनाथ बलहिँ व्यूहित बिरचि करन हल्ल संक्रम करिय ॥ ४० ॥

(पादाकुलकम्)

यहँ सुसेन कपिपति पठवायो, यह प्राकार परिक्रमि आयो ॥
इकसत१००तत्थ प्लवग अक्खोहनि, अवहित किन्न बरन आरोहनि

(दोहा)

पूर्यो अब दल हंकि प्रभु, बप्र१खातिका२बीच ॥
सु सुनि लख्यो दससीसहू, निलयअट्ट चढि नीच ॥४२॥
इत बानर गिरि१तरु२उपल३, खिजि खिजि पटकि अखंड॥
गोपुर१कपिसिर२अट्ट३गन, चूरन लग्गे चंड ॥ ४३ ॥

(षट्पात्)

पनस१कुमुद२बलि प्रघस३कोटिदस१०००००००जुत ईसानक१
अनल कोन २ सतबलिय १, बीस कोटि १००००००००
न बलतानक ॥
नैर्ऋत कोन ३ सुसेन १ जुरिग कपि कोटि कोटि कोटि-

अंगद के १ ऊपर उडते ही पकड़नेवाले चारों गिरगये, ऊपर एक ऊँचा शिखर था जिस पर रामचन्द्र की २ जय बोलता हुआ पहुँचा उस शिखर को सहज से ही तोड़कर ३ अपना नाम कह कर ४ राक्षसों के स्वामी का मद मारकर ५ राक्षसों को विस्मय हुआ. रामचंद्र ने सेना को ६ व्यूह सहित करके हल्ला करने को ७ गमन किया ॥ ४० ॥ ८ सुग्रीव ने सुसेन को भेजा सो वह९कोट के प्रदक्षिणा करके आया और बंदरों की एक हजार१०अक्षौहिणी को११सावधान करके १२ कोट पर चढा दी ॥ ४१ ॥१३ कोट १४ खाई १५ अपने महल की छत पर चढकर॥४२॥ १६ पत्थर१७ शहर के दरवाजे १८ कंगूरे १९ छतों के समूहों को चूर्ण करने लगे ॥ ४३ ॥ २०पुनि २१ ईशान दिशा में २२ अग्निकोण में २३ फैलानेवाला

१०००००००००००००००० जुत ॥

अंगद मातुल अडर भीति डारन रन अद्भुत ॥

दूजो२गवाक्ष३पवमान दिस अखिल मग्ग किय रुद्द इम ॥

देखि सु नियोग रावन दियउ जुज्झहु अरि वस होय जिम॥४४॥

(दोहा)

लंकासन निकस्यो लरन, आसिर५राज अनीत ॥

पहिलैं द्वंद्व नियुद्धपटु, भिरे दुरदिस निर्भीत ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेलावर्णनविषयविभाकरवंशवितननवैवस्वतमनुतनुभवेक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीवैदेहीवल्लभचरित्रे दशग्रीवाऽशोकवनिकामायाप्रपञ्चनलङ्कागोपुरविभक्तबलव्यूहनरघुनाथसुवेलाऽऽरोहणसुग्रीव१रावण२नियुद्धविरचनोषितैक १ रात्रिप्रभुप्रत्यवरोहणानैकषेयनगरवेष्टनरावणानीकनिर्याणमेकोनपञ्चाशत्तमो मयूखः।४९।

आदित एकनवतितमः ॥ ९१ ॥

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(सालिणी)

१अंगद का मामा२वायु कोण में३इसप्रकार सब मार्गों को रोकलिये, इनको देखकर रावण ने४हुक्म दिया ॥४४॥ ५राक्षसराज की सेना निकली जिनमें प्रथम ६ दो दो जने ७ बाहुयुद्ध में चतुर दोनों ओर से निर्भय होकर भिड़े ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश को फैलानेवाले वैवस्वत के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुलकलश श्रीजानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रावण का अशोकवन में माया रचना, लंका के दरवाजों पर सेना के व्यूह का बांटना, रामचन्द्र का सुवेल पर्वत पर चढना, सुग्रीव रावण का बाहुयुद्ध रचना, एकरात्रि निवास करके रामचन्द्र का पीछा उतरना, राक्षसों के नगर को घेरना, रावण की सेना के निकलने का उनचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४९ ॥ और आदि से इक्कानवे मयूख हुए ॥ ९१ ॥

जूहेसेसु वेट्टमाणेसु लङ्कं कव्वाएसुं निक्खसन्तेसु अव्वो॥
अएणोएणाणां कोव इड्ढं सुसड्ढं दन्दाघाअं सम्पवट्टं णिउद्धं।१।
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पद्धटिका)

मधुमास असित[2] प्रतिपद[1] मिलाप, रन प्रथम[2] द्वंद्व मचिग दुराप[3] ॥
मिलि अंगद[1] इत उत मेघनाद[2], संपाति[1] प्रजंघ[2] हु लागि रबाद।२।
ह नुमान[1] जंबुमाली[2] हरोल[4], रु विभीखन[1] लिय मित्रघ्न[2] लोल[5] ॥
गज[1] तपन[2] नील[1] रु निकुंभ[2] गज्जि, सुग्रीव[1] प्रघस[2] किय द्वंद्व सज्जि
सौमित्रि[6] [1] बिरूपाक्ष[2] हु समत्थ, श्रीराम[1] इक्क[7] [1] चारि च्यारि सत्थ ॥
जहँ अग्निकेतु[1] सुप्तघ्न[2] जेतु, क्रम यज्ञकोप[3] अरु रस्मिकेतु[4] ॥४॥
मैंद[1] सु इत त्यौं उत वज्रमुष्टि[2], द्विविद[1] रु असनिप्रभ[2] रारि रुष्टि[8] ॥
इत नल[1] उत प्रतपन[2] इत सुसेन[1], उत विद्युन्माली[2] चरित एन[9]।५।
इत्यादि मल्लरन जुरि असेस, अतिघोर तुमुल किय सुनहु एस ॥
इंद्रजित[1] गदा तारेयँ[10] अंग, मारी कराल धरि जय उमंग ॥ ६ ॥
अंगद तब याके सूत[1] अश्व[2], रथ[3] सहित कट्टि किय पलचरस्व[11]
संपाति झेलि अरि तीर तीन[3], पटक्यो प्रजंघ सिर भुव प्रहीन[12]।७।
गहि उग्र जंबुमाली अँगूढ[13], मारुति[14] उर मारी साँगि[15] गूढ ॥
हनुमान मल्लपित बस्वामिहेत, सो मत्त चूर्ण किय रथ समेत॥८॥
मित्रघ्न बिभीखन अतुल मोद[16], गिद्धन हित डारे बिबिध गोद ॥
गज तपन थंभि तपनहिं[17] गहीर, बरसे नभ आयुध बिंदु वीर।९।

---

१ चैत्र मास के २ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (पड़िवा) के मिलाप में ३ दुर्लभ ॥२॥ ४ अग्रणी होकर ५ चपलता से ॥ ३ ॥ ६ लक्ष्मण ७ अकेले रामचन्द्र ने चार शत्रुओं के साथ युद्ध किया ८ युद्ध में क्रोध करके ९ पाप के चरित्र करनेवाला ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० तारा के पुत्र (अंगद) के अंग में ॥ ६ ॥ ११ मांस भक्षण करनेवाले गीध आदि के अधीन १२ प्रहार ॥ ७ ॥ १३ प्रत्यक्ष १४ हनुमान के उर में १५ सांग (बरछी) ॥ ८ ॥ १६ अत्यन्त आनन्द के साथ १७ तपन ने सूर्य को ठहराकर ॥ ९ ॥

सालिनी ॥ यूथेशेषु वेष्टमानेषु लङ्कां क्रव्यादेषु निष्क्रसत्सु अहितेषु । अन्योन्येषां कोप ऋद्ध सुश्रद्ध द्वन्द्वाघात सम्प्रवृत्त नियुद्धम् ॥१॥

क्रव्याद[1] निकुंभहु नीलकाय, सत१००बान दये अमरख सहाय ॥
तब बढ्ढि तास रथचक्क नील, सिर तोरि दुष्ट पटक्यो कुसील[2]॥१०॥
सुग्रीव सप्तपर्णहिं[3] चलाय, मार्यो सु प्रघस बल छक्क छलाय ॥
इक१बान मुक्कि लक्खन[4] उदार, किनु[5] प्रान बिरूपाक्षहिं चकार॥११॥
इत अग्निकेतु प्रमुखन[6] अखंड, प्रभु बपु[7] प्रसत्क[8] मारे प्रचंड ॥
रघुबरहु मुक्कि चउ४रोप[9] रंग, जे च्यारि४गिराये मारि जंग ॥ १२ ॥
मैंदहु स्वमुष्टि करि बज्रमुष्टि, तनुहीन[10] गिरायउ पाय तुष्टि[11] ॥
इतद्विबिदसालरुक्खहिं[12]उपारि, असनिप्रभ लिय सरथहय मारि॥१३॥
नलनैं प्रतपनके कड्ढि नैन, वह दुष्ट अंध किय जुद्ध ऐनैं[13] ॥
बिद्युन्मालीके खाय बान, मुक्किय सुसेन गिरि इक१समान ॥ १४॥
लखि ताहि आत खलरथहिं छोरि, द्रुत गो प्लवंगपर[14] दुष्ट दोरि ॥
तिहिं अद्रि जाय खल रथ तुरंग, सब चूरि उडाये वात[15] संग ॥१५ ॥
पुनि एक१सिला गहिकैं प्लवंग, आयो खल ऊपर बितत[16] अंग ॥
वच्छत्थल[17] मारिय सुहि प्रवीन, हुव बिद्युन्माली असुबिहीन[18] ॥१६॥
इम होत प्रथम दिन रन अखंड, तक्किय चरमाचल[19]मारतंड[20] ॥
कपि कौणप[21] तउ जुज्झत रुके न, संजुरिग[22] निसातम[23]मैं हु सेन ।१७
को तुम सुनि हम इत कहत कीस, उत कहत रात्रिचरजय अधीस॥
निस तिमिरमैं हु पहिचाने बैन, इम लरन लगे संदृगहु[24] अनैन ।१८।

१राक्षस २खोटेशीलवाले को ३एक एक गांठ में सात सात पत्ते होवें ऐसे वृक्षवि शेप को चलाकर ४उदार लक्ष्मण ने ५किया ॥११॥ ६आदि ने ७रामचन्द्र के शरीर में भयंकर ८ बाण मारे ९बाण ॥ १२ ॥ १०शरीर बिना करके ११प्रसन्नता पाकर १२ शालवृक्ष को उपाड़ कर ॥ १३ ॥ १३ जुद्धस्थल में ॥ १४ ॥ १४ बंदर पर १५ पवन के साथ उडादिये ॥ १५ ॥ १६ शरीर को फैलाकर १७ हृदय में मारी १८ प्राण बिना होगया ॥ १६ ॥ इसप्रकार युद्ध होते होते २० सूर्य ने १९ अस्ताचल को देखा अर्थात् सूर्य अस्त हुआ तो भी बंदर और २१ राक्षस लड़तेहुए नहीं रुके २३ रात्रि के अंधेरे में भी सेना २२ जुड़ी (लड़ती) रही ॥ १७ ॥ तुम कौन हो? यह सुनकर बंदर कहते हैं कि हम इधर हैं और उधर राक्षस अपने स्वामी की जय बोलते हैं, उस रात्रि के अँधेरे में वाणी पहचानकर २४ नेत्रों के होतेहुए भी अन्धे होकर लड़ने लगे ॥१८॥

तहँ कुपित मुक्कि रघुवर छ६तीर, हतमर्म टरे खट६खल गहीर ॥
सारण१रु महोदर२यज्ञसत्रु३जिम वज्रदंष्ट्र४सुक५भिन्नजत्रु[१] ॥१९॥
ऋ०याद[२] महापार्श्व६हु कराल, इत्यादि भजाये प्रभु उताल ॥
वहुरिहु इत अंगद मारि वान, इंद्रजित कियउ घायल अमान ।२०।
संहारि तास वाजी[३]४रु सूत[४]१, पुनि आतुर[५] किय दससीसपूत ॥
रथ छोरि इंद्रजित तव दुरूह[६], ह्वै पिहित[७] रचिय माया समूह ॥ २१ ॥
सुर मुनिन वालिसूनुहिँ[८] सिराहि, चंवि[१०] सांधु गिरायउ कुसुम[११] चाहि ॥
रावनसुत करि तव कूट[१२] रारि, सर[१३] नागरूप मुक्किय[१४] सम्हारि ॥ २२ ॥
उन सरन लग्गि रघुवीर अंग, भ्राता उभैरहि किय मर्मभंग[१५] ॥
पुनि नागसरन तिन विरचि पीर, वंधि रु भुव डारे दुवरहि वीर।२३।
नाराच१अर्द्धनाराच२वान, अंजलिक[१६]३भल्ल४छुर५प्रखरपान[१७] ॥
वलि सिंहदंष्ट्र६कति वत्सदंत[१८]७,इत्यादि विसिख[१९] दै पुनि अनंत२४
रघुवर दुवरवेधे संतत[२०] रंग, अंगुल रह्यो न छतहीन[२१] अंग ॥
मन द्रुहिन[२२]दत्त वर कानि मानि,उभयरहि अचेत हुव मोह[२३] आनि२५
स्वामिन[२४] लखि सोवत वीर सैन,इत सवन वढ्यो तिहिं निस[२५] अचैन
इतरहु[२६] कपि रावनपुत्र ऍक[२७], वेधत हुव मायारन विवेक ॥ २६ ॥

१ कांख और कंध की संधि (हसली की हड्डी) टूटीहुई है जिसकी २ राक्षस ३ घोड़े और ४ सारथि को मारकर इन्द्रजित को ५ व्याकुल किया ६ तर्कना में नहीं आवे ऐसा ७ गुप्त होकर ॥२१॥ ८ अंगद की प्रशंसा करके १० बहुत श्रेष्ठ बहुत श्रेष्ठ९ कहकर ११ पुष्पों की वर्षा की १२ मायायुक्त करके १३ सर्प बाण १४ छोडे १५ दोनों भाइयों के मर्मस्थल छेद डाल और उन नागबाणों ने उनके पीड़ा करके नागपाश मे बांधकर भूमि पर गिरादिये १६ अंजलि के सदृश १७ तीखी पांखवाले, कितने ही सिंह की डाढ के जैसे और कितने ही १८ बच्चों के दन्तों के समान १९ बाण फिर अनेक दिये ॥ २४ ॥ युद्धभूमि में रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों रघुवंशियों को २० निरन्तर बेधे जिनका शरीर विना २१ घाव एक अंगुल भी नहीं रहा, अपने मन में २२ ब्रह्मा के दियेहुए वर की कान मानकर दोनों २३ मूर्छा लेकर अचेत होगये ॥ २५ ॥ २४ अपने स्वामियों (मालिकों) को वीरशय्या में सोते देखकर उस २५ रात्रि में इधर सब के अचैन बढा २६ दूसरे बंदरों को भी २७ अकेले रावण के पुत्र ने माया

नव९बानन बेध्यो नील१नाम, त्रय३त्रय३करि मैंद२रु द्विविद३ताम

दुव २ दुव२गवाक्ष ४ अरु सरभ ५ देह,

सर दस१० हनि मारुति ६ कियउ सेह[3] ॥ २७ ॥

अंगद७[4]मर्कटपति८जांबवान९, बहु दुप्ट[5] दये इनकौ हु बान ॥

निज बल इम गज्जि रु मेघनाद, प्रविस्यो पुर दुद्धर लहि प्रसाद[6]॥२८॥

पहुँच्यो रावन ढिग जोरि पाँनि, अक्खिय स्वकीय जय कहिय आनि

सुत सूक्ति सुनत रावन स्वभाय, उछर्यो तजि आसन मुद अघाय॥२९॥

सिर सुंघि लाय हिय कहि सुपुत्त, जान्यौं खल अप्पहिं बिजय पुत्त

बंधे रु गिरे रघुबंस बीर, इत लखि अचेत हुव कपि अधीर॥३०॥

सुग्रीव आदि लहि हृदय साल, हतआस लगे रोवन बिहाल ॥

तँहँ आय बिभीखन कहिय तत्त्व[10], दृग[11]सलिल रुक्कि छोरहु दरत्त्व[12]॥३१॥

मन्नहु अजेय रघुबंस[13]मोर, जिनपैं न बिचारहु म्रत्यु जोर ॥

कपिराज[14] बदन हिमजल पखारि, इम कैकसेय[15]दिय सुचं[16] उतारि॥३२॥

जानत उत दससिर स्वीय[17] जीत, भो पुत्रवचन सुनतहि अभीत ॥

सीता रखवारी जे समस्त, ते रात्रिचरिय[18] बुल्लिय[19] अत्रस्त[20] ॥ ३३ ॥

अक्खिय तिनसौं पुष्पक[21] चढाय, सीताहि दिखावहु सत्रु[22] जाय ॥

मानुज[23] लखि रामहिं मूर्तिसेस[24], बलि[25] सोहि मोहि भजिहै बिसेस ३४

युद्ध के ज्ञान से बेधे ॥ २६ ॥ १ तहां २ हनुमान का शरीर सेह (सहेली) जंतुविशेष के समान करदिया ॥ २७ ॥ ४ सुग्रीव ५ दुर्द्धर्ष (किसीकी धर्षणा में नहीं आवे ऐसा) होकर ६ प्रसन्नता लेकर पुर में घुसा ॥ २८ ॥ ७ हाथ जोड़कर ८ शत्रु का नाश और अपनी जय कही ९ पुत्र का कहना सुनकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १० यथार्थ वार्ता कही कि हे बंदरो ११ नेत्रों का जल (आंसू) रोककर १२ भयपन (कायरता) छोडो ॥ ३१ ॥ १३ रघुवंशियो के मुकुट (रामचन्द्र) को १४ सुग्रीव के मुख को ठंढे जल से धोकर इसप्रकार १५ कैकसी के पुत्र (विभीषण) ने १६ शोक उतार दिया ॥ ३२ ॥ १७ अपनी जीत २० निर्भय होकर सीता की रक्षा पर जिन १८ राक्षसियो का रक्खी थी तिनको १९ बुलाई ॥ ३३ ॥ उसने कहा कि सीता को २१ पुष्पक विमान पर चढ़ाकर, सीता को लेजाकर २२ हमारे शत्रु दिखाओ २३ अपने भाई सहित रामचन्द्र को २४ मूर्ति ही है बाकी जिनकी (मुर्दे) ऐसे देखकर २५ फिर

त्रिजटादि सुनत पुष्पक बिमान, द्रुत[1] लाय चढाई भय निदान ॥
रनभुम्मि लखे तिहि जाय राम, लागि धूरि गिरे सानुज ललाम ३५
बिलपन[2] लगी सु लखतहि बिहाल, प्रभनाथ त्राहि हाहा कृपाल॥
हा दिष्ट[3] दीन मैं सग्न होहु, सुभ मुनिन[4] बैन हुव असुभ सोहु।३६।
सामुद्रिकलच्छन सुभ जितेक, मम अंग कहे बिप्रन तितेक ॥
ससुता[6] रु सत्रिपत्नी[7] हु मोहि, बरनी वृथाहि[8] आग्रह अरोहि ।३७।
इतिमुख[9] त्रिकालदंरसिन[10] निदेस, सब मोघ[11] होत प्रभु कीर्तिसेस[12] ॥
बिलपत इम जानकि पारबस्य[13], लगि कन्न[14] कह्यो त्रिजटा रहस्य[15] ३८
रोवहु जिन जानकि जियत राम, न कहौं अलीक[16] मैं कछुहु काम॥
होते जो कुणपहि[17] उभयरईद्ध[18], पुष्पक न तोहि धरतो प्रसिद्ध।३९।
भल्लुक कपि बदनहु भ्राजमान[19], यातैंहु एह नासुभनिदान[20] ॥
इम कहि दिखाय रन बहुरि आनि, मेल्ही असोक बन हुकम मानि४०
इत राम कछुक बेला[21] बिताय, सरबद्धहि जागे संगराय[22] ॥
सौमित्रि[23] ओर लखि रुदन सत्थ, सर्बजनक[24] लगे बिलपन समत्थ४१
हाहा यह लक्खन कोन हाल, उठहु प्रिय भाई रन अचाल[25] ॥

मुझे भजेगी ॥ ३४ ॥ १ शीघ्र ॥ ३५ ॥ २ देखते ही बिहाल होकर विलाप करनेलगी कि ३ हे भाग्य! तू ही मुझे शरण देनेवाला हो ४ मुनियों के शुभ वचन थे सो भी अशुभ होगये ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणों ने मेरे शरीर में ५ सामुद्रिकशास्त्र के शुभलक्षण कहे थे कि तू ६ पुत्रवती होवेगी और ७ यज्ञ करनेवाले की स्त्री होवेगी सो अभी रामचंद्र ने यज्ञ तो किया ही नहीं और मरगये इससे उनने आग्रह करके ८ झूठ कहा था ॥ ३७ ॥ ९ इत्यादि १० तीनों समय को जाननेवाले मुनियों की आज्ञा रामचंद्र के १२ कीर्तिशेष (कीर्ति ही है बाकी जिनकी अर्थात् मृतक) होने से सब ११ झूठ होगई १३ पराये वश में हुई जानकी इसप्रकार विलाप करनेलगी तब १४ कान के लगकर त्रिजटा ने १५ गुप्त वार्ता कही ॥ ३८ ॥ १६ मिथ्या १७ विना प्राण (मुर्दे) होते तो यह १८ निर्मल पुष्पक विमान तुझको धारण नहीं करता ॥ ३९ ॥ रींछ और बंदरों के मुख भी १९ शोभायमान हैं यह भी अशुभ का २० कारण नहीं है ॥ ४० ॥ २१ कुछ समय बिताकर २२ संग्राम स्थल में बाणों से बंधेहुए ही जगे और २३ लक्ष्मण की ओर देखकर २४ सब संसार के पिता (रामचन्द्र) विलाप करनेलगे॥४१॥ २५ युद्ध में चलायमान नहीं होनेवाले

सीता सम पुनि मिलि सकत नारि, तोसम न बच्छ[2] भ्राता जितारि[3] ४२
किय मोघ[4] बिभीखन कौणपेस[5], बलि गेह न जेहों अब कुबेस ॥
सुग्रीव आदि गृह जाहु सर्व, सब मैं न सक्त[6] यह रन अखर्व ।४३।
यह सुनत लगे बिलपन असेस[7], सुग्रीव स्वसुर सन कहिय[8] एस ॥
धरि अंस[9] राम लक्खन धरेन[10], किष्किंधा जावहु तुम सुसेन ।४४।
मैं हनि दससीसहिं कुल समेत, अैहों लहि सीता जय उपेत[11] ॥
बुल्ल्यो सुसेन छीरोद[12]माँहिं, औषध संजीवन बिबिध[13] आँहिं ।४५।
प्रभु तिन्ह मंगावहु कपि पठाय, गिरि द्रोन१ चंद्र२ दिस सुधि[14] लगाय[15] ॥
इहिं बीच अचानक गरजि अभ्र, अतिबात[16] मचिग ताडिता[17] अदभ्र[18] ४६
द्वीपन तरु काढि काढि बेग दोर, सह मूल लगे उड्डन सजोर ॥
हे[19] नाग तहाँ जे रहनहार, भजि सिंधु दुरे लहि त्रास भार ॥४७॥
जिहिं समय अचानक बैनतेय[20], आयउ सबेग रनभुव अजेय ॥
विक्खत[21] तिहिं भजि भजि नागबान[22], सब छन्न दुरे जिततित सयान ४८
हुव सानुज प्रभु सरबंध[23] हीन, पहुँच्यो खगेस[24] तिहिं खिन प्रबीन ॥
इनको किय सपरस गरुड आय, निज कर मुख पोंछि रज नठाय[25] ४९
दोउन२के खगपति छुवत देह, छतहीन[26] भये हढबल२अछेह ॥

---

२ हे वत्स ३ शत्रुओं को जीतनेवाला तेरे जैसा भाई नहीं मिलसक्ता ॥ ४२ ॥ ५ विभीषण को राक्षसों का राजा किया था सो ४ मिथ्या हुआ ६ इस बड़े रण के जीतने को मैं समर्थ नहीं हूं ॥ ४३ ॥ ७ सब ८ सुग्रीव ने अपने ससुर से कहा कि १० भूमिपति राम लक्ष्मण को अपने ९ कंधे पर धर कर हे सुसेण किष्किंधा जाओ ॥ ४४ ॥ ११ विजय सहित १२ क्षीरसागर में १३ अनेक प्रकार की संजीवन औषधियां हैं ॥ ४५ ॥ १४ खबर लगाकर १५ मेघ की गर्जना होकर १६ अत्यन्त पवन चलकर १८ अत्यन्त १७ बिजुली चमकने लगी ॥ ४६ ॥ वहांके रहनेवाले सर्प १९ थे वे भागकर समुद्र में छिपगये ॥ ४७ ॥ २० गरुड़ आया २१ गरुड़ को देखते ही रामचन्द्र और लक्ष्मण को बांधेहुए २२ सर्पबाण थे वे भागकर छिपगये ॥४८॥ भाई के सहित रामचन्द्र २३ बाणों के बंधन से छूट गये उस समय प्रवीण २४ गरुड़ पहुंचा और दोनों भाइयों के मुख की धूलि अपने हाथ से २५ मिटाकर स्पर्श किया ॥ ४९ ॥ २६ घाव रहित होगये

स्मृति१ बुद्धि२ओज३ उच्छाह४सत्थ, सब द्वि६गुन बढ़ाये प्रभु समत्थ५०
गरुडहु उठाय दोउन७गभीर, बत्थन मिल्यो सु हिय लाय बीर ॥
श्रीराम कह्यो तुमरे प्रसाद, मिटिगो दुहून पीड़ा प्रमाद ॥५१॥
दसरथ पिता रु अज तात तात, त्यों लखि तुम्हैंहु मम हिय सिरात॥
वपु दिव्यरूप तुम कौन बीर, धरि बिरजबस्त्र आये सधीर ॥ ५२ ॥
बुल्ल्यो यह सुनतहि दुहुन मित्र, मन्नहु तुम मोकहँ परम मित्र ॥
जासत्वतुम अहिसरं बद्ध जानि, मैं बनतेय यह खेद मानि ।५३।
सुहृदन सहाय हित हे सुसंध, आयो इहाँ रु तुम किय अबंध ॥
यह बंध छुरावनकाज और, सुर१असुर२नाग३ कोउ न सजोर५४
अब सावधान लरिये उचारि, गो मिलि खगेस खल गर्ब गारि ॥
दुव भ्रात उठे छतहीन देह, आनंदित कपिबल हुव अछेह ॥ ५५ ॥
मिलि बज्जिगे संख भेरी मृदंग, अखिलेस सेन निज दिय उमंग ॥
विटपिन उपारि कपि१रिच्छ२वीर, धाये पुनि गज्जत लरन धीर।५६।

दोहा

राम प्रदक्खिन करि गरुड, गो अवहित करि गेह ॥
भूप सुनहु बसुदेव६८भो, अहं पहिल१रन एह ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ बीतिहोत्रचरडासिबंशबर्णने बसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिवाहवेलाब-

---

१पराक्रम, आगे थे जिससे २दुगुने बढ़ाकर रामचन्द्र को ३समर्थ किया।५०।४तुम्हारी कृपा से पीड़ा के कारण बेहोशी थी सो मिटगई।५१। पिता दशरथ और ५पिता के पिता (दादा) अज के समान तुमको देखने से हृदय६ठंढा होता है७रज रहित (निर्मल)॥५२॥८पक्षियों की रक्षा करनेवाला (गरुड़) दोनों से बोला९दोनों को १० नागपाश में बंधेहुए जानकर ११ मुझ गरुड़ ने यह दुःख मानकर।५३। १२ मित्रों की सहाय करने को १३ हे सत्य प्रतिज्ञावाले ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ १४ बजे १५ सबके स्वामी (रामचन्द्र) ने अपनी सेना को १६ वृक्षों को ॥ ५६ ॥ १७ सावधान करके, अयोध्या के राजा का पुरोहित बसुदेव चहुवाण से कहता है कि इसप्रकार १८ प्रथम दिन का युद्ध हुआ ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में बसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन में सूर्यवंश के

र्गानबिषयबूध्नबंशाविवर्द्धकबैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्र बिकुक्ति ७ कुलकलशश्रीमैथिलीमहिलचरित्रेप्रथम१दिनरणारम्भ प्रत्येकनियुद्धरचनपुण्यजनपराभवनशक्राजिन्नागशरसानुजरघुराज बंधनबैदेहीबिलपनगरुत्मदागमननागशरविद्रवणानिःशल्यराघवर पुनःसज्जीभवनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥ ५० ॥

आदितो द्वानवतितमः ॥ ९२ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(सचरणगद्यम्)

कपिनके कटक[1]मैं मंगल महानाद भयो सुनि दसग्रीवनैं दूत भेजि निर्बंध सज्जीभूत सानुज रघुराजकी खबरि मँगाय आपनैं अनीक[2]को ईस करि जातु[3]धान धूम्राक्ष लरिबेकौं पठायो ॥

परस्पर कपि १ रक्खस[4] २ तरु १ त्रिसूल २, मुष्टि १ मुद्गर २, प्रतल[5] १ पट्टिस[6] २, गंडसैल[7] १ गदा २, दंत १ दंड २, महीधर १ मुसल २, सिला १ साक्ति २, पत्थर १ परिघ[9] २ प्रहारि[10] महातुमुल[11] मचायो ॥

तहाँ धूम्राक्षनैं अनेक प्रकारके आघात दै[12]कैं प्लवंगन[12]की पृतनौं[13]

बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि कुल के कलश श्रीजानकी है स्त्री जिनकी (जानकी के पति) के चरित्र में प्रथम दिन के रण के आरंभ मे प्रत्येक के बाहुयुद्ध रचने में राक्षसों का हारना, इन्द्रजित् का छोटे भाई सहित रामचन्द्र को नागपाश में बांधना, सीता का विलाप करना, गरुड़ का आना, नागपाश का भागना और रामचन्द्र लक्ष्मण का शल्य रहित होकर फिर सज्जीभूत होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से बानवे मयूख हुए ॥ ९२ ॥

१बंदरो की सेना में २सेनापति करके ३ राक्षस ४ राक्षस को भेजा जहां परस्पर बंदर तो वृक्षों से और राक्षस त्रिशूल से इसीप्रकार इधर मुष्टि और उधर मुद्गर, इधर से ५ लात और उधर ६ कटारी ७, पर्वत से गिरेहुए मोटे पत्थर और गदा, दन्त और दंड ८, पर्वत और मुशल, शिला और शक्ति, सामान्य पत्थर और ९ लोहँगी (लोहा जड़ाहुआ लट्ठ) चलाकर १०बडा भयंकर मचाया. यहां प्रथम गिनायेहुए शस्त्र बंदरों के और पीछे गिनायेहुए राक्षसों के यथाक्रम से जानलेना चाहिये ११प्रहार देकर १२बंदरों की १३सेना को

*कांदिसीक कीनी ॥

ताकौं देखतही बज्रांगनैं एक बडी सिलाकौं उठाय धूम्राक्षके ऊपर चलाय दीनी ॥ १ ॥

आवते उपल[2]की दुस्सहता देखि धूम्राक्ष अपनैं स्यंदन[3]तैं कूदिगयो॥
अरु सिंहमुख बाहक बालेय[4]न सहित सचक्र[5] १ कूबर[6] २ ध्वज ३ सरासँन[7] ४ रक्खसराजको रथ चूर्ण भयो ॥

तदनंतर[8] बज्रांगनैं हजारन जातुधान[9] अपनैं कोप दीपकके पतंग करे ॥
अरु धूम्राक्षहू सत्रनके संग[10] करिकेही प्लवंगन[11]के प्रान हरे॥२॥

तहाँ हनुमान सिलोच्चय[12]को शृंग लै निसाचरपैं चलायो ताके मस्तकमैं धूम्राक्षनैं समुख जाय गदा पटकी॥
सो प्रहार सिराहिकैं कौणप[13]के कपालमैं सामीरि[14]नैं सिखर की दई ॥

तासौं गतासु[15] हो लंकेसके महाभट धूम्राक्षकी मूर्ति लटकी ॥
ऐसैं चैत कृष्ण द्वितीया२के दिन जुद्धके अंतमैं मारुति[16]नैं धुम्राक्ष मारयो ॥

तदनंतर तीजै दिन ३ तृतीया ३ के रनके आरंभमैं रावननैं आसुर बज्रदंष्ट प्रचारयो ॥३॥
सो बज्रदंष्ट्र दक्खिनके द्वार होय अंगदके अनीक[17]के सम्मुह कढ्यो॥
तहाँ बिना मेघही गगनमैं बिजुरीनको ब्रात[18] १ ज्वाला बमत फेरवी[20]नको फेत्कार[21] २ बढ्यो॥

*भय से भागनेवाली करी (" कां दिशीको भयद्रुत " इत्यमरः) १ हनुमान् ने ॥ १ ॥ २ पत्थर ३ रथ से ४ रथ के जुते हुए गधों सहित ५ पहिये ६ जुआ (जुड़ा) ७ धनुष ८ जिसपीछे ९ हजारों राक्षसों को अपने क्रोध रूपी दीपक में जलाये १० समूह से ११ बंदरों के ॥ २ ॥ १२ पर्वत का शिखर लेकर १३ राक्षस के मस्तक में १४ पवनपुत्र (हनुमान्) ने १५ विना प्राण हुआ १६ हनुमान् ने ॥ १३ ॥ १७ सेना के सामने निकला १८ समूह १९ ज्वाला उगलती हुई २० स्यालनि (व्याघस्यालि) यों का २१ फेत्कार (स्यालनी

ऐसैं अपसकुनको अनादर करि वज्रदंष्ट्र[1]नैं*बहुल वानर अं-
गद[2]नैं अनेक**अस्त्रप मारिलये॥

अरु वज्रदंष्ट्रनैं अंगदकै एक सहस्र१०००वान दये ॥ ४ ॥

अंगदनैं एक वृक्ष चलायो ताहकौं वाननसौं काटि आसिरनैं
आहवमैं उत्कर्तभाव[2] धस्यो ॥

तब तारेय[3]नैं एक १ बडो पर्वत पटक्यो ताकौं निहारि दुष्ट उ-
हाँसौं कूदि बच्यो तथापि वा सैलनैं सचक्र १ कूबर २ तुरंग ३
सूत ४ स्यंदन ५ चूर्ण कस्यो ॥

तदनंतर और गिरिशृंग उठाय वालिपुत्रनैं मनुजाद[4]के मस्तक
मैं डास्यो ॥

तासौं गतसत्व[5] रुधिरोद्गारी[6] होय वज्रदंष्ट्रनैं महामोह[7] धास्यो॥५॥

मुहूर्त[8] एक १ के अंनर चेतना पाय क्रव्याद[9]नैं अंगदके भुजा[10]
तरमैं गदा मारी ॥

[11]तथापि तारेय न डिग्यो अरु दोउन २ मल्लजुद्ध करि मुष्टिकी
मार प्रसारी ॥

पीछैं खड्ग १ चर्म[12] २ लैकैं दोउन २ महाविचित्र मार्गनके प-
लटा करि अपनौं पटैतपनौं दिखायो ॥

अरु दोउन२नैं ही मंडलाग्र[13]नके प्रहारनसौं अछक छाकि अचे-
त होय जानु[14]नसौं जक्कि[15] जक्कि पृथ्वीतल[16] पायो ॥ ६ ॥

निमेष[17] एक १ के अनंतर[18] अंगदनैं मूर्छा ताजि सिलासितैं[19] ख-
ड्गसौं वज्रदंष्ट्रको मस्तक काटिलयो ॥

की बोली का अनुकरण है) बहा * वहुत ** राक्षस ॥ ४ ॥ १ राक्ष-
स ने २ तीव्रभाव का धारण किया ३ तारा के पुत्र (अंगद) ने ४ मनुष्यों
के खानेवाले (-राक्षस) मस्तक पर ५ पराक्रम रहित ६ रुधिर उगलनेवाला
होकर ७ बडी मूर्छा पाई ॥ ५ ॥ ८ दो घड़ी पीछे ९ राक्षस ने १० हृदय में
११तोभी अंगद नहीं डिगा १२ ढाल १३ खड्गो के १४ घुटनों के बल १५ गि-
र गिरके १६ भूमि पर गिरा ॥ ६ ॥ १७ क्षणभर के १८ पीछे १९ शिला पर
तीखे कियेहुए खड्ग से

ऐसी रीति*मधु मेचक तृतीयाके ३ दिन कपि १ कौणप २
नकै तीजो ३ जुद्ध भयो ॥
चतुर्थी ४ के दिन लंकेसनैं क्रव्याद अकंपनकौं बलमैं बलिष्ट
करि संग्रामका प्रेर्‍यो ॥
अरु कपि१कौणप२नकै जुद्ध होत रजके बितानैं आच्छादित
होत सर्वत्र अंधकारको छबीनौं फेर्‍यो ॥ ७ ॥
जा तिमिरसौं परतंत्र होय अपनैं परायेको बिबेक न धारत भये ॥
अरु दुहुँ२ओरके बीर कीस१कौणप२नकौं मिश्रित ही मारत भये॥
तहाँ मैंद१नल२कुमुद३इन तीन३नकै त्रान करतहू अकंपननैं
बलिमुख बरूथिनीकौं बिकीर्ण करी ॥
सो व्यवस्था देखि बज्रांगनैं आय सजातीयनके सहायको धि-
षणा करी ॥ ८ ॥
आंजनेय एक१अद्रिकूटकौं उठाय अकंपनपैं प्रहार्‍यो ॥
ताकौं आवतही निसाचरनैं अर्द्धचंद्र बाननसौं टूकटूक करि डार्‍यो॥
तदनंतर रुद्रावतारनैं एक१अश्वकर्ण तरुकौं उपारि हजार जा-
तुधान बिपोथित करे ॥
अरु इतकौं अकंपननैं सस्त्रनके संपातकरि सहस्रन साखामृग
गनके स्वास हरे ॥ ९ ॥

---

*चैत्र वदि तीज के दिन बंदर और राक्षसों के तीजा युद्ध हुआ १ राक्षसों के २ धूलि के विशेष फैलाव अथवा डेरे ने सबको ढककर अन्धकार रूपी ३ छबीना (रात्रि के समय सेना की रक्षा करने के अर्थ चारों ओर सवारों का घेरा लगायाजाता है उसको छबीना कहते हैं)॥७॥ ४ उस अन्धकार से पराधीन होकर ५ बंदरों और राक्षसों को ६सामिल (मिलेहुए) ही मारते रहे७ये तीनों रक्षा करते थे तोभी ८ बंदरों की ९ सेना को १० बिखेरदी ११ हनुमान ने १२अपने जातिवालों की सहाय के लिये १३ बुद्धि करी ॥ ८ ॥ १४ हनुमान् ने १५ पर्वत के शिखर को १६ जिसपीछे १७ महादेव के अवतार (हनुमान्) ने १८ सालवृक्ष को उपाड़कर १९ हजार राक्षसों को २० चोट से नीचे गिरादिये २१ शस्त्रों के प्रहार

तहाँ मारुतिनैं बहोरि एक दीर्घतरुकौं उपारि मस्तकपैं प्रहारि अकंपनको प्रान लयो ॥

सेस[1] क्रव्याद नगरमैं भजि गये ऐसैं उभय[2]अनीकनकैं चतुर्थी४के दिन चोथो४संग्राम समाप्त भयो ॥

पंचमी५के दिन पहिलैं तो लंकेसनैं अपनैं पुरके प्राकार[3] अट्टनके सूरवीरनके गुल्म[4] सम्हारे ॥

पीछैं समर[5]मैं सचिव प्रहस्तकौं सज्ज होयवेको सासन दयो तहाँ प्रहस्तनैंहू सीताहरणके पूर्वमंत्र[6]मैं निषेध कहे हे ते रक्षोराजकौं[7] स्मृतिमैं डारे ॥ १० ॥

तदनंतर अपनैं सचिव जे कुंभहनु१सुमुन्नत२नरांतक३महानाद४तिन सहित सज्ज सेना लैकैं प्रहस्त रक्षोराजकी प्रधान जंगकी उमंगमैं नगरसौं निकसतभयो ॥

तहाँ पलाद[8]सत्व याके रथकौं अपसव्य मंडलमैं लेतभये१, सिवा[9]गनके मुखसौं ज्वाला सहित सब्द कढे२,अंतरीक्ष[10]सौं उल्का[11] गिरी३,मेघहू रथपैं रुधिर बरस्यो४, गिद्धन केतन[12]के अग्रपैं निवास कीनौं५ रु याके बाजी[13] ठोकर खाय परे६ सारथीके करतैं प्रतोद गिरगयो७ ॥

इत्यादि अपसौंनन[14]को अनादर करि प्रहस्तनैं रघु[15]राजके सेनाधीस नीलकी अनीसौं अनी मिलाई ॥

अरु नीलनैं निमी[16]लितनेत्र होय नीठि नीठि सही ऐसी

---

१ बाकी के राक्षस २ दोनों सेना के ३ शहर कोट के ऊपर के ४ रक्षार्थ (रिजर्व) सेना को सम्हाल कर ५ युद्ध में अपने मंत्री प्रहस्त को सीता को हरने से पहिले ६ सलाह हुई थी उसमें रावण को मना किया था कि हरण करना अच्छा नहीं है वह ७ रावण को याद दिलाया ॥ १० ॥ ८ मांस खानेवाले (गिद्ध आदि) जीवों ने दाहिने चक्कर में लिया ९ स्यालनी के मुख से १० आकाश से ११ अंगारे गिरे १२ ध्वजा के अग्रभाग पर १३ घोड़े १४ चावक १५ अपशकुनों को लोपकर रामचन्द्र के सेनापति नील की सेना के अग्रभाग से अपनी सेना का अग्रभाग मिलाया १६ नेत्र बन्ध करके

विसिखनकी[1] वृष्टि चलाई ॥ ११ ॥

कितेक काल ऐसैं सहि नीलनैं एक१सालवृक्ष[2]कौं उपरि प्रहस्तके बाजी मारि धनुषहू तोरि डार्‌यो ॥

तहाँ लंकेसके प्रधाननैं मुसल गहि नीलके ललाटमैं प्रहार्‌यो ॥

तहाँ नीलनैं प्रहस्तके उरमैं एक१पादपको प्रहार करि अनंतर[3]-रही एक१महासिला मस्तक पर मारी ॥

तासौं प्रहस्तनैं प्रान छोरि पंचम५युद्धमैं पंचमी५के दिन सूरस-ज्जा सोय वीरनिद्रा धारी ॥ १२ ॥

प्रहस्त को निपात[4] सुनतही कोपाक्रांत[5] होय छठि ६ के दिन स्वयं लंकेसही लरिबेकौं चलायो ॥

तहाँ आगैंसौं अपूर्व अनीक[6]को संघट्ट[7] देखि रघुबरकैंहू अद्भुत उत्साह आयो ॥

अनेक सूरवीर क्रव्यादन[8]कौं उद्धत[9] देखि बिभीखनसौं पूछत भये ॥

अरु यानैं प्रत्येक[10] पहिचानि पहिचानि प्रश्न आदेश[11]के उचित उत्तर दये ॥ १३ ॥

जो यह अपनैं भारसौं बाहन मातंग[12]को मस्तक नमावत अमर्ष[13]मैं उफनावत आवैं सु तो दूसरो २ अकंपन १ जानौं ॥

अरु यह सिंहध्वज[14]रथारूढ धनुषकौं धुनावत रक्षोराज[15]को पट्टप पुत्र मेघनाद २ मानौं ॥ १४ ॥

इतकौं यह रथारूढ कोदंड[16]कौं टंकारत आतिरथबीर आतिकाय ३ आयो अरु इतकौं घनघंटानादित[17] गजारूढ गर्जना करत बालार्क[18]

१ बाणों की वृष्टि २ वृक्ष का प्रहार करके ३ उसके पीछे ही ४ प्रहस्त का पड़ना सुन कर ५ कोप में व्याप्त होकर ६ सेना का ७ समूह ८ राक्षसों को ९ धीठ देख कर १० एक एक को ११ पूछने की आज्ञा के उचित १२ हाथी का मस्तक नमाता हुआ १३ क्रोध में उफनता हुआ १४ सिंह के चिन्हवाली ध्वजा के रथ में चढाहुआ १५ राक्षसों के राजा (रावण) का पाटवी पुत्र ॥ १४ ॥ १६ धनुष को टंकारता है सो १७ मेघ के समान घण्टा का नाद करता हुआ हाथी पर सवार १८ प्रभात के सूर्य.

प्रतिम[1] नेत्रनसौं कपिनकौं डरावैं सु महोदर ४ चलायो ॥

इतकौं भर्म[2]भांडभूषित संध्याकालके मेघ सहित महीधर[3]के समान अश्वपैं आरूढ मरीचिमाली[4] प्रासकौं उठाय आवैं सो वज्र वेग पिसाच५जानिये ॥

अरु यह बडे ससिप्रभ[5] बलीवर्द[6]पैं आरूढ बीजुरी निभ[7] त्रिसूल कौं भ्रमावैं ताकौं द्वितीय २ त्रिसिरा ६ प्रमानिये ॥ १५ ॥

इतकौं यह पन्नगध्वज[8] स्यंदन[9] समारूढ बडे आयत[10] वच्छस्थल[11] करि बिराजमान कुंभ ७ नाम क्रव्याद[12] चापके बिस्फार[13]सौं बाहिनी[14]कौं बहिरा करैं ॥

अरु या तरफ हेमहीरमंडित[15] परिघकौं पकरि आयो सो घोरकर्मा निसाचर निकुंभ८नाम धरैं ॥

अरु इत देखिये चाप१खड्ग२बाण३बिराजमान बडी पताकाके रथमैं चढ्यो नगशृंग[16] जुद्ध निपुन नरांतक९अपनी पृतना[17]के प्रान पियैं जात ॥

इतकौं व्याघ्र १ करभ[18] २ गज ३ सिंह ४ मुख[19] भूतगन उपेत[20] देवदर्पदमन[21] देवांतक १० दिखात॥१६॥

सबनके बीच यह सारदी राका[22]के ससधर[23]समान सितछत्र[24] सोहैं ताके तरैं महाकिरीट १ कुंडल २ बिराजमान लोकपालनके दर्पको दारक[25] लंकेश्वर११आपही चलाय आयो ॥

अैसैं बिभीखननैं प्रत्येक प्रश्नको उत्तर जगदीसकौं सुनायो॥

---

१ सदृश नेत्रों से २ सेना के कलशों से शोभित ३ पर्वत के समान ४ सूर्य समान भाले को ५ चंद्रमा की कान्ति के समान ६ बैलपर चढाहुआ ७ बिजुली सदृश ॥ १५ ॥ ८सर्प के चिन्हवाली ध्वजा के ९ रथ पर चढाहुआ१०चौड़े११हृदय करके शोभायमान१२राक्षस के १३ शब्द ("विस्फारो धनुषस्वानौ" इत्यमरः)१४सेना को१५सोने में हीरों से जड़ीहुई १६पर्वत के शिखर समान १७ सेना के १८ ऊंट १९आदि २० सहित २१ देवताओं के घमंड को मिटानेवाला ॥ १६ ॥ २२ शरद पूर्णिमा के २३ चन्द्रमा समान २४ सेतछत्र के नीचे २५ विदारण करनेवाला.

तदनंतर[1] दसग्रीवनैं सबही निसाचर संग आये देखि पुरीकौं सूनी जानि कितनेक लंकाकी रच्छाकौं पीछे पठाये ॥
अरु आपनैं रंगमैं रुपि[2] राघवके चक्रपैं[3] कराल कलंब[4] चलाये।१७।
तहाँ सुग्रीवनैं महामहीधर[5] उपारि रच्छोराजपैं[6] फैंक्यो ॥
ताकौं कंकपत्रनसौं[7] काटि अस्रपअधीसहू[8] साखामृगेसपैं[9] बिसेस चैंक्यो[10] ॥
कोपके साथही महापन्नग प्रतिम[11] फुल्लिंग[12] फुल्ल्यमान पावक[13] प्रकास तीर आकर्ण[14] ऐंचिकैं दसग्रीवनैं सुग्रीवकैं दयो ॥
तासौं कपिराज क्रंदन[15] करत पृथ्वीतलपैं परि अचेत भयो।१८।
तब गय१ गवाच्छ२ ऋषभ३ सुदंष्ट्र४ ज्योतिर्मुख ५ नल६ इत्यादिक कपिन पर्वत उठाय उठाय चलाये ॥
तेहू समस्त दसग्रीवनैं चित्रपुंखनसौं[16] चूर्ण करि सबनकैं कराल कलंब[17] लगाये॥
रावनके बाननसैं बिहाल होय भीरु[18] ज्यौं भजिकैं संकंप[19] सांखामृग[20] रामचंद्रके सरन गये॥
तिनकौं देखतही महाधानुष्क[21] रघुराजहू चापकौं टंकारि लंकेसपैं चलावत भये ॥ १९ ॥
तिनकौं अटकि अनुसासन[22] लेकैं सौमित्रि[23] अग्रेसर होय आये॥
अरु उततैंहु दसग्रीवनैं इनपैं अनंत चित्रपुंख चलाये ॥
तिन तीरनकौं भेदि मारुतिनैं[24] दसमुखके रथ ढिग जाय दक्खिन

---

१ जिस पीछे २ रावण युद्ध भूमि में रुपकर ३ रामचन्द्र की सेना पर भयंकर ४ बाण चलाये॥१७ ५ बड़ा पर्वत ६ रावण पर ७ काक के पंख लगेहुए बाणों से ८ राक्षसराज ९ बानरों के राजा पर बहुत १० क्रोध किया ११ बड़े सर्प सदृश १२ अग्निकण उड़तेहुए १३ अग्नि के प्रकाश समान बाण १४ कान तक खींचकर १५ कूक (रुदन) करताहुआ ॥ १८ ॥ १६ चित्र विचित्र पांखोंवाले बाणों से १७ भयंकर बाण लगाये १८ कायर के समान भागकर १९ धूजतेहुए २० बानर २१ धनुर्विद्या के जाननेवाले रामचन्द्र भी ॥ १९ ॥ उनको रोककर २२ रामचन्द्र की आज्ञा लेकर २३ लक्ष्मण आगे बढ आये २४ हनुमान् ने

बाहु उठाय कह्यो ॥
तैं दुष्ट देव[1]दानव[2]गंधर्व[3]नाग[4]यक्ष[5]किन्नर[6]सिद्ध[7]चारण[8]
विद्याधर[9]डराये पैं आज बानरकेबस परि मेरे भुजादंडतैं मि[1]च्चु लह्यो॥
सो सुनि दसग्रीव कहि तू निस्संक प्रहार करि कीर्ति लैचुकि
तदनंतर[2] तोहि मारौं ॥
तासौं[3] आंजनेय कही तेरे तनूज[4] अक्षके समान तेरोहू जीवित
भार उतारौं ॥
यहै सुनतही दसग्रीवनैं मारुतिके उरमैं प्र[5]तलको प्रहार कीनौं॥
तासौं मु[6]हूर्त मात्र स्थिर होय व[7]ज्रांगनैंहू आसिरके उरमैं प्रत-
लको ही आघात दीनौं ॥२१॥
तासौं घुम्मिकैं बहोरि दृढ होय लंकेसनैं मा[9]रुतिसौं कह्यो॥
वाहरे! बानर तेरे विक्रमकौं तैं अच्छो आ[10]घात डारयो ॥
मारुति कही धिक्कार मेरे पराक्रमकौं जासौं तैं दुष्ट सीघ्र ही
गाढ सम्हार्‍यो ॥
यह सुनतही कोपाक्रांत[11] होय दसमुखनैं आं[12]जनेयके उरमैं द-
क्खिन करकी मुष्टि मारी ॥
तासौं बज्रांगकौं बिह्वल देखि रक्षोराजनैं अग्गैं चलाय प्रभु-
के पृ[13]तनापति नीलसौं लरिबेकी उमंग धारी ॥२२॥
नीलनैं पर्वत चलायो ताकौं सप्त७बानन करि काटि दयो ॥
तापीछैं अश्वकर्ण१साल२धव३आम्र ४ इत्यादिक प्रचंड पाँ[14]द-
प चलाये तिनके समूहकौं चूर्ण करत भयो ॥
तब नीलहु अल्पका[15]य करि रावनके ध्व[16]जाग्रपैं उडिपर्‍यो ॥

१मृत्यु ॥ २० ॥ २ जिसपीछे ३ हनुमान् ने रावण से कहा ४ पुत्र ५ लात मा-री ६ दो घड़ी तक खड़ा रहकर ७ हनुमान् ने भी ८ राक्षस के ॥ २१ ॥ ९ हनुमान् से कहा १०अच्छा प्रहार किया ११क्रोध में व्याप्त होके १२ हनुमान् के उर में १३रामचन्द्र के सेनापति नील से ॥ २२ ॥ वृक्षविशेष १४ भयंकर वृक्ष १५ छोटा शरीर करके १६ ध्वजा के अग्रभाग पर

तहाँ क्षुभित होय दसमुखनैं आग्नेय अस्त्रको संधान करि नीलकै प्रज्वलित पृसत्क[1]को प्रहार कर्‍यो ॥२३॥

तासौं अचेत होय नील पृथ्वीतलमैं जानुनैं[2] करि जर्‍यो[3] परंतु अग्निको अवतार हो यातैं आग्नेयसौं अंसु[4] न गये ॥

याकौं अचेत देखि लंकेस सौमित्रिपैं[5] चलायो ताकै सेसावतारहैं हु प्रचंड प्रदर[6] इये ॥

लंकेसनैं सप्त७सायक चलाये तेहू लक्खननैं क्रीडा करि काटि डारे ॥

औरहू अपनैं अनेक बाननकौं व्यर्थ गये देखि लंकेसनैं हू लक्खनके अनेक बिसिख बिदारे ॥ २४ ॥

तदनंतर दसग्रीवनैं ब्रह्माके दये बानकौं चलाय लक्खनके ललाट देसमैं प्रहार्‍यो ॥

तासौं विकल होय कछुक कालमैं चेतना पाय सेसावतारनैं[10] क्रव्याद[11]राजको कोदंड[12] काटि डार्‍यो ॥

तदनंतरही[13] सौमित्रिनैं[14] आसिरराजके उरमैं तीन३तीर लगाय मूर्छा दई

ताहूसौं दुष्टनैं बिह्वल होय कछुकालमैं चेतना लई ॥ २५ ॥

प्रबोध[16]के पावतही स्वयंभूकी दई सक्तिकौं उठाय लंकेसनैं लक्खन[18] विलक्खनमैं[19] लक्खनपैं[20] डारी ॥

ताहि भेदिबेकौं सौमित्रिनैं बहुत बान दये तथापि भुजांतरकौं[21] भेदि बिजुरीसी पार पधारी ॥

तासौं अचेत होय पृथ्वीपैं परतही लंकेसनैं आय सौमित्रिकौं[22] दोहू[23]करनसौं पकरि लैजायबेकौं उठाये ॥

---

१ जलतेहुए बाण का प्रहार किया ॥२३॥ २ घुटनों के बल ३ गिरगया ४ अग्नि अस्त्र से प्राण नहीं गये ५ लक्ष्मण पर चला ६ भयंकर तीर लगाये ७ तीर (बाण) चलाये ८ बाण काटे ॥२४॥ जिसपीछे ९ रावण ने १० लक्ष्मण ने ११ रावण का १२ धनुष १३ जिसपीछे ही १४ लक्ष्मण ने १५ रावण के उर में ॥२५॥ १६ चेत होते ही १७ ब्रह्मा की दीहुई १८ लक्खों के १९ देखतेहुए २० लक्ष्मण पर डाली जिसको काटने के लिये लक्ष्मण ने २१ हृदय (छाती) को फोड कर बिजुली के समान पार निकल गई २२ लक्ष्मण को २३ दोनों हाथों से

परंतु जासौं कैलास उठ्यो ताहूसौं न उठे तब दुष्टनैं बाहुनसौं पीडन करि सेसके[1] कलेवरकै अनेक उपमर्द[2] लगाये ॥ २६ ॥

सो देखि बजरंगनैं[3] आय आसिरराजके उरमैं वज्रको उपमान[4] मुष्टिपात दयो ॥

तासौं अचेत होय जानुनसौं[5] जंकि[6] दुष्ट मुख१नेत्र२नासा३श्रवन४नसौं लोहित[7] बमन[8] करत भयो ॥

ताकौं[9] छोरि हनुमान अचेत लक्खनकौं उठाय रामचंद्रके समीप आनैं ॥

अरु रावनकी सक्तिहू सौमित्रिकौं[10] तजि पीछी दुष्टके रथमैं जायरही इतेक अंतर रक्खसराजनैं हू कछु धीर होय कोदंडपैं निसितं[11] बान तानैं ॥ २७ ॥

कपिनको कटक भज्यो देखि श्रीरामचंद्र लंकेसपैं चलाये ॥

तिनसौं मारुति[12] कही मोपैं समारूढ होय लरिये यह सुनि सोंही करि रघुराजनैं रावनके समुख जाय बानीप्रतोद[13] लगाये ॥

रे दुष्ट सौमित्रिकी यह दसा करि इंद्र१जम२द्रुहिन[14]३संकर४अर्क[15]५अग्नि६के सरन गयैंहू मोसौं बचैगो नहीं ॥

सो सुनि दुष्टनैं मारुतिके बान दये तिनकौं देखि रघुराजनैं कृतांत[16]की कांति गही ॥ २८ ॥

तीखे बान दैकैं चक्र[17]१अश्व२केतु[18]३छत्र४असनि[19]५खड्ग६सूल७हय८सारथि७सहित लंकेसको रथ काटिडार्‌यो ॥

अरु एक१आसुग[20]उल्का[21]को उपमान भूतेसभक्त[22]के भुजांतर[23]मैं मार्‌यो

१लक्ष्मण के शरीर पर २ रद्दे (रगड़े) लगाये ॥ २६ ॥ ३ हनुमान् ने. वज्र को जिसकी४उपमा लगे ऐसी मुक्की लगाई ५ घुटनों के बल ६ गिरकर ७ रुधिर ८ उगलने लगा ९ अचेत हुए लक्ष्मण को उठाकर १० लक्ष्मण को छोड कर११तीखे बाण खींचे ॥ २७ ॥ १२ हनुमान् ने कहा कि मुझ पर सवार होकर लड़िये १३ वचन के चाबक लगाये कि अरे दुष्ट लक्ष्मण की यह दशा करके १४ ब्रह्मा १५ सूर्य १६ यमराज की कान्ति धारण की ॥२८॥१७ रथ के पहिये१८ध्वजा१९वज्र अथवा अंगारे वर्षाने का अस्त्र२०बाण२१अग्नि के अंगार को जिसकी उपमा लगे ऐसा२२महादेव के भक्त(रावण)के२३हृदय में

तासौं मूर्छित होय करसौं सस्त्र गिराय दसग्रीव घुम्मिकैं भुम्मिपैं पर्‌यो ॥

तब*अखिलेसनैं एक१अर्द्धचंद्र चलाय कंटकको किरीटटूटूक टूक कर्‌यो ॥

तदनंतर विन्हल बलहीन जानि तासौं रघुनाथ कह्यो रे दुष्ट पुरीमैं जाय श्रमकौं विहाय धीर बीर होय आवहु ज्यौं मेरे बानकौं करुणा अटकि सकैं नहीं ॥

सो सुनि दुष्टनैं हु सिटाय पुरीमैं प्रबेस करि बिश्वेसके बिक्रमकौं महादुस्सह मानि पहिलैं अनरगय१बेदवती २ उमा३नंदीगन४नलकूबर५बरुनसुता पुंजिकस्थला६के साप भये सुमिरि क्रव्यादनसौं कुंभकर्णके जगावनकी कही॥

जादिन बिभीखन सत्रुके सरन गयो तासौं दूजे२दिन मंत्रके अनंतर कुंभकर्णनैं अपनैं गृह जाय निद्रा धारी ॥

अरु बिभीखन सरन गयो जादिन सहित त्रि३ दिन रघुवरनैं दर्भासन बैठि समुद्रसौं सार्म करिबेकी निहारी ॥३०॥

चोथे ४ दिनसौंही सिंधुकौं सासित करि पंच५दिन पर्यंत सेतु बंधि पंचम५दिनके अंतही सिंधुकौं लंघि पैले तीर मिलान दये॥

तादिनसौं पूर्ब कुंभकर्णकौं सोवत दिन अष्ट८गये ॥

नवम९दिन एकाकी१राति रघुबरनैं सुवेलपैं चढि लंकाके मर्म निहारे ॥

दसम १० दिन सुबेलसौं उतरि लंकापैं कराल कीसनके

*सबके स्वामी (रामचन्द्र) ने १ श्रम को मिटाकर २ मेरे बाणों को दया नहीं रोक स
कै अर्थात् इस समय बाण चलाते दया आती है ३ संसार के स्वामी (रामचन्द्र) के
पराक्रम को, ऊपर जिनके नाम कहे उन्होंने श्राप दिये थे जिनको ४ दया करके ५
राक्षसों से कहा कि कुंभकर्ण को जगाओ ६ सलाह होने के पीछे ही ७ डाभ के
आसन पर बैठकर ८ सन्धि (मिलाप) ॥३०॥ ९ आज्ञा अधीन करके १० स-
मुद्र को लांघ कर ११ मुकाम दिया १२ पहिले १३ एकरात्रि १४ सुवेल ना-
मक पर्वत पर १५ मर्मस्थल (जीव की जगह) १६ बानरों के

आघात डारे ॥३१॥

सो जुद्ध होतहू पूर्व कहे क्रमसौं छ६दिन गये ॥

ऐसैं चतुर्दस१४दिनसौं सुप्त[1] अनुजकौं जगावनकौं सप्तमी७के दिन निर्देस[2] दये ॥

सो सुनतही हजारन क्रव्याद मद्य१मांस२मय महोपहार[3] लैकैं एक१एक१जोजन लंबायतें[4] कुंभकर्णकी गुहाके[5] द्वार गये ॥

अरु ताके स्वासबेगसौं बिधूत[6] होय बहुत बेरमैं नीठि नीठि प्रबिष्ट[7] होत भये ॥३२॥

मद्यके कलस मृग१[8]महिष२बराह[9]३नके समूह आगैं धरि धूपधूपितैं[10]१चंदनलिप्तैं[11]२करि एकसंगहि सिंहनाद करि संख१भेरी[12]२पटह[13]३नकौं बजाये तथापि[14] निद्रा न गई ॥

पीछैं सैलशृंग[15]१मुसल२भुसुंडी[16]३गदा४मुद्गर५वृक्ष६मुष्टि७प्रतल[17]८प्रहारे तथापि बिसमही बहुत भई ॥

दसहजार१००००क्रव्यादन[18] इकसंगही हजारनभेरिनपैं आघातडारे॥
ऐसैं सांप[19] परबस सुप्तकौं उठावनमें अनेक उपाय करि हारे ॥

तबही एकहजार१०००हत्थिनकी घटा याके अंगपैं चढाय कितेकतो याके केस उपारिबे लगे ॥

अरु कितेक याके काननमैं केही जलकलस डारि दंतनसौं दुष्टके मर्मदेस दारिबे[20] लगे ॥

तब गजनके स्पर्श करि कुंभकर्णनैं नेत्र खोलि आने उपहार[21] असन[22] करि जगायबेको हेतु[23] पूछ्यो तब अग्रज[24]के अमात्य[25] यूपाक्ष

१सोतेहुए छोटे भाई को २ आज्ञा दी ३ बडी सामग्री ४ लंबा और चौड़ा ५ गुफा ६ कंपित होकर ७ घुसे ॥ ३२ ॥ ८भैंसे ९ सूवर १०धूप देकर ११चंदन का लेप करके १२ नौबत १३ढोल बजाये १४ तोभी १५ पर्वत के शिखर १६ अस्त्रविशेष १७लात (चरणाघात) १८ राक्षसों ने १९ श्राप से परवश होकर सोतेहुए को ॥ ३३ ॥ २० विदारण करने लगे २१ लाई हुई सामग्री को २२ भोजन करके जगाने का २३कारण पूछा २४ बडे भाई (रावण) के २५ मंत्री

नैं यथातथ्य कह्यो ॥

अरु रावनकौं थक्यो जानि रामनैं छोड्यो सुनतही लरिबेकौं चलायो तहाँ महोदरके कहेसौं जुद्धकौं जैबो तजि द्वैसहस्र२०००मद्य घटपान करि अनेक सत्वनकौं आहरि अग्रजको जाय दरसन लह्यो

वा समय चलते कुंभकर्णकौं सब सहरसौं ऊपर देखि वानर व्यथित होय होय रघुनाथके सरन गये ॥

अरु आपँहू पर्वतके प्रमान बिश्रवाके मध्यमपुत्रकौं देखि यह महादीर्घ कौन क्रव्याद ऐसैं बिभीखनसौं पूछत भये ॥

बिभीखन कही यह कुंभकर्ण बिनाँही बरदान स्वभावहीसौं बलिष्ठ जानैं होतही हजारन सत्व खाये ॥

तब प्रजाकी सहायपैं इंद्रनैं आय बज्रादिक अनेक आयुधनके आघात लगाये ॥ ३५ ॥

यानैं ऐरावनको दंत उपारि ताही करि इंद्रके उरमैं महाप्रहार दयो तासौं हतविक्रम होय सक्र प्रजाके नासको निदानं मरालबाहनसौं जाय कहत भयो ॥

ब्रह्मानैं सब राक्षस बुलाय कुंभकर्णकौं महाभयंकर देखि स दाही सुप्त होय पर्‌यो रहिबेको साप दीनों ॥

तासौं त्वरितही मृतक कल्प होय पर्‌यो देखि दसग्रीवनैं याके सोवन १ जगन २ को करार कमलासनसौं कर जोरि माँगि लीनों ॥ ३६ ॥

तबचतुर्मुखनैं कही छहमास सोय यह एक १ दिन प्रबोध पैहैं ॥ तथापि यह घोर दुष्ट एक१ही दिनमैं अनेक सत्वकौं खैहैं ॥

(कामदार) ने १ जैसा था वैसा कहा २ युद्ध में जाना छोडकर ३ अनेक जीवों को भक्षण करके ॥ ३४ ॥ ४ व्याकुल ५ रामचद्र ने भी ६ राक्षस ७ बलवान् है जिसने पैदा होते ही हजारां ८ जीव खाये थे ९ प्रहार ॥ ३५ ॥ १० इन्द्र ११ कारण १२ ब्रह्मा से १३ शयन करके पड़ा रहने का श्राप दिया जिससे शीघ्र ही मृतक समान होकर पड़ाहुआ देख १४ रावण ने १५ ब्रह्मा से ॥ ३६ ॥ १६ ब्रह्मा ने १७ चेत पावेगा १८ तोभी

बिभीखनसौं औसी सुनि रघुनाथनैं सेनापति नीलकौं पठाय
लंकाके द्वार१प्राकार२*अवरुद्ध कराये॥
अरु अंगद१गवाक्ष२हनुमान३सरभ४हू संगही सिधाये ॥३७॥
इतकौं लंकेसनैं कुंभकर्णसौं जगायवेको निदान कह्यो ॥
तब यानैं कही पहिले मंत्रमैं हमनैं दोप देख्यो सोही अब स-
वनके प्रान लैवेकौं वलिष्ट होय रह्यो ॥
केवल बल१विक्रम२के दर्पतैं वैदेहीके साथ मृत्युकौं न्यौतिलाये॥
औसी सुनतही लंकेसनैं अनुजकौं अनेक कटुवचन सुनाये॥३८॥
तब अग्रजकौं कुपित जानि अनुजनैं कही मंत्रमैं पूछो तो ह-
म सदा औसीही कहैं ॥
अरु संगरमैं पठायेंसौं सत्रुनके स्वासको पान किये रहैं ॥
अब काहू सेनाकों मेरे संग न भेजो ऐसैं कहि एकाकी कुं-
भकर्ण लरिवेकौं चलायो ॥
तहाँ महोदरनें सबनके समक्ष याकों असह्य उत्तर सुनायो॥३९॥
जनस्थानके क्रव्यादनकों रु दसग्रीवदर्पदारक बालिकों मारि
समुद्रमैं सेतु रचि लंकाकों घेरि लंकेसकों विह्वल जानि जीवदा-
न दै छोड्यो तिनसों लरिवेकों एकाकी१जायवो उचित न जानों ॥
रनरंगमैं अद्वितीय राघवको कोप महाप्रलयके समान मानों ॥
ऐसें महोदरनें कुंभकर्णसों कहि लंकेससों कहीमैं१ अरु द्विजिव्ह
२ संहादी ३ रु वितर्द्दन ४ इन च्यारि४नकों पठाय हो॥
तो तो कदापि नियति सानुकूल भयैं बहुरि अनुजको मुख दे-
खन पायहो ॥ ४० ॥

*रुकाये १जगाने का कारण पूछा २प्रथम सलाह हुई जिसमें ३बलवान् ४सेना और पराक्रम के ५घमंड से ही ६सीता के साथ ७सलाह में पूछोगे तब तो इ-सी प्रकार कहेंगे और ८ युद्ध में भेजो तो ९ सबके रोबरू १० नहीं सहने योग्य उत्तर दिया ॥ ३९ ॥ ११ राक्षसों का १२ रावण के घमंड को विदारण करनेवाले बालि को मारकर १३ घबराया हुआ १४ अकेला जाना १५ भा-ग्य सानुकूल होवेगा तो छोटे भाई का मुख देख सकोगे ॥ ४० ॥

ऐसी सुनतही महोदरकौं कुंभकर्णनैं कातर कहि अग्रजके मनकौं अनुमोद दीनों ॥

अरु लंकेसनैं उठिकैं माल्य१अनुलेपन२वस्त्र३भूखन४नसौं अनुजकौं अलंकृत कीनौं ॥

चतुरंग याके संग दयो तब हजार१०००भार भर्ममय कंकटकौं कसि अग्रजकौं आलिंगि प्रदक्षिणा करि जाज्वल्यमान कालायस त्रिसूलकौं पकरि कुंभकर्ण लरिबेकौं चलायो ॥

जाके विग्रहको सत१००धनुख परिणाह खटसत६००धनुख उच्छ्रय देखि कपिनको कटक ओर ओर पलायो ॥ ४१ ॥

ऐसें लंकाके प्राकारकौं उल्लंघि कुंभकर्णके आवत प्लवंगनकौं पलावत देखि अंगदनैं नल१नील२कुमुद३गवाक्ष४सौं कही यह आकृतिहीसौं भयंकर है जुद्धमैं तैसो समर्थ न जानौं ॥

अरु पलायनसौं बचिबोहू मरनसौं बिसेस मानौं ॥

यह सुनतही अद्रि१द्रुम२सिला३लैकैं कपिननैं कोपसौं मुररि कुंभकर्णपैं चहु४ओरसौं प्रहारे ते दुष्टको स्पर्शकरतही चूर्ण होतभये।

अरु याके आघातनसौं छिन्न भिन्न होय रघुबीरके सुभट वानर १तो दिसा१आकास२समुद्र३पर्बत४नमैं दुरित गये ॥ ४२ ॥

गोपुच्छ१बिलनमैं पैठे रु भल्लूक३बडे बिटपीनपैं चढि दुरे ॥

---

१ रावण के मन को २ प्रसन्न किया ३ माला पहनाकर ४ शरीर पर सुगन्धित वस्तु लगाकर ५ शोभायमान किया ६ सेना, ७ सौलह मासे का एक कर्ष और चार कर्ष का एक पल, सौ पल की एक तुला और बीस तुला का एक भार होता है ऐसे हजार भार ८ सुवर्ण का ९ कवच कसकर बडे भाई से १० मिलकर ११ क्रान्तिमान् १२ काले लोहे की बनीहुई १३ जिसके शरीर का १४ विस्तार १५ छः सौ धनुष का ऊँचापन १६ भागा ॥ ४१ ॥ १७ कोट को कूदकर १८ वानरों को भागेहुए देख १९ स्वरूप से ही भयदायक है २० भागकर बचना मरने से भी विशेष है २१ पर्वत २२ वृक्ष २३ कुंभकर्ण के प्रहार से २४ छिपगये ॥ ४२ ॥ २५ गौ की पूंछ के समान है पूंछ जिनकी (लंगूर) ऐसे बन्दर गिरिकंदराओं में घुसे २६ रींछ २७ बडे वृक्षों पर चढगये

बहोरि हू अंगदके बचन*प्रतोदसौं पीछे फिरि ऋषभ१सरभ२मैंद ३धूम्र४नील५कुमुद६सुसेन७गवाक्ष८रंभ९तार१०द्विविद ११ पनस १२वज्रांग१३इत्यादिक कितेक कुंभकर्णसौं जुरे ॥

तहाँ अष्टसहस्र८०००सप्तसत७००वानरतो दुष्टनैं पहिलेही मिलापमैं मीडिकैं अचेत पृथ्वीतल पसारे ॥

अरु दसन१बीसन२०तीसन३०कौंसनकौं इक१इक१वेरही आननमैं फैंकि चाबि डारे ॥ ४३ ॥

तहाँ द्विविदनैं एक१धराधर लैकै कुंभकर्णपैं चलायो सो दुष्टसौं चूकि क्रव्याद कटकमैं जाय पर्‌यो ॥

तानैं अनेक गज१हय२रथ३रथि४सारथि५नको चूर्ण कर्‌यो ॥

मारुतिनैं बडे बलसौं सिला१गिरि२तरु३नकी वृष्टि करी ॥

सोहू दुष्टके त्रिसूलसौं छिन्नभिन्न होय पृथ्वीतल परी ॥४४॥

क्रव्यादनैं आंजनेयके उरमैं त्रिसूल मार्‌यो ताकी लोह छक ले लोहितको बमन करि बज्रकंकटनैं महाघोर नाद कीनौं ॥

तहाँ नीलनैं धराधर फैंक्यो सो हू निसाचरनैं मुष्टिपातहीसौं चूर्ण करि दीनौं ॥

तदनंतर ऋषभ१सरभ२नील३गंधमादन४गवाक्ष५पंच५ही प्लवंगन दुष्टकै सैल१सिला२पादप३प्रतल४मुष्टि५चरन६जानु७नके प्रहार दये तेहू सब दुष्टकै मृदुस्पर्शहीके सूचक भये ॥

कुंभकर्णनैं ऋषभकौं १ भुजनसौं १ भींचि, सरभ२कौं मुष्टिसौं २, नीलकौं ३ जानुसौं ३, गवाक्षकौं ४ प्रतलसौं४ प्रहारिकैं अचेत रुधिरवंमी करिडारे ॥

*वचन रूपी चावक से१हनुमान् २ मसल (कुचल) कर ३वानरों को अपने मुख में फैंकदिया ॥ ४३ ॥ ४ पर्वत लेकर ५ राक्षसों की सेना में जागिरा ६ हनुमान् ने ॥ ४४ ॥ ७ हनुमान् के उर में ८ रुधिर ९ उगल कर १० हनुमान् ने ११ बंदरों ने १२ पर्वत १३ वृक्ष १४ थाप (थप्पड़) १५ घुटनो के १६ कोमल स्पर्श को १७ जनानेवाले जाने ॥ ४५ ॥१८ घुटनों से १९ थप्पड़ २० रुधिर उगलनेवाला

तबतो हजारन प्लवंग[1] कुंभकर्णपैं जाय चढे रु दंत१मुख२मुष्टि
३प्रतल४प्रहार बिथारे ॥
तिनमाँहिंसौं अनेकनकौं पकरि दुष्टनैं पातालबिवरसे[2] वंक्र[3]मैं
फैंकिदये ॥
तेहू नासा[4]१कर्ण[5]२नके छिद्रन व्है बाहिर आय आय भजत
भये ॥४६॥
निसाचर[6]के कर[7]नसौं मथ्यो साखा[8]मृगनको समुद्र फूटत भयो॥
सबनकों रघुनाथके सरन भजे देखि तारेय[9]नैं एक१ पर्बतउठा
य कैकसीके मध्यपुत्रके मस्तकमैं प्रहार दयो ॥
ताहुको तिर[11]स्कार करि कुंभकर्ण[10]नैं अंगदपैं त्रिसूल चलायो॥
यानैंहु सो आवत देखि रनमार्ग[12]कोबिद[13]नैं लाघव[14]सौं मलंगि
चुकायो ॥४७॥
तदनंतर[15] तारेयनैं उडिकैं आसिर[16]के उदरमैं प्रतलको प्रहार
कीनो ॥
तासौं कछुकालमैं चेतना पाय कुंभकर्णनैं अंगदके उरमैं मुष्टि
को आघात दीनों ॥
तासौं यह मूर्छित व्है गिस्यो तबतो त्रिसूलकों उठाय सुग्रीवपैं
चलायो ॥
अरु दोउन२ननैं मिलिके परस्पर श्लाघा[17]को बचन सुनायो ४८
सुग्रीवनैं धराधर[18] फैंक्यो सु आसिरके उरमैं लागि फूटि गयो ॥
अरु यानैं कपिराजपैं त्रिसूल चलायो ताकों बज्रांग[19]नैं बीचहीमैं
गहि जानु[20]की मचक दै द्वै२खंड करि दयो ॥

१ बंदर २ पाताल के छिद्र समान ३ मुख में फैंक दिया. वेही४नासिका ५कानों
के छिद्रों में होकर६राक्षस के७हाथों से मथाहुआ८बंदरों का समुद्र फूट गया
अर्थात् बंदर भागगये ९ अंगद ने १० कुंभकर्ण ११ अनादर १२ युद्ध मार्ग का
पण्डित १३ शीघ्रता से १४ कूद कर ॥ ४७ ॥ १५जिस पीछे १६ राक्षस के पेट
में १७ प्रशंसा का वचन ॥ ४८ ॥ १८ पर्वत १९ हनुमान ने २० घुटने की

तब कुंभकर्णनैं एक१ सैलसृंग[1] उठाय सुग्रीवपैं प्रहारयो तासौं निश्चेष्ट[2] हो कपिराज घूमिपरयो ॥

ताकों उठायकैं निस्संक होय कुंभकर्णनैं लंकामैं गमन करयो॥४९॥

पुरबासिन रावणानुजकों[3] चंदनोदकसौं[4] सींच्यो ताके सीतलस्पर्श करि सुग्रीवकी मूर्च्छा गई तब ही दंतनसों नक्क[5]१ दोऊ२ करनसों कर्ण२ काटि कुंभकर्णनैं बहुत ही मीड्यो[6] तथापि[7] ताके पार्श्व[8] मैं लत्ताघात[9]करि भुंजकोटरसौं[10] छूटि आकासमैं मलंग लई ॥

ऐसी अद्भुत करि कपिराज तो कूदिकैं रघुराजके समीप आयो ॥

अरु कुंभकर्ण आपकों बिरूप जानि लज्जासों पीछो मुररि मुद्ग-रकों उठाय जंगकों चलायो ॥५०॥

कोपमूढ ह्वैकें अपनें पराये रक्खस१पिसाच२रिच्छ१बानर२नकौं
एक१ही करसौं आननमैं फैंकि फैंकि खाये ॥

तहाँ सौमित्रिनैं[11] याको कवच भेदि भुंजांतरमैं[12] सप्त ७ सायक[13]
लगाये ॥

कुंभकर्णनें लक्खनसौं कही कालको काल जो मैं ताके आगैं ठहरि
तैंनैं खूबही बीरता ख्यात[14] करी ॥

परंतु रामकौं दिखावहु तब सेसैं[15] कही ए निस्संक अंग रंगनमैं[16]
खरे अनादि हरी ॥५१॥

ऐसी सुनतही रक्खसनैं रघुराजकेसमुख चरन दये तहाँ जगदीस रौद्र अस्त्रको प्रयोग करि आसिर[17]के उरमैं कलंब[18] देतभये ॥

तासौं अचेत भये दुष्टके करतैं गदादिक आयुध गिरे ॥

अरु अंगसौं निकासिकैं सबही जंगरंग[19]मैं याके रुधिरके स्रोत[20]
फिरे ॥ ५२ ॥

१पर्वत का शिखर २चेष्टा रहित (बेहोश) ३कुंभकर्ण को ४चन्दन के पानी से ५नासिका ६दबाया (कुचला) ७तोभी ८बगल में ९लात की चोट देकर १०हाथों के गव्हर (कोचरे) से छूटकर ॥ ५० ॥ ११ लक्ष्मण ने १२ हृदय में १३ बाण १४ प्रसिद्ध करी १५ लक्ष्मण ने कहा कि १६ युद्धभूमि में ॥ ५१ ॥ १७राक्षस के उर में १८बाण १९ युद्धभूमि में रुधिर के २० प्रवाह फिरे ॥५२॥

कछुकालमैं चेत पाय जुर्‌यो तहाँ अखिलेसनैं[1] याको कवचहू
काटि डार्‌यो॥
रक्खसनैं एक१अद्रि[2] चलायो सोहु रघुनाथनैं बाननसौं बिडार्‌यो[3]
कुंभकर्णको कवच कटिकैं गिरत गिरत द्वै सत२०० बानरन-
कौं दाबि मारत भयो ॥
तहाँ लक्खननैं[4] अग्रजके सम[5]क्षही समस्त सारवामृगनकौं[6] नि-
देस[7] दयो ॥ ५३ ॥
यह सोनित[8]गंधमत्त अपनैं परायेकौं न जानैं तातैं अनेक क-
पि याके ऊपर चढिकैं भारसौं गिराय देहु ॥
यह सुनतही हजारन झंप लैकैं याके अंगपै आरूढ[9] होत भ-
ये तेहु ॥
जैसैं[10]व्यालगंज आधोरणनकौं[11] गिरावैं या रीति कुंभकर्णनैं
आरूढ रिच्छ१बानर२घुनाय डारे ॥
अरु रामचंद्रनैं आपकी ओर बुलायो तहाँ हसिकैं कुंभकर्णनैं
ए बचन उचारे ॥ ५४ ॥
बिराध१कबंध२खर३बाली४मारीच५मोकौं न जानौं ॥
कुंभकर्णके कालायस[12] मुद्गरकौं महाप्रलयके समान घोर मानौं॥
तुमारो पराक्रम देखि पीछैं खाय लैहौं ऐसो निस्संक बचन सु-
नतही राघवनैं कराल कलंब[13] लगाये ॥
तिनहूसौं व्यथा[14] न भई रु समस्तही दुष्टन मुद्गरसौं हटाये।५५।
कपिनपैं चलायो देखि बायव्य[15]को संधान करि रघुराजनैं कुंभ-
कर्णको मुद्गर सहित एक१पंचसाख[16]१काटिडार्‌यो ॥
तबहू महानाद कीनौं रु कटे करहू प्लवंगनको[17] प्रकर मार्‌यो ॥

१रामचन्द्रने२पर्वत फैंका३बिखेर दिया४लक्ष्मण ने रामचन्द्र के५सामने ही सब
६ वानरों को ७ हुक्मदिया ॥ ५३ ॥ ८ रुधिर की गन्ध से मस्त होकर ९
चढगये १० जिसप्रकार दुष्ट हाथी ११महावत को गिरा देवें तिसप्रकार कुं-
भकर्ण ने अपने ऊपर चढे हुए ॥ ५४ ॥ १२ काले लोहे के १३ भयंकर बाण
लगाया १४पीड़ा नहीं हुई १५ पवनअस्त्र का संधान करके १६हाथ १७बदरों के

तदनंतर सालपादपकों उपारि रघुराजपैं चलायो तहाँ ऐंद्र अस्त्रको
प्रयोग करि द्वितीयरकर१हू काटि लयो ॥
सोहू साखी १ सैल २ सिला ३ कपि४ रिच्छ५रक्खस६नकों चूर्ण
करत भयो ॥ ५६ ॥
तथापि नाद करि समुख दोरयो देखि द्वै२अर्द्धचंद्रनसौं राघवनैं
दुष्टके दोहू२चरन२हू काटि गिराये ॥
तिनके पातनैं दिसा बिदिसामैं महाभयंकर नाद फिराये ॥
रक्खसहू बडो साहसी निकृत्तबाहुचरन आननकों फारि रामके
समुख ढुरिआयो ॥
ताको मुख राघवनैं बाननसौं भरिदयो सु बोलिवे न पायो ॥५७॥
तदनंतर बहोरि ऐंद्रबानको संधान करि रघुराजनैं कुंभकर्णको
उत्तमांग हरयो ॥
ताहुनैं अनेक चैर्या १ पुर २ गोपुर ३ प्राकार४अट्ट५नको चूर्ण
करयो ॥
कुंभकर्णको कलेवर लवणोदमैं परयो ॥
अरु ग्राह १ मीन २ भुजंगम ३ नको मर्दन बिस्तरयो ॥५८॥
भूतधात्री धूजि उठी रु लंकामैं सोक संताप भयो ॥
अरु सुर १ मुनि २ पन्नग ३ भूत ४ सुपर्ण ५ गुह्यक ६जच्छ
७ गंधर्ब ८ नरन ९ रघुनाथके बिक्रमको बर्णन करि मोद लयो ॥
असैं मधुमेचक सप्तमी७के दिन हंसबंसहंसनैं दसग्रीवकोअनुजहन्यो

समूह को १ जिसपीछे २ साल वृत्त को ३ इन्द्र अस्त्र से ४ वृत्त ५ पर्वत ॥ ५६ ॥ ६ अर्धचन्द्राकार बाणों से ७ पड़ने ने ८ कट गये हैं हाथ पग जिसके (कटे हाथों पगों वाला) ९ मुख को फाड़ कर ॥ ५७ ॥ १० मस्तक काट डाला ११ अपने इष्ट का पूजन करनेवालों को (सायंकाल में कुंभकर्ण का मस्तक काटागया था वही समय आन्हिक कर्म करने का था इससे) अथवा कुंभकर्ण के मस्तक के भ्रमण ने १२ शहर के दरवाजे १३ कोट १४ मकानों की छतों का चूर्ण करदिया. और कुंभकर्ण का निर्जीव शरीर १५ क्षारसमुद्र में गिरा ॥ ५८ ॥ १६ भूमि १७ चैत्र वदि सातम के दिन १८ सूर्यवंश के सूर्य (रामचन्द्र) ने कुंभकर्ण को मारा

अरु लोकत्रय३मैं अद्वितीयकीर्तिको बितान तन्यौं ॥५९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने बसुदेव६८वेला६८।१बिवाहवेलावर्णनबिषयकूष्नवंशाविवर्द्धकबैबस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६ षट्पपुत्रविकुक्षि७कुलकलशश्रीजानकीजानिचरित्रे द्वितीया२सप्तम्य ७न्तसङ्ग्रामवर्णनधूम्राक्ष१बज्रदंष्ट्र२कम्पन३प्रहस्त४मरणारावण५ पलायनकुम्भकर्णशिरःकर्त्तनमेकपञ्चाशत्तमो५१मयूखः ॥५१॥

आदितास्त्रिणवतितमः ॥ ९३ ॥

(प्रायो बृजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(सचरणगद्यम्)

कुंभकर्णको निपात सुनतही दशग्रीव मूर्छित अचेत होय पर्‍यो ॥

अरु कितेक कालमैं संज्ञा पाय जाग्रत अंगको इंगितधर्म जाणि अश्रुनकौं अंबकनके अतिथि करि चिरकाल परिदेवन कर्‍यो॥

रावनके संबंधभ्राता महोदर१महापार्श्व२तथा पुत्र त्रिसिरा१अतिकाय२देवांतक३नरांतक४इत्यादिक वा समय जे उहाँ हे ते सब रुदनके रसज्ञ भये ॥

तदनंतर त्रिशिरानैं दसग्रीवकौं बीररसके बर्द्धक बचन दये ॥ १ ॥

डेरा (तंबू) ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश के बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र मे द्वितीया से लेकर सप्तमी के अन्त तक के युद्ध के वर्णन में धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र, अकंपन, प्रहस्त का मरण, रावण का भागना, कुंभकर्ण के मस्तक काटने का इकावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से त्रानवे मयूख हुए ॥ ९३ ॥

२पड़ना ३ चेत ४ जगनाहुआ शरीर कुछनकुछ चेष्टा अवश्य करता है इस शारीरिक धर्म को जानकर ५ अश्रुओं को नेत्रों के ६ पाहुने (महमान) करके ७ बहुत समय तक ८ विलाप किया ९ सगे भाई नहीं १० थे ११ रुदन के रस को जाननेवाले हुए १२जिसपीछे १३वीररस को बढानेवाले ॥ १ ॥

(दोहा)

कही जनक दसकंठसौं, सुत त्रिसिरा तजि सोक ॥
ब्रह्मदत्त निज सक्तिबल, अभय होहु जयओकं ॥ २ ॥
खर सहस्र१०००रथ१वर अखय, त्यौं सर२चाप३तनुत्र४ ॥
अहेव अप्प बिलसहु इहाँ, पिल्लहु जावत पुत्र ॥ ३ ॥

(षट्पात्)

इम त्रिसिरा१अतिकाय२देवँअंतक३नरअंतक्क४ ॥
महापार्श्व१लहि संग महोदर२बहुरि पितृव्यक ॥
आसिरपंहिं मुद अप्पि पाय ओंसिख१अरु पूजन२ ॥
चले लरन अतिचंडकरन स्वकरन कपि कूजन ॥
घनगजकुलीन घननीलनिभ नाम सुदर्सन नागवर ॥
तिहिं गज अरोहि रनरसगसिक चालिय महोदर१परनपर ॥ ४ ॥

(दोहा)

त्रिसिरा१पुनि अतिकाय तहँ, रथन चढे रविभास ॥
नरअंतक४सितहय निडर, पकरि चढ्यो कर प्रास ॥ ५ ॥
देवांतक५तिम परिघदृढ, हंक्यो गहि हुसियार ॥
गदा महापार्श्व६हु गहि रु, उफन्यौं तुमुल उदार ॥ ६ ॥

(सचरणगद्यम्)

१अपने पिता रावण से त्रिशिरा ने कहा कि २ हे विजय का घर (रावण) ३ ब्रह्मा की दीहुई शक्ति के बल से आप अभय होओ ॥ २ ॥ वर के कारण हजार गधोंवाला रथ, इसीप्रकार धनुष बाण और ४ कवच अक्षय हैं सो ५ अब आप तो विलास करो और पुत्र (मुझ) को ६ भेजो सो युद्ध के लिये जाता हूं ॥ ३ ॥ ७ देवान्तक ८ नरान्तक ९ काका १० राक्षसों के पति को मोद देकर ११ रावण के पुत्रों ने आशिष और १२ भाइयों ने पूजन पाकर १३ अपने हाथों से १४ बंदरों को कूक कराने को (हाथों से मलकर बंदरों की चिल्लाहट कराने को)१५ ऐरावत के कुल के १६ नील मेघ की कान्तिवाले सुदर्शन नाम के श्रेष्ठ १७ हाथी पर चढकर १८ शत्रुओं पर चला ॥ ४ ॥ १९ सूर्य के समान कान्तिवाले२० स्वेत रंग के घोड़े पर २१ हाथ में भाला पकड़के चढा ॥ ५ ॥ ६ ॥

औरै छंदहूँ महाबीर क्रव्यादन आस्फोटन[1] क्ष्वेडित[2] संक्रम[3] सिंहनाद[4]नसौं भूमधात्रीकौं धुजावत कपिनके कटकमैं आय अष्टमी ८ के दिन महारन रच्यो ॥
अरु परस्पर सस्त्र सैलके प्रहारकरि डोहूरदलनके दुर्गम सोनितकी सार्द मच्यो ॥
कितेक निसचर गाढैं गाढैं गहि गहि वानरहीसौं वानरकौं मारत भये ॥
अरु कीसहू कितेक रथनसौं १ रथ २ तुरंगनसौं १ बाजि २ करीनसौं १ मांतग २ कौंणपनसौं १ क्रव्याद २ चूरि डारत भये ॥७॥
नरांतकनैं प्रासमौं सप्तसत७००बानर एकही प्रहार करि बेधि गिराये ॥
अरु कालरूप धारि प्रहारनके महापात दये तिनसौं कांदिसीक कीस टिकन न पाये ॥
नरांतकके प्रासकौं कपि लोष्टनको कोटिसैं जानि ताके सनमुख कपिराजनैं अंगद पठायो ताके भुजांतरमैं दसग्रीवके पुत्रनैं प्रास मार्यो ॥
सोहू बालिपुत्रके बज्रकल्प उरमैं छुवतही टूक करि डार्यो॥८॥
मस्तकमैं अंगदके प्रतलको प्रहार पर्यो तासौं भग्नपाद स्फुटितनेत्र निष्क्रांतजिव्ह होय नरांतकको तुरंग प्राननतैं विरहो भयो॥

१राक्षस२भुज ठोकने३गर्जना करने४चलने और सिंहनाद करने से५भूमि को धुजाते हुए६पर्वत ७ रुधिर का ८ कीच मचा९घोड़ों से घोड़ों को १० हाथियों से हाथियों को११राक्षसों से१२राक्षसों को चूर्ण करदिया ॥ ७ ॥१३भाला से१४भय से भागनेवाले१५वानर नहीं ठहरसके, नरांतक के भाले को वानरों रूपी१६ढकलों[ढेलों]को चूर्ण करनेवाला १७लोष्ठभेदन [चावर. ढकल फोड़ने का भारी काष्ठ] जानकर १८ सुग्रीव ने अंगद को भेजा१९हृदय में २० भाला मारा.२१वज्र के समान हृदय में स्पर्श होते ही भाले के टुकड़े टुकड़े होगये ॥ ८ ॥ २२ थप्पड़ के प्रहार से २३ टूटे पगोंवाला २४ फूटेहुए नेत्रोंवाला २५ निकली हुई जीभवाला होकर २६ घोड़ा २७ मरगया

तबहीं कुपित होय [1]रावणराजके कुमारनैं हू तारेयके मस्तक
पैं मुष्टिको आघात दयो ॥
तासौं [2]सोनितको बमनकरि कछुकालमैं [3]सविस्मय संज्ञा पाय
[4]अंगदनैं नरनासनके भुजांतरमैं मुष्टि मारी ॥
तासौं अचेत रह्योराजकुमारके [5]लिंगविग्रहनैं भिन्न होय वेगहीं
स्थूल मूर्ति डारी ॥ ९ ॥

तबहीं कालकराल होय त्रिसिरा१देवांतक२महोदर३इन तीन
[6]कर्बुरन [7]बेढिकैं अंगदपैं एकहीं संग [8]सस्त्रनको संघात डारयो ॥
अरु [9]तारेयनैं महोदरके गजकौं मस्तकमैं [10]प्रतलसौं प्रहारयो ॥
ताहीको दंत निकासि अंगदनैं देवांतककै दई तासौं रुधिरको
[11]वमनकरि कछुकालमैं [12]संज्ञापाई ॥
अरु तारेयकै परिघकी दई ता प्रहारकरि [13]जानुनसौं जंकि बा
लिपुत्रनैं अपनी मूर्ति आकासमैं उडाई ॥ १० ॥
उडते अंगदके ललाटमैं त्रिसिरानैं हू तीन३वान दये ॥
ऐसैं एक१सौं तीन३लरतदेखि नील १ रु हनुमान २ ए उभय
अंगदकी सहाय भये ॥
नीलनैं पर्वत चलायो सु तो त्रिसिरानैं तीरन करि काटि डारयो॥
अरु देवांतकनैं [14]मारुतिपैं परिघ उठायो ताके सिरपैं [15]आंजनेय२
नैं उडिकैं मुष्टिको आघात प्रहारयो ॥ ११ ॥

१रावण के पुत्र ने अंगद के मस्तक में२रुधिर की उलटी करके.३आश्चर्य सहित चेत पाकर ४ नरान्तक के उर में मुक्की मारी जिससे ५ लिंगशरीर ने अलग होकर [वेदान्त के मत से कारण शरीर,लिंगशरीर और स्थूलशरीर ये तीन प्रकार के शरीर मानते हैं. और पुराणवाले लिंग (सूक्ष्म) और स्थूल दो शरीर ही मानते हैं जिनमें मृत्यु के समय स्थूल शरीर का सम्बन्ध जीव से छूटजाता है और लिंगशरीर जन्मान्तर में जीव के साथ रहता है.केवल मुक्ति समय में लिंग शरीर का जीव से वियोग होता है इन दोनों शरीरों को भौतिक शरीर कहते हैं] स्थूलमूर्ति को भूमि पर डारी अर्थात् मृत्यु को प्राप्त होगया॥९॥६राक्षसों ने७घेरकर८समूह पटका९अंगद ने१०थप्पड़ मारी ११उलटी१२चेत पाया१३घुटनों के बल गिरकर१४हनूमान पर१५हनुमान् ने

तासौं जिह्वा१दंत२नेत्र३निकसिपरे रु देवांतकनैं देह तज्यो ॥
सो देखि त्रिसिरानैं नीलके अंगमैं अनेक आघात देकैं बिसेस जंग सज्यो ॥
वाहीसमय महोदरहू अन्य गजपैं आरूढहोय नीलहीके अनेक आघात देतभयो ॥
अरु नीलहूनैं आपो सम्हारि एक१बडो अँद्रि उठाय महोदरके मस्तकपैं डारि दयो ॥ १२ ॥
तासौं मातंग सहित महोदरकौं मर्यो देखि त्रिसिरानैं बढिकै वज्रांगकै बिसेस बान लगाये ॥
अरु मारुतिनैं अनेक तरु पर्वत चलाये तेहू तीरनकरि काटिगिराये ॥
त्रिसिराके रथके हय वज्रांगनैं नखनसौं फारिडारे तबही प्रकोपसौं त्रिसिरानैं सक्ति चलाई ॥
सो गर्जनाकरि आवतीही पकरि आंजनेयनैं उभय२भिँत्तिकरि गिराई ॥१३॥
तबही त्रिसिरानैं वज्रांगके वँच्छस्थलमैं तरवारि दई ताहूकी संकाकरि त्रिमूर्द्धाके उरमैं प्रतल दयो ॥
तासौं अचेतहोय निसाचर घूमिकैं रंगस्थलमैं गिरत भयो ॥
गिरतेको खड्ग लैकैं वज्रांगनैं महानाद कीनौं ॥
ताकौं न सहिसक्यो यातैं दसग्रीवकुमारहू उडिकैं वज्रांगके मुष्टिको प्रहार दीनौं ॥१४॥
तबही महाकोपकरि आंजनेयनैं किरीट पकरि त्रिसिराके तीनौं३ही उत्तमांग मंडलाग्रसौं छेदिडारे ॥

१ अपने आप को अथवा अपने पराक्रम को सम्हाल कर २ पर्वत ॥ १२ ॥ ३ हाथी सहित ४ हनुमान के ५ हनुमान ने ६ हनुमान ने ७ दो टुकड़े करके तोड़डाली ॥ १३ ॥ ८ वक्षःस्थल (हृदय) में ९ जिस तलवार के फिर प्रहार के भय से त्रिशिरा के हृदय पर १० थप्पड़ मारी ११ युद्ध भूमि में ॥१४॥ १२ खड्ग से काटडाले

सो देखि महापार्श्वनैं[1] ऐरावत पुंडरीकादि दिग्गजनकौं[2] भया-
वह सर्वायस[3] गदाकौं पकारि सहस्त्रन साखामृग[4] प्रहारे ॥

तबही कपिसादूल[5] ऋषभनैं आय महापार्श्व अटक्यो[6] ताके उ-
रमैं निसाचरनैं गदाकी दई ॥

तासौं चिरकालमैं[7] सचेतनहोय महापार्श्व उरमैं मुष्टि मारी जि-
हिं आघात करि ऋषभादनैं मूर्छा लई ॥१५॥

दोहा ॥

महापार्श्व मूर्छित गिरत, ऋषभ गदा तस पाय ॥
लरतरहे कछुकाल अब, उठ्यो खलहु उफनाय ॥१६॥
ऋषभहिं छतं[9] मूर्छित बिरचि, अप्प गदा गहि एह ॥
जुरयो रु कपि पुनि मोहं[10] तजि, दौरयो इत अतिदेह[11] ॥ १७ ॥
गदा दुष्टकी बहुरि गहि, सोहि प्रहारयो सूर ॥
पुहवि[12] भिन्नमस्तक परयो, महापार्श्व अघमूर[13] ॥

षट्पात्

आय तबहि अतिकाय जुरयो कपिसेन मथत जहँ ॥
अतिबल लखि अखिलेस[14] कह्यो रावनसोदर[15]कहँ ॥
को यह सहँस१०००तुरंग जुत्त स्यंदनं[16] थित गज्जत ॥
केतनं[17] राहु कलंक सत्थ सारथि चउ४सज्जत ॥
अठतीस३८तून सोभित उचित त्रि३नत चाप रविकिरन सर॥

१पूर्वदिशाको धारण करनेवाला ऐरावत और अग्नि दिशाको धारण करनेवाला पुंडरीक आदि दिग्गजों को २भय करनेवाला ३सम्पूर्ण लोहे की बनीहुई ४वानरों को मारे ५ वानरों में सिंह ६ महापार्श्व को रोका ७ बहुत समय में ८ राक्षस ने ॥ १५ ॥ ९ घाव से मूर्छित करके १०मूर्छा छोडकर ११ अतिकाय (बडे शरीरवाला) ॥ १६ ॥ १७ ॥ १२भूमि पर १३पाप का मूल ॥१८॥ १४रामचन्द्र ने उसको बहुत बलवान् देखकर १५विभीषण से कहा १६ हजार घोड़ोंवाले रथ पर बैठाहुआ १७राहु के चिन्हवाली काली ध्वजा, चार सारथि जिसके रथ को हांकते हैं, अड़तीस जिसके भाथे (तरकस), नमेहुए तीन धनुष, सूर्य की किरण समान बाण, चार हाथ की मोटी मूठें लगीहुई, दश दश हाथ लंबी दो तलवारें, गले में लाल रंग की माला और पर्वत के तीखे शिखर समान

चउ४हत्थ मुट्ठि दस१०मित दुर्आसि अरुन माल पव्वय प्रखर१९
सुनत बिभीखन सयन जोरि अक्खिय इम बिन्नति॥
रावनसुत अधिवीर एह अतिकाय महामति॥
धान्यमालिनी जठरजात रथ१गज२हय३गति बर॥
दान१साम२नय३भेद४मंत्र५धनु६खग्ग७धुरंधर॥
भुज जास रहत लंका अभय जिहिं सुर असुर अवध्य वर।
विधिदत्त कवच१रथ२अस्त्र३ बस सु यह करत कपि तृप्त सर।२०।

दोहा

पासीपासरु सक्रपवि२, मारि प्रदर किय मोघ॥
सीघ्र जतन प्रभु अनुसरहु, उडे जात कपि ओघ॥२१॥

(षट्पात्)

मैंद१कुमुद२बलिनील३द्विविद४तिम सरभ५कपीश्वर॥
सुनत बिभीखन कथित पञ्च५सम्मुह हुव दुद्धर॥
तिनके गिरि१तरु२कट्टि कलह अतिकाय तुमुल किय॥
कोउ न भयउ समत्थ लैन रावन अंगज जिय॥
हतबलन छोरि हुष्टहु हुलसि बढि बुल्लिय प्रभुढिग बचन॥
नन मरहु रंक व्यवसाय१बल२रक्खहु दुव२सुहि देहु रन॥२२॥
सुनि यह कटु सौमित्रि चाप टंकोरि सर ऐंचिय॥

जिसका शरीर है यह कौन है॥ १९॥ १ हाथ जोड़कर २ अधिक वीर ३ मंदोदरी के ४ पेट से पैदाहुआ, घोड़े हाथियों का श्रेष्ठ चलानेवाला ५ देवताओं से और दैत्यों से नहीं मारेजाने का जिसको वर है और ६ ब्रह्मा के दिये हुए ७ अपने बाणों को बानरों से तृप्त करता है॥ २०॥ ८ वरुण के पाश और ९ इन्द्र के वज्र को जिसने अपने १० बाण मारकर ११ व्यर्थ कर दिये थे जिसको मारने का आप शीघ्र उपाय कीजिये १२वानरों के समूह उडेजाते हैं॥२१॥१३ विभीषण का कहाहुआ सुनते ही १४ भयंकर १५ रावण के पुत्र का जीव लेने को १६निर्बलों को छोड कर१७प्रसन्न होकर १८रामचन्द्र के पास जाकर बोला कि रंकों की तरह१९मत मरो तुम दोनों भाई२०उद्यम और बल रखते हो सो मुझे दो (दिखाओ)२१लक्ष्मण ने धनुष को२२टंकारके

भये बिचल अतिभीत जाहि सुनतहि कौणप जिय ॥
कहिय पिक्खि अतिकाय बाल न मरहु अविचच्छन ॥
काहि जगावहु काल बान मम अनल सत्रुबन ॥
सौमित्रि कहिय सूरत्व सठ बचन मात्र न करहु विदित ॥
करिअस्त्र१सस्त्र२निज जय करहु अर्भ न जानहु काल इत ।२३।
तब अतिकाय कलंब इक्क१मुक्किय लक्खनपर ॥
अर्द्धचंद्र करि वाहि कट्टि डारिय रघुकुंजर ॥
पञ्च५बिसिख पुनि प्रथित दये अतिकाय दुरासद ॥
पञ्चक५करि ते पञ्च५बहुरि दिय कट्टि मितंवद ॥
इक१मंदर तानि लक्खन असह हढ अतिकाय ललाट दिय ॥
व्है व्यथित कहिय व्यवसाय वर कर सिसु प्रहारकिय २४
सर इक१तीन३रु पञ्च५सत्त७इक्कमत्थ दये खल ॥
तीरन करि ते कट्टिदये लक्खन पिसेस वल ॥
तबहि इक्क१सर तानि अपर दिन्नौं लक्खन उर ॥
सु द्रुत काढ्ढि सौमित्रि धरिय आग्नेय मंदर धुर ॥
खल मरम तक्कि मुक्किय सु खग खलहु रौद्र प्रतिभट तजिय ॥
ते अस्त्र लरिय बिच्चहि बहुल दग्ध दुहुन भूतल भजिय॥२५॥

१ राक्षसों के जीव २ अतिकाय ने लक्ष्मण से कहा कि हे बालक ३ हे मूर्ख किसलिये काल को जगाता है ४ अग्निरूपी मेरे बाणों का शत्रु बनकर मत मर. लक्ष्मण ने कहा कि हे मूर्ख! केवल वचन से ही अपनी ५ वीरता प्रसिद्ध मत कर ६ मुझको बालक मत जान. इधर तेरा काल है ॥ २३ ॥ ७ बाण ८ रघुवंशियों में हाथी(श्रेष्ठ)९बाण १० प्रसिद्ध ११ दुष्ट अभिप्रायवाले अतिकाय ने १२ थोड़ा बोलनेवाले लक्ष्मण ने १३ तीर १४ व्याकुल होकर कहा कि तुम्हारा उद्यम१५श्रेष्ठ है १६ तुम्हारे हाथ तो बालक के से हैं परन्तु प्रहार बड़ा किया ॥ २४ ॥ १७दूसरा बाण लक्ष्मण के उर में दिया जिसको १८ शीघ्र निकाल कर लक्ष्मण ने१९अग्नि का२०बाण २१वह आकाश में गमन करनेवाला बाण छोड़ा जिसको२२रोकनेवाला दुष्ट ने भी रौद्र अस्त्र छोड़ा२३बहुत लड़कर दोनों जलकर२४भूमि का सेवन किया (भूमि पर पड़गये) ॥ २५ ॥

अस्त्र तबहि ऐषीक[1] सजव[2] मुक्किय रावनसुत ॥
ऐंद्र[3] प्रयुंजि अनंत[4] दियउ खल अस्त्र मारि द्रुत ॥
आसिर[5] किय जमअस्त्र सु करि वायव्य सेस हनि ॥
बेढि खलहिँ सरबुंद बिबिध बरख्यो नीरद[6] वनि ॥
अतिकाय कवच ते सर परसि भिन्नभल्ल[7] मुरि मुरि परे ॥
तँहँ आय पवन सेसहिँ[8] कहिय किम उपाय इतरहि[9] करे ॥२६॥
कंकट[10] याहि अभेद्य अग्ग अप्पिय हंसासन[11] ॥
ब्रह्म अस्त्र तुम तजहु हनन इहिँ जतन और नन ॥
सुनि समीर[12] बच सेस अस्त्र सुहि सर आरोपिय ॥
भुव अयास[13] ग्रह कंपि दाह दिसदिस प्रचंड दिय ॥
तिहिँ पिक्खि तजिय रावनतनय असि१ कुठार२ हल३ सक्ति४ सर५ ॥
तिन्ह कट्टि विसिख अतिकाय तक पहुँचि मत्थ छेदिय प्रकर[14] ॥२७॥
सुनि रावन करि सोक कहिय ऐसो कोउ न अब ॥
सबिभीखन[15]१ सुग्गीव२ राम३ लक्खन४ हनैं जु सब ॥
अहो[16] रामबल असह हमहु मन्न्यौं नारायन ॥
जररहत जिहिँ त्रास अरर[17] लंका द्वारायन[18] ॥
अति सावधान रक्खस रहहु सीता रक्खहु जतन सह ॥

---

१ ऐषीक अस्त्र विशेष अर्थात् रामचन्द्र ने काकरूप जयंत पर चलाया था वह अस्त्र २ शीघ्र छोडा ३ इन्द्र अस्त्र की योजना करके ४ शेषावतार (लक्ष्मण) ने दुष्ट के अस्त्र को शीघ्र मारदिया ५ राक्षस ने ६ वह वायु अस्त्र मेघ बनकर वर्षा, परन्तु वे बाण अतिकाय के कवच का स्पर्श करके ७ भालें टूटकर पीछे ही गिरगये वहां पवन ने आकर ८ लक्ष्मण से कहा कि ९ आपने दूसरे उपाय क्यों किये ॥२६॥ इसको आगे ११ ब्रह्मा ने अभेद्य १० कवच दिया था जिसके काटने का और उपाय नहीं है, ब्रह्म अस्त्र ही छोड १२ पवन के ये वचन सुनकर लक्ष्मण ने १३ इससे परिश्रम युक्त होकर भूतल के घर कांपने लगे और दशो दिशा में भयंकर अग्नि लगगई १४ विक्षेप करके ॥२७॥ १५ विभीषण सहित १६ रावण ने कहा कि रामचन्द्र का बल आश्चर्य के योग्य और नहीं सहा जावे ऐसा है हमने अब उनको परमेश्वर माना है जिनके भय से लंका के १८ दरवाजों के १७ किंवाड़ जुड़े ही रहते हैं

प्रात१रु निसीथं[1]२संध्या३समय कपिन परक्खहु कति असह ।२८।

दोहा

यह कहि बाहिर [2]आसिरन, गो रावन निजगेह ॥
सुत भ्रातन स्मृति चिंति सुच[3], आन्यों बहुरि अछेह ॥ २९ ॥

(षट्पात्)

जनक[4] दीन निज जानि ज्वलन[5] वढि वदिय इंद्रजित ॥
बिलखहु तात[6] न नैंक मोहि जीवत अरिष्ट इत ॥
विष्णु१रुद्र२रवि३सक्र[8]४साध्य[9]५अंतक[10]६वैस्वानर[11]७ ॥
को रक्खहि मम अग्ग सकल पिक्खहु अब सगर ॥
यह कहि अरोहि खर[12]रथ अतुल कढ्यो लरन दससिरकुमर ॥
सहँसन[13] अनेक बाहन सहित पुरायँजनहु हुव पिट्ठिपर ॥ ३० ॥
गज१हय२रासभ३करभ[14]४सर्प्प[15]५विच्छिय[16]६वृखदंसक[17]७ ॥
वग्घ[18]८सिंह९फेरव[19]१०वराह११स्वापद[20]१२सिखि[21]१३हंसक[22] १४
इत्यादिक बाहनन चले आरूढ[23] निसाचर ॥
इनहिं आनि हुतभूमि[24] सज्ज रक्खिय खल संगर[25] ॥
ससुगंध१माल२घृत१जाल२सुभ हुतभुक[26] हुँत[27] कंटक करे ॥
सरपत्र१सस्त्र२कलित[28]रु१सामिध[29]२अयस्त्रुक[30]१पटलोहित१धरे ॥ ३१ ॥

१आधी रात।२८।२शहर से बाहर रहनेवाले राक्षसों को यह कहकर, मरे हुए भाई और पुत्रों को याद करके अपार३शोक किया।२९।४अपने पिता को दीन जानकर५अग्नि के समान बढ़कर इन्द्रजित ने कहा६हे पिता कुछ विलाप मत करो मैं जीवित हूं तब तक इधर७अशुभ नहीं होवेगा८इन्द्र९गणदेवता१०यमराज११अग्नि. ये मेरे सामने रामचन्द्र की कौन रक्षा कर सकेंगे१२गधे जुते हुए रथ पर चढ़कर १३ हजारों राक्षस अनेक वाहों पर चढ़ेहुए इसके पीछे हुए॥३०॥ १४ ऊंट १५सर्प १६बीछू १७ बिल्ली १८ बघेरड़ा (सिंहविशेष) १९ स्याल २० कुत्ता अथवा वनपशु विशेष २१ मयूर २२ हंस, इत्यादिक वाहनों पर२३ चढ़कर राक्षस चले, इन सबको युद्ध के लिये तैयार करके२४होम करने की भूमि पर२५युद्ध करने को रक्खे और सुगंधि, माला, घृत और जाल(काष्ठविशेष)२६अग्नि में उस दुष्ट(इन्द्रजित्)ने२७होमे और सरपत्र के स्थान में शस्त्र रखकर २८ सहित २९ ईंधन और ३०लोहे का स्त्रुवा बनाकर लाल वस्त्र धरे।३१।

असित छाग गल१गहिय अनल पत्थरि सरपत्रन ॥
आहुति इक्क१हि लगत बढ्यो पावक प्रचंडपन ॥
अर्चि फिरिय अपसव्य गह्यो आवत हवि उर्द्धहि ॥
ब्रह्मअस्त्र खल तबहि चंड हुत किय सहाय चहि ॥
ताहिके मंत्र करि जप अतुल मंत्रे कंकट१चाप२रथ३ ॥
तिनसहित बहुरि मंडन तुमुल पिहित चढ्यो खल गगनपथ ॥३२॥
तस सहाय खिल तमकि कढे जुज्झन क्रव्यादन ॥
नभतैं खल तिन्ह कहिय होहु अरिसन हव्यादन ॥
कपिभय नैंक न करहु छकहु जयरस सब मोक्षत ॥
सु सुनि निसाचर सकल रूपे कपि नासकरन रत ॥
नव९सत्त७पंच५कपि घननिनद कट्टे इक्क१हि बानकरि ॥
इहिंगति असेस कटकहिं अडर भयदिन्नौं बपु बान भरि ॥ ३३ ॥
कपिन तजे गिरि कट्टि जंग किय अतुल सक्रजित ॥
दिय अट्ठारह१८पर्दर गंधमादन१उर अंचित ॥
नलकैं२दिय नव९बान मैंद३उर सप्तक७मारिय ॥
भल्लुकपे४हिं दस१०भेदि पंच५करि गज५हिं प्रहारिय ॥
बपु नील६तीस३०घत्तिय बिसिख ब्रह्मदत्त बर अस्त्रवल ॥
सुग्रीव७ऋषभ८अंगद९द्विबिद१०खंडितकिय अतिकोप खल ॥३४॥

फिर काले छाग (बकरे) का गला पकड़ कर सरपत्रों के ऊपर डाल कर अग्नि में डाल दिया इस एक आहुति के लगते ही प्रचंड अग्नि बढा और दाहिनी ओर ज्वाला बढकर हवि को ऊपर ही ग्रहण करलिया उस समय इन्द्रजित् ने ब्रह्म अस्त्र को उसमें होमा और उसीके मंत्रों का जप किया जिससे मंत्रेहुए कवच धनुष और रथ उस अग्नि में से निकले तिन सहित भयंकर युद्ध करने को गुप्त होकर आकाश मार्ग में चढा ॥ ३२ ॥ बाकी के राक्षस क्रोध करके उसके सहायक हुए जिनसे दुष्ट (इन्द्रजित) ने कहा कि शत्रु रूपी तृणों के अग्नि होजाओ १ मेघनाद ने, इसप्रकार सम्पूर्ण २ सेना को ३ निर्भय मेघनाद ने वानरों के शरीरों में बाण भरकर भय दिया॥३३॥४बाण५सुन्दर६रींछों के राजा जाम्बवान के७बाण घाले(घुसेड़े)८ब्रह्मा के दियेहुए श्रेष्ठ अस्त्र के बल से ॥ ३४ ॥

इत्यादिक भट अखिलकुणप१कतिकतिक मूढ२करि ॥
सर१असि२पट्टिस३सूल४भयद बहुबरासि अनखभरि ॥
सानुज रघुपति सीस आनि बरख्यो पुनि आसुग ॥
विविध बेध किय बीर जुत्त बिस्मय भ्राताजुग ॥
प्रभु कहिय अहो लक्खन लखहु अस्त्र ब्रह्म दारुन असह॥
हनि सबन मूढ करि तुमहमहिँ उद्धत जैहैं दुष्ट यह॥३५॥
सहहु अज्ज सौमित्रि परख विक्रांत१भीरु२पन ॥
इतीकहत इंद्रजित घुमडि सरबुंद तजिय घन ॥
अगजंगमके ईस समर सानुज अचेत हुव ॥
अबिभीखन१बज्रांग२धरनि सब मूढ गिरे ध्रुव ॥
तब जय मनाय रावनतनय कंटक नैर प्रवेसकिय ॥
इत आंजनेय१रावन अनुज२दुहुँन२रंग फिरि सोधदिय ॥३६॥

दोहा

दिनपंचम५लव खिल रहत, इम बासवजित एह ॥
सत्तसट्ठिकोटिन६७००००००० कपिन, गो मुख्यन हनि गेह ॥३७॥

(पट्पात्)

उल्का कर गहि इतहिँ बीर बज्रांग१बिभीखन२ ॥

---

१ कितनों को मुर्दे और कितनों को २ मूर्छित करके ३ कटारी ४ छोटे भाई सहित रामचन्द्र के ऊपर ५ वाण. ६ रामचन्द्र ने कहा कि हे लक्ष्मण देखो आश्चर्य करानेवाला ब्रह्मअस्त्र सहन करने योग्य नहीं है, अन्य सबको मारकर मुझको और तुमको मूर्छित करके यह दुष्ट अनम्र होकर जावेगा ॥ ३५ ॥ हे लक्ष्मण आज इस अस्त्र को सहन करो वीर और कायरों की यही परीक्षा है. चराचर के स्वामी युद्ध में छोटे भाई सहित अचेत होगये और विना विभीषण और हनुमान् के सब मूर्छित होकर भूमि पर गिरगये ७ नगर में गया, इधर ८ हनुमान् और विभीषण ने युद्ध भूमि में फिरकर सबका शोधन किया ॥ ३६ ॥ (अठारह निमेष नेत्र के पल मारने की एक काष्ठा और दो काष्ठा का एक लव हेमचन्द्र के मत से होता है ऐसे) पांच लव दिन बाकी रहते इसप्रकार इन्द्रजित सड़सठक्रोड़ मुख्य बानरों को मारकर घर गया ॥ ३७ ॥ अंगारे अथवा जलते हुए काष्ठ तथा मुसालें

मृत१जीवन२सुधि करन फिरे रनअजिर महामन ॥
निसातिमिरबिच निठि सकल मृत१मूढ२सम्हारे ॥
जांबवानढिग जाय यातु इम बचन उचारे ॥
भल्लुकअधीस तब असु भवुक गदित एह करि कर्णागत
मैं रच्छ कहिय असु खिल बिकल नैनन तोहि न लखिसकत ३८

(दोहा)

जातैं सुप्रज अंजना पुनि कृतार्थ पवमान ॥
कहहु बिभीखन सो ससुभ, मारुति जीवत वा न ॥ ३९ ॥

(षट्पात्)

कहिय बिभीखन केम लंघि रघुनाथ१सलक्खन२ ॥
तजि अंगद१सुग्रीव२पवनसुतमाँहिं प्रीति घन ॥
जंपिय यह सुनि जांबवान जो वह असु धारत ॥
तो कुणपहु सब जियत नतो जियतहु मृतही मत ॥
यह सुनत आय मारुति निकट पुच्छिय रिच्छहिं परसिपय
तब कहिय वीर आवहु तुमहिं बिरचहु सबन बिसल्य१भय२॥४०॥
जावहु मारुति सजव लंघि गिरि तुंग हिमालय ॥
अग्ग कनकमय अद्रि ऋषभ१, कइलास ताँरमय ॥
दोउन१बिच है दीप्त इक्क१औषधगिरि उत्तम ॥

(चिरागें) हाथों में लेकर हनुमान् और विभीषण मरे जीवितों की सोध करने को रण के चौक में फिरे जाम्बवान के पास जाकर राक्षस (विभीषण) ने कहा कि हे रीछों के राजा! तेरे प्राण कुशल हैं? यह विभीषण का कहाहुआ सुनकर जांबवानने कहा कि मेरे कुछ ही प्राण बाकी होने से विकल हूं और नेत्रों से तुझको नहीं देखसक्ता ॥ ३८ ॥ जिस पुत्र के होने से अंजना श्रेष्ठसन्तानवाली हुई औरपवन भी कृतार्थ हुआ वह शुभ हनुमान जीवित है अथवा नहीं ॥३९॥ १रामचन्द्र और लक्ष्मण को छोड कर २हनुमान में तेरी अधिक प्रीति है ३जाम्बवान ने कहा कि जो हनुमान जीवित है तो ये मरेहुए भी सब जीते हैं नहीं तो जीते हुए भी मेरे विचार से सब मरे हुए हैं जब हनुमान ने समीप आकर पग स्पर्श करके पूछा तब जांबवान ने कहा कि हे वीर सबको साल रहित और भय रहित करो ॥४०॥ ४शीघ्र ५ऊँचापर्वत ६सोने का पर्वत है ७चांदी

तामैं औषध अखिल लेहु तिनमाँहिँ इतोसम ॥
संधानकरी१संजीवनी२वलि विसल्यकरनी३विदित ॥
चौथी४सुवर्णकरनी४उचित इन्ह लहि आवत वेग इत ॥४१॥
इक गिरि तब आरोहि उडिय मारुति अंबरमग ॥
पैठि गयउ वह पुहवि भयउ कंपित जवकरि जग ॥
ह्वै रविमग हिमवान१लंघि लखि ब्रह्मकोसर२ वर ॥
रजतालय३सक्रगृह४रुद्रसरमोक्ष५पुण्यपर ॥
हयग्रीव६दरस करजोरि करि निजवल छेकत गैर्नगत ॥
ब्रह्मसर७लखिय जहँ नित्य बहु वैवस्वत किंकर रहत॥४२॥
वज्र८ वैश्रवन९निलय सूर्यप्रभ१०सूर्य निबंधन११॥
ब्रह्मासन१२ लख लखिय रुद्रधनुथान १३महामन ॥
निरखि भूवलयनाभि१४गन सु नंदी१५गनेस१६गुह १७ ॥
बहु कन्याजुत बिदित उमा१८सह्वत क्रीडासुह ॥
हिमवतसिला१९रुकइलास२०लखिकनककटकलखिऋपभ२१धर

(रूपे) का पर्वत है इन दोनों के बीच में औषधियों का पर्वत है उसमें सब औषधियां हैं जिनमे से तुम इतनी सी लेना कि एक तो सन्धानकरी (लगाते ही घाव को भर देनेवाली) दूजी संजीवनी (मरे हुओं को जिलानेवाली) तीसरी विशल्यकरणी (अंगों की पीड़ा दूर करनेवाली) और चौथी सुवर्णकरणी (घाव आदि से हुई विवर्णता को दूर करके अंग सुन्दर करनेवाली) इनको लेकर जल्दी आओ ॥ ४१ ॥ १ तब हनुमान एक पर्वत पर चढकर उडा वह पर्वत२भूमि में घुसगया ३ सूर्य के मार्ग से हिमवान पर्वत को लांघ कर श्रेष्ठ४ब्रह्मकोश (स्थानविशेष) ५ रूपे का पर्वत ६ इन्द्र का घर ७ त्रिपुर के मारने को जिस स्थान पर महादेव ने बाण छोडा था उस पवित्र स्थान पर होकर८आकाश मे गया ९ यमराज के सेवक रहते हैं उन को देखे ॥ ४२ ॥ फिर वज्र के अधिष्ठाता देवता रहते हैं उनको देखकर कुबेर का घर,सूर्य की कान्ति के समान कान्तिवाले सूर्यगणों के मिलने का स्थान, ब्रह्मास्त्र के अधिष्ठाता देवताओं के रहने का स्थान देखकर महादेव के पिनाक नामक धनुष रहने का स्थान और भूगोल का नाभिस्थान (प्राजापत्य स्थान)को देखा और नन्दीगण गणेश स्वामिकार्तिक और बहुत कन्या सहित पार्वती को क्रीड़ा करते देखा

इनदुहुँनर२ बीच दीपित लखिय स्वसनंजात औषध सिखर ॥४३॥
अर्थी आवत लखि रु भये व्यवहित औषध सब ॥
रे गिरि दुष्ट उठाय तोहि लैहौं आक्खिय तब ॥
करि गर्जन अतिकोप गिरि सु उप्पारि हत्थ गहि ॥
आयउ मारुति अतुल चपल निज कटक मज्झ चहि ॥
सुंघाय प्रभुहिँ सानुज सकपि किय समस्त सबविधि कुसल ॥
पहुँचाय सृंग तस थान पुनि बाहुरि प्रभु भिंटिय प्रबल।४४
कहिय तबहि कपिराज अहो रावन नहि आवत ॥
उल्का गहि सब अडर पुरी प्रबिसहु जयपावत ॥
सहँसन उल्का सुनत पकरि कपि रिच्छ धसे पुर ॥
दूजी२बेरहु जुद्ध करे गढ१गृह२हय३सिंधुर४॥
जातु५हु सदार सहँसन जरे सत जोजन सुचि रव सुनिय॥
रघुबरहु त्योंहि निजधनु करखि कौणप घरघर बान किय॥४५॥
कुंभकरन सुत तबहि दुष्ट कुंभ१रु निकुंभ२दुवर॥
अपर अकंपन१अरु प्रजंघ२यूपाक्ष३धीर धुव ॥
जिम सोनितदृग४जातु सुभट इत्यादि दसानन ॥
पठये बहुरि प्रकुप्पि घेर पावक आकुल घन ॥
तिन आय रचिय प्रभुदल तुमुल तहँ अपुव्व अंगद लरिय।
नारेयँ काय अंतर तबहि गदा अकंपन घोर दिय ॥ ४६ ॥

---

१ हनुमान ने ॥ ४३ ॥ २ याचना करनेवाले को आता हुआ देखकर सब औषधियां गुप्त होगई ३ रामचन्द्र को छोटे भाई सहित वह जड़ी सुँघाकर बानरों सहित सबको कुशल किया. फिर उस शिखर को उसके स्थान पर पहुंचा कर पीछा आकर फिर रामचन्द्र से मिला ॥ ४४ ॥ सुग्रीव ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि रावण युद्ध करने को बाहर नहीं आता इसलिये सब मुसालें (चिरागें) ले ले कर निर्भय होकर पुरी में घुस जाओ ४ राक्षस भी स्त्रियों सहित हजारों जल गये उस ५ अग्नि का शब्द सौ जोजन तक सुना६राक्षसों के घर घर में बाण करदिये ।४५।७दूसरा अकंपन८शोणिताक्ष नामा राक्षस९अग्नि के घेरे से बहुत व्याकुल होकर१०रामचन्द्र की सेना मे भयंकर युद्ध११अंगद के शरीर में ।४६।

तस प्रहार लहि चेत अद्रि डारिय इक१ अंगद ॥
कियउ अकंपन कुणपं मारि कौंणप असेस मद॥
सोनितदृग तव असह दये अंगद विग्रहं सर ॥
छुर१छुरप्र२नाराच३वच्छदंत४रु विपाट५वर ॥
वलिकर्णि६सिलीमुख७सल्ल्य८वहु ते सहि अंगद कुद्दि तव
रथ१चाप२वान३तस तोरि रन सूर धरनि डारे ति सव ।४७।
ढव्विं तवहि असि ढल्ल रचिय सोनितलोचन रन ॥
तहँ मलंगि तरिय छिन्निलिय असिंहु विचच्छन ॥
फलंक तास तिहिं फारि सूर मंडिय वरंसंगर ॥
सु लखि अयोमंय अरुननैन लिय घोर गदा कर ॥
ताकै प्रजंघ १ यूपाक्ष२दुव२हुव सहाय हरवल्ल वढि ॥
अंगद सहाय मैंद१रु द्विविद२पव्वय डारिय विजय पढि।४८।
तव प्रजंघ तरवारि पकरि दोरयो अंगदपर ॥
अस्वकरंन द्रुत इक्क हन्यो खल वपु वासवंहर ॥
वंलि मुठ्ठिय यह वाहु अवनि डारयो प्रजंघ असि ॥
खलहु मुठ्ठि तव खिज्जि हनी अंगद ललाट हसि ॥
कछुकाल सहि रु लहिचेत क्रम कपि प्रजंघ सिर कट्टिलिय।
यूपाक्ष लखत भातृंज मरन रथसन कुद्दि कृपान लिय।४९।

सचरणगद्यम्

तहाँ द्विविदनैं यूपाक्षके उरमैं प्रहारकरि ताकौं दोहू२करनसौं गाढो गहिलयो ॥

---

१ पर्वत २ सम्पूर्ण राक्षसों का मद मारकर अकंपन को ३ मुर्दा करदिया ४ शोणिताक्ष ५ अंगद के शरीर मे असह बाण दिये, "छुर से आगे लेकर शल्य पर्यन्त बाणो के भेद हैं" ॥ ४७ ॥ ६ तरवार और ढाल को थाम (पकड़) कर ७ शोणिताक्ष ने युद्ध रचा ९ विचक्षण ८ अंगद ने कूद कर उस राक्षस की उस १० ढाल को फाड़कर ११ श्रेष्ठ युद्ध किया जिसको देखकर शोणिताक्ष ने १२ लोहे की बनी हुई १३ आगे वढकर ॥ ४८ ॥ १५ इन्द्र के पोते अंगद ने १४ अश्वकर्ण नामक वृक्ष की शीघ्र इस दुष्ट के शरीर में दी१६फिर१७भतीजे का मरना देखकर१८खड्ग लिया

तब भ्राताकौं पकर्यो निहारि सोनिताक्षहू द्विबिदके उरमैं अ-नेक प्रहार करत भयो ॥

दूजी२बेर दुष्टनैं गदा उठाई देखि द्विबिदनैं ताको बाहु मरोरि सो ही गदा लैकैं दोहू२दुष्टनकै प्रचुर प्रहार मारे ॥

अरु लोहितनेत्रको मुख नखरनैंसौं बिदारि ताके अंगदं पुहवी पैं पीसिडारे ॥ ५० ॥

द्विबिदनैं असैं लोहितनेत्रकौं हन्यौं देखि मैंदनैं यूपाक्षहू मारिलयो।
अरु अवसेस अनीक छिन्नभिन्नहोय कुंभ१निकुंभ२के सरनगयो॥
भजी सेनाकौं बिस्वासदेकैं कुंभनैं द्विबिदकै एक१बान मार्यो॥
तासौं बिसेस बिव्हलहोय कपिकुंजरनैं भूपति सम्हार्यो ॥ ५१ ॥

(दोहा)

मैंदहु लखि भ्रातहिं गिरत, दई सिला इक१डारि ॥
सोहु कुंभ तिच्छन सरन, दई सबेग बिदारि ॥ ५२ ॥
कुंभ दयो सर मैंदउर, यहहु पर्यो अनचेत ॥
मातुल दुव२लखि मूढ निज, अंगद कोप उपेत ॥ ५३ ॥

[रोला]

तबहि कुंभ सर तीन३पंच५नाराच प्रहारिय ॥
सहि अंगद बहुसैल डंकि रक्खससिर डारिय॥
काट्टि गिरिन पुनि कुंभ बान अंगद भ्रूअंतर ॥
दये ति सहि अंगदहु कुप्पि तरुसाल लियउ कर ॥५४॥
आवत छेदि वहेहु दयो हनि कुंभ सत्त७सर ॥
कुंभ बिसिख सहि कलहँ भयउ अंगद अचेत भर ॥

---

१ बहुत २ शोणिताक्ष के मुख को ३ नखों से ४ भुजबंध ॥ ५० ॥ ५ बाकी की ६ सेना ७ बानरों मे हस्ति भूमि पर गिरगया ॥ ५१ ॥ ८ इसप्रकार अपने दोनों मामों को ९ अचेत देखकर १० अंगद कोप स-हित हुआ ॥ ५३ ॥ ११ छोटे बाण जो चलते समय दृष्टि नहीं आते १२ कूदकर १३ भौंह के बीच में ॥ ५४ ॥ १४ कुंभ का बाण सह कर १५ युद्ध में

जांबवान मुख[1] सुनत राम पठये सहाय जब ॥
तेहु रुके सहि तीर भयउ सुग्रीव अग्ग तब ॥ ५५ ॥
मुक्के गिरि तरु अमित[2] कुंभ सब तेहु कट्टिदिय ॥
कुद्दि तबहि कपिराज कुंभ कोदंड[3] टूककिय ॥
बलि सिराहि बहुबेर कह्यो अवसर विक्रम करि ॥
कुद्दि सुनत यह कुंभ भुजन सुग्रीव लयोभरि ॥ ५६ ॥
करिय मल्लरन कछुक बहुरि कपिराज महाबल ॥
अर्णव[4]विच कुंभहिं पछारि पिक्खिय ताको तल ॥
परत सिंधु जल उफनि बढ्यो दिसदिस थल बोर्‌यो ॥
कुंभ चेतलहि कुद्दि जंग आय रु पुनि जोर्‌यो ॥ ५७ ॥
कपिपतिउर[5] तँहँ कुंभ मुट्ठि वज्रोपम[6] मारिय ॥
तिहिँ प्रहार तस कवच तोरि बँपु[7] मर्म विदारिय ॥
तब सुग्रीवहु तमकि[8] कुंभउर मुट्ठि पातकिय ॥
पापी तिहिँ तजि प्रान लोक अर्जित[9] पद्धति[10]लिय ॥ ५८ ॥
गहि निकुंभ तब परिघ चल्यो कपिपतिहिँ प्रचारत ॥
बदन फारि अतिबेग मत्त गोचर[11] पर मारत ॥
परिघ उठावत पिक्खि धमकि अंबर१धर२धुज्जिय ॥
[12]प्रखर सोहि खलपरिघ उमगि मारुति[13] निज उरालिय॥५९॥
लग्गत आनिल[14] बच्छै[15] टूकटूकन वह तुट्टिय ॥
[16]मल्लपि तबहि हनुमान दुष्ट उर मुष्टिघात दिय ॥
कछु खिन घुम्मि निकुंभ जाय पकर्‌यो समीर[17]सुत ॥

१जांबवान आदि २ अगणित ३ धनुष को तोड़ डाला ॥ ५६ ॥ ४समुद्र में ॥५७॥५ सुग्रीव के उर में ६ वज्र की जिसको उपमा लगै ऐसी ७शरीर के मर्मस्थान को विदारण करदिया ८ क्रोध करके कुंभ के उर में मुष्टि मारी जिससे उस पापी ने ९ जैसे पाप कर्म इकट्ठे किये थे तैसे ही लोक का १० मार्ग लिया अथवा लोक जिस मार्ग जाते हैं उस मार्ग गया अर्थात् मरगया ॥ ५८ ॥ ११जो दृष्टि में आवे उसी पर१२तीखा१३हनुमान् ने ॥ ५९ ॥ १४हनुमान् के१५हृदय में लगते ही१६कूदकर१७हनुमान् को

मारुति तब पुनि मुट्ठि दुष्ट[1] उर अतुल हनी द्रुतं[2] ॥ ६० ॥
इहिँ छतं[3] होय अचेत परत रक्खस गहि पीसिय ॥
कुट्टिकुट्टि तसकाय भिन्न मस्तक मरोरिलिय ॥
कौणप खट[4] कुंभादि हनैं इहिंगति नवमी दिन ॥
सुनत धारि अतिसोक अधिक बिलप्यो रक्खसइनं[5] ॥६१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ बीतिहोत्रचण्डासिबंशबर्णने वसुदेव ६८ बेला ६८।१ बिबाहबेलावर्णनविषयकबृध्नबंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपुत्रबिकुक्ष्ति ७ कुलकलशजानकीजानिचर्यायामष्टम्या८ऽऽद्दिनवम्य ९ न्तरणबर्णनक्रव्यादमहोदर१ महापार्श्व २ सहितरावणपुत्रत्रिशिरा १ ऽतिकाय २ देवान्तक ३ नरान्तक ४ मरणइंद्रजिद्ब्रह्मास्त्रव्याकुलससैन्यराघव २ मोहनहनुमदौषधपर्बताऽऽनयनसर्वप्रत्युज्जीवनकपिलङ्कादवदापननवमी९रणरात्रिप्रजङ्घा१ ऽकंपन२ यूपाक्ष ३ शोणिताक्ष ४ सहितकौम्भकर्णिकुम्भ १ निकुम्भ २ निपतनं द्विपञ्चाशत्तमो५२मयूखः ॥५२॥ आदितश्चतुर्णवतितमः ॥ ९४ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

१दुष्ट निकुंभ के उर में २ शीघ्र ॥६०॥ ३इस घाव से ४कुंभ को आदि लेकर राक्षसों को नवमी के दिन मारे ५ राक्षसों का राजा (रावण) ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि कुल के कलश जानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में अष्टमी के अंत तक के युद्धवर्णन में राक्षस महोदर, महापार्श्व सहित रावण के पुत्र त्रिशिरा अतिकाय देवान्तक नरांतक का मरना, इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र से व्याकुल होकर सेना और राम लक्ष्मण का मूर्छित होना, हनुमान् का औषधि के पर्वत को लाना, सब का फिर जीवित होना, वानरों का लंका में अग्नि लगाना, नवमी के युद्ध में राक्षस प्रजंघ, अकम्पन, यूपाक्ष शोणिताक्ष सहित कुंभकर्ण के पुत्र कुंभ निकुंभ को मारने का बावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि से चौरानवे मयूख हुए ॥ ९४ ॥

(षट्पात्)

सुनि मृत सोदर सुतन सोचि कछु पुनि प्रकुप्पि सठ ॥
पिल्ल्यो तब खरपुत्र हनन मकराक्ष महाहठ ॥
करि प्रनाम धकि कढिय दे सु लंकेस प्रदक्खिन ॥
चढि रथ हंकिय चंड दिसन मंडत रज दुर्दिन ॥
गिरिगय प्रतोद तस सूतकर ध्वजहु तुट्टि छोनियँ ढरयो ॥
हतसत्व हयहु जानुन जकिय यह कुसोनहु न अद्दरयो ॥१॥

(दोहा)

यह कुसोन सु न अद्दरयो, अच्युत दल पुनि आय ॥
रच्यो सतत मकराक्ष रन, बान निकर बरसाय ॥ २ ॥

(षट्पात्)

प्रहरन जातुन पाय भीत कपि कटक चल्यो भाजि॥
ठहै तब राम हरोल संघ सत्रुन अटक्यो साजि ॥
देखि प्रभुहिं तिहिं दुष्ट कहिय दुरि दंडक काननं ॥
जब मारयो खर जनक अज्ज प्रविसहु सुत आनन ॥
अभ्यस्त सस्त्र जो तव असह सोहि चलावहु सत्रुसिर॥
प्रभुकहिय ठहै न बैनन समर अस्त्रतजहु करि रनअंजिर ॥३॥
राम बचन मकराक्ष सुनत मुक्किय अनेक सर ॥
कोसलेस तिन्ह कट्टि अप्प मुक्किय खल उप्पर ॥

---

२ अपने भाई और पुत्रों को १ मरेहुए सुनकर ३ खर के पुत्र मकराक्ष को भेजा ४ क्रोधित होकर निकला ६ उसके सारथि के हाथ से ५ चाबुक गिरगया ७ ध्वजा तूटकर भूमि पर गिरगई ८ पराक्रम रहित होकर घोड़े भी घुटनों के बल गिरगये ९ इन अपशकुनों को भी नहीं माना ॥ १ ॥ १० रामचन्द्र की सेना में आकर ११ निरंतर १२ बाणों का समूह वर्षाकर ॥ २ ॥ १४ राक्षसों के १३ शस्त्र पाकर १५ शत्रुओं के समूह को रोका १६ दंडक वन में छिपकर १७ मेरे पिता खर को मारा था उसीके पुत्र के १८ मुख में आज प्रवेश करो, जो तुम्हारे १९ अभ्यास किये हुए असह शस्त्र होवे वह चलाओ २० रामचन्द्र ने कहा कि वचन से २१ युद्ध नहीं होता इस २२ युद्ध के अखाड़े में युद्ध करके अस्त्र छोड़ ॥३॥

खलहु [1]मंदर ते खंडि कियउ अद्भुत अतिसय करि ॥
तब प्रकुप्पि दै तीर [2]हरिहु [3]तस चाप लयो [4]हरि ॥
पुनि मुक्कि अष्ट८नाराच प्रभु सूत१तुरग २रथ३संहरिय ॥
खरपुत्र तबहि [4]सिवदत्त [5]खर धकि त्रिसूल निजकर धरिय॥४॥
वहहु कट्टि [6]अखिलेस अधिक सोहिय रन अंगन ॥
मुट्ठि बंधि मकराक्ष सम्मुख दोरयो जब हठसन ॥
[7]पावकअस्त्र प्रयोग बिरचि तब राम बानदिय ॥
[8]अहं दसमी१० मधुअसित लरत खरतनय प्रानलिय ॥
दससीस सुनत करि सोक [10]द्रुत पीसि [11]रदन अतिसय कुपित ॥
हठि [12]तनय राम१लक्खन२हनन जेठो [13] पिल्लिय इंद्रजित ॥५॥
[14]बारिदरव तब सबिध [15]ज्वलन किय [16]हवन [17]पुव्व जिम ॥
[18]पग्घ अरुन धरि प्रकट तत्थ तियजनहु गये तिम ॥
[19]सुचिहु पुव्व सम सकुन दये उठि [20]अर्चि प्रदक्खिन ॥
चउ४हय रथ तब चढिय असह रावनकुमार [21]इन ॥
किय बहुरि [22]नैर बाहिर कढि रु रक्खस मंत्रन [23]हव्यहुत ॥
पुनि पिहित [24]होय आय रु [25]परिग सर बरखत दसतुंड[26]सुत ॥६॥
खल [27]व्यवहित रहि [28]खमग रघुप [29]बेधे दुव२रोपन [30] ॥

---

१ उन तीरों को काटकर २ रामचन्द्र ने भी ३ उसका धनुष काट दिया ४ महादेव
का दियाहुआ ५ तीखा त्रिशूल हाथ में लिया॥४॥ ६ रामचन्द्र उसको भी
काटकर ७ अग्नि अस्त्र का प्रयोग करके ९ चैत्र बदि दशमी के ८ दिन १० शीघ्र ११ दन्त
पीसकर अत्यन्त कोप में होकर हठ करके राम लक्ष्मण को मारने के लिये
१३ बड़े १२ पुत्र इन्द्रजित को भेजा॥५॥ तब १४ मेघनाद ने १५ अग्नि में १७ पहिले
किया था उसी माफिक १६ होम किया १८ इन्द्रजित लाल रंग की पाघ धारण करके
गया और इसीप्रकार स्त्रियां भी वहां पर गईं १९ अग्नि ने भी पहले के स
मान दहिनी ओर २० ज्वाला (झाल) उठाकर शकुन दिये २१ कुमरों का सूर्य
२२ नगर के बाहर निकल कर २३ मंत्रों के साथ हव्य को होमा फिर २४
छिपकर बाणों की वर्षा करता हुआ २६ दशमुख का पुत्र (मेघनाद) रामचन्द्र की
सेना पर २५ गिरा।६। उस दुष्ट ने २८ आकाशमार्ग में २७ गुप्त रहकर २९ राम लक्ष्मण
को ३० बाणों से वेधे और अत्यन्त कोप से बंदर और रींछों को मारा.

मारे रन तिम अमित कीस१ भल्लुक२ अतिकोपन ॥
लक्खन अक्खि सु लखिय प्रभुहिं सासन तव पाऊँ ॥
ब्रह्मअस्त्रकरि अवहि निखिल क्रव्याद नसाऊँ ॥
प्रभु कहिय इक्क१ अपराधपर कुल रक्खस उचित न कंदन
इहिं हननजतन करिहैं अपर रावनसुत बचिहैं न रन ।७।
प्रभु आसय यह पिक्ख स्वपुर घननाद प्रवेसिय ॥
मायामय सीता बनाय निजरथ चढाय लिय ॥
खल तिहिं राघव लखत हनन निकस्यो लंकासन ॥
सहँसन कपि तब समुख जुरे मारुतिमुख जुज्झन ॥
मैथिली लखत अनिल दुमन लग्गो सोचन कष्टलहि ॥
तँहँ दुष्ट हनन रघुवरतियहिं गहिय खग्ग कच तास गहि॥८॥
रामराम वह रटिय मलिनपट१वपु२मायामय ॥
अनिलसुतहु तब अंसु डारि अक्खिय रे निर्दय ॥
अबला यह किम याहि हनन तेरी मति होवत ॥
स्त्रीघातिन जे लोक रोक सहिहै तँहँ रोवत ॥
इन्द्रजित कहिय हनि याहि अब जवकर लैहौं सवन जिय
तियघात पाप हनि ताडका क्यों नहिं चिंतन राम किय॥९॥

१लक्ष्मण ने यह देखकर रामचन्द्र से कहा कि आप की २ आज्ञा होवे तो ब्रह्मास्त्र से ३ सम्पूर्ण ४ राक्षसों का नाश कर दूं, रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि एक के अपराध से सब कुल का नाश करना उचित नहीं इसके मारने का कोई दूसरा उपाय करेंगे ॥७॥ ५ मेघनाद ने लंका में जाकर ६ हनुमान् आदि ७ सीता को देखकर हनुमान् उदास हुआ, विचारने लगा कि क्या कियाजावे इतने में ही दुष्ट मेघनाद ने सीता के केस पकड़कर खड्ग लिया ॥ ८ ॥ हनुमान् ने आंसू डालकर कहा कि अरे निर्दय यह स्त्री है इसको मारने को तेरी बुद्धि कैसे होती है स्त्रियों के मारनेवालों के लिये जो लोक हैं तहां जाकर रोताहुआ कैद भुगतेगा, इन्द्रजित् ने कहा कि इसको मारकर शीघ्र ही तुम सब के जीव लूंगा और ताड़का को मारते समय रामचन्द्र ने स्त्री मारने का पाप क्यों नहीं याद किया ॥९॥

कहि इस रावनकुमर धार सित[1] असि उबाय ध्रुव ॥
दै उपबीत उतार मारि भुवजा[2] डारी भुव ॥
यह लखि घोर अनर्थ भीत प्रतिमुख कपि[3] भज्जिय ॥
मारुति तिनकहँ मोरि जुरन अग्रेसर गज्जिय ॥
सयँ[4] निज उठाय महती सिला दससिरसुत सिर मुक्किदिय
वह टरयो सरथ तब हनि इतर[5] क्रव्यादन[6] छिति[7] गोन किय। १०।
कपिहत[8] लखि निज कटक जुरयो दुद्धर बासवजित[9] ॥
करि इक्कत निज[10]कीस अनिल[11]अंगज आक्खिय इत ॥
जिहिँ निमित्त[12] सब जुरत सती सीता सु हनी सठ ॥
सब यह प्रभुहिँ[13] सुनाय हुकम सद्दहु उद्धत हठ॥
निज गुल्म[14] सुभट समुझाय इम प्रभुढिग आयउ पोनसुव[15] ॥
इन्द्राजित गयउ उत हवनथल भल निकुंभिला नाम भुव।११।

दोहा

रावन तनय निकुंभिला, ज्वलन किन्न हुत जाय ॥
हव्य गिरत वह तुष्ट हुव, बहुबिध अर्चि बढाय ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

---

१ तीखे खड्ग को निश्चय ही उठाकर जनेऊ उतार दिया (एक कंधे पर तरवार मार कर शरीर को तिरछी दो चीर करदेने को जनेऊ उतारना कहते हैं) और २ भूमि से पैदा हुई (सीता) को भूमि पर डाल दी ३ बन्दर पीछे भागे उनको हनुमान ने उलटे मोड़ कर युद्ध करने को आगे होकर गर्जना की. ४ अपने हाथ में बडी शिला उठाकर ५ दूसरे ६ राक्षसों को मारकर ७ भूमि पर गई ॥ १० ॥ ८ वानरों से अपनी सेना को मरी देखकर ९ इन्द्राजित १० अपने बंदरों को इकट्ठे करके ११ हनुमान ने कहा कि जिसके १२ कारण सब लड़ते थे उस सीता को तो मूर्ख इन्द्राजित ने मारडाली यह १३ रामचन्द्र को सुनाकर जैसा वे हुक्म देवें तैसा करो इसप्रकार अपनी १४ सेना के वीरों को समझाकर १५ हनुमान रामचन्द्र के पास आया ॥ ११ ॥ और इन्द्रजित ने निकुंभिला नामक स्थान में जाकर अग्नि में होम किया सो होम का पदार्थ भीतर पड़ते ही बहुत प्रकार की ज्वाला बढाकर वह अग्नि प्रसन्न हुआ ॥ १२ ॥

सुनि इत दोउरन समर जांबवानहिं प्रभु जंपिय ॥
सबल इंद्रजित संग कलह हनुमान घोर किय ॥
यातैं भल्लुकईस[1] देहु ताकँहँ सहाय द्रुत ॥
यह गय पच्छिम पोरि[2] जत्थ हनुमान अरिन जुत ॥
करि मंत्र वह जु पहिलैं[3] कह्यो मिल्यो बज्रवपु[4] वाहुरत ॥
अंजनातनय रिच्छन अधिप प्रभुढिग मिलिआये प्रनत ॥ १३ ॥

दोहा

प्रभुसौं अक्खिय पोनसुत, सठ चढाय रथसत्थ ॥
सीता कच[5] गहि सक्रजितैं[6], अज्जँ[7] हनी सु अनर्थ[8] ॥ १४ ॥
हमबिह्वल देखतरहे, बने न बिपति बिदार ॥
माता मारी दुष्ट दैं, असि[9] उपवीतैं[10] उतार ॥ १५ ॥

(षट्पात्)

सुनत बज्र सिर परिग[11] गिरे राघवँ[12] भुव रोवत ॥
कपिबर सीतल सलिल[13] लगे सिंचन श्रम खोवत ॥
इक्खि[14] बिबस अग्रजहि किन्न लक्खन आलिंगन ॥
कहिय धर्म आगम प्रमेय निरख्यो सु हैहि नन ॥
होतो जु धर्म्म तो धर्मरत तुम यह व्यसन न पावते ॥
होतो अधर्म तो कुलसहित पापहिं नरक पठावते ॥ १६ ॥

(दोहा)

---

[1]हे रीछों के राजा! [2]पश्चिम द्वार पर [3]ऊपर कहीहुई सलाह करके [4]हनुमान पीछा आताहुआ मिला ॥ १३ ॥ [5]सीता के केस पकड़कर [6]इन्द्रजित ने [7]आज मार-डाली सो [8]अनर्थ हुआ ॥ १४ ॥ [9]तरवार की देकर [10]जनेऊ उतार दी ॥ १५ ॥ [11]यह सुनते ही मानो मस्तक पर वज्र पड़ा [12]रामचन्द्र रोते हुए भूमि पर गिर गये [13]ठंढे पानी से [14]बड़े भाई को विवश देखकर लक्ष्मण ने उनको भुजों में भरलिये और कहा कि धर्म शास्त्र के प्रमाण से देखा सो धर्म है ही नहीं जो धर्म होता तो धर्म में प्रीति रखनेवाले आप यह दुःख नहीं पाते और जो संसार में अधर्म होता तो कुल के सहित पापी (रावण) को नरक

धर्म१अधर्म२उभैर न ध्रुव, यह दृढ जानी अज्ज ॥
प्रभु१जासौं कंकट परे, सकुल दसानन२अज्ज ॥ १७ ॥
सुगँ बिभव अधर्म रत१, बिपति धर्म रत२ लेत ॥
अज्ज किये मोघ सु उभै२, खल सीता हनि खेत ॥ १८ ॥
धर्म हुतो जो सत्यमय१, ततो अनृतमय२ तात ॥
बखसि राज्य काढत बिपिन, बंध्यो क्यौं न विघात ॥ १९ ॥
अग्रज ममत धर्म यह, सत्त७हि प्रकृति समर्थ ॥
तज्यो तुम सु राज्यहिं तजत, ओड्यो व्यसन अनर्थ ॥ २० ॥
बासवजित डारी विपति, पुरयरहित अघपूर ॥
उट्ठि निहारहु अप्प अब, दास करत तिहिं दूर ॥ २१ ॥
इम नरलीला अनुसरत, उभय२भ्रात अकुलाय ॥
चउ४सचिवन संजुत चविय, इहाँ बिभीखन आय ॥ २२ ॥

(षट्पात्)

अनुज अंक आकुलित बिक्खि रघुबरहिं बिभीखन ॥
कहिय सोक जिन करहु खलहिं जानहु मायाधन॥

भजता ॥१६॥ धर्म और अधर्म दोनों ही नहीं हैं यह आज निश्चय जानागया कि जिसमे हे प्रभु! आप तो सुख को काटकर " कं सुखं कटतीति कङ्कटः" पड़े हो और रावण आज कुल सहित है ॥ १७ ॥ दुष्ट इन्द्रजित् ने सीता को मारकर धर्म और अधर्म दोनों को आज झूठा कर दिया ॥ १८ ॥सत्यमई जो धर्म होता तो पिता ने झूठमई (जिसको नहीं मिलता था उसको) राज्य देकर आप को वन में भेजते समय उसको क्यों नहीं मिटाया ॥ १९ ॥ हे भाई साहिब ! मेरे विचार से सातों प्रकृति (राजा आदि राज्य के सात-अंगों) सहित अपने बडे राज्य को छोडने के साथ ही धर्म को छोडकर आप ने दुःख अनर्थ को धारण किया है ॥ २० ॥ इन्द्रजित् ने पुराय से रहित पाप की भरीहुई विपत्ति डाली है उसको आप का सेवक दूर करता है सो उठकर देखो ॥ २१ ॥ इसप्रकार मनुष्यलीला करतेहुए दोनों भाई अकुला रहे थे वहां अपने चारों मंत्रियों सहित विभीषण ने आकर कहा ॥ २२ ॥ छोटे भाई की गोदी में व्याकुल हुए रामचन्द्र को देखकर विभीषण ने कहा कि शोक मत करो इन्द्रजित को मायाधन(माया ही है धन जिसके ऐसा)जानो.

सीताहिं न लखिसकत आनि मारन कितीक यह ॥
करि मोहित कपिकटक[1] इष्ट[2] सद्धन पहुँच्यो वह ॥
इक१चैत्य[3] जनन१होमन२उचित थिरनिकुंभिला जागथल ॥
रक्खित सु जातु[4] सहँसन रहसि बासवजित[5] गो तहँ प्रबल ॥२३॥

(दोहा)

जो अब होमहिं इद्रजित, विनु प्रत्यूह[6] बनाय ॥
तो अमरनँजुत अप्पतैं, जित्यो दुष्ट[7] न जाय ॥ २४ ॥
खोजैं मोहित[8] राम खिन. इम माया रचि एह॥
होमकरन दुष्ट सु पिहित[9], गो निकुंभिला गेह ॥ २५ ॥
हवन तास पूरो न व्है, तोलों भेजहु तथ्थ॥
कर्मबिगारन दुष्टको, सौमित्रिहिं[10] हमसत्थ ॥ २६ ॥

(षट्पात्)

बत्त सुनत यह बीर लघुहि[11] पठयो प्रभु लक्खन॥
जांबवान१हनुमान२भये संगहि रिपुभक्खन ॥
अंगद३रावनअनुज२जवी[12] कोटिन दलसंजुत ॥
गये जहाँ अतिगूढ़ सबिधि होमत रावनसुत ॥
रच्छक तदीय बहु रात्रिचर देखत लक्खन बानदिय ॥
सर१सक्ति२कुंत३असि४तिनहु सजि क्रमि सम्मुह[13] घमसान किय२७
निज बल[14] सीदत निरखि खिज्जि असमाप्त हवन खल ॥

यह सीता को देख भी नहीं सकता है मारना तो कितनी बड़ी बात है १ बानरों की सेना को इसप्रकार मोहित करके वह अपना२प्रिय कार्य साधने को गया है ३ ऋत्विजों के होम करने का उचित यज्ञस्थान जिसका निकुंभिला नाम है ४ हजारों राक्षसों से रक्षा कियाजाता है वहां पर प्रबल ५ इन्द्रजित् गया है ॥ २३ ॥६बिना विघ्न के इन्द्राजित् होम बनालेवेगा तो वह दुष्ट ७ देवताओं सहित आप से नहीं जीतने में आवेगा ॥ २४ ॥८ क्षणमात्र मूर्छित हुए रामचन्द्र को देखेंगे तब तक मैं होम कर लूंगा यह विचार कर ९ छिपकर ॥ २५ ॥ १० लक्ष्मण को हमारे साथ भेजो ॥२६॥११ शीघ्र ही भेजा १२ वेगवान् क्रोड़ों सेना सहित उस होम की रक्षाकरनेवाले राक्षसो को देखते ही१३सामने चलकर युद्ध किया ॥२७॥१४अपनी सेना को

उठि स्यंदन आरोहि चल्यो सम्मुह जव चंचल ॥
मलपि तत्थ हनुमान जातु सहँसन मारि जव॥
निरखि ताहि घननाद तक्कि अक्खिय सूतहिँ तब ॥
मारुति समीप लै रथ चलहु सारथि तँहँ लैगो सुनत ॥
सस्त्रहु अनेक मुक्के ति सब हनुमानहु किय[1] प्रतल हत ।२८।
कंटक[2]पुत्तहिँ कहिय पवन[3]अंगज अभीतपन ॥
जो रावनसनजात[4] रंग तो मोहि देहु रन ॥
जीवत अब जैहो न लरत आसुगपुत्तहिँ[5] लहि ॥
कुप्पि खलहु कोदंड चंड लिय हनन वाहि चहि ॥
लखि ताहि बिभीखन लक्खनहिँ[6] बढि सु दिखायउ होम[7]बन
न्यग्रोध[8] इक घननीलनिभ[9] जँहँ सहव्य[10] दीपित ज्वलन[11] ॥२९॥

(दोहा)

कहिय बिभीखन लक्खनहिँ, यह न्यग्रोध उदार॥
यँहँ भूतनहित इंद्रजित अप्पत बलि[12]उपहार ॥ ३० ॥
वनि यातैंहि अदृष्टतनु[13], पी छैं लरत प्रचारि ॥
जाय न तँहँ घननाद जिम, रचहु अप्प तिम रारि ॥ ३१ ॥

(षट्पात्)

सुनत चाप सौमित्रि करखि आश्रुति[14] टंकारिय ॥
रावन सुतसन रारि मंगि सायक[15] बहु मारिय॥
तबहि बिभीखन तत्थ[16] परयो घननाद[17] दिठ्ठिपथ ॥

कांपती हुई देखकर यज्ञ का समाप्त किये विना ही उठकर रथ पर चढ़कर वेग में चंचल होकर चला अपने सारथि से कहा कि हनुमान के समीप रथ लेचल १ थप्पड़ से उन शस्त्रों का नाश कर दिया ॥२८॥ २ कंटक (रावण) के पुत्र से ३ पवन पुत्र (हनुमान) ने निर्भय होकर कहा कि तू रावण से ४ उत्पन्न है तो इस रंगभूमि में मुझे युद्ध दे (मुझ से युद्ध कर) ५ पवन के पुत्र से लड़कर जीवित नहीं जावेगा. विभीषण ने ६ लक्ष्मण को ७ होम का वन दिखाया वहां पर नीले मेघ के ९ सदृश एक ८ बड़ का वृक्ष है वहां पर १० हव्य सहित ११ अग्नि प्रदीप्त होरहा है ॥ २९ ॥ १२ बलि की सामग्री ।३०। १३ शरीर को अदृष्ट करके ॥ ३१ ॥ १४ कान तक खींचकर १५ बाण मार

बुल्ल्यो तिहिँ खल कुवचँ[1] दुष्ट हुव तूहि रामरथँ[2] ॥
उपज्यो१बढ्यो२रु सिक्रयो३इहाँ घर[3] हरिमंथक[4] घोर घुन ॥
यहँ आय पाप पुत्राहिँ हनन देत विरूयँ वनि अपसउन ॥३२॥

(दोहा)

तातैं जाति१न बंस२तव, हित३न बंधुपन४होहि ॥
अरि वनि तू दससिर अनुज, मार्यो चाहत मोहि ॥ ३३ ॥

(षट्पात्)

कहिय बिभीखन कुटिल दोख मोसिर किम डारत ॥
होत पापरत हेर्य प्रथित यह निगम पुकारत ॥
निलय[11] प्रज्वलित निरखि कढत को नहि हितकारक ॥
अब निज कृत फल उदित मुदित लक्खन यह मारकँ[12] ॥
सुनि यह सुनाय घन खल सवन बुल्ल्यो जियत न जायहो॥
[13]सौमित्रि कहिय बैनन स्वबल बदिहैं जवहि बतायहो ॥३४॥
वासवजित[14] सुनि बहुत बिसिख[15] लक्खन उर बेधिय ॥
सिंहनाद करि सजव[16] कँटुक[17] वच पुनि प्रमुक्त किय ॥
खत्रबंधु[18] खल राम मूढ भ्रातहिँ लखिहैं मृत ॥
लक्खन अक्खिय लज्ज रंच तव नाँहिँ कहाँ ऋत ॥
सठ छुद्र छोरि बानीसमर क्यौं न दिखावत सस्त्रकरि ॥
इम अक्खि पंच५नाराच दिय क्रव्यादँन[19] उर कोपभरि॥३५॥

---

१६ तहाँ १७ मेघनाद की दीठ पड़ी १ खोटे वचन बोला २ रामचन्द्र को लानेवाला ३ घर रूपी चिणे का भयंकर ४ घुण ५ नकटा होकर ६ अपशकुन देता है ॥ ३२ ॥ ७ हे रावण के छोटे भाई जो पाप में रत होता है वह-८छोडने योग्य (त्याज्य) होता है यह१०वेद ९ प्रसिद्ध कहता है११घर को जलता हुआ देखकर अपना हित करनेवाला उसमें से कौन नहीं निकलता है१२मारनेवाले.लक्ष्मण[13] ने कहा कि वचनों से अपना बल बताता है उसी माफिक बतावेगा जब मारूंगा (जब तुझको वीर मानूंगा) ॥३४॥१४इन्द्रजित् ने यह सुनकर.बाणों[15] से.शीघ्र[16].कड़वा[17] वचन बोला नीच[18] क्षत्रिय दुष्ट और मूर्ख रामचन्द्र अपने भाई को मराहुआ देखेंगे. लक्ष्मण ने कहा कि मैं सत्य कहता हूं कि तुझको कुछ भी लज्जा नहीं है हे नीच मूर्ख वचन का युद्ध

इंद्रजितहु तब अनखि से[2]सवपु हनिय तीन३सर ॥
तब लक्खन ज्याघा[3]त ध्वान परिय धरअंबर ॥
बासवजितको बदन जाहि सुनतहि बिबर्ण[4] हुव ॥
कहिय बिभीखन सकुन भले अब खल गिरिहै भुव ॥
सुनि सेस बहुरि दिन भूरि[5] सर खल हुव मूढ मुहूर्त[6] मित ॥
लहि भान बहुरि रिपु लक्खनहिँ जुज्झत बुल्लिय इंद्रजित॥३६॥
अग्गैं सोदर[7] उभय२अवँनि सरबंधि लुटाये ॥
यहै स्मृति न तो अबहु चक्खि मम प्रदरं चलाये ॥
इम कहि लक्खन अंग सप्त७मारे सठ सायकँ ॥
सतक१००बिभीखन अंग दसक१०[11]मारुति उर घायक ॥
लखि एह हसि रु लक्खन कहिय रन अैसो भीरु[12]हु रचत ॥
पुनि कट्टि कवच ताको प्रखर[13] दिय बहु आ[14]सुग रारि रत ।३७।
तबहि इंद्रजित तमकि सेस कवचहु द्रुत कट्टिय ॥
दोउ२न अति छत[15] देह तद[16]पि कोउ न लँचि[17] लट्टिय[18] ॥
एकादसि दिन अस्त भयो इम लरत महाभर[19] ॥
निसि[20] आगम नहिँ मुरि[21]ग जुरिग पुनि समर संधि सर ॥
निस लरत भयो द्वादसि१२दिवस तदपि मुरे नहि लरन तकि
ससचिव[22] सिराहि रावनअ[23]नुज लर्‍यो यहहु रसवीर छकि।३८।

छोडकर.१९राक्षस के उरसे ॥३५॥ २लक्ष्मण के शरीर में ३ धनुष की प्रत्यंचा
के आघात से भूमि और आकाश को शब्द से पूर्ण करदिया जिसके सुनने
ही इन्द्रजित् का मुख फीका पड़गया ४बहुत बाण दिये ५ दो घड़ी तक दु-
ष्ट मूर्छित होगया ॥ ३६ ॥ ६ पहिले दोनों सगे भाइयों को बाणों से बांध-
कर ७ भूमि पर ८ लुड़ादिये (लुढ़का दिये) थे यह याद नहीं है तो अब भी
मेरे चलाये हुए ९ बाणों का स्वाद चख १०बाण ११हनुमान के उर में मारे १२
ऐसा युद्ध तो कायर भी करते हैं १३तीखे १४बाण दिये ॥ ३७ ॥ दोनों के श-
रीर बहुत १५घाव युक्त होगये १६तोभी १७ नमकर कोई १८ पीछा नहीं फि-
रा १९ बडे भार सहित एकादशी का दिन अस्त हुआ और २० रात्रि आ-
जाने पर भी २१ नहीं मुड़े २२ अपने मंत्रियों सहित लक्ष्मण और इन्द्राजि-
त् की प्रशंसा करके २३ विभीषण भी लड़ा ॥३८॥

भल्लुकपति[1] निज भटन सहित मारि वहु रक्खस ॥
सेसहिं पिट्ठि चढाय लर्यो मारुति[3] तिम लै जस ॥
खलहु विभीखन तजि रु बहुरि लक्खन सन जुज्झिय ॥
दोउन दाव दिखाय हत्थलाघव अपुव्व किय ॥
सर लैन१ जुरन२ तक्कन३ खिचन४ छोरन५ लग्गन६ परसपर॥
कोउ न निहारि इनकों सक्किय किय इम नर१ रक्खस२ समर। ३९ ।
द्वादसि१ २ दिन पुनि अस्त भयउ हुव रत्ति भयंकर ॥
रुधिर नदी जवँ जोर चली वढि विविध दिगंतर ॥
न तँहँ पवन संचरिय नत्थि प्रजरिग तँहँ पावक ॥
लोकन मंगल होहु वंदिय पुनि सदय स्वभावक ॥
[11]सौमित्रि तवहिं रिपु चउ४ हयन हुलासि च्यारि४ साय[12]कहनें ॥
तस सूत मारि इक१ भल्ल करि दये विसिख[13] खलकें घनें॥ ४० ॥
रथि१ सारथि२ पन उभयँ२ विरचि तव जुरिग इंद्रजित॥
इहिं अंतर वहु विसिख सेस पुनि हनिय सुरनं हित ॥
खल तिनसौं हुव खिन्न लखि सु चउ४ कीस चलाये ॥
रभस१ प्रमाथी२ सरभ३ गंधमादन४ इत आये॥
इक१ इक१ प्रहारि इक१ इक१ तुरंग मारि चउ४ हि पटके धरनि॥
रथ तोरि कियउ रक्खस पदग उग्गिय इम तेरसि१ ३ तरनि।४१।
तवहिं इंद्रजित कहिय सत्थ अप्पन क्रव्यादन ॥
मैं जावत पुरमज्झ अपर स्यंदन चढि आवन ॥

---

१ जाम्बवान २ लक्ष्मण को पीठ पर चढाकर ३ हनुमान् लड़ा ४ मनुष्य (लक्ष्मण) और राक्षस ने ५ युद्ध किया ॥३९॥ ६ भयंकर रात्रि हुई ७ वेग के साथ ८ न तो वहां पवन चल सका और ९ न अग्नि जला और दया के स्वभाव से लोकों ने १० कहा कि मंगल होओ ११ लक्ष्मण ने १२ बाण मारे १३ बाण दिये ॥४०॥ तब रथिपन और सारथिपन १४ दोनों कार्य स्वयं आप करके इन्द्रजित् लड़ा १५ देवताओं का कल्याण करने के लिये १६ विकल १७ चार वानर १८ एक एक घोड़े को एक एक ने मारा १९ इन्द्रजित् को पैदल करदिया इसप्रकार त्रयोदशी २० सूर्य उदय हुआ ॥ ४१ ॥ २१ अपने साथ के राक्षसों से इन्द्रजित् ने कहा २२ दूसरे २३ रथ पर चढ कर आने के लिये मैं पुर में जाता हूं,

तोलौं तुम इत लरहु बढन देहु न सत्रुन बल ॥
यह कहि पत्तन[1] जाय चढिग रथ हयन चलाचल[2] ॥
आयउ बहोरि आहव अजिर[3] सहँसन बानर संहरिय ॥
सौमित्रि तबहि दै बान सित[4] कार्मुक[5] तस खंडन करिय॥४२॥
अपर चाप खल गहिय सोहु कट्टिय रघुनंदन ॥
अरिउर आसुग[7] पंच५दये अति प्रखर महामन[8] ॥
सोन[9] बमत संक्रजित[10] इतर[11] धनु पुनि कर झल्लिय ॥
बरखि अजिह्मग[12] बिंदु घात लक्खन[13] बपु घल्लिय ॥
दुट्टके कट्टि[14] ते सब प्रदर रामानुज[15] अद्भुत रचिय ॥
सबरिपुन खोजि त्रय३लय३बिसिख[16] द्रुत[17] करि इक१इक१देहदिय४३
तदनंतर बहुतीर सक्रजितकै दिय लक्खन ॥
आये जे सब अडर[18] प्रदर[19] कट्टे परपक्खन ॥
बहुरि सक्रजित[20] सूत मारि पटक्यो महिमंडल ॥
फिरनलगे[21] आवर्त बाजि[22] नेतांबिनु[23] बिव्हल ॥
ते हयहु करे घायल त्वरित तब प्रकुप्पि रावनतनय ॥
दस१०बान सेस उपघन[24] दये व्है कुंचित[25] ते हुव बिलय[26]॥४४॥
लक्खन कवच अभेद्य मन्नि सरत्रय३ललाट दिय ॥
तिन्ह लग्गत रघुबीर शृंगत्रय[27]३गिरि सोभा लिय॥

---

१ पुर में जाकर २ चंचल घोड़ों के रथ पर चढा ३ युद्ध के अखाड़े में आया ४ लक्ष्मण ने तीखे बाण देकर इन्द्रजित् का ५ धनुष काट डाला ॥ ४२ ॥ ८ बडे मनस्वी लक्ष्मण ने ७ अत्यन्त तीखे ६ बाण इन्द्रजित् के उर में दिये जिससे ९ रुधिर उगलते हुए १० इन्द्रजित् ने ११ दूसरा धनुष हाथ में लिया १२सीधे बाणों से लक्ष्मण के १३शरीर में १४उन तीरों को काटकर १५रामचन्द्र के छोटे भाई लक्ष्मण ने १६तीन तीन बाण १७ शीघ्रता करके ॥४३॥ शत्रुओं के बाण अपनी ओर आये तिनको १८निर्भयता से १९बाण काटडाले फिर २० इन्द्रजित के सारथि को भूमि पर पटका २३ निर्वाहक के विना २२ घोड़े २१ गोलाकार (गोलकुंडा) फिरने लगे २४ लक्ष्मण के समीप में दिये २५ कुंठित (भोटा) होकर २६ नाश होगया ॥ ४४ ॥ २७तीन शिखरवाले पर्वत की शोभा को धारण की

बासवजितके[1] बदन पंच५सर सेस प्रहारे ॥
बान पितृव्यके[2] बदन तीन३बासवजित मारे ॥
सबकपिन मारि इक१इक१बिसिखं[3] जुलुम किन्न पुरुहूतजित[4] ॥
तँहँ कुप्पि चउ४हि खलके त्वरित हने विशीखन हय विहित॥४५॥
जब रथ सन इंद्रजित कुद्दि इक१सांगि[5] धारि कर ॥
तक्कि पितृव्यके[6] अंग निसितँ[7] मुक्की सु निसाचर ॥
सो आवत सौमित्रि करी सत१००टूक सरन करि ॥
पंच५बिभीखन प्रदर दये खल उर अमर्ष भरि ॥
जमदत्त[8] बान तत्पर जबहि जोस्यो सत्वरं[9] इंद्रजित ॥
स्वप्नमैं धनदं[10] दिय बान सो ज्यौं[11] जुत किय लक्खन अजित॥४६॥

दीजत१अजित२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

चले दुहुँन२के बान मिलि रु सत १००टूक बिचाहि हुव ॥
उभय२ मोघं[12] लखि सेस[13] अस्त्र बारुनं[14] धारिय धुव ॥
खंल[15] किय रौद्र २ प्रयोग सांत बारुन किय ताकँहँ ॥
आसिरं[16] तब आग्नेय१ त्वरित मुक्क्यो प्रदीप्त तँहँ ॥
पर्जन्य२बिरच राघव प्रबल दुष्ट प्रयुक्तं[17] निवारि दिय ॥
तब जातु[18] अस्त्र आसुर२ तमकि करखि बान संग्रामकिय ।४७।
आसुरसरके[19] अंग कढ धनुतैं[20] असि १ मुग्गर२॥
सांगि ३कुठार४त्रिसूल५गदा६कूटं[21]७रु खरं तोमर ८॥

---

१ इन्द्रजित् के मुख पर २ काका(विभीषण)के मुख पर इन्द्रजित् ने तीन तीर मारे ३ बाण ४ इन्द्रजित् ने ॥ ४५ ॥ ५ सांग (सम्पूर्ण लोहे की बनी हुई शक्ति) ६ अपने चचा के शरीर में ताक कर ७ तीक्ष्ण छोडी ८ यमराज का दियाहुआ बाण ९ शीघ्र १० कुबेर ने स्वप्न में बाण दिया था वह लक्ष्मण ने ११ प्रत्यंचा सहित किया ॥४६॥ १२ दोनों को व्यर्थ देखकर १३ लक्ष्मण ने १४ वरुण अस्त्र को धारण किया १५ इन्द्रजित् ने रुद्र अस्त्र का प्रयोग किया जिसको वरुणास्त्र ने मिटादिया तब १६ राक्षस ने अग्नि अस्त्र छोडा जिस पर लक्ष्मण ने इन्द्र अस्त्र छोडकर १७ इन्द्रजित् के प्रयोग कियेहुए अस्त्र को मिटा दिया १८ राक्षस ने आसुर अस्त्र से बाण खींच कर क्रोध से युद्ध किया ॥४७॥ १९ आसुर अस्त्र के बाण के अंग से २० धनुष २१ तीखे भाले

इत्यादिक लखि भ्रात सेस मुक्किय माहेश्वर[1] २॥
यासौं वह खल अस्त्र ज्वलित रुक्क्यो रन सत्वर ॥
गंधर्व१देव२पितर३रु गरुड४विद्याधर५चारन६बहुत ॥
ऋषि७नाग८सिद्ध९किन्नर१०रासिकदेखन छाये गगन[3] हुत ॥ ४८
तब लक्खन इक१तीर ज्वलन सन्निभ[4] कर लिन्नौं ॥
अग्गै जिहिं तैं इंद्र कलह दानव जय किन्नौं ॥
ऐंद्र१अस्त्र आरोपि चलिय[5] तिहिं करखि चलावत ॥
सत्यसंध[6] जो राम धर्मपथ अचल धर्ममत ॥
इम अक्खि ऐंचि गुन[7] आकरन[8] श्रीलक्खन मुक्कयो सु सर॥
सक्रजित[9] मत्थ कुंडल सुभग कट्टि गिरायउ पुहवि पर॥४९॥

(दोहा)

गिरत इंद्रजित गगनतैं[10], वरखे कुसुम[11] बिसेस ॥
बिचरहु बिज्वर[12] मुनि१बिबुध[13]२, अभय गिरा[14] हुव एस॥५०॥
हरखे मर्कट[15]१रिच्छ२हरि३, बिबिध मिटाय बिखाद ॥
इम मधुमेचक[16] मदनादिन[17]१३, हन्यौं सेस[18] घननाद॥ ५१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्र

१लक्ष्मण ने शिव अस्त्र छोडा २ शीघ्र ३ शीघ्र आकाश में छागये ॥ ४८ ॥ ४ अग्नि के सदृश ५ उस बाण को खींचकर चलाते समय कहा कि जो रामचन्द्र धर्म के मार्ग मे हैं और धर्म में उनका मत अचल है और६ सत्य प्रतिज्ञावाले हैं तो यह बाण व्यर्थ नहीं जावे.७ प्रत्यंचा को ८कान पर्यन्त खींचकर लक्ष्मण ने वह बाण छोडा जिसने कुंडल सहित ९ इन्द्रजित् के मस्तक को काटकर भूमि पर गिरादिया ॥ ४९ ॥१०आकाश से११पुष्पों की वर्षा हुई और निर्भय१४वाणी (आकाशवाणी) हुई कि मुनि और१३ देवता १२पीड़ा रहित होकर फिरो ॥५०॥१५लगूर (काले मुख के वानर) रींछ और वानर नाना प्रकार की खेद को मिटाकर इसप्रकार १६ चैत्र वदि १७ कामदेव की तिथि (ज्योतिष के मत से प्रत्येक तिथि के स्वामी देवताओं को माने जिनमें त्रयोदशी का स्वामी कामदेव है) त्रयोदशी के दिन १८ लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा ॥ ५१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहु-

वसुधेश्वरबंशबर्णने बसुदेव ६८ बेला६८।१बिवाहबेलावर्णनविष-यिकविवस्वद्वंशाविबर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ षट्पपुत्रवि-कुक्षि ७ कुलकलशबैदेहीबल्लभचरित्रे श्रीरामदशमी १० रणामक-राक्षमारणैकादशी ११ दिनमेघनादयोधनमायानिर्मितमैथिलीवि-दारणश्रुततदुदन्तप्रभुपरिदेवनरावणिनिकुम्भिलाहवनविरचनसौ-मित्रितद्विध्वंसनबीरद्वयरसङ्गरविधानद्वादशी१२दिनपुनारणविरत-रणाशेषावतारत्रयोदशी १३ सङ्ग्रामशक्रजिन्निपातनं त्रयःपञ्चाशत्त-मो ५३ मयूखः ॥ ५३ ॥ आदितः पञ्चनवतितमः ॥ ९५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(षट्पात्)

मरत इंद्रजित कातिक गये लंका भजि रक्खस ॥
गये कातिक दुरि उदधि छिपे आदिन काति दुर्दिस ॥
लै रावनसुत सीस बिदित हनुमान बिभीखन ॥
इत्यादिक सब सेस संग आये दल अप्पन ॥
श्रीराम अग्ग डार्‌यो सु सिर प्रभु लखि सुंघिय सेस सिर ॥
बानर सुसेन बुल्लिय रु कहिय कारि बिसल्लय इन्ह न करि चिर१
सुनि सुसेन दिय नस्य सेस आदिक सब बानर ॥

वर्ण वंशवर्णन में वसुदेव और बेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश के बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में दशमी के युद्ध में श्रीरामचन्द्र का मकराक्ष को मारना, एकादशी के दिन मेघनाद से युद्ध होना,माया की रचीहुई जानकी का मारना, वह वृत्तान्त सुनकर रामचन्द्र का विलाप करना, रावण के पुत्र (मेघनाद) का निकुंभिला में यज्ञ करना, लक्ष्मण का उस यज्ञ को नाश करना, दोनों वीरों का संग्राम करना, द्वादशी के दिन फिर रण विस्तार करना, त्रयोदशी के संग्राम में लक्ष्मण का इन्द्रजित् के मारने का त्रेपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥ और आदि से पचानवे मयूख हुए ॥ ९५ ॥

१ लक्ष्मण के साथ २ लक्ष्मण के मस्तक को सूंघा (यह पूर्ण प्रेम करने का लक्षण है) ३ सुषेण नामक वानर को बुलाकर कहा कि ५ देरी नहीं करके इनको ४ शाल रहित कर ॥ १ ॥ ६ नासिका

तब निज दल जय तं[1]नत अखिल हुव स्वस्थं[2] सरीरन ॥
इत सचि[3]वन सुतनास आय रावनसन अक्खिय ॥
सठ[4] बिलप्पि[5] बहु जनकसुता मारन मान[6]स किय ॥
लै[7] असि असोकबनिका चलिय मंदोदरि जुत सबन सह ॥
ढिगजात पिक्खि कट्टन सिरहिं बरज्यो सचिव सुपार्श्व[8] यह ॥ २ ॥

(दोहा)

सचिवनके वरजैं मुरारि, बैठो परिखंद[9] आय ॥
प्रेरे निजभट कपिन पर, बलं[10] खिल सज्ज बनाय ॥ ३ ॥

(षट्पात्)

मधुमेचक[11] सिवदि[12]वस[14]कढ्यो खिल बल लंकासन ॥
लहि लंकेस निदेस[13] सजव जुट्यो कपि संघनैं[14] ॥
पट्टिस[15]१घन२सृंग[16]३पर्स४परिघ५सर६खग्ग७परस्वंध[17]८ ॥
सक्ति[18]९कुंत[19]१०छुरिका[20]११त्रिसूल१२अंकुस१३गदा१४दि अधं[21]॥
चउं[22]४रीति हेति[23] लग्गे चलन किन्न तुमुल[24] रक्खस कपिन ॥
तहँ वढत जोर उतको अतुल लिय भाजि राघव सरन इन॥४॥
तब आजानु अरत्नि[25] राम टंकारि चाप लिय ॥
लाघ[26]व करि लक्ख[27]न कलंब सत्रुन सिर मुक्किय ॥

१अपनी सेना में विजय को फैलाते हुए२नैरोग्य शरीरोंवाले हुए ३ मंत्रियों ने पुत्र का नाश रावण से कहा ४ शठ रावण ने बहुत विलाप करके ५ जानकी को मारने का ६ मन किया ७ तरवार लेकर ८ सुपार्श्व नामा मंत्री ने रावण को मनाकिया ॥ २ ॥ ९ सभा में आकर बैठा १० बाकी के सबको बुलाकर॥३॥११चैत्रकृष्णा१२चतुर्दशी(चतुर्दशी के स्वामी महादेव हैं) के दिन बाकी की सेना लंका से निकली और१३रावण की आज्ञा लेकर १४ वानरों के समूह से युद्ध किया १५ कटारी १६ भिंदिपाल (गोफण) १७ फरसी १८ शक्ति १९ भाला २० छुरी आदि२१नीचे गिरने लगे २२चाररीति (मुक्त चक्र आदि१अमुक्त खड्ग आदि २ मुक्तामुक्त भाला आदि ३ यन्त्रमुक्त बाण आदि४)से२३शस्त्र चलने लगे२४राक्षस और वानरों ने भयंकर युद्ध किया॥४॥२५घुटनों तक फैलेहुए हाथ हैं जिनके ऐसे रामचन्द्र ने धनुष को टंकार के लिया२६शीघ्रता करके२७लाखों २८ बाण शत्रुओं पर छोड़

कांचन[1]मय धनुकोटि भ्रमत आलातचक्र[2] जिम ॥
देखी जातुन[3] एह अंग इतरन[4] दीख्यो तिम ॥
प्रभु प्रेरि अस्त्र गांधर्व पुनि जँहँ तँहँ अप्पहि[5] अप्प हुव ॥
क्रव्याद[6] व्यथित[7] लग्गे कहन यह राघव यह राम ध्रुव ॥५॥
गजन हनत[8] यह राम रथन रघुबर यह कट्टत ॥
अस्वन सूदत एह एह पत्तिन[9] द्रुत दट्टत ॥
जिम भक्तनहिय जत्थतत्थ[10] भासत परमेश्वर ॥
इम दसरथसुत आंजि[11] लख्यो आसिरँ[12] आसिर पर ॥
दुव लक्ख२०००००पँदग[13] गजधृति सहँस१८०००,
सहँस चउद्दह१४०००सादिगन[14] ॥
स्यंदनी[15] अयुत१००००राघव हनैं तिहिंदिन अष्टमभागसन[16]॥६॥

(दोहा)

भजि कर्बुर[17] लंका दुरे, कपि दल हुव जयकार ॥
असित[18] चउद्दसि१४मास मधु[19], किय रन इम भयकार ॥ ७ ॥

(पादाकुलकम्)

बुल्लि राम हनुमान१विभीखन२,मैंद३द्विबिद४सुग्रीव५महामन६ ॥
जांबवान७जुत कहिय अस्त्र बल, भवपैं[20]कै मो पैं यह है भल॥८॥

१ सुवर्ण के बने हुए धनुष के गोशे २ अग्नि के अंगारे के चक्र समान फिरने लगे ३ राक्षसों ने इसी अलातचक्र को देखा ४ दूसरा अंग नहीं दीखा. फिर रामचन्द्र गान्धर्व अस्त्र छोडकर जहां तहां ५ आप ही आप होगये जिससे ६ व्याकुल होकर ७ राक्षस कहने लगे कि निश्चय ही यह राघव, यह रामचन्द्र है ॥ ५ ॥ ८ मारते हैं ९ पैदलों को शीघ्र दबाते हैं, जिसप्रकार भक्तों के हृदय में १० जहां तहां परमेश्वर ही दीखते हैं तिसप्रकार १२ राक्षस राक्षस पर ११ युद्ध में दशरथ के पुत्र (रामचन्द्र) दीखे १३ पैदल १४ घोड़ों पर चढनेवाले १५ रथों पर चढनेवाले १६ दिवस का आठवां भाग बाकी रहते इतनों को रामचन्द्र ने मारे ॥ ६ ॥ १७ राक्षस भागकर लंका में छिपगये १९ चैत्र मास १८ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन इसप्रकार भयंकर युद्ध किया ॥ ७ ॥ रामचन्द्र ने इनसे कहा कि यह श्रेष्ठ अस्त्र २० महादेव के पास है या मेरे ही पास है ॥ ८ ॥

रात्रिचरी[१] लग्गी इत रोवन, किय अनुचित रावन कुल खोवन
सुमिरिसुमिरि हत[२] पति१सुत२बंधुन, अधिक बिलप्पि[३] परी दुख[४] ॥

(दोहा)

दिवस चउद्दसि१४दुव दलनं[५], रौद्र[६] भई इम रारि ॥
प्रात अमाँ[७]३०दिन जातुर्पति[८], निकस्यो समय निहारि ॥१०॥
निजकुल नारिन रुदन सुनि, नक्खि[९] बहुत निस्वास ॥
कट्टि रदच्छद[१०] रदनकरि[११], भो रावन जमभाँस[१२] ॥ ११ ॥
महापार्श्व१बुल्ल्यो अपर[१३], अपर[१४] महोदर२तत्थ ॥
विरूपाक्ष३पुनि बुल्लिकैं, सज्ज्यो लरन समत्थ ॥ १२ ॥

(षट्पात्)

स्यंदन[१५] सज्जिग नियुत१०००००-
नाग[१६] सज्जिग नियुत त्रय३००००० ॥
सट्ठिकोटि६०००००००००बर बाह[१७] तिते खर६०००००००००-
तरल[१८] तथा मय[१९]६०००००००० ॥
असंख्यात पाइक्क[२०] भये दससिर ढिग हाजरि ॥
खासा स्यंदन सूत[२१] तबहि लायो सत्वर[२२] करि ॥
इक सहँस१०००जास कानकैं[२३]कलस रतन[२४] थंभ अष्टक८तुरग[२५]॥
तिहिं रथ अरोहि लंकेस तब मिल दल हंकिय राममग॥१३॥

(मुक्तादाम)

१राक्षसियां रोने लगीं२मरेहुए३विलाप करके४दुःख रूपी कुओं में गिरीं॥९॥ ५दोनों सेनाओं में इसप्रकार६भयंकर युद्ध हुआ७अमावास्या के दिन प्रभात ही८राक्षसों का पति(रावण)॥१०॥९बहुत निश्वास डालकर११दंतों से१० ओठों को काटकर (यह विशेष क्रोध का लक्षण है) १२ यमराज की सी क्रान्तिवाला हुआ ॥ १० ॥ १३ दूसरे महापार्श्व को बुलाया १४ दूसरे महो दर को ॥ १२ ॥ १५ रथ सझे १६ हाथी १७ श्रेष्ठ बाहन १८ चपल १९ ऊंठ २० असंख्य पैदल २१ सारथि रावण के खासा रथ को २२ शीघ्रता करके लाया जिसके २३ स्वर्ण के हजार कलश २४ रत्नों के जड़ेहुए खंभे और आ- ठ २५ घोड़े जुतेहुए थे ॥ १३ ॥

चल्यो अब रावन लै चतुरंग[1], बजे बहु काहल[2]१संख२मृदंग३ ॥
सुचामर१छत्र२बिराजत सीस, बढ्यो प्रलयानल[3] ज्यौं भुजवीस२०
मही हुव बोधितरुच्छद[4] कंपि, चिके[5] बनि जंगम१थावर२चंपि ॥
भये सिर सेस उदंबर[6] पक्क, मुरे किटि१कच्छप२लग्गि मचक्क।१५।
बढ्यो करि फैल समुद्रन नीर, गतप्रभ[8] भानु भयो तम भीर ॥
भये तहँ रावनकौं अपसोन[9], भरयो रवँ[10] घोर सकुंतन भौन ॥१६॥
गिरयो ध्वज गिद्ध सिवा[11] किय सोर, तुरंग उठे गिरि ठहे हततोर॥
फुरे खल बाहु१रु लोचन२सव्यँ[12], भई सिर लोहितवुष्टि अभव्य[13]१७
परी पँबिसी[14] उलका चहुँ४पास, किलक्किय वायस[15]१गिद्ध२कुभास
बनैं दस१०ही मुख तास बिवर्ण[16], फिरयो स्वर बोलनमैं कटुकर्ण[17]१८
दसानन ए न गिनैं उतपात, घनैं छकसौं जुरि मंडिय घात ॥
त्वरा[18] करि तीरनपैं तजि तीर, करे कपि सैंबर[19]तूल समीर ॥ १९ ॥
भजी लखि स्वीयँ[20] चमू कपिराज, सुसेनहिं रक्खिय गुल्म[21]समाज॥

१चार प्रकार की (रथ घोड़े हाथी और पैदल) सेना को लेकर २ कलह (युद्ध) संबन्धी बाजे बजे ३ प्रलय की अग्नि के समान रावण बढा ॥ १४ ॥ उस समय भूमि कंपायमान होकर ४ पीपल वृक्ष के पत्ते के समान होगई (पीपल का पत्ता हिलता बहुत है इसीसे इस वृक्ष का नाम चलदल है) दबने के कारण जड़ औ चैतन्य ५ अपने स्थानों से हटने (डुलने) लगे और शेषनाग के मस्तक पकेहुए ६ ऊमर वृक्ष के फल के समान होगये ७ वराह ॥ १५ ॥ अन्धेरे की भीड़ से सूर्य ८ क्रान्ति रहित होगया ९ अपशकुन हुए. गिद्ध पक्षियों ने अथवा सामान्य पक्षियों ने१०घोर शब्द से रावण के स्थान को भरदिया ॥ १६ ॥ ध्वजा पर गिद्ध गिरा और११स्यालणी ने शब्द किया १२ रावण के वामबाहु और लोचन फरकनेलगे और मस्तक पर १३ अमंगलिक रुधिर की वर्षा हुई ॥ १७ ॥ १४ वज्र के समान चारों ओर अंगारे गिरे और १५ काकपक्षि और गिद्ध बुरी तरह से चीखने लगे और रावण के दश ही मुख १६ फीके पड़गये और रावण का स्वर बोलने में १७ कटुकर्ण (कानों को कड़वा लगे ऐसा) होगया ॥ १८ ॥१८ शीघ्रता करके १९ सेमलवृक्ष की रुई पवन के सामने उड़ती है इसप्रकार वानरों को करदिये ॥ १९ ॥ २० अपनी सेना को भागी हुई देखकर २१रक्षा के अर्थ फौज थी जिसमें सुषेण

उठाय बडे द्रुमकौं कर अप्प, दये[1] डग रावन अग्ग सदप्पं ॥२०॥
निहारि कपीसहि सम्मुह जात, बढे बहु संगहि जुत्थप व्रात[3] ॥
रची अति उग्र हरीस्वर[4] रारि, महाबल जातु लये बहु मारि॥२१॥
सिला१गिरि२गुल्म३हनैं[6] इक१संग, भयो खलको दल विव्हल अंग ।
बिरूपदृगाख्य[7] यहै लखि बीर, भयो बढि क्रंदत[8] जातुन भीर ।२२।
कपीश्वरकौं निजनाम सुनाय, तज्यो[9] रथ कुद्दि चढ्यो गज आय ।
पलावंत थंभि स्वकीयन[10] सूर, कियो कपिराज हियो सरपूर[11]।२३।
तहाँ रविपुत्तहु[12] लै तरु सत्थ, मलंगि हन्यो खलके गजमत्थ ॥
धुक्यो[13] धनु१मात्र करी[14] तिहिं घाय,परयो करि क्रंदन[15] कंपहिं पाय२४
भयो गजकौं तजि सम्मुह दुष्ट, लये कर खग्ग१रु खेटक२रुष्ट[16] ॥
कपीश्वरको करि तर्जन[18] तत्थ, सबेग जुरयो रनकोविद[19] सत्थ।२५।
सिला इक मुक्किय व्हाँ कपिराज,टरयो लखि ताकहँ पिक्ख सुवाज
कपीश्वरकै दिय खग्ग प्रहार, मुहूर्त[20] न भो यह चेतन धार ॥२६॥
सचेतन व्है तदनंतर[21] उठि, हनी दृढ रक्खसके[22] उर मुट्ठि ॥
निसाचरहू धकि[23] दै पुनि खग्ग,करयो कपि दंसन[24] काय अलग्ग२७
कपीस दयो तलघात[25] बहोरि, दयो खल टारि सु पैं द्रुत[26] दोरि ॥
दई पुनि बानरके उर मुट्ठि, दयो खल संख[27] कपी तल रुट्ठि॥२८॥

को रखकर सुग्रीव ने अपने हाथ में बडा वृक्ष लेकर १ घमंड के साथ रावण के सामने २ पैंड (कदम) दिये ॥ २० ॥ ३ जुत्थपों के समूह बढे ४ कपीश्वर ने बडी उग्र लड़ाई रची ५ बलवान् बहुत राक्षसों को मारलिये ।२१। ६ वृक्षों के ठूंठों (शाखा रहित वृक्षों) से ७ विरूपाक्ष ने ८ रोते कूकते हुए राक्षसों की सहाय पर ॥ २२ ॥ ९ अपने १०भागेहुओं को रोककर उस वीर ने सुग्रीव के हृदय को बाणों से ११पूर्ण कर दिया ॥२३॥ तहां १२सुग्रीव ने भी उस घाव से वह१४हाथी एक धनुष जितना१३झुक गया फिर फिर घूम कर १५कूक करके गिरा ॥ २४ ॥ १६क्रोध करके १७ढाल तरवार ली१८सुग्रीव को धमका कर वह १९ युद्ध के पंडित (सुग्रीव) के साथ जुटा ॥ २५ ॥२० दो घड़ी पर्यन्त ॥ २६ ॥२१जिस पीछे चेत पाकर२२राक्षस के उर में२३क्रोध करके२४शरीर से कवच को अलग कर दिया ॥२७॥ २५थप्पड़ अथवा चरण का आघात दिया२६शीघ्र दौडकर टाल दिया दुष्ट (विरूपाक्ष) के२७ललाट

कपीश्वरके तलको लहि घात, भयो वमि[1]लोहित[2] दुष्ट निपात ॥
अमावसिके दिन वानर[3]भूप, हन्यो पहिलैं इम[4] नेत्रविरूप ॥२९॥
दसानन तास बिनास निहारि, महोदर पिछियँ[5] तत्थ प्रचारि ॥
[6]प्लवंग अनेक हनैं जिहिं जाय, कपीसहि भो पुनि स्वीय सहाय३०
दइ गिरितुल्य सिला इहिं डारि, महोदर कट्टिय वानन मारि ॥
हन्यौं कपि सालमहीरुहँ[7] कोपि, विदारि दियो वपु[8] हू नख रोपि।३१।
गिरयो परिघायुध[9] रक्खसकेर, सु लै कपि वाजि हने घनघेर ॥
तबै तजि चंक्रुर[10] मत्त मलंगि, महोदर लिन्न गदा रनरंगि ॥ ३२ ॥
कपीस्वरपैं किय तास प्रहार, दई कपिनैं परिघायुध मार ॥
गदा१परिघायुध२ते मिलि मग्ग, उभै२हि गिरे बनि टूक अलग्ग३३
मिट्यो गिनि आयुध राघव[11]मित्र, अयोग्र लख्यो इक हेम विचित्र
अयोमय भूतलतैं सु उठाय, महोदरपैं द्रुत दिन्न चलाय ॥ ३४ ॥
द्वितीय२गदा गहि रक्खस तत्थ, हनी हठि आवत मूसलमत्थ ॥
उभै२मिलि सस्त्र भये पुनि खण्ड, नियुद्ध[12] रच्यो तब दोउन२चंड३५
परस्पर मंडि चपेट प्रहार, गिरे दुव२मूर्छित ह्वै कछुबार॥
उठे पुनि चेतन पाय उदग्ग[13],लये खिजि रक्खस खेटक[14]१खग्ग२।३६।
कपीसहु तेहि गिरे भुव[15] हेरि, उठाय जुरयो सु महोदर घेरि ॥
महोदरके करवालहिं[16] टारि, लयो असिसौं[17] खलसीस उतारि३७

की हड्डी पर वानर ने थप्पड़ मारी १ रुधिर की उलटी कर के २ गिरगया ३ वानरों के राजा (सुग्रीव) ने इसप्रकार ४ विरूपाक्ष को मारा ॥ २९ ॥ ५ महोदर को भेजा ६ जिसने जाकर अनेक वानरों को मारे ॥ ३० ॥ ७ शालवृक्ष मारा और ८ शरीर को नखों से विदीर्ण करादिया ॥ ३१ ॥ ९ शस्त्र विशेष१०रथ को छोड कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११रामचन्द्र के मित्र (सुग्रीव) ने अपने आयुध को मिटाहुआ जान कर सोने के चित्रामवाले लोहे के मूसल को भूमि से उठा कर महोदर पर शीघ्र चला दिया ॥ ३४ ॥१२दोनो ने भयंकर बाहुयुद्ध रचा ॥३५॥१३उदग्र (ऊंचे उठेहुए मस्तक वाले अर्थात् अनम्र) राक्षस ने क्रोध करके१४ढाल तरवार ली ॥ ३६ ॥१५ भूमि पर गिरे हुए उन्ही शस्त्रों को हेरकर १६ खड्ग को बचाकर १७ तरवा

मरयो लखि याहि भजे मनुजाद[1], महादिकपार्श्व[2] रच्यो रनबाद ॥
अनी[3] थित ही जित अंगदकेर, जुरयो तित रक्खस दै घन घेर ३८
वलीमुख[4] भूरि हनैं[5] तजि बान, सज्यो तब वालितनैं[6] घमसान ॥
लयो परिघायुध इक्क उठाय, दई खलकै सु छक्यो घनघाय ।३९।
दसाननको भट होय अचेत, गिरयो रथतैं धुकि सूत समेत ॥
सिला पुनि अंगद इक्क१ प्रहारि, दये खलके रथ१ बाह२ बिदारि ।४०।
मुहूरतँ[10] अंत सचेतन दुष्ट, दये सर अंगद१ कै बहुरुष्ट[11] ॥
दये त्रय३ भल्लुकनायक[12]२ वच्छैं[13], गवाक्ष३ सरीर दये बहु दच्छैं[14] ॥४१॥
जुट्यो तब वालितनै जँव[15] जोरि, लयो परिघायुध तास झकोरि ॥
दुरहत्थन मुक्किय ताहि भ्रमाय, दयो खल चाप सबान गिराय ४२
गिरयो धनु संगहि मस्तकत्रान[16], दई बहुरयौं दलकी खल कान ॥
करयो खल कुप्पि परस्वध[17] वार, सु टारिगयो कपिराजकुमार ४३
वली तदनंतर अंगद रुट्ठि, हनी दृढ रक्खसके उर मुट्ठि ॥
महाखलके सु लगी पविमान[18], परयो हियफट्टि भयो गतप्रान ४४
दसानन सो लखि कुप्पि दुरूह[19], जुरयो लाहि दुद्धर बानर जूह ॥
दिसा विदिसा करि स्यंदन[20] नाद, बली बढि अग्ग रच्यो रनबाद ॥४५॥
करयो खल तामसअस्त्र[21] प्रयोग, घने कपि भस्म भये तजि छोग[22] ॥
सहयो न सु[23] अस्त्र भजे खिल कीस, रची तहँ जुज्झन[24] लक्खन रीस ४६

से दुष्ट का मस्तक उतारलिया ॥ ३७ ॥ १ मनुष्यों को खानेवाले (राक्षस) भाग २ महाशब्द है आदि में जिसके ऐसा पार्श्व अर्थात् महापार्श्व ३ जहां पर अंगद की सेना की अणी खड़ी थी उधर जाकर लड़ा ॥ ३८ ॥ ४ बहुत ५ वानरों को मारा ६ अंगद ने युद्ध किया ॥ ३९ ॥ रावण का ७ उस रथ ८ धक्के खाता हुआ सारथि सहित ९ घोड़े मारडाले ॥ ४० ॥ १० दो घड़ी पीछे चेत पाकर ११ क्रोध करके १२ जाम्बवान के १३ हृदय में १४ चतुर ने ॥ ४१ ॥ १५ वेग जोड़कर ॥ ४२ ॥ १६ मस्तक को कवच(टोप) १७ फरसी का वार किया ॥ ४३ ॥ १८ वज्र के समान ॥ ४४ ॥ १९ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा रावण वानरों के दुर्धर्ष समूह से जुड़ा, २० रथ का शब्द करके ॥ ४५ ॥ २१ तमोगुणी अस्त्र अथवा सर्प अस्त्र छोड़ा २२ उत्साह छोडकर २३ वह अस्त्र सहा नहीं गया जिससे बाकी के वानर भाग गये वहां पर २४ युद्ध करने

दयो खल छाय कलंबन जाल, गिरायउ कट्टि सु पै सुरसाल ॥
समीप लये तदनंतर राम, घनैं सर मुक्कि जुरयो जयकाम ॥४७॥
प्रभू खलके सर भल्लन छेदि, दये निजसत्रु समूहन खेदि ॥
परिक्रमि मंडल दक्खिन१वाम२, परस्पर जुट्टिय रावन१राम२॥४८॥
भयो नभ तीरन संकुलि मोघ, अखंड प्रसार बढ्यो तमओघ ॥
गयो चरमाचल लंघि पतंग, जथापि तथापि मच्यो इम जंग॥४९॥
तहाँ खल सर्व अयोमय तीर, हनैं प्रभु गोधि घनैं हमगीर ॥
तऊ बिधुरा न भजी करतार, प्रयुंजिय रौद्र महास्त्र प्रसार॥५०॥
महीप सरासन कोटि मिलाय, अभेद्य तनुत्र दये खलकाय ॥
मुधा करि हंस पितामह दत्त, गये भुव भेदि दसानन गत्त ॥५१॥
करयो पुनि राघव अस्त्रप्रयोग, भरे खल गोधि सरोरग भोग ॥
इतेबिच रावन अस्त्र निवारि, सज्यो सर आसुरअस्त्र सुरारि॥५२॥
तज्यो तँहँ तीर अनेक प्रकार, कढे धनुतैं बल अस्त्रकरार ॥
शृगाल१तरच्छु२नखायुध३तुंड, रु गिद्ध४सिचान५अहीमुख६झुंड५३

को लक्ष्मण ने क्रोध किया ॥ ४६ ॥ १ दुष्ट को बाणों की जाल से छा दिया२देवताओं के शाल (रावण) ने जिस पीछे रामचन्द्र को समीप लिये ॥४७॥३ अपने शत्रुओं के समूहों को निकाल (हांक) दिये४गोलाकार फिरकर ॥ ४८ ॥ तीरों से भरकर आकाश मिथ्या होगया अर्थात् आकाश नहीं रहा और अखंड फैलाव के साथ अंधेरे का समूह बढा यद्यपि सूर्य अस्ताचल को लांघ गया तथापि इसप्रकार युद्ध मचारहा ॥ ४९ ॥ सब लोहे के बनेहुए बाण रामचन्द्र के ललाट में मारे तो भी रामचन्द्र ने व्याकुलता नहीं पाई और रौद्र अस्त्र का प्रयोग किया ॥ ५० ॥ रामचन्द्र ने धनुष के दोनों गोशों को मिलाकर अभेद्य कवचवाले रावण के शरीर में बाण दिये सो ब्रह्मा के दिये हुए कवच को वृथा करके दशानन के शरीर को भेदकर भूमि में गये ॥ ५१ ॥ फिर रामचन्द्र ने अस्त्र का प्रयोग करके बाणों रूपी सर्पों के फणों से रावण के ललाट को भरदिया इतने में देवताओं के अरि रावण ने उस अस्त्र को मिटाकर आसुर अस्त्र सझा ॥ ५२ ॥ उस धनुष से कराल अस्त्र निकले जिनमें कितने ही गीदड़ बघेरा (सिंह विशेष) सिंह गिद्ध बाज (शिकरा नामक पक्षि विशेष) सर्प के मुख धारण करनेवाले समूह ॥ ५३ ॥

धरैं मुख व्याघ्रन७कोकन८केक, छुटे इम आसुर मंत्रअनेक ॥
तज्यो ज्वलनास्त्र तबैं रघुराज, कढे इततैंहु घनें बर बाज ॥५४॥
दिवाकर१अग्नि२ससी३चपला४ऽऽदि, धरैं मुखघोर छुटे नभ छादि॥
दयो तिन्ह आसुर अस्त्र निवारि, रची अनखाय दसानन रारि५५
तज्यो मयनिर्मित अस्त्र निसाट, घनैं पुनि अस्त्र कढे बहुघाट ॥
त्रिसूल१गदा२असि३पट्टिस४प्रास५, भयानक है प्रलयानल भास५६
तज्यो प्रभु व्हाँ सुरगायक अस्त्र, करे खलके ति मुधा सबसस्त्र
अनंतर अस्त्र तज्यो खल ओर, जु पै प्रभु खंडिय बानन जोर५७
कियो तब रावन दुस्सह कम्र्म, दये दस१०बान महाप्रभु मर्म्म ॥
व्यथा तिनतैं न लही रघुबीर, दये खलकै पुनि दुद्धर तीर ॥५८॥
इतेबिच लक्खन दै सर सत्त७, हर्यो खलकेतु१नृमस्तक तत्त ॥
हन्यौं पुनि सारथि२दै इक१तीर, रु दै सरपंच५हर्यो धनु बीर५९
बिभीखन तत्थ लये रचि रारि, गदाकरि अग्रजके हयमारि ॥
धर्यो रथ छोरि बिनाहय धक्कि, तजी खल संगि बिभीखन तक्कि६०
बिभीखन मारकं जानि प्रबीन, सु कट्टिय लक्खन दै सरतीन३॥
रची मयकी बसु८घंटन जुत्त, धरी कर सक्ति तहाँ खल धुत्त॥६१॥

और कितने ही भेड़िया व्याघ्र शृगालों के मुख करके छूटे तब रामचन्द्र ने अग्नि अस्त्र छोडा सो इधर से भी श्रेष्ट पांखोंवाले बाण निकले।५४।सूर्य अग्नि चन्द्र विजुली आदि घोर मुख धारण करके आकाश को छादित करके छूटे१क्रोध करके रावण ने युद्ध रचा ॥ ५५ ॥ रात्रिचर (रावण)ने मय के रचे हुए अस्त्र को छोडा जिससे बहुतभांति के बहुत अस्त्र कढे२प्रलय की अग्नि की क्रान्ति के समान ॥ ५६ ॥ वहां रामचन्द्र ने गंधर्व अस्त्र छोडा जिसने दुष्ट के तिन शस्त्रों को वृथा कर दिये जिस पीछे रावण ने अन्य अस्त्र छोडा ॥ ५७ ॥३रामचन्द्र के मर्म स्थान में मारे जिनसे रामचन्द्र ने पीड़ा नहीं पाई ४दुर्द्धर्ष (जिनका अनादर नहीं होसके ऐसे) बाण दिये ।५८। ५ध्वजा को काट डाला. ६रावण की ध्वजा में मनुष्य के मस्तक का चिन्ह था जिसको काट डाला७दौड़ा रथ छोडकर॥६०॥८विभीषण को मारनेवाली जानकर लक्ष्मण ने उस सांग (शस्त्र विशेष) को काटडाली९.धूर्त ने ॥ ६१ ॥

निजानुज रच्छक सेसहिँ जानि, तजी तिनपैँ खल तक्कि रु तानि॥
संदंसन लक्खनको उरफारि, गई तडिता जिम बद्दल बारि ॥६२॥
प्रभ भुव जात सु भंजिय संगि, मिटी इम टारतहू असु मंगि ॥
परे भुव लक्खन प्रानन पेलि, किधौं लहि जेठ प्रभंजन केलि६३
गिरयो अनुजातहिँ पिक्खि विहाल, महाप्रभु भीरु भये कछुकाल
मुहूर्त अनंतर छोरि बिखाद, कह्यो सबसौं व हनौं मनुजाद ॥६४॥
चढो कपि१भल्लुक२अद्रिन मत्थ,सुरादिक होहु बिमानन सत्थ॥
लगावहु दिट्ठि चउद्दह१४लोक, रचो रविसूत तुरंगन रोक ॥६५॥
मनावहु स्वस्ति सबै मुनि१सिद्ध, लहो दसकंध वपा गल गिद्ध ॥
धरो अवधान चराचर सज्ज, लखो मम रामपनौं सब अज्ज ॥६६॥
यहै कहि दै सर रावन अंग, कियो तस देह सु सेह सरंग ॥
परे प्रभुकै पुनि लक्खन दिट्ठि,सुसेनहिँ बुल्लि कह्यो नृप निट्ठि६७
यहै खलपातित सोवत सेस, कहा जयआस भई अब एस ॥

अपने छोटेभाई की रक्षा करनेवाला लक्ष्मण को जानकर वह शक्ति उन पर छोडी सो कवच सहित लक्ष्मण का उर फाड़कर जैसे विजुली बादल को निवारण करने जाती है तैसे गई१भूमि पर गिरतेहुए लक्ष्मण ने उस शक्ति को तोड़ डाली इसप्रकार उसको बचाते बचाते२प्राण की चाहना करके मिटी, जिसप्रकार जेठ मास में३पके केल वृक्ष गिरें तिसप्रकार लक्ष्मण प्राण को हटाकर गिरे॥६३॥ ४छोटेभाई को गिराहुआ देखकर रामचन्द्र विव्हल हुए और कुछ समय५ कायर होगये ६ दो घड़ी पीछे विषाद को छोड कर सब से कहा कि७अब८ राक्षस को मारता हूं॥ ६४॥ वानर और रींछ तो पर्वतों पर चढ जाओ और देवता आदि विमानों पर चढो, चौदह लोकवाले इधर देखो और सूर्य का सारथि भी सूर्य को युद्ध दिखाने के लिये घोड़ों को रोको॥ ६५॥ मुनि और सिद्धलोग कल्याण मनाओ,रावण की मज्जा(गूद)को गिद्ध गळ ले ओ, चर और अचर सभी मनोयोग (वांछित) को प्राप्त होओ और आज मेरा रामचन्द्रपन देखो॥ ६६॥ यह कहकर बाण देकर रावण के शरीर को सेहली (सह्लक) के समान कर दिया, फिर जब लक्ष्मण रामचन्द्र की दृष्टि में आये तब सुषेण नामक बंदर को बुलाकर कठिनाई से कहा॥ ६७॥ दुष्ट का पटकाहुआ यह लक्ष्मण सोता है सो अब ऐसा होने पर जय

न जीवनतैं१रनतैं रहित आज, बिदेहसुताहु अबै किहिंकाज॥६८॥
सुसेन कह्यो न मरे प्रभु सेस, बनी मुखआकृति पंकज बेस॥
प्रभाघन बिग्रह नैन प्रसन्न, बहैं नहि एरिस ओज बिपन्न॥६९॥
सुसेन बली प्रभुसौं इम बुल्लि, कही पुनि मारुतिसौं हित खुल्लि॥
बतायउ भल्लुकनायक तोहि, सजीवन आनहु पब्बयसोहि॥७०॥
यहै सुनिकै पुनि गो हनुमान, लयो पुनि अद्रि जरी३ अनजानि॥
त्रि३बेर महाबल ताकहँ तुल्लि,फलंगिगयो रनमैं हियफुल्लि॥७१॥
सुसेन जरी सब ते पहिचानि, दयो द्रुत नस्यहि सेसहि आनि॥
उठे इहिं सोवतसे जागि सेस, बुलाय मिले ४अरही अखिलेस॥७२॥
यहाँ नहिं लक्खन तोबिनु प्रान, बदी यह राघव प्रेम बिधान॥
कही तब लक्खन चिंतहु बैन, लयो पन राज्य बिभीखन दैन॥७३॥
करो वह सत्य यहै सुनि राम, कियो पुनि रावन बानन५ धाम॥
दसाननहू रथ ओर अरोहि, छल्यो प्रभु सम्मुह जुज्झत ६छोहि॥७४॥
रथी खल१ज्यौं प्रभु२त्यौं पदचार, बदे समता नहिं देवन बार॥
बिचारि यहै पुरुहूत बलीय,समातलि व्हाँ पठयो रथ स्वीय॥७५॥
हरेहय जोरि त्वराकरि आय, लये रथ मातलि राम चढाय॥

की क्या आशा है सीता भी अब किस काम की है॥ ६८॥ मुख की आकृति कमल के समान बनी हुई है शरीर भी बहुत कान्तिवाला है और नेत्र प्रसन्न हैं प्राणबल जिन का नाश होजाता है वे ईदृश (ऐसे) चिन्ह धारण नहीं करते॥६९॥१हनुमान् से कहा२जाम्बवान ने तुझे बताया था उसी संजीवन पर्वत को लाओ॥७०॥३जड़ी को नहीं जानसका तब पर्वत को ही उठालिया और तीन बार उस पर्वत को हाथ में तोलकर फलंग लगाकर युद्धभूमि मे प्रसन्न होकर आया॥ ७१॥ सुषेण बानर ने उस जड़ी को पहिचान कर लक्ष्मण को शीघ्र आकर नाक मे सुंघाई४शीघ्र ही सब के स्वामी रामचन्द्र लक्ष्मण को बुलाकर मिले॥ ७२॥ ७३॥५रावण को बाणों का घर बनादिया६क्रोध करके॥ ७४॥ रावण रथ पर और रामचन्द्र पैदल होने से देवताओं ने कहा कि रथ के बिना बराबरी नहीं है, बलवान इन्द्र ने यह बिचार कर मातलि नामक अपने सारथि सहित अपना रथ भेजा॥ ७५॥ वह मातलि हरे रंग के घोड़ो को जोत कर शीघ्रता करके आया और

अभेद्य तनुत्र१रु सक्तिर२रु चाप३,इते पठये ति लये धरि आप७६
परिक्रमि स्यंदन वंदन किन्न, चढे पुनि राम सरासन लिन्न ॥
रच्यो समतारन द्वैरथ१ नाम, रहे नभ देव भने जय राम ॥ ७७ ॥
जिते खल अस्त्र तजे रुपि रंग, भये प्रभु अस्त्रनतैं सब भंग ॥
तज्यो जब रक्खस रक्खस२ अस्त्र,अनेक कढे अहि आकृति सस्त्र७८
तज्यो तब पासुपतस्त्र नरेस, करे सरपन्नग मोघ असेस ॥
लखे खल अप्पन अस्त्र असार, दये प्रभु विग्रह बान हजार।७९।
हने बहु मातलिके जय हेतु, बिदारिय वासव३ स्यंदन केतु ॥
हरी छबिके पुनि बेधि तुरंग, जुस्यो घन घोर दसानन जंग॥८०॥
रह्यो बुध१रोहिनिहिँ तहँ आय,जुस्यो ग्रह आर१ विसाख२हिँ जाय॥
लियैं ढिग रुंड१रु धूमलकेतु२,हतप्रभ भानु लस्यो खयहेतु ॥८१॥
बढ्यो लखि दुष्टहिँ यों बहु ब्रात,अचानक घोर मचे उतपात ॥
भयो भुव कंप डरे सबभूत, डिगे बन१पव्वय२वृच्छ३ विधूत ॥८२॥
तहाँ गहि दुष्ट महाखय मूल,तज्यो बसु८घंटन जुत्त त्रिसूल ॥

रामचन्द्र को रथ पर चढा लिया,इन्द्र ने अभेद्य कवच, शक्ति और धनुष भेजे थे भी समर्थ रामचन्द्र ने धारण किये ॥ ७६ ॥ रथ के परिक्रमा करके नमस्कार किया१दोनों रथवाले कहलाकर बराबरी का युद्ध करनेलगे ॥ ७७ ॥ २राचस ने राचस अस्त्र छोडा जिससे अनेक सर्प की आकृति के शस्त्र निकले ॥ ७८ ॥ रामचन्द्र ने पाशुपत अस्त्र छोडा।जिसने रावण के सर्पाकार सब बाणों को व्यर्थ करादिया रावण ने अपने बाणों को सार रहित देखकर रामचन्द्र के शरीर में हजार बाण दिये ।७९।३इन्द्र के रथ की ध्वजा को काटडाली ॥८०॥ रामचन्द्र रूपी चन्द्रमा को रावण रूपी राहु से ग्रसाहुआ देखकर चन्द्रमा के अतिप्रिय रोहिणी नचत्र पर बुध नामक ग्रह आगया (ज्योतिष के मत से बुध का रोहिणी नचत्र पर आना भयंकर समझा जाता है) और इक्ष्वाकु वंशियों के सदा शुभकारी विशाखा नचत्र पर मंगल ग्रह आगया (यह भी उत्पात का सूचक है) राहु और केतु को समीप लिये हुए सूर्य नाश का कारण होकर कान्ति हीन दीखनेलगा ॥८१॥ इसप्रकार रावण को प्रबल हुआ देखकर एकाएक भयंकर उत्पातों के समूह मच गये भूकंप होने लगा और सब प्राणी डरने लगे विशेष धुनेजाकर बन पर्वत और वृच्च डिगने लगे ॥ ८२ ॥ दुष्ट रावण ने नाश के मूल आठ घंटावाले

तजे प्रभु तापर बान जितेक, त्रि३सीस करे छुवि भस्म तितेक ।८३।
तजी तव बासवसांगि छितीस, कियो वह खंडित तास त्रिसीस॥
हनैं खल स्यंदनके बलि बाजि, अरे धकि राघव दुस्सह आजि ८४
दये खल गोधि[1] तथा त्रय३रोप[2], बढे दसकंधहिं खेद१रु कोप२ ॥
तजे खल बान हजारन तत्थ, मुरे नहिं राघव तोहु समत्थ ॥८५॥
कह्यो प्रभु रावनसौं हगजोरि, भयो हतबिक्रम तू तिय चोरि ॥
अहम्मति[3] भार बढ्यो तव आहि, त्वराकरि दूरकरौं अब ताहि८६
अनेक हरी जिहि काज निलज्ज, सु लै परनारिनके सुख अज्ज[4] ॥
यहे कहि मारि हजारन तीर, कर्‌यो तितऊ दसकंध सरीर ॥८७॥
पर्‌यो रथपैं छकि दुष्ट अचेत गयो रथलै तजि सारथि खेत ॥
गयो जव रावनको वह मोहँ, कह्यो तब सारथिसौं छकि छोहँ ८८
अरे सठ मोकँहँ कातर जानि, तज्यो रनतैं करि मो जसहानि ॥
कहैनहिं जोलगि वे जयकार, त्वराकरि तोलग लैचलि त्वौंर।८९
कही तव सारथि हेदसकंध, बढ्यो तव बिग्रह मोह प्रबंध ॥
थके हयहू श्रम१धर्म२ समेत, टर्‌यो इहिं कारन मैं तजि खेत ९०
यहै सुनि रावन ताकँहँ तुष्ट, दयो करको इक१भूखन दुष्ट ॥
सु सारथि रावनको रथमोरि, बडे जवँ आयउ जंग बहोरि ॥९१ ॥
अगस्त्य महामुनि ताहि अनेहँ, कही रघुनाथहिं आय रु एह ॥

त्रिशूल को छोडा उस पर रामचन्द्र ने जितने बाण छोडे तिनने त्रिशूल ने भस्म करदिये ॥ ८३ ॥ तब रामचन्द्र ने इन्द्र की शक्ति छोडी उसने त्रिशूल को काटा फिर दुष्ट के रथ के घोड़ों को मारे इसप्रकार रामचन्द्र संग्राम में दुस्सह होकर अड़े ॥ ८४ ॥ रावण के १ ललाट में तीन २ बाण दिये ॥ ८५ ॥ ३ तेरे अहंता का भार बढगया है सो शीघ्र ही दूर करता हूं ॥ ८६ ॥ ४ आज वह सुख भोग यह कहकर हजारों तीर मार कर रावण के शरीर को ५ चालनी के समान करदिया ॥ ८७ ॥ ६ मूर्छा ७ क्रोध में छककर ॥ ८८ ॥ ८ कायर जानकर ९ जब तक शत्रु अपनी जय हुई नहीं कहै तब तक १० शीघ्रता करके ११ पीछा लेचल ॥ ८९ ॥ १२ तुम्हारे शरीर में मूर्छा का प्रबन्ध बढगया था ॥९०॥ १३ प्रसन्न होकर दुष्ट रावण ने उस सारथि को १४ हाथ का भूषण दिया १५ बडे वेग से ॥ ९१॥ १६ उसी समय में अगस्त्य मुनि ने आकर रामचन्द्र से कहा

त्रि३बार दिनेसहृदै जपिलेहु, सपूजन अर्घ्य अनुत्तम देहु ॥ ९२ ॥
इहाँ तुमही लहिहो जय राम, दसाननकों हनिहो रनधाम ॥
अगस्त्य गये प्रभुसौं कहि एह, सुही सव सङ्गिय राम सनेह ।९३।
त्रि३आचामि ह्वै सुचि लै निज चाप, लगे खलकों अब वेधन आप ॥
कही तँहँ मातलिसौं प्रभु भव्य,चलो खलको रथ लै अपसव्य९४
सुही करि रावन अंतिक आय, दयो प्रभुकों सुसमीप दिखाय ॥
इते बिच कौतुक धारि उमंग, जुरे सव पिक्खन द्वैरथ जंग ॥ ९५ ॥
पर्यो खलके रथ अस्त्र१अभव्य, प्रभंजनचक्र भये अपसव्य२॥
चलैं जिहिं मारग रक्खसराय१,चलैं तित गिद्धनके समुदाय ॥९६॥
भई भुव दीप्त४गिरी उलका५हु, थके चलते रन जातुन बाहु ॥
दिवाकरके सित१लोहित२पीत३.मयूख लखे खल अंग परीत७ ।९७।
भज्यो भुव कंप दसानन पास८,सिवा किलकी तस पिट्ठि९कुभास
वह्यो प्रतिकूल रजोमय बात१०,बिनाँ घन भो तडिता१पवि२पात११
बढ्यो तम घोर दिसा बिदिसान१२.गिरी लरि सारिकिका रथथान१३

कि तीन बेर आदित्य हृदय नामक स्तोत्र को जप करके पूजा के साथ अनुत्तम (न उत्तमो ऽस्मात् स अनुत्तमः)को अर्घ्य दो।९२।९३। तीन वार आचमन लेकर पवित्र होकर अपना धनुष लेकर मातलि से रामचन्द्र ने १ योग्य वचन कहे कि रावण के रथ को २ दहिना लेकर चलो ॥ ९४ ॥ ३ रावण के समीप आकर ४ दोनों रथों का युद्ध देखने को यहां लक्षणा से दोनों रथियों का युद्ध जानना चाहिये ॥ ९५ ॥ रावण के रथ पर अमंगलिक ५ रुधिर की वर्षा हुई और ६ वायु गोटे (वघूलिये) दहिनी ओर को हुए और जिस जिस मार्ग रावण चला तिस तिस मार्ग उसके साथ गिद्धों के समूह चले ॥ ९६ ॥ लंका की भूमि जलती हुई दिखाई देने लगी और आकाश से अग्नि के अंगारे गिरे युद्ध में राक्षसों के भुज शस्त्र चलाते हुए थकगये रावण के शरीर के चारों ओर सूर्य के किरण स्वेत लाल और पीले रंग के दिखाई देने लगे ॥ ९७ ॥ रावण के समीप की भूमि कांपने लगी और उसकी पीठ पीछे अमंगलिक अथवा बुरी तरह से स्यालणी चिखने लगी और धूलि के साथ सामने का पवन चलने लगा विना बादल बिजुली और वज्र पड़ने लगे ॥ ९८ ॥ मैना पक्षि परस्पर लड़कर रावण के रथ पर गिरे घोड़ों के

कढी चिनगी हयलिंगप्रदेस१४, झरे हयनेत्रन अश्रु बिसेस१५।९९
अनेक कुसोनं भये इम ताहि, भये सुभ राघवको जय चाहि॥
जुरयोहि तथापि दसानन जंग,इतैं प्रभु जुज्झय धारि उमंग १००
दयो लखि दोउन२यौं रनदाव.भज्यो कपि१जातु२न चित्रितभाव॥
घनैं सर दुष्ट तजे तब घुम्मि,गिरे रथकै लगि ते मुरि भुम्मि १०१
तहाँ इक१ आसुग दै रघुराय, दयो तस केतनँ कट्टि गिराय ॥
दये प्रभु अस्वनकैं खल बान, लगे जिम फूल गिरे हतपान ।१०२।
दये पुनि बान हजारन दुष्ट,तजे तिनपैं इततैं प्रभु तुष्ट ॥
भयो तिनतैं नभ कुट्टिम भास,कहौं नहिँ नैंक रहयो अवकास१०३
अनंतर दोउन२ तक्कि अमान, परस्पर बाजिनकैं दिय बान ॥
रचे पुनि दोउन२दै रथं काव,गता१ऽऽगत२मंडल३बीथि४न दाव१०४
समीप मिले पुनि द्वै२रथ आजि, भिरे धुरसौं १धुर२बाजिन१बाजि२
तहाँ प्रभु रक्खस अस्वन अंग, दये सर बाजि मुरे रथसंग ।१०५।
दये तँहँ मातलिकैं सर दुष्ट, चल्यो नहिँ सो रु भये प्रभु रुष्ट॥
कलंब हजारन दै छितिराय, दई खलकी द्रुत पिट्ठि फिराय १०६

(तिराय१फिराय२अन्त्यानुप्रासः १)

अयोग्र१ गदा२ बरख्यो मुरि सोहु, त्रिलोक अधीस बढे धकि तोहु

लिंग से अग्नि की चिनगारी निकली और नेत्रों से बहुत आंसू गिरे।९९।२खोटे शकुन हुए३तो भी॥१००॥वानर और४राक्षस ५ चित्राम के से होगये ॥१०१॥ ६ बाण ७ रावण की ध्वजा को काट कर गिरादी ८ प्राण रहित होकर उलटे गिरगये ॥ १०२ ॥ ९ प्रसन्न होकर बाण छोडे उन बाणों से आकाश घरकी शोभा धारण करने लगा जिसमें कुछ भी अवकाश नहीं रहा ॥ १०३ ॥ इस पीछे प्रमाण रहित (अमाप) दोनो ने दोनो रथों का चक्कर (गोलकुंडा) लगाया, आगे जाना पीछा आना गोलाकार फिरना इन मार्गों से दाव दिये ॥१०४॥१० उस युद्ध में दोनो रथ समीप मिल गये ।१०५। मातलि (इन्द्र का सारथि) चलायमान नहीं हुआ और रामचन्द्र क्रोधित हुए भूपति रामचन्द्र ने हजारों बाण देकर दुष्ट रावण की शीघ्र पीठ फिरा दी॥१०६॥११मूसल. तीनों लोक के स्वामी (रामचन्द्र) तो भी क्रोध में पूर्ण होकर आगे बढे दोनों ओर से बाणों के समूह बहे जिनके वेग से मानों

बहे दुव२घौं सन बानन व्रात, छुहे तिनके जव सागर सात॥१०७॥
डरे अतलादिनके बसवान, करयो रविरोचि प्रकासन हान ॥
तहाँसुर१ओ सुरगायक२सिद्ध३,मिले पुनि जच्छ४रु चारन५इद्ध॥१०८
महोदर ६ किन्नर७गुह्यक८जूह, लगे कहिवे लखि जुद्ध दुरूह ॥
रहो कुसली द्विज१धेनु२न ग्राम, दसाननको अब जित्तत राम१०९
घनौं अवमर्द भयो यह घोर, अहो रन एरिस भो नहिं और ॥
ख१सागर१तुल्ल्य२ख१सागर२जेम,यहै रन या रन तुल्यहि एम॥११०
रहे कहते इम पिक्खत रंग, जुरे पुनि द्वै२रचि द्वै२रथजंग ॥
तहां इक१ दै सर सर्बअधीस, लयो इक१कट्टि दसानन सीस१११
महीसिर आत बिलंबहु आस,न पै सिर और परोहत तास ॥
इका१ऽऽधिक कट्टिय यौं सत१०१मत्थ,तऊ न मरयो हुव नूतन तत्थ
निरर्थक जानि स्वबानन वार,कियो तब यौं रघुनाथ बिचार ॥
सुबाहु१ कबंध२ खरा३ऽऽदिक ओघ, हनैं जिनतैं किम ते सरमोघ
कही तँहँ मातलि यौं हित खुल्लि, रहे प्रभु क्यौं अजअस्त्रहिं भुल्लि
सुन्यौं इम मातलि उक्त समत्थ, बहे सरब्रह्म धरयो प्रभुहत्थ ११४

समुद्र क्षोभित होगये ॥१०७॥१सूर्य की कान्ति को मिटादी देवता और गन्धर्व२सिद्ध३यक्ष४निर्मल ॥ १०८॥ बडे सर्प समूह कहने लगे कि यह युद्ध कठिनाई से तर्कना से आवे ऐसा है, ब्राह्मण और गउवों के समूह कुशल रहो रामचन्द्र अब रावण को जीतते हैं ॥ १०९ ॥ यह बहुत पीड़ाकारी युद्ध हुआ ऐसा भयंकर और आश्चर्य करानेवाला कोई दूसरा युद्ध नहीं हुआ जैसे आकाश और समुद्र के समान आकाश और समुद्र ही हैं इनके जैसा दूसरा कोई पदार्थ नहीं,तैसे ही इस युद्ध के समान यही युद्ध है.युद्ध को देखकर वे तो इसप्रकार कहते रहे और इधर फिर रथ(लक्षणा से रथी)युद्ध में जुड़े सब के स्वामी रामचन्द्र ने रावण का एक मस्तक काटलिया॥१११॥ उस मस्तक के भूमि पर आने में तो विलम्ब हुआ परन्तु उसके दूसरा मस्तक उगने में विलम्ब नहीं हुआ इसप्रकार एक सौ एक मस्तक रामचन्द्र ने काटे तोभी नवीन मस्तक होते गये और रावण नहीं मरा॥ ११२ ॥५अपने बाणों का वार(प्रहार)करना निरर्थक जानकर६समूह को बाणों से मारे वेही व्यर्थ कैसे हुए ॥ ११३ ॥ उस समय इंद्र के सारथि मातलि ने हित के साथ कहा कि महाराज ब्रह्मास्त्र को आप क्यों भूलरहे हो मातलि का कहना सुनकर उस बलवान् ब्रह्मास्त्र को रामचन्द्र ने हाथ में लिया ॥ ११४ ॥

रच्यो बिधिनैं जु पुरंदर काज, वली पवमान१वसैं जिहिं बाज ॥
रहैं रवि१अग्गि१उभै२फल जास,गुरुत्व सुमेरु१रु अंग अकास२।११५
दयो वनमैं पहिलैं जु अगस्त्य, लयो प्रभु अस्त्र सु अंतकपस्त्य ॥
प्रकासत पुंखन कांचन काम, लसैं उरगासन पत्र ललाम॥११६।
सु लै श्रुतिसूचित मंत्र समेत, धरयो गुनपैं अरिनास निकेत ॥
कसीसि लयो श्रुतिमूल लगाय,भज्यो तँहँ छोनिय जंगम भाय॥
समाधि छुटी सहसा सिवकेर, बराहप जानु जके तिहिं बेर ॥
अचानक उट्ठिय ओझकि सेस, कपाल नम्यो मचक्यो कमठेस॥
दिसागज दीन फिरे भ्रमखात, उलट्ठिय आतुर सागरसात७ ॥
दयो खलके उरमैं सु अभंग,गयो हियभेदि रु रामनिखंग॥११९॥
गिरे खलके करतैं सर१चाप२, पर्यो अरराय तज्यो असु आप॥
जितैंतित भाज्जिग रक्खस सेस, लई पहिली निजरोचि दिनेस ॥
वजे सुरदुंदुभि१दिव्यसरीर२, सबै जग स्वस्थभयो तजि पीर ॥
भये मुनि१देव२रु चारन३तुष्ट,अमादिन राम हन्यौं इम दुष्ट॥१२१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

जिस अस्त्र को ब्रह्मा ने इन्द्र के लिये बनाया था जिसके पांखों में बलवान् पवन बसता है और जिसके दोनों फलों में सूर्य और अग्नि रहते हैं जिसका भारीपन सुमेरु पर्वत के समान और शरीर आकाश के समान है ॥ ११५ ॥ यमराज के घर के समान उस अस्त्र को रामचन्द्र ने लिया जिसकी पांखों पर सोने का चित्राम, गरुड़ की सुन्दर पांखों को प्रकाश करते हुए का ॥ ११६ ॥ वेद के कहेहुए मंत्रों सहित शत्रु के नाश के घर रूपी बाण को प्रत्यंचा पर धरा और खींचकर कान के मूल तक लिया उस समय भूमि चलायमान होगई ॥ ११७ ॥ अचानक भूमि को उठानेवाला बराह घुटनों के बल गिर गया, शेषनाग चौंक उठा और फणों का समूह नमगया, कमठ भी मचक गया ॥११८॥ १दिशाओं के हाथी २वह बाण रावण का हृदय भेदन करके पीछा रामचन्द्र के भाथे में चलागया ॥ ११९ ॥ अरराट शब्द करके(यह गिरने के शब्द का अनुकरण है) बलवान् प्राण को छोडदिया३बाकी के राक्षस४ सूर्य ने अपनी पहिले की कान्ति पीछी ली ॥१२०॥ ५ अमावास्या के दिन ॥ १२१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

बीतिहोत्रवसुधेश्वरबंशवर्णने वसुदेव ६८ वेला ६८।१ विवाहवेला
वर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६
प्रथमपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशवैदेहीवल्लभचरित्रे रामचतुर्दशी १४
दिनाखिलबहुलकर्बुरनिपातनश्रुततद्वधतद्वधूविलापरावणादर्श ३०
दिनरणविरचनसुग्रीवविरूपाक्ष १ महोदर २ विध्वंसनतारेयमहापा
र्श्व१प्राणहरणदशग्रीवशक्तिशीर्णलक्ष्मणशूरशय्याशयनसमुज्जीवि
तस्वानुजरघुराजगतप्रत्यागतलङ्केश्वरदलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४
मयूखः ॥ ५४ ॥ आदितः षण्णवतितमः ॥ ९६ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

अनसु गिरयो लखि अग्रजेंहिं, बहु किय रुदन बिलाप ॥
बुल्ले सु सुनि बिभीखनहिं, अतिहित राघव आप ॥ १ ॥
बीर समुख जुरि होत व्यसु, सोक उचित गिनि सो न ॥
सदा जई कोउ न सुन्यों, भय१खय२रहित त्रि३भोन ॥२॥
कहिय बिभीखन जिहिं करे, नम्म्र असुर१सुर२नाग३ ॥
अप्प हन्यों प्रभु ताहि अब, दैन रह्यो खिल दाग ॥३॥

वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के प्रथम पुत्र विकुक्षिकुल के कलश जानकी के प्यारे (रामचन्द्र) के चरित्र में रामचन्द्र के चतुर्दशी के दिन बाकी के बहुत राक्षसों को मारना, उनका माराजाना सुनकर और उनकी स्त्रियों का विलाप सुनकर अमावास्या के दिन रावण का युद्ध रचना, सुग्रीव का विरूपाक्ष महोदर को मारना, अंगद का महापार्श्व को मारना, रावण की शक्ति से क्षीण होकर लक्ष्मण का शूरशय्या में सोना, अपने छोटे भाई के जीवित होने पर रामचन्द्र का जाकर पीछे आयेहुए रावण को मारने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ।५४।और आदि से छयानवे मयूख हुए॥
२ बडे भाई को १ विना प्राण गिराहुआ देखकर ॥१॥ वीरलोग सन्मुख जुड़कर विना प्राण होतेहैं उनका शोक करना उचित नहीं है सदैव जीतनेवाला किसीको नहीं सुना और तीनों लोकों में भय और नाश से रहित कोई नहीं है ॥ २ ॥ उसको२दाग देना (दग्ध करना) ४ बाकी है ॥ ३ ॥

राम कह्यो रिपुता कहत, मरन अवधि जगमाँहिं ॥
ज्यौं तव त्यौं मम बंधुजन, अब रावन प्रिय आँहिं ॥ ४ ॥

(षट्पात्)

सुनत कुशापें दससीस पतन लंका अंतहपुर ॥
बिलपत नारिनवृंद अखिल आये कढि आतुर ॥
द्रुत पुर उत्तरद्वार होय रनभुव धव हेरत ॥
सुख सुमिरंत पति संग खुलेकेसन सुम खेरत ॥
लोटत बिहाल तोरत अलक सुत्तो लखि मानद समर ॥
महिला अचेत मयजा प्रमुख परी सकल तस देहपर ॥ ५ ॥

(दोहा)

मंदोदरि व्याकुल अमित, अक्खिय तिय अवतंस ॥
सीतासन मोमें सदा, बढत रूप१गुन२बंस३६ ॥ ६ ॥
तदपि अनंगाऽऽयत्त तैं, मोहित बीसरि मोहि ॥
हठि बरजत सीता हरी, तास मिल्यो फल तोहि ॥ ७ ॥
पुष्पक दिव्य बिमान पर, धव हमजुत चढि धीर ॥
रचते नंदन१चैत्ररथ२, बिहरन१क्रीडन२बीर ॥ ८ ॥
सो अज्जहि बित्यो समय, सोपे तुम रनसैन ॥

रामचन्द्रने कहा कि जब तक जीवित रहैं तभी तक संसार में शत्रुता कहते हैं मरे
पीछे यह रावण जैसा तेरा भाई है तैसा ही मेरा भी प्रिय है ॥ ४ ॥ १
मराहुआ २ जनाने में ३ सुनकर ४ सब ५ शीघ्र ६ रणभूमि में पति को हेरती
हुई ७ पति के संग सुख भोगे थे उन को स्मरण करती हुई ८ मस्तक पर
फूलों की रचना होरही थी जिनको बिखेरती हुई ९ मान देनेवाले अपने
पति को १० युद्ध में सोयाहुआ देखकर १२ मंदोदरी (मय की पुत्री) १३ आ-
दि ११ स्त्रियां अचेत होकर रावण के शरीर पर गिरीं ॥ ५ ॥ १४ स्त्रियों
की मुकुट ॥ ६ ॥ १५ तो भी १६ काम के वशीभूत होकर छल से अथवा
सीता में १७ मोहित होकर ॥ ७ ॥ १८ इन्द्र के नन्दनवन रूपी अशोकवन में २०
विहार और १९ चैत्ररथ (अशोकवन में रावण के क्रीड़ा करने का चैत्ररथ
नामक स्थान था) में क्रीड़ा करते थे ॥ ८ ॥ वह समय तुम्हारे रणशय्या में
शयन करने से २१ आज ही बीत गया

अर्क किरन प्रविसे अभय, अज्जहिं लंका ऐन ॥ ९ ॥
भोक्ता त्रि३भुवन भोगके, जेता जमके जंग ॥
स्वप्न किधौं यह सत्य है, राम हनैं तुम रंग ॥ १० ॥
पवनहु हमकौं लखि१परसिर, रंक अदंड रह्यो न ॥
ते बाहिर निकसी तरुनि, क्यौं तिहिं रोध कह्यो न ॥११॥

(षट्पात्)

बिलपत इम अति बिकल भई उरलग्गि अचेतन॥
इतर सउत्तिन तिहिं उठाय बहुदिय संबोधन ॥
निकट बिभीखन बुल्लि चित्त राघव अक्खिय इत ॥
अग्रज तिय बिसवासि देहु पावक तिहिं दीपित ॥
सुनि कहिय बिभीखन रामसन यह अधर्मरत दुष्ट अति॥
निजहत्थैं याहि संस्कृत करन मेरी होत न नैंक मति॥१२॥

(दोहा)

बुल्ले राम बिभीखनहिं, दुष्ट जदपि दसमत्थ ॥
तदपि सस्त्र परि पूतं तनुं, अब भ्रम छंडहु अत्थ ॥ १३ ॥
तव कर कारि संस्कार तैं, याको बढिहै अग्घ ॥
जिततित तेरो जाय है, बहुजस कर्बुरबग्घ ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

और आज ही लंका के घर में निर्भय होकर सूर्य के किरण घुसे ॥ ९ ॥ ती नों लोक के भोगों को भोगनेवाले और युद्ध में यमराज को जीतनेवाले तुमको युद्ध में रामचन्द्र ने मारे सो यह सत्य है अथवा स्वप्न है ॥ १० ॥ हमको देखकर और स्पर्श करके दीन के समान पवन भी दंड पाये विन नहीं रहा वे ही स्त्रियां बाहर निकल आई हैं जिनको तुमने क्यों नहीं रोक ॥ ११ ॥ दूसरी सोकों ने मंदोदरी को उठाकर बहुत समझाई १ बुलाव रामचन्द्र ने कहा कि तुम्हारे बडे भाई की स्त्री को विस्वास देकर राव को २ अग्नि दो ३ मेरे हाथ से रावण के संस्कार करने में मेरी मति नहीं है ती ॥ १२ ॥ तो भी शस्त्रों के पड़ने से उसका शरीर ४ पवित्र होगया है ॥ १ तेरे हाथ के संस्कार से रावण का ५ आग्रह बढैगा और ६ हे राक्षसों सिंह (बिभीषण) सब दिशाओं में तेरा यश जावेगा ॥ १४ ॥

सु सुनि बिभीखन सजव आय दसकंधर आलय ॥
अग्निहोत्र ताको उठाय लै बहु चंदन चय ॥
अग्रज वपु पट आतसेय पहिराय अश्रुधर ॥
काढ्यो दै निज कंध पुरटानिर्मित नृजानपर ॥
कर्बुरी वृंद रोवत बिकल गये बिलप्पत पिट्ठि तस॥
लखि प्रयत देस निगमोक्त करि दाह्यो सोदर ससिंदस१५
प्रथम आज्य१दधि२पूर्ण सुभग स्रुककरि किय सेचन ॥
उरुन१कंडन२पयन१सकट२धारि तास रीतिसन ॥
जथास्थान अरणी१अयोग्र२दारव अमत्र३धरि ॥
पसु पवित्र हनि तत्थ अनुस्तरणी२घृतजुत करि ॥
लाजा३बिखेरि दै पुनि दहन४जल निमज्जि५पटअल्ल६जुत॥
तिल१दर्भ२मिलित दै तिहिं उदक७सक्किय सब निगमोक्तनुत१६

(दोहा)

मंदोदरि आदिक सबन, अनुनय[1] पुब्ब पठाय ॥
ह्वै पहुँच्यो रघुनाथ ढिग, सच्चो रक्खसराय ॥ १७ ॥

शीघ्र रावण के घर में आकर उसका अग्निहोत्र उठाकर चन्दन काष्ठ का समूह लेकर बडे भाई के शरीर को रेशमी वस्त्र पहना कर स्वर्ण की रचीहुई पालकी (नरयान) पर बिठाकर रोतेहुए (विभीषण) ने अपना कन्धा देकर निकाला राक्षसियों के समूह बिलाप करते हुए उसके पीछे गये पवित्र स्थल देखकर वेद में कही रीति के अनुसार सगे भाई (विभीषण) ने रावण को दग्ध किया ॥ १५ ॥ प्रथम घृत और दही से स्रुवे को भरकर सींचा. जांघों (जंघा) पर ऊंखल (ऊंखली) और पगों पर गाडा (छकडा)रक्खा फिर शास्त्र में लिखे अनुसार अरणी मूशल उत्तरारणी पात्र यथास्थान पर धरे और एक पवित्र पशु को मारकर उस की मज्जा के साथ घृत मिलाकर रावण के मुख में दिया और भूमि पर अक्षत बिखेर कर अग्नि देकर जल में गोता लगाकर आले वस्त्रों से तिल और डाभ से मिलाहुआ जल देकर वेद के कथनानुसार स्तुति योग्य कार्य किया ॥ १६ ॥ १ विनय पूर्वक ॥ १७ ॥

मातलिसौं कहि सक्ररथ, त्रिदिव पठायो राम ॥
बुल्ले पुनि प्रभु बुल्लिकैं, लक्खन अनुज सल्लास ॥ १८ ॥
बेग बिभीखनकैं करहु, अब लंका अभिसेक ॥
सुनि लक्खन दै कनकघट, पठये प्लवग अनेक ॥ १९ ॥
जे लाये भरि सिंधुजल, इन लंकापुर आय ॥
अप्पनकरैं अभिषेक किय, लक्खन हित तस लाय ॥ २० ॥
भव्य बिभीखनकी भई, नगरि निछावरि रत्तथ ॥
सब जातुनैं मन्न्यौं सु पहु, सो प्रभु भक्ति समत्थ ॥ २१ ॥

(पद्धपातु)

बहुरि राम मारुति बुलाय जंपिय द्रुत जावहु ॥
सीताकौं जय१कुसल२सत्रुबल३सहित सुनावहु ॥
तब हनुमान असोकवनी आय रु यह अक्खिय ॥
सुनि मुद गद्गदबानि जननि चिरकौंरि उत्तर दिय ॥
जैसो प्रमोद तैं मम कियउ तैसो तव किहिंविधि करौं ॥
त्रय३लोक राज्य तृनसो लगत भक्त तोहि को सुख भरौं ॥ २२ ॥

(दोहा)

मारुति तब किन्नी अग्ज, है यह सीख्क बिसेस ॥
तोमैं सुत मम प्रीति यह, दीजै अंब निदेस ॥ २३ ॥
साधु कह्यो तब पवनसुत, सीता अधिक सिराहि ॥
मारुति अक्खिय रक्खमी, को तव अप्रिय आहि ॥ २४ ॥

इन्द्र के सारथी मातलि को कहकर रामचन्द्र ने इन्द्र का रथ पीछा स्वर्ग में भेजा फिर लक्ष्मण को बुलाकर बोले ॥ १८ ॥ १ सोना के घड़े देकर २ अनेक वानरों को भेजे ॥ १९ ॥ ३ अपने हाथ से ॥ २० ॥ सब ४ राक्षसों ने उस (विभीषण) को अपना स्वामी माना ॥ २१ ॥ ५ फिर रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाओ ६ अशोकवाटिका में ७ बहुत देरी से उत्तर दिया ॥ २२ ॥ ८ हे माता आप यह आज्ञा दो तुझमें मेरी ८पुत्र की सी प्रीति है ॥ २३ ॥ १० तू श्रेष्ठ है यह कहकर ॥ २४ ॥

तोकँहँ कोन डरावती, कोन कथित[1] करती न॥
तिनकौं अब मारौं त्वरित प्रहरि नखर[2] बपु[3]र्निन ॥ २५ ॥
जननि कह्यो परतंत्र[4] जे, हेलन तिनको है न॥
अप्रिय कछु किय पुब्बं अब, बंदि[7] करत मम बैन॥ २६ ॥
मारुति अक्खिय जात मैं, सौंपहु कछु संदेस ॥
कह्यो जननि पतिकौं लखौं, अब आसय दृढ एस ॥२७॥

षट्पात्

सुनि मारुति प्रभु निकट आनि अक्खिय अंवासय॥
बुल्लि बिभीखन तबहि[11] तुहि रामहु निदेस दिय॥
सीता सिरजुत[12] न्हाय दिव्य अंबर[13]१ भूखन२ धरि ॥
दिव्यगंध ३अनुलिप्त[14] अत्थ[15] आवैं सु जत्नकरि ॥
क्रव्याद[16]राज सुनि जाय तब करन जोरि विन्नति करिय॥
न्हाय रु निचोल[17]१ भूखन पहरि चढहु यान[18] प्रभु हुकम दिय॥२८॥

दोहा

सो सुनि कर्बुरराजसौं, सीता कहिय स्वकाम[19] ॥
मंजनपुब्बहि[20] मोहि मुख, रम्य[21] दिखावहु राम ॥२९॥

षट्पात्

कहिय बिभीखन जननि करहु राघव अक्खिय जिम॥
सु सुनि सती पतिभक्त किन्न निज धवँ[22] निदेस तिम ॥

हनुमान् ने सीता से कहा कि तुम को कौनसी राक्षसी डराती थी और १
कहा नहीं करती थीं उनके ३ पुष्ट शरीर को २ नखों का प्रहार करके मार
डालूं ॥ २५ ॥ सीता माता ने कहा कि ये४ परतंत्र थीं इससे इनका ५ दो-
ष नहीं है६पहिले इन्हों ने अप्रिय किया था अब७नमस्कार करके मेरा कहा
करती हैं।२६।८मेरा दृढ अभिप्राय यही है कि पति(रामचन्द्र) को शीघ्र देखूं
॥ २७ ॥ ९ सीता माता का आशय १० शीघ्र ही ११ आज्ञा दी १२ माथा
न्हाकर १३ वस्त्र १४ अनुलेप करके १५ यहां आवें १६ राक्षसराज विभीषण
१७ वस्त्र१८पालखी पर चढ कर ॥२८॥ १९अपना मनोरथ कहा कि २० स्ना-
न करने से पहिले ही मुझे रामचन्द्र का २१ सुन्दर मुख दिखाओ ॥ २९ ॥
२२ अपने पति की आज्ञा थी वैसा किया -

सिरजुत न्हाय सुगंध१वसन२ भूखन३धारि सुंदर ॥
सिबिका[1] चढि हुव संग गयो लै तत्थ निसाचर ॥
अखिलेस पास किन्नी अरज आई जननी अत्थही ॥
सुनतहि अमर्ष[2]१हर्ष२रु दया३प्रविसे[3] प्रभु हिय सत्थही ।३०।
राम बिभीखनसौं कह्यो, हे ममभक्त उदार ॥
ममढिग आनहु मैथिली[4], सजव[5] उक्त[6] अनुसार ॥ ३१ ॥

(पट्पात्)

सु सुनि बिभीखन दर करनलग्गो कपि१जातुरन ॥
प्रेरे अग्गहि वेत्रपानि कंचुकि[9] गरिष्टगुन ॥
सबन हटावन सद्द[10] सिंधुउलटनसम भो जँहँ ॥
राम जातुराजैहिं[11] निवारि इम किय निदेस तँहँ ॥
क्रव्याद[12]१ ऋच्छ२मर्कट३रु कपि४ ए सब जानहु अप्पनैं ॥
आनहु निसंक छितिजा[13] इहाँ करहु न सब क्लेसितैं[14] घनैं ।३२

(दोहा)

मख[15]१ बिपत्ति२ उपयम[16]३ समर[17]४, अरु आपत्ति[18]५अनेह[19] ॥
पंचक५दोखहिं परिहरत, अबला[20] पिक्खन एह ॥ ३३ ॥
जु सुनि बिभीखन जानकी, आनी सबबिच अत्थ ॥
नम्म्र सलज्ज रही निरखि, स्वपूभुमुख[21] हितसत्थ ॥ ३४ ॥

(षट्पात्)

---

१ पालखी में चढी जिसके साथ होकर विभीषण रामचन्द्र के पास लेगया और अरज की कि सीतामाता यहां ही आगई है यह यह सुनते ही रामचन्द्र के उरमें २क्रोध, हर्ष और दया साथ ही ३घुसे ४सीता को मेरे ६ कहने अनुसार५ शीघ्र लाओ ७राक्षसों को दूर करने लगा ८हाथों में वेत लियेहुए ९बडेगुणवान् नाजर अथवा जनाने सेवकों को आगे भेजदिये थे १० शब्द ११ रामचन्द्र ने राक्षसराज विभीषण को मनाकिया १२ राक्षस १३ सीता को १४ सब को दुखी मत करो ॥ ३२ ॥ १५ यज्ञ में मरण समय में १६ विवाह में १७ युद्ध में और १८ आपदा के १९ समय में इन पांच जगह २०स्त्री को देखने का दोष नहीं है ॥ ३३ ॥ २१ अपने पति का मुख ॥ ३४ ॥

जदपि रही पंद्रह१५बिहाय अवसिष्ट कलासी ॥
तदपि दैन जग कँहँ प्रतीति ताकँहँ प्रभु त्रासी ॥
बुल्ले इम इक१बरस रही सीता रावन घर ॥
टरिवेको वह हो न दुष्ट दर्पकको किंकर ॥
लग्गो कलंक रघुबंस कँहँ सो मेट्यो तिहिँ२ हनि समर॥
यह बज्र परत जननी दृगन निकासि चले अश्रुन३ निकर॥

दोहा

रोवत लखि प्रभु पुनि कहिय,कुटिल४ भौंह अतिक्रुद्ध ॥
अपजस मेटन काज यह, जिर्यो मैं खल जुद्ध ॥ ३६ ॥
आवनमैं अपवाइही, तू नहि कारन तत्थ॥
दृग दूखत ज्यौं दीप त्यौं, जाहु मनोरथ जत्थ ॥ ३७ ॥

(सोरठा)

निलय पराये नारि, बिनु निजबांधव जो बसी ॥
चित्त सनेह बिचारि, को पटु६जन तामैं करत ॥ ३८ ॥
जातैं अब द्रुत जाहु, दिसादस१०हि तोकौं दई ॥
वालि उच्छीसक बाहु, मिलैं न अंगदरम्य मम ॥ ३९ ॥
लक्खन१गेह ललाम, भलो गेह वा भरत२को ॥

यद्यपि चन्द्रमा पन्द्रह कला को छोडकर एक कला के साथ अत्यन्त क्षीण होजाता है इसीप्रकार जानकी भी अपने पतिव्रत धर्म के पालन में क्षीण होगई थी तदपि संसार को विश्वास कराने के लिये रामचन्द्र ने उसको त्रासदिया १कामदेव का सेवक२उस रावण को युद्ध में मारकर३आंसुओं का समूह।३५। ४भौंहें टेढी करके।३६।मेरे यहां आने में निन्दा ही कारण है(निन्दा मेटने को यहां आया हूं) हे सीता तेरे कारण नहीं आया हूं जैसे नेत्र दूखते समय दीपक को रखना अच्छा नहीं लगता तैसे ही तेरा रखना भी मुझे अच्छा नहीं लगता इसलिये जहां तेरी इच्छा होवे तहां जा ॥ ३७ ॥ ५पराये घर में संबंधियों के विना६ कौन चतुर मनुष्य उसमें स्नेह रखने का अपने चित्त में विचार करैगा अर्थात् कोई नहीं ॥ ३८ ॥ इस कारण से अब तू शीघ्र जा फिर भुजबंध से शोभायमान मेरे भुज का उसीसा (तकिया) नहीं मिलैगा। ३९। लक्ष्मण का सुन्दर घर अथवा भरत का घर तेरे रहने को अच्छा है अथवा

वा कपिपतिः अभिराम,अथवा भजहु नरादइन ४ ॥ ४० ॥

(मुक्तादाम)

बिदेहसुता सुनि ए कटु बैन, घनी सकुची रु चले जलनैन॥
कह्यो यह घोर कहो निजनाथ,जथा नृ गवाँर गवाँरिय साथ४१
डिग्यो कबहू मम मानस नाँहिँ पतिव्रत सौँह करौं सबमाँहिँ ॥
कुनारिन चिंति न फेरहु पिठि,रहैँ पतिमाँहिँ सुनारिन दिठि ॥४२॥
भयो गहतैं खल पुद्गलसंग, उहाँ परतंत्र हुतो मम अंग॥
न मैं अपराध सुतो किय दुष्ट, हुतो वस चित्त तहाँ तुम इष्ट ॥४३॥
सदा सबदेह स्वतंत्र न आँहिँ, कहा तियजोर जहाँ पति नाँहिँ ॥
समाँ बितई रहतैं तुमसंग, छिपैं नहि नैंक निसर्गज रंग ॥ ४४ ॥
परीहि तथापि न मो पहिचानि, रु जाँतिहिसौं कुवधू लियमानि॥
भई भुवसौँ मिस लै मिथिलेस, सुव्रतनमैंहि रही सिसुवेस ॥४५॥
हजारनमैं बिधिसौँ गहि हत्थ, अयोग्य करो न धनी बनि अत्थ ॥
दयो ममसील समस्त बिसारि,तजौं तनु तो अब आगि प्रजारि४६
कह्यो पुनि लक्खनसौं जगदंब,करो चित देवर काष्ठकदंब ॥

सुग्रीव का घर अच्छा है अथवा बिभीषण के घर का सेवन कर ॥ ४० ॥ जानकी ने ये कड़वे वचन सुनकर बहुत विलाप किया और लज्जित हुई और अपने पति से कहा कि यह घोर वार्ता जैसे ग्रामीण (मूर्ख मनुष्य) ग्रामीण (छोटे ग्राम में रहनेवाली) स्त्री को कहै तैसे आप कहते हो ॥ ४१ ॥ १ मन. सबके सामने पतिव्रत का २सोगन करती हूं, हे रामचन्द्र खोटी स्त्रियों के चरित्रों को स्मरण करके मुझसे पीठ मत फेरो श्रेष्ट स्त्रियों की दृष्टि सदैव पति में ही रहती है ॥४२॥ दुष्ट रावण के शरीर का संग मुझको पकड़ते समय ही हुआ था जिस समय मेरा शरीर पराधीन था उसमें मेरा अपराध नहीं वह तो दुष्ट रावण ने स्पर्श किया था परन्तु मेरा चित्त तो आप में ही इष्टरूप से वास करता था ॥ ४३ ॥ ३स्वतंत्र नहीं है,४आपके साथ रहते ४वर्ष बीतगये ६स्वभाव से उत्पन्न हुआ रंग छिपा नहीं रहता ॥४४॥ ७ जन्म से ही मुझको खोटी स्त्री मानली=मिथिला के पति का मिस लेकर भूमि से पैदा हुई और बचपन से ही श्रेष्ट व्रतधारियों में रही ॥ ४५ ॥ ९ यहां पर मेरा जो सब शील आप भूलगये तो अग्नि जलाकर शरीर छोड़ूंगी॥४६॥ सीतामाता ने लक्ष्मण से कहा कि हे देवर काष्ठ का समूह इकट्ठा करके चिता बनादो

करौं मम भस्म हुतासन इष्ट, सुही इहिं आमय औषध सिष्ट ४७
रहौं न वृथा अपवादहि पाय, तजी पतिकी मग ओर न जाय ॥
लखे प्रभुकों सुनिकैं यह सेस, कह्यो प्रभुहू सुनि सैन निदेस।४८।
रची तव सेस चिता अनुरूप, प्रदक्खिन मात करे रघुभूप ॥
अधोमुख दीप्त चिता ढिग जाय, प्रनाम कर्यो द्विज१देवन२पाय४९
कह्यो करजोरि उपर्बुध ओर, मुर्‍यो नन राघवसौं हिय मोर ॥
रु कायक१ बाचक२ मानस३ वान, कदापि भयोपतिसौं हितहान५०
हुतासन रक्खहु तो तुम सक्खि, यहै कहि देह दयो बिच रक्खि॥
लगे डिगिवे तँहँ अंडकटाह, कुलाचल कंपि डरे दिगनाह ॥५१॥
गयो द्रुत हारव फुट्टि त्रिलोक, परे नर१ नाग २ सुरा३ सुर४सोक॥
भये प्रभु दुर्मन इक्क१मुहूर्त, भये दृगपंकजहू जलपूर्त ॥ ५२ ॥
महेस१विरंचि२ रु इंद्र३ कुबेर४, कृतांत५ रु अप्पति६पाय सुबेर॥
विमानन बैठि तहाँ सब आय, कही इम राघवसौं हितलाय।५३।
प्रभू सब संसृतके तुम धाम, न अप्पहिं मानव मन्नहु राम ॥

मुझ को अग्नि ही प्रिय है इसकारण से भस्म कर दो इसरोग की यही श्रेष्ठ औषधि है ॥ ४७ ॥ मिथ्या निन्दा पाकर नहीं रहूंगी पति की छोडीहुई दूसरे मार्ग नहीं जाती, यह सुनके लक्ष्मण ने रामचन्द्र की ओर देखा सो रामचन्द्र ने भी इसारे से आज्ञा देदी ॥ ४८ ॥१जैसी सीता के लिये होनी चाहिये ऐसी२सीता माता ने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा करके३नीचा मुख किये जलतीहुई चिता के पास जाकर ॥ ४९ ॥ अग्नि की ओर हाथ जोड़ कर कहा कि मेरा हृदय रामचन्द्र से नहीं मुड़ा शरीर से वचन से और मन से किसी समय में पति से हित की हानि हुई होवे तो॥ ५० ॥हे अग्नि! तुम साक्षि रखना, यह कहकर अपना शरीर उस अग्नि के बीच में रख दिया ब्रह्मांड डिगने लगा कुलाचल (जो पर्वत भूमि के परिधि लगाये हुये हैं वे) धूजकर दिशाओं के हाथी डिग गये ॥ ५१ ॥ शीघ्र हाहाकार शब्द फूटगया देवता और असुरों के शोक पड़गया " रामचन्द्र का भक्त विभीषण राक्षसों का राजा होगया इस कारण असुरों को भी शोक हुआ". और दो घड़ी तक रामचन्द्र भी उदास रहे और कमल समान नेत्र जल से पूर्ण होगये ॥ ५२ ॥४यमराज५वरुण, श्रेष्ठ समय पाकर॥ ५३ ॥ सब संसार के आप घर ही हे रामचन्द्र आप अपने को मनुष्य मत मानो और

बिदेहसुता कमला अवतार, तजो जिन ताकहँ हे भवतार ॥५४॥
भये नर रावनके बधकाज, फल्यो सब देवन इष्ट सु आज ॥
नरत्वहिं राम तथापि न छोरि, रहे तिन अग्ग खरे करजोरि ५५
इतेबिच देह हुतासन धारि, स्वअंक बिदेहसुता बइठारि ॥
कह्यो रघुनाथ सती यह लेहु,वृथा अभिसाप न याकहँ देहु ५६
मुहूर्त यहै सुनिकैं करि ध्यान, प्रसन्न कह्यो रघुनाथ प्रमान ॥
करी दुव२दोख मिटावन एह, बिदेहसुता अब हे ममगेह ॥५७॥
हुतो खल रावनको बल नाँहिं, कुदिठ्ठि सकैं करि जानकिमाँहिं
सुपै सुनि आक्खिय संकर तत्थ, यहै रघुनाथ पिता तव अत्थ५८
बिमान समारुहि पिक्खन आय, परो तुम भ्रात उभे२तस पाय ॥
करी सुहि राघव नम्म्र निसंक, उभे२हि लये अजके सुत अंक॥
कह्यो सुतसौं हनि रावन दुष्ट, करो पुरजाय सबै अब तुष्ट ॥
सुपुत्त हमैं वह तैं दिय स्वर्ग, बढो तव भूमि१ प्रजा२धन३ वर्ग ६०
दिवायउ देवननैं बन तोहि, हमैं अब जानिपरी जिम जोहि ॥

सीता लक्ष्मी का अवतार है सो हे संसार का उद्धार करनेवाले उसको मत छोड़ो ॥ ५४ ॥ तो भी रामचन्द्र मनुष्यपन को नहीं छोड़कर उन देवताओं के सामने हाथ जोड़ कर खड़े रहे ॥ ५५ ॥ अग्नि ने शरीर धारण करके जानकी को अपनी गोदि में बिठाकर रामचन्द्र से कहा कि इस पतिव्रता को लो और इसको मिथ्या दोष मत दो ॥ ५६ ॥ यह सुनकर दो घड़ी तक ध्यान करके रामचन्द्र ने प्रसन्न होकर अग्नि से कहा कि तुम्हारा कहना प्रामाणिक है एक तो यह कि रामचन्द्र बहुत कामी है और दूसरा यह कि संसारिक व्यवहारों को नहीं जानते इन दोनों दोषों को मिटाने के लिये हमने इसका त्याग किया था अब जानकी मेरे घर में है ॥ ५७ ॥ जानकी में खोटी दृष्टि करसके ऐसा रावण का बल नहीं था, यही बात वहां पर महादेव ने कही और कहा कि हे रामचन्द्र यह तुम्हारे पिता (दशरथ) भी यहीं पर हैं । ५८ । विमान पर चढकर देखने को आये हैं तुम दोनों भाई इनके पगों में पड़ो अज के पुत्र (दशरथ) ने दोनों को गोदी में लेलिये ॥ ५९ ॥ अपने पुर में जाकर सब को प्रसन्न करो, हे पुत्र तुमने हमको वह स्वर्ग दिया है इससे हम आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारे भूमि प्रजा और धन का समूह बढो ॥६०॥ तुमको देवताओं ने बनवास दिवाया था सो जो वार्ता जैसे थी वह हमको अब जान

चले पुनि राघव बठि विमान, दिखावत जानकिकौं सब थान ॥
लगे पुनि सिक्ख१ समस्तन दैन, कह्यो तिन ह्वाँ चलिहैं प्रभुऐन७०
सबै प्रभुको लखिहैं अभिसेक, बनैं पुनि आवन गेह३ बिबेक ॥
सुही किय स्वीकृत४ राम सिराहि, चढायलये सब पुष्पक चाहि७१
दिखावत संगर५१ मग्ग२ असेस, विदेहसुता लहि हंकिय६ देस ॥
विमान सु पुष्पक हंसउपेत, पताकित७ दिव्य उड्यो छविदेत ।७२।
कपीश्वरके पुरके ढिग जात, कह्यो प्रभुसौं हसिकैं जगमात८ ॥
प्लवंगनके९हु कलत्र१० असेस, चलैं मम संग ममासय११ एस ॥ ७३ ॥
गये तब राघव वानरदुंग१२, लये सकलत्र१३ सबै कपिसंग ॥
चउत्थि४निसा रहि ह्वाँ रघुराय, चले पुनि पुष्पक सर्व चढाय ।७४।

पादाकुलकम्

ऋष्यमूक१पंपा२पद्धति१४ रुख, जातु१५ कवंध १विराध२नास मुख१६॥
जे जे कर्म बनैं जब आवत, ते सीता कँहँ सबहि दिखावत॥७५॥
पहुँचे चैत बिसद१७ पंचमि५दिन, भरद्वाज आश्रम राघवइन१८॥
पुच्छिय करि वंदन मुनिसौं पहु१९,सजनननि२० भरत२कुसल पुरअक्खहु७६
भरद्वाज अक्खिय कुसली सब,पै अतिदुक्ख भरत पावत अब ॥
जटिल२११मलिन२२२कृस३रामहि चाहत,पुच्छि पादुका२३ राज्य निवाहत७७
दरसन देहु जाय तिहिं सत्वर२४, वर कछु लेहु मोहुसौं रघुवर ॥
प्रभु तब कपिन अभीष्ट२५ असन२६ चहि,मंग्यो वर मुनिसौं असैं कहि७८

१सबको विदा करनेलगे२अयोध्या में चलेंगे।७०।३पीछे अपने घरों को आने का विचार४रामचन्द्र ने स्वीकार किया और रुचि पूर्वक सबको पुष्पक विमान पर चढालिया ॥७१॥५युद्ध के स्थल और मार्ग दिखाते हुए ६ हंस सहित ७ ध्वजाओं सहित ॥ ७२ ॥ ८ सीता ने ९ वानरों की सब १० स्त्रियां भी मेरे साथ चले ऐसा ११ मेरा अभिप्राय है ॥ ७३ ॥ १२ वानरों के पुर (किष्किन्धा) में १३ स्त्रियों सहित वानरों को ॥ ७४ ॥१४मार्ग की ओर १५राक्षस१६आदि ॥ ७५ ॥ चैत्र१७सुदि पंचमी के दिन १८ रघुवंशियों के सूर्य भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुंचे१९राजा रामचन्द्र ने २०माता सहित।७६। २१जटा रखाये हुए२२दुर्बल २३ रामचन्द्र की पादुका से पूछ पूछ कर राज्य कार्यको निवाहते हैं।७७।२४शीघ्र जाकर२५वानरों के इच्छानुसार२६भोजन

दोहा

स्वर्गतरुन सम फल१कुसुम२, मैं जावत जिहिं मग्ग३ ॥
पादप४ धारहु १होहु पुनि, अद्रि मधुश्रव२अग्ग ॥७९॥
कहि तथास्तु तब मुनि कर्यो, पद्धति६ बन फलपीन ॥
लंबमान७ साकेत८लग, चौरो जोजन तीन ॥८०॥
पूरन अब्द९ चउद्दहम१४, इहिं आश्रम हुव आत ॥
पठयो मारुति१० अग्ग प्रभु, भेटन माता१भ्रात२ ॥ ८१ ॥
चैत बिसद प्रतिपद१दिवस, किय रावन संस्कार११ ॥
किय अभिसिक्क१२ बिभीखनहिं, दूजे२दिवस उदार ॥ ८२ ॥

(सोरठा)

जब सीता लैजाय, दससिर धरी असोकबन ॥
तब देवन तँहँ आय, जननी१३ हित पायस१४ दयो ॥ ८३ ॥
लगी न ताकँहँ लैन, कहि पति बिनु उपवास१५ क्रम ॥
बिबुधन१६ तब हित बैन, कह्यो असन१७ याको करहु ॥ ८४ ॥
तर्स१८१रु भूख२ए तोहि, व्यापै नहिं यातैं बहुरि ॥
सती खाय तब सोहि, बलि१९ अनसन२० कढ्यो बरस१ ॥८५॥

मांगा ॥ ७८ ॥ १ स्वर्ग के वृक्षों के समान फल और २ फूल हम जाते हैं जिस ३ मार्ग के ४ वृक्ष धारण करें और आगे के पर्वत ५सहत के बहानेवाले होजावें ॥ ७९ ॥ ६ मार्ग के वन को फलों से पुष्ट कर दिया ७ लंबाई से ८ अयोध्या तक और चौड़ाई में तीन जोजन (बारह कोश) ॥ ८० ॥ चौदहवां ९ वर्ष पूरा हुआ उसी दिन रामचन्द्र भरद्वाज के इस आश्रम में आये इसीकारण से (भरत ने कहा था कि चौदह वर्ष बीत जाने पर भी आप नहीं आवोगे तो मैं जलजाऊंगा) १० हनुमान को आगे भेजा ॥ ८१ ॥ चैत्र सुदि एकम के दिन को रावण का ११ अग्नि संस्कार (दग्ध) और दूज के दिन बिभीषण का १२राज्याभिषेक किया॥८२॥जब रावण ने सीता को लेजाकर अशोक बन में रक्खी तब देवताओं ने आकर१३सीता को पीने के लिये१४दूध दिया ॥ ८३ ॥ सो नहीं लेकर सीता ने कहा कि पति के बिना१५निराहार रहूंगी१६देवताओं ने हित के वचन कहे कि इसका१७भोजन कर जिससे तुझको ॥ ८४ ॥ १८ तृषा और भूख नहीं लगै तब सीता ने उसको खाकर१९फिर२०निराहार वह वर्ष निकाला ॥ ८५ ॥

तीजे३दिन प्रभु ताहि, मिले परखि पावक[1] विमल ॥
चलि चउत्थि४दिन चाहि, किष्किंधा कट्टी रजनि ॥ ८६ ॥
सुग्रीवादि असेस[2], नारिनजुत ले संग निज ॥
अहँ[3] पंचमि५अखिलेस, भरद्वाज मुनि भिंटये[4] ॥८७॥
मानववपु[5] हनुमान, अग्ग सुनावन आगमहिँ॥
पुव्वहि[6] विरचि प्रयान, गुह आलयँ[7] पहिले गये ॥ ८८ ॥
सुख किय कुसल सुनाय, शृंगवेरपति संकरे[8] ॥
गगन[9] रामजस गाय, उड्यो वहुरि सुत अनलको[10] ॥ ८९

(षट्पात्)

रामतीर्थ१कपि लंघि सरित[11] बालुकिनी२संजुत ॥
बरूथिनी३पुनि गोमती४रु सालवन५लंघि द्रुत ॥
नंदिग्राम६जु इक१कोस साकेतनगर[12] सन ॥
भरत भिंटि तहँ जाय कह्यो सब वृत्त वन्यो वन[13] ॥
वह धरत अजिन[14]१कासायपट[15]२कंद फलासन[16]३जतिन[17] व्रत ४॥
सुनि अग्रजात[18] आगम गिर्‌यो इक१मुहूर्त मुंद मोहगत[19] ॥ ९० ॥
पुनि लहि चेतन भरत विरचि मारुति[20] आलिंगन[21] ॥
अक्खिय देहुँ तोहि धेनु इकलक्ख१००००पयोधन[22]॥
सत१००ग्राम रु सोलह१६ सुरूप कन्न्या गुनसुंदर ॥
कहि परंतु तू कोन सुर[23]१कि असुर२ कि नर३किन्नर४

१अग्नि में २ सबको ३ पंचमी के दिन ४ भरद्वाज से मिले ॥८७॥५मनुष्य का शरीर करके रामचन्द्र का आगम सुनाने के लिये रामचन्द्र से ६ पहिले गमन करके प्रथम गुह के ७ घर (शृंगवेरपुर) में गया ॥ ८८ ॥ ८ शंकर के अवतार (हनुमान) ने ९ आकाश मार्ग में १० पवन का पुत्र उड़ा ॥ ८९ ॥ ११ नदी १२ अयोध्या से एक कोश पर नन्दीग्राम में जाकर भरत से मिला और १३ वन में जो वृत्तान्त बना वह सब कहा वह (भरत) १४ मृगचर्म १५ भगवा वस्त्र धारण किये कंद फल का १६ भोजन करनेवाला१७यतियों के व्रत को रखनेवाला१८बडे भाई का आना सुनके१९हर्ष की मूर्छा में दो घड़ी तक भूमि पर गिर गये ॥ ९० ॥२०हनुमान से२१मिल२२दूध ही है धन जिनके ऐसी एक लक्ष गौ २३ देवता है किधों

हुव किम अरण्य[1] सीताहरण किम दसकंधर नास किय।
सह आदिअंत हनुमान सुनि कथा राम जयमय कहिय ॥९१॥

(दोहा)

छट्ठी६बासर काल्हि प्रभु, मिलिहैं तुमसौं आय ॥
सुनत एह सत्रुघ्नसौं, भरत कह्यो हितभाय ॥ ९२ ॥
शृंगारहु प्रासाद[3]१ पुर२, समुख चलहु दलसँज्जि[4] ॥
सत्रुघ्न सु सज्ज्यो हुकम, अतिघन हरख उपज्जि ॥ ९३ ॥
लागि जनंतति[5] साकेत लग, चाल्लिय मिलि चतुरंग ॥
जीवत पल्वल्ल[6] भेक[7] जिम, सुचि[8] पहिले जलसंग ॥ ९४ ॥

(षटपात्)

कौसल्यादिक जननि त्रय३हि चढि चल्लिय नृजानन[9] ॥
सहित भरत१ सत्रुघ्न२ पाय नूतन[10] जिम प्रानन ॥
सम्मुह इम इत सेन चल्लिय सम्मद[11] अपुब्ब चहि ॥
उततैं हँकिय अप्प[12] व्योम[13] पुष्पक बिमान बहि ॥
मगबिच मिलाप छट्ठ६दिवस भ्रातन सह जननिन भयो ॥
साकेतनगर[14] बासिन सुखद अरक[15] महानिस[16] उग्गयो ॥९५॥

(दोहा)

जथा[17]उचित बंदन जननि, मिलि भ्रातन दुख मेटि ॥
स[18]बिभीखन१ कपिपति[19]२ सबन, भरत मिल्यो उर भेटि९६

१वन में सीता कैसे हरी गई ॥ ९१ ॥ २कल छट्ठ के दिन ॥ ९२ ॥ ३ महल और पुर को सिणगारो ४ सेना सझकर ॥ ९३ ॥ अयोध्या तक मनुष्यों की ५ पंक्ति लगगई और चतुरंगिणी सेना चली अयोध्या के लिये रामचन्द्र का यह आना ६ छोटे तालावों में रहनेवाले ७ मैंडकों को ८ आषाढ मास की प्रथम वृष्टि के जलसंग के समान हुआ ॥ ९४ ॥ ९ पालखियों में १० नवीन प्राण पाया होवे जिस प्रकार ११ अपूर्व हर्ष चाह कर १२ रामचन्द्र चले १३ आकाश में १४ अयोध्या पुरवासियों को सुख देनेवाला मानो १६प्रलय के पीछे का १५सूर्य उदय हुआ १७माताओं को उचित रीति से नमस्कार करके १८ विभीषण सहित १९ सुग्रीव आदि सब से ॥ ९६ ॥

(१००२) वंशभास्कर [रामचंद्रवर्णन

माता तीनन[३] मुदितमन, नतिजुत करत प्रनाम ॥
लाये उर बिस्वासलहि, रुचिर सलक्खन[१] राम[२] ॥ ९७॥
प्रभु अग्गैं तें[४] पावरी, धरी भरत सुभ धोय ॥
कह्यो राज्य निज अब करहु,हमरे पति[१] गति[२] होय॥९८॥
बिरहदीन लखि भरतकौं, अतिकृस[५] मलिन अधीर ॥
सविभीखन[१] कपिपति[२]सबन, नयन छल्यो बढि नीर ९९।
अनुज भरत[१] सत्रुघ्न[२] उभय[६], आखिलईस धरि अंक[७] ॥
आये नंदिग्राम अब, राम निवाजत रंक[८] ॥ १०० ॥
सिक्ख तहाँसन पुप्फकहिं[९], दिन्नी प्रभु निजथान ॥
कहतहि वह अलकौं[१०] गयो, वित्तद[११] निलय[१२] बिमान ॥१०१॥
इह नमि बंदी देवरन, सीता सस्सुन पाय ॥
लज्जा[१] मुद[२] नतिजुत[१३] लगी, लिन्नी उन उरलाय ॥१०२॥
स्वीय पुरोहित जीवसम[१४] अक्षमालिका[१५] जानि ॥
बंदे राम बसिष्ट बिभु[१६], लिय आसिख मुदमानि ॥ १०३ ॥

(षट्पात्)

कपिनारिन सनमानि कपिन[१] रिच्छन[२]स्वागत[१७] करि ॥
लिय बधाय साकेत[१८] भरत सम्मद[१९] अतीवभरि ॥
रहि सकुसल तिहिं रत्ति[२०] प्रात निगमोक्त[२१] साद्धि उरु ॥

१नम्रता सहित प्रणाम करके२लक्ष्मण सहित ३ सुन्दर रामचन्द्र को माताओं ने हृदय से लगा लिये ॥ ९७ ॥ रामचन्द्र ने चित्रकूट में भरत को दी थी ४ वे पावड़ियें धोकर भरत ने रामचन्द्र के आगे रक्खी ॥ ९८ ॥ ५ दुर्बल॥९९॥ ६ दोनों को ७ गोदी में बिठा कर. रामचन्द्र ८दीनों को दान करते हुए आये ॥ १०० ॥ वहां से ही ९ पुष्पक विमान को रामचन्द्र ने अपने स्थान (कुबेर के पास) जाने की विदा दी १० कुबेर की राजधानी ११ कुबेर के १२ स्थान में गया ॥ १०१ ॥ १३ नम्रता सहित ॥१०२॥ १४ बृहस्पति के समान अपने पुरोहित १६ प्रभु वशिष्ठ को उनकी स्त्री १५ अक्षमाला सहित रामचन्द्र ने नमस्कार किया ॥ १०३ ॥ १७ आये हुए का आदर करके १८ अयोध्या में भरत ने बधा कर लिये अत्यन्त १९ हर्ष में भरकर २० उस रात्रि को रहे और प्रभात ही २१ वेदोक्त बहुल कार्य करके

सप्तमिदिन अभिसेक कियउ प्रभुके बसिष्ट गुरु ॥
तैहँ सब नदीन१सिंधुन२सलिल कपि लाये भरि कनकघट
अभिसिक्त राम बैठे उचित भद्रासन गुन खुल्लि खट६ ॥ १०४ ॥

दोहा

आये नंदीग्रामतैं, रथ बैठे तब राम ॥
हैके सारथिभरथ हर्ष,लाघवं बिहित ललाम॥१०५॥
बिभीखन१रु लक्खन२दुहुन२,ढोरे चामर पोन ॥
छत्र लयो सत्रुघ्न कर, भर्म रुचिर छविभोन ॥१०६॥
नाम सत्रुजय नागपर, बैठायो कपिभूप ॥
नव हजार ९००० हत्थिन चढे, प्लवगन ओ नररूप॥१०७॥
आये पुर साकेत इम, छट्ठी६दिन रघुनाथ ॥
पठये कपि लावन तबहि, पाथोनिधि मुख पाथ ॥१०८॥

षट्पात्

जांववान१ हनुमान२ बेगदरसी३रु ऋषभ ४ इन ॥
सरितें पंचसत ५०० सलिल कियउ हाजरि सेचन खिन ॥
कपि सुसेन१ पुनि ऋषभ२ गवय३रु नल४ए४हू द्रुत ॥
पूरव १ दक्खिन २ आदि जलधि संबर लाये नुत ॥
अभिसिक्त भद्रविष्टर उपरि बैठे इम सप्तमि७दिवस॥
जातुप१कपीस१ किन्नैं चमर लियउ छत्र सत्रुघ्न तस१०९

...तल२सोने के घडे भरलाये ३अभिषेक कराकर छह ही गुणों(सन्धि विग्रह ...न संस्था आसन और द्वैधीभाव) को खोलकर (प्रकाश करके) सिंहासन ... बैठा. भरत ने सारथी होकरके ५ शीघ्रता सहित ६ सुन्दर ४ घोडे ...के ७ स्वर्ण का रचाहुआ सुन्दरता का घर ८ हाथी पर ९ सुग्रीव को ...ठाया १० वानर ॥ १०७ ॥ इसप्रकार ११ अयोध्या में आये १२ समुद्र आदि का १३ जल लाने के लिये वानरों को भेजे ॥ १०८ ॥ १४ नदियों का ...१५ जल १६ स्नान करने के लिये क्षणभर में १७ शीघ्र १८ समुद्रों के स्तुति ...योग्य १९ जल लाये २०भद्रासन पर बैठे २१ बिभीषण और २२ सुग्रीव ने

दोहा

माला*पुरटसरोजमय, करी नजरि ÷पवमान१॥
आय इंद्र२ किय भेट यँहँ, मुक्ताहार महान ॥११०॥

षट्पात्

गंधर्वन१ किय गान नटन अच्छरिगन२ मंडिय॥
विप्रन तँहँ रघुवीर दान समुचित अनेक दिय॥
कानक मुद्रा तीस कोटि३०००००००वृखसत१००विनीत वर।
लक्ख१०००००तुरग गोलक्ख१०००००सिचय१ भूखन२ वहु सुंद
हाटकसरोजमाला वह सु दिन्नी प्रभु कपिराज१ हित॥
वैदूर्य विहित अंगद उभय२अंगद२हित दिन्नें उचित ॥१११

दोहा

जनकसुतौं कौं प्रभु दयो, अप्प्यो इंद्र सु हार॥
तिहिं वुल्ल्यो हनुमान तव, अतिहित पात्र उदार॥११२
अरजवस्त्र१जुग२जानको, इतरहु भूखन२सत्थ॥
पति दिन्नौं सो हार३पुनि, ए३दिय मारुति अत्थ॥ ११३
कपि१ मर्कट२ भल्लुक३ सबहि, पट१ भूखन२ पहिराय॥
करि अर्चित किन्नें विदा, वहु लडाय उरलाय॥ ११४॥
रक्खसपति लंका गयउ, राज्य कियउ इत राम॥
समा मान ग्यारह सहँस११०००त्रेतासमय ललाम॥११५

* स्वर्ण के कमलों की माला ÷ पवन ने भेट की १ मोतियों का हार इन्द्र ने भेट किया॥ ११०॥२ नृत्य ३ उचित ४ स्वर्ण की मुद्रा (मोहरें) ५ शिक्षा पाये हुए श्रेष्ठ ६ बैल ७ घोड़े ८ गौं ९ वस्त्र १० पवन की भेट की हुई वह स्वर्ण कमलों की माला रामचन्द्र ने ११ सुग्रीव को दी और १२ वैदूर्यमणि [लहसणियों के बनेहुए १३ भुजबन्ध अंगद को दिये॥ १११॥ १५ इन्द्र ने मोतियों का हार दिया था वह रामचन्द्र ने १४ सीता को दिया सीता ने अत्यन्त हित करनेवाले उदार पात्र हनुमान् को १६ बुलाया॥११२ १७ नवीन वस्त्र और रामचन्द्र का दियाहुआ वह मोतियों का हार ये दोनों ही १८ दूसरे भूषणों के साथ १९ हनुमान को दिये॥ ११३॥ २० वानर २१ लंगूर २२ रींछ सबको वस्त्र और भूषण पहनाकर २३ पूजित करके विदा किये॥ ११४॥ २४ वर्ष २५ प्रमाण २६ सुन्दर॥ ११५॥

देनलगे जुवराजपन, हठि प्रभु लक्खन हेत ॥
तिहिं लया न तब भरतही, अप्प्यो बिजय उपेत ॥११६॥
अश्वमेधमख१दस१०करे, पुंडरीक२बहुबेर ॥
इतरहु सत्र अनेक किय, जयरोधक किय जेर ॥ ११७ ॥
पसुनकेहु प्रभु न्याय किय, पुनि कहुँ सुनि अपबाद॥
बिपिन निकासी जानकी, गुर्वी रहित प्रमाद॥ ११८ ॥
जिहिं बल्मकभवमुनि उटज, रहि रु जनैं दुव२पुत्त ॥
पैठिगई भुव समयपर, जननि पतिव्रत जुत्त ॥११९ ॥
पुरजुत रामहु अवधिपर, धाम लगे जब जान ॥
जातुप प्रभुपँहँ आयलिय, तब श्रीरंग बिमान ॥ १२० ॥
कोटितीन३००००००० गंधर्व रन, भरत६०हनैं बिनु बिघ्न॥
मधुसुत लवणहिं मारि किय, मथुरानगर अरिघ्न ॥१२१॥

(षट्पात्)

सुतदुव२दुव२सबकेँहि रामअंगज हुव कुस६१।१लव६१।२॥
तक्षक६१।१पुष्कर६१।२भरत तनय उपजे धरनीधव ॥
सुत सुबाहु६१।१अरु सूरसेन६१।२सत्रुघ्नकेर जिम ॥

लक्ष्मण को युवराज पद देनेलगे सो उनने नहीं लिया तब विजय सहित यह युवराज पद भरत को दिया॥११६॥ अश्वमेध यज्ञ दश किये और पुंडरीक यज्ञ बहुत वार किये और भी यज्ञ किया अपनी विजय के रोकनेवाले शत्रुओं को अधिकार (काबू में करके दबालिये) में किये ॥ ११७॥ रामचन्द्र ने पशुओं के भी न्याय किये फिर कहीं पर अपनी निन्दा सुन कर सीता को वन में निकाल दी जो गर्भवती और प्रमाद से रहित थी ॥ ११८ ॥ बाल्मीकि मुनि की पर्णकुटी में रहकर दो पुत्र जने और सीता माता पतिव्रत धर्म के साथ समय पर भूमि में पैठगई ॥ ११९ ॥ जब राम अपने धाम (स्वर्ग में) जानेलगे तब राक्षसों के पति (विभीषण) ने पवित्र विमान लिया ॥ १२० ॥ १ लवणासुर को २ शत्रुघ्न ने मथुरा नगर बसाया ॥ १२१ ॥ ३ रामचन्द्र के पुत्र ४ भरत के पुत्र ५ भूपति हुए अथवा वसुदेव चहुवान को सम्बोधन करके कुंडक राजा का नड्डूल नामक पुरोहित

प्रकटे अंगद६.१।१ चित्रकेतु६.१.१२लक्खनतनुज तिम ॥
इम रामचरित नड्डल वरनि दुल्लह नृप वसुदेव६.८प्रति ॥
रघुनाथ पुत्त पट्टेस कुस६.१वंस कहन लग्गो सुमति॥१२२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचतुर्भुजकुलकथने वसुदेव६.८वेला६.८।१ विवाहवेलावर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वत ५ मनुतनुजनुरिक्ष्वाकु६पट्टपुत्रविकुक्षि ७ जननोज्ज्वालकश्रीजानकीजानिचरित्रे संस्कारितदशग्रीवसमभिषिक्तविभीषणसमनुनीतपरीक्षितसीतासमुज्जीवितअस्मृतस्वयोधसरक्षोराजसस्त्रीकप्लवगादिपरिकरसहितश्रीरामसाकेताऽऽगमनसमभिषिक्तप्रभुसुग्रीवादिस्वस्वपस्त्यप्रस्थापनसमनुष्ठितराज्यकोशलोपेतश्रीरघुनाथस्वधामाऽऽरोहणंपञ्चपञ्चाशत्तमो ५५ मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः सप्तनवतितमः ॥ ९७ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

कुस सुत अतिथि६.२तदीय निषध६.३रु तस नल६.४ताके नभ६.५॥

कहता है १ लक्ष्मण के पुत्र २ इसप्रकार नड्डल पुरोहित रामचरित्र वर्णन करके दुल्लह वसुदेव चहुवान से रामचन्द्र के पाटवी पुत्र कुश का वंश कहने लगा ॥ १२२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशिमें अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुल को उज्वल करनेवाले श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के चरित्र में रावण का अग्निसंस्कार करके लंका के राज्य का अभिषेक पायेहुए विभीषण से लाईहुई और परीक्षा की हुई सीता का फिर जीवित होना, अपने योधों का जीवित होना, राक्षसराज और स्त्रियों सहित वानरों की परगह सहित श्रीरामचन्द्र का अयोध्या आना, अभिषेक हुए रामचन्द्रका सुग्रीव आदि को अपने अपने घरों को भेजना, सुखपूर्वक राज्य करके अयोध्या सहित रामचन्द्र के स्वर्ग जाने का पचपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५५॥ और आदि से सत्तानवे मयूख हुए ॥ ९७ ॥